☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

सत्तवां भाग

तत्करा

मिती–सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नंः
२६ पोह २०१४ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१
२७ पोह २०१४ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४३
	अगंम संदेश			५२
१ माघ २०१४ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	८३
५ माघ २०१४ बिक्रमी	सूबेदार वतन सिँघ	शरीहपुर	हुशिआरपुर	९७
६ माघ २०१४ बिक्रमी	ठाणेदार शिव देव	असमान शहीद	हुशिआरपुर	११५
१ फग्गण २०१४ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१३०
३ फग्गण २०१४ बिक्रमी	लछमण सिँघ	पुराणे भूरे	अमृतसर	१४६
४ फग्गण २०१४ बिक्रमी	दलीप सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१६३
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	दलीप सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१६८
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	गुरबख़श सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७०
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	चरन सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७१
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	आतमा सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७१
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	जागीर सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७२
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	उतम सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७२
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	करम सिँघ	गग्गोबूआ	अमृतसर	१७३
५ फग्गण २०१४ बिक्रमी	सुरजण सिँघ	भुचर	अमृतसर	१७३
६ फग्गण २०१४ बिक्रमी	मंगल सिँघ	पट्टी	अमृतसर	१८५
७ फग्गण २०१४ बिक्रमी	नरैण सिँघ	कंग	अमृतसर	१६३
७ फग्गण २०१४ बिक्रमी	धरमबीर	जलालाबाद	अमृतसर	१६६

८ फग्गण २०१४ बिक्रमी ऊधम सिँघ	जलालाबाद	अमृतसर	२०३
११ फग्गण २०१४ बिक्रमी सोहण सिँघ	राम पुरा	अमृतसर	२०५
१५ फग्गण २०१४ बिक्रमी दरबार विच	दिल्ली	दिल्ली	२१८
१६ फग्गण २०१४ बिक्रमी करतार सिँघ	दिल्ली	दिल्ली	२२२
१६ फग्गण २०१४ बिक्रमी दरबार विच	दिल्ली	दिल्ली	२२६
१६ फग्गण २०१४ बिक्रमी सुशील कुमार दे नाल बचन होए	गुड़गाउँ	हरिआणा	२३७
१६ फग्गण २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ	गुड़गाउँ	हरिआणा	२४०
२० फग्गण २०१४ बिक्रमी रेशम सिँघ	शरोन लाइन	मेरठ छाउणी	२४३
२१ फग्गण २०१४ बिक्रमी मेजर करम सिँघ		मेरठ छाउणी	२५२
२१ फग्गण २०१४ बिक्रमी रेशम सिँघ		मेरठ छाउणी	२५५
१ चेत २०१५ बिक्रमी दरबर विच	जेठूवाल	अमृतसर	२५७
१८ चेत २०१५ बिक्रमी दीदार सिँघ	जट्टा	अमृतसर	२७०
१८ चेत २०१५ बिक्रमी जरनैल सिँघ	शाहवाला	फिरोज़पुर	२७७
१६ चेत २०१५ बिक्रमी सूबेदार राम सिँघ	गवाल टोली	फिरोज़पुर	२८२
२० चेत २०१५ बिक्रमी करम सिँघ	पिपली	बठिंडा	२६१
२१ चेत २०१५ बिक्रमी माला सिँघ	समाल सर	फिरोज़पुर	२६६
१ विसाख २०१५ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३०४
१ जेठ २०१५ बिक्रमी दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३१८
१ जेठ २०१५ बिक्रमी हरि मंदर साहिब श्री अमृतसर शब्द भेज्जया		अमृतसर	३३१
५ जेठ २०१५ बिक्रमी जगत सिँघासण नवित (चुक्कया)	कल्सीआं	अमृतसर	३३२
१८ जेठ २०१५ बिक्रमी गिरधारा सिँघ	बलोवाल	अमृतसर	३५१
१६ जेठ २०१५ बिक्रमी अजीत सिँघ	फैजपुर	गुरदासपुर	३६१

2 ०२

२० जेठ २०१५ बिक्रमी	हकीम काशी राम	सनइया	गुरदासपुर	३७०
२१ जेठ २०१५ बिक्रमी		खैहरा	गुरदासपुर	३८०
१ हाढ़ २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३८४
१८ हाढ़ २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	३६४
१ सावण २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४५३
१८ सावण २०१५ बिक्रमी	मंगल सिँघ	धारड़	अमृतसर	४६५
१८ सावण २०१५ बिक्रमी	गुरमुख सिँघ	भलाईपुर	अमृतसर	४७४
१६ सावण २०१५ बिक्रमी	उधम सिँघ	जलालाबाद	अमृतसर	४८६
१६ सावण २०१५ बिक्रमी	बलवंत सिँघ	जलालाबाद	अमृतसर	४८६
१६ सावण २०१५ बिक्रमी	नरैण सिँघ	कंग	अमृतसर	४६१
२० सावण २०१५ बिक्रमी	मक्खण सिँघ	नौरंगाबाद	अमृतसर	५०८
२१ सावण २०१५ बिक्रमी	मस्सा सिँघ	नौरंगाबाद	अमृतसर	५१७
२१ सावण २०१५ बिक्रमी	सेवा सिँघ	गोलेवाली पंडोरी	अमृतसर	५२१
२१ सावण २०१५ बिक्रमी	चरन सिँघ	तरनतारन	अमृतसर	५२४
२१ सावण २०१५ बिक्रमी	सरैण सिँघ	जंडिआला गुरू	अमृतसर	५२७
१ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	५३४
१२ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	फूला सिँघ	गंडी विंड	अमृतसर	५४२
१३ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	महिंदर सिँघ	बसती ख़लील	फिरोज़पुर	५५४
१४ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	बीबी गुरचरन कौर	हीरा मण्डी दरवाज़ा	फिरोज़पुर	५६१
१५ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	करनैल सिँघ	डोगर बस्ती	फरीदकोट	५८०
१६ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	मकंद सिँघ	महराज	बठिंडा	५६०
१६ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	वधावा सिँघ	महराज	बठिंडा	६११

१७ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	गुलज़ार	साहो	फिरोज़पुर	६१२
१८ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	हाकम सिँघ	समालसर	फिरोज़पुर	६२५
१६ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	साधू सिँघ	रोडे	फिरोज़पुर	६३३
२० भाद्रों २०१५ बिक्रमी	नाज़र सिँघ	नाथेवाल	फिरोज़पुर	६४०
२१ भाद्रों २०१५ बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ	रामूवाला	फिरोज़पुर	६४४
१ अस्सू २०१५ बिक्रमी	ठाकर सिँघ	जेठूवाल	अमृतसर	६४६
१ अस्सू २०१५ बिक्रमी	पटना हरिमंदर साहिब नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल		६६३
२१ अस्सू २०१५ बिक्रमी	दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	६६६
२२ अस्सू २०१५ बिक्रमी	इन्द्र सिँघ	करोल बाग	नवी दिल्ली	६७२
२३ अस्सू २०१५ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ	करोल बाग	नवी दिल्ली	६७५
२४ अस्सू २०१५ बिक्रमी	दर्शन सिँघ	पहाड़ गंज	नवी दिल्ली	६७६
२५ अस्सू २०१५ बिक्रमी	बिशन सिँघ	गुड़गाउँ	हरिआणा	६८५
२६ अस्सू २०१५ बिक्रमी	मंदर श्री विशव नाथ	कानपुर	उतर प्रदेश	६६१
२६ अस्सू २०१५ बिक्रमी	अवतार सिँघ	कानपुर	उतर प्रदेश	६६२
२७ अस्सू २०१५ बिक्रमी	त्रबैणी संगम	इलाहाबाद	उतर प्रदेश	६६३
२६ अस्सू २०१५ बिक्रमी	अयुध्या ब्रहम कुंड	अयुधया	उतर प्रदेश	६६८
३० अस्सू २०१५ बिक्रमी	गुरदवारा गुरू का बाग	काशी	उतर प्रदेश	७०२
३० अस्सू २०१५ बिक्रमी	विशव नाथ मंदर	काशी	उतर प्रदेश	७०६
१ कत्तक २०१५ बिक्रमी	गुरदवार हरिमंदर साहिब	पटना	बिहार	७०८
२ कत्तक २०१५ बिक्रमी	गुरदवारा गुरू का बाग	पटना	बिहार	७१०
३ कत्तक २०१५ बिक्रमी	मैणी साहिब गुरदवार	पटना	बिहार	७१३
३ कत्तक २०१५ बिक्रमी	लछमण सिँघ	दानापुर पटना	बिहार	७१५

4

४ कत्तक २०१५ बिक्रमी बोध अवतार दे मंदर गया शहिर ७२०
५ कत्तक २०१५ बिक्रमी तेजा सिँघ कलकत्ता ७२४
६ कत्तक २०१५ बिक्रमी मिहर सिँघ कलकत्ता ७३१
६ कत्तक २०१५ बिक्रमी मुखत्यार सिँघ कलकत्ता ७३३
६ कत्तक २०१५ बिक्रमी हरभजन सिँघ कलकत्ता ७३४
६ कत्तक २०१५ बिक्रमी जगन नाथ पुरी मंदर ७३६
१६ कत्तक २०१५ बिक्रमी लछमण कुंड रामेशवर मंदर श्री राम चंदर ७४३
१६ कत्तक २०१५ बिक्रमी राष्ट्रपती प्रथाए रामेशवर ७५२
२१ कत्तक २०१५ बिक्रमी टोपन राम किरकी पूना ७५४
२१ कत्तक २०१५ बिक्रमी सतिपाल किरकी पूना ७६१
२१ कत्तक २०१५ बिक्रमी ठाकर सिँघ किरकी पूना ७६१
२१ कत्तक २०१५ बिक्रमी हरबंस सिँघ किरकी पूना ७६५
२२ कत्तक २०१५ बिक्रमी टोपन राम किरकी पूना ७६८
२३ कत्तक २०१५ बिक्रमी किरकी पूना ७७४
२६ कत्तक २०१५ बिक्रमी बीबी अमृत कौर बम्बई ७६७
२७ कत्तक २०१५ बिक्रमी सन्त नर हरी नरायण सिँघ पंडत गोदावरीघाट नासक ७६०
२८ कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदवारा लंगर साहिब हज़ूर साहिब नदेड़ ७६७
२६ कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदवारा संगत साहिब हज़ूर साहिब नदेड़ ७६८
२६ कत्तक २०१५ बिक्रमी माल टेकरी हज़ूर साहिब नदेड़ ८००
३० कत्तक २०१५ बिक्रमी बंदा बहादर गोदावरी घाट नदेड़ ८०२
३० कत्तक २०१५ बिक्रमी बाबा निधान सिँघ दे गुरदवारे लंगर साहिब नदेड़ ८०८
१ मग्घर २०१५ बिक्रमी गोतम रिखी दी गुफा गोदावरी घाट नदेड़ ८१७

5 ०२

६

१ मग्घर २०१५ बिक्रमी	सचखंड गुरदवारा	हज़ूर साहिब नदेड़	८२१
	प्रताप सिँघ वलों सतिगुरां दे गल हार पाउण ते		८२६
२ मग्घर २०१५ बिक्रमी	गुरदवारा लंगर साहिब	हज़ूर साहिब नदेड़	८२७
३ मग्घर २०१५ बिक्रमी	सन्त नंद सिँघ नाल गुरूदवारा	मनवाड़	८२८
३ मग्घर २०१५ बिक्रमी	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी	८२८
४ मग्घर २०१५ बिक्रमी	जसवंत सिँघ	इटारसी	८४५
४ मग्घर २०१५ बिक्रमी	हरदित सिँघ	इटारसी	८५०
४ मग्घर २०१५ बिक्रमी	सुरिंदर सिँघ	इटारसी	८५२
४ मग्घर २०१५ बिक्रमी		इटारसी	८५६
५ मग्घर २०१५ बिक्रमी	गुरदवारा सिँघ सभा	गवालियर	८५७
५ मग्घर २०१५ बिक्रमी	गुरदवारा बंदी छोड़	गवालियर	८६०
८ मग्घर २०१५ बिक्रमी	बिंदराबन दे विच मिहर बाबा दे इक चेले नाल	मथरा	८६६
६ मग्घर २०१५ बिक्रमी	संत हीरा सिँघ नाल	मथरा	८७०
६ मग्घर २०१५ बिक्रमी	गुर नानक बगीची गुरदवारा	मथरा	८७२
६ मग्घर २०१५ बिक्रमी	अमीर चंद घुलाटी दे घर	पलवल शहिर	८७३
१० मग्घर २०१५ बिक्रमी	प्रीतम सिँघ करोल बाग	नवी दिल्ली	८७४
१० मग्घर २०१५ बिक्रमी	रतन सिँघ शादी पुर	नवी दिल्ली	८७७
१० मग्घर २०१५ बिक्रमी	रेशम सिँघ शरोन लाइन	मेरठ छाउणी	८७६
११ मग्घर २०१५ बिक्रमी	लाल सिँघ	रुड़की	८८३
१२ मग्घर २०१५ बिक्रमी	हरि की पौड़ी गंगा घाट	हरिद्वार	८८५
१३ मग्घर २०१५ बिक्रमी	काली कमली वाले दे डेरे	रिषीकेश	८६३
१३ मग्घर २०१५ बिक्रमी	सतिसंग हाल	रिषीकेश	८६४

६

१४	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	पंडत नेहचल सिंघ	डेरा सन्त पुरा	जगाधरी	६०५
१४	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	हरबंस सिंघ दे गृह	ठीकरी छंना	करनाल	६०८
१५	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	हरिसंगत समेत शब्द लिखाए		कौरोकुक्षेत्र	६११
१६	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	ओम प्रकाश ब्रहमण दे घर		नाभा	६१६
१७	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	बख़शीश सिंघ	कहेरू	संगरूर	६३०
१८	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	त्रलोक सिंघ	महल्ला घुमिआरा	सनाम	६३६
१६	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	निरंजण सिंघ	उची अबादी	लुधिआणा	६४२
२०	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	लाल सिंघ	उची अबादी	लुधिआणा	६४७
२०	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	धंना सिंघ	ढइ पई	लुधिआणा	६५०
२१	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	गुरदयाल सिंघ	रुड़की	अंबाला	६५४
२१	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	नथ्था सिंघ	बड़हेड़ी	अंबाला	६५४
२२	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	बिशन सिंघ ज्ञानी	सुहाना	अंबाला	६५६
२३	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	मिहर सिंघ	सेख़पुरा	अंबाला	६५६
२३	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	भजन सिंघ	सेख़पुरा	अंबाला	६६५
२३	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	गुरदेव सिंघ	दोसांझ	जलंधर	६६६
२४	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	महिंगा सिंघ	हरी पुर	जलंधर	६६८
२५	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	लाल सिंघ	हेर	जलंधर	६७२
२६	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	नसीब सिंघ	बोपा राए	जलंधर	६७८
२६	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	सरूप सिंघ	मूध	जलंधर	६८३
२७	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	सूबेदार तारू सिंघ	जंडीरे	जलंधर	६८५
२८	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	बचन सिंघ	मांगा सराए	अमृतसर	६८६
२८	मग्घर	२०१५	बिक्रमी	सरैण सिंघ	मांगा सराए	अमृतसर	७६२

7
०२

२८	मग्घर २०१५ बिक्रमी	पशौरा सिँघ	वेरका	अमृतसर	६६४
२६	मग्घर २०१५ बिक्रमी	गुरनाम सिँघ	वेरका	अमृतसर	१००२

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

*** २६ पोह २०१४ बिक्रमी संगत जोड़ मेला हरिभगत द्वार जेठूवाल ***

१ ०७

पारब्रह्म पुरख अबिनाश, परम पुरख सुल्तानयां। खेले खेल पृथ्मी आकाश, हरि वाली दो जहानयां। साचे मण्डल पावे रास, साचे तख्त आप सुहानयां। जन भगतां वसे सदा पास, आदि अन्त गुण निधानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मूल पछाणयां। पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, हरि हरि आप अख्वांयदा। जोती जोत नूर महाना, दीपक साचा आप टिकांयदा। शब्द शब्दी शब्द तराना, नाद अनादी आप वजांयदा। हर घट खेले खेल महाना, दिस किसे ना आंयदा। ब्रह्मा वेखे कर ध्याना, नेत्र लोचण आप उठांयदा। शिव शंकर मारे इक्क ध्याना, बाशक तशका गल लटकांयदा। इन्द इन्द्रासण बाल नादाना, करोड़ तेतीसा संग रखांयदा। लक्ख चुरासी खेल भगवाना, आप आपणी रचन रचांयदा। त्रैगुण माया कर प्रधाना, सति सरूप समांयदा। आप आपणा देवे ब्रह्म ज्ञाना, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। आपे जाणे धुर फ़रमाना, एका राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख विखांयदा। पुरख अबिनाशी हरि भगवन्ता, अकल कला समाया। आपे जाणे जीआं जन्ता, साधां सन्तां आप तराया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढाया। आपे चाढ़े रंग बसन्ता, चोली रंगण आप रंगाया। आपे रसना जिह्वा मणीआ मंता, शब्द शब्दी आप रलाया। आपे खेले खेल जुगा जुगन्ता, विष्नूं वंसा आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। पुरख अबिनाशी हर घट जाण, जोती नूर टिकाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म जणाईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका लिव लाईआ। एका पूजा पाठ एका घर वखान, एका हवन कराईआ। एका अमृत आत्म मारे ठाठ, सर सरोवर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए प्रनाईआ। आप आपणा हरि आपणा, आपणा रंग रंगाया। आप आपणी मंग मंगा, आप आपणी झोली पाया। आप आपणा

मृदंग वजा, आप आपणा लए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उपाया। आपणा आप हरि उपा, आपणी रचन रचाईआ। सति सरूप गया समा, दिस किसे ना आया। रचनहारा रचना रिहा रचा, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। भेखधारी भेख वटा, भेख अवल्लड़ा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि नरायण, एका एक रखाया। ब्रह्मा वेखे नेत्र नैण, दूर दुराडा मुख उठाया। एका हरि एका नर एका वर एका घर एका साक सज्जण सैण, मीत मुरार इक्क अख्वाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। पूत सपूता कर त्यार, जोती जोत जगाईआ। जोती नूर अपर अपार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। साचे घर पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्नूं वंसी ना करे आकार, ना कोई लेख लिखाईआ। ब्रह्मा वेता ना लए हुलार, वेद कतेब ना कोई जणाईआ। शिव शंकर ना पाए गल हार, कंठ माला ना गल लटकाईआ। करोड़ तेतीसा ना कोई करे प्यार, इन्द इन्द्रासण संग रखाईआ। एका एक एकँकार, हरि आपणा घर सुहाईआ। जुग जुग लोकमात लए अवतार, आप आपणी बणत बणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनार, काहना कृष्ना वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चारों कुंट दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए जगाईआ। बलवन्त कन्त हरि प्यार, आत्म सेज सुहाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। आप आपणा कर आकार, आपणा रूप दरसाईआ। सच महल्ला अपर अपार, पुरख अगम्मा रिहा बणाईआ। दमा दम रसन उचार, सरगुण विच समाईआ। निरगुण रूप हरि करतार, सरगुण बूझ बुझाईआ। साचा मेला विच संसार, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। पूर्ब लहिणा कर विचार, नेत्र नैणा दरस दिखाईआ। साचा गहिणा तन श्रृंगार, बस्त्र भूषन नाम पाईआ। सतिगुर साचे चरन सरन सरन चरन एका बहिणा एका ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्मल जोती जोत जगाईआ। निर्मल जोती जोत जगा, आपणी बूझ बुझांयदा। कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का इक्क लगा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। दो जहानी लेखा आप लिखा, लहिणा लहिणा झोली पांयदा। शब्द शब्दी इक्क जणा, शब्दी शब्द जणांयदा। आत्म तृष्ना भुक्ख मिटा, हउमे रोग गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी मंग मंगांयदा। साची मंग हरि दातार, आपणी आप मंगाईआ। आपे पावणहारा सार, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। त्रेते राम राम अवतार, रघुवंसा हरि रघुराईआ। जगत निमाणी पावे सार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। तोड़े गढ़ जगत हँकार, आप आपणी दया कमाईआ। रसना भोग इक्क अहार, भीलनी खुशी

मनाईआ। कलिजुग अन्त बलवन्त कन्त जाए बलिहार, प्रभ अबिनाशी तेरी चोग रसना मुख लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच प्रसादि आदि जुगादि जुग जुग आप आपणा आप आप वरताईआ।

गुरचरन सच द्वार, गुरमुख विरला पांयदा। गुरचरन जन प्यार, जोग जुगत वखांयदा। गुरचरन तन शृंगार, बस्त्र तन हंढांयदा। गुरचरन भरम निवार, भाण्डा भरम भनांयदा। गुरचरन बंक घर बार, एका हरि सुहांयदा। गुरचरन विच संसार, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। गुरचरन साची धार, पारब्रह्म इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरचरन वेख वखांयदा। गुरचरन साचा जोग, गुर पूरे इक्क रखाया। गुरचरन साचा भोग, गुर पूरा वेख विखाया। गुरचरन धुर संजोग, गुर पूरा लेख लिखाया। गुरचरन तीन लोक, गुर पूरा पार कराया। गुरचरन सच सलोक, गुर पूरे नाम दृढ़ाया। गुरचरन कटे रोग, गुर पूरा रोग गंवाया। गुरचरन देवे मोख, गुर पूरा आप दवाया। गुरचरन मिटे हरख सोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच सरनाया। गुरचरन सच भण्डार, गुर पूरा इक्क विखांयदा। गुरचरन पावे सार, गुर पूरा दया कमांयदा। गुरचरन पार उतार, गुर गुरमुख वेख वखांयदा। गुरचरन इक्क बलकार, गुर एका जोत जगांयदा। गुरचरन रंग करतार, हरि साचा जोड़ जुड़ांयदा। गुरचरन ढहि पए द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गुरचरन साचा घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुरचरन मिले वर, एका वर हरि रघुराईआ। गुरचरन ना जाए मर, एका रंगण रंग रंगाईआ। गुरचरन साची तरनी तर, भव तरनी पार कराईआ। गुरचरन मेला नरायण नर, नरायण नर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चरन ध्यान रखाईआ। गुरचरन साची सेव, हरि साचा आप जणांयदा। गुरचरन साचा देव, इष्ट देव आप अख्वांयदा। गुरचरन अलख अभेव, अलख निरंजन आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहांयदा। गुरचरन साची टेक, हरिजन इक्क रखांयदा। गुरचरन बुध बिबेक, गुर पूरा आप करांयदा। गुरचरन ना लग्गे सेक, माया ममता मोह चुकांयदा। गुरचरन नेत्र पेख, धूढ़ी मस्तक लांयदा। गुरचरन लिखे लेख, लेखा गुर आप गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ध्यान इक्क ज्ञान एका माण जणांयदा। गुरचरन साची वथ्थ, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुरचरन हरि समरथ, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। गुरचरन सगल विसूरे जाइन लथ्थ, चरन दुआरे दर्शन पाईआ। गुरचरन मिले साचा रथ, दो जहाना पार कराईआ। गुरचरन दुआरे जो जन जाए ढठ्ठ,

ढहि पए सच्ची सरनाईआ। गुरचरन रखाए साचा हथ्थ, मन मति बुध दए समझाईआ। गुरचरन खोल्हे हरन फरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गुरचरन साचा हट्ट, हरिजन साचे आप वखाया। गुरचरन तीर्थ तट्ट, गुरमुख विरले पाया। गुरचरन मैल देवे कट्ट, दुरमति तन रहिण ना पाया। गुर शब्द मारे एका सट्ट, अनहद देवे ताल वजाया। गुरचरन द्वार साचा मट्ठ, गुर दर मन्दिर राग अल्हाया। गुरचरन गेड़े उलटी लट्ठ, लक्ख चुरासी दए भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका चरन एका सरन रिहा रखाया। गुरचरन नाता जोड़, हरि साचे आपे जोड़या। गुरचरन निभे तोड़, ना होए जगत विछोड़या। गुरचरन साचा घोड़, दो जहानी फिरे दौड़या। गुरचरन जाए बौहड़, गुरसिख आत्म लग्गी औड़या। गुरचरन साचा पौड़ , वेखे परखे मिट्ठे कौड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए ब्रह्मण गौड़या। गुरचरन साचा वत, गुरमुख बीज बिजाया। गुरचरन साची रत्त, हरिजन लेखे लाया। गुरचरन साची मति, एका मन्त्र नाम जपाया। गुरचरन रक्खे पति, पतिपरमेश्वर आप अख्वाया। गुरचरन साचा सति, धीरज यति सन्तोख आप जणाया। गुरचरन रक्खे दे कर हथ्थ, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। गुरचरन साची दात, दर घर साचे पाईए। गुरचरन वड करामात, लोकमात हरि गुण गाईए। गुरचरन मिटे अन्धेरी रात, आत्म दीपक चन्द चढ़ाईए। गुरचरन आत्म अमृत देवे बूंद स्वांत, तृष्ना भुक्ख गंवाईए। गुरचरन पिता गुरचरन मात, गुर गोदी बैठ सदा सुख पाईए। गुरचरन बंधाए साचा नात, विछड़ कदे ना जाईए। गुरचरन वखाए उत्तम जात, वरन बरन विच ना आईए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरचरन साचा कमलापात, कन्त कन्तूहला इक्क हंढाईए। गुरचरन सच सलाह, गुर पूरे आप जणाईआ। गुरचरन जगत मलाह, बेड़ा बन्ने लाईआ। गुरचरन सच्चा राह, सच्चा मार्ग इक्क वखाईआ। गुरचरन मेला बेपरवाह, दरगहि साची मेल मिलाईआ। गुरचरन सोहे साचा थाँ, गुरसिख आपणे गले लगाईआ। गुरचरन पकड़े बांह, आप आपणा हथ्थ उठाईआ। गुरचरन हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। गुरचरन देवे ठंडी छाँ, अग्नी अग्ग ना कोई जलाईआ। गुरचरन साचा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लेख लिखाईआ। गुरचरन साचा गोझ, हरि साचे आप खुल्हाया। गुरचरन साचा खोज, भेव किसे ना पाया। गुरचरन भेव खुल्हाए एका दूज, तीजा नेत्र दए खुल्हाया। गुरचरन गुरमुख विरला रिहा लोच, अट्ठे पहर आस तकाया। गुरचरन मिटे सोच, आलस निन्दरा दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन साची मौज वखाया। गुरचरन

साचा माण, गुरमुख इक्क रखाया। गुरचरन मेल हाणीआ हाण, शब्द सुरती मेल मिलाया। गुरचरन जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाया। गुरचरन मिले धुर फ़रमाण, बोध अगाधा शब्द जणाया। गुरचरन तुटे जगत माण, तन अभिमान रहिण ना पाया। गुरचरन मिले धुर निशान, धुर धाम दए सुहाया। गुरचरन मिटे जम की काण, राए धर्म ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरचरन मेल मिलाया। गुरचरन साची आस, हरि हरि आप वखाईआ। गुरचरन सच प्यास, गुर पूरा रिहा बुझाईआ। गुरचरन दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। गुरचरन साची रास, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। गुरचरन लेखे रसन स्वास, रसना जिह्वा हरि हरि गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरचरन देवे वड्डी वड्याईआ। गुरचरन साची कार, हरि हरि आप करांयदा। गुरचरन साची धार, जुग जुग आप चलांयदा। गुरचरन इक्क प्यार, एका राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा गुर आप अख्वांयदा। साचा गुर हरि निरँकार, सतिगुर रूप समाया। आप अपणा कर पसार, आप आपणा भेख वटाया। जोती नूर कर उज्यार, आकाश प्रकाश समाया। लोआं पुरीआं बन्ने धार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। जेरज अंड लए उभार, उत्भुज सेत्ज संग रलाया। त्रैगुण माया कर प्यार, ब्रह्मे झोली पाया। विष्नूं वंसी खबरदार, शिव शंकर रिहा हिलाया। लक्ख चुरासी कर त्यार, पंज तत्त आप उपाया। निरगुण हरि निरँकार, बैठा आसण लाया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, गुरचरन सो जन आया। मनमुख डुब्बे वहिंदी धार, कलिजुग काया दए रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन जोड़ जुड़ाया। गुरचरन साचा रंग, गुर पूरा आप चढ़ांयदा। गुरचरन साची मंग, गुरमुख मंग मंगांयदा। गुरमुख सच पलँघ, साची सेज विछांयदा। गुरचरन धारा गंग, अठसठ मुख शरमांयदा। गुरचरन कटे भुक्ख नंग, एका वस्तू झोली पांयदा। गुरचरन अंगीकार करे कराए लाए अंग, सोभावन्ती नार सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। चोजी खेल हरि निरँजण, आपणा खेल खिलाया। चरन धूढ़ी बख्शे मजन, मस्तक तिलक लगाया। दो जहानी साचा सज्जण, कलिजुग ठगोरी पाया। पारब्रह्म आया पड़दे कज्जन, गुरमुख चोरी चोरी लए जगाया। अमृत आत्म पी पी रज्जण, भर प्याला इक्क प्याया। मनमुख जीव कलिजुग अग्नी दझन, पंज विकार लम्बू लाया। जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाया। जन भगतां रक्खे अन्तिम लज्जण, इक्क दुआरा रिहा वखाया। गुरचरन धूढ़ रंग चाढ़े गूढ़ देवे नाम जहाजन, साचा चप्पू इक्क लगाया। प्रगट होए देस माझन, सम्बल नगरी धाम सुहाया। शाहो भूप वड राजन, शाह सुल्तान आप अख्वाया। आपे रचया आपणा काजन, आप आपणा मंगल गाया। जन भगतां देवे सोहँ

दाजन, पल्ले एका गंढु बंधाया। अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे वाजन, दिस किसे ना आया। काया काअबा शब्द साचा हाजी हाजन, एका हज्ज रिहा कराया। दो दो आबा पुन्न सवाबन, शाह नवाबा वेख वखाया। साचा चरन दए रकाबन, चिट्टे अस्व आसण लाया। आपे चढ़या साचे ताजन, लोकमात फेरा पाया। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाजन, परवरदिगार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन धूढ़ इक्क सुहाया। चरन दुआरा साचा खोलृ, हरि साची अलक्ख जगाईआ। जन भगत दुआरे बोले एका बोल, सोहँ नाम वड्याईआ। आप वजाए आपणा ढोल, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। लक्ख चुरासी आपे मौल, गुरमुख आत्म सेजा आप सुहाईआ। बैठा रहे सदा अडोल, ना कोई सके जगत डुलाईआ। आपे तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। गुरचरन प्रीती जो जन गया घोल, अन्तिम देवे मुल पुआईआ। प्रगट होया कला सोल, अकल कला समाईआ। कलिजुग अन्तिम खेले होल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। जन भगतां आपे करे चोलृ, आप आपणा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक दुआरा इक्क रखाईआ। बंक दुआरा पुरख अबिनाशी, आपणा आप रखाया। आपे वेखे जगत तमाशी, जगत जवाहरी आप हो आया। आपे करणहारा नासी, आपे लए जवाया। आपे लेखे लाए दस दस मासी, आप आपणी दया कमाया। आपे सास आपे ग्रासी, आपे पंज तत्त अख्वाया। आपे हड्ड आपे नाड़ आपे मासी, आपे रक्त बूंद बण जाया। आपे होए दास दासी, निरगुण निरगुण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, चरन द्वार इक्क सुहाया। चरन द्वार साचा खेड़ा, हरि साचा आप वसंदड़ा। चरन दुआरे बन्नृे बेड़ा, गुरमुख साचे आप चढ़ंदड़ा। चरन द्वार करे निबेड़ा, जुग जुग भेख वटंदड़ा। चरन द्वार चुक्के झेड़ा, मिले मेल गुणी गहिंदड़ा। चरन द्वार खुलृा वेहड़ा, नौ दुआरे मारे जिन्दरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन द्वार वखाए गोकल मथरा बिन्दरा। चरन द्वार साची रास, हरि साची रचन रचाईआ। चरन द्वार शाहो शबाश, गोपी काहना इक्क वखाईआ। चरन द्वार गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। चोजी खेले खेल अपार, गुरमुख मन्दिर अन्दर जोत जगाईआ। कन्त नारी नारी कन्ता रूप अपार, सेज सुहञ्जणी इक्क विछाईआ। जोत निरँजणी सेवादार, सेवक सेवा रही कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरचरन चरन गुर एका देवे वड वड्डी वड्याईआ।

पुरख अबिनाशी हरि निरँकार, साचे तख्त सुहाया। निर्मल जोती कर आकार, आपणे रंग समाया। शब्द सरूपी जै

६ ०७

जैकार, एका नाअरा लाया। इक्क अकल्ला एकँकार, अकल कल अख्वाया। सति पुरख निरँजण किरपा धार, अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाया। लोआं पुरीआं बन्ने धार, आप आपणा वेस वटाया। सचखण्ड हरि एका कार, एका नाम वखाया। पुरी ब्रह्म लए उभार, पारब्रह्म सरनाया। शिव शंकर बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक सीस टिकाया। इन्द इन्द्रासन कर विचार, करोड़ तेतीसा संग रखाया। कबीर कबीरा पावे सार, इक्क नाम वरताया। मात पताल आकाश हरि कर आकार, करता पुरख अख्वाया। चौदां हट्ट महल्ल उसार, दीपक इक्क जगाया। तीर्थ तट ना कोई किनार, गुरदर मन्दिर मस्जिद ना कोई वखाया। पवण पाणी ना कोई हुलार, बाणी खाणी ना कोए रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। आप आपणी कल धार, हरि आपणी बणत बणाईआ। आप आपणा वेख विचार, आप आपणी जोत जगाईआ। आप आपणा दए सहार, आप आपणा होए सहाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। आप आपणा वेख साचा घर बार, आप आपणा दर सुहाईआ। आप आपणे बैठ सच्चे दरबार, आप आपणा राज कमाईआ। आपे दाता शाहो सच्ची सरकार, शाहो भूप आप अख्वाईआ। आप आपणा कर आकार, निराकार रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत दए उपाईआ। जोती जोत हरि जोत जगा, अचरज खेल खिलांयदा। लोकमात फेरा पा, आप आपणा राग अलांयदा। ब्रह्मा वेता ल्या जगा, एका शब्द सुणांयदा। चारे मुख आप खुल्हा, अट्ठे नेत्र नीर वहांयदा। हरि हरि हरि आपे गा, आपे भेव खुल्हांयदा। भेव ना सके कोई पा, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा संग रक्ख, हरि आपणी कल वरताईआ। सतिजुग साचे हो प्रतक्ख, खेले खेल बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, मनमुख जीवां दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। सतिजुग साचा रंग माण, हरि साची बणत बणाईआ। आप आपणी कर पछाण, ब्रह्मण्डां लए जगाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। एका शब्द इक्क बिबाण, एका एक रिहा चढ़ाईआ। एका जीअ एका दान, एका भिच्छया झोली पाईआ। एका राग एका कान, हरि एका एक सुणाईआ। एका हट्ट इक्क ज्ञान, इक्क दुकान एका वणज रिहा कराईआ। एका घर इक्क मकान, इक्क अकल्ला आप उपाईआ। ना कोई दीसे होर निशान, ना कोई रचन रचाईआ। जन भगतां देवे दर दुआरे माण, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सच सच करे कुड़माईआ। सतिजुग तेरा सच विहार, हरि साची बणत बणाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका एक रहे सरनाईआ। एका हरि इक्क वरतार, देवणहार

इक्क रखाईआ। एका दर इक्क भण्डार, एका रिहा भराईआ। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। बावन बणया भेखा धार, बल दुआरा वेख वखाईआ। सतिजुग तेरा वेख किनार, आप आपणा लए उपाईआ। त्रिया वेस रंग करतार, त्रैगुण माया विच ना आईआ। राम रामा लै अवतार, आप आपणी खेल खिलाईआ। आपे जाणे आपणी धार, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। गऊ ग़रीबां पावे सार, बाल अञाणे गले लगाईआ। तोड़े रावण गढ़ हँकार, एका बाण चलाईआ। राम शस्त्र अपर अपार, ना सके कोई बचाईआ। रण भूमी सुत्ते पैर पसार, रघुवंस करी कुड़माईआ। सम्मत चौदां लेख अपार, प्रभ साचा रिहा लिखाईआ। सम्मत पन्दरां कर उज्यार, चरन दुआरा बंक सुहाईआ। पन्दरां कत्तक पावे सार, सिरजणहार आप अख्वाईआ। चार कुन्ट दए हुलार, शाह भबीखन लए उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपर अपार, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी देवे इक्क हुलार, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। त्रै त्रै त्रिया तेरा राग, राम रामा राम उपाया। हरिजन मेला कन्त सुहाग, दर घर साचे मंगल गाया। आत्म जोती जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सच दुआरा वेख वखाया। सच दुआरा वेखणहारा, निहकलंक निहकामी। एका जोती नूर करे चमत्कारा, पारब्रह्म सच सच्चा स्वामी। नाम खण्डा तेज़ कटारा, हथ्थ फड़े हरि अन्तरजामी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी शामी। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरा, हरि साचे जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी करे हक्क निबेड़ा, नगर खेड़ा वेख वखाईआ। गुरसिख चुक्के जगत झेड़ा, हरि विद्या इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ।

हरि साजन जग मीतड़ा, नाम रंग करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, आप आपणी किरपा धार। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, अमृत बख्शे ठंडी ठार। सतिजुग साची दस्से रीतड़ा, चार वरन इक्क द्वार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, सो पुरख निरँजण अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन प्यार। चरन दुआरा साचा धाम, पारब्रह्म सरनाईआ। मिले मेल रमईआ राम, नाम नईआ इक्क वखाईआ। मोहण माधव घनईआ शाम, साचा सईआ इक्क अख्वाईआ। लेखे लाए माटी चाम, काया तन वेख वखाईआ। काया खेड़ा नगर गराम, सच महल्ल इक्क वसाईआ।

उच्च अटल करे बिसराम, निहचल धाम इक्क रखाईआ। सीता सुरती इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान रखाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, एका धनुख हथ्थ उठाईआ। एका मारे सच निशान, एका एक पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन द्वार इक्क वखाईआ। चरन द्वार सच सिँघासण, हरि साचा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशण, हरिजन साचे लए जगाईआ। प्रगट हो घनकपुर वासण, घर साचा वेख वखाईआ। साचे मन्दिर पावे रासण, थिर घर साचा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन द्वार वड्डी वड्याईआ। चरन द्वार सच टिकाणा, गुर पूरे आप रखाया। चार वरन इक्क बिबाणा, एका राह चलाया। एका शब्द इक्क ज्ञाना, एका नाम उपाया। एका रसना एका चिल्ला एका तीर कमाना, एका एक रहे उठाया। एका जोत श्री भगवाना, हर घट अन्दर डेरा लाया। पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, सति सरूपी आप समाया। जन भगतां बन्ने साचा गाना, नाम तन्दन इक्क बंधाया। अन्तर आत्म सुणाए साचा गाणा, अनहद साचा ताल वजाया। इक्क वखाए पद निरबाना, सोहँ हँसा रूप वटाया। सच दुआरे देवे माणा, अंसा बंसा आप हो जाया। आपे वरते आपणा भाणा, कलिजुग कंसा मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा इक्क सुहाया। चरन द्वार साची धूढ़, गुरमुख विरला पांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन दया कमांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च दृढ़ांयदा। आवण जावण कटे जूड़, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। एका रंगण रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा वेख वखांयदा। चरन द्वार साची धार, धुरदरगाही आप चलांयदा। आप आपणा रंग रंग करतार, रंगणहार आप अख्वांयदा। साचा संग विच संसार, जन भगतां आप रखांयदा। मंगन मंग दर दरबार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पंज विकारा लए फड़, एका तन्दन तन्द रखांयदा। काया तोड़ किला हँकारी गढ़, मस्तक चन्दन टिक्का नाम लगांयदा। आप आपणा घाड़ण घड़, घड़नहार पुरख समरथ आप अख्वांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मड़ी गोर ना कोई दबांयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, एका पल्लू नाम फड़ांयदा। सच दुआरे अग्गे खड़, एका धाम सुहांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई जगत विद्या अक्खर गया पढ़, वेद कतेब अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत खाणी बाणी भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दरस दरसांयदा। गुरचरन दुआरा साचा हट्ट, चौदां लोक आप खुल्हांयदा। नाम वणजारा रक्खे पट, जन भगतां तन पहनांयदा। सो पुरख निरँजण मारे सट्ट, हँ हँगता गढ़ तुड़ांयदा। एका दूजा देवे कट्ट, तीजा नैण इक्क खुल्हांयदा। चौथे घर हो प्रगट, आप आपणे अंग लगांयदा। लेखा चुक्के काया

६
०७

मट्ट, गुरमुख साजण वेख वखांयदा। झूठा बुरज जाणा ढट्ठ, थिर कोई रहिण ना पांयदा। लेखा चुक्के तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी मुख शरमांयदा। गुरचरन दुआरे सच अकट्ठ, दरगहि साची धाम सुहांयदा। त्रैगुण लोकमात माया रचया भट्ठ, प्रभ साचा लम्बू लांयदा। साची वस्त ना कोई रक्खे हथ्थ, काम क्रोध सर्ब सतांयदा। गुरचरन द्वार जो जन गए ढट्ठ, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, दिवस रैण सेव कमांयदा। पोह छब्बी तेरी साची चठ, प्रभ साचा आप करांयदा। चौदां लोकां गेड़े उलटी लट्ठ, गेड़नहार आप अख्वांयदा। नौ सत्त सोलां जोती लट लट, आप आपणी आप जगांयदा। पुरीआं लोआं मेटे फट, एका धार चलांयदा। सोहँ शब्द चलाए घट घट, बचया कोई रहिण ना पांयदा। कलिजुग खेल बाज़ीगर नट, अन्तिम वेख वखांयदा। सतिजुग साचा रिहा नट्ठ, प्रभ चरन द्वार राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरचरन दुआरा हरि निरँकारा, निरगुण इक्क सुहांयदा। गुरचरन दुआरा सच दुकान, हरि साचा मात खुल्हाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म जणाईआ। एका गुर इक्क ध्यान, एका लिव लाईआ। एका तीर इक्क निशान, एका हथ्थ उठाईआ। एका चिल्ला एका तीर कमान, एका हरि एका रिहा वखाईआ। एका रसना एका गाण, एका जिह्वा रिहा हिलाईआ। एका राग एका कान, एका वज्जे वधाईआ। एका दर हरि भगवान, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीव अन्त पछतान, ना होए कोई सहाईआ। राज राजान, सर्ब मिट जाण, सीस ताज ना कोई रखाईआ। साध सन्त होए बेपछान, माया जेवड़ी गल विच पाईआ। जूठ झूठ पीण खाण, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकार जगत तृष्ना इक्क वधाईआ। धरत निमाणी ना झल्ले भार, प्रभ दर द्वार रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका शब्द रिहा उठाईआ। जोती सरूपी कर प्यार, आदि शक्त विच समाईआ। आदि शक्त कर आकार, लोकमात फेरा पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव रहे विचार, आप आपणा धाम सुहाईआ। पारब्रह्म तेरा भेख न्यार, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, करता पुरख आप मिटाईआ। प्रगट हो अध विचकार, दिस किसे ना आईआ। कोटी कोट फिरदे दस्म दुआर, दस्म दुआरा हथ्थ ना आईआ। कोटन कोट चोटी चढ़े पर्बत ढहि ढहि डिगे डूँघी गार, काया गार इक्क वखाईआ। कोटी कोट होए शाह सवार, मन शहनशाह रिहा दौड़ाईआ। कोटी कोट रहे पुकार, बुध सुध रहिण ना पाईआ। कोटी कोट मरे विच संसार, सच द्वार दिस ना आईआ। कोटी कोट करन पुकार, अट्ठे पहर रहे बिल्लाईआ। कोटी कोट लछ्मण मीत मुरार, काहना कृष्ना दिस ना आईआ। कोटी कोट रहे चितार, रामा सीता नाअरा लाईआ। कोटी कोट करन अहार, हनवन्ता पवण रूप समाईआ। कोटी कोट रहे कर जै जैकार, नानक गोबिन्द दिस ना आईआ। कोटी कोट रो रो रहे धाहां मार,

संग मुहम्मद चार यार ना कोई फेरा पाईआ। कोटी कोट होए ख्वार, अल्ला राणी हू हू दए दुहाईआ। तूही तूं इक्क करतार, तेरी वड वड्याईआ। सतिगुर साचे सुण पुकार, कलिजुग काली चुन्नी पाईआ। धरत मात दए सहार, धरत धवल आप सुहाईआ। आप आपणा कर आकार, आप आपणा मेट मिटाईआ। प्रगट हो विच संसार, प्रभ साची जोत जगाईआ। छब्बी पोह दिवस विचार, आपणा सीस हरि जगदीस गुर संगत भेट चढ़ाईआ। भेव ना पायण राग छतीस, गीता ज्ञान ना कोई जणाईआ। खेले खेल बीस इकीस, अकल कला अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत बख्शे साचा वर, गुरचरन सच्ची सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, देवणहार जगत वड्याईआ।

इक्क अकल्ला एकँकार, कोट ब्रह्मण्ड समाया। दूजी बन्ने शब्द धार, चण्ड प्रचण्ड वखाया। तीजे पावे आपे सार, त्रैलोकां वेख वखाया। चौथे घर खेल अपार, हरिजन साचे लए मिलाया। पंचम मेला कन्त भतार, नारी कन्ता आप अख्वाया। छेवें छप्पर छन्न अपार, महल्ल अटल आप सुहाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत उज्यार, दीवा बत्ती ना कोई रखाया। अठवें अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, निरगुण निरगुण विच समाया। नौवें नौ दर खोल्हे जगत किवाड़, आप आपणा राह चलाया। दस्सवें बैठा साचा लाड़, रंग बसन्ती इक्क रंगाया। इक्क दस वेखे तेरी धार, दो दस लए जगाया। त्रै दस साचे घोड़े देवे चाढ़, चार दस लए मलाया। चौदां चौदस कर विचार, चौदां चोदां लोक हिलाया। चौदां खेले खेल अपार, चौदां चौदां विच समाया। चौदां बोले इक्क जैकार, चौदां साचा नाअरा लाया। चौदां खण्डां एका धार, चौदां विच ब्रह्मण्ड जगाया। चौदां जेरज अंडां पावे सार, चौदां उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। चौदां भेख पखण्डा दए निवार, चौदां डण्डा एका लाया। चौदां कन्ढा पार किनार, चौदां वेला अन्तिम आया। चौदां रंडा सर्ब संसार, चौदां कन्त ना कोई हंढाया। चौदां वंडां विच संसार, चौदां आपणी रिहा वंडाया। चौदां चौदां इक्क प्यार, चौदां गुरमुख रिहा कमाया। आप आपणा खेल अपार, प्रभ साचे आप रचाया। पंज दस्स तेरा इक्क प्यार, पंज दस विच समाया। छे दस तेरा कर शृंगार, एका बस्त्र तन छुहाया। सत्त दस तेरा नाम अधार, प्रभ साचे इक्क जणाया। अट्ठ दस खोल्ह द्वार, दस अट्ठ मेल मिलाया। नौ दस करे पसार, नौ दस तेरा रो रो नीर वहाया। दस दस बीस हरि जगदीस करे खेल अपार, छत्र सीस इक्क झुलाया। राग छतीस ना पाए सार, वेद पुराण ना कोई गाया। अञ्जील कुरान गई हार, चारों कुन्ट रही कुरलाया। साध सन्त करन विचार, जीव जन्त होए ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस सद चौदां चौदां वेख वखाया। बीस सद हरि

जगदीसा, आपणी कल वरतांयदा। वेख वखाए मूसा ईसा, शाह अबनूसा संग रलांयदा। एका शब्द इक्क हदीसा, एका अक्खर जाप जपांयदा। अल्ला राणी विच उनीसा, आप आपणे विच टिकांयदा। अट्ठ अठारां पीसण पीसा, त्रैगुण बेड़ा आप रुड़ांयदा। सत्त सतारां खाली खीसा, राज राजान ना कोई दसांयदा। सोलां सोलां तेरी कोई ना करे रीसा, सोलां शृंगार ना तन कोई हंढांयदा । पन्दरां पन्दरां जोग जती का, हरि जागरत जोत जगांयदा। चौदां चौदां दन्द बतीसा, दर हरि साचा गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस सद चौदां तेरी धार बंधांयदा। तेरी धारा एकँकार, एका एक रखाईआ। वज्जया ढोल हरि द्वार, लोकमात करे कुड़माईआ। तीजे घर वेख पावे सार, हरि लोचण इक्क खुल्ाईआ। चौथा घर अपर अपार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। छेवां रंग रंगे करतार, सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगाईआ। अट्ठ अट्ठ कर एका कार, हरि काया चढ़े चढ़ाईआ। नौ दर मेला जगत अपार, लक्ख चुरासी रिहा तराईआ । दर घर साचा इक्क प्यार, दसवें आप जणाईआ। आप आपणी पावे सार, ना कोई बूझ बुझाईआ। साध सन्त चढ़ चढ़ थक्के कोई ना वेखे महल्ल अटार, ना कोई कुण्डा लाहीआ। नेत्र नीर वहावन ज़ारो ज़ार, अट्ठे पहर रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर दसवां बूझ बुझाईआ। दसवें घर हरि निरँकार, आपणी जोत जगाईआ। रूप अगम्म अपर अपार, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। सोलां कर तन शृंगार, सच सिँघासण आसण लाईआ। दस पंज इक्क प्यार, पन्दरां मुख रखाईआ। चौदां हट्ट वणज वपार, हरि साचा आप कराईआ। तीर्थ तेरां तेरा तट्ट, नानक रसना गया गाया। बारां बारां कर प्रकाशन घट घट, तेज़ भान आप कराईआ। ग्यारा जोती लट लट, राह आपणा आप जणाईआ। दसवें बैठा हरि समरथ, आप आपणा रूप वटाईआ। नौ दुआरे रिहा मथ्थ, अठवें जुगत जणाईआ। सत्तवें दिसे ना कोई रत्त, छेवे छन्न ना कोई छुहाईआ। पंचम जाणे मित गत, चौथे घर मिले वड्याईआ। तीजे घर एका रथ, शब्द बिबाणा आप चलाईआ। दो जहानी कहाणी अकथ, आप आपणी रिहा चलाईआ। इक्क किनारा हरि दुआरा घर अलक्ख जाए ढठ्ठ, मिले सच सच्ची सरनाईआ। सोलां दस कर अकट्ठ, प्रभ दोहां जोड़ जुड़ाईआ। छब्बी, छब्बी पोह आया नठ्ठ नठ्ठ, लोकमात वज्जी वधाईआ। विष्नूं छड्डया आपणा हठ, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। पुरी ब्रह्म वेखे जाए ढठ्ठ, थिर रहिण ना पाईआ। शिव शंकर खोल्हे आपणी कंठ, एका रत्न बाहर कढाईआ। इन्द इन्द्रासन लग्गी अग्नी मट्ठ, प्रभ एका लम्बू लाईआ। त्रैलोक प्रभ वेखे हरि समरथ, ना कोई बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पोह छब्बी लेख लिखाईआ। छब्बी पोह जोत जगा, लोकमात तजाया। पारब्रह्म विच समा, नूरो नूर उपाया। आप आपणा भेख वटा, लेखा आपणा

रिहा लिखाया। आप आपणा वेख वखा, वेखणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पोह छब्बी दिवस सुहाया। छब्बी पोह सच दिहाड़ा, घर साचे जोत जगाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़ा, लोकमात करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी लुट्ट जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आईआ। शब्द उठाए अगम्मी धाड़ा, धार आपणे हथ्थ रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा इक्क अखाड़ा, सत्तां दीपां संग रलाईआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे चंगा माढ़ा, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। आपे फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले फेरा पाईआ। मनमुख जीवां मगर लगाए पंचम धाड़ा, ना कोई सके मात बचाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, अट्ठे पहर रिहा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सगन आप मनाईआ। छब्बी पोह सम्मत चौदां बीस सद, हरि साचा रचन रचांयदा। शब्द वजाए साचा नद, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। आप उपाए आपणा पद, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। अमृत आत्म प्याए साची मद, एका जाम रखांयदा। नौ दुआरे पार हद्द, घर दसवें मेल मिलांयदा। छब्बी पोह हरिसंगत प्रभ साचा सद, सच सिँघासण डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच धारा आप सुहांयदा। शब्द सिँघासण कर त्यार, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, वेद कतेब भेव ना राईआ। अगाध बोध हरि लेख लिखार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। ऊँचो ऊँच ऊँच करतार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वस्सया बाहर, माता पिता ना कोई उपाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना केस दिसे विच संसार, ना कोई मूंड मुंडाईआ। रत्ती रत्त ना लए अधार, रक्त बूंद ना कोई रखाईआ। राग छतीस ना पाए सार, ना कोई लेख लिखाईआ। चार वेद होए हैरान, अठारां पुराण देण दुहाईआ। अञ्जील कुरान सर्ब पछताइन, प्रभ अबिनाशी भेव ना पाईआ। पारब्रह्म हरि शाहो शबाश, दो जहानां आप अख्वाईआ। एका शब्द एका आण, इक्क भगवान रिहा रखाईआ। एका चिल्ला तीर कमान, आप आपणा रिहा उठाईआ। छब्बी पोह दिवस महान, हरि साचे जोत जगाईआ। कलिजुग जीव सर्ब पछताण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। नानक पाया पद निरबान, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, दर दरवेशा अलक्ख जगाईआ। एका देवे सच्चा दान, नाम सत्त वस्त झोली पाईआ। गुर गोबिन्द एका ज्ञान, एका मन्त्र रिहा दृढ़ाईआ। चरन कँवल बख़्शे मेहरवान, मेहरवान आप अख्वाईआ। कल्गी तोड़ा सीस महान, धुर निशान आप टिकाईआ। मंगे मंग वर वाली दो जहान, आप आपणी झोली डाहीआ। प्रभ अबिनाशी कर परवासा, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलिजुग वेले अन्तिम करे प्रकाशा, तेरा लेखा लेखे लाईआ। चार वरन इक्क जपाए नाम, हड्ड मास नाड़ी लेखे लाईआ। धुरदरगाही अमृत प्याए प्रभ साचा जाम, पंचम रूप समाईआ। पंचम जोधा

सूरबीर बली बलवान, शब्द खण्डा इक्क चमकाईआ। वेख वखाए जीव जन्त जहान, साध सन्त वेख वखाईआ। दर दर फिराए राज राजान, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। लिखे लेख हरि भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोधा सूर बली बलवान, बावन भेखा आप वटाईआ। ना कुछ खाण पीण ना पकवान, दीन ईमान ना कोई रखाईआ। हिन्दू सिक्ख मुस्लिम ईसाई ना कोई करे पछान, नेत्र नैण ना कोई दरसाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ होए वैरान, प्रभ साचे ना जोत जगाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वड विद्‌वान, ज्ञान ध्यान पई लड़ाईआ। अट्ठ सट्ठ कर कर थक्के जीव अशनान, दुरमति मैल ना कोई गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां बीस सद शब्द चलाए इक्क हदीस, सन्त सुहेले साचे सद आत्म दर दए वधाईआ।

आत्म दर सच वधाई, हरि हरि साचा पाया। छब्बी पोह करे कुड़माई, जो जन दुआरे आया। जोत निरँजण वज्जी वधाई, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। साचा सगन रिहा मनाई, आप आपणा दिवस सुहाया। बस्त्र भूषन गहिणा तन छुहाई, नाम रंगीला पलँघ विछाया। उप्पर देवे लेफ़ तलाई, इक्क कबीरा संग रलाया। दो जहानां मिटे लड़ाई, पंज तत्त नेड़ ना आया। साचे रथ रिहा चढ़ाई, रथ रथवाही आप अख्वाया। फड़ फड़ बांहों पार कराई, अधविचकार ना कोई रखाया। चरन सरन हरि जोड़ जुड़ाई, जोती जोड़ा वेख वखाया। शब्द घोड़ा रिहा दौड़ाई, दिस किसे ना आया। सोलां कलीआं आसण पाई, एका नाम तंग कसाया। शाह अस्वार बैठा चाँईं चाई, नीला नीली धारों बाहर कढाया। पारब्रह्म मेला गोबिन्द साचा माही, विछड़ कदे ना जाया। वेख वखाए थाउँ थाँईं, सम्मत चौदां रुत्त सुहाया। एका इक्की आप आपणी पाई, साची सिक्खी रिहा उपाया। धारा तिक्खी इक्क वखाई, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। सीस धड़ कोई दिसे नाही, खण्ड खण्ड आप वखाया। चोटी जड़ हरि लए फड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाया। सच दुआरा सच दिवस सच दरवाजा, हरि साची जोत जगाईआ। पहले घर ग़रीब निवाजा, सच निशाना रिहा वखाईआ। दूजे दर चिट्टा अस्व ताजा, प्रभ साचा रिहा दौड़ाईआ। तीजे मेल ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। चौथे घर साजन साजा, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। पंचम वज्जे अनहद वाजा, पुरख अबिनाशन सच सिँघासण बैठा रिहा वजाईआ। छेवें घर मारे वाजां, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। सत्तवें देवे साचा दाजा, सोहँ पल्लू दात बंधाईआ। अठवें मेला राजन राजा, शाहो भूप आप अख्वाईआ। नौ दर रचया जगत काजा, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। दसवें घर देस माझा, शब्द

१५
०७

सिँघासण इक्क इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छब्बी पोह देवे वड्याईआ। साचे घर आसण ला, हरि आपणी रचन रचाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहा, गुर गोबिन्द रिहा जगाईआ। गुर गोबिन्द मेल मिला, आप आपणा शब्द उपाईआ। जोती निर्मल इक्क जगा, एका रंग रंगाईआ। ताल तलवाड़ा रिहा वजा, दिस किसे ना आईआ। शब्द अखाड़ा रिहा लगा, लोआं पुरीआं करे लड़ाईआ। नाम खण्डा रिहा चमका, दहि दिशा वेख वखाईआ। चारे कुन्टा लए हिला, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पुरीआं लोआं दए हिला, भेव ना कोई पाईआ। चौदां तबकां मेट मिटा, आप आपणा वेख वखाईआ। त्रैलोकी नाथ हरि आप अख्वा, त्रैलोकां मेटे शाहीआ। नौ खण्ड हरि डंक वजा, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। सत्तां दीपां रिहा सुणा, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आदि शक्त आदि भवानी जोत निरँजण मेल मिलाईआ। गुरमुख हँस बणाए फड़ फड़ काँ, अमृत आत्म सीर प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे दिवस दए वधाईआ। साचे दिवस मिली वड्याई, ब्रह्मा रसना गाया। पारब्रह्म तेरी सरनाई, वेला अन्तिम आया। साचे घर होए जुदाई, भेव ना किसे राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरी अगम्म शब्द अगम्म आपणा आप अल्लाया। अगम्म अथाह बेपरवाह, एका शब्द जणांयदा। शब्दी शब्द बण मलाह, शब्दी शब्द संग मिलांयदा। शब्दी शब्द सुणाए एका नाँ, आप आपणा नाउँ दृढ़ांयदा। सोहँ सो वेख वखा, सो पुरख निरँजण दर खुल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। बुझ बुझाए हरि भगवाना, आपणी कल वरताईआ। एका देवे धुर फ़रमाणा, चौदां लोकां रिहा सुणाईआ। चौदां लोकां इक्क ज्ञाना, एका धुन उपजाईआ। एका मण्डल एका रास एका गोपी एका काहना, एका खेल खिलाईआ। एका राग एका शब्द इक्क तराना, एका सुर ताल हिलाईआ। एका जोधा सूरबीर बली बलवाना, एका गाना हथ्थ बंधाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, एका आपणी रसना कमन्द खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि उज्यार, आपणा आप कराया। छब्बी पोह दिवस विचार, आप आपणा भेख वटाया। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश ना कोई आधार, मन मति बुध ना कोई धराया। निरगुण सरगुण खेल अपार, निरगुण सरगुण विच समाया। निरगुण जोती हरि करतार, आप आपणा लए उपाया। गोबिन्द काया कर प्यार, साचा मेल मिलाया। सगली चिन्दा दए निवार, गुणी गहिंदा दया कमाया। सागर सिन्धा अमृत धार, आप आपणी रिहा वहाया। जोधा सूरा वड मृगिन्दा, शब्द खण्डा हथ्थ कटार रिहा चमकाया। मनमुख जीव लाए निन्दा, गुरमुख साचे लए जगाया। गुरसिख बणाए साची बिन्दा, जो सरसे गया रुढ़ाया। जोती जोत सरूप

१५
०७

हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह सच दिहाड़ा हरिसंगत मेल मिलाया। हरिसंगत हरि साचा मेला, आपणा आप करांयदा। आपे गुरु आपे चेला, गुर चेला रूप समांयदा। आपे जाणे आपणा वेला, वेला वक्त ना कोई सुणांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला, खेलणहार आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी चाढ़े तेला, साचा सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा रंग रंगणहारा, जोती नूर अकाला। गुरमुखां दर दुआरा मंगणहारा, दीनां बंधप दीन दयाला। शब्द घोड़े चिट्टे अस्व साचा तंग कसणहारा, जुग जुग खेले खेल निराला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह देवे वर, चार वरनां एका सर, गुरचरन द्वार सच्ची धर्मसाला। साचा धर्म सच्ची धर्मसाल, सच सुच्च आप वरतांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, लाल अनमुल्लड़े आप रखांयदा। आपे फल लगाए साचे डाल्, पतझड़ अन्तिम करांयदा। आपे काल आपे महांकाल, आपे गोबिन्द रूप अख्वांयदा। आपे माया आपे जाल, आपे बंधन तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे विच टिकांयदा। छब्बी पोह खेल न्यारा, खेले वड संसारया। माया ममता मोह संसारा, दीपक जगे जोत अपारया। लोआं पुरीआं पार किनारा, एका साचा धाम सुहा रिहा। थिर घर तेरा वेख दुआरा, आप आपणा रंग रंगा रिहा। आपे करे बन्द किवाड़ा, आपे मुख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। कलिजुग अन्तिम कर रुशनाई, मेटे अन्ध अँध्यारा। चार वरनां रिहा जणाई, जूठ झूठ मात पसारा। कलिजुग कूड़ा दए दुहाई, चारों कुन्ट धुंधूकारा। पंच तत्त रहे शरमाई, पंचम मीता मोह विकारा। पंचम मेला सहिज सबाई, प्रभ बख्शे चरन दुआरा। छब्बी पोह वड वड्याई, जन भगतां मेला हरि निरँकारा। निरगुण आप अख्वाई, सरगुण बन्ने धारा। निरगुण भेव ना जाणे राई, बिन बूझे डूबे संसारा। जिस जन गुर पूरे दया आप कमाई, देवे नाम अधारा। सति पुरख निरँजण अलक्ख अगोचर एका देवे नाम वड्याई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दिवस सच सुहञ्जणी रैण घर साचे ख़ुशी मनाईआ। छब्बी पोह भिन्नड़ी रैण, नेत्र नैण उग्घाड़या। गुरमुख वेखे साक सज्जण सैण, बैठे चरन द्वारया। नाता तुट्टे भाई भैण, जो जन निउँ निउँ करन निमस्कारया। रसना गुण ना सके कोई कहिण, वेद कतेब ना किसे विचारया। गुरमुख गुरसिख धाम अकट्टे रहिण, उच्च महल्ल अटल इक्क चुबारया। अट्ठे पहर दरस नेत्र नैण, लोचण मूंद आप अख्वा रिहा। जुग जुग चुकाए लहिण देण, गुर गोबिन्दा वेख वखा रिहा। लाड़ी मौत ना खाए डैण, जिस जन दर आए दर्शन पा ल्या। धर्म राए मुख शरमायण, चित्रगुप्त ना हिसाब वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी

रैण आप वड्या ल्या। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, गुर पूरे दर्शन पाया। हरिसंगत संग ल्या रला, आप आपणा विच टिकाया। एका दूजा दए गंवा, एका रंगण रंग रंगाया। चार वरन बणाए भैण भ्रा, ऊँच नीच रहिण ना पाया। अञ्जील कुरान वेद पुराण, खाणी बाणी एका धाम बहा, प्रभ एका पल्लू उप्पर पाया। एका शब्द दए अल्ला, अलाही नूर इक्क दरसाया। बेऐब परवरदिगार ख़ुद आप अख्वा, ऐनलहक्क मेल मिलाया। शब्द तराना आप वजा, राग रागनी सेवा लाया। नानक गोबिन्द गया गा, पुरख अकाला इक्क सलाहया। ईसा मूसा रहे ध्या, गल जेवड़ा एका पाया। संग मुहम्मद चार यार, एका नाअरा रहे ला, नेत्र रो रो नीर वहाया। अल्ला राणी गल पलड़ा रही पा, वेला अन्तिम आया। दो जहान ना दिसे कोई मलाह, ना कोई बेड़ा बन्ने लाया। सम्मत चौदां राह रिहा तका, चौदां लोकां वेख वखाया। चौदां तबकां दए हिला, इक्क हुलारा, आप लगाया। लोकमात रचन रचा, गुरमुख साचे लए जगाया। गुर गोबिन्द वेख वेखा, हरि गोबिन्द मेल मिलाया। जीव जन्त दूष्ट हँकारी जगत निन्दा ला, निन्दक निन्दया मुख धराया। हरिजन साची बिन्दा आप उपजा, घर साचे जन्म दवाया। सागर सिन्धा अमृत धार वहा, सांतक सति कराया। सद बखशिंदा आप अख्वा, लोकमात जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण एका रंग रंगाया। भिन्नड़ी रैण रक्खी आस, एका ओट रखाईआ। गोबिन्द हरि बुझाए प्यास, अमृत जाम प्याईआ। भगत दुआरे होए दासी दास, पोह छब्बी सेव कमाईआ। जिस जन तजाया मदिरा मास, पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाईआ। लेखे लाए सास स्वास, सोहँ रसना जो जन गाईआ। पार किनारा पृथ्मी आकाश, सचखण्ड चरना हेठ दबाईआ। आप आपणे रक्खे पास, जोती जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण संग रखाईआ। भिन्नड़ी रैण ख़ुशी मना, गुर संगत रही जगाईआ। हरि हरि नेत्र दर्शन पा, हरि हरि वेख वखाईआ। दर दर गया इक्क खुल्ला, घर घर रही जगाईआ। अलक्ख निरँजण भेख वटा, भेखाधारी भेख ना राईआ। कलिजुग लेखे रिहा लिखा, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। भेख पखण्डा दए मिटा, जूठ झूठ दए खपाईआ। सतिजुग साचा ठांडा ठंड दए वरता, हरिजन साचे संग रलाईआ। सतिगुर पूरा बण मलाह, जोती जामा भेख कराईआ। शब्दी शब्द दए जणा, शब्द शब्दी पार कराईआ। भिन्नड़ी रैण तेरा सगन आप मना, साची धार बंधाईआ। नाम कज्जल नेत्र पा, तेरा रूप सुहाईआ। तेरा घुँघट देवे लाह, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। गुरमुखां पल्ला दए फड़ा, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आपणा हल्ला दए बुला, मनमुख जीव रहे कुरलाईआ। गोबिन्द डल्ला लए मिला, चरन ध्यान इक्क लगाईआ। सम्बल नगरी धाम अवल्ला दए वखा, आप आपणा गढ़ बणाईआ। अछल अछेदा खेल खिला, भेव अभेदा भेव छुपाईआ।

जला थला किसे दिसे ना, रवि ससि सूरज चन्न फेरीआं रहे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भिन्नड़ी रैण संग रखाईआ। भिन्नड़ी रैण हरि रंग माण, गुरमुखां आप सुणाइन्दी। मिल्या मेल श्री भगवान, कलिजुग दुक्खां मेट मिटाइन्दी। धुरदरगाही धुर फ़रमाण, साची सिख्या सिक्ख समझाइन्दी। सोहँ मन्त्र इक्क ज्ञान, चार वरनां इक्क सुणाइन्दी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण वसाया घर, सच द्वार इक्क सुहाइन्दी। सच द्वार हरि निरँकार, एका एक वखाया। भिन्नड़ी रैण कर निमस्कार, आपणा सीस झुकाया। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, इक्क बैराग रखाया। सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले मार्ग पाया। दोए जोड़ ढहि पए द्वार, लेखा लेख रहिण ना पाया। धारी केसा करे विचार, दर दरवेशा दिस ना आया। मूंड मुंडाए अन्ध अँध्यार, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाया। मुस्लिम सुन्नी हाहाकार, अल्ला राणी मुख लोकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां वेख वखाया। सम्मत चौदां तेरा रूप, हरि आपणे हथ्थ रखाया। प्रगट होए सति सरूप, सति पुरखां नाउँ धराया। मेट मिटाए अन्ध कूप, इक्क अज्ञान मिटाया। डेरा ढाहे जूठ झूठ, माया मोह चुकाया। जन भगतां आपे गया तुठ, आप आपणी दया कमाया। गुर गोबिन्दे मंगी मंग एका मुट्ठ, वेले अन्तिम झोली पाया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठ, नौ सत फेरा पाया। आत्म अन्तर रिहा लुट्ट, आप आपणा मुख छुपाया। तीर निराला रिहा छुट्ट, सोहँ मुखी उप्पर लगाया। कलिजुग जड़ देवे पुट्ट, आप आपणी हथ्थी बूटा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ऐड़ा अथर्बण अक्ख आपणी वेख, ऐड़ा अल्ला अलाही नूर उपाया। ऐड़ा अक्ख रिहा उग्घाड़, अथर्बण दए दुहाईआ। चारों कुन्ट आई हार, ना दिसे कोई सहाईआ। जूठ झूठ कर पसार, आप आपणी पत्त गंवाईआ। साधां सन्तां मारे मार, जीवां जन्तां रिहा दुरकाईआ। गुरमुख विरले मेला नारी कन्ता, कन्त सुहाग आप अख्वाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। जुग जुग बणाए आपणी बणता, बेड़ा बन्नृणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह गुरसिक्खां नाता जगत तोड़े मोह, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। चरन प्रीती साची रीत, सतिजुग आप चलाईआ। ना कोई देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, चार द्वार ना कोई बणाईआ। देवे नाम शब्द अनडीठ, अजप्पा जाप कराईआ। काया मिट्टी करे कौड़ा रीठ, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि निरँकारा, आपणा आप उपाया। आपे वस्सया बेऐब परवरदिगारा, आपे नूरो नूर समाया। आदि अन्त ना पारावारा, भेव अभेद भेव ना कोई राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, अचरज खेल

१८ ०७

वरतांयदा। जोती जोत कर उज्यारा, जोती जोत समांयदा। शब्दी शब्द कर पसारा, शब्दी बणत बणांयदा। शब्दी शब्द दए अधारा, शब्दी शब्द उपांयदा। शब्द शब्दी खेल अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखांयदा। शब्द खण्ड शब्द ब्रह्मण्ड, शब्दी वंड वंडाईआ। शब्द जेरज शब्द अंड, शब्द उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। शब्द सुहागण शब्द रंड, शब्द शब्दी करे कुड़माईआ। शब्द शब्दी दात आपे वंड, शब्द शब्दी झोली पाईआ। शब्द शब्दी पाए ठंड, शब्द शब्दी अग्न लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छब्बी पोह दए वड्याईआ। छब्बी पोह लेख अवल्ला, हरि साचे आप कराया। सम्बल नगरी सच महल्ला, गोबिन्द गढ़ सुहाया। सच दुआरा आपे मल्ला, आप आपणी अलक्ख जगाया। नाम कटारा एका भल्ला, एका खण्डा हथ्थ उठाया। एका बोलणहारा हल्ला, इक्क ललकार रिहा लगाया। इक्क अकल्ला आप आपणे विच रल्ला, हर घट बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वंड वंडाया। लोकमात हरि रचन रचा, आपणी वंड वंडाईआ। ब्रह्मे ब्रह्म इक्क जणा, एका बूझ बुझाईआ। चारे वेदां आप लिखा, त्रैगुण तत्त समाईआ। पंचम नाता जोड़ जुड़ा, निरगुण धार चलाईआ। सरगुण मेला बेपरवाह, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा नाउँ धरा, निरँकारा आप अख्वाईआ। आप आपणी खेल रचा, धरत धवल सुहाईआ। जल बिम्ब हरि समा, आपणा रंग वखाईआ। नाम मृदंग इक्क वजा, एका राग अलाईआ। शब्द रंगीला सच पलँघ विछा, उप्पर बैठा आसण लाईआ। आपणा दुआरा आपे मंग मंगा, मंगणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम धरा, सतिजुग देवे सच वड्याईआ। सतिजुग साचा नाम धराए, सन्तन सन्त कमारा। आप आपणा भेख वटाए, खेले खेल अपारा। बराह रूप कोई रेख ना राए, जोधा सूरबीर बली बलकारा। यज्ञै पुरख आप हो जाए, वरते हरि वरतारा। हाव गरीव कर चमत्कार, खेले खेल अपर अपारा। नर नरायण रूप अपार, पंचम मेला हरि गिरधारा। कपल मुन इक्क अधार, भरे नाम भण्डारा। दत्ता त्रै दए अधार, गुण अवगुण वेख विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल संसारा। रिखव देव कर कर धार, आपणा रूप वटाईआ। पृथू पृथ्मी पाए सार, अन्न दान झोली पाईआ। मत्सय तेरा खेल अपार, मच्छ मुख इक्क लगाईआ। कच्छ बैठा मूंह दे भार, मिन्दिरा पिठ उठाईआ। मोहणी रूप आप करतार, आपणा ल्या वटाईआ। वैद धनंतर दए अधार, एका सिख्या रिहा सुणाईआ। बावन रूप कर श्रृंगार, राजा बलि बलि छल छलाईआ। हँस हँसा पावे सार, बाल अञ्याणा ज्ञान सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी जोत जगाईआ। जुग जुग आपणा भेख

वटा, आपणी जोत जगाया। नर सिँघ रूप हरि आप अख्वा, भगत प्रहलाद तराया। नर नरायण हरि जोत जगा, ध्रू बालक गले लगाया। हरी हरि हरि आप अख्वा, गज बेड़ा बन्ने लाया। वार अठारां जोत जगा, सतिजुग बेड़ा आप तराया। राम रामा लए उपा, लेखा लेखे विच गणाया। आप आपणी दया कमा, आप आपणा लए पल्टाया। सतिजुग साचे झोली पा, त्रेते जन्म दवाया। त्रिया रूप वेस वटा, रामा रघुवंस अख्वाया। परस परसा बणत बणा, शत्रु होए सवाया। क्षत्री लेखे लए ला, आप आपणा संग निभाया। गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ा, रावण रावण रामा घाया। शाह भबीखन वेख वखा, छत्र सीस झुलाया। ग़रीब निमाणे गले लगा, एका चरन छुहाया। रिखी रिखीशर दया कमा, दलिद्री दलिद्र मिटाया। आप आपणी वंड वंडा, आप आपणा लए उठाया। त्रेता त्रिया लेखे ला, त्रैगुण विच समाया। द्वापर हरि साची जोत जगा, वेद व्यासा लेख लिखाया। पुराण अठारां लेखा गया लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। ब्रह्म पुराण भेव खुल्हा, बीस हज़ार सलोक उपाया। पदम भेव ना जाणे रा, पचवंजा हज़ार सलोक रसना गाया। विष्नूं लेखा आप जणा, तीस हज़ार बणत बणाया। शिव शंकर आपे राहे पा, चौबीस हज़ार जन्म दवाया। श्री मध भगवत लए उपा, दस अठ्ठ अठारां हज़ार वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेद व्यासा सेवा लाया। नारद पुराण कर त्यार, हरि आपणी दया कमाईआ। पच्ची हज़ार सलोक वेख वखान, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी गणत गणाईआ। अग्नी वेखे मार ध्यान, चौदां हज़ार पंज सौ करे कुड़माईआ। मारकण्डे होया मेहरवान, नौ हज़ार इक्क पढ़ाईआ। भविश तेरी पावे सार, पन्दरां हज़ार चार सौ लेख लिखाईआ। ब्रह्म वेवरत कर पछान, अठ्ठ अठारां विच समाईआ। गरुड़ वेखे हो हैरान, हज़ार सतारां रिहा पढ़ाईआ। स्कन्द देवे इक्क ज्ञान, इक्कासी हज़ार सौ इक्क नाल रलाईआ। ब्रह्मण्ड होए दर हैरान, हज़ार बारां वेख वखाईआ। मत्सय तेरा जगत निशान, दस हज़ार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेद व्यासा बूझ बुझाईआ। वेद व्यास हरि दर पा, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। नारद मुन संग रला, आपणा लेख लिखांयदा। ब्रह्मा सुत दया कमा, साचा मार्ग लांयदा। चारे वेदां आप लिखा, चार सलोक इक्क पढ़ांयदा। बारां अक्खर जाप जपा, द्वापर राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा कर उज्यार, हरि आपणी जोत जगाईआ। द्वापर तेरी बन्ने धार, नंद जसोदा मिले वड्याईआ। देवे दरस करे प्यार, पृथ्मी आकाश ख़ुशी मनाईआ। शाम शामा रूप अपार, पंचम लोक रंग वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे साचा मेला, आपणा आप करांयदा। बिदर सुदामे चाढ़े तेला, द्रोपत लज्जया रखांयदा। पंचम मीता सज्जण

सुहेला, एका एक अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वेला, आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा अन्त विहार, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। काहना कृष्ना लए अवतार, यादव वंसी रंग लाया। दो जहानां पावे सार, युद्ध युधिष्टर एका लाया। दुष्ट हँकारी दए सँघार, दर दुर्योधन रहिण ना पाया। कूड़ कूड़ा मेट पसार, आप आपणा कर्म कमाया। दुरबाशा तेरा कर विचार, तेरी धार चलाया। करोड़ छिआनवे लाए पार, तीर कटार ना कोई रखाया। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा मुख भवाया। द्वापर तेरा पार किनार, कलिजुग वेला आया। कलिजुग होया ख़बरदार, प्रभ साचे आप जगाया। दोए जोड़ करे निमस्कार, मंगे वर आप आपणी झोली डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूठ झूठ भरे भण्डारया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तेरे अन्दर फड़ सुहाए महल्ल अटल चुबारया। तामस तृष्ना तेरा कर शृंगार, आप आपणा दए प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग भरया कूड़ भण्डारया। कलिजुग कूड़ा मंग मंग, आपणी झोली डांहयदा। पंच विकारा मिल्या संग, साची ख़ुशी मनांयदा। लोकमात वजाए आपणा मृदंग, धर्म जड़ आप कटांयदा। वेख वखाए गोदावरी गंग, साचा सर ना कोई धरांयदा। अठसठ तीर्थ करे भंग, आप आपणा डौरु वांहयदा। मनमुख जीव करे नंग, पल्ले नाम ना कोई रखांयदा। धर्म राए वर रिहा मंग, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। कलिजुग तेरा मंगे संग, चरन ढहि ढहि मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। दर द्वार हरि सुहा, हरि आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग वर झोली पा, साध सन्त भेव ना राईआ। आप आपणा रंग चढ़ा, दिस किसे ना आईआ। त्रैगुण माया डंक वजा, पंच विकारा करे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे मेट मिटाईआ। कलिजुग वर आपणा पा, आपणा कर्म कमांयदा। जूठ झूठ ना मिले कोई थाँ, धरत मात ना वेख वखांयदा। गऊ ग़रीब अगों कर गए ना, कोई ना संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग इक्क ज्ञान दिवांयदा। कलिजुग देवे इक्क ज्ञान, एका शब्द जणाईआ। इक्क अकल्ला की बणे प्रधान, ना चलणी कोई चतुराईआ। सति धर्म देवे बली बलवान, ना देवे जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग एका बूझ बुझाईआ। कलिजुग मंगी दूजी मंग, हरि वेला वक़त सुहाया। इक्क वखाए तेरा संग, आप आपणा भेख वटाया। चौथे जुग चार मलँग, बैठे वेस वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चारे मंगन मंग, इक्क दुआरा वेख वखाया। प्रभ अबिनाशी बैठा नाम पलँघ, पावा चूल ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दे मति आप समझाया। चारे

२१ ०७

जुग हरि बुलाए, आपणी बूझ बुझाईआ। सतिजुग तेरा सति वखाए, त्रेता तीर चलाईआ। द्वापर तेरा यति धराए, कलिजुग पए दुहाईआ। सूरबीर कवण अख्वाए, कलिजुग बेड़ा ल्ए उठाईआ। जीव जन्त कुकर्मी दए कराए, क्रिया कर्म ना कोई रखाईआ। एका पट्टी दए पढ़ाए, जगत विद्या इक्क वखाईआ। तीर्थ तट्टी दए फिराए, साधां सन्तां मुख भवाईआ। जूठ झूठी हट्टी दए विकाए, ना कोई मुल्ल पवाईआ। बाज़ीगर खेल नटूआ नटी दए कराए, स्वांगी स्वांग वरताईआ। काया मट्टी अग्ग लगाए, धीरज धीर ना कोई धराईआ। धर्म राए दी चट्टी सर्ब भराए, ना कोई वेले अन्त सहाईआ। साची खट्टी ना कोई खटाए, जूठ झूठ वणज कराईआ। जोत लट लटी ना कोई जगाए, उच्चे टिल्ले मन्दिर अन्दर बैठा आसण लाईआ। दीवा बत्ती ना कोई रखाए, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। कमलापती ना कोई मनाए, घर घर बैठे धूंणीआँ ताईआ। नार सुहागण सती ना कोई अख्वाए, नौ दर ना कोई तजाईआ। साची मती ना कोए समझाए, वा तत्ती ना कोए लगाईआ। नाम रथी ना कोई चढ़ाए, रथ रथवाही ना कोई दिसाईआ। सर्बकल समरथी हरि आप अख्वाए, कलिजुग तेरा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे जुग रिहा समझाईआ। सतिजुग साचा उठया, आप आपणा बल धारे। पुरख अबिनाशी सतिगुर साचे जे तूं कलिजुग तुठया, दे इक्क भण्डारे। अन्तिम वेले गुरमुख रक्खां तेरे एका मुठया, ना कोई दूसर पावे सारे। लक्ख चुरासी जाए लुट्टयां, जग कूड़े कूड़ पसारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग देवे इक्क भण्डारे। सतिजुग साचे भर भण्डार, हरि आपणी दया कमाईआ। सेवक तेरी सेवादार, साची सेव लगाईआ। अट्ठे पहर रहिणा ख़बरदार, ठग्ग चोर यार कोई लुट्ट ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, एका राह तकाईआ। गुरमुख साचे ल्ए उभार, तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। सोहँ शब्द हरि भण्डार, सतिजुग साची वंड वंडाईआ। गुरमुखां देणा कर प्यार, साचे मन्दिर आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे मिली वड्याईआ। त्रेता उठे नेत्र खोल्ह, आपणा कर्म विचारया। पुरख अबिनाशी तेरा बोल, लग्गे राम प्यारया। साचे कंडे देणा तोल, ना दिसे पासा हारया। एक वस्त जगत अमोल, बख्शे चरन प्यारया। काया कीटी कीट फोल, लाल अनमुल्लड़ा इक्क संभारया। सदा सदा सद रक्खया कोल, दर तेरा इक्क विचारया। तेरा नाम मृदंगा वज्जे ढोल, सतिजुग साचा नाल रला रिहा। सोहँ जैकारा सतिजुग बोल, त्रेता राम सुणा रिहा। दोहां आत्म रिहा मौल, हरि जोती नूर उपा रिहा। दर दुआरे कीता कौल, प्रभ पूरा आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा लेख लिखा ल्या। त्रेता तेरा नाम जैकार, एका नाअरा लाया। गुरमुख साचे ल्ए उभार, गुर मन्त्र इक्क जणाया। एका बख्शे चरन

२३
०७

प्यार, चरनोदक मुख चुआया। वरन गोत ना कोई विचार, जात पात ना लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा भेख तेरे अग्गे धर, तेरा दर खुल्लाया। द्वापर वेखे मार ध्यान, मिले नाम बिबाना। ना कोई चतुर सुघड़ स्याण, ना जाणे कोई विद्वाना। ना कोई तीर ना कोई कमान, शस्त्र हथ्थ ना कोई उठाना। तेरा नाम जगत बलवान, ना मेटे कोई निशाना। खाणी बाणी सारे गाण, गावत गावत वेद पुराणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, द्वापर दित्ता एका वर, घर साचा शाह सुल्ताना। द्वापर तेरी साची सेवा, प्रभ साचा आप लगांयदा। गुरमुखां रसना रस देणा जिह्वा, जिह्वा रस आप अख्वांयदा। साचे मस्तक कौस्तक मणीआ लाउणा थेवा, जोत निरँजण वेख वखांयदा। मिले मेल अलक्ख अभेवा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। आपे आए दया कमाए वड देवी देवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेव करांयदा । द्वापर साची सेवा ला, हरि साची दया कमाईआ। गुरमुखां अन्दर आप वसा, रसना जिह्वा रिहा हिलाईआ। एका मार्ग आप वखा, दे मति रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग रिहा अन्त हिलाईआ। कलिजुग कूड़ा उठ बलकार, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। आपणी बाहां रिहा हुलार, दहि दिशा वेख वखाईआ। प्रभ अबिनाशी तेरा तुटा प्यार, लोकमात वज्जी वधाईआ। धर्म जड़ दए उखाड़, थिर कोए रहिण ना पाईआ। अग्नी अग्ग लगाए तत्ती हाढ़, साधां सन्तां आप जलाईआ। नौ दुआरे देवे वाड़, अट्ठे पहर जीव कुरलाईआ। मगर लगावे पंचम धाड़, ना सके कोई बचाईआ। अग्नी अग्ग बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी रही जलाईआ। टिकण ना देवे किसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, तीर्थ तट्टां वेख वखाईआ। गुरदर मन्दिर अन्दर चार दिवार सच दिवारा पाड़, धीरज धीर ना कोई धराईआ। ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधे मुल्लां शेखां पीरां टोहां नाड़ नाड़, रक्त बूंद वेख वखाईआ। गुरमुख साजन जिथ्थे बैठे लाड़, दूरो दोए जोड़ बैठा सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी पिच्छे अगाड़, चारों कुन्ट शब्द खण्डा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग दित्ती इक्क वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकार, लोकमात वड्ड वड राजा। आप आपणा कर पसार, आप आपणा साजण साजा। निन्दक निन्दया कर अहार, क्रिया कर्म कूड़ कुड़िआरी रचया काजा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा साजन साजा। कलिजुग आपणा कर्म कमा, प्रभ साचे आख सुणांयदा। सतिजुग वंड वंड लई वंडा, एका मुट्ठी झोली पांयदा। त्रेता आपणा हक्क रखा, चरन द्वार इक्क सुहांयदा। द्वापर हिस्सा बैठा पा, गुरमुखां हिरदे अन्दर डेरा लांयदा। कलिजुग आपणा रंग चढ़ा, काला सूसा तन पहनांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द जणांयदा। कलिजुग तेरा काया बल, हरि

साचे वेख वखावणा। फेरा पाउणा जल थल, डूँघी डल आप हिलावना। नौ खण्ड सत दीप फिरना घड़ी घड़ी पल पल, गुर दर मन्दिर अन्दर डेरा लावणा। जूठ झूठ चलाउँणा एका हल्ल, माया ममता बीज बिजावणा। दूई द्वैती गए भुल्ल, मनमुख जीवां आप भुलावणा। दीपक जोती किसे ना जाए बल, ज्ञान दीप आप बुझावना। आप आपणी वरती कल, कलिजुग साची रुत्त सुहावणा। कलिजुग साचा कर पुकार, प्रभ साचे आख सुणांयदा। इक्क अकल्ला गया हार, ना कोई संग रखांयदा। मंगी मंग धुर दरबार, भिच्छया इच्छया पूर करांयदा। वर दाता आप हो निरँकार, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा संग निभांयदा। कलिजुग तेरा संग रखा, तेरा रूप वटाया। इक्क मुहम्मद दए उपा, आप आपणा बीज बिजाया। अल्ला हू हू नाअरा ला, तूं तूं वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारे कुन्टां वेख वखाया। चारे कुंट वेख वखा, दहि दिशा फेरी पाईआ। आप आपणा ल्ए उपा, आप आपणी सेवा लाईआ। आप आपणा दीप जगा, आपे ल्ए बुझाईआ। आप आपणा राग अल्ला, आपे ल्ए सुणाईआ। आप आपणा सांग वरता, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग काला वेख वखाईआ। कलिजुग काले बन्नी धार, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। मन मति बुध गई हार, बुध बोध ज्ञान जणाया। साची सुध ना पाए संसार, पंचम युध कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपाया। आप आपणी किरपा धार, आपणा नाउँ उपांयदा। पंज तत्त कर प्यार, नानक नाम रखांयदा। नानक मंगे दर द्वार, एका भिच्छया पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दवांयदा। नानक मंगे दर भिखारा, एका अलक्ख जगाईआ। प्रभ अबिनाशी खोल्ह किवाड़ा, वेखे बेपरवाहीआ। सच तराना वज्जे ताड़ा, अनन रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दरस दिखाईआ। दर दुआरे अलक्ख जगा, नानक सदा लगाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, सच सिँघासण रिहा तजाईआ। साचे अन्दरों बाहर आ, दर दहलीजे चरन टिकाईआ। चरन चरनोदक इक्क वखा, अमृत धार वहाईआ। अमृत धारा मुख चुआ, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक बूझ बुझाईआ। नानक निरगुण रूप समाया, वेखे धाम अवल्ला। इक्क अकल्ला हरि रघुराया, जोत निरँजण दीपक आदि अन्त एका बला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप फड़ाया आपणा पल्ला। आपणा पल्ला नाम फड़ा, नानक मति सिखाईआ। साचे घोड़े दए चढ़ा, एका पौड़ा लाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, नाम सति वड वड्डी वड्याईआ। लम्बा चौड़ा कोई जाणे ना, ना कोई लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप

२५

०७

हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नाम दए वड्याईआ। नानक नाम वर घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। लोकमात आ डेरा लाया, दिवस रैण ख़ुशी मनाईआ। एका लिव इक्क जोत, ना कोई बरन गोत, शब्दी शब्द करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नाम रक्खे वड्याईआ। नानक नाम निरगुण पा, चार कुन्ट उठ धाया। कलिजुग जीव आप समझा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। हँकारीआं गढ़ रिहा तुड़ा, शब्द खण्डा इक्क चलाया। गुरमुख साचे गले लगा, आप आपणे रंग रंगाया। चार कुन्ट दहि दिशा फेरा पा, भेख अवल्ला इक्क वटाया। जीव जन्त कोई जाणे ना, हथ्थ मसल्ला बगल कुरान उठाया। इक्क वखाए सच महल्ला चौथे घर जो जन पुजा, पंचम मेला सहिज सभाया। चरन दुआरे जो जन लूजा, फड़ बांहों पार कराया। आपणा भेव खुल्हाया गूझा, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगती झोली पाया। भगती हरि भण्डार, आप भराया। देवणहार विच संसार, जुग जुग आप अख्वाया। लहिणा देणा कर्ज उतार, अंगद अंग लगाया। अमरू अमर कर प्यार, रामदास सहाया। रामदास तेरी एका धार, सर सरोवर इक्क वखाया। अर्जन लेखा अपर अपार, बोध ज्ञान आप जणाया। हरि गोबिन्दा कर प्यार, दो धारा मुख भवाया। हरिराए बण साची नार, साचा कन्त मनाया। हरि कृष्ना लए अधार, बाल बाला लेखे लाया। गुर तेग बहादर तेरा सहार, प्रभ चरनी सीस चढ़ाया। गुर गोबिन्द सच दुलार, पुरख अकाल आप उपाया। आप बणाया साचा लाल, आपणे लेखे लाया। कलिजुग देवे राह सुखाल, दे मति आप समझाया। तेरी जड़ उखेड़े छोटे बाल, गुण अवगुण ना वेख वखाया। बत्ती दन्द सीर चोटी चढ़े अख़ीर, ना कोई मूंहदे भार सुटाया। मिले मेल हरि शाह फ़कीर, तोड़े जगत जंजीर, वड पीरन पीर लभ्भण मुकामे हक्क, ना कोई ख़ुदी ख़ुदाई रहे शक़, पीर दस्तगीर आप अख्वाया। कलिजुग तेरी वेख तकदीर, कलिजुग कूड़ा होए फ़कीर, जूठे झूठे बस्त्र पाटे लथ्थे चीर, चारों कुन्ट नक्क नाल कढ्ढे लकीर, ना दिसे कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द जोत उपा, साचे घोड़ चढ़ाया। कल्गी तोड़ा हरि सीस टिका, सस्से उप्पर होड़ा लाया। जोती जोड़ा मेल मिला, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। सस्सा किला इक्क बणा, पुरी अनन्द वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण दया कमाया। पुरी अनन्द हरि आप वसाई, अनन्द अनन्द गुण गाया। साचा चन्द आप चढ़ाई, साचा छन्द सुणाया। ख़ुशी बन्द बन्द कराई, तन शृंगार कराया। एका इष्ट इक्क गुर देव इक्क ज्वाला इक्क नैणां एका देवी आप मनाई, लक्ख चुरासी सच समग्री जगत हवन कराया। निर्मल जोत जगी अगम्मड़ी, अकाल पुरख प्रभ आया। गुर गोबिन्दे प्रीत साची लगरी,

२५

०७

साचा दरस दिखाया। सीस टिकाए आपणी पगड़ी, तोड़ा चीरा आप सुहाया। तन जंजीर साची जकड़ी, शब्द प्यार वधाया। इक्क कटार हथ्थ पकड़ी, खण्डा नाम रखाया। खब्बे हथ्थ पकड़े तकड़ी, नानक तोला आप तुलाया। पंचां वेखे जगत निराली धार वक्खरी, साची धारा आप चलाया। आप हटाई बजर कपाटी पथरी, आप आपणा मेल मिलाया। पंचम ढहि ढहि होए सथरी, ना सके सीस उठाया। मनमुख नेत्र नीर वहाए अथरी, गुर गोबिन्दा ख़ुशी मनाया। कलिजुग काया तपे भठड़ी, मंगे मंग एक मंगाया। मनमुख जीवां जूठ झूठ बध्धी गठड़ी, आपणा भार उठाया। जन भगतां रखाए साचा हठड़ी, एका मुठ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। गोबिन्द मेला हरि हरि वेला, सोहे बंक दुआरा। आपे सज्जण आप सुहेला, आपे पावे सारा। आपे दाता गुणी गहेला, आपे करे कराए सच प्यारा। आपे गुरू आपे गुर चेला, आपे ढहि पए दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए प्यारा। गुर गोबिन्दा हरि समझा, आपणी बूझ बुझाईआ। पुरख अकाला इक्क मना, एका ओट रखाईआ। जगत जंजाला गया तुड़ा, गुरमुखां एह समझाईआ। जागरत जोत जो जन लए जगा, गुरसिख सच्चा सच सरनाईआ। अन्ध अन्धेर लए मिटा, गुरमुख सो अख्वाईआ। रसना पढ़ पढ़ वक्त ल्या गंवा, लेखा लिखणहार दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द कराए जणाईआ। गुर गोबिन्द अन्तर ध्यान, आपणा आप लगाया। पुरख अबिनाशी मेहरवान, दयानिध अख्वाया। वेला वक्त रिहा पछाण, लेखा सके ना कोई लखाया। अन्तिम छड्डुणा पए जहान, थिर कोए रहिण ना पाया। कूड़ कुटम्ब मेट मिटाण, भाणा भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, तेरा घर दए सुहाया। गुर गोबिन्दा मंगे मंग, दर सच करे निमस्कारा। पुरख अबिनाशी तेरा संग, ना छुटे विच संसारा। दो जहानी संग अंग, बख्शे चरन प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे अन्तिम इक्क हुलारा। अन्त हुलारा इक्क लगा, गुर गोबिन्दे करे जणाईआ। कलिजुग अन्तिम जाए आ, रैण अन्धेरी छाईआ। ना दिसे कोई सहा, ना सके कोई बचाईआ। वरन बरनी वरन बरना रहे लड़ा, ना देवे सच सफ़ाईआ। तेरा लेखा दए लिखा, आप आपणा संग निभाईआ। धारी केसा ना कोई जणा, मूंड मुंडाए भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल खिला, आप आपणी रचन रचाईआ। जगत दुआरा दए सुहा, तेरा लेखा लेखे पाईआ। सम्बल नगरी आप उपा, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाईआ। शब्दी जोड़ा जोड़ जुड़ा, जोती जोत मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंस सरबंसा आप अख्वाईआ। बंस सरबंसा तेरा वेख, तेरा दर सुहावना। धुरदरगाही लाई मेख, करे खेल हरि भगवानना। नेत्र लोचन

लैणा पेख, आप पकड़े तेरा दामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी बणे साचा ज़ामणा। साचा ज़ामन अन्तिम हो, एका शब्द इक्क ज्ञान दृढ़ाया। सोहँ बीज साचा बो, साचा फल लगाया। साचा अमृत आत्म चो, साचा ताल सुहाया। हरि बिन अवर ना जाणे को, भेव किसे ना पाया। लक्ख चुरासी रही रो, हरि गोबिन्द दिस ना आया। दहि दिशा ना दिसे कोई ढो, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ किसे ना जाया। जोती शब्दी लग्गी छोह, एका मेल मिलाया। धन्न भाग दिहाड़ा छब्बी पोह, प्रभ जोती जोत जगाया। गुरमुखां दुरमति मैल धो, आप आपणी झोली पाया। धुरदरगाही सुणाए साची सो, सच सुनेहड़ा लै के आया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सृष्ट सबाई देवे फाँसी नाता तोड़े जगत मोह, ना कोई सके बचाया। गुरमुखां आत्म बीज साचा बो, एका फल खुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेल मिलाया। मेल मिलावा हरि निरँजण, आदि पुरख अबिनाशी। जन भगतां मिल्या सच्चा सज्जण, लाहे जगत उदासी। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, रसना नाम स्वासी। कलिजुग आया पड़दे कज्जण, भगत सुहेला घनक पुर वासी। मदिरा मास जो जन तजन, घर मेला शाहो शबाशी। अनहद ताल नगारे वज्जण, गुरमुख साचे बलि बलि जासी। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, निज आत्म रक्खे वासी। नाम चढ़ाए साचे जहाजन, पार किनारा इक्क

२७
०७

विखासी। शाहो भूप हरि राज राजन, पारब्रह्म अबिनाशी। प्रगटे जोत देस माझन, सम्बल नगर जोत प्रकासी। सम्बल नगर मिले वधाई, गुरमुख खेड़ा पाया। हरिजन वेखण चाँई चाँई, हरि साचे वक्त सुहाया। मेल मिलाया फड़ फड़ बांहीं, त्रेता द्वापर सतिजुग वेख वखाया। कलिजुग देवे ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। चतुर्भुज मिले कर कर लभ्मीआ बांहीं, जिउँ लछमी अंग लगाया। धुर दरगाही साचा साँईं, निमाण निमाणयां लए तराया। गुर गोबिन्दा साचा पाही, पन्ध आपणा रिहा मुकाया। गुरमुख मेला साचे माही, अज्ञान अन्ध गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सज्जण लए मिलाया। हरि सज्जण हरि मिल्या मेला, मेला धुर दरगाह। वेखे खेल गुरू गुर चेला, धुर शब्दी सच सलाह। आपे वरसया रंग नवेला, हर घट बैठा आसण ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे सच न्याँ। कलिजुग सच न्याउँ कर, जगत करे वड्याईआ। गुरमुख साचे बाहों फड़, भगती भगत जणाईआ। मनमुख जीव रहे लड़, सच द्वार दिस ना आईआ। ज्ञानी ध्यानी रहे पढ़, चरन ध्यान ना कोई रखाईआ। जगत विद्या गए पढ़, ब्रह्म विद्या ना कोई जणाईआ। हिन्दू मढ़ी रहे सड़, मुस्लिम गोर दबाईआ। गुरमुख साचे ना चोटी ना कोई जड़, ना कोई ख़ाकी ख़ाक समाईआ। साचे पौड़े जायण चढ़, प्रभ साचा आप चढ़ाईआ। आप आपणे अन्दर जाए वड़, महल्ल

२७
०७

अटल इक्क सुहाईआ। सच दुआरे अग्गे खड़, दे मति आप समझाईआ। किला कोट हँकारी गढ़, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। गुरमुख साचे सज्जणा, तेरी धूढ़ी खाक। गुर सतिगुर मंगे मजना, होए पाकी पाक। काल नगारा एका वज्जणा, चौदां लोकां बन्द ताक। जो घड़या सो भज्जणा, छड्डना बंधप साक। घर बार सभ ने तजना, उच्च महल्ल ना वेखणे झाक। अन्तिम पड़दा किसे ना कज्जणा, लहिण देण ना मुकाए कोई बाक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे भविख्त वाक्। सज्जण सच्चा मीतड़ा, हरि रंगे रंग अपार। आप आपणे जेहा कीतड़ा, हउमे रोग निवार। काया रक्खे ठंडी सीतड़ा, सति सन्तोखी बख्शे धार। गुरमुख विरले मानस जन्म जग जीतड़ा, जिस पाया गुरचरन द्वार। हरि भाणा लग्गे मीठड़ा, हउमे रोग निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां बख्शे इक्क प्यार। इक्क प्यार साचे गुर, साची दात रखाईआ। मिल्या मेल लिख्या धुर, हरि साचा होए सहाईआ। प्रभ दर्शन को लोचण सुर, करोड़ तेतीसा रहे कुरलाईआ। शिव शंकर बैठा अन्तर जुड़, एका ओट तकाईआ। ब्रह्मे नेत्र गया बौहड़, शब्दी शब्द उपाईआ। गुरमुखां आत्म लग्गी औड़, प्रभ साचे अन्त बुझाईआ । लोकमात आया दौड़, निहकलंका जामा पाईआ। पंडत लभ्भदे फिरदे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले फोल फुलाईआ। गुर गोबिन्दा वेखे मिट्ठे कौड़, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। पन्थी ग्रन्थी रहे दौड़, भेव ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां लए मिलाईआ। मेलणहारा हरि गोबिन्दा, सगली चिन्त मिटाईआ। आप बणाए साची बिन्दा, जो जन आए सरनाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्धा, जिस जन साची ओट रखाईआ। आत्म लगा तोड़े जिंदा, बजर कपाट तुड़ाईआ। सदा सहेला हरि अख्वंदा, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस जन गाया बत्ती दन्दा, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। कलिजुग जीव भागां मन्दा, बैठा मुख भवाईआ। मदिरा मासी आत्म गन्दा, भुल्लया हरि रघुराईआ। जन भगतां देवे परमानंदा, परमानंदा विच समाईआ। इक्क वखाए निजानंदा, निज घर आसण लाईआ। जुग जुग दात आपणी दिन्दा, देवणहार आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम रसना बोल आपे कहिंदा, गुरमुख तेरी वड्याईआ। गुरसिख तेरा भाणा गुर पूरा आपे सहिंदा, बाल अञ्याणे भेट चढ़ाईआ। पहली वारी नीहां विच चुणंदा, दूजी वारी हेठ दबाईआ। कलिजुग तेरी जड़ उखड़ंदा, साढे तिन्न हथ्थ जो लगाईआ। नौ दुआरे बन्द करिंदा, दसवें बूझ बुझाईआ। सच सिँघासण आपे बहिंदा, गुरसिक्खां सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा लेख लिखाईआ। गुरमुख तेरा लेखा औखा, भेव किसे ना पाया। गुरु बणना मात सौखा, सतिगुर ना कोई

अख्वाया। जगत विद्या पढ़ना सौखा, पोथा ज्ञान गुर ना कोए मिलाया। नहाउणा धोणा दिसे झूठा, आत्म अन्तर अशनान ना कोई कराया। सच दवारिउँ बैठा रूठा, वेले अन्त ना कोई सहाया। खाली दिसे काया ठूठा, नाम वस्त ना कोई टिकाया। गुरमुखां सतिगुर पूरा आपे तुठ्ठा, जग विछड़े जुग मेल मिलाया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठा, सम्मत चौदां चौदां लोक वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, छब्बी पोह दिवस सुहाया। चौदां लोक गुरमुख फोल, आपणी करे जणाईआ। सति लोक वजाए ढोल, मृदंगा नाउँ रखाईआ। तप लोक वेखे घोल, जतीआं सतीआं लए मिलाईआ। जप लोक तोले तोल, तोलणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महर फेरा पाईआ। महर लोक प्रभ फेरा पा, स्वर्ग लोक डेरा ला, आप आपणी दया कमाया। दूवह लोक तेरा कोई ना जाणे थाँ, दिस किसे ना आया। भूअ लोक हरि कर्म कमा, आकाश प्रकाश दए वखाया। सत्त उप्पर लए टिका, सत्तां लहिणा आप चुकाया। सत्तां चरनां हेठा रिहा दबा, दस हज़ार जोजन बन्द लगाया। इत्तल तेरा पड़दा लाह, वितल मुख खुल्हाया। सित्तल तेरा संग निभा, महातल जोग कमाया। रसातल तेरा दर सुहा, तलातल वेख वखाया। पताल देश प्रभ जोत जगा, चतुर्भुज अख्वाया। बाशक सेजा दए सुहा, सागोंपांग हंढाया। आप आपणा आसण ला, लछमी सेवा लाया। लछमी चरन रही दबा, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। चौदां लोकां दए हिला, प्रभ कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। गुरमुख साचे लए जगा, साचे दर बहाया। शब्द सरूपी फेरा पा, पहरेदार आप अख्वाया। आलस निन्दरा विच ना गया आ, दिवस रैण ना वेख वखाया। दरगहि साची साचा थाँ, जन भगतां रिहा जणाया। सतिगुर पूरा पकड़े बांह, अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल दर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका मन्त्र शब्द ज्ञाना, हरि हरि आप जणांयदा। सोहँ शब्द सच बिबाना, गुरमुख आप चढ़ांयदा। कलिजुग अन्तिम करे पछाना, जरम कर्म धर्म वेख वखांयदा। धुरदरगाही देवे इक्क परवाना, पुरख अगम्म अगम्मड़ा पहली चेत्र लेख लिखांयदा। मिले माण दो जहानां, जो जन निज नेत्र दर्शन पांयदा। गुरमुख नारी साची गोली सतिगुर शब्द साचा काहना, साची मण्डल रास रचांयदा। सेवक सेवा कर परवाना, प्रभ चरना हेठ दबांयदा। ऊँच ऊँच श्री भगवाना, सच तख्त आप सुहांयदा। गुरमुख साजन कर परवाना, लोकमात फेरा पांयदा। प्रगट होए गुण निधाना, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द खण्डा रसना तीर कमाना, सोहँ चिल्ले आप चढ़ांयदा। आप उठाए राज राजाना, शाह सुल्ताना आप हिलांयदा। आपे उडे विच बिबाणा, पुरीआं लोआं फेरा पांयदा। जन भगतां बख्शे चरन ध्याना, पोह छब्बी ख़ुशी मनांयदा। मिल्या मेल शाह सुल्ताना,

सच सिँघासण आसण लांयदा। साढे तिन्न हथ्थ तेरी खेल महाना, रविदासा रसना गांयदा। रविदासे मेला हरि भगवाना, दूजी वारी आप करांयदा। बाल्मीक बण निधाना, अन्तर अन्त वखांयदा। लिख्या लेख हरि महाना, लहिणा लहिणे झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम कर परवाना, आप आपणे अंग रखांयदा। जिउँ नानक होए संग मरदाना, सारंग साची आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साच धाम सुहांयदा। साचा धाम हरि निरँकार, एका एक रखाया। इक्क अकल्ला कर पसार, एका डेरा लाया। इक्क महल्ला लए उसार, थिर घर नाउँ रखाया। दीपक जोती कर उज्यार, तेल बत्ती ना कोए जलाया। दिवस रैण ना कोई विचार, प्रभाती सन्धया ना कोई रखाया। एका रंग रंग करतार, अट्ठे पहर आप रखाया। गुरमुखां जुग जुग मंगी मंग, नेत्र लोचण दर्शन इक्क रखाया। जुग जुग रक्खणहारा संग, आप आपणा संग रखाया। कलिजुग अन्तिम मेल मिलाए घर सच पलँघ, शब्द रंगीली सेज सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा युग आप सुहाया। छत्ती युग छत्ती राग, छत्ती धार चलाईआ। नानक गाया निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण रूप समाईआ। गोबिन्द खण्डा फड़ कटार, अकाल पुरख मनाईआ। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम काली धार, लोकमात दए मिटाईआ।
३०
०७
प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, सतिजुग साची रचन रचाईआ। एका नाम कराए जै जैकार, दो जहानां रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा वेता करे प्यार, ब्रह्म ख़ुशी मनाईआ। शिव शंकर सोहे साचा लाड़, सच त्रिसूल उठाईआ। इन्द्र तेरा इक्क अखाड़, बाल निधाना रिहा वखाईआ। सोहँ शब्द देवे वाड़, आप आपणी रचन रचाईआ। लोकमात मिटाए पंचम धाड़, जिस जन आपणी दया कमाईआ। चरन कँवल वखाए साचा अखाड़, साचा धाम सुहाईआ। होए सहाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, पोह छब्बी जोत जगाईआ। जगी जोत जगत चमत्कारा, मिटे रैण अन्धेरा। पुरख अबिनाशी लए अवतारा, इक्क कराए संझ सवेरा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, लक्ख चुरासी ढाहे ढहि ढहि करे ढेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम देवे गेड़ा। कलिजुग अन्तिम गेड़ा दे, आपणी लट्ठ भवांयदा। आपे छेड़ा छेड़ लगाए नेंह, आपे तोड़ तुड़ांयदा। आप उपाए आप खपाए करे खेह, आपे मात मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा पूर करे वर, सम्मत चौदां सोहे दर, वीह सद बिक्रमी संग रलांयदा। वीह सौ चौदां तेरा पसार, गुर पूरे आप कराया। गुरमुखां दए नाम अधार, घर घर फेरा पाया। एका इक्की कर त्यार, साची सिक्खी लए बणाया।

३१
०७

वालों तिक्खी विच संसार, धारों तिक्खी नाम धराया। नेत्र पेखी हरि करतार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्मत चौदां तेरा रंग गुरमुखां तन चढ़ाया। गुरमुख काया रंग चलूल, हरि साचे आप चढ़ाया। हरिजन ना जाए मात भूल, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। आपे करे कराए सूलीऊँ सूल, रोग सोग चिन्त मिटाया। शब्द पंघूड़ा लैणा झूल, हरि साचा रिहा झुलाया। साचा मेला कन्त कन्तूहल, गुरमुख नारी लए प्रनाया । आप चुकाए जुग जुग तेरा मूल, कलिजुग तेरा तेरी झोली पाया। सतिजुग फुलवाड़ी रही फूल, पोह छब्बी बीज बिजाया। शब्द सिँघासण हरि बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, आप आपणा आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां लए वर, गुरमुख साचे लए दृढ़ाया। सम्मत चौदां साचा घर, चौदां लोक ख़ुशी मनाईआ। चौदां लोकां मिल्या वर, चौदां हट्टां ख़ुशी मनाईआ। तीर्थ तट्टा मुक्कया डर, अठसठ देण दुहाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद मठ, अट्ठे पहर जगत लड़ाईआ। साध सन्त जगत माया रहे सड़, ना सके कोई बचाईआ। गुरमुख साजण एका अक्खर रहे पढ़, प्रभ साचा रिहा पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण हर घट अन्दर बैठा वड़, हँ हँगता वक्ख कराईआ। चरन कँवल जन जाए तर, धरत धवल मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्मत चौदां छब्बी पोह गुरसंगत हरि आपणा भेट चढ़ाईआ।

आपणा आप आपे वार, आपणा आप मुकाया। गुरमुखां साचा कर प्यार, साचा राह वखाया। एका बस्त्र तन अपार, नाम तग आप सजाया। शब्द खण्डा सच कटार, तन गात्रे आप लटकाया। पंचम बख्शे गुरचरन प्यार, साची सिख्या आप समझाया। पूरी करे इच्छया विच संसार, जिस जन आपणी दया कमाया। लेखा लिख्या धुर दरबार, ना कोई सके मेट मिटाया। जो जन मंगण मंग द्वार, नाम नामा झोली पाया। रंगे रंग तन अपार, रंग रंगीला इक्क चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए वर, सतिजुग तेरा सच कबीला, हरिसंगत आप बणाया। सच कबीला साचा संग आपणा आप रखांयदा। आपे करे आपणा हीला, गुरमुखां गुर दुआरा ल्या मंग आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा बण वसीला, बस्त्र पीला तन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरिजन साचे वड वड्याई, गुरमुख वज्जे वधाईआ। गुरमुख करे शब्द कुड़माई, गुर पूरे आप कराईआ। गुर पूरा मंगल एका गाई, पंचम सखीआं संग रलाईआ। पंचम गायण चाँईं चाँईं, एका ढोला अलाईआ।

कला सोलां वेख वखाए थाउँ थाँई, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पोह छब्बी रुत्त सुहाईआ।

छब्बी पोह साची रुत्त प्रभ साचे जोत जगाईआ। प्रगट होए अबिनाशी अचुत्त, चतुर्भुज अख्वाईआ। गुरमुख उपजाए साचे सुत्त, दे मति आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बंस बणाईआ। गुरमुख साजन साचे बंसा, हरि हरि उपाया। आप उपाए आपणी अंसा, आपणे घर वसाया। कलिजुग दुष्ट सँघारे कंसा, अन्तिम मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा चरन उठाया। चरन उठाए हरि बनवारी, मुकंद मनोहर नरायणा। सम्मत पन्दरां आए वारी, हरि वेखे साचे नैणा। लक्ख चुरासी होए ख्वारी, ना सज्जण कोई सैणा। वार थित प्रभ आप विचारी, चुकाए लहिणा देणा। लोआं पुरीआं पावे सारी, लोक परलोक सुणाए कहिणा। नौ खण्ड फिरे हरि शाह सवारी, सत्तां दीपां घर घर बहिणा। बवन्जा तेरी धार न्यारी, साचा देणा एका देणा। दोए लोचन जगत उग्घाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारी। सम्मत पन्दरां जाए चढ़, जोती नूर सुहाया। त्रैभवण सरूपा सभ घट अन्दर बैठा वड़, आपणा भेद छुपाया। सति सरूपा रिहा लड़, दिस किसे ना आया। त्रैलोकां उखेड़े आपे जड़, आपे दए लगाया। ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर सारे फड़, दर दुआरे लए बहाया। किले तोड़ हँकारी गढ़, दर दरवाजे दए खुल्हाया। त्रैगुण माया जाए सड़, पंज तत्त रहे कुरलाया। ना कोई वेखे गोर मड़, ख़ाकी ख़ाक ना कोई समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां रंग रंगाया। सम्मत पन्दरां वेखे अन्दरां, अन्दर मन्दिर फेरा पांयदा। डूँघी कन्दर लाहे जन्दरा, आपणी हथ्थी तोड़ तुड़ांयदा। उच्चे टिल्ले आप उठाए गोरख मच्छन्दरा, जगत समेरू आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बवन्जा बवन्जा तेरी धार, जगत बवन्जा आप चलांयदा। जगत बवन्जा हरि हरि बावना, भेखी भेख अपार। कलिजुग दुष्ट सँघारे रावणा, हरि मारे तीर अपार। अमृत मेघ बरसे सावणा, निझर रस अपार। दो जहानी साचा जामन, निहकलंका लए अवतार। मेट मिटाए कामनी कामन, पंजां दुष्टां करे सँघार। आप फड़ाए आपणा दामन, गुर पूरा पार उतारनहार। कलिजुग मिटे अन्धेरी शामन, सम्मत पन्दरां देवे इक्क हुलार। सम्मत पन्दरां सच हुलार, हरि साचे आप दवावणा। लोआं पुरीआं वेख विचार, आप आपणा चरन छुहावणा। चौदां लोकां हट्ट पसार, चौदां तबक खुल्हावणा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अधार, एका राग सुणावणा। सत्तां दीपां कर प्यार,

३३
०७

सत रंग निशान वखावणा। एका शब्द इक्क जैकार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप लगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा बंक द्वार अन्तिम ढावणा। सम्मत पन्दरां शब्द चढ़ाई, हरि करे शाह अस्वारा। तिन्नां लोकां इक्क लड़ाई, एका युध अपारा। चौदां लोकां कुण्डा रिहा खड़काई, रक्खे तिखिआं धारां। नौ खण्ड पृथ्मी पए दुहाई, सत्तां दीपां हाहाकारा। जगत बवन्जा धार चलाई, पारब्रह्म लए अवतारा। दो सत्त छे इक्क गुणा आप कराए, गुण वन्ता विचारा। छीका दूआ मेल मिलाए, दो छे उप्पर वारा। सम्मत पन्दरां जोत जगाए, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। सम्मत पन्दरां जोत जगौणी, पहली चेत्र ख़ुशी मनाईआ। सचखण्ड प्रभ रचन रचौणी, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। दो चेत्र शब्द जनौणी, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। तीजी चेत्र हरि दया कमौणी, जोती जोत करे रुशनाईआ। चौथी चेत्र पुरी ब्रह्म सुहौणी, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पंजवे चेत्र सिँघ पाल हरि मिलौणी, नाम पगड़ी सीस बंधाईआ। छेवें चेत्र एह समझौणी, सोहँ साचा जाप जपाईआ। सत्तवें चेत्र छाल लगौणी, शिव शंकर लए उठाईआ। अठवें चेत्र कंठ माला लाहौणी, बाशक तशका परे हटाईआ। नौ चेत्र पड़त पढ़ौणी, जगत जगदीसे मिले वड्याईआ। सोहँ साचा राग अलौणी, एका धुन उपजाईआ। दसवें चेत्र खेल खिल्लौणी, पुरी इन्द्र लए अंगड़ाईआ। सुरपति राजे इन्द जाग खुल्लौणी, करोड़ तेतीसा आप उठाईआ। साची मति आप समझौणी, लोकमात राह वखाईआ। पुरी घनक अन्त सुहौणी, सतिजुग साची नींह रखाईआ। ग्यारां चेत्र मेल मिलौणी, छोटे बाले आप उठाईआ। बारां चेत्र तिलक लगौणी, सच लिलाटी इक्क जगाईआ। औखी घाटी पार करौणी, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी ब्रह्मे तेरी झोली पौणी, जुग छतीसा दए दुहाईआ। निहकलंक कल वरतौणी, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरीआं लोआं आप फिराईआ। तेरां चेत्र मार उडारी, भूअ लोक प्रभ आए। सति दिवस हरि खेल खिलौणी, दिस किसे ना आए। उन्नी चेत्र दे समझौणी, साचे मार्ग पाए। सोहँ साची सच सनौणी, आपणी आप अल्लाए। वीह चेत्र गुण निधानी, आपणा रूप वटाया। दूवर लोक दए इक्क निशानी, साचा नां दृढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्तानी, सति सरूप समाया। छब्बी चेत्र कर परवानी, आपणा मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूवर लोक आप रंगाया। सताई चेत्र बोल जैकारा, स्वर्ग लोक उठ धाया। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, भेव किसे ना पाया। आपे मंगे मंग अपारा, आपे भिच्छया पाया। सत दिन बणे वणजारा, एका वणज कराया। तिन्न विसाख दए अधारा, आपणा मता पकाया। चौथी विसाख पार किनारा, महरर लोक डेरा लाया। आप आपणा कर उज्यारा, दीपक जोत जगाया। कूड़ कूड़ी कूड़ पसारा,

३३
०७

सच सुच्च वरताया। सच समग्री नाम अपारा, एका झोली पाया। जोत इक्ग्री हरि निरँकारा, साचा मार्ग लाया। गोबिन्द शब्द सच जैकारा, आपणा आप सुणाया। दस विसाख दे कर हथ्थ, साचा धाम सुहांयदा। ग्यारा विसाख अलक्खणा अलक्ख, आपणी अलक्ख जगांयदा। जप लोक मस्तक लेखा, लेखा मूल चुकांयदा। सोहँ शब्द चढ़ाए साचे रथ, साची गाथ अलांयदा। तप तजाए साचा साथ, सतारा विसाख दिवस सुहांयदा। अठारां विसाख त्रिलोकी नाथ, तप लोक तपांयदा। आपे वेखे आपणा हाठ, आपणी कल वरतांयदा। आप आपणी मारे ठाठ, इक्क उछाल रखांयदा। चवी विसाख पूजा पाठ, साचा मन्त्र दृढ़ांयदा। पंजी विसाख लए राख, सत्त लोक हुलारा। आप आपणा आपे भाख, आपे करे प्यारा। आपे प्रगट होए साख, आपे दरस अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्ती विसाख दए हुलारा। पहली जेठ हरि कर कुड़माई, देश पताले धाया। बाशक सेजा दए सुहाई, सहँसर मुख सुहाया। सत जेठ ख़ुशी मनाई, आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर खुलाया। अड्ड जेठ दरवाजा खोल, तलातल देस वसाया। शब्द जैकारा एका बोल, आपणा नाम दृढ़ाया। आप वजाए आपणा ढोल, सच मृदंग उठाया। घट घट पड़दे आपे खोल, आपणा भेव जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राह चलाया। आपणा राह आप चला, चौदां ख़ुशी मनाईआ। चौदां जेठ बेपरवाह, आपणी रचन रचाईआ। आपे तजना आपणा थाँ, आपे दए सुहाईआ। पन्दरां चेत्र कुण्डा ला, महातल करे रुशनाईआ। महिमा कोई ना सके गा, दैवत दैतां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। आप आपणा रंग रंगा, आपणी जोत जोत जगाईआ। रसातल देस हरि दए वसा, बाई जेठ ख़ुशी मनाईआ। आप आपणा लेखे ला, दे मति रिहा समझाईआ। अठाई जेठ हरि वेख वखा, महिमा अगणत गणाईआ। अजप्पा जाप सी आप जपा, सोहँ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा राह तकाईआ। उँणंती जेठ साचा राह, आपणा आप तकाया। शब्द सरूपी बण मलाह, दर दरवाजा पार कराया। सितल लोक हरि दए वसा, बल राजा मेल मिलाया। शुकर पुरोहता संग रला, नेत्र नीर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तिन्न हाढ़ी दिवस सुहाया। तिन्न हाढ़ी रचन रचा, साचा धाम सुहाए। आप आपणी दया कमा, चौथी हाढ़ वेख वखाए। वितल देस हरि खेल खिला, साची रचन रचाए। सत दिवस हरि डेरा ला, आपणा रूप वटाए। दस्स हाढ़ बन साचा लाड़, साचा घोड़ा इक्क दुड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां तेरी वंड वंडाए। दस हाढ़ हरि कर अखाड़, आपणा खेल खिलाया। वितल देस वेस अपार, आपणा भेख वटाया। साचे

घोड़े हो अस्वार, ग्यारां हाढ़ बाहर कढाया। इतल लोक तेरा दर दुआरा, प्रभ साचे आप सुहाया। सति सति सति कर जैकारा, सति सति समाया। सति सति सति अधारा, सति सति सति लए तराया। सत सति सति पार किनारा, सति सति बन्ने लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतारा हाढ़ इतल लोक तेरा राह तजाया। चौदां लोक फेरी पा, सोहँ शब्द करे जणाईआ। तेरां चेत्र चढ़े बेपरवाह, सतारां हाढ़ मुड़ के आईआ। दिवस अठंनवे पूरे करा, भुल रहे ना राईआ। गुर संगत तेरा मेला लए मिला, विछड़ कदे ना जाईआ। हाढ़ सतारां तेरे लेखे देवे ला, पुरीआं लोआं दए तजाईआ। गुर संगत तेरा जन्म दिन लए मना, अठारां उन्नी जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस दो सम्मत पन्दरां साध संगत वंड वंडाईआ। सचखण्ड हरि फेरा पा, ब्रह्मा आप जगाए। शिव शंकर हरि लए उठा, सुरपति इन्द हिलाए। तिन्न तिन्न वंड वंडा, बारां चेत्र मुड़के आए। तेरां चेत्र खेल खिला, चौदां लोकां फेरा पाए। हाढ़ सतारां दया कमा, हरिसंगत आण तराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उन्नी हाढ़ गुरमुख साजण साचे लाड़, दर घर साचे विदा कराए। वीह हाढ़ कर त्यारी, आपणी जोत जगांयदा। पुरख अबिनाशी शाह अस्वारी, कुला खण्ड फेरा पांयदा। सत दिवस जोत उज्यारी, साचा मार्ग लांयदा। छब्बी हाढ़ पैज संवारी, आप आपणा रंग रंगांयदा। कुला खण्ड हरि वारो वारी, एका जोग कमांयदा। सताई हाढ़ तेरा खेल न्यारी, प्रभ साची रचन रचांयदा। इल्लाबुत तेरी वेख महल्ल अटारी, आप आपणा आसण लांयदा। सावण दो जोधा सूरा बलकारी, सूरबीर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। तिन्न सावण तेरा नाअरा, हरि साचे आप लगाया। अमृत बख्शे साची धारा, केतमाल आप चुआया। अजामल पावे तेरी सारा, पापी पाप तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ सावण खोज खोजाया। नौ सावण हरि खोज खुजा, केतमाल तरांयदा। दस सावण हरि दया कमा, आपणा राह तकांयदा। किं पुरख तेरी भेट चढ़ा, कीता लोड़ा पांयदा। जोती जोड़ा मेल मिला, शब्दी शब्द जणांयदा। सोलां सावण सो पुरख निरँजण एका ढोला गा, सोया आप जगांयदा। दर दुआरे गोल्ला दए बणा, एका मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतारा सावण पार करांयदा। सतारा सावण सच किनारा, हरि साचे आप वखाया। हरवरख जोत कर उज्यारा, साचा खण्ड तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाया। तेई सावण सुरत जगा, सोए लए उठाईआ। चवी सावण जोत जगा, भद्र फेरा पाईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखा, एका रंग रंगाईआ। तीह सावण तेरा साचा नाँ, लोकमात करे रुशनाईआ। भेखा

धारी भेख वटा, एका नाम रिहा जपाईआ। सोहँ मन्त्र सच दृढ़ा, सच ज्ञान जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीह सावण ख़ुशी मनाईआ। इक्ती सावण हो प्रतक्ख आपणी अलक्ख जगाईआ। हरणयमह प्रभ लए रक्ख, साचा खण्ड सुहाईआ। आपे करनहारा वक्ख, आपे मेल मिलाईआ। पंचम भाद्रों हो प्रतक्ख, साचा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, झूठी हिरस मिटाईआ। छे भाद्रों सच घर वेस, आपणा आप कराया। रमक देवे इक्क उपदेश, एका शब्द जणाया। आपे जाणे धारी केस, आपे मूंड मुंडाया। आपे दाता दस दस्मेस, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वाया। आपे होए रिखी केश, आप गवर्धन हथ्थ उठाया। आपे लेखा लिखणहारा लेख, कलिजुग अन्तिम आया। रमक तैनूं रिहा वेख, सोहँ साची रमज़ लगाया। बारां भाद्रों करया वेस, जोती जामा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा होए सहाया। तेरां भाद्रों तेरी धार, प्रभ साचे आप चलाईआ। भारत खण्ड कर उज्यार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उन्नी भाद्रों सच सुच्च करे समाईआ। उन्नी भाद्रों भरम भुल्ला, कलिजुग गढ़ बणाया। पुरख अबिनाशी जोत जगा, माया हड़ चलाया। पंच विकारा जगत उडा, जूठा झूठा संग रखाया। गुरमुख साचे लए जगा, वीह भाद्रों ख़ुशी मनाया। लक्खण दीप फेरा पा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। सताई भाद्रों पार उतारा, गुर पूरे आप कराया। करौच दीप करे उज्यारा, आप आपणा रंग रंगाया। एका बन्न्हे साची धारा, सच सुच्च रिहा वरताया। दीपक जोती कर उज्यारा, साचा चन्द चढ़ाया। एका शब्द जगत उज्यारा, नाम जैकारा एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिन्न अस्सू दए सुहाया। तिन्न अस्सू हरि साची चोट, आपणी आप लगाईआ। लक्ख चुरासी आल्हणिउँ डिगे बोट, ना सके कोई बचाईआ। पुष्कर तेरा कढ्ढे खोट, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीजी अस्सू दए वड्याईआ। चौथी अस्सू चतुर्भुज, खेले खेल अपारा। आपणा भेव रक्खे गुझ, जम्बु दीप दए हुलारा। आपणी करनी आपे रिहा बुझ, ना कोई पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच हुलारा। सच हुलारा आपे दे, आपणी दया कमाईआ। सतारां अस्सू लग्गा नेंह, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। अमृत आत्म बरखे मेंह, गुरमुखां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल रिहा वरताईआ। अठारां अस्सू उठ बलकार, आपणी खेल खिलांयदा। सलमल पावे साची सार, साचा दीप सुहांयदा। खेले खेल अपर अपार, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा संग निभाए, खेले खेल अपारा। चवी अस्सू ख़ुशी मनाए, पारब्रह्म हरि निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सान दीप लए अवतारा। सान दीप साची सिख्या, आपणी आप सिखांयदा। धुर फ़रमाण एका लिख्या, एका जाप जपांयदा। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, साचा शब्द चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तीह अस्सू रुत्त सुहांयदा। पहली कत्तक हरि करतार, आपणा संग वखाए। कुशा दीप तेरा मेल अपार, हरि साचा मेल मिलाए। सत्त कत्तक खेल कर निरँकार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां आप आपणा खेल खिलाए। सत्त कत्तक हरि सति सरूप, हरि साचा सच अख्वांयदा। आपे वेखे दहि दिशा चारे कूट, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। आप आपणा पंघूड़ा रिहा झूट, सच हुलारा इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवन्जा दिवस खेल खिलांयदा। अट्ठ कत्तक उठ करतार, चारे कुन्ट वेख वखानया। बवन्जा देशां बन्ने धार, पकड़ उठाए राज राजानया। बवन्जा अक्खर लेख अपार, जगत विद्या करे पछानया। बवन्जा बरस खेल अपार, खेले खेल श्री भगवानया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगानया। बवन्जा दिवस जगत धार, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। तीर्थ तट्टां पावे सार, गंगा गोदावरी वेख वखाईआ। पंडत कासी दए हुलार, प्राग अयुध्या दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हर घट थाँईंआ। अट्ठ कत्तक उठे जाग, हरि साची जोत जगाईआ। तीर्थ तट्टां लाए आग, ना सके कोई बुझाईआ। साधां सन्तां जोती खिच्चे चिराग, दीपक दीप ना डगमगाईआ। अनहद सुणे ना कोई राग, सुखमन कोई ना पार कराईआ। नौ दुआरे फिरन भाग, पंचां चोरां रहे लड़ाईआ। कलिजुग काया होया काग, बिन हरि नामे ना कोई साची चोग चुगाईआ। गुर सतिगुर साचा पकड़े वाग, हरिजन साचे लए तराईआ। सोहँ बन्ने तन साचा ताग, मौली तन्द ना कोई रखाईआ। मिल्या मेल हरि कन्त सुहाग, साची सेज हंढाईआ। सम्मत चौदां बख्शे इक्क वैराग, तन काया जोत जगाईआ। सन्त सुहेले जाणा जाग, वेला अन्तिम आईआ। निहकलंका धोवे दाग़, गुर गोबिन्द नाल रलाईआ। शब्द सरूपी मारे अवाज़, शब्द आप उठाईआ। सोहँ देवे साचा दाज, पल्ले गंढु बधाईआ। प्रगट होया देस माझ, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। लक्ख चुरासी सुत्ती दे कर कंड, ना लए मात अंगड़ाईआ। अन्तिम देवण आया दंड, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अट्ठ कत्तक खेल हरि, उँणंती मग्घर पूर कराईआ। उँणंती मग्घर नौवां मास, नौ दर खोज खुजाया। भगत जनां सद वसे पास, पड़दा ओहला दए कटाया। एका करे भोग बिलास, आत्म सेजा सच हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

नौ मास सम्मत पन्दरां जोड़ जुड़ाया। नौ महीने साचा लेखा आपणा आप लिखाया। आपे कढ्ढे भरम भुलेखा, दो सत्त छे जोड़ जुड़ाया। दो सत्त छे लग्गे लेखा, नौ महीने मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां तेरां जन्दरा आप खुल्हाया। दिवस मास करे उजागर, चेत्र चित लगाईआ। तीस दिन बणे जगत सुदागर, चेत्र आपणी झोली डाहीआ। विसाख होए मास उजागर, इक्ती दिन आस रखाईआ। जेठ तेरां कर्म उजागर, बत्ती दिन वज्जी वधाईआ। असाड़ तेरां डूँघा सागर, इक्क तीस नाल रलाईआ। सावण तेरी साची गागर, दिन बत्ती आप भराईआ। भाद्रों भरम भुल्लया, दिवस इक्ती लेख लिखाईआ। अस्सू आस इक्क रखाया, तीस दिन वेख वखाईआ। कत्तक कर्मां वेख वखाया, तीस तीस रसना गाईआ। मग्घर तेरा मोह चुकाया, उँणंती दिन भेव ना राईआ। नौ महीने दो सौ दिवस छिहत्तर, साचा खेल खिलाईआ। दो छे पाए गुणा, छे दो बारां आपणी पुकार आपे सुणा, आपे पाए सारा। सत्त सत्त सत्तां छाण पुणा, सत्त सत्त सति दए ललकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छे दोए बारां ते बारां सत्त चुरासी, जन भगतां कटे जम की फाँसी, मेट मिटाए मदिरा मासी, माण गंवाए पंडत काशी, खेले खेल पुरख अबिनाशी, जन भगत दर दासन दासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी रासी।

शब्द गुर शब्द संदेशा, शब्दी शब्द जणाईआ। शब्दी शब्द कर प्रवेशा, शब्दी शब्द गया तजाईआ। शब्दी शब्द करे अदेसा, शब्दी शब्द सीस झुकाईआ। शब्दी शब्द नर नरेशा, शब्द शब्दी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग वेखे संग वेखे गुरमुख साजन सहिज समाईआ। कूड़ क्रिया जगत अभिमाना, काल फास तन बाधा। पुरख अबिनाशी खेल महाना, शब्दी बोध अगाधा। खेले खेल दो जहानां, मेला सन्तन साधा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वजाए आपणा नादा। आप आपणा नाद वजा, आपणी कूक सुणाईआ। साजण साचे लए जगा, दूर दुराडे वेख वखाईआ। एका मार्ग साचे ला, सच सुच्च करे कुड़माईआ। आदि जुगादी वेख वखा, जुग जुग रचन रचाईआ। द्वारपाल आप बणा, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। सिँघ बिशन लए उठा, गुर पूरा करे जणाईआ। शब्द खण्डा लए खिचा, गुरसिख साची सेवा लाईआ। आपणी मुठ दए फड़ा, सज्जण मीत आप अख्वाईआ। आपणे सीस लए टिका, ना कोई दूसर भेट चढ़ाईआ। दूजा हथ्थ वेख वखा, दो जहानां करे जणाईआ। कलिजुग लेखा रिहा मुका, सिँघ इन्द्र वड वड्याईआ। आप आपणी सेवा ला, गुरमुखां दए वड्याईआ। तिक्खी धार सीस टिका, जगदीस वड्डी वड्याईआ। दो

जहानी फेरा पा, लोकमात खुशी मनाईआ। तीजा मेला सहिज सुभा, आप आपणा लए कराईआ। मातलोक तेरा कुण्डा लाह, आपणी हथ्थीं जड़ पुटाईआ। आपणे सीस लए टिका, एका धार रिहा वहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए हिला, साचा खण्डा हथ्थ खड़काईआ। ब्रह्मण्डी तेरी वंड वंडा, पारब्रह्म तेरी वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सीस भेट चढ़ाईआ। गुरमुखां हरि कटया सीसा, आपणा मूल चुकाया। मिले मेल जगत जगदीसा, सीस धड़ रहिण ना पाया। छत्र झुले साचे सीसा, पंचम लए जगाया। ना कोई राग ना गाए हदीसा, एका शब्द पढ़ाया। चार वरन जपाए दन्द बतीसा, आप आपणा लाया। गुरमुख साचे तेरी धार, हरि आपणे अंग लगाईआ। आप आपणा उत्तों वार, गुर संगत फेर बणाईआ। चाढ़े रंग अपर अपार, उतर कदे ना जाईआ। विच अखाड़ वेख संसार, गलवकड़ी साची पाईआ। साध संगत सच प्यार, प्रभ गल दा हार परोईआ। गुर गोबिन्दे बख्श करतार, सच कटार शब्द फड़ाईआ। आप आपणा दित्ता वार, पिता मात भेट चढ़ाईआ। भिख मंगी दर भिखार, वेले अन्त ना होए जुदाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, पूरन आस कराईआ। आप आपणा ल्या उभार, आपणे अंग लगाईआ। नैणां देवी तेरा कर प्यार, नैणी नैणां वेख वखाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। कलिजुग प्रगट हो विच संसार, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां होया पहरेदार, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। साचा खण्डा अपर अपार, ना कोई धारा रिहा चलाईआ। आपे करे कराए करनेहार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे तोड़े आपे जोड़े, आपणी कल वरतांयदा। जन भगतां हरि आपे बौहड़े, आपणा लेख लिखांयदा। साचे मन्दिर लाए पौड़े, साची धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत तेरा साचा वर, साचा गहिणा तन सुहांयदा। साचा गहिणा सीस श्रृंगार, हरि आपणा आप कराया। आप आपणा दित्ता वार, छब्बी पोह सुहाया। हरिसंगत प्रभ लए उभार, हरि हरि मेल मिलाया। ना कोई खण्डा ना कटार, ना कोई शस्त्र तन पहनाया। एका बख्शे चरन प्यार, आपणी दया कमाया। विच मैदाना रिहा ललकार, नौ खण्ड पृथ्मी रिहा हिलाया। गुरमुख साजन साचे लए उभार, प्रभ साचा होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया। गुरमुख साचे रहिणा सौं, हरि साचा आप सुआंयदा। सम्मत पन्दरां अवण गवण रिहा भौ, दिस किसे ना आंयदा। आप जपाए आपणा नाउँ, आप आपणा नाउँ धरांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, कागों हँस आप बणांयदा। मेल मिलाए शाहो शबाश शहनशाहो, साची बांह इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा

अंग कटांयदा। आप आपणा अंग कटा, हरि आपणी कल वरताईआ। शब्दी खण्डा ल्या उठा, शब्दी धार बंधाईआ। ब्रह्मण्डां वेखे सारा थाँ, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। नर नरायण आप अख्वा, सरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे खेल, जन भगतां मेल, सच द्वार इक्क सुहाईआ। सच द्वार हरि गोबिन्दा, एका एक रखाया। छब्बी पोह मिटाए चिन्दा, आप आपणा भेट चढ़ाया। दाता जोधा सूरा वड मृगिन्दा, सिँघ शेर शेर अख्वाया। हरिसंगत तेरी मेटण आया चिन्दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेल मिलाया। दूती दुष्टां लगाए आपणी निन्दा, मदिरा मास विष्टा मुख रखाया। सच दुआरे वज्जा जिंदा, ना सके कोई तुड़ाया। गुरमुखां मिले हरि गुणी गहिंदा, गोबिन्द रूप वटाया। आप बणाए आपणी बिन्दा, नारी सुत उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सीस कटाया। कटया सीस अग्गे रक्ख, अग्नी भेट चढ़ांयदा। जोती नूर हरि प्रतक्ख, पुरी घनक सुहांयदा। गुरमुखां लज्जया आपे रक्ख, आप आपणा रंग रंगांयदा। मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, नंगी पैरीं फेरी पांयदा। छब्बी पोह कराया इक्ट्ठ, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। गुरसिख तेरे चरन दुआरे रो रो पुकारे तीर्थ अट्ठ सट्ठ, प्रभ साचा मूल ना भांयदा। दूर दुराडे जायण नट्ठ, गुरमुखां खण्डा हथ्थ उठांयदा। सतिजुग तेरी करी साची चट्ठ, पहला आपणा सीस कटांयदा। दूसरा अंग कीता वक्ख, सिँघ मनजीता भेट चढ़ांयदा। गुर संगत लज्जया लए रक्ख, सिँघ जगदीसा संग रलांयदा। नौ दुआरे कर प्रतक्ख, दसवें आसण लांयदा। दो जहानां उडणे कक्ख, गुर संगत रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणी दया कमांयदा। सर्बकला आपे समरथ, माझे फेरा पांयदा। सृष्ट सबाई रिहा मथ, नाम मधाणा इक्क चलांयदा। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन अन्तर पांयदा। सोहँ शब्द जणाई इक्क अकथ, कथ कथनी लेख लिखांयदा। आप चढ़ाए साचे रथ, रथवाही आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा अंग कटांयदा। कटया अंग करया वक्ख, हरि वक्खरी चाल चलाईआ। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, जोती जोत जगाईआ। गुर गोबिन्दा लए रक्ख, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। आप कराए कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख उडाईआ। साधां सन्तां भाडे सक्ख, सम्मत पन्दरां दए कराईआ। गुरमुखां दरस दिखाए हो प्रतक्ख, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क सुहाईआ। गुर पूरा जग वेख्या, देवे धुर संदेस। आपे करनहारा प्रीख्या, आपे जाणे आपणा वेस। आपे लिख्या हरिजन लेख्या, आपे होए दर दरवेश। आपे देवे साची सिख्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे रिहा वेख। कवण गुरु कवण वड्याई, कवण रंग रंगाईआ। कवण निरँजण जोत जगाई, कवण करे रुशनाईआ। कवण डूँघी कवरी पार कराई, कवण आपणा

पल्लू दए फड़ाईआ। कवण अनहद ताल वजाई, कवण राग अलाईआ। कवण ब्रह्म खोज खुजाई, कवण ब्रह्म समाईआ। कवण सद घर बहाई, शब्द सुनेहड़ा देवे साचे माहीआ। कवण मेल मिलावे चाँईं चाँईं, तूं विछोड़ा कट्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। कवण वणजारा पाए मुल, कवण मेट मिटाया। कवण तोले साचे तोल, नाम कंडा एका लाया। गुरमुख वेखे लाल अनमुल्ल, अनमुल्लड़े लाल आप रखाया। जिस जन दरस दिखाया आपणा भुल्ल, दर दुआरे फेरा पाया। धन्न भाग सुलक्खणी होई कुक्ख, लेखा लेख लिख ना सके कोई राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कीमत करते कोई ना मात चुकाया। हरि सज्जण पुरख अकाल, गोबिन्द मेल मिलाया। हरि सज्जण पुरख दयाल, गोबिन्द जोत जगाया। हरि सज्जण पुरख प्रितपाल, गोबिन्द सेव लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत नूर सबाया। हरि सज्जण पुरख सुल्तान, घर साचे आपे वस्सया। आपे होया मेहरवान, घर आपणे आपे वस्सया। आपे देवे दानी दान, दर दुआरे फिरे नस्सया। गुरमुख साचे कर परवान, कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी मस्सया। मूल चुकाए पंज शैतान, तीर निराला एका कस्सया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ बीआ बान, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बहि बहि हस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग आपे दस्सया। साचा मार्ग जगत ला, एका जोग सिखाईआ। ग्रन्थ पन्थ ना कोई सलाह, वरन गोत ना कोई रखाईआ। एका सिख्या रिहा सिखा, सच सुच्च करे कुड़माईआ। पावां सुख मेरी आत्म लए प्रना, पारब्रह्म होए सहाईआ। सनातम धर्म ना कोई जणा, ना कोई नाउँ वड्याईआ। ख़ालसा ख़ालस दए बणा, चार वरन इक्क सरनाईआ। शब्द सालस इक्क रखा, सच सालस आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार कुन्ट वेख वखाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, एका ब्रह्म जणाया। पुरख अबिनाशी जगी जोत, गुर पीर ना कोई मनाया। कोटी कोट रहे लोच, कोटी कोट जन्म भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। आपणा भाणा रक्ख हथ्थ, आपणी कल वरतांयदा। सृष्ट सबाई होए सथ्थ, कलिजुग सथ्थर इक्क विछांयदा। काल कूड़यारा पाए नथ्थ, कलिजुग कलन्दर आप नचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मन्दिर अन्तिम ढांयदा। कलिजुग मन्दिर कूड़ पसारा, कूड़ी नींह रखाईआ। पहरे दार पंचम धाड़ा, अट्ठे पहरे करन लड़ाईआ। मन मति बुध लग्गा अखाड़ा, चारों कुन्ट होए दुहाईआ। सम्मत चौदां साचा लाड़ा, गुरमुख साचे लए प्रनाईआ। सम्मत पन्दरां कर श्रृंगारा, आप आपणा रूप सुहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, आप आपणी कल वरताईआ। शब्द सरूपी कर पसारा, शब्दी शब्द

उडाईआ। लोआं पुरीआं पार किनारा, लोक परलोक वेख वखाईआ। गुरमुख साजन मीत मुरारा, हाढ़ सतारां लए उठाईआ। लेखा लिखे ना फेर विच संसारा, जो भुल्ले सो विछड़े ना संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा दए चुकाईआ। सम्मत पन्दरां हाढ़ सतारां, इक्क तारीक पाईआ । गुरमुखां मेले विच संसारा, लाशरीक आप अख्वाईआ। जो जन आए चल दुआरा, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाईआ। हाढ़ सतारां अन्तिम लेखा, कलिजुग आप लिखावणा। भेव ना पाए कोई औल्या पीर सेखा, पंडत पांधे दिस ना आवणा। भरमे भुल्ले धारी केसा, मूंड मुंडाए मुख भवावना। आपे होए दस दस्मेसा, गोबिन्द काया गढ़ सुहावणा। आप आपणा करया वेसा, पूत सपूता आप अख्वावणा। आपे जोधा नर नरेशा, शब्द खण्डा इक्क चलावणा। आपे छत्र झुलाए साचे सीसा, गुरमुख साचे सेवक सेवा लावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभावणा। आप आपणा संग निभा, सगला संग रखाईआ। सम्मत पन्दरां वेख वखा, थित वार इक्क जणाईआ। हाढ़ सतारां खेवट खेटा बण मलाह, साचा बेड़ा दए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग रखाईआ। साचा बेड़ा कर त्यार, एका चप्पू लाया। सोहँ होए पहरेदार, चारों कुन्ट फेरा पाया। पुरख अबिनाशी सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुरमुख साजण कर त्यार, एका रीती रिहा चलाया। चार वरनां इक्क प्यार, पतित पुनीती रिहा कराया। देहुरा मन्दिर मसीती ना कोई गुरुद्वार, मट्ठ शिवाला ना कोई बणाया। सतिजुग साची बन्ने धार, सति पुरख निरँजण मार्ग लाया। सोहँ शब्द रसना उचार, काया मन्दिर जोत जगाया। पवण दीवा अपर अपार, पवण पवणी रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच दए दिखाया। घर विच घर घर विच हाटी, घर विच घर घर विच बाती, घर विच घृत रखांयदा। घर घर विच देवे साची दाती, घर घर चुक्के लहिणा देणा बाकी, घर घर विच मेल मिलांयदा। घर घर विच खोल्हे ताकी, घर घर विच चाढ़े राकी, घर घर विच बहांयदा। घर घर विच देवे शब्द पुशाकी, घर घर विच मेटे पंचम ख़ाकी, घर घर विच जोत जगांयदा। घर घर विच मेला साचे साकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा घर सुहांयदा। घर घर विच बोले हरि निरँकारा, घर घर विच अलक्ख जगाईआ। घर घर विच खोल्हे बंद किवाड़ा, घर घर विच कुण्डा लाहीआ। घर घर विच बोले इक्क जैकारा, घर घर विच राग अल्हाईआ। घर घर विच सुणे सुनणेहारा, घर घर विच बैठा आसण लाईआ। घर घर दीपक जोत कर उज्यारा, घर घर करे रुशनाईआ। घर घर मेला कन्त भतारा, घर घर नारी ख़ुशी मनाईआ।

घर घर करे सच श्रृंगारा, घर घर वेख वखाईआ। घर घर मेला हरि निरँकारा, घर घर दए कराईआ। घर घर सेजा अपर अपारा, घर घर रिहा विछाईआ। घर घर विच सोहे बंक दुआरा, हरि बैठा जोत जगाईआ। गुरमुख मिल्या घर न्यारा, दिस किसे ना आईआ। उच्च महल्ला सच मुनारा, निहचल धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर विच दए टिकाईआ। घर घर विच आसण, घर घर आपे लाया। घर घर जोत जगे पुरख अबिनाशन, घर घर अन्धेर कराया। घर घर होए दासी दासन, घर घर बैठा मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर दए सुहाया। घर घर मन्दिर साचा मठ्ठ, घर घर बणत बणाईआ। घर घर तीर्थ अठसठ, घर घर सरोवर रिहा वखाईआ। घर विच घर ना जाए ढठ्ठ, घर घर विच रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी धार चलाईआ। घर विच घर उजाला, घर करे रुशनाईआ। घर विच घर घर गुर गोपाला, गुर मेला सहिज सुभाईआ। घर विच घर राह सुखाला, घर साचा आप सुहाईआ। घर विच घर घर करे प्रितपाला, घर मन्दिर खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी धार चलाईआ। साचा घर आप वसंदड़ा, पारब्रह्म अबिनाशा। गुरमुखां राह इक्क वखंदड़ा, मिले मेल सर्ब गुण तासा। ना कोई मारे अग्गे जिंदड़ा, ना कोई होए आस पासा। सतिजुग साचा राह चलंदड़ा, सोहँ शब्द सच्चा भरवासा। गुरमुखां भार आप उठंदड़ा, आदि अन्त ना होए नासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पृथ्मी आकाशा।

* २७ पोह २०१४ बिक्रमी हरिसंगत जोड़ मेला हरिभगत द्वार जेठूवाल *

कलिजुग काला गज्जया, चौदां तबक हिलाए। जगत नगारा एका वज्जया, डौरु डंका एका वाहे। जो घड़या सो भज्जया, अन्त रहिण ना पाए। जीव जन्त कोई ना रक्खे लज्जया, ना कोई दिसे मात सहाए। सच दुआरा सभ ने तज्या, झूठा मन्दिर रहे सुहाए। चढ़े नाम ना सच जहाज़िआ, वंञ मुहाणा ना कोई लगाए। हरि साचे रचया काज्जया, कलिजुग लहिणा दए चुकाए। प्रगट होए देस माज्झया, निहकलंका नाउँ रखाए। शब्द सरूपी साजण साज्जया, जोत सरूपी वेख वखाए। जन भगतां रक्खणहारा लाज्जया, गऊ ग़रीबां गले लगाए। वरते खेल कल के आज्जया, कलिजुग साचा दए दुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग चढ़ाए। कलिजुग काया काला चोला, काली कमली तन छुहाईआ। जूठ झूठ गाया ढोला, इक्क अवाज़ लगाईआ। मोह विकारा बणया तोला, पंचम संग रलाईआ।

माया राणी खेले होला, घर घर ख़ुशी मनाईआ। लाड़ी मौत मंगे डोला, चार कहार रही बुलाईआ। इक्क मुहम्मद होणा गोला, साचा संग निभाईआ। चौदां तबकां आपे फोला, वेखे थाउँ थाँईंआ। दहि दिशा कल पावे रौला, राज बणत ना कोई दसाईआ। वेखे खेल हरि उप्पर धवला, सम्मत पन्दरां ख़ुशी मनाईआ। आपे होया बावर बवला, आप आपणा भेख वटाईआ। जन भगतां करे भार हौला, सीस जगदीस पंड उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साचे दए वधाईआ। कलिजुग जोधा सूरबीर बलकारा, साचा गढ़ सुहांयदा। आप आपणा कर ललकारा, आप आपणी धाड़ रखांयदा। मंगे मंग सतारां हाढ़ा, साचा सगन मनांयदा। फेरी पाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले फोल फुलांयदा। इक्क लगाए अग्नी नाड़ा, तत्व तत्त जलांयदा। पुरख अबिनाशी संग रलाए अगम्मी धाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग हिस्सा आप वंडांयदा। कलिजुग हिस्सा काला सूसा, काला तन शृंगारया। खेले खेल ईसा मूसा, खेल खिलाए परवरदिगारया। आपे जाणे जगत हदीसा, बगल कुरान वेख वखा रिहा। लहिणा देणा बीस बीसा, सम्मत पन्दरां नींह धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मक्का मदीना वेख वखा रिहा। मक्का मदीना साची ढक, हरि साचा आप जणांयदा। आपे वेखे वक्ख वक्ख, आप आपणी दया कमांयदा। आपे प्रगट हो प्रतक्ख, मुख नकाब इक्क रखांयदा। अमाम मैहन्दी अलक्खणा अलक्ख, भेव कोई ना पांयदा। उम्मत नबी रसूल भार तेरा तेरी सहिंदी, ना कोई वंड वंडांयदा। हू हू नाअरा एका कहिंदी, अल्ला राणी मुख शरमांयदा। अल्ला राणी प्रभ दुआरे निउँ निउँ अग्गे हो हो बहिंदी, नेत्र नीर चलांयदा। लाल रंग वखाए लाई मैहन्दी, साचा संग जणांयदा । लक्ख चुरासी अन्तिम खहन्दी, एका धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा संग निभांयदा। अल्ला राणी मुख पाया पड़दा, आपणा घुँघट रही उठाईआ। संग मुहम्मद चार यार सड़दा, कलिजुग अग्नी आप तपाईआ। ईसा मूसा आपे लड़दा, घर आपणे पई लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी धुरदरगाही एका चढ़दा, अमाम मैहन्दी नाउँ रखाईआ। लहिणा देण चुकाए सीस धड़ दा, गढ़ हँकार तोड़ तुड़ाईआ। अक्खर कोई ना मात पड़दा, ना कोई पैंतीस तीस बतीस जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग देवे अन्त वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम एका नाअरा, एका अलक्ख जगाईआ। अल्ला राणी कर प्यारा, ऐनलहक उठाईआ। ख़ुदी ख़ुदाए पावे सारा, हरि खेले खेल ख़ुदाईआ। वरते वरतावे बेऐब परवरदिगारा, गैब अगैबा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मक्का मदीना फेरा पाईआ। मक्का मदीना चरन छुहा, एका जोत जगांयदा।

नूर अलाही आप अख्वा, नूरो नूर समांयदा। दीपक कोहतूर आप जगा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी धार चलांयदा। कलिजुग काले तेरी धार, हरि आपे आप जगाईआ। सम्मत पन्दरां हो त्यार, चौदां लोकां फेरी पाईआ। चोदां तबकां मारे मार, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। साचे अस्व हो अस्वार, शाह ऐली संग रलाईआ। अहिमद मुहम्मद करे ख़बरदार, चार यारां वेख वखाईआ। हक्क हकीकत पावे सार, लाशरीक आप अख्वाईआ। इक्क तारीख दीन घर, सतारां हाढ़ आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे मात लड़ाईआ। कलिजुग साचा मात लड़ाउणा, हरि साची बणत बणांयदा। शब्द सरूपी कटक चढ़ाउणा, गोबिन्द सेवा लांयदा। एका तीर कमान फड़ाउणा, एका चिल्ला आप रखांयदा। जोधा सूरबीर इक्क अख्वाउणा, आप आपणा बल वखांयदा। पंज तत्त कोई नज़र ना आउणा, हरि जोती जोत जगांयदा। शब्द गुर वड कर्म कमाउणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। गुरदर मस्जिद मन्दिर सारा ढौहणा, जगत निशान रहिण ना पांयदा। मुल्लां शेख़ मुसायक दस्तगीर कोई रहिण ना पाउणा, ना कोई संग रखांयदा। कलमा नबी रसूल ना किसे पढ़ाउणा, ना कोई आइत सिखांयदा। इक्क जहाज़े सर्ब चढ़ाउँणा, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। सोहँ चप्पू साचा लाउणा, नौ खण्ड पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां धार चलांयदा। सम्मत पन्दरां मारे धा, नेत्र नैण वहाईआ। उम्मत नबी रसूल ना दिसे कोई राह, चार यार रहे कुरलाईआ। अल्ला राणी घर घर कर बैठी नांह, आप आपणा मुख भवाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंका जामा पा, अमाम मैहन्दी आप अख्वाईआ। मुख नकाबा इक्क रखा, पुन्न सवाबा ना कोई जणाईआ। हक्क जनाबा आप हो जा, साचा ताजा रिहा दौड़ाया। दो दो आबा मेल मिला, साचा मेला मेल मिलाईआ। एका काअबा दए वखा, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उम्मत नबी रसूल एका सिख्या दए पढ़ाईआ। उम्मत नबी रसूल, हरि साचा आप सिखांयदा। शब्द दो अक्खर ना जाए भूल, रोड़ी सक्खर चरन छुहांयदा। धुरदरगाही लाया पथ्थर, ना कोई भार उठांयदा। कूड़ कुड़यारा लथ्थे सथ्थर, नूर अलाही आप लुहांयदा। अल्ला राणी नीर वहाए रो रो अथ्थर, ना कोई धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला सूसा तन छुहांयदा। काला सूसा तन शृंगार, हरि साची बणत बणाईआ। ईसा मूसा हाहाकार, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। लिखे लेख हरि अपर अपार, पहली चेत्र दिवस सुहाईआ। शाह पाक इराक रहिणा ख़बरदार, प्रभ साचा रिहा जगाईआ। अन्तिम होणा ख़ाकी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। किसे घर ना

दिसे खुल्ह ताक, दीवा बत्ती ना कोई जगाईआ। ना कोई पाले दुल्दुल्ह राक, हसन हुसैन ना ख़ुशी मनाईआ। अमाम मैहन्दी जोत सरूपी आपे रिहा झाक, कलमा कलाम दए पढ़ाईआ। कलमा अमाम हरि सुल्ताना, आपणा आप जणाया। आपे होए मेहरवान मेहरवाना, मेहरवान आप अख्वाया। आपे मेटे पंच शैताना, शाह अबिनूस रहिण ना पाया। ना कोई उठाए विच्चों कबरस्ताना, ना कोई हूरां मेल मिलाया। ना कोई पवण ना मसाणा, ना कोई बख़्शे दो जहानां, ना कोई होए सहाया। संग मुहम्मद अन्तिम वार सम्मत पन्दरां दर दुआरे आप कुरलाणा, हरि साचे तीर चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा पड़दा पाया। निहकलंक हरि जोत जगा, शब्दी अमाम अख्वाईआ। ब्रह्मण गौड़ा आप हो जा, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, मक्का मदीना फेरा पाईआ। पंडत काशी ल्ए जगा, जगत विद्या दए दुहाईआ। साची सिख्या दए सिखा, एका मति समझाईआ। चार वरनां एका धाम दए बहा, जूठे झूठे मेट मिटाईआ। मुस्लिम सुन्नी कोई रहिणा ना, पंडत पांधा ना कोई तिलक लगाईआ। ग्रन्थी पन्थी ना सके कोई किसे बचा, ना होवे कोई सहाईआ। पुरख अबिनाशी आप आपणी जोत जगा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। शब्द निराला तीर चला, लक्ख चुरासी दए खपाईआ। शाह कंगाला वेख वखा, दो जहानां फेरा पाईआ। तालब तलब पूरी दए करा, गालब गलब आप अख्वाईआ। सालस होवे विच जहां, सच सालसी आप कराईआ। चार वरनां ख़ालस ख़ालसा दए बणा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ करे जुदाईआ। कलिजुग कूड़ा कल प्रधान, कूड़ो कूड़ समाया। चारों कुन्ट झुलाए निशान, आपणा डेरा लाया। राज राजान शाह सुल्ताना मारे इक्क बाण, सच मुकाम दिस किसे ना आया। भरमे भुल्ले जीव निधान, भरमी भरम भुलाया। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्म ज्ञान, आत्म ब्रह्म ना किसे जणाया। कर्म धर्म सर्ब तज जाण, नेती धोती वेख वखाया। ग्रन्थ पन्थ पढ़ पढ़ बहि जाण, गुर गोबिन्दा दिस ना आया। उच्चे टिल्ले पर्बत वेख जहान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आपे धाया। नीले बस्त्र मुल्ला शेख काज़ी अञ्जील कुरान, अल्ला हू हू नाअरा लाया। तूं तूं सुरती विच प्रधान, अमाम मैहन्दी दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड करे रुशनाया। नौ खण्ड हरि जोत जगौणी, एका जोत जगाईआ। वरन गोत सर्ब मेट मिटौणी, भुल्ल रहे ना राईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाला तीर्थ तट खेल मुकौणी, अकाल पुरख मेल मिलाईआ। चरन धूढ़ बख़्शे साची नहौणी, मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई एका घर बहाईआ। जञ्जू टिक्का बोदी सिटा ना कोई मनौणी, धारी केसा वेख वखाईआ। रुंड मुंड ना सुन्नत करौणी, शरअ शरायत ना कोई जणाईआ। सोहँ सिख्या साची माला अठ्ठ अठोतर प्रभ साचे गल पौणी, मन का

४६
०७

मणका दए फिराईआ। एका राग एका धुंन हरि आप उपजौणी, एका सुरताल वजाईआ। पूर कराए घर घर जा जा भौणी, जो जन रसना रिहा ध्याईआ। कलिजुग अन्तिम कटे हाढ़ी लग्गे फल साची सौणी, प्रभ एका फल लगाईआ। जन भगतां काया अन्दर करी रौणी, सम्मत चौदां ख़ुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे थाउँ थाँईंआ। कलिजुग काला साचा शेर, घर साचे आप सुहांयदा। आपे बैठा हो दलेर, आप तमाचे मुख लगांयदा। लक्ख चुरासी रिहा घेर, भाण्डे काचे भन्न वखांयदा। ना कोई ज़बर ना कोई ज़ेर, ना कोई नुक्ता वखांयदा। ऐन गैन उप्पर ना नुक्ता , गैन ना कोई जणांयदा। ना कोई संझ ना कोई सवेर, पंज निमाजा ना कोई पढ़ांयदा। ना कोई कूजा ना कोई बांग, ना कोई तसबी ना कोई माला, ना कोई सांग वरतांयदा। एका दए नाम सुखाला, सोहँ साचा जाप जपांयदा। प्रगट हो पुरख अकाला, आप आपणी दया कमांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, दीनां बंधू आप अख्वांयदा। गुरमुखां अन्दर बणाए पंज तत्त सच धर्मसाला, काया गढ़ सुहांयदा। दीपक जोत कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। मिले मेल गोबिन्द गोपाला, गोबिन्द रूप समांयदा। साचा शब्द करे दलाला, अन्दर मन्दिर खोज खोजांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, दर द्वार आप दुरकांयदा। भाग लगाए काया माटी साची खाला, साचा खेड़ा आप सुहांयदा। देवे नाम सच्चा धन्न माला, चोर यार लुट्ट ना कोई लै जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म सेजा सच मृगशाला, आप आपणा आसण लांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, एका रंग रंगांयदा। होए प्रतक्ख गुसाँईं, आपणा संग निभांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वेख वखाए थाउँ थाँईं, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे कर कर मेले लभ्मीआं बाहीं, चतुर्भुज दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा सच अमामा इक्क जणांयदा। नाम दमामा पाए शोर, चार कुन्ट घनघोरा। कलिजुग जीव कढ्ढे चोर, धर्म राए हथ्थ रखाए डोरा। सम्मत सोलां अग्गे दए तोर, चुकाए तोरा मोरा। जूठ झूठ खाणी भोर भोर, किसे मिले ना अग्गे शोरा। धुर दरगाहों गए रुठ, पंखी पंछी जीव ढोरा। पुरख अबिनाशी गया तुठ, जन भगतां मन चाउँ घनेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए हक्क निबेड़ा। हक्क निबेड़ा सच ख़ुदा, करन करावणहारा। आपे करे वक्ख जुदा, तोले तोल संसारा। सच घर जो होए फिदा, देवे इक्क हुलारा। एका राह वखाए साचा सिध्धा, दो जहानां पार किनारा। लाड़ी मौत पाए गिध्धा, सम्मत पन्दरां दिवस विचारा। नाल रलाए नौ निधां, अठारां बन्न्हे धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल चार यारा। चार यारी देवे धक्क, हरि साची बणत बणाईआ। ना कोई सके मात रक्ख, चौदां लोक मुख भवाईआ। चौदां तबकां हो प्रतक्ख,

आप आपणा धक्का लाईआ। चारों कुन्ट उडने कक्ख, कलिजुग कूड़ा दए दुहाईआ। पीर दस्तगीर शाह हकीर ना कोई सके रक्ख, गल जंजीर ना कोई तुड़ाईआ। लक्ख चुरासी फल गया पक्क, कलिजुग साची ख़ुशी मनाईआ। लाड़ी मौत लए फक, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। भगत सुहेले करे वक्ख, लिख्या लेख आप लिखाईआ। भरे भण्डारे होए सक्ख, सोहँ वस्त झोली पाईआ। दिवस रैण हो प्रतक्ख, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। रो रो पुकारन गण गधंरब देव यख, यमन रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा रिहा सिखाईआ। कलमा साचा कल कलबूत, नूरी नूर समाया। आपे धागा आपे सूत, आपे ताणा पेटा पाया। आपे गया रूठ, आप आपणा लए मनाया। कलिजुग नगारा वज्जया झूठ, अन्त रहिण ना पाया। अल्ला राणी हथ्थ खाली ठूठ, चारों कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शाह ईरान लए उठाया। शाह ईराने लिख्या लेख, हरि साचे जोत जगाईआ। चौदां कत्तक धरया भेख, वड वड्डी वड्याईआ। सम्मत पन्दरां लए वेख, दर दुआरे अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वटाईआ। रंग वटाए हरि बनवार, आपणा भेख वटाया। काला सूसा तन शृंगार, मुख नकाब रखाया। या मुबीन या मुबीन, आप आपणा नाअरा लाया। मिहबान बीदो एका अक्खर, बी खैर या अलाही आप सुणाया। अजमतो करमतो अजबिवा अतिलहा भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल अछल्ल खेल खिलाया। दरोही ख़ुदा ख़ुदी चार यार, ख़ुदावंद आप पुकारया। दरोही पीर दस्तगीर मारे मार, दरोही देवे ना कोई सहारया। दरोही नबी रसूल आई हार, दर कबूल ना कोई करा रिहा। उम्मत नबी रसूल गई भूल, अमाम मैहन्दी एका कलमा आप सुणा रिहा। वेखे खेल शाह अफगून, दिशा लहिंदी जोत जगा रिहा। आपे बणया धारी मून, आप आपणा मुख भवा रिहा। आपे नुक्ता बणया नून, नूनगूना आप हो जा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अल्ला अलाही नूर जणा रिहा। अल्ला अलाही नूर, हक्क हक्क उपाया। आपे नेड़े आपे दूर, हरि साचा ग़रीब निवाज्जया। आपे चोटी चढ़े कोहतूर, आप आपणा साजण साज्जया। आपे होए शाह गफूर, चारों कुन्ट फिरे भाज्जया। आपे होए हाज़र हज़ूर, हेठ रक्खे साचा ताज्जया। ऐली अल्ला मिटाए जगत गरूर, पकड़ पछाड़े शाह नवाब्या। पीर फ़कीरां करे चूरो चूर, मुलां शेख़ ना करे कोई हाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेले खेल ग़रीब निवाज्जया। ग़रीब निवाज़ मुकामे हक्क, आपणा हक्क रखाया। नूर अलाही वेखे राह रिहा तक्क, अमाम मैहन्दी केहड़ी कूटे आया। उम्मत नबी रसूल प्रभ एका पाए नक्क नथ्थ, साची डोरी हथ्थ रखाया। दोज़ख

दोज़खी देवे धक्क, एका धक्का लाया। इक्की सौ विच्चों लए रक्ख, जिस जन आपणा चरन ध्यान रखाया। रोड़ी सक्खर हो प्रतक्ख, लहिणा लहिणे दए चुकाया। आपे करे भाण्डे सक्ख, आपे दए भराया। आपे करनहारा वक्ख, आपे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अहिबाब इक्क रबाब रिहा वजाया। सच अहिबाबा हरि नवाबा, एका एक अख्वांयदा। चरन साचा दे रकाबा, साची ज़ीना आसण लांयदा। कोई ना झल्ले मात ताबा, लोक तीनां फेरी पांयदा। आपे दए पुन्न सवाबा, अन्त अज़ाबा आप भुगतांयदा। आपे जा जा वेखे मक्का काअबा, साचा हाजी हज्ज करांयदा। नाल रलाए साजन साचा, हरि साचा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरा वेख वखांयदा। ऐली शाह इक्क ललकारा, आपणा आप लगावणा। सम्मत पन्दरां हो त्यारा, तेरा रूप वटावणा। आपे होए शाह अस्वारा, शब्द अलाही आप अख्वावणा। कुतब गौंस कर त्यारा, एका धौंसा मात वजावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा साचा संग रखावणा। तेरा साचा संगी जाए जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। रिवाल्सर लगाया भाग, इक्की सौ कोस वेख वखांयदा । शाह रूसा बन्ने तन तेरे ताग, तेरा सगन मनांयदा। चीना लग्गा धोवे दाग, सीना पार करांयदा। भारत खण्ड वेखे इक्क नगीना, कीमत करते कोई ना पांयदा। मेट मिटाए मुहम्मदी दीना, दीन अलाही आप अख्वांयदा। आपे चाढ़े रंग भीन्ना, साची भट्ठी आप तपांयदा। दो जहानी दाना बीना, बीना दाना आप अख्वांयदा। आबे हयात एका पीणा, प्रभ सोहँ जाम प्यांअदा। आबे हयात दर द्वार, हरि साचे आप रखाया। कलिजुग काली लाई इक्क कनात, दिस किसे ना आया। ना कोई रैण ना कोई प्रभात, ना कोई सन्धया वेख वखाया। ना कोई दिवस ना कोई रात, ना कोई चांदनी चन्द सवाया। ना कोई सूरज करे प्रकाश, रवि ससि ना कोई उपाया। आप आपणा वेखे खेल तमाश, वेखणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आप करे नास, चिन्ता सोग ना कोई रखाया। आप उपा आप खपा, आपे मेट मिटाईआ। आपे कलमा ल्या पढ़ा, आपे नाअरा लाईआ। आपे आइत लई सिखा, आपे शरईत रिहा बणाईआ । आप आपणा सबक सिखा, साबक इक्क रखाईआ। साचा कुतब आप उपा, साची सिख्या रिहा सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आप मिटाए आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। उम्मत नबी रसूल तेरा जगया चिराग, कलिजुग जोत जगाईआ। हउमे हँगता लग्गे दाग, दूई द्वैती संग रखाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तिम कल गया जाग, निहकलंका जामा पाईआ। अल्ला राणी होए विछोड़ा कन्त सुहाग, साची सेज ना कोई हंढाईआ। अट्ठे पहर उठ उठ रही भाज, नंगीं पैरी फेरी पाईआ। सिर उठाई आपणी लाज, लाजावन्त रही शरमाईआ।

पारब्रह्म प्रभ रचया काज, साचा सगन मनाईआ। सतिजुग साचे मारे वाज, लोकमात करे कुड़माईआ। सम्बल नगरी आए भाज, गुर गोबिन्दा वेख वखाया। सम्मत चौदां रचया काज, चौदां लोक करे जणाईआ। सम्मत पन्दरां चढ़े ताज, अन्दर मन्दिर फोल फुलाईआ। बेड़ा उठाए गाज़ी गाज़, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ। आपे खेलणहार निरँकारा, आपणी कल वरतांयदा। धोती नेती पावे सारा, तिलक लिलाटी वेख वखांयदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बहाए इक्क दुआरा, आप आपणा लेख लिखांयदा। एका दूजा भउ निवारा, ज़ात अजाति रहिण ना पांयदा। आपे खोले सच दुआरा, इक्क इकांती जोत जगांयदा। प्रगट हो विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, एका डंका आप वजांयदा। लोआं पुरीआं दए हुलारा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पार किनारा, एका धक्का लांयदा। लक्ख चुरासी तेरी सुणे पुकारा, धर्म मात संग रलांयदा। धरनी रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहांयदा। कलिजुग भार ना चुकया जाए सारा, फड़ फड़ उत्तों आप दबांयदा। पुरख अबिनाशी ढहि पए दुआरा, तेरा राह इक्क तकांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, मैं मेरा मूल चुकांयदा। कलिजुग जीव होए गंवारा, गुर मति ना कोए रखांयदा। मन मति बुध करया सर्ब प्यारा, माया मोह चुकांयदा। काम क्रोध लोभ मोह तन श्रृंगारा, जगत हँकारा वेख वखांयदा। आसा मनसा तृष्ना अट्ठे पहर रहे दुआरा, ना कोई बाहर कढांयदा। नारी कन्त ना कोई प्यारा, नार दुहागण वेख वखांयदा। पिता पूत ना पावे सारा, मावां पुत्तरां नाता तुड़ांयदा। भैण भ्रा ना कोई सहारा, ना कोई संग रखांयदा। भईआ बेबा पार किनारा, जगत बुड़ेपा ना वेख वखांयदा। ना कोई साजन सईआ पावे सारा, साची नईआ ना कोई चढ़ांयदा। चार वरन फड़ फड़ डोबे विच मँझधारा, कलिजुग आपणा कर्म कमांयदा। धरत मात दी सुण पुकारा, प्रभ साची दया कमांयदा। बवन्जा अक्खर लेख अपारा, आप आपणा पड़दा पांयदा। बवन्जा साल हरि खेल अपारा, लोकमात तन हंढांयदा। पैंती अक्खरी कर उज्यारा, पंज तीस आप समांयदा। सन्त मनी सिँघ सच दुलारा, पैंती साल सेव कमांयदा। छतीवें साल पार किनारा, छत्ती रागां नाल रलांयदा। एका अलक्ख जगाए इक्क दुआरा, एकँकारा मंग मंगांयदा। भरणहार सर्ब भण्डारा, अखुट्ट कदे ना जांयदा। जुग जुग देवे कर प्यारा, अतोट अतुट रखांयदा। कलिजुग अन्तिम बणे आप वरतारा, जोती जामा पांयदा। राम कृष्न ना पावे सारा, प्रभ साचा शब्द जणांयदा। कृष्ना रूप कृष्न मुरारा, किशना पक्ख समांयदा। कृष्न द्वारका वेख दुआरा, बन बिन्दरा डेरा लांयदा। मथरा गोकल इक्क चुबारा, ग्वाल बाला संग निभांयदा। नानक बणया दर भिखारा, एका मंगण मंग मंगांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, नाम सति

झोली पांयदा। गुर गोबिन्दा सुत दुलारा, आप आपणी सेवा लांयदा। अबिनाशी अचुत्त खेल अपारा, जुग जुग रुत्त सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, आप आपणी दया कमांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, गुर पूरा आप उठांयदा। शब्द खण्डा तीर कटारा, तन गात्रे आप लटकांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। सृष्ट सबाई पावे सारा, आप आपणी सेवा लांयदा। सम्मत चौदां कर उज्यारा, गुरमुख साचे मात जगांयदा। सम्मत पन्दरां दए हुलारा, लक्ख चुरासी आप हिलांयदा। ईसा मूसा दर भिखारा, साची भिच्छया कोई ना पांयदा। चीना रूसा इक्क प्यारा, साची वंड वंडांयदा। सोहँ फड़ाए हथ्थ तिक्खा आरा, दो धड़ चीर चिरांयदा। मक्का मदीना पहली धारा, शाह अस्वारा आप वहांयदा। सिँघ मनजीते लाई इट्टा गारा, डूँघी नींह धरांयदा। सिँघ जगदीसा सच दुलारा, सच दरबारा आप सुहांयदा। प्रगटे जोत हरि निरँकारा, सच सिँघासण इक्क वखांयदा। खेले खेल अपर अपारा, अनूप अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा भेव कोई ना पांयदा। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, एका घर बहांयदा। ऊँचां नीचां पार किनारा, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। दीन मज़्हब ना कोई सहारा, ना कोई वंड वंडांयदा। मन्दिर मस्जिद ना कोई सुहाए गुर दुआरा, इट्टां गारा ना कोई लगांयदा। हड्ड मास नाड़ी रत्त महल्ल अपारा, सिर आपणी तत्त टिकांयदा। घास फूस अपर अपारा, फुल फुलवाड़ी आप लगांयदा। नाक कान अक्ख नासका गुदा लिंग खेले खेल अपारा, साचा दर आप सुहांयदा। आपे वस्सया अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहर आप समांयदा। आपे करया बन्द किवाड़ा, आपे कुण्डा लांहयदा। आपे होए धुरदरगाही साचा लाड़ा, सीस दस्तारा इक्क सुहांयदा। आपे वेखे जगत अखाड़ा, लक्ख चुरासी आप तरांयदा। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, गुर गोबिन्दा सेवा लांयदा। आपे फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा घर सुहांयदा। कलिजुग काले पाया घोल, चारों कुन्ट अखाड़ा। काल नगारा वजाए ढोल, लोआं पुरीआं रिहा फोल, आप उठाए हौली हौल, इक्क जैकारा बोल, पुरख अबिनाशी कीता कौल, अन्तिम वेले जाणा मौल, सदी चौदां दए हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वेखे सच प्यारा। सदी चौदवीं चौदां तबक, एका रंग रंगाईआ। नाल रलाए शाह समस, तब तबरेज़ ना कोई रखाईआ। वेखणहारा गौस गमस, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। संग रलाए तृष्ना तामस तमस, तन रही जलाईआ। ना कोई हमज़ा ना कोई मेटे हवस, ना कोई हिरस मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अल्ला तेरी एका अल्फ आपणे अंग लगाईआ। एका ऐन एका धार, नूरो नूर समाईआ। आपे भेजे हरि निरँकार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। दोवें मुख तिक्खी धार, साची बणत बणाईआ। आपे लभ्भी दए डार, दोवें

मुख भवाईआ। एका नुक्ता दए उभार, बे बसता दए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अल्फ अल्ला इक्क अकल्ला वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। अल्ला इलाही नूर महाना, इला बुत्त रखाया। एका बन्ने साचा गाना, एका रुत्त सुहाया। शाह फकीर हरि मौलाना, एका अलक्ख जगाया। आप आपणा कर कुरबाना, इक्क कुरबानी रिहा कराया। प्रगट हो मर्द मरदाना, मर्द मरदानगी दए दिखाया। शब्द सुत नौजवाना, आप आपणा बल धराया। प्रगट हो विच जहाना, शाह सुल्तानां वेख वखाया। एका चिल्ला तीर कमाना, रसना आप चलाया। बूरा कक्का मेट दए निशाना, अन्त रहिण ना पाया। एका देवे धक्का हरि निगहबाना, मेहरवाना वेख वखाया। अन्तिम छुट्टे पीणा खाणा, भर भण्डार ना कोई धराया। सम्मत पन्दरां कर परवाना, हरि साचा संग निभाया। आप सुणाए आपणा इक्क तराना, सोहँ सो जणाया। खेले खेल गुणी निधाना, गुण वन्ता आप अख्वाया। जूठ झूठ मिटे खाणा, ख़ाकी ख़ाक मिलाया। पाए सार दीन इस्लामा, दीन अलाही वेख वखाया। आपे जाणे हक्क कलामा, एका कलमा नाम पढ़ाया। लक्ख चुरासी बणे अन्तिम तामा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा दर सुहाया। कलिजुग तेरा काला रंग, कलिजुग काल करे कुड़माईआ। सच द्वार ना जाए लँघ, पारब्रह्म रिहा डराईआ। पंज विकारा रक्खया संग, आपणी झोली मात भराईआ। हरि हरि ना गाया बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना हिलाईआ। जोत निरँजण ना चढ़या साचा चन्द, अल्ला हू ना वेख वखाईआ। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, कलिजुग अन्तिम जोत जगाईआ। जन भगतां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, सम्मत चौदां रुत्त सुहाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, चार वरनां करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी तजना मदिरा मास गन्द, रसना भोग ना कोई लगाईआ। मेट मिटाए जीव आत्म अन्ध, दुरजन कोई रहिण ना पाईआ। मूर्ख मुग्ध भागामन्द, हरि भगवान दिस ना आईआ। आत्म गया परमानंद, निजा नंद ना कोए वखाईआ। हउमे हँगता वज्जा जंद, ना कोई सके तुड़ाईआ। गुरमुख साजन साचे मीत मेल मिलाए होए बख्शंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेला सहिज सुभाईआ।

* अगम्म संदेश *

मित्तर माही प्यारड़ा, एका रंग करतार। सथ्थर सच्चा यारड़ा, विछाए विच संसार। वाजां मारे लाल दुलारड़ा, लम्बी बांह हुलार। वेखे पार किनारड़ा, दो जहानी वेख विचार। वस्सया आप न्यारड़ा, निरगुण रूप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उचार। यार न्यारा साचा मित्र, मीता मीत अख्वाया। आपे जाणे आपणा

चलित्तर, चित चितवत ना किसे रखाया। खेले खेल सुफन बचित्र, पवन पवित्तर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाया। साचा मित्र सज्जण सुहेला, साख्यात अख्वाए। आप आपणा कर कर मेला, पारजात बणाए। वेखे खेल गुरू गुर चेला, साची दात वखाए। सदा वस्सया रंग नवेला, इक्क अकांत समाए। आपणा खेल आपे खेला, जुग जुग वेस वटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा यारड़ा आप अख्वाए। साचा मित्र हरि शब्द, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। आप उतारे आपणा कर्ज़, लहिणा देणा झोली पाया। पूर कराए साचा फर्ज़, दूजी गर्ज़ रहिण ना पाया। राग नाद ना जाणे कोई तर्ज़, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। आप आपणा आपे वरज, आप आपणे घर बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मित्र आप अख्वाया। हरि मित्र हरि निरँकारा, हरि हरि संग रखाया। हरि जोत हरि उज्यारा, हरि हरि ज्ञान दृढ़ाया। हरि हरि खेले खेल न्यारा, कोटन कोटी कोट रूप वटाया। हरि हरि लगाए आपणी चोट, नर हरि नगारा इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मीत मुरारा इक्क उपजाया। माही पाही बेपरवाह, आपणा पन्ध मुकाए। दो जहानां वेखे एका थाँ, देर कोई ना लाए। शब्द सुनेहड़ा पकड़े बांह, पारब्रह्म सुणाए। मित्र माही बणाए आपणा नाँ, ना कोई दूजा संग रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दया कमाए। गुर गोबिन्दे आसण ला, आपणी सेज विछाईआ। पलँघ गलीचा दिसे ना, खाकी खाक टिकाईआ। बाग बगीचा वसे ना, ना कोई सेवक सेव कमाईआ। गुर संगत बहि बहि हस्से ना, कल्गी तोड़ा ना सीस टिकाईआ। रणजीत नगारा वज्जे ना, ना धौंसा कोई लगाईआ। नीला घोड़ा नच्चे ना, ना आपणा सुंभ हिलाईआ। किला कोट कोई दिसे ना, पुरी अनन्द नज़र ना आईआ। पंचम प्यारा दिसे ना, ना कोई संग निभाईआ। तीर निराला कसे ना, ना कोई कमान खिचाईआ। हथ्थ कटार फबे ना, ना शत्तरू वेख वखाईआ। फड़ चरन आपणे कोई दब्बे ना, ना कोई अंग लगाईआ। संगी साथी कोई लभ्भे ना, ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ। गुर गोबिन्दा पैर पसार, आपणा आसण लाया। ना कोई साजण मीत मुरार, पिता पूत ना कोई दिसाया। ना कोई करे मंगलाचार, बवन्जा बवन्जा ना कोई अलाया। ना कोई दिसे सच दरबार, चोबदार ना कोई वखाया। कल्गी तोड़ा ना सीस दस्तार, खुलड़े केस रखाया। आप आपणीआं भुजां पसार, बैठा आसण लाया। एका लिव एका तार, इक्क ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, वेले अन्तिम चेता आया। रो रो नेत्र करे पुकार, साचा लेखा वेख वखाया। पूत सपूता सच दुलार, गोबिन्द तेरा नाम उपाया। गोबिन्द तेरा रूप अपार, तेरी धार चलाया।

नेत्र नैण वेख उग्घाड़, सुत माता गुजरी लाल साचा जाया। सुत्ता विच उजाड़, इक्क तेरी ओट तकाया। हरिजन साचे मीत मुरार, तेरा राह तकाया। दए सुनेहड़ा पवण हुलार, अवगवणा ना पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा पड़दा लाहया। गुर गोबिन्दे अन्तिम धा, एका एक लगाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, घर सुत्ता बेपरवाहीआ। मेल मिलावा एका थाँ, जगत विछोड़ा दए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोड़ा मेल मिला साचा घोड़ा रिहा भजाईआ। वागां मोड़ आप अख्वा, आपणा पौड़ा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ बुझाईआ। गुर गोबिन्दे बूझ बुझा, हरि आपणी दया कमांयदा। आप आपणा भेव खुल्हा, नेत्र वेख वखांयदा। शब्द सरूपी रिहा बुला, शब्दी वाज़ लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दा एह समझांयदा। गुर गोबिन्दे कर विचार, इक्क ध्यान लगाया। शब्द सुनेहड़ा दए अपार, शब्दी शब्द सेवा लाया। होए विचोला विच संसार, सोहँ ढोला एका गाया। सम्मत तेरा वेख द्वार, प्रभ अबिनाशी चरन छुहाया। गुर गोबिन्दे भरया हरि भण्डार, सोहँ वस्त झोली पाया। आपे कीता बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लाहया। प्रगट करे विच उजाड़, माछूवाड़े संग निभाया। सो पुरख निरँजण दो जहानां पैंडा गया पाड़, साचे यारड़े मेल मिलाया। आप कराए पार किनार, अधविचकार ना कोई रखाया। एका सुर एका ताल, इक्क सतार हिलाया। नानक वेखे दर दरबार, लोकमात राह तकाया। शब्द विचोला आवे वारो वार, गुर गोबिन्दा रिहा घलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मित्र माही मेल मिलाया। साचा माही आदि निरँजण, एका एक अख्वांयदा। गुर गोबिन्दा मित्र सज्जण, साचा मेल मिलांयदा। आवे जावे मेल मिलावे पुरख अबिनाशी पड़दे कज्जन, एका पड़दा आपणा पांयदा। अन्तिम मेला साचे घर हरि साचे सज्जण, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माही मित्र यार मीतड़ा, साचे सथ आप मिलांयदा। भट्ठ खेड़ा नगर ग्रां, पंज तत्त ना भाए। पुरख अकाला तेरां नाँ, एका एक सताए। दीन दयाला पकड़ीं बांह, पूत सपूता रिहा कुरलाए। गोबिन्द गोपाला एका थाँ, मेला सहिज सुभाए। साचा लाला गले लगा, लहिणा ल्ए मुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाए। भठ खेड़े काया रहिणा गोबिन्द मूल ना भाया। पुरख अबिनाशी तेरे चरनी बहिणा, साचा धाम सुहाया। अट्ठे पहर दरस नैणां, आप आपणा दए कराया। एका अंग एका संग एका मंग दर दुआरे प्रभ साचे साक सज्जण सैणा, नाता बिधाता इक्क बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया।

गुर गोबिन्दे मिल्या मेला, हरि गोबिन्द विच समाया। खेले खेल गुरू गुर चेला, चेला गुर आप अख्वाया। आपे होया सज्जण सुहेला, हरि साचा संग निभाया। आप आपणा जाणे वेला, आप आपणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि हरि गोबिन्दा आप अख्वाया। हरि गोबिन्द हरि समा, हरि हरि जोत जगाईआ। हरि हरि साजण लए उपा, हरि हरि वेख वखाईआ। हरि हरि रंग दए रंगा, हरि हरि रंगण इक्क रंगाईआ। हरि हरि संग दए निभा, हरि हरि सगला संग निभाईआ। हरि हरि अंग लए लगा, हरि हरि अंगी कार अख्वाईआ। हरि हरि मृदंग दए वजा, हरि हरि मृदंगा आप वजाईआ। हरि हरि पलँघा दए विछा, हरि हरि साची सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। गोबिन्द मेला सगला साथा, हरि सज्जण शाहो पाया। एक चलाए साचा राथा, बेपरवाहो आप अख्वाया। प्रगट होए त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथां होए सहाया। आपे जाणे आपणी गाथा, जुग जुग आप चलाया। पारब्रह्म प्रभ सर्बकला समरथा, समरथ पुरख आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द साची जोत जगाया। गोबिन्द जोती आप जगा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आप आपणा नगर उपा, चार द्वारी वेख वखाईआ । ना कोई दिसे जगत निशान, इट्टा गारा ना कोई लाईआ। ना कोई बाढी सके बणा, ना कोई जोड़ जुड़ाईआ। ना कोई लाडी सके लडा, ना कोई मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द लए उपाईआ। गुर गोबिन्दा आप उपाए, आपणी कल धारया। साची नगरी धाम सुहाए, महल्ल अटल उच्च मुनारया। एका बाती एका दीवा पुरख अबिनाशी आप जगाए, मेट मिटाए अन्ध अँध्यारया। नीवां हो हो वेख वखाए, दिस किसे ना आ रिहा। साढे तिन्न हथ्थ सीआं भाग लगाए, हरि खेले खेल अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दा जन्म दवा ल्या। गुर गोबिन्दा जन्म दवा, सगली चिन्द मिटाईआ। सम्बल नगरी दए वसा, साचा धाम सुहाईआ। जोत अगम्मड़ी इक्क रखा, सच समग्री हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझाईआ । सम्बल नगरी साची रुत्त, हरि साचे आप सुहाईआ। आपे वेखे पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। पूत सपूता पाया साचा सुत्त, धुर दी बाण रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क निशाना रिहा जणाईआ। सम्बल नगरी सच निशाना, हरि साचे आप रखाया। आपे वेखे मार ध्याना, वेखणहार आप अख्वाया। आप उडाए इक्क बिबाणा, लोआं पुरीआं आप फिराया। आपे गाए इक्क तराना, एका राग अल्हाया। आपे बन्न्हे एका गाना, साचा सगन मनाया। आपे बख्शे तीर कमाना, साचा चिल्ला इक्क चढ़ाया। आपे होए जोधा सूरबीर बली बलवाना,

आपे विच मैदाना आया। आपे गोपी आपे काहना, आपे मण्डल रास रचाया। आपे अर्जन देवे ब्रह्म ज्ञाना, गीता गोझ खुल्ाया। आपे होए कृष्न भगवाना, कंसा मेट मिटाया। आपे रामा राम अख्वाना, आपे सीता संग रखाया। आपे रावण मारे विच जहाना, दहिसिर काल कराया। आपे बैठे सच बिबाना, आप आपणा रिहा उडाया। आपे प्रगट हो पुरख सुल्ताना, पारब्रह्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द साचे घर बहाया। सम्बल नगर वसे खेड़ा, हरि साचे रचन रचाईआ। गुर गोबिन्दे बन्न्हे बेड़ा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे निबेड़ा, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। सत्तां दीपां एका गेड़ा, गगन पतालां आप हिलाईआ। धरत मात तेरा खुल्ा वेहड़ा, हरि साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द काया गढ़ सुहाईआ। गोबिन्द काया गढ़ सुहञ्जणा, हरि साचे महल्ल उपाया। उप्पर चढ़े आदि निरँजणा, आपणा आसण लाया। हर घट बैठा सच्चा दर्द दु:ख भय भंजना, हरिसंगत मेल मिलाया। नेत्र पाए धूढ़ी अंजना, दुरमति मैल गंवाया। सम्मत चौदां छब्बी पोह कलिजुग अन्तिम वेला साचा साक सज्जणा, मात पित आप अख्वाया। जो घड़या सो भज्जणा, नित नवित्त एह खेल रचाया। काया गढ़ लक्ख चुरासी अन्तिम तजना, झूठा मोह वधाया। गुरमुख विरले गुरचरन दुआरे अमृत आत्म पी पी रज्जणा, कागों हँस बणाया। शब्द नगारा एका वज्जणा, सम्बल नगरी दए वजाया। गुरमुख साचे मीत मुरारे सज्जणा, गोबिन्द मेला रिहा मिलाया। वेले अन्तिम रक्खे लज्जणा, जुग विछड़े पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गढ़ सुहाया। गोबिन्द गढ़ उच्च महल्ला, अटल अटल अख्वाया। पुरख अबिनाशी बैठ इक्क अकल्ला, जल थल वेख वखाया। लोआं पुरीआं बोले एका हल्ला, ब्रह्मण्डां फेरा पाया। चौथे जुग पए तरथल्ला, हरि साचे खेल रचाया। कलिजुग कूड़ा होया झल्ला, ना कोई संग रखाया। साचा दीपक किते ना बला, साध सन्त ना कोई वखाया। दूई द्वैती लग्गा सला, जीव जन्त रहे कुरलाया। पंच विकारा फड़या भल्ला, तिक्खा मुख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरा दर सुहाया। गोबिन्द तेरा सच दर, उच्च महल्ल अटारी। पुरख अबिनाशी किरपा कर, घर घर विच ल्या उसारी। एका बैठा अन्दर वड़, आपे खेल खिलारी। आपे तोड़े किला हँकारी गढ़, रिहा पैज संवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द नगरी वेख विचारी। गोबिन्द नगरी साचा खेड़ा, प्रभ साचे आप वसाया। सति पुरख निरँजण वेखे झेड़ा, लक्ख चुरासी मात लगाया। आदि निरँजण करे निबेड़ा, हक्को हक्क वखाया। काल करता देवे गेड़ा, एका लट्ठ गिड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दा लए जगाईआ। सम्मत वीह सौ बिक्रमी कर प्यार, गोबिन्द

जोत जगाईआ। सम्बल नगरी कर उज्यार, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। इक्क अकल्ला पावे सार, एका रंग रंगाईआ। वीह सौ दो बन्ने धार, दूजा भउ चुकाईआ। तीजे तन करे विचार, त्रैगुण माया परे हटाईआ। चौथा घर अपर अपार, आपणा आप सुहाईआ। पंचम वेखे नारी नार, साचा रूप समाईआ। छेवें मेला शब्द धार, साची छहिबर लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण अपर अपार, आपणी जोत जगाईआ। अठवें अड्ड अगम्म अपार, ना कोई वेख वखाईआ। नौ दुआरे वस्सया बाहर, दिस किसे ना आया। दस्सवां महल्ल इक्क उसार, घर घर विच बैठा आसण लाईआ। वीह दो दस तेरा प्यार, प्रभ साचा आप कराईआ। वीह सद बारां कर प्यार, आपणी रचन रचाईआ। गोबिन्द साचे लए उभार, पहली चेत्र लेख लिखाईआ। वीह सद बारां बन्ने धार, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। हरिसंगत प्रभ कर त्यार, लोकमात दए वड्याईआ। तेरा तेरी बन्ने धार, नानक तोला इक्क रखाईआ। साधा सन्तां पावे सार, राज राजानां दए हिलाईआ। सम्मत चौदां कर प्यार, गुर गोबिन्दे ख़ुशी मनाईआ। सम्बल नगरी कर उज्यार, साची जोत करे रुशनाईआ। आपे वेखे शाह अस्वार, चिट्टा अस्व इक्क दौड़ाईआ। सोलां कलीआं कर श्रृंगार, बैठा आसण लाईआ। आवे जावे वारो वार, एका पौड़ा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगरी दए सुहाईआ। सम्बल नगरी जोत उजागर, हरि साचे आप कराईआ। गुरु गोबिन्द बणया शब्द सौदागर, प्रभ साचा वणज कराईआ। निर्मल कर्म होए उजागर, जिस जन आपणे अंग लगाईआ। अमृत बख्शे काया गागर, हाढ़ सतारां आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दा संग रखाईआ। गुर गोबिन्दे चढ़या चा, वेला अन्तिम आया। पुरख अबिनाशी संग मलाह, गुरमुखां बेड़ा रिहा चलाया। फड़ फड़ बांहों राहे पा, नौ दुआरे पार कराया। अन्दर बैठा बेपरवाह, सच सिँघासण आसण लाया। इक्क जपाए साचा नाँ, नानक विचोला आप रखाया। बणया तोला एका थाँ, साची धारा तोल तुलाया। साचा डोला दए वखा, गुरमुख साचे लए चढ़ाया। बणया गोला दर दर घर घर फेरी पा, गुरमुख साचे लए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां चौदां वेख वखाया। सम्मत चौदां हरि अबिनाश, आपणी दया कमाईआ। गुर गोबिन्द होया दास, साचा संग रखाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशा डेरा लाईआ। आदि अन्त ना होए विनास, ना मरे ना जाईआ। सदा सुहेला वसे पास, दिवस रैण ख़ुशी मनाईआ। लोकमात पाए रास, पहली चेत्र ख़ुशी मनाईआ। गुर गोबिन्दे करी अरदास, प्रभ साचा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, दोए जोड़ निमस्कारे। पुरख अबिनाशी तेरा संग, असथिल सोहिण चुबारे। तेरी काया तेरा रंग, तेरी

चोली बस्त्र अपारे। तेरी धार तेरी गंग, तेरी अमृत धारे। तेरा नाम तेरा पलँघ, तेरी सेज अपारे। एका मंगण रिहा मंग, कट्ठे रहे कन्त भतारे। गुर गोबिन्दा साची नारी, हरि हरि कन्त मनाया। अट्ठे पहर सेवक करे सेवादारी, चरन सरन सरनाया। एका पूजा पाठ पुजारी, अकाल अकाल ध्याया। मन्दिर देहुरा गुरदुआरा ना ल्या कोई उसारी, ना कोई थान सुहाया। प्रभ चरन मिली सच्ची सिक्दारी, साचा धाम सुहाया। एका लिव एका तारी, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। एका गुर इक्क अवतारी, एका एक अख्वाया। एका पैज रिहा संवारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका जोत इक्क आकारी, इक्क निरँजण आप अख्वाया। एका पारब्रह्म प्रभ पाए सारी, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूता गोद उठाया। पूत सपूता साचा सुत्त, लए सच हुलारा। पुरख अबिनाशी आपे तुठ, करे सच प्यारा। अमृत आत्म देवे घुट्ट, एका निझर धारा। अवण गवण गया छुट्ट, काल महांकाल मंगे दर दुआरा। अन्तिम कलिजुग आप सहौणी आपणी रुत्त, आप आपणा लए अवतारा। मनमुखां मुख पाए थुक्क, निन्दक निन्दया झक्ख मारा। गुर गोबिन्दा वेखे झुक, सम्बल नगरी धाम न्यारा। पुरख अबिनाशी ल्याया चुक्क, करया आप पसारा। कदम कदम ना पैंडा जाए मुक्क, जे कोई चले जीव गंवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात लए अवतारा। लोकमात हरि लए अवतार, आपणी जोत जगाईआ। मानस देही लेखा पार, ना कोई लेख लिखाईआ। साल बसाला हरि करतार, रिहा मुख छुपाईआ। शाह कंगाला खेल अपार, छिन छिन आप कराईआ। जगत दलाला पावे सार, गुरमुख विरले लए जगाईआ। सिँघ पाल कर त्यार, सोहँ देवे नाम वड्डी वड्याईआ। जोती नूर कर उजाला, साचा लाल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। सिँघ पाला हरि रखवाला, परम पुरख अख्वाया। सोहँ देवे नाम सच्चा धन्न माला, दूसर किसे हथ्थ ना आया। बवन्जा साल रिहा कंगाला, ना कोई मन्त्र नाम दृढ़ाया। फल ना लग्गा किसे डाला, खाली बुत वखाया। आत्म सेज ना किसे विछाई सच्ची मिंगशाला, पूत सपूता दए भुलाया। आपे खेले खेल हक्क हलाला, हक्क हकीकत वेख वखाया। आपे चले आपणी चाला, चलणहार आप हो जाया। तेग बहादर दर एका भाला, सीस भेट चढ़ाया। आपे तोड़े जगत जंजाला, बंधन बंधी कट्ट वखाया। गुरमुख साचा सज्जण आप उठाला, लोकमाती जन्म दवाया। इक्क जपाया नाम सुखाला, साचा मार्ग लाया। कलिजुग अन्तिम होए हाल बेहाला, गुरमुखां दए वड्आया। गुरमुखां वखाए सच्ची धर्मसाला, सति धर्मी धर्म कमाया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल निराला, वर ब्रह्म वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि सुहा, हर घट मण्डल रासा। आप आपणा

५८
०७

रिहा छुपा, आपणा आप करे प्रकाशा। आपणा दीवा बत्ती रिहा जगा, अन्ध कूप आप हो जासा। साचा धूप रिहा धुखा, सच सुगंधी वेख तमाशा। चारे कूटां फेरा पा, खेले खेल पृथ्मी आकाशा। सम्बल नगरी धाम सुहा, गुर गोबिन्दे दए भरवासा। आप आपणा नाल रखा, आपे वेखे खेल तमाशा। निहकलंका डंक वजा, गुरमुखां लेखे लाए काया रसन स्वासा। राउ रंकां रिहा उठा, पारब्रह्म पुरख अबिनाशा। वासी पुरी घनका आप अख्वा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पाए आपणी रासा। सम्मत चौदां साचा रंग, हरि साचे आप रंगाया। हरिसंगत हरि होया संग, आपणी बणत बणाया। शब्द उडारी इक्क पतंग, डोरी नाम बंधाया। एका धार साची गंग, एका नीर वहाया। एका बैठा हरि पलँघ, गुरमुख साचे लए तराया। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ दुआरे वेखे लँघ, गुरमुख साचे लए जगाया। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, साचा आसण लाया। शब्द गुर बण मलँघ, घर घर नच्चण आया। लिख्या लेखा निभे संग, ना कोई तोड़ तुड़ाया। होया विछोड़ा पुरी अनन्द, सरसा भेट चढ़ाया। जो जन गाए सुणाए सोहँ सुहागी साचा छन्द, पूर्ब लहिणा झोली पाया। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, नेत्र नैणा दरस दिखाया। दूई द्वैती ढाई कंध, भरम गढ़ रहिण ना पाया। गुरमुख साचे परमानंद, चरन ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी आप बख्शिंद, सम्मत चौदां लए तराया। लिख्या कर ना सके कोई कलमबन्द, एका कलमा रिहा पढ़ाया। लक्ख चुरासी देवे दंड, भेख पखण्डा दए मिटाया। मनमुख मेटे नार दुहागण रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढाया। आपे सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आया। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म अख्वाया। कलिजुग तेरी वढ्ढे कंड, दिस किसे ना आया। जन भगतां आत्म पाए ठंड, सम्मत चौदां नींह धराया। पहली चेत्र वंडी वंड, एका इक्की पाया। साची सिक्खी तुटी गंढ, माझे जोड़ जुड़ाया। आप उठाई सिर आपणे पंड, गुरमुख हौले भार रखाया। सिँघ मनजीते वंडी वंड, ज़ोरे ज़ोर दवाया। जगत जगदीशा तोड़े घमंड, नौ दर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगरी जोड़ जुड़ाया। सम्बल नगरी जुड़या जोड़ा, हरि साचे आप जुड़ाया। पुरख अबिनाशी एका घोड़ा, दो जहानी रिहा दोड़ाया। इक्क लगाया साचा पौड़ा, एका चरन उठाया। आपे होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाया। लोकमात आए दौड़ा, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, ना कोई वेख वखाया। फल ना दिसे मिट्ठा कौड़ा, रसना रस ना चखे राया। शब्दी जोती जुड़या जोड़ा, हरि साची बणत बणाया। गुरमुखां घर घर आपे बौहड़ा, सम्मत चौदां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की रिहा पाया। एका इक्की आपे पा, एका कल वरताईआ। आपणी सिक्खी आप बणा, आपे संग

रखाईआ। धारों तिक्खी दए वखा, चार वरन इक्क सरनाईआ। एका दूजा भउ मिटा, तीजे नेत्र करे रुशनाईआ। चौथे घर दए बहा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। धर्म राए ना दए फाह, चित्रगुप्त ना वेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे निकाह, ना कोई सगन मनाईआ। दर दुआरे ना फेरा सके पा, मुख घुँगट रही शरमाईआ। हथ्थी मैहन्दी ना बहे ला, पीड़ा लाल ना डाहीआ। गुरमुखां मिल्या सच मलाह, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। गुर गोबिन्दा देवे सच सलाह, दे मति आप समझाईआ। पुरख अबिनाशी जोत जगा, सम्बल नगर बैठा आसण लाईआ। गुरमुखां हउमे रोग गंवा, चिन्ता रिहा मिटाईआ। एका जोग रिहा सिखा, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। आत्म भोगी भोग करा, साची सेज हंढाईआ। धुर संजोगी मेल मिला, विछड़ कदे ना जाईआ। दरस अमोघी दए वखा, प्रगट हर घट थाँईंआ। साची चोगी दए चुगा, माणक मोती इक्क खवाईआ। तीन लोकी पार करा, साचे धाम बहाईआ। पूजा पाठ ना कोई करा, एका एक बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। सुखमन नाड़ी पार करा, टेडी बंक तुड़ाईआ। आपणा उप्पर हथ्थ रखा, आवे जावे वाहो दाहीआ। गुरमुख साचे संग रखा, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। सच दुआरे कुण्डा ला, आपणा घर सुहाईआ। साची सेजा दए विछा, फूलण बरखा लाईआ। अमृत धारा रिहा वहा, इक्क सरोवर वेख वखाईआ। अनहद राग रिहा सुणा, साची सेवा लाईआ। आप आपणा पड़दा लाह, आपणा मुख वखाईआ। सुरत सवाणी चढ़े चा, मिले गुर पूरे साचे माहीआ। एका रंगण रंग रंगा, साचा चूड़ा तन छुहाईआ। छैल छबीला आप अख्वा, साचा जोबन इक्क हंढाईआ। पलँघ रंगीला इक्क विछा, एका धाम सुहाईआ। नारी कन्ता मेल मिला, घर साचे वज्जे वधाईआ । रंग बसन्ता दए चढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। जीवां जन्तां रिहा जणा, निहकलंक सच्ची सरनाईआ। सतिजुग साची बणता रिहा बणा, कलिजुग मिटे कूड़ी छाहीआ। महिमा अगणत गणत ना कोई सके गिणा, लिख्या लेख लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। सम्बल नगरी तेरा रूप, हरि साचा वेख वखांयदा। पुरख सुल्ताना साचा भूप, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा ध्यान रखांयदा। कलिजुग कूड़ा दिसे जूठ, झूठी क्रिया कर्म ना कोई वखांयदा। पुरख अबिनाशी गया तुठ, जन भगतां जन्म लेखे लांयदा। एका इक्की एका मुठ, साची सिक्खी आप बणांयदा। लक्ख चुरासी रिहा लुट्ट, दिस किसे ना आंयदा। सृष्ट सबाई पई फुट, ना कोई धीर धरांयदा। सम्मत पन्दरां पए जुट, जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। राज राजाना खाली ठुठ, दर द्वार आप फिरांयदा। माया राणी दए कुठ, एका सट्ट लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्बल नगरी देवे वर, गुर गोबिन्दे संग रलांयदा।

गुर गोबिन्दा साचा सुत्त, पारब्रह्म सरनाईआ। एका ताल एका सुर, एका राग अल्लाईआ। एका चरन प्रीती गई जुड़, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। एका चढ़या साचे घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखाईआ। पहली चेत्र गया बौहड़, सच सिँघासण हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। पहली चेत्र रंग अवल्ला, हरि आपणा आप कराया। गुरमुखां वखाए सच महल्ला, साचा दर सुहाया। जोत सरूपी इक्क अकल्ला, हरिसंगत संग रखाया। इक्की इक्की फेरया पल्ला, इक्की इक्की धार चलाया। एका इक्की वेखे निहचल धाम अटला, सच धाम सुहाया। आपे फलया आपे फुला, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। कलिजुग बूटा अन्तिम हुल्ला, पतझड़ वेला आया। लक्ख चुरासी जीव जन्त तेरा कोई ना पैणा मुल्ला, ना कीमत कोई चुकाया। मानस जन्म लाल अनमुल्लड़ा रुल्ला, बिन हरि नामे वक्त गंवाया। पाणी पया काया चुल्ल्हा, दीपक जोत ना कोई जगाया। पंज तत्त ना कराए कोई सुल्ह, मति बुध रही शरमाया। अमृत आत्म सभ दा डुल्ला, कँवल नाभ ना कोई भराया। गुरमुख पूरा गुर पूरे तेरी चरन प्रीती घोल घुला, चरन चरनोदक मुख चुआया। सोहँ गौंदे सोहँ बुल्ल्हा, रसना जिह्वा आप हलाया। आपणे कंडे आपे तुला, आपे भार उठाया। गुरमुखां उधारे साची कुला, एका इक्की रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां रंग रंगाया। साची सिक्खी गुरमुख साजण, प्रभ साचे आप बणाईआ। नाल रलाया शाहो शबासन, राज राजान आप अख्वाईआ। आपे होया दासी दासन, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साची नगरी साचा घर, घर घर वज्जे वधाईआ। सम्मत चौदां गया चढ़, प्रभ साचे ख़ुशी मनाईआ। सच सिँघासण उप्पर खड़, गुरमुखां लेख लिखाईआ। एका विद्या जाए पढ़, सोहँ वड वड्याईआ। काया माटी जाए सड़, मढ़ी गोर दबाईआ। पंचम विकारा रिहा लड़, अट्ठे पहर लड़ाईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नड़, ना कोई सके बुझाईआ। जो जन सरनी गए पड़, प्रभ साचा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस इक्की वेख वखाईआ। पहली चेत्र हरि करतारा, आपणा संग रखाया। गुरमुखां वेखे सच दुआरा, दर घर फेरा पाया। दूजी चेत्र खोल्ह किवाड़ा, आपणा कुण्डा लाहया। तीजे चेत्र पए धाड़ा, पंचम रहिण ना पाया। चौथी चेत्र शाह अस्वारा, एका घोड़ा रिहा उठाया। पंचम चेत्र जगत अखाड़ा, गुरमुख घर सुहाया। छेवें चेत्र साचा लाड़ा, गुरसिख नारी लए प्रनाया। सत्तवें चेत्र मारे ताड़ा, हरिजन साचे लए जगाया। अट्ठ चेत्र कर प्यारा, सुख आसण आसण लाया। नौ चेत्र सोहे दुआरा, ग़रीब निमाणा गले लगाया। दस चेत्र पावे सारा, दहि दिशा वेख वखाया। ग्यारां चेत्र कर त्यारा, आप आपणा कदम उठाया। गुरसिख सुहाए बंक

दुआरा, बंक द्वारी आप अख्वाया। बारां चेत्र खेल अपारा, वरन बरन ना कोई जणाया। तेरां चेत्र मीत मुरारा, तीर्थ तट सुहाया। चौदां चेत्र हो उज्यारा, मोहणी रूप वटाया। मिल्या मेला दूजी वारा, विछड़ कदे ना जाया। पन्दरां चेत्र जगत न्यारा, गुरमुख नाल करे कुड़माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस वटाया। सोलां चेत्र कर शृंगार, सोलां तन शृंगारया। जुग विछड़े पावे सार, मेला मेल सच्चे दरबारया। चेला रूप आप करतार, गुर गोबिन्द संग निभा रिहा। खेले खेल अपर अपार, सतारां चेत्र पार करा रिहा। बणे विचोला विच संसार, साची पल्ले गंढु बन्ना रिहा। एका ढोला हरि निरँकार, जिह्वा रसना गा रिहा। पूरन तोला हरि करतार, हरि करतार साचे कंडे आप तुला रिहा। दए झकोला अपर अपार, पवण हवनी मुख शरमा रिहा। एका बोला जै जैकार, जै जैवन्त आप करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठारां चेत्र वेख वखा रिहा। अठारां चेत्र रंगे रंग, रंगणहार करतारा। आपे शाह आपे नंग, आपे परवरदिगारा। आपे मंगण रिहा मंग, आपे भरे भण्डारा। भगत सुहेला वस्सया संग, जुग जुग लए अवतारा। उन्नी चेत्र दर दुआरा लँघ, ग़रीब निमाणा पार किनारा। आपे सोया आपणे पलँघ, आपे पाए सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उन्नी उनीसा दए हुलारा। उन्नी उनीसा हरि जगदीसा, गुरमुख गले लगांयदा खेले खेल बीस बीसा, बाल अञ्याणे दया कमांयदा। छत्र झुलाए साचे सीसा, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखांयदा। साचा घर हरि करतार, आपणा वेख वखाया। इक्की चेत्र आए द्वार, सम्बल नगरी धाम सुहाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, साढे तिन्न हथ्थ एह उपाया। लेखा लग्गे रविदास चुमार, चम्म दृष्टी रहिण ना पाया। जन भगतां भरे हरि भण्डार, एका वस्त झोली पाया। खेले खेल खेलणहार, अकल कला अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की चेत्र दिवस सुहाया। इक्की चेत्र एका चित, हरिसंगत आप रखाईआ। सतिगुर पूरा साचा मित, एका मीत हो जाईआ। लेखे लाए बूंद रित, आप आपणी दया कमाईआ। काया आत्म दए सित, अमृत जल करे सिंचाईआ। एका बीज देवे सिट, सोहँ साचा हल चलाईआ। काया मौले होए हरिआवली साचा खेत, प्रभ साचा वेख वखाईआ। फुल फुलवाड़ी रुत्त चेत, बसन्ती बसन्त सुहाईआ। वेखणहारा नेतन नेत, नित नवित्त जोत जगाईआ। आपे जाणे आपणा भेत, वेद कतेब ना लेख लिखाईआ। सम्मत चौदां हरिजन वेख, आप आपणा संग निभाईआ। ना कोई जाणे धारी केस, मूंड मुंडाए सार ना राईआ। प्रगट होया दस दस्मेस, माझे खेल रचाईआ। नाल रलाया नर नरेश, निरगुण रूप समाईआ। हर घट आपे रिहा वेख, बैठा आसण लाईआ। भगत दुआरे दर दरवेश, एका अलक्ख जगाईआ। गुरसिख

दुआरा रिखी केश, कर्म गवर्धन हथ्थ उठाईआ। आपे करया आपणा वेस, निर्धन सरधन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सद चौदां दए दुहाईआ। वीह सद चौदां साचा साथी, हरि हरि आप अख्वाया। प्रगट हो त्रिलोकी नाथी, नाथ अनाथां दया कमाया। एका टिक्का मस्तक लाए माथी, साचा चन्दन चन्द छुहाया। इक्क चलाए आपणी गाथी, सोहँ जाप जपाया। सर्बकलां आपे समरथी, सति पुरख अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात फेरा पाया। लोकमात खेल खिलारी, खेलणहार निरँकार। सम्मत चौदां वेख वचारी, प्रभ साचा पावे सार। छब्बी पोह जोत उज्यारी, गुरमुख साचे लए उभार। जो जन आए बंक द्वारी, जन्म मरन गेड़ा दए नवार। सतिजुग साचे पैज संवारी, मरे ना जन्मे विच संसार। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ारी, उच्ची बांह हुलार। कलिजुग कूड़ा करे ख्वारी, साधां सन्तां आई हार। बैठे उच्च महल्ल अटारी, बस्त्र तन श्रृंगार। पढ़ पढ़ थक्के पूज पुजारी, ना पाया हरि द्वार। मानस देही अन्तिम हारी, ना दिसे पार किनार। कलिजुग माया लग्गी चन्गयारी, दिवस रैण रही साड़। बिन गुर पूरे कोई ना पार उतारी, ना देवे सच प्यार। गुरमुख सोहण बंक द्वारी, इक्क वखाए सच द्वार। मिल्या मेल वड संसारी, हरि साचा मेलणहार। सम्मत चौदां खेल अपारी, छब्बी पोह दिवस विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी वार।

सम्मत चौदां लिख्या लेखा, छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। आपे कढ्ढे भरम भुलेखा, जो जन रहे सरनाईआ। सतिगुर साचा जिस जन आपणे नेत्र पेखा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। गुरु गुर चेला दस्स दस्मेसा, दहि दिशा वेख वखाईआ। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेषा, शिव गणेशा ना पूज पुजाईआ। करोड़ तेतीसा करे अदेसा, सुरपति राजा रिहा शरमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करया वेसा, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां करे चढ़ाईआ। सम्मत पन्दरां कर चढ़ाई, इन्द्र इन्द चढ़ाया। शिव शंकर तेरी शब्द लड़ाई, एका बाण लगाया। ब्रह्मा ढहि पए शरनाई, वेला अन्तिम आया। सचखण्ड दुआरे जोत जगाई, प्रभ साचा रंग रंगाया। चौदां लोकां फेरा पाई, चौदां तबक वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हर घट थांया। चौदां लोक एका राम, एका नाम जपांयदा। एका इच्छया एका काम, एका भिच्छया पांयदा। एका सिख्या एका जाम, एका नाम प्यांअदा। एका लिख्या लेख हरि भगवान, ना कोई मेट मिटांयदा। एका शब्द एका ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ांयदा। एका गुर इक्क ध्यान, एका

चरन वखांयदा। एका पीण एका खाण, एका बस्त्र तन पहनांयदा। एका माण एका ताण, इक्क निशान जणांयदा। एका राग एका कान, एका धुन वजांयदा। एका पवण इक्क मसाण, एका पाणी मुख चुआंयदा। एका हाणी नौजवान, गुर शब्द आप मिलांयदा। खाणी बाणी होए हैरान, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। वेद पुराणा पुण छाण, प्रभ साचा आप करांयदा। अञ्जील कुरानी लथ्थे मकान, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। कलिजुग तेरी मिटे दुकान, हट्ट बज़ार ना कोई वखांयदा। ना कोई दिसे उच्च मकान, ना कोई धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। मेल मिलाया हरि हरि गोबिन्दा, हरि हरि जोत जगाईआ। आप मिटाए सगली चिन्दा, आत्म घर वज्जे वधाईआ। आपे खोल्ले लग्गा जिंदा, जो जन जिंदड़ी घोल घुमाईआ। जोधा सूर वड मृगिन्दा, गुर शब्द करे लड़ाईआ। नाम रखाए एका खण्डा, तिक्खी धार वखाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्डा, जेरज अंडा वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा भेख पखण्डा, गुर पूरा दए मिटाईआ। सतिजुग साचा वंडे वंडा, धरत मात वेख वखाईआ। गुरसिख आत्म होए ना रंडा, एका कन्त हंढाईआ। अमृत आत्म जल देवे ठंडा, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत पन्दरां दए वड्याईआ। सम्मत पन्दरां चौदां लोक, चार वरन जगाया। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, ना कोई मेट मिटाया। लक्ख चुरासी देवे झोक, राए धर्म दए सजाया। जन भगतां देवे साची मोख, चरन द्वार इक्क वखाया। होए सहाई लोक परलोक, दो जहानां पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि भगवान आप अख्वाया।

हरिसंगत हरि रत्त है, साची रत्त उपाए। आपे दे समझावे मति है, एका बूझ बुझाए। आप रखाए एका तत्त है, इक्क ज्ञान दृढ़ाए। इक्क रखाए धीरज यति है, सति सन्तोख समाए। एका तीर्थ तट है, पार किनारा इक्क वखाए। एका साचा हट्ट है, एका वणज कराए। एका खेल बाज़ीगर नट है, हरि साचा आप कराए। एका जोती लट लट है, एका घर जगाए। एका वसे घट घट है, घट घट डेरा लाए। एका काया मट है, एका रंग रंगाए। एका नाम एका रसना रही रट है, एका एक अल्लाए। एका मैल रिहा कट्ट है, एका रोग गंवाए। एका मारे साची सट्ट है, एका ताल वजाए। एका मन्दिर जाए ढट्ठ है, एका बणत बणाए। एका अग्नी मठ है, एका रिहा तपाए। एका तीर्थ अट्ठ सट्ठ है, एका माण रखाए। एका किनारा गोदावरी तट है, आपणा आप उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

हरिसंगत हरि समाए। हरिसंगत हरि समाया, आपणी जोत जगा। मूर्ख मूढ़े गले लगाया, फड़ फड़ पाए राह। चरन धूढ़ी टिक्का लाया, रसन जपाए नाँ। नाता कूड़ो कूड़ी तोड़ तुड़ाया, इक्क वखाए साचा थाँ। काया गूढ़ी रंग चढ़ाया, हँस बणाए काँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे ठंडी छाँ। हरिसंगत हरि रचया, रचणहार करतारा। हरि वेखे भाण्डा कच्चया, परखे परखणहारा। मन कलन्दर घट घट नच्चया, खेले खेल जगत दुआरा। गुरमुख मेला साजन सच्चया, घर साचे इक्क मनारा। ना पक्का ना कच्चया, ना इट्टा ना गारा। ना दरवाज़ा कोई रक्खया, किया बन्द किवाड़ा। ग़रीब निवाज़ा आपे वस्सया, आपणी किरपा धारा। आपणे मन्दिर आपे हस्सया, गुरमुखां करे प्यारा। राह साचा एका दस्सया, गुरचरन साचा गुरदुआरा। मिटे रैण अन्धेरी शामा मस्सया, ना दिसे धूंआँधारा। तीर निराला एका कस्सया, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। धुरदरगाही आया नस्सया, लोकमात लए उभारा। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, गुरमुख साचे कर प्यारा। हरिसंगत हरि हिरदे अन्दर वस्सया, जिस जन देवे नाम अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच प्यारा। हरिसंगत हरि नाम जपा, आपणा जाप जपाया। तीनो ताप दए मिटा, दरगहि साची धाम सुहाया। नैणां रोग दए गंवा, हउमे हँगता मैल गंवाया। साची संगता दए बणा, जो जन दुआरे आया। भुक्खा नंगता राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहा, ऊँचां नीचां गले लगाईआ। आपे मंगता होए दो जहानां, गुरमुखां दर दुआरे फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिसंगत हरि साचा साजन, दो जहाना वाली। पारब्रह्म वड राज राजन, खेले खेल निराली। कलिजुग अन्तिम रचया काजन, चले चाल निराली। जोती जामा देस माझन, दीपक जगे जोत दिवाली। आप आपणा साज्जया साजन, आपणी आप करे रखवाली। आपे चढ़या साचे ताजन, आपे चाल चले निराली। आपे मारनहारा वाजन, गुरमुख साचे आप उठाली। अन्तिम वेले रक्खण लाजन, हरि जोती नूर अकाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग निभाली। हरिसंगत हरि संग निभावणा, आपणा रंग रंगाया। एका मार्ग मात लावणा, एका थान मिलाया। एका नाद हरि वजावणा, एका घर सुहाया। एका राग रसन अल़ावणा, एका धुन उपजाया। एका माघ मजन नुहावना, अठसठ माण गंवाया। एका सज्जण सच अख्खावणा, जगत ठग्गण आपे आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखावणा। हरिसंगत हरि नेत्र वेख, हरिजन दए वड्याईआ। लिखणहारा आपे लेख, आपे मेट मिटाईआ। नेत्र लोचण आपे पेख, सगली चिन्द मिटाईआ। जोधा सूर नर नरेश, महिमा अगणत ना कोए गणाईआ। हरिजन दुआरे सदा दरवेश, रिहा अलक्ख जगाईआ। आपे होया दस

दस्मेस, आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत जोग कमाईआ। हरिसंगत हरि साचा जोग, एका एक रखांयदा। एका रस एका भोग, एका वेख वखांयदा। एका लेखा धुर संजोग, एका मेल मिलांयदा। एका कटे हउमे रोग, एका वेख वखांयदा। एका देवे दरस अमोघ, एका नूर उपांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत हरि नाता जोड़, साचा जोड़ जुड़ाया। इक्क चढ़ाए आपणे घोड़, आपे रिहा दौड़ाया। आप लगाया आपणा पौड़, डण्डा आपणे हथ्थ रखाया। ब्रह्मण्डा वेखे मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत फाँसी कट्ट वखाया। हरिसंगत हरि कटे फाह, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एका मिल्या सच मलाह, गुर गोबिन्द संग रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, परम पुरख अख्वाईआ। गोतम नारी ल्ए तरा, सती अहिलया पार कराईआ। लोकमाती जोत जगा, गुरमुख सुरती नाउँ रखाईआ। राम रामा देवे चरन छुहा, आपणी दया कमाईआ। सर सरोवर तट किनारे बजर कपाटी सिला दए तुड़ा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत जोत करे रुशनाईआ। हरिसंगत डगमगा, एका नूर करे उज्यारा। एका जोती दीप जगा, खेले खेल विच संसारा। एका गोती दए बणा, चार वरनां इक्क प्यारा। एका सोटी हथ्थ उठा, नाम खण्डा दो धारा। साधां सन्तां धीरज यति लंगोटी दए तुड़ा, ना दिसे कोई सहारा। कोटन कोटी ल्ए उठा, निउली कर्म आसण करन जग भारा। कोटन कोटी ल्ए हला, जो लटके मूंह दे भारा। कोटन कोटी वेख वखा, तीर्थ तट्टां पावे सारा। कोटन कोटी देवे मेट मिटा, लक्ख चुरासी पार किनारा। गुरमुख चोटी दए चढ़ा, दस्म दुआरी सच घर बारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सुहाए इक्क दुआरा। इक्क द्वार एका घर, एका कमलापाती। एका नारी एका नर, एका दीवा बाती। एका सरोवर एका सर, एका नहावण न्हाती। एका हरी एका हरि, इक्क चढ़ाए साची घाटी। एका तरनी एका तर, एका तीर्थ एका ताटी। एका मरनी जाए मर, गुरचरन सरन सरन चरन गुर लहिणा देणा चुक्के बाकी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला साचे दर, मेल मिलाए सुत्तयां राती। गुरमुख सुत्ते साची रैण, हरि साचा आप जगांयदा। दरस दिखाए साचे नैण, साचा नैण आप खुल्हांयदा। भेव ना पायण सज्जण मीत भाई भैण, जगत बिधाता दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क अकल्ला नित अख्वांयदा। इक्क इकांत हरि बनवारी, पारब्रह्म बेअन्ता। जन भगतां पैज रिहा संवारी, देवे माण साची संगता। देवे दरस वारो वारी, तोड़े गढ़ हँकारी हँगता। काया मन्दिर सच अटारी,

मिले मेला श्री भगवन्ता। निर्मल जोत करे उज्यारी, आप आपणा वेख वखंता। साचा शब्द सच्ची धुन्कारी, साचा राग सुणंता। साचा सोहला मंगलाचारी, साचा ताल वजन्ता। साचा दर खोल्ह किवाड़ी, साचा धाम सुहंता। साचा पुरख हरि साची नारी, गुर प्यारी आप रखंता। फड़ उठाए भुजां पसारी, चतुर्भुज हरि साचा कन्ता। अंगी अंग करे इक्क द्वारी, जो जन चरन ध्यान रखंता। मिले मेल सच दरबारी, दर दरबारा इक्क सुहंता। थिर घर बैठा हरि निरँकारी, आप आपणा वेख वखंता। गुरमुख साजण सद बलिहारी, जिस पाया पूरन भगवन्ता। हरिसंगत तेरी पैज संवारी, काया चोली हरि हरि रंगता। नंगे चरन फिरे द्वारी, दर दुआरे होया मंगता। पौणी भिच्छया एका वारी, पंच विकारा होए नंगता। देवे नाम सच्ची ख़ुमारी, साची चोली आपे रंगता। लौणी शब्द इक्क उडारी, पार किनारा इक्क वखंता। काया गढ़ तुटे हँकारी, मिले वड्याई विच जीव जन्ता। गुरमुख मेला दूजी वारी, प्रभ आप मिलाया साचे कन्ता। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, प्रभ माया पाए बेअन्ता। हरिसंगत हरि ढहि पए द्वारी, धन्न वड्याई साचे सन्ता। सन्त साजन सच सुहेला, सतिगुर पुरख मनाया। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर मन्दिर वेखण आया। दर घर साचे चाढ़े तेला, साचा सगन मनाया। पंचम सखीआं मिल मिल पायण वेलां, साचा मंगल गाया। नाम शब्दी रंग नवेला, लाल भूषन तन सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रचन रचाया। बस्त्र भूषन साचा गहिणा, गुरमुख अंग लगांयदा। नाम कजल साचे नैणां, साची धार रखांयदा। गुरचरन दुआरे साचा बहिणा, कमलापती आप मनांयदा। एका सेजा सदा रहिणा, दे मति आप समझांयदा। एका धाम अकट्ठे बहिणा, दोए मूर्ति एका जोत जगांयदा। गुर संगत गुर मन्नणा कहिणा, दे मति आप समझांयदा। कलिजुग माया विच ना वहिणा, गुर पूरा पार करांयदा। लक्ख चुरासी भाणा सहिणा पैणा, ना कोई मेट मिटांयदा। अन्तिम नाता तुटे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण ना कोई बचांयदा। नाम सुहागी एका लैणा, सोहँ शब्द सुणांयदा। तन बैरागी सुरती सोई जागी, पाया हरि वड भागी, चरन धूढ़ मजन माघी, हँस बणाए कागी, जिस जन सच प्रीती लागी, साचा मार्ग इक्क वखाया। देवे नाम सच्चा अनरागी, दुरमति मैल धोवे दाग़ी, अनहद मारे साची वाजी, ब्रह्मण्ड खोजे आदि जुगादी, जुग जुग खोज खोजाया। रसना गाए नाम स्वादी, जिह्वा एका नाम अराधी, सरवन सुण सुण होए समाधी, नासका सुंघे शब्द अगाधी, नैण दर्शन मोहण माधी, दर दुआरा दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलाया । मिल्या मेला पारब्रह्म, परम पुरख सुल्तानया। हरिसंगत तेरा एका धर्म, एका रूप वखानया। एका जोग एका कर्म, एका चर्म जाणया । एका मिली साची सरन, सरन सरनाई इक्क वखानया। एका करता करनी करन, करता

पुरख आप अख्वानया। एका धरती धरत धरन, धवल आप सुहानया। आपे खोल्हे हरन फरन, एका रूप वटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साजन सच करे परवानया। दर घर साचे कर परवाना, देवे नाम निधानया। साचा बख्शे तीर कमाना, रसना चिल्ला इक्क वखानया। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, एका शब्द पढ़ानया। सोहँ बन्न्हे हथ्थी गाना, गुर पूरा सगन मनानया। मेल मिलाए दो जहानां, एका राग सुणानया । इक्क वखाए पद निरबाना, साचा पद निरबानया। हरिजन साचा सुघड़ स्सयाना, मूर्ख मूढ़ तरानया। ना कोई पूजा पाठ वेद पुराणा, खाणी बाणी ना कोई हिलानया। ना कोई आइत शरायत अञ्जील कुराना, ना कोई कलमा नबी सिखानया। ना कोई तिलक मस्तक टिक्का आप लगाणा, त्रिसूल ना कोई वखानया। एका देवे नाम निधाना, किरपा कर श्री भगवानया। गुर पूरे साचे चरन ध्याना, जप तप जोग अभ्यास बैठे मुख शरमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मेल मिलानया। सज्जण हरि हरि साचा मीता, पतित पावन अख्वाया। आपे जाणे आपणी रीता, आपे रिहा चलाया। आपे रामा आपे सीता, आपे काहना कृष्ना रूप वटाया। आपे जाणे अर्जन गीता, आपे ज्ञान दृढ़ाया। आपे मन्दिर आपे मसीता, गुरुदुआरे आप बणाया। आपे होए सदा अतीता, आपे हर घट आप समाया। आपे होए नाम अनडीठा, आपे लेखा लेख लिखाया। आपे करे कराए कौड़ा रीठा, आपे अमृत मुख चुआया। आपे चाढ़े रंग मजीठा, आपे निर्मल नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत लए तराया।

हरि मूर्त अकाल, अकाल पुरख अकाला। सतिगुर पुरख दयाल, दीनां बंधप दीन दयाला। पंज तत्त ना दिसे खाल, जोती नूर इक्क उजाला। ना कोई मन्दिर ना धर्मसाल, ना कोई दिसे शिवदवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए गुर गोपाला। मूर्त अकाल आदि निरँजण, अलक्ख अगम्म अपारा। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणा लए अवतारा। आप आपणा करया मजन, आप आपणा मीत मुरारा। आप आपणा चलाए जहाज़न, आपे आप होए अस्वारा। आप आपणा रचया काजन, आप आपणा काज संवारा। आप आपणा बणया राजन, आप सुहाए बंक दुआरा। आप आपणे चढ़या ताजन, आप आपणा करे शृंगारा। आप आपणी मारे वाजन, आप आपणा शब्द करे जैकारा। आप आपणी रक्खे लाजन, आप आपणा होए पहरेदारा। आपे आप ग़रीब निवाजन, आपणा आप होए रख्वारा। आप आपणा रचया काजन, घर साचा सोहे इक्क दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपारा। अकाल मूर्त

६८
०७

हरि भगवन्ता, भगवन रूप समाया। आपे आदि आपे अन्ता, आदि अन्त आप अख्वाया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढाया। आपे जीव आपे जन्ता, जीव जन्ता आप अख्वाया। आपे महिमा जाणे अगणता, आप आपणा लेख लिखाया। आपे हउमे आपे हँगता, आपे गढ़ तुड़ाया। आपे भुक्खा आपे मंगता, आपे मंगण आया। आपे काया आपे चोली रंगता, आपे रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया। जोत कला हरि गोबिन्दा, परम पुरख समाणा। आप आपणी उपजाए बिन्दा, आप आपणे विच टिकाणा। आपे सागर आपे सिन्धा, आपे ताल सुहाना। आपे गाए आपे करे निन्दा, आपे भाग लगाणा। आपे होए हरि बख्शिंदा, आप आपणी दया कमाना। आपे मेटणहारा चिन्दा, आपे राग अल्हाणा। आपे ब्रह्मा शिव आपे इन्दा, सुरपति राजा आप अख्वाणा। आपे दाता गुणी गहिंदा, आपे गुर गुर रूप सुहाणा। आपे मारणहारा जिंदा, आपे खोल्ह वखाणा। आपे साचे धाम बहिंदा, थिर घर आप सुहाणा। आपे लेखा लेख लिखंदा, आपे मेट मिटाणा। आपे लहिणा देणा दिन्दा, आपे मूल चुकाणा। आपे रसना आपे नाउँ कहिंदा, कहि कहि आप सुणाणा। आपे आपणे नाल खहन्दा, आपे युध कराणा। आपे उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चढ़दा होए लहंदा, दक्खण पहाड़ आप सुहाणा। आपे भाणा आपणा सहिंदा, आपणा भाणा हथ्थ रखाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे वसे आप टिकाणा। अकाल मूर्त पुरख अबिनाशा, आपे आप अख्वाया। आपणा वेखे आप तमाशा, वेखणहार आप हो जाया। आपे जोती नूर करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर आप अख्वाया। आपे पृथ्मी आपे आकाशा, गगन पताल आप अख्वाया। आपे मण्डल आपे रासा, चन्द सूरज आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर वखाया। पुरख अकाल बोध अगाधा, अगाध बोध समाया। आपे नाथ आपे अनाथा, दया निध आप अख्वाया। आपे राम आपे दसराथा, रावण बावन आप अख्वाया। आपे वेद आपे गाथा, आपे नाम अल्हाया। आपे पंज तत्त करया साथा, मन मति बुध आप अख्वाया। आपे चढ़या आपणे राथा, रथ रथवाही आप हो जाया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, आपे सगला संग निभाया। आपे सीस आपे मस्तक आपे माथा, आपे नैण जोत जगाया। आपे मुख आपे नक्क, आपे सरवण संग लगाया। आपे रंग आपे संग, आपे भुजां रिहा फैलाया। आपे गोदावरी आपे गंग, आपे अमृत धारा सिन्ध, आपे रिहा मुख चुआया। आपे रोग आपे सोग आपे हिरख़ आपे चिन्द, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे सवाया। अकाल मूर्त हरि रघुनाथ एका रंग रंगाया। आपे खेले खेल तमाश, खण्डा खड़क आप अख्वाया। आपे भूप दासी दास, सति सरूप आप अख्वाया। आपे माई आपे मापा, आपे पिता पूत हो जाया। आपे आपणा थापन थापा, आपे

आपणी गोद उठाया। आपे आप जपाए आपणा जापा, आपे अजपा जाप जपाया। आपे पुन्न आपे पापा, तीनो तापा आप अख्वाया। आपे इक्क इक्क अकांता, आपे एका एक लिव लाया। आपे दिवस आपे राता, घड़ी पल आप अख्वाया। आपे ज़ात आप अज़ाता, ऊँच नीच आप अख्वाया। आपे भैण आप भ्राता, साक सैण आप हो जाया। आप नारी कन्त सुहाता, आपे साची सेज हंढाया। आपे देवणहारा दाता, आपणी झोली आप भराया। आपे होए नार कमज़ाता, नार दुहागण आप अख्वाया। आपे वेखे मार झाका, अन्दर बाहर आप हो जाया। आपे बणे आपणी बराता, आप आपणा लए प्रनाया। आपे सुणाए सुहागी छंता, मंगलाचार कराया। आपे जाणे आपणी गाथा, गावणहार आप अख्वाया। आपे चढ़या आपणे राथा, आपणे मार्ग आपे लाया। आप निभाए आपणा साथा, साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती जोत जगाया। अकाल मूर्त अकल कल धारी, करता एका एक अख्वांयदा। आपे सोभा तन शृंगारी, फूलनहार आप अख्वांयदा। आपे सिंचे तन क्यारी, आपे बीज पांयदा। आपे लाए फुल फुलवाड़ी, आपे रुत्त सुहांयदा। आपे होए पिछे अगाड़ी, आपे मुख छुपांयदा। आपे मुच्छ आपे दाढ़ी, आपे सीस कटांयदा। आपे हाडी आपे नाड़ी, लहू मिझ आप अख्वांयदा। आपे माया आपे छाया अग्नी तत्त आपे साड़ी, आपे अग्न बुझांयदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, आपे आसण लांयदा। आपे वेखे सच अखाड़ी, आपे हथ्थ उठांयदा। आपे वेखे मण्डप माढ़ी, आपे अन्त मिटांयदा। आपे मौत आपे लाड़ी, आपे घर घर फेरी पांयदा। आपे होए पंचम धाड़ी, पंच विकार आप अख्वांयदा। आपे मन लाए उडारी, आपे बंध बंधांयदा। आपे मति पाए सारी, मति मतिवाला आप अख्वांयदा। आपे बिधी वेख वचारी, आपे बूझ बुझांयदा। आपे लेखा लेख लिखारी, आपे मेट मिटांयदा। आपे शब्द सच्ची जैकारी, आपे नाअरा लांयदा। आपे धुन होए धुन्कारी, अनाद अनादी इक्क वजांयदा। आपे जोत होए निरँकारी, हर घट आपे आप टिकांयदा। आपे बावन भेखा धारी, वल छल आप करांयदा। आपे मोहण माधव हरि गिरधारी, आपे गिरवर रूप समांयदा। आप आपणी लाए यारी, आपे तोड़ वखांयदा। आप आपणा होए दरबारी, दर दरबार आप सुहांयदा। आपे करे घर सच अस्वारी, आपे आसण साचा लांयदा। आपे मारी इक्क उडारी, आपे मूंह दे भार सुटांयदा। आपे बन्ने आपणी धारी, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे एका एकँकारी, आपे ओंकारा रूप सुहांयदा। आपे नाम खण्डा तेज़ कटारी, आपे आपणे अंग कटांयदा। आपे जोधा सूर बली बलकारी, आपे तीर कमान चलांयदा। आपे गढ़ आपे हँकारी, आपे भन्न वखांयदा। आपे लड़ बन्ने संसारी, आपे तोड़ वखांयदा। आपे वेखे चढ़ उच्च अटारी, आपे कीटां विच समांयदा। आपे महिमा जाणे अपारी, आप आपणा वेख वखांयदा। अकाल मूर्त

मूर्त इक्क न्यारी, एका रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक अख्वांयदा। अकाल मूर्त एका पूजा, एका रूप समाया। ना कोई मिसरी ना कोई कूजा, ना कोई भेट चढ़ाया। ना कोई चेला गुरु दिसे दूजा, ना कोई दर खुल्हाया। ना कोई भेव खुल्हाए गूझा, ना कोई पड़दा पाया। ना कोई जगत शहीदी झूझा, ना कोई सीस कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। अकाल मूर्त अनक कल धारी, नैनन नैण समाया। आपे वेद शास्त्र आपे पुराण पुजारी, आपे हवन कराया। आपे खेले खेल खिलारी, खेलणहार आप अख्वाया। आपे उत्भुज आपे सेत्ज , जेरज अंड आप हो जाया। आपे पर्बत आप पहाड़ी, सागर सिन्ध आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाया। अकाल मूर्त हरि पाए वंडा, आपणी वंड वंडाईआ। आप उपाए हरि ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्डा विच समाईआ। आपे जाणे आपणा कन्ढा, आपे ल्या उपाईआ। आपे सुहागी आपे रंडा, आपे सांग वरताईआ। आपे तत्ता आपे ठंडा, सांतक रूप आप हो जाईआ। आपे होए खण्ड खण्डा, आपे आपणी वंड वंडाईआ। आपे भेख आपे पखण्डा, आपे दए मिटाईआ। आपे तेज़ कटारी खण्डा, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। जोती नूर हरि निरँकारा, निरवैर रूप अख्वाया। आप आपणी बन्न्हे धारा, आपणा शब्द चलाया। शब्द सुत अपर अपारा, साचा मार्ग लाया। लोआं पुरीआं कर पसारा, आपणा वेख वखाया। धरत धवल दए सहारा, आकाश प्रकाश समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपणी झोली पाया। आपणी इच्छया आपे कर, आपणा रूप उपाया। आपणे अन्दर आपे धर, आपे बाहर कढाया। आप फड़ाया आपणा लड़, आपे संग निभाया। पारब्रह्म ब्रह्म ल्या घड़, ब्रह्म ब्रह्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा अंग कटाया। एका ब्रह्म इक्क जणाई, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। एका राम सच गुसाँईं, एका रूप अख्वांयदा। एका भुज एका बाहीं, चतुर्भुज आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडांयदा। आप आपणा पाए हिस्सा, आपणी कल धारया। पुरख अबिनाश किसे ना दिसा, आपे जाणे आपणी कारया। खेले खेल दहि दिशा, चारों कुन्ट पसर पसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वणज करे वापारया। साचा वणज आप कराए, अकल कला कल धारा। लोकमात हरि वंड वंडाए, खेले खेल अपर अपारा। सतिजुग साचा नाउँ धराए, देवे नाम अधारा। एका रूप आप अख्वाए, महिमा अनूप ना पाए सारा,। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी दए सहारा। लक्ख चुरासी आप समा, आपणी जोत जगाईआ।

पारब्रह्म ब्रह्म सेवा ला, आपणी कार कमाईआ। एका विद्या रिहा पढ़ा, एका करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात हरि वेखणहारा, आपणा रूप वटांयदा। आपे लए आप अवतारा, आपे इष्ट अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, आपे क्रिया किरत कमांयदा। आपे पूत सपूता होया सन्त कमारा, वर सराफा आप दवांयदा। आपे लछमी बहे दुआरा, आपे बस्त्र भूषन तन सजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साची वंड वंडाई, आपणा अंग कटाया। ना कोई वेखे वेख वखाई, दिस किसे ना आया। पुरख अबिनाशी वेखे थाउँ थाँईं, आवण जावण खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम झोली पाया। कलिजुग अन्तिम चौथे जुग, हरि सच करी कुड़माईआ। सतिजुग पैंडा गया मुक्क, त्रेता लए अंगड़ाईआ। खेले खेल अबिनाशी अचुत्त, आप आपणा वेस वटाईआ। आपे होया दसरथ सुत्त, धनुख बिबाणां आप उठाईआ। आपे रावण रिहा लुट्ट, लंका गढ़ आप तुड़ाईआ। आपे जड़ रिहा पुट्ट, गगन पतालां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। त्रेते तेरी बन्नी धार, तेरा रंग रंगाया। क्रिया किरत कर्म विचार, हरि साचे मेल मिलाया। धीरज धीर दए संसार, राम रामा नाम जपाया। आपे जाणे आपणी धार, आपणा भेख वटाया। त्रेता सुत्ता पैर पसार, प्रभ आपणी झोली पाया। द्वापर तेरा लै अवतार, लोकमाती फेरा पाया। रूप अनूपा अगम्म अपार, अगम्म अगोचर आप अख्वाया। लेखा लिखणहार करतार, लेखा लिखण विच किसे ना आया। जोत सरूपी कर आकार, एका जोत जगाया। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, सोलां कल अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साँवल सुन्दर मोहण माधव साचे मण्डल मुकट बैन कँवल नैन आप अख्वाया। कँवल नैणां नैण मुँधारी, नर नरायण अख्वाया। खेले खेल अपर अपारी, आप आपणा वेखण आया। ना कोई शस्त्र ना तेज कटारी, ना कोई बाण चलाया। आपणी कल आपे धारी, आपणा खेल रचाया। आपणे रथ कर अस्वारी, आपणी लाए उडारी, आपे सार्थी आपे महांसार्थी, आपे जूए बाज़ी जाए हारी, खेलणहार आप अख्वाया। द्वापर तेरी अन्त किनारी, लहिणा देणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे घर सुहाया। साचा घर हरि करतारा, एका एक रखाया। आपे आपणा बण वरतारा, आपणा आप आप वरताया। आपे बणे जगत भण्डारा, आपे बन्द कराया। आपे सतिजुग त्रेता द्वापर दए आधारा, आपे मुख भवाया। आपे कलिजुग होए मीत मुरारा, लोकमाती जन्म दवाया। आपे करे काला सूसा तन श्रृंगारा, त्रैगुण माया तेल चढ़ाया। आपे होए हँगता, आपे जूठ झूठ विकारा नाउँ रखाया। आपे साजन आपे संगता, आपे सतिगुर

रूप समाया। आपे भेखी आपे मंगता, मंगणहार आप अख्वाया। आपे भुक्खा आपे नंगता, आपे नेत्र रो रो नीर वहाया। आपे नानक आपे अंगदा, आपे संग मुहम्मद चार यारी रिहा उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला आप अख्वाया। पुरख अकाला हरि साजन मीता, आपणा आप अख्वांयदा। आपे जाणे राज जोग साची नीता, आपे साचा कर्म कमांयदा। आपे पारब्रह्म पुरख अबिनाशी करता होए पतित पुनीता, पतित पावन आप अख्वांयदा। आपे रामा आपे सीता, आपे काज रचांयदा। आपे अर्जन आपे गीता, आपे ज्ञान जणांयदा। आपे बैठ सदा अतीता, निरगुण रूप अख्वांयदा। आपे हस्त आपे कीटा, नीकन नीक आप हो जांयदा। आपे कौड़ा आपे मीठा, रसना रस वेख वखांयदा। आपे होए शब्द अनडीठा, आपे गुर शब्द उपजांयदा। आपे मढ़ी गोर बणे अंगीठा, आपे धरती विच दबांयदा। आपे चाढ़े रंग मजीठा, आपे वेख वखांयदा। आपे पीसन आपे पीठा, आपणी चक्की आप चलांयदा। आपे हारे आपे जीता, आपे युध करांयदा। आपे परखणहारा नीता, नीत अनीता आप हो जांयदा। आपे जाणे अगला पिछला बीता, करनहार आप अख्वांयदा। आपे पिता आपे पूता, आपे भगती लांयदा। आप उठाया गोबिन्द सुत्ता, आपणी दया कमांयदा। दुष्ट दमन मनाया रूठा, हिमाचल वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत अकाला आप अख्वांयदा। आपे गोबिन्द आपे गुर, आप गोबिन्द अख्वाईआ। आपे शब्द आपे सुर, आपे ताल वजाईआ। आपे चरनी जाए जुड़, आपे सीस झुकाईआ। आपे अन्तिम जाए बौहड़, आपे मेल मिलाईआ। आप चढ़ाए साचे घोड़, आपे रिहा दौड़ाईआ। आपे वागां रिहा मोड़, आपे रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपे सज्जण गुर गोबिन्दा, आपे गोबिन्द रूप समाया। आपे होए हरि बख्शिंदा, बख्शणहार नाम रखवाया। आपे उपाए साची बिन्दा, साचा नाउँ धराया। आपे तोड़नहारा जिंदा, दो जहानां एका राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आपे रंगणहार लिलारी, आपे रंगे चोला। आपे खेले खेल निराली, आपे गाए आपणा ढोला। आपे जोत होए निरँकारी, निरँकार नानक आपे बोला। आपे होए अकल कला कल धारी, आप आपणा बणया तोला, आप आपणी पैज संवारी। आप आपणा खेले होला, आप आपणी कर अस्वारी। आप आपणा आपे फोला, आप आपणी कर जोत उज्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे शब्द जैकारी। शब्द जैकारा हरि निरँकारा, एका एक अल्लाया। गुर गोबिन्दा करया ख़बरदारा, सोया पूत उठाया। एका देवे नाम अधारा, नाम अमोला झोली पाया। प्रगट हो विच संसारा, हरि साचे आख सुणाया। गुर गोबिन्दा दोए जोड़ करे निमस्कारा, पुरख अबिनाशी तेरा दर साचा घर हरी हरि एका मोहे

पाया। ना जन्मा ना जावां मर, आवण जावण चुकया डर, तेरी सरनी गया पढ़, मंगां वर अग्गे खड़, लोकमात ना दए सज़ाया। पुरख अबिनाशी बाहो फड़, आप लगाया आपणे लड़, ना कोई वखाया सीस धड़, शब्दी शब्दी पौड़े चढ़, जोती जोत मिलाया। लोकमात ना जाणा सड़, मढ़ी गोर ना जाणा पड़, ना कोई वेखे तेरा सीस धड़, ना कोई अंगीठा फोल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे एह समझाया। गुर गोबिन्दा सुण पुकार, हरि साचा अल्लाईआ। तेरी तेरा बन्ने धार, तेरा संग निभाईआ। तेरा रूप आप करतार, नानक विच समाईआ। नानक मंगया इक्क दरबार, प्रभ साचे भिच्छया पाईआ। पहले दर जगत ख्वार, दूजे धीर ना कोई धराईआ। तीजे रोवण ज़ारो ज़ार, चौथे पई लड़ाईआ। पंजवा छुटिआं मीत मुरार, छेवे वंड वंडाईआ। सत्तवें बैठा अधविचकार, अठवें मुख भवाईआ। नौ दर वेखे जगत किवाड़, नावां गुर वड्डी वड्याईआ। कलिजुग झूठी चढ़े धाड़, गुर गोबिन्दे दए वड्याईआ। उठ सपूते साचे लाड़, तेरी सेवा एका लाईआ। गुरमुख साचे पहले पौड़े देवे चाढ़, दस्म दुआर सुहाईआ। दसवें गुर तेरी वार, पूजा पाठ ना कोई कराईआ। तेरा दर्शन अपर अपार, पारब्रह्म दए मिलाईआ। तेरा नाम तेरा कल्गी तोड़ा सोहे धार, सीस जगदीस हथ्थ टिकाईआ। लोकमात लैणा जगत अवतार, पूत सपूते दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बचन रिहा सुणाईआ। गुर गोबिन्दा कर परवाना, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पुरख अबिनाशी रहिणा निगहबान, एका मंगां दर दुआरा। दूजी ना पाईं कोई आण, ना देवीं कोई सहारा। एका दस्से सच निशान, करां धर्म जैकारा। पुरख अबिनाशी कर परवान, बख्शे चरन प्यारा। अकाल पुरख वेखे मार ध्यान, अट्ठे पहर सेवादारा। सद वसे तेरी काया मन्दिर विच मकान, ना कोई दिसे होर गुरुदुआरा। सच वखाए इक्क निशान, दो जहानी आप झुलारा। अन्तिम वेखे विच मैदान, खेले खेल अपारा। एका हवन एका पवन इक्क सुगंधी नौचन्दी, एका छन्दी एका बन्दी एका रंग रंगान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे गुणी गहिंदे धुरदरगाही सच मलाही बेपरवाही नाम खण्डा विच ब्रह्मण्डां इक्क वखाई सच किरपान। गुर गोबिन्दा कर निमस्कार, मंगे मंग दाना। साचे खण्डे तिक्खी धार, प्रभ तेरी दो जहानां। लोकमात पौणी सार, देणा हरि वर दाना। तेरा गुण रिहा विचार, तेरे दर होए परवाना। तेरा डर तेरे घर, तेरे होए सच्ची सरकारा, ना कोई दूसर भउ रखाना । ना कोई संग ना कोई अंग ना कोई मंग, मीत मुरार तेरी ओट रखाना। ना कोई अमृत ना कोई धार वहाए गंग, ना कोई सागर ना कोई सिन्ध ना कोई जल रुढ़ाना। ना कोई हरख ना कोई सोग ना कोई चिन्ता ना कोई विजोग, ना कोई रसन ना कोई जिह्वा भोग, एका मंगां दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, तेरा दर सुहाईआ। पुरख अबिनाशी वड मेहरवाना, आपणी दया कमांयदा। गुर गोबिन्दे कर परवाना, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। होए सहाई गुण निधाना, जोती नूर दिसांयदा। एका घर इक्क दरबाना, इक्क द्वार वखांयदा। एका राग एका गाणा, एका ताल वजांयदा। सो पुरख निरँजण जिस पछाना, हँ हँगता विच ना आंयदा। आपे मर्द आपे मरदाना, मर्द मरदाना आप अख्वांयदा। आपे जोधा सूर बली बलवाना, शस्त्र धारी आप हो जांयदा। आपे खिच्चे तीर कमाना, आपे चिल्ले चिल्ला इक्क चढ़ांयदा। आपे वसाए आपे करे वैराना, आप उपजाए आपे ढांयदा। आपे खेले खेल महाना, खेलृणहार आप अख्वांयदा। गुर गोबिन्दे एका रक्खणा चरन ध्याना, हरि गोबिन्द आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। गुर गोबिन्दे चढ़या चा, हरि मिल्या सज्जण सुहेला। साची सिख्या वर घर पा, चल्लया इक्क अकेला। साचे माही ढोला गा, बणया साचा चेला। लोकमाती जोत जगा, जन भगतां चाढ़े तेला। मात पिता घर पूत अख्वा, वस्सया रंग नवेला। चारे कूटां फेरी पा, आपणा खेल आपे खेला। बाली बुध ना सके कोई जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए आपणा वेला। गुर गोबिन्दे जन्म दवाया, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। साचा सुत आप बणाया, पुरख अकाल पिता माईआ। पंज तत्त माया गुजरी लाल झोली पाया, रक्त बूंद तेग बहादर रलाईआ। शब्द गुरु ना मरे ना जाया, गर्भ वास विच ना आया। दसवें मास प्रभ विच टिकाया, गुर दसवें दए वड्याईआ। एका मेला मेल मिलाया, आदि शक्त ख़ुशी मनाईआ। आदि निरँजण होए सहाया, पारब्रह्म वड्याईआ। बोध अगाधा नाम जणाया, नामे ही लिव लाईआ। एका कामा कर्म कमाया, जगत गुण ना कोई वखाईआ। सतिगुर साचा हुक्म सुणाया, सन्त सन्त बिगसाईआ। साची कारे आपे लाया, करता कादर आप अख्वाईआ। बाली बाला बाल बणाया, हरि साची जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, जगत करी कुड़माईआ। लोकमात हरि सगन मना, पहला साल विचारया। दूजे खेला सहिज सुभा, खेले खेल अपर अपारया। तीजे राज राजाना लए मिला, देवे वर गुर अवतारया। चौथे साल संग बणा, बाल अञ्याणे लावे पारया। पंजवें पुरख इक्क मना, आपणी पावे सारया। छेवें पिता पूत रिहा जणा, पुरी अनन्द धाम सुहा रिहा। सत्तवें तेग बहादर दए वसा, खेले खेल न्यारया। अठवें चरन दए टिका, जोधा सूर बली बलकारया। नौवे साल ख़ुशी मना, सेवक सेवा करे अपारया। तेग बहादर भेट चढ़ा, गऊ ग़रीबां पावे सारया। नौ दर वेखे थाउँ थाँ, कलिजुग गढ़ हंकारया। जूठ झूठ अन्धेरा रिहा छाँ, होई अन्ध अन्धआरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौ वेखे वेख वखा रिहा। नौ साल नौ दर, नावें गुर

तन तजाया। एका वेस साचे घर, दर साचा आप सुहाया। गोबिन्द गुर मंगे वर, प्रभ तेरा तेरी झोली पाया। पुरख अबिनाशी किरपा रिहा कर, गोबिन्द तेरा लहिणा तेरे अग्गे दए टिकाया। गोबिन्द चरनी गया पढ़, हउँ सेवक रघुराया। पुरख अबिनाशी बाहों फड़, एका बचन अल्हाया। तेग बहादर एका अक्खर गया पढ़, आप आपणा भेट चढ़ाया। लेखे लग्गे सीस धड़, प्रभ साचा लए जगाया। गुर गोबिन्दे तेरी जड़्ह, प्रभ साचा दए लगाया। आप फड़ाया आपणा लड़, आपे बंध बंधाया। कलिजुग अन्तिम जोत धर, तेरा लेखा पूर कराया। तेग बहादर देवे वर, तेरा तेरी झोली पाईआ। आपे वसे साचे घर, पुरख अगम्मा लए मिलाया। आपे आपणी किरपा कर, दम दमा लए नाम जपाया। सतिजुग साची नींह धर, पुरीआं लोआं दए उलटाया। आप उपाए आपणा साचा घर, साचे सुत दए वड्आया। तेग बहादर तेल गया चढ़, लाल रंगण रंग रंगाया। पारब्रह्म बणाए साचा गढ़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोड़े मेल मिलाया। सिँघ पाल कल नाम धर, निहकलंका अंग रखाया। साचे घर देवे धर, नर हरि आपणी दया कमाया। अट्ठे पहर झिरना रिहा झिर, चरनोदक मुख चवाया। इक्क भण्डारा हरि भर, लक्ख चुरासी फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरी ब्रह्म दए सुहाया। गुर गोबिन्दा वड बलकारा, हरि साची लिव लगाया। आप सुहाया बंक दुआरा, अनन्द अनन्द गुण गाया। आपे खेले खेल खिलारा, खेलणहार आप अख्वाया। आपे करया बन्द किवाड़ा, आपे सरसा आण रुड़ाया। आपे होया सेवादारा, आप सेवक सिक्ख तराया। आपे वेखे गढ़ी चमकौर इक्क दुआरा, आपे लेखा लेख मिटाया। आपे नीहां हेठ उसारा, आपे तेज़ कटारा सीस चलाया। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, माछूवाड़े डेरा लाया। आपे मंगे मंग अपारा, प्रभ अग्गे झोली डाहया। यारड़े वाला सथ्थर चंगेरा, इक्क सुनेहड़ा घलाया। पुरख अबिनाशी बन्ने बेड़ा, घर साचे ख़ुशी मनाया। त्रैलोक तेरा वसे खेड़ा, कलिजुग गेड़ा दए कटाया। कलिजुग अन्तिम हक्क निबेड़ा, गुरु गोबिन्द तेरे हथ्थ रखाया। धरत मात मंगे खुल्हा वेहड़ा, नेत्र दर्शन पाया। हरि बिन अवर ना जाणे कोई केहड़ा, गुण अवगुण ना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आप समझाया। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी तेरा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। मेरी चोली तेरा रंग, तेरा नाम रंगाईआ। तेरी डोरी शब्द पतंग, आकाश आकाशा विच चढ़ाईआ। तेरा खण्डा मेरा जंग, लोआं पुरीआं करे लड़ाईआ। तेरा घोड़ा मेरा प्रेम तंग, अकाल पुरख आप कसाईआ। तेरा नाम मेरा दंग, शब्द चोट लगाईआ। तेरा दुआरा तेरे घर वेख्या लँघ, दूसर कोई दिस ना आईआ। तेरी सेज तेरा पलँघ, तेरा तेरे उप्पर बैठे आसण लाईआ। तेरी भुक्ख तेरी नंग, तेरा पड़दा

पाईआ। तेरा तेरे लग्गणा अंग, तेरी गोद सुहाईआ। तूं दाता सूरा सरबंग, गुर गोबिन्दे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी बूझ बुझाईआ। गुर गोबिन्द लोकमात आउणा तज, प्रभ साचे सेज विछाईआ। शब्द सिँघासण चढ़ना भज्ज, प्रभ साचा लए चढ़ाईआ। अमृत पी आ आ रज्ज, एका धार वहाईआ। तेरा पड़दा लए कज, तेरा तेरी झोली पाईआ। तेरा नगारा जाए वज्ज, लोआं पुरीआं दए सुणाईआ। तेरा घर जाए सज, तेरी नगरी दए वसाईआ। तेरा तेरी रक्खे लज, तेरा होए सहाईआ। तेरी जोत जगाए देस माझ, सम्बल नगरी नाउँ रखाईआ। तेरा चलाए इक्क जहाज़, सोहँ नाउँ रखाईआ। कलिजुग अन्तिम रचना काज, सतिजुग तेल चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। गुर गोबिन्दे तेरी रक्ख, दो जहानां आप कराईआ। लोआं पुरीआं करे सक्ख, फुल फुलवाड़ी तेरी लाईआ। शिव शंकर अन्तिम होणा वक्ख, पूत सपूता दए वड्याईआ। जगत जगदीसा राह रिहा तक्क, जगत दुआरे दए तजाईआ। नौ दुआरे दिसण सक्ख, दस्सवें हरि रघुराईआ। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, तेरे अन्दर जाए समाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद करे सक्ख, साध सन्त ना कोई चतुराईआ। गुरमुख तेरे करे वक्ख, जो सरसे रिहा रुढ़ाईआ। एका खोल्ह् आपणी अक्ख, जगत नेत्र बन्द कराईआ। अन्तिम वेले लए रक्ख, आपणी गोद उठाईआ। सृष्ट सबाई उडाए कक्ख, किसे हथ्थ ना आईआ। देवी देवत देव यमन ना रक्खे सक, गण गधंरब ना कोई सहाईआ। लेखा चुक्के पूजा पाठ, तेरे दरस वड्डी वड्याईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंग गोदावरी मुख भवाईआ। जो जन चरन दुआरे आए नठ्ठ, प्रभ साचा लए बचाईआ। जगत महल्ले जाणे ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। प्रभ गेड़नहारा उलटी लठ्ठ, जुग जुग आप गिढ़ाईआ। किसे ना दिसे धीरज हठ, सति सन्तोख ना कोई रखाईआ। त्रैगुण माया तपया मठ, प्रभ साचा आप तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। गोबिन्द तेरा साचा खेड़ा, प्रभ साचे आप वसावणा। पुरीआं लोआं चुक्के झेड़ा, हरि साची धार बंधावना। छोटा बाला बन्ह् बेड़ा, पुरी इन्द्र आसण लावणा। सिँघ मनजीते मिल्या घोड़ा, सोहँ आप दौड़ावणा। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखावणा। ब्रह्मा इन्द शिव लग्गे एका पौड़ा, प्रभ साचे आप लगावणा। लोकमात वेखे परखे मिठ्ठा कौड़ा, आप आपणा खेल रचावणा। साचा नगर तेरा धाम साढे तिन्न हथ्थ लम्मा चौड़ा, भेव किसे ना पावणा। पंडत पांधे लभ्भदे फिरदे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा वेख वखावणा। पन्थी ग्रन्थी दहि दिशा गुर दस्मेश दी लग्गी औड़ा, अमृत जाम किसे ना पयावणा। जन भगतां आत्म आपे बौहड़ा, एका नाम जपावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुर

गोबिन्द तेरा संग निभावणा। हरि जोत निहकलंका, नूरो नूर समाए। गुर गोबिन्दे तेरा शब्द डंका, लोकमात आप वजाए। आप उठाए राउ रंका, राज राजाना आप हिलाए। आप सुहाए द्वार बंका, बंक द्वारी आप अख्वाए। प्रगट होए वासी पुरी घनका, आप आपणा नाम धराए। खेले खेल बार अनका, जुग जुग वेस वटाए। गुरमुख उधारे जिउँ जनका, नानक अंगद अंग लगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरु गुर चेले साचे मेले हरिसंगत नाम धराए। हरिसंगत मेला साचे शाह, पारब्रह्म अबिनाशा। मिल्या हरि सच मलाह, गुर गोबिन्द सर्ब गुण तासा। चार वरन जपाए एका नाँ, होया दासी दासा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, अमृत आत्म जाम प्याए काया बाटे साचे कासा। साचा खण्डा तन पहनाए, किरपा करे पुरख अबिनाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम कलिजुग लए वर, सम्मत चौदां दए भरवासा। सम्मत चौदां चौदां लोक, हट्ट हट्टन वणजारा। एका शब्द इक्क सलोक, इक्क सुणाए नाअरा। हरि हरि भाणा कोई ना सके रोक, लक्ख चुरासी जीव गंवारा। मनमुख जीवां अन्तिम देवे झोक, धर्म राए दर भरे दुआरा। गुरमुखां मंगी एका मोख, गुरचरन एका दुआरा। पार कराए तीनां लोक, देवे नाम अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आवण जावण चुक्के डर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द भरे भण्डारा।

हरि का मार्ग साचा राह, गुरमुख विरला पांयदा। शब्द गुर जिस मिले मलाह, फड़ बेड़ा बन्ने लांयदा। एका नईआ नाम चढ़ा, वंझ मुहाणा इक्क रखांयदा। साचा सईआ आप अख्वा, साचे धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमांयदा। जगत कल्याण गुरमुख साचे, गुर दर एका माणीआ। एका बख्शे चरन ध्यान भाण्डे काचे, नेत्र नैण खुल्हाईआ। गुर का शब्द जो जन वाचे, आत्म ब्रह्म जणाईआ। नौ दर कदे ना नाचे, घर साचा इक्क सुहाईआ। पंज तत्त ना लाए तमाचे, तामस तृष्ना अग्न ना जलाईआ। मिले मेल हरि साचो साचे, सच सच्ची वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वड्याईआ। नाम शब्द गुर अनडीठा, गुरमुख विरले पाया। जिस जन हरि हरि लागा मीठा, माया मोह चुकाया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, तृष्ना भुक्ख गंवाया। नाम निधान जिस जन गुर दुआरे पीता, आवण जावण गेड़ कटाया। काया भाण्डा सीतल सीता, सांतक सति वरताया। मिले मेल हरि साचा मीता, काया मन्दिर साचे अन्दर उच्च महल्ले अटले रक्खे जिस जन दर्शन पाया। आपे बख्शे सच प्रीता,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाया। होए कल्याण साचे घर, जिस जन कल वरताईआ। आत्म खोल्हे बन्द दर, नौ निध वज्जे वधाईआ। इक्क अमृत नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाईआ। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणे अंग लगाईआ। आपणे पौड़े आपे चढ़, आप आपणा दीप जगाईआ। आप सुहाए आपणा घर, आप आपणी सेज विछाईआ। आपे वेखे अग्गे खड़, आपे मुख भवाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। गुरमुख सन्त सुहेले आपे फड़, फड़ बांहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आप रखाईआ। आत्म धारा निझर रस, गुरमुखां मुख चुआंयदा। भगत जनां हरि होया वस, सेवक सेवा आप कमांयदा। सच महल्ले आवे नस्स, दिस किसे ना आंयदा। कोटन कोट करे प्रकाश रवि ससि, अन्ध अन्धेर मेट मिटांयदा। आप आपणा मार्ग आपे दस, आपणा पल्ला आप फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन साचे वेख वखांयदा। साचा मार्ग साची धारी, हरि साचे आप चलाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारी, अकल कला समाईआ। खेले खेल वड्ड संसारी, खेलणहार आप अख्वाईआ। आवे जावे वारो वारी, जुग जुग आपणी जोत जगाईआ। साधां सन्तां पावे सारी, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। शब्द गहिना तन श्रृंगारी, नाम कज्जल धार सुहाईआ। आत्म सेजा कर प्यारी, बैठा आसण लाईआ। निर्मल जोती कर उज्यारी, साचा घर सुहाईआ। आपे बैठा भुजां पसारी, गुरमुख साचे सदा उठाईआ। नेत्र लोचण इक्क उग्घाड़ी, दोए लोचण बन्द कराईआ। आपे होए पिछे अगाड़ी, कर किरपा पार कराईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़ी, शब्द खण्डे आप दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे ल्ए वर, आप आपणे मार्ग लाईआ। देवे मार्ग सच टिकाणा, साची बणत बणांयदा। एका शब्द धुर बिबाना, हरि आपणा आप रखांयदा। गुरमुख साजण कर परवाना, जुग जुग आप चढ़ांयदा। एका देवे नाम निशाना, दो जहानां आप झुलांयदा। आवण जावण चुक्के काना, जिस जन आपणी दया कमांयदा । गुरमुख साचे मेल मिलाणा, घट मन्दिर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर दिसे घर होए कलयान विच जहान, मिले मेला इक्क अकेला, जोती नूरी नूरो नूर समांयदा। चरन कँवल जन प्रीत, हरिजन आप कराईआ। साचा देहुरा मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा इक्क वखाईआ। काया करे ठंडी सीत, सांतक सति वरताईआ। पतित पुनीत, पतित पावन आप अख्वाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँचां नीचां हरि समाईआ। मानस देही गुरमुख विरला जाए जीत, जिस जन एका ओट रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले साचा मीत, सतिगुर पूरा दरस दिखाईआ। जुग जुग जाणे आपणी रीत, जुगा जुगन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

८०

०७

आपणी किरपा कर, हर घट वसे हर घट बैठा आसण लाईआ। चरन कँवल सच भरवासा, हरिजन आप कराया। वेख वखाणे पृथ्मी आकाशा, लोआं पुरीआं फेरा पाया। भगत दुआरे दासी दासा, दासी दास आप अख्वाया। काया मण्डल पावे रासा, अट्ठे पहर डगमगाया। आदि अन्त ना कदे विनासा, ना मरे ना जाया। जो जन गाए रसन स्वासा, घर साचे लए मिलाया। दस्म दुआरी कर प्रकाशा, चिट्टी धार वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल उप्पर धवल इक्क ज्ञान दृढ़ाया। चरन ध्यान साची ओट, गुरमुख इक्क रखाईआ। तन नगारे लाए चोट, एका नाद वजाईआ। पंच विकारा कढ्ढे खोट, पंचम मेला सहिज सभाईआ। देवे भण्डारा नाम अतोट, तोट रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन निर्मल जोती दीपक दए जगाईआ। चरन कँवल सच्ची दरगहि, हरि साचे इक्क वखाईआ। गुर के चरन जगत मलाह, जुग जुग पार कराईआ। गुर के चरन पिता माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। गुर के चरन निथाविआं देवे थाँ, घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। चरन सरनाए साची धूढ़, गुरमुख विरला पांयदा। गुरचरन नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सच ज्ञान दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन चरन ध्यान लगांयदा। चरन सरन सच ध्याना, हरिजन आप कराया। आपे होए हरि मेहरवाना, जिया दाना झोली पाया। आपे आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, आपे शब्द अलाया। आपे आत्मक धुन वजाए सच तराना, आपे अनहद ताल वजाया। आपे राग रागनी गाए गाणा, सुणनहार आप अख्वाया। आपे जाणी जाण पद निराबाना, परम पुरख अख्वाया। गुरमुख मेला मेल मिलाए विच जहाना, जिस जन आपणा चरन वखाया। काल महांकाल होए हैराना, गुरमुख तेरे दर रहिण ना पाया। अन्तिम मेल श्री भगवाना, जिस जन कँवल चरन चरन कँवल ध्यान रखाया। मिले वड्याई दो जहाना, सति पुरख निरँजण विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। चरन धूढ़ साची दात, हरिजन झोली पाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, एका चन्न चढ़ाईआ। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत, निझर झिरना आप झिराईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, इक्क अकल्ला बैठा आसण लाईआ। जिस जन बख्शे चरन नात, नाता बिधाता तोड़ निभाईआ। मिले मेल हरि कमलापात, कन्त कन्तूहला मेल मिलाईआ। दरस दिखाए प्रगट होए साख्यात, गुरमुख आसा पूर कराईआ। गुरमुख साजण पारज़ात, गुर पूरा आप कराईआ। अन्तिम वेले पुच्छे वात, आप आपणी गोद उठाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, वरन गोत ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आत्म लए वर, नारी कन्ता मेल मिलाईआ। नारी कन्ता हरि भगवाना, गुरमुख

रंग रंगाया। जिस जन बन्ने साचा गाना, तन्दन तन्द बंधाया। चरन द्वार करे परवाना, मेला मेल सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा वस्सया साचे घर, घर घर विच आसण लाया। घर विच घर घर निरँकार, घर विच जोत जगाईआ। घर विच घर, घर घर विच बैठा बन्द कराईआ। घर विच घर घर घर देवे वर, घर साचा आप सुहाईआ। घर विच घर घर नुहाए सर, सर सरोवर घर रखाईआ। जो जन सतिगुर पूरे चरनी गए पढ़, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दर दुआरे जुग जुग आवे जावे फेरा पाईआ। चरन सरन सच्ची सरनाई जो जन गए पड़, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर जलां थलां पार किनारया। आए सज्जण घर, मिल्या मीत मुरारा। देवे नाम धन, जो बणे जगत वणजारा। चोर यार ना कोई लाए सन्न, ना कोई लुट्टे चोर यारा। मन पंछी देवे बन्न, दहि दिशा ना लाए उडारा। मति मतिवाली गुरमति लए मन्न, गुर होए आप रखवाला। बुधी कहे धन्न धन्न, धन्न मिल्या गुर गोपाला। गुर पूरा नौ दुआरे देवे डन्न, सुखमन नाड़ी चाढ़े चन्न, जोत निरँजण बेड़ा बन्न, राग अनादी सुणाए एका गाना। पंचम सखीआं नच्चन छिन छिन, ताल तलवाड़ा वजाए इक्क मरदाना। गढ़ हँकारी देवे भन्न, गुर पूरा नौजवाना। पंच विकारा दए डन्न, शब्द वखाए तीर कमाना। गुरमुख नुहाए साचे सरोवर सर, दुरमति मैल गंवाना। कागो हँस दए कर, जिस जन होए मेहरवाना। बजर कपाटी तोड़े गढ़, मारे नाम निशाना। साचे पौड़े आपे चढ़, दस्म दुआरी सेज सुहाना। हरिजन लाए आपणे लड़, नारी कन्त आप अख्वाना। एका अक्खर जो जन जाए पढ़, तोड़े माण जगत विद्वाना। मिले मेल प्रभ साचे हरि, हरि जोती मेल मिलाना। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना। मोहण माधव रूप कर, लक्खमी नरायण आप अख्वाना। गुरमुख साजण देवे वर, आए दर होए परवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे जिया दाना। सति पुरख दयाल, सर्ब समाया। गुरमुख साचे लाल, आप आपणे लए जगाया। फल लगाए काया डाल, आत्म मेवा इक्क खवाया। सर सरोवर इक्क नुहाल, निर्मल नीर इक्क जणाया। दीपक जोती साचा बाल, निरगुण जोत करे रुशनाया। भाग लगाए काया खाल, माटी हाटी दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। सतिगुर सज्जण शाह, सति पुरख आप अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा राह, जुग जुग वेख वखांयदा। जुग जुग जन भगतां देवे ठंडी छाँ, जुग जुग आप दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा पार करांयदा। सतिगुर साचा बेपरवाह, साचे घर समाया। निथाविआं देवे साचा थाँ, थिर घर साचा इक्क सुहाया। फड़ फड़ पकड़ उठाए बांह,

८१
०७

जुग विछड़े जग मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल रचाया। सतिगुर पुरख आदि निरँजण, एका एक अख्वाईआ। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, एका धार बंधाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, अड्ड सड्ड माण गंवाईआ। आपे होया पड़दे कज्जण, नाम दोशाला एका पाईआ। आप उधारे ठग्ग सज्जण, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट आपे वेख वखाईआ। हरि घट अन्दर जोत जगा, प्रभ आपणी वस्त टिकाईआ। सृष्ट सबाई भरम भुला, झूठे धन्दे लाईआ। हरिजन साचे लए उपा, परमानंदे आप समाईआ। मनमुख जीवां दए रुला, पापी गन्दे दए सज़ाईआ। गुरमुखां आत्म जिंदे दए तुड़ा, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। गुर किरपा हरि मेलया, मिले मेल बनवारी। आपे गुर गुरु गुर चेलया, आपे सोहे बंक द्वारी। आपे वसे इक्क अकेलया, आपे वसे विच संसारी। आपे खेल आपणा खेलया, खेलणहार खिलारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया सज्जण सहारी। आपणी किरपा आपे धार, आपणी दया कमाईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, सो जन विछड़ ना जाईआ। मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत आत्म देवे ठंडी धार, भर प्याला इक्क प्याईआ। नाम खण्डा बख्शे तिक्खी धार, काया गात्रे अन्दर आप टिकाईआ। पंच विकारे मारे मार, दिस किसे ना आईआ। दो जहानी करे पार, जो जन रहे सरनाईआ। आवण जावण गेड़ निवार, साचे धाम दए सुहाईआ। काया जोबन दिसे सच श्रृंगार, सोलां कलीआं तन रंगाईआ। पारब्रह्म प्रभ एक प्यार, नेत्र नैणां इक्क समझाईआ। आपे मेले मेलणहार, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरसिख साचा सज्जण मीत मुरार, गुर गोबिन्द राह तकाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन, माघ मजन इक्क अख्वाईआ। साक सैण भाई भैण मात पित सर्ब जगत तजण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, जिस देवे नाम वड्याईआ। अनहद ताल तलवाड़े वज्जण, पंचम शब्द करे कुड़माईआ। सुरती शब्द एका थाँ बहि बहि सजण, साचा धाम आप वखाईआ। ढोल मृदंगे साचे वज्जण, अनादी राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे जगत वड्याईआ। गुरसिख वड्याई धन्न, धन पाया हरि नाउँ। गुरमुख वड्याई धन्न, धन्न धन्न पाया नगर गराउँ। गुरसिख वड्याई धन्न, गुर पाया अगम्म अथाहों। गुर वड्याई धन्न, गुरसिख साचे लए तराओ। एका राग सुणाए कन्न, एका शब्द अलाओ। एका चन्न चढ़ाए तन, इक्क प्रकाश समाओ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जन हरि देवे सदा सद ठंडी छाउँ। काल ग्रास जन छुटयां, पाया गुर गोबिन्द। घर साचा साचे लाहा लुट्टयां, मेट मिटाई सगली चिन्द। अमृत

आत्म पीता घुटयां, उपजी साची बिन्द। आवण जावण लक्ख चुरासी छुटयां, जिस मिल्या गुणी गहिंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, सदा सदा आप बख्शिंद।

* पहली माघ २०१४ बिक्रमी दरबार विच लिख्त होई जेठूवाल *

हरि जोती नूर आकार, हरि हरि रूप समाया। हरि हरि रूप अपार, भेव किसे ना पाया। हरि हरि नाम अधार, नाम अधार आप अख्वाया। हरि हरि शब्द अपार, हरि शब्दी शब्द उपाया। खेले खेल खेलणहार, आप आपणा खेल खिलाया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रूप समाया। आप आपणा रूप उपा, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा नाउँ धरा, आप आपणा नाउँ जणाईआ। आप आपणा संग रखा, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणे अंग लगा, आप आपणी सेज हंढाईआ। आप आपणा मृदंग वजा, आप आपणा रिहा सुणाईआ। आप आपणा मंग मंगा, आप आपणी झोली पाईआ ।आप आपणा तंग कसा, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी आप करे वड्याईआ। आप आपणा हरि उभार, आप आपणी कल वरताईआ। आप आपणा कर शृंगार, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणी पावे सार, आप आपणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा वेखणहारा आप आपणे विच समाया। आप आपणा लेख लिखणहारा, आप आपणा लेख लिखाया। आप आपणा वेखणहारा, आप आपणा लए उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे धन्दे आपणा आप आपे लाया। आप आपणा रचया काजा, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे हो ग़रीब निवाजा, ग़रीब निवाज आप अख्वाईआ। आप आपणी रक्खे लाजा, आप आपणी पैज धराईआ। आप आपणी मारे वाजा, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा साजन साजा, आप आपणा मता पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आप उपाईआ। आपणी इच्छया आदि निरँजण, आपणी आप उपाईआ। आपे होया दर्द दुःख भय भंजन, दयावान आप अख्वाईआ। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा करया मजन, आप आपणी मैल गंवाईआ। आप आपणा होया पड़दे कजन, आपणी लज्जया आप रखाईआ। आप चलाया आपणा जहाजन, आपे वेख वखाईआ। आपे होए नार बांझन, पूत सपूता आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपाईआ। आप आपणा हरि उपा, आप आपणा नाउँ

धरांयदा। नर निरँकार आप अख्वा, सर्ब पसारा आप करांयदा। अगम्म अगम्म आप अख्वा, अलक्ख अलक्ख समांयदा। आप आपणा अंग कटा, आप आपणी जोत जगांयदा। आदि शक्ती मात बणा, पूत सपूता गोद उठांयदा। शब्द सुत हरि गोद टिका, अमृत सीर प्यांअदा। ना कोई दूसर वेख वखा, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई अक्खर वक्खर ल्या पढ़ा, ना कोई विद्या बूझ बुझांयदा। आप आपणी दया कमा, आप आपणा संग निभांयदा। एका सिख्या दए समझा, चरन ध्यान रखांयदा। लोआं पुरीआं दए रचा, ब्रह्मण्डां विच समांयदा। ब्रह्मा विष्नूं शिव सेवा ला, साची सेव कमांयदा। अलक्ख अभेवा आप अख्वा, अलक्ख निरजंण जोत जगांयदा। सुरपति देवा संग रला, करोड़ तेतीसा धाम सुहांयदा। लक्ख चुरासी बणत बणा, जीवां जन्तां विच समांयदा। साधां सन्तां माण दवा, आत्म अन्तर ज्ञान जणांयदा। नादी धुन इक्क वजा, ब्रह्मादी आप वजांयदा। मोहण माधव माधो माधी दया कमा, बोध अगाधी भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखांयदा। लोकमात हरि खेल अपारा, साची रचन रचाईआ। आपे दुष्ट होए हँकारा, आपे गढ़ सुहाईआ। आप आपणा लए अवतारा, आपे करे लड़ाईआ। सतिजुग खेल अपर अपारा, वड वड्डी वड्याईआ। आवे जावे वारो वारा, लेख ना लिख्या जाईआ। खेले खेलणहारा, पुरख अकाला आप अख्वाईआ। आपे तोड़े जगत जंजाला, आपे फंदन पाईआ। त्रैगुण माया करे मालो माला, सच भण्डारा आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। सतिजुग तेरा खेल अपारा, हरि साची जोत जगांयदा। वार अठारां लए अवतारा, धरनी धरत सुहांयदा। रूप अनूपा हरि करतारा, सति सरूपा वेस वटांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कला समांयदा। आप आपणी बन्न्हे धारा, आप आपणी धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा पार करांयदा। सतिजुग साचे पार किनारा, हरि साची दया कमाईआ। खेले खेल विच संसारा, अचरज बणत बणाईआ। आपे होए दुष्ट दुराचारा, कुकर्मी कर्म कमाईआ। आपे भगती भर भण्डारा, भव सागर पार कराईआ। आपे खण्डा तेज़ कटारा, तीर कमान आप उठाईआ। आपे जोधा सूर बली बलकारा, सूरबीर आप अख्वाईआ। आपे होए शाह सवारा, शाह अस्वार आप अख्वाईआ। आपे जेरज अंडां कर पसारा, उत्भुज सेत्ज विच समाईआ। आपे ब्रह्मण्डां कर जैकारा, आपे रिहा सुणाईआ। आपे लोआं पुरीआं दए अधारा, आपे मेट मिटाईआ। आपे गगन पतालां लाए नाअरा, आपे मुख भवाईआ। आपे करे हाहाकारा, आपे जै जैकार कराईआ। आपे करे सच प्यारा, आपे दर दुरकाईआ। आपे होए नाम अधारा, आपे रिहा समझाईआ। आपे शस्त्र बस्त्र तेज़ कटारा, आपे हथ्थ रखाईआ। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल सृष्ट सबाईआ। त्रेता तेरा करया वेस, तेरी धार चलाईआ। आपे होए नर नरेश, नर नरायण आप अख्वाईआ। आपे होए देस प्रदेश, दहि दिशा फेरी पाईआ। आपे पूजे गणपति गणेश, शिव शंकर आप मनाईआ। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, दर दरवेश आप अख्वाईआ। आपे होए धारी केस, आपे मूंड मुंडाईआ। आपे जाणे आपणा वेस, भेखाधारी आप हो जाईआ। आपे रक्खे खुल्हड़े केस, आपे नेत्र रो रो नीर वहाईआ। आप आपणी करे अदेश, घर आपणे अलक्ख जगाईआ। आपे जोती कर प्रवेश, आपे लए बुझाईआ। आपे सुत्ता बाशक सेज, सागो पांग हंढाईआ। आप आपणे नेत्र रिहा वेख, नैण मुँधारा आप अख्वाईआ। आपे लिखणहारा लेख, आपे दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग त्रेते होए सहाईआ। जुग त्रेता राम रमईआ, रामा राम अख्वाया। आपे होए सज्जण सईआ, सगला संग निभाया। आप चलाए आपणी नईआ, साचा नाम चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गऊ ग़रीब निमाणे पार कराया। ग़रीब निमाणे पावे सार, हरिजन गले लगाईआ। एका देवे नाम आधार, नेत्र लोचण दर्शन सहिज सबाईआ। जो जन रसना रहे उचार, मेल मिलाए सहिज सुखदाईआ। आपणा बख्शे आप प्यार, आदि अन्त होए सहाईआ। त्रेता त्रिया वेस करतार, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। द्वापर दूआ दोए वेख, हरि वेखे दो जहाना। आपे लिखणहारा लेख, पारब्रह्म श्री भगवाना। आपणे नेत्र आपे पेख, आपे गोपी आपे काहना। आपे होए रिखी रिखेश, आपे गवर्धन हथ्थ टिकाना। आपे होए नर नरेश, आपे मारे कंस बलवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जगत जहाना। द्वापर तेरा खेल महाना, हरि आपणी कल वरताईआ। प्रगट हो विच जहाना, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। जगत निमाणे देवे माणा, बिप्पर सुदामा गले लगाईआ। अन्तिम वेखे खेल मैदाना, दो धड़ आप कराईआ। पकड़े उठाए जोधे सूरबीर बली बलवाना, आदि अन्त इक्क जणाईआ। ना कोई चिल्ला तीर कमाना, खण्डा शस्त्र ना हथ्थ उठाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। गीता ज्ञान इक्क महाना, दे अर्जन मति समझाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाना, दुर्योधन दए सज़ाईआ। कलिजुग वेखे मार ध्याना, दूर दुराडा मुख उठाईआ। द्वापर सुत्ता विच मैदाना, दोए पैर विछाईआ। जीव जन्त सभ लेखे लाना, अखशूनी अठारां रिहा भराईआ। इक्क अखशूनी अठाई लक्ख लिखाना, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। यादू बंसी भेट चढ़ाना, दुरबासा दए वधाईआ। आप आपणा कर परवाना, आप आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल दिस किसे ना आईआ। कलिजुग कूड़ा वड बलकारा, लोकमात

उठ धाया। धरत मात तेरा सुत दुलारा, आप आपणी लए अंगड़ाया। जूठ झूठ करे तन श्रृंगारा, माया ममता बस्त्र पाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सच किनार तन साचे रिहा सजाया। हउमे हँगता हो अस्वार, जोधा बीर अख्वाया। भुक्खा नंगा करे हाहाकार चारों कुन्ट रिहा कुरलाया। दहि दिशा वेखे अक्ख उग्घाड़, आप आपणा रूप वटाया। संग रखाई पंचम धाड़, लक्ख चुरासी रिहा सुणाया। अट्ठे पहर फिरे वाहो दाही जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले फेरा पाया। जीवां जन्तां साधां सन्तां टोहे नाड़ नाड़, सति धर्म रहिण ना पाया। अग्ग लगाए बहत्तर नाड़, पंचम तत्त जलाया। त्रैगुण माया रही साड़, ना दिसे कोई सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा खेल खिलाया। कलिजुग जोधा सूर बलकारा, एका एक अख्वाया। एका मारे आपणा नाअरा, जै जै जैकार कराया। नाल मंगे मंग अपर अपारा, संग मुहम्मद चार यारा अल्ला राणी लए प्रनाया। दोहां मेला विच संसारा, ऐड़ा अथर्बण खेल अपारा, ऐनलहक्क नाअरा लाया। ख़ुदी ख़ुदाई कर उज्यारा, परवरदिगार बेपरवाही दए सहारा, मेल मिलाए नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका कलमा हक्क हकीकत हरि साचे शब्द जणाईआ। सच ख़ुदाए लाशरीक, लाशरीक कवण अख्वाईआ। कलिजुग रक्खी इक्क उडीक, हरि मुहम्मद संग रखाईआ। अहिमद मंगे इक्क तारीख, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। मुहम्मद तेरी पूरी आस, प्रभ साचा आप करांयदा। चार यारी कर प्रकाश, अल्ला राणी मता पकांयदा। पीर दस्तगीर खेल तमाश, दीन अलाही वेख वखांयदा। चौदां तबकां ज़िमी असमान आकाश, तेरी धार चलांयदा। गोर दबाउणा हड्ड मास, धरत धवल सुहांयदा। एका कलमा रसन स्वास, मुकामे हक्क पुचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझांयदा। मुहम्मद मंगी एका मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पारब्रह्म प्रभ तेरा संग, लोकमात वेख वखाईआ। कलिजुग वज्जे इक्क मृदंग, चारों कुन्ट दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक रिहा सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्तिम आउणा, हरि साचा अन्त कराईआ। सच महल्ला मेल मिलाउणा, पूरन आस कराईआ। सम्मत चौदां चौदां लोक सुहाउणा, चौदां तबका वज्जे वधाईआ। त्रैलोक प्रभ आप उठाउणा, रवि ससि रहे कुरलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप रवाउणा, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। लक्ख चुरासी हाहाकार कराउणा, वरभण्डी दए दुहाईआ। इक्क मुहम्मद तेरा संग निभाउणा, सदी चौधवीं दए वड्याईआ। अमाम मैहन्दी हरि नाउँ रखाउणा, प्रगट होए नूरो नूर अलाहीआ। मुख नक़ाब इक्क रखाउणा, एका पड़दा पाईआ। काला सूसा तन छुहाउणा, मक्का मदीना वेख वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहम्मदी दीना दए मिटाईआ। दीन मुहम्मदी तेरी धार, कल कलिजुग आप चलाईआ। सदी चौधवी देवे मार, ख़ुदी ख़ुदाई मिटाईआ। अगैब अगैबी हो त्यार, अज़मत इक्क वखाईआ। पुन सवाब ना करे विचार, दो दो आब पार कराईआ। शाह नवाब हरि करतार, देवे अज़ाब अन्त सज़ाईआ। प्रगट हो हक्क जनाब, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। आपे होए महबूब अहिबाब, एका कलमा अल्ला अलाहीआ। सदी चौधवी सुणे फरयाद, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीवां जन्तां दए वर, रोग सोग चिन्त मिटाईआ। जीव जन्त रहे कुरला, दिवस रैण करन पुकारा। धरत मात मारे धा, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, सुणे सुणाए सुनणेहारा। आपे पकड़नहारा बांह, आपे दए सहारा। साधां सन्तां भुल्लया नाँ, ना कोई दिसे पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपारा। खेले खेल हरि करतार, आपणी दया कमाईआ। नानक नामे लै अवतार, निरगुण जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, सहिज सहिज समाईआ। अन्दर मन्दिर कर उज्यार, दीपक जोत जगाईआ। शब्दी शब्द भरे भण्डार, शब्दी शब्द उपाईआ। शब्दी मेला कन्त भतार, शब्दी शब्द समाईआ। शब्द गुर पावे सार, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। नानक देवे इक्क अधार, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। आपे बख्शे चरन प्यार, आपणा नाता आप जुड़ाईआ। नानक आउणा दर दरबार, बोध अगाधा करे सुणाईआ। दर दुआरे बण भिखार, मंगणा साचा माहीआ। देवे वस्त हरि अपार, दिस किसे ना आईआ। नानक दर दरवेशा गया घर सच्ची सरकार, एका अलक्ख जगाईआ। आदि निरँजण जै जैकार, जैकारा इक्क सुणाईआ। पुरख अबिनाशी जोत निरँकार, निरगुण वेख वखाईआ। आपणी धुन आपे करे जैकार, आपणा राग अलाईआ। नानक दरवेशी होणा ख़बरदार, पारब्रह्म करे जणाईआ। सो पुरख निरँजण सच्ची सरकार, हँ नानक विच समाईआ। हँ अंग इक्क निरँकार, साचा संग निभाईआ। सोहँ शब्द तेरी आत्म धार, तेरा मेरा रूप समाईआ। खेलां खेल अपर अपार, भेव अभेदा दए खुलाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, आप आपणे गले लगाईआ। नानक गुर ढहि पया चरन द्वार, हरि सच तेरी सरनाईआ। मंगण आया भिख्या तेरे ठांडे दर दरबार, पूरन इच्छया दई कराईआ। करता पुरख सुणे पुकार, दे मति नानक समझाईआ । नानक तेरी वस्त अपार, तेरी झोली पाईआ। जीवां जन्तां पौणी सार, चार वरन इक्क जणाईआ। ऊँचां नीचां इक्क अधार, एका घर सुहाईआ । नाम सति जग अपर अपार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नामा झोली पाईआ। सति नाम हरि मन्त्र दृढ़ा, नानक गुर समझांयदा। जीवां जन्तां राहे पा, कलिजुग दुःख मिटांयदा। मूर्ख धन्दे देवे ला, सच

समग्री इक्क वखांयदा। पापी गन्दे फड़ फड़ बांह, अमृत जाम प्यांअदा। सद बख्शिंदे ओट तका, तेरा संग रखांयदा। तन चोट नगारे इक्क लगा, साचा ताल आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण एह समझांयदा। सच वस्त हरि झोली पा, नानक वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी चरनी डिगा आ, दोए जोड़ पड़ा सरनाईआ। पारब्रह्म तेरा वेखा राह, लोकमात राह तकाईआ। नाम सति दिआं जपा, जागरत जोत जगाईआ। कलिजुग जीव करन जो नांह, तेरे भाणे विच समाईआ। आदि अन्त कोई जाणे नाँ, तूं दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग निथाविआं देवे साचा थाँ, तेरी ओट तकाईआ। पारब्रह्म तूं बेपरवाह, तेरा अन्त कोई ना पाईआ। आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। नानक मंगे तेरी ठांडी छाँ, तेरे चरनां सीस टिकाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए सहारा, नानक धीर धरांयदा। नानक गुर लै अवतारा, तेरा रूप वटांयदा। नाम सति जगत जैकारा, तेरी रसना गांयदा। तेरा मेरा इक्क प्यारा, सोहँ विचोला विच रखांयदा। दो जहानां वसना बाहरा, साचा ढोला आप उपांयदा। चरन गोला मंगे मंग भिखारा, साचा तोला तोल तुलांयदा। दस जामे तेरी बन्ने धारा, तेरा रंग रंगांयदा। आपे नाम आपे खण्डा होए दो धारा, आपे सांतक सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक एह समझांयदा। नानक गुर मंगे दाना, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। सति पुरख तेरा सति परवाना, हरि हिरदे गया वसाईआ। लोकमात बन्नां साचा गाना, नाम सति तन्द वखाईआ। कलिजुग जोधा सूर बड़ा बलवाना, पंजे शस्त्र रिहा उठाईआ। प्रगट होया विच मैदाना, ऐड़ा अथर्बण नाल रलाईआ। ऐड़ा अल्ला राणी होए प्रधाना, तेरा कलमा रही गाईआ। सति धर्म गया निशाना, ना कोई धीर धराईआ। ना कोई खण्डा तीर कमाना, नानक युध ना कोई कराईआ। बाल अञ्याणा तेरा बाल निधाना, हउँ मूर्ख सार ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ गुण निधाना, सिर नानक हथ्थ टिकाईआ। तेरा झूले धर्म निशाना, प्रभ साचा आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा हथ्थ टिकाईआ। नानक गुर वर घर पा, आत्म वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म तेरी साची सरना, भुल्ल रहे ना राईआ। तेरा नाम इक्क जपा, जपत जपत सुख पाईआ। तेरा अन्तिम वेखां लोकमात राह, कवण दुआरे मेला सहिज सभाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा सुणा, गुर नानक दए जणाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम जाए आ, साची जोत होए रुशनाईआ। निहकलंकी जामा पा, तेरा तेरे गोद लए उठाईआ। एका नाम दए जपा, तेरे अन्दर जो टिकाईआ। तेरी सतार दए वजा, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ हँगता दए मिटा, गुरमुखां पैज रखाईआ। साची संगता लए बणा, सोहँ साचा जाप जपाईआ। एका रंगण रंग दए चढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। नाम खण्डा इक्क वखा, तन गात्रे दए लटकाईआ। साचे

पौड़े आप चढ़ा, साचा धाम सुहाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, जगत विद्या माण गंवाईआ। पंजां तत्तां नाल दए लड़ा, गुरमति इक्क बुझाईआ। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, किला कोट रहिण ना पाईआ। तन चोट नगारे इक्क लगा, धुंन आत्म दए वजाईआ। साचा राग इक्क सुणा, शब्द अनादी आपे गाईआ। गुरमुख साचे लए मिला, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। निर्मल बाती दीपक जोती दए जगा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। वरन गोती दए मिटा, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। ना कोई पुस्तक पोथी लए पढ़ा, पूजा पाठ ना कोई रखाईआ। एका रसना नाम जपा, नर निरँकारा झोली पाईआ। एकँकारा मेल मिला, इक्क अकल्ला होए सहाईआ। शब्द जैकारा साचा ला, साचे धाम बहाईआ। दस्म दुआरी दए सुहा, आपणी गोद उठाईआ। दस्म दुआरी बाहर कढा, साचे मार्ग लाईआ। साचा मार्ग आप चला, आपे वेख वखाईआ। सोहँ देश दए वसा, गुरमुख साचे होए सहाईआ। सुरत शब्द इक्क रंग समा, एका लिव लाईआ। पंज तत्त कोई दीसे ना, हड्ड मास नाड़ी रत्त रहिण ना पाईआ। शब्द महल्ला साचा थाँ, हरि साचा आप वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। नानक सुणया साचा ढोला, सच घर वज्जे वधाईआ। पुरख अगम्मड़े तेरा बोला, तेरी धार चलाईआ। निरगुण बणया आपे तोला, सृष्ट सबाई तोल तुलाईआ। लोआं पुरीआं खेले होला, नौ खण्ड करे कुड़माईआ। सत्तां दीपां बदले चोला, चोली रंगण इक्क रंगाईआ। लक्ख चुरासी काया फोला, पड़दा उहला रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक बूझ बुझाईआ। नानक पाया सच दुआरा, साचा घर सुहांयदा। पारब्रह्म तेरा खेल अपारा, तेरा भेव कोई ना पांयदा। आउणा जाणा वारो वारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, धरत धवल सुहांयदा। सतिजुग त्रेता पार किनारा, द्वापर मेट मिटांयदा। कलिजुग आए अन्तिम वारा, साची बणत बणांयदा। निहकलंक लए अवतारा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। चौदां तबकां दए हुलारा, चौदां लोकां आप हिलांयदा। अवण गवण प्रभ पावे सारा, पवणी पवण सुहांयदा। रवि ससि करन हाहाकारा, तारा मण्डल सर्ब हिलांयदा आकाश प्रकाश ना बन्ने धारा, धरत धवल भवांयदा। ज़िमी असमाना तुटे पाड़ा, ना कोई मेल मिलांयदा। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, ढूँघी कन्दर फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़ा, आपणे मुख रखांयदा। लोकमात सुहाए दिवस सतारां हाढ़ा, सतिजुग साची नींह रखांयदा। गुरमुख बणाए साचा लाड़ा, साचा सेहरा सीस बंधांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, पंचम मोह मिटांयदा। पंचम वखाए इक्क अखाड़ा, पंचम राग अलांयदा। पंचम पंचम पावे सारा, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। पंचम शब्द पंचम धुन्कारा, पंचम सखीआं मिल मिल

गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक मेल मिलांयदा। नानक मेला सच घर, घर साचा हरि निरंकारया। खुल्हा रक्खे सदा दर, आवे जावे विच संसारया। ना जन्मे ना जाए मर, मढ़ी गोर ना कोई दबा रिहा। आपणी करनी आपे रिहा कर, करता पुरख आप अख्वा रिहा। नानक गुर भण्डारा भर, शब्द भण्डारा आप वरता रिहा। आपणी करनी आपे कर, क्रिया किरत इक्क समझा रिहा। धरनी उप्पर जोत धर, धरत धवल सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। नानक रसना हरि हरि गा, एका अलक्ख जगाईआ। पारब्रह्म तेरी सच सरना, तेरी ओट रखाईआ। लोकमात मेरी पकड़ी बांह, होणा सदा सहाईआ। तेरा पाया एका ना, तेरे विच समाईआ। सतिगुर पूरे बलि बलि जां, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। पारब्रह्म गुर इक्क अख्वा, सतिगुर साचा शाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत करे रुशनाईआ। नानक जोती आत्म चानण, शब्द सच्ची धुन्कारा। पुरख निरँजण मिल्या साचा जामन, दो जहानां दए सहारा। मेट मिटाए कामनी कामन, पंचां तत्तां करे ख्वारा। आप फड़ाए आपणा दामन, भरे नाम भण्डारा। आपे सीता आपे रामन, आपे तोड़े गढ़ हँकारा। आपे सुन्दर घनईआ शाम शामन, आपे अर्जन करे प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक बख्शे इक्क अधारा। नानक दर वज्जे वधाई, पाया हरि गोबिन्दा। साचे शब्द होई कुड़माई, मिटी सगली चिन्दा। अकाल पुरख तेरी इक्क सरनाई, होए सहाई गुणी गहिंदा। जोग जुगत प्रभ इक्क जणाई, एका धार वखंदा। जो जन सतिगुर पूरे रहे सरनाई, सो जन पार करंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सर्ब बख्शिंदा। नानक तेरा साचा रंग, हरि साचे मात चढ़ावणा। लहिणा लाउणा तेरे अंग, गहिणा तन पहनावणा। अमरदास मंगी मंग, अन्तिम मेल मिलावणा। रामदास नुहाए साची गंग, सर सरोवर इक्क सुहावणा। अर्जन वजाए हरि मृदंग, शब्द ढोला एका गावना। हरिगोबिन्दा कसे तंग, साचा खण्डा इक्क चमकावणा। हरि राए समाए परमानंद, परम पुरख समावणा। हरि कृष्न ख़ुशी बन्द बन्द, बाली बुध मिलावणा। गुर तेग बहादर वंडी वंड, कलिजुग अन्त खपावणा। गुर गोबिन्दा करे खण्ड खण्ड, दूती दुष्ट रहिण ना पावणा। पारब्रह्म तेरी चण्ड प्रचण्ड, एका हवन करावणा। पुरी अनन्द जाणा छड्ड, सरसे भेट चढ़ावणा। ग्यारां लक्ख जो लिख्या छन्द, कलम बन्द आप करावणा। कोई ना गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोई वखावणा। जीव जन्त भुल्लण मदिरा मासी पापी गन्द, गुर कोई ना दिसे ज़ामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूता एह समझावणा। पूत सपूता साचा लाल, हरि गोबिन्द आप उपाया। फल लगाया साचे डाल, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। अमृत नुहाए

साचा ताल, सर सरोवर इक्क वखाया। साचा अमृत मारे उछाल, अमर अमर समाया। दर दुरकाए काल महांकाल, महां कालका लए मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला सहिज सभाया। गोबिन्द सगला संग तजा, पिता पूत जग वारया। शब्द सिँघासण साचा राज जोग रिहा कमा, इक्क ध्यान लगा रिहा। पारब्रह्म तेरी सच सरना, अकाल मूर्त वेख वखा रिहा। अजूनी रहित तूं बेपरवाह, अनभव प्रकाश करा रिहा। गोबिन्द गोपाला तेरा नाँ, गोबिन्द पैज रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूत सपूता एह समझा रिहा। गोबिन्द तेरी फुल फुलवाड़ी, लोकमात आप लगाईआ। लग्गा फल सतारां हाढ़ी, वीह सौ बिक्रमी वेख वखाईआ। रक्खे लाज तेरी केस दाढ़ी, हरि चरन जो लए छुहाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। गुरसिक्खां घर नेड़ ना आए मौत लाड़ी, जिस जन आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी पार किनारी, शब्द कटारी तन पहनाईआ। वेले अन्तिम पावे सारी, प्रगट जोत करे रुशनाईआ। निहकलंका लए अवतारी, साचा डंका आप वजाईआ। तेरा सुहाए बंक द्वारी, सम्बल नगरी नाउँ धराईआ। सोहँ शब्द जै जैकारी, नानक रसना गाईआ। नानक गोबिन्द बण भिखारी, दोवे मंगण बेपरवाहीआ। अकाल मूर्त पुरख अकाला दीन दयाला तेरे दर द्वारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे नाम इक्क प्याला। गोबिन्द पीता नाम प्याला, मिले जोत अकाल्या। आपे तोड़ जगत जंजाला, फड़ वेखे आपे डाली़आ। आपे होए काल महांकाला, आपे करे दुआरा खाल्या। आपे अमृत मारे सर सरोवर इक्क उछाला, आप सुहाए साचा ताल्या। आपे गोबिन्द होया साचा बाला, हरि गोबिन्द आप समा रिहा। आपे चले अवलड़ी चाला, जुग जुग आप चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग लहिणा मूल चुका रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि जोत करे रुशनाईआ। नानक गोबिन्द मेल करतार, कर किरपा मेल मिलाईआ। प्रगट हो विच संसार, कूड़ी किरया दए मिटाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्ताना मेट मिटाईआ। शब्द निशाना अपर अपार, गुण निधाना दए लगाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, हरि भगवान आप उठाईआ। वेख वखाए दो जहान, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई होए वैरान, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। मनमुख जीव सर्ब पछतान, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरद्वार बहि बहि सारे गाण, गुर पूरा कोई ना पाईआ। अमृत वेले उठ कर अशनान, नहावन नहौणी रहे नहाईआ। आत्म उपजे ना किसे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म ना कोए जणाईआ। चिट्टे बस्त्र सारे पाण, दुरमति मैल ना कोई गंवाईआ। वेद पाठ पुराण सुनण कान, अनहद राग ना कोई सुणाईआ। जल भोजन सारे पीण खाण, अमृत आत्म जाम ना कोई पिलाईआ।

तीर्थ तट्टां करन दान, जीअ दान ना कोए कराईआ। जगत हट्टां वेख रहे मकान, काया मन्दिर ना खोज खुजाईआ। जंगल जूह फिरन उजाड़ पहाड़ सर्ब पछतान, पान्धी पन्ध ना कोए मुकाईआ। साधां सन्तां करन पछान, सतिगुर प्रीख्या विच ना आईआ। मण्डल रास गोपी काहन, मथरा बिन्दरावन गोकल रास रचाईआ। कँवल नैण ना करे दर परवान, सुन्दर कुण्डल मुकट बैन मकंद मनोहर लखमी नरायण दिस ना आईआ। राम सीता सारे कहिण, सीता सुरती ना राम व्याहीआ। गणपति गणेश ध्यान लगायण, सीस भेट ना कोई कराईआ। शिव शंकर दुआरे सारे पायण, शंकर बरन ना कोए जणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म रहे वखान, ब्रह्म भेव ना राईआ। विष्नूं वंसी कुल जहान, अछल अछल कराईआ । सतिजुग साचे हो बलवान, शाम करे कुड़माईआ। रिग देवे हरि साचा दान, त्रेता झोली पाईआ। युजर करे इक्क वख्यान, साँवल सुन्दर रूप समाईआ। कलिजुग जोधा सूर बली बलवान, संग मुहम्मद चार यार संग रखाईआ। अल्ला राणी नार रकान, जोबन रही हंढाईआ। खेलण खेल पंज शैतान, जीव जहान रहे खपाईआ। नानक गुर हो मेहरवान, आपणी दया कमाईआ। एका बख्शे हरि ध्यान, अमरापद समाईआ। नानक नानक सारे गान, नानक हथ्थ किसे ना आईआ। मदिरा मास पीण खाण, मन मति रही कुरलाईआ। अन्तिम पीड़े कोहलू घाण, ना सके कोई बचाईआ। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, हर घट वेखे थाउँ थाँईंआ। गुरमुख साचे बाल अञ्याण, आप आपणी गोद उठाईआ। देवे नाम धुर फ़रमाण, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। गुर गोबिन्दा कर परवान, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। अकाल पुरख हरि तख्त महान, लोकमात ना कोई जणाईआ। आपे बैठ हरि मेहरवान, आप आपणी करे रुशनाईआ। लोआं पुरीआं खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड वरभण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी वंडी वंड, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार लक्ख लेख लिखाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, खण्डनहार आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम फड़े हथ्थ चण्ड प्रचण्ड, सोहँ खण्डा नाउँ रखाईआ। मनमुख जीवां देवे दंड, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीव नार दुहागण रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा वध्या भेख पखण्ड, गुर पीर साध सन्त घर घर बैठे धूंणीआँ ताईआ। जूठ झूठ पौदे डण्ड, हरि का नाम हथ्थ ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ सुत्ता दे कर कंड, आत्म सेजा मुख भवाईआ। गुरमुख विरले मंगी साची मंग, गुरचरन सच्ची सरनाईआ। दूई द्वैती ढाही कंध, एका घर सुहाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। सुरत सवाणी मुक्के पन्ध, शब्दी शब्द समाईआ। सतिगुर पूरा सुणाए एका छन्द, नाद अनादी धुन वजाईआ। गा ना सके बत्ती दन्द, रसना भेव ना पाईआ। मनमुख जीव भागांमन्द, बैठे मुख सरमाईआ। कलिजुग अन्धेरा जगत अन्ध, ना कोई अन्धेर मिटाईआ। जगत विकारा मुख

लग्गा गन्द, हउमे हँगता रोग वधाईआ। गुरमुख विरले पाया परमानंद, निजा नंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप अख्वाईआ। विष्नूं भगवान हरि भगवन्ता, भगवन मेल मिलांयदा। खेले खेल आदिन अन्ता, आदि जुगादी आप अख्वांयदा। गुरमुख उभारे साचे सन्ता, गुरमति गुर दया कमांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, काया मन्दिर चढ़ वेख वखांयदा। दर दुआरे जो जन होए मंगता, प्रभ साची भिच्छया नाम झोली पांयदा। काया चीथड़ा आपे रंगता, रंग मजीठी इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन साचा मेला, साचे हरि विछड़ कदे ना जांयदा।

दरस नाम अमोल, ना कोई हट्ट विकांयदा। दरस नाम अनभोल, तीर्थ तट ना कोई रखांयदा। दरस नाम अडोल, मस्जिद मन्दिर मट्ठ कोई ना पांयदा। दर्शन नाम अतोल, अठसठ ना कोई तुलांयदा। गुर पूरा जिस जन पड़दे देवे खोल्ह, गुर मन्दिर अन्दर दरस दिखांयदा। दरस गुर जगत जुग मीता, नित नित आप वखाया। दरस गुर जन रचन रचीता, चेतन्न रूप दृढ़ाया। दरस गुर जिस काया कीता, हरि हरि आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन दरस आप अख्वाया। दर्शन गुर जोग निराला, गुरमुख विरला पांयदा। दर्शन गुर जोत अकाला, अकाल पुरख मिलांयदा। दरस गुर होए रखवाला, अट्ठे पहर सेव कमांयदा। दर्शन गुर होए काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, गुर पूरा आप वखांयदा। दर्शन गुर करे हाल बेहाला, सुरती सुरत भवांयदा। दर्शन गुर फंद कटाए काल महांकाला, दीन दयाला वेख वखांयदा। दर्शन गुर फल लगाए काया डाला, सिंच क्यारी हरी करांयदा। दर्शन गुर तोड़े जगत जंजाला, माया ममता मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दर्शन वेख वखांयदा। दर्शन गुर आत्म जोती, जोती नूर उपाया। दर्शन गुर मेट मिटाए वरन गोती, साची सूरत इक्क वखाया। दर्शन गुर गुरमुख विरला पाए विच्चों कोटन कोटी, कोटन कोट रहे ध्यान लगाया। दर्शन गुर आप चढ़ाए उप्पर चोटी, बेड़ा बन्ने लाया। दर्शन गुर कट्ठे वासना खोटी, दुरमति मैल धुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैणा दरस दिखाया। दर्शन गुर साचे नैण, गुरमुख विरला पांयदा। दर्शन गुर ना रसना सके कहिण, महिमा अगणत ना कोई गणांयदा। दर्शन गुर चुकाए लहिण देण, आवण जावण पन्ध मुकांयदा। दर्शन गुर साक सज्जण सैण, भाई भैण अख्वांयदा। दर्शन गुर बस्त्र पाए तन साचा गहिण, हार शृंगार आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दर्शन दर्द मिटांयदा। दर्शन गुर साख्यात, गुरमुख विरले पाया। दर्शन गुर करे पारजात, गुरमुख लए तराया। दर्शन गुर बन्न्हे नात, नाता चरन इक्क रखाया। दर्शन

गुर वड करामात, भेव कोई ना राया। दर्शन गुर बूंद स्वांत, तृष्ना भुक्ख मिटाया। दर्शन गुर इक्क इकांत, एका लिव लाया। दर्शन गुर मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाया। दर्शन गुर पुच्छे वात, गुर सतिगुर होए सहाया। दर्शन गुर साची दात, धुर मस्तक लहिणा झोली पाया। दर्शन गुर मिले कमलापात, कन्त कन्तूहला मेल मिलाया। दर्शन गुर वेखे मार झात, झिरना निझर दए झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरना फरना दए खुल्हाया। दर्शन गुर वड्डी वड्याई, हरि हरि मेल मिलांयदा। दर्शन गुर सहिज धुन उपजाई, धुनी राग अल्हांयदा। शब्द गुर सगली चिन्द मिटाई, सगला संग तजांयदा। दर्शन गुर आत्म घर वज्जे वधाई, मंगलाचार करांयदा। दर्शन गुर नेत्र कज्जल धार बंधाई, तीजा नैण खुल्हांयदा। दर्शन गुर मेला पारब्रह्म गोसाँईं, गहर गम्भीर समांयदा। दर्शन गुर चाँईं चाँईं, गुरमुख विरला पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दरसी दरस दिखांयदा। दर्शन गुर साचा मेवा, गुरमुख विरले पाया। दर्शन गुर मस्तक मणीआं कौस्तक थेवा, हरि साचे आप लगाया। दर्शन गुर रसना जिह्वा, अजपा जाप जपाया। दर्शन गुर अलक्ख अभेवा, आदि निरँजण दर्शन गुर साची सेवा, निरभउ साचा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन दरस दिखाया। दर्शन गुर हरि भगवन्ता, हरि हरि संग निभाए। दर्शन गुर साचे सन्ता, सतिगुर मेल मिलाए। दर्शन गुर नारी कन्ता, एका सेज सुहाए। दर्शन गुर काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाए। दर्शन गुर साचा धाम सुहंता, थिर घर इक्क रखाए। दर्शन गुर देवे नाम सुगंधता, साचा हवन कराए। दर्शन गुर पार कराए जिउँ नानक अंगदा, अंगीकार अख्वाए। दर्शन गुर रलाए साची संगता, जो जन मंगता दर दुआरे आए। दर्शन गुर तोड़े गढ़ हँकार हँगता, हउमे रोग रहिण ना पाए। दरस गुर मेट मिटाए भुक्खा नंगता, नंगा भुक्खा ना कोई दिसाए। दरस गुर अमृत धार वहाए हँगता, गंगा गोदावरी रही शरमाए। दर्शन गुर दो जहानां पार लँघता, शौह दरया ना कोई रुढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले मेल मिलाए। दर्शन गुर वड सिन्ध सागर, गहर गम्भीर अख्वाया। दर्शन गुर जोत जगाए काया गागर, नूरो नूर उपाया। दरस गुर गुरमुख विरला बणे सुदागर, मनमुख झूठे धन्दे लाया। गुर का शब्द रत्ती रत्नागर, नाम रत्ती रत्त दए रंगाया। गुर का शब्द निर्मल कर्म करे उजागर, जोग जुगत इक्क बताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दासी दास आप अख्वाया। गुर का दरस शब्द गुर मन्त्र, आत्म हरि लिव लाईआ। गुर का शब्द बुझाए बसन्तर, अग्नी अग्ग रहिण ना पाईआ। गुर का शब्द जोग जुगन्तर, जुग जुग आप कराईआ। गुर का शब्द जाणे बिध अन्तर, आत्म बूझ बुझाईआ। गुर का शब्द सर्ब वरतंतर, हर घट रिहा

समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द करे कुड़माईआ। गुर का शब्द जगत सच जोग, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर का शब्द सच्चा सच भोग, जन भगतां रिहा कराईआ। गुर का शब्द धुर संजोग, धुर विछड़े मेल मिलाईआ। गुर का शब्द दरस अमोघ, आप आपणा दए कराईआ। गुर का शब्द आत्म चोग, माणक मोती मुख खवाईआ। गुर का शब्द कटे रोग, चिन्ता सोग मिटाईआ। गुर का शब्द पार कराए तीनां लोक, त्रैगुण माया फंद कटाईआ। गुर का शब्द सच सलोक, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। गुर का शब्द ना सके कोई रोक, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। गुर का शब्द साची मोख, आत्म बूझ बुझाईआ। गुर का शब्द ना हरख ना सोग, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वड्याईआ। गुर का शब्द सच खज़ाना, गुर पूरे आप भराया। गुर का शब्द बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाया। गुर का शब्द करे ठांडा सीना, अमृत धार चुआया। गुर का शब्द सदा रस भीन्ना, रस रसना इक्क जणाया। गुर का शब्द जिस जन चीना, चेतन्न चित वखाया। गुर का शब्द जिउँ जल मीना, गुरमुख साचे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर का शब्द शब्द अनुराग, राग वेद ना गाया। गुर का शब्द वड्डे वड भाग, वड भागी गुरमुख पाया। गुर का शब्द कन्त सुहाग, गुर मन्दिर दए सुहाया। गुर का शब्द सच चिराग, जोती नूर करे रुशनाया। गुर का शब्द बुझाए तृष्ना आग, तृखा रहिण ना पाया। गुर का शब्द बणाए हँस काग, कागों हँस बणाया। गुर का शब्द धोवे दाग, मानस जन्म लेखे लाया। गुर का शब्द सदा सद रिहा जाग, गुर का शब्द रिहा जगाया। गुर का शब्द जिस जन गया लाग, मन मनुआ बंध बंधाया। गुर का शब्द बन्ने तन साचा ताग, मन मति दूर कराया। गुर का शब्द पकड़े जन वाग, बुध बोध ना ज्ञान जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्आया । गुर का शब्द साचा सज्जण, साचा संग निभांयदा। गुर का शब्द साचा मजन, साचा धाम सुहांयदा। गुर का शब्द साचा हजन, हाजी हज्ज वखांयदा। गुर का शब्द साचा राजन, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। गुर का शब्द प्रगट होया देस माझन, कलिजुग सोया आप उठांयदा। गुर का शब्द सच्चा सच ताजन, शाह अस्वार आप हो जांयदा। गुर का शब्द रक्खे सद लाजन, लाजावन्त अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द नगारा इक्क वजांयदा। गुर का शब्द सच नगारा, गुर पूरे आप वजाया। गुरसिख सोया रिहा ना कोई नौ दुआरा, दसवां बूझ बुझाया। गुर का शब्द वसे उच्चे अटल महल्ल मुनारा, थिर घर नाउँ रखाया। गुर का शब्द ना दिसे मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा, गुरमुख हिरदे विच समाया। गुर का

शब्द बन्द ना होए चार दिवारा, छप्पर छन्न ना कोई टिकाया। गुर का शब्द अन्त ना पारा वारा, भेव अभेदा ना कोई लिखाया। गुर का शब्द गुरु गुर करतारा, करता पुरख अख्वाया। गुर का शब्द नारी नारा, नर नरायण आप हो जाया। गुर का शब्द मीत मुरारा, पीत पितम्बर सीस सुहाया। गुर का शब्द गुर अवतारा, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। गुर का शब्द गुर भरे भण्डारा, सम्बल नगरी आप टिकाया। गुर का शब्द गुप्त ज़ाहरा, अन्दर बाहर समाया। गुर का शब्द एका नाअरा, एकँकारा रिहा लगाया। गुर का शब्द सच जैकारा, सो पुरख निरँजण आप जणाया। गुर का शब्द खण्डा दो धारा, दो जहानां रिहा हिलाया। गुर का शब्द हरि रूप अपारा, हरि हरि आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द उपाया। गुर का शब्द वड बलकारा, खेले खेल दो जहानां। गुर का शब्द तिक्खी धारा, मारे मार जोधे सूर नौजवाना। गुर का शब्द तेज़ कटारा, गुर का शब्द तीर कमाना। गुर का शब्द आर पारा, गुर का शब्द विच म्याना। गुर का शब्द पार किनारा, गुर का शब्द वहिण वहाणा। गुर का शब्द प्रगट विच संसारा, गुर का शब्द होए तराना। गुर का शब्द नाम अधारा, गुर का शब्द सहिज मेल मिलाना। गुर का शब्द निहकलंक नरायण नर अवतारा, खेले खेल श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वरते आपणा भाणा। गुर का शब्द साचा भाणा, हरि भाणे विच समाया। ना कोई जाणे चतर सुघड़ स्याणा, ज्ञानी ध्यानी भेव ना राया। ना कोई जाणे वड विद्वाना, पढ़ पढ़ पुस्तक मोह वधाया। ना कोई जाणे राज राजाना, लेखा लेख ना कोई सिखाया। ना कोई जाणे शाह सुल्ताना, गुर शब्दी भेख वटाया। गुर का शब्द मर्द मरदाना, चेला गुर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी नाउँ धराया। शब्दी गुर सच महल्ला, एका एक वसाया। शब्द गुर वसे इक्क अकल्ला, एकँकारा रूप वटाया। सतिगुर साचा धाम बैठा मल्ला, दिस किसे ना आया। शब्द गुर अछल अछल्ला, अछल अछल कराया। शब्द गुर बोले हल्ला, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथमी पए र्तथल्ला, सत्तां दीपां लए हिलाया। हाहाकारी जलां थला, उच्चे टिल्ले देण दुहाया। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका दूजा भउ चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी नाउँ धराया। शब्द गुर साचा नामा, हरि नामे वड वड्याईआ। शब्द गुर अन्तरजामा, हर घट बूझ बुझाईआ। शब्द गुर देवे साचा तामा, अमृत आत्म जाम प्याईआ। शब्द गुर पूरन कराए कामा, जिस जन आस तकाईआ। शब्द गुर पल्ले बन्न्हे साचा दामा, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोई ना जाईआ। शब्द गुर वड नाम नामा, गुर शब्दी शब्द समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां रिहा वरताईआ।

गुर शब्द गुर भण्डारा, गुर पूरे आप वरताया। जो जन मंगण आए दुआरा, आत्म झोली दए भराया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी पड़दा लाहया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, जिस जन चरनी सीस झुकाया। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, पंचम मोह चुकाया। धर्म वखाए सच अखाड़ा, साचा मेल मिलाया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, जोती नूर सवाया। गुरमुख साजन साचा लाड़ा, साचे घोड़े आप चढ़ाया। दरगहि साची साचे घर आपे वाड़ा, साचा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा नाम जपाया। गुर का शब्द नाम प्रभाती, अमृत वेला सुहाया। एका रंग रंगाए दिवस राती, रैण अन्धेरी रहिण ना पाया। ना कोई दीवा बाती दीपक जोती इक्क जगाया। जिस जन बख्शे साची दाती, दर दुआरा दए सुहाया। देवे दरस बहु बहु भांती, बिधनाना मेल मिलाया। जन भगतां अन्तिम देवण आया बाकी, निहकलंका जामा पाया। अमृत जाम प्याए साचा साकी, सच प्याला इक्क रखाया। आत्म अन्दर खोल्हे ताकी, निर्मल जोत करे रुशनाया। शब्द गुर वड पाकन पाकी, पाकी पाक अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन खुल्हाए एका दर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। चार वरन इक्क दुआरा, एका नाम जणाईआ। एका शब्द इक्क प्यारा, एका धुन उपजाईआ । एका पवण इक्क हुलारा, एका झूला रिहा झुलाईआ। एका सवन एका धारा, एका मेघा रिहा बरसाईआ। एका बावन एका बवन, एका भेखी भेख वटाईआ। एका रामा एका रावन, एका सीता लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द करे चढ़ाईआ । गुर शब्द चढ़ाई नौ खण्ड, सत्त दीप वज्जे नगारा। लोआं पुरीआं वंडी वंड, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी खण्ड खण्ड, ना दीसे कोई सहारा। सिर उठाई पापां पंड, कलिजुग जीआं बद्धा भारा। नार दुहागण दिसे रंड, चारों कुन्ट हाहाकारा। मनमुख जीवां वढ्ढे कंड, मार खण्डा सोहँ दो धारा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, प्रभ बख्शे सच प्यारा। काया चोली चाढ़े रंग, देवे शब्द सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द गुरमुख देवे वर, जिस जन बख्शे चरन प्यारा।

* ५ माघ २०१४ बिक्रमी सूबेदार वतन सिँघ दे घर पिण्ड शरींह पुर तहिसील दसूहा ज़िला हुशिआरपुर *

हरि जोती शब्द धार, हरि हरि आप वहाईआ। हरि हरि शब्द अपार, भेव कोई ना पाईआ। हरि का शब्द रूप करतार, करता पुरख आप अख्वाईआ। हरि का शब्द हरि निरँकार, निरगुण नाम धराईआ। हरि का शब्द खेल अपार, हरि हरि

विच रिहा समाईआ। हरि का शब्द हरि प्यार, हरि हरि आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द दए वड्याईआ। हरि शब्द सच सुल्ताना, हरि साचे आप बणाया। सच शब्द वड मेहरवाना, मेहरवान आप अख्वाया। हरि शब्द वड दानी दाना, देवणहार आप अख्वाया। हरि शब्द साचा गाणा, हरि साचे आप अलाया। हरि शब्द सच तराना, हरि साचे आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द उपाया। हरि शब्द सच्चा शाह, एका एक अख्वांयदा। हरि शब्द बेपरवाह, भेव कोई ना पांयदा। हरि शब्द बणाए आपणा नाँ, नाम नामा आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द जणांयदा। शब्द सुत वड बलकारा, एका एक अख्वाया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्ता, खेले खेल खेलणहारा आप अख्वाया। जुग जुग सुहाए आपणी रुत्ता, आपणे भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द उपाया। शब्द सुत वड बलवाना, हरि एका एक रखाया। खेले खेल दो जहानां, जुग जुग आप खिलाया। मेले मेल श्री भगवाना, भगवन रूप समाया। आदि अन्त नौजवाना, ना मरे ना जाया। जन भगतां करे मात पछाना, वेखणहार दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द उपाया। शब्द गुर साचा सूरा, सतिगुर आप उपाया। आपे राग अनादी तूरा, आपे नाद वजाया। आपे होए सर्ब गुण भरपूरा, गुण भरपूर आप अख्वाया। आपे बख्शे चरन धूढ़ा, आपे मस्तक टिक्का लाया। आपे चाढ़े रंग गूढ़ा, काया रंगणहार आप अख्वाया। आपे नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, आपे लए लड़ लगाया। आपे चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द दए वड्आया। हरि शब्द वड्डी वड्याई, हरि वड्डा वड पाया। लोआं पुरीआं कर कुड़माई, पारब्रह्म ब्रह्म समझाया। एका धुन इक्क जणाई, एका नाद वजाया। एका गुण इक्क रघुराई, एका वेख वखाया। इक्क पुकार रिहा सुण सर्ब घट थाँईं, आदि अन्त इक्क समाया। एका वेखे चाँईं चाँईं, जुग जुग मात फेरा पाया। एका पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, हरिजन देवे मात मिलाया। एका देवे ठंडीआं छाईं, हउमे दुःखड़े रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर साचा साचा सुत शब्दी शब्द तराया। सतिगुर साचा सूरा, हरि हरि नाम रखाया। आसा मनसा जुग जुग पूरा, जुग जुग वेस वटाया। भगत दुआरे हाज़र हज़ूरा, हरिजन आप हो आया। आपे नेरन आपे दूरा, दूरो दूर आप अख्वाया। आपे जोती आपे नूरा, नूरो नूर आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपाया। आप आपणा नाउँ धराए, आपणी कल वरताईआ। राग अनादी एका गाए, गावणहार आप अख्वाईआ। ब्रह्मादी ब्रह्म खोज खुजाए, पारब्रह्म वड्डी

वड्याईआ। आदि जुगादी भेख वटाए, भेखाधारी आप अख्वाईआ। मोहण माधव माधी नाम धराए, नर नरायण हरि रघुराईआ। बोध अगाधी शब्द जणाए, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेखे वेखणहारा खेल, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन साचा आप जगाउणा, हरि हथ्थ रखा वड्याईआ। आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाउणा, एका ताल सुणाईआ। अनहद वाजा इक्क वजाउणा, पंचम सेवा लाईआ। पंचम बहि बहि घर साचे गाउणा, आत्म घर वज्जे वधाईआ। आत्म सर इक्क नहाउणा, सर सरोवर इक्क वखाईआ। आत्म कुण्डा आपे लौहणा, बजर कपाट तुड़ाईआ। दस्म दुआरी भेव खलाउणा, आत्म सेज विछाईआ। निर्मल जोती दीप जगाउणा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। आप आपणा मेल मिलाउणा, आप आपणे अंग लगाईआ। नारी कन्ता एका धाम सुहाउणा, साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी देवे साचा वर, गुरमुख वड्डी वड्याईआ। गुरसिख गुर दीन दयाला, गुर गोबिन्द रूप समाईआ। गुर पारब्रह्म सर्ब रखवाला, हर घट बैठा आसण लाईआ। गुर सतिगुर तोड़े जगत जंजाला, जो जन आए सरनाईआ। गुर पार कराए नेड़ ना आए काल महांकाला, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर गुरसिख उपाए बणाए साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े नाउँ धराईआ। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म मुख चुआईआ। जुग जुग चले अवलड़ी चाला, चाल निराली आप अख्वाईआ। हरिजन मेल मिलाए काया धर्म सच्ची धर्मसाला, दर घर साचा इक्क सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। वड वड्याई हरि समरथ, जुग जुग आप रखाईआ। आपे जाणे महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चल्लया एका रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा रिहा मथ, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। पंच विकारे पाई नथ्थ, मन मति होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर शब्दी बणत बणाईआ। गुर शब्द सुणाए साचा ढोला, हरि साचे वड वड्याईआ। एका नाम इक्क जैकारा एकँकारा एका बोला, एका ताल वजाईआ। इक्क भण्डारा सच दुआरा एका खोल्ह, आपे रिहा वरताईआ। जुग जुग बणया साचा तोला, तोलणहार आप अख्वाईआ। द्वापर प्रगटे कला सोलां, कलिजुग अन्तिम अनन्त कल अख्वाईआ। जन भगतां बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, आप आपणा दरस दिखाईआ। मनमुखां रक्खया पड़दा उहला, जोत निरँजण दीप जगाईआ। भेखी भेख वटाए काया चोला, शब्दी शब्द समाईआ। इक्क शब्द इक्क जैकारा चार वरन साचा बोला, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ हँगता होए गोला, हउमे रोग जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी शब्द गुर गुर शब्दी शब्द रूप अख्वाईआ।

हरि शब्द गुर देव देवा, आदि पुरख अपारा। हरि शब्द जोग जुगत जग करे सेवा, लोकमात लए अवतारा। हरि शब्द अलक्ख अभेवा, वेख वखाए लोआं पुरीआं नौ खण्ड तेरा पसर पसारा। हरि का शब्द रसना जिह्वा, जिस जन रसन उचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेल मिलाए विच संसारा। हरि का शब्द हरि अगम्म, अगम्मड़े धाम सुहाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण विच ना आया। ना कोई पवण स्वासी वेखे दम, नेत्र नीर ना कोई वहाया। जुग जुग जाणे आपणा कम्म, करता पुरख आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक अख्वाया। एका एक आदि निरँजण, एका जोत जगाईआ। सतिगुर शब्द होए दर्द दुःख भंजन, भव सागर पार कराईआ। जन भगतां बख्शे नेत्र अंजन, नाम नामा झोली पाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। प्रगट होए हरि साचा सज्जण, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। भगत सुहेला आया पड़दे कज्जन, इक्क दोशाला उप्पर पाईआ। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग जीव दर दर घर घर छड्ड छड्ड भज्जण, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। काल नगारे चारों कुन्ट दहि दिशा वज्जण, कलिजुग रिहा वजाईआ। कोई ना किसे रक्खे लज्जण, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां करे रुशनाईआ। सम्मत चौदां चौदां लोक, हरि एका हट्ट खुल्हाया। एका शब्द इक्क सलोक, एका नाअरा लाया। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, कलिजुग वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी देवे झोक, राए धर्म दए सज़ाया। जन भगतां बख्शे अन्तिम मोख, जगत वड वड्आया। ना हरख ना कदे सोग, चिन्ता दुःख ना कोई रखाया। चार वरन तेरा एका जोग, प्रभ साचा दए वखाया। सोहँ शब्द साचा भोग, आत्म सेजा दए कराया। दो जहानां ना होए विजोग, मेली मेला दो जहान मेल मिलाया। आत्म दरसी दरस देवे अमोघ, आप आपणा रूप वटाया। एका साची चोग, सोहँ हँसा मुख पुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका रिहा वजाया। एका डंका हरि भगवन्ता, आपणा आप वजांयदा। आप उठाए साधन सन्ता, राज राजाना आप उठांयदा। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्ता, गूढ़ी नींदे सवांयदा। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। तोड़े गढ़ हँकारी हँगता, सो पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। मनमुख जीव भुक्खा नंगता, नौ दर सदा कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेले साचे घर घर घर विच आप करांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम निशाना, प्रभ साचे इक्क रखाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए जगाया।

नौ खण्ड पृथ्मी इक्क बिबाणा, सत्तां दीपां रिहा फिराया। लक्ख चुरासी पावे आणा, एका नाम धराया। जन भगतां बन्ने आत्म अन्दर साचा गाना, एका तन्द बंधाया। शब्द सुणाए साचा गाणा, अनहद ताल वजाया। करे कराए दर परवाना, पारब्रह्म प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मार्ग लाया। एका मार्ग एका राह, एका जोत जगाईआ। एका शब्द गुर बेपरवाह, एका वेखे थाउँ थाँईंआ। नित नवित्ता करे सच न्याउँ, आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरा, चारों कुन्ट पसारया। पारब्रह्म प्रभ पाए फेरा, खेले खेल अपर अपारया। आपे ढाए भरमां डेरा, मनमुख जीवां तोड़े गढ़ हंकारया। चार वरन कराए एका संझ सवेरा, सतिजुग साचा सच द्वारया। आप चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा रूप वखा रिहा। चौथे जुग देवे गेड़ा, उलटी लट्ठ गिढ़ा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी करे निबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखा रिहा। किसे ना दिसे काया नगर खेड़ा, महल्ल अटल ना कोई जणा रिहा। जन भगतां बन्नणहारा बेड़ा, जुग जुग आप बन्ना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा रूप वटा रिहा।

१०१ १०१

०७ ०७

सतिगुर साचा मीत, सति पुरख अख्वाया। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, नाता बिधाता तोड़ निभाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। देवे नाम शब्द अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आया। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, जिस जन आपणी दया कमाया। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आत्म अन्तर दिस ना आया। गुरसिख काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर आप अख्वाया। सतिगुर साजन सचा मीता, एका एक अख्वाया। आपे जाणे आपणी रीता, जुग जुग आप चलाया। गुरमुख विरले नाम निधान एका पीता, हउमे रोग गंवाया। एका शब्द दए अतीता, त्रैगुण मोह चुकाया। पंज तत्त कराए ठांडा सीता, सांतक सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर नाउँ धराया। सतिगुर नाउँ हरि निरँकार, शब्दी शब्द धराया। आप आपणा कर जैकार, आप आपणा नाअरा लाया। आप आपणी बन्ने धार, आपे मार्ग पाया। आप आपणे लए उभार, आप आपणी दया कमाया। आपे देवे अमृत धार, आपे देवे मुख चुआया। आपे खण्डा तन शृंगार, तन गात्रे आप लटकाया। आपे ब्रह्मण्डां पावे सार, जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। आपे भेख पखण्डा दए निवार, कलिजुग अन्तिम रहिण

ना पाया। आपे खण्डा रिहा हुलार, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाया। हँ हँगता देवे मार, दुरमति रहिण ना पाया। हरिजन मंगता आए दर द्वार, आत्म झोली नाम भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर मति गुर भेख वटाया। गुर मति गुर साचा शब्द विचोला, दो जहानां वाली। आप सुणाए आपणा ढोला, जगे जोत अकाली। कलिजुग अन्तिम बणया तोला, नानक धार चला ली। गोबिन्द गुर वेखे होला, हथ्थ कमान उठा ली। कलिजुग जीव बणया गोला, माया ममता मोह रखा ली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमति गुर भेख वटा ली। गुर सतिगुर साचा सच मृदंगा, एका नाम जपाया। गुरमुख चरन द्वार वहाए कोटन गंगा, अठसठ तीर्थ माण गंवाया। अञ्जील कुराना करे भंगा, अल्ला हू हू नाअरा कदे ना लाया। चिट्टे अस्व कस्सया तंगा, पुरख अबिनाशी शब्द सिँघासण आसण लाया। लोआं पुरीआं आपे लँघा, लोकमात वेख वखाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त भुक्खा नंगा, नाम वस्त कोए ना झोली पाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज विकार लग्गा दंगा, मन मति बुध रही कुरलाया। अन्तिम वेले ना दिसे कोई संगा, ना कोई संग निभाया। कूड़ कुड़यारा लग्गा चंगा, नाम निधान दिस ना आया। कलिजुग झूठा छड्डणा पैणा धन्दा, वेला अन्तिम आया। पारब्रह्म अबिनाशी करता रहिण ना देवे कोई मदिरा मासी गन्दा, निहकलंकी जामा पाया। गुरमुख साचा सतिजुग चाढ़े चन्द नौचन्दा, सीतल साची धार वहाया। कलिजुग जीव आत्म अन्धा, अन्तिम डूँघे वहिण दए रुढ़ाया। जन भगतां बख्शे परमानंदा, निझर धारा मुख चुआया। आदि जुगादि सदा बख्शिंदा, गुर शब्दी आप अख्वाया। लक्ख चुरासी आप उपाए आपणी बिन्दा, अन्तिम आपे मेट मिटाया। दाता दानी वड गुणी गहिंदा, गोबिन्द रूप समाया। सिँघ सवरन तेरी मेटे चिन्दा, आत्म दरसी दरस दिखाया। आत्म दरस धुर संजोगा, हरि साचा मेल मिलांयदा। कलिजुग माया कटे रोगा, जोत निरँजण तेल चढ़ांयदा। आदि अन्त ना होए विजोगा, दो जहानी संग निभांयदा। आत्म सेजा साचा भोगा, सुरत सवाणी संग करांयदा। ना कोई जाणे बांग रोज़ा, ना पंज तत्त निमाज़ अल्हांयदा। प्रभ का भेव सदा सद गूझा, वेद कतेब कोई ना पांयदा। जिस जन बख्शे आपणी सूझा, आपणा दर खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख साजन साचा लाड़ा, हरि साचे आप श्रृंगारया। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, दर द्वार दए दुरकारया। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, दिवस रैण करे उज्यारया। चरन कँवल वखाए सच अखाड़ा, गुर मन्त्र एका नाम उचारया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर सुखमन नाड़ा पार करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पावे सारया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, प्रभ आपणे

हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुरमुख साचे लए उभार, मनमुखां दए सज़ाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ। नौ दुआरे लहिणा चुक्के, प्रभ साचा आप चुकांयदा। गुरमुख तेरा पैंडा मुक्के, आवण जावण पन्ध मुकांयदा। हरे कराए बूटे सुके, अमृत आत्म सेज फुल फुलवाड़ी आप लगांयदा। आप आपणी हथ्थीं चुक्के, गुर गोबिन्द भेख वटांयदा। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठे, जो जन सरसे तेरी सेव लगांयदा। पुरी अनन्द जो गए रुट्ठे, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा जुग जुग तुट्ठे, दयाल पुरख आप अख्वांयदा। हरिभगत बंधाए एका मुट्ठे, आप आपणी गंढु दवांयदा। मेट मिटाए जूठे झूठे, कलिजुग तेरी झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सौ चौदां वेख वखांयदा। वीह सौ चौदां तेरी धार, प्रभ हथ्थ रक्खी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां रिहा जगाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्ताना रिहा हिलाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। सम्बल नगरी हो त्यार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। साचा घोड़ा रिहा श्रृंगार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। कल्गी तोड़ा नाम अपार, जोती जोड़ा मेल मिलाया। पहला पौड़ा अपर अपार, सस्सा किला बणाईआ। उप्पर होड़ा वेख संसार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, अकल कला वरताईआ। अछल अछल्ला परवरदिगार, बेऐब आप अख्वाईआ। ख़ुदी ख़ुदाई देवे मार, ऐनलहक जणाईआ। मुकामे हक्क साचा यार, साची बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका कलमा हरि कायनात, हरि आपणा आप उपाया। नबी रसूलां वेखे मार झात, चार यारी वेख वखाया। सदी चौधवी अन्धेरी रात, मक्का मदीना फोल फुलाया। सम्मत पन्दरां चढ़े बरात, सोहँ लाड़ा इक्क सज़ाया। ना कोई पुच्छे जात पात, वरन बरन विच ना आया। ना कोई पिता ना कोई मात, भाई भैण साक, सज्जण ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द उठाया। गुर शब्दी वड बलवाना, एका एक अख्वांयदा। सोहँ चिल्ला तीर कमाना, हरि आपणा आप उठांयदा। सम्मत पन्दरां आए विच मैदाना, घर साचा वेख वखांयदा। प्रगट होए गुण निधाना, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। पकड़ उठाए जीव शैताना, पंचम पंच हिलांयदा। पंचम बन्ने हथ्थीं गाना, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम कल कर प्रधाना, पंचम काल प्रनांयदा। पंचम बख्शे चरन ध्याना, पंचम महांकाल नेड़ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरिजन साचे एका ओट, एका एक रखाईआ। तन नगारे लग्गे चोट, गुर शब्दी आप लगाईआ। माया ममता कढ्ढे खोट, हँगता गढ़

तुड़ाईआ। मनमुख जीव आलणिउँ डिगे बोट, ना सके कोई उठाईआ। अठसठ तीर्थ साध सन्त बैठे बन्न् लंगोट, धीरज धीर ना कोई धराईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना भरी पोट, माया राणी होई हलकाईआ। कलिजुग क्रिया देवे वोट, कूड़ी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। गुरमुख साचे उठ उठ जाग, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। सम्बल नगर लग्गा भाग, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। एका शब्द एका नाद, एका ताल वजाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मादि, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। आदिन अन्ता आदि जुगादि, जुग जुग रचना रिहा रचाईआ। गुरमुख साचे सज्जण सुहेले आपे लए लाध, आप आपणा मेल मिलाईआ। एका धुन जणाई शब्द बोध अगाध, सुन्न समाध खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन साचे सच टिकाणा, एका एक रखाया। गुर सतिगुर साचे चरन ध्याना, जप तप ना कोई कमाया। मिले मेल श्री भगवाना, सति सरूप समाया। जोती दीपक जगे महाना, नूरो नूर दरसाया। आत्म अन्तर उपजाए सच तराना, अनहद ताल वजाया। पंचम बहि बहि गायण गाणा, अटल महल्ल सुहाया। आपे बख्शे पद निरबाना, परमानंद समाया। जोती शब्दी मेल मिलाणा, सुरती सुरत वटाया। एका सेजा धाम सुहाना, एका अंगन लाया। एका दूजा भउ चुकाणा, एका इक्क रखाया। चौथे घर कर परवाना, पंचम दर सुहाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाणा, देहुरा मन्दिर मसीत ना कोई रखाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण हरि भगवाना, हरि हरि रूप अख्वाया। अट्ठां तत्तां कर परवाना, आपणे लेखे लाया। नौ दर वेखे जीव शैताना, जीव जन्त हलकाया। दसवें मेल गुरमुख चतुर सुजाना, जिस जन आस रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए वर, आत्म प्यास मिटाया। आत्म प्यास दिवस रात, अट्ठे पहर कुरलाईआ। जिस जन बख्शे बूंद स्वांत, अमृत मुख चुआईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नात, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। नाता तोड़े ज़ात पात, वरन बरन ना कोए दिसाईआ। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ात, गुर शब्द करे कुड़माईआ। सतिगुर पूरा देवे साची दात, सोहँ झोली पाईआ। अट्ठे पहर रहे प्रभात, जगत अन्धेर दिस ना आईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, प्रगट हो दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन साचे मेले गुरु गुर चेले रूप समाईआ। हरि पुरख निरँजण आदि, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। खेले खेल आदि जुगादि, जागरत जोत जगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वजाए आपणा नाद, आपणी धुन उपजाईआ। सन्त सुहेले आपे लाध, आप आपणी बूझ बुझाईआ। हरिजन हरि हरि रहे अराध, सेवक सेवा रहे कमाईआ। मिले मेल हरि माधव माध, मेलणहार सहिज सभाईआ। पंच विकारा देवे बांध, हरि शब्दी डोर बंधाईआ।

सदा सद सुणे फ़रयाद, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आपे दए मिटाईआ। चार युग मात धर, आपणी दया कमांयदा। आप आपणा वेस कर, आपे वेख वखांयदा। आपे होए दर दरवेश दर, आपे अलक्ख जगांयदा। आपे नर नरेश घर, आपे धाम सुहांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष कर, विष्नूं वंसी आप अख्वांयदा। आपे लेखा लेख कर, त्रैगुण माया संग निभांयदा। आपे पंज तत्त उपदेश कर, आपे मोह वधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। चार युग प्रभ सेवा ला, एका बाज़ी लाईआ। सतिजुग तेरी वंड वंडा, सतारां लक्ख हज़ार अठाई आयू आप लिखाईआ। त्रेता तेरा वेख वखा, हज़ार छिआनवे लक्ख बारां, बारम बार करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आप मिलाए, आप मनाए आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। द्वापर तेरी बन्नी धार, खेले खेल महाना। अट्ठ लक्ख चौठ हज़ार, मिल्या धुर फ़रमाना। जीवां जन्तां कर्म विचार, प्रगट होए हरि भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जीव जहाना। आपे खेल खिलावणहारा, पारब्रह्म अबिनाशी। आपे मारे मार ज्वालणहारा, आपे मण्डल पावे रासी। आपे चन्द सूरज होए तारा, खेले खेल पृथ्मी आकासी। आपे शब्द धुन होए जैकारा, आपे निर्मल जोत करे प्रकाशी। आपे होए धुंधूकारा, आप आपणा वेख वखासी। कलिजुग लिखाया लेख अपारा, चार लक्ख बत्ती हज़ारा, गुरमुख जोबन विरला हंढासी। मनमुख जीव मूर्ख मुग्ध गंवारा, हरि का नाउँ भुलासी। धरत मात करे पुकारा, प्रभ ठाकर अग्गे अबिनाशी। चुक्कया ना जाए मात भारा, मंगे मंग दास दासी। साध सन्त होए हैस्सयारा, भरमे भुल्ले पंडत काशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे करे बन्द खुलासी। धरत मात कर पुकार, घर साचे रही कुरलाईआ। कलिजुग अन्तिम इक्क हुलार, चारों कुन्ट रिहा दवाईआ। नाल रलाया संग मुहम्मद चार यार, साचा संग निभाईआ। मंगे मंग धुर दरबार, चौदां सदी वेख वखाईआ। अल्ला राणी जै जैकार, हू हू नाअरा लाईआ। चारों कुन्ट दर पसार, कूड़ क्रिया रही कमाईआ। खेले खेल परवरदिगार, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। पुरख अबिनाशी कर विचार, आप आपणी दया कमाईआ। शब्द सुत कर त्यार, लोकमात लए जगाईआ। पंज तत्त कर प्यार, नानक नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति आप समझाईआ। नानक हरि जोत जगा, निरगुण रूप वखाया। आप आपणे दर बुला, आप आपणा अंग वखाया। आप आपणा पड़दा लाह, आप आपणा नूर दरसाया। आप आपणी दया कमा, आप आपणे चरन छुहाया। नानक निरगुण दर्शन पा, दोए जोड़ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, जोत जोत डगमगाया। अटल महल्ल वेखे अगम्म

अथाह, उचो ऊँच वखाया। अलक्ख निरँजण एका अलक्ख रिहा जगा, एका भिच्छया झोली पाया। होए प्रतक्ख प्रभ दरस दिखा, सति सरूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता नाम वर, एका एक झोली पाया। एका नाम एका दाता, एका एक भण्डारी। एका पिता एका माता, एका वड संसारी। एका सुत एका सईआ, एका राज द्वारी। एका करे सदा हिता, एका जोत जगे निरँकारी। एका दिसे सूहा चिट्टा, एका रूप अधारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरु नानक दए प्यारी। नानक गुर सुण अरदास, नेत्र नैण निवाया। पुरख अबिनाशी वस्सया पास, दरसी दर्शन पाया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन पातालां वेख वखाया। लोआं पुरीआं साची रास, मण्डल मण्डप डेरा लाया। आदि अन्त ना जाए विनास, सच सिँघासण वेख वखाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया। जोती नूर हरि चमत्कारा, एका एक वखांयदा। मंगे मंग नानक दुआरा, अग्गे झोली डांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। इक्क शब्द इक्क जैकारा, तेरा मेरा रूप समांयदा। निरगुण लेखा अपर अपारा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। सरगुण साचा कर पसारा, सतिगुर रूप वटांयदा। दोहां विचोला हरि निरँकारा, शब्दी बणत बणांयदा। नानक तेरा रसन जैकारा, सोहँ शब्द सुणांयदा। सृष्ट सबाई दए भण्डारा, नाम सति झोली पांयदा।
१०६ पंज तत्त कर वरतारा, क्रिया किरत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नाम जणांयदा। १०६
०७ नानक नामा हरि हरि पा, आत्म रंग चढ़ाया। एका दूजा संग तुड़ा, तीजा वेख वखाया। चौथे घर गया समा, पंचम ०७
मेल मिलाया। छेवां मिल्या साचा शाह, अतुट भण्डार रखाया। सत्तवें बैठ बेपरवाह, सति पुरख अख्वाया। गुर शब्द बणाए जगत मलाह, नानक नाम धराया। आप आपणी दया कमा, आपे मार्ग लाया। आपे मन्त्र ल्या सिखा, आपे रिहा पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक लेखा लेख लिखाया। नानक लिख्या लेखा अपारा, कलिजुग अन्तिम वारी। खेले खेल विच संसारा, चारों कुन्ट दहि दिशा लाए उडारी। लक्ख चुरासी पेखणहारा, आत्म अगम्मड़ी जाणे धारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम अधारी। नन्ना निरगुण रूप नर निरंकारया। नन्ना नानक पाई सार, विच संसारया। कक्का कर्मां रिहा विचार, कलिजुग जीवां पासा हारया। तोलणहारा तोले अपर अपार, मोदीखाना आप चला रिहा। सोहँ बोले जै जैकार, रसना जिह्वा ना कोई हिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता एका वर, सृष्ट सबाई वेख वखा रिहा। नानक तोला तोलणहारा, तोले सृष्ट सबाईआ। एका अंक बोलणहारा, बोले जगत लोकाईआ। इक्क भण्डारा खोलणहारा, खोले सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, नानक सेव लगाईआ। नानक तोला बण वणजारा, साचा हट्ट चलाया। पारब्रह्म प्रभ दए हुलारा, शब्दी शब्द सुणाया। लक्ख चुरासी कर्म कुकर्म तेरा अन्त विचारा, धरत मात दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा दए निभाया। कलिजुग जीव कर्म कमाउणा जीव कमज़ाता, दोहागण नार इक्क अख्वाईआ। मिले नाम ना साची दाता, मन वैरागी ना कोई कराईआ। जूठा झूठा बद्धा नाता, विषे विकारा जाग खुल्हाईआ। भरम भुलाया ज़ात पाता, वरनां बरनां पई लड़ाईआ। मिले मेल ना इक्क इकांता, जोग अभ्यास सुन्न समाध कोटन कोट बैठे धूंणीआँ ताईआ। जप तप हठ सति रसना अराधा, राधा कृष्न ना रूप समाईआ। सतिगुर पूरा किसे ना लाधा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। कलिजुग तेरी सुणे अन्त फ़रयादा, संग मुहम्मद वेख वखाईआ। गुर गोबिन्दे देवे दादा, मंगी मंग बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। फल फुलवाड़ी गुर गोबिन्द ला, अन्तिम होए हैरानया। जंगल उजाड़ी डेरा ला, बिरहों सुणाए इक्क तरानया। साचे माही आप सुणा, आप आपणा भेव खुल्हानया। माछूवाड़े बैठा सथ्थर विछा, सूल सुराही खंजर पयालया। तेरी मन्नी इक्क रज़ा, पारब्रह्म पुरख अकालया। हथ्थीं बूटा दित्ता ला, करे कौण संभालया। कलिजुग जड़ रिहा उखड़ा, चले अन्धेरी कालया। फड़ फड़ सरसे लए रुड़ा, चमकौर वेख वखा ल्या। नीहां हेठ लए चणा, तेरा भाणा मीठा गा ल्या। तेग बहादर सेव कमा, धरत मात होए रखवाल्या। बंस सरबंसा तेरी चरनी भेंट चढ़ा, कलिजुग कटे जगत जंजालया। हौला भार रिहा करा, लक्ख चार बत्ती हज़ार आप करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे एह समझा ल्या। गुर गोबिन्द हरि जणा, आपणी दया कमाईआ। तेरा लहिणा तेरी झोली देवे पा, तेरा संग निभाईआ। मुहम्मद अन्तिम रोवे मारे धा, सदी चौधवी दए दुहाईआ। तेरी जोती दए जगा, जोती जोत जगाईआ। शब्दी डंका दए वजा, रणजीत नगारा इक्क वखाईआ। राउ रंकां दए उठा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका धाम दए बहा, आप आपणी खेल वरताईआ। कलिजुग जड़्ह दए उखड़ा, तेरे बाले भेट चढ़ाईआ। सतिजुग लड़ दए फड़ा, सति धर्म वड्डी वड्याईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, उच्चा डण्डा हथ्थ रखाईआ। सो पुरख निरँजण दया कमा, जग हिंसा मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द बूझ बुझाईआ। गुर गोबिन्दा कर परवान, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पुरख अबिनाशी तेरा चरन ध्यान, अट्ठे पहर रहे दिदारा। एका मंगे साचा दान, नाम जगत भण्डारा। ना कोई चिल्ला ना कोई तीर कमान, ना देखां शस्त्र धारा। तेरा खण्डा इक्क महान, हरि बख्श सच्चे दुआरा। तन गात्रा बणे म्यान, विच लटके अपर अपारा। दो जहानी

देवे माण, विछड़ ना जाए विच संसारा। ना कोई जाणे जीव जहान, नेत्र सके ना वेख पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर धुर दरबारा। धुर दरबारी साचा सज्जण, आदि जोत अकाली। गुर गोबिन्दे कराया एका मजन, खेले खेल जगत निराली। कलिजुग काल नगारे अन्तिम वज्जण, गुर पीर देवे ना कोई दलाली। सच धर्म सर्ब जन तजण, जूठ झूठ निमक हलाली। पुरख अबिनाशी आए पड़दे कज्जण, गुरमुखां फल लगाए काया डाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे देवे वर, तेरा बणे अन्तिम माली। गुर गोबिन्दे वर घर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। अन्तिम वेले जोत जगाया, हरि जोत करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहाया, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। उच्च महल्ल अटल सुहाया, इट्ट गारा ना कोई लगाईआ। बस्त्र शस्त्र इक्क पहनाया, वेखणहार आप अख्वाईआ। नाम जैकारा एका लाया, एका रिहा सुणाईआ। सतिजुग साची धार बंधाया, चार वरन करे कुड़माईआ। जोती शब्दी जोड़ जुड़ाया, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे देवे वर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि सुहञ्जणा, हरि हरि बणत बणाईआ। जगे जोत पुरख निरँजणा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा अन्तिम भज्जणा, निहकलंक डंक वजाईआ। सम्मत चौदां गुरमुखां मेला साचे सज्जणा, एका इक्की रिहा पाईआ। सम्मत पन्दरां जगत नगारा एका वज्जणा, सृष्ट सबाई रिहा उठाईआ। सम्मत सोलां राह भुल्ले हाजी हज्जना, मक्का काअबा दए दुहाईआ। सम्मत सतारां सर अमृत छड्ड छड्ड भज्जणा, ना दीसे कोई सहाईआ। सम्मत अठारां काल नगारा घर घर वज्जणा, प्रभ साचा दए रुढ़ाईआ। उन्नी उनीसा अल्ला राणी तेरी कोई ना रक्खे लज्जना, मुख घुँघट रो रो नीर वहाईआ। सम्मत बीसा एका गज्जणा, जगत जगदीसा आप अख्वाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना तख्त ताज सभ तजना, नौ खण्ड ना कोई दिसाईआ। सोहँ शब्द चलाए सच जहाजना, सृष्ट सबाई लए चढ़ाईआ। पुरख अगम्मा अगम्मड़ी मारे वाजना, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। प्रगट होए वड शाहो राजन राजना, शाहो भूप आप अख्वाईआ। सतिजुग साचा रचया काजना, साचा चन्द चढ़ाईआ। लेखा चुक्के मक्का काअबा हाजी हाजना, उम्मत रसूलां पन्ध मुकाईआ। ना कोई पढ़े वेद कतेबना, पुराण अठारां ना कोई गाईआ। अञ्जील कुरान ना कोई हिसाबना, तीस बतीस दए दुहाईआ। आपे जाणे शाह नवाबना, पुन सवाब ना कोई रखाईआ। जोती नूर ना झल्ले कोई ताबना, भारत खण्ड वज्जे वधाईआ। दिल्ली तख्त हरि बराजना, पंचम मुख ताज सीस टिकाईआ। सत रंग निशान रचाया जगत काजना, लक्खण करौच पुष्कर जम्बु सलमल सान कुशा दए वखाईआ। नौ खण्ड कराए एका जापना, कुलाखण्ड केत माल इलाबुत किं पुरख हरिवरख करे

रुशनाईआ। हरणयमह तोड़े तापना, भद्र रमक दए जणाईआ। भारत खण्ड प्रभ जोत करे वड प्रतापना, साचा मार्ग सुणाईआ। चौदां लोकां वेख वखावना, आप आपणा फेरा पाईआ। भूअ दूवह लोक देवे दानना, स्वर्ग महर करे कुड़माईआ। जप तप इक्क वैरागना, सति सति दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द जणाईआ। एका शब्द हरि जणा, अतल वितल सितल पावे सारा। तलातल महातल सहातल रसातल एका नाम रखाया। पाताल कराए जै जैकारया बाशक सेजा आप सुहा, सांगो पांग दए हुलारा। लछमी लहिणा झोली पा, चतुर्भुज खेल अपारा। नर नरायण भेख वटा, लोकमात लए अवतारा। सतिजुग साची जोत जगा, चार वरन सुहाए इक्क दुआरा। एका जाप दए जपा, एका नाम अधारा। सोहँ मेला मेल मिला, सो पुरख निरँजण पावे सारा। गुर चेला चेला गुर आप अखवा, इक्क सुहाए बंक दुआरा। जोत निरँजण तेला दए चढ़ा, सगन मनाए वारो वारा। गुरमुख साचे लए जगा, अनहद वज्जे ताल तलवाड़ा। अमृत आत्म सर दए नुहा, ना कोई दीसे देहुरा मन्दिर गुरुदुआरा। दीपक जोती दए जगा, निर्मल साचा कर उज्यारा। वरन गोती दए मिटा, एका शब्द कराए वणज वपारा। नेती धोती मस्तक तिलक ना सके कोई ला, खेले खेल हरि निरँकारा। साची सिख्या ब्रह्म विद्या आत्म ब्रह्म इक्क पढ़ा, मेल मिलाए पारब्रह्म निरँकारा। आत्म सेजा इक्क विछा, गुरमुख सुहाए तेरा बंक दुआरा। हौली हौली चरन टिका, खोल्हे बन्द किवाड़ा। आप आपणा लड़ फड़ा, मेल मिलाए कन्त भतारा। साची नारी लए प्रना, एका करे प्रेम प्यारा। आप आपणा विच समा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा दर दरवेशा चार लक्ख बत्ती हज़ार आपे दए मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड, लोआं पुरीआं गगन पतालां आपणी जै जै जै दए करा। शब्द भोग सच घर, गुरमुखां रिहा जगाईआ। सुरती शब्द लए वर, शब्द गुर करे कुड़माईआ। शब्द सुरती अग्गे धर, शब्दी राग सुणाईआ। सुरत शब्द लए फड़, शब्दी सुरत मिलाईआ। सुरत शब्द लग्गे लड़, शब्द सुरत हंढाईआ। शब्द गुर ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई आकार रखाईआ। अट्ठे पहर रिहा लड़, पंचम मेट मिटाईआ। नाम बीजे लाए जड़्ह, काया खेत इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन साचे घर, एका भोग वखाईआ। आत्म भोग साचा रस, गुरमुख विरले पाया। सतिगुर पूरा राह जाए दस्स, मन्त्र इक्क नाम दृढ़ाया। तीर निराला मारे कस, बजर कपाट तुड़ाया। हिरदे अन्दर जाणा वस, जिस जन रसन हरि रस रखाया। कोटन कोट प्रकाश करे रवि ससि, दीपक जोत जगाया। मिटे रैण अन्धेरी मस्स, जगत जंजाला तोड़ वखाया। पंच विकारा देवे झस्स, पंचम दए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका भोग धुर संजोग, साचा मेल मिलाया। साचा भोग हरि भगवाना, शब्दी मुख रखांयदा। हरिसंगत बन्ने साचा गाना, साची धीर धरांयदा। सोहँ देवे धुर फ़रमाना, धुरदरगाही आप सुहांयदा। धुन आत्मक सुणाए सच तराना, नाद अनादी धुन उपजांयदा। चरन धूढ़ सच्चा अशनाना, हरिजन साचे आप करांयदा। मिले मेल परम पुरख सुल्ताना, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भोगी भोग भुगांयदा। साचा भोग नाम वस्त, रसना हरि हरि चाख्या। मिले वस्त दस्त बदस्त, प्रगट होए सतिगुर साख्या। लेखे लाए कीट हस्त, जो जन चरन छुहाए मस्तक माथिआ। तन पहनाए एका बसत, शब्द चढ़ाए साचे राथिआ। अट्ठे पहर रक्खे मस्त, जगत विसूरा सगला लाथिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रस आपे चाख्या। आपणा रस आपे चाख, गुरमुखां आप वखांयदा। नेत्र लोचण नैण साचे पेख, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपे मेट मिटांयदा। लेखे लाए धारी केस, मुंड मुंडाए संग निभांयदा। आपे दाता जोधा सूर दस दस्मेस, दर दरवेश आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणा वेस, कलिजुग अन्त वटांयदा। प्रगट होए नर नरेश, निरगुण धार चलांयदा। किसे हथ्थ ना आए खूडी मोढ्ढे भूरी खेस, गुरमुखां पाली साची पालणा आप करांयदा। पंडत पांधे फिरदे रिखी केश, गवर्धन धारी दिस ना आंयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत कवण भूमका रहे हमेश, कवण दुआरे सीस झुकांयदा। सतिगुर साचे पारब्रह्म गुर सदा आदेश, हरि घर साचे आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत संग निभांयदा। हरिसंगत हरि साचा संग, अन्दर मन्दिर आप कराया। आपणा दरवाज़ा आपे लँघ, आपणा कुण्डा लाहया। आपणा आप वजाए मृदंग, सुनणेहार आप अख्वाया। आपणी धारा आपे चाढ़े गंग, नुहावणहारा आप हो जाया। आप आपणी भिच्छया आपे मंग, आप आपणी झोली पाया। आप आपणी सेज वेखे रंगील पलँघ, पावा चूल ना कोई बणाया। घर विच घर मन्दिर दित्ता टंग, बिन गुर पूरे दर ना कोई खुल्हाया। जूठे झूठे होए नंग, ना कोई पड़दा लाहया। हरिजन मंगे साची मंग, प्रभ पूरी इच्छया दए कराया। शब्द घोड़े कसे तंग, डूँघी भवरे रिहा दौड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम, जो जन आत्म आस रखाया। जो जन आया दरस प्यासा, नेत्र नैण उग्घाड़या। चरन कँवल बख्शे सच भरवासा, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। जन भगतां दुआरे दासी दासा, सेवक सेवादार आप अख्वा रिहा। जोत जगाए प्रगटाए पुरख अबिनाशा, घट घट वेख वखा रिहा। दो जहानी पावे आपणी रासा, गोपी काहन आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत हरि हरि देवे वर, हरि नामा झोली पा रिहा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन्त सन्त कन्त अन्त जीव जन्त भगत भगती लेखे ला रिहा।

हरिजन बेड़ा बन्नू, पार करांयदा। चोट लगाए काया तन, नाम नगारा इक्क वजांयदा। गढ़ हँकारी देवे भन्न, शब्द खण्डा इक्क रखांयदा। पंच विकारा देवे डन्न, जो जन रसना गांयदा। नाम ख़ज़ाना देवे धन, लुट्ट ना कोई लै जांयदा। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, अन्ध अन्धेरे मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग निभांयदा। आत्म गढ़ जगत हँकारा, पंज तत्त समाया । माया मोह संग प्यारा, रत्ती रत्त मुकाया। दर दर घर घर हाहाकारा, गुरमति ना कोई जणाया। गुरमुख विरले फल लाए हरि निरँकारा, एका तत्त बुझाया। एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका राग अलाया। एका नाम इक्क जैकारा, एका हरि गुण गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे दए लगाया। हरिजन साचा शब्द सवाली, मंगे दर द्वारया। फल लगाए काया डाली, बख्शे चरन प्यारया। दीपक जोती जगे निराली, मेट मिटाए अन्ध अँध्यारया। दर आया ना जाए खाली, देवणहार आप करतारया। सोहँ शब्द पहनाए साची माली, मन मनका आप फिरा ल्या। करे प्रकाश गगन पताली, गगन गगनंतर वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बूझ बुझा रिहा। आत्म बूझ शब्द ज्ञाना, सतिगुर वड्डी वड्याईआ। एका देवे धुर फ़रमाना, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजे नेत्र दरस महाना, त्रैगुण मूल चुकाईआ। चौथे घर पद निरबाना, परम पुरख समाईआ। पंचम मेला हरि भगवाना, पारब्रह्म सरनाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, आत्म अन्तर हरि लिव लाईआ। मिले मेल हरि गुण निधाना, अट्ठे पहर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। साची ओट चरन सहारा, जन भगतां आप दवांयदा। आप कराए पार किनारा, भव जल आप तरांयदा। आपे देवे नाम सहारा, आपे मार्ग लांयदा। आपे रंग रंगे करतारा, रंगणहार आप अख्वांयदा। आपे मंग मंगे दरबारा, आपे भिच्छया पांयदा। इक्क अकल्ला नर निरँकारा, निरगुण रूप समांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, आपणी बणत बणांयदा। साधां सन्तां पावे सारा, जन भगतां संग निभांयदा। आप आपणा करे जैकारा, जै जै कार आप करांयदा। शब्द अगम्मी साचा नाअरा, ना कोई लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला मेल मिलांयदा। हरिजन मेला आदि जुगादी, आपणा आप कराया। खोजे खोज शब्द ब्रह्मादी, लोआं पुरीआं फेरा पाया। शब्द जणाई बोध अगाधी, धुर

फ़रमाणा इक्क रखाया। जुग मेला जग माधव माधी, हरिजन आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया गढ़ तुड़ाया। काया गढ़ उच्च महल्ला, दिस किसे ना आया। सतिगुर बैठा इक्क अकल्ला, थिर घर डेरा लाया। आपे होए अछल अछल्ला, अछल अछल्ल कराया। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन आपणा मल्ला, आप आपणा धाम सुहाया। आपणा दीपक आपे बल्ला, आप आपणी जोत जगाया। जोती शब्दी आपे रल्ला, शब्दी शब्द अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाया। हरिजन साचे आप जगा, आत्म धुन वजाईआ। फड़ फड़ बांहों राहे पा, एका गुण वखाईआ। एका नाम दए जपा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। काया मन्दिर डेरा ला, सच दुआरा लए खुल्हाईआ। पौड़े पौड़े दए चढ़ा, अग्गे पिछे दए सुहाईआ। ब्रह्मण गौड़े मेल मिला, पूत सपूते वड वड्याईआ। साचे घोड़े आप चढ़ा, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे होए सहाईआ। आए मंगण द्वार, हरि बनवारया। पारब्रह्म अबिनाशा, जिस जन बख्शे चरन प्यारया। होए दासी दासा, खोल्हे बन्द कवाड़या। साचे मण्डल पावे रासा, नेड़ ना आए पंजम धाड़या। वेखे खेल पृथ्मी आकाशा, जोत जगाए बहत्तर नाड़या। नाम जपाए रसन स्वासा, साचे घोड़े आपे चाढ़या। गुरमुख साचे बलि बलि जासा, जिस जन सोहे बंक द्वारया। जिस मिल्या हरि सर्ब गुण तासा, बंक दुआरा साचा पौड़ा, हरि आपणा आप लगाया। ना कोई जाणे लभ्मा चौड़ा, दिस किसे ना आया। एका फल रक्खे मिट्ठा ना कौड़ा, रस रसना विच समाया। बंक दुआरे सतिगुर पूरा दया कमा, चरन ध्यान रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। बंक दुआरा सच टिकाणा, गुरमुख विरला पांयदा। जिस जन देवे नाम बबाणा, आपे उप्पर चढ़ांयदा। भेव ना पाए राजा राणा, शाह सुल्तान ना कोई वखांयदा। गुरमुख विरले देवे माणा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। सो जन होए चतुर सुघड़ स्याणा, जिस जन आपणा गाणा आप सुणांयदा। बन्द दुआरा दर सुहाणा, साचा दर आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पड़दा पांयदा। आपे बोले बोल, अनहद गाणया। वज्जे सच मृदंगा, ढोल श्री भगवानया। अधविचकारी आपे टंगा, ना जाणे जीव निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल आप महानया। कक्का कर्म विचार, कल वरतांयदा। गुरमुख साजन कर प्यार, बूझ बुझांयदा। देवे दरस अपार, दोख मिटांयदा। सहिसा रोग निवार, सुख उपजांयदा। हउमे हँगता मार, संग रखांयदा। भुक्खा नंगा दर दरबार, फेरी पांयदा। तीजा करे बन्द किवाड़, कुण्डा लांहयदा। आप खोल्हे खोलणहार, आप सुहांयदा। हरिजन साचे वेख विचार, सुरत दिवांयदा। सुरती शब्द प्यार, जोड़ जुड़ांयदा। शब्द

गुर आप करतार, कर किरपा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंक सुहांयदा। दद्दा दरवाज़ा हरि खुल्हाया। खेले खेल ग़रीब निवाज़ा, खेल्हणहार आप अख्वाया। आपे रचया आपणा काजा, आपे आपणी कार कमाया। आपे मारनहारा वाजा, आपे गूढ़ी नींद सवाया। आपे रक्खणहारा लाजा, आपे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। ऐड़ा अक्ख उग्घाड़, दया कमांयदा। दरस दिखाए साचा लाड़, रूप वटांयदा। करे प्रकाश नाड़ नाड़, अन्ध मिटांयदा। साचे पौड़े देवे चाढ़, पन्ध मुकांयदा। धर्म रखाए इक्क अखाड़, भरम गवांयदा। जगत तृष्ना देवे साड़, कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा थान सुहांयदा। रारा राग अनाद, इक्क अल्हाया। सुणे सुणाए विच ब्रह्मादि, पारब्रह्म अख्वाया। आपे देवणहारा दाद, जन भगतां झोली पाया। दो जहान सुणे फ़रयाद, हरिजन साचे लए तराया। शब्द जणाई बोध अगाध, बोध अगाध आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेख द्वार, आपणा बंक सुहाईआ। आपे होए पहरेदार, राउ रंक आप अख्वाईआ। आपे होए ख़बरदार, आप आपणी सेव कमाईआ। आपे बणया मीत मुरार, आप आपणा संग निभाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, काया चोली रंग रंगाईआ। अन्दर मन्दिर वेख घर बार, घर बारा दए सुहाईआ। गुरसिख तेरा बंक द्वार, द्वार बंका आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण रैण दिवस रिहा सेव कमाईआ। नगर खेड़ा सच गृह, हरि काया आप वसाया। अट्ठे पहर अन्दर बहि, आप आपणा मुख छुपाया। साची सेजा सोया रहे, आप आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेड़ा दए सुहाया। साचा खेड़ा काया वतन, वतन सिंघ हरि पाया। नाम अमोलक साचा रत्न प्रभ साचे झोली पाया। साध सन्त कर कर थक्के जतन, घर साचा दिस ना आया। कोटन कोट बैठे नौ दुआरे मल्ली पतन, वंझ महाना ना कोई लगाया। कोटन कोट आस रहे तक्कण, उच्चे टिल्ले आसण लाया। कोटी कोट जंगल जूह उजाड़ बैठे ढक्कन, काया ढक्क ना कोई पार कराया। कोटन कोट बैठे कुली कक्खन, काया कुला ना फोल फोलाया। कोटन कोट पूजा पाठ कर कर थक्कन, परम पुरख दिस ना आया। कोटन कोट फिरदे हाजी हज्जन, साचा हज्ज ना कोई कराया। कोटन कोट घर बार तजण, साचा दर दिस ना आया। कोटन कोटी गुरदुआरे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले बहि बहि सजण, नेत्र दरस कोई ना पाया। कोटन कोट तीर्थ जल पी पी रज्जण, काया तृप्त ना कोई कराया। कोटन कोट विच सथ्थ नच्चण, काहना कृष्ना दिस ना आया। कोटन कोट भोग लगौण मक्खण, मकंद मनोहर लक्खमी नरायण रूप ना कोई वखाया।

कलिजुग जीवां भाण्डे होए सक्खण, नाम वस्त ना कोई दिसाया। जूठ झूठ मारन झक्खण, निज रस कोई ना पाया। कलिजुग अन्तिम पारब्रह्म अबिनाशी करता जन भगतां लज्जया आया रक्खण, जोती जामा भेख वटाया। मिल्या मेल हरि साचे सज्जण, विछड़ कदे ना जाया। अनहद ताल नगारे वज्जण, धुन आपणे हथ्थ रखाया। चरन धूढ़ कराया साचा मजन, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेड़ा रिहा वसाया। काया खेड़ा साचा मन्दिर, हरि जोत करे रुशनाईआ। मेल मिलाए अन्दरे अन्दर, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। आपे तोड़णहारा जन्दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भाग लगाए डूँघी कन्दर, आप आपणी दया कमाईआ। किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिल्ले बैठे धूंणीआँ ताईआ। मनमुख जीव भौदे बन्दर, सुरत सवाणी होई हलकाईआ। माया ममता आत्म अन्धड़, अन्ध अज्ञान ना कोई गंवाईआ। मदिरा मासी पापी गन्दड़, हरि रस रसन कोए ना लाईआ। जगत विकारा पया धंधड़, झूठे धन्दे रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। काया नगर सच अस्थाना, हरि साचे आप सुहाया। दीपक जोती जगे महाना, निर्मल नूर कराया। शब्द उपजाए सच तराना, साचा ताल सुणाया। आत्म अन्तर एका गाणा, एका राग अल्हाया। गुरमुख साचा कर परवाना, लहिणा लहिणे झोली पाया। मिल्या मेल श्री भगवाना, घर साचा इक्क सुहाया। आपे देवे जिया दाना, दाना बीना आप अख्वाया। धर्म दुआरे देवे माणा, जगत अभिमाना तोड़ तुड़ाया। सुरत सवाणी बन्न्हे गाना, गुर शब्दी शब्द लए प्रनाया। साची सिख्या मंगल गाणा, साचा थान सुहाया। आत्म सेजा गुण निधाना, गुणवन्ता आप अख्वाया। गुरमुख पाया पद निरबाना, परम पुरख समाया। आवण जावण चुक्के काणा, लेखा लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत द्वार बण भिखार मंगे भिख्या, पूरी करे इच्छया, देवे नाम सिख्या, सोहँ शब्द जै जैकारया। जै जैकार जगत गुर दाता, आपणी आप करांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, चरन चरनोदक मुख छुहांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, सच सुच्च ज्ञान दृढ़ांयदा। आपे होए पिता माता, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। भेव चुकाए जाता पाता, ऊँचां नीचां आप समांयदा। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ाता, वरन बरन ना कोई रखांयदा। मिल्या मेल इक्क अकांता, एका रंग रंगांयदा। आत्म अमृत बूंद स्वांता, सीतल धार वहांयदा। अट्ठे पहर रहे प्रभाता, आप आपणी दया कमांयदा। आदि जुगादी शब्द गुर गुर शब्दी पुच्छे वाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे लांयदा। तन शृंगार बस्त्र गहिणा, गुरमुख आप कराया। दरस अपार नेत्र नैणां, वर घर साचा पाया। एका सेजा एका धाम अकट्ठे

रहिणा, एका राम मिलाया। एका मन्दिर एका घर एका नर एका दर दुआरे बहिणा, एका होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे काया मन्दिर, साचा घर घर करे रुशनाया। घर दीपक घर प्रकाश, घर घर जोत जगाईआ। घर पुरख घर अबिनाश, घर घर वज्जे वधाईआ। घर भूप घर शाहो शाबाश, घर तख्त ताज सुहाईआ। घर रूप घर गुणतास, घर सति सरूप अख्वाईआ। घर मण्डल घर रास, घर घर वज्जे वधाईआ। घर पृथ्मी घर आकाश, घर अप तेज़ वाए घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा घर, घर करे रुशनाईआ। घर द्वार घर मन्दिर, घर घर होए जैकारा। घर हवन घर पवन, घर दीप घर घृत घर घर करे उज्यारा। घर अमृत घर मेघ सवन, घर साची धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा दर द्वार आप निरँकारा।

* ६ माघ २०१४ बिक्रमी ठाणेदार शिवदेव सिँघ दे घर पिण्ड उस्मान शहीद तहिसील दसूहा ज़िला हुशिआरपुर *

पुरख अगम्मड़ा अगम्म, अगम्म समाया। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, पंज तत्त ना नत्त बंधाया। पवण स्वास ना कोई दम, रसना जिह्वा ना कोई रखाया। आपे जाणे आपणा नाम, आप आपणा नाउँ धराया। आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणी कार कमाया। ना मरे ना पए जम्म, मात पित ना कोई रखाया। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, आलस निन्दरा विच ना आया। आपे वस्सया धाम अगम्म, अगम्मड़ा रूप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा ल्ए प्रगटाए, आप आपणी जोत जगाया। आप आपणा नाउँ धरा, आप आपणा नाउँ अल्हाईआ। आप आपणा थाउँ सुहा, थान सुहावा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया बेपरवाहीआ। आप आपणा बण मलाह, आपणा आप उपाया। आप आपणा जाणे राह, आप आपणे धन्दे लाया। आप आपणा जाणे नाँ, आप आपणे विच समाया। आप आपणी रक्खे छाँ, आप आपणा छप्पर छाया। आप आपणा सुहाए थाँ, थिर घर नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वटाया। आप आपणा रंग रंगा, आपणी कल धारीआ। आप आपणा संग रखा, आप आपणी पैज संवारीआ। आप आपणा बंक सुहा, आप आपणा होए द्वारीआ। आप आपणा डंक वजा, आपे सुणे सुनणेहारीआ। आपे राउ रंक अख्वा, शाहो भूप आप अख्वा रिहा। आपे जोती दीपक जगा, आपे निर्मल नूर करे उज्यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कारीआ। आपणी कार आप कर, आपणा कर्म कमाया। जोती खेल कर महान, महिमा रूप समाया। आप आपणा देवे दान, आप आपणी झोली

पाया। आप आपणा कर अशनान, आप आपणे तीर्थ नहाया। आप आपणा देवे माण, आप आपणा संग रखाया। आप आपणी जाणे आण, आप आपणी रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। आपे खेले खेल खिलंता, निरगुण हरि निरँकारा। आप आपणा दर सुहंता, आप सुहाए महल्ल मुनारा। आप आपणा नाद वजन्ता, आपे होए वजावणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी पावे सारा। आप आपणी पावे सार, आदि पुरख अबिनाशा। आप आपणा महल्ल उसार, आपे खेले खेल तमाशा। सच सिँघासण कर त्यार, आपे होए दासी दासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए शाहो शबासा। शाहो शबास हरि सुल्ताना, एका एक रखाया। सच सिँघासण हरि मेहरवाना, जोती आसण लाया। पुरख अबिनाशी बन्ने गाना, साचा सगन मनाया। ना कोई चिल्ला ना तीर कमाना, ना कोई शस्त्र संग रखाया। ना कोई जोधा सूरबीर बलीवाना, केसाधारी दिस ना आया। ना कोई नानक गोबिन्द गाए तेरा इक्क तराना, ना कोई राग अलाया। पारब्रह्म तेरा सच निशाना, तेरा तेरे विच समाया। आदि पुरख जोत महाना, आदि शक्त आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे आसण डेरा लाया। आपणे आसण डेरा ला, हरि आपणी कल वरताईआ। आप आपणा वेख वखा, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। दूसर कोई दिसे ना, ना कोई रचन रचाईआ। जोती नूर अगम्म अथाह, बेपरवाह आप अख्वाईआ। आप आपणा बण मलाह, आप आपणा बेड़ा रिहा चलाईआ। आप आपणी दए सलाह, आप आपणा मता पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर बैठा जोत जगाईआ। थिर घर साचा सच दुआरा, हरि साचे आप सुहाया। ना कोई दीसे चार दीवारा, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। ना कोई करे बन्द किवाड़ा, ना कोई मुख खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा दर सुहा, आपणी जोत जगाईआ। आप आपणी अलक्ख जगा, अलक्ख निरँजण आप अख्वाईआ। आप आपणा मजन करा, आप आपणा धाम सुहाईआ। आप आपणा सज्जण अख्वा, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एकँकारा, पारब्रह्म लै अवतारा, पूरन जोत करे रुशनाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, परम पुरख अख्वाया। आदि अन्त ना कदे विनासा, ना मरे ना जाया। सर्ब गुणां गुण आपे तासा, गुणवन्ता नाउँ रखाया। आप आपणा दे भरवासा, आप आपणी धीर धराया। आप आपणे घर रक्खया वासा, आप आपणा वेख वखाया। आपे भरया आपणा कासा, आपणी भिच्छया आपे पाया। आपे मण्डल पाए रासा, वेखणहार आप अख्वाया। आप आपणा होए दासी दासा, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

११६
०७

किरपा कर, आप आपणा घर वसाया। घर वसाए आदि निरँजण, आपणी जोत जगाईआ। आपणे नेत्र आपणा पाया अंजन, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा होया दर्द दु:ख भय भंजन, आप आपणा संग रखाईआ। आप आपणा पड़दा आया कज्जण, आप आपणा मुख लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे सेज विछाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि साचे आप उसारया। आपे वस्सया इक्क अकल्ला, ना दूसर नाउँ धराया। ना कोई दीसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, जल थल ना कोई किनारया। ना कोई पृथ्मी आकाश, ना कोए सोहे बंक द्वारया। ना कोई विष्नूं वंसी रक्खे आस, ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया ना कोई पसारया। खेले खेल हरि अबिनाश, आपे सोहे बंक द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगाए जोत इक्क निरंकारया। इक्क अकल्ला एकँकारा, एका रंग समाया। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणी धार चलाया। आप आपणा कर जैकारा, आप आपणा नाअरा लाया। आप आपणा वेख दुआरा, आपे दए सुहाया। थिर घर तेरा धाम अपारा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सुणे पुकारा। आप आपणी कर पुकार, हरि आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा कर उज्यार, आप आपणी करे रुशनाईआ। आप आपणा मीत मुरार, आप आपणा संग रखाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी सेज हंढाईआ। आप आपणी बणया नार, आपे कन्त अख्वाईआ। आपे पाए साचे हार, सच सुगंधता आप वखाईआ। आप आपणा करे अंगीकार, आप आपणे अंग लगाईआ। सच पलँघी बैठ निरँकार, आप आपणा मृदंग वजाईआ। ना कोई दिसे मरदाने तेरी सतार, ना कोई जन्म दवाईआ। आदि पुरख करनी करता करतार, करनहार आप हो जाईआ। आपे बैठ सच्चे दरबार, सच सुच्च रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आसण रिहा सुहाईआ। हरि हरि आसण सोभावन्त, महिमा गणी ना जाया। जगे जोत इक्क भगवन्त, नूरो नूर समाया। ना कोई साध ना कोई सन्त, ना कोई जीव ना कोई जन्त, गुर पीर अवतार ना कोई दिसाया। आपे नारी आपे कन्त, थिर घर बैठ सेज वछाया। आप हंढाए आपणी रुत्त बसन्त, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। आपे आपणा करया मंत, आप आपणा नाम दृढ़ाया। आप आपणी महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोई दिसाया। आपे आदि आपे अन्त, आदि जुगादि आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर बैठा आसण लाया। घर महल्ला सच टिकाणा, हरि साचे जोत जगाईआ। ना कोई पवन ना कोई मसाणा, ना कोई राग धुन उपजाईआ। ना कोई राग ना कोई गाणा, ना कोई तार सतार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप आप अख्वाईआ। निरगुण रूप हरि निरवैरा, एका रंग समाया।

आप आपणी करे मेहरा, मेहरवान आप अख्वाया। आपे गुरु आपे चेरा, चेरा गुर आप अख्वाया। आपे संझ आप सवेरा, दिवस रैण आप हो जाया। आपणा करे आप निबेड़ा, ना कोई सालस होर रखाया। आप वसाए आपणा खेड़ा, घर आपणे आसण लाया। आपे जाणे आपणा गेड़ा, भेव कोई ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा सच अटारी, हरि साची जोत जगाईआ। खेले खेल अगम्म अपारी, दिस किसे ना आईआ। आप आपणी पावे सारी, आप आपणा भेव खुलाईआ। ना कोई देहिरा मन्दिर मड्ड गुर द्वारी, शिवदवाला ना कोई रखाईआ। ऐनलहक्क ना रिहा कोई पुकारी, ना कोई सदा लगाईआ। आपणे घर वस्सया हरि निरँकारी, आदि पुरख आप अख्वाईआ। ना कोई ब्रह्मा वेता चार वेद रहे लिखारी, वेद व्यासा पुराण अठारां ना कोई लिखाईआ। पारब्रह्म प्रभ वड सिक्दारी, खेले खेलणहार आप अख्वाईआ। आप आपणी करे जोत उज्यारी, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर सुहाईआ। पूर्ब लहिणा वेख, गुरमुख जगाया। आपे लिखणहारा लेख, आपे लए मिटाया। आपे दाता दस दस्मेस, दर दरवेश आप अख्वाया। आपे होए नर नरेश, नर निरँकारा आप अख्वाया। आपे होए गवर्धन धारी रिखी केस, काहना कृष्ना आप अख्वाया। आपे राम रमईआ करे आदेस, राम रामा विच समाया। आपे पारब्रह्म प्रभ वस्सया आपणे देस, आपे वेस वटाया। आपे सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शिव शंकर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचे सच ज्ञाना, एका नाम दृढ़ाया। आपे बख्शे चरन ध्याना, इक्क बिबान चढ़ाया। आत्म अन्तर धुर फ़रमाणा, धुन अनादी आप सुणाया। इक्क सुणाए साचा गाणा, अनहद ताल वजाया। हउमे हँगता रोग गंवाना, जिस जन चरनी सीस झुकाया। एका मंगया साचा दाना, हरि नामा झोली पाया। दो जहानी मिले माणा, आवण जावण फंद कटाया। राए धर्म मुख छुपाना, चित्रगुप्त ना लेख वखाया। अन्तिम मेला श्री भगवाना, हरि साचे मेल मिलाया। आवण जावण चुक्की काणा, चरन धूढ़ अशनान कराया। थिर घर वखाए सच मकाना, गुरमुख साचे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैणां दरस दिखाया। नेत्र नैणां दर्शन कर, आत्म तृखा बुझाईआ। एका देवणहारा वर, ब्रह्मण्ड करे कुड़माईआ। इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। गुरमुख साचा साची तरनी गया तर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर पूरा शब्द भण्डारा देवे भर, तोट रहे ना राईआ। आपे घाड़न रिहा घड़, आपे साजन साज अख्वाईआ। आपे अन्दर बैठा वड़, आपे कुण्डा लाहीआ। उच्च महल्ले आपे चढ़, आपणी जोत जगाईआ। सन्त सहेले लए फड़, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। ना कोई

सीस ना कोई धड़, ना कोई कोट किला गढ़ गुरमुख साचे तेरे अन्दर बैठा आसण लाईआ। एका अक्खर जाणा पढ़, पंच विकारा जाए सड़, जगे जोत बहत्तर नड़, गुर पूरा करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे संग निभाईआ। हरिजन साचे साचा मेला, हरि आपणा आप कराया। आपे होए सज्जण सुहेला, सगला संग निभाया। आपे वसे रंग नवेला, आपे हर घट आसण लाया। आपे गुरु गुर चेला, गुर चेला रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म हरिजन साचे वेख वखाया। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, जिस जन साची ओट रखाईआ। शब्द जणाई अकथना अकथ, अगाध बोध अख्वाईआ। सोहँ शब्द चढ़ाए साचे रथ, पारब्रह्म रथ रथवाहीआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, घर साचे वज्जे वधाईआ। सगल विसूरे गए लथ्थ, सहिसा रोग रहिण ना पाईआ। गुर शब्द डोरी पंचम पाए नथ्थ, पंचां लए जगाईआ। आत्म अन्दर देवे वथ्थ, गुर वड वड्डी वड्याईआ। जो बणया सो जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। गुरचरन दुआरा तीर्थ अठसठ, साचा मजन इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब कर्मा दए मिटाईआ। पिछला लेखा जाए चुक्क, हरिजन आए चरन दुआरा। आप मिटाए तृष्ना भुक्ख, अमृत आत्म देवे नाम अधारा। सुफल कराए मात कुक्ख, जो जन मंगे सच दुआरा। उलटा गर्भ वास ना होए रुक्ख, दो जहानी पार किनारा। उज्जल करे मात मुक्ख, गुर पूरा मात अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए वर, बख्शे नाम सच्चा भण्डारा। आपे वेखे सगल पसारा, ब्रह्मादी खोज खोजाईआ। अकल कला कल आपे धारा, आदि जुगादी आप अख्वाईआ। निहकलंक नरायण नर अवतारा, प्रगट होए विच संसारा, कलिजुग कूड़ा कूड़ी रास, कूड़ी धार चलाईआ। अन्तिम वेले होए नास, प्रभ साचा आप कराईआ। प्रगट होए सर्ब गुणतास, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन पतालां फेरा पाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर रक्खे वास, निज घर बैठा आसण लाईआ। रसना जिह्वा इक्क स्वास, मणीआ मंत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। निर्मल जोत जगत उजागर, हरि साचे आप कराईआ। नौ खण्ड वेखे डूँघा सागर, लक्ख चुरासी आप हिलाईआ। हर घट वस्सया काया गागर, आप आपणा मुख छुपाईआ। गुरमुख होए नाम सुदागर, एका वणज सच्चा कराईआ। मिले नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण इकांत इकागर, एका लिव जोत लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वरन गोत ना कोई रखाईआ। पंचम शब्द पंचम ज्ञाना,

पंचम वज्जे वधाईआ। पंचम रागी नादी गाए गाना, पंचम तार हिलाईआ। पंचम करे आप पछाना, पंचम बूझ बुझाईआ। पंचम देवे नाम निधाना, पंचम लेख चुकाईआ। पंचम पाया पद निरबाना, पंचम दर सुहाईआ। पंचम मेल श्री भगवाना, पंचम दए मिटाईआ। पंचम अक्खर कर प्रधाना, पंचम मोह चुकाईआ। पंचम वखाए इक्क निशाना, पंचम आप झुलाईआ। पंचम देवे धर्म बिबाना, पंचम लए चढ़ाईआ। पंचम चुकाए अन्तिम काना, पंचम रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सावण सुरती इक्क ज्ञाना, मिल्या मेल श्री भगवाना, अनन्द अनन्द अनन्द मंगल गाईआ। सावण सुरती हरि प्रना, साची सेज सुहाईआ। अकाल मूर्ति दरस दिखा, अकल कला वखाईआ। नाद तूरती इक्क वजा, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। आप आपणा भेव खुल्हाए, पारब्रह्म अबिनाशा। सतिगुर पूरे विच समाए, आपे रक्खणहारा वासा। आप आपणे रंग रंगाए, आपे खेले खेल तमाशा। आप आपणा संग जणाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बलि बलि जासा। सावण सईआ साचा पा, नईआ नाम चलाईआ। एका लेखा रिहा लिखा, धुर फ़रमाण इक्क जणाईआ। नेत्र नैण ना सके कोई वखा, दिस किसे ना आईआ। आपणा भेख आप वटा, प्रभ करे जोत रुशनाईआ। साचा डंका दए वजा, सतिगुर पूरा आप अख्वाईआ। पुरी घनका धाम सुहा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। लल्ला लिपत ना राईआ। कक्का कूड़ कुड़यारा दए मिटा, साचा मार्ग एका लाईआ। ऊँचां नीचां एका धाम बहा, एका बख्शे सच सरनाईआ। सतिगुर सावण लेखा गया लिखा, चार सौ इकाठ पन्ना बूझ बुझाईआ। चौथी सत्तरे वेखणा फोल फुला, सस्से उप्पर होड़ा रिहा टिकाईआ। हाहे उत्ते टिप्पी ला, पंजवीं धारा आप चलाईआ। जन भगतां अन्तिम होए सहा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणा लेखा आपे लए गणा, दूसर भेव ना जाणे राईआ। हथ्थीं टिक्का ना दित्ता किसे ला, बन्द किवाड़ ना कोई खुल्हाईआ। मिल्या मेल ना बेपरवाह, गुर पूरा दिस ना आईआ। आप आपणा लहिणा झोली पा, आपणी हथ्थीं गया लिखाईआ। गुर शब्द प्रगट होए जगत मलाह, एका बेड़ा दए चलाईआ। नगर खेड़े देवे ढाह, उच्चे मन्दिर रहिण ना पाईआ। गुरमुख साजन लए मिला, आत्म जोती जोत जगाईआ। साचा दर दए वखा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। दर्द दु:ख भय भंजन आप अख्वा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। चार वरन राउ रंक ऊँच नीच राज राजान शाह सुल्तान एका थाँ दए बहा, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। गुर मन्त्र नाम साचा दए जपा, सतिजुग साची बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे वेखणहारा आपे लए कढाईआ।

पुत्त पोतरा बंस परिवारा, माया बंधन पाया। पहला मंगो नाम अधारा, दूजे दर झोली पाया। तीजे वारी भरे भण्डारा, पूत सपूता दए उपाया। खाली दिसे ना हरि दुआरा, तोट रहे ना राया। लेखा लिखणहार आप करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाया। मंगो नाम दान, मिले मेल भगवाना। झोली बख्शे साचा बाल, गुणवन्ता गुण निधाना। करे कराए प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे जिया दाना। जिया दान जो जन लोड़े, पूरन आस कराईआ। दर आया प्रभ कदे ना मोड़े, जो जन बैठे सीस झुकाईआ। वेखे परखे मिट्ठे कौड़े, वेखणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नाम भण्डारा साचा भरया, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। दर्शन कर कर हरिजन तरया, हरि हरि रंग रंगाईआ। आत्म नुहाउणा साचे सरया, दुरमति मैल गंवाईआ। गुर मन्त्र शब्द साचा पढ़या, साचे घर वज्जे वधाईआ। पंजां बहि बहि आपे लड़या, आपे करे लड़ाईआ। आपे तोड़नहारा हँकारी गढ़या, गढ़ हँकारी रहिण ना पाईआ। गुरमुख साजण पौड़े चढ़या, गुर पूरा होए सहाईआ। कलिजुग माया अग्नी विच ना सड़या, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। अन्तिम वेले पारब्रह्म प्रभ बांहों आपे फड़या, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सिँघ शिव देव साचा घाड़न घड़या, एका दूजा भउ चुकाईआ। आप बंधाए आपणे लड़या, सतिगुर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। किरपा करे नाम गुणवन्ता, आत्म वज्जे वधाईआ। हरिजन मेला साचे कन्ता, कन्त कन्तूहल हंढाईआ। नाम रंगण चाढ़े इक्क बसन्ता, काया चोली रंग रंगाईआ। साचा थान आप सुहंता, साचे दर करे रुशनाईआ। मिले वड्याई विच जीव जन्ता, देवे दरस हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन इच्छया आप कराईआ। नानक निरगुण रूप, निरगुण समाया। आपे वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाया। जिस जन जाए आपे तुठ्ठ, देवे दरस आप रघुराया। लुकया रहिण ना देवे गुठ्ठ, शब्दी शब्द लए उपाया। जो जन बैठे रुठ्ठ, वेले अन्तिम लए मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बूझ बुझाया। नानक गुर नाम निधाना, नामे नाम समाया। रसना गाया हरि भगवाना, हरि हरि रूप अख्वाया। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, आत्म ब्रह्म जणाया। एका दूजा भउ मिटाना, तीजा नैण खुल्ह़ाया। चौथा घर हरि सुहाना, हरिजन मेल मिलाया। रसना गाउणा साचा गाणा, नानक रसन अल्ह़ाया। सो पुरख निरजंण वड मेहरवाना, मेहरवान आप अख्वाया। आत्म दरसी देवे दाना, दरस अमोघ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोत करे रुशनाया। सोहँ शब्द रसना गाउणा, नानक वज्जे वधाईआ। दसवें दिन दर्शन

पाउणा, दस्म दुआर खुल्हाईआ। आलस निन्दरा विच ना सौणा माया मोह चुकाईआ। एका जाप जपत जपत सुख पाउणा, सो पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। भेखा धारी भेख बवना, अकल कल अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होए दरस दिखाए, नानक चोला तन पहनाईआ। नानक चोला पंज तत्त, गुर शब्द हंढाया। आपे वसया नाड़ी रत्त, हड्ड मास जोड़ जुड़ाया। आपे देवे धीरज जत, सति सन्तोख आप रखाया। आप लपेटे साचे पट, नाम दोशाला उप्पर पाया। आपे वस्सया घट घट, मन्दिर डेरा लाया। गढ़ हँकारी जाए ढठ्ठ, गुर पूरा रिहा ढाहया। माया अग्नी होए मट्ठ, पंच विकारा लम्बू दए बुझाया। हरि द्वार रक्खणा एका हठ, एका गुण गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे नठ्ठ नठ्ठ, भेखाधारी भेख वटाया।

हरि शब्द अपार, गुर समाया। गुर शब्द अधार, गुरमुख लए जगाया। गुरमुख पावे सार, हउमे रोग गंवाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कूड़ा पड़दा पाया। प्रगट होया हरि करतार, करता पुरख अख्वाया। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाया। खेले खेल विच संसार, जोती जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए सहाया। हरि का शब्द वड बलवाना, गुर पूरे होए सहाया। गुर पूरा नौजवाना, गुरमुख साचे लए तराया। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, इक्क ध्यान रखाया। मनमुख भुल्ले जीव नादाना, झूठे धन्दे लाया। प्रगट होए श्री भगवाना, कलिजुग गन्दे दए मुकाया। खेले खेल दो जहाना, छन्द सुहागी इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपजाया। हरि का शब्द साची दात, गुर पूरे झोली पाईआ। गुर पूरा बन्ने चरन नात, गुरमुख साचे जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख साचे आत्म अन्तर वेखे मार झात, घर बैठा बेपरवाहीआ। मनमुख जीवां होए अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। भरमे भुल्ले ज़ात पात, वरन बरन पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार सृष्ट सबाईआ। हरि का शब्द शब्द गुर देवा, गुर पूरे मेल मिलाया। गुर पूरे बख्शे साची सेवा, सेवक सेवा मुख रखाया। हरिजन गाए रसना जिह्वा, चिन्ता दुःख मिटाया। मनमुख भुलाए ना कोए लाए थेवा, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाया। प्रगट होए अलक्ख अभेवा, अलक्ख निरँजण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाया। हरि का शब्द सदा अबिनाशा, गुर पूरे संग निभाया। गुर पूरा होए सर्ब गुणतासा, गुरमुख साचे लए तराया। गुरमुख साचे बलि बलि जासा, हरि हिरदे विच समाया। मनमुख वेखे कलिजुग कूड़ी रासा, कूड़ी क्रिया

तन प्रनाया। प्रगट होए शाहो शबाशा, शाह सुल्तान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा आप करे रुशनाया। हरि का शब्द अलक्ख अभेवा, गुर सतिगुर झोली पांयदा। सतिगुर पूरा वड देवी देवा, गुरमुख विरला मात मनांयदा। गुरमुख ना बिरथा जाए सेवा, जो जन सच कमांयदा। मनमुख भुलाए नेत्र नैण छुपाए, भेखा धारी भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नूर दरसांयदा। हरि का शब्द सच तराना, गुर पूरे आप सुणाया। गुर पूरा होए सद मेहरवाना, गुरमुखां मेल मिलाया। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, चातृक रूप अख्वाया। मनमुख भुल्ले जीव निधाना, हरि का नाम ना रसना गाया। कलिजुग अन्तिम करे पछाना, निहकलंकी जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया। हरि का शब्द सच सलाह, गुर पूरे आप दवाईआ। गुर पूरा बणे जगत मलाह, गुरसिख बेड़ा बन्ने लाईआ। गुरमुख मेला साचा शाह, साचा वणज कराईआ। मनमुखां ना मिले कोई थाँ, दर घर साचे दए सजाईआ। प्रगट हो आप जपाए आपणा नाँ, कलिजुग अन्त वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरजंण आपणी अलक्ख जगाईआ। हरि का शब्द दाता सूरबीर, सतिगुर संग निभाया। सतिगुर शब्द साचा तीर, गुरमुख हिरदे आप लगाया। गुरमुख बजर कपाटी जाए चीर, इक्क निशाना वेख वखाया। मनमुखां ना बन्न्हे कोई धीर, धीरज धीर ना कोई रखाया। प्रगट होए हरि साजन साचा शाहो फकीर, हकीर हकीरां विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाया। हरि का शब्द सतिगुर ओट, हरि साजन आप रखांयदा। सतिगुर शब्द लगाए चोट, गुरसिख तन नगारा आप वजांयदा। गुरमुख विरला विच्चों कोटी कोट, जो जन रसना जिह्वा गांयदा। कलिजुग जीव आलणिउँ डिगे बोट, ना अन्तिम कोई उठांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता प्रगट होए जामा निरगुण समांयदा। हरि शब्द निरगुण धार, सरगुण विच समाईआ। सरगुण गुर जगत बलकार, गुरमुख वेख वखाईआ। गुरमुख सोहे दर द्वार, दर दरवाजा इक्क खुलाईआ। प्रगट होए कल कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा डंक वजाईआ। हरि का शब्द साचा डंका, सतिगुर साचा आप जगाया। सतिगुर साचा प्रगट होए बार अनका, अनक कला समाया। गुरमुख साचे मेल जिउँ जन जनका, जन जननी लेखे लाया। मनमुखां ना देवे कोई तनका, ना कोई बूझ बुझाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए वासी पुरी घनका, आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर वसाया। हरि शब्द घर साचे वस्सया, साची धुन उपजाईआ। सतिगुर पूरा राह साचा दस्सया, छाण पुण सृष्ट सबाईआ।

गुरमुख साजन दर आए नस्सया, आत्म वज्जे वधाईआ। मनमुखां दिसे रैण अन्धेरी मस्सया, पंच विकारा जेवड़ी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग करे कुड़माईआ। हरि शब्द हरि दीन दयाला, हरि हरि रंग रंगाया। सतिगुर शब्द होए कृपाला, किरपा निध अख्वाया। गुरमुख साजन साचे लाला, आप आपणी गोद उठाया। मनमुखां जीवां खाए काला, ना दीसे कोई सहाया। लक्ख चुरासी पया जंजाला, ना सके कोई तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। हरि शब्द हरि रंग करतारा, हरि हरि रूप समाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, आपणी कल वरताया। सति पुरख निरँजण मीत मुरारा, वेखे खेल सबाया। आप सुहाए आपणा बंक दुआरा, बंक द्वार आप तजाया। छेवें खोल्हे बन्द किवाड़ा, हरि शब्दी शब्द उपाया। पंचम देवे सच हुलारा, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाया। चौथे घर कर पसारा, सन्त साजन लए मिलाया। दस्म दुआरी अधविचकारा, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जगे जोत अगम्म अपारा, दीवा बत्ती इक्क रखाया। अमृत आत्म ठंडी धारा, निझर झिरना रिहा झिराया। गुरमुख विरला नुहावणहारा, साचे ताल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचे कन्त सुहागी, साचा मेल मिलाया। सुरत सवाणी सोई जागी, वर पाया हरि हरि राया। चरन धूढ़ वखाए साचा मजन माघी, दुरमति मैल गंवाया। फड़ फड़ हँस बणाए कागी, जो जन सरनाई आया। सोहँ चोग चुगे वडभागी, सोहँ हँसा रूप वटाया। अन्तर आत्म इक्क वैरागी, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। आपे वरते स्वांग स्वांगी, नट नटूआ खेल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुख साजन उठ उठ जाग, हरि साची जोत जगाईआ। दीपक जोती जगे चिराग, ना सके कोई बुझाईआ। जन्म जन्म दे लाहौण आया दाग़, आप आपणी दया कमाईआ। दो जहानी पकड़े वाग, अग्गे पिछे होए सहाईआ। अन्तिम मेला कन्त सुहाग, सोभावन्ती नार अख्वाईआ। गुरमुख साजन वड वड भाग, प्रभ पाया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले थाउँ थाँईंआ। हरिजन मेला धाम सुहञ्जणा, घर सच वज्जे वधाईआ। दीपक जोत जगे निरँजणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अनहद ताल नगारा वज्जणा, ताल तलवाड़ा आप वजाईआ। पंच विकारा डर डर भज्जणा, सुणे शब्द सच्ची शनवाईआ। नौ दुआरा गुरमुख साचे तजणा, सुखमन नाड़ी सीस झुकाईआ। पार किनारे पड़दा कज्जणा, शब्द गुर वड्डी वड्याईआ। लड़ फड़ाया साचे सज्जणा, नाम घोड़े दए चढ़ाईआ। सतिगुर पूरे हाज़र हज़ूरे गुरमुख तेरे संग सदा सद गज्जणा, साचा नाअरा एका लाईआ। काया गढ़ हँकारी भज्जणा, आत्म कुण्डा दए खुल्हाईआ। सर सरोवर कराए साचा मजना, इक्क अशनान वखाईआ।

आपे कराए हाजी हजना, मक्का काअबा इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन मेल मिलाईआ। गुरमुख मेला सच द्वार, गुर पूरा आप करांयदा। आपे खोले बन्द किवाड़, आपे मुख भवांयदा। आपे होए पिछे अगाड़, सेवा सेव आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलांयदा। साचा मेला रंग महल्ल, उच्च अटारी डेरा लाया। जगे जोत इक्क परबल, परम पुरख जगाया। सच सिंघासण बैठा मल्ल, पावा चूल ना कोई रखाया। अमृत आत्म ठांडा जल, अट्ठे पहर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए मिलाया। गुरमुख साजन साचा टिकाना, गुर पूरे आप बुझाया। काया मन्दिर सच मकाना, आत्म सेजा इक्क विछाया। जोती नूर जगे महाना, आप आपणा रिहा जगाया। सुरत सवाणी कर परवाना, आप आपणे अंग लगाया। मिल्या शब्द साचा हाणी हाणा, साचा थान सुहाया। आप आपणा कर परवाना, आप आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। दस्म दुआरी जुड़या जोड़ा, हरि साचा आप जुड़ांयदा। जन भगतां देवे साचा घोड़ा, फड़ बाहों उप्पर टिकांयदा। अगम्म अगम्मड़ा आए दौड़ा, दिस किसे ना आंयदा। साचे घर लाया पौड़ा, एका होड़ा राह तकांयदा। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। सो पुरख निरँजण आपे बौहड़ा, घर साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मेला हरि भगवन्त, हरि हरि आप कराया। आप बणाए साचे सन्त, सच समग्री झोली पाया। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, उप्पर चढ़ खण्डा वखाया। पंचम पंचम करे जंगता, पंचम मेट मिटाया। पंचम होया भुक्खा नंगता, पंचम शाह सुल्तान बणाया। पंचम लाए आपणा अंगता, पंचम दए दुरकाया। पंचम काया चोली रंगदा, पंचम पीर दिस ना आया। पंचम पंच दुआरा आपे मंगदा, पंचम बैठा मुख भवाया। जो जन दर दुआरे आए मंगता, मन ममता दए मिटाया। मेल मिलाए साची संगता, मनमति रहिण ना पाया। तोड़े गढ़ हँकारी हँगता, सो साचा जाप जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा तेरी झोली पाया। कलिजुग लहिणा झोली पा, सतिजुग जोत जगाईआ। सतिजुग बैठा सीस निवा, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। कलिजुग रोवे मारे धा, कलिजुग जीवां संग रलाईआ। सतिजुग साचा पकड़े बांह, गुरमुखां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग विछड़े जग मेल मिलाईआ। जुग विछड़े जग मेलया, जागरत जोत जगा। आपे होए सज्जण सुहेलया, सतिगुर पूरा दया कमा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, जोती जामा भेख वटा। गुर गोबिन्द बणाए साचा चेलया, हरि सतिगुर पकड़े बांह। आपे वस्सया

रंग नवेलया, सम्बल नगरी सुहाए थाँ। जगे जोत इक्क अकेलया, आदि निरँजण बेपरवाह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए जुग जुग आपणा नाँ। जुग जुग आपणा नाम धरा, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साचा संग निभा, सगली चिन्द मिटांयदा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमारा आप अख्वा, बराह रूप हो जांयदा। यझे पुरष यज्ञ रिहा करा, हाव गरीव भेख वटांयदा। नर नरायण जोत जगा, दत्ता त्रै समझांयदा। कपल देव हरि आप अख्वा, आप आपणा कर्म कमांयदा। रिखव देव हरि मेल मिला, आपणा भेव खुलांयदा। पृथू नाम जगत धरा, सृष्ट सबाई मथ वखांयदा। मत्तस जामा आपे पा, मच्छ रूप हो आंयदा। कच्छप भेख आप वटा, मिन्दिरा चल पीठ उठांयदा। मोहणी रूप दए दरसा, आप आपणी कल वरतांयदा। वैद धनंतर लए उपा, वड धनाडी आप हो जांयदा। हँसा बंसा आप अख्वा, पंछी पंखी उडांयदा। सन्त कमार दए समझा, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वटांयदा। नर सिँघ रूप वटा, आपणी कल वरताईआ। हरी हरि हरि आप अख्वा, गज होए जल सहाईआ। नर नरायण भेख वटा, ध्रू बालक लए गोद उठाईआ। सतिजुग रंग तेरा वेख वखा, आपणी जोत करे रुशनाईआ। आपणा पासा आपे लए उलटा, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। त्रेता तिंआ वेस वटा, लेखा सके ना कोई लिखाईआ। परस रामा राम उपा, करे इक्क लड़ाईआ।
१२६ ०७ राम रामा जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। जनक सपुत्री लए प्रना, सीता सुरती इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। दुष्ट हँकारी १२६ ०७
दए खपा, रावण गढ़ रहिण ना पाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगा, आप आपणा नाउँ छुपाईआ। भेखाधारी भेख वटा, त्रेते गया मुख छुपाईआ। द्वापर आपणी अलक्ख जगा, वेद व्यासा ल्या उपाईआ । वेद व्यासा आप समझा, नारद मुन संग रलाईआ। सच उपदेश इक्क जणा, ब्रह्म पुराण लिखाईआ। पदम राहे आपे पा, विष्नूं भेव खुलाईआ। शंकर लेखा आप लिखा, हरि भगवत जोड़ जुड़ाईआ। नारद मुन आप समझा, आपणा लहिणा झोली पाईआ। अग्नी वेखे थाँ थाँ, आपणा मूल रही चुकाईआ। मारकंडे रिहा कुरला, देवे सदा दुहाईआ। भविख्त तेरा भेव खुला, अंग संग रखाईआ। बराह रूप तेरा लेखा दए लिखा, सकंद वज्जे वधाईआ। नर सिँघ नरायण आप अख्वा, आप आपणी कल वरताईआ। गरुड़ रूप रिहा पढ़ा, आप आपणा भेदा दए जणाईआ। ब्रह्मण्ड विच गया समा, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। पुराण अठारां लेखा आप लिखा, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग समाईआ। द्वापर तेरी तेरा धार, हरि साची जोत जगांयदा। काहना कृष्ना लए अवतार, अर्जन गीता ज्ञान दृढ़ांयदा। रथ रथवाही अपर अपार, सृष्ट सबाई रथ चलांयदा। मनमुखां भरे गढ़ हँकार, गुरमुख साची सेवा लांयदा। बिदर सुदामा जाए तार, दौपद लज्जया आप

रखांयदा। अन्तिम वेखे इक्क द्वार, रणभूमी मेल मिलांयदा। जोधे सूरबीर बली बलकार, शस्त्र अस्त्र तन सजांयदा। आपे मारनहारा दल वल छल धारी छल करांयदा। जीव जन्त आर पार, अठारां अखशूनी आप भरांयदा। इक्क अखशूनी लेखा दए लिखार, अठाई लक्ख गणत गणांयदा। यादव वंसी मारे मार, दुरबासा मूल चुकांयदा। आपे खेले खेल करतार, खेलणहार आप अख्वांयदा। कलिजुग मात लए अवतार, कलिजुग धार चलांयदा। ईसा मूसा कर प्यार, अल्ला राणी संग रलांयदा। मिल्या मेल मुहम्मद यार, चार यारी वेख वखांयदा। बोध बोधा खेल अपार, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। कलिजुग डंका अपर अपार, कूड़ कुड़यारा आप वजांयदा। धरत मात करी पुकार, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साध सन्त ना कोई बचांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, नानक गुर आप समझांयदा। एका शब्द दए आधार, नाम सति झोली पांयदा। दर दरबारे विच संसार, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। जीव ना जाणे कोई गंवार, ना कोई बूझ बुझांयदा। नानक प्रभ दर अग्गे करी पुकार, तेरा भाणा तेरे विच समांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। कलिजुग कर्मी मारे मार, ना कोई अन्त बचांयदा। प्रगट होए विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। सतिजुग साची बन्ने धार, साचा मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपे वेख वखांयदा। नानक अंगद अंग लगा, अंगी कार कराया। अमरदास दर सेव कमा, अमरापद पाया। रामदास दर दए खुल्ह, सर सरोवर इक्क सुहाया। गुर अर्जन गोझ आप जणा, बोध अगाध समझाया। हरिगोबिन्दे घोड़े दए चढ़ा, साचा खण्डा तन पहनाया। हरिकृष्ना हरि हरि गया समा, बाली बाला लेखे लाया। तेग बहादर तेग रिहा उठा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। आप आपणा भेट चढ़ा, भेव अभेदा विच समाया। खेवट खेटा जगत बणा, गुर गोबिन्द सेवा लाया। पूत सपूता हरि उपजा, आप आपणे रंग रंगाया। अकाल मूर्त इक्क दरसा, एका दूजा भउ चुकाया। अन्तिम मेला ल्या मिला, मेलणहार आप अख्वाया। साचे घर डेरा ला, घर साचा आप सुहाया। जन भगतां घेरा रिहा पा, शब्द डोरी तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सद बीस चौदां रुत्त आप सुहाया।

सतिगुर पुरख दयाल, सति सति समाया। गुरमुख वेखे साचे लाल, जुग जुग मेल मिलाया। सुहाए कुन्दर सच्ची धर्मसाल, काया अन्दर वेख वखाया। दीपक जोती देवे बाल, अन्ध अन्धेर मिटाया। तोड़नहारा जगत जंजाल, जुगत आपणे हथ्थ रखाया। आपे शाह आपे कंगाल, वणज वणजारा आप अख्वाया। गुरमुखां देवे नाम साचा धन्न माल, तन खज़ीना

इक्क भराया। इक्क चलाए बेहंगम चाल, चाल निराली इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। सतिगुर पूरा साचे घाट, गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। दीपक जोती नूर लिलाट, आपणी आप टिकांयदा। चरन द्वार वखाए साचा तीर्थ ताट, सर सरोवर वखांयदा। दुरमति मैल झूठी काट, सच सुच्च ज्ञान दृढ़ांयदा। इक्क नाम वखाए साचा हाट, चौदां हट्टां मुख भवांयदा। हरिजन पूरी करन आया घाट, दर दुआरे फेरी पांयदा। अमृत आत्म मारे साची ठाठ, सच उछाला इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साची बूझ बुझांयदा। आत्म अन्तर शब्द ज्ञाना, पारब्रह्म जणाईआ। राग धुंन इक्क तराना, आत्म धुंन उपजाईआ। अनहद सुणे सुणाए साचा गाणा, ताल अनादी इक्क वजाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्ताना, हर घट बैठा आसण लाईआ। भरमे भुल्ले जीव निधाना, माया ममता मोह वधाईआ। जिस जन गुर पूरा होए आप मेहरवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस हर घट थाँईंआ। दर्शन देवणहार भगवन्ता, एका एक अख्वाया। जुग जुग उधारे साचे सन्ता, सतिगुर साचे मेल मिलाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। आपे तोड़े हउमे हँगता, हँकारी गढ़ दिस ना आया। जिस जन रलाए साची संगता, पूरन इच्छया दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। आपे मंगण दर सवाली, मिले नाम निरँजणा। जगे जोत इक्क अकाली, दो जहानी साक सैण सज्जणा। धुर दरगाही आया माली, जन भगतां रक्खे लज्जना। गुरमुख दुआरा कोई ना दीसे खाली, शब्द नगारा घर घर वज्जणा। फल लगाए काया डाली, फल फलवाड़ी बहि बहि सजणा। कलिजुग अन्तिम चाल निराली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे घड़या आपे भज्जणा। घड़ण भन्नणहार हरि समरथा, समरथ पुरख अख्वाया। हरि जी राखे दे कर हथ्था, सीस आपणा हथ्थ टिकाया। शब्द जणाई अकथ अकथा, कथनी कथ ना सके राया। दर द्वार जो जन आए ढठ्ठा, हरि दरसी दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे लए मिलाया। हरिजन साचे पूरी आसा, प्रभ पूरी आप कराईआ। चरन कँवल दे भरवासा, धीरज धीर धराईआ। एका नाम शब्द स्वासा, रसना जिह्वा गाईआ। होए सहाई प्रभ पृथ्मी आकासा, दिवस रैण वेख वखाईआ। आदि अन्त ना कदे विनासा, आवण जावण बणत बणाईआ। हरिजन साचे बलि बलि जासा, हरिजन वड्डी वड्याईआ। मिल्या मेल शाहो सर्ब गुणतासा, सतिगुर पूरा सहिज सुखदाईआ। निज घर आत्म रक्खे वासा, परमानंद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। ग़रीब निमाणा जगत निधाना, गुरमुख रूप समाया।

एका देवे धुर फ़रमाणा, बोध अगाधा शब्द जणाया। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखे लाए जो आए दर, मात कुक्ख सुफल कराया। आए दर दर परवाना, नर हरि साचा पाया। मिले मेल श्री भगवाना, जीउ पिण्ड काचा तन तजाया। धुर दरगाही देवे इक्क निशाना, साचो साच सुणाया। अनहद रागी साचा गाणा, ताल तलवाड़ा आप वजाया। सच मन्दिर सच टिकाना, प्रभ साचा थाँ सुहाया। दीपक जोती जगे महाना, निर्मल नूर कराया। गुरमुख साजन मेल मिलाए दया कमाए देवे नाम निधाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत हरि वस्सया घर, हर घट घट अन्दर वेख वखाया। घट घट अन्दर घट घट तीर्थ, घट घट पूजा पाठा। घट घट मन्दिर घट घट सीरथ, घट घट सर सरोवर मारे ठाठा। ध्रू भगत दी रक्ख लाज करते, कर्म आपणा आप कमाया ए। वेख वखाणे ज़िमी अस्माना धरनी धरते, धरत धवल आप सुहाया ए। दर द्वार जो आए मंगते, ख़ैर नाम झोली आपणा पाया ए। मंगे मंग नाम अधारा, आत्म हरि लिव लाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, देवे जोत रुशनाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, धुंआँधार रहिण ना पाईआ। पंचां देवे दर दुरकारा, पंचम मोह चुकाईआ। पंचम देवे नाम अधारा, पंचम शब्द जणाईआ। पंचम शब्द सुणाए पंचम राग अला़ईआ। पंचम कर सच प्यारा, पंचम धार सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन इच्छया आप कराईआ। एका संग सगला साथ, हरि हरि आप अख्वाया। प्रगट हो त्रिलोकी नाथ, दहि दिशा वेख वखाया। इक्क शब्द जणाए साची गाथ, सो पुरख निरँजण रिहा जपाया। वेख वखाए तत्त आठ, नौ दर खोज खोजाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठ, चरन ध्यान इक्क रखाया। आत्म अन्दर खोले़ बध्धी गाठ, दूई द्वैती पड़दा लाहया। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ ताट, अठसठ रिहा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवाज़ा दए खुला़या। दर दरवाज़ा आपे खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। गुरमुख अन्दर आपे बोल, आपणा आप सुणांयदा। आपे वसणहारा कोल, आपे अंग लगांयदा। दिवस रैण अट्ठे पहर शब्द गुर सुरत सवाणी नाल करे चोल्ह, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। काया धरती जाए मौल, उलटा करे नाभ कँवल, अमृत धार मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग रखांयदा। साचा संग निभे तोड़, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाया। दर आया ना देवे मोड़, साची भिच्छया झोली पाया। नाम चढ़ाए साचे घोड़, वाग आपणे हथ्थ रखाया। मिट्ठा करे रीठा कौड़, जिस जन आपणी दया कमाया। धुरदरगाही आया दौड़, लोकमाती फेरा पाया। सच मन्दिर लाया एका पौड़, गुरमुख साचे रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरत सुरती सुरत शब्दी शब्द विच समाया। सुरती शब्दी साचा नाता, हरि हरि आप बंधांयदा। देवे नाम सच सुगाता, पल्ले गंढु रखांयदा। नाता तोड़े जाता पाता, जात अजाती पार करांयदा। हरिजन होए आपे पिता आपे माता, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, सतिगुर पूरा सगला संग निभांयदा। लहिणा देणा चुक्के आण बाटा, मात गर्भ फंद कटांयदा। लक्ख चुरासी मुक्की वाटा, हरि जोती मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आए घर देवे वर मिले हरि चुक्के डर नुहाए सर तरनी साची तर, सर सरोवर इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त कन्त अन्त अन्त आपणे विच समांयदा।

* पहली फग्गण २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

हरि ढोल नगारा वज्जया, चार कुन्ट जैकार। थिर घर बहि बहि आपे सज्जया, सति पुरख रूप करतार। ना घड़या ना भज्जया, आदि अन्त एकँकार। सच सिँघासण आपे सज्जया, जोती निर्मल कर आकार। आदि जुगादी फिरे भज्जया, जुगा जुगन्तर साची कार। जन भगतां रक्खणहारा लज्जया, पूरन गुर अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। ढोल नगारा साचा मृदंगा, हरि साचा आप वजांयदा। आपे चाढ़नहारा साचा रंगा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणा रक्खे संगा, आपणा आप छुपांयदा। आपणे घोड़े कस्सया तंगा, हरि आपणा आसण लांयदा। गुर गुर दर दुआरा एका मंगा, पुरख अकाला इक्क वखांयदा। नौ खण्ड पृथमी लक्ख चुरासी भुक्खा नंगा, नाम धन ना कोई वखांयदा। मानस जन्म ना होए भंगा, अन्त ना कोई छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। ढोल मृदंग सच नगारा, हरि साचा आप वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, गगन पतालां आप हिलांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, शिव शंकर नीर वहांयदा। करोड़ तेतीसा करे पुकारा, सुरपति राजा इन्द कुरलांयदा। लक्ख चुरासी हाहाकारा, ना कोई वेख वखांयदा। कलिजुग खेले खेल अपारा, खेलणहार दिस ना आंयदा। नानक गोबिन्द कर प्यारा, शब्दी धार वहांयदा। आत्म जोती इक्क उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। आपे करता पुरख करनेहारा, करनेहार आप अख्वांयदा। आवे जावे वारो वारा, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता पार किनारा, द्वापर वेख वखांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ पसारा, पंच वकारा संग रलांयदा।

जूठ झूठ मोह विकारा, सच सुच्च ना कोई वरतांयदा। जीवां जन्तां साधां सन्तां आत्म गढ़ भरया हँकारा, आत्म ब्रह्म ना कोई जणांयदा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे नाम भण्डारा, ना कोई भिच्छया पांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साची बणत बणांयदा। प्रगट होए विच संसारा, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, तन गात्रे आप लटकांयदा। पंचम मीता कर प्यारा, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम करे तन शृंगारा, पंचम रंग चढ़ांयदा। पंचम देवे अमृत आत्म ठंडी धारा, लोकमात दिस ना आंयदा। पंचम मेला कन्त भतारा, पंचम सखीआं मिल मिल मंगल गांयदा। पंचम नाद अनादी वजाए धुन्कारा, धुन अनादी इक्क रखांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। इक्क वखाए सच दुआरा, हरि साचा धाम सुहांयदा। शब्द गुर जोधा सूरबीर बलकारा, जुग जुग आप अख्वांयदा। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, सम्मत सम्मती वेख वखांयदा। सतिजुग साची बन्ने धारा, साचा मार्ग लांयदा। चार वरना बख्शे इक्क प्यारा, एका नाम जपांयदा। ऊचो ऊँच अगम्म अपारा, अलक्ख निरँजण आप अख्वांयदा। गऊ ग़रीबां पावे सारा, जगत नमाणे गले लगांयदा। अन्दर मन्दिर खोल्ह दुआरा, साचा गुर दुआरा इक्क वखांयदा। ना कोई तेल ना कोई दीवा बाती, निर्मल जोत इक्क वखांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, ना कोई हवन ना कोई पवन ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, हरि एका हट्ट वखांयदा। आपे वस्सया घट घट वासी, घट घट आप समांयदा। कलिजुग खेले खेल बाज़ीगर नाटी, नटूआ सांग वरतांयदा। जो दीसे सो जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पांयदा। कलिजुग अन्तिम इक्क दुआरा सृष्ट सबाई आउणा नठ्ठ, निहकलंक आप रखांयदा। सम्मत सोलां होणा अकट्ठ, हाढ़ सतारां लेख लिखांयदा । पहली चेत्र गेड़े उलटी लट्ठ, ना कोई मोड़ मुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सोए जीव जन्त आप जगांयदा। वज्जया ढोल, हरि निरँजण आदि पुरख वजांयदा। सम्मत सोलां सभ दे कढ्ढे पोल, बंक दुआरे फोल फोलाया। साध सन्त नाम वस्त ना रक्खे कोई कोल, अमृत आत्म सर सरोवर ना कोई करांयदा। पंज तत्त काया मन्दिर सभ दे लए फोल, अनहद ढोल ना कोई वजांयदा। मन मति तेरा रचया घोल, कलिजुग कूड़ा वेख वखांयदा। कूड़ी माया खेले खेल, नर सिँघ नरायण दिस ना आंयदा। नानक बणया साचा तोल, मोदीखाना इक्क चलांयदा। गुर गोबिन्द गया बोल, शब्द खोजी वेख वखांयदा। जोत सरूपी वज्जे ढोल, वजावणहारा दिस ना आंयदा। पुरख अगम्मड़ा रिहा बोल, जोती जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई सोहँ कंडे तोल, सो पुरख निरँजण तोल तुलांयदा । जन भगतां सद वसे कोल, अट्ठे पहर दरस दिखांयदा। एका देवे मार्ग अनमोल, ऊँच नीच ज़ात पात राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान हकीर फकीर दस्तगीर एका धाम सुहांयदा। शब्द

निराला कस्सया तीर, लोआं पुरीआं रिहा चीर, ब्रह्मण्ड खण्ड पाए वहीर, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड होए अखीर, ना कोई अन्त बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि शब्दी ढोल वजांयदा। शब्द ढोल हरि हथ्थ फड़, लोकमात उठ धाया। सम्बल नगरी बैठा वड़, दिस किसे ना आया। आपणा घाड़न आपे घड़, आप आपणी बणत बणाया। आपणा अक्खर आपे पढ़, आप आपणा रिहा अलाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई नेत्र ना कोई हथ्थ समरथ, पंज तत्त ना कोई रखाया। आपणी महिमा जाणे अकथ, जुग जुग करदा आया। कलिजुग कूड़ा चल्लया रथ, मनमुख जीवां रिहा चढ़ाया। गुरमुख विरले सगल विसूरे गए लथ्थ, जिस जन आत्म अन्तर सतिगुर पूरे दर्शन पाया। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा ढोल मृदंग वजाया। शब्द ढोल बोल बुलाए, बोलणहारा भगवाना। हरि हरि पड़दा खोल्ह वखाए, वेखे तीर्थ तट अशनाना। निर्मल जोती डगमगाए, शब्दी धुन तराना। कन्त सुहागी एका गाए, आत्म धुन उपजाना। ब्रह्मादी हरि खोज खुजाए, पारब्रह्म सुल्ताना। आदि जुगादी शब्द लिखाए, खेले खेल दो जहाना। बोध अगाधी शब्द लिखाए, लेखा लिख्त ना कोई वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जाणा। साचा ढोल हरि बनवारी, आपणे गल लटकाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारी, सोया कोई रहिण ना पाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, माझे देस डेरा लाया। सम्बल नगरी होए जै जैकारी, जै जैकारा आप कराया। सन्तन मेला मीत मुरारी, जुग विछड़े जग मेल मिलाया। सरसे तेरी पाई सारी, तेरा लहिणा मूल चुकाया। मिल्या मेल जोत निरँकारी, निरगुण रूप समाया। अमृत आत्म देवे ठंडी ठारी, काया कासे आप प्याया। शब्द देवे तेज़ कटारी, तिक्खी धार रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। ढोल वजाए साजन मीता, परम पुरख सुल्ताना। जुग जुग जाणे आपणी रीता, खेले खेल आप महाना। आपे देहुरा आपे मस्जिद आपे गुरद्वार आपे बैठा रहे अतीता, आपे पूजा आपे पाठ आपे धर्म होए जैकारा आपे ठांडा सीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अंतम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा आपे जीता। ढोल नगारा साची माला, गुर पूरे तन श्रृंगारया। निर्मल जोती करे उजाला, कलिजुग मेटे अन्ध अँध्यारया। खेले खेल गोबिन्द गोपाला, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वा रिहा। गुरमुखां वखाए एका एक सच्ची धर्मसाला, काया मन्दिर अन्दर कुण्डा ला ल्या। बजर कपाटी तोड़े ताला, बन्द किवाड़ खुल्हा ल्या। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका ढोल एका ढोला हरि साचे आप सुणा ल्या। सतिगुर ढोल सुणाए ढोला, सोहँ शब्द जैकारा। सतिजुग तेरा साचा बोला, चार वरन भण्डारा। चौदां हट्टां एका तोला, नौ सत्त बणे वणजारा। त्रैलोकी बदले एका चोला, एका रंग अपारा। लोकमात खेले आपणा होला, खेलणहार आप करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती नूर करे उज्यारा। शब्द ढोल साचा ढोला धुर सुगात, हरि साचे वंड वंडाईआ। जन भगतां बन्ने चरन नात, इक्क प्रीत सिखाईआ। चरन प्रीती वड करामात, जिस देवे हरि रघुराईआ। गुरमुख साजन उत्तम जात, वरन गोत विच ना आईआ। मिले मेल हरि कमलापात, कन्त कन्तूहल मेल मिलाईआ। शब्दी चढ़े सच बरात, गुरमुख सुरती लए प्रनाईआ। आत्म सेजा इक्क इकांत, मेल मिलाए सहिज सभाईआ। ना कोई सुबह ना कोई शाम, ना कोई रात ना कोई प्रभात, हरि एका रंग रंगाईआ। देवणहारा साची दात, दाता दानी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका ढोला रिहा गाईआ। एका ढोला हरि वरभण्ड, आपणा आप सुणाया। कलिजुग अन्तिम वंडी वंड, सतिजुग झोली पाया। जूठा झूठा कूड़ कुड़यारा प्रभ मेटे भेख पखण्ड, भेखाधारी रहिण ना पाया। गुर गोबिन्द तेरी टुट्टी लए गंढ, गंढणहार आप अख्वाया। सो पुरख निरँजण हथ्थ फड़या चण्ड प्रचण्ड, नाम खण्डा रिहा उठाया। मनमुख जीवां देवण आया दंड, निहकलंका नाउँ रखाया। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, जगत दुआरे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा ढोल रिहा वजाया। ढोल पोल तेरा अन्तिम खुल्हणा, प्रभ साचे आप खुल्हाउणा। मनमति तेरा कोई ना पैणा मुल्लना, हरि खाकी खाक मलाउणा। गुरमुख विरले पूरे तोल तुलणा, नानक तोला इक्क समझाउणा। गुर गोबिन्दे तेरी चरन प्रीती घोल घुल्लणा, दूसर कोई दिस ना आउणा। जूठा झूठा बूटा अन्तिम हुल्लणा, फल डाल्ही ना कोई रखाउणा। लोकमात साध सन्त जीव जन्त वरन बरन मूल ना भुल्लणा, प्रभ साचे खेल रचौना। धरत मात तेरी छाती लक्ख चुरासी खून डुल्लणा, प्रभ साचे रंग चढ़ाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका ढोला साचा सच सनाउणा। हरि ढोल शब्द जणाई, अनहद जै जैकारा। पारब्रह्म प्रभ खेल रचाई, लोकमात लए अवतारा। जोती नूर नूर रखाई, शब्द धुन धुन्कारा। अगम्म अगम्मड़े धाम बैठा आसण लाई, आपे वस्सया सच दुआरा। सम्बल नगरी इक्क सुहाई, गोबिन्द मेल कन्त भतारा। मिल्या मेल हरि साचे माही, पाया पुरख अपारा। गुरमुख सोए रिहा जगाई, सुरती सुरत हुलारा। आप आपणा भेव खुल्हाई, देवे दरस अगम्म अपारा।

गुरमुखां दर दर घर घर मंगे जाई, मंगणहार आप दातारा। मनमुख जीवां दिसे नाही, लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा। ब्रह्मण्ड दा करता मालक बैठा जोत जगाई, निहकलंक नर अवतारा। सोहँ शब्द करे कुड़माई, मुख सगन लगाए कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। नेत्र नैण कजला रिहा पाई, एका नेत्र आप उग्घाड़ा। अन्दर मन्दिर मेला सहिज सबाई, पंचम लाया सच अखाड़ा। आप आपणी धुन आपे रिहा गाई, आपणा ताल आप वजाया। हरि हरि वेखे थाउँ थाँईं, हर घट बैठा आसण लाया। गुरमुख मेले फड़ फड़ बाहीं, दिवस रैण सेव कमाया। पहली फग्गण वीह सौ चौदां जाणा चाँईं चाँईं, नाता नाते नाल जुड़ाया। खेले खेल बेपरवाही, बेपरवाह आप अख्वाया। भरमे भुल्ले पान्धी राही, प्रभ मार्ग दए दिखाया। गुर गोबिन्दे मेला एका थाँईं, हरि एका धाम सुहाया। गुर नानक एका एक इक्क रिहा मिलाई, हरि मेली मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख धर, शब्द ढोल रिहा वजा, लक्ख चुरासी रचया घोल, सृष्ट सबाई रिहा उठा, सोया कोई रहिण ना पाया। ना कोई सोया ना कोई जागे, ना कोई रंग रंगाया। ना कोई हँस ना कोई कागे, ना कोई चोग चुगाया। ना कोई मजन ना कोई माघे, ना कोई तीर्थ रिहा नुहाया। ना कोई ढोल ना कोई वज्जे वाजे, अनहद ताल ना कोई वजाईआ। झूठ पसारा कलिजुग तेरा साजन साजे, कूड़ो कूड़ दिसाया। जोत सरूप हरि प्रगट होया देस माझे, सृष्ट सबाई रिहा सुणाया। पकड़ उठाए राजन राजे, शाह सुल्तान दए हिलाया। इक्क अकल्ला ग़रीब निवाजे, गऊ ग़रीबां होए सहाया। सीस रहिण ना देणा कोई ताजे, लेखा लेख रिहा लिखाया। ब्रह्मण्ड प्रभ रचया काजे, चौदां तबकां दए मिटाया। चौदां लोक मारे एका अवाजे, एका ढोला रिहा सुणाया। ब्रह्म पुरी हरि शब्द गाजे, ब्रह्मा नेत्र नीर वहाया। शिव शंकर तेरी कोई ना रक्खे लाजे, वेला अन्तिम आया। करोड़ तेतीसा उठ उठ भाजे, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाया। कलिजुग कूड़े रचया काजे, संग मुहम्मद संग रखाया। अल्ला राणी उच्चे मुनारे बहि बहि मारे वाजे, हू हू नाअरा लाया। मक्का काअबा हरि वेखण आया साचा हाजी हाजे, अन्तिम एका हज्ज कराया। दुलदुल ऐली रक्खे साचे ताजे, शाह अस्वार आप अख्वाया। सम्मत सोलां पहली चेत्र चरन दे रकाबे, लाहौर किला शाही चरन दए टिकाया। चार वरन तेरी रक्खे लाजे, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई साजन साचे वेख वखाया। मनमुख जीवां खोल्ह़े पाजे, पीर कुतब गौंस शेख़ मुसायक हरि साचा नायक वेख वखाया। हक्क हकीकत लाशरीक ग़रीब निवाजे, ग़रीब निमाणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर अलाही बेपरवाही आपणा संग निभाया। नाम शब्द सच जैकारा, पुरख अकाल लगाया। अकाल पुरख आप करतारा, करता रूप समाया। करनहार विच

संसारा, करता पुरख अख्वाया। जुग जुग लए हरि अवतारा, भेव अभेदा भेव छुपाया। सतिजुग साचे पावे सारा, त्रेते मेल मिलाया। द्वापर तेरी बन्ने धारा, धीरज धीर धराया। कलिजुग तेरा वेख सहारा, हरि साचे खेल खिलाया। खेले खेल संग मुहम्मद चार यारा, चार यारां लए मिलाया। गुर नानक लाया एका नाअरा, नाम सति सति नाम जीव जन्त झोली पाया। गुर गोबिन्दे हरि भर भण्डारा, नाम भण्डारा झोली पाया। आपे फिरे चारे कूटा, दहि दिशा फेरी पाया। आप मनाया जो जो बैठा रूठा, विछड़े दए मिलाया। काया अमृत भरया ठूठा, सच प्याला इक्क वखाया। नाता तोड़या जगत जूठा, पंचम पंचम ना कोई जणाया। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गुर गोबिन्द बन्नाए एका मुट्ठा, एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्दा रिहा मिलाया। नीले घोड़े उप्पर आसण ला, कल्गी तोड़ा सीस दस्तारे। विछड़े जुग लए मिला, किरपा करे अपर अपारे। फड़ फड़ बांहों सम्बल नगरी दए वखा, जगे जोत अगम्म अपारे। एका दीपक रिहा वखा, मेटे कूड़ कूड़े पसारे। बीस बीसा तेरा राह रिहा तका, प्रभ साचा आप विचारे। दिल्ली तख्त लए चरन छुहा, पन्दरां कत्तक दिवस विचारे। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, सत्त दीप करन निमस्कारे। सीस गंज हरि माण दवा, गुर तेग बहादर तेरी रत्त सिक्खी देवे मत, एका बख्शे सच प्यारे। एका बीज नौ खण्ड पृथ्मी सृष्ट सबाई अन्दर देवे घत्त, घत्तणहार आप करतारे। पारब्रह्म तेरा एका वत, जग आए अन्तिम वारे। पुरख अबिनाशी जन भगतां रक्खे साची पति, पतित पुनीत करे जो जन आए दुआरे। एका देवे धीरज सन्तोख सति, मन मति दर दुरकारे। आप चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही हरि निरँकारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल विच संसारे। साचा खेल हरि खिलाउणा, नौ खण्ड सत्त दीप रिहा जगाईआ। लक्खण दीप हरि फेरा पाउणा, शब्द ढोला रिहा वजाईआ। करौंच तेरा पोल खुल्हाउणा, अन्दर मन्दिर वेख वखाईआ। पुष्कर तेरा संग निभाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। जम्बु दीप हरि जोत जगाउणा, जोती नूर करे रुशनाईआ। सलमल तेरा धाम सुहाउणा, हरि साजन वेख वखाईआ। सान सिक्खी इक्क अख्वाउणा, साख्यात वड्डी वड्याईआ। कुशा कल इक्क कराउणा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। सत्त दीप प्रभ रंग चढ़ाउणा, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। विच विचोला आप अखाउणा, ना कोई दूसर संग रलाईआ। कलिजुग कूड़ा दाग़ मिटाउणा, दुरमति मैल गंवाईआ। एका राग हरि सच सनाउणा, हरि साचे मेल मिलाईआ। कुला खण्ड पकड़ उठाउणा, आप आपणा वेख वखाईआ। इला बुत हरि भेव खुल्हाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। केतमाल हरि चरन टिकाउणा, किं पुरख संग रलाईआ। हरणयमह तेरा दर

सहाउणा, दर दरवेश आप अख्वाईआ । भद्र दर घर भाग लगाउणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। भारत खण्ड हरि वेख वखाउणा, राष्ट्रपति रिहा उठाईआ। दे बांह सरहाणे सौं ना रहिणा, प्रभ साचे जोत जगाईआ। सम्मत पन्दरां मेल मिलाउणा, कृष्ना मैनन संग रलाईआ। आपणी शक्त आप वखाउणा, देवे रुत्त सुहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त कर्म कमाउणा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। शाह भबीखन तेरा लहिणा पिछला मूल चुकाउणा, राम रामा जोत जगाईआ। लंका गढ़ हँकारी नौ खण्ड पृथ्मी ढौहणा, सीता सुरती गुरमुखां लए बचाईआ। इक्क बिबाणे जगत चढ़ाउणा, एका लए उडाईआ। एका रथ रथवाही हरि अख्वाउणा, अर्जन गीता ज्ञान जणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला पारब्रह्म प्रभ आप सहाउणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जमन किनारे डेरा लाउणा, साचा थान सुहाईआ। शब्द धुन अनाद ब्रह्माद हरि सर्ब जगाउणा, साध सन्त सोया कोई रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई तेरा लेखा पारब्रह्म फेर लिखाउणा, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। एका शब्द सोहँ सो सृष्ट सबाई गाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। अकाल पुरख प्रभ आपणा डंक वजाउणा, आपणी जोती सेवा लाईआ। सम्मत पन्दरां दो सौ छिहत्तर दिन प्रभ खेल खिलाउणा, दहि दिशा फेरा पाईआ। पहली कत्तक पटना शहर सुहाउणा, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। पन्दरां कत्तक लंका गढ़ तुड़ाउणा, साध संगत संग रखाईआ। शब्द गुर सेवा लाउणा, हरि साची कार कमाईआ। दूई द्वैती पड़दा सभ दा लौहणा, भरम रहे ना राईआ। ज्ञानीआं ध्यानीआं विद्वानीआं ब्रह्म ज्ञानीआं प्रभ दर हलाउणा, पुच्छे राग हरि अलाहीआ। पंडत पांध्या संग रलाउणा, मुल्ला शेख़ां मुसायक पीरां तसबीआं गल पहनाउणा, शरअ शरायत वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर सेवक सेवा रिहा कमाईआ। सेवक चाकर सेवादार हरि निरँकारा, आदि पुरख अबिनाशी। जन भगतां मेले वारो वारा, खेल खेल जगत तमाशी। जुग जुग बणे मात भिखारा, आपे जाणे आपणा वासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन जनहरि गुरमुख गुरसिख सन्त साजन मेल मिलाए सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा साजन मीता, हरि हरि साचा पाया। कलिजुग चली अवल्लड़ी रीता, जोती जामा भेख वटाया। ना कोई गुरुदुआरा ना मन्दिर मसीता ना शिवदवाला मट्ठ, गुरमुख साचे विच समाया। धुरदरगाही आया नट्ठ, सम्बल नगरी डेरा लाया। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ, गुर गोबिन्दा दिस ना आया। प्रभ अबिनाशी करते जोती शब्दी रक्खी साची वथ्थ, सच भण्डार रखाया। गुरमुखां आत्म अन्तर वखाए एका तीर्थ तट्ट, अठसठ मूल चुकाया। दीपक जोती जगे लट लट, घर मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन रिहा मिलाया। साचा सिक्ख हरि परवाना, गोबिन्द

मेल मिलांयदा। जोती जोत जगे महाना, शब्दी शब्द समांयदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद वजांयदा। हथ्थीं बन्ने साचा गाना, आदि अन्त संग निभांयदा। सो सतिगुर पूरा हरि मेहरवाना, हरि नानक आप अख्वांयदा। नानक पाया पद निरबाना, निज घर वेख वेख वखांयदा। गुर गोबिन्दा मिल्या मेल हरि भगवाना, पूत सपूता जोड़ जुड़ांयदा। शस्त्र बस्त्रधारी जोधा सूर बली बलवाना, एका एक अख्वांयदा। अन्तिम छड्डणा प्या सर्ब समाना, गढ़ी चमकौर सुहांयदा। माछूवाड़े गाए इक्क तराना, सूलां सथ्थर विछांयदा। मित्र प्यारे हाल सुणाणा, प्रेम विछाउणा इक्क वछांयदा। मंगे मंग इक्क महाना, साचा संग निभांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्याना, गुर गोबिन्द साचा राह तकांयदा। देवे शब्द हरि इक्क तराना, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। तेरा मेरा रूप इक्क समाना, ना कोई दूसर संग रलांयदा। तेरी फल फुलवाड़ी लग्गी रहे दो जहाना, सतारा सौ छपंजा बिक्रमी वेख वखांयदा। नैणां देवी करे ज्ञाना, हरि खण्डा इक्क चमकांयदा। सो पुरख निरँजण सद मेहरवाना, आपणा शब्द आप अल्हांयदा। गुर गोबिन्द कर परवाना, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पारब्रह्म देवे साचा दाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वंड वंडांयदा। गुर गोबिन्दा ख़ुशी मना, इक्क जैकारा लाया। वाहिगुरु फतिह रिहा गजा, वाह वाह तेरी माया। तेरा बाणा ल्या सजा, तेरे भाणे विच समाया। अन्तिम लज्जया रक्खणी आ, पन्थ ख़ालसा मात उपाया। पुरख अबिनाशी कर बैठा हां, वेले अन्तिम होए सहाया। गुर गोबिन्द पुच्छे प्रभू तेरा केहिड़ा नाँ, कवण दुआरे होए सहाया। पुरख अबिनाशी रिहा जणा, निहकलंका नाउँ धराया। सम्बल नगरी डेरा लवां ला, साढे तिन्न हथ्थ महल्ल आप सुहाया। आपणा शब्द दवां अल्हा, मेरा शब्द तेरा रूप गोबिन्द आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख धर, सम्मत सोला वेख हरि, सतारां हाढ़ी पन्थ ख़ालसा दए उठाया। हरि हरि जोत हरि समाए, हरि हरि आप अख्वाया। हरि हरि रूप आप अख्वाए, हरि हरि वेख वखाया। हरि हरि अनूप हो जाए, हरि हरि भेख वटाया। हरि हरि शाहो भूप आप अख्वाए, हरि हरि आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपाया। हरि हरि रूप हरि हरि आदि, हरि हरि सखा सहेलया। हरि हरि होए जुगादी आदि, हरि हरि रंग नवेलया। हरि हरि आपणा लए लाध, हरि हरि आप आपणा आपे मेलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे खेलया। आपणा खेल हरि आप खिला, आपणी रचन रचाईआ। आपणी जोती आप जगा, आपणी आप करे रुशनाईआ। आपणी शक्ती आप उपा, आपणे विच समाईआ। आपणी भगत आप करा, आप आपणा गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती

१३८ ०७

नूर कर उज्यारा, आपणा आप सुहाया। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा संग रखाया। आप आपणा दए नाम अधारा, आप आपणा आपे गाया। आप आपणा वेखे धाम न्यारा, आप आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जोती जोत जगाया। हरि जोत नूर अगम्म, ना कोई भेव ना भेदिआ। हड्ड मास ना नाड़ी चम्म, ना कोई लिखे वेद कतेब्या। आपणा जाणे आपे कम्म, करे कराए आप हसेब्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आपे वेख्या। आप आपणा आपे वेख, आपणे विच समांयदा। आप आपणा जाणे भेख, भेखाधारी आप अख्वांयदा। आप आपणा लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे जाणे आपणी रेख, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरी हरि हरि हरि आप अख्वांयदा। हरि रूप अगम्म अथाह, बेपरवाह समाया। आपे जाणे आपणा नाँ, लेखा लेख ना कोई वखाया। आप आपणी रक्खे छाँ, आप आपणा हथ्थ सिर टिकाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, साक सैण ना कोई जणाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणी हरि कल धार, आपणी जोत जगाईआ। आपणी इच्छया कर विचार, आपणी बणत बणाईआ। आपे देवणहारा वर भरे भण्डार, आप आपणी झोली पाईआ। आप आपणा कर श्रृंगार, आप आपणी सेजा बैठा आसण लाईआ। आपे होया कन्त भतार, आपे नारी रूप अख्वाईआ। आपे मेला करे कराए अपर अपार, आप आपणी बिन्द अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। वेखणहारा हरि अकल्ला, एका एक वखाया। आपे वस्सया सच महल्ला, ना कोई दूसर संग रलाया। निहचल धाम ऊँच अटला, दिस किसे ना आया। दीपक जोती एका बल्ला, अट्ठे पहर रहे रुशनाया। आपणा दर आपणा घर आपणा वर हरि आपे मल्ला, आप आपणा लए प्रनाया। आप आपणा हरि प्रना, आपणी सेज आप हंढांयदा। नारी कन्त आप अख्वा, कन्ता नारी रूप हो जांयदा। आप आपणी दया कमा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणे विच लए टिका, उत्पत आपणा आप उपांयदा। आप आपणा नाउँ धरा, आपे आप बुलांयदा। जोती जोत जोत प्रगटा, साचा बंस सुहांयदा। शब्द सुत हरि लए बणा, जोती माता झोली पांयदा। अगम्म देस हरि दए सुहा, अनामी निहकामी आप हो जांयदा। आपे होए हरि स्वामी, बख्शणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़ी कार करांयदा। अगम्म अगम्मड़ा हरि करतारा, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणा कर पसारा, आप आपणा धाम सुहांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणा बणया मीत मुरारा, आप आपणा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहञ्जणा, हरि साची जोत जगांयदा। जगे जोत आदि निरँजणा, जगावणहार आप अख्वांयदा। आपे होए दर दर घर घर दर्द दुःख भय भंजना, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। आप आपणा पड़दा आपे कज्जणा, आप आपणा पल्लू पांयदा। आप आपणा बणया साचा सज्जणा, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। अगम्म अगम्मड़ा धाम न्यारा, हरि साची जोत जगाईआ। ना कोई दिसे बन्द किवाड़ा, चार दुआरा ना कोई रखाईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे होए हरि सिक्दारा, आप आपणी रिहा चलाईआ। आप आपणा होए पहरेदारा, आप आपणी सेव कमाईआ। आपे वस्सया महल्ल अटल उच्च मुनारा, दिस किसे ना आईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी पाए सारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाईआ। अगम्म अगम्मड़ा धाम अवल्ला, जगे जोत अपारा। आपे बैठा इक्क अकल्ला, आप आपणा दए सहारा। आपणे अन्दर आपे रल्ला, आप सुहाए आपणा दुआरा। आपणा धाम आपे मल्ला, आपणा आप करे जैकारा। आप आपणा आपे छल्ला, आपे जाणे आपणी धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए हरि दुआरा। हरि द्वार साचा घर, हरि सच करे रुशनाईआ। किसे ना दिसे कोई वर, ना कोई वेख वखाईआ। अगम्म अगम्मड़ा हरी हरि, हरि हरि रूप अख्वाईआ। आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अगम्म दए सुहाईआ। अगम्म अगम्म हरि वंड वंडा, आपणा भेख वटांयदा। जोती जोत लए जगा, जोती जोत संग रखांयदा। अलक्ख निरँजण अलक्ख देस दए सुहा, एका अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर प्रतक्ख, आपणी रचन रचांयदा। अलक्ख देस हरि अलक्ख जगा, एका नाअरा लांयदा। आप आपणा रिहा जणा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। भेव अभेदा आप अख्वा, आप आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धार, अलक्ख अलक्ख कर प्यार, सति पुरखे विच समांयदा। सति पुरख हरि सति वरता, साचा दर सुहाया। आपणा दर आप मल्ला, आपणा घर आप सुहाया। आपणी जोती आपे रल्ला, आप आपणा रंग वटाया। शब्द सुत कर त्यार इक्क सुनेहड़ा साचा घल्ला, भेव कोई ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाया। शब्द सुत कर त्यार, हरि साची बणत बणाईआ। जोती माता दए प्यार, आदि शक्त नाउँ धराईआ। रूप रंग अगम्म अपार, भेव ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दुआरा हरि निरँकारा साचा दए सुहाईआ। सति घर सति उपदेश,

हरि सति करे वरतारया। आपे होए नर नरेश, आपणा खेल आप खिला रिहा। छेवें घर आपे वेख, छप्पर छन्न डेरा कोई ना ला रिहा। पंचम मेला शब्द वसेख, इक्क बिबेक जणा रिहा। सतिनाम तेरी लिखे रेख, लिखणहार आप अख्वा रिहा। सुत शब्द आपणा आप ल्या वेख, घर साचे सीस नवा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूते झोली पा रिहा। शब्द सुत कर परवान, होए वड बलकारा। जोती जोत जोत भगवान, भरे हरि भण्डारा। आप आपणा देवे दान, आपे होए वरतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बन्नणहारा धारा। गुरसिख मंगे मंग, चरन द्वारया। काया चोली चाढ़े रंग, उतर ना जाए विच संसारया। वज्जे नाम सच्चा मृदंग, अनहद धुन धुन अपारया। अमृत नुहाए साची गंग, सर सरोवर इक्क वखा रिहा। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख नंग, नाम ख़ज़ाना झोली पा रिहा। गुर शब्द लगाए आपणे अंग, सुरत सवाणी मेल मिला रिहा। आत्म सेज सच पलँघ, गुर पूरा आप विछा रिहा। सच दुआरे बैठा लँघ, जोती नूर डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख पूरन बूझ बुझा रिहा। गुरसिख गुर जुग जुग नाता, हरि साचा आप बंधांयदा। ना कोई जाणे जाता पाता, दीन मज़्हब ना कोई रखांयदा। पुरख अगम्मड़ा कमलापाता, पारब्रह्म हो जांयदा। एका देवे धुर दरगाही साची दाता, जगत हट्ट ना कोई विकांयदा। काया मिटे रैण अन्धेरी राता, दीपक साची जोत जगांयदा। मिले मेल हरि पुरख बिधाता, विछड़ कदे ना जांयदा । आपे होए पिता माता, आप आपणी गोद उठांयदा। आपे रक्खे दे कर हाथा, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। सगल विसूरा हरिजन लाथा, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। लहिणा देण चुकाए पूजा पाठा, तीर्थ तट पन्ध मुकांयदा। बजर कपाटी खोल्हे गाठा, साचा राह वखांयदा। दीपक जोती जगे लिलाटा, धुर मस्तक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका ब्रह्म जणांयदा। एका गुर इक्क ज्ञाना, एका शब्द जणाईआ। एका सुर एका गाणा, एका नाद वजाईआ। एका नाम इक्क बिबाना, एका रिहा चढ़ाईआ। एका ताल इक्क तराना, एका रिहा सुणाईआ। एका जोत श्री भगवाना, आदि जुगादि आप समाईआ। जुग जुग जन भगतां मेले मेल विच जहाना, दो जहाना पन्ध मुकाईआ। पंच वखाए धुर निशाना, धुर दी बाण जणाईआ। हरिजन पाउणा पद निरबाना, परम पुरख समाईआ। सो पुरख निरँजण होया मेहरवाना, हँ हँगता दए मिटाईआ। चरन धूढ़ बख्शे मजन सच्चा अशनाना, दुरमति मैल दए गंवाईआ। गुरसिख गोपी गुर शब्द साचा काहना, नाम बंसरी रिहा वजाईआ। सीता सुरती मिले राम रामा, विच समाईआ। नानक गुर राह इक्क विखाना, आत्म ब्रह्म जणाईआ। भगत भगवन्त घर इक्क सुहाना, एका घर वज्जे वधाईआ। गुर गोबिन्द करे परवाना, निर्मल जोत करे रुशनाईआ।

आवण जावण चुक्के काना, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन देवे वर, परमानंद विच समाईआ। परमानंद आत्म रस, गुरमुख विरले पाया। जीव जन्त साध सन्त दर दुआरे रहे नस्स, दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हाया। काया मन्दिर अन्दर रैण अन्धेरी मस्स, दीपक जोत ना कोए जगाया। जिस जन किरपा देवे कर करे प्रकाश कोटन रवि ससि, सूरज चन्न रहे शरमाया। एका राह प्रभ रिहा दस्स, नेत्र लोचण नैण दर्शन पाया। पंच विकारा होया वस, गुर शब्द खण्डा हथ्थ वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लड़ फड़ाया। आप आपणा लड़ फड़ा आप आपणी दया कमांयदा। आपणे पौड़े आपे दए चढ़ा, आपे कुण्डा लांहयदा। सस्से उप्पर होड़ा ला, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। हँ हँगता दए मिटा, सतिगुर साचा दया कमांयदा। जिउँ नानक अंगदा अंगद विच गया समा, एका दूजा भउ चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख साचे पार करांयदा। गुरमुख साचा दर भिखारी, मंगे मंग अपारा। सतिगुर पूरे किरपा धारी, वखाए सच दरबारा। निर्मल जोत जगे निरँकारी, अट्ठे पहर उज्यारा। मिले मेल हरि सज्जण मीत मुरारी, विछिड़या संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सुहाए सच दुआरा। गुरसिख साचे सच दुआरा, काया मन्दिर हरि सुहाईआ। आप आपणा कर प्यारा, दूई द्वैती जन्दर दए तुड़ाईआ। एका बख्शे अमृत धारा, निझर धार वहाईआ। मेल मिलाए कन्त भतारा, साची नारी सेज सुहाईआ। मिले मेल पुरख अगम्म अपारा, अग्नी तत्त जलाईआ। त्रैगुण तेरा पार किनारा, पंज पंजी मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर आदि निरँजण, एका एक रखाया। आपे होए दर्द दुःख भय भंजन, हरिजन साचे लए तराया। नेत्र पाए दरस नूरी अंजन, नूरो नूर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन मेल दर, दर दरवाज़ा इक्क वखाया। दर दरवाज़ा साचा घर, महल्ल अटल मुनारा। आपे वस्सया हरी हरि, बेऐब परवरदिगारा। जिस जन आपणी किरपा देवे कर, रंगे रंग अपर अपारा। मेल मिलाए हरी हरि, हरि साजन मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला एका घर, दूजा दिसे ना कोई दुआरा। हरि शब्द गुर वस्सया, गुर शब्द जग धार। गुर पूरे गुरमुख दस्सया, गुरसिख पावे सार। तीर निराला एका कस्सया, बजर कपाटी देवे पाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धार। हरि शब्द गुर भेटयां, गुर शब्द मलाह। गुर शब्द खेवट खेटयां, गुरसिख पकड़े बांह। गुरसखि साचा बेटयां, गुर शब्द जपाए नाँ। एका ताणा एका पेटयां, इक्क वखाए

साचा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जाणे आपणा नाँ। जुग जुग खेल खिलावणहारा, आदि पुरख अबिनाशा। जुग जुग मेल मिलावणहारा, जुग जुग पावे मण्डल रासा। जुग जुग भेखाधारी बल बावन धारणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पृथ्मी आकाशा। जुग जुग खेल हरि खिलंदड़ा, खेलणहार अख्वांयदा। सतिजुग साचा पार करंदड़ा, परम पुरख अख्वांयदा। त्रेता त्रिया वेख वखंदड़ा, आपणे रंग रंगांयदा। द्वापर भार उठंदड़ा, अन्तिम मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम रैण, हरि साचा वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी नाता तोड़े मात पित साक सज्जण भाई भैण, ना कोई संग रखांयदा। संग मुहम्मद चार यार चुकाए लहिण देण, अल्ला राणी झोली पांयदा। आपे वेखे आपणे नैण, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे तेरा रूप प्रगट होए शाहो भूप, सर्बकल आप अख्वांयदा। शाहो भूप हरि सुल्ताना, निरगुण रूप समाया। प्रगट होए विच जहाना, जोती जामा पाया। शब्द गुर उठाए जोधा सूर बली बलवाना, नाम चिल्ला इक्क फड़ाया। इक्क वखाए तीर कमाना, इक्क निशान लगाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं फेरा पाया। ब्रह्मा विष्न शिव होए हैराना, देवत सुर रिहा कुरलाया। लक्ख चुरासी तोड़े माणा, वेला अन्तिम आया। सम्मत सोलां बन्न्हे गाना, हाढ़ सतारां दिवस लिखाया। प्रगट होए हरि भगवाना, हरिजन साचे लए जगाया। पकड़ उठाए राज रजाना शाह सुल्ताना, सोया कोए रहिण ना पाया। साचा धाम इक्क सुहाना, हरि साचा दर सुहाया। सम्बल नगरी गोबिन्द मकाना, गुर गोबिन्द डेरा लाया। मिल्या मेल हरि शाह शाहाना, हरि साचे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए वर, जुग विछड़े जग मेल मिलाया। जुग विछड़े जग मेलया, मेलणहार बेअन्त। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, आपे साजण साध सन्त। आपे होए सज्जण सुहेलया, आप बणाए साची बणत। आपे वसे इक्क इकेलया, आपे माया पाए बेअन्त। कलिजुग खेल पारब्रह्म अबिनाशी करते निरगुण आपणा खेलया, आपणी चोली आपे चाढ़े रंग बसन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपे होए आदि अन्त। आदि अन्त एकउँकारा, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा कर पसारा, आप आपणा मेट मिटांयदा। आपे वस्सया धुँधूकारा, धुंधूकार आप रखांयदा। आपे जोती नूर करे उज्यारा, आपे नूरो नूर समांयदा। आप आपणा कर आकारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणी बन्न्हे धारा, आप आपणी धार चलांयदा। लोआं पुरीआं कर पसारा, ब्रह्मण्ड खण्ड सुहांयदा। जेरज अंड रूप अपारा, उत्भुज सेत्ज डेरा लांयदा।

१४३ ०७

त्रैगुण तेरा खेल अपारा, हरि साचा मेल मिलांयदा। कलिजुग तेरा वेख किनारा, हरि साची जोत जगांयदा। शब्द गुर फड़ शब्द खण्डा दो धारा, लोकमात वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी तोड़े गढ़ हँकारा, गढ़ हँकारी रहिण ना पांयदा। करे कराए करनेहारा, कुदरत करता आप करांयदा। जोग जोगीशर जगत जुगत ना पावे सारा, तप तपीशर ना वेख वखांयदा। मुन मुनीशर ना जाणे धारा, सुन्न समाध ना कोए रखांयदा। गुरमुख साजण साचे मेल मिलाए दया कमाए देवे दरस अगम्म अपारा, स्वच्छ सरूपी नज़री आंयदा। कलिजुग नाता कूड़ा मेटे कूड़ पसारा, सतिजुग साचा राह चलांयदा। वीह सौ वीह बिक्रमी तेरां लोक जैकारा, पुरख अकाला आप लगांयदा। चार वरन अठारां बरन सोहण इक्क दुआरा, दीन दयाला वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेला हरि, मेल विछोड़ हथ्थ रखांयदा। सतिगुर पूरा जाणीए, सहिजे सहिज समाए। सतिगुर पूरा जाणीए, सच मंगल नाम गाए। सतिगुर पूरा जाणीए, तन जूह जंगल वेख वखाए। सतिगुर पूरा जाणीए, कदमां जाए ना चल, मंगे मंग ना जगत द्वारीए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेखे घर, सतिगुर पूरा इक्क पछाणीए। सतिगुर गुर गुर गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। आपे लाहे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा मिटाया। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, आपणे विच समाया। सतिगुर पूरा दाता गुणी गहिंद, गुणवन्ता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। गुर गोबिन्दा वड वड्याई, पारब्रह्म सरनाया। राम कौर करे जणाई, शब्द विचोला विच रखाया। आवे जावे चाँईं चाँईं, आवण जावण खेल खिलाया। एक अनेक आप आपणा रिहा वेख, शब्द गुर पंज तत्त कोटन कोट रूप लए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा मेल मिलाया। गोबिन्द मेला ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म विचोला। एका शब्द इक्क निशानी, एका सतिगुर बोला। गुर शब्द उलटाया आपणा चोला, पुरी अनन्द खेले होला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे गोबिन्द तेरा बणया साचा तोला। ब्रह्म जणाई पारब्रह्म जाणया, परम पुरख वड्आया। एका रंग एका संग एका घोड़ा एका तंग, एका आसण वेख ब्रह्मण्ड, आप आपणा उप्पर लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी घट घट वासी एका शब्द इक्क जणाई, एका जोत एका लिव लाई, एका घर वज्जे वधाई, एका मंगल गाया। एका मंगल मंगलाचार, घर साचे वज्जे वधाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, गुर पूरा मेल मिलाईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म विचार, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जरम कर्म ना करे विचार, जिस जन उप्पर आपणी दया कमाईआ। इक्क वखाए सच द्वार, छिन भंगर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोती नूर अपार सरगुण मेले सहिज सभाईआ।

निरगुण मेला सरगुण अन्दर, सोहे घर सुहञ्जणा। आप सुहाए साचा मन्दिर, जोत जगाए इक्क निरँजणा। मुकामे हक्क हक्क ख़ुदा, ऐनलहक्क विचारया। गुरमुख सुरती होए ना कदे जुदा, मिले मेल अट्ठे पहरया। आप आपणा कीता फिदा, आपा उत्तों वारया। एका धाम दसाए गुरमुखां सिध्धा, हाढ़ सतारां ख़ुशी दरस्म दुआरया। आप जणाए आपणी बिधा, सो पुरख निरँजण मेल मिला रिहा। दर दुरकाए रिद्धां सिद्धां, इक्क एका नाम वखा रिहा। सुरत सवाणी घर साचे बहि बहि पाए गिधा, पलँघ इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हाढ़ सतारां दिवस सुहा ल्या। हाढ़ सतारां साची हाढ़ी, प्रभ साचा आप कटांयदा। गुरमुखां मगरों लाहे पंचम धाड़ी, पंचम नेड़ ना आंयदा। होए सहाई पिछे अगाड़ी, आप आपणी सेव कमांयदा। होए सुहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर फेरा पांयदा। अन्तिम रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, सचखण्ड साचे धाम फड़ बाहों आप बहांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ी, आकाश प्रकाश समांयदा। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, राए धर्म दर शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दिवस जगत दिहाड़ा, घर साचे आप मनांयदा। साचा घर साचे शाह, आपणा आप वसाया। आपे वस्सया बेपरवाह, वेखणहारा दिस ना आया। आप सुहाए आपणा थाँ, थिर घर बैठा आसण लाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस वटाया। एका देवे साचा नाँ, सोहँ साची चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हाढ़ सतारां लए मनाया। हाढ़ सतारां सच सिँघासण, हरि एका एक रखांयदा। जोती नूर पुरख अबिनाशन, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। आप मिटाए पृथ्मी आकाशन, हरिसंगत लोकमात तरांयदा। गुरमुख गुरसिख गुर पूरा सद बलि बलि जासण, बलिहारी गुर मेल मिलांयदा। जगत विसूरे सगले नासन, सगली चिन्त मिटांयदा। जन भगतां दर दुआरे होए दासी दासन, दर दरवेशा फेरी पांयदा। घर घर मन्दिर अन्दर निज घर रक्खे वासण, निजानंद समांयदा। पूर कराए जुग जुग आसण, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल तमाशन, खेलणहार आप अख्वांयदा। गुरचरन सच दुआरा, गुर विरला पांयदा। कोटन कोट रहे झक्ख मारा, साचा दर ना कोए सुहांयदा। जो जन मंगे बण भिखारा, प्रभ पूरी भिच्छया पांयदा। आदि जुगादी इक्क वरतारा, इक्क भण्डार वखांयदा। जन भगतां होए सेवादारा, जुग जुग सेव कमांयदा। एका बख़्शे गुरचरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या इक्क समझांयदा। साची सिख्या सतिगुर सेव, रसना शब्द कमाईआ। मिले मेल प्रभ अलक्ख अभेव, सेवक सेवा लेखे लाईआ। रसना गाउणा साची जिह्व, मणीआ मंत बणाईआ। आत्म अन्दर साचे मन्दिर आप खुल्हाए आपणा भेव, आप आपणी बूझ

बुझाईआ। एका गुर एका इष्ट देव, एका हवन एका आरती रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती साचा नाता, आप बंधाए पुरख बिधाता, विछड़ कदे ना जाईआ। जगत विछोड़ा देवे कट्ट, मिले मेल बनवारी। एका लाहा लैणा खट्ट, चढ़े नाम ख़ुमारी। एका वणज एका हट्ट, एका वस्त प्यारी। एका तीर्थ एका तट्ट, इक्क महल्ल इक्क अटारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन कँवल उप्पर धवल देवे दान हरि मेहरवान, कँवल कँवला कर प्यारी। घर विच घर घर विच बाती, घर घर विच जोत जगाईआ। घर विच घर घर मेला कमलापाती, घर घर विच रिहा मिलाईआ। घर अन्धेर घर जोत प्रकाशी, घर घर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन तेरा घर, घर विच रिहा सुहाईआ। घर मन्दिर घर टिकाणा, घर घर वड्डी वड्याईआ। घर शब्द घर नाम बबाणा, घर घर विच रिहा उडाईआ। घर घर विच मेल श्री भगवाना, घर साजन मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण शाहो अख्वाईआ । साजन शाहो साचा भूपा, सति पुरख अख्वाया। आपे जाण आपणा रूपा, रूप रंग ना कोए रखाया। आपणी महिमा जाणे अनूपा, आपे रिहा लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचा मीत प्यारड़ा, मिल्या मेल गोबिन्द। मिटे विछोड़ा यारड़ा, पाया गुणी गहिंद। वसे धाम न्यारड़ा, सदा सदा बख़्शिंद। खेले खेल अपारड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख बणाए साची बिन्द। गुरमुख गुरसिख हरि समाया, हरिजन जोत जगाईआ। आप आपणा संग निभाया, सगला संग तराईआ। एका नइया रिहा चलाया, एका चप्पू लाईआ। चार वरनां भैणां भईआ रिहा बणाया, मात पित आप अख्वाईआ। साचा सईआ हरि रघुराया, साची सखीआं मेल मिलाईआ। पकड़नहारा आपे बहीआ, फड़ बांहों पार कराईआ। चित्रगुप्त ना कढ्ढे वहीआ, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चरन द्वार वखाए सच सरनईआ, सरणगत अख्वाईआ। आदि अन्त एका रहीआ , एका एक वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। हरिसंगत हरि रंग माणया, हरि हरि रूप समाए। गुर सतिगुर साचा जाणया, दर घर सच्ची सरनाए। चले चलाए आपणे भाणया, भाणा आपणे हथ्थ रखाए। गले लगाए जगत निमाणया, गढ़ हँकारी रहिण ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगती लेखे ला रिहा ।

* ३ फग्गण २०१४ बिक्रमी लछमण सिँघ दे घर पुराणे भूरे ज़िला अमृतसर *

निरगुण रूप अपार, निरगुण समाया। निरगुण रूप आकार, निरगुण रखाया। निरगुण रूप निरँकार, निरगुण नाउँ धराया। निरगुण खेल अपार, निरगुण वेख वखाया। निरगुण जोत आकार, निरगुण रिहा जगाया। निरगुण बन्ने धार, निरगुण रिहा उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा हरि उपा, आप आपणी जोत जगाईआ। आप आपणा नाउँ धरा, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा दर सुहा, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा कर आकारा, आप आपणी जोत जगांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपणा संग निभांयदा। आप आपणी कर विचारा, आप आपणा मता पकांयदा। आप आपणी बणया नारा, आप आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप आपणी बणत बणाए, आदि पुरख अबिनाशा। आप आपणी बणत बणाए, आपे वेखे खेल तमाशा। आप आपणा अन्त पाए, आप आपणी पाए रासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण रक्खे वासा। निरगुण हरि निरगुण समाया, निरगुण जोत जगाईआ। निरगुण मण्डल निरगुण रूप निरगुण पाए रासा, निरगुण वेख वखाईआ। निरगुण पृथ्मी निरगुण आकासा, निरगुण धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपाईआ। आप आपणी किरपा कर, दया कमांयदा। जोती नारी आपे वर, आपणा संग रखांयदा। अनादी सुत उपजे घर, शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर वसांयदा। आपणा घर आप वसाए, अकल कला बनवारी। थिर घर साचा नाउँ धराए, उच्च महल्ल अटारी। दीवा बत्ती ना कोई जगाए, निरगुण जोत करे उज्यारी। चार द्वार ना कोई दसाए, छप्पर छन्न ना कोई अटारी। हवण पवण ना कोई कराए, ना कोई पूजा पाठ पुजारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप सुहाए आपणा बंक द्वारी। बंक दुआरा सच महल्ला, हरि आपणा आप उपाया। आपे बैठा इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रखाया। आपे होया अछल अछल्ला, अछल अछल्ल आप अख्वाया। सच सिँघासण आपणा आपे मल्ला, आप आपणी रचन रचाया। आपे होया जोधा सूरबीर वड बलि बलि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा आप सुहाया। साचा घर शब्द सिँघासण, हरि साचा आसण लांयदा। जोती गुर पुरख अबिनाशन, दिवस रैण डगमगांयदा। आपे होए सर्ब गुण तासन, गुणवन्ता अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक सुहाया।

जोत जगाई आदि निरँजणा, आदि पुरख अख्वाया। आप आपणा होया दर्द दुःख भय भञ्जणा, आप आपणा होए सहाया। आप आपणा करया मजना, आप आपणा तीर्थ नुहाया। आप आपणा पड़दा आपे कज्जणा, आपे पड़दा रिहा पाया। आपणा नगारा आपणे घर हरि आपे वज्जणा, आपणा नाद रिहा वजाया। आपे रक्खे आपणी लज्जणा, लाजावन्त आप हो आया। आपणा घर थिर हरि आपे तजणा, आपे रिहा वसाया। ना घड़या ना भज्जणा, ना मेटे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत लए उठाया। शब्द सुत हरि कर त्यार, आपणी दया कमांयदा। आपे करया ख़बरदार, आप आपणी सेवा लांयदा। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड लए उसार, आप आपणे रंग रंगांयदा। आप आपणी बन्ने धार, वेखणहार आप अख्वांयदा। शब्द सुत हरि कर प्यार, सच समग्री झोली पांयदा। आदि अन्त एकँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी शब्द ब्रह्मादी आदि जुगादी आपणी रचन रचांयदा। शब्द सुत वड बलवाना, आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा कर पछाना, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा गाया तराना, आप आपणी धुन वजांयदा। आप आपणा बद्धा गाना, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा कर निशाना, आप आपणा तीर चलांयदा। आप आपणा कर परवाना, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणा वेखे मार ध्याना, आप आपणा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत देवे वर, शब्द सरूप भण्डार भरांयदा। साची वस्त हरि खोल्ह भण्डारा, साचे सुत जणाया। नाम वस्त अपर अपारा, तेरी झोली पाया। लोआं पुरीआं बन्ने धारा, आकाश प्रकाश समाया। गगन गगनंतर रवि ससि सूरज चन्न दीपक जोती बन्ने धारा, रूप अनूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दित्ता वर, आत्म अन्दर गया वड़, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा ल्या घड़, आप आपणी नाभी गया समाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई सके फड़, ना हथ्थ किसे आईआ। आप आपणे नाल रिहा लड़, ना दूसर कोई दसाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपणी विद्या आप जणाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दए वड्याईआ। साचा सुत शब्द दुलारा, दोए जोड़ करे निमस्कारया। आदि पुरख तेरा खेल अपारा, तेरा भेव कोए ना पा रिहा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त निराधारा, निरवैर रूप समा रिहा। आदि शक्त कर आकारा, मूर्त अकाल वखा रिहा। साची सूरत हरि निरँकारा, रूप रंग ना कोए जणा रिहा। साचे सुत किया प्यारा, आप आपणा झोली पा रिहा। आप आपणा कर पसारा, आप आपणा बाहर कढा रिहा। नाभी कँवली खेल अपारा, पारब्रह्म करा रिहा। पारब्रह्म प्रभ

बेऐब परवरदिगारा, आप आपणा अंग कटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी अणस आपे आप उपा रिहा। आपणी अणस हरि उपाए, आपणी दया कमांयदा। आपणा बंस रिहा बणाए, सरबंस आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण मूल तेरा रूप, हरि शाहो भूप आपणा रूप उपांयदा। त्रैगुण माया घर घर वेस, हरि साचे रचन रचाईआ। आप उपाया ब्रह्मा विष्न महेष, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आप आपणा ल्या वेख, आपणी करे कुड़माईआ। सुत शब्द हो प्रवेश, साची रचना रिहा रचाईआ। आदि पुरख सदा आदेस, निरगुण वड वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आप आपणी बणत बणा, आपणा कर्म कमा रिहा। आपणा कर्म रिहा कमा, पंज तत्त करे प्यारया। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश गया समा, दिस किसे ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मात पाताल आकाश प्रकाश एका रंग रंगा रिहा। आप आपणा रंग रंगा, आपणी जोत जगांयदा। ब्रह्मा आपणी सेवा ला, त्रैगुण झोली पांयदा। लक्ख चुरासी बणत बणा, हर घट सेवा लांयदा। निरगुण रूप हरि बेपरवाह, सरगुण संग निभांयदा। सरगुण तेरी पकड़े बांह, समरथ पुरख अख्वांयदा। आप आपणा शब्द जणा, सेवक साची सेवा लांयदा। चारे वेदां लए लिखा, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा कर्म कमा, आप आपणी वंड वंडांयदा। आप आपणा नाम धरा, आप आपणा धर्म धरांयदा। आपे लए वेख वखा, आप आपणा कर्म कमांयदा। आपणा लेखा लए लिखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण जोत हरि निरँकार, सरगुण विच समाईआ। मन मति बुध कर प्यार, आपणी जोती जोत रमाईआ। आप वसाया सच्चा घर बार, काया मन्दिर इक्क रखाईआ। आपे करया बन्द किवाड़, आपे बैठा कुण्डा लाहीआ। जगत वखाए नौ द्वार, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाईआ। आप आपणा कर पसर पसार, आप आपणा मुख छुपाईआ। साचे घर कर आकार, जोत सरूपी डगमगाईआ। आप आपणी सुणे पुकार, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा करे मंगलाचार, आप आपणा गीत अल्हाईआ। अनहद गाए वारो वार, पंचम मेला सहिज सभाईआ। पंचम सखीआं कर प्यार, हरि साचा कन्त ख़ुशी मनाईआ। साचे घर जोत प्रकाश, बेअन्त बेअन्त बेअन्त घर दसवां इक्क सुहाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण आपणा अंग कटा, आपणी दया कमांयदा। सो पुरख निरँजण आप अख्वा, करता पुरख आप हो जांयदा। ब्रह्म रूप हरि हँ बणा, हर घट अन्दर आसण लांयदा। आदि रूप हरि शाहो भूप, लक्ख चुरासी वंड वंडांयदा। आपे वस्सया चारे कूट, दहि दिशा आप समांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटांयदा। आप आपणा अंग कटा, आपणा नउँ धराया। सो पुरख निरँजण आप अख्वा, हँ हँगता विच समाया। ओअँ ओअँ विच समा, सोहँ साचा जाप जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूजा भेव चुकाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, एका कल वरतांयदा। दूजा कर हरि पसारा, आपणा नाउँ धरांयदा। सोहँ शब्द अपर अपारा, सति पुरखा आप सुहांयदा। चौथा पद कर विचारा, साचा घर सुहांयदा। निर्मल जोत करे उज्यारा, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। धुन शब्द वज्जे जैकारा, धुन आत्मक इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोए घर आप हो जांयदा। तीजा घर आपे खोल्ह, हरि आपणी दया कमाईआ। तीजे नेत्र करे चोल्ह, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। आपणा पड़दा आपे फोल, आपणा मुक्खड़ा आप वखाईआ। आप वजाए आपणा मृदंग ढोल, सोहँ साची सेवा लाईआ। अनहद वेखणहारा घोल, पंचम शब्द फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त संग रखाए हड्ड मास नाड़ी रत्त, रक्त बूंद बणत बणाईआ। रक्त बूंद हड्ड मास चम्म, हरि साचे जोड़ जुड़ाया। पवण स्वासी रक्खया दम, निरगुण सरूप दिस ना आया। नौ दर वखाए जगत कम्म, दसवां गुप्त जणाया। शब्द सुत काया मन्दिर आपे पए जम्म, मात पित ना कोई अख्वाया। आपे जाणे आपणा धर्म, वरन बरन ना कोए जणाया। आप कमाए आपणा कर्म, हरि किरती कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। आप आपणा भेख वटा, प्रगट जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी गया समा, दिस किसे ना आंयदा। आप उपाए आपे लए मिटा, आप आपणे विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात, धरत धवल सुहांयदा। लोकमात कर पसारा, धरनी धरत सुहांयदा। आप आपणा कर आकारा, आप आपणा रूप वटांयदा। आप आपणा लए अवतारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे होए दुश्ट हँकारा, मारनहार आप अख्वांयदा। आपे वंडे वंड अपारा, आपणी वंडां आप करांयदा। आप आपणा कर प्यारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अंग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा मृदंग वजांयदा। शब्द मृदंग वजाए ढोल, आदि पुरख अबिनाशी। आपणा पड़दा आपे खोल्ह, वेख वखाए पृथमी आकाशी। आपणे कंडे आपे तोल, लक्ख चुरासी देवे फाँसी। आपणी जोती आपे मौल, जन भगतां करे बन्द ख़लासी। आपणी बोली आपे बोल, बोले शब्द हरि शाहो शाबाशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग पाए साची रासी। सतिजुग साचा वेख वखा, हरि साचा कर्म कमांयदा। वार अठारां जोत जगा, आपणा लहिणा आपणी झोली पांयदा। धरनी धरत धवल दए सुहा, जन भगतां वेख वखांयदा। आपणी करनी आप कमा, दूती दुश्ट मिटांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेते तेरा वेख घर, राम रामा रूप समांयदा। राम रामा राम अवतारी, परसणहार परसा। दोए मेल इक्क दरबारी, आपे मेटे आपणी हरसा। आपे चिल्ला तीर कमान बणे कटारी, आपे गढ़ हँकारी धरसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल भगती मेल, भरत मेघ आपे बरसा। आपे दुष्ट हँकारा, आपे राम अख्वांयदा। आपे तोड़े लंका गढ़ अपारा, आपे तीर चलांयदा। आपे मेले कर प्यारा, मेल विछोड़ा आप करांयदा। आपे गऊ ग़रीबां पावे सारा, जन भगत दुआरा वेख वखांयदा। खेले खेल खेलणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता तेरा त्रीया वेस आपे पार करांयदा। द्वापर तेरा वेखे जोर, आपणा भेख वटाईआ। वेद व्यासा खिच्चे डोर, शब्दी तणक लगाईआ। पुराण अठारां पड़दा खोल्ह, लेखा लेख लिखाईआ। लिखे लेख पूत सपूता प्रगट होए ब्रह्मण गौड़, निहकलंका नाउँ रखाईआ। आपणे मन्दिर आपे लाए पौड़, डण्डा कोए दिस ना आईआ। आपणी नगरी आपे जाए बौहड़, आवण जावण आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे परखणहारा मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। गुरमुख साजन सन्त सुहेले जुग विछड़े जग लए जोड़, धुर दरगहि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। आप आपणी अलख जगा, आप आपणा कर्म कमाया। आप आपणा भेख वटा, आप आपणा जामा पाया। मकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वा, मोहन माधव रूप समाया। सुन्दर कुण्डल मुकट बैन कँवल नैण आप चमका, नाम बंसरी इक्क वजाया। गीता ज्ञान हरि चरन ध्यान इक्क दृढ़ा, भगत सुहेला लए जगाया। बिप्पर सुदामा गले लगा, बिदर निमाणा लए तराया। द्रोपत लज्जया लए रखा, हँकारी दुष्ट दए खपाया। द्वापर तेरा अन्त करा, दुरबाशा होए सहाया। कलिजुग तेरा रूप वटा, काला सूसा तन छुहाया। मन मति तेरी झोली पा, एका लेखा रिहा लिखाया। बोध ज्ञाना अगाध बोध आप जणा, जोग जुगत वेख वखाया। ईसा मूसा संग रला, साची धार बणाया। इक्क मुहम्मद ल्या मना, अहिमद रूप वटाया। चार यारी मता पका, अल्ला राणी नाल प्रनाया। एका कलमा ल्या पढ़ा, अल्ला हू नाअरा लाया। ऐनलहक्क वेख वखा, मन्सूर मेल मिलाया। मुकामे हक्क ख़ुदाए दए वखा, ख़ुदी ख़ुदाई दए गंवाया। पीर फ़कीर शाह हकीर आप अख्वा, बेऐब परवरदिगारा रूप वटाया। आपणी झोली आपणे अग्गे आपे डाह, आपणी भिच्छया आपे पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणा कर्म कमाया। सच मुहम्मद सच पुकार, घर साचे रिहा सुणाईआ। एका मंगे मंग भिखार, अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा कर प्यार, तेरी होवे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी विद्या आपे

रिहा पढ़ाईआ। आपणी विद्या आप पढ़ा, आपणा राह वखाया। नबी रसूल आप जणा, अन्त रिहा कराया। भेखाधारी भेख वटा, लहिणा देणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक वसे संग, हरि शाह मलँघ, दिस किसे ना आया। मुहम्मद मंगे मंग अपारा, चौदां लोक जणाया। इत्तल वित्तल सितल तेरा खेल अपारा, तलातल महातल रसातल खोलॢ दुआरा, पाताल लोक तेरा खेल न्यारा, बासक सेजा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चतुर्भुज तेरा रूप, आपे वेखे सति सरूप, नूरो नूर समाया। नूरो नूर नूर अलाही, नूरो नूर समांयदा। सति लोक उप्पर वेखे बेपरवाही, आपणा मन्दिर आप सुहांयदा। भूअ लोक जाए चाँईं चाँईं, दूवह लोक फेरा पांयदा। स्वर्ग लोक एका नाईं, मुहरर डेरा लांयदा। जप लोक ना मिले थाँईं, तप लोक ना कोई तपांयदा। सति लोक प्रभ तेरी जोत करे रुशनाई, साचा धाम सुहांयदा। चौदां लोकां मंग मंगा, चौदां हट्टां वेख वखांयदा। चौदां लोकां चौदां तबका वेखे बेपरवाही, चौदां चौदां रंग रंगांयदा। बीस बीसा करे कुड़माई, जगत जगदीशा खेल रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुहम्मद देवे साचा वर, चौदां चौदां झोली पांयदा। चौदां चौदां हरि झोली पा, पिछला मूल चुकाया। कलिजुग कूड़ गया छा, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाया। जीव जन्त रोवण मारन धा, ना दीसे कोई सहाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी करे सलाह, आप आपणा संग निभाया। पंज तत्त विच गया समा, शब्दी सुत टिकाया। निरगुण रूप अगम्म अथाह, आपणा खेल खिलाया। पंज तत्त जग नाउँ धरा, नानक नानक अखवाया। शब्द गुर किसे दिसे ना, ना कोई वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाया। नानक मिल्या हरि निरँकार, एका लिव लाईआ। एका गुर इक्क प्यार, एका ओट रखाईआ। एका शब्द एका धुन्कार, एका नाद वजाईआ। एका घर इक्क महल्ल उच्च मुनार, एका घर बैठा आसण लाईआ। एका पुरख एका नार, एका सेज वछाईआ। एका मीत इक्क मुरार, एका मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक नामा नाम वर, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। सुरत शब्द जुड़या जोड़ा, नानक निरगुण रूप समाया। धुरदरगाही मिल्या घोड़ा, प्रभ साचे आप चढ़ाया। दो जहानां वखाया एका पौड़ा, एका डण्डा लाया। नानक गुर निरँकार निरवैर निरगुण आपे बौहड़ा, निज घर साचा दए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर रिहा बुलाया। अकाल पुरख निरवैर निरँजण, आदि पुरख दया कमाईआ। नानक गुर जणाया साचा सज्जण, शब्द विचोला इक्क रखाईआ। दर दुआरे आउणा करना मजन, एका धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग

लगाईआ। नानक गुर सुण सतार, आपणी सतार हिलाईआ। शब्दी शब्द मार उडार, शब्दी खेल खिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ ढहि पया द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सति पुरख निरजंण आप आपणी इक्क अवाज़ लगाईआ। फड़ फड़ आपणे गल पाए हार, आप आपणा तन श्रृंगार वखाईआ। रूप रंग ना रेख भेख कोई करतार, नानक गुर वेख वेख बिगसाईआ। निर्मल जोती इक्क आकार, रवि ससि कोई दिस ना आईआ। बेअन्त बेअन्त रिहा उचार, बेअन्त तेरी वड वड्याईआ। मिल्या नानक नारी हरि साचा कन्त, थिर घर साचे सेज हंढाईआ। प्रभ काया चोली चढ़या रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। प्रभ झोली पाया शब्द नाम सति, देवे वड वड्डी वड्याईआ। पार कराए पंज तत्त, लोकमात करे कुड़माईआ। जीवां जन्तां देवे धीरज जत, सति सन्तोख इक्क वखाईआ। नाड़ बहत्तर ना उब्बल रत्त, जो जन रसना जिह्वा गाईआ। जन भगतां रक्खे अन्तिम पति, दो जहान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, एका रंग रंगाईआ। नानक गुर वर घर पा, लोकमात उठ धाया। ख़ाकी ख़ाक प्रभ डेरा ला, ख़ाकी ख़ाक दए समझाया। चारों कुन्ट फेरा पा, मूर्ख मूढ़ सुघड़ स्याणे दए कराया। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, ज्ञान डण्डा एका लाया। शब्द खण्डा हथ्थ उठा, सृष्ट सबाई फेरा पाया। नौ खण्ड रिहा जणा, नाम सति मन्त्र इक्क दृढ़ाया। कुलाखण्ड फेरी पा, कुष्टी लए बचाया। इल्लाबुत दए सलाह, केतमाल करे रुशनाया। किं पुरख हरि शब्द जणा, हरवरख रिहा सुणाया। हरणयमह गुर जोत जगा, जोग जुगीशर इक्क वखाया। भद्र डेरा आपणा ला, भरम गढ़ दए तुड़ाया। रमक आपणी खेल खिला, एका वरन रिहा वखाया। भारत खण्ड आप समझा, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। अन्तिम आपणा वेख वखा, आप आपणा वेस वटाया। पंज तत्त दए तजा, अंगद अंग लगाया। अंगद जोती जोत जगा, शब्दी शब्द सुणाया। अनहद राग इक्क अल्ला, अनादी धुन वजाया। सेवक सेव रिहा कमा, साची सेवा इक्क वखाया। अमरू निथांवां झोली पा, आपणे अंग लगाया। मस्तक तिलक नाम लगा, जोत लिलाट टिकाया। चौथे गुर होए सहा, सर सरोवर इक्क सुहाया। रामदास तेरी पकड़े बांह, गुर अर्जन मेल मिलाया। गुर अर्जन भेव दए खुल्ला, अगाध बोधा शब्द चलाया। आप आपणी सेवा ला, आपणा कर्म कमाया। आपणी जोती आप टिका, हरि गोबिन्द लए उठाया। शस्त्र बस्त्र तन सजा, पीर फ़कीर अख्वाया। जोधा सूरबीर डंका रिहा वजा, एका खण्डा हथ्थ उठाया। हरिराए हरि गया समा, हरि हरि रूप वटाया। हरिकृष्ना दए उपा, बाल अञ्याणे मूल चुकाया। तेग बहादर सेवा ला, आपणा सीस भेट चढ़ाया। जगत जगदीसा दया दए कमा, गुर गोबिन्द लए उठाया, गुर गोबिन्द अंग लगा, पूत सपूता आप तराया। पुरी अनन्द

वेख वखा, अन्त विछोड़ा कराया। सरसा तेरा लहिणा लए चुका, आपणा लेखा तेरे विच रुढ़ाया। गढ़ी चमकौर दए सुहा, सीस ताज तेरी भेट चढ़ाया। माछूवाड़े डेरा ला, सथ्थर प्यारा इक्क विछाया। इक्क सनेहुड़ा रिहा सुणा, सुण दाते बेपरवाहया। तेरा भाणा तेरे विच ल्या रखा, तेरा तेरी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रभ साचा होए सहाया। पुरख अबिनाशी शब्द जणाई, एका शब्द जणांयदा। सिँघ गोबिन्द विच हिन्द तेरी जोत होए रुशनाई, कूड़ कुड़यारा मेट मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाई, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। कल्गी तोड़ा जोती जोड़ा शब्दी घोड़ा इक्क दौड़ाई, लोआ पुरीआं फेरा पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर रोवण मारन धाहीं, ना कोई धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। गुर गोबिन्द दए सलाह, दर करे हरि निमस्कारया। कलिजुग अन्तिम कवण मलाह, कवण करे पार किनारया। चार वरन वखाए कवण राह, कवण दए सहारया। अन्तिम वेले पकड़े कवण बांह, कवण कराए नाम जैकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्मी इक्क अवाज़ सुणा रिहा। शब्द अगम्मा सच सलोक, हरि साचा आप सुणांयदा। हरि हरि भाणा कोई ना सके रोक, ना कोई मेट मिटांयदा। प्रभ शब्द अधारे तिन्ना लोक, हरि शब्दी मेट मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा लक्ख चुरासी देवे झोक, गुरमुख विरला सन्त तरांयदा। तेरा दरस अन्तिम वेले साची मोख, पूजा पाठ मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे वर आप समझांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, हरि साचे शब्द जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ जामा पाउणा आपणा भेख वटाईआ। निहकलंका नाउँ रखाउणा, जोती जोत जगाईआ। गुर गोबिन्द संग रलाउणा, गुर गोबिन्द वज्जे वधाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाईआ। इट्ट गारा ना कोई लाउणा, ना कोई छप्पर छन्न सुहाईआ। मन मति बुध ना कोई समझाउणा, ज्ञान ध्यान ना कोई वड्याईआ। पूजा पाठ ना कोई कराउणा, एका दरस वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साचा आण तराउणा, जो सरसे ल्या रुड़ाईआ। आपणा लेखा फेर लिखाउणा, जल धारा भेट कराईआ। सम्मत सोलां ख़ुशीआं नाल मनाउणा, हरि जोती जोत करे रुशनाईआ। वीह सौ बिक्रमी संग रखाउणा, दोहां मेल मिलाईआ। सन्त साजन मीत मुरार फड़ फड़ बांहों आप उठाउणा, हरि शब्द करे कुड़माईआ। माया ममता दूई द्वैती हउमे हँगता पड़दा लौहणा, सच सुच्च वज्जे वधाईआ। चार वरन ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका थाँ बहाउणा, एका धाम सुहाईआ। तीजा नैण हरिजन साचे आप खुलाउणा, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। चौथे पद डेरा लाउणा, गुरमुख वड वड्डी वड्याईआ। पंचम मेला घर साचे पाउणा, पंचम ख़ुशी

मनाईआ। छेवे दर इक्क सुहाउणा, हरि शब्दी शब्द समाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप आपणा मूल चुकाउणा, जोती जोत टिकाईआ। अट्ठां तत्तां रहिण ना पाउणा, ना कोई आकार जणाईआ। नौ दरवाजे बन्द कराउणा, लोकमात होए जुदाईआ। दस्म दुआरी मेल मिलाउणा, गुरसिख वड्डी वड्याईआ। गुर सतिगुर साचे कर्म कमाउणा, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। वीह सौ चौदां बिक्रमी लेख लिखाउणा, वीह सौ पन्दरां करे रुशनाईआ। वीह सद सोलां घर घर जीव जन्त उठाउणा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। दर दर नर नारी रोणा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सम्मत सतारां वेखे आपणे अक्खरां, बिधना लेख मिटाईआ। मनमुख टक्करां मारन पथ्थरां, ना लए कोई बचाईआ। मावां पुत्तरां रोवण कढ्ढ कढ्ढ अथ्थरां, नेत्र नीर वहाईआ। लाड़ी मौत विछाए सथ्थरां, धरत मात गोद विछाईआ। खेले खेल सम्मत अठरां, दस अट्ठ अठारां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जल धारा इक्क वहाईआ। वीह सद उन्नी चढ़े उनीसा, हरि साचे रंग रंगाउणा। राज राजानां शाह सुल्तानां खाली खीसा, सिर ताज दिस ना आउणा। धाईं मारन ईसा मूसा, मुस्लिम सुन्नी रहिण ना पाउणा। अल्ला राणी ना पढ़ाए कोई हदीसा, बगल कुरान ना किसे उठाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका तीर चलाउणा। एका चिल्ला एका तीर इक्क कमाना, एका रिहा उठाईआ। एका जोधा एका सूर एका बली इक्क बलवाना, एका करे लड़ाईआ। एका धार विच संसार कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि भगवाना रिहा चलाईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा करे ख़बरदार, सोया पूत रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस सद बीस आपणी आप करे वड्याईआ। बीस बीसा हरि गोबिन्दा, हरि हरि रूप समाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां मेटे सगली चिन्दा, सृष्ट सबाई एका रंग चढ़ाया। हरिजन उपाए साची बिन्दा, साचा मन्त्र ज्ञान गुर एका नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाना दानी वड गुणी गहिंदा गहर गम्भीर अख्वाया। गहर गम्भीर डूँघा सागर, हरिजन सार ना पाईआ। जन भगतां जोत जगाए काया गागर, निर्मल कर्म करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई वरन चार बरन अठारां करे एका नाम सौदागर, एका वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। नर नरायण हरि भगवन्ता, भगतन रूप समांयदा। भगतन मीता साचा कन्ता, सच सुहाग आप अख्वांयदा। आप बणाए साची बणता, आप आपणा सांग वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वर, सतिजुग साचा संग रलांयदा। सतिजुग साचे लै अंगड़ाई, हरि साचा आप जगांयदा। बीस बीसे आउणा चाँईं चाँईं, लोकमात राह वखांयदा।

जन भगतां पकड़ी आपे बाहीं, आपणा मार्ग आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सनेहुड़ा देवे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। दीनां नाथ दया निध दाता, गुरमुख मेल मिलांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, धरत धवल सुहांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, अमृत नाभी कँवल चवांयदा। साचा मेला कमलापाता, विछड़ कदे ना जांयदा। सखा सुहेला पिता माता, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख वखांयदा। हरिजन साचा मीतड़ा, हरि हरि मेल मिलाए। काया चोली रंगे चीथड़ा, एका रंग चढ़ाए। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा लिख्त विच ना आए। काया मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म मुख चुआए। रस देवे साचा मीठड़ा, अनरस सहिज सुभाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म जोती दीप जगाए। आत्म जोती शब्द ज्ञाना, गुरमुख विरले पाया। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, सो जन पार कराया। आत्म अन्तर शब्द निरंतर बन्ने गाना, जगत बसन्तर दए बुझाया। एका मन्त्र गुण निधाना, आप आपणा दए जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। गुरमुख साचा सज्जणा, मिल्या शाहो शाबाश। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, जगत तृष्ना होवे नास। गुर पूरे अन्तिम पड़दा कज्जणा, सदा सुहेला वसे पास। जो घड़या सो भज्जणा, मनमुख रहे उदास। शब्द नगारा एका वज्जना, हरिजन लेखे लाए स्वास। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, निज घर आत्म रक्खे वास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, पार कराए पृथ्मी आकाश। गुरमुख साचे सज्जण साचा घर, हरि हरि एका पाया। एका मिल्या साचा वर, एका नाम ध्याया। आवण जावण चुक्के डर, लक्ख चुरासी फंद कटाया। सरन सरनाई जो जन जाए पड़, मात गर्भ फेर ना आया। लेखे लग्गे सीस धड़, लेखा लेखे लए लाया। इक्क वखाए साचा गढ़, कंचन कोट सुहाया। गुरमुख विरला वेखे उप्पर चढ़, जिस जन सतिगुर साचा लए चढ़ाया। मनमुख जीव नौ दुआरे पंच विकारे रहे सड़, माया ममता मोह वधाया। जगत तृष्ना रहे सड़, सांतक सति ना कोई कराया। गुरमुख विरले गुर पूरा आप फड़ाए आपणा लड़, बंक दुआरा दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहार हरि समरथा, गुरसिख आप तरांयदा। आपे रक्खे दे कर हथ्था, आपे संग निभांयदा। आप चढ़ाए साचे रथा, रथ रथवाही आप हो जांयदा। आप सुणाए शब्द अकथा, कथनी कथ ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा सच घर वस्सया, घर साचे वज्जी वधाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। शब्द निराला तीर गुर पूरे एका कस्सया, बजर कपाटी किला तुड़ाईआ। पंज तत्त हँकारी

फिरे नस्सया, बैठे मुख छुपाईआ। गुर शब्द अन्दर मन्दिर बहि बहि हस्सया, साचा धाम सुहाईआ। हरिजन हिरदे अन्दर हरि हरि वस्सया, हरि मेला सहिज सभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुन आत्मक इक्क वजाईआ। आत्मक धुन शब्द अनादा, हरि साचा आप वजांयदा। शब्द जणाई बोध अगाधा, बोध अगाध आप अख्वांयदा। मेल मिलाए माधव माधा, मोहण मोहणी रूप वटांयदा। आपे होए साधन साधा, साध सन्त आप तरांयदा। आपे खेले खेल आदि जुगादा, जुग जुग खेल खिलांयदा। वेख वखाए हरि ब्रह्मादा, पारब्रह्म सदांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची वंड वंडांयदा। हरिजन साचे वंडी वंड, एका नाम धराया। दो जहानी बन्नी गंढ, एका पल्लू फड़ाया। सति सन्तोखी वरती ठंड, सीतल धार चलाया। सुरत सवाणी ना होए रंड, गुर शब्दी कन्त हंढाया। लेखे लाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन ल्ए वर, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। दर द्वार ग़रीब निवाजा, आपणा आप खुल्हांयदा। आप आपणा साजन साजा, आप आपणा मार्ग लांयदा। आप आपणा रचया काजा, आपे वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगटे देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, सति सरूप आप अख्वांयदा। एका अस्व एका घोड़ा ताजा, शाह अस्वार आप हो जांयदा। भगत जनां हरि रक्खे लाजा, कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। शब्द सरूपी शब्द अगम्मड़ा अगम्मड़ी मारे वाजा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत मिलांयदा। जोती जोत हरि हरि मेला, गुरमुख आप कराया। आपे गुरू गुरु गुर चेला, चेला आप अख्वाया। आपे साजन सज्जण सुहेला, सगला संग निभाया। आपे वस्सया इक्क अकेला, अकल कला अख्वाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग तेरी अन्तिम वार खेला, जोती जामा भेख वटाया। जन भगत दुआरे जोत निरँजण चाढ़े तेला, पंचम सखीआं बहि बहि मंगल गाया। पंचम पायण वारो वारी वेला, साचा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचा रंग, एका रंगण नाम रंगाया। नाम रंगण रंग चलूल, रंगणहार करतारा। गुरमुख साजन ना जाए मात भूल, बख्शणहार आप करतारा। आप चुकाए लहिणा देणा पिछला मूल, हरि शब्द भरे भण्डारा। नारी कन्ता मेल हरि कन्त कन्तूहल, आत्म सेजा करे प्यारा। सोहँ बरखे साचे फूल, बरखणहार आप निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण मेला सच घर, सरगुण पार उतारा। हरि पुरख अथाह, हरि हरि अख्वाया। हरि दाता बेपरवाह, भेव कोए ना पाया। आपे जाणे आपणी सिफ्त सलाह, आप आपणा मार्ग लाया। आप आपणी बणत बणा, आप आपणी रचन रचाया। आपणी जोती आप जगा, आपणा आप धराया।

१५७ ०७ आपणा शब्द आप सुणा, आपे रिहा अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत आपे मेट मिटाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त जना, जिस जन एका बूझ बुझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए उपा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। त्रैगुण माया झोली पा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। पंज पंजी मेल मिला, मन मति बुध नाल प्रनाईआ। बहत्तर नाड़ी ताणा नाल रला, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी आप धरा, आप आपणा रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे सर्ब लोकाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त, हरि साची रचन रचाईआ। आप बणाई आपणी बणत, आपे मेट मिटाईआ। गुरमुख विरला जाणे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्त, गूढ़ी नींद सवाईआ। आप आपणा जाणे आदि अन्त, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। जुग जुग खेल हरि खिलंदड़ा, एका खेल खिलारी। जोती जामा भेख वटंदड़ा, आदि पुरख हरि निरँकारी। राज जोग जुगत आपणे हत्थ रखंदड़ा, सति पुरख वड बलकारी। लक्ख चुरासी आप उपाए आपे मेट मिटंदड़ा, आपे पावणहारा सारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी कारी। आपणी कार हरि आप कमाए, करनहार करतारा। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर वेख विचारा। कलिजुग तेरी धार चलाए, कूड़ो कूड़ पसारा। नानक गुर लेख लिखाए, कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक अवतारा। गुर गोबिन्द आस रखाए, पुरख अबिनाशी बन्ने धारा। सर्ब बख्शिंदा आप हो जाए, खेले खेल अपर अपारा। मनमुख जीव निन्दा लाए, गुरमुख विरले बूझ बुझाए हरि निरँकारा। शब्द खण्डा हत्थ उठाए, तिक्खीआं रक्खे दोवें धारा। जेरज अंडा वंड वंडाए, नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा। सत्तां दीपां फेरी पाए, ब्रह्मा शिव देवत सुर राजा इन्द करे विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल अपारा। कलिजुग कूड़ा कूड़ अडम्बर, कूड़ी रचन रचाईआ। कूड़ी माया कूड़ स्वयम्बर, कूड़ी बणत बणाईआ। कूड़ मिटाए कूड़ खपाए प्रगट होए सर्ब घट अन्तर, कूड़ कूड़ा दए खपाईआ। इक्क जपाए साचा मन्त्र, चार वरन आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेख आपे वेख, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साची जोत करे रुशनाईआ। चार युग जुग आरजा, हरि साचा आप मिटाए। सतिजुग संवारे कारजा, लक्ख सतारां अठाई हज़ार वेख वखाए। त्रेता तेरी पावे सारजा, बारां लक्ख हज़ारा छिआनवें आपणे पेटे आप रखाए। द्वापर तेरी बन्ने धारजा, अट्ठ लक्ख चौसठ हज़ार गेड़ा आपणे हत्थ रखाए। कलिजुग आई वारजा, चार लक्ख बत्ती हज़ार लेखा मूल चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वंड १५७ ०७

वंडाए। चार लक्ख बत्ती हज़ार मंगी मंग, कलिजुग वंड वंडाईआ। कूड़ी क्रिया होई संग, कर्म कुकर्म करे लड़ाईआ। हउमे हँगता करया नंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम औध, गुर गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। गोबिन्द गुर लेख लिखारा, कलिजुग वेख वखांयदा। मंगे मंग दर दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, आपणे अंग लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ गोबिन्द उपाई साची बिन्द, पिता पूत पूत सपूता आप हो जांयदा। गुर गोबिन्द साचा गुर, एका शब्द अलांयदा। प्रभ अबिनाशी तेरा भाणा जाणा धुर, धुर दरगाही आप वखांयदा। लेखे लौणे देवत सुर, करोड़ तेतीसा वेख वखांयदा। ब्रह्मा शिव हथ्थ तेरे डोर, ना दूसर कोए रखांयदा। कलिजुग अन्तिम होए अन्धेर घोर, सच प्रकाश ना कोए वखांयदा। घर घर अन्दर वस्सया पंज चोर, माणस कोई ना बन्ने लांयदा। आपणी आपणी चलदे तोर, गुरमति ना कोए प्रनांयदा। चार वरनां पए शोर, धीरज धर्म ना कोए धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द एह समझांयदा। गुर गोबिन्द सच ध्यान, हरि साचे इक्क रखावणा। कलिजुग अन्तिम करे पछाण, कलिजुग जीवां कीता आपणा पावणा। धरत मात मंगे दान, नेत्र रो रो नीर वहावणा। साध सन्त सर्ब कुरलाण, अट्ठे पहर इक्क निशान वखानणा। प्रगट होवे हरि भगवान, भेखाधारी भेख करे जिउँ बावणा। गढ़ हँकारी तोड़े माण, जिउँ रामा घाए रावणा। जूठा झूठा वेखे जीव जहान, दुर्योधन हँकारी दिस ना आवणा। कलिजुग अन्तिम चुक्के काण, हरि मारे तीर निशानणा। सो पुरख उठाए साचा बाण, सोहँ मुखी अग्गे लगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नाम अख्वावणा। गुर गोबिन्दे चढ़या चा, प्रभ साचे संग रखाया। एका मंग रिहा मंगा, तेरा मेरा रूप समाया। साची सिख्या इक्क समझा, नेत्र वेख्या भुल्ल ना जाया। आपे लेखा दई मिटा, लिखणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा दर, अन्त विछोड़ा रहिण ना पाया। पारब्रह्म सिर हथ्थ रक्ख, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। तेरी लज्जया लए रक्ख, कलिजुग अन्तिम होए सहाईआ। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, सम्बल नगरी दए सुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी उडणे कक्ख, राज राजान शाह सुल्तान ना सके कोई बचाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले करे वक्ख, जो सरसे गया रुढ़ाईआ। जीव जन्त जग मारन झक्ख, बिन गुर पूरे ना कोए पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द एह समझाईआ। गुर गोबिन्द वर घर पा, फतहि जैकारा लाया। पन्थ ख़ालसे गया समझा, आपणा भेव छुपाया। मेरा रूप कोई जाणे ना, दिस किसे ना आया। पंज तत्त रंग कोई माणे

ना, थिर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। गुर गोबिन्दा बोल जैकारा, एका एक सुणांयदा। मेरा तेरा इक्क प्यारा, तेरा मेरा रूप अख्वांयदा। जो जन वेखे मंगे इक्क दुआरा, भेव अभेदा आप खुलांयदा। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। अगाध बोध बोध अगाधा चिल्ला शब्द अपारा, शब्द गुर शब्द विच समांयदा। इक्क सुणाया साचा नाअरा, पन्थ ख़ालसा सुण लै सारा, जिस जन करना चरन प्यारा, सो जन मेल मिलांयदा। भेखी भेख करे न्यारा, आप आपणी जाणे धारा, रूप अनूप दरसांयदा। वेस अनेक अकल कल धारा, जोती नूर साची कलग़ी शब्दी तोड़ा सीस टिकांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़े चढ़या घोड़ा, नीला नीली धारों पार करांयदा। धुरदरगाही आया दौड़ा, लोकमात राह तकांयदा। पूत सपूता वेखे ब्रह्मण गौड़ा, उच्चा पर्बत बजर कपाटी किला तोड़ तुड़ांयदा। लक्ख चुरासी वेखे मिट्ठा कौड़ा, नाम हथौड़ा हथ्थ उठांयदा। दो जहाना लाए एका पौड़ा, आपणा कर्म कमांयदा। वीह सौ बिक्रमी आपे बौहड़ा, पोह छब्बी जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी अलक्ख जगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा धाम तजा, अलक्ख अलक्ख जगाईआ। सचखण्ड हरि दए सुहा, सुन्न अगम्मो पार कराईआ। दस्म दुआरी डेरा ला, हरिजन साचे लए जगाईआ। वीह सौ बिक्रमी रुत्त सुहा, जोती जामा भेख वटाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, गुरसिख साचे विच गया समाईआ। शब्द डंका रिहा वजा, गुर गोबिन्द वड्डी वड्याईआ। वासी पुरी घनक आप अख्वा, पुरी घनक वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ बिक्रमी आपणी रचन रचाईआ। वीह सौ इक्क इक्क अकल्ला, एकँकारया। दूजे वस्सया सच महल्ला, साचे धाम सुहाया। तीजे त्रैलोक पाए तरथला, लोआं पुरीआं दए हिलाया। चौथा पद चौथा घर आपे मल्ला, चौथे दर सुहाया। पंचम मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका रंग रंगाया। छेवें ना कोई दीसे छप्पर छन्ना, मन्दिर मट्ठ ना कोई उपाया। सत्तवें मेला गुरसिख जिउँ जट्ट धन्ना, सहिजे मेल मिलाया। अठवें अट्ठां तत्ता आपे डन्ना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मति बुध दए सजाया। नौ द्वार मनमुख जीव सुत्ता अन्ना, अन्ध अज्ञान वखाया। वीह सौ दस बिक्रमी गुरमुखां दर दुआरे आपे आया भन्ना, दीपक जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी दया कमाया। वीह सद ग्यारां कर प्यार, गोबिन्द जोत जगाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे मार, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। लेखा पूर कराए लिख्या रविदास चम्यार, उच्चे मन्दिर रहिण ना पाईआ। साधां सन्तां दए हुलार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। चिट्टे अस्व हो अस्वार, खेले खेल साचा माहीआ। ब्रह्मा शिव विष्न देवत सुर करे ख़बरदार, गगन पतालां फेरा पाईआ। बाशक सेजा

दए हुलार, सांगो पांग डुलाईआ। लछमी तेरा वेख प्यार, जोबन रिहा हंढाईआ। गुर गोबिन्दा बन्ने धार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। वीह सौ बारां बिक्रमी कर प्यार, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। साध संगत सुहाए इक्क द्वार, ऊँच नीच ज़ात पात राउ रंक राज राजाना शाह सुल्ताना एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वंडे वंड, खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड वेख वखाईआ। सम्मत तेरां बन्ने धार, वीह सौ बिक्रमी संग रलाया। राष्ट्रपति करे ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। प्रगट होया निहकलंक चवीआं अवतार, जोती जामा भेख वटाया। पंज वस्त फड़ाए दस्त पंचम ताज, सीस जगदीस इक्क सुहाया। धुरदरगाही साचा राज, खेले खेल देस माझ, लक्ख चुरासी रचया काज, नौ खण्ड पृथमी मारे एका आवाज़, सत्तां दीपां रिहा उठाया। सत्त रंग निशाना दए ताज, शब्द सोटी रक्खे लाज, चरन जोड़ा साजन साज, पंचम होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाया। वीह सौ चौदां मात चढ़या, प्रभ साचे जोत जगाईआ। गुरमुख सोया आपे फड़या, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे तोड़े हँकारी गढ़या, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। जोत जगाए बहत्तर नड़या, दिवस रैण करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा ना मरे ना कदे सड़या, मढ़ी गौर ना कोई दबाईआ। जगत विद्या कोई ना पढ़या, ब्रह्म विद्या रिहा पढ़ाईआ। गुरसिख दुआरे अट्ठे पहर खड़या, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। कलिजुग अन्तिम मनमुख जीव अग्गे कोई ना अड़या, शब्द खण्डा रिहा चमकाईआ। पंच तत्त विकारे आपे लड़या, आपे मथ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां दए सुहाईआ। सम्मत चोदां साची सिक्खी, हरि साचा आप जगांयदा। दर दुआरे पाए इकी, एका गुण जणांयदा। ना कोई जाणे मुनी रिखी, साध सन्त ना वेख वखांयदा। चाल निराली धारों तिक्खी, एका धार रखांयदा। नेत्र लोचण आपणे पेखी, रक्खणहार आप अख्वांयदा। रक्खे लाज धारी केसी, जो जन सरन सरनाई साची आंयदा। मूंड मुंडाए दया कमाए आपे देवे एका अदेसी, एका रंग रंगांयदा। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशी, सुरपति राजा इन्द संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां वीह सद सृष्ट सबाई वंड वंडांयदा। सृष्ट सबाई वंडे वंड, पारब्रह्म बेअन्ता। मनमुखां सोए दे कर कंड, दरस दिखाए साचे सन्ता। सृष्ट सबाई होई रंड, मिल्या मेल ना साचे कन्ता। वेख वखाणे विच ब्रह्मण्ड, आदि पुरख आदिन अन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आप खिलंता। सम्मत पन्दरां मात चढ़ाउणा, पहली चेत्र ख़ुशी मनांयदा। सचखण्ड ब्रह्मलोक शिवलोक इन्दलोक प्रभ फेरा पाउणा, जोती जोत जगांयदा। चौदां लोक खेल खिलाउणा, चौदां

तबक हिलांयदा। नव खण्ड आप उठाउणा, सत्तां दीपा फोल फोलांयदा। अठसठ तीर्थ फेरा पाउणा, साध सन्त सर्ब जगांयदा। लंका गढ़ आप सुहाउणा, पन्दरां कत्तक वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई दो धड़ कराउणा, ना कोई मेल मिलांयदा। अल्ला राणी गल विच पल्ला पाउणा, नेत्र नीर इक्क वखांयदा। संग मुहम्मद चार यार ईसा मूसा सर्ब कुरलाउणा, ना कोई धीर धरांयदा। चीना रूसा जोड़ जुड़ाउणा, प्रभ साचा वेख वखांयदा। शाह अबिनूशा विच मिलाउणा, भेव अभेदा भेव आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पन्दरां देवे वर, सृष्ट सबाई आवे डर, एका दूजा चन्द चढ़ांयदा। सम्मत सौला चढ़े चन्द, चारों कुन्ट रुशनाईआ। जोधिआं सूरिआं फकण बन्द बन्द, प्रभ साचा लए उठाईआ। मारो मार करन बत्ती दन्द, रसना एका गुण गाईआ। साध सन्त किसे ना आवे परमानंद, अट्ठे पहर चिन्ता विच गंवाईआ। भारत खण्ड वंडी वंड, प्रभ निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सतारां हाढ़ पैणी डण्ड, ना सके कोई बचाईआ। प्रभ मेटण आया भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। नार दुहागण सृष्ट सबाई होए रंड, राए धर्म दए सजाईआ। लाड़ी मौत हथ्थीं मैंहदी लाए रंग, धर्म राए दी सच सपुत्री नेत्र नैण रही उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका वंड वंडाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जगत अखाड़ा, प्रभ साचा आप बणांयदा। वेखे खेल सतारां हाढ़ा, लेखा आपणा आप लिखांयदा। सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़ा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी मनमुख जीव अन्तिम वेले कढुणहाड़ा, ना कोई धीर धरांयदा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, पंज तत्त जलांयदा। त्रैगुण माया चुक्कया भाड़ा, ना कोई झोली पांयदा। पुरख अबिनाशी जोती जाता प्रगट होया साचा लाड़ा, गुर गोबिन्द संग रलांयदा। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। फेरी पाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले डूँघी कन्दर फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। सम्मत सतारां खोल्ले जाग, सोया कोई रहिण ना पाईआ। घर घर झूठे उडणे काग, बंक द्वार ना कोई सुहाईआ। सईआं मिल ना गायण गीत सुहाग, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। उच्चे मन्दिर लग्गे आग, ना सके कोई बुझाईआ। राज राजाना घर ना बले कोई चिराग, दीवा बत्ती ना कोई कराईआ। गुरचरन दुआरे साचा मजन बख्शे माघ, तीर्थ तट ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत अठारां खेल रचाईआ। वीह सद अठारां उठ बल धार, प्रभ साचा सेवा लांयदा। आपे जाणे आपणी कार, करता पुरख आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। इक्क वहाए जल जल धार, मूर्ख मूढ़ रुढ़ांयदा। गुरमुख साचे लाए पार, जिस जन आपणी दया

कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा लिख्या अन्तिम पूर करांयदा। सम्मत उनीसा रिहा पुकार, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। उम्मत उम्मती आए हार, ना कोई संग रहांयदा। नाता तुटे संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी मुख शरमांयदा। नेत्र नीर वहाए ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे आप समांयदा। वीह सद बीस बिक्रमी जगत वड्या, हरि जोत करे रुशनाईआ। पन्दरां कत्तक देवे रुत्त सुहा, दिल्ली दरबारे फेरा पाईआ। सृष्ट सबाई लए जगा, नौ खण्ड पृथमी आप हिलाईआ। सोहँ शब्द जैकारा दए लगा, चार वरन इक्क पढ़ाईआ। ज़ात पात कोई दिसे ना, वरन बरन ना कोई रखाईआ। एका मस्तक टिका दए लगा, कौस्तक मणीआ जोत जगाईआ। एका सिक्का दए चला, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। वड्डा निक्का एका धाम सुहा, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। शब्द डंका इक्क वजा, राजदूत इक्क वखाईआ। जोती तनका आप लगा, साधा सन्तां करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा ख़ुशी मनाईआ। बीस सद इक्की, कर त्यार साची बणत बणांयदा । नौ खण्ड पृथमी साची सिक्खी, हरि दातार आप करांयदा। सतिजुग लेखा रिहा लिखी, सच सुच्च वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वधान हो मेहरवान हरि भगवान, एका एक बणांयदा। जगत वधान हरि आप बणाए, आपणा शब्द अलाईआ। सत्त रंग निशाना दए चढ़ाए, सत्तां दीपां इक्क सरनाईआ। आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साची विद्या इक्क पढ़ाए, साचा घर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर कर प्रकाश, आपणी रचन रचांयदा। लोआं पुरीआं करे रास, गगन पतालां वेख वखांयदा। हरिजन मेला सर्ब गुण तास, विछड़ कदे ना जांयदा। लेखे लाए दस दस मास, आवण जावण फंद कटांयदा। जिस जन गाया स्वास स्वास, परमानंद वखांयदा। अन्तिम वेले करे बन्द खुलास, बन्दी छोड़ आप अख्वांयदा। गुरसिख होए ना कदे निरास, गुर पूरा संग निभांयदा। काया मण्डल पावे रास, साचा मण्डप आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव अलख अभेव आप खुल्हांयदा। सतिगुर शब्द सच्चा गुर देवा, सति पुरख उपांयदा। आप कराए आपणी सेवा, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे जपे जपाए साची जिह्वा, आपे मणीआ मणत अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द गुर सच गोबिन्द, हरि गोबिन्द रूप समाया। जिस जन मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता रोग रहिण ना पाया। जुग जुग आप उठाए आपणी बिन्द, प्रीख्त परीक्षा विच ना आया। जन भगतां अमृत आत्म देवे सागर सिन्ध, निझर

धारा दए वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द गुर अख्वाया। शब्द गुर सच इष्ट, गुरमुख विरले जाणया। गुरमुख खुल्हाए आप दृष्ट, वेख वखाए सच टिकानया। मनमति पंज तत्त काया होए भृष्ट, पंच विकारा मोह लभानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे ब्रह्म ज्ञानया। आत्म ब्रह्म शब्द जणाई, निर्मल जोत उज्यारा। बजर कपाटी दए खुल्हाई, अनहद सुणाए राग अपारा। दस्म दुआरी सेज सुहाई, हरि बैठा कन्त भतारा। गुरमुख नारी मेल मिलाई, वर पाया अपर अपारा। सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाई, एका दूजा भउ निवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख पछाणे इक्क दुआरा। गुरमुख जाणे सच घर, घर सच वज्जे वधाईआ। निर्मल बाती जोत जगा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। साचा गुर शब्द हरी हरि, हरि हरि विच रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। बूझ बुझाए हरि भगवन्ता, गुरमुखां दया कमांयदा। मेल मिलाए साचे सन्ता, सति सतिवाद समांयदा। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्ता, गूढ़ी नींद सवांयदा। हरिजन मेला साचे नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल आप अख्वांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साचे घर, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। आत्म दरस लोचण नैण, निज घर हरि हरि पाया। रसना सके ना किसे कहिण, घर सुहञ्जणा पुरख निरँजणा इक्क सुहाया। आप चुकाए लहिण देण, नाता तोड़े साक सज्जण भाई भैण, सिँघ लछमण आप तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म दरसी दरस दिखाया। आत्म दरस हरि हरि पाया, सगली चिन्त मिटाईआ। मिल्या मेल हरी हरि राया, तजी सर्ब लोकाईआ। एका रंगण रंग चढ़ाया, रंग मजीठी इक्क वखाईआ। नाम मृदंगन इक्क वजाया, अनहद ढोला रहे गाईआ। इष्ट देव गुर इक्क मनाया, हरि शब्द जोती लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेख्या साचा घर, घर बंक दुआरा आप सुहाईआ।

* ४ फग्गण २०१४ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर *

निरगुण रूप हरि करतार, जोती नूर समाया। सरगुण मेला विच संसार, शब्दी शब्द मेल मिलाया। आदिन अन्ता एक एकँकार, आपणी कल वरताया। जुग जुग जामा लए धार, भेखा धारी भेख वटाया। कलिजुग अन्तिम वेखे कूड़ पसार, कूड़ कुड़यारा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे रुशनाया। निरगुण जोत

हरि मेहरवान, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल महान, खेलणहार आप अख्वांयदा। धर्म झुलाए सच निशान, शब्दी बणत बणांयदा। आपे होए सीता राम, काहना कृष्ना रूप वटांयदा। आपे आत्म मदि साचा नाम, हरि साचा जाम प्यांअदा। आपे मेटे रैण अन्धेरी शाम, दीपक साची जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम कूड़ पसारा, हरि साचे जोत जगाईआ। जोत सरूपी लै अवतारा, लोकमात करे रुशनाईआ। शब्द डंका अपर अपारा, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। खेले खेल खेलणहारा, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होए बेपरवाहीआ। निरगुण जोती कर आकारा, आपणा खेल खिलांयदा। शब्द खण्डा फड़ दो धारा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर दए हुलारा, आप आपणी किरत कमांयदा। गुरमुख साजन पावे सारा, धीरज धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जामा हरि भगवन्ता, आपणी कल वरतांयदा। आदि जुगादी आदिन अन्ता, सति सरूप समांयदा। भेव खुल्हाए साचे सन्ता, सतिगुर पूरा मेल मिलांयदा। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्ता, कलिजुग नींद सुआंयदा। संग रखाए हउमे हँगता, काया गढ़ बणांयदा। गुरमुख विरला दर दुआरे होए मंगता, नाम झोली एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ रखांयदा। आप आपणा नाउँ धरा, आपणा डंक वजाईआ। राउ रंकां रिहा जगा, साधां सन्तां रिहा हिलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि वेख वखा, जेरज अंड फेरी पाईआ। भेख पखण्डा दए मिटा, एका डण्डा हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम कन्ढा गया आ, सम्मत चौदां दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई जगत नाता, हरि साचा वेख वखांयदा। भरमे भुल्ले ज़ाता पाता, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। प्रगट होए पुरख बिधाता, अभेव अभेदा अछल अछेदा अछल छल करांयदा। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। खेले खेल इक्क इकांता, ना कोई दूसर संग रलांयदा। भगत जनां हरि पुच्छे वाता, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। पार कराए औखे घाटा, एका तट सुहांयदा। जूठ झूठ कल मारे ठाठा, सागर सिन्ध वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे पूजा पाठा, इष्ट देव वेख वखांयदा। इष्ट देव सतिगुर सज्जण, सति पुरख समाया। नेत्र नैण पाए साचा कजल, नाम नामा इक्क रखाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवाया। दो जहानी पड़दे कज्जण, गुर शब्द दुशाला इक्क वखाया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाया। जीव जन्त घर बार सर्ब जन तज्जण, ना धीरज कोए धराया। लेखा चुक्के मक्का काअबा हाज़ी

१६४
०७

हज्जण, कुतब गौंस ना कोए दसाया। काल नगारे सिर ते वज्जण, वेला अन्तिम आया। प्रगट होया शाहो भूप हरि राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निर्मल जोत करे रुशनाया। निर्मल जोती हरि नरायण, आपणी आप जगाईआ। गुरमुख विरला वेखे नेत्र नैण, जगत लोचण दिस ना आईआ। शब्द गुर मेल धुर एका धाम इक्ठे रहिण, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग तेरा आप चुकाए लैण देण, लहिणा देणा झोली पाईआ। जन भगतां मेल मिलाए हरि साक सज्जण साचा सैण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग मेटे कूड़ी छाहीआ। कूड़ी शाही कूड़ पसारा, कूड़ी वज्जे वधाईआ। कूड़ा साजण मीत मुरारा, कूड़ी क्रिया रिहा कमाईआ। कूड़ कूड़ा मारे नाअरा, कूड़ कूड़े रिहा जणाईआ। कूड़ कूड़ा कर पसारा, कूड़ कूड़े धन्दे लाईआ। कूड़ कूड़ा जीव गंवारा, कूड़ो कूड़ करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कूड़ राजन कूड़ राज, कूड़ जोग कमाया। कूड़ा साजण रिहा साज, कूड़ कूड़े धन्दे लाया। कूड़ कूड़ा रचया काज, माया अन्धे भरम भुलाया। कूड़ कूड़ी मारे आवाज़, मदिरा मासी गन्दे नाउँ धराया। कूड़ कूड़ा वेखे कल कि आज, कूड़ कूड़ा डौरु वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कूड़ा दए मिटाया।
१६५
०७
कूड़ी रास कूड़ा मण्डल, कूड़ी बणत बणाईआ। कूड़ कुड़यारे मारया संगल, कूड़ कूड़े रिहा बणाईआ। कूड़ मण्डप कूड़ माढ़ी कूड़ जंगल, कूड़ अठसठ आसण लाईआ। कूड़ कुड़यारा दर दर मंगण, कूड़ कूड़े बैठे धूणीआँ ताईआ। कूड़ कुड़या होया नगण, कूड़ कूड़ पड़दा रिहा उठाईआ। कलिजुग अन्तिम होया भंगण, कूड़ ना दिसे कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा मीत मुरारा, चरन कँवल जग नाता। देवे दरस अगम्म अपारा, होए सहाई पिता माता। अमृत आत्म बख्शे ठंडी ठारा, मेट मिटाए अन्धेरी राता। निर्मल जोती कर उज्यारा, अमृत बूंद प्याए स्वांता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन निभाए साचा साथा। सगला साथ हरि भगवन्त, गुरमुख संग निभाया। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणा अंग लगाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। एका शब्द जणाए मणीआ मंत, सो पुरख निरँजण दया कमाया। तोड़े गढ़ हउमे हँगत, गढ़ हँकार रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचे सच टिकाणा, हरि एका एक जणांयदा। शब्द सरूपी दए बबाणा, गुर पूरा आप बहांयदा। दो जहानी देवे माणा, आवण जावण फंद कटांयदा। शब्द सुणाए अनादी गाणा, धुन अनादी आप बुलांयदा। इक्क वखाए पद निरबाणा, परमानंद समांयदा। मेल मिलाए श्री

भगवाना, जोती जोत समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। मनमुख जीव माया मोह, कूड़े धन्दे लाया। पंच विकारा रिहा रो, नेत्र नीर वहाया। गूढ़ी नींदे रिहा सौं, हरि हरि नज़र ना आया। वेले अन्त ना पकड़े कोई बांहों, राए धर्म दए सज़ाया। एका भुल्लया हरि साचा नाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखाया। मनमुख जीव मुग्ध मूढ़, हउमे रोग जलाया। गुर मस्तक ना लाई साची धूढ़, लाट ललाट ना कोए वखाया। जगत नाता बणया कूड़, बजर कपाट ना कोए खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाया। लक्ख चुरासी हर घट वस्सया, पारब्रह्म बेअन्ता। जुग जुग आपणा राह आपे दस्सया, मार्ग लाए साचे सन्ता। शब्द गुर आवे नस्सया, खेले खेल हरि साचा कन्ता। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द इक्क सुहंता। कलिजुग अन्तिम तीर निराला एक कस्सया, गढ़ तोड़े हउमे हँगता। जन भगतां हिरदे अन्दर आपे वस्सया, दर दुआरे होए मंगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन बणाए साची संगता। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, बीस बीसा दए दुहाईआ। प्रगट हो हो हरि निरँकारा, राग छतीसा वेख वखाईआ। खेले खेल अपर अपारा, कुरान हदीसा इक्क पढ़ाईआ। आपे बन्ने आपणी धारा, जगत जगदीस वड्डी वड्याईआ। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। एका शब्द एका राग एका धुन इक्क जैकारा, एका हरि एका घर एका वर, एका लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। चार वरन इक्क दुआरा, हरि साचा आप खुल्हांयदा। अतोट अतुटा भर भण्डारा, आपे वेख वखांयदा। शब्द सरूपी बण वरतारा, पारब्रह्म वरतांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर मंगण बण भिखारा, इच्छया भिच्छया पूर करांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बन्ने धारा, सत्तां दीपां फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम सच वस्त धुर दरगाही आप लिआंयदा। नाम वस्त शब्द अनमोल, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। आप आपणा जाणे बोल, जुग जुग आपे रिहा अल्हाईआ। आप आपणे रक्खया कोल, हट्ट पसारा इक्क सुहाईआ। आपे तोलणहारा तोल, तोलणहार सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन दए वड्याईआ। चार वरन धर्म जैकारा, सोहँ सो जणाया। सतिजुग तेरा सच विहारा, हरि साचा रिहा कराया। कलिजुग कूड़ा मिटे पसारा, अन्त रहिण ना पाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, साध सन्त ल्ए जगाया। अट्ठे पहर ख़बरदारा, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण मेल सच घर, सरगुण होए सहाया। सरगुण मेला निरगुण धार, जोत

करे रुशनाईआ। जोती शब्दी इक्क प्यार, एका थाँ सुहाईआ। लोकमात कर विचार, प्रभ साची खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, भेखा धारी भेख वटाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, आप आपणा रिहा चलाईआ। कूड़ कुड़यारा मेट निशान, सच सुच्च करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन मेल दर, दर दरवेश आप अख्वाईआ। गुरमुख सद तृप्तास्सया, पाया हरि गोबिन्द। मिल्या मेल शाहो सबास्सया, मिटी सगली चिन्द। पार कराए पृथ्मी अकास्सया, आप उपजाए आपणी बिन्द। सच मण्डल वेखे साची रास्सया, वड दाता गुणी गहिंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा बख्शिंद। गुरमुख पूरी आस, गुर पूरा रिहा कराईआ। जगत बुझाए तृष्ना प्यास, आलस निन्दरा दूर कराईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। आवण जावण चुक्के दस दस मास, गर्भ वास फंद कटाईआ। हरिजन दुआरे हरि हरि होया दासी दास, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे खेल तमाश, इक्क अकल्ला फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए साचे दर, थिर घर साचा नाउँ धराईआ। थिर घर साचा हरि हरि मन्दिर, गुरमुख वेख वखांयदा। भाग लगाए डूँघी कन्दर, दिस किसे ना आंयदा। आपे तोड़नहारा जन्दर, आत्म कुण्डा लांहयदा। जोत जगाए अन्दरे अन्दर, साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, एका हरि एका नर एका दर सुहांयदा। सच घर सच दरवाज़ा, हरि साची जोत जगाईआ। इक्क अकल्ला ग़रीब नवाज़ा, बैठा आसण लाईआ। दूजे दर रक्खया ताजा, चिट्टा अस्व रिहा दौड़ाईआ। तीजे लोइन मारे वाजा, अनहद सेवा लाईआ। चौथे घर रक्खे लाजा, परम पुरख अख्वाईआ। पंचम वजाए एका वाजा, एका राग अलाईआ। छेवें शब्दी साचा काजा, आपणा आप रचाईआ। सत्तवें घर सति पुरख निरँजण अबिनाशी करता आप आपणा करे तमाशा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। निर्मल जोती अगम्म अथाह, अगम्म अगम्म समाया। अलख निरँजण अलख जगा, अलख अलख रूप वटाया। सचखण्ड दए सुहा, सति सरूपा वेख वखाया। सुन अगम्मी रिहा समा, आप आपणा मुख छुपाया। दस्म दुआरी डेरा ला, गुरमुख साजण लए जगाया। आत्म सेजा सच विछा, सच सिँघासण आसण लाया। अमृत आत्म जाम पया, सर सरोवर दए नुहाया। अनहद साचा ताल वजा, पंचम राग अलाया। बन्द किवाड़ी आप खुला, आपणा दरस दिखाया। चरन दाढ़ी जो जन रहे छुहा, लहिणा देणा लक्ख चुरासी देवे झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र नैणा दरस दिखाया । दस्म दुआरी सच दुआरा, गुरमुख विरले पाया। सतिगुर पूरा कर प्यारा, गुरमुखां रिहा वखाया। सुरती

शब्दी इक्क अधारा, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, दर साचा इक्क सुहाया। दस्म दुआरी पार किनारा, गुरमुख पार करांयदा। आपे जाणे आपणी धारा, आपणी धार वहांयदा। सो पुरख निरँजण वेस अपारा, एका एक रखांयदा। सोहँ शब्द होए जै जै जैकारा, घर चौथे विच समांयदा। पंज तत्त ना दिसे आकारा, त्रैगुण ना कोए वखांयदा। सन्त सुहेले सोहिण सच दुआरा, दर दरबारा इक्क वखांयदा। पंचम खोल्हे आप किवाड़ा, आपे कुंडा लांहयदा। जोती शब्दी इक्क अखाड़ा, एका राग अल्हांयदा। छेवें घर खेल न्यारा, छप्पर छन्न ना कोए रखांयदा। पुरख अबिनाशी दीपक जोती कर उज्यारा, आकाश प्रकाश समांयदा। सत्तवें घर खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। आदि पुरख अबिनाशी करता पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता, थेअन्त आप अख्वांयदा। आप आपणा धाम सुहंता, ना कोई दूसर संग रखांयदा। ना कोई दीसे जीव जन्ता, लक्ख चुरासी ना कोए बणांयदा। ना कोई रसना ना कोई जेहवा ना कोई मणीआ ना कोई मणता, ना कोई राग नाद अल्हांयदा। ना कोई नारी ना कोई कन्ता, ना कोई रुत्ती दिसे बसन्ता, फल फुलवाड़ी ना वेख वखांयदा। एका एक एक हरि भगवन्ता, हरि घर आपणा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण मेल मिलांयदा। मेलणहार हरि भगवाना, परम पुरख अख्वाया। जन भगतां देवे जिया दाना, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाया। चरन धूढ़ बख्शे सच अशनाना, दुरमति मैल गंवाया। खेले खेल दो जहाना, आवण जावण बणत बणाया। सोहँ शब्द सुणाए साचा गाणा, सति पुरख निरँजण आप अल्हाया। चार वरन दर इक्क सुहाना, बंक दुआरा वेख वखाया। गुरमुख साचा चतुर सुघड़ स्याणा, दे मति आप समझाया। चले चलाए जुग जुग आपणा भाणा, हरि भाणा आपणे हथ्थ रखाया। कोई ना जाणे राजा राणा, शाह सुल्तानां भेव ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणे गले लए लगाया।

१६८
०७

✱ ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✱

सर्ब भूप ठाकर अबिनाशी, परम पुरख सुल्ताना। निर्मल जोत सति प्रकाशी, गुणवन्ता गुण निधाना। हर घट अन्दर रक्खे वासी, हर घट आप समाना। जन भगतां करे बन्द खुलासी, हरि देवे नाम निधाना। वेख वखाए पृथ्मी आकाशी, गगन पातालां आप समाना। जुग जुग खेल खेले तमाशी, कलिजुग खेले खेल महाना। प्रगट होए घनकपुर वासी, शब्द झुलाए सच निशाना। तीर निराला एका लासी, सोहँ हथ्थ कमाना। लोआं पुरीआं आप हलासी, जेरज अंड करे वैराना।

लक्ख चुरासी दासन दासी, प्रगट होए जोधा सूर बली बलवाना। कोई रहिण ना देवे मदिरा मासी, शब्द सुणाए सच तराना। पकड़ उठाए पंडत कासी, वेद कतेबां फोल फोलाना। लेखे लाए भगत स्वासी, जिस हरि हरि रसना गाणा। पूर कराए आत्म आसी, मेल मिलाए श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होए वाली दो जहानां। करता पुरख सर्ब घट ठाकर, सर्ब जीआं जग दाता। हरिजन निर्मल कर्म करे उजागर, अमृत देवे बूंद स्वांता। नाम वणज कराए सच सौदागर, मेटे रैण अन्धेरी राता। निर्मल जोत जगाए काया गागर, अट्ठे पहर रहे प्रभाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल इक्क इकांता। सर्ब गुरदेव हरि हरि करता, करणहार करतारा। आपणा भाणा आपे वरता, वरते विच संसारा। आपणा भेख आपे धरता, आपे लए अवतारा। आपणा घाड़न आपे घड़ता, घड़ण भन्नणहार करतारा। लोआं पुरीआं आपे चढ़दा, आपे पावे सारा। लोकमात जन भगतां हिरदे अन्दर आपे वड़दा, आपे वेखे पार किनारा। अग्नी हवन कदे ना सड़दा, मढ़ी गौर ना कोई धारा। लक्ख चुरासी आपे लड़दा, आपे देवे नाम आधारा। लहिणा देणा मूल चुकाए सीस धड़ दा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। वहिण वहाए कूड़ कुड़यारे हड़ दा, नाल रलाए पंच विकारा। आपणा अक्खर आपे पढ़दा, सोहँ शब्द सच जैकारा। वेखे खेल चोटी जड़ दा, आप बैठा अधविचकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात लए अवतारा। पारब्रह्म बेअन्त स्वामी, रूप अनूप अनूपा। सर्ब घटा हरि अन्तरजामी, हरि साजन शाहो भूपा। आपे देवे नाम अनामी, वेख वखाणे चारे कूटा। आपे बख्शे अमृत आत्म पाणी, सर सरोवर भराए काया ठूठा। आप सुणाए दया कमाए काया मन्दिर अनहद साची बाणी, गुरमुख मनाए रूठा। आवण जावण चुक्के काणी, गर्भ वास ना होए पुठा। मिले मेल गुर शब्द साचे हाणी, गुर सतिगुर पूरा तुठा। दर दुआरे देवे माणी, अमृत देवे साची घुट्टा। कलिजुग अन्तिम औध विहानी, लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी माया ममता लुटा। गुरचरन ना करे कोए कुरबानी, कलिजुग जीव बैठा रुट्ठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन रक्खे एका मुठा। आदि पुरख सर्ब घट वस्सया, पारब्रह्म परमेश्वर। भगत जनां राह साचा दस्सया, मस्तक टिक्का साचे केसर। धुरदरगाही आए नस्सया, कलिजुग खेले खेल विच थानेसर। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जगत जगतेश्वर। आदि शक्त जोत नूरानी, कोट ब्रह्मण्ड समाया। रूप अगम्मा धुर निशानी, आपणी आप रखाया। आपे दाता जिया दानी, दाता दानी आप हो आया। आपे खेले खेल महानी, समरथ पुरख रघुराया। कलिजुग भुल्ले जीव निधानी, नर निरँकारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल सबाया। सति सरूप

हरि रंग राता, अकल कला वरतांयदा। सृष्ट सबाई आप भुलाई ज़ाता पाता, ऊँचां नीचां लड़ फड़ांयदा। मनमति रलाई नाल नार कमजाता, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। हरि हरि शब्द ना कोई गाए साची गाथा, जन गा गा वक्त लँघांयदा। निउँ निउँ सारे टेकण माथा, निमस्कार ना कोए करांयदा। पंज तत्त विकारे चढ़े राथा, साचा रथ दिस ना आंयदा। भैण भाई पुत्तर धीआं बणाया सगला साथा, सगला संग ना कोई रखांयदा। प्रगट हो हरि त्रिलोकी नाथा, त्रैभवण बूझ बुझांयदा। लेखे लाए तत्त आठा, नौ दर वेख वखांयदा। इक्क जणाए पूजा पाठा, सोहँ शब्द अलांयदा। अमृत आत्म मारे ठाठा, गुरमुख साचे आप नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम डंक वजांयदा। पारब्रह्म सर्ब निरंतर, विष्न महेष समाया। आपणी बुध पाए अन्तर, ब्रह्मा सेवा लाया। गणपति गणेश जणाया एका मन्त्र, शिव शंकर रसन अलाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त आप बुझाए लग्गी बसन्तर, आप आपणी दया कमाया। खेले खेल जगत मनवन्तर, जुग जुग फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाया। पारब्रह्म निज घर वासा, नर हरि आप अख्वाया। भगतन मीता दासी दासा, दिवस रैण सेव कमाया। लेखे लाए स्वास स्वासा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख गुरसिख हरिजन बलि बलि जासा, जिस हरि रसना नाम ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचल मूर्त अकाल सूरत जोती नूरत नूरो नूर नूर आप अख्वाया।

१७० ०७

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे घर पिण्ड गग्गोबूआ *

घर सेविआ घर पाया, घर पारब्रह्म बेअन्त। घर सुंनरा घर जेहविआ, घर वस्सया साचा सन्त। घर मस्तक घर थेविआ, घर मेला साचे कन्त। घर वसे अलख अभेविआ, घर सुहाए रुत्त बसन्त। घर दाता वड देवी देविआ, घर वड्याए जीव जन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप जपाए आपणा मंत। मन्त्र नाम सच दृढ़ा, साचा वणज कराया। गुरमति साची इक्क सिखा, साजन मीत मिलाया। जगत निमाणा गले लगा, भगती मार्ग लाया। सगला संग आप वखा, साचा संग रखाया। गुरमुख साजन होए सहा, चरन कँवल बख्शे सच सरनाया। दो जहानी पकड़े बांह, कर प्यार आपणे अंग लगाया। शब्द दो अक्खर कर विचार, बंक द्वार सुहाया। नेत्र अथ्थर लए अधार, पंज सथ्थर दए वछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बाल अञ्याणा गोद उठाया।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी चन्नण सिँघ दे घर *

घर डण्डौत घर बन्दना, घर घर निमस्कार। घर घर गुरमुख परमानंदना, घर घर चरन प्यार। घर घर गुर बख्शंदना, घर घर दए अधार। घर घर चढ़या साचा चन्दना, घर घर जोत करे उज्यार। घर घर तोड़े झूठा फंदना, घर घर पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लाए पार। घर पाया घर वस्सया, घर दीवा घर बाती। घर प्रकाश कोटन रवि सस्सया, घर मिटे अन्धेरी राती। घर सतिगुर आवे नस्सया, घर देवे बूंद स्वांती। घर मन्दिर बहि बहि हस्सया, घर मिल्या कमलापाती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां देवे लहिणा बाकी। घर सोहे घर सुहाया, घर चढ़ाया साचा चन्द। घर दोए दोए एका घर वखाया, इक्क वखाए निजानंद। घर घर होए रुशनाया, घर मिटाई दूई कंध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लाए रसना गाया बत्ती दन्द।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी आत्मा सिँघ दे घर *

१७१

०७

नाम खाट सच सिँघासण, सतिगुर पुरख सुहाया। सच वखाए तीर्थ ताट, साचा संगम इक्क जणाया। गुरसिख पूरा उतरे एका घाट, बिरध बाल जवानी लेखे लाया। अन्तिम विकया साचे हाट, गुर संगत मुल पुआया। जगदी रहे जोत ललाट, ना सके कोई बुझाया। इक्क सरोवर मारे ठाठ, लोकमात दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नेत्र नीर, गुरसिख कटे भीड़, लक्ख चुरासी रोग गंवाया। सेव कमाई सेवा कर, लेखे लाए घाली। नीर वहाए गुरमुखां घर, आपे होया कंगाली। आपे देवणहारा वर, आपे करे सवाली। आप भण्डारे रिहा भर, आपे फल लगाए डाळ्ही। आपणी सेवा आपे कर, आपे करे प्रितपाली। आपणा मेवा आपणे मुख धर, आपे लए संभाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए साचा लाली। जगत लाली चढ़ जग, जुग होए रुशनाईआ। क्रिया करे सूरा सरबग्ग, आपणी दया कमाईआ। हँस सरोवर नुहाए पार उतरन कग्ग, काग हँस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख जोती जगाए चराग, आपे लए बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्मां कर्म कर्मां धर्म धर्मां वरन वरनां लेखे लाईआ। सतिजुग तेरी साची धार, प्रभ साचे नींह धराईआ। गुरमुख साचे लाए पार, जन्म मरन फंद कटाईआ। शब्दी शब्द दए हुलार, आपणा मुख भवाईआ। लोकमात दए संवार, दरगहि साची धाम सुहाईआ।

उलटा मुख रक्खे घर बार, सुख साचा सहिज सहिज समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण उच्च महल्ले बैठा आसण लाईआ।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी जगीर सिँघ दे घर *

सर्ब जीआं प्रभ आपे दाता, गोबिन्द रूप गोपाल। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, दीना बंधप दीन दयाल। साची देवे नाम दाता, सुहाए मन्दिर सच्ची धर्मसाल। अमृत बूंद प्याए स्वांता, भाग लगाए काया खाल। मेट मिटाए अन्धेरी राता, दीपक जोती साचा बाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पकड़ उठाए साचा लाल। बाल अञाणा बाली बुध, हरि पूरन बूझ बुझाईआ। करे कराए कारज सुध, करनी करता आप अख्वाईआ। भेव चुकाए आपणा गुझ, आपणा रंग रंगाईआ। चरन कँवल जन जाए झूझ, लेखा लेखे पाईआ। आप आपणा ल्या बुझ, भरमी भरम मिटाईआ। सच दुआरा गया सुझ, मानस जन्म लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर, वड्डी वड्याईआ। जगत हुलारा ना जाए डोल, चारों कुंट हिलाया। शब्द दो अक्खर लैणा बोल, सतिगुर मेल मिलाया। पूरा करना कीता कौल, जन हरि वेख वखाया। मिले वड्याई उप्पर धौल, धरत धवल सुहाया। सोहँ शब्द रखाई साची पौहल, अमृत आत्म इक्क चखाया। जोती शब्दी जाए मौल, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे गले लगाया ।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी उत्तम सिँघ दे घर *

सतिगुर पूरा पाया, सगली मिटी प्यास। रसना हरि हरि गाया, पूरी करे आस। सेवक सेवा लेखे लाया, लेखे लाए रसन स्वास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन धरवास। चरन भरवासा सच द्वार, सच द्वार गुरमुख आप जणांयदा। शाहो शबाशा कर प्यार, साचा सुख इक्क वखांयदा। हउमे दु:ख दए निवार, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। एथे ओथे पाए सार, साजन मीत आप हो जांयदा। पार कराए नर नार, जगत भगत संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सिक्ख गुर एका धाम सुहांयदा। एका धाम इक्क दुआरा, एका घर वसाया। इक्क शब्द इक्क प्यारा, एका रिहा जपाया। एका वर एका नर एका हरि, इक्क भण्डारा रिहा भराया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख आपणे रंग रंगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच दुआरा अन्दर लँघ, शब्द सिँघासण दए सुहाया।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी कर्म सिँघ दे घर पिण्ड गग्गो बूआ ज़िला अमृतसर *

नाम रंगण रंग चलूल, रत्ती रंग रंगायण। आपे देवणहारा लहिणा देणा मूल, आत्म इच्छया पूर करायण। गुरमुख साजण सच पंघूड़ा रिहा झूल, दर घर साचे आप झुलायण। शब्दी शब्द शब्द गुर रक्खे फूल, आपे होए मालण नायण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणे नैण। नैण उग्घाड़ नेत्र खोल्ह, निज घर वेख वखांयदा। आपणे मन्दिर आपे बोल, आपणा राग अल्हांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, तोलणहारा आप अख्वांयदा। हरिजन वसे सदा कोल, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग माया प्या घोल, पंज तत्त अखाड़ा इक्क वखांयदा। जूठ झूठ वज्जे ढोल, मनमति नगारा इक्क वखांयदा। गुरमुख विरला चरन प्रीती सतिगुर पूरे रिहा घोल, अट्ठे पहर सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दरस दिखांयदा। दरस दिखाए मेटे तांघ, हउमे रोग जलांयदा। स्वांगी वरते आपणा स्वांग, भेखी भेख करांयदा। नाम चढ़ाए साची कांग, गुरमुख साजण आप तरांयदा। एका मंगणी घर साचे मांग, चरन कँवल ध्यान धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़े मेल मिलांयदा।

* ५ फग्गण २०१४ बिक्रमी सुरजन सिँघ दे घर पिण्ड भुच्चर अमृतसर *

आदि पुरख अबिनाश, ब्रह्माद समाया। खेले खेल पृथमी आकाश, दिस किसे ना आया। जुग जुग पाए आपणी रास, मण्डल मण्डप दए सुहाया। सृष्ट सबाई आप उपाए आप कराए नास, करता पुरख आप अख्वाया। जन भगतां होए दासी दास, सेवक सेवा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख वटाया। आदि पुरख हरि करतारा, अकल कला अख्वांयदा। आप आपणी बन्न्हे धारा, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी रचन रचांयदा। आदि पुरख आदि निरँजण, एका एक अख्वाया । आप आपणा होया सज्जण, आप आपणी

मंग मंगाया। आप आपणा करया मजन, आप आपणा तीर्थ नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाया। भेखाधारी हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे जाणे आपणा गाणा, आप आपणा नाद वजांयदा। शब्द जणाए सच तराना, धुनी धुन समांयदा। बोध अगाध आप अख्वाना, भेव कोए ना पांयदा। शाहो भूप वड राज राजाना, शाह सुल्तान आप हो जांयदा। आदि जुगादी सद मेहरवाना, ब्रह्मादी खोज खोजांयदा। जन भगतां मेला दो जहानां, दो जहानां आप मिलांयदा। शब्द मारे तीर निशाना, एका चिल्ला आप चढ़ांयदा। आपे गोपी आपे काहना, सीता राम आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा रंग रंगाए, पारब्रह्म बेअन्ता। आप आपणा मृदंग वजाए, उठाए साजन साचे सन्ता। लोआं पुरीआं लँघ वखाए, खेले खेल जुगा जुगन्ता। शब्द सिँघासण साचा पलँघ विछाए, साचा धाम हरि सुहंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात भेख वटंता। भेख वटाए भेख कर, भेखी भेख अवल्ला। लोकमाती वेस हरि, करया इक्क अकल्ला। भरमे भुल्ले नर नरेश दर, दूई द्वैती लग्गा सल्ला। ब्रह्मा विष्न महेष रहे खड़, गल पाई बैठे पल्ला। पारब्रह्म अबिनाशी करता ना कोई सीस ना कोई धड़, वस्सया निहचल धाम अटला। हरिभगत दुआरे अग्गे खड़, आप फड़ाए आपणा पल्ला। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, आप कराए आपणा हल्ला। तोड़ तुड़ाए किला हँकारी गढ़, फोल फलाए जल थला। त्रैगुण माया जाए सड़, पंज तत्त विकारा रला। आपणा अक्खर आपे पढ़, शब्द सनेहुड़ा एका घल्ला। चार वरन सरन जाए पड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल कराए वल छल्ला। अछल अच्छल अछल अछेदा, आदि पुरख निरँकारा। भेव ना पाइन चारे वेदा, लेखा लक्ख ना सके कोई विचारा। आपे होया अभेद अभेदा, लिखण पढ़ण तों होया बाहरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्क अवतारा। आदि अन्त इक्क अवतारा, सति पुरख कराया। सतिजुग त्रेता पार किनारा, द्वापर वेख वखाया। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, वेला अन्तिम आया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। शब्द खण्डा हथ्थ तेज़ कटारा, सम्बल नगरी डेरा लाया। उच्च महल्ल अटल मुनारा, हरि साचा रिहा सुहाया। बैठा चढ़ पुरख निरँजण अलक्ख अगम्म अपारा, दिस किसे ना आया। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज इक्क सुणाए साचा नाअरा, सोहँ शब्द लगाया। सतिजुग तेरा भरे भण्डारा, प्रभ पूरा दया कमाया। जन भगत दुआरे होए वरतारा, धुर दी बाण रखाया। आवण जावण खेल न्यारा, खेलणहार सृष्ट सबाया। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणा नाम जपाया। इक्क अकल्ला

एकँकारा, अकल कला समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। शब्दी डंका इक्क वजा, नौ खण्ड रिहा उठाईआ। सत्तां दीपां फेरा पा, ब्रह्मण्डां रिहा हिलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए रला, सोया कोए रहिण ना पाईआ। इक्क हुलारा रिहा दवा, गगन पतालां रिहा हिलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा जणा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। मन मति बुध रही कुरला, पंज तत्त करे लड़ाईआ। वेले अन्तिम कोई ना पकड़े किसे बांह, वरन बरन ना कोई सहाईआ। नाता तुटे पुत्तरां माँ, भाई भैण ना कोई दसाईआ। बिन गुर पूरे कोई ना देवे ठंडी छाँ, ना दीसे कोई सहाईआ। जूठे झूठे घर घर उडणे काँ, कलिजुग जीव रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म तेरा भुल्लया नाँ, नाम नामा कोई ना पाईआ। मदिरा जाम इक्क पया, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। वेले अन्तिम मारे धां, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जामा भेख न्यारा, हरि साचा भेख वटांयदा। प्रगट हो हो विच संसारा, राउ रंकां आप उठांयदा। वासी पुरी घनका मारे इक्क नगारा, सोहँ डंका हथ्थ उठांयदा। साधां सन्तां पावे सारा, आदिन अन्ता वेख वखांयदा। नारी कन्ता मेल भतारा, गुरमुख साजन मेल मिलांयदा। निर्मल दीपक जोती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अनादी धुन सुणाए अपर अपारा, अनहद धुन आत्मक आप सुणांयदा। पंचम सखीआं मेल मिलाए गीत सुहागी गाए वारो वारा, हरि साचा सगन मनांयदा। आत्म सेजा कर प्यारा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। एका दूजा भउ निवारा, तीजा लोइण आप खुल्हांयदा। चौथा घर सच्चा दरबारा, चौथे पद समांयदा। पंचम मेला मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पांयदा। धर्म कराए इक्क जैकारा, चार वरनां आप जणांयदा। लिख्या लेख अपर अपारा, ना कोई मेट मिटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर चवीआं अवतारा, हरि जोती जोत जगांयदा। बस्त्र शस्त्र तन श्रृंगारा, आसण सिँघासण एका लांयदा। चिट्टा अस्व कर त्यारा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। पुरख अगम्मड़ा हो अस्वारा, दहि दिशा फेरी पांयदा। ज़िमी अस्माना पार किनारा, गगन पताला फोल फोलांयदा। लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलारा, एका झूला आप झुलांयदा। कलिजुग तेरा पार किनारा, बीस बीसा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वखांयदा। भेखाधारी भेख बल बावन, आपणा आप कराया। तोड़े गढ़ लंका जन रावण, राम रामा आप अख्वाया। खेले खेल कृष्ना शामन, दूत दुष्ट रहिण ना पाया। नानक गुर नाम सति बणाया साचा ज़ामन, गुरमुख साचे लए तराया । गुर गोबिन्द फड़ाया आपणा दामन, पूत सपूता दया कमाया। नेड़ ना आए

कामनी कामन, जिस जन रसना गाया। मेट मिटाए अन्धेरी शामन, आकाश प्रकाश वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुर गोबिन्दा लेख लिखा, कलिजुग कर्म विचारया। सतिगुर नानक गया लिखा, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारया। वेद व्यासा रिहा जणा, पूत सपूता फेरी पा रिहा। पुरख अबिनाशी दया कमा, आप आपणा भेख वटा ल्या। आपणी जोत आप गया समा, आपणा आप आप उपा ल्या। आपणा शब्द आप जणा, आप आपणी रसना गा ल्या। कलिजुग लेखा आप लिखा, अन्तिम मेट मिटा ल्या। लक्ख चार हज़ार बत्ती दए सजा, पिछला मूल चुका ल्या। संग मुहम्मद चार यार फिरन गरगदा, भिख्या मंगण मंग मंगा ल्या। ऐनलहक्क नाअरा ल्या ला, वेला अन्तिम आ रिहा। चार वरन राह वखाए एका सिध्धा, सोहँ साचा जाप जपा ल्या। दो जहानां ब्रह्मा शिव विष्न देवत सुर करोड़ तेतीसा चरन हेठ दबा, माण ताण ना कोई रखा रिहा। जन भगतां मिलण दी आपे जाणे बिधा, जुग जुग मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। पंज तत्त देह तज, हरि साचे कर्म कमाया। अगम्म अगम्मड़े धाम चढ़या भज्ज, थिर घर इक्क सुहाया। आपणा पड़दा आपे कज, आप आपणा लए छुपाया। आपणी अग्नी आपे गया दझ, आप आपणी ख़ाक उडाया। आपणे नगारे आप गया वज्ज, आपणा ढोला आपे गाया। आपणी रक्खी आपे लज, लाजावन्त आप हो जाया। आपणी जोत आप जगाई देस माझ, सम्बल नगरी दए सुहाया। कलिजुग तेरा रचया काज, वेला अन्तिम आया। कलिजुग जीवां देवे दाज, पंच विकारा गंढु बंधाया। भगत जनां हरि मारे वाज, शब्दी शब्द उपाया। मेट मिटाए राजन राज, शाह सुल्तान ना कोई रहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा नाम धरा, निहकलंक रखाया। पंज तत्त कोई दिसे ना, ना कोई वेख वखाया । लोकमात करे कोई रीसे ना, ना कोई संग निभाया। भेव पाए राग छतीसे ना, अञ्जील कुरान दिस ना आया। बस्त्र शस्त्र कोई दीसे ना, कल्गी तोड़ा ना कोई वखाया। प्रगट होए बीस बीसे साचे थाँ, दिल्ली दुआरा दए सहाया। राज राजाना खाली खीसे संग सहेला कोई रक्खे ना, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। निहकलंक हरि अलख जगा, आपणा नाअरा लाया। एका शब्द रिहा सुणा, सृष्ट सबाई आप जगाया। वरन बरन मेट मिटा, ऊँचां नीचां मेल मिलाया। राज राजाना ख़ाक मिला, सीस ताज रहिण ना पाया। सम्मत चौदां लेखा रिहा लिखा, भुल्ल रहे ना राया। सम्मत पन्दरां चढ़ना चां, सम्मत सौला उच्चे मन्दिर देवे ढाह, आप आपणा हला कराया। सम्मत सतारां दए रुला, ना दीसे कोई सहाया। सम्मत अठारां दए रुड़ा, जल धारा

इक्क वहाया। उन्नी उनीसा वेख वखा, मुस्लिम सुन्नी दए मिटाया। बीस बीसा हरि जोत जगा, सृष्ट सबाई होए सहाया। सत रंग निशाना दए झुला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप अख्वाया। एका शब्द इक्क जैकारा, हरि साचे आप लगावणा। एका जोत इक्क प्यारा, एका गोत बणावणा। भरमे भुल्ले कोटी कोट, कोटी कोट दे मति आप समझावणा। तन नगारे लाए साची चोट, एका डंका हत्थ उठावणा। पंज तत्त विकारा कढ्ढे खोट, सच सुच्च वरतावणा। नाम भण्डारा दए अतोट, तोट कदे ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वावणा। गुरसिख हरिजन मीतड़ा, मेला हरि निरँकार। काया रंगे साचा चीथड़ा, एका रंग अपार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत बख्शे साची धार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, काया मन्दिर सच द्वार। आपे करे पतित पुनीतड़ा, पतित पावण लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन लए उबार। हरि साजन हरिजन जाणया, हरि हरि बूझ बुझाए। एका देवे नाम निशानया, एका दर सुहाए। इक्क सुणाए अनहद बाणीआ, अनहद राग अलाए। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणीआ, तृष्ना भुक्ख गंवाए। एका नाम धुर फ़रमानया, एका रिहा जणाए। आवण जावण चुक्के काणीआ, राए धर्म ना दए सज़ाए। मिले पद इक्क निरबाणीआ, सुख सहिजे सच समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर अन्दर आप सुहाए। गुरमुख साजन साचा मीता, सतिगुर पुरख मनाया। आप जणाई आपणी रीता, आपणा मार्ग लाया। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीता, काया मन्दिर इक्क सुहाया। आपे बैठा सदा अतीता, निर्मल जोत जगाया। सदा सुहेला ठांडा सीता, सति सरूप अख्वाया। एका राग सुणाए साची गीता, आप आपणा रिहा अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साजन लए तराया। साजन मेला हरि गोबिन्द, सगली चिन्त मिटाईआ। अमृत धार देवे सागर सिन्ध, निझर मुख चुआईआ। प्रगट होया वड दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। हरिजन उपजाए साची बिन्द, नादी सुत रखाईआ। मनमुख लगाए आपणी निन्द, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए उठाईआ। गुरमुख साचा सज्जण, सोहे धाम सुहञ्जणा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, नेत्र पाए नाम अंजणा। धुर दरगाही बेपरवाह बेऐब परवरदिगार आया पड़दे कज्जण, वेले अन्तिम रक्खे लज्जणा। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, लोकमात सभ ने तजणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, एका जाम प्याए नाम धुर धाम, हरिजन साचे पी पी रजणा। अमृत नाम सच प्याला, गुर पूरे हत्थ वड्याईआ। देवणहारा दीन दयाला, दया निध अख्वाईआ।

जोती जोत जगाए मिलाए अकाला, अकल कला अख्वाईआ। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। जोत निरँजण दीपक एका बाला, दीवा बत्ती ना कोई रखाईआ। सोहँ पाई गल साची माला, आपे रिहा चलाईआ। बजर कपाटी तोड़े ताला, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अनहद वज्जे राग सुखाला, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। मिल्या मेल गुर गोपाला, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। देवे नाम सच्चा धन माला, आत्म ख़ज़ीना रिहा भराईआ। फल लगाए काया डाला, फल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। सुरती शब्द इक्क जमाला, नूरो नूर दसाईआ। अकाल मूर्ति होए रखवाला, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुरमुख साजन साचा लाला, आप आपणी गोद उठाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, सच दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचा नेत्र वेख, लोचण आप खुल्हांयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपे बणत बणांयदा। आपे धरया आपणा भेख, आपे रूप वटांयदा। आपे जाणे धारी केस, मूंड मुंडाए आप उठांयदा। आपे दाता दस दस्मेस, गोबिन्द नाउँ रखांयदा। आपे सुत्ता बाशक सेज, सांगो पांग हंढांयदा। आप उपजाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेस सेव कमांयदा। आप आपणी करे आदेस, आप आपणी अलख जगांयदा। कलिजुग अन्तिम जोती नूर कर प्रवेश, गुरमुख साचा आप उठांयदा। कोई ना लिखे ना लिखे लेख, लेखा लेख विच ना आंयदा। गुरमुख साचे मस्तक लाए कौस्तक मणीआ साची मेख, जोत ललाटी आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, औखी घाटी पार करांयदा। औखा घाट काया गढ़, गुरमुख विरला पांयदा। सृष्ट सबाई नौ दुआरे रही सड़, जोत निरँजण ना कोए जगांयदा। साध सन्त सुखमन नाड़ी रहे वड़, डूँघी भवर ना पार करांयदा। जगत पीर अधविचकारे रहे खड़, गुर शब्दी दिस ना आंयदा। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, साचे मार्ग लांयदा। तोड़ तुड़ाए हँकारी गढ़, एका खण्डा वांयदा। साचे मन्दिर आपे चढ़, आपे कुण्डा लांयदा। दस्म दुआरी अग्गे खड़, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला इक्क सुहांयदा। सच महल्ला एकँकारा, एका एक वखाया। आपे खोल्ह दस्म दुआरा, निर्मल जोती दीप जगाया। शब्द सिँघासण अपर अपारा, हरि साची सेज विछाया। अगम्म अगम्मड़ा दए हुलारा, पावा चूल ना कोई रखाया। गुरमुख नारी मेला कन्त भतारा, साचा मेल मिलाया। अट्ठे पहर इक्क प्यारा, दिवस रैण ना कोई जणाया। साचा आसण सच श्रृंगारा, एका कज्जल एका नैण पाया। एका वेखे वेखणहारा, दूजा कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरा काया मन्दिर सुहाए इक्क दुआरा। बंक दुआरा साचा घर, घर जोत करे रुशनाईआ। घर घर अन्दर देवे वर, घर

शब्द करे जणाईआ। घर घर नुहाए साचे सर, घर घर ताल सुहाईआ। घर विच घर खोजे वर, महल्ल अटल अचल निहचल धाम इक्क वखाईआ। दीपक जोती रिहा बल, हरि साचे आप जगाईआ। आपणी जोती आपे गया रल, भेव अभेदा आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई कराए वल छल, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई जगत वकारे रही जल, अग्नी तत्त इक्क रखाईआ। दूई द्वैती लग्गा सल, हउमे हँगता नाल रलाईआ। मनमति करे बलि बलि, गुरमति दिस ना आईआ। कूड़ कुड़यारा चल्लया हल, मोह ममता बीज बिजाईआ। अन्तिम वेले लग्गया फल, कौड़ा रीठा सृष्ट सबाईआ। पुरख अबिनाशी आप हिलावण आया डाल्ह, फल फुलवाड़ी रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला सच दुआरा बैठा मल्ल, जिस जन आपणी दया कमाईआ। खेले खेल अज्ज के कल, कल आपणी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन वेख दर बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। बंक दुआरा अगम्म अथाह, बेपरवाह समाया। आपे जाणे आपणा ना, आपे रिहा उपाया। हरिजन उठाए फड़ फड़ बांह, सोया कोई रहिण ना पाया। आपे पिता आपे माँ, आपे सखा सखाया। आपे देवे ठंडी छाँ, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप अख्वाया।

१७६ १७६

०७ ०७

शेर सिँघ हरि शब्द दलेरा, जोती जोत जगांयदा। प्रगट होए दूजी वेरा, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग मेटे जगत अन्धेरा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी ढहि ढहि होए ढेरा, उच्चा मन्दिर दिस ना आंयदा। आप चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा ना कोई रखांयदा। शब्द सरूपी पाए घेरा, अगम्मड़ी धार वखांयदा। मनमुख जीवां चुक्के डेरा, गुरमुख पार करांयदा। सृष्ट सबाई आप भुलाई कर कर हेरा फेरा, पी पी शराबा संग रखांयदा। अन्तिम वेले हक्क निबेड़ा, हरिजन वेखे काया खेड़ा, साचा नगर सच ग्रां साचा धाम सुहांयदा। साचा नगर साचा खेड़ा, साचा घर गुरमुख आप वसाया। आपे बन्नृणहारा बेड़ा, इक्क वखाए साचा दर, दो जहानां कुण्डा लाहया। जगत विकारा मेटे झेड़ा अमृत नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ अशनान कराया। आवण जावण चुक्के डर, ना जन्मे ना जाए मर, हरि जोती मेल मिलाया। आपणी करनी किरत करता पुरख रिहा कर, करनहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा होए सहाया। गुरसिख साचा छोटा बाला, हरि आपणी गोद उठांयदा। देवे नाम शब्द दोशाला, उप्पर पड़दा पांयदा। आप आपणा रक्खे नाला, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन

देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। वर पाया हरि पुरख अगम्मा, भरम भउ विनास्सया। लेखे लाए काया चम्मा, गाया स्वास स्वास्सया। बिरथा कोई ना जाए दमा, हरि चरन कँवल भरवास्सया। नेत्र नीर वहाए छम्म छमा, जगत तृष्ना बुझी प्यास्सया। आप संवारया आपणा कम्मा, आपे पाई आपणी रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाशिआ। खेलणहार जगत खलारी, हरि हरि हरि नरायणा। गुरमुख साजन रिहा उभारी, दरस दिखाए साचे नैणां। एका बख़्शे नाम ख़ुमारी, एका मध पियानया। इक्क वखाए महल्ल अटारी, थिर घर साचे गुरमुख बहिणा। तीजा नेत्र रिहा उग्घाड़ी, बन्द कराए दोए लोइणा। साचे मण्डल रिहा चाढ़ी, भेव जाणे कोए ना। आपे होए पिछे अगाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए साचा थाइना। आपे होए पिछे अगाड़ी, आपणा लड़ फड़ांयदा। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी, लहिणा मूल चुकांयदा। धर्म वखाए इक्क अखाड़ी, साचा मंगल गांयदा। शब्द सरूपी करे वाड़ी, चौगिर्दा फेरा पांयदा। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, राए धर्म ना वेख वखांयदा। चित्रगुप्त लेखा रिहा साड़ी, गुर पूरा दया कमांयदा। शब्द घोड़े रिहा चाढ़ी, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। साचे धाम मिले मेल रमिआ राम जगे जोत बहत्तर नाड़ी, आकाश प्रकाश समांयदा। थिर घर साचे रिहा वाड़ी, एका दूजा भउ चुकांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर वेख वखांयदा। मनमुख जीवां किस्मत माढ़ी, हरि साचा दिस ना आंयदा। मगर लग्गी पंचम धाड़ी, ना कोई धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन सज्जण सुहेले मेल मिलाए गुरु गुर चेले, गुर चेला आप अख्वांयदा। चेला गुर पुरख अबिनाशी करता निहकर्म स्वामी, हरिजन साचे आपे वरदा। शब्द फड़ाए साचा दामी, आप आपणे जेहा करदा। हर घट अन्तरजामी, हरिजन आसा जगत प्यासा दरस दिखाए थिर घर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण एका दर दा। हरि साजन घर वस्सया, परम पुरख करतार। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, देवे दरस अगम्म अपार। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, जोती नूर करे चमत्कार। राह साचा सतिगुर दस्सया, सतिजुग साची धार। सच मन्दिर हरि हरि हस्सया, हरि साजन मीत मुरार। धुरदरगाही आया नस्सया, लोकमात लए अवतार। तीर निराला एका कस्सया, शब्द खण्डा तेज़ कटार। सृष्ट सबाई त्रैगुण माया डस्सया, पंच तत्त होया विकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे उज्यार। जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि करे रुशनाईआ। आपणी चले अवल्लड़ी चाला, आपणी बणत बणाईआ। गगन मण्डल वेखे साचा थाला, दीपक दीप दखाईआ। जन भगत करे सदा प्रितपाला, प्रितपालक आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, जग जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग जोग जुगत कुड़यारा, कूड़े रूप समाया। कूड़ा धन्दा कूड़ पसारा, कूड़ो कूड़ करे हलकाया। कूड़ा मीत कूड़ मुरारा, कूड़ा संग निभाया। कूड़ कुड़यारा वस्सया चीत, कूड़ कूड़ा बंधन पाया। कूड़ कूड़ी रक्खी प्रीत, कूड़ कूड़ा मोह वधाया। कूड़ कूड़ा गाया गीत, हरि गोबिन्द दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ कूड़ा दए मिटाया। कूड़ कुड़यारा मेटणहारा, आदि पुरख अख्वांयदा। कलिजुग वेखे अन्त किनारा, मञ्झधारा फेरा पांयदा। जीव जन्त करे विचारा, क्रिया कर्म ना कोए जणांयदा। भरमे भुला सर्ब संसारा, भरम गढ़ ना कोए तुड़ांयदा। कूड़ा रंग कूड़ ख़ुमारा, कूड़ा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप वटांयदा। कूड़ कूड़ा ख़ाकी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाया ना कोई दीसे पाकी पाक, पतित पवित ना कोए कराया। साधां सन्तां बन्द ताक, बजर कपाट ना कोए तुड़ाया। माया ममता रहे झाक, तृष्ना मोह वधाया। कूड़ कूड़ा बंधप साक, कूड़ा संग रखाया। कोए ना जाणे भविख्त वाक्, भरम भउ ना कोए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कूड़ कुड़यारा दए मिटाया। कलिजुग कूड़ा जाए उठ, मिटे झूठ पसारा। पुरख अबिनाशी गया तुठ, निहकलंक लए अवतारा। मनमुख जीवां हथ्थ फड़ाए खाली ठुठ, नौ खण्ड पृथ्मी पए लुट्ट, चारों कुन्ट
१८१ हाहाकारा। जूठी झूठी जड़ देवे पुट्ट, मारे इक्क हुलारा। कूड़ी काया भाग गए निखुट्ट, ना पावे कोई सारा। गुरमुख विरला लाहा रिहा लुट्ट, जिस मिल्या कन्त भतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उठाए साचा सुत दुलारा। सतिजुग साचा साचा सुत्त, हरि साचा आप उठांयदा। आप सुहाए साची रुत्त, सच सुच्च वरतांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, आपणी दया कमांयदा। बिन हरि नामे ख़ाली दिसे ना कोई बुत्त, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, शब्द खण्डा इक्क वखांयदा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, एका रंग रंगांयदा। आवण जावण जाए छुट्ट, जो जन दर्शन पांयदा। मात गर्भ ना लटके पुठ्ठ, दस दस मास ना कोए टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा आप उठांयदा। सतिजुग साचे उठ बल धार, प्रभ साचा आप जगाईआ। सच सुच्च कर वरतार, चार कुन्ट रही कुरलाईआ। बीस बीसा होए पहरेदार, एका बख्शे सच्ची सरनाईआ। नाता तुटे चार यार, संग मुहम्मद ना कोई निभाईआ। अल्ला राणी करे पुकार, नेत्र नैणां नीर रही वहाईआ। रो रो करे गिरयाज़ार, खुलड़े केस रही वखाईआ। हू हू नाअरा करे पुकार, अल्ला हू हू दए दुहाईआ। तूं बेऐब परवरदिगार, दो जहानां सच मलाहीआ। चौदां तबक रहे ललकार, सम्मत चौदां दए दुहाईआ। ईसा मूसा रहिणा ख़बरदार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चिट्टे अस्व हो अस्वार, शब्द घोड़ा

रिहा दौड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, मक्का मदीना वेख वखाईआ। रूसा चीना कर प्यार, आप आपणा संग रखाईआ। लोक तीनां बन्ने धार, चौदां लोक दए हलाईआ। दाना बीना आप करतार, करता पुरख नाउँ रखाईआ। जन भगतां देवे नाम रस भीन्ना, सांतक सति वरताईआ। लक्ख चुरासी विच्चों वख कीना, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ । पाए सार गुरसिख जिउँ जल मीना, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा डेरा ढाहीआ। कलिजुग उठे सफा मलेश, कूड़ो कूड़ मिटांयदा। ना कोई पूजे शिव शंकर गणेश, ना कोई दीसे ब्रह्मा महेष, ना कोई विष्नूं रूप वटांयदा। ना कोई पूजा बाशक शेस, ना कोई लछमी रूप बणांयदा। आप कराए आपणी हरि आदेस, आपणी अलख जगांयदा। एका शब्द दर दरवेश, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। वेख वखाणे धारी केस, मूंड मुडाए संग रलांयदा। आपे लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ा भेख, थिर रहिण ना पांयदा। सतिजुग साचा रिहा वेख, नेत्र नैण उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरे आप सुहांयदा। कलिजुग काले सिफ्त सलाह, एका एक रखाईआ। इक्क मुहम्मद नाल मिला, दूजा संग रलाईआ। अल्ला राणी करे नाह, मुख बैठी घुँगट पाईआ। सम्मत पन्दरां मारे धा, ना दीसे कोई सहाईआ। अमाम मैहन्दी हरि भेख वटा, जोती नूर करे रुशनाईआ। मुख नक़ाब इक्क रखा, सम्मत सोलां दए सुहाईआ। पहली चेत्र शाही किले चरन टिका, लाहौर शहर फेरा पाईआ। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, जगे जोती नूर अलाहीआ। वाहिद ख़ुदा इक्क अख्वा, ख़ुदी ख़ुदाई दए मिटाईआ। ऐनलहक्क तेरा नाअरा पूरा दए करा, हक्क हकीकत फोल फोलाईआ। लाशरीक आप हो जा, शरीकत होर ना कोए जणाईआ। कलिजुग तेरी तारीक एका वार पवा, उम्मत नबी रसूल दए खपाईआ। कलिजुग तेरी मेटे लग्गी काली शाह, दुरमति मैल धवाईआ। गुरमुख उठाए थाउँ थाँ, चार वरन इक्क सरनाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई पकड़े बांह, जो बैठे ध्यान लगाईआ। पंडत काशी कोई जाणे ना, मुल्ला मसायक शेख़ पीर दस्तगीर कुतब गौंस ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम वेखे सृष्ट सबाईआ ।

सृष्ट सबाई साचा नाअरा, पुरख अकाल लगाया। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क दुआरा, एका धार बंधाया। एका मन्दिर इक्क गुरदुआरा, एका मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदवाला इक्क कराया। एका चरन इक्क प्यारा, एका तीर्थ एका तट इक्क किनारा रिहा जणाया। एका पूजा एका पाठ, एका हवन इक्क समग्री रिहा वखाया। एका अमृत मारे ठाठ, सर सरोवर

इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आपे कर, करनहार आप अख्वाया। करे कराए करनेहारा, आदि पुरख अबिनाशी। सृष्ट सबाई वरनेहारा, शाहो भूप घनक पुर वासी। जन भगतां नाम भण्डारे भरनेहारा, खेले खेल पृथ्मी आकाशी। वरन गोत ऊँच नीच राउ रंक एका घर धरनेहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणी रासी। हरि करता सृष्ट साज, सर्ब समाया। नाम चलाए सति जहाज़, सति पुरख दया कमाया। अनहद मारे साची आवाज़, साची सेवा लाया। मेल मिलाए ग़रीब निवाज, ग़रीब निमाणे गले लगाया। सीस वखाए साचा ताज, साचा नाम वखाया। चरन दुआरे बख्शे साचा राज, राज जोग इक्क जणाया। आपे रचणहारा काज, आप आपणा काज कराया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहाया। चार वरन बंधाए नाता सांझ, साचा दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंका नाउँ रखाया। सृष्ट सबाई साजन मीता, सगला संग निभांयदा। आपे ठांडा आपे सीता, आपे अग्नी तत्त रखांयदा। आपे मारे आपे जीता, आपे युद्ध करांयदा। आपे मन्दिर आप मसीता, गुरदुआरा आप अख्वांयदा। आपे बैठा रहे अतीता, त्रैगुण विच ना आंयदा। आपे हस्त आपे कीटा, ऊँच नीच आप अख्वांयदा। आपे कौड़ा आपे फीका, रस मीठा आप अख्वांयदा। आपे भेव जाणे जन जीअ का, जी दाता आप अख्वांयदा। आपे लहिणा देणा चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सींअ का, आपे कलिजुग वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जोती जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई सगला संगा, सतिगुर दीन दयाला। आप वजाए आपणा मृदंगा, आपे काल होए महांकाला। आपणा दर आपे मंगा, आपे भरे आपणा प्याला। आपे भुक्खा आपे नंगा, आपे होए दीन दयाला। आप आपणा लाया अंगा, आपणा आप होए रखवाला। आपे धारा होए गंगा, आपे अग्नी जोत ज्वाला। आप आपणे घोड़े कस्सया तंगा, आपे बैठा गुर गोपाला। आप आपणा करया जंगा, आप आपणा शस्त्र संभाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे चले अवल्लड़ी चाला। सृष्ट सबाई नाता जोड़, जोड़नहार अख्वाया। शब्द सरूपी चढ़या घोड़, लोआं पुरीआं फेरा पाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, रस फीका रहिण ना पाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चा टिला साचा पर्बत बजर कपाटी किला रिहा तुड़ाया। कलिजुग अन्तिम जाए बौहड़, सम्बल नगरी वेख वखाया। गुर गोबिन्दे लग्गी औड़, अमृत आत्म मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंका नाउँ धराया। सृष्ट सबाई कूड़ पसारा, कूड़ा डंक वजाया। पंज तत्त होए ख्वारा, मनमति रही कुरलाया। साध सन्त ना देवे कोई सहारा, धीरज यति ना कोई धराया। प्रगट होए हरि निरँकारा, निरगुण जोत करे रुशनाया। सरगुण बन्ने

साची धारा, सति सतिवाद समाया। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी काया चोली अन्तिम दए रंगाया। काया चोली काली धार, कलिजुग रंग रंगांयदा। जूठा झूठा तन संगार, माया ममता बस्त्र पांयदा। हउमे हँगता कर अहार, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। मंगता फिरे दर द्वार, दर दर अलख जगांयदा। चारों कुन्ट दिसे हार, सगला संग ना कोए निभांयदा। अन्तिम रोवे नीर वहाए धाहां मार, दर साचे आप कुरलांयदा। पुरख अबिनाशी सुण पुकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार आप अख्वांयदा। कलिजुग काले काला चीरा, साजन सीस बंधाया। हउमे लग्गी साची पीड़ा, बिरहों रोग सताया। टुट्टी जाए हड्डी रीढ़ा, जूठा झूठा भार उठाया। ना कोई उठाए साथी बीड़ा, बैठे मुख शरमाया। अल्ला राणी मंगदी पीहड़ा, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगाया। सूही चुन्नी साचा लीड़ा, मुख काला घुँगट पाया। नाल रलाए सूरबीरा, जोद्धे बीर रिहा उठाया। रसन चलाए साचा तीरा, एका चिल्ला रिहा वखाया। पकड़ उठाए शाह फकीरा, जगत ज़ंजीरा रिहा तुड़ाया। वेख वखाणे अठसठ नीरा, अठसठ फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा काला मुखड़ा, मुख काली शाही लाया। कलिजुग कूड़ा रिहा कुरला, चौदां तबकां रिहा सुणाईआ। गल विच पल्ला बैठा पा, हरि बख़्शीं बेपरवाहीआ। चार यारी संग रला, सगला संग वखाईआ। मुहम्मद नाअरा एका ला, ऐनलहक्क रिहा जगाईआ। प्रगट होए बेपरवाह, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सच नगारा रिहा वजा, डौरु डंका इक्क वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए उठा, शब्द सरूपी फेरा पाईआ। जोती अग्नी दए लगा, घर घर लम्बू लाईआ। साचा सगन लए मना, सम्मत पन्दरां वेख वखाईआ। तन शस्त्र साचा लए सजा, नीले वाला बेपरवाहीआ। सोलां कलीआं आसण लए वछा, आप आपणा धाम सुहाईआ। वल्या छल्या आप अख्वा, हरि जोती खेल खिलाईआ। उच्च अटल निहचल धाम बैठा डेरा ला, दिस किसे ना आईआ। सृष्ट सबाई तेरा सच मलाह, हक्क जनाब आप अख्वाईआ। उम्मत उम्मती दए सलाह, एका मता पकाईआ। अग़ैब अग़ैबी होए हरि ख़ुदा, ख़ुदी ख़ुदाई दए मिटाईआ। नूर इलाही ना होए जुदा, रफ़ीक तौफ़ीक इक्क रखाईआ। हक्क हकीकत दए वखा, हक्क हलाल इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा सगला संग वेख वखाईआ। सगला संग उम्मती नाता, चार यारी वेख वखाया। वेखे खेल हरि पुरख बिधाता, वेखणहार सृष्ट सबाया। कलिजुग तेरा कूड़ चलाए राथा, रथ रथवाही आपे लाया। प्रगट हो त्रिलोकी नाथा, तीनां लोकां वेख वखाया। मेट मिटाए कूड़ी शाही मस्तक माथा, साचा तिलक इक्क चढ़ाया। सर्बकला आपे समराथा, समरथ पुरख अख्वाया। अन्तिम लहिणा देणा चुक्के

सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, रविदास चुमारे लेखा लिखाया। राम रामा हरि दसराथा, पूत सपूता नाउँ रखाया। वेख वखाए नौ नौं नाथा, सिद्ध चुरासी रहिण ना पाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा सगल विसूरा हरि जी लाथा, नेत्र लोचण दर्शन पाया। मूल चुकाए तत्त आठा, नौ दर पार कराया। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठा, अठसठ ना वेख वखाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे मन्दिर मस्जिद माठा शिवदवाला फेरी पाया। कलिजुग तेरा काला रूप, एका रंग रंगांयदा। धूआँधार चारों कूट, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। जगत पसारा जूठ झूठ, नाता बिधाता ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेस वटांयदा। भेख वटाए जोत अकाली, अकल कला कलधारी। गुरमुख साजन शब्द स्वामी, देवे नाम ख़ुमारी। फल लगाए साची डाली, सिंचे सच क्यारी। जोत निरँजण चाढ़े लाली, आत्मक धुन सुणाए सच्ची धुन्कारी। परम पुरख होए प्रितपाली, हरि सेवक सेवादारी। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, खेले खेल निराली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग देवे नाम दलाली। नाम दलाल जगत विचोला, हरि हरि आप रखाया। गुरमुख विरले गाया ढोला, सो पुरख निरँजण पाया। काया मन्दिर अन्दर आपे बोला, आपणा राग अलाया। आपणे कंडे आपे तोला, तोलणहार आप अख्वाया। आपणा दर आपे खोल्हा, आप आपणा मुख वखाया। गुरमुख काया अन्दर मौला, मौला रूप समाया। उलटी करे नाभ कँवला, कँवला मुख भवाया। देवे वड्याई उप्पर धवला, धरनी धरत सुहाया। मेल मिलाए साँवल सँवला, सारंगधर अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलधारी कल आप अख्वाया।

१८५ ०७

* ६ फग्गण २०१४ बिक्रमी मंगल सिँघ दे घर पट्टी ज़िला अमृतसर *

हरि शब्द मेहरवान, सतिगुर विच समाया। सतिगुर दाता दानी दान, गुरमुख वेख वखाया। गुरमुख चतुर सुजान, हरि नामे चित लाया। मनमुख जीव अञ्याण, माया भरम भुलाया। प्रगट हो श्री भगवान, पंचम मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका शब्द वजाया। हरि शब्द सुल्तान, हरि हरि आप उपांयदा। सतिगुर जोधा सूर बली बलवान, गुर पूरा आप अख्वांयदा। गुरमुखां देवे नाम निधान, अन्तर मन्त्र इक्क जणांयदा। मनमुख मूर्ख मुग्ध अञ्याण, दिस किसे ना आंयदा। पंचम देवे धुर फ़रमाण, शब्द अनादी इक्क अलांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, राउ रंकां आप उठांयदा। हरि शब्द सुल्तान, हरि हरि बणत बणाईआ। सतिगुर दीन दयाल, दया निध अख्वाईआ। गुरमुख साचे लाल, आप आपणे गले लगाईआ। मनमुख गूढ़ी नींदे सवाल, माया ममता पड़दा पाईआ। पंच वसाए काया सच सच्ची धर्मसाल, साचा धर्म रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका अंका रिहा वखाईआ। हरि शब्द हरि भगवाना, हरि हरि रूप समाया। सतिगुर साचा शाह सुल्ताना, एका एक अख्वाया। गुरमुख मेला जगत जहाना, जोग जुगत इक्क वखाया। मनमुख जीव होए हैराना, भेव अभेदा कोई ना पाया। पंचम करे दर परवाना, पंचम मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, द्वार बंका इक्क सुहाया। हरि शब्द हरि शाहो भूप, वड वड्डा सिक्दारा। सतिगुर वेखे चारे कूट, दहि दिशा इक्क प्यारा। गुरमुख विरला लाहा रिहा लूट, आत्म रस निझर धारा। मनमुख माया फंदे फस जूठ झूठ, ना दिसे किनारा। पंचां आपे रिहा , देवे शब्द अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल अपर अपारा। हरि शब्द हरि नाम सौदागर, साचा वणज कराया। सतिगुर पूरा निर्मल कर्म करे उजागर, जिस जन आपणी दया कमाया। गुरमुखां देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाया। मनमुख भेव ना जाणे काया गागर, डूँघे हरि नईया सच चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा संग निभाया। हरि शब्द हरि तीर कमाना, एका एक रखांयदा। सतिगुर साचा मारे सच निशाना, दो जहाना पार करांयदा। गुरमुखां दरस दिखाए गुण निधाना, गुणवन्ता एका रूप दरसांयदा। मनमुखां दूई द्वैती लग्गा काना, जम की कान ना कोई चुकांयदा। पंचम सोहे दर राजाना, पंचम राज कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, वासी पुरी घनक आप अख्वांयदा। हरि शब्द तफंग, हरि हरि रिहा चलाईआ। सतिगुर पूरा मंगे एका मंग, नौ खण्ड वेख वखाईआ। गुरमुखां वंड रिहा वंड, आत्म दरस बूझ बुझाईआ। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आईआ। पंचम मेला विच ब्रह्मण्ड, खोजत खोजत हरि बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। हरि शब्द हरि दातार, हरि हरि आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा पहरेदार, जुग जुग सेव कमांयदा। गुरमुख साजन ल्ए उभार, आत्म जोती दीप जगांयदा। मनमुखां मारे अन्तिम मार, ना दूसर कोई छुडांयदा। पंचम मेला कन्त भतार, नारी सेजा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अलख निरजंण एका अलख आप जगांयदा। शब्द खण्डा दो धारा, हरि हरि आप उठाया।

सतिगुर पूरा पावे सारा, समरथ पुरख वेख वखाया। गुरमुख साजन करे प्यारा, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। मनमुखां दिसे अन्ध अंधिआरा, कूड़ी रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए बेपरवाहीआ। हरि शब्द हरि कटार, हरि हरि वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा मारे मार, मारनहार आप अख्वाईआ। गुरमुखां करे इक्क प्यार, चरन कँवल इक्क दरसाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, ना सोए कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। हरि शब्द हरि ब्रह्मण्ड, हरि हरि आप समाया। सतिगुर वेखे उत्भुज सेत्ज जेरज अंड, भेव रहे ना राया। गुरमुख भरम ना भुल्ले जगत पखण्ड, झूठा नाता तोड़ तुड़ाया। मनमुख आत्म होई रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणा आप लए उपाया। हरि शब्द हरि रूप अगम्म, हरि हरि आप रखाया। सतिगुर पूरा ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ कदे ना आया। गुरमुख बिरथा जाए ना कोई दम, पवण स्वासी लेखे लाया। मनमुख रोवण छम्म छम्म, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणा कम्म, करन करावणहार आप अख्वाया। हरि शब्द अलख निरँजण, इक्क अलख जगाईआ। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। गुरमुख नेत्र पाए नाम अंजन, आपणा लोचण आप खुलाईआ। मनमुख जीव जगत विकारा पी पी रज्जण, तृष्ना भुक्ख वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी कल रिहा वरताईआ। हरि शब्द हरि सचखण्ड, सच सच वरतारा। सतिगुर पूरा वंडां रिहा वंड, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। गुरमुखां हथ्थ फड़ाए नाम खण्डा प्रचण्ड, तिक्खी रक्खे धारा। मनमुख जीवां देवे दंड, वहाए वहिंदी धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम मेला साचे घर सुहाए दर दरबारा। सच दरबार हरि सुहञ्जणा, हरि जोत करे रुशनाईआ। इक्क नगारा लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड लोकमात अन्तिम वज्जणा, हरि साचा रिहा वजाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर घर घर छड्ड छड्ड भज्जणा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। मक्का काअबा शाह नवाबा अन्तिम तजणा, ना दीसे कोई सहाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदुआरे बहि बहि किसे ना सजणा, राग नाद ना कोई गाईआ। गुरमुख विरले पड़दा आपणा कज्जणा, गुर गोबिन्द होए सहाईआ। लक्ख चुरासी तेरी कोई ना रक्खे लज्जना, सीस हथ्थ ना कोई टिकाईआ। पारब्रह्म पुरख अकाला आदि निरँजण एका गज्जणा, अचरज खेल रिहा रचाईआ। पंज तत्त भण्डारा माटी भाण्डा सभ दा भज्जणा, त्रैगुण नाता रही तुड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम इक्क चलाए जहाजना, मनमुख जीव लए चढ़ाईआ। प्रगट होए

हरि साचा शाहो शबाशना, चिट्टे अस्व आसण लाईआ। आपे होए ग़रीब निवाजना, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजणा, अगम्मी धाड़ इक्क रखाईआ। आपणा चरन आपे दए रकाबना, शाह अस्वार आप अख्वाईआ। ना कोई पाप पुन्न सवाबना, ख़ाकी ख़ाक दए मिलाईआ। किसे मिले ना कोई रकाबना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, स्वांगी आपणा स्वांग रिहा वरताईआ। हरि शब्द हरि जाया, हरि हरि गोद उठाए। सतिगुर पूरे विच टिकाया, लोकमात फेरी पाए। हरिजन साचे लए मिलाया, सुरत सवाणी वेख वखाए। राग रागनी सेवा लाया, अनहद ताल वजाए। जोत निरँजण करे रुशनाया, अन्ध अन्धेर मिटाए। सर सरोवर इक्क बणाया, अमृत आत्म जल बरसाए। बजर कपाटी दए तुड़ाया, नाम खण्डा एका वाहे। चौदां हाटी दए विकाया, तीर्थ ताटी मूल चुकाए। औखी घाटी दए चढ़ाया, गुरमुख साचा पार कराए। जोत लिलाटी इक्क वखाया, अट्ठे पहर डगमगाए। धुन अनादी दए सुणाया, आत्मक धुन उपजाए। ब्रह्मादी खोज खोजाया, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाए। आत्म सेजा इक्क सुहाया, हरिजन साचे एका दूजा भउ चुकाए। तीजा लोयण आप खुल्हाया, भेव रहे ना राए। चौथे घर मेल सहिज सभाया, चौथा पद इक्क समझाए। पंचम मिल मिल हरि हरि गाया, हरि हरि रूप अख्वाए। छेवें छप्पर छन्न ना कोए सुहाया, शब्द गुर आसण लाए। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगाया, अट्ठे पहर डगमगाए। अट्ठां तत्तां विच ना आया, मन मति बुध ना वेख वखाए। नौ दर जगत खुल्हाया, सृष्ट सबाई रिहा भुलाए। दसवें घर मिल्या वर, गुरमुख साजन जाए तर, एका जोती एका गोती नूरो नूर समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जीवां जन्तां साधां सन्तां वेखे वासना खोटी, वरन बरन कोई रहिण ना पाए। हरि शब्द वासदेव, एका वस्त रखाईआ। सतिगुर शब्द सदा निहकेव, निहचल धाम सुहाईआ। गुरमुख तेरी साची सेव, पूरन घाल पाईआ। अमृत आत्म देवे साचा मेव, एका फल खवाईआ। प्रगट होया अलख अभेव, आदि शक्त रूप वटाईआ। कोई ना गाए रसना जेहव, वेद कतेब दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए वर, जिउँ जन जनक लए तराईआ। हरि शब्द हरि आप जगा, आपणी लए अंगड़ाईआ। सतिगुर साचे विच गया समा, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां लोकमात रिहा समझा, बिन गुर पूरे कोए ना पार कराईआ। मनमुख जीव रिहा रुला, कूड़े धन्दे लाईआ। पंचम मेला सहिज सभा, सति पुरखा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी करे कुड़माईआ। हरि शब्द उठया जाग, हरि साचे आप जगाया। लोकमात लग्गा भाग, गुर गोबिन्द

रूप वटाया। जन भगतां बुझाए तृष्ना आग, हउमे आग बुझाया। मनमुख जीव होए काग, दिवस रैण रहे कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेल कर, जोती शब्दी मेल मिलाया। निरगुण सरगुण खेल खला, खेलणहार करतारा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, आपे करे आपणी निमस्कारा। आप आपणा बणे सज्जण सुहेला, आपे सोहे आपणा इक्क दुआरा। आपे वस्सया इक्क अकेला, इक्क अकल्ला एकँकारा। आपे होया रंग नवेला, आपे हर घट करे पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर चवीआं अवतारा। निहकलंक हरि शब्द जणाई, साचा डंक वजाया। लोआं पुरीआं रिहा उठाई, गगन पताला फेरा पाया। लक्ख चुरासी रिहा हिलाई, नौ सत वेख वखाया। जूठ झूठ दए दुहाई, संग मुहम्मद नाल रलाया। अल्ला राणी रो रो नेत्र नीर रही वहाई, मुख काला घुँगट पाया। प्रगट होया बेऐब परवरदिगार नूर अलाही, एका नूर रिहा चमकाया। चौदां लोकां बण मलाही, चौदां तबकां रिहा उठाया। पकड़ उठाए थाउँ थाँईं, शेख़ मुसायक पीर गौंस कुतब दस्तगीर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल सृष्ट सबाया। खेलणहार हरि खिलंता, हरि हरि खेल खिलाया। प्रगट जोत श्री भगवन्ता, लक्ख चुरासी वेख वखाया। कलिजुग तोड़े गढ़ हउमे हँगता, एका खण्डा नाम वखाया। संग मुहम्मद चार यार होए मंगता, चारों कुन्ट रिहा फेरीआं पाया। ईसा मूसा आपणा दर आपे लँघदा, काला सूसा तन छुहाया। पारब्रह्म दर दुआरे ना आए संगदा, कूड़ी क्रिया ना संग निभाया। काया चोली एका रंगदा, माया ममता रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई फेरा पाया। सृष्ट सबाई प्रभ आप जगौणी, जोती नूर करे रुशनाईआ। सत्तां दीपां फेरी पौणी, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। लक्ख चुरासी देवे जम की फाँसी लाड़ी मौत नाल रलौणी, राए धर्म दए सजाईआ। हाढ़ सतारां ख़ुशी मनौणी, हरि साची ख़ुशी मनाईआ। चौदां लोक चौदां हट्ट चौदां तबकां ए सनौणी, हरि साचा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत वीह सौ चौदां बिक्रमी नाल रलाईआ। सम्मत पन्दरां रिहा ललकार, आपणी चोट लगांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, गढ़ कोट रहिण ना पांयदा। हरि हरि शब्द मारे मार, सीस धड़ वेख वखांयदा। दर दर घर घर रोवे नर नार, नारी कन्त ना कोई मिलांयदा। मानस जन्म मनमुख जीव गए हार, वेला अन्तिम आंयदा। गुर गोबिन्दा जोधा सूरबीर बली बलकार, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। नीला नीली धारों करे पार, नाम कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा। जोती जोड़ा इक्क प्यार, लोकमात

फेरा पांयदा। मिट्ठा कौड़ा परखे परखणहार, आप परीक्षा विच ना आंयदा। धुरदरगाही आया दौड़ा हरि निरँकार, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़ा, हरि साची बणत बणांयदा। वेद व्यासा लेख लिखारा प्रगट होए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्च टिल्ला पर्बत बजर कपाटी सिला तुड़ांयदा। दो जहानी लाए एका पौड़ा, रंग महल्ल उच्च अटल निहचल धाम इक्क वखांयदा। सृष्ट सबाई कराए वल छल, अछल अछल्ल आप करांयदा। गुरमुख साजन जाए बलि बलि, बलिहारी गुर साचा पांयदा। सुरती शब्दी गया रल, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। दीपक जोती जाए बल, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर जल थल, उच्चे टिल्ले फेरी पांयदा। कलिजुग मिटे दूई द्वैती लग्गा सल, एका तीर चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा काला चीर, वेखण आया अन्त अख़ीर, आपणी हथ्थीं पड़दा लांहयदा। सम्मत सोलां हो त्यार, हरि साचे सगन मनाया। घर घर मन्दिर अन्दर हाहाकार, धीरज धीर ना कोई धराया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, अट्ठे पहर नेत्र नीर वहाया। शिव शंकर करे गिरयाज़ार, बाशक तशका गलों हटाया। इन्द इन्द्रासन करे पुकार, करोड़ तेतीसा संग रलाया। विष्नूं वंसी करे विचार, सच सरबंस दिस ना आया। लक्ख चुरासी कोए ना पाए सार, लोकमात रही कुरलाया। रवि ससि रहे हार, दिवस रैण सेव कमाया। तारा मण्डल ना बन्ने धार, ऊँचो ऊँच दिस ना आया। ज़िमी अस्माना पाड़ा जाए पाड़, गगन पताल रहिण ना पाया। हरि घड़नेहारा आपे घाड़, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया। आपे डोबे आपे लाए पार, आपणा बेड़ा रिहा चलाया। गुरमुख साजन मीत मुरार, शब्दी शब्द मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सोलां देवे वर, कोई ना दिसे खुल्ला दर, दर दरवाज़ा बन्द कराया। सम्मत सतारां विछे सथ, हरि साचे आप विछावणा। धर्म राए दा चले रथ, नौ खण्ड आप फिरावणा। ना कोई दीसे मन्दिर मस्जिद दयोरा मट्ठ, उच्च अटल ना कोई सुहावणा। नगर खेड़े जाणे ढठ्ठ, शहर ग्रां ना कोई वसावणा। घर घर अग्नी दिसे मट्ठ, हरि साचे लम्बू लावणा। गुर गोबिन्दा गुरमुख विरले रक्खे हथ्थ, जिस जन आपणा दरस दिखावणा। चरन कँवल जो जाए ढठ्ठ, फड़ बांहों पार करावणा। लहिणा देण चुक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी कोई ना जावणा। हरि चरन दुआरे इक्क अकट्ठ, बगल कुरान ना कोई उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सर्बकला समरथ आप अख्वावणा। सम्मत अठारां अठसठ धार, आपे रिहा वहाईआ। जल जल रूप सर्ब संसार, धरती जल समाईआ। खेले खेल एकँकार, इक्क अकल्ला वेख वखाईआ। जुग जुग पावणहारा सार, जुग जुग भेख वटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लाया पार, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। मानस

मानुख गए हार, माया ममता गल विच फाहीआ। गुरमुख विरला सोहे बंक द्वार, बंक दुआरा इक्क रघुराईआ। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। ब्रह्मण्डां देवे इक्क हुलार, एका पवण झुलाईआ। शब्द डण्डा हथ्थ करतार, नाम खण्डा रिहा सजाईआ। जेरज अंडा आप विचार, खाणी बाणी आप वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग लहिणा जग झोली रिहा पाईआ। जगत लहिणा जग चुकया, जीव जन्त नादान। कलिजुग कूड़ा पैंडा मुकया, पन्ध मुकाए हरि भगवान। जूठा झूठा बूटा सुकया, ना दिसे पत्त डाऌ। हरि भाणा कदे ना रुकया, वरते दो जहान। उतरे पार जो जन चरन दुआरे झुकया, देवे नाम शब्द सच्ची कृपान। उज्जल करे मुखया, अमृत बख्शे पीण खाण। गुरसिख कोई रहिण ना देवे लुकया, जो जन रसना हरि हरि गाण। सुफल कराए मात कुख्खया, इक्क वखाए पद निरबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी जाणे आपे आण। उन्नी उनीसा कर प्यारा, इक्क हदीसा चलाईआ। मुस्लिम सुन्नी पार किनारा, ऐनलहक्क ना कोई जणाईआ। मुकामे हक्क इक्क दुआरा, चरन कँवल रिहा वखाईआ। चार यार संग मुहम्मद भर भंडारा, अल्ला राणी संग रलाईआ। लोकमात दए हुलारा, पार किनारा रिहा जणाईआ। हू हू कोए ना लाए नाअरा, अन्ना हू ना कोई जणाईआ। तीस बतीस ना करे प्यारा, ना कोई मुख रखाईआ। एका राग सुणाए हरि सुणावणहारा, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। चार वरना कराए इक्क प्यारा, मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ना कोई जणाईआ। बीस बीसा प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, जगत जगदीसा आप अख्वाईआ। छत्र सीस झुल्ले अपर अपारा, पंचम मुख ताज सुहाईआ। निर्मल जोत करे उज्यारा, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। हरि शब्द होए सच्ची सिक्दारा, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। उप्पर बैठ बेऐब परवरदिगारा, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। एका नाम इक्क जैकारा, एका सिख्या रिहा सिखाईआ। एका गुर इक्क भण्डारा, एका रिहा वरताईआ। एका चरन इक्क प्यारा, एका कँवल मुख खुल्ऌाईआ। एका दर बंक दुआरा, दर दरबान इक्क वखाईआ। एका शाह सुल्तान न्यारा, सति सरूप आप अख्वाईआ। आपणी बन्नेॄ आपे धारा, सतिजुग साची नींह रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा हरि जगदीसा वेख वखाए इक्क इकीसा, इक्क अकाला इक्की पाईआ। एका इक्की आपे पा, आपे तोल तुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी साची सिक्खी लए बणा, साची सिख्या आप समझांयदा। धारों तिक्खी दए वखा, तिक्खी धार इक्क रखांयदा। वालों निक्की आप समझा, नीकन नीका विच समांयदा। मदिरा मासी कोई दीसे ना, भुन्न कबाब ना कोई खांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरँजण जोत धर, आदि निरँजण दए सर्ब भण्डारे आपे

भर, सर्बकला भरपूर आप अख्वांयदा। इक्क इकीसा हरि निरँकारा, आपणा कर्म कमांयदा। इक्क हदीसा विच संसारा, एका मार्ग लांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां खाली खीसा, सिर ताज ना कोई रखांयदा। प्रगट होए हरि साजन साचा शाहो शबीसा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। कलिजुग माया कूड़ा पीसन पीसा, लक्ख चुरासी झोली पांयदा। लहिणा देणा चुकाए मूसा ईसा, अञ्जील कुराना संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा शब्द मलाह, पारब्रह्म बेअन्ता। गुरमुखां देवे नाम सलाह, साजन साचे सन्ता। अगम्म अगम्मड़ा पाए राह, एका धाम सुहंता। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा लेखे दए ला, गढ़ तोड़े हउमे हँगता। आदि जुगादी जुग जुग देवे ठंडी छाँ, जगत जगदीस साची संगता। सखा सहाई आपे होए पिता माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठंता। निथाविआं देवे साची थाँ, जो जन दर दुआरे आए मंगता। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, साची चोग नाम चुगंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वन्ता। हरि जोबन हरि रंगया, गुरमुख साजन मीत। गुरमुख वर घर मंगया, हरि मेला शाहो अतीत। घर मन्दिर आपे लँघया, हरि बैठा रहे अतीत। जन भगतां कट्टणहारा भुक्ख नंगया, सदा सुहेला बीठला बीठ। अमृत धार नुहाए साची गन्गया, मिट्ठा करे कौड़ा रीठ। अनहद ढोल वजाए काया मन्दिर मृदंगया, वजावणहारा आप अनडीठ। पंजम सखीआं बहि बहि मंगल एका मंगया, सदा गायण सुहागी गीत। सतिगुर पूरे साचे घोड़े कसे तन्गाया, गुरमुख वेखे सच प्रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका रंग मजीठ। ऊँच नीच हस्त कीट ऊँच अपार अगम्म अथाह, बेपरवाह अख्वाया। चार वरन वखाए एका नाँ, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे नेत्र दए खुल्हा, नेत्र नैणां दरस दिखाया। चौथे पद रिहा समा, गुरमुख साजन मेल मिलाया। पंचम देवे साचा थाँ, थिर घर वासी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण सरगुण संग निभाया। निरगुण हरि निरँकार, सरगुण संग रखांयदा। सरगुण शब्द अधार, निरगुण जोत जगांयदा। निरगुण खेल अपार, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण दीसे जगत आकार, निरगुण दिस ना आंयदा। दोहां मेला इक्क प्यार, आपणी बणत बणांयदा। चेला गुर सोहे बंक द्वार, बंक द्वारी आप अख्वांयदा। हरिजन बख्शे चरन प्यार, नाता बिधाता आप बन्हांयदा। दो जहानी फड़ फड़ बांहों करे पार, नाम सुगाता झोली पांयदा। हरि सज्जण शाहो मीत शाह शहाना, मेहरवान गुण निधाना दया कमांयदा। आत्म तीर ब्रह्म ज्ञाना, भेव ना पाए कोई विद्वाना, ज्ञान ध्यान दिस ना आंयदा। जिस जन कराए चरन धूढ़ मजन अशनाना, मजन माघ करांयदा।

लक्ख चुरासी चुक्के काना, पतित पावन भेख बावन पकड़े दामन, पंच दुष्ट सँघारे रामा रावन, सीता सुरती आप प्रनांयदा। मिटे रैण अन्धेरी शामन, कृष्ना कानन रूप भगवानन, मकंद मनोहर लक्खमी नरायण सुन्दर कुण्डल मुकट बैन, आप आपणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन बरन अठारां देवे एका वर, इक्क महल्ला एका घर, एका धाम सुहांयदा। भगत वछल हरि गिरधारी, गिरवर रूप समाया। निरगुण जोत कर उज्यारी, सरगुण लेखे लाया। पारब्रह्म कल खेल न्यारी, परम पुरख अख्वाया। जुगां जुग जुगन्ता जगत भरे भण्डारी, जगत जगदीसा आप अख्वाया। मोन मुनीशर मुख ताब्यादारी, सेवक सेवा रिहा कराया। सिँघ मंगल सोहे बंक द्वारी, हरि साजन घर साचे पाया। चरन कँवल करे निमस्कारी, निमुख अक्खर एका पाया। हउमे कट्टी जगत बिमारी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आया। सो पुरख निरँजण देवे नाम ख़ुमारी, अट्ठे पहर रंग रंगाया। मानस जन्म ना आए दूजी वारी, आवण जावण गेड़ कटाया। धर्म राए दोए जोड़ करे निमस्कारी, नेत्र नैण रहे शरमाया। गुर शब्द सतिगुर साचा वेले अन्तिम पाए सारी, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम भण्डार सदा भरपूर रखाया।

नाम भण्डारा सदा अतुट, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि ना जाए निखुट, देवणहार सृष्ट सबाईआ। गुरमुख विरले लाहा रहे लुट्ट, कलिजुग सुत्ती सर्ब लोकाईआ। पंच विकारा रिहा कुट, अट्ठे पहर रहे लड़ाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर प्रभ पूरा गया तुठ, निर्मल बाती जोत जगाईआ। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठ, जो जन सरसे गया सेव कमाईआ। मनमुखां हथ्थ फड़ाए खाली ठुठ, दर दर मंगण नाम भिच्छया कोई ना पाईआ। वेले अन्तिम जड़ देवे पुट्ट, पत्त डाल्ही रहिण ना पाईआ। जन भगतां अमृत आत्म प्याए नाम घुट्ट, काया मन्दिर अन्दर ताल सुहाईआ। आवण जावण गया छुट्ट, जिस जन हरि गुर हरि साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन देवे वर, सच घर मिले वड्याईआ।

* ७ फग्गण २०१४ बिक्रमी नरायण सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर *

सतिगुर साचा सच घर, पारब्रह्म बेअन्ता। सतिगुर साचा दर, मेल मिलाए साचे सन्ता। सतिगुर साचा सच हरि, साचा खेल खिलंता। सतिगुर साचा सच वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साजन धाम सुहंता।

सतिगुर साजन मीतड़ा, आदि पुरख अपार। हरिजन रंगे काया चीथड़ा, रंगण रंग अपार। धुरदरगाही साचा मीतड़ा, दाता दानी सिरजणहार। जुग जुग चले आपणी रीतड़ा, चले चलाए विच संसार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, पूर्ब लहिणा कर्म विचार। हरि हरि भाणा लग्गे मीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम अधार। सच विचोला, साचा गुर एका एक अख्वाया। हरि नाम सुणाए साचा ढोला, एका राग अल्हाया। एका मन्दिर एका अन्दर एका पुरख अबिनाशी बोला, एका रिहा सुणाया। एका रूप एका चोला, एका बणया साचा तोला, तोलणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाया। सच वरतंता हरि भगवन्ता, साचो साच जणाईआ। गुरमुख उठाए साचे सन्ता, गुरमुखां मेल मिलाईआ। साचा धाम हरि सुहंता, साचे घर वज्जे वधाईआ। खेले खेल आदिन अन्ता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्ता, हरिजन साचे ल्ए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची शब्द करे जणाईआ। साचा शब्द हरि तराना, आपणा आप अल्हाया। गुरमुख मेला दो जहाना, विछड़ कदे ना जाया। जोती शब्दी गुरु गुर चेला, गुर चेला आप अख्वाया। सदा सखाई सदा सुहेला, साजन मीत आप हो जाया। आपे वसे सदा अकेला, हर घट आपे आसण लाया। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला, कलिजुग जीआं भेद ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर करे रुशनाया। साचा घर साचा नूर, हरि जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनादी वज्जे तूर, अनहद धुन उपजाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया रिहा मिटाईआ। नौं खण्ड पृथमी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी एका बख्शे चरन धूढ़, चरन दुआरा इक्क वखाईआ। चतुर सुघड़ बणाए फड़ फड़ मूढ़, हउमे हँगता गढ़ तुड़ाईआ। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन साचे वेख वखाईआ। साजन साचा हरि हरि मीता, एका एक अख्वाया। जुग जुग चले आपणी रीता, जुग जुग वेस वटाया। आपे जाणे देहुरा मन्दिर मसीता, गुरदुआरा आप सुहाया। बैठा रहे सदा अतीता, दिस किसे ना आया। जन भगतां काया करे ठंडी सीता, अमृत आत्म साचा रस चुआया। इक्क सुणाए अनादी गीता, अनाद अनादी आप वजाया। जिस जन वस्सया हरि हरि चीता, हरिजन साचे विच समाया। त्रैगुण तपे ना तन अंगीठा, पंज तत्त ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन वेखे दर, सच सुच्च करे कुड़माया। सच वस्त हरि साचे पास, साचो सच वरताईआ। हरिजन मेटे जगत प्यास, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। हरि हरि साजन शाहो शबास, नेत्र नैणां इक्क खुल्हाईआ। वेख वखाए पृथमी आकाश, गगन गगनंतर फोल फोलाईआ।

हरिजन हिरदे रक्खे वास, अट्ठे पहर ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। वस्सया धाम हरि अगम्मड़ा, अगम्मड़ी कार करांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चमड़ा, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। ना कोई रक्खे पल्ले दमड़ा, रत्ती रत ना कोई समांयदा। ना मरे ना कदे जम्मड़ा, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। सृष्ट सबाई आपे बणया अम्मी अंमड़ा, आप आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए आप समाए आपे मेट मिटांयदा। आपणे भाणे हरि समरथ, आपे आप समाया। आप चलाए आपणा रथ, आप आपणा भेख वटाया। सृष्ट सबाई कलिजुग अन्तिम देवे मथ, लक्ख चुरासी दए सजाया। मनमति विकारा पाए नथ्थ, सृष्ट सबाई बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजन मेला सच घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, अलख निरँजण वेख वखाया। अगम्म अलक्ख बेपरवाह, बेपरवाह अख्वाया। सतिगुर शब्द बण मलाह, लोकमाती फेरा पाया। चार वरनां रिहा जणा, जाति पाती मेट मिटाया। एकँकारा एका नाँ, इक्क अकल्ला रिहा समाया। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, जुग जुग खेल खिलाया। कलिजुग अन्तिम पकड़े बांह, सम्बल नगरी डेरा लाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणाया। नर नरायण दर दर्शन पा, हरि सिँघ सरूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी क्रिया रिहा कर, सेवक सेवा साची लाया। धन्न जणेदी माँ सुफल कुक्ख, जम्मया सुत दुलार। दर्शन कर उतरे भुक्ख, निर्मल जोती नूर करे उज्यार। उज्जल होए मात मुक्ख, मिल्या मेल अगम्म अपार। मात गर्भ ना आए उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी जाए गेड़ निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन घर घर हरि देवे वर, नाम दान धुर फ़रमाण भरे रहिण भण्डार। नाम भण्डारा सचखण्ड, गुरमुख साचे आप भराया। सतिगुर पूरे वंडी वंड, ना कोई मेट मिटाया। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आप समाया। गुरसिख कदे ना आवे कंड, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मनमुख जीव नार दुहागण होई रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाया। अट्ठे पहर मन मति विकारा पाए डण्ड, हरि का शब्द हरि दर नज़र ना आया। जगत जुगयासू सद भरया इक्क घमंड, घड़न भन्नणहार दिस ना आया। गुरमुख साजन साचे मीत आत्म अन्तर रक्खे ठंड, निझर धारा मुख चुआया। सृष्ट सबाई मेट मिटाए कूड़ी क्रिया जगत पखण्ड, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए बंक द्वार दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा जुग जुग रक्खणहारा लाजा, दर दरवेशा आया फेरी पाया। दर दरवेश हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटांयदा। जन भगतां दर होए पहरेदार, आप आपणी सेव कमांयदा। आपे बख्शे आपणा चरन प्यार, चरन कँवल चित आप लगांयदा। मानस

जन्म दए संवार, जन जननी लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नरायण नैण इक्क दरसांयदा।

* ७ फग्गण २०१४ बिक्रमी धर्मबीर दे घर जलालाबाद ज़िला अमृतसर *

निरगुण जोत निरँकार, निरवैर समाया। खेले खेल अपर अपार, आप आपणा भेख वटाया। अगम्म अगम्मड़ी जाणे धार, धार आपणी रिहा चलाया। आप आपणा कर पसार, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी जाणे कार, करता पुरख आप अख्वाया। लोआं पुरीआं पसर पसार, गगन मण्डल बणत बणाया। धरत धवल दए संवार, आकाश प्रकाश टिकाया। लक्ख चुरासी लए उभार, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। खेले खेल अपर अपार, खेलणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। निरगुण जोत हरि भगवन्ता, पारब्रह्म अख्वांयदा। खेले खेल आदिन अन्ता, आदि जुगादि रहांयदा। आप बणाए आपणी बणता आपे वेख वखांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आपे सेज हंढांयदा। आपे चाढ़े रंग बसन्ता, फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। आप उधारे लक्ख चुरासी जीव जन्ता, आपे मेट मिटांयदा। आप सुहाए गढ़ हँकारी हउमे हँगता, आपे तोड़ तुड़ांयदा। आपे दर दुआरे होए मंगता, दर दरबान आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती नूर जगत उजाला, हरि साचे आप कराया। प्रगट होए दीन दयाला, दीना बंधप नाम धराया। खेले खेल काल अकाला, कलधारी आप हो जाया। संग रखाए काल महांकाला, सेवक सेवा साची लाया। सृष्ट सबाई बण दलाला, शब्दी रूप वटाया। आपे चले आपणी चाला, जुग जुग चलदा आया। कलिजुग अन्तिम खेले खेल निराला, निहकलंका नाउँ धराया। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, त्रैगुण माया फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्मल जोती नूर करे रुशनाया। निर्मल जोती हरि नूरानी, नूरो नूर धरांयदा। आपे जाणे आपणी बाणी, आपणा राग आप अलांयदा। आपे होया जाण जाणी, जानणहार आप अख्वांयदा। जुग जुग देवे जगत निशानी, बोध अगाधा शब्द जणांयदा। जन भगतां अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, निझर धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। हरि जोत हरि रंग, हरि हरि आप रंगांयदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, डौरु डंका इक्क वजांयदा। साचे घोड़े कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण लांयदा। शब्द सरूपी बैठ पलँघ, आप आपणा हुक्म जणांयदा। कलिजुग जीव लक्ख चुरासी होई नंग, नाम धन ना कोई रखांयदा।

पंच विकारा लग्गा जंग, मनमति संग रखांयदा। मानस देही होई भंग, मूर्ख झूठे धन्दे लांयदा। गुरमुख विरला मंगे मंग, आत्म अन्धे दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंका डंक वजांयदा। हरि जोत आदि निरँजण, आदि पुरख अबिनाशा। भगत जनां हरि साचा सज्जण, जुग जुग वेखे जगत तमाशा। सदा सुहेला इक्क अकेला आपे होया पड़दे कज्जण, साचे मण्डल पावे रासा। मनमुख जीव माया अग्नी दझण, ना दीसे कोई सहाया। वेले अन्त ना रक्खे कोई लज्जन, राए धर्म दए सजाया। गुरमुख साजन दर दुआरे बहि बहि सजण, हरि साचे मेल मिलाया। अनहद ताल नगारे वज्जण, धुन अनादी रिहा सुणाया। इक्क चढ़ाए सच जहाज़न, सो पुरख निरँजण आप चलाया। प्रगट होया देस माझन, जोती जामा भेख वटाया। शाहो भूप वड राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वाया। कलिजुग अन्तिम रचया काजन, नौ खण्ड सृष्टी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका इष्ट रिहा बुझाया। एका इष्ट आदि गुर मन्त्र, हरि नामे वड वड्याईआ। देवे दरस हरि आत्म अन्तर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। मनमुखां लग्गे तन बसन्तर, ना सके कोई बुझाईआ। खेले खेल गगन गगनंतर, गगन पताला फेरी पाईआ। कलिजुग तेरी आपे वेखे आत्म अन्तर, वेखणहार आप बिगसाईआ। ब्रह्मे लहिणा चुक्के मनवन्तर, मनमति रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंका नाउँ रखाईआ। हरि जोत हर घट वासा, हरि हरि आप जगाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन पाताला आप समाईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, अचरज रचन रचाईआ। जन भगतां होए दासी दासा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। मनमुख जीवां मुख रखाया मदिरा मासा, देवे अन्त सजाईआ। भन्न वखाए काया कासा, थिर रहिण ना पाईआ। जो उपजे सो सदा विनासा, पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा डंक वजाईआ। हरि जोती हरि जैकार, एका एक कराया। शब्द शब्दी कर प्यार, हरि शब्दी मेल मिलाया। शब्द गहिणा तन श्रृंगार, नाम नैणा कज्जल पाया। वर घर साचे बहिणा कर प्यार, साचा सज्जण इक्क अख्वाया। ऊँच नीच ना कोई विचार, ज़ात पात ना कोई रखाया। भरमे भुल्ले सर्ब संसार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। प्रगट होए कल्कि अवतार, निहकलंका नाउँ धराया। नाम खण्डा तेज़ कटार, हथ्थ आपणे रिहा उठाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा शिव देवत सुर सोया कोई रहिण ना पाया। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलार, लक्ख चुरासी दए हिलाया। मारनहार आपे मार, जगत जगदीसा दिस ना आया। सृष्ट सबाई आई हार, ना दीसे कोई सहाया। राज राजान शाह सुल्तान होण ख्वार, धीरज धीर ना कोई धराया। बिन गुर पूरे कोई ना वखाए सच निशान, धर्म निशान ना

कोई झुलाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, गीता ज्ञान हथ्थ किसे ना आया। बगलीं रक्ख अञ्जील कुरान, मुल्लां शेख़ मसायक पीर दस्तगीर रहे अल्हाया। अठसठ तीर्थ फिर फिर सारे गाण, हरि साचा नज़र ना आया। कलिजुग जीव अन्त सर्ब पछतान, वेला अन्तिम आया। हरि प्रगट होए वाली दो जहान, दो जहानां वाली आप अख्वाया। साधन सन्तां करे पछाण, नाम निधाना झोली पाया। एका राग सुणाए साचा कान, एका नाद रिहा वजाया। एका धुन सच्ची धुनकान, आत्मक धुन रिहा वजाया। जीव जन्त पुण छाण, वेले अन्तिम रिहा कराया। जूठ झूठ पीण खाण, अमृत प्याला ना कोई प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। हरि जोती हरि शब्द निशाना, एका एक कराया। एका चिल्ला तीर कमाना, एका रिहा उठाया। खेले खेल दो जहानां, दिस किसे ना आया। निर्मल नूर हरि जोत श्री भगवाना, भगतन मेल मिलाया। सति पुरख निरँजण एका बन्ने गाना, साचा सगन मनाया। शब्द जणाई धुर फ़रमाणा, वेद कतेब कुरान अञ्जील ना कोई लेख लिखाया। आपे जाणे आपणा भाणा, आपणे भाणे विच समाया। धुरदरगाही साचा राणा, शाह सुल्ताना आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाया। हरि जोती प्रकाश, हरि आपणा आप करांयदा। हर घट अन्दर रक्खया वास, हर घट आप समांयदा। भगत जनां हरि होया दास, मनमुखां दिस ना आंयदा। शब्द चलाए स्वास स्वास, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। लेखे लाए दस दस मास, जो जन चरन ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मेला सच दरगहि, गुर पूरा आप करांयदा। चेला गुर एका धाम सुहा, साचा धाम सुहांयदा। चार वरन जपाए एका नाँ, एका मार्ग लांयदा। शब्द सरूपी सच मलाह, सच बेड़ा पार करांयदा। होए सहाई थाउँ थाँ, गुरमुख साचे आप उठांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप अख्वांयदा। निरगुण रूप हरि करतारा, करता पुरख अख्वाया। जुग जुग मात लए अवतारा, आपणा रूप वटाया। सतिजुग त्रेता पार किनारा, द्वापर वेख वखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साची रचन रचाया। नानक गोबिन्द बण भिखारा, वेद व्यासा संग रलाया। प्रगट होए चवीआं अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, आप आपणे हथ्थ उठाया। मनमुख जीवां मारे मारा, दहि दिशा फेरीआं पाया। गुरमुख सुहाए इक्क दुआरा, बंक दुआरा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण जोती आदि पुरख, करनहार करतारा। ना कोई सोग ना कोई हरख़, खेले खेल विच संसारा। लक्ख

चुरासी रिहा परख, जीव जन्त वेख विचारा। अमृत आत्म रिहा बरख, गुरमुख साजन मीत मुरारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, प्रगट हो विच संसारा। जोत अबिनाश हर घट वासा, नर नरायण अख्वांयदा। पारब्रह्म सर्ब गुणतासा, समरथ कल अख्वांयदा। आदि अन्त ना कदे विनासा, रूप अनूप वटांयदा। जुग जुग वेखे जगत तमाशा, रामा कृष्ना आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप वटांयदा। कलिजुग रूप हरि हरि वेख, आपणी जोत जगाईआ। जूठ झूठ पसारा नेत्र पेख, पंच विकारा दए वहाईआ। संग मुहम्मद चार यारा लिखणहारा लेख, अल्ला राणी संग रलाईआ। मूंड मुंडाए नर नरेश, नर नरायण जोत जगाईआ। आपे जाणे धारी केस, सोया कोई रहिण ना पाईआ। सतिगुर दाता दानी दस दसमेश, दहि दिशा फेरीआं पाईआ। आपे जाणे गणपति गणेश, शिव शंकर सेव कमाईआ। विष्नूं वंसी करे अदेश, ब्रह्म ब्रह्म समाईआ। आदि पुरख प्रभ सदा अदेश, भेव कोए ना पाईआ। आपे सुत्ता बाशक सेज़, सांगो पांग हंढाईआ। आपणा शब्द सनेहड़ा आपे भेज, चतुर्भुज आप अख्वाईआ। लछमी रक्खे दर दरवेश, सेवक सेव कमाईआ। आदि शक्त आदि भवानी जोत जगदी रहे हमेश, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम होया दर दरवेश, हरिजन दुआरे फेरा पाईआ। आपे वेखे रिखी केस, गवर्धन धार आप उठाईआ। आपे जोधा नर नरेश, निरगुण रूप बेपरवाहीआ। आपे फड़े खूंडी मोढ्ढे धरया खेस, नानक दर वज्जे वधाईआ। गुर गोबिन्द धारी केस, साची बणत बणाईआ। कलिजुग अन्तिम लए वेख, निहकलंका जामा पाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे रेख, सच सुच्च रिहा वरताईआ। किसे ना चलणी कोई पेश, ना दीसे कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर अगम्म अथाह, भेव कोई ना पांयदा। आपे होया बेपरवाह, बेऐब आप अख्वांयदा। आपे ऐनलहक्क अख्वा ख़ुदा, ख़ुदी ख़ुदाई मेट मिटांयदा। आपणे दर आपे करे सदा, आपणी अलख आप जगांयदा। आपे फिरे होए गदा, भीखक भिख्या मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपांयदा। आप आपणा नाउँ धरा, आपणी कल वरताईआ। नूर अलाही गया समा, दिस किसे ना आईआ। अल्ला राणी लए जगा, संग मुहम्मद नाल रखाईआ। हक्क हकीकत फोल फोला, शरअ शरीअत दए जणाईआ। लाशरीक आप अख्वा, एका कलमा दए पढ़ाईआ। कलमा अमाम कायनात बणा, एका नाअरा लाईआ। सच जमाइत दए वखा, एका वज़ू कराईआ। इक्क दुआरे सजदा दए करा, जोती नूर करे रुशनाईआ। अमाम मैहन्दी प्रभ आप अख्वा, दिशा लहिंदी फेरी पाईआ। मुख नक़ाब लए टिका, काला सूसा तन छुहाईआ।

साचे घोड़े चरन आप टिका, सोलां कलीआं आसण लाईआ। आपणीआं वागां आपे रिहा उठा, ना कोई दूसर संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग मेटे कूड़ी छाहीआ। कूड़ा डंक कूड़ पसारा, कूड़ो कूड़ प्रधानया। कूड़ो कूड़ा, खेले खेल अपारा, कूड़ा दीसे जगत निशानया। कूड़ा धन्दा कूड़ी कारा, कूड़ा बद्धा हथ्थीं गानया। कूड़ी काया कूड़ा मन्दिर मुनारा, कूड़ा पीणा खाणया। वेले अन्तिम होए ख्वारा, कलिजुग वेखे गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा धाम आप सुहानया। कलिजुग कूड़ा कूड़ी रास, कूड़ा नाच नचांयदा। दर दर घर घर मदिरा मास, तन मास ना कोई सुकांयदा। बिन हरि नामे बिरथा स्वास, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जो उपजे सो होए नास, दिस कोए ना आंयदा। आपे होए देव वास, वासदेव आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणा जाप, आपे जाप जपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जूठा झूठा डेरा ढांयदा। जूठा झूठा वज्जया डंक, धरत मात रही कुरलाईआ। भरमे भुल्ले राउ रंक, माया ममता मोह वधाईआ। प्रगट होए वासी पुरी घनक, घनक पुर वासी नाउँ धराईआ। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच दए वड्याईआ। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक रखाया। दीपक जोती जगे निरँजणा, अट्ठे पहर डगमगाया। शब्द अनादी एका वज्जणा, गुर पूरा रिहा वजाया। झूठा घर लोकमात सभ ने तजणा, थिर घर साचा इक्क सुहाया। अमृत पी पी हरिजन साचे रज्जणा, सर सरोवर इक्क वखाया। नाम चढ़ाए सच जहाजना, सोहँ चप्पू रिहा लाया। सतिजुग साचा रचया काजना, लोकमात जन्म दवाया। सच वस्त देवे दाजना, पल्ले गंढु बंधाया। खेले खेल देस माझना, नौ सत करे रुशनाया। चिट्टे अस्व चढ़या ताजना, शाह सुल्तान आप हो जाया। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजना, निहचल एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचे नेत्र पेख, निज घर जोत जगाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। किसे हथ्थ ना आए औलीए पीर शेख़, मुल्लां काज़ी पीर दस्तगीर कुतब गौंस रहे कुरलाईआ। पंडत पांधे तिलक लिलाटी ला ला रहे वेख, त्रिबैणी नैणी दिस ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के धारी केस, गुर गोबिन्द ना दर्शन पाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्किआ चारे वेद, पारब्रह्म भेव ना राईआ। पुराण अठारां वेखे व्यास वेद, नारद मुन संग रलाईआ। गीता ज्ञान इक्क आदेस, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला हरि गोबिन्दा, हरि हरि रंग

रंगांयदा। मेट मिटाए सगली चिन्दा, सांतक सति वरतांयदा। मनमुख जीव लगाए निन्दा, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। गुरमुख अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, साची धार आप रखांयदा। आप उपजाए साची बिन्दा, पिता पूत आप हो जांयदा। दाता दानी गहर गम्भीर हरि गुणी गहिंदा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। आदि जुगादि सदा बख्शिंदा, बख्शणहार आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाम वस्त अनमोल धुर दरगाही एका देंदा, जगत कंडे ना तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा साचा मीत, साचे घर सुहांयदा। मिल्या मेल हरि अतीत, हउमे रोग जलांयदा। काया मन्दिर वखाए साचा देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, दीपक जोती इक्क जगांयदा। पंचम शब्द गाए सुहागी गीत, साची सईआ संग रलांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत, भेव कोई ना पांयदा। आपे वस्सया हस्त कीट, ऊँचा नीचां आप समांयदा। आपे सुत्ता दे कर पीठ, आपे मुख वखांयदा। आपे करे काया कौड़ा रीठ, अमृत फल आप खवांयदा। हरि का शब्द सदा अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। पारब्रह्म हरि बीठलो बीठ, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सदा सहेला वस्सया चीत, नित नवित्त खेल खिलांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, चात्रिक सदा बिल्लांयदा। आपे करे काया ठंडी सीत, अमृत निझर मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे काया मन्दिर साचा घर, घर घर विच आप टिकांयदा। घर विच घर घर विच जोती, घर विच हवन कराया। घर विच दीवा घर विच बाती, घर मन्दिर रिहा टिकाया। घर मन्दिर घर बूंद स्वांती, घर सरोवर घर सुहाया। घर अन्धेरा दिसे राती, घर जोती नूर करे रुशनाया। घर मेला जन कमलापाती, घर साची सेज विछाया। घर मेला घर साचे साथी, घर सगला संग निभाया। घर संगा घर मंगा घर रंगा त्रिलोकी नाथी, घर चौथा पद रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप आप अख्वाया। निरगुण साची धार, सरगुण विच समाईआ। सरगुण लए उभार, सच सच करे जणाईआ। दोहां मेला विच संसार, भेद अभेदा रिहा छुपाईआ। चेला गुर इक्क द्वार, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप अख्वाईआ।

कलिजुग गढ़, हँकार सृष्ट सबाया। पंज तत्त विकारा रिहा लड़, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। त्रैगुण माया रही सड़, मूर्ख धन्दे लाया। गुरमुख विरला एका अक्खर रिहा पढ़, हरि हिरदे विच वसाया। सतिगुर पूरा वेखे अन्दर वड़, आसण सिँघासण एका लाया। सुरत सवाणी लए फड़, शब्दी मेल मिलाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, दिवस रैण करे रुशनाया।

आप बंधाए आपणे लड़, गुर पूरा दया कमाया। दरस दिखाए अग्गे खड़, अन्दर मन्दिर खोज खोजाया। मनमुख वहाए वहिंदे हड़, माया ममता मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया। मनमति रही कुरला, चार कुन्ट जैकारया। धरत मात मारे धाह, नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारया। साध सन्त रहे सुणा, दोए जोड़ करन निमस्कारया। बिन हरि तेरे कोई ना दीसे होर सहा, चारों कुन्ट अन्धेरा छा रिहा। जूठे झूठे घर घर उडदे काँ, कागी काग रला रिहा। एका भुल्लया तेरा नाँ, दीपक जोत ना कोई जगा रिहा। थाँ थाँ धूंणीआँ बैठे ला, साचा हवन ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा मूल चुका रिहा। मन पंखी दहि दिशा उडारी, आपणी आप लगांयदा। कलिजुग जीवां करे ख्वारी, गुरमति भरम भुलांयदा। भरमे भुल्ले नर नारी, नर नरायण दिस ना आंयदा। मानस बाज़ी जूए हारी, जन्म अजन्मा लेखे ना लांयदा। गुरमुख विरला वेखे नेत्र नैण उग्घाड़ी, एका लोचण आप खुल्हांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर मेल मिलांयदा। धर्म दिखाए सच अखाड़ी, सच जैकारा एका लांयदा। रुत्त सुहाए सतारां हाढ़ी, सतिजुग साचा आप वखांयदा। मनमुख जीवां मगर लगाए मौत लाड़ी, चारों कुन्ट फेरा फिरांयदा। आप उठाए अगम्मड़ी धाड़ी, लिख्या लेख पूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका डंका नाम वजांयदा। नाम डंका रिहा वज्ज, वजावणहार निरँकारा। सृष्ट सबाई घर बार जाणा तज, ना कोई दीसे महल्ल मुनारा। जो घड़या सो जाए भज्ज, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। गुरमुख विरला अमृत आत्म पीए रज्ज, जिस मिल्या पारब्रह्म पुरख अपारा। रक्खणहारा जुग जुग लज्ज, सतिगुर पूरा गुर अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर अवतार, जोती जोत जगाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। जोधा सूरबली बलकार, सूरबीर आप अख्वाईआ। खेले खेल अपर अपार, नीली धारी पार कराईआ। पीला बस्त्र तन शृंगार, एका शस्त्र रिहा उठाईआ। साचा माही हो अस्वार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। नूर अलाही करे ख़बरदार, काला घुँगट मुख तों लाहीआ। आवे जावे वारो वार, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। खेवट खेट हरि निरँकार, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा चढ़ाईआ। हरिजन साचा आप चढ़ाउणा, हरि साचे मार्ग लाया। एका दर हरि सुहाउणा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। एका अक्खर नाम जपाउणा, जगत वक्खर इक्क सुहाया। रोड़ी सक्खर चरन छुहाउणा, संग मुहम्मद वेख वखाया। एका नाअरा आपणा लाउणा, मौला रूप समाया। वेख वखाणे अवणा गवणा, अवण गवण पार कराया। जोत जगाए त्रैभवना, चौदां हट्टां वेख

वखाया। चौदां लोक वजाए एका पवणा, चौदां तबकां रिहा हिलाया। हरि का भेव जाणे कवण, वेद कतेब ना कोई जणाया। भेखा धारी भेख धारे जिउँ बल बवन, रूप अनूप दरसाया। कलिजुग दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रवण, तीर निशाना एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। तीर निशाना मारे तीर दो जहाना वाली। लक्ख चुरासी रिहा चीर, कोई तन ना दिसे खाली। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, पत रहिण ना देवे किसे डाल्ही। कलिजुग काया वेख अख़ीर, होया हाल बेहाली। नाल रलाए पीर फकीर, ना कोई करे सच दलाली। वेले अन्तिम लथ्थे चीर, खाली हथ्थ इक्क वखाली। अठसठ तेरा मुक्के नीर, अमृत धार ना मुख चवा ली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया सूरबीर, आपणी सिख्या आप सिखाली। सूरबीर हरि सुल्ताना, जोधन जोध अख्वाया। एका चिल्ला तीर कमाना, बोध अगाध शब्द लिखाया। खेले खेल दो जहाना, आदि जुगादि समाया। एका राग इक्क तराना, हर घट ब्रह्मादि अल्हाया। आपे देवे धुर फ़रमाना, सो पुरख निरँजण दया कमाया। जन भगतां बन्न्हे साचा गाना, नाम तन्दन हथ्थ उठाया। चरन धूढ़ बख्शे सच अशनाना, बंधन बंध कटाया। इक्क वखाए पद निरबाना, परमानंद समाया। गुरमुख मेला विच जहाना, हरिजन साचा आप मिलाया। करे प्रकाश कोटन भाना, अन्ध अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता आप अख्वाया।

*** ८ फग्गण २०१४ बिक्रमी ऊधम सिँघ दे घर पिण्ड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ***

जगत पसारा कूड़, कूड़ कुड़माईआ। गुरमुख मांगे चरन धूढ़, हरि दरस सच्ची सरनाईआ। काया चोली चाढ़े रंगण गूढ़, रंगणहार बेपरवाहीआ। मनमुख भुल्ले मूर्ख मूढ़, भेव अभेदा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। कूड़ नाता कूड़ पसारा, कूड़ा रैण अन्धेरा। हरि हरि शब्द इक्क घनेरा, चुकाए मेरा तेरा। भरमा ढाहे हरिजन डेरा, इक्क वखाए संझ सवेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखणहार दलेरा। काया देहुरा सच दुआरा, हरि साची जोत जगाईआ। शब्द अनादी धुन अपारा, अनहद रिहा वजाईआ। गावे गीत हरि दुआरा, गावणहारा सहिज सुखदाईआ। खेले खेल अपर अपारा, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। दस्म दुआरी उच्च मुनारा, बैठा आसण लाईआ। ना कोई दीसे चार दिवारा, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, एका रंग समाईआ। भगतन मेला सच दुआरा, हरि पूरन बूझ बुझाईआ। एका हरि एका घर एका दर दरबारा, एका रिहा

सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। साचा मन्दिर घर टिकाना, हरि साचे आप उसारया। शब्द सरूपी दए बिबाना, गुरमुख विरला उप्पर चाड़या। भरमे भुल्ला राजा राणा, मगर लग्गी पंचम धाड़या। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, अग्नी तत्त बहत्तर नाड़या। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, बजर कपाटी पड़दा पाड़या। शब्द जणाई देवे धुर फ़रमाणा, एका राग सुणा रिहा। आत्म अन्तर बन्न्हे गाना, हरि साचा सगन मना रिहा। प्रगट होए गुण निधाना, गुणवन्ता दया कमा रिहा। इक्क झुलाए सच निशाना, साचे धाम सुहा रिहा। एका राग इक्क तराना, एका ताल वजा रिहा। एका हरि वखाए हरि निरमाणा, हरि हरि रूप वटा रिहा। जन भगतां देवे दो जहानी माणा, दरगहि साची वेख वखा रिहा। जीआं जन्तां दाना बीना, बीना दाना आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेखे ला रिहा। उच्च महल्ला हरि अटारी, साचे शब्द सुहाया। जोत जगाए अगम्म अपारी, निरगुण रूप अख्वाया। अकल कला कल आपे धारी, कलिजुग अन्तिम आया। जन भगतां पैज रिहा संवारी, फड़ बाहों गले लगाया। एका बख्शे नाम ख़ुमारी, सो पुरख निरँजण दया कमाया। चरन पनहार बख्शी सच्ची सिक्दारी, साचा मार्ग इक्क रखाया। कलिजुग मेटे कूड़ी धारी, कूड़ कुड़यारा रहिण ना पाया। सतिजुग बन्न्हे साची धार जन भगतां पैज रिहा संवारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल हरि निरँकारी। साचा घर उच्च अटला, हरि हरि आसण लांयदा। आपे वस्सया इक्क अकल्ला, ना कोई संग रखांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा डूँघी डल्ला, हर घट वेख वखांयदा। मनमुख लगाए दूई द्वैती सल्ला, बिरहों रोग जलांयदा। हरिजन फड़ाए आपणा पल्ला, आपणे लड़ बंधांयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, आत्म सेजा वेख वखांयदा। जोती शब्दी हरि हरि रल्ला, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन वेख वखांयदा। सच महल्ला सच मुनारा, साचे सच वसाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अगाध बोध अख्वाया। निर्मल जोती कर उज्यारा, आकाश प्रकाश समाया। बेअन्त बेऐब होए परवरदिगारा, भेव कोए ना राया। खेले खेल खेलणहारा, जुग जुग खेल खिलाया। कलिजुग वेखे कूड़ पसारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। मनमति होए ख्वारा, जीव जन्त रहे कुरलाया। वरन बरनी लग्गा नाअरा, दूई द्वैती हल्ला रिहा कराया। सन्त साजन धरत मात करे पुकारा, ना पल्ला कोई फड़ाया। पुरख अबिनाशी लै अवतारा, नेत्र रो रो नीर वहाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वाया। जोती जोत कर उज्यारा, जोती जोत जगाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, ब्रह्मण्डां वेख वखाया। उत्भुज सेत्ज पावे सारा, जेरज अंड फोल फोलाया। वेख वखाए संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी पड़दा लाहया। वेद

पुराणा करे विचारा, पंडत पांधे लए बुलाया। ग्रन्थी पन्थी दए हुलारा, आप रखाया। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, आपे हर घट आसण लाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी धार चलाया। रूप अनूपा शाहो भूपा सच्ची सरकारा, सिरजणहार आप अख्वाया। चारों कुन्ट दहि दिशा वेख वखाए आपणा आप पसारा, वेखणहार दिस ना आया। कलिजुग अन्तिम भेखी भेख करे न्यारा, लेखा लेख ना कोई लिखाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सभाया। साचा घर सच सिँघासण हरि साचा आसण लांयदा। खेले खेल पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता आप अख्वांयदा। वेख वखाए पृथ्मी आकाशन, गगन पतालां फेरा पांयदा। भगत जनां हरि दासी दासन, सेवक सेवा कमांयदा। नाम जपाए रसन स्वास स्वासन, हरि जिह्वा वेख वखांयदा। साचे मण्डल पावे रासन, बंक दुआरा आप सुहांयदा। हरिजन तजाए मदिरा मासन, मोह माया जगत चुकांयदा। निज आत्म रक्खे आपणा वासन, परमानंद समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साजन वेख वखांयदा। उच्च महल्ल अथाह, एका एक सुहाया। पारब्रह्म बैठा बेपरवाह, आप आपणा वेख वखाया। ना कोई दीसे दूसर नाँ, ना कोई लेख लिखाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, पूत सपूत ना कोई उठाया। ना कोई सखा सुहेला पकड़े बांह, सगला संग ना कोई निभाया। इक्क अकेला वस्सया आपणे थाँ, थिर घर साचा रिहा सुहाया। जन भगतां जुग जुग देवे ठंडी छाँ, सांतक सति वरताया। इक्क जपाए आपणा नाँ, नाम नामा झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन मेल मिलाया। सच घर हरि आप सुहाया, दया निध गुणवाना। गुरमुख साजन मेल मिलाया, लहिणा देणा मूल चुकाना। आत्म दरसी दरस दिखाया, देवे दरस महाना। जगत तृष्ना रिहा मिटाया, मिले मेल श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, देवणहार जिया दाना।

* ८ फग्गण २०१४ बिक्रमी सोहण सिँघ दे घर पिण्ड राम पुर ज़िला अमृतसर *

पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, हरि साजन मीत मुरारा। प्रगट होए वाली दो जहाना, जोती नूर करे उज्यारा। शब्द जणाई इक्क तराना, लोआं पुरीआं कर पसारा। राग अनादी एका गाणा, आपे गाए गावणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी धारा। आप आपणी जाणे धार, हरि आपणी जोत जगाईआ। खेले खेल विच संसार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। हरिजन साचे लए उभार, आत्म दरसी दरस दिखाईआ। इक्क सुहाए बंक द्वार, दर दरवाज़ा

इक्क खुलाईआ। अन्दर मन्दिर खेल अपार, ग़रीब निवाज़ा दया कमाईआ। अनहद वाजा वाजां रिहा मार, पंचम सखीआं संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप सहिज सुखदाईआ। निरगुण रूप हरि भगवन्ता, आदि पुरख अख्वाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग भेख वटाया। पकड़ उठाए साचे सन्ता, सतिगुर पुरख मनाया। मेल मिलाए नारी कन्ता, आत्म सेजा इक्क सुहाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप वरताया। पारब्रह्म सर्ब सुख दाता, हर घट आप समांयदा। जन भगतां मेट मिटाए अन्धेरी राता, दीपक दीप इक्क जगांयदा। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, निझर धार वहांयदा। दरस दिखाए इक्क अकांता, महल्ल अटल अचल्ल डेरा लांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, विछड़ कदे ना जांयदा। लहिणा देणा चुकाए जाता पाता, ऊँचां नीचां आप मिलांयदा। प्रगट हो कमलापाता, पुरख बिधाता आप अख्वांयदा। वेख वखाए दीपां सातां, नव खण्ड फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। हरि हरि नाउँ आदि निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। दो जहाना साचा सज्जण, एका एक अख्वाया। कलिजुग अन्तिम आया पड़दे कज्जण, जोती जामा भेख वटाया। काल नगारे लक्ख चुरासी सिर ते वज्जण, ना दीसे कोई सहाया। जीव जन्त लोकमात घर बार सर्ब तजन, थिर कोई रहिण ना पाया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, घड़ण भन्नणहार आप अख्वाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा चल्लया जहाजन, मनमुख जीवां रिहा चढ़ाईआ। प्रगट होया हरि शाहो शबाशन, राज राजान शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोत जगाए देस माझन, सम्बल नगरी धाम सुहाया। लोआं पुरीआं रचया काजन, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी मारे वाजन, अनहद साची सेवा लाया। चिट्टे अस्व चढ़या साचे ताजन, दिस किसे ना आया। दाना बीना हरि ग़रीब निवाजन, गुरमुख ग़रीब निमाणे गले लगाया। इक्क कराए हाजी हाजन, साचा काअबा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, कलिजुग जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी तेरा वेखण आए मात तमाशा, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। साचे मण्डल पावे रासा, रवि ससि आप नचांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकासा, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जन भगतां पूरन करे आसा, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। निज घर आत्म रक्खे वासा, परमानंद समांयदा। लेखे लाए स्वास स्वासा, जो जन रसना गांयदा। मनमुख जीव मुख रखाया मदिरा मासा, हरि साजन दिस ना आंयदा। जूठा झूठा काया कासा, नाम प्याला भर जाम ना कोई प्यांअदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ भरवासा, कूड़ी क्रिया किरत कमांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहांयदा। पारब्रह्म सर्बकल भरपूरा, अलख अगम्म समाया। आपे जाणे आपणी नादी तूरा, भेव किसे ना पाया। शब्द गुर दाता जोधा सूरा, सतिगुर नाम धराया। जन भगत दुआरे हाज़र हज़ूरा, मनमुख जीवां दिस ना आया। पंच विकारा करे चूरा, पंचम नाता जोड़ जुड़ाया। पंचम दिसे दूरन दूरा, पंचम संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। आदि पुरख हर घट वस्सया, पारब्रह्म बेअन्ता। जुग जुग जन भगतां राह आपणा दस्सया, मेल मिलाए साजन सन्ता। मनमुख दर तों जाए नस्सया, माया पाए बेअन्ता। तीर निराला एका कस्सया, वेख वखाए जीआं जन्तां। साचे मन्दिर आपे बहि बहि हस्सया, महिमा गणत अगणता। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, गुरमुख साजन साचा धाम विखंता। मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया, एका अमृत जाम पिअन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणे अन्दर सुहंता। आपणे अन्दर हरि जगा, आपे वेख वखांयदा। निर्मल बाती इक्क वखा, सांतक सत वरतांयदा। इक्क अकांती रही डगमगा, ना कोई दूसर संग रखांयदा। महल्ल अटल आपणा आप सुहा, चार दिवार ना कोई बणांयदा। छप्पर छन्न ना ल्या सुहा, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। ज़िमी अस्मान कोई दीसे ना, धरत धवल ना कोई सुहांयदा। रवि ससि कोई जाणे ना, मण्डल मण्डप ना कोई बणांयदा। राग नाद ताल कोई वखाणे ना, खाणी बाणी ना कोई अल्ांयदा। आपणे भाणे हरि आपे रिहा समा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। थिर घर बैठा बेपरवाह, बेऐब परवरदिगार नाम धरांयदा। आप आपणा नाअरा ला, आपणा आप सुणांयदा। आपणा जैकारा आपे लए बुला, आपे अलख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, करे कराए हरि निरँकारा। खेले खेल इक्क अकल्ला, आदि जुगादी लए अवतारा। शब्द रखाए साचा भल्ला, लोआं पुरीआं पावे सारा। आपणी जोती आपे रल्ला, आपे दए हुलारा। वेख वखाए डूँघे सागर जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपारा। अपर अपारा हरि हरि खेल, जोती बणत बणाईआ। कलिजुग वेखे अन्तिम वेल, जोती नूर करे रुशनाईआ। सतिगुर सज्जण सहेल, हरिजन दए वड्याईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। मेल मिलाए गुरु गुर चेल, हरि गोबिन्द रूप समाईआ। आपे वस्सया रंग नवेल, हर घट बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशन दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म, आपणा कर्म कमाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल रचाया। जुग जुग जाणे आपणा कम्म, आपे करदा आया। आपे जननी होया आपे जन, आप आपणी

गोद उठाया। आपे घड़या आपे लए भन्न, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। घड़न भन्नणहार समरथा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी पाए नथ्था, दहि दिशा आप भवांयदा। गुरमुखां रक्खे दे कर हथ्था, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। धुरदरगाही देवे साची वथा, नाम निधाना झोली पांयदा। नेत्र लोचन जन दरस कर सगल विसूरा लथ्था, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। बोध अगाधी शब्द अकथा, आत्म धुन उपजांयदा। आप निभाए आपणा साथा, सगला संग निभांयदा। आपे होए त्रिलोकी नाथा, तिन्ना लोकां वेख वखांयदा। चौदां लोकां वेखे खेल तमाशा, चौदां हट्टां फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आपणे रंग हरि रंग राता, आपणे रंग रंगाईआ। आपे पिता आपे माता, पिता पूत आप अख्वाईआ। आपे दिवस आपे राता, रवि ससि आप हो जाईआ। आपे शब्द आपे गाथा, आपे नाम जपाईआ। आप रथवाही आपे राथा, आपे रिहा चलाईआ। आपे मस्तक आपे माथा, जोत लिलाटी आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका डंक वजाईआ। निहकलंका हरि निरँकारा, एका एक अख्वाया। शब्द डंक वजाए अपर अपारा, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, सत्तां दीपां रिहा जगाया। लक्ख चुरासी तेरा पार किनारा, कूड़ कुड़यारा, रहिण ना पाया। गुरमुख विरले बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआया। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, ज्ञान प्रकाश आकाश वखाया। मेल मिलाए अगम्म अपारा, अगम्मड़ा धाम सुहाया। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोई विचारा, ब्रह्म धार हरि हरि समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ धराया। निहकलंका हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। एका शब्द तीर कमाना, एका चिल्ले आप चढ़ांयदा। एका जोधा सूरबीर बली बलवाना, एका वार करांयदा। एका खेल दो जहाना, लोकमात फेरा पांयदा। कलिजुग कूड़ा होए हैराना, नेत्र नीर वहांयदा। जूठ झूठ मुख शरमाणा, पंज तत्त ना संग निभांयदा। हउमे हँगता होए वैराना, भुक्खा नंगता दर कुरलांयदा। पुरख अबिनाशी खेले खेल महाना, हरिजन साचे वेख वखांयदा। एका देवे धुर फ़रमाणा, सोया पूत उठांयदा। शब्दी बन्ने साचा गाना, साचा दर सुहांयदा। सर्ब जीआं हरि जाणी जाणा, जानणहार अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंक वजांयदा। एका डंक हरि वजाया, चार कुन्ट जणाईआ। राउ रंकां रिहा उठाया, साध सन्त रिहा हिलाईआ। वासी पुरी घनका बणके आया,

सम्बल नगरी डेरा लाईआ। जन जनका साजन लए तराया, सच महल्ला इक्क रखाईआ। आत्म जोती तनका लाया, दीपक जोत करे रुशनाईआ। मन का मनका फेर वखाया, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। हँ हँगता मेट मिटाया, गुर शब्द करे कुड़माईआ। साची संगता मेल मिलाया, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। जिउँ नानक अंगद अंग लगाया, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। सच दुआरा पारब्रह्म तेरा मंगदा आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपणी चोली आपे रंगदा आया, रंगणहार आप अख्वाईआ। साचे मन्दिर आपे लँघदा आया, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म सेजा रिहा सुहाईआ। आत्म सेजा हरि सुहा, गुरमुख मेल मिलाया। जोत निरँजण इक्क जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। अनहद साचा ताल वजा, राग रागनी सेवा लाया। अमृत आत्म सर सरोवर दए नुहा, दुरमति मैल गंवाया। कागो हँस दए बणा, गुर पूरे हथ्थ वड्आया। नारी कन्ता मेल मिला, निज घर साचा दए सुहाया। एका दूजा भउ चुका, तीजा लोचण दए खुल्हाया। चौथे पद रिहा समा, हरिजन साचे वेख वखाया। पंचम मेल सहिज सुभा, घर साजन साचा पाया। पाया पुरख बेपरवाह, सैंहसा रोग गंवाया। दो जहानी सच मलाह, कलिजुग अन्तिम हथ्थ किसे ना आया। चार वरन वखाए एका राह, एका धाम सुहाया। इक्क जपाए साचा नाँ, हरि निरँकारा आप अख्वाया। बरन अठारां देवे ठंडी छाँ, सखा सुहेला आप हो जाया। आपे पिता आपे माँ, मात पित आप अख्वाया। गुरमुख पार कराए फड़ फड़ बांह, साचा बेड़ा रिहा तराया। मनमुख जीव कोई रहे ना, राए धर्म दए सज़ाया। लाड़ी मौत वेखे थाँ, चारों कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक आपणा आप बणाया। एका एक एकँकारा, ओंकारा रूप समाया। सृष्ट सबाई बन्न्हे धारा, सति सरूपा आप हो आया। एका जोत एका शब्द इक्क विचारा, एका ज्ञान रिहा दृढ़ाया। कलिजुग कूड़ा मेट पसारा, सच सुच्च रिहा वरताया। जोती जोड़ा सिरजणहारा, साचा घोड़ा रिहा दौड़ाया। आवण जावण पतित पावन दो जहानी लाया एका पौड़ा, एका वेख वखाया। आपे जाणे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, गौड़ ब्रह्म आप अख्वाया। सम्बल नगरी आया दौड़ा, गुर गोबिन्द वेख वखाया। आपे जाणे साढे तिन्न हथ्थ लम्मा चौड़ा, दूसर भेव कोई ना राया। जन भगतां आत्म अन्तर लग्गी औड़ा, आपे दए बुझाया। वेखे फल लक्ख चुरासी मिठ्ठा कौड़ा, वेखणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंका हरि नरायण, एका एक अख्वांयदा। आपे वेखे आपणे नैण, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख साचे साक सज्जण सैण, साचा संग निभांयदा। लोकमात आया लहिणा देणा देण, जुग जुग भेख वटांयदा। रसना किसे ना

सके कहिण, गोबिन्द भेव कोई ना पांयदा। माया ममता मोह विकारे कलिजुग जीव झूठे वहिण, एका हड़ वहांयदा। लाड़ी मौत मगर लग्गी डैण, राए धर्म वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हर घट आपे वेख वखांयदा। निहकलंक जोत नुरानी, जोती जोत जगाया। खेले खेल दो जहानी, खेलणहार आप अख्वाया। कलिजुग मेटे कूड़ निशानी, काला सूसा तन छुहाया। ना कोई दीसे ईसा मूसा शाह दुरानी, शाह अफगान रहिण ना पाया। वेख वखाए हरि इरानी, लिबनानी संग रलाया। नेत्र दर दर नीर वहाए अल्ला राणी, मुख काला घुँगट पाया। संग मुहम्मद चार यार करन कुरबानी, सीस आपणा भेट चढ़ाया। ख़ुदावंद मंगे मंग साचा दानी, अग्गे आपणी झोली डाहया। साचा कलमा होए जानी, दिलदार आप अख्वाया। ऐनलहक्क तेरी मनज़ल वेखे इक्क रूहानी, ऐनलहक्क नाअरा लाया। प्रगट होए गुण निधानी, भेखाधारी भेख वटाया। शब्द चिल्ला मारे रसना तीर कमानी, आपे रिहा खिचाया। दो जहानां साचा बानी, चौदां तबकां रिहा हिलाया। वेख वखाए अञ्जील कुरानी, भेव कोए ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ धराया। निहकलंका नाउँ रक्ख, आपणी जोत जगांयदा। शब्द गुर कर प्रतक्ख, लोकमात वेख वखांयदा। सन्त सुहेले करे वक्ख, दो अक्खर जाप जपांयदा। लक्ख चुरासी उडने कक्ख, पंडत पांधा ना कोई धीर धरांयदा। वेख वखाए उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्ख, दहि दिशा फोल फोलांयदा। त्रैगुण माया पंच विकारा पंज तत्त अन्नयारा रिहा मच्च, ना कोई मात बुझांयदा। मन कलन्दर रिहा नच्च, सृष्ट सबाई आप नचांयदा। मति बुध ना जाणे हरि हरि सच्च, माया पड़दा पांयदा। झूठा नाता माटी कच्च, काया कूड़ा कप्पड़ इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका आप सुणाए, राउ रंकां आप जणांयदा। निहकलंक जोत जगा, एका अलख जगांयदा। पंडत पांधे रिहा उठा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। मस्तक तिलक लगाया वेखे थाँ थाँ, त्रिबैणी नैणी कवण नुहांयदा। वेद पुराण कतेबां लए फुला, ब्रह्म विद्या कवण पढ़ांयदा। चारे जुग लेखा रिहा लिखा सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पार करांयदा। भरम भुलेखा रिहा पा, जोती जामा भेख वटांयदा। केसा धारी लए समझा, गुर गोबिन्द संग रलांयदा। मूंड मुंडाए लए उपा, एका रंग रंगांयदा। मुस्लिम सुंनी कोई दीसे ना, ईसा मूसा पार करांयदा। काला सूसा तन छुहा, मुख नक़ाब टिकांयदा। मक्का मदीना फेरा पा, अमाम मैहन्दी आप हो जांयदा। भारत खण्ड खेल खिला, ब्रह्मण्ड वेख वखांयदा। भेख पखण्डा दए मिटा, एका डण्डा हथ्थ उठांयदा। मनमुख जीव आत्म रंडा दए खपा, गुरमुख साचे संग निभांयदा। चण्ड प्रचण्डा इक्क चमका, तिक्खी धार वखांयदा।

कूड़ कुड़यारे कंडा दए वढा, काली धार मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन इक्क दुआरा, नाम भरे सच भण्डारा, देवणहार आप करतारा, आपणी हथ्थी आप वरतांयदा। निहकलंक हरि हरि रूप, एका एक अख्वाया। आपे राजा शाहो भूप, तख्त सुल्तान आप अख्वाया। आपे वेखे चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। आपे जुग जुग बैठा रूठ, आपे जुग जुग लए मनाया। आपे जुग जुग जाए तूठ, जन भगतां दया कमाया। आपे मनमुख हथ्थ फड़ाए खाली ठूठ, आपे दर दर रिहा फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि भगवाना, निहकलंक नरायणा। जन भगतां देवे जिया दाना, आत्म दरस दिखाए साचे नैणां। आपे गोपी आपे काहना, आपे मण्डल रास रचायणा। आपे सीता सुरती बन्ने गाना, आपे होए राम रमायणा। आपे अकाल मूर्ति गुण निधाना, दिस किसे ना आयणा। आप उपजाए नाद तूरती, आप आपणा राग अलायणा। मेट मिटाए नाता कूड़ो कूड़ती, कलिजुग झूठा मेट मिटायणा। जन भगतां आसा मनसा पूरती, पूरन पुरख आप अख्वायणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल सृष्ट सबायणा। सृष्ट सबाई अन्ध घोर, चार कुन्ट अन्धेरा छाया। घर घर लड़ाई पंज चोर, पंचां मोह वधाया। मनमति हथ्थ पकड़ी डोर, ना कोई किसे छुडाया। कलिजुग कूड़ा रथ रिहा तोर, प्रभ साचा रिहा तुराया। हउमे हँगता करया चूर, जगत विकारा संग रलाया। गुरमुख विरला मंगता दोवें हथ्थ रिहा जोड़, प्रभ चरनी सीस निवाया। पुरख अबिनाशी जाए बौहड़, जोती जामा भेख वटाया। पार कराए घाटी सौड़, डूँघी कन्दर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचा आप उठाए, दयावान दयावाना। एका शब्द नाम जणाए धुरदरगाही इक्क फ़रमाना। सम्मत चौदां वेख वखाए, वीह सद बिक्रमी खेल महाना। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क नद वजाए, एका नाम तराना। अमृत आत्म साची मदि प्याए, इक्क ख़ुमार रखाना। नौ दुआरे पार हद्द कराए, किरपा कर श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना।

सतिगुर पुरख दयाल, सुख सहिज समाया। गुरमुख वेखे साचे लाल, लाल अनमुल्लड़ा वेख वखाया। फल लगाए काया डाल्ह, फुल फुलवाड़ी दए खिड़ाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाया। काया वेख सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर दए सुहाया। दीपक जोती एका बाल, गगन गगनंतर वेख वखाया। देवे नाम सच्चा धन माल,

नाम भण्डारा इक्क वरताया। सदा सदा करे प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाया। नेड़ ना आए काल महांकाल, दर द्वार वेख वखाया। अमृत सर सरोवर मारे इक्क उछाल, सोहँ हँसा रूप वटाया। धुरदरगाही भगत दलाल, बंस सरबंसा वेख वखाया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, त्रैगुण माया विच ना आया। आप आपणे आपे भाल, आपे रिहा गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंका नाउँ धराया। गुरमुख साजण सच घर वस्सया, पाया पुरख अपारा। पारब्रह्म राह एका दस्सया, निरगुण जोत उज्यारा। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, सतिजुग साचा करे पसारा। तीर निराला एका कस्सया, शब्द खण्डा दो धारा। लोआं पुरीआं फिरे नस्सया, अगम्म अगम्मड़ी करे कारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नर अवतार हरि गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। खेले खेल अपर अपारा जन भगतां मेटे सगली चिन्द, हउमे रोग जलाया। अट्ठे पहर सेवादारा सदा सदा बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाया। एका बख्शे चरन प्यारा हरि दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाया। जुग जुग बन्नॢे साची धार जोधा सूर वड मृगिन्द, कलिजुग अन्त अख़ीर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, हरि साचे आप चुकावणा। तन शृंगार कराए जूठ झूठ तन पाए गहिणा, माया ममता संग रखावणा। हउमे हँगता कज्जल पाए नैणा, धर्म राए दर सुहावणा। लक्ख चुरासी जीव जन्त सगला संग तेरे साथ रहिणा, वेले अन्त सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा मूल चुकावणा। कलिजुग मूल जाए चुक्क, हरि साचा आप चुकांयदा। वेला अन्तिम रिहा ढुक, ना कोई मेट मिटांयदा। काया बूटा जाणा सुक्क, अमृत सिंच ना हरया कोई करांयदा। सतिजुग साचा धरत मात दी धरे कुक्ख, पूत सपूता आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग सतिजुग वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम रिहा विचार, वेला अन्तिम आया। सतिजुग साचा हो त्यार, लोकमात लए अंगड़ाया। खेले खेल हरि करतार, आप आपणी खेल खिलाया। कलिजुग रोवे धाहां मार, संग मुहम्मद नाल रलाया। सतिजुग साचा बल रिहा धार, आपणी भुजा वेख वखाया। करे कराए करणहार, करता पुरख रिहा कराया। कलिजुग जूठा झूठा बन्नॢया भार, सिर आपणे रिहा उठाया। सतिजुग तुठा विच संसार, लोकमात राह तकाया। पारब्रह्म प्रभ एका रुठा, लक्ख चुरासी दए सजाया। कलिजुग खाली दिसे ठूठा, नाम वस्त ना कोई वखाया। राए धर्म फड़ फड़ टंगे पुठा, वेले अन्तिम दए सजाया। लुकया कोई ना रहे गुठा, ना कोई धीर धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द विचोला आपणा आप उठाया। सतिजुग साचे सच सलाह, हरि शब्दी

आप जणाईआ। लोकमात बण मलाह, जन भगतां मेल मिलाईआ। एका देवे साचा नाँ, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। धरत मात सुहाए तेरा साचा थाँ, सच सुच्च दए वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राजयां राणया दए खपा, सीस ताज ना कोई रखाईआ। खाणीआं बाणीआं दए मिटा, चार वरन ना कोई पढ़ाईआ। जाणी जाण आप अख्वा, धुर दी बाण इक्क चलाईआ। निहकलंका जामा पा, जोती नूर करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्दा संग रला, स्वांगी स्वांग वरताईआ। अंगीकार आप करा, आपणे अंग लगाईआ। नंगी कटार रिहा चमका, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। चिट्टे अस्व आसण पा, सोलां कलीआं वेख वखाईआ। चरन रकाबे दए टिका, हरि दाता बेपरवाहीआ। मुख नक़ाबी पड़दा देवे लाह, नूरो नूर समाईआ। दो दो आबी वेख वखा, शाह नवाबा दए हिलाईआ। हक्क नवाबा एका डंक वजा, मक्का काअबा वेख वखाईआ। अगैब अगैबा आप अख्वा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा संग निभाईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसारा, हरि साचा मेट मिटांयदा। सम्मत पन्दरां कर प्यारा, नौ खण्ड वेख वखांयदा। खेले खेल हरि निरँकारा, दूई द्वैती कंध हटांयदा। सृष्ट सबाई दो दो फाड़ा, आपे आप करांयदा। खेले खेल सतारां हाढ़ा, लेखा लेख ना कोई जणांयदा। जा जा वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलांयदा। मनमुख जीवां अग्ग लगाए बहत्तर नाड़ा, हाडी तन जलांयदा। सृष्ट सबाई तेरा इक्क अखाड़ा, प्रभ साचा आप लगांयदा। शब्द अगम्मी उठे धाड़ा, हरि धाड़वी आप हो जांयदा। साचे घोड़े चढ़े धुरदरगाही एका लाड़ा, नौ खण्ड सत दीप लक्ख चुरासी पुरीआं लोआं आप प्रनांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, हरि कूड़ो कूड़ दिसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द विचोला एका एक रखांयदा। शब्द विचोला मारे फेरे, कलिजुग आप उठांयदा। सतिजुग करे साची मेहरे, मेहरवान दया कमांयदा। कलिजुग कूड़ा आया घेरे, संगी साथी ना कोई छुडांयदा। सतिजुग करे हक्क निबेड़े, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। कलिजुग ढहि ढहि ढेरी होवन नगर खेड़े, महल्ल अटल ना कोई वखांयदा। सतिजुग आपणी लड्ड आपे गेड़े, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग धरत मात तेरे कराए खुल्ले वेहड़े, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। सतिजुग मुकाए झूठे झेड़े, सच सुच्च वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत पन्दरां वीह सद संग रखांयदा। वीह सद पन्दरां हो त्यार, हरि साची बणत बणांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ पसार, वेखणहार दिस ना आंयदा। सतिजुग साचे उठ बलधार, साची सिख्या इक्क समझांयदा। धरत मात करे पुकार, धीरन धीर ना कोई धरांयदा। राए धर्म रिहा ललकार, अन्तिम वेख वखांयदा। चित्रगुप्त लेख लिखार, आपणा खाता फोल फुलांयदा। लाड़ी मौत कर

श्रृंगार, हथ्थी मैहन्दी रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सतिजुग साचा लोकमात दए धर, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग तेरा पार किनारा, सतिजुग जोत जगाईआ। खेले खेल हरि निरँकारा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, सतिजुग ख़ुशी मनाईआ। करनेहार आप करतारा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। धरत मात तेरा एका नाअरा, दर साचे करे जणाईआ। साधां सन्तां सुण पुकारा, हरि साचा वेख वखाईआ। चारों कुन्ट धूंआँधारा, रैण अन्धेरी छाईआ। रवि ससि सूरज चन्न ना दीसे कोई सितारा, सच सुच्च ना कोई वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल वीह सद पन्दरां, फेरा पाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दरा, राज राजान शाह सुल्तान दए उठाईआ। सृष्ट सबाई आप जगाउणा, देवे इक्क हुलारा। नौ खण्ड पृथ्मी एका दर सुहाउणा, सत्तां दीपां इक्क प्यारा। जीव जन्त सर्ब करलाउणा, छड्डणा पए घर बारा। गुरमुख विरला प्रभ गले लगाउणा, जिस बख़्शे चरन प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा कर्म कमाउणा, कर्म कमाए हरि गोबिन्द, हरिजन लए तराईआ। शब्दी शब्द उपजाए साची बिन्दा, शब्द शब्दी जन्म दवाईआ। मनमुख जीव लगाए निन्दा, भेव अभेदा कोई ना पाईआ। गुर का शब्द डूँघा सागर गहर गम्भीर गुणी गहिंदा, ना कोई वेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, देवे नाम वड्डी वड्याईआ।

हरि सतिगुर एका सेवीए, पारब्रह्म करतार। हरि सतिगुर एका सेवीए, आदि पुरख अपार। हरि सतिगुर एका सेवीए, निरगुण जोत आकार। हरि सतिगुर एका सेवीए, अन्त ना पारावार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी सार। सतिगुर एका सेवीए, देवे साची वथ्थ। सतिगुर एका सेवीए, जगत विकारा देवे मथ। सतिगुर एका सेवीए, पंचम पाए नथ्थ। सतिगुर एका सेवीए, कर दरस सगल विसूरे जायण लथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन शब्द जणाए अकथ। सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता बेपरवाह। सतिगुर पूरा जाणीए, एका एक जपाए नाँ। सतिगुर पूरा जाणीए, सच दलाला देवे थाँ। सतिगुर पूरा जाणीए, फड़ हँस बणाए काँ। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होए सखाई पिता माँ। सतिगुर पूरा जाणीए, दीना बंधप दीन दयाला। सतिगुर पूरा जाणीए, घर मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला। सतिगुर पूरा जाणीए, इक्क वखाए बेहंगम चाला। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा होए रखवाला। सतिगुर पूरा सेवीए, देवे नाम सच्चा धन माला। सतिगुर पूरा सेवीए, एका दस्से राह सुखाला। सतिगुर पूरा सेवीए, तोड़नहार जगत जंजाला। सतिगुर पूरा सेवीए, नेड़ ना आए काल महांकाला। सतिगुर

पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम दोशाला। सतिगुर पूरा सेवीए, सर्बकला भरपूर। सतिगुर पूरा जाणीए, अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर। सतिगुर पूरा जाणीए, ना नेड़े ना दूर। सतिगुर पूरा जाणीए, नाता तोड़े कूड़ो कूड़। सतिगुर पूरा जाणीए, बख्शे चरन साची धूढ़। सतिगुर पूरा जाणीए, चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़। सतिगुर पूरा जाणीए, काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे सूर। सतिगुर पूरा जाणीए, साची सिफ्त सलाह। सतिगुर पूरा जाणीए, आपणे धन्दे देवे ला। सतिगुर पूरा जाणीए, पापी गन्दे लए तरा। सतिगुर पूरा जाणीए, हउमे हँगता दए मिटा। सतिगुर पूरा जाणीए, साची संगता लए मिला। सतिगुर पूरा जाणीए, खाली मंगता कोई जाए ना। सतिगुर पूरा जाणीए, गुरसिख अंगदा लए लगा। सतिगुर पूरा जाणीए, मानस जन्म ना होए भंगता भरमां गढ़ दए तुड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठा। सतिगुर पूरा जाणीए, साजन हरि गोबिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, वड दाता गुणी गहिंद। सतिगुर पूरा जाणीए, सदा सदा बख्शिंद। सतिगुर पूरा जाणीए, मिटाए सगली चिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, माण गंवाए करोड़ तेतीसा इन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन उपजाए साची बिन्द। सतिगुर पूरा जाणीए, दो जहानां वाली। सतिगुर पूरा जाणीए, धुरदरगाही साचा माली। सतिगुर पूरा जाणीए, फल लगाए काया डाली। सतिगुर साचा जाणीए, दो जहान करे रखवाली। सतिगुर साचा सेवीए, देवे नाम सच दलाली। सतिगुर साचा सेवीए, आदि अन्त ना होया खाली। सतिगुर साचा सेवीए, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप जोत धर कर, जोत जगाए इक्क अकाली। सतिगुर साचा सेवीए, परम पुरख अकाल। सतिगुर साचा सेवीए, दीनां नाथ दीन दयाल। सतिगुर साचा सेवीए, साचा घर घर विच दए वखाल। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन उपजाए साचे लाल। सतिगुर साचा सेवीए, बणे धुर संजोग। सतिगुर साचा सेवीए, आत्म रस चुगाए साची चोग। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क कराए निर्मल भोग। सतिगुर साचा सेवीए, सो पुरख निरँजण चरन प्रीती देवे साचा जोग। सतिगुर साचा सेवीए, हउमे हँगता दूई द्वैती कढ्ढे रोग। सतिगुर साचा सेवीए, देवे दरस अमोघ। सतिगुर साचा सेवीए, आत्म रस जुगाए साची चोग। सतिगुर साचा सेवीए, पार कराए तीना लोक। सतिगुर साचा सेवीए, एका बख्शे साची मोख। सतिगुर साचा सेवीए, अट्ठे पहर ना व्यापे हरख़ सोग। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क सुणाए सहागी साचा सच सलोक। सतिगुर साचा सेवीए, पार कराए कोटी कोट। सतिगुर साचा सेवीए, तन नगारे लाए शब्द चोट। सतिगुर साचा सेवीए,

माया ममता कढ्ढे खोट। सतिगुर साचा सेवीए, गुरमुख उठाए आलणिउँ डिगे बोट। सतिगुर साचा सेवीए, देवे नाम भण्डारा अतोट। सतिगुर साचा सेवीए, कर दरस लक्ख चुरासी जाए छूट। सतिगुर साचा सेवीए, पंचां चोरां कढ्ढे कुट। सतिगुर साचा सेवीए, ठग्ग चोर यार कोए ना सके लुट। सतिगुर साचा सेवीए, फड़ बांहों आप मनाए जो जुग जुग बैठे रुठ। सतिगुर साचा सेवीए, आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी आपे जाए तुठ। सतिगुर साचा सेवीए, नाता तोड़े जूठ झूठ। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लाहा लुट्ट। सतिगुर साचा सेवीए, पारब्रह्म अचुत्त। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क सुहाई साची रुत्त। सतिगुर साचा सेवीए, करे प्रकाश माटी बुत्त। सतिगुर साचा सेवीए, गुरसिख बणाए साचे सुत। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, इक्क लगाए साची चोट। सतिगुर पूरा सेवीए, पारब्रह्म बेअन्त। सतिगुर पूरा सेवीए, मेल मिलाए साचे कन्त। सतिगुर साचा सेवीए, साची सेज सुहाए नारी कन्त। सतिगुर साचा सेवीए, नाम जपाए मणीआ मंत। सतिगुर साचा सेवीए, जुग जुग महिमा गणत अगणत। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क वखाए रुत्त बसन्त। सतिगुर साचा सेवीए, लक्ख चुरासी पार कराए जीव जन्त। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आदि अन्त। सतिगुर साचा सेवीए, वड वड सागर सिन्ध। सतिगुर साचा सेवीए, वड दाता गुणी गहिंद। सतिगुर साचा सेवीए, शब्दी शब्द मृगिन्द । सतिगुर साचा सेवीए, सेवक वेखे ब्रह्मा विष्न शिव सुरपति राजा इन्द। सतिगुर पूरा सेवीए, ना मरे ना जन्मे हरख सोग ना व्यापे चिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन आप बख्शिंद। सतिगुर पूरा सेवीए, हरि साचा शाहो शाबाश। सतिगुर साचा सेवीए, पारब्रह्म पुरख अबिनाश। सतिगुर पूरा सेवीए, खेले खेल पृथ्मी आकाश। सतिगुर पूरा सेवीए, हर घट अन्दर रक्खया वास। सतिगुर पूरा सेवीए, लेखे लाए स्वास स्वास। सतिगुर पूरा सेवीए, सर्ब गुणा गुण तास। सतिगुर पूरा सेवीए, लेखे लाए नाड़ी हड्ड तन रत्त मास। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे मण्डल रास। सतिगुर पूरा सेवीए, शाहो भूप सुल्ताना। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सद मेहरवाना। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन देवे जिया दाना। सतिगुर पूरा सेवीए, खेले खेल दो जहाना। सतिगुर पूरा सेवीए, एका देवे धुर फ़रमाना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क वखाए पद निरबाना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क सुणाए अनादी गाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क उपजाए सच तराना। सतिगुर पूरा सेवीए, इक्क वखाए सच टिकाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन देवे नाम बिबाना। सतिगुर पूरा सेवीए, चुक्के आवण जाणा। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच निशाना। सतिगुर पूरा सेवीए, हर घट जोत जगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, हरिजन साचे वेख वखाए। सतिगुर पूरा सेवीए, मन तन हरया दए कराए। सतिगुर पूरा सेवीए, डंका डौरु इक्क वजाए। सतिगुर पूरा सेवीए, राउ रंकां एका धाम सुहाए। सतिगुर पूरा सेवीए, बार अंका अंक बार जोत जगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, वासी पुरी घनका नाउँ रखाए। सतिगुर पूरा सेवीए, गुरमुख जन जनका लए तराए। सतिगुर पूरा सेवीए, मन मनका दए फिराए। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती तनका दए लगाए। सतिगुर पूरा सेवीए, दे दरस मन शंका दए गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन वेख वखाए। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा अडोल। सतिगुर पूरा सेवीए, जुग जुग तोलणहारा तोल। सतिगुर पूरा सेवीए, बजर कपाटी देवे खोल्ह। सतिगुर पूरा सेवीए, अनहद वजाए साचा ढोल। सतिगुर पूरा सेवीए, सुरत सवाणी करे चोहल। सतिगुर पूरा सेवीए, गुरमुख काया अन्दर जाए मौल। सतिगुर पूरा सेवीए, देवे वड्याई उप्पर धौल। सतिगुर पूरा सेवीए, अमृत चुआए नाभ कँवल। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तोल। सतिगुर पूरा जाणीए, साजण हरि हरि मीत। सतिगुर पूरा जाणीए, काया मन्दिर वखाए सच गुरुदुआरा जगत मसीत। सतिगुर पूरा जाणीए, जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत। सतिगुर पूरा जाणीए, सद बैठा रहे अतीत। सतिगुर पूरा जाणीए, सृष्ट सबाई रिहा जीत। सतिगुर पूरा जाणीए, पतित करे पुनीत। सतिगुर पूरा जाणीए, मिठ्ठा करे कौड़ा रीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, चाढ़े रंग मजीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, देवे नाम जगत अनडीठ। सतिगुर पूरा जाणीए, एका रंग रंगाए हस्त कीट। सतिगुर पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख बख्शे चरन प्रीत। सतिगुर साचा सेवीए, साचा सिरजणहार। सतिगुर साचा सेवीए, अन्त ना पारावार। सतिगुर साचा सेवीए, खोल्हे बन्द किवाड़। सतिगुर साचा सेवीए, मेट मिटाए पंचम धाड़। सतिगुर साचा सेवीए, जोत जगाए नाड़ नाड़। सतिगुर साचा सेवीए, गुर शब्द घोड़े देवे चाढ़। सतिगुर साचा सेवीए, घर साचे देवे वाड़। सतिगुर साचा सेवीए, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। सतिगुर साचा सेवीए, होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़। सतिगुर साचा सेवीए, इक्क वखाए धर्म अखाड़। सतिगुर साचा सेवीए, कर्मा रोग दए निवार। सतिगुर साचा सेवीए, साचा शाहो बेऐब परवरदिगार। सतिगुर साचा सेवीए, देवे दरस अगम्म अपार। सतिगुर साचा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेला मेल मिलाए विच संसार। सतिगुर पूरा सेवीए, निरगुण रूप निरँजण। सतिगुर पूरा सेवीए, सदा सदा दर्द दुःख भय भंजन। सतिगुर पूरा सेवीए, नेत्र पाए

ज्ञान अंजन। सतिगुर पूरा सेवीए, चरन धूढ़ कराए साचा मजन। सतिगुर पूरा सेवीए, दो जहानी पड़दे कज्जण। सतिगुर पूरा सेवीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे साचे सज्जण।

* १५ फग्गण २०१४ बिक्रमी दर्शन सिँघ दे घर मकान नं० ६७८६ गली नं० ७ पहाड़ गंज दिल्ली दरबार विच *

करनहार समरथ, पूरन भगवन्तया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, हरिजन तराए साजन सन्तया। शब्द जणाई नाम अकथ, सुणे सुणाए आप सुणन्तया। जगत विकारा देवे मथ, सच सेज बणाए साची बणतिआ। हरिजन राखे दे कर हथ्थ, आदि अन्त गुणा गुणवन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलन्तया। खेलणहार हरि भगवाना, अकल कल अख्वांयदा। आपे जाणे धुर फ़रमाणा, आपणा आप सुणांयदा। आपे जाणे नाम निधाना, आपे वेख वखांयदा। आप आपणी करे पछाना, आप आपणा वेख वखांयदा। आप वजाए शब्द धुन तराना, आपणा आप सुणांयदा। आत्म अन्तर देवे पीणा खाणा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। सति सन्तोखी बन्ने गाना, धीरज धीर धरांयदा। धर्म झुलाए इक्क निशाना, सति पुरख आप झुलांयदा। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरि मूर्त अकाल, हरि हरि समाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, जुग जुग आपणे हथ्थ रखाया। आप वजाए आपणा ताल, अनादी धारा इक्क वखाया। दो जहानी बण दलाल, धुरदरगाही वेस वटाया। नाता तोड़ जगत जंजाल, जोती जोत समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, रामा नामा भेख वटाया। निहकलंक आदि अबिनाशा, परम पुरख सुल्ताना। निर्मल जोती नूर करे प्रकाशा, खेले खेल दो जहाना। हर घट अन्दर रक्खे वासा, भेव अभेदा भेव छुपाना। भगत जनां जन दासी दासा, सेवक सेव कमाना। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, लोआं पुरीआं वेख वखाना। साचे मण्डल पावे रासा, सति सरूप श्री भगवाना। आदि अन्त ना कदे विनासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणा भाणा। हरि भाणा हरि जाणया, हरि हरि रूप समाए। शाहो भूप वड सुल्तानया, राज राजाना आप अख्वाए। होए सहाई जन निमाणया, गढ़ हँकारी दए तुड़ाए। धर्म रखाए इक्क निशानया,

सतिजुग साचा रंग चढ़ाए। एका शब्द धुर फ़रमाणया, राग रागनी रहे गाए। गुरमुख वेखे चतुर सुजानया, आत्म अन्तर खोज खुजाए। आपे बख्शणहार चरन ध्यानया, हउमे हँगता रोग जलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका शब्द वजाए। एका डंका हरि निरँकार, हरि आपणा आप वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, मात पताल आकाश हिलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, करोड़ तेतीसा संग रलांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, लोकमात वेख वखांयदा। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज लए अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ धरांयदा। निहकलंका हरि बनवारी, एका एक अख्वांयदा। निर्मल जोत कर उज्यारी, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारी, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। बस्त्र शस्त्र इक्क अपारी, सो पुरख निरँजण वेख वखांयदा। साचे अस्व कर अस्वारी, शब्द सिँघासण आसण लांयदा। खेले खेल अपर अपारी, खेलणहार दिस ना आंयदा। दाता जोधा सूर बली बलकारी, ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप अख्वांयदा। निहकलंक नर नरायण दर्द दुःख भय भंजन, एका एकँकारया। जन भगतां मेला साचे सज्जण, मिले मेल पुरख अगम्म अपारया। इक्क चढ़ाए नाम जहाजन, खेवट खेट आप अख्वा रिहा। जन हरि रक्खणहारा लाजन, लाजावन्त आप अख्वा रिहा। कलिजुग अन्तिम रचया काजन, अकाल पुरख भेख वटा रिहा। प्रगट जोत देस माझन, सम्बल नगरी धाम सुहा रिहा। शब्द अगम्मी मारे वाजन, सन्त सुहेले आप उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्क आकार वखा रिहा। इक्क आकार एकँकारा, एका कल वरतांयदा। एका रूप अगम्म अपारा, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। वरन गोत हरि वसे बाहरा, ज़ात अज़ात ना कोई धरांयदा। बस्त्र शस्त्र ना तन श्रृंगारा, सीस धड़ ना कोई वखांयदा। चतुर्भुज खेल अपारा, आदि शक्त रूप वटांयदा। विष्नूं वंसी कर प्यारा, वास देव समांयदा। ओअँ सोहँ मेल अपारा, एका दूजा भेव चुकांयदा। तीजा लोइण इक्क उग्घाड़ा, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। धर्म वखाए सच अखाड़ा, साची दरगहि धाम सुहांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगाए हरि अकेला, आपणी कल वरताईआ। आपे गुरू आपे चेला, जोती शब्दी मेल मिलाईआ। भगत जनां हरि सज्जण सुहेला, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, पंचम सखीआं

मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे मीत, आप आपणे अंग लगाईआ। आप आपणे अंग लगा, हरिजन भेव खुल्हांयदा। अनहद सच मृदंग वजा, ताल तलवाड़ा इक्क वखांयदा। बजर कपाटी सिला तुड़ा, दूई द्वैती कुण्डा लांहयदा। गढ़ हँकारी दए मिटा, नाम खण्डा इक्क वखांयदा। साचे पौड़े दए चढ़ा, हरिभगतां खोज खोजांयदा। ब्रह्मण गौड़े रूप समा, पूत सपूता आप अख्वांयदा। मिट्ठा कौड़ा वेख वखा, हरिजन साचे आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण रूप हरि निरँकारा, सरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण खेल अपर अपारा, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण बन्ह्ने साची धारा, सरगुण विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण रूप हरि अबिनाश, जोती जोत समांयदा। सरगुण वेखे खेल तमाश, आप आपणी दया कमांयदा। निरगुण थिर घर पाए रास, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन आप सुहाए साचा दर, दर दुआरा आप अख्वांयदा। हरिजन सोहे बंक द्वार, हरि साचे आप सुहाया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, माया ममता पड़दा पाया। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसारा, कूड़ा डंका रिहा वजाया। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यारा, दीपक ज्ञान ना कोए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मूर्ख मूढ़े मनमुख जीव माया धन्दे आपे लाया। मूर्ख मूढ़ मुग्ध अञ्याणा, हरि हरि भेव ना जाणया। भरमे भुल्ले जीव निधाना, हउमे हँगता रोग वधाणया। जूठ झूठ लड़ बद्धा गाना, संग रखाए पंज शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हर घट आपे जाणी जाणीआ। कलिजुग कूड़ा कुड़यारा डंक, चारों कुन्ट वजाया। भरम भुलाए राउ रंक, राज राजाना भेव ना राया। गुरमुख विरला हरिजन जननी जणया जनक, हरिजन साचा वेख वखाया। आत्म जोती लाए तनक, आप आपणा मेल मिलाया। खेले खेल वासी पुरी घनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जगत निधान जीव अजाण मनमति वेख वखाया। मनमति जगत जुग रीती, हरि साचे वेख वखाईआ। वेख वखाए देहुरा मन्दिर मसीती, गुरदुआरा फोल फोलाईआ। गुरमुख विरले मानस देही जीती, सति सन्तोख समाईआ। सुरत सवाणी रहे अतीती, शब्द सुहागी कन्त हंढाईआ। अमृत आत्म मदि साची पीती, उतर कदे ना जाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीटी, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। काया चोली रंग चाढ़े मजीठी, रंगणहार

आप अख्वाईआ। कूड़ कुड़यारी काया कौड़ी रीठी, मनमुख जीवां भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेखे थाउँ थाँईंआ। हरिजन वस्सया सच दुआरा, हरि हरि साचा पाया। भरम भुल्ले जीव गंवार, साचा संग ना कोई रखाया। दोहां मेला अन्तिम वार, हरि साचा रिहा कराया। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआया। सृष्ट सबाई गई हार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। सम्मत सम्मती होए ख्वार, साध सन्त होए हलकाया। दरोही ख़ुदाए चार यार, पीर दस्तगीर ना कोई सुहाया। पंडत पांधे रहे विचार, ज्ञान ध्यान ना कोई जणाया। ग्रन्थी पन्थी वेख विचार, वेखणहार दिस ना आया। अन्तिम कल प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, वेद व्यासा वेख वखाया। नानक गोबिन्द कर प्यार, सम्बल नगरी राह तकाया। उच्च महल्ल अटल मिनार, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा धाम सुहाया। निर्मल जोती कर उज्यार, जोती जोत डगमगाया। शब्दी शब्द कर जैकार, एका नाअरा लाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, सृष्ट सबाई रिहा जगाया। वंडे वंड हरि निरँकार, आप आपणी वंड वंडाया। सम्मत चौदां हरिजन साचे लए उभार, नाता बिधाता इक्क बंधाया। सम्मत पन्दरां करे ख्वार, मनमुख जीव दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताया।

सतिगुर साजन मीत, एका एक अख्वांयदा। हरि शब्द सुणाए सुहागी गीत, एक नाम दृढ़ांयदा। चरन कँवल बख्शे सच प्रीत, विछड़ कदे ना जांयदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए देहुरा सच मसीत, अट्ठे पहर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बूझ बुझांयदा। हरिजन साचा मीतड़ा, एका एकँकार। काया चोली रंगे चीथड़ा, चाढ़े रंग अपार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म बख्शे साची धार। करे कराए पतित पुनीतड़ा, देवे नाम अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। सतिगुर पूरा सच घर, एका एक वखांयदा। आपे खोल्हणहारा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। आप चुकाए पंचम डर, पंचम मोह चुकांयदा। गुरमुख साचे लए वर, दर साचे सगन मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। साजन मीता हरि भगवान, पारब्रह्म अख्वाया। जन भगतां देवे फ़रमान, आप आपणी सेव कमाया। एका शब्द इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान रखाया। एका शब्द इक्क बिबान, एका रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन

साचे वेख वखाया। हरिजन साचे शब्द सलाह, गुर पूरे इक्क जणाईआ। सतिगुर पूरा बण मलाह, जग बेड़ा रिहा तराईआ। एका वस्त झोली पा, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। नाम गहिणा तन सुहा, सोलां कलीआं वेख वखाईआ। शब्द सिँघासण सेज विछा, आत्म अन्तर वेख वखाईआ। निर्मल जोती जोत जगा, अट्ठे पहर डगमगाईआ। धुन अनादी इक्क सुणा, अनहद ताल वजाईआ। अमृत आत्म जाम पया, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सांतक सति दए वरता, धीरज धीर रखाईआ। कागो हँस दए बणा, सोहँ हँसा साची चोग चुगाईआ। एका धाम रिहा सुहा, घर साचा इक्क वखाईआ। थिर घर बैठा बेपरवाह, आप आपणी अलख जगाईआ। गुरमुख साजन मेल मिला, एका दूजा भेव चुकाईआ। तीजा लोइण दए खुल्हा, चौथे पद समाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, आपणा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जुग जुग जुग विछड़े जग मेल मिलाईआ। हरि सज्जण हरि मेलया, किरपा कर निरँकार। आपे होए सज्जण सुहेलया, कलिजुग अन्तिम वार। गुर गोबिन्द गुरु गुर चेलया, गुर शब्दी लए अवतार। अचरज खेल आपे खेलया, खेलणहार विच संसार। आप वसे रंग नवेलया, रेख भेख ना कोई विचार। जन भगतां लक्ख चुरासी धर्म राए दी कटे जेलया, आवण जावण गेड़ निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन पावे सार। हरिजन साची सार, हरि हरि पाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, आपणी बूझ बुझाईआ। लहिणा देणा पूर्ब दए निवार, मानस जन्म झोली पाईआ। नेत्र नैणां दरस अपार, जोग तप हठ अभ्यास पूजा पाठ ना कोई रखाईआ। फड़ फड़ बांहों लाए पार, अधविचकार ना कोई रखाईआ। हरिसंगत मेला हरि द्वार, हरि एका मार्ग लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अल्हाया आपे गाया, सुनणहार आप अख्वाईआ। गावत गाए गुर गोबिन्दा, गहर गम्भीर समांयदा। आपे होए सदा सदा बख्शिंदा, बख्शणहार आप अख्वांयदा। हरिजन उपजाए साची बिन्दा, पूत सपूता आप अख्वांयदा। दाता दानी वड गुणी गहिंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण जन जननी वेख वखांयदा।

* १६ फग्गण २०१४ बिक्रमी करतार सिँघ दे घर दिल्ली शहर *

पारब्रह्म हरि बेअन्त, बेपरवाह अख्वाया। जुग जुग उधारे साचे सन्त, शब्द मलाह बणाया। मेल मिलाए नारी कन्त, आत्म सेजा डेरा लाया। इक्क सुहाए रुत्त बसन्त, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। सति पुरख निरँजण आदि अन्त, आप आपणी कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती

जामा भेख वटाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, शाह भूप सुल्ताना। खेले खेल पृथ्मी आकाश, वेख वखाए दो जहाना। साचे मण्डल साची रास, मेल मिलाए श्री भगवाना। हर घट रक्खे आपे वास, भेव अभेदा मुख छुपाना। जन भगतां जुग जुग होए दास, जोग जुगत वेख वखाना। आदि अन्त ना होए विनास, सच घर वसे भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल गुण निधाना। पारब्रह्म पुरख अगम्मा, एका एक अख्वाया। ना मरे ना कदे जम्मा, आवण जावण खेल रचाया। पवण स्वासी ना कोई दमा, नेत्र नैण ना वेख वखाया। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्मा, पंज तत्त ना मेल मिलाया। आदि शक्त जोत निरँजण आपे जाणे आपणा कम्मा, भेखाधारी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकर्मी कर्म कमाया। पारब्रह्म हरि सुल्तान, साचा धाम सुहांयदा। परम पुरख हरि मेहरवान, एका नाम जणांयदा। शब्द शब्दी धुर निशान, एका एक झुलांयदा। खेले खेल जुग महान, जगत वेस वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रसना गान, सेवक सेवा लांयदा। सुर नर मुन रिख सर्ब ध्यायण, मार्ग इक्क वखांयदा। साध सन्त जीव जन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अंक जणांयदा। पारब्रह्म प्रभ शाह सुल्तान, आपणा आप जणाया। शब्द वजाए साचा डंक, वरन बरनां रिहा सुणाया। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, जन जननी लेखे लाया। प्रगट हो वासी पुरी घनक, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाया। खेले खेल बार अनक, अनक कल अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। पारब्रह्म हरि जोत उजाला, जोती जोत समांयदा। शब्द गुर गुर गोपाला, वरन गोत ना कोई रखांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म हरि नां निरँकार, निरगुण रूप समाया। खेले खेल अपर अपार, सरगुण भेव ना राया। सतिजुग त्रेता बन्ने धार, द्वापर फेरा पाया। साधां सन्तां लए उभार, जीआं जन्तां वेख वखाया। एका बख्शे चरन प्यार, नाता बिधाता आप अख्वाया। हरिजन मेला कन्त भतार, सुरत सवाणी वेख वखाया। तोड़नहारा गढ़ हँकार, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। इक्क सुहाए बंक द्वार, दर दरवाज़ा आप खुलाया। काया मन्दिर अन्दर महल्ल अटल उच्च मिनार, दस्म दुआरी रिहा सुहाया। आपे खोले बन्द किवाड़, पंचम धाड़ दए मिटाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, आकाश आकाश समाया। आपे होया पिछे अगाड़, हरिजन साचे लए तराया। गुरमुख साजन साचे लाड़, साचे घोड़े दए चढ़ाया। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अखाड़, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। मनमुख जीव वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाया। त्रैगुण माया

रही साड़, पंज तत्त होया हलकाया। मनमति वेखे इक्क अखाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। पारब्रह्म प्रभ साजन मीता, हरि हरि आप अख्वांयदा। आपे रामा आपे सीता, आपे रावण गढ़ तुड़ांयदा। आपे अर्जन आपे गीता, आपे कृष्ना रूप वटांयदा। आपे देहुरा मन्दिर मसीता, गुरुदुआरा आप अख्वांयदा। आपे बैठा रहे अतीता, निरगुण वेस वटांयदा। आपे ठांडा आपे सीता, आपे सांतक सति वरतांयदा। आपे पतित आप पुनीता, पतित पुनीत आप करांयदा। आपे हस्त आपे कीटा, ऊँच नीच आप अख्वांयदा। आपे होया कौड़ा रीठा, रस मिट्ठा आप हो जांयदा। आपे चाढ़े रंग मजीठा, रंगणहार आप रंगांयदा। कलिजुग जूठा झूठा पीसण पीसा, माया ममता चक्की आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म सहिज सुख देवा, एका एक अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी अलख अभेवा, भेव कोई ना पांयदा। गुरमुख साजन लाए सेवा, सेवक सेवा इक्क वखांयदा। रसना जाप जपाए जिह्वा, एका नाम वखांयदा। कौस्तक मणीआ लाए थेवा, तिलक लिलाटी आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, औखी घाटी पार करांयदा। पारब्रह्म हर घट वासा, आपणा आप रखाया। जुग जुग खेले जगत तमाशा, खेलणहार दिस ना आया। हरिजन जपाए रसन स्वासा, नाम नामा झोली पाया। मनमुख मुख रखाए मदिरा मासा, साजन मीत ना कोई दसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती नूर करे रुशनाया। जोती नूर हरि अनूप, हरि हरि वेख वखांयदा। हरि वेख वखाए चारों कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। तीर निराला रिहा छूट, एका वंड वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। पारब्रह्म प्रभ एक है, एका रंग समाया। आपे जाणे आपणी टेक है, ना कोई दूसर संग रखाया। सृष्ट सबाई रिहा वेख है, दिस किसे ना आया। जुग जुग लिखणहारा लेख है, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। आपे जाणे धारी केस है, मूंड मुंडाए संग रखाया। जिस जन करे बुध बिबेक है, नाम रत्न झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। कलिजुग तेरी अन्तिम रैण, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। ना कोई दिसे साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण, ना कोई दिसाया। जूठ झूठ चुकाए लहिण देण, पंच विकारा झोली पाया। मनमति रसना रो रो कहिण, मंझ धार दए रुढ़ाया। लाड़ी मौत खाए डैण, लक्ख चुरासी रही कुरलाया। गुरमुख विरला पारब्रह्म प्रभ रसना पेखे नेत्र लोचण नैण, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया। शब्द बस्त्र तन साचा गहिण, तन श्रृंगार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग वेस हरि निरँकार, आपणा आप करांयदा। जोती जामा भेख अपार, भेव कोई ना पांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, अकल कला समांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। निहकलंका लए अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। वेद व्यासा बण लिखार, सेवक सेवा आप कमांयदा। गुर गोबिन्दा कर विचार, गुणी गहिंदा मेल मिलांयदा। सागर सिन्धा पावे सार, वड बख्शिंदा आप अख्वांयदा। मनमुख जीव लगाए निन्दा दुष्ट दुराचार, दर द्वार ना कोई सुहांयदा। हरिजन फड़ फड़ बांहों लाए पार, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। एका देवे नाम अधार, गुण निधाना झोली पांयदा। चार वरनां चार कुन्ट दहि दिशा जै जै जैकार, आप करांयदा । बरन अठारां इक्क द्वार, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। अमृत बख्शे साची धार, निझर रस चुआंयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। आपे जाणे आपणी कार, करनहार आप अख्वांयदा। कलिजुग मिटे कूड़ कुड़यार, कूड़ पसारा दिस ना आंयदा। सतिजुग बन्ने साची धार, सच सुच्च वरतांयदा। चार वरनां सुहाए इक्क द्वार, एका मार्ग लांयदा। राज राजान शाह सुल्तान करे ख़बरदार, सीस ताज ना कोई रखांयदा। जन भगतां बख्शे चरन प्यार, चरन कँवल इक्क दरसांयदा। धरत धवल पावे सार, कँवल कँवला मुख रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर आत्म वेख वखांयदा। निज घर आत्म हरि हरि वासा, हर घट आप समांयदा। निर्मल जोती कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। काया मन्दिर डूँघी कन्दर रक्खे वासा, नूर नूराना डगमगांयदा। रसना जिह्वा जाप जपाए स्वास स्वासा, मन मनुआ बंध बंधांयदा। अमृत आत्म इक्क वसाए काया कासा, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। गगन मण्डल साची रासा, पताल आकाश सुहांयदा। मिले मेल सर्ब गुण तासा, गुणवन्ता मेल मिलांयदा। गुरमुख साजन बलि बलि जासा, बलिहारी गुर लिख्या धुर झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल महांकाल दर बंधांयदा। पारब्रह्म प्रभ साचा सज्जण, सदा सदा अख्वांयदा। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, भेखाधारी भेख वटांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, सर सरोवर इक्क वखांयदा। मदिरा मास जो जन तजन, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। जगत ताल झूठे वज्जण, अनहद ताल ना कोई वजांयदा। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, थिर कोई रहिण ना पांयदा। गुरमुख विरला चढ़े नाम जहाजन, सतिगुर पूरा आप चढ़ांयदा। करे खेल ग़रीब निवाजन, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। प्रगट होया देस माझन, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी रचया काजन, कलिजुग अन्तिम कार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, चिट्टा अस्व इक्क

दौड़ांयदा। चिट्टा अस्व साचा घोड़ा, हरि हरि आप दौड़ाया। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, सच सिँघासण आसण लाया। अगम्म अगम्मड़ा आपे बौहड़ा, अगम्म अगम्मड़ी धार चलाया। वेख वखाए जीव जन्त साध सन्त लक्ख चुरासी काया माटी चमड़ा, मनमति बुध भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर करे रुशनाया।

* १६ फग्गण २०१४ बिक्रमी दिल्ली दरबार विच *

हरि जोती नूर आकार, हरि हरि कराया। हरि जोती नूर अधार, हरि हरि रखाया। हरि जोती नूर अपार, हरि हरि समाया। हरि जोती नूर भतार, कन्त कन्तूहल हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाया। हरि जोती नूर उजाला, जोती जोत समांयदा। हरि जोती गुर गोपाला, वरन गोत ना कोई रखांयदा। हरि जोती दीन दयाला, दीनां बंधप आप अख्वांयदा। हरि जोती खेल निराला, खेलणहार दिस ना आंयदा। हरि जोती नूर अकाला, अकाल पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती जोत जगांयदा। हरि जोती जोत जोत जगा, जोती डगमगाईआ। हरि जोती नूर नूर उपा, नूरो नूर रखाईआ। हरि जोती जोत बणत बणा, जोती जोत विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आप अख्वाईआ। जोती नूर हरि गोबिन्द, आदि अन्त अख्वाया। आपे जाणे आपणी चिन्द, हरख सोग विच ना आया। आप आपणी उपाए बिन्द, आप आपणे विच समाया। आप आपणी धार रखाए सागर सिन्ध, सिर आपणा हथ्थ रखाया। आप आपणा होए बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जाया। आपे दाता गुणी गहिंद, गुणवन्ता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभाया। आपे जोती नूर करतार, आपणा आप उपांयदा। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा कर विचार, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा कर पसार, वेखणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती नूर रूप वटा, अकल कला अख्वाया। भेखाधारी भेख धरा, दिस किसे ना आया। वेस अनेका रिहा करा, अभेव अभेदा भेव ना राया। निहकलंका आपणा आप रिहा बणा, दूसर कोई ना संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया। जोत नूर कर रुशनाई, आपणा आप उपांयदा। आप आपणी करे वड्याई, आप आपणा विच टिकांयदा। आप आपणी रचन रचाई, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा वेखे साचा थाईं, थिर घर नाउँ रखांयदा। अगम्म अथाह बेपरवाही, बेअन्त बेअन्त

आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणा नाईं, नाम निधाना आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर कर आकार, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपणी कल वरताईआ। रूप अगम्म अथाह बेपरवाह हरि करतारा, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। आप सुहाए महल्ल अटल अचल्ल उच्च मुनारा, थिर घर नाउँ रखाईआ। ना कोई दीसे चार दुआरा, छप्पर छन्न ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे वस्सया घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। घर साचा सच महल्ला, हरि आपणा आप उपांयदा। हरि आपे बैठा इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रलांयदा। आपणी जोती आपे बला, प्रकाश आकाश समांयदा। आपणे नूर आपे रला, नूर नुरानी इक्क करांयदा। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, उच्च महल्ला आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार साचा घर, घर साचा आप सुहांयदा। साचा घर हरि सुहंदड़ा, पारब्रह्म बेअन्ता। जोती दीपक इक्क जगन्दड़ा, आपे जाणे आदि अन्ता। आकाश प्रकाश इक्क रखंदड़ा, एका रुत्त सुहंता। सूरज चन्न रवि ससि ना कोए वखंदड़ा, ना कोई महिमा गणत अगणता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखणहारा दर घर सुहञ्जणा इक्क सुहंता। थिर घर साचा आदि निरँजण, आपणा आप उपाया। आपे होया दर्द दुःख भय भंजन, पारब्रह्म अख्वाया। आपणे नेत्र आपणा पाया अंजन, वेखणहार आप हो आया। आपणी धूढ़ी आपे करया मजन, आप आपणी मैल गंवाया। आप आपणा होया सज्जण, ना कोई दूसर संग रखाया। आप आपणा पड़दा आया कज्जण, आपे पड़दा उप्पर पाया। आप आपणी रक्खे लाजन, लाजवन्त हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा आप सुहाया। साचा घर शब्द अटारी, हरि साचा आप सुहांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारी, दीपक दीप जगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारी, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे वस्सया घर, आप आपणी रचन रचांयदा। थिर घर साचे आसण ला, हरि साची बणत बणांयदा । पुरख अबिनाशी खेल खिला, खेलणहार आप हो जांयदा। आप आपणी रचन रचा, आपणी रचना विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेखे साचा घर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया, आपणी झोली आप भरांयदा। हरि जोती नूर अगम्म, अगम्म समाया। ना मरया ना पया जम्म, मात पित ना कोई अख्वाया। ना कोई पवण स्वासी दिसे दम, नेत्र नीर ना कोई रखाया। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणा करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर पुरख अबिनाशा, एक एक सुहांयदा। आप आपणा वेख तमाशा, आप

२२७
०७

आपणी रास रचांयदा। आप आपणे घर करया वासा, आप आपणा आसण लांयदा। आप आपणा होया दासी दासा, दासी दास आप अख्वांयदा। आप उपाए पृथ्मी आकाशा, आकाश प्रकाश रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए साचा घर थिर घर नाउँ रखांयदा। थिर घर साचा हरि घर उपाया, वसे इक्क अकेला। एका दूजा ना कोई रखाया, ना कोई तीजा सज्जण सुहेला। चौथा पद ना कोई रखाया, पंचम सखीआ ना कोई मेला। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाया, सत्तवें सति पुरख निरँजण सज्जण सुहेला। अठवें अट्ठां तत्तां ना कोई बणत बणाया, नौ दर ना चाढ़े कोई तेला। दसवां दर ना कोई सुहाया, दिवस रैण प्रभात ना जाणे कोई वेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे खेला। थिर घर साचा हरि सुहञ्जणा, हरि रूप अपार। जोत जगाए इक्क निरँजणा, खेले खेल खेलणहार। ना घड़या ना भज्जणा, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख करतार। ना जननी जन कोई जणया, मात पित ना कोई पसार। ना धनी धन कोई धनिआ, माया ममता मोह ना कोई विकार। ना कोई राग ना कोई कन्नना, नाद धुन ना कोई विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वस्सया सच घर, आप सुहाए बंक द्वार। बंक द्वार हरि भगवाना, एका एक सुहाया। आप आपणी रक्खे आणा, आप आपणे भाणे आप समाया। आप आपणा देवे दाना, दाता दानी आप अख्वाया। आप आपणा होया जाणी जाणा, जानणहार आप सुखदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेख साचा घर, पुरख अबिनाशी देवे वर, एका धाम सुहाया। पुरख अबिनाशी दर उपा, एका धाम सुहांयदा। सच सिँघासण दए विछा, पुरख अबिनाशी आसण लांयदा। आप आपणी इच्छया आपे पूरी लए करा, एका भिच्छया झोली पांयदा। जोती नारी लए व्याह, कन्त कन्तूहला आप अख्वांयदा। आपणी सेज आप हंढा, नारी कन्त आप अख्वांयदा। पूत सपूता लए उपा, शब्दी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जगांयदा। शब्द सुत कर त्यार, हरि साचे सन्त जगाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, एका बूझ बुझाईआ। एका मेला हरि करतार, एका रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत देवे वर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। साचा सुत वड बलवाना, दोए जोड़ करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी वड मेहरबाना, बख्शे चरन प्यारया। एका देवे दानी दाना, नाउँ निरँकार अपारया। लोआं पुरीआं बणत बणाना, सेवक सेवा लाए भारया। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल खिलाणा, आप आपणी जाणे सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दित्ता वर, थिर घर बैठ उच्च महल्ल मुनारया। साचा सुत वर घर पा, साची ख़ुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा नाँ, मेरा रूप समांयदा। लोआं पुरीआं बणत बणा, आकाश

प्रकाश टिकांयदा। रवि ससि सेवा ला, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। त्रैगुण माया भेख वटा, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस कर, सच महल्ला आप वखांयदा। सच महल्ला सच शाह, एका एक वसाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, अगम्म अथाह भेव कोई ना राया। आप उपाए आपणा नाँ, नाम नामा नाउँ धराया। आप आपणी रक्खे सदा छाँ, आप आपणा सिर हत्थ टिकाया। आप आपणा बणया पिता माँ, आप आपणी गोद उठाया। आप आपणी पकड़े बांह, आप आपणा संग निभाया। आप आपणा होए सहाई सभनी थाँ, आप आपणा राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, शब्द शब्दी नाउँ धराया। शब्द गुर वड बलकार, एका एक अख्वांयदा। लोआं पुरीआं बन्ने धार, आपणी रचन रचांयदा। लिख्या लेख ना मेटे कोई विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। त्रैगुण माया कर त्यार, आप आपणे विच टिकांयदा। आप आपणा कर उज्यार, आप आपणी बिन्द अख्वांयदा। डूँघा सागर ना कोए पावे सार, कँवल कँवला विच समांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे वसे घर, आप आपणा ल्ए वर, सज्जण सुहेला इक्क अख्वांयदा। अगम्म अगम्मड़ा हड्ड मास नाड़ी ना कोई दिसे चमड़ा, दर साचा इक्क सुहांयदा। सति पुरख निरँजण आप, जोत अकालया। आपे जाणे आपणा वड प्रताप, आपे खेले खेल निरालया। आप आपणा जाणे जाप, आपणी जिह्वा आप हिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखा ल्या। सो पुरख निरँजण पुरख अबिनाशा, आदि अन्त अख्वाया। आपे आपणा वेखे खेल तमाशा, वेखणहार दिस ना आया। आप आपणी पाए रासा, आप आपणा मण्डल दए सुहाया। आपे वस्सया पृथ्मी आकाशा, आप आपणा रूप वटाया। आप आपणा करे बन्द खुलासा, बन्दी तोड़ आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण करता पुरख आप अख्वाया। सो पुरख निरँजण सतिगुर पूरा, निरगुण सरगुण खेल खिलारी। सर्ब गुणा आपे भरपूरा, जोती नूर नूर उज्यारी। आपे शब्द अनादी होए तूरा, आप वजाए डंका एकँकारी। आपे जोधा सूरा, आपे होए शाह सवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा देवे वर, सो पुरख निरँजण वड सिक्दारी। सो पुरख निरँजण हरि भगवन्ता, एका रंग समांयदा। खेले खेल आदिन अन्ता, आदि अन्त ना कोई जणांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप आपणा चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। भेव ना पाए कोई जीव जन्ता, साध सन्त वेख वखांयदा। आपणी माया आपे पाए बेअन्ता, माया पड़दा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरजंण

२२६
०७

आप अख्वांयदा। सो पुरख निरँजण दया कमा, आपणा आप उपाया। आपणी बिन्द आप टिका, मुख कँवल कँवला दए पा, धरत धवल आप दए वखाया। पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मा लए उपा, आप आपणा अंग कटाया। एका अंग सूरा सरबंग हँ रूप गया समा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ सो आप हो जाया। सो पुरख हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। हँ अंग जीव जन्त लक्ख चुरासी पसर पसार, आप आपणा विच टिकांयदा। दोहां वेखे इक्क द्वार, एका धाम सुहांयदा। ना कोई दूसर मीत मुरार, तीजे प्यार ना कोई जणांयदा। दस्म दुआरी वस्सया बाहर, दिस किसे ना आंयदा। सोहँ घर हरि निरँकार, नानक इक्क वखांयदा। नानक पाया पद निरबान, परम पुरख समांयदा। एका वेखे कर ध्यान, नेत्र नैण उठांयदा। निर्मल जोत श्री भगवान, सति सरूप समांयदा। नानक गाया गुण निधान, सोहँ सो रसना चलांयदा। जीव जन्त ना करन पछान, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। धर्म राए बैठे मुख शरमाण, जो जन सोहँ सो रसना गांयदा। मिले मेल हरि गुण निधान, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। अन्त कन्त सन्त भगवन्त जोती जोत मिल जाण, आप आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो रूप हँ मेट मिटांयदा। हँ हँगता देवे मार, सतिगुर पूरे विच वड्याईआ। नाम चोली रंगदा आया विच संसार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। धुर दरगाही पावे सार, आप आपणी दया कमाईआ। प्रभ अबिनाशी खेल अपार, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आप अख्वाईआ। आदि अन्त एकँकारा, एका एक अख्वांयदा। लक्ख चुरासी कर पसारा, हर घट वेस वटांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे नारी आपे नारा, नर नरायण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी हरि समा, आपणा आप छुपांयदा। गुरमुख विरले लए जगा, माया पड़दा लांहयदा। स्वच्छ सरूपी दरस दिखा, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। एका दूजा भेव चुका, तीजा नैण खुल्हांयदा। चौथे घर लए बहा, साचा थान सुहांयदा। पंचम राग दए अल्हा, अनादी धुन वजांयदा। मेल मिलाए सहिज सुभा, साचा घर सुहांयदा। पिता मात आप हो जा, आप आपणी गोद उठांयदा। आप आपणे अंग लगा, आपणी भुजा विछांयदा। आप आपणे संग रला, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग वेस अनेक कर, आपणा नाउँ धरांयदा। आदि अन्त एका अवतार, गुर गोबिन्द रूप वटांयदा। जोती नूर करे पसार, पंचम तत्त आसण लांयदा। पंचम तत्त वसे कूड़ कुड़यार, थिर रहिण ना पांयदा। सतिगुर वड बलकार, ना मरे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला आप अख्वांयदा। पुरख अकाल किरपा कर, आपणी जोत

जगाईआ। साचे सुत दित्ता वर, अबिनाशी अचुत्त आप अख्वाईआ। मात पित वेस कर, इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। अकाल मूर्ति नज़री हरि, हरि हरि रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ता साचा वर, एका बूझ बुझाईआ। पुरख अबिनाशी बूझ बुझा, शब्द सुत जगाया। अकाल मूर्त दरस दिखा, नैनन नैन दरसाया। एका लेखा रिहा लिखा, लिखण विच ना आया। हरि कन्त ना सके कोई गा, भेव अभेदा भेव छुपाया। गुर गोबिन्द मिल्या सच मलाह, जुग जुग बेड़ा रिहा चलाया। अचल मूर्त आप अख्वा, अनभव प्रकाश कराया। कूड़ कूड़ा वखाए एका थाँ, एका मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। एका गुर इक्क अवतारा, एका जोत जगाईआ। एका घर इक्क दुआरा, एका भेख वखाईआ। एका शाहो भूप वड सिक्दारा, एका राज कमाईआ। एका मंगे मंग भिखारा, दर दरवेस इक्क अख्वाईआ। एका जाणे आपणी कारा, प्रभ एका कार कमाईआ। एका आपणा कर पसारा, जुग जुग खेले खेल सृष्ट सबाईआ। साधां सन्तां गुरुआं पीरां देवे जोती शब्द सहारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्दे दस्सया इक्क प्यारा, एका बूझ बुझाईआ। भगत भगती लेखे लाए गिरधारा, गिरवर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसाईआ। गुर गोबिन्दे नेत्र खोल्ह, हरि हरि दर्शन पाया। शब्द शब्दी गया बोल, बिन हरि दूसर कोए ना मात उपाया। जुग जुग आपणे कंडे रिहा तोल, वेख वखाए सृष्ट सबाया। आदि जुगादी शब्द अनादी वजाए एका ढोल, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर रिहा डोल, प्रभ साचा रिहा डुलाया। पूत सपूता आप उठाया अनभोल, एका मार्ग लाया। धुरदरगाही कीता कौल, लोकमात पूर कराया। मिले वड्याई उप्पर धौल, धरनी धरत दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस दर दरवेस श्री दस्मेस आप वटाया। निहकलंक हरि रूप है, निर्मल जोत आकार। हरि जोती शाहो भूप है, सच सच्ची सरकार। शब्द डंका चारे कूट है, वजावणहारा आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पाए आपणी सार। निहकलंक हरि करतार, एका एक अख्वांयदा। पंज तत्त ना कोई प्यार, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई वखांयदा। मन मति बुध ना कोई श्रृंगार, ना कोई वेस वटांयदा। एका शब्द कर प्यार, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। लक्ख चुरासी दए हुलार, इक्क हुलार रखांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, गगन पातालां फेरा पांयदा। रवि ससि करन पुकार, हरि हरि भेव कोई ना पांयदा। शब्दी जोती रूप करतार, निहकलंक अख्वांयदा। वेद व्यासा बण लिखार, एका लेखा लेख लिखांयदा। नानक करी अन्तिम विचार, निरगुण आस करांयदा। गुर गोबिन्दा कर प्यार, आप

आपणी दया कमांयदा। प्रगट हो विच संसार, कलिजुग कूड़ा मेट मिटांयदा। शब्द डंक वजाए अपर अपार, राउ रंक आप उठांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। ऊँचां नीचां गऊ ग़रीबां पावे सार, एका धाम सुहांयदा। चार वरन करे इक्क प्यार, अठारां बरनां मूल चुकांयदा। पारब्रह्म प्रभ फेरा पा, भेव अभेदा अछल अछेदा जुग जुग वेस वटांयदा। निरगुण जोत निहकलंक नरायण नर अवतार, कलिजुग अन्तिम वेस वटांयदा। सम्बल नगरी हो उज्यार, साचा धाम सुहांयदा। गुरमुख वेखे साजन मीत मुरार, जुग विछड़े जग मेल मिलांयदा। आत्म अन्तर बख्शे इक्क प्यार, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। अमृत देवे ठंडी धार, निझर झिरना आप झिरांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, काया गात्रे आप लटकांयदा। कूड़ कुड़यारा मेटे विच संसार, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। सच सुच्च कल बन्ने धार, साचा मार्ग लांयदा। सम्मत सम्मती मारे मार, नौ सत्त वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक आप अख्वांयदा। निहकलंक हरि भगवन्ता, एका एक अख्वाया। गुरमुख विरला जाणे सन्ता, जिस जन बूझ बुझाया। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्ता, एका पड़दा रिहा रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निहकलंक आप अख्वाया। लक्ख चुरासी वंड वंडा, हरि अचरज रचन रचाईआ। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड रिहा समा, लेप रहे ना राईआ। आपे खण्डन खण्ड खण्डा रिहा करा, आपे संग निभाईआ। आपे वंडां रिहा वंडा, वंडणहार आप अख्वाईआ। आपे जेरज खाणी लए भुला, मानस मानुख लए उपाईआ। कर्म जरम हरि झोली पा, धर्मी धर्म जणाईआ। गुर मन्त्र नाम इक्क सखा, साची सिख्या दए समझाईआ। जो जन रसना रहे गा, लक्ख चुरासी पार कराईआ। गुर का शब्द जो जन जाए भुला, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी रिहा समा, हरि खोजणहारा खोज खुजाईआ। लहिणा देणा झोली देवे पा, कर्म कुकर्मां दए वड्याईआ। विष्टा कीट दए बणा, मनमुखां दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ दस ग्यारां बीस तीस लक्ख चार रिहा फिराईआ। हरि हरि आपणा वेस वटा, आपणी बणत बणांयदा। चारे वेदां रिहा लिखा, ब्रह्मा सेवा लांयदा। सतिजुग त्रेता संग रला, द्वापर खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, हर घट वेख वखांयदा। जोती जोत रिहा जगा, आपणा नूर उपांयदा। शब्द शब्दी नां रखा, साची खेल खिलांयदा। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार नाम रखा, साची खेल खिलांयदा। बराह रूप आप हो जा, भेव कोई ना पांयदा। यज्ञे पुरश नाम धरा, हाव ग़रीव समांयदा। नरायण नर डंक वजा, एका लेख लिखांयदा। कपल मुन वेख वखा, आपणा वेस वटांयदा। दत्ता त्रै लेख ना रा, भेखी भेख करांयदा। रिखव देव फेरी पा, साचा काज रचांयदा। पृथू आपणा वेस वटा, अगम्मड़ी

कार करांयदा। मत्तसय भेव दए खुल्हा, मच्छ रूप हो आंयदा। कच्छ डेरा आपे ला, मिन्दिरा चल पिठ उठांयदा। मोहणी रूप लए वटा, आप आपणा खेल खिलांयदा। बावन भेख रिहा वटा, बल राजा छल छलांयदा। हँस हँसा जोत जगा, माणी माण मिटांयदा। वैद धनंतर आप अख्वा, आपणी करनी करांयदा। नर सिँघ तेरा लेखा कोई जाणे ना, आप आपणा वेख वखांयदा। नर नरायण आप अख्वा, धू बालक पार करांयदा। हरी हरि नाउँ धरा, गज सेवा आप कमांयदा। अठारां वार जोती जोत जगा, सतिजुग पार करांयदा। त्रेता तेरा वेखे राह, धरत धवल सुहांयदा। आप आपणा वेस वटा, परसा रूप समांयदा। परसा धन्दे देवे ला, कौरू कुशेतर धाम सुहांयदा। राम नामा नाम उपा, दसरथ दर सुहांयदा। जनक सपुत्री लए प्रना, सीता संग रखांयदा। आप आपणा वेख वखा, आपणा खेल वरतांयदा। आप आपणा संग रखा, सगला संग रखांयदा। हनवन्ता हरि इक्क जणा, एका बूझ बुझांयदा। रावण गढ़ दए तुड़ा, हँकारीआं हँकार मिटांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगा, भीलनी मुख सगन वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। त्रेता तेरा पार किनारा, त्रिया वेस वटाया। पुरख अबिनाशी लै अवतारा, आपणा खेल खिलाया। द्वापर तेरी बन्न्हे धार, तेरा रंग रंगाया। वेद व्यासा प्रगट हो विच संसार, कुआर कन्या सेवा लाया। नारद मुंन कर प्यारा, साचा संग निभाया। लिखे सलोक लक्ख चार हज़ार सतारां, लहिणा देण मूल चुकाया। द्वापर तेरा वेख किनारा, काहना कृष्ना रूप वटाया। गोकल मथरा पावे सारा, बिन्दराबन सुहाया। मकंद मनोहर लखमी नरायण, हरि करतारा। सुन्दर कुण्डल मुकट बैन नैण कज्जल धारा। साचा सखीआं बणया साचा सैण, मीत मुरारा। द्रोपद रक्खी लज्जया आप रखायण, पड़दा पाए अपर अपारा। बिदर सुदामा मेल मिलाए हरि नरायण, लेखा चुक्के विच संसारा। पंचम मेला रसना किसे ना सके कहिण, पंचम सुहाए बंक दुआरा। दुर्योधन हँकारी खाए लाड़ी मौत डैण, अन्तिम ढहि ढहि होए ख्वारा। अर्जन गीता ज्ञान इक्क दृढ़ायण, खोल्हे बन्द किवाड़ा। भगत भगती विद्या इक्क जनायण, आप आपणा शब्द उचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे वेखणहारा। कलिजुग साचा मात धरा, आपणी कल वरतांयदा। पंचम तत्त विकारा झोली भरा, जूठ झूठ गढ़ सुहांयदा। बोध बोध गया जणा, आत्म बोध रखांयदा। अगाध बोध ना सके कोई जणा, ना कोई लेखा लेख लिखांयदा। ईसा मूसा लए उपा, अल्ला राणी नाल प्रनांयदा। संग मुहम्मद चार यार नाल लए रला, एका घर सुहांयदा। एका नाअरा रिहा सिक्खा, अल्ला हू आवाज़ रखांयदा। ऐनलहक्क साचे धाम सुहा, हक्क हकीकत फोल फोलांयदा। नूर अलाही बेऐब परवरदिगार आप अख्वा, मुकामे हक्क इक्क जणांयदा। रफीक अहिबाब रबाब इक्क वजा, आपणा ताल सुणांयदा।

मक्का काअबा हज्ज दए करा, कुरान अञ्जील वेख वखांयदा। तीस बतीस दए सुणा, एका धुर फ़रमाण जणांयदा। चारों कुन्ट डंक वजा, आप आपणी रचन रचांयदा। नानक गुर लए उपा, निरगुण संग निभांयदा। आप आपणे दर बुला, आपणा दरस दिखांयदा। सति नाम झोली पा, लोकमाती राह तकांयदा। चार वरनां दए समझा, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। चारों कुन्ट फेरी पा, दहि दिशा वेख वखांयदा। हँकारीआं गढ़ गया तुड़ा, शब्द खण्डा इक्क वखांयदा। ग़रीब निमाणयां गले लगा, एका मार्ग लांयदा। अन्तिम पंचम तत्त नाता गया छुडा, आप आपणा वक्त सुहांयदा। अंगद अंग ल्या लगा, अंगीकार करांयदा। जोती जोत लए जगा, शब्दी शब्द समांयदा। एका दूजा रूप वटा, एका द्वार बंधांयदा। तीजे वेस आप करा, अमरू अमर करांयदा। चौथा घर दए सुहा, रामदास सेवा लांयदा। सर सरोवर इक्क बणा, साचा ताल सुहांयदा। अर्जन अर्जन वेख वखा, शब्द ज्ञान इक्क सिखांयदा। अगाध बोध लेख लिखा, आपणा आप बन्द करांयदा। अन्तिम लहिणा देणा दए चुका, कलिजुग कूड़ा कूड़ पसारा आपणे तन उठांयदा। छेवें गुर जोत जगा, साचा घोड़ा हेठ रखांयदा। हरिराए हरि मेल मिला, आपणी बूझ बुझांयदा। हरिकृष्ना गया समा, बाल अवस्था लेखे लांयदा। गुर तेग बहादर पकड़ी बाह, निथाविआं थाँ दवांयदा। गुर गोबिन्दा करे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। एका मंगे प्रभ साचे तेरा नाँ, एका ओट रखांयदा। चार जुग हरि फेरी पा, आपणा वेस वटांयदा। एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, शब्दी शब्द नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस निरँकार, आपणा रूप वटाया। राम रामा हो अवतार, सीता सुरती लए विहाया। काहना कृष्ना पावे सार, नाम बंसरी इक्क वजाया। नानक गुर इक्क प्यार, गुरमुख साचे लए जगाया। गुर गोबिन्द पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाया। निर्मल जोती कर आकार, लोकमात फेरा पाया। एका रूप हरि करतार, आप आपणा वेस वटाया। निहकलंका लए अवतार, रामा कृष्ना रूप अखवाया। शब्द डंका अपर अपार, गुर गोबिन्द रिहा वजाया। नानक बोले तेरा धार, मोदीखाना जगत इक्क चलाया। जुग जुग विछड़े सन्त सुहेले गुरु गुर चेले प्रभ भगत लए अधार, आप आपणा मेल मिलाया। अन्दर मन्दिर देवे दरस अगम्म अपार, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। निर्मल जोती करे उज्यार, दस्म दुआरी डेरा लाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, हरि बैठा बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत आप अखवाया। कलिजुग जीव नार दुहागण, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। गुरमुख विरले सोए जागण, हरि हरि रसना राग अलाईआ। वज्जे धुंन अनाद अनादन, अनादी धुन वजाईआ। धुर दरगाही देवे साची दामन, नाम दान झोली पाईआ। मिले मेल हरि माधो माधन, मोहण माधव दरस दिखाईआ।

जोती शब्दी जोड़ा कृष्ना राधन, सुरती राधा रूप समाईआ। खेले खेल आदि जुगादिन, जुग जुग भेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ धराईआ। मनमुख सोया नींद गूढ़, माया पड़दा पाया। गुरमुख विरला मांगे चरन धूढ़, दर दुआरा वेख वखाया। नाता तोड़े कूड़े कूड़, सच सुच्च लए प्रनाया। कर किरपा चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ धराया। कलिजुग जीव जगत निधान, माया भरम भुलांयदा। गुरमुख साजन नौजवान, सोए पूत उठांयदा। देवे नाम धुर फ़रमाण, ज्ञान ध्यान इक्क वखांयदा। काया मन्दिर सच मकान, दीपक जोत जगांयदा। अनादी धुन सुणाए कान, अनहद ताल वजांयदा। पंचम राग इक्क अलायण, साची सखीआं वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हर घट मन्दिर वेख वखांयदा। मनमुख जीव बाल अञ्याणा, हरि हरि भेव ना राया। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्याना, आप आपणी सेवा लाया। एका राग इक्क तराना, एका धुन उपजाया। एका जोत श्री भगवाना, गुण अवगुण ना वेख वखाया। दर द्वार करे परवाना, जो जन रसना रहे गाया। मेल मिलाए कृष्ना काहना, लखमी नरायण वेस वटाया। एका दर हरि सुहाना, साची सईआ वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नारायण नर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन पाया हरि गोबिन्द, सगला भउ निवारया। आप मिटाए जगत चिन्द, देवे नाम सहारया। अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्ध, भव जल पार किनारया। पारब्रह्म प्रभ सदा बख्शिंद, परम पुरख अख्वा रिहा। जोधा सूरा वड मृगिन्द, एका खण्डा विच ब्रह्मण्डां आप चमका रिहा। मनमुख जीव लगाए निन्द, निन्दक निदिआ मुख रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द मेल मिला रिहा। गुर गोबिन्द पाया हरि निरँकार, हर घर वज्जी वधाईआ। अन्तिम मेला विच संसार, करे कराए बेपरवाहीआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, नीला नीलो धार पार कराईआ। जोत सरूपी शाह अस्वार, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। चौदां तबकां मारे मार, चौदां लोकां रिहा उठाईआ। चौदां हट्टां वेख पसार, तीर्थ तट्टां फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि गोबिन्द विच समाईआ। गोबिन्द मेला हरि द्वार, हरि साचे आप कराया। आप सुहाए बंक द्वार, बंक द्वारी डेरा लाया। जोती नूर कर उज्यार, शब्दी शब्द अल्लाया। शब्द गुर वड सिक्दार, जुग जुग आप अख्वाया। जन भगतां लहिणा देणा दए कर्ज़ उतार, पूर्ब झोली पाया। नेत्र नैणां दरस अपार, भाणा सहिणा एह समझाया। गुर गोबिन्दा कर प्यार, कलिजुग वेखे खेल सबाया। नाम खण्डा

तेज कटार, आप आपणे हथ्थ रखाया। आपे होए पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कराया। सम्मत चौदां करे ख़बरदार, वीह सद बिक्रमी नाल रलाया। सम्मत पन्दरां हो त्यार, देस प्रदेसा वेख वखाया। लंका गढ़ तोड़े हँकार, ख़ाकी ख़ाक मिलाया। ईसा मूसा दए हुलार, संग मुहम्मद चार यार रहे कुरलाया। अल्ला राणी करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाया। चारों कुन्ट हाहाकार, वड करते खेल रचाया। प्रभ वेख वखाए सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्मी वेख वखाया। सत्तां दीपां मारे मार, कूड़ कुड़यारा मेट मिटाया। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाया। साध सन्त जीव गए हार, हरि हरि रूप दिस किसे ना आया। पढ़ पढ़ पुस्तक वेद कतेबा गए हार, गीता ज्ञान जगत दृढ़ाया। पुराण अठारां कर पुकार, दिवस रैण रहे सुणाया। अञ्जील कुराना सुणे पुकार, आप आपणा वेस वटाया। मुस्लिम सुन्नी लए सुधार, पंडत पांधे लए समझाया। ग्रन्थी पन्थी पावे सार, सम्मत सोलां दए दुहाया। वेख वखाए उच्चे मन्दिर महल्ल अटार, गुर दर मन्दिर मस्जिद फेरा पाया। तीर्थ तट्टां आई हार, गंगा गोदावरी रही शरमाया। जटा जूट ना कोई बन्न्हे धार, मुन सुन बैठे सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम जोत जगा, हरि आपणी बणत बणाईआ। चार वरन बहाए एका थाँ, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। एका मन्त्र नाम दए दृढ़ा, एका ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ दए मिला, नेत्र नैण इक्क खुल्हाईआ। एका कंडे दए तुला, तोलणहार आप हो जाईआ। एका बोल जैकारा दए बुला, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सृष्ट सबाई एका धाम बहा, एका धर्म कमाईआ। एका राज जोग दए सिखा, एका सिख्या जग सिखाईआ। एका भोग दए करा, आत्म भोग रस मिट्ठा इक्क वखाईआ। धुर संजोग दए मिला, गुर शब्द अनडिठा नाल प्रनाईआ। नाम चोग दए चुगा, सोहँ हँसा मुख रखाईआ। दरस अमोघ दए वखा, राम कृष्न नानक गोबिन्द रूप वटाईआ। अमाम मैहन्दी वेस वटा, मक्का मदीना फेरी पाईआ। मुख नक़ाब इक्क रखा, काला सूसा तन छुहाईआ। एका नाअरा देवे ला, आप आपणी करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। एका डंक वजावणहारा, एका एकँकारया। एका राग सुणावणहारा, पारब्रह्म गुर अवतारया। एका नाम जपावणहारा, निरगुण रूप अगम्म अपारया। एका जाप जपावणहारा, सो पुरख निरँजण आप अख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्मल जोत करे उज्यारया। एका राग धुन अनाद, एका रिहा वजाईआ। एका शब्द जणाई हरि ब्रह्मादि, एका एक वड्डी वड्याईआ। एका खेले खेल आदि जुगादि, एका एक जुग जुग वड्डी वड्याईआ। एका एक रसना रस रिहा अराध, एका एक लिव

लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लोआं पुरीआं करे कुड़माईआ। लोआं पुरीआं नाता जोड़, हरि साचे कर्म कमाया। प्रगट होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, कलिजुग वेला अन्तिम आया। धुरदरगाही आया दौड़, जोती जामा भेख वटाया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फोलाया। लोकमात लाया पहला पौड़, आप आपणा चरन छुहाया। सम्बल नगरी साढे तिन्न हथ्थ वेखे लम्भा चौड़, गुर गोबिन्द लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा नाउँ उपाया। आप आपणा नाउँ धरा, धुर दी बाण रखाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। इक्क अकेले पकड़े बांह, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, जूठ झूठ रही शरमाईआ। दर दर घर घर उडने काँ, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा एका धाम दए सहा, हरि चरन वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रंग समाईआ। निरगुण सरगुण साचा मेला, सोहे बंक दुआरा। आपे गरु गुर चेला, आपे करे वणज वपारा। आपे सज्जण हरि सुहेला, आप आपणे करे प्यारा। आपे वस्सया सदा अकेला, आपे हर घट करे पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल विच संसारा।

* १६ फग्गण २०१४ श्री सुशील कुमार जैनी दे साथ जैन मन्दिर विच बचन होए गुड़गाउँ *

साचा धर्म धर्म प्यार, पारब्रह्म सरनाईआ। साचा कर्म कर्म विचार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। साचा नादि धुन अपार, आत्मक धुन उपजाईआ। साचा धर्म कर परवान, तन मन्दिर अन्दर वज्जे वधाईआ। साचा धर्म एका बाण, एका एक हरि लिव लाईआ। साचा धर्म कर पछाण, निरगुण जोती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन देवे इक्क वर, सच धर्म करे कुड़माईआ। सच धर्म नाम जैकारा, एका एक रखाया। साधां सन्तां कर प्यारा, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, पंचम धाड़ा मेट मिटाया। धर्म वखाए इक्क अखाड़ा, अनहद साचा राग अल्हाया। इक्क अकेला आदि पुरख एकँकारा, सच महल्ला डेरा लाया। जीव जन्त जुगा जुगन्त पावे सारा, सन्त साजन मेल मिलाया। एका देवे देवणहारा नाम अधारा, निरगुण सरगुण वेख वखाया। सरगुण बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मस्तक तिलक लिलाट लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, औखी

घाटी पार कराया। औखी घाटी काया घाट, हरिजन विरला चढ़या। कोटन कोट फिरदे तीर्थ ताट, तट किनारा पार ना करया। कोटन कोट छड्डी बैठे खाट, सच खटोले उप्पर चरन किसे ना धरया। कोटन कोट बैठे अधविचकारी वाट, सुखमन नाड़ी कोई ना चढ़या। गुरमुख विरले हरिजन सन्त सुहेले बजर कपाटी गई पाट, शब्द शब्दी लड़ फड़या। निर्मल जोती जगे लिलाट, अमृत आत्म वेखे ठांडा सरया। काया वखाए चौदां लोक चौदां हाट, ब्रह्मण्ड खण्ड घाड़न घड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन देवे नाम वर, एका अक्खर जगत विद्या आपे पढ़या। नाम अक्खर हरि अनमोल, हरि सन्तन झोली पांयदा। जुग जुग तोलणहारा तोल, साचे कंडे आप तुलांयदा। शब्द अनादी आपे बोल, धुन आत्मक आप सुणांयदा। दूई द्वैती पड़दा खोल्ह, एका रंग रंगांयदा। सच वजाए मृदंगा ढोल, पंचम वेख वखांयदा। सन्त सुहेला इक्क अकल्ला, हरिजन हरि वस्सया कोल, दिस किसे ना आंयदा। काया गढ़ी रिहा मौल, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेखे घर, घर साचे जगे जोत निरँजणा, अबिनाशी करता करता पुरख आप अख्वांयदा। करता पुरख करनेहारा, आदि अन्त अख्वाया। जन सन्तन करया सच प्यारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। इक्क उपजाए निर्मल धारा, जोती नूर करे रुशनाया। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाया। धर्म जरम कर्म वखाए सच दुआरा, साची सिख्या इक्क सिखाया। पारब्रह्म प्रभ मेल अपारा, एका दूजा भउ चुकाया। तीजा नेत्र इक्क उग्घाड़ा, चौथे पद समाया। पंचम वेखे सच अखाड़ा, धर्म धर्मी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला साचे घर घर साचा इक्क सुहाया। सन्तन साजन साचा मीत, हरि हरि आप अख्वांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। बैठा रहे सदा अतीत, अनभव प्रकाश करांयदा। ना कोई देहुरा ना कोई मन्दिर ना गुरदुआरा दिसे मसीत, काया मन्दिर अन्दर सच सिँघासण आसण लांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत, जन भगतां करे काया ठंडी सीत, अमृत धारा निझर रस कँवल कँवल मुख चुआंयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहांयदा। एका नाम रस वखाए मीठ, रस मिट्ठा इक्क जणांयदा। काया कूड़ कुड़यारा कौड़ा रीठ, मनमति मूल चुकांयदा। मनमुख जीव सुत्ता दे कर पीठ, दिस किसे ना आंयदा। हरि सन्तन मेला शाहो बसीठ, घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन वखाए इक्क दर, धर्म दुआरा इक्क सुहांयदा। चार वरन इक्क दुआरा, एका शब्द जणाईआ। इक्क जोत हरि निरँकारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। रामा कृष्ना लए अवतारा, नानक गोबिन्द रूप समाईआ। आपे जाणे आपणा नाअरा, ऐनलहक्क मिले वड्याईआ। मुकामे हक्क

खेल न्यारा, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। साधां सन्तां करे इक्क प्यारा, एका बूझ बुझाईआ। पीर फ़कीरां पावे सारा, पंडत पांधे लए तराईआ। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी करन विचारा, जगत विद्या भेव ना पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता किरपा धारा, एका दर सुहाईआ। हरि अगम्म अगम्मड़ी कारा, अगम्मड़े थाँ बैठा आसण लाईआ। शब्दी शब्द कर जैकारा, जन भगतां दए जणाईआ। सन्तन मेला कन्त भतारा, नारी कन्ता रूप अख्वाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचे सन्तन हरि उपदेस, एक मन्त्र नाम ज्ञान दृढ़ाया। आपे पूज पुजाए शिव शंकर गणेश, आप आपणा वेख वखाया। आपे करे कराए सदा आदेस, आप आपणा सीस झुकाया। आपे जुग जुग धरे आपणा वेस, वेस अनेका आप कराया। सन्त सुहेले सच्चे वेख, साची सिख्या दए समझाया। भगत दुलारा दर दरवेस, दर दरबाना आप अख्वाया। आपे वेखे रिखी केस, गवर्धन धारी आप हो आया। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन देवे साचा वर, चार वरनां एका सरनां एका दर सुहाया। चार वरनां इक्क प्यार, एका बूझ बुझाईआ। ऊँच नीच भेव निवार, राउ रंकां रिहा समझाईआ। हउमे हँगता तोड़ गढ़ हँकार, सांतक सति वरताईआ। आत्म तृष्ना देवे मार, एका अक्खर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन वस्सया साचे घर, घर घर मेला, हरि हरि इक्क अकेला, दर साचे आप कराईआ। घर दीवा घर बाती, घर घर हवन कराईआ। घर सज्जण सुहेला पावे सार, घर नारी घर कन्त भतार, घर बैठा सेज हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे दर, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। हरिजन हरि हरि जाणया, हउमे रोग गंवाए। चले हरि हरि हरि भाणया, चिन्ता सोग विच ना आए। सुणे सुणाए धुर फ़रमाणया, नाद अनादा राग वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा धर्म जणाए। साचा धर्म जन प्यार, एका एक लिव लाईआ। एका दूजा भउ निवार, दर तीजा खोल्ह खुल्हाईआ। चौथे वेखे मीत मुरार, हरि मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मोह चुकाईआ। साची रीता विच संसार, निरगुण धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरगुण साचा वेख वखाईआ। साचा धर्म साची जड़, हरि साची आप लगाईआ। जुग जुग आपे वेखे खड़, वेखणहार आप हो जाईआ। मन मति जीव रहे लड़, धर्म धड़ा धड़ बणाईआ। जिस जन सतिगुर पूरे फढ़या लड़, पूरन बूझ बुझाईआ। जीव जन्त एका रंग एका रूप एका हरि एका नर एका घर रिहा वर, हरिजन वड्डी वड्याईआ। परम रूप हरि शाहो भूप, दहि दिशा चार

कुन्ट एका एक वखाईआ। जीव जन्त ना कोई सके लूट, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोई ना जाईआ। नेड़ ना आए जूठ झूठ, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ। जिस जन उप्पर प्रभ साचा जाए तुठ, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। पंच विकारे जाए रुठ, दया धर्म सति सन्तोख साचा धर्म जणाईआ। सच धर्म जीव कल्यान, हरि धर्मी धर्म कमाया। हरि का शब्द धुर फ़रमान, कर्मी कर्म वखाया। नेत्र पेख हरि भगवान, आपणा मूल चुकाया। आप आपणी कर पछान, आप आपणा वेख वखाया। साचा वेखे इक्क निशान, नाम निशाना इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर्मी धर्म वरनी वरन आप रखाया।

* १६ फग्गण २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ *

भगतन हरि रंग रतड़ा, सदा सुहेला मीत। देवे नाम जगत जुग वक्खरा, बख्शे चरन प्रीत। बजर कपाटी तोड़े पथ्थरा, काया ठांडी सीत। पंच विकारा लथ्थे सथरा, नादी शब्द सुणाए सुहागी गीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रीत। हरिजन हरि हरि पेख्या, पाया पारब्रह्म बेअन्त। लेखा लिख्त किसे ना लेख्या, गा गा थक्के साध सन्त। जुग जुग धारे आपणा भेख्या, खेले खेल आदि अन्त। आपणी आपे जाणे परीक्षा, जग माया पाए बेअन्त। जन भगतां जणाई साची सीख्या, मेल मिलावा नारी कन्त। दर दुआरे देवे साची भीख्या, नाम चोली चाढ़े रंग बसन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आदि अन्त। आदि अन्त हरि भगवाना, घट घट आप समाया। जुग जुग खेले खेल महाना, तीर्थ तट वेख वखाया। शब्द उडाए इक्क बिबाना, लोआं पुरीआं फेरा पाया। धुरदरगाही साचा राणा, साची करनी रिहा कमाया। साचे तख्त बैठ शाह सुल्ताना, साचा धर्म रिहा धराया। शब्द सरूपी धुर फ़रमाणा, दो जहाना रिहा सुणाया। लक्ख चुरासी आप पाए आपणी आणा, आपणे भाणे विच रखाया। जन भगतां देवे साचा माणा, माया ममता मोह चुकाया। नेत्र नैण नाम कज्जल एका पाणा, दुरमति मैल दए गंवाया। सति सरूपी तन पहनाए साचा बाणा, उतर कदे ना जाया। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ स्याणा, आप आपणा तरस कमाया। धुन अनादी शब्द ब्रह्मादी आप सुणाए साचा गाणा, एका राग अलाया। अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। हरिजन मेला हरि गोबिन्दा, हरि हरि रूप समाया। मेट मिटाए सगली चिन्दा, चिन्ता चिखा रहिण ना पाया। दाता दानी वड बख्शिंदा, हरिजन साचे लए तराया। साचा धाम इक्क वखंदा, थिर घर नाउँ धराया।

शब्द अनादी आपे कहिंदा, रसना जेहवा ना कोई हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन लए मिलाया। हरिजन मेला हरि करतार, हरि हरि रूप मिलाया। आप आपणी किरपा धार, आत्म देवे ब्रह्म जणाया। एका बख्शे सच प्यार, एका कर्म कमाया। एका धर्मी धर्म बन्ने धार, धरत धवल सुहाया। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण खेल रचाया। जीवां जन्तां साधां सन्तां लक्ख चुरासी पावे सार, घट घट मन्दिर अन्दर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे होए सुहाया। हरिजन साचे साजन पाया, हरि सतिगुर गहर गम्भीर। नाद अनादी इक्क वजाया, कटे हउमे पीड़। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खोजाया, वेखे चोटी चढ़ अख़ीर। बोध अगाधी शब्द जणाया, सति सन्तोखी देवे धीर। मोहण माधव माधी मेल मिलाया, अमृत बख्शे साचा सीर। आदि जुगादी भेख वटाया, आपे शाह आपे फ़कीर। जुग जुग लेखा आपणे हथ्थ रखाया, वेख वखाए सन्त फ़कीर। केसाधारी भरम ना राया, मूंड मुंडाए लाए तीर। वरन गोत ना कोई रखाया, पंज तत्त ना दिसे कोई सरीर। त्रैगुण माया ना संग रलाया, मन मति बुध ना बन्ने धीर। रक्त बूंद ना कोए रखाया, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना बन्ने बीड़। आप आपणे धाम सुहाया, हरि दाता दस्तगीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, गुरमुख साजन हरि हरि पाया। जगत अन्धेर विनास्सया, साचा मंगल एका गाया। हरि मिल्या शाहो शबास्सया, दूई द्वैती तन्दन तोड़ तुड़ाया। गल छुटकी जम की फास्सया, परमानंद विच समाया। रस रसना इक्क वखास्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मिलाए दया कमाए वेख वखाए पृथ्मी अकास्सया। हरिजन हर घट वेख्या, आपणा मूल चुकाया। सृष्ट सबाई नर नरेस्सया, कन्त कन्तूहल इक्क अख्वाया। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशिआ, सेवक सेवा रिहा कमाया। आपे जाणे आपणा वेस्सया, भेखधारी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन लए तराया। हरिजन साचा सज्जणा, हरि हरि संग रखाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, तीर्थ तट इक्क वखाया। राग अनादी एका वज्जणा, हरि साचा रिहा वजाया। पंच तत्त विकारा अन्तिम भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाया। गुरमुख विरले हरि हरि दुआरे बहि बहि सजणा, नेत्र लोचन नैण दर्शन पाया। मनमुख पड़दा किसे ना कज्जना, राए धर्म दए सजाया। सतिगुर पूरा जुग जुग चलाए नाम जहाजना, रथ रथवाही आप अख्वाया। आप संवारे आपणा काजना, करनी करता रिहा कमाया। अगम्म अगम्मा अगम्मड़ी मारे वाजना, दिस किसे ना आया। आपे रक्खणहारा लाजना, निरगुण सरगुण होए सहाया। साचे अस्व चढ़े ताजना, शब्द घोड़ा रिहा दौड़ाया । खेले खेल देस माझना, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाजना,

गऊ ग़रीबां गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरि साजन जग मेलया, मेलणहार करतारा। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, आपे पावणहारा सारा। आपे होए सज्जण सुहेलया, इक्क अकल्ला एकँकारा। आपणा खेल आपे खेलया, हरि अन्त ना पारावारा। गुरमुख साचे जोत निरँजण चाढ़े तेलया, निर्मल दीप करे उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सुहाए बंक दुआरा। बंक द्वार हरिजन पाया, खोले बन्द किवाड़ा। आत्म दरसी दरस दिखाया, प्रकाश कराए बहत्तर नाड़ा। अन्ध विश्वाश कोई रहिण ना पाया, नेड़ ना आए पंचम धाड़ा। मण्डल रास इक्क वखाए, चरन हेठ दबाए रवि ससि सूरज चन्न सतारा। आकाश प्रकाश पार कराए, खेले खेल अपर अपारा। स्वास स्वास जो जन रहे ध्याए, मेल मिलाए विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लाए पार किनारा। पार किनारा जगत सागर, गुर पूरा पार करांयदा। जीवां जन्तां बेड़ा डुब्बा काया गागर, जूठ झूठ धार वहांयदा। गुरमुख विरले निर्मल कर्म होए उजागर, जो जन रसना गांयदा। बणे नाम शब्द सौदागर, वणज वणजारा इक्क करांयदा। देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, वर घर दर हरि एका एक सुहांयदा। शब्द गुर जगत गुर सूरा, एका एक अख्वाया। सर्बकला आपे भरपूरा, आप आपणा ल्ए उपाया। आपे जाणे आपणी नादी तूरा, आपे रिहा वजाया। पंचम तत्त तन नाता कूड़ा, गुर पीर कोई रहिण ना पाया। मूर्ख मुग्ध ना जाणे मूढ़ा, हरि शब्दी शब्द समाया। जिस जन काया चोली चाढ़े रंगन रंग चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। आप आपणा वेस वटा, हरि जोती जोत जगाईआ। शब्द गुर गुर नाम धरा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण खेल रिहा खिला, सरगुण संग निभाईआ। दो जहानी बण मलाह, लोकमात फेरा पाईआ। गोबिन्द गुर दए सलाह, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। अकाल मूर्त भेव ना रा, हरि सूरत दिस ना आईआ। जिस जन आपे ल्ए जगा, सो जन बूझ बुझाईआ। दुरमति दाग़ दए गंवा, निर्मल नीर वखाईआ। दीपक जोत चिराग दए जगा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। कागों हँस दए बणा, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुर शब्दी शब्द गुर आप अख्वा, आप आपणी रचन रचाईआ। पंज तत्त तन मेल मिला, जगत नाता रिहा बंधाईआ। आपे जाणे आपणी सिफ्त सलाह, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साजन मीत जुग जुग आप अख्वाईआ। शब्द गुर वड बलकार, गोबिन्द गुर जणाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे इक्क लटकाईआ। साचे अस्व हो अस्वार, चारों कुन्ट फेरी पाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम

२४२
०७

वेख हर घट थाँईआ। पावणहारा साची सारा, हर घट बैठा आसण लाईआ। आदि अन्त इक्क अवतारा, हरि पुरख आप अख्वाईआ। शब्द डंक वजाए वारो वारा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, एका सीस भेट जगदीस, दूसर ना कोई सीस झुकाईआ। जगत सीस गुरचरन भेटयां, गुरमुख आप करांयदा। सतिगुर पूरा होए खेवट खेटयां, बेड़ा बन्ने लांयदा। पिता पूत मात पित माँ पिओ बेटयां, ताणा पेटा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाणे साचा घर, सच दुआरा इक्क सुहांयदा।

हरिजन आत्म रही कुरला, दिवस रैण बिल्लाए। हरि हरि कन्त दए मिला, जगत विचोला कोई आए। साचे सन्त दए सलाह, अक्खर वक्खर नाम दृढ़ाए। सतिगुर साचा सच मलाह, बेड़ा बन्ने लाए। सोहँ चप्पू देवे ला, पार किनारा इक्क वखाए। रसना जिह्वा हरिजन लए गा, सगला संग निभाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाए। सुरती शब्द ज्ञान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सोहँ सो सच वखान, सहिज धुन उपजाईआ। हरिजन मंगे साचा दान, दाता दानी झोली पाईआ। रसना गाया गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम धुर फ़रमाण, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान, हँ हँगता दए मिटाईआ। जोती जोत मिले श्री भगवान, भगत भगवान भगवन भगत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✻ २० फग्गण २०१४ बिक्रमी रेछम सिँघ दे घर मेरठ छाउँणी शरन लाइन ✻

गुर पूरा हरि गोबिन्द, हरि हरि आप अख्वाया। मेट मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता रोग रहिण ना पाया। दाता दानी गुणी गहिंद, जुग जुग आप अख्वाया। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, बख्शणहार आप रघुराया। मनमुख जीव लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाया। सतिगुर पूरा दीन दयाल, मेहरवान मेहरवाना। जोती नूर इक्क महान, खेले खेल इक्क महाना। सतिगुर पूरा मेहरवान, गुरमुख साजन सन्त सुहेले जुग जुग भाल, आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञाना। सदा सुहेला करे प्रितपाल, बख्शे चरन सरन सच ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर रूप वटाना। सतिगुर पूरा भेटयां, पारब्रह्म निरँकार। सखा

सुहेला खेवट खेटयां, हरिजन फड़ फड़ लाए पार। शब्द दोशाला इक्क लपेटयां, पंज तत्त प्यार। आपणे नेत्र आपे वेख्या, आपे खोल्हे बन्द किवाड़। आपे लिखणहारा लेख्या, लक्ख ना सके कोई विच संसार। ना कोई रूप ना कोई रेख्या, निरगुण नूरो नूर अपार। सरगुण भुल्ले भरम भुलेख्या, आत्म बिरहों ना कोई विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। सतिगुर पूरा इष्ट देव, आदि पुरख अबिनाशा। आपे जाणे आपणी सेव, खेले खेल जगत तमाशा। अगम्म अगम्मड़ा अलख अभेव, वेख वखाणे पृथ्मी आकाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रासा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग जाणे आपणा कर्म, निहकर्मी कर्म कमांयदा। आप धराए साचा धर्म, धर धरनी विच समांयदा। वेखणहारा वरन बरन, ज़ात गोत फोल फोलांयदा। सच जणाई एका सरन, हरि चरन ध्यान वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र नाम शब्द ज्ञान दृढ़ांयदा। सतिगुर पूरा शब्द ज्ञान, आत्म अन्तर वस्सया। गुरमुख साजन कर पछाण, लोकमाती राह दस्सया। इक्क बिठाए नाम बिबाण, धुरदरगाही आवे नस्सया। चरन धूढ़ बख्शे सच अशनान, मेटे कलिजुग रैण अन्धेरी मस्सया। साचा मेला गोपी काहन, कोटन प्रकाश करे रवि सस्सया। अमृत आत्म पीण खाण, हउमे रोग विकारा नस्सया। एका देवे धुर फ़रमाण, शब्द दो अक्खर आपे वस्सया। सुर नर मुन जन देवत सुर सारे गाण, बाशक अल्हाए मुख सुहंस्सया। धुन अनादी एका गाण, राग अनादी इक्क विगस्सया। ब्रह्मादी खोज श्री भगवान, हर घट अन्दर आपे वस्सया। आपे होया जाणी जाण, आपणा भेव किसे ना दस्सया। जुग जुग खेले खेल महान, कलिजुग अन्तिम तीर निराला एक कस्सया। दाता जोधा सूरबीर बली बलवान, चिट्टे अस्व साचे घोड़े एका तंग कस्सया। एका चिल्ला तीर कमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राह बेपरवाह घर साचे आपे दस्सया। सतिगुर पूरा सच निशान, साचे घर समांयदा। बोध अगाधी इक्क ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ांयदा। चार वरन देवे माण, ऊँच नीच ना कोई वखांयदा। एका धाम बहाए राउ रंक राज राजान, शाह सुल्तान भेव मुकांयदा। एका देवे दानी दान, दाता दानी आप अख्वांयदा। मूर्ख मुग्ध जीव जन्त जगत पछाण, हउमे हँगता संग रखांयदा। गुरमुख साजन चतुर सुजान, काया चोली नाम रंगदा, एका रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क दर, गुर साचा मेल मिलांयदा। सतिगुर पूरा साचा सज्जण, निर्मल जोत अकालया। जन भगतां कराए एका मजन, आत्म अन्तर सर सरोवर इक्क वखा ल्या। शब्द चढ़ाए सच जहाजन, सोहँ चप्पू एका ला ल्या। कलिजुग अन्तिम रचया काजन, लक्ख चुरासी वेख वखा ल्या। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजन, अगम्म अगम्मड़ा धाम

सुहा ल्या। शाहो भूप वड राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वा ल्या। लोआं पुरीआं इक्क साजन, सेवक सेव कमा रिहा। आपे रक्खणहारा लाजन, सृष्ट सबाई आप सुणा रिहा। कलिजुग अन्तिम प्रगट जोत देस माझन, सम्बल नगरी धाम सुहा ल्या। साचे घोड़े चढ़या ताजन, दो जहानां फेरा पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर विच समा रिहा। सतिगुर पूरा सच समा, सहिज धुन अलांयदा। आप आपणा भेव खुल्ा, आप आपणा मूल चुकांयदा। आप आपणा इष्ट मना, आप आपणा सीस झुकांयदा। आप आपणी दृष्ट खुल्ा, एका राह वखांयदा। आप आपणी सृष्ट उपा, आप आपे मेट मिटांयदा। आप आपणा लहिणा देणा दए चुका, आप आपणी झोली पांयदा। आप आपणा भाणा सहिणा दए सिखा, गुरमुख साची बूझ बुझांयदा। नेत्र नैणां कज्जल रिहा पा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर गुर सतिगुर वेख वखांयदा। सतिगुर साचा मीतड़ा, एका एकँकार। काया चोली रंगे चीथड़ा, गुरमुख साजन लए उभार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा लिख ना सके कोई विच संसार। जुग जुग आपे जाणे आपणी रीतड़ा, लोकमाती लए अवतार। आपे पतित आप पुनीतड़ा, पतित पावन हरि गिरधार। आपे ठंडा आपे सीतड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख दर, गुर सतिगुर पावे सारे। सतिगुर साचा जाणया, हरिजन भए अनन्द। परमानंद इक्क वखाणया, रसना पाया निजा नंद। एका दूजा भउ चुकानया, मिल्या मेल गुणी गहिंद। घर साचा इक्क वखानया, रस पाया निजानंद। घर साचा इक्क वखानया, मिटी सगली चिन्द। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ जाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दए वर, गुर सतिगुर सागर सिन्ध। सतिगुर सागर सिन्ध गहर गम्भीर, भेव किसे ना पाया। हरिजन काया करे सांतक सति सरीर, सति सन्तोख दवाया। शब्द निराला मारे तीर, रत्ती रत्त रहिण ना पाया। बजर कपाटी देवे चीर, साची हाटी इक्क वखाया। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, दूई द्वैती पड़दा लाहया। एका चोटी चाढ़े अख़ीर, ब्रह्मण्डां खोज खोजाया। अमृत आत्म बख्शे साचा सीर, निझर धारा रस चुआया। काया नाता तोड़े जूठा झूठा बस्त्र चीर, सुरती शब्द लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा लए वर, गुर सतिगुर आप अख्वाया। सतिगुर सतिगुर सतिगुर सागर सिन्धड़ा, भेव अभेद अख्वांयदा। आप आपणे घर वसंदड़ा, दिस किसे ना आंयदा। थिर घर एका धाम रखंदड़ा, छप्पर छन्न ना कोई रखांयदा। चार दिवार ना कोई बणंदड़ा, महल्ल अटल ना कोई सुहांयदा। जोती दीपक आप जगन्दड़ा, आकाश प्रकाश समांयदा। आपणा नूर आप वखंदड़ा, हरि नूरो नूर उपांयदा। गुर शब्दी शब्द बख्शिंदड़ा, सतिगुर पूरा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। गुर सतिगुर साचा कन्त कन्तूहल, नारी कन्ता मीत। जन भगतां चुकाए जुग जुग लहिणा देण मूल, आपे जाणे आपणी रीत। काया मन्दिर अन्दर सेजा सच चढ़ाए फूल, ना कोई दिसे गुरुद्वार मन्दिर मसीत। शब्द पंघूड़ा हरिजन साचा रिहा झूल, बैठा रहे सदा अतीत। साचे तख्त आप बराजे ना कोई पावा चूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, गुर सतिगुर रक्खे लाज। सतिगुर पूरा लाजावन्त, हरिजन आप तरांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। जुग जुग महिमा गणत अगणत, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। आप आपणे उपाए साजन सन्त, सन्त सुहेला आप अख्वांयदा। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्त, भरमी भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर वेख वखांयदा। आप आपणी जोत जगा, निरगुण वेस निरगुण साजन गया समा, दिस किसे ना आया। शब्दी शब्द डंक रिहा वजा, अनहद राग अलाया। साचा लेखा रिहा लिखा, भेव कोई ना पाया। कलिजुग लहिणा देणा रिहा चुका, तन गहिणा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। आप आपणी हरि कल धार, अचरज बणत बणाईआ। जोती जामा लए अवतार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, चार वरनां रिहा जणाईआ। राज राजानयां करे ख़बरदार, साधा सन्तां रिहा जगाईआ। शब्द डंक अपर अपार, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर नेत्र नैण रिहा उग्घाड़, नैण मुँधारा वेख वखाईआ। त्रैगुण माया रही साड़, पंज तत्त जगत लड़ाईआ। मन मति बुध रही ललकार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। कर्म कुकर्मां पावे सार, कलिजुग अन्तिम तोल तुलाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, हरि लेखा गया लिखाईआ। नानक गुर पाए सार, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। गुर गोबिन्द ढहि पया द्वार, अकाल मूर्त इक्क मनाईआ। पुरख अबिनाशी कर विचार, दे मति गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा होए गंवार, सृष्ट सबाई दए भुलाईआ। मेल मिलाए संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी वेख वखाईआ। चारों कुन्ट हाहाकार, अग्नी अग्ग रही जलाईआ। साधां सन्तां ना कोई पावे सार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। तीर्थ तट गए हार, मानस मानुख ना कोई तराईआ। बिन हरि सतिजुग सति ना पावे सार, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। निर्मल जोती हरि जगा, इक्क प्रकाश करांयदा। सृष्ट सबाई लए उठा, साचा मार्ग लांयदा। मनमुख जीव दए खपा, थिर कोई रहिण ना पांयदा। राग अनादी इक्क अला, एका धुन रखांयदा। सुन्न समाधी वेख वखा, अगाध बोधी शब्द जणांयदा। जटा जूट

२४६
०७

रहे पा, मूंड मुंडाए संग रलांयदा। ख़ाकी ख़ाक जो रहे समा, चरन ख़ाक इक्क वखांयदा। उच्चे टिल्ले जो बैठे डेरे ला, शब्द ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। डूँघी कन्दर जो बैठे धूंणीआँ ता, फड़ बांहों आप उठांयदा। तट किनारे जो जल धारा रहे समा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। नंगन फिरत वणज वणजारा जो नाम रहे करा, इक्क द्वार सुहांयदा। इक्क शब्द एका नाअरा दए लगा, भरम गढ़ आप तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ धरांयदा। निहकलंक हरि बलवाना, निरगुण रूप समाया। शब्द खण्डा तीर कमाना, हरि आपणे हथ्थ उठाया। चार कुन्ट दहि दिशा वेखे मार ध्याना, गगन पतालां फेरा पाया। आपे वेखे ज़िमी अस्मानां, लोआं पुरीआं दए हिलाया। वेख वखाए नौ खण्ड सत्त दीप दो जहाना, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी सुणाए एका गाणा, अलक्ख निरँजण आप अल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आया। नरायण नर अकाल मूर्त, दर्द दुःख भय भंजना। पारब्रह्म ना जाणे कोई सूरत, जगी जोत आदि निरँजणा। कलिजुग नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, जन भगतां मेल मिलाए हरि साचे सज्जणा। फड़ फड़ चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, दरस दिखाए दर्द दुःख भय भंजना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई पड़दा तेरा कज्जणा। सृष्ट सबाई तेरा नाता, हरि एका एक रखाया। पारब्रह्म पुरख बिधाता, जुग जुग वेस वटाया। आपे बैठा रहे सदा अकांता, इक्क अकल्ला आप हो जाया। कलिजुग अन्तिम मेटे अन्धेरी राता, वेला अन्तिम आया। जन भगतां देवे अमृत आत्म बूंद स्वांता, निझर झिरना रिहा झिराया। आपे पिता आपे माता, आप आपणी गोद उठाया। धुरदरगाही देवे साची दाता, एका नाम झोली पाया। लहिणा देणा चुकाए जाता पाता, चार वरनां अठारां बरन एका सरन सरनाई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निज घर आपणा आप वेख वखाया। निज घर आपणा हरि निरँकारा, एका एक रखाया। निर्मल जोती कर उज्यारा, दिवस रैण करे रुशनाया। ना कोई दूसर मीत मुरारा, सगला संग ना कोई रखाया। जुग जुग जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। सतिजुग त्रेता लाया पार, द्वापर वेख वखाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा गया हार, कूड़ा नाता जगत बंधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंच विकार जीवां जन्तां इक्क प्रनाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हर घट रिहा विचार, कर्म कुकर्मां लेख लिखाया। अन्तिम कलिजुग प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, लोकमाती फेरा पाया। शब्द कल्गी तोड़ा नाम सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिलाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले साचे पर्बत अन्दर मन्दिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस वटाया। निरगुण वेस हरि अवल्ला, जुग जुग आप करांयदा। आपे बैठा इक्क अकल्ला, अकल कला समांयदा। आप समाए जलां थलां, डूँघी कन्दर उच्चे पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लांयदा। आप आपणा मेटे सला, आप आपणी वंड वंडांयदा। आप आपणा करनहारा हल्ला, आपणा नाअरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, इक्क द्वार वेख वखांयदा। इक्क द्वार हरि निरँकार, आपणा आप रखाया। चार वरनां करे इक्क प्यार, एका धाम सुहाया। एका शब्द एका धुन्कार, एका राग अलाया। एका अमृत ठंडी ठार, निझर झिरना दए झिराया। एका सज्जण मीत मुरार, शब्दी शब्द गुर अख्वाया। जुग जुग रीत अवल्लड़ी विच संसार, हरि साचा करदा आया। जन भगतां करे मात प्यार, आप बेड़ा बन्हदा आया। वेले अन्तिम पावे सार, भेखाधारी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप अख्वाया।

हरिजन हरि हरि पाया, पारब्रह्म करतार। हउमे रोग गंवाया, चिन्ता चिखा निवार। माया ममता मोह चुकाया, तामस तृष्ना निवार। रसना भोग गुर पाया, आत्म रस प्यार। धुर संजोग वखाया, हरि शब्द अधार। एका जोग कमाया, कूड़ी क्रिया दए निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन वेख वखाया। हरिजन हरि हरि रंग है, रूप रंग अपार। दाता दानी वड सूरा सरबंग है, देवणहारा सर्ब संसार। लक्ख चुरासी रही मंग है, भरनहार जगत भण्डार। साचे मन्दिर अन्दर वेखे लँघ है, लहिणा देणा चुकाए नौ द्वार। शब्द रंगीला नाम पलँघ है, सच सिँघासण अपर अपार। गुरमुख साजन लाए आपणे अंग है, अंगीकार करे करतार। अनहद ढोल वजाए सच्चा मृदंग है, आत्मक धुन सुणे सुणनेहार। अमृत देवे साची गंग है, निझर रस इक्क अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीती साचा नाता, हरिजन आप करांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, जिस जन दया कमांयदा। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। दरस दिखाए इक्क अकांता, एकँकारा रूप वटांयदा। आपे होए पिता माता, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। नाम देवे धुर सुगाता, आत्म अन्तर झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। हरि सज्जण हरि जाणया, आत्म ब्रह्म विचार। इक्क सुणाए धुर फ़रमाणया, एका दूजा भउ निवार। तीजे नेत्र दरस महानया, खोल्हे बन्द किवाड़। चौथा पद इक्क पछानया, घर मेला इक्क भतार। साची

२४८
०७

सखीआं मंगल गाणया, अनहद धुन वज्जे धुन्कार। आत्म सेजा सच सुहानया, परम पुरख अगम्म अपार। इक्क सुणाए साची बाणीआ, वेद कतेब ना पायण सार। मेल मिलाए शब्दी शब्द गुर साचे हाणीआं, एका दूजा भउ निवार। अमृत देवे ठंडा पाणीआ, सांतक सति करे वरतार। बोध अगाध जणाई शब्द कहाणीआ, गावत गावत रहे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, लोकमात लए अवतार। लोकमात हरि लए अवतारा, आपणी बणत बणांयदा। खेले खेल खेलणहार न्यारा, भेखाधारी भेख वटांयदा। आप आपणी बन्ने धारा, बन्नणहार आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, पुरीआं लोआं फेरी पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, आप आपणी रचन रचांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। इक्क अकल्ला अगम्म अगम्म अगम्म अपारा, आदि पुरख निरँजण भेद अभेद भेव खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, आप आपणा डंक वजांयदा। जुग जुग आपणा वेस वटा, आपणी कल वरतांयदा। सन्त सुहेले लए जगा, एका बूझ बुझांयदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान दवा, पारब्रह्म समांयदा। एका नेत्र दए खुल्हा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। सच महल्ला दए वसा, सच सिँघासण आसण लांयदा। उच्चा टिल्ला दए चढ़ा, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे साचा मेवा, आत्म दरस अपारा। आपे गुर गुरु गुर चेला, आपे खेले खेल न्यारा। आपे साजण सज्जण सुहेला, आपे बख्शे चरन प्यारा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सच दुआरा। सच द्वार पुरख अबिनाश, एका एक रखाया। जोती नूर कर प्रकाश, सृष्ट सबाई वेख वखाया। जन भगत धराए वेसी वेस, दर दरवेशा फेरा पाया। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, गगन पतालां रिहा हिलाया। आपे रक्खे घट घट वास, हर घट आपे डेरा लाया। आदि अन्त ना जाए विनाश, आवण जावण खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। हरिजन साजन साचा मीता, आदि अन्त अख्वाया। जुग जुग परखणहारा नीता, नित नवित्ता खेल खिलाया। गुरसिख काया करे ठंडी सीता, पंज तत्त विकार रहिण ना पाया। दरस दिखाए इक्क अतीता, निरगुण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि जोत करे रुशनाईआ। निरगुण रूप अगम्म अपार, भेव कोई ना पाईआ। गोबिन्द लेखा अपर अपार, लिखणहार दिस ना आईआ। खेले खेल सर्ब संसार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्ताना रिहा उठाईआ। दो जहानां पावे सार,

ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा जगाईआ। साचे अस्व हो अस्वार, शब्द डंका रिहा वजाईआ। वासी पुरी घनका हरि निरँकार, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। वेद व्यासा कर प्यार, पूत सपूता आप हो जाईआ। ब्रह्मण गौड़ा रिहा विचार, एका पौड़ा रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे घर घर साचे इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि सुहाया, जगे जोत अकाली। अट्ठे पहर डगमगाया, दो जहानां वाली। हरिजन साचे लए जगाया, दीपक जोती एका बाली। एका ब्रह्म ज्ञान वखाया, देवे नाम सच्चा धन्न माली। एका चरन ध्यान टिकाया, तोड़नहारा जगत जंजाली। वरन गोत ना कोई जणाया, सृष्ट सबाई साचा माली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। जुग जुग भेख हरि अवल्ला, जुग जुग करदा आया। सति पुरख निरँजण इक्क अकल्ला, थिर घर बैठा आसण लाया। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, नाम हलूणा एका लाया। सच दुआरा जिस जन मल्ला, धुरदरगाही मेल मिलाया। मेल मिलाए पुरख अगम्मा, दिस किसे ना आया। ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्मा, पंच तत्त ना वेस वटाया। हरिजन दुआरे अन्तिम खला, दिवस रैण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि बनवारी, एका एक रखांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारी, आकाश प्रकाश वखांयदा। ना कोई दीसे चार दिवारी, महल्ल अटल ना कोई रखांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारी, ओंकारा रूप वटांयदा। आप आपणा कर विचारी, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आप आपणा मीत मुरारी, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणी बन्ने धारी, आप आपणा रूप वटांयदा। जुग जुग खेले खेल अपारी, खेलणहार दिस ना आंयदा। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसारी, कलिजुग कूड़ा पड़दा पांयदा। पंच विकारा मोह विकारी, माया ममता संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा जोधा सूरा बलकारी बलवाना, हरि साजन मेल मिलांयदा। एका बख्शे चरन ध्याना, वड राजन राज दया कमांयदा। नाम बख्शे तीर कमाना, रसना चिल्ले इक्क चढ़ांयदा। धुरदरगाही बन्ने साचा गाना, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सृष्ट सबाई शब्द सुणाए अनादी गाणा, धुन आत्मक आप उपजांयदा। पंचम सखीआं वक्त सुहाना, काया मन्दिर वेख वखांयदा। धर्म राए कर परवाना, कर्मी कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे घर, घर साजन मेल मिलांयदा। हरिजन मेला अलक्ख अभेवा, पारब्रह्म बेअन्ता। बिरथा जाए ना जुग जुग सेवा, सदा सहाई साचे सन्ता। रसना गाए साची जिह्वा, एका राग सुणाए कन्न, हरिजन आत्म जाए मन्न, देवे नाम धन धनंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवणहारा डन्न, जन भगत उधारे जुगा

जुगन्ता। जन भगत हरि मीतड़ा, आदि अन्त अख्वाया। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, जुग जुग करदा आया। इक्क सुहाए सुहागी गीतड़ा, धुरदरगाही लै के आया। काया चोली चाढ़ रंग मजीठड़ा, उतर कदे ना जाया। हरि का शब्द सदा अनडीठड़ा, लिखण पढ़ण विच ना आया। कलिजुग काया मिट्ठा कौड़ा करे रीठड़ा, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला सच घर, सरगुण वेख वखाया। सरगुण सच्चा सज्जण शाह, निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण बण जगत मलाह, सरगुण पार करांयदा। सरगुण वेखे साचा थाँ, निरगुण दिस ना आंयदा। निरगुण दाता बेपरवाह, सरगुण बन्ने लांयदा। दोहां विचोला नाम रखा, आप आपणी बणत बणांयदा। जुग जुग आपणा ढोला आपे गा, आप आपणा ना धरांयदा। नानक गोला दर बहा, सेवक सेवा लांयदा। गुर गोबिन्द रिहा ध्या, अट्ठे पहर ध्यान टिकांयदा। एका शब्द रिहा जणा, धुर फ़रमाना इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लेखे साचे ला, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर इक्क सुल्तान, एका हरि बिराज्जया। धर्म वखाए इक्क निशान, शाहो भूप वड राजन राज्जया। खेले खेल दो जहान, लक्ख चुरासी रचया काज्जया। कलिजुग वेखे मार ध्यान, पारब्रह्म ग़रीब निवाज्जया। जूठ झूठ सर्ब शरमान पंच विकारा फिरे भाज्जया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, हरि मारे अनहद साची वाज्जया। एका बख्शे सच ध्यान, राज राजान ग़रीब निवाज्जया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे इक्क अकल्ला फिरे भाज्जया। इक्क अकल्ला एकँकार, एका घर सुहांयदा। जुग जुग लए मात अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग वेखे कूड़ कुड़यार, संग मुहम्मद संग रखांयदा। अल्ला राणी हाहाकार, नेत्र नीर वहांयदा। नानक लेखा अपर अपार, लिखणहार आप लिखांयदा। गोबिन्द गुर कर पुकार, एका राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी करया ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, जोती जामा भेख वटांयदा। निहकलंका लए अवतार, नाम डंका इक्क वजांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। दिस ना आए विच संसार, सृष्ट सबाई आप चलांयदा। गुरमुख साजन साचे कर प्यार, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। एका दूजा भउ निवार, तीजा लोचण आप खुल्हांयदा। चौथे घर देवे वाड़, परमानंद समांयदा। पंचम पंचम मेटे झूठी धाड़, पंचम संग रखांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़, गुर शब्दी आप अख्वांयदा। गुरमुख साजन सन्त सुहेले कर कर मेले शब्द घोड़े देवे चाढ़, वाग आपणे हथ्थ उठांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। त्रैगुण माया देवे साड़, पंज तत्त दिस ना आंयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर मेल मिलांयदा। आपे होए पिछे अगाड़, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सेव कमांयदा। इक्क वखाए सच्चा

घर बार, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। निर्मल जोती कर उज्यार, साचा दीपक दीप जगांयदा। अनहद धुंन सुणे सुणाए सच्ची सरकार, पंचम सेवा लांयदा। शब्द सिँघासण अपर अपार, हरि जोती आसण लांयदा। गुरमुख साजन कर विचार, सुरत सवाणी मेल मिलांयदा। आपे नारी होए कन्त भतार, आप आपणी सेज हंढांयदा। आप आपणी पावे सार, हरिजन साचे विच समांयदा। दस्म दुआरी होया बाहर, आप आपणा मार्ग लांयदा। सो पुरख निरँजण खेल अपार, करता पुरख भेव ना पांयदा। आप आपणी वस्सया धार, एका शब्द धार चलांयदा। हँ हँगता देवे मार, जिस जन आपणी दया कमांयदा। सोहँ शब्द तेज़ कटार, दोए जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। सो पुरख निरँजण आदि अबिनाशा, जुग जुग वेस वटांयदा। खेले खेल सर्ब गुण तासा, आप आपणा भेख करांयदा। वेखण आया जगत तमाशा, जोती जामा पांयदा। लोआं पुरीआं मण्डल मण्डप पावे रासा, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन पताला आप समांयदा। जन भगतां देवे चरन कँवल सच्चा धरवासा, फड़ फड़ बाहों मेल मिलांयदा। आदि अन्त ना कदे विनासा, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दया कमांयदा। सो साजन हरि वस्सया, सागर गहर गम्भीर। पंच विकारा दर तों नस्सया, सांतक सति करे सरीर। घर मन्दिर अन्दर बहि बहि हस्सया, एका चोटी चढ़ अख़ीर। करे प्रकाश कोटन कोट रवि सस्सया, अमृत बख्शे साचा सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, एका देवे शब्द धीर।

* २१ फग्गण २०१४ बिक्रमी मेजर कर्म सिँघ दे घर मेरठ छाउँणी *

हरि मन्दिर घर पाया, घर दीप प्रकाश। हरि जन्दर आप तुड़ाया, अज्ञान अन्धेर विनास। डूँघी कन्दर वेख वखाया, गुणवन्ता सर्ब गुणतास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी रास। हरि मन्दिर हरि मेलया, किरपा कर अपार। धन्न गुरू धन्न चेलया, धन्न सोहे बंक द्वार। धन्न साजन सच सुहेलया, धन्न धरनी करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम भण्डार। नाम भण्डारा वस्त अनमुल्ल, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। देवणहार जगत अडोल, आदि अन्त ना कोई डुलाईआ। हरिजन उधारे साची कुल, कुल कुलवन्ता वेख वखाईआ। तोलणहारा साचे तोल, नाम कंडे आप तुलाईआ। बजर कवाड़ा देवे खोल्ह, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब कर्मा जन्म जन्मा जीव कर्मा जन लहिणा झोली पाईआ। पूर्ब कर्मा शब्द श्रृंगार, जन मेला हरि

गोबिन्द। मानस जन्म उधरे पार, मिटे सगली चिन्द। जगत कर्मा पावे सार, हरिजन बणाए साची बिन्द। एका बख्शे चरन प्यार, वड दाता गुणी गहिंद। अमृत बख्शे ठंडी ठार, निझर धारा सागर सिन्ध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि सदा बख्शिंद। जन जननी जन जाया, घर मन्दिर वधाई। राग अनादी एका गाया, उपजी धुन रघुराई। ढोल मृदंग इक्क सुणाया, अनहद सेवा लाई। दीपक जोती इक्क जगाया, दिवस रैण रहे रुशनाई। मिल सखीआं मंगल गाया, पंचम मेला चाँईं चाँईं। घर साजन सच सुहाया, मिल्या मेल साचे माही। भाण्डा भरम भउ भनाया, एका दूजा भेव चुकाई। धर्म दुआरा इक्क वखाया, सति सन्तोखी डेरा लाई। वरन बरन ना कोई जणाया, रूप अनूपा हरि रघुराई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कर्मा वेख वखाई। कक्का कर्म विचार, दया कमांयदा। पंज तत्त विकारा देवे मार, धीरज धीर धरांयदा। एका बख्शे साची धार, बस्त्र चीर तन पहनांयदा। साचे शब्द तन शृंगार, सच कटार इक्क वखांयदा। नेत्र नैणां इक्क प्यार, निजा नंद रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि साचा वेख वखांयदा। रारा रेख वेख, वेखे जगत तकदीरया। नेत्र आपणे आपे पेख, आपे जाणे खेल अखीरया। आपे देवणहारा सच संदेश, शब्द शब्दी धुंन उपजा रिहा। आपे होए रिखी केश, गवर्धन भार आप उठा रिहा। आपे दाता दानी दस दस्मेश, अकाल पुरख इक्क मना रिहा। अकाल मूर्त नर नरेश, निरगुण रूप वटा रिहा। वेख वखाणे धारी केस, एका धर्म आप कमा रिहा। आपे धरया आपणा वेस, वेस अनेका आप वटा रिहा। जन भगतां मस्तक लाए साची मेख, ना कोई मेटे मेट मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज जोग शाह सुल्तान जगत जहान हरि भगवान जन हरि हरिजन वेख वखा रिहा। मंमा मोह चुका, भरम गवांयदा। एका मदि नाम प्या, सति सरूर समांयदा। एका अक्खर नाम वखा, जागरत जोत जगांयदा। एका सथ्थर दए विछा, पंच विकारा मोह मिटांयदा। एका अक्खर दए पढ़ा, दो जहानां बूझ बुझांयदा। बजर कपाटी पथ्थर दए तुड़ा, जिस जन आपणे संग रखांयदा। नेत्र अथ्थर दए वगा, नाम वैराग इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै त्रै अक्खर त्रैगुण वेख पंचम संग निभांयदा। कक्का काली धार, कलिजुग शाहीआ। रारा राम रहीम करतार, करता पुरख अख्वाईआ। मंमा मेला विच संसार, जग विछड़े मेल मिलाईआ। कर्म कर्मा पावे सार, कर्मी कर्म वड्डी वड्याईआ। साचा धर्म अपर अपार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चर्म, रत्त तत्त इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण तेरा रंग अपार, लक्ख चुरासी कर पसार, पंज तत्त देह अधार, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। सस्सा सतिगुर

मीत, संग निभाया। आप जणाए अचरज रीत, लेखा लिख्त विच ना आया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, जगत अतीत सदा रखाया। पतित पावन साचा मीत, पति परमेश्वर आप अख्वाया। जन भगतां आत्म रिहा जीत, आप आपणा डौरु वाहया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, राज राजानां शाह सुल्तानां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा घर, सस्सा सिख्या इक्क सिखाया। घग्घा घोड़ा कर त्यार, शब्दी रंग रंगांयदा। गुरमुख साचे वेख विचार, कर्मी कर्म कमांयदा। फड़ फड़ बांहों लाए पार, चरन प्रीती सेव कमांयदा। आपे बैठा अधविचकार, दस्म दुआरी डेरा लांयदा। सुरत सवाणी पावे सार, अट्ठे पहर राह तकांयदा। शब्द गुर लए अवतार, जन जननी वेख वखांयदा। रूप रंग अगम्म अपर अपार, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई रखांयदा। लेखे लाए रसना गाया दम दमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर एका एक सुहांयदा। पंचम घर पंचम प्यार, पंचम संग रखाया। पंचम नाता मोह प्यार, पंचम जोड़ जुड़ाया। पंचम मेटे अन्धेरी राता विच संसार, पंचम राह वखाया। पंचम देवे दाता हरि नाम सच्ची सरकार, पंचम सो मनाया। हँ हँगता करे ख्वार, पंचम मेला सहिज सुभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजण लए मिलाया। पंचम मीता पंचम प्यारा, पंचम ध्यान लगांयदा। पंचम लगाए एका नाअरा, पंचम आप सुणांयदा। पंचम देवे शब्द सहारा, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम बन्ने एका धारा, पंचम धार वहांयदा। पंचम तोड़े गढ़ हँकारा, पंचम जड़ उखड़ांयदा। पंचम चढ़ चढ़ वेखे उच्च महल्ल अटल मुनारा, पंचम राग अनादी धुन आत्मक इक्क सुणांयदा। पंचम कराए हाहाकारा, पंचम नेत्र रो रो नीर वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, मन्त्र ज्ञान इक्क दृढ़ांयदा। सिँघ कर्म कर्म जन जाग, जोग जुगत रघुराया। आपे धोवणहारा दाग़, दुरमति मैल गंवाया। आत्म अन्तर उपजाए साचा राग, अनहद आप सुणाया। फड़ फड़ हँस बणाए काग, चरन चरनोदक मुख चुआया। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाया। मेल मिलाए कन्त सुहाग, नारी कन्ता वेख वखाया। पंज तत्त विकारा बुझे आग, त्रैगुण माया नेड़ ना आया। आपणे नेत्र आपे रिहा जाग, आलस निन्दरा विच ना आया। गुरमुख विरला कलिजुग अन्तिम जाए जाग, जन जननी लेखे लाया। दो जहानां पकड़े वाग, लोकमाती फेरा पाया। चरन धूढ़ बख्शे मजन माघ, साची हाटी इक्क वखाया। धन्न धन्न धन्न गुरमुख गुरसिख गए जाग, गुर आपणा घर आपणे पाया। घर आपणा गुर वस्सया, हरि मन्दिर अपार। सच महल्ले बहि बहि हस्सया, जोती शब्दी कर प्यार। दो जहानी फिरे नस्सया, लोकमात रिहा विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन लहिणा अग्गे धर, अपणा कर्ज़ रिहा उतार।

* २१ फग्गण २०१४ बिक्रमी रेछम सिँघ दे घर मेरठ छाउँणी *

पार उतारनहार, आदि पुरख अबिनाशिआ। हरिजन साचे लए उधार, हरि साजन शाहो शबाशिआ। साचा सच वखाए इक्क दरबार, पार किनारा पृथमी अकाशिआ। आप बैठ सच्ची सरकार, आपे वेखे रंग तमाशिआ। लक्ख चुरासी आप उभार, आपे करणहार नास्सया। आपे खण्डा तेज़ कटार, शस्त्र बस्त्र आप उठास्सया। आपे चिल्ला तीर कमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन दर करे परवान। हरिजन दर परवानया, आदि जुगादि ब्रह्मादि। जन मेला गुण निधानया, देवे नाम साची दाद। एका दर सुहाए हरि भगवानया, शब्द अनादी वज्जे नाद। निर्मल जोती नूर करे महानया, हरि मोहण माधव माध। घर सुहञ्जणा इक्क सुहानया, शब्द जणाई बोध अगाध। आप आपणा मूल पछानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए लाध। हरि साजन हरि लाध्या, पाया पुरख अगम्म। मनमति मनुआ लाध्या, लेखे लाए स्वासी दम। अमृत आत्म पीवे साची मध्या, एका खाए नाम ताम। सतिगुर पूरे हरि साजन घर साचे लध्या, ना मरे ना पए जम्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा कम्म। हरि जोबन हरि रतिआ, राम रूप अपार। आपे वेखणहारा चेतन्न सतिआ, सति पुरख करतार। आपे होए कमलापतिआ, कन्त कन्तूहला मीत मुरार। आपे देवे धीरज जतिआ, सति सन्तोख कर्म विचार। आपे वेखे तीर्थ तटयां, सर सरोवर पावे सार। आपे खेले खेल बाज़ीगर नटयां, नट नटूआ खेल अपार। आप आपणी काया पल्टयां, पारब्रह्म सच्ची सरकार। जुग जुग खोले साची हट्टीआ, कराए नाम वणज वपार। जन भगतां पढ़ाए एका पट्टीआ, घर शब्द निरगुण धार। दीप जोत जगाए लट लटयां, अन्ध अन्धेर मिटाए कूड़ कुड़यार। हरिजन लाहा घर साचे एका खट्टया, मिल्या मेल हरि निरँकार। ना कोई दीवा ना कोई बत्तीआ, ना कोई किरत ना कोई पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे नेत्र पेखे आत्म दरसी दरस अपार। हरिजन हरि हरि बौहड़या, दिवस रैण प्रभात। गुर सतिगुर पूरा आपे बौहड़या, मेट मिटाए अन्धेरी रात। फल मिट्ठा करे कौड़या, अमृत देवे बूंद स्वांत। धुरदरगाही आया दौड़या, चरन कँवल बंधाए साचा नात। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़या, जन पुच्छणहारा वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला कमलापात। हरिजन हरि हरि साथ है, सगला संग निभाए। प्रगट होए त्रिलोकी नाथ है, दीनां बंधप दया कमाए। इक्क सुणाए कहाणी अकथना अकथ है, कथनी कथ ना सके राए। जुग जुग चलाए आपणा रथ, है, रथ रथवाही हरि रघुराए। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ है, सृष्ट सबाई वेख वखाए। मनमुख जीवां देवे मथ है, वेले अन्तिम दए सजाए। गुर पूरा जिउँ रामा घर दसरथ

२५५
०७

है, काहना कृष्ना रूप वटाए। सगल विसूरा जाए लथ है, नानक गोबिन्द दर्शन पाए। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ है, रामदासा वेख वखाए। काया मन्दिर जाए ढठ्ठ है, थिर कोई रहिण ना पाए। हरि गेड़नहारा उलटी लट्ठ है, आदि जुगादी आप अख्वाए। चरन दुआरे सच अकट्ठ है, हरिजन साचे मेल मिलाए। कलिजुग अग्नी जले मट्ठ है, त्रैगुण माया रही तपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन वेख वखाए। हरि साजन गल पलड़ा, रो रो नेत्र नीर वहाए। पुरख अबिनाशी इक्क अकल्लड़ा, लक्ख चुरासी वेख वखाए। कलिजुग अन्तिम भारा पल्लड़ा, कूड़ कुड़यारा संग रलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन बूझ बुझाए। हरि साजन हरिजन वेख वखाणया, देवे नाम अधार। जुग जुग चले आपणे भाणया, राम राम आप करतार। आपे वेखे सुघड़ स्याणया, ग़रीब निमाणे पावे सार। आपे जाणे राज राजाणया, शाह सुल्ताना वड सिक्दार। आपे खेले खेल दो जहानया, आवण जावण खेल अपार। कलिजुग अन्तिम जोती नूर करे उज्यार महानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे बन्ने धार। हरिजन हरि हरि पावना, पारब्रह्म बेअन्त। रसना जिह्वा एका गावणा, पूरन गुर हरि भगवन्त। एका नाम फड़ाए दामना, देवे वड्याई साचे सन्त। धुरदरगाही साचा ज़ामना, आदि निरँजण साचा कन्त। मेट मिटाए कामनी कामना, नेड़ ना आए चिखा चिन्त। एका रूप वटाए रामा रामना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे सदा अचिन्त। चिन्ता रोग हरिजन जाए, रसना गाया हरि गोबिन्द। आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाए, हरि दाता गुणी गहिंद। सहिजे सहिज सुख उपजाए, आत्म अन्तर परमानंद। हउमे हँगता रोग मिटाए, बजर कपाटी तोड़े जिंद। दाता दानी दरस अमोघ वखाए, अमृत बूंद वहाए सागर सिन्ध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, मनमुख लगाए आपणी निन्द। मनमुख मूढ़ गंवार, भेव ना राया। भरम भुल्ले जीव गंवार, कलिजुग माया पड़दा पाया। पंज तत्त तन प्यार, काम क्रोध लोभ मोह हंकाम सताया। मनमति कर रही विचार, विचार गुरमति भेव ना राया। जूठा झूठा कर प्यार, जगत नाता बंध बंधाया। हउमे हँगता रही साड़, साची संगता मूल ना भाया। भुक्खा नंगता फिरे दर द्वार, नाम वस्त ना कोई झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मनमुखां दए सजाया। मनमुख कूड़ा कूड़ कूड़यार, कूड़े धन्दे लाया। अट्ठे पहर रोवे ज़ारो ज़ार, सति सन्तोख ना कोई रखाया। पंच विकारा मारे मार, दिवस रैण रिहा हलकाया। मिल्या मेल ना हरि करतार, काया कूड़ कप्पड़ हंढाया। मरे मर जम्मे वारो वार, लक्ख चुरासी ना कोई कटाया। धर्म राए दे दर दरबार, लेखा लेख ना कोई मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, मनमुखां वेख वखाया। मनमुख मूर्ख मूढ़ अन्ध, भरमे भरम भुलाया। रसना लगाया मदिरा मास गन्द, हरि का शब्द दिस ना आया। जोत निरँजण ना चढ़या साचा चन्द, अज्ञान अन्धेर ना कोई मिटाया। एका एक ना मिल्या परमानंद, परम पुरख वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुखां जीवां दए सजाया। मनमुख मूढ़, जगत माया मोह बंधाया। कलिजुग नाता कूड़ो कूड़, घर साचा दिस ना आया। मस्तक ना लग्गे गुरचरन धूढ़, तिलक लिलाट ना कोई वखाया। काया चोली रंग ना चढ़े गूढ़, ना कोई रंगन रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेखण आया। लक्ख चुरासी तेरी रास, हरि साचा मोख रखांयदा। धरत धवल धरनी वेख आकास, प्रकाश रूप वटांयदा। हरिजन वेखे जो गायण स्वास स्वास, स्वास स्वासा लेखे लांयदा। मनमुख जीव मुख रखाए मदिरा मास, माया ममता मोह बंधांयदा। वेले अन्तिम होणा नास, गुर पीर ना कोई संग रखांयदा। गुरचरन दुआरे दासी दास दोए जोड़ सीस निवांयदा। भगत जनां सद वस्सया पास सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा।

२५७ ०७

* पहली चेत २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

हरि शब्द बलवान, जुग जुग अख्वाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, धरत धवल सुहाया। लक्ख चुरासी निगहबान, हर घट मन्दिर अन्दर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेस वटाया। हरि शब्द हरि रंग, हरि हरि उपाया। आप आपणा रक्खया संग, आप आपणा संग निभाया। आप आपणी भिच्छया आपे मंग, आप आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप अख्वाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। जोती नूर कर आकार, एका एक अख्वाया। इक्क अकल्ला कर पसार, एका एकँकारा रूप अख्वाया। आप आपणा कर प्यार, एका आपणी सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी करता आदि निरँजण आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी आदि निरँजण, एका एक अख्वाया । आप आपणा करे मजन, आप आपणी मैल गंवाया। आप आपणा होया पड़दे कज्जण, एका पड़दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। खेले खेल अपर अपार, दिस किसे ना आया। अकल कला कल आपे धार, अकल कला अख्वाया। सतिजुग त्रेता द्वापर लाए पार, कलिजुग वेख वखाया। नानक गोबिन्द बण लिखार, आपणा वेस वटाया। सम्बल नगरी

अपर अपार, साचा आसण लाया। राउ रंकां इक्क प्यार, एका दर सुहाया। इक्क सुहाए बंक द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख निरँजण आप अख्वाया। करनहार करतार, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग पावणहारा सार, जुग जुग बणत बणांयदा। जूठ झूठ जगत पसार, कूड़ कुड़यारा डंक वजांयदा। साधां सन्तां आई हार, सेवक सेवा ना कोई कमांयदा। पुरख अबिनाशी कर विचार, आप आपणा भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम वेला पाए सार, आप आपणी जोत जगांयदा। निहकलंका ल्ए अवतार, आपणा कर्म कमांयदा। चारों कुन्ट धूंआँधार, कलिजुग आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगांयदा। गुर गोबिन्द गया समझा, एका एक जणाईआ। आप आपणा ल्या समा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका दूजा भउ चुका, एका रंग समाईआ। दोए जोड़ करे सरना, सरनगत वड्डी वड्याईआ। तेरा भाणा ल्या जणा, हरि भाणे ख़ुशी मनाईआ। पन्थ ख़ालसा ल्या रचा, सीस दस्तार बंधाईआ। पंचम शस्त्र तन सजा, अमृत जाम प्याईआ। साचा खण्डा तन लटका, एका बूझ बुझाईआ। अकाल पुरख गुर ल्ए मनां, ना कोई दूसर सीस निवाईआ। रंग रूप लेख ना सके कोई लिखा, अनभव प्रकाश समाईआ। पंचम मीता सहिज सुभा, आप आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख साचे मात उपा, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द वेख वखाईआ। गोबिन्द हरि मलाह, पारब्रह्म सरनाया। पुरख अबिनाशी तेरा नाँ, तेरा मेरा रूप समाया। आपे पकड़नहारा बांह, आप आपणा हथ्थ सीस टिकाया। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, एका ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द बूझ बुझाया। गुर गोबिन्द शब्द धुन अनादा, हरि हरि आप सुणांयदा। शब्द जणाई बोध अगाधा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। एका मालिक साचा लाधा, सति पुरखां रूप समांयदा। पुरख अबिनाशी आदि जुगादा, गुर सतिगुर इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। गोबिन्द मेला हरि करतार, हरि हरि रंग समाया। एका रूप अगम्म अपार, एका दर सुहाया। इक्क अकल्ला इक्क एकँकार, एका दर वखाया। अछल अछल्ला अपर अपार, वल छल धारी आप अख्वाया। मंगे मंग दर भिखार, अग्गे पल्लू डाहया। देवणहारा हरि दातार, समरथ पुरख अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव चुकाया। गुर गोबिन्द हरि साचा पाया, पारब्रह्म सरनाईआ। दुष्ट दमन लेखे लाया, लोकमात वज्जी वधाईआ। मात पित पूत लेखे लाया, अनाथां होए सहाईआ। ख़ालस ख़ालसा इक्क रचाया, खेले खेल हरि रघुराईआ । एका धुर फ़रमाण जणाया, अकाल पुरख सच्ची सरनाईआ। हउँ सेवक सेवा करने आया, गुरमुखां रिहा

सेव कमाईआ। देवी देवा ना कोई इष्ट मनाया, ब्रह्मा विष्न शिव रहे शरमाईआ। अकाल मूर्त हरि नज़री आया, एका नेत्र वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। गुर गोबिन्द सगला साथा, हरि हरि इक्क अख्वांयदा। आपे राखे दे कर हाथा, एका बूझ बुझांयदा। शब्द गुर साचा साथा, सगला संग निभांयदा। कलिजुग अन्तिम चलाए एका राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी वंड वंडाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। इक्क जणाई पूजा पाठा, एका ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, एका घाट वखांयदा। एका जोती जगे लिलाटा, गुरमुख साजण सो जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द मेला साचे घर, राजन राज आप अख्वांयदा। राजन राज शाहो भूपा, आदि पुरख अपारा। वेख वखाणे चारे कूटा, दहि दिश पावे सारा। आपणा दर आपे लूटा, आपे वेखणहारा घर बारा। आपे करे आपणा मूधा ठूठा, आपे भरे भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द दए धुन्कारा। हरि जोत निरँकार, हरि रंग समाया। आदिन अन्ता गुर अवतार, एका एक अख्वाया। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी जाणे आपे कार, दिस किसे ना आया। एका एक करे उज्यार, एका रूप दरसाया। आप आपणा वेख विचार, आप आपणी सेव कमाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा दर सुहाए, आदि पुरख निरँजणा। आप आपणी जोत जगाए, आप आपणा दर्द दु:ख भय भंजना। आप आपणा वेख वखाए, आप आपणा पाए नेत्र अंजणा। आप आपणा संग निभाए, आप आपणा होए सज्जणा। आप आपणा ल्ए उपाए, ना घड़या ना भज्जणा। आप आपणा थान सुहाए, थिर घर साचे बहि बहि सजणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धुन अनादी आपे गज्जणा। आप आपणा कर आकारा, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा कर पसारा, वेखणहार आप हो जाईआ। आप आपणी पावे सारा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणा करे प्यारा, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे नारी कन्त भतारा, आप आपणी सेज हंढाईआ। जोती सुत दए हुलारा, शब्दी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साची खेल खिलाईआ। निरगुण रूप हरि अथाह, एका एक अख्वांयदा। आपे दाता बेपरवाह, बेअन्त आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणा नाँ, साध सन्त ना कोए रखांयदा। आप सुहाए आपणा थाँ, थान थनंतर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, गगन गगनंतर आप सुहांयदा। शब्द सुत कर त्यार, हरि आपणा आप उपाया। पिता पुरख अगम्म अपार, पंज तत्त ना कोई रखाया। पंज तत्त ना कोई प्यार, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाया। आप आपणी बन्ने

धार, आप आपणा बीज बिजाया। आप आपणा धाम न्यार, एका एक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप अख्वाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। आपे खेले खेल अपार, आप आपणी बणत बणांयदा। गगन पतालां आकाश प्रकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड साची रचन रचांयदा। शब्द सुत सच दुलार, वंडे वंड भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। अगम्म अगम्मड़े धाम सुहा, आपणी रचन रचांयदा। आप आपणा वेस वटा, वेस अनेका आप अख्वांयदा। अलख देस हरि फेरा पा, अलख निरँजण आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख रूप समांयदा। सति पुरख हरि करतारा, सति सति समाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, एका रंग वखाया। एका जोती इक्क उज्यारा, इक्क प्रकाश कराया। एका गोती इक्क प्यारा, ना कोई वरन रखाया ,। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। साचा दर हरि सुहञ्जणा, आदि पुरख अबिनाशा। जगे जोत इक्क आदि निरँजणा, आपे वेखणहार तमाशा। आपणा दर आपणा द्वार आपे तजना, आपे पाए मण्डल हासा। आपणे नगारे आपे वज्जणा, आप सुणाए पृथ्मी आकाशा। आपणा पड़दा आपे कज्जणा, कज्जणहार शाहो शबाशा। आपे घर आपे सजणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार साचा दर, आदि अन्त ना कदे विनासा। सचखण्ड हरि एका जोत, सच सुच्च वरताया। आपे वेखणहारा कोटी कोट, कोट ब्रह्मण्ड वेख वखाया। आप चढ़ाया साची चोटी चोट, अनभव प्रकाश कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क सुहाया। सच महल्ला हरि दुआरा, एका एक सुहांयदा। आपे बैठा इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रखांयदा। वेख वखाणे जल थलां, उच्चे पर्बत फोल फोलांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, पावा चूल ना कोई रखांयदा। शब्दी शब्द जग करे हल्ला, हरि शब्दी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणा नाम रक्ख, आपणी दया कमाईआ। आप आपणा कर प्रतक्ख, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा मुल्ल पाए लक्ख, आप लक्खों कक्ख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द करे वड्याईआ। शब्द सुत सच दुलारा, निरगुण जोती नूर आप उपाया। एका बख्शे धुर दरबारा, आदि जुगादी वेख वखाया। सृष्ट सबाई कर पसारा, लोआं पुरीआं बणत बणाया। त्रैगण माया कर त्यारा, साचा वेस वटाया। कँवल कँवला कर उज्यारा, पारब्रह्म ब्रह्म अख्वाया। सो पुरख निरँजण खेल अपर अपारा, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा कर दो फाड़ा, आप आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द दए उपाया। साचा शब्द हरि निरँकारा,

२६० ०७

एका एक उपांयदा। एका धुन इक्क जैकारा, एका एक लांयदा। एका ब्रह्म पाए सारा, पारब्रह्म समझांयदा। रूप अनूप हरि करतारा, मनमति ना कोई रखांयदा । बुध भेव ना पाए सारा, ज्ञान ध्यान ना कोई दृढ़ांयदा। वेद कतेब ना कोई लिखारा, वेद शास्त्र ना कोई रखांयदा। खाणी बाणी ना कोई करे विचारा, अञ्जील कुरान ना कोई सुणांयदा। शब्दी शब्द कर उज्यारा, हरि निरगुण खेल खिलांयदा। साचा सुत कर प्यारा, दे मति आप समझांयदा। ब्रह्मा देवे इक्क हुलारा, त्रैगुण झोली पांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश सुहांयदा। मन मति बुध दए सहारा, हरि लेख लिख्त ना कोई लिखांयदा। बहत्तर नाड़ी कर त्यारा, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ांयदा। इक्क वखाए नौ दुआरा, तन शृंगारा करांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनारा, घर साचा आप सुहांयदा। दस्म दुआरी खेल अपारा, हरि आपणा आप छुपांयदा। बजर कपाटी लाए ताला, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सुखमन वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर वेख वखांयदा। मगर लगाए पंचम धाड़ा, पंज पंजी मेल मिलांयदा। घर साचे वस्सया पुरख अगम्मी साचा लाड़ा, शब्दी नाउँ धरांयदा। अनहद वज्जे एका ताड़ा, आपणा राग आप अलांयदा। साची सखीआं साचा मेला इक्क अखाड़ा, साचा धर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी सेवा लांयदा। आप आपणी सेवा ला, आपणा वेस वटाया। विष्नूं वंसी आप अख्वा, लछमी मेल मिलाया। शिव शक्त आप टिका, धूआँधार वखाया। बाशक तशका गल लटका, इक्क शृंगार कराया। आपणी दया आप कमा, त्रैगुण तेरा संग निभाया। आप आपणा रिहा छुपा, दिस किसे ना आया । पारब्रह्म दाता वड बेपरवाह, आपणी रचन रचाया। साचे सुत सिख्या इक्क सिखा, ब्रह्मे ब्रह्म ज्ञान जणाया। शब्द सुत रिहा उपा, एका मन्त्र एका गुण वखाया। चारे वेदां ल्या लिखा, हरि हरि भेव ना कोई राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, लक्ख चुरासी लए उपाया। लक्ख चुरासी आप उपा, आपणी जोत जगांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, साची सेव कमांयदा। वड देवी देवा आप अख्वा, घर साचे आप सुहांयदा। अलख अभेव भेव ना रा, अभेव अभेदा कोई ना पांयदा। आप आपणी जोत जगा, जुग जुग वेस वटांयदा। सतिजुग त्रेता माणे ठांडी छाँ, द्वापर फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। आप आपणा रूप वटाए, पारब्रह्म अबिनाशा। जोती शब्दी खेल खिलाए, खेले खेल पृथ्मी आकाशा। गगन पाताला फेरी पाए, मण्डल मण्डप साची रासा। जीआं जन्तां आप जगाए, एका देवे धुर भरवासा। साचे सन्तां मेल मिलाए, लेख चुकाए दस दस मासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे जगत तमाशा। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसारा, कूड़ा डंक वजाईआ। मिल्या मेल संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ।

ऐनलहक्क एका नाअरा, मुकामे हक्क पुजाईआ। खेले खेल हरि निरँकारा, भेव कोई ना पाईआ। चौदां तबका दए हुलारा, चौदां लोकां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि रघुराईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ी धार, चारों कुन्ट पसारया। वेख वखाणे मुहम्मदी यार, अमाम मैहन्दी रूप वटा रिहा। काला सूसा तन शृंगारा, मुख नक़ाब इक्क रखा रिहा। मक्का मदीना पावे सार, आप आपणा चरन छुहा रिहा। चीना रूसा लए उभार, शाह अबनूसा संग रला रिहा। ईसा मूसा रहिणा ख़बरदार, हरि साचा आप जगा रिहा। सम्मत सम्मती पैणी मार, ना दूसर कोई बचा रिहा। मंगी मंग मुहम्मद यार, आपणा लहिणा झोली पा रिहा। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहा रिहा। आब हयात ना मिले ठंडा पाणी विच संसार, सदी चौधवी वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। कलिजुग कूड़ा कूड़ा राग, चारों कुन्ट अल्हाईआ। अल्ला राणी धोवे दाग, नेत्र नैण उठाईआ। चार यारी ना कोई पकड़े तेरी वाग, नबी रसूलां पई दुहाईआ। मानस मानुख होए काग, उम्मत उम्मती रही रुड़ाईआ। दीपक जोत ना जगे चिराग, ना दीसे कोई रुशनाईआ। चारों कुन्ट लग्गी आग, पंज तत्त रहे लड़ाईआ। हरि पूर कराए लिख्या वाक्, ना सके कोई मिटाईआ। एका अस्व चढ़े राक, शाह सुल्तानां लए उठाईआ। शब्द नकेल पाए नाक, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। अन्तिम मेटे ख़ाकी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। एका अल्ला अल्ाही नूर पाकी पाक, बेऐब परवरदिगार आप अख्वाईआ। कलिजुग नाता तोड़े झूठे साक, मढ़ी गोर दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलिजुग कूड़ कूड़यारा काला, चारों कुन्ट पसारया। मुल्लां शेख़ मसायक पीर गल तसबी पायण माला, हक्क हकीकत ना कोई विचारया। हथ्थ मसला बगल कुराना, दीन ईमाना भेव ना पा रिहा। प्रगट होए हरि मेहरवाना, इक्क निशाना तीर चला रिहा। जोधा सूर बली बलवाना, हरि शब्दी इक्क अख्वा रिहा। पीर फ़कीर शाह हकीर मारे जगत अफगाना, सदी चौधवीं फेरा पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा रूप वटा रिहा। कलिजुग तेरा तेरा रंग, हरि हरि आप वखानया। नानक गुर वजाए सच मृदंग, मेल मिलाए इक्क मरदानया। शब्द घोड़े कस्सया तंग, फेरी पाए दो जहानया। गऊ ग़रीबां कटे भुक्ख नंग, देवे नाम सति इक्क तरानया। एका मंगण धुरदरगाही दाता रिहा मंग, हरि शब्द सच्चा तरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर करे परवानया। नानक गुर हरि उपा, आपणा भेव खुल्ाया। आप आपणा दर बुला, आप आपणा संग निभाया। अकाल मूर्त आप अख्वा, आप आपणा वेस वटाया। सच प्रकाश हरि करा, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। साचा नाम झोली पा, गुर मन्त्र एह

समझाया। नाम सति सृष्ट दाता, चार वरनां वेख वखाया। नानक गुर बैठा सीस झुका, पारब्रह्म तेरी सच सच्ची सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बचन अलाया। सो पुरख हो मेहरवान, नानक गुर जणांयदा। सो पुरख हरि भगवान, सति सरूप समांयदा। हँ जीव जगत शैतान, आपणा अंग कटांयदा। सोहँ शब्द कर परवान, तेरा मेरा भेव चुकांयदा। एका रूप एका नूर एका जोत इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक निरगुण वेख वखांयदा। नानक निरगुण मेल मिला, सरगुण जोत जगाईआ। सरगुण वेखे साचे थाँ, लोकमात फेरा पाईआ। हरिजन साचे लए जगा, आप आपणी दया कमाईआ। मूर्ख मूढ़ लए समझा, एका शब्द जणाईआ। सच सतार रिहा वजा, अहिबाब रबाब इक्क फड़ाईआ। एका राग रिहा अला, धुन आत्मक इक्क जणाईआ। एका मार्ग रिहा वखा, चार वरन वड्डी वड्याईआ। ज़ात पात कोई दिसे ना, वरन गोत ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगाईआ। नानक गुर जगत समझा, चारों कुन्ट फेरा पाया। मूर्ख मुग्ध कोई जाणे ना, गुरमुख साचे लए तराया। सतिगुर पूरे रंग साचा कोई माणे ना, निन्दक निन्दया मुख लगाया। चले चलाए कोई साचे भाणे ना, हरि भाणा मूल ना भाया। राजा राणा कोई पछाणे ना, बन्दीखाने बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर मेल कर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी साचे अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। नानक गुर साचा मेला, हरि आपणा आप करांयदा। आपे होया सज्जण सुहेला, साचा संग निभांयदा। आपे वस्सया सदा अकेला, सगला संग रखांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला, अभेव भेद ना कोई पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर एह समझांयदा। नानक गुर चार कुन्ट दहि दिशा, एका नाम दृढ़ांयदा। गुरमुख साचे पाया हिस्सा, रिख मुन मुख छुपांयदा। दर दरबार सच घर बार किसे ना दिसा, मूर्ख मूढ़े माया धन्दे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर साचा मेल हरि, हरि साचा मेल मिलांयदा। सतिगुर नानक सति समा, सतिगुर रूप वटाया। पुरख अबिनाशी रिहा जणा, तेरा मेरा भेव ना राया। वेख वखाणे सभनी थाँ, गगन पतालां फेरा पाया। त्रैगुण अग्नी दिआं बुझा, पंज तत्त सांतक सति वखाया। आदि निरँजण जोत जगा, जुग जुग मेल मिलाया। साची मंगी मंग हरि द्वार, हरि देवे झोली पाया। सतिगुर नानक एका शब्द रिहा जणा, प्रभ साचे होए सहाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा रिहा छा, सच सुच्च दिस ना आया, पुरख अबिनाशी रिहा जणा। आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया, तेरी जोती जौत दए जगा, जागरत जोत इक्क वखाया। गुर गोबिन्दे लड़ दए फड़ा, एका मार्ग दए वखाया। गुणी गहिंदे

खेल रचा, आप आपणा मूल चुकाया। माछूवाड़े सथ्थर विछा, इक्क सुनेहड़ा रिहा घलाया। मित्र प्यारे तेरा थाँ, सूलां सेज हंढाया। नानक जोती लई जगा, गोबिन्द वेख वखाया। गोबिन्द मेला बेपरवाह, भेव कोई ना पाया। तेरा लहिणा तेरी झोली पा, तेरा संग रखाया। बस्त्र गहिणा तन छुहा, सच शृंगार वखाया। नेत्र नैणां दरस दिखा, अकाल मूर्त रघुराया। ना कोई दूसर इष्ट ल्या ध्या, ब्रह्मा विष्न शिव गणेश ना कोई मनाया। सारी सृष्ट वेख वखा, तेरा लड़ बंधाया। कूड़ कुड़यारा पकड़नहारा बांह, चारों कुन्टां होए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, नानक गुर मेल मिलाया। पारब्रह्म प्रभ करनेहारा, नानक गुर समझांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, तेरा मेरा रूप वटांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कला समांयदा। कलिजुग अन्तिम होए धुंधूकारा, संग मुहम्मद वेख वखांयदा। सदी चौधवी मारे मारा, नाम खण्डा इक्क रखांयदा। प्रगटे जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा, वरन गोत ना कोई रखांयदा। गुर गोबिन्द मिल्या सच दुलारा, घर साचे आप सुहांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। उच्च महल्ले चढ़े अटल मुनारा, निरगुण वेख वखांयदा। वीह सौ बिक्रमी आप कराए आपणी कारा, लेखा आपणा हथ्थ रखांयदा। सम्मत चौदां दए हुलारा, चौदस चौदां फेरा पांयदा। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्ताना करे ख़बरदारा, सोए कोए रहिण ना पांयदा। साधा सन्तां दए हुलारा, गुरूआं पीरां आप उठांयदा। वेद पुराणा करे विचारा, वेद पुराणी आप अख्वांयदा। अञ्जील कुराना करे किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। खाणी बाणी जगत सहारा, हरि साची सेवा लांयदा। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, एका धाम रखांयदा। ज़ात पात ना कोई विचारा, ऊँच नीच ना वेख वखांयदा। वीह सौ पन्दरां बिक्रमी सृष्ट सबाई दए हुलारा, आप आपणी कल वरतांयदा। शब्द गुर लै अवतारा, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। पंज तत्त ना कोई आकारा, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई वखांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, आपणे हथ्थ उठांयदा। सचखण्ड हरि पावे सारा, पहली चेत्र जोत जगांयदा। दूजा तीजा इक्क दुआरा, चौथे पद समांयदा। पंचम मेला हरि निरँकारा, निरगुण वेख वखांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई पसारा, चार दिवार ना कोई रखांयदा। मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ ना गुरुदुआरा, निर्मल जोती जोत प्रकाश करांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण खेल अपर अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। अट्ठां तत्तां वसे बाहरा, आप आपणा मुख छुपांयदा। नौ दुआरे जगत गंवारा, तन कुहाड़ा आप लगांयदा। गुरमुख मेला दस्म दुआरा, आत्म सेजा इक्क सुहांयदा। साचा मेला कन्त भतारा, कन्त सुहाग इक्क हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटांयदा। नानक गुर लेख लिखा, एका अलख जगाईआ।

पुरख अबिनाशी फेरा देवे पा, लोकमात वेख वखाईआ। एका डंका दए वजा, सोहँ साचा जाप जपाईआ। राउ रंकां रिहा समझा, भुल्ल रहे ना राईआ। लंका गढ़ हँकारी दए तुड़ा, पन्दरां कत्तक चरन छुहाईआ। राष्ट्रपति लड़ दए फड़ा, सुरत सवाणी लए उठाईआ। धाम सुहञ्जणा वेख वखा, पटने जोत करे रुशनाईआ। पहली कत्तक लेखा दए लिखा, वीह सौ पन्दरां बिक्रमी रही कुरलाईआ। पन्थ ख़ालसा भुल्ल रहे ना रा, निहकलंक जोत करे रुशनाईआ। घर घर डंका दए वजा, पंज तत्त दए उठाईआ। वासी पुरी घनका आप अख्वा, काहना कृष्ना रूप अख्वाईआ। गुरमुख साचे जनका लए जगा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। मन का मनका दए फिरा, माण अभमाण तोड़ तुड़ाईआ। सम्मत सोलां लेखा दए मुक्का, हाढ़ सतारां वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई चरन दुआरा तक्कणा राह, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साधां सन्तां आत्म होए सक्खणा चारों कुन्ट रोवण मारन धा, जमन किनारा दए वखाईआ। गुर सतिगुर पूरा गुरमुखां पकड़े आपे बांह, अन्दर मन्दिर मेल मिलाईआ। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ । फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन रहे सरनाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठाईआ। मनमुख जीव कोई जाणे ना, माया पड़दा एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सेवक सेवा रिहा कमाईआ। हरि सेवक सेवादार, जुग जुग आप अख्वाया। जन भगतां पहरेदार, दिवस रैण वेख वखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साक सैण सर्ब तजाया। जोती जामा भेख न्यार, आप आपणा वेस वटाया। गुरमुख साजण मीत मुरार, मीत मुरारा लए मिलाया। गीत सुहागी गाए सभागी नार, जिस हरि कन्त कन्तूहला पाया। आत्म सोई जागी विच संसार, जिस जन आपणी दया कमाया। इक्क वैरागी गुरचरन प्यार, दूजा थान ना कोई वखाया। मजन माघी अपर अपार, दुरमति मैल दए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेस करतारा, आपणा आप करांयदा। नूरो नूर नूर कर उज्यारा, नूरो नूर दरसांयदा। कूड़ कूड़ा मेटे पसर पसारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पांयदा। बीस बीसा खेले खेल अपर अपारा, जगत जगदीसा आप अख्वांयदा। नौ खण्ड पृथमी बन्ने एका धारा, सत्तां दीपां एका रंग रंगांयदा। इक्क शब्द इक्क जैकारा, एका नाउँ अलांयदा। एका वणज इक्क वपारा, एका वस्त झोली पांयदा। एका हट्ट इक्क वणजारा, एका नाम वखांयदा। एका तट इक्क किनारा, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवणहारा वर, जुग जुग आप अख्वांयदा। हरिजन साचे साचा लहिणा, जुग जुग झोली पाया। नेत्र लोचण दर्शन नैणां, आत्म तृष्न मिटाया। शब्द बस्त्र तन पाए गहिणा, सोलां श्रृंगार कराया। साध संगत सच साची बहिणा, एका नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण नाम धराया। निहकलंक हरि करतारा, करता पुरख अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, गुरमुखां रिहा उठाईआ। शब्दी शब्द करे जैकारा, शब्दी नाद वजाईआ। जोती जोत जोत उज्यारा, जोत नूर करे रुशनाईआ। साचा अस्व कर त्यारा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। शस्त्र बस्त्र अपर अपारा, आप आपणा रिहा उठाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तारा, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। गुर शब्द शब्द गुर जुग जुग अवतारा, ना मरे ना जाईआ। आदि पुरख अकाल मूर्त पिया प्यारा, शब्द गोबिन्द नाम धराईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ।

चरन कँवल जन नाता जोड़, गुरमुख मेल मिलांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा धाम सुहांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, लोकमात वेख वखांयदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, वरन अवरना वेख वखांयदा। दो जहानां लाए एका पौड़, एका डण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन मेला सच दरगाह, गुर सतिगुर आप कराया। गुर शब्दी बणया जगत मलाह, जन बेड़ा बन्ने लाया। एका नाम रिहा जपा, अकाल मूर्त दरसाया। पंज तत्त ना कोई वखा, मढ़ी गोर ना कोई मनाया। साचा इष्ट ल्या उपा, सच सच्ची बख्शे सरनाया। निर्मल दीपक जोत जगा, घर घर करे रुशनाया। घर मन्दिर घर डेरा ला, घर खेले सहिज सभाया। धुन अनादी इक्क सुणा, ब्रह्मादी खोज खुजाया। आदि जुगादी मेल मिला, जुग विछड़े जग लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन वेख वखाया। हरि साजन हरि मीतड़ा, पारब्रह्म करतार। गुरसिख रंगे काया चीथड़ा, नाम मजीठी अपर अपार। काया करे ठंडी सीतड़ा, अमृत देवे ठंडी ठार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, आप आपणी किरपा धार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, दिस आए ना विच संसार। आप आपणे जेहा गुरमुख साजन हरि हरि कीतड़ा, एका दूजा भउ निवार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला कन्त भतार। हरिजन मेला कन्त भतारा, आत्म सेज विछाईआ। शब्द सिँघासण कर त्यारा, बैठा आसण लाईआ। आप आपणा करे प्यारा, गुरमुखां राह तकाईआ। आपे खोल्ले बन्द किवाड़ा, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, पंचम मुख भवाईआ। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, अनहद राग अलाईआ। साची सखीआं मेला धर्म अखाड़ा, कर्म खण्ड जणाईआ। गुरमुख साजन सोहे बंक दुआरा, घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, हरि साजन वेख वखाईआ। गुरमुख साजण वर घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। गुर शब्दी साचा सगन मनाया, रसना जिह्वा हरि हरि गाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक थेवा इक्क लगाया, जोत लिलाटी रिहा जगाईआ। साची सेवा आप कमाया, सेवक सेवादार अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पाया, हरि गोबिन्द रूप वटाईआ। आदि निरँजण अलख अभेवा दिस ना आया, निरगुण सरगुण भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मेला बेपरवाहीआ। दर मेला घर मेलया, धन्न सबाई रैण। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, आपे वेखे आपणे नैण। आपे होया सज्जण सुहेलया, आप चुकाए लहिण देण। आपणा खेल आपे खेलया, आप वहाए आपणा वहिण। जन भगतां कट्टण आया धर्म राए दी जेलया, लाड़ी मौत ना खाए डैण। जोत निरँजण चाढ़े तेलया, सुरत शब्द एका धाम अकट्ठे रहिण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आपे जाणे आपणा वेलया। हरिजन मेला साचे शाह, मिले मेल बनवारया। एका मार्ग रिहा पा, इक्क अकल्ला एकँकारया। ब्रह्मा विष्न शिव रिहा जगा, करोड़ तेतीसा आप उठा रिहा। लोकमाती फेरा पा, जीव जन्त जगा रिहा। साधां सन्तां दए हिला, आत्म बूझ बुझा रिहा। राज राजाना दए मिटा, सीस ताज ना कोई टिका रिहा। शब्द डंका इक्क वजा, गुर गोबिन्द सेवा ला रिहा। शब्द गोबिन्द आप अख्वा, हरि जोती पुरख अकाल आप मना रिहा। वरन गोत ना लई कोई बणत बणा, ऊँच नीच ना कोई वखा ल्या। साध सन्त सोए लए जगा, जिस तेरा भाणा सीस मस्तक आप टिका ल्या। वेख वखाणे थाउँ थाँ, हर घट आसण ला ल्या। जुग विछड़े जग पकड़ उठाए बांह, आप आपणा मूल पछानया। सदा सुहेला देवणहारा ठंडी छाँ, हरिजन बख्शे चरन ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क वखा ल्या। घर सुहंजणा जोत निरँजणा, एका बाती रिहा वखाईआ। सर सरोवर साचा मजना, लहिणा देणा बाकी रिहा चुकाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी गुरमुख साचे तजणा, पतित पावण विच समाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहिण ना पाईआ। हरिजन हरि हरि आदि जुगादि जुग जुग रक्खे लजणा, लाजावन्त आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम पड़दा कज्जणा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। काल नगारा सृष्ट सबाई वज्जणा, काल महांकाल दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। हरिजन हरि हरि पाया, पाया हरि गोबिन्द। सैंहसा रोग मिटाया, उतरी सगली चिन्द। हउमे रोग जलाया, हरि पाया सद बख्शिंद। तामस तृष्न गंवाया, मिल्या मेल गुणी गहिंद। एका रंग रंगाया, गुरमुख उपजाए आप आपणी साची बिन्द। जोती जामा भेख वटाया, भाग लगाया भारत हिन्द। सम्बल नगरी धाम सुहाया, मनमुख लगाए आपणी निन्द।

गुरमुख निर्मल जोत करे रुशनाया, अमृत धार वहाए सागर सिन्ध। हउमे हँगता देवे गढ़ तुड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम नैण उग्घाड़ा, नेत्र नीर वहांयदा। चारों कुन्ट जूठी झूठी धाड़ा, ना कोई संग निभांयदा। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, एका नाअरा लांयदा। ख़ुदी ख़ुदाई वेख विचारा, भेखाधारी भेख वटांयदा। मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर गए हारा, ना कोई धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, दर साचा इक्क सुहांयदा। घर पाया पुरख अगम्म, सगली चिन्त मिटाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरी पाईआ। पवण स्वासी लए ना दम, ना नेत्र नीर वहाईआ। जुग जुग आपे जाणे आपणा कम्म, करता करनहार आप अख्वाईआ। जन भगतां देवे शब्द सरूपी साचा तम, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरि गोबिन्द रूप समाईआ। हरि शब्द अपार, गोबिन्द नाम धराया। प्रगट हो विच संसार, साचा डंक वजाया। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाया। आपे तोड़े गढ़ हँकार, साचा खण्डा हथ्थ उठाया। जेरज अंडा पावे सार, उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। ब्रह्मण्डां खोजे हरि निरँकार, आप आपणी कल वरताया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। विष्नूं वंसी करे हाहाकार, भगवन जोती वेस वटाया। शिव शंकर कर रिहा पुकार, भोले नाथ सुध ना राया। करोड़ तेतीसा रोवे धाहां मार, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाया। रवि ससि करन पुकार, तारा मण्डल रिहा शरमाया। गगन पतालां आई हार, गगन गगनंतर वेख वखाया। लग्गी बसन्तर विच संसार, त्रैगुण माया जाल विछाया। पंचम तत्त हाहाकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सुणाया। मनमति मनमुख जीवां कर प्यार, झूठे धन्दे लाया। गुरमति भुल्ले जीव गंवार, गुर पूरा दिस ना आया। नानक गोबिन्द हरि अवतार, जोती शब्दी वेस वटाया। अंगद अंगी करया कार, अमरदासे सेवा लाया। रामदास हरि कर प्यार, सर सरोवर वेख वखाया। अमृत बख्शी साची धार, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुर अर्जन मिल्या मीत मुरार, मीत मुरारा आप अख्वाया। अगाध बोध शब्द उचार, बोध अगाधा ज्ञान दृढ़ाया। गुरु ग्रन्थ ग्रन्थ गुर कर त्यार, गुर साचा हट्ट वखाया। तीर्थ तट्टां पार किनार, देवी देव ना कोई मनाया। साचा लाहा गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन गुर का शब्द हिरदे हरि वसाया। दीपक जोत जगाए लट लटा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। आपणी वस्त वेखे आपणे चौदां हट्टां, काया मन्दिर सच दुआरा हरि सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्द दए वड्आया। गुर शब्द सतिगुर पूरा, आदि अन्त अख्वाया। आप वजाए आपणी तूरा, आपे राग अल्हाया। आपे होए सर्बकल भरपूरा, समरथ पुरख

२६८ ०७

अख्वाया। आपे वसे नेड़े दूरा, हाज़र हज़ूर आप हो आया। आपे जोती जोत जगाए शब्द कोहतूरा, नूरो नूर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन दित्ता इक्क वर, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। इक्क ज्ञाना इक्क ध्याना, एका शब्द जणाईआ। एका हरि एका वर धुर फ़रमाणा, एका बूझ बुझाईआ। एका रसना एका चिल्ला तीर कमाना, गुर शब्दी आप चलाईआ। सृष्ट सबाई बद्धा गाना, आत्म तन्द बंधाईआ। अनहद राग सुणाए साचा गाना, जिस जन आत्म अन्तर लिव लाईआ। इक्क उपजाए सच तराना, सहिज धुंन समाईआ। अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। गुरु ग्रन्थ एह भेव खुलाणा, एका गुर अख्वाईआ। एका इष्ट देव श्री भगवाना, दूसर कोई दिस ना आईआ। जल थल महीअल आप समाणा, हर घट बैठा आसण लाईआ। गुरमुख साजन कर परवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। इक्क वखाए धर्म निशाना, दो जहाना रिहा झुलाईआ। जोती नूर हरि मेहरवाना, वेस अनेका आप कराईआ। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार सृष्ट सबाईआ। कलिजुग खेले खेल महाना, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। गुर गोबिन्द करया दर परवाना, साची भिच्छया झोली पाईआ। प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, नौ खण्ड पृथ्मी सृष्ट सबाई करे लड़ाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार तीर तुफंग ना कोई हथ्थ उठाना, नाम खण्डा इक्क चलाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना, साचा युद्ध इक्क कराईआ। आपणी खिच्चे आप किरपाना, आपे रिहा चलाईआ। सीस धड़ वक्ख वक्ख कराना, अपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सिक्ख सिँघ ना कोई लड़ाना, पिछला लेखा पूरा रिहा कराईआ। प्रगट होए जोधा सूर बली बलवाना, शाह सुल्ताना आप अख्वाईआ। आपे आए विच मैदाना, सृष्ट सबाई लए उठाईआ। दो धड़ हरि वेख वखाना, ईसा मूसा संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां सेवा रिहा कमाईआ। भगत जनां हरि साचा मीता, साची सेव कमांयदा। जुग जुग जाणे आपणी रीता, आपणी कार कमांयदा। आपे रामा आपे सीता, आपे दुष्ट हँकारी रावण मार मुकांयदा। आप सुणाए अर्जन अठारां ध्याए गीता, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे नानक नाम प्याला पीता, आप आपणा रस वखांयदा। आपे गोबिन्द होए पूत सपूता, आप आपणा संग रखांयदा। आपे वेखणहारा चारे कूटां, दहि दिशा फेरी पांयदा। आपे मेटणहारा भेख पखण्डा जूठा झूठा, आपे रचन रचांयदा। आपे राज राजन शाह सुल्तान हथ्थ फड़ाए खाली ठूठा, वेला अन्तिम आंयदा। गुरसिख मनाए दया कमाए जो पुरी अनन्द गया रूठा, लिख्या लेख आप मिटांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता गुर गोबिन्दे आपे तुठा, आपे वेख वखांयदा। साची सिक्खी करे एका मुट्ठा, दूजा दर रहिण ना पांयदा। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठा, गुर पीर ना कोई अख्वांयदा। गुर नानक तेरा साचा घर लोकमात

२६८
०७

जाणे ना झूठा, हरि साचा भाग लगांयदा। गुर गोबिन्द लाया बूटा, पन्थ ख़ालसा वेख वखांयदा। आपे देवण आया हूटा, शब्द हुलारे आप चढ़ांयदा। आपे सुत्ता दे कर पिठ्ठा, आपे मुख भवांयदा। गुर का शब्द हरि का नाउँ धुरदरगाही चिठा, हरि सेवक सेव कमांयदा। पंच विकारा रहिण ना देवे कौड़ा रीठा, इक्क प्याला नाम प्यांअदा। गुरमुख साजण रस साचा मिठ्ठा, घर साचे आप वखांयदा। कलिजुग माया जूठा झूठा पीसण पीठा, माया ममता चक्की आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेख साची सिक्खी, साचे मण्डल रास रचांयदा। साची सिक्खी साचा काहन, हरि शब्द अपारा। खेले खेल दो जहान, आवण जावण खेल न्यारा। एका सईआ मंगल गान, एका राग अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां दर दर होए आप भिखारा। गुरमुख वड्याई धन्न, गुर सतिगुर पूरा पाया। गुरमुख वड्याई धन्न, हरि हरि रसना गाया। गुरमुख वड्याई धन्न, रवि ससि सूरज चन्न, रहे शरमाया। गुरमुख वड्याई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हरि हरि रूप समाया।

* १८ चेत २०१५ बिक्रमी दीदार सिँघ दे घर पिण्ड जट्टा ज़िला अमृतसर निरगुण जोत अनक रूप विच *

हरि किरपा हरि जाणया, हरिजन मेल मिलाए। पूरन ब्रह्म पछानया, हउमे रोग जलाए। एका बख्शे चरन ध्यानया, अन्तर नाम वर कराए। एका राग सुणाए कानया, अनहद ताल वजाए। शब्द जणाई धुर फ़रमाणया, जन साचे लए जगाए। जुग जुग वरते आपणा भाणया, सद भाणे विच समाए। कलिजुग अन्तिम वेख वखानया, जोती जामा भेख वटाए। पकड़ उठाए सुघड़ स्याणया, राज राजाना दए हिलाए। इक्क झुलाए धर्म निशानया, दो जहानां वेख वखाए। प्रगट होए श्री भगवानया, सतिजुग साचा मार्ग लाए। चार वरन देवे माणया, एका दूजा भउ चुकाए। एका नाम गुण निधानया, गुणवन्ता आप रखाए। गुरमुख साजण वेख वखाणया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जगाए। हरि रंग हरि हरि वेख्या, पूरन ब्रह्म विचार। हरि सतिगुर साचा पेख्या, दरस अगम्म अपार। जुग जुग लिखणहारा लेख्या, आदि अन्ता एकँकार। आपे जाणे आपणा वेस्सया, आप आपणी पाए सार। आपणी जोती आप प्रवेशया, आपे शब्द होए जैकार। आपे होए दर दरवेस्सया, आपे मंगणहार भिखार। आपे लावणहारा मेख्या, गुरमुख साजण लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे उज्यार। हरि साजण हरि मीतड़ा, हरि हरि रंग समाए। हरि चलाए जगत अनडीठड़ा, दिस किसे ना आए। आपणा भाणा जाणे मीठड़ा, जुग जुग रिहा वरताए। कलिजुग काया कौड़ा रीठड़ा, अन्तिम

भन्न वखाए। गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग मजीठड़ा, उतर कदे ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाए। हरि साजण हरि रंग रतिआ, हरि हरि मूल पछान। आपे देवणहारा मतिआ, आपे देवे जिया दान। सति सन्तोख धीरज सतिआ, चरन धूढ़ सच्चा अशनान। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठया, नेत्र नैण लोचण जो जन दर्शन पाण। जोती करे रुशनाई लट लटयां, सुणे सुणाए शब्द सच्ची धुनकान। भाग लगाए काया मटयां, हरि शब्द गुर मेहरवान। हरिजन आवण जावण कटया, जिस मिल्या नाम निशान। कूड़ मुनारा कलिजुग ढट्ठया, सतिजुग वेखे मार ध्यान। प्रभ गेड़नहारा उलटी लट्ठया, ना कोई जाणे वेद पुराण। पंज तत्त घर घर अग्नी लग्गी मट्ठया, ना कोई सहाई अञ्जील कुरान। खेले खेल हर घट घटयां, हर घट वेखे मार ध्यान। गुरमुख विरले लाहा खट्टया, जिस जन बख्शे चरन ध्यान। कलिजुग खेल बाज़ीगर नटयां, स्वांगी स्वांग करे भगवान। लोकमात आया नट्ठया, जोती जोत जगे महान। अमृत आत्म हरिजन झट्टया, दाता दानी वड मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क झुलाए सच निशान। सच निशाना सच घर, हरि साचा आप झुलांयदा। आपे देवणहारा वर, आपणी झोली पांयदा। आपे नारी आपे नर, नर नरायण आप हो जांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख आप अख्वांयदा। आप आपणा जाणे डर, निरभउ अपणा रूप वटांयदा। आप आपणा वेखे सर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जुग जुग साचा घाड़न घड़, सतिगुर भेख वटांयदा। हर घट अन्दर आपे वड़, हरिजन वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी आपे लड़, आपे मेट मिटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप फड़ाए आपणा लड़, बंधन बंध बंधांयदा। त्रैलोक उपाए किला गढ़, दिस किसे ना आंयदा। चौदां लोकां अग्गे खड़, आप आपणा हुक्म चलांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। साचे मन्दिर आपे चढ़, नाम सिँघासण आसण लांयदा। जन भगतां जोत जगाए बहत्तर नाड़, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। आप आपणी लाए जड़, आपणी आप आप उखड़ांयदा। आपणा अक्खर आपे पढ़, जुग जुग आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटांयदा। जोती जामा आदि निरँजण, पारब्रह्म अबिनाशा। भगत सुहेला साचा सज्जण, आदि अन्त ना कदे विनासा। कलिजुग अन्तिम आया पड़दे कज्जण, वेख वखाणे पृथ्मी आकाशा। नौ खण्ड पृथ्मी सति दीप खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज काल नगारे वज्जण, हरि खेले खेल तमाशा। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, लहिणा देण चुकाए दस दस मासा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरचरन दुआरे बहि बहि सज्जण, सच मण्डल पावे रासा। राज राजान शाह सुल्तान दर द्वार घर घर तजण, किसे हथ्थ ना आए माटी

कासा। कलिजुग कूड़ चलाए आपणा जहाजन, मनमुख जीवां अन्दर करे वासा। जूठा झूठा मिल्या ताजन, माया ममता पाई रासा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म अबिनाशी करता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रासा। आप आपणी जोत जगा, आपणी कल वरताईआ। निरगुण सरगुण खेल खिला, गुर चेला रूप अख्वाईआ। पंज तत्त गया समा, दिस किसे ना आईआ। गुर गोबिन्द मेला सहिज सुभा, हरि साचा रिहा कराईआ। कल्गी तोड़ा नाम लगा, जोती जोड़ा वेख वखाईआ। साचे घोड़े रिहा चढ़ा, नीले वाला बेपरवाहीआ। दो जहानी पौड़ा एका ला, लोकमात फेरा पाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वेख वखा, वेद व्यासा लए जगाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, साढे तिन्न हथ्थ दए सुहाईआ। मिट्ठा कौड़ा वेख वखा, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। जन भगतां आत्म अन्तर लग्गी औड़ा दए बुझा, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत रिहा समाईआ। जोती नूर कर प्रकाश, खेले खेल खेलणहारा। सर्ब जीआं हरि करया वास, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा। जुग जुग जन भगतां पूरी करदा आया आस, आदि अन्त इक्क अवतारा। लेखे लाए स्वास स्वास, निरगुण रूप नानक निरँकारा। साचे मण्डल पावे रास, एका नूर करे उज्यारा। प्रगट होया शाहो शबास, निहकलंक नरायण नर अवतारा। आपे जाणे रुत्त माह दिवस मास, आपे वेख वखाणे जगत पसारा। आपे करनेहारा नास, देवणहारा सर्ब भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारा। अपर अपारा हरि हरि खेल, जुग जुग आप खिलाया। कलिजुग मेला गुरु गुर चेल, गुर चेला रूप समाया। सखा सहाई सज्जण सुहेल, एका एक अख्वाया। आपे वस्सया रंग नवेल, रंग राता हरि रघुराया। जन भगतां धर्म राए दी कटे जेल, आवण जावण फंद कटाया। शब्द दुआरे साचा मेल, सुरती सुरत समाया। जोत निरँजण चाढ़े तेल, पंचम सखीआं मंगल गाया। अनहद मेला आपे मेल, धुन अनादी इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आपणा वेखणहार समरथा, हरि हरि आप अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही आप हो जांयदा। लक्ख चुरासी पाए नथ्था, शब्द डोरी तन्द बंधांयदा। आप चलाए आपणी कथा, अकथ कथा ना कोई लेख लिखांयदा। हरिजन राखे दे कर हथ्था, सीस आपणा हथ्थ टिकांयदा। धुरदरगाही नाम वथ्था, सृष्ट सबाई लेख लिखाए मस्तक मथ्थाा, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रंगाए हरि चलूल, एका एकँकारया। प्रगट होए कन्त कन्तूहल, जन साजन मीत मुरारया। सच पंघूड़ा जाए झूल, गुरमुख देवे इक्क हुलारया। नाम फड़ाए सच त्रिसूल, पंच विकारा करे ख्वारया। लहिणा देणा आप चुकाए मूल, कलिजुग अन्तिम

लए अवतारया। गुर गोबिन्द तेरी फुल लवाड़ी जाए फूल, हरि वेखे सिरजणहारया। तेरा तेरे गए भूल, तेरा अन्त ना पारावारया। सच सिँघासण हरि बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, अकाल तख्त इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग लगा ल्या। अंगीकार आपणा कर, एका संग निभांयदा। साचा संगी साचा हरि, साचा धाम सुहांयदा। नाम कटार कर नंगी वेखे दर दर, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। इक्क वजाए मृदंगी उप्पर चढ़, लोआं पुरीआं आप उठांयदा। ब्रह्मा नेत्र नीर वरोले ज़ारो ज़ार, लोकमात राह तकांयदा। शिव शंकर अट्ठे पहर रिहा खड़्ह, बाशक तशका मुख भवांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा लड़, अमृत जाम ना कोई प्यांअदा। सुरपति राजा इन्द हरि शब्द सरूपी आपे फड़, वेला अन्त वखांयदा। त्रैलोक वेखे आपे खड़, वेखणहार दिस ना आंयदा। लोकमात नौ खण्ड सृष्ट सबाई होया हँकारी गढ़, लक्ख चुरासी विच वसांयदा। कलिजुग अन्तिम लए फड़, ना कोई किसे बचांयदा। राज राजान वहे हड़, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। गुरुदुआरे मन्दिर मस्जिद अन्दर मुल्लां शेख़ पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी रहे पढ़, हरि सच दिस ना आंयदा। गुर गोबिन्द फड़या साचा लड़, हरि साचा मेल मिलांयदा। वाहिगुरु अक्खर एका पढ़, एकँकार रूप समांयदा। दो जहानी आपे रिहा लड़, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती फेरा पांयदा। सच्चा सतिगुर मेहरवान, शब्द गुर अनादीआ। हरि हरि देवे जिया दान, वेख वखाए ब्रह्म ब्रह्मादीआ। जुग जुग खेले खेल महान, धुर दी बाण आदि जुगादीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणी वस्त आपे लाधीआ। हरि शब्द हरि रूप, हरि समाया। सतिगुर शाहो भूप, गुरमुख वेखे चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाया। मनमुख नाता जूठ झूठ, निन्दक निन्दया मुख रखाया। कलिजुग अन्तिम गया तूठ, हरि गोबिन्द मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण विच समाया। हरि शब्द हरि धार, हरि हरि आप चलाईआ। सतिगुर पूरा पावे सार, वड वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साजन लए उभार, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। मनमुख डोबे विच मँझधार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। प्रगट हो विच संसार, एका डंका रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। हरि शब्द हरि संग, हरि उपाया। सतिगुर पूरा नाम वजाए मृदंग, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। गुरमुख मंगे साची मंग, एका झोली नाम भराया। मनमुख जीव होए नंग, शब्द बस्त्र ना तन हंढाया। सतिगुर पूरा चाढ़े रंग, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाया। हरि शब्द हरि मीत, हरि हरि मेल मिलाया। सतिगुर गाए सुहागी गीत, एका राग अल्हाया। हरिजन बैठा रहे अतीत, इक्क

ध्यान लगाया। मनमुखां वेला रिहा बीत, वेला गया हथ्थ ना आया। सतिगुर पूरा काया करे ठंडी सीत, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खोज खुजाया। हरि हरि शब्द मलाह, हरि हरि आप उपाया। गुर पूरा दए नाम सलाह, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुरमुख साजन पकड़े बांह, कल बेड़ा पार कराया। मनमुख जीव कर बैठे ना, राए धर्म दए सजाया। सतिगुर पूरा देवे साचा थाँ, थिर घर साचा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण होए सहाया। हरि हरि शब्द अतुट्ट, हरि हरि आप वरतांयदा। सतिगुर पूरा लाहा लुट्ट, एका रूप समांयदा। गुरमुखां देवे नाम घुट्ट, एका जाम पिलांयदा। मनमुख दर दवारिउँ कढ्ढे कुट्ट, साची वस्त ना कोई वखांयदा। सतिगुर पूरा जाए तुठ, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण रंग रंगांयदा। हरि शब्द हरि भण्डार, हरि हरि आप वरताया । सतिगुर पूरा लै अवतार, जुग जुग वेस वटाया। गुरमुख साजन लाए पार, साचा बेड़ा ल्ए चलाया। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोई धराया। सतिगुर पूरा हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण संग निभाया। हरि शब्द हरि धार, हरि हरि आप चलाईआ। सतिगुर पूरा पावे सार, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ। गुरमुख साजन ढहि पए द्वार, मेल मिलाए बेपरवाहीआ। मनमुख जीव होए ख्वार, थाइन ना कोई पाईआ। सतिगुर पूरा सिरजणहार, सभना देवे रिजक सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका धाम सुहाईआ। निरगुण धाम हरि निरँकार, एका एक सुहाया। जोती जोत अगम्म अपार, ना कोई लेखा लेख लिखाया। ना कोई मन्दिर चार दिवार, गगन पताल ना कोई सुहाया। मण्डल मण्डप ना कोई पसार, आकाश प्रकाश ना कोई दसाया। धरत धवल ना कोई आकार, रवि ससि ना कोई रुशनाया। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई विचार, जेरज अंड ना कोई बणाया। साचे घर सच्ची सरकार, आप आपणा आसण लाया। आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाया। आपे लेखा लेख लिखार, ब्रह्मा ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म पूरन गुर अवतार, आदि जुगादी आप अख्वाया। आपे खण्डा तेज़ कटार, आप आपणे तन लटकाया। आपे मारनहारा मार, ब्रह्मण्डां खोज खोजाया। रूप अनूपा हरि करतार, निरगुण वेस वटाया। सतिजुग त्रेता करया पार, द्वापर मूल चुकाया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, जोती जामा भेख वटाया। बिप्पर सुदामा लाए पार, आप आपणे अंग लगाया। नाम नामा इक्क अधार, निर्मल जोती दीप जगाया। कृष्ना शामा हरि करतार, रघुवंसा वेख वखाया। वेख वखाए संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा संग रलाया। अल्ला राणी सुण पुकार, परवरदिगार

वेस वटाया। ऐनलहक्क रही पुकार, एका नाअरा लाया। मुकामे हक्क ख़बरदार, आपे आप हो आया। अन्त नबी रसूलां नकेल पाए नक्क, एका डोरी रिहा उठाया। मक्का मदीना वेखे ढक, उन्नी उनीसा फेरी पाया। अमाम मैहन्दी रहे राह तक्क, अगैब अगैबी होए सुहाया। मुख नक़ाब एका रक्ख, दूई द्वैती पड़दा देवे लाहया। वेख वखाए हकीकत हक्क, लाशरीक आप ख़ुदाया। कलिजुग अन्तिम फल गया पक्क, सदी चौधवीं दए खवाया। हरिजन साचे लए रक्ख, आप आपणा दरस दिखाया। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, जोती जोत करे रुशनाया। सर्बकला आपे समरथ, निहकलंक अख्वाया। सीता सुरती सवाणी चढ़ाए सोहँ साचे रथ, राम रामा फेरा पाया। मोहण माधव लखमी नरायण खेल करे अकथना अकथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाया। नानक अंगद लाए गुरमुख साचे लए तराया। अमरदास जग करया वक्ख, एका धाम सुहाया। राम दास भण्डारे भरे सख, अमृत ताल सुहाया। गुर अर्जन पत्त लई रक्ख, गोझ ज्ञान बोध अगाध जणाया। गुर गोबिन्दे हो प्रतक्ख, हरि गोबिन्द रूप वटाया। हरिराए अलखना अलक्ख, लेखा लेख लिखाया। हरिकृष्न बाल अवस्था गया नठ्ठ, हरिकृष्ना हरि समाया। गुर तेग बहादर जगत मुनारा गया ढठ्ठ, धर्म मुनारा दए उपाया। बीस बीसा हरि जगदीसा नौ खण्ड पृथ्मी गेड़े आपे लट्ठ, दर दिल्ली फेरा पाया। गुर गोबिन्दे करया अकट्ठ, साचा धाम सुहाया। त्रैगुण माया अग्नी मट्ठ, पंचम झोली पाया। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठ, जिस जन सतिगुर पूरे दर्शन पाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा पाए भट्ठ, एका अग्न हवन नैणां नैण आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। सरगुण मेला साचे घर, हरि साचा आप करांयदा। आपे करे बन्द दर, आपे खोल्ह खुल्हांयदा। आपे बैठा अन्दर वड़, आपे मुख छुपांयदा। आप फड़ाए आपणा लड़, आपे संग तुड़ांयदा। आपे उपाए किले गढ़, आपे मेट मिटांयदा। आपे बैठा अनन्द पुरी चढ़, आपे मुख भवांयदा। एका अक्खर साचा पढ़, जगत विद्या मूल चुकांयदा। एका जोती साचे हरि, एका हरि गुण गांयदा। वरन गोती चुक्कया डर, चार वरनां मेट मिटांयदा। पंचम पंचम आपणा आपे धर, पंचम जोत जगांयदा। पंचम नुहाए साचे सर, पंचम अमृत जाम प्यांअदा। पंचम लेखे लाए सीस धड़, खण्डा खड़ग इक्क चमकांयदा। पंचम आपे लए फड़, गुर संगत मुख रखांयदा। पंचम चरनी आपे गया पड़, आपणी झोली अग्गे डांयदा। इक्क अकल्ला सृष्ट सबाई वेखे खड़, सच महल्ला इक्क वसांयदा। अकाल मूर्त ना कोई हाडी मास नड़, सीस धड़ ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए साचा दर, सच दरवाजा ग़रीब निवाजा एका एक सुहांयदा। एका अस्व घोड़ा ताजा, एका गुर चढ़ाया। एका रक्खणहारा लाजा, जुग जुग आप अख्वाया। अन्तिम प्रगट होए देस

माझा, जोती जामा भेख वटाया। सम्बल नगर साचो साचा, भेव कोई ना पाया। जन भगतां रक्खण आया लाजा, जुग जुग आप अख्वाया। लक्ख चुरासी रचया काजा, साचा सगन मनाया। जूठ झूठ देवे दाजा, मनमुख जीवां देवे गंढु बंधाया। लाड़ी मौत दिवस रैण मारे वाजा, काल दुआरे फेरा रिहा पाया। जूठ झूठ चल्लया इक्क जहाज़ा, कलिजुग कूड़ा लए चलाया। सतिजुग लोकमात आए भाजा, बीस बीसा राह तकाया। किसे सीस ना दिसे कोई ताजा, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाया। चार वरन एका सरन एका एक होए ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण होए सहाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। सरगुण देवे शब्द धार, शब्दी शब्द उपाया। आपे आपणा कर प्यार, आपणी कारा रिहा कमाया। भरम भुल्ला सर्ब संसार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। उच्ची कूक रहे विचार, नेत्र नैण उठाया। गुर गोबिन्द तेरा दरस अपार, जप तप संजम सच इक्क वखाया। एका खण्डा इक्क कटार, तन गात्रे आप लटकाया। पंचम मीता सुहाए बंक द्वार, आत्म दरसी दरस दिखाया। हस्त कीट रिहा विचार, ऊँचां नीचां लए मिलाया। चार वरन अठारां बरन करे ख़बरदार, पंडत पांधा सोया कोई रहिण ना पाया। इक्क अकल्ला शब्द महल्ला रिहा उसार, लक्ख चुरासी दए वसाया। जलां थलां पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर होए सहाया। साध सन्त लए उभार, आप आपणा कर्म कमाया। एका लिव इक्क जोत, एका वरन एका गोत, सृष्ट सबाई हरि शब्द लागी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे कुड़माईआ। चार वरन इक्क दुआरा, इक्क भण्डारा वरताया। इक्क शब्द इक्क प्यारा, एका राह वखाया। एका मीत इक्क मुरारा, एका मार्ग लाया। एका गीत इक्क सुनारा, एका ताल वजाया। एका रीत विच संसारा, सतिगुर पूरा दए चलाया। नौ खण्ड पृथमी सृष्ट सबाई बन्ने सीस दस्तारा, ना कोई मूंड मुंडाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण चवीआं अवतारा, गुर गोबिन्द लिख्या लेख बीस बीसा करे कराए ख़बरदारा, आप आपणा डंक वजाया। इक्क सुणाए सच जैकारा, दो जहानां आप अलाया। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावारा, आदि अन्त ना किसे पाया। जुग जुग आपणा लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाया। कलिजुग साचा वेखे इक्क दुआरा, वेला अन्तिम आया। कवण कूटे हरि लए अवतारा, कवण रूप होए रुशनाया। कवण झूटा दए संसारा, कवण बेड़ा पार कराया। जूठा झूठा बूटा होया त्यारा, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। सम्मत सोलां करे प्यारा, परवरदिगार आप अख्वाया। नूर अलाही एका नाअरा, नर नरायण नर दए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, निरगुण सरगुण इक्क कर, एका घर वसाया। गुरमुख वड्याई धन्न, हरि

नामा धन पाया। गुरसिख वड्याई धन्न, हरिजन मेल मिलाया। गुरसिख वड्याई धन्न, हरि हरि वेख वखाया। गुरसिख वड्याई धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा झोली पाया। गुरसिख वड्याई धन्न, पूरन आस कराया। गुरसिख वड्याई धन्न, पृथ्मी आकाश हरि सुहाया। गुरसिख वड्याई धन्न, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। गुरसिख वड्याई धन्न, स्वास स्वास लेखे लाया। गुरसिख वड्याई धन्न, दस दस मास ना फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दर द्वार दरस दीदार सिँघ दिदार इक्क वखाया।

* १८ चेत २०१५ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे घर पिण्ड शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर निरगुण जोत अनक रूप विच *

निरगुण हरि हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादी कर पसारा, अभेव अभेद रखांयदा। शब्द अनादी हरि जैकारा, एका एक अलांयदा। आप आपणी पावे सारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आप आपणा कर पसारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा कर वणजारा, आप आपणी मंग मंगांयदा। आप आपणा बण भिखारा, आप आपणी झोली डांयदा। आप आपणा बण वरतारा, आप आपणी भिच्छया पांयदा। आप आपणा सुहाए दुआरा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा खेले खेल न्यारा, खेलणहार आप अख्वांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा वेस वटांयदा। आप आपणा साजण साजणहारा, साजणहार आप अख्वांयदा। आप आपणा करे नाम अपारा, आप आपणा आधार रखांयदा। आप आपणा लाए नाअरा, आप आपणा राग सुणांयदा। आप आपणी करे पुकारा, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा आप उपांयदा। आपणा आप हरि उपा, आपणी कल वरताईआ। ना कोई दूसर ल्या संग रला, ना कोई वेख वखाईआ। आप आपणी मंग मंगा, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा अंग लगा, आप आपणी सेज हंढाईआ। आप आपणा पलँघ विछा, थिर घर बैठा आसण लाईआ। आप आपणे रंग रंगा, रंगणहार आप हो जाईआ। आप आपणा दर दए सुहा, सोभावन्त आप आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपणा हरि उपाया, आपणा जोग कमांयदा। सच महल्ला रिहा वखाया, साची बणत बणांयदा। चार दिवारा ना कोई रखाया, छप्पर छन्न ना कोई वखांयदा। ना कोई बाढी संग रलाया, ना कोई लेखा लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर सुहांयदा। आप आपणा दर सुहाए, आदि पुरख अबिनाशा। महल्ल अटल इक्क बणाए, आपे वेखे खेल तमाशा।

वल छल आपणा आप कराए, आप आपणे अन्दर करे वासा। आपणा दीपक जोती आप जगाए, ना कोई उपाए पृथ्मी आकाशा। जल थल ना कोई दिसाए, ना कोई मण्डल रासा। सूरज चन्न ना कोई उपाए, साल बरस दिवस रैण ना कोई रक्खे आसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे भरवासा। आप आपणा नूर उपा, आपे वेख वखाईआ। आप आपणी तूर वजा, आप आपणा राग अल्लाईआ। आपे हाज़र हज़ूर अख्वा, करता पुरख नाउँ धराईआ। पारब्रह्म वेस वटा, परम पुरख अख्वाईआ। अगम्म अगम्मड़े धाम सुहा, बैठा आसण लाईआ। अलखणा अलख एका अलख रिहा जगा, दर दरवेश आप अख्वाईआ। आपणी जोत प्रतक्ख आप प्रगटा, रूप अनूप सति सरूप शाहो भूप आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा होए सहाईआ। आप आपणा होए सहाया, एका एक एकँकारा। आप आपणा वेख वखाया, आपे जाणे आपणी कारा। लेखा लिख्त लेख ना कोई लिखाया, ना कोई लेख लिखणहारा। अभेव अभेदा भेव छुपाया, रूप रंग हरि न्यारा। अछल अछेदा आप अख्वाया, आप आपणा लए अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा हरि निरँकारा, एका एक सुहांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, इक्क प्रकाश वखांयदा। सति सरूप हरि सिरजणहारा, सति पुरख आप अख्वांयदा। आप आपणा कर्म रिहा विचारा, आप आपणा जन्म दवांयदा। आप आपणा भरम निवारा, आप आपणा धर्म धरांयदा। आप आपणा वरन ल्या विचारा, आप आपणी गोत उपांयदा। आप आपणी सरन होए करतारा, सरनगत आप अख्वांयदा। आपे होया करनी करनहारा, निरँकार करनहार वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलांयदा। आपणी धार आप चलाए, पारब्रह्म बेअन्ता। निरगुण निरगुण रूप वटाए, हरि साजन नारी कन्ता। आप आपणा लेख लिखाए, आप आपणा होए मंगता। आप आपणी अलख जगाए, आपणे दर होए भुक्खा नंगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी चोली आपे रंगता। निरगुण हरि उपाया, आपणी कल धारीआ। ना कोई दूसर वेख वखाया, ना कोई मिल्या मीत मुरारीआ। ना कोई चेला गुर बणाया, ना कोई करे निमस्कारीआ। सज्जण सुहेला ना कोई अख्वाया, ना कोई दीसे दर दरबारीआ। इक्क अकेला डेरा लाया, रूप अनूप सच्ची सरकारीआ। शाहो भूप आप अख्वाया, जोधा सूर बली बलकारीआ। आपणा शस्त्र आपे रिहा उपाया, नाम खण्डा तेज़ कटारीआ। आपणा बस्त्र आपणे तन रिहा छुहाया, आपे सच शृंगारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर होए उज्यारीआ। जोती नूर हरि उजाला, हरि घर आप समाया। दीना बंधप दीन दयाला, दया निध अख्वाया। शब्द उपाए पूत सपूता साचा लाला, जोती माता झोली पाया। आपे होए

सदा रखवाला, आपे वेख वखाया। आपणा आप बणाए हरि दलाला, आप आपणी बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेख वखाया। निरगुण रूप हरि अगम्म, आपणा आप उपाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण ना वेख वखाया। ना कोई पवण स्वासी ल्ए दम, हड्ड मास नाड़ी ना कोई रखाया। रक्त बूंद ना कोई चम्म, ना कोई आकाश प्रकाश समाया। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी हरि अनादी आपे जाणे आपणा कम्म, आपणी रास आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेख हरि आप आपणी ख़ुशी मनाया। निरगुण रूप हरि सलाह, आपणा मता पकाया। आप आपणा बण मलाह, आपणा बेड़ा रिहा चलाया। आप आपणा नाउँ धरा, नर निरँकार अख्वाया। आपणी पकड़े आपे बांह, समरथ पुरख हरि रघुराया। आप आपणी रक्खे छाँ, सिर आपणा छत्र झुलाया। आप आपणी बणया पिता माँ, आप आपणा गोद उठाया। आप आपणा वेखे थाँ, थिर घर साचा दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अथाह साचा राह वेख वखाया। निरगुण रूप अगम्म अथाह, बेपरवाह अख्वांयदा। आप सुहाए आपणा थाँ, थान थनंतर वेख वखांयदा। आप जपाए आपणा नाँ, गगन गगनंतर आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत देवे वर, शब्द शब्दी मेल मिलांयदा। शब्द सुत हरि बलवाना, एका एक उपाया। एका देवे गुण गुण निधाना, गुणवन्ता झोली पाया। एका हुक्म धुर फ़रमाणा, सच संदेश सुणाया। एका राग इक्क तराना, पुरख अनादी एका गाया। एका घर इक्क मकाना, एका दर सुहाया। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार आप हरि आया। आपे देवणहारा माणा, आप आपणे गले लगाया। आप आपणा वरते भाणा, हरि भाणे विच समाया। शब्द सुत दर करे परवाना, दोए जोड़ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता सच वर, वर दाता आप अख्वाया। साचा वर देवणहारा, आदि पुरख अबिनाशा। शब्द सुत सोहे दर, रक्खे चरन कँवल भरवासा। मेल मिलाया नारी नर, आपे रक्खया अन्दर वासा। चरन चरनोदक नुहाया साचे सर, देवे नाम दलासा। आपणा भण्डारा आपे भर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दए वर, एका मण्डल एका रासा। एका मण्डल हरि दुआरा, आपणा आप सुहाया। एका जोती कर उज्यारा, एका दीप जगाया। ना कोई रवि ससि चन्द सतारा, मण्डल मण्डप ना कोई रखाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, एकँकारा रूप वटाया। सच सिँघासण बैठा करे विचारा, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, वर घर साचा एका पाया। वर घर साचा हरि हरि पा, शब्द वज्जी वधाईआ। धुरदरगाही लहिणा रिहा दवा, लहिणेदार इक्क अख्वाईआ। लोआं पुरीआं गगन पताल

आकाश प्रकाश गया समा, ब्रह्मण्ड खण्ड गया समाईआ। पारब्रह्म प्रभ वंड वंडा, बैठा झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी आपणा आप ल्या मना, आप आपणी करे वड्याईआ। आप आपणी सेजा रिहा हंढा, आप आपणा विलास कराईआ। कँवल कँवला लए उपा, कँवल मुख हरि रघुराईआ। पारब्रह्म ब्रह्म लए कटा, आप आपणा वक्ख कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, आपणी रचना रिहा रचाईआ। शब्द सुत रचनहारा, आपणी रचन रचांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म करे न्यारा, भेव कोई ना पांयदा। आपणी जोती आपे पए जम्म, मात पित ना कोई अख्वांयदा। आप संवारनहारा आपणा कम्म, आपे लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेस अनेक एक करांयदा।

निरपख निर्लज, हरि निरंकारया। जन भगतां पड़दे लए कज्ज, जुग जुग खेल अपारया। सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी देवे तज, हरिजन सुहाए बंक द्वारया। आत्म सेजा चढ़े भज, मेल मिलाए दस्म दुआरया। अनहद ताल धुन आत्मक अनादी रिहा वज्ज, वजावणहार सिरजणहारया। हरिसंगत हरि द्वार रही सज, जिन मिल्या हरि मीत मुरारया। कलिजुग काल नगारा रिहा वज्ज, चारों कुंट अन्ध अँध्यारया। जो घड़या सो जाए भज्ज, थिर कोई रहिण ना पा रिहा। काल महांकाल दोवें रहे गज्ज, गुर गोबिन्द वेख वखा रिहा। प्रगट जोत देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहा रिहा। दो जहानी रचया काज, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखा रिहा। जीव जन्त साध सन्त नार दोहागण होई रंड, साचा कन्त ना कोई हंढा रिहा। पंच विकारा चार कुन्ट दहि दिशा पाए डण्ड, जूठ झूठ डंक वजा रिहा। माया ममता भेख पखण्ड, हउमे हँगता रोग वधा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, घर सुहञ्जणा, जगे जोत निरँजणा, अलख अलखणा मेल मिला ल्या। अलख अलखणा हरि प्रतक्ख, एका एक अख्वांयदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए रक्ख, आदि जुगादी भेख वटांयदा। मनमुख जीव काया भाण्डे होए सख, नाम वस्त ना कोई टिकांयदा। जगत विद्या करोड़ी लक्ख, नाम धन ना कोई जणांयदा। भगत सुहेले करे वख, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सच घर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। हरिजन मेला हरि द्वार, हरि हरि आप कराया। आपे खोले बन्द किवाड़, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहया। मेट मिटाए पंचम धाड़, पंच विकारा नेड़ ना आया। त्रैगुण माया देवे साड़, सति सन्तोख समाया। गुरमुख वेखे साचे लाड़, वेखणहार दिस ना आया। आपे होए पिच्छे अगाड़, सुखमन बंका पार कराया। अनहद वज्जे साचा ताड़, ताल तलवाड़ा इक्क वखाया। दूई द्वैती पड़दा पाड़, एका धाम सुहाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। साचे मन्दिर देवे वाड़, निर्मल जोत करे रुशनाया। शब्द सिंघासण अपर

अपार, आत्म सेजा दए सुहाया। साची बरखा नाम गुलज़ार, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। गुरमुख आत्म सुहागण नार, घर साचे मेल मिलाया। पंचम सखीआं वेखण वारो वार, साचा मंगल एका गाया। साची सेजा हरि कन्त भतार, आप आपणी रिहा सुहाया। एका मेला इक्क द्वार, एका रूप वटाया। एका रंग रंगे करतार, रंगणहार सर्ब सुखदाया। दस्म दुआरी कर प्यार, हरिजन हरि मन्दिर दए सुहाया। हरि मन्दिर खोल्हे आप किवाड़, सुन्न अगम्मों पार कराया। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हँ हँगता मेट मिटाया। आप आपणा कर प्यार, हरिजन साचे लए तराया। सोहँ देश हरि निरँकार, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे दर पावे सार, सर सरोवर इक्क नुहाया। चौथा पद नर निरबान, साचा धाम सुहाया। पंचम मेला हरि भगवान, सच सुच्च गुण गाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई मकान, निर्मल जोत करे रुशनाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण वेखे मार ध्यान, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। अठवें अट्ठां तत्तां कर परवान, मन मति बुध मेट मिटाया। नौ दर वखाए जगत मकान, मेहरवान दिस ना आया। दसवें मेला दर दरबान, दर दरवेसा रिहा फेरी पाया। इक्क अकल्ला खेले खेल महान, खेलणहार सृष्ट सबाया। लक्ख चुरासी जाणी जाण, जानणहार भेव ना पाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सुरपति राजा इन्द सर्ब कुरलाण, नेत्र लोचण नैण दरस दरस तरसाया। कलिजुग अन्तिम भगत वछल जन भगत कर परवान, दर दुआरे आया फेरा पाया। देवे वड्याई दो जहान, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आवण जावण चुक्के कान, जिस जन दर आए दर्शन पाया। लक्ख चुरासी फंद कटान, राए धर्म ना दए सज़ाया। लाड़ी मौत नेत्र नैण दोए शरमाण, रो रो रही नीर वहाया। चित्रगुप्त ना लेख लिखान, बैठा मुख भवाया। जिस जन मिल्या निरगुण रूप नर नरायण श्री भगवान, महाराज शेर सिँघ वेख वखाया। रसना गुण सके ना किसे कहिण, नानक गोबिन्द वेख वखाया। आपे आया लहिण देण चुकौण, मूल सिर आपणा हथ्थ टिकाया। राज राजान शाह सुल्तान किसे ना देवे सच सिँघासण सौण, शब्द खण्डा रिहा उठाया। वेख वखाए त्रैभवन धनी त्रिभौण, ब्रह्मण्डां खोज खोजाया। हरि का भेव जाणे कौण, वेद पुराण कतेब अञ्जील कुरान रसना रहे गाया। गुर गोबिन्दे शब्द सुनेहड़ा दित्ता पवण, धुरदरगाही आप पुचाया। आप सँघारे दुष्ट रवण, रामा रूप वटाया। आपे भन्ने दुर्योधन हँकारी धौण, मुकंद मनोहर लखमी नरायण रथ रथवाही होए आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सिँघ जरनैल काया अन्दर करे सैल, सिँघ गुरदास संग रलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा जिया दान, हरिसंगत अंग लगाए जिउँ नानक अंगद पूरन इच्छया पाए भिच्छया, रसन स्वास लेखे लाया।

* १६ चेत २०१५ बिक्रमी सूबेदार राम सिँघ दे घर मकान नं० ३८६ गवाल टोली फिरोज़पुर छाउँणी निरगुण जोत अनेक सरूप विच *

हरि शब्द वड बलकारी, पारब्रह्म रघुराया। आप आपणी जाणे धारी, निरगुण वेख वखाया। आप आपणी रिहा पैज संवारी, ना कोई दूसर संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द उपाया। शब्दी सुत वड बलवाना, एका एक रखांयदा। प्रगट हो श्री भगवाना, आपणा आप वेख वखांयदा। एका चिल्ला तीर कमाना, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। खेले खेल दो जहाना, ब्रह्मण्डां खोज खोजांयदा। मारनहारा इक्क निशाना, लोआं पुरीआं पार करांयदा। वेख वखाए ज़िमी अस्माना, गगन पातालां फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा सगला साथ, हरि हरि आप रखाया। आपे हो तिलोकी नाथ, तीनां लोकां वेख वखाया। आप जणाए आपणी गाथ, अकथना अकथ आप अख्वाया। आप चलाए आपणा राथ, जुग जुग रथवाही आप हो आया। आपे लहिणा देण लिखाए मस्तक माथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द देवे साचा वर, हरि साजन वेख वखाया। हरि शब्द हरि साचा सूरा, एका एक उपांयदा। धुन अनादी देवे साची तूरा, एका राग अलांयदा। सर्बकला आपे भरपूरा, पुरख अबिनाशी अख्वांयदा। आपे नेड़े आपे दूरा, हाज़र हज़ूर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा वेखणहारा, आदि पुरख अबिनाशा। निर्मल जोती कर उज्यारा, खेले खेल तमाशा। शब्द सरूपी शब्द जैकारा, लोआं पुरीआं पावे रासा। इक्क अकल्ला एकँकारा, वेख वखाए पृथ्मी आकाशा। जल थल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पाए सारा, लक्ख चुरासी रक्खे वासा। आपे जाणे जानणहार आर पार किनारा, आदि अन्त ना कदे विनासा। जुग जुग लोकमात लए अवतारा, जन भगतां होए दासी दासा। खेले खेल अपर अपारा, हरि साजन शाहो शाबासा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणे रक्खया वासा। निरगुण वास साचे घर, थिर घर आप सुहाया। आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला रिहा वसाया। आप आपणे पौड़े चढ़, उच्चे टिल्ले रिहा वसाया। पूत सपूते ब्रह्मण गौड़े आपे फड़, जोती जोड़े जोड़ जुड़ाया। शब्द सरूपी फड़या लड़, आप आपणे अंग बंधाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखाया। हड्ड मास ना दीसे नड़, रक्त बूंद ना कोए उपाया। ना कोई किला कोट दीसे गढ़, मन्दिर मस्जिद गुर दुआरा ना कोई सुहाया। जन भगतां दुआरे आपे खड़, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा होए सुहाया। आप आपणा

होए सहायक, अकल कला बनवारी। सृष्ट सबाई एका नायक, प्रगट होए वड संसारी। जन भगतां भगवन सदा सुखदायक, निर्मल जोती नूर करे उज्यारी। एका शब्द बोध अगाध सुणाए साचा गायक, अगम्म अगम्मड़े धाम रिहा विचारी। परवरदिगारा पाकी पायक, नूर अलाही हरि निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारी। साची खेल खेलणहारा, एका एक एकँकारया। हरिजन मेला मेलणहारा, जुग जुग लए अवतारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, चारों कुन्टां वेख वखा रिहा। दहि दिशा दिसे कूड़ पसारा, माया ममता मोह वधा रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी अन्ध अँध्यारा, सत्तां दीपां मुख छुपा रिहा। रवि ससि ना कोई सतारा, मण्डल मण्डप ना कोई सुहा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर मारन नाअरा, सुरपति राजा इन्द कुरला रिहा। धरत मात करे पुकारा, नेत्र रो रो नीर वहा रिहा। कलिजुग वेखे इक्क दुआरा, संग मुहम्मद नाल रला रिहा। चार यारी मारे धाड़ा, अल्ला राणी मुख छुपा रिहा। लक्ख चुरासी अग्न लगाई बहत्तर नाड़ा, धीरज धीर ना कोई धरा रिहा। राए धर्म वेखे इक्क अखाड़ा, सच दुआरा आप सुहा ल्या। मौत लाड़ी जीव जन्त मंगे इक्क लाड़ा, नेत्र नैण इक्क उठा ल्या। पुरख अगम्मा आप उठाए अगम्मी धाड़ा, दिस किसे ना आ रिहा। खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले डूँघी कन्दर फेरा पा रिहा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदारा, सोया कोए रहिण ना पा रिहा। नानक गोबिन्द बण लिखारा, वेद व्यासा संग रला रिहा। पूत सपूता प्रगट होए उच्चे टिल्ले पर्बत होए उज्यारा, नाम डंका इक्क वजा रिहा। साचा खण्डा हथ्थ दो धारा, निरँकारा आप उठा रिहा। लोआं पुरीआं दए हुलारा, कलिजुग अन्तिम राह तका रिहा। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धरा रिहा। सतिजुग साचा करे विचारा, प्रभ साचा आप उठा रिहा। इक्क वखाए धर्म दुआरा, धर्म खण्ड आप जणा रिहा। चार वरनां पाए सारा, ऊँचां नीचां गले लगा रिहा। वरन बरन होए पार किनारा, क्षत्री ब्रह्मण वैश शूद्र ना कोई जणा रिहा। एका हट्ट एका तीर्थ एका तट किनारा, एका मार्ग ला रिहा। एका नाम जगत वणजारा, हरि साचा आप करा रिहा। सोहँ शब्द भरे भण्डारा, लक्ख चुरासी झोली पा रिहा। ब्रह्मा वेखे हरि दुआरा, अट्ठे नेत्र खोल्ह खुल्हा रिहा। बाशक तशका गल विच हारा, शिव शंकर मुख भवा रिहा। करोड़ तेतीसा करे पुकारा, नेत्र नीर वहा रिहा। लोआं पुरीआं हाहाकारा, कलिजुग वेला अन्तिम आ रिहा। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, कलिजुग कूड़ कुड़यारा जगत डुला रिहा। साचा नाम ना करे कोई प्यारा, अन्तर मन्त्र ना जणा रिहा। रसना गा गा थक्के जीव गंवारा, जीवत मरन ना कोई सिखा रिहा। भरमे भुल्ले नारी नारा, नर नरायण दिस ना आ रिहा। प्रगट होवे विच संसारा, आप आपणा वेस वटा रिहा। इक्क अकल्ला एकँकारा, अलख निरँजण आप

अख्वा रिहा। आदि पुरख अबिनाशी करता करे खेल अपर अपारा, अगम्म अगोचर भेव ना पा रिहा। जन भगत सुहाए इक्क दुआरा, दर दरवेशा फेरी पा रिहा। भेव ना पाए ब्रह्मा शिव महेषा, गणपति गणेश ना कोई मना रिहा। वेख वखाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए आप उठा रिहा। आपे होए दस दस्मेसा, काहना कृष्ना रूप वटा रिहा। आपे होए रिखी केशा, गवर्धन हथ्थ उठा ल्या। आपे होए नर नरेशा, थिर घर आसण ला ल्या। आदि अन्त हरि रहे हमेशा, आवण जावण खेल खिला ल्या। आप आपणी करे आदेशा, आप आपणा सीस झुका ल्या। कलिजुग अन्तिम करया वेसा, जोती जामा भेख वटा ल्या। वेख वखाए हरि जरवाणे देस प्रदेशा, देस दसन्तर फेरा पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा ल्या। रंग रंगाए हरि गोबिन्दा, हरि हरि वेख वखाया। सृष्ट सबाई मिटे चिन्दा, लोकमाती फेरा पाया। हरिजन उपजाए साची बिन्दा, तिलक लिलाटी इक्क लगाया। मनमुख जीव लगाए निन्दा, निन्दक निन्दया मुख रखाया। हरिजन देवे अमृत आत्म धार सागर सिन्धा, सर सरोवर इक्क नुहाया। शाहो भूप वड गुणी गहिंदा, गहर गम्भीर समाया। सन्त सुहेला सदा बख्शिंदा, सतिगुर पुरख अख्वाया। आपणा दान हरि भगवान जीव जन्त साध सन्त आपे देंदा, देवणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका रिहा वजाया। एका डंका आदि निरँजण, आपणा आप वजाया। प्रगट होया दर्द दुःख भय भंजण, साधां सन्तां रिहा जगाया। नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, अठसठ मूल चुकाया। दो जहानी आया पड़दे कज्जण, शब्द दोशाला पट पहनाया। गुरमुख विरले हरी दरबारे बहि बहि सजण, मनमुख कोई दिस ना आया। जन भगतां रक्खे जुग जुग लज्जण, लाजावन्त आप रघुराया। मदिरा मास जो जन तजण, घर साचे मेल मिलाया। घर साचे बैठा हरि हरि सज्जण, दस्म दुआरी डेरा लाया। अनहद ताल तलवाड़े वज्जण, राग अनादी इक्क अलाया। आत्म सेजा बहि बहि सजण, बंक दुआरा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम वेखणहारा, पारब्रह्म अबिनाशा। सृष्ट सबाई लेखा लिखणहारा, खेले खेल पृथ्मी आकाशा। लक्ख चुरासी वेखे वेखणहारा, अन्तिम आया हारा पासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत पूरन करे आसा। भगत वछल हरि गिरधारा, आदि अन्त अख्वाया। जुग जुग लए मात अवतारा, मनमुख दए खपाया। आपे तोड़े गढ़ हँकारा, गढ़ हँकारी रहिण ना पाया। चाढ़े चिल्ला तीर अपारा, इक्क निशान वखाया। राम रामा लए अवतारा, रावण राम खपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा सगला साथी, हरि हरि आप

अख्वांयदा। आप आपणी देवे बाकी, आपणा लहिणा आप चुकांयदा। आपे होए बन्दा खाकी, आपे मेट मिटांयदा। आपे बण बण साचा साकी, अमृत जाम प्यांअदा। आपे खोलणहारा ताकी, आपे ब्रह्म ज्ञान दृढ़ांयदा। आपे मारनहारा झाकी, अन्दर मन्दिर वेख वखांयदा। आपे चढ़या साचे राकी, चिट्टा अस्व आप दौड़ांयदा। आपे होए पाकन पाकी, बेऐब आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हक्क दुआरा वेख वखांयदा। हक्क दुआरा हक्क हकीकत, हरि साचा वेख वखाईआ। ना कोई दूसर करे शरीकत, शरअ शरायत ना कोई जणाईआ। इक्क वखाए नाम अकीदत, सच दुआरा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जुग जुग जोती भेख वटा, हरि आपणी कल धारीआ। द्वापर लेखा गया मिटा, काहना कृष्ना रूप मुरारीआ। गीता ज्ञान इक्क जणा, अर्जन देवे नाम ख़ुमारीआ। रथ रथवाही आप अख्वा, मारे दुष्ट हँकारीआ। लहिणा देणा मूल चुका, वेख वखाए सर्ब संसारीआ। आप आपणा ल्या छुपा, पंज तत्त ना कोई प्यारीआ। साची खेल हरि खिलंता, खेलणहार निहकामी। जुग जुग आपणा भेख वटंता, पारब्रह्म स्वामी। भगत जनां दर मेल वखंता, देवे शब्द अनामी। एका राग ताल वजन्ता, सुणे सुणाए साची कानी। एका राग आप सुणंता, मेट मिटाए अन्धेरी शामी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होया जाण जाणी। जानणहार हरि करतारा, अकल कला अख्वाया। आप आपणा लै अवतारा, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। चारों कुन्ट धुँधूकारा, आकाश प्रकाश ना कोई सहाया। सृष्ट सबाई करे पुकारा, हा हा कर रही कुरलाया। पुरख अबिनाशी करे विचारा, दूर दुराडा वेख वखाया। जन भगतां देवे नाम सहारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। जीव जन्त होए गंवारा, जूठी झूठी वंड वंडाया। एका भुल्लया सच दुआरा, दर दरवाज़ा दिस ना आया। हरि हरि हरि प्रभ लए अवतारा, आप आपणा कर्म कमाया। शब्द डंक वजाए एकँकारा, इक्क जैकारा लाया। सो पुरख निरँजण खेल न्यारा, हँ हँगता मेट मिटाया। इक्क वसाए सच सच्चा घर बारा, दूसर कोए दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा नाउँ धर, आपणी जोत जगाईआ। आप आपणा खोल्ह दर, वरन गोत मेट मिटाईआ। आप आपणा नुहाए सर, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना चुक्के डर, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। वरन बरन अवरन अबरना एका हरि, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। धरनी धरना धरत धवल दए वर, नौ खण्ड इक्क पढ़ाईआ। सत्तां दीपां लाए जड़्ह, वेखणहारा दिस ना आईआ। हर घट अन्दर चुक्के डर, वड वड्डी वड्याईआ। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, आपणी बूझ बुझाईआ।

अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। एका पौड़े जाए चढ़, उच्च महल्ला दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाउँ वड्डी वड्याईआ। हरि हरि नाउँ निहकलंक, आदि जुगादि अख्वाया। शब्द वजाए साचा डंक, ब्रह्म ब्रह्मादि जगाया। पकड़ उठाए राउ रंक, राज राजाना आप हिलाया। लक्ख चुरासी मिटे शंक, साध सन्त भुल्ल ना राया। आप सुहाए आपणा बंक, बंक द्वारी आप अख्वाया। गुरमुख तराए जिउँ जनक, जन जननी लेखे लाया। प्रगट होए वासी पुरी घनक, सम्बल नगरी डेरा लाया। खेले खेल बार अनक, अंक कल अख्वाया। हरिजन मेला जोती तनक, शब्द डोरी तन्द बंधाया। वेख वखाए पूत सपूता भगत सन्त, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा नाउँ उपाए, निरगुण रूप अथाह। वेद कतेब ना कोई लेख लिखाए, हरि दाता बेपरवाह। ब्रह्मा वेता मुख शरमाए, अट्ठे पहर रोवे उभे साह। तेरा लेखा ना कोई सके गणाए, लेखा लिख्त विच ना सके आ। तेरा दर ना कोई वेखण पाए, कोटी कोट रहे राह तका। नानक मेला सहिज सुभाए, जन कबीरा सीस रिहा झुका। दूसर कोई थाँ ना पाए ना मेला लए मिला। धाम सुहञ्जणा आदि निरँजणा दर्द दुःख भय भंजना भगत सुहेला साचा सज्जणा हरिजन साचे पकड़े बांह, दिस किसे ना आए। ना घड़या ना भज्जणा, ना काल नगारा वज्जणा, थिर घर कदे ना तजना, हरि बैठा डेरा लाए। लोकमात मार झात जुग जुग जन भगतां पड़दा कज्जणा, जोती जामा भेख वटाए। कलिजुग अन्त नगारा एका वज्जणा, लक्ख चुरासी रिहा सुणाए। सतिजुग साचे धरत मात तेरी गोद बहि बहि सजणा, बाल निधाना आप अख्वाए। कलिजुग कूड़ा मात भज्जणा, मुख काला मस्तक छाहे। लाड़ी मौत बंक दुआरा गढ़ हँकारी कोई ना छड्डणा, घर घर फेरी पाए। लौण देवे ना कोई अज पजना, सम्मत सम्मती राह तकाए। वीह सद सोलां कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा भराए जहाज़ना, मनमुख जीवां दए चढ़ाए। पारब्रह्म अबिनाशी आपे चढ़े साचे ताजना, शब्द घोड़ा इक्क दौड़ाए। चरन छुहाए देस माझना, आप आपणी वाग उठाए। आपे रचया आपणा काजना, साचा काज रिहा कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराए। निरगुण रूप नाउँ धरा, निहकलंक अख्वाया। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, जगत विद्या माण गंवाया। चतुर सुजान दए भुला, वड विद्वानी भेव ना राया। जगत ज्ञानी झूठे ज्ञान लगा, रसन विवाद वधाया। गुरमुखां निशानी एका दए जणा, आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाया। बोध अगाधा शब्द सुणा, धुन आत्मक दए वजाया। साचे मन्दिर कुण्डा लाह, साचे पौड़े दए चढ़ाया। टेडी बंका पार करा, सुखमन वेख वखाया। जोत निरजंण इक्क जगा, दीपक लिलाट दए वखाया। पंचम सखीआं मंगल गा, सच सुहाग दए

मिलाया। आत्म सेजा दए सुहा, फूलन बरखा लाया। नारी कन्ता मेल दए मिला, एका रंग रंगाया। रंग बसन्ती दए चढ़ा, उतर कदे ना जाया। धर्म सुगंधती इक्क वखा, एका रूप समाया। आपणे अंग आप लगा, अंगीकार आप हो जाया। सुरत सवाणी मंगती दर देवे भिच्छया पा, शब्दी शब्द भण्डार भराया। आप आपणे विच ल्ए समा, एका दूजा भउ मिटाया। तीजा नेत्र दए खुल्हा, चौथे पद समाया। पंचम मेला दए मिला, विछड़ कदे ना जाया। छेवे छप्पर छन्न दए छुहा, आप आपणा कर रुशनाया। सति सतिवादी फेरा पा, आदि जुगादी वेख वखाया। मन मति बुध ल्ए समझा, पंजां तत्तां मूल चुकाया। नौ दुआरे पार करा, एका राह वखाया। दस्म दुआरी दए बहा, हरि साजन सहिज सुभाया। कलिजुग अन्तिम फेरी पा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दो अक्खर वक्खर जाप जपा, जागरत जोत वखाईआ। सुफन सखोपत दए सुहा, तुरीआ पद समाईआ। तुरीआ रूप आप वटा, अनभव प्रकाश कराईआ। अनभव भेव ना सके कोई पा, हरि गोबिन्द वेख वखाईआ। हरि गोबिन्द गोबिन्द गया समा, गोबिन्द डेरा लाईआ। राम रामा राम अख्वा, राम रामा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाउँ अगम्म अथाहो बेपरवाहो लेखा रिहा लिखाईआ। बेपरवाहो नाउँ निरँकार, थिर घर हरि वसेरा। आदि जुगादी एका कार, एका हक्क निबेड़ा। इक्क अकेला बन्न्हे धार, इक्क वसाए आपणा खेड़ा। एका शब्द इक्क जैकार, इक्क चलाए बेड़ा। कलिजुग कूड़ा डोबे विच मँझधार, करे हक्क निबेड़ा। सतिजुग साची पैज दए संवार, मनमति चुकाए झेड़ा। गुरमति जगत कर उज्यार, धरत मात वेख वखाए तेरा खुल्हा वेहड़ा। एका शब्द गुर सच्ची सरकार, लक्ख चुरासी पाए जेड़ा। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी बैठा केहड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा गेड़ा। गेड़ा देवणहार रघुनाथ, रघुपत आप अख्वाया। आपे होया सगला साथ, सगला संग आप डुबाया। आपे लेखा लिखणहारा मस्तक माथ, आपे देणा मूल चुकाया। आपे हो त्रिलोकी नाथ, आपे भगत द्वारी भिच्छया मंगण आया। आपे जाणे अपणी कथा अकथनी अकाथ, कथनी कथ ना सके राया। आपे राम रामा पूत सपूता दस दसराथ, गोकल नंदन आप हो जाया। आपे खेले खेल तत्त आठ, पंज पंजी मेल मेल मिलाया। आप उपाए तीर्थ अठ्ठ साठ, गंगा गोदावरी नहावण नुहाया। आप जणाए पूजा पाठ, गुरुदुआरा मन्दिर मस्जिद शिवदवाला आप सुहाया। आपे मारनहारा सर सरोवर ठाठ, तट किनारा आप अख्वाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ, कलिजुग वेला अन्तिम आया । त्रैगुण माया पाए भठ्ठ, पंज तत्त विकारा लम्बू लाया। लोआं पुरीआं वेखे नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमाया। रहिण ना देवे किसे दा हठ्ठ, माण अभिमाण सर्ब तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक आप अख्वाया। निहकलंक हरि शब्द निशान, एका एक जणाईआ। वेख वखाए वेद पुराण, ब्रह्मा वेद व्यासा संग रलाईआ। नारद मुन रक्खी आस, बैठा राह तकाईआ। मनू तेरी बुझाए प्यास, मन ममता दए चुकाईआ। रिखी रिखेशर पूरी करे आस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका ब्रह्म पारब्रह्म करे शब्द जणाईआ। शब्द ज्ञान गुर साचा मन्त्र, एका एक रखाया। लक्ख चुरासी काया खेत्र, प्रभ साचा वेखण आया। सम्मत पन्दरां महीना चेत्र, भुल्ल रहे ना राया। मनमुखां दरस ना होए महीना आया छेकड़, गुरमुख साचे लए तराया। धन धनाड जोरू ज़र किसे हथ्थ ना आए एकड़, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाया। आपणे हथ्थ रक्खया लेख लेखण, बिधना वेख वेख रही शरमाया। ना कोई सहाई औल्या पीर शेख़न, दस्तगीर ना वेख वखाया। पंडत पाधां ना कोई लाए रेखन, मस्तक रेख ना कोई बणाया। ग्रन्थी पन्थी दिस ना आए दस दस्मेशन, जोती जामा भेस वटाया। अट्ठे पहर पूजा गणपति गणेशन, शब्द त्रिसूल ना कोई फड़ाया। ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्म महेषन, ब्रह्म ना कोई जणाया। पारब्रह्म प्रभ सदा अदेसन, गुरमुखां लए मिलाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट्या कर कर आपणा वेसन, जोती जामा भेख वटाया। आपे शाहो भूप हरि नर नरेशन, सच सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप हो आया। निहकलंका हरि भगवाना, अकल कला अख्वांयदा। आप उठाए साचे सन्तां, जुग विछड़े जग मेल मिलांयदा। आदि जुगादि बणाए साची बणता, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, कन्त कन्तूहल आप हो जांयदा। गुरमुख वड्याई देवे जीव जन्ता, जानणहार भेव कोई ना पांयदा। जुग जुग महिमा अगणत अगणता, लेखा गणत ना कोई गणांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्ता, मूर्ख मूढ़ भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप अख्वांयदा। निरगुण रूप हरि सुल्ताना, साचे तख्त बिराजे। प्रगट जोत श्री भगवाना, रचया काज देस माझे। एका शब्द एका तीर इक्क निशाना, पकड़ उठाए राजन राजे। एका खण्डा आप चमकाना, चारों कुन्ट कराए भाजे। आपे आए विच मैदाना, चिट्टे अस्व चढ़या ताजे। धर्म झुलाए इक्क निशाना, नाल वजाए अनहद वाजे। एका रूप पारब्रह्म मेहरवाना, जुग जुग रचया काजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नाउँ धराए ग़रीब निवाजे। ग़रीब निवाज दया निध दाता, दयावान अख्वाया। दर दरवेसा पुरख बिधाता, परम पुरख अख्वाया। जन भगतां देवे नाम सुगाता, आत्म झोली तन भराया। ना कोई वेखे परखे जाता पाता, ऊँचां नीचां विच ना आया। मेट मिटाए अन्धेरी राता, एका साचा चन्द चढ़ाया। मनमति ना रहे नार

कमजाता, दर द्वार दए दुरकाया। एका शब्द चढ़ाए सच बराता, सो पुरख निरँजण संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन जन हरि लए वर, सुरती शब्दी मेल मिलाया।

हरि किरपा हरि जाणया, मूर्ख मुग्ध अंजान। देवे नाम धुर फ़रमानया, आत्म ब्रह्म ज्ञान। इक्क वखाए सच निशानया, शब्दी शब्द बिबान। मारे तीर हरि भगवानया, एका दूजा मेट मिटान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे चरन ध्यान। पंज तत्त पंच प्यारा, पंचम मोह रखाया। हड्ड मास नाड़ी रत्त अपारा, जगत दुआरा इक्क सुहाया। मन मति बुध कर त्यारा, त्रैगुण वेख वखाया। चेतन्न सता वेख धारा, खेले खेल अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मानस मानुख दए अधारा। पंज तत्त हरि बणत बणा, जगत जुगत जणाईआ। आप आपणा मार्ग ला, आपे दए जणाईआ। आप आपणा नाम उपा, आपे रिहा चलाईआ। आप आपणा दए सुणा, आप आपणा आपे गाईआ। आप आपणा भेव खुल्हा, हरिजन साचे लए तराईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, जगत विद्या मूल चुकाईआ। साची सिख्या दए सिखा, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ आत्म भिच्छया देवे पा, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। धुर दा लिख्या दए वखा, लेखा लिखणहार आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई मिथ्या दए समझा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। अनडिठा रूप दए वखा, अनभव प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। पंज तत्त तन कर प्यारा, आत्म बूझ बुझाईआ। एका देवे सच हुलारा, वड वड्डी वड्याईआ। इक्क वखाए हट्ट पसारा, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। तीर्थ तट पार किनारा, सर सरोवर दए कराईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, सरगुण बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर अन्दर महल्ल अटल उच्च मुनारा, हरि बैठा आसण लाईआ। हरिजन वेखे वारो वारा, वेखणहार दिस ना आईआ। जोत निरँजण कर उज्यारा, दीपक दीप जगाईआ। डूँघी कवरी पार किनारा, सुखमन वेख वखाईआ। अनहद ताल वज्जे तलवाड़ा, बंस सरबंसा आप अख्वाईआ। इक्क वखाए सच अखाड़ा, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। होए प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन हरि वस्सया घर, जन एका रंग रंगाईआ। हरि सन्तन हरि हरि पाया, हरि हरि रूप अपार। एका दूजा भउ चुकाया, हउमे रोग निवार। माया ममता मोह कटाया, एका बख्शे सच द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मानस मानुख लाए पार। मानस जन्म बूझ बुझा, आत्म भेव चुकाया। आप आपणा दए समझा, देवी देव आप अख्वाया। साचा इष्ट इक्क जणा, जगत वासना दए मिटाया। जीवन दृष्ट दए खुल्हा, जोग जुगत इक्क बणाया। रामा वशिष्ट गुर दए

मिला, शब्द शब्दी सुरत बंधाया। सृष्ट सबाई आपणे मार्ग दए ला, आपे भरम भुलाया। गुरमुख साजन साचे सन्त लए जगा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। अक्खर वक्खर दए वखा, सो पुरख निरँजण दया कमाया। हँ हँगता रहिण ना पा, हउमे रोग जलाया। साची संगता लए मिला, सति संगत सति सरूप समाया। एका एक एक दए वखा, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखणहारा दर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा सन्तन पाया। सन्तन देवे धुर फ़रमाना, आत्म ब्रह्म जणाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञाना, एका बूझ बुझाईआ। एका नाम इक्क बिबाना, एका रिहा चढ़ाईआ। एका राग इक्क तराना, एका रिहा सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बैठा हरि लिव लाईआ। एका जोती नूर महाना, जोती जोत करे रुशनाईआ। हर घट बैठ श्री भगवाना, आप आपणा खेल खिलाईआ। गुरमुख वेखे चतुर सुजाना, चतुर्भुज दया कमाईआ। जन वखाए पद निरबाणा, परम पुरख समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत साधन एका एक सच्ची सरनाईआ। हरिभगती वर मंगया, ढहि ढहि चरन द्वार। गुरमुख आत्म रंगया, रंगे रंग अपार। सच दुआरा आपे मंगया, वेखे सिरजणहार। जीव जन्त भुक्खा नम्गया, ना कोई पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा इक्क अधार। भगती हरिजन मूल है, आत्म मूल पछान। साचा मेला कन्त कन्तूहल है, एका रूप ध्यान। नाम वाशना साचा फूल है, फल फुलवाड़ी सच महान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा दान। भगती रूप हरि अनडिठा, एका रूप उपाया। हरि भाणे रंग लागा मीठा, ना कोई दूसर वेख वखाया। एका चढ़या रंग मजीठा, उतर कदे ना जाया। त्रैगुण तपे ना कोई अंगीठा, पंज तत्त ना कोई सताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्रीता इक्क जणाया। भगत रूप सांतक सीता, सति सति वरताया। आप चलाए आपणी रीता, हरिजन झोली पाया। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर गुरुदुआरे जगत मसीता, मठ शिवदवाला कोई ना डेरा लाया। कूड़ा करे कराए रीठा मीठा, जिस जन दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगती दित्ता एका वर, एका रूप सुहाया। हरिभगती हरि रूप हरि, हरि आप रंगाया। जन भगतां चारों कूट फिरे दर, दिवस रैण सेव कमाया। आप आपणा रही वर, आप आपणा कन्त हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगती वेखे सच दुआरा, सन्त दुआरा थान सुहाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा। हर घट आपे वस्सया, लक्ख चुरासी दासी दासा। मन्दिर अन्दर बहि बहि हस्सया, निज घर आत्म रक्खे वासा। मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया, जो जन गाए स्वास स्वासा। दर दुआरे आवे नस्सया, वेख वखाए काया कासा। अमृत मेघ एका वस्सया, जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा वासा। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता, लक्ख चुरासी विच समाया। बूझ बुझाए साचे सन्ता, दूसर दिस किसे ना आया। जुग जुग माया पाए बेअन्ता, बेअन्त आप अख्वाया। हरिजन मेला नारी कन्ता, कन्त सुहाग आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट वेखणहारा, दर दीपक करे उज्यारा, जोती नूर होए रुशनाया। हरिजन हरि हरि रंगया, हरि हरि रूप अपार। सच दुआरा जिस जन मंगया, भरे नाम भण्डार। देवे दान दाता दानी सूरा सरबन्गया, अट्ठे पहर रहे वरतार। अमृत आत्म धार वहाए साची गन्गया, अठसठ तीर्थ पार किनार। इक्क वजाए शब्द मृदंगया, धुन अनादी सिरजणहार। नौ दुआरे जो जन लँघया, हरि मेला दस्म दुआर। आत्म सेजा सच पलँघया, उप्पर बैठा मीत मुरार। सुरत सवाणी लाए आपणे अन्गया, अंगीकार करे करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट हर घर वेखणहार निरगुण रूप अपर अपार।

* २० चेत २०१५ कर्म सिँघ दे घर पिण्ड पिपली ज़िला बठिंडा निरगुण जोत अनक रूप विच *

हरि जोती नूर अपार, हरि निरंकारया। आप आपणी किरपा धार, आपणा आप करे उज्यारया। आप आपणी पावे सार, आप आपणा लै अवतारया। आप आपणा वेखणहार, आप आपणा खेल खिला रिहा। निरगुण अपर अपार, आप आपणा वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग लगा ल्या। आप आपणा अंग लगा, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा संग रखा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आप आपणा मृदंग वजा, आप आपणा ल्या उठाईआ। आप आपणा पलँघ विछा, आपे बैठा आसण लाईआ। आप आपणी मंग मंगा, आपणी झोली आप भराईआ। आप आपणा दर सुहा, दाता दानी आप हो जाईआ। आप आपणा घर वसा, नारी कन्ता रूप अख्वाईआ। आप आपणा बंस चला, पूत सपूता एका जाईआ। शब्द सुत नाउँ धरा, देवे वड वड्याईआ। भेव अभेदा भेव छुपा, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। अगम्म अगम्मड़े धाम टिका, दिस किसे ना आईआ। अलख अलखना आप अख्वा, एका अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा होए सहाईआ। जोती नूर हरि उजाला, आपणा आप कराया। प्रगट हो हरि गोपाला, एका बाला गोद उठाया। आप बणाए सच दलाला, ना कोई दूसर संग रखाया। आपे चले आपणी चाला, चल्लणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा होए सहाया। आप आपणी दया कमा, आपणी बणत बणाईआ। आप आपणा ल्ए उपा, आप आपणा नाउँ धराईआ। आप आपणा नाउरा ला, आप

२६१
०७

आपणा रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे वड्याईआ। आप आपणा कर आकारा, आपणा कर्म कमाया। आप आपणा दए सहारा, आप आपणा धर्म धराया। आप आपणा पारावारा, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेख किनारा, आप आपणा बन्ने लाया। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणा मार्ग पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत देवे वर, सेवक सेवा रिहा कमाया। साचे सुत कर त्यार, हरि आपणी कल वरताईआ। करे कराए ख़बरदार, निरगुण इक्क जणाईआ। खेले खेल खेलणहार, करता पुरख खेल खिलाईआ। पुरख अगम्मा करे अगम्मड़ी कार, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। शब्द सुत हरि बलवाना, एका एक उपाया। धुर दरबार धुर फ़रमाना, एका एक सुणाया। एका बन्ने साचा गाना, ना कोई दूसर तन्द बंधाया। पारब्रह्म प्रभ गुण निधाना, खेले खेल आप महाना, खेलणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत एका वर, एका झोली पाया। एका वर झोली पा, हरि साचे सच जणाईआ। लोआं पुरीआं बणत बणा, गगन पताला लए उपाईआ। आकाश प्रकाश इक्क वखा, धरत धवल सुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडा, वंडणहार आप हो जाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवा ला, आप आपणा कर्म कमाईआ। त्रैगुण माया तत्त जणा, एका झोली पाईआ। पंज पंज मेल मिला, पंज पंजी होए सहाईआ। लोक परलोक दए वसा, आप आपणा थान सुहाईआ। सर्ब निरंतर आप अख्वा, गगन गगनंतर फेरा पाईआ। थिर घर साचे डेरा ला, अचल अटल महल्ल इक्क सुहाईआ। निहचल धाम दए वखा, निरगुण वड्डी वड्याईआ। पूत सपूता आप उपा, आपणी कार कराईआ। एका बस्त्र तन छुहा, साचा दर सुहाईआ। एका मार्ग रिहा पा, दूजा भेव ना कोई जणाईआ। एका रंगण रिहा रंगा, रंग रंगीला आप अख्वाईआ। सर्ब वसीला रिहा बणा, हरि शब्द गुर उपाईआ। आपणा कबीला रिहा बणा, लोकमात वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ दया कमा, आपणी रक्त आपे रिहा टिकाईआ। कँवल कँवला ल्या समा, आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ वक्ख करा, ब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म पए सरना, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि निरँजण दया कमा, आप आपणी करे कुड़माईआ। एका भूषन बस्त्र पा, निराकार आकार वखाईआ। निरगुण वेस लए वटा, सरगुण कर रुशनाईआ। सरगुण सहिजे गया समा, आप आपणा मुख छुपाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, अप तेज़ वाए पृथमी आकाश वखाईआ। त्रैगुण माया तेरा रंग रंगा, त्रैधाती बणत बणाईआ। मन मति बुध दए टिका, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहाईआ। नौ दुआरे जगत वखा, जागरत जोत टिकाईआ। दस्म दुआरी डेरा ला, आप आपणा धाम सुहाईआ। जोत निरँजण सेवा ला, साची वंड

वंडाईआ। भय भंजन हरि आप अख्वा, भव सागर पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, आप आपणी रचन रचाईआ। शब्द सुत कर उजागर, हरि आपणा कर्म कमाया। पंज तत्त वस्सया काया गागर, दिस किसे ना आया। ब्रह्मा बणया हरि सौदागर, हरि साचा झोली पाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, एका नेत्र ज्ञान दृढ़ाया। निर्मल कर्म करे उजागर, आप आपणी बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, दर दुआरा इक्क सुहाया। साचे सुत सच द्वार, एका अलख जगाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी भिच्छया पाईआ। पारब्रह्म गुर लै अवतार, ब्रह्म करे जणाईआ। आदि निरँजण इक्क एकँकार, समरथ पुरख अख्वाईआ। अलख अलखना पावे सार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वस्सया बाहर, रक्त बूंद ना कोई रखाईआ। मात पित ना कोई प्यार, ना कोई बालक गोद जणाईआ। भैण भ्राता ना कोई संसार, ना कोई कुटम्ब रखाईआ। नारी कन्ता ना कर प्यार, ना कोई सेज हंढाईआ। साध सन्त ना कोई द्वार, इक्क अकल्ला वस्सया सच महल्ला, ना कोई दूसर संग रखाईआ। आपे वस्सया जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंगी कन्दर डेरा लाईआ। रवि ससि दीपक जोती आपे बला, मण्डल मण्डप दए सुहाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज आपे रला, आप आपणा रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी हर घट दीपक आपे बला, निरगुण रूप करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, आप आपणा नाउँ धराईआ। आप आपणा नाउँ धरा, आपणी खेल खिलाया। आप आपणी रचन रचा, रचनहार आप अख्वाया। आप आपणा बचन अलृा, आप आपणा रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका दर, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। शब्द सुत वड मेहरवाना, हरि हरि आप उपाया। आपे वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं राह तकाया। लोकमात पहरे बाणा, शब्द सरूपी इक्क निशाना, जोधा सूरबीर बली बलवाना, गुण निधाना आप अख्वाया। आप चुकाए आपणी काना, आप आपणी वंड वंडाया। लिख्या लेख सृष्ट महाना, ब्रह्मा वेता सेवा लाया। लिख्या लेख अन्तर ध्याना, आत्म ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, वेखे खेल सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुलृाया। आप आपणा भेव खुलाए, देवे धुर फ़रमाण। शब्द सुत आप जगाए, ब्रह्मे ब्रह्म ज्ञान। आदि अनादी इक्क अख्वाए, नादी धुन महान। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजाए, एका दर परवान। बोध अगाधी शब्द जणाए, आपे जाणी जाण। विस्मादी विस्माद समाए, आदि जुगादी ना कोई करे पछान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे करे दर परवान। देवणहारा हरि भण्डारा, एक एक अख्वाया।

शब्द सुत कर वरतारा, ब्रह्मा झोली पाया। ब्रह्मा सेवक सेवादारा, वेद कतेबा रिहा लिखाया। पाया भेव ना अगम्म अपारा, ज्ञान ध्यान ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात, लक्ख चुरासी जगत वंड वंडाया। लोकमाती वंड वंडा, आपणी रचन रचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि डेरा ला, जेरज अंड समाईआ। उत्भुज सेत्ज लए उपा, पंचम मोह बंधाईआ। आप आपणा संग रखा, सगला संग वेख वखाईआ। आप आपणी जोत टिका, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप लिखाईआ। आपे लेखा लेख लिखारा, लिखणहार अख्वाया। आपे बणे जगत वणजारा, एका वणज कराया। आपे भरे नाम भण्डारा, हरिजन भगती झोली पाया। आप सुहाए बंक दुआरा, बंक द्वारी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रिहा उपाया। लोकमात हरि आपणा आप, एका एक उपांयदा। एका जाप जपाए जाप, आपणी बणत बणांयदा। आपे पुन्न आपे पाप, वड प्रताप आप करांयदा। आप उपाए दया कमाए सन्त साध, साची सिख्या आप जणांयदा। आप आपणा लए अराध, आप आपणा ध्यान लगांयदा। आप आपणा वजाए नाद, धुन आत्मक आप सुणांयदा। आप आपणा वजाए साज, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। आप आपणी मारे ठाठ, सर सरोवर इक्क भरांयदा। आप आपणी गेड़े लाठ, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। आप आपणा जाणे पूजा पाठ, आप आपणा नाउँ ध्यांअदा। आप आपणी जाणे वाट, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। आप आपणे चढ़या घाट, आप आपणा पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल एका कर, सरगुण दर सुहांयदा। निरगुण मेला सरगुण धार, हरि साची बणत बणाईआ। खेले खेल विच संसार, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। जोती दीपक कर उज्यार, वेखणहार आप हो जाईआ। करता पुरख करनेहारा करे खेल अपर अपार, निरवैर रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जुगती आपणी आप जणाईआ। जग जुगती जग जोग बणा, आपणा कर्म कमाया। आपे रसीआ भोग अख्वा, आपे रसना जिह्वा लाया। आपे दरस अमोघ करा, एका दूजा भउ चुकाया। आपे आत्म साची चोग चुगा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। आपे हउमे रोग गंवा, हँ हँगता रहिण ना पाया। सो पुरख निरँजण आप अख्वा, सोहँ मन्त्र दृढ़ाया। सोहँ शब्द जाप जपा, निरगुण सरगुण विच समाया। निरगुण सरगुण एका थाँ, महल्ल अटल इक्क उपाया। पंज तत्त रचन रचा, आप आपणा मुख छुपाया। कंचन गढ़ दए सुहा, थिर घर वासी डेरा लाया। सीस धड़ कोई दीसे ना, चोटी जड़ ना कोई दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई ल्या घड़, घड़नहार समरथ पुरख इक्क अख्वाया। सृष्ट सबाई घाड़न घड़, पंज तत्त समाया। निरगुण

रूप अन्दर वड़, सरगुण लए जगाया। उच्च महल्ले आपे चढ़, सच सिँघासण डेरा लाया। आप बणाया साचा गढ़, किला कोट दए सुहाया। वेख वखाए बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाया। मढ़ी गोर ना जाए सड़, अग्न हवन ना कोई कराया। आपणा अक्खर आपे पढ़, आप आपणा नाम अलाया। सो पुरख निरँजण दया कर, हँ हँगता विच समाया। आपे देवणहारा वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल दर, दर दरवाजा इक्क खुलाया। दर दरवाज़ा खोल निरँजण, आपणी दया कमाईआ। आपणे नेत्र आपे पाया अंजन, आपे वेख वखाईआ। आपणा आप कराया मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। आपणा बणया आपे सज्जण, आपणा दर सुहाईआ। आप आपणा आए पड़दा कज्जण, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका घर, एका घर वज्जे वधाईआ। निरगुण सरगुण साचा मेला, हरि साचे आप कराया। वेख वखाणे गुरु गुर चेला, चेला गुर आप हो जाया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, साचा सगन मनाया। पंचम सखीआं पायण वेला, अनहद मंगल गाया। पुरख अबिनाशी इक्क अकेला, लक्ख चुरासी लोकमात प्रनावण आया। आपे जाणे आपणा वेला, वेद कतेब ना कोए जणाया। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला, खेलणहार सृष्ट सबाया। जोती शब्दी वस्सया रंग नवेला, निरगुण रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल दर, लोकमात वेख वखाया। लोकमात जोत जगा, जीव जन्त उपाया। आपणे मार्ग आपे ला, आपणा धन्दा रिहा कराया। आप आपणे भरम भुला, मूर्ख मूढ़े गन्दे रहे कुरलाया। आप आपणा छन्द सुणा, नाद अनादी धुन उपजाया। आप आपणे अंग लगा, सन्त सुहेले लए तराया। ढोल मृदंग इक्क वजा, एका थान सुहाया। बजर किवाड़ा दए तुड़ा, नाम खण्डा एका वाहया। पूत सपूता लए मिला, आप आपणी झोली डाहया। साचा दर दए दिखा, सच सिँघासण आसण लाया। पारब्रह्म ब्रह्म लए मिला, आपणे हथ्थ रक्खे वड्आया। साचा मन्दिर दए सुहा, सच समग्री इक्क वखाया। कागो हँस दए बणा, सर सरोवर इक्क नुहाया। दरस अमोघ दए करा, हउमे रोग जलाया। धुर संजोगी मेला दए मिला, विछड़ कदे ना जाया। साचा जोगी एका जोग रिहा कमा, निरगुण सहिज समाया। रसना भोगी आत्म रस रिहा भुगा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। जगत विजोगी जगत विछोड़ा रिहा कटा आप आपणा राह वखाया। साचे पौड़े रिहा चढ़ा, जुग जुग आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल दर, दर दरवेश आप अख्वाया। दर दरवेश आदि निरँजण पारब्रह्म अबिनाशा। प्रगट होए साचा सज्जण, वेखे खेल जगत तमाशा। आदि जुगादी आए पड़दे कज्जण, मण्डल मण्डप पाए रासा। जो घड़े सो अन्तिम भजन, लेखे लाए स्वास स्वासा। ब्रह्मा शिव देवत

सुर आपणा आप अन्तिम तजण, ना देवे कोई भरवासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे घर, सरगुण शब्द धरवासा। सरगुण शब्द धुर धरवास, एका एक रखांयदा। करनहारा प्रभ पूरन आस, पूर्ब भिच्छया पांयदा। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, परम पुरख दया कमांयदा। हरिजन वसे सदा पास, सगला संग निभांयदा। जुग जुग जगत बुझाए प्यास, अमृत मेघ बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लहिणा सरगुण गहिणा दर्शन नेत्र लोचण आप वखांयदा। जुग जुग लहिणा लहिणेहारा, एका एक अख्वाया। आपणा भाणा आपे सहिणेहारा, दर दरवेशा फेरी पाया। आपणे धाम आपे बहिणेहारा, घर घर वेख वखाया। आपणा शब्द आपे कहिणेहारा, जगत जैकारा नाअरा एका लाया। लक्ख चुरासी बुरज ढहिणेहारा, ख़ाकी ख़ाक कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत साची वंड वंडाया। वंडे वंड हरि निरँकार, चारे जुग वंडाईआ। सतिजुग तेरा सति वरतार, वार अठारां रूप वटाईआ। त्रेता तेरी पावे सारा, दाते धारा आप चलाईआ। द्वापर तेरा पार किनारा, कृष्न मुरारा लए कराईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, इक्क लक्ख हज़ार सतारां सलोक पुराण अठारां गया लिखाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग वेखे जगत पसारा, बोध ज्ञान जणाईआ। ईसा मूसा कर त्यारा, एका नाअरा लाईआ। संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी प्रनाईआ। हक्क हकीकत वेख पसारा, लाशरीक आप हो जाईआ। ऐनलहक्क दए हुलारा, मुकामे हक्क ख़ुदाईआ। बेऐब होए परवरदिगारा, नूरो नूर अलाहीआ। खेले खेल विच संसारा, उम्मत उम्मती दए सुहाईआ। चौदां लोकां पावे सारां, चौदां तबकां वेख वखाईआ। मंगे मंग मुहम्मद दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। आपे बैठा अधविचकारा, नेत्र नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, देवे माण वड्याईआ। चौदां सद तेरा दुआरा, लोकमात दए सुहाईआ। अन्तिम करे पार किनारा, नबी रसूलां ख़ाक मिलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक काज़ी हकीर, फकीर शाह ना लाए कोई नाअरा, पीर दस्तगीर ना कोई सहाईआ। प्रगट होए अमाम मैहन्दी नूर अलाही कर उज्यारा, मुख नकाब इक्क टिकाईआ। चौदां तबकां मारे मारां, उन्नी उनीसा दए सज़ाईआ। ईसा मूसा कर ख्वारा, एका धक्का लाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकारा, घर घर पई दुहाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ पसारा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। माया ममता मोह विकारा, दुष्ट दुराचारां दए खपाईआ। ना कोई दीसे जीव हँकारा, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाईआ। अल्ला हू अन्ना हू ना लाए कोई नाअरा, बगल कुरान ना कोई उठाईआ। गल तसबी ना दिसे कोई सपारा, तीस बतीस ना कोई गणाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारा, गुर शब्द करे जणाईआ। शब्द खण्डा फड़ दो धारा, लोकमात आवे वाहो दाहीआ। मक्का मदीना पावे सारा, जल थल

वेख वखाया। फोल फोलाए ढूँघी गारा, उच्चे टिल्ले पर्बत लए हिलाईआ। इक्क वखाए सच दुआरा, ना कोई दूसर दर सुहाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कला वरताईआ। जोती शब्दी खेल अपारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जोधा सूरबली बलकारा, सूरबीर आप हो जाईआ । चार कुन्ट दहि दिशा एका लाए साचा नाअरा, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। हँ हँगता कर ख्वारा, एका रंगण रंग रंगाईआ। दर दर मंगण बण भिखारा, अलख निरँजण अलख जगाईआ। रूप अनूप शाहो भूप वड सिक्दारा, शाह सुल्तान आप हो जाईआ। ना कोई दीसे राज राजान जगत वणजारा, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। पाकी पाक बेऐब परवरदिगारा, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। निरगुण रूप सृष्ट सबाई करे निमस्कारा, पंज तत्त ना सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे मेट मिटाईआ। जग मुहम्मद चढ़या चा, मिल्या धुर फ़रमाना। मिले मेल सच ख़ुदा, सुणाए सच तराना। वेले अन्त ना होए जुदा, सदी चौधवीं खेल महाना। उॅची कूक दए सुणा, बांग सदा इक्क वखाना। अल्ला राणी लए प्रना, उम्मत नबी रसूल बन्न्हे गाना। सम्मत सम्मती वेख वखा, खेले खेल दो जहाना। सम्मत वीह सद पन्दरां लेख लिखा, किरपा करे श्री भगवाना। सम्मत सोलां दए हिला, घर दर होए वैराना। सम्मत सतरां ख़ाक मिला, ख़ाकी ख़ाक करे कुरबाना। दस अट्ठ अठारां दए रुड़ा, जल धारा इक्क वखाना। उन्नी उनीसा दए मिटा, मुस्लिम सुन्नी ना कोई टिकाना। बीस बीसा हरि जोत जगा, जगत जगदीसा आप अख्वाना। आपे जाणे आपणा भाणा नौ खण्ड पृथ्मी दए समझा, सत्तां दीपां एका गाणा। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, लक्खण दीप खेल महाना। पुष्कर आए फेरी पा, सलमल मेल मिलाना। जम्बु तेरा रंग रंगा, करोच जोग कमाना। सान तेरी धीर धरा, कुशा करे परवाना। आदि शक्त रूप वटा, भूषन लाल टिकाना। कंचन काया वेख वखा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाना। सूहा वेस वेस वटा, सचखण्ड करे परवाना। चिट्टी धार धार बंधा, गुरमुख साजन दस्म दुआरी मेल मिलाना। पीला बस्त्र तन छुहा, त्रैदेसां होए सुहाना। नीला नीली धारों पार करा, प्रगट होए विच मैदाना। काला सूसा ईसा मूसा तन दए पुआ, वेख वखाए शाह सुल्ताना। चीना रूसा संग रला, रसना चिल्ला चाढ़े तीर कमाना। शब्द खण्डा हथ्थ उठा, मेट मिटाए बली बलवाना। मनमुख आत्म रंडा दए करा, ना दीसे कोई टिकाना। भेख पखण्डा दए मुका मारे इक्क निशाना। साची वंडा दए वंडा, सति सति करे परवाना। सच सुच्च जग झोली पा, जोग जुगत इक्क वखाना। आत्म शक्ती इक्क टिका, पूरन भगती ब्रह्म ज्ञाना। बूंद रक्ती लेखे दए लगा, आवण जावण फंद कटाना। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी तेरी गिणती लए गिणा, लोआं पुरीआं फोल फुलाना। हरिजन रोवे नेत्र रक्खे मारे धाह, आया धुर फ़रमाणा। प्रगट

होया बेपरवाह, ना दिसे कोई निशाना। कलिजुग सतिजुग बण मलाह, दोहां देवे इक्क परवाना। कलिजुग झूठा छड्डणा थाँ, धरत मात वेख वखाना। सतिजुग साचे चढ़ने चा, जन भगतां मेल मिलाना। धरत मात बणाए साची माँ, वीह सौ इक्की बिक्रमी रुत्त सुहाना। पन्दरां कत्तक लेख दए लिखा, आप वरताए आपणा भाणा। राज राजाना शाह सुल्तानां चरन लए लगा, इक्क जणाई धुर फ़रमाना। शब्द डंका दए वजा, ऊँचां नीचां इक्क कराना। ज़ात पात कोई दीसे ना, वरन गोत ना कोई रखाना। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई एका धाम दए बहा, एका दर सुहाना। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए गंवा, धीरज धरे धर्म ध्याना। मोख मुक्त एका रिहा वखा, सरनगत आप भगवाना। घट घट वेखणहारा वेख रिहा वखा, आपे होया जाणी जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे परवाना। आप आपणा कर परवान, आपणी जोत जगाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। नानक मेला हरि मेहरवान, हरि साची करे रुशनाईआ। सच दुआरे देवे धुर फ़रमाण, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। नेत्र नैण दर्शन कर हरि भगवान, नानक निरगुण रूप समाईआ। पारब्रह्म हरि गुण निधान, देवे वड्ड वड्डी वड्याईआ। नाम सति जगत निशान, कलिजुग जीवां लए तराईआ। तेरा मेरा इक्क मकान, एका दर सुहाईआ। हउँ सेवक तूं शाह सुल्तान, शाहो भूप अख्वाईआ। हरि दाता देवे दानी दान, नानक भण्डार भराईआ। सतिगुर नानक कर परवान, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। हउँ हउँ गई जगत जहान, तूं तूं दिस आईआ। मेरा तेरा तेरा मेरा रूप भगवान, तेरी भगती मोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक देवे साचा वर, एका वर एका दर वड्डी वड्याईआ। नानक वर घर साचा पाउणा, निरगुण आप अल्हाया। एका इष्ट एक रखाउणा, एका मन्त्र ज्ञान दृढ़ाया। सोहँ शब्द रसना गाउणा, तेरा मेरा भेव ना राया। सृष्ट सबाई जीव जन्त साध सन्त सति नाम जपाउणा, साचा मार्ग लाया। जूठा झूठा पन्ध मकाउणा, वरन गोत इक्क कराया। नानक गुर कहे सुनाउणा, पुरख अबिनाशी तेरा भाणा मेरे सीस सुहाया। करे कराए जो तुध भाउणा, तेरा तेरी झोली पाया। कवण दुआरे पुरख अबिनाशी तूं लोकमात आउणा, आप आपणा दए समझाया। पुरख अबिनाशी कर्म कमाउणा, दस जामे वेख वखाया। गुर गोबिन्दे लेख लिखाउणा, माछूवाड़े ध्यान लगाया। सूला सथर इक्क विछोणा जगत नाता तोड़ तुड़ाया। शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाउणा, तेरा तेरे लेखे लाया। अकाल मूर्त तेरा रूप सजाउणा, एका पन्थ सजाया। पंचम जोती जोत जगाउणा, एका जोत जगाया। साचा खण्डा तन पहनाउणा, एका गात्रे रिहा लटकाया। अमृत आत्म जाम पिआउणा, अट्ठे पहर ख़ुमार रखाया। ऊँचां नीचां एका धाम बहाउणा, एका दर सुहाया। कलिजुग कूड़ा जगत कुरलाउणा, रो रो

दए दुहाया। गुर गोबिन्द लेखा इक्क लिखाउणा, पारब्रह्म एह समझाया। मेरा तेरा रूप समाउणा, तेरा मेरा रंग रंगाया। पूत सपूता लेखे लाउणा, दुष्ट दमन आप अख्वाया। जमन किनारा अन्त सुहाउणा, शाह बहादर वेख वखाया। किला शाही चरन टिकाउणा, आप आपणा करे रुशनाया। सचखण्ड हरि जोत मलाउणा, इक्क नदेड़ सुहाया। गुरमुख साचे एह समझाउणा, गुर पूरा ना मरे ना जाया। जगत अंगीठा ना फोल फलाउणा, एका क्रिया किरत कमाया। गुरु ग्रन्थ गुर इक्क मनाउणा, साचा पन्थ मनाया। कलिजुग वेला अन्तिम आउणा, वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत दए वहाया। साध सन्त ना किसे बचाउणा, औल्या पीर शेख़ कोई कम्म ना आउणा, पंडत पाधां ना कोई संग रलाउणा, ना कोई धीर धराउणा, वेद व्यासा वेख वखाउणा, पूत सपूता जोत जगाउणा, गौड़ ब्रह्मण नाउँ धराउणा, बजर कपाटी उच्चे टिल्ले डेरा लाउणा, जगत पहाड़ दिस ना आईआ। गोबिन्द पूरी आस कराउणा, सम्बल नगरी धाम सुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ एका बुरज बणाउणा, दर दरवाज़ा ना कोई वखाउणा, जीवां जन्तां दिस ना आउणा, हरि साचा कर्म कमाईआ। गुर गोबिन्द बली बलवाना मेल मिलाउणा, जगत चिन्द रहिण ना पाउणा, सर्ब बख्शिंद आप अख्वाउणा, गुणी गहिंद दया कमाउणा, सागर सिन्ध धार वहाउणा, मनमुख जीव करन जो निन्द एका बेड़े अन्तिम चढ़ाउणा, एका चप्पू लाईआ। निहकलंक कल जामा पाउणा, जोती जोत जोत जगाउणा, वरन गोत ना कोई रखाउणा, आलस निन्दरा विच ना आउणा, पीण खाण जगत तजाउणा, मात पित ना कोई बणाउणा, भाई भैण साक सैण ना कोई सदाउणा, जगत कुटम्ब ना कोई रखाईआ। गुरमुखां नाता जोड़ जुड़ाउणा, पुरख बिधाता मेल मिलाउणा, तत्त अठ्ठ लेखे लाउणा, नौ दुआरे पार कराउणा, दस्म दुआरी मेल मिलाउणा, सुरती शब्दी घर सुहाउणा, नारी कन्ता खेल खिलाउणा, आत्म सेजा दए सुहाईआ। सृष्ट सबाई आप उठाउणा, राज राजानां हुक्म जणाउणा, साधां सन्तां फड़ हलाउणा, मनमुख जीवां खाक रलाउणा, गुरमुख साचे मार्ग लाउणा, मेट मिटाए अवण गवना, अमृत मेघ बरसे सवना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वेखे खेल घर घर विच वेख वखाईआ।

* २१ चेत २०१५ बिक्रमी माला सिँघ दे घर पिण्ड समाल सर ज़िला फीरोज़पुर निरगुण जोत अनक रूप विच *

हरि निरगुण रूप अगम्म, परम पुरख सुल्तानया। अलख निरजंण जाणे आपणा कम्म, आप आपणा वेखे भाणया। निर्मल जोती पारब्रह्म, नूरो नूर महानया। एका दर सुहाए ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, आप आपणा खेल खिलानया। मात

पित ना लए कोई जम्म, ना कोई गोद उठानया। खाण पीण ना कोई तम, तृष्ना भुक्ख ना कोई वखानया। नेत्र नीर ना कोई छम्म छम्म, पंज तत्त ना कोई वखानया। आप आपणा जाणे नाम, नाउँ निरँकार आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए श्री भगवानया। प्रगट हो हरि भगवाना, आपणी जोत जगांयदा। निर्मल जोती कर महाना, प्रकाश प्रकाश समांयदा। आप आपणा होए जाणी जाणा, आपणी सिख्या आप पढ़ांयदा। आप आपणा बण विद्वाना, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आप आपणा करे माणा, आप आपणा माण धरांयदा। आप आपणा वेख निशाना, आप आपणा छत्र झुलांयदा। आप आपणा बण शाह सुल्ताना, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आप आपणा बण मेहरवाना, आप आपणी दया कमांयदा। आप आपणा वड सिक्दार अख्वाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा बण मरदाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा बन्नृ गाना, आप आपणा सगन मनांयदा। आप आपणा कर परवाना, आप आपणा अंग लगांयदा। आप आपणा मेल कर गुण निधाना, गुण आपणी झोली पांयदा। आप आपणा थान सुहाना, थिर घर वेख वखांयदा। आप आपणा मेल मिलाना, आप आपणा आप उपांयदा। प्रगट होए वाली दो जहानां, निरगुण निरगुण धार चलांयदा। खेले खेलणहार खेल महाना, ना कोई दूसर संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा थान सुहांयदा। आप आपणा थान सुहाए, पारब्रह्म बेअन्ता। चार दिवार ना कोई दिसाए, महिमा अगणत अगणता। बहिमंड खण्ड ना कोई वखाए, ना कोई जीव जन्ता। जेरज अंड ना बणत बणाए, ना कोई साधन सन्ता। गगन पताल ना कोई रखाए, आप आपणा वेख वखंता। मण्डल मण्डप ना कोई दिसाए, ना कोई जोगी जोग कमंता। रवि ससि ना कोई टिकाए, दिवस रैण ना कोई बणंता। धरत धवल ना कोई जणाए, आकाश प्रकाश ना वेख वखंता। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई डेरा लाए, जल थल ना कोई रहंता। सागर सिन्ध ना कोई नीर वहाए, ना कोई गागर ताल सुहंता। नाम रत्ती रत्नागर ना कोई रसना गाए, ना कोई जिह्वा मूल चुकन्ता। पंज तत्त ना कोई वखाए, त्रैगुण ना वेख वखंता। अठ्ठ तत्त ना रूप वटाए, नौ दर ना कोई खिलंता। दसम दुआरी ना डेरा लाए, ना कोई ताल वजन्ता। शब्द धुन ना कोई उपजाए, राग नाद ना कोई सुणंता। राग रागनी ना कोई गाए, ताल तलवाड़ा ना कोई वजन्ता। ब्रह्मा विष्न शिव कोई दिस ना आए, ना कोई वेस वटंता। खाणी बाणी ना कोई अलृाए, ना कोई धाम सुहंता। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा कोई दिस ना आए, ना कोई वेख वखंता। सर सरोवर ना कोई वखाए, तीर्थ तट ना कोई रखंता। वरन गोत ना कोई उपाए, ना कोई वंड वडंता। भेख पखण्ड ना कोई रचाए, नार सुहागण ना दीसे कोई कन्ता। रंग मजीठ ना कोई चढ़ाए, ना

कोई चोली रंगी वेख बसन्ता । आदि अन्त ना कोई वखाए, आप बणाए आपणी बणता। एकँकारा इक्क अकल्ला आप हो जाए, जोग जुगत जगत ना कोई वखंता। निरगुण साची धार चलाए, थिर घर मेला श्री भगवन्ता। अगम्म अगम्मड़ी कार कमाए, आप आपणा माण रखंता। अलख अलखणा अलख जगाए, आप आपणा दर सुहंता। पारब्रह्म प्रभ दया कमाए, आप आपणा मेल मिलंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल एका घर, थिर घर धाम वखंता। थिर घर साचा हरि टिकाणा, एका एक रखाया। आपे बैठ श्री भगवाना, आपणा थान सुहाया। इक्क वखाए सच निशाना, धर्मी धर्म चलाया। इक्क जणाए हरि बिबाना, निहकर्मी कर्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। थिर घर साचा हरि दरबारा, आप आपणा सुहांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकारा, शब्द सिँघासण आसण लांयदा। निरगुण रूप हरि निरँकारा, आदि निरँजण वेख वखांयदा। आप आपणी जाणे कारा, आप आपणी धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी चाल चलांयदा। साचा घर थिर दरबारी, एका एक सुहाया। प्रगट जोत हरि निरँकारी, निरगुण वेख वखाया। आपे होया बंक द्वारी, आप आपणा आसण लाया। आपे होया छत्र झुलारी, सीस ताज इक्क टिकाया। निर्मल जोती कर उज्यारी, आप आपणा कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि सुहावणा, पारब्रह्म करतार । दीपक जोती इक्क जगावणा, आदि जुगादि आकार। शाहो सुल्तान भूप अख्वावणा, हरि सच सच्ची सरकार। आप आपणा पकड़े दामना, आप आपणा मीत मुरार। आप आपणा होए जामना, आप आपणा कर तकरार। आप आपणा उचारे नामना, रक्खे नाउँ हरि निरँकार। आप आपणी पूरी करे कामना, माणे सेज अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उभार। थिर घर साचा हरि भरवासा, आपणा आप रखाया। प्रगट हो पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म अख्वाया। आदि जुगादि ना कदे विनासा, आदि अन्त समाया। एका मण्डल पाए रासा, एका वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। थिर घर वेख सच महल्ला, हरि आपणी बणत बणाईआ। आपे वस्सया इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रखाईआ। निहचल धाम उच्च अटला, अनभव प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाईआ। थिर घर बैठ आदि निरँजण, आपणी वंड वंडांयदा। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणी गंढु कटांयदा। आप आपणा करया मजन, आप आपणा रंड वखांयदा। आप आपणे चढ़या ताजन, आप आपणा ब्रह्मण्ड रचांयदा। आप आपणा चलाए जहाजन, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा रचया काजन, मंगलाचार आप अलांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा आप उपांयदा। आप आपणा हरि उपा, आपणा नाउँ धराया। जोती माता इक्क बणा, शब्दी सुत उठाया। शब्दी सुत झोली पा, आपणी रुत्त सुहाया। आपणी रुत्त आप सुहा, अबिनाशी अचुत्त अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटाया। आप आपणा अंग कटाए, आपणी कल वरताईआ। शब्द सुत नाउँ धराए, पुरीआं लोआं फेरा पाईआ। गगन पतालां रचन रचाए, मात पताल आकाश सुहाईआ। त्रै त्रै त्रै तेरी सेवा लाए, त्रै लोआं धार बंधाईआ। पंचम पंचम प्रभ वेख वखाए, पंचम मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी तत्त समाए, निरगुण नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। बणत बणा हरि भगवाना, आपणा रंग रंगाया। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, लोकमात वेख वखाया। खेले खेल गुण निधाना, गुणवन्ता भेख वटाया। प्रगट होए वाली दो जहानां, जीव जन्तां विच समाया। आपे पाए आपणी आणा, आपणे भाणे विच समाया। आपे आत्म ब्रह्म पछाना, पारब्रह्म अख्वाया। आपे रसना दमो दम चलाणा, स्वास स्वास आपे गाया। आप आपणा कर परवाना, आप आपणा पद समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी सुहाए दर, अन्दर मन्दिर साचे घर एका ताल वजाया। एका ताल हरि वजाए, आपणी दया कमाईआ। अनहद साचा राग सुणाए, नाड़ सतारी आप हिलाया। जोत निरँजण सेवा लाए, अट्ठे पहर डगमगाईआ। धूआँधारी परे हटाए, अन्ध अन्धेर ना कोई रखाईआ। पंचम धाड़ी डेरा ढाहे, पंचम ल्ए जगाईआ। पंचम मेला सहिज सुभाए, पंचम सखीआं मंगल गाईआ। बंक दुआरा इक्क सुहाए, दर दरवेसा वेख वखाए। इक्क अकल्ला एकँकारा निरगुण रूप आप वटाए, सरगुण बूझ बुझाईआ। सरगुण एका दूजा भउ चुकाए, तीजे नेत्र दरस दिखाईआ। चौथे पद आप समाए, परम पुरख अख्वाईआ। परमानंद डेरा लाए, निजानंद निज घर वेख वखाईआ। साचे मन्दिर कुण्डा लाहे, गुर गोपाला दए मिलाईआ। दीन दयाला दया कमाए, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। शब्द दोशाला तन पहनाए, नार सवाणी वेख वखाईआ। सुरत सवाणी गले लगाए, आप आपणे अंक समाईआ। साची सेजा हरि शब्द हरि शब्द हंढाए, आप आपणी दया कमाईआ। अमृत मेघ इक्क बरसाए, सीतल धार चलाईआ। सो पुरख निरँजण आप आपणा वेख वखाए, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल हरि, हरि साचा खेल खिलाईआ। साचा खेल करावणहारा, आदि पुरख अबिनाशा। लोकमात जोत जगावणहारा, जीवां जन्तां दए भरवासा। जुग जुग वेस वटावणहारा, वेखणहारा जगत तमाशा। सतिजुग साचे दए सुहा, आपे पाए आपणी रासा। त्रेता तेरा पार किनारा, राम रमईआ बलि बलि जासा। द्वापर मंगया इक्क दुआरा, भगत वछल जगत भरवासा।

कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणा वासा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचा वेख वखाईआ। अकाल मूर्त एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। नाद तूरत अपर अपार, अनादी धुन वजाईआ। साची सूरत सिरजणहार, दिस किसे ना आईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ मूर्ख मूढ़त, माया मोह वधाईआ। गुरमुख विरला मंगे प्रभ चरन धूढ़त, नेत्र लोचण नैण रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुन्ट अन्धेरा। ना कोई साजन मीत मुरार, ना कोई तेरा मेरा। एका भुल्लया हरि करतार, हउमे हँगता पाया घेरा। नेत्र दिसे ना सच दुआरा, माया ममता भरमा डेरा। आत्म खुल्ल्हे ना बन्द किवाड़ा, आवण जावण ना चुक्के गेड़ा। लग्गे वा ना तत्ती हाढ़, ना कोई दीसे संझ सवेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे हक्क निबेड़ा। कलिजुग तेरा काला रंग, लक्ख चुरासी रंग रंगाईआ। ना कोई दूसर दिसे संग, ना कोई संग निभाईआ। चार यारी होई नंग, संग मुहम्मद इक्क कुरलाईआ। अल्ला राणी मंगां रही मंग, दर भिच्छया कोई ना पाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द रंगीले बैठ पलँघ, थिर घर दो जहानां वेख वखाईआ। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। नाम वजाए इक्क मृदंग, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप जगाईआ। लोकमात दुआरा आए लँघ, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। कूड़ कुड़यारा चढ़ी कंग, माया ममता दए दुहाईआ। पंज तत्त विकारा लगा जंग, त्रै देशा भेड़ भिड़ाईआ। काया माटी काची वंग, अन्तिम भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा मुख वखाईआ। कलिजुग तेरा काला मुक्ख, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी घर घर धूंएँ रहे धुख, पंखी पंछी तरवर सरवर रहे कुरलाईआ। मानुख मानस रोवण मात कुक्ख, साचा सुख ना कोई दिसाईआ। जूठ झूठ पया थुक्क, मुख काली शाही लाईआ। हरया बूटा रिहा सुक्क, अमृत धार ना कोई चुआईआ। अन्तिम वेला रिहा ढुक, हरि गोबिन्द लेख लिखाईआ। कूड़ा पैंडा रिहा मुक्क, कूड़ कुड़यारा दए खपाईआ। मनमुख जीव लुकया रहे ना कोई गुठ, चारों कुन्ट दहि दिशा फोल फोलाईआ। पुरख अबिनाशी आपे तुठ, गुरमुख साचे लए तराईआ। तीर निराला जाए छुट्ट, रसना चिल्ला इक्क चलाईआ। नौ खण्ड पृथमी लए लुट्ट, सत्तां दीपां इक्क लड़ाईआ। राज राजानां शाह सुल्ताना खाली हथ्थ फड़ाए ठुठ, दर दर मंगण भिच्छया कोई ना पाईआ। सच दवारिउँ गए रुट्ठ, राए धर्म दए सजाईआ। सच दवारिउँ कढ्ढे कुट्ट, कर्मखण्ड ना कोई वड्याईआ। धर्म खण्ड जड़ देवे पुट्ट, ना कोई दूसर मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी काली शाहीआ।

कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट पसारया। जूठा झूठा मीत मुरारा, ना कोई दीसे मीत मुरारया। एका भुल्लया हरि निरँकारा, निरगुण मेल ना कोई करा रिहा। मन मति करे ख्वारा, गुरमति ना कोई जणा रिहा। जगत तत्त कर प्यारा, नाड़ी रत्त तपा रिहा। धीरज सति ना कोई सहारा, सति सन्तोख ना कोई वखा रिहा। अट्ठ सट्ठ ना कोई किनारा, तीर्थ तट ना कोई बचा रिहा। साध सन्त ना पावे सारा, जीव जन्त कुरला रिहा। मन्दिर मस्जिद मठ शिवदवाला, गुरदुआरा ना कोई सुहा रिहा। माया ममता कर प्यारा, मुला शेख़ मुसायक पंडत पांधा आप आपणा कर्म कमा रिहा। कलिजुग कूड़ा थक्का मांदा, नेत्र नीर रो रो वहा रिहा। कीती करनी अन्त पछतांदा, कर्मा गेड़ ना कोई कटा रिहा। जूठ झूठ रसना गांदा, ईसा मूसा वेख वखा रिहा। सदी चौधवी वेखे चौधवां चन्द, आकाश आकाशा राह तका रिहा। संग मुहम्मद चार यारी बैठा बन्द, बन्दी छोड़ बंधन पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ दुआरे वेख वखा रिहा। नौ दर जगत दुआरा, हरि हरि बणत बणाईआ। कलिजुग भुल्ले जीव गंवारा, पूरन ब्रह्म ना कोई जणाईआ। आत्म ब्रह्म ना पायण सारा, पारब्रह्म ना मेल मिलाईआ। वरन बरन ना दए अधारा, जूठी झूठी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप शाहो भूप, वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाईआ।

३०४ ०७

* पहली विसाख २०१५ बिक्रमी दरबार विच लिख्त होई जेठूवाल ज़िला अमृतसर *

पारब्रह्म प्रभ निहकलंक, लोकमात वज्जी वधाईआ। शब्द वजाए साचा डंक, राज राजाना रिहा उठाईआ। प्रगट होया वासी पुर घनक, भुल्ल रहे ना राईआ। खेले खेल बार अनक, कलिजुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। वाली हिन्द उठ निधान, हरि साचे जोत जगाईआ। मेट मिटाए जीव शैतान, लोकमात रहिण ना पाईआ। संग रलाए मन्त्री प्रधान, एका राग सुणाईआ। पन्थ ख़ालसा होए हैरान, पंचम जेठा दए दुहाईआ। मुस्लिम सुन्नी वेख अञ्जील कुरान, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पंडत पांधे करन ध्यान, कूड़ कुड़यारा संग रखाईआ। मुल्ला शेख़ सर्ब कुरलाण, नेत्र नैण रहे उठाईआ। ग्रन्थी पन्थी जीव जहान, पारब्रह्म भेव ना राईआ। लिखे लेख हरि शाह सुल्तान, भारत खण्ड ख़ुशी मनाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, ऊँचां नीचां इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत हरि प्रकाश, आपणी कल वरतांयदा। प्रगट होया शाहो शाबाश,

पन्थ ख़ालसा आप उठांयदा। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी होण निरास, हरि गोबिन्द दिस ना आंयदा। नाम वस्त ना किसे पास, ढोलक छैणे जगत वजांयदा। लेखे लग्गे ना कोई स्वास, नेत्र नैणां दरस कोई ना पांयदा। हरि वेख वखाए पृथ्मी आकाश, वेखणहार दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा डंक वजांयदा। डंक वजाए हरि निरँकारा, आपणी कल वरताईआ। सृष्ट सबाई करे ख्वारा, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां दए हुलारा, नौ खण्ड पृथ्मी आप हिलाईआ। सत्तां दीपां पार किनारा, उच्चे टिल्ले वेख वखाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अगम्मड़ी धार चलाईआ। हड्ड मास चमड़ा ना कोई पसारा, पंज तत्त ना कोई दिसाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, निरगुण हथ्थ उठाईआ। सरगुण पावे साची सारा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत हरि निरँकारा, हरि हरि रूप समाया। प्रगट होए विच संसारा, आप आपणा भेख वटाया। नानक गोबिन्द कर प्यारा, एका धार वहाया। जीव जन्त ना पाए सारा, साध सन्त होए हलकाया। भरमे भुल्ले भरम गंवारा, माया पड़दा कोई ना लाहया। अग्नी तत्त इक्क पसारा, पंज तत्त चलाया। त्रैगुण माया वेखे भेख न्यारा, भेखाधारी भेख ना राया। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता हरि भगवन्ता आपे जाणे आपणी कारा, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण रूप हरि निरँकारा, आपणा आप उपांयदा। आप आपणा कर पसार, वेखणहार आप हो जांयदा। प्रगट हो चवीआं अवतार, चौदां लोकां वेख वखांयदा। चौदां हट्टां जगत पसार, चौदां चौदां धार चलांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, रवि ससि आप उठांयदा। जीवां जन्तां मारे मार, साधां सन्तां वेख वखांयदा। गुरमुख नारी कन्ता इक्क भतार, सच सुहञ्जणी सेज हंढांयदा। मेल मिलाए अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोत निरँजण कर प्यार, आदि निरँजण दया कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, परम पुरख अख्वांयदा। अलख अलखणा अलख अलख रिहा उचार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि अवल्ला, आपणा आप कराया। आप वसाया सच महल्ला, सच सिँघासण आसण लाया। आपे वस्सया जला थला, पुरख अबिनाशी दया कमाया। आपे होया वला छला, अछल अछल्ल कराया। आपे जाणे निहचल धाम अटला, लोकमाती वेख वखाया। आपे जोती शब्दी रला, शब्द अनादी डंक वजाया। आपे करे कराए हल्ला, नाम जैकारा आप बुलाया। आपे वस्सया डूँघी डल्ला, उच्च महल्ला आपे डेरा लाया। आपे मेटे दूई

द्वैती सल्ला, आपे वंडन वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर आदि अबिनाशा, भेव कोए ना राया। वेखण आया जगत तमाशा, जुग जुग वेस वटाया। जोत सरूपी पावे रासा, शब्द सरूपी डंक वजाया। मात गर्भ ना करया वासा, पिता पूत ना कोई रखाया। नाम ना जपया स्वास स्वासा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। ना कोई रखाया सगला साथा, सगला संग ना कोई निभाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई हवन कराया। ना कोई तीर्थ अठ्ठ साठा, गुर दर मन्दिर अन्दर मस्जिद ना डेरा लाया। धाम अगम्मड़े पारब्रह्म प्रभ आया नाठा, आप आपणा रूप वटाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटाया। निरगुण रूप अकल कलधारा, निरगुण वेख वखांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, जोती जोत समांयदा। जोत सरूपी कर पसारा, जोती जोत वेख वखांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, जोत प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ धरांयदा। निहकलंका हरि बलवाना, पारब्रह्म अखवाया। प्रगट वाली दो जहानां, आपणा नाउँ धराया। खेले खेल सृष्ट महाना, आदि जुगादि भेव ना राया। जोधा सूर बली बलवाना, तीर निशाना इक्क रखाया। एका चिल्ला इक्क कमाना, एका रिहा उठाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, एका नैण खुल्हाया। नौ खण्ड पृथ्मी कर कुरबाना, सत्तां दीपां भेट मंगाया। लक्ख चुरासी बद्धा गाना, साचा सगन मनाया। पंचम जेठी कर अशनाना, आप आपणा रूप वटाया। शब्द घोड़ा कर परवाना, सोलां कलीआं आसण लाया। भेव ना पाइन वेद पुराणा, खाणी बाणी दिस ना आया। खेले खेल गुण निधाना, अञ्जील कुराना वेख वखाया। बस्त्र शस्त्र इक्क सजाना, तन श्रृंगार कराया। एका खण्डा पहन किरपाना, भगवत रूप वटाया। चण्डी चमके नाम मैदाना, चण्ड प्रचण्ड वखाया। मेट मिटाए झूठ निशाना, भेख पखण्डा रहिण ना पाया। जेरज अंडा वंड वंडाना, उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। काया वेखे सच मकाना, पंज तत्त बणत बणाया। मन मति बुध होए हैराना, त्रैगुण वेस वटाया। त्रैगुण अन्तिम होए हैराना, ब्रह्मा वेता संग रलाया। ब्रह्मा रो रो करे ध्याना, वेला अन्तिम आया। वेद कतेब ना करे पछाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शिव शंकर मारे इक्क तराना, त्रिसूला हथ्थ उठाईआ। बाशक तशका गल लटकाना, माला कंठ सुहाईआ। ना कोई दीसे संग नौजवाना, सगला संग ना कोई वखाईआ। बिन हरि कोई ना दीसे दो जहाना, बेड़ा पार कराईआ। नेत्र रो रो नीर वहाना, नैण नैण रही बिगसाईआ। पुरख अबिनाशी एका देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे मेटणहार निशाना, आपे लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम प्रगट होया निहकलंक

बली बलवाना, लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज दए मिटाईआ। पारब्रह्म हरि जोत निराला, जोती जोत अख्वांयदा। प्रगट होया अकाल अकाला, अकल कला अख्वांयदा। सर्ब जीआं हरि दीन दयाला, दया निध अख्वांयदा। चरन भिखार रखाए काल महांकाला, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे फल लगाए सृष्ट सबाई डाल्हा, आपे तोड़ तुड़ांयदा। आपे त्रैगुण माया पाए जंजाला, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा। आपे गुर पीर साध सन्त उपजाए साचा लाला, आप आपणे विच समांयदा। आप बणाए मन्दिर मसीत गुर दुआरे अग्नी जोत ज्वाला, आपे मेट मिटांयदा। आपे सृष्ट सबाई होए रखवाला, आपे ख़ाक मिलांयदा। आप वजाए जुग जुग आपणा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। आपे वेख वखाए लक्ख चुरासी काया घाला, आत्म अन्तर डेरा लांयदा। आपे दीपक जोती निरगुण हरिजन बाला, आपे अज्ञान अन्धेर वखांयदा। आपे तोड़े बजर कपाटी लग्गा ताला, आपे मुख भवांयदा। आपे अमृत आत्म मारे इक्क उछाला, सर सरोवर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस नर नरेश आपणा आप वटांयदा। नर नरेश हरि भगवाना, हरि हरि आप अख्वाया। जोत सरूपी पहरया बाना, विष्नूं रूप वटाया। विष्नूं होया जाणी जाणा, सेवक सेवा रिहा कमाया। आपे वरते आपणे भाणा, दूसर भेव कोए ना राया। धुरदरगाही साचा राणा, अकाल पुरख आप हो आया। जन भगतां देवे दर दुआरे माणा, सूरत नूरत इक्क दरसाया। वेख वखाए दो जहानां, मण्डल मण्डप फेरा पाया। सोहँ शब्द रखाया इक्क बिबाना, सो पुरख निरँजण दया कमाया। आदि जुगादी खेल महाना, खेलणहार आप रघुराया। भगत जग करे पछाना, आप आपणी बणत बणाया। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म सरनाया। एका मारे तीर निशाना, सोए रिहा उठाया। दरस दिखाए दया कमाए चतुर्भुज हरि बिधनाना, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम डंक वजाया। निहकलंका हरि भगवन्ता, एका एक अख्वाईआ। पकड़ उठाए साधन सन्ता, सन्त कन्त आप हो जाईआ। जुगत जगत बणाए साची बणता, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। सृष्ट सबाई तेरी कलिजुग झूठी मिटे जगत रुत्त बसन्ता, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। धाम अव्वला पारब्रह्म अकल्ला इक्क सुहंता, चार वरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। निरगुण रूप हरि उजाला, एका एक कराया। प्रगट होया गुर गोपाला, हरि गोबिन्द वेस वटाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत जगाया। दरस दिखाए काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेस अनेक

आपणा आप वटाया। निरगुण रूप हरि करतार, करता पुरख अख्वाया। सरगुण मेला विच संसार, जुग जुग आण कराया। चेला गुर इक्क द्वार, एका दर सुहाया। नाम भरया सच भण्डार, भरनहार आप अख्वाया। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआया। मरन जन्म दए संवार, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। कर्म निहकर्मी पावे सार, धर्मी धर्म धराया। वरन अवरनी वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाया। इक्क अकल्ला एका एकँकार, एका कार कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग प्रगट हो अन्तिम निहकलंक अवतार, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि शाहो भूप, हर घट आप समांयदा। वेख वखाए चारों कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। मेट मिटाए जूठ झूठ, माया ममता वंड वंडांयदा। सन्त सुहेले जो जन जुग जुग गए रूठ, कर किरपा मेल मिलांयदा। दस पंज गया तुठ, बीस बीस नाल रलांयदा। आप बंधाए एका मुठ, एका तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस दोए धार, दोए जोड़ जुड़ाया। जोती शब्दी कर प्यार, शब्दी जोती मेल मिलाया। निरगुण निरगुण बणे नार, निरगुण निरगुण कन्त हंढाया। निरगुण निरगुण दए अधार, निरगुण निरगुण धीर धराया। निरगुण निरगुण करे कार, निरगुण निरगुण कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोए दोए मेल मिलाया। दोए मेला नर निरँकारा, आपणा आप करांयदा। आप सुहाए सच दुआरा, आपे वेख वखांयदा। आपे भर हरि भण्डारा, आपे आप वरतांयदा। आपे बणे दर भिखारा, आपे भिच्छया पांयदा। आपे बण घर वरतारा, आपणी झोली आप भरांयदा। आपे बणया मीत मुरारा, सखा सुहेला आप अख्वांयदा। साचा मेला सच दुआरा, साचा हरि करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। एका रूप गया समा, दूजे जोत जगाईआ। दूजी जोती आप जगा, एका रंग वटाईआ। एका रंग आप वखा, दूजा वेस कराईआ। दूजा वेस आप करा, एकँकारा समाईआ। एकँकारा नाम धरा, दूजा बोल बुझाईआ। दूजा बोला आप जणा, एका शब्द समाईआ। एका शब्द आप अल्ह्, दूजा ढोल वजाईआ। दूजा ढोला आपे गा, एका बूझ बुझाईआ। एका दूजा भउ मिटा, आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वड्डी वड्याईआ। आपे एक एक आकारा, एका एक करांयदा। आपे दूजा पसर पसारा, दो जहानां वेख वखांयदा। आपे एका बन्ने धारा, एका धार चलांयदा। आपे खेले दो जहानां खेल न्यारा, खेलणहार आप अख्वांयदा। आपे एका एक कर आकारा, एका रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूआ दूआ एका एका गुण वखांयदा। एका गुण जोती नूर, हरि हरि आप वखाया। दूजा शब्द साची तूर, एका नाद अल्ह्या।

एका हरि सर्ब भरपूर, सर्बकल अख्वाया। शब्दी रंग चाढ़े गूढ़, एका दूजा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए उपाया। निरगुण निरगुण आप उपा, चले चाल निराला। जोती दीपक आप जगा, हर घट होए शब्द गोपाला। आपणा खेल आप खिला, चले चाल निराला। दीपक जोती आप जगा, हर घट होए शब्द गोपाला। पंचम मेला सहिज सुभा, धुन अनादी एका ताला। ब्रह्मादी हरि खोज खुजा, दस्से राह सुखाला। आदि जुगादी आपे चले आपणी चाला, वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले आपणी चाला। पंचम मेला पंचम चेला, पंचम रूप वटाया। पंचम खेल आपणा खेला, खेलणहार अख्वाया। पंचम होया सज्जण सुहेला, सगला संग निभाया। पंचम जाणे आपणा वेला, वेला वक्त सुहाया। पंचम वसे रंग नवेला, धाम अवल्लड़े डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम दर इक्क सुहाया। पंचम दर पंचम घर, पंचम हरि हरि पाया। पंचम चुक्के दूजा डर, पंचम भउ मिटाया। पंचम नहाता एका सर, पंचम मैल गंवाया। पंचम पौड़े साचे चढ़, पंचम दर सुहाया। पंचम तोड़ हँकारी गढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि पंचम वेख वखाया। पंचम पाया आदि निरँजण, पंचम मेल मिलांयदा। पंचम मेला दर्द दुःख भय भंजन, पंचम संग निभांयदा। पंचम चरन धूढ़ कराए साचा मजन, पारब्रह्म प्रभ दया कमांयदा । पंचम आया पड़दे कज्जण, पंचम पड़दा पांयदा। पंचम नगारे घर पंचम वज्जण, पंचम राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा वेखे दर, पंचम दर सुहांयदा। पंचम दर हरि सुहञ्जणा, वड वड्डी वड्याईआ। जगे जोत आदि निरँजणा, आठ पहर रुशनाईआ। ना कोई दूसर दिसे होर सज्जणा, ना को बणत बणाईआ। ना घड़या ना भज्जणा, ना कोई मेट मिटाईआ। ना कोई नगारा वज्जणा, सुर ताल ना कोई रखाईआ। आप आपणे दुआरे बहि बहि हरि आपे सजणा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे थाउँ थाँईंआ। पंचम मेला अगम्म अथाह, बेपरवाह समाया। पंचम मेला सहिज सुभा, पंचम लए जगाया। पंचम उठाए फड़ फड़ बांह, पंचम नाम ध्याया। पंचम पिता आपे माँ, पिता पूत आप अख्वाया। पंचम देवे ठंडी छाँ, सिर पंचम हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला मेल मिलाया। पंचम मेला सच दरगाह, साचा आप करांयदा। एकँकारा बण मलाह, बेड़ा पार करांयदा। दूजी देवे शब्द सलाह, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। पंचम जपाए एका नाँ, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा । निरगुण दया रिहा कमा, दयानिध आप अख्वांयदा। वेद कतेब कोई जाणे ना, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। साध सन्त कोई पछाणे ना, पारब्रह्म प्रभ वेस वटांयदा। आदि अन्त कोई जाणे ना, जानणहार ना कोई अख्वांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा मेल दर, पंचम वेख वखांयदा। पंचम मुख पंचम ताजा, पंचम जोत जगाईआ। पंचम हरि ग़रीब निवाज़ा, पंजम वेख वखाईआ। पंचम रक्खणहारा लाजा, पंचम मोह चुकाईआ। पंचम देवे अस्व ताजा, शब्द घोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। पंचम मारे एका वाजा, पंचम धुन अल्लाहीआ। पंचम वजाए सच रबाबा, नानक निरगुण गाईआ। पंचम बौहड़े मक्का काअबा, पंचम वड वड्याईआ। पंचम मेल मिलाए दो दो आबा, पंचम बेपरवाहीआ। पंचम देवे चरन रकाबा, दो जहानां फेरा पाईआ। पंचम मुख रखाए नकाबा, ना कोई पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा मेल कर, पंचम वेख वखाईआ। पंचम हरि राजन राजा, राज जोग अख्वांयदा। पंचम पंचम साजन साजा, पंचम भोग भुगांयदा। पंचम देवे साचा दाजा, पंचम मूल चुकांयदा। पंचम संवारे आपे काजा, पंचम पूर करांयदा। पंचम वेखे देस माझा, कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, दर दूजा वेखे साचा घर, पंचम चुक्के जगत डर, एका घर सुहांयदा। एका दर एका दाता, जुग जुग आप अख्वाया। दूजी देवे भगत सुगाता, राम नामा झोली पाया। मेट मिटाए ज़ाता पाता, ऊँच नीच ना कोई रखाया। अमृत देवे बूंद स्वांता, गुर गोबिन्द सेवा लाया। अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे झाता, दिस किसे ना आया। अट्ठे पहर इक्क अकांता, अकल कला अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। इक्क अकाल इक्क दयाल, एका रूप समाया। दूजा वज्जे साचा ताल, शब्दी नाद रखाया। पंचम घाल रहे घाल, सेवक सेव कमाया। फल लगाए आत्म डाल्ह, वेखणहार अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द होए सहाया। जोती नूर हरि निरँकार, आपणी धार बंधाईआ। गोबिन्द वेस कर अपार, पूत सपूता नाउँ धराईआ। आपे बैठा अधविचकार, दो जहानां वेख वखाईआ। करता पुरख करनेहार, अगम्म अगम्मड़ी कार कराईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण खेल रचाईआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, जन भगतां लए तराईआ। एका दूजा भउ निवार, एका रंग रंगाईआ। पंचम सोहे दर दरबार, पंचम वेख वखाईआ। पंचम वखाए सच निशान, पंचम रिहा उठाईआ। पंचम जोधा सूरबीर बली बलवान, पंचम खण्डा रिहा चमकाईआ। पंचम पाए एका आण, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। पंचम घर दर परवाना, गोबिन्द ख़ुशी मनाईआ। तेरा रूप श्री भगवाना, तेरे विच समाईआ। तेरा नाम धुर फ़रमाणा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। अकाल मूर्त ना करे कोई पछाना, रूप रेख ना कोई वखाईआ। तेरा नाद धुन तराना, अनादी राग अल्लाईआ।

आप आपणा कर कुरबाना, तेरा तेरी झोली पाईआ। तेरा लेखा धुर फ़रमाणा, सेवक सेव कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ बद्धा गाना, साचा सगन मनाईआ। एका खण्डा नाम खिच म्याना, गात्रे तन आप पहनाईआ। दिस ना आए दो जहानां, लोआं पुरीआं ना वेख वखाईआ। ना कोई जाणे जीव निधाना, लक्ख चुरासी भेव ना राईआ। ना कोई लिखे लेख कतेब पुराणा, रसना जिह्वा ना गुण गाईआ। आपणा लेखा आप पछाना, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी तेरा भाणा, तेरे भाणे सद समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। आप आपणी दया कमा, हरि साचे बूझ बुझाईआ। एका रूप आप अख्वा, दूजे गया समाईआ। पंचम जोती लए जगा, पंचम भेट चढ़ाईआ। पंचम मेला लए मिला, पंचम करे जुदाईआ। पंचम सखीआं मंगल गा, पंचम राग अलाईआ। पंचम धुन अनादी रिहा वजा, आत्मक इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, दूजे चुक्के जगत डर, पंचम वेखे हरि रघुराईआ। पंचम वेखे पद निरबाना, पंचम मेल मिलाया। पंचम चले हरि हरि भाणा, पंचम तेल चढ़ाया। पंचम होया जाणी जाणा, पंचम सज्जण सुहेल बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, एका दूजा वेख वखाया। एका जोती नूर जगा, दूजा वेस वटांयदा। गुर गोबिन्द गया समा, सतिगुर पुरख अख्वांयदा। पंचम रूप इक्क दरसा, एका वेख वखांयदा। बस्त्र शस्त्र गहिणा पा, तन श्रृंगार करांयदा। पंचम भाणा सहिणा रिहा जणा, पंचम भेव चुकांयदा। पंचम लहिणा देणा रिहा मुक्का, पंचम मोह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा वेख घर, पंचम संग निभांयदा। पंचम साथ सगला पाया, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। आप आपणा सीस झुकाया, हरि वड वड्डी वड्याईआ। तेरा रूप तेरी कुदरत तेरे अन्दर नज़री आया, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। आसा पूरत मेल मिलाया, ममता मोह चुकाईआ। सगला संग दए निभाया, सीस ताज टिकाईआ। अंगी कार अंग लगाया, वड वड्डी वड्याईआ। धरत मात पलँघ विछाया, केस गढ़ रुत्त सुहाईआ। आप आपणा मंग मंगाया, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला साचे दर, एका जोती मिले हरि, दूजे शब्द वज्जे वधाईआ। एका जोती सगन मनाए, दूजा शब्द गाए गीत अनादा। पंचम मेला मेल मिलाए, खेले खेल विच ब्रह्मादा। एक भिच्छया झोली पाए, पारब्रह्म आदि जुगादा। जगत रिच्छया लोकमात कराए, धुरदरगाही देवे साची दादा। नाम खण्डा इक्क वखाए, जगत नेत्र दिस ना आए, गुरमुख विरले लाधा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द दित्ता एका वर, पूत सपूता सोहया दर, मेल मिलाया माधव माधा। एका वस्त झोली पा, एका राग सुणाया। दूजा शब्द रिहा जणा, शब्दी

शब्द उपाया। पंचम बस्त्र तन छुहा, एका रंग रंगाया। एका अमृत जाम पया, एका धार वहाया। एका सर सरोवर दए नुहा, अठसठ तीर्थ मूल चुकाया। जगत द्वारी घेरा पा, गुर गोबिन्द पड़दा पाया। हेरा फेरी कर कर गया भुला, भेव किसे ना आया। पंचम लेखा आपणी हथ्थी आप लिखा, दो अक्खर मुख रखाया। सो पुरख निरँजण अन्तिम होए सहा, सतिगुर रूप वटाया। हँ हँगता दए मिटा, हा हा हरि हरि वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मूल चुकाया। गुर गोबिन्दा अन्दर वड़, वेखे हरि हरि भाणा। सच महल्ले उप्पर चढ़, मिल्या मेल शाह सुल्ताना। ना कोई सीस ना कोई धड़, साचे तख्त आप सुहाना। दूसर दर ना कोई रिहा खड़, इक्क अकल्ला श्री भगवाना। ना कोई अक्खर रिहा पढ़, ना कोई होए कुरबाना। गुर गोबिन्द सरनी गया पड़, पारब्रह्म होए मेहरवाना। लोकमात लगाई तेरी जड़, तेरा मेरा रूप वटाना। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाना। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मास ना मुख लगाना। अमृत आत्म हँकारी तोड़े गढ़, शब्द शब्दी बख्शे सच कृपाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा वेख घर, पंचम देवे साचा दाना। पंचम दाना हरि घर पाया, गोबिन्द वड वड्याईआ। पप्पा पुरख सुल्ताना इक्क ध्याया, अकाल पुरख मनाईआ। ओते टिप्पी इक्क बंधाया, हँगता बन्द कराईआ। थथ्था थित वार इक्क रखाया, साची रुत्त सुहाईआ। वावा विष्नूं रूप वटाया, सिहारी करे कुड़माईआ। शशा शंकर गलो लाहया, भोले नाथ ना कोई सहाईआ। नन्ना निरगुण खेल कराया, दोए औंकड़ वेख वखाईआ। दो जहानी फेरा पाया, हरि वड वड्डी वड्याईआ। वावा वेला अन्तिम आया, हरि साची जोत करे रुशनाईआ। सस्सा सतिगुर पूरा पाया, पूरन ब्रह्म जणाईआ। ऐड़ा कन्ना इक्क वखाया, ख़ालसा ख़ालस भेव ना राईआ। खक्खा खेल रिहा कराया, कलिजुग वड्डी वड्याईआ। विसाख दिहाड़ा इक्क मनाया, गुर गोबिन्द ढहि पया सरनाईआ। पहला पौड़ा मात लगाया, ना कोई वेख वखाईआ। धुरदरगाही आया दौड़ा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वेखे परखे मिठ्ठा कौड़ा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या पाई भिच्छया गुर गोबिन्दे लेखा लिख्या ना कोई मेट मिटाईआ। लिख्या लेख हरि गोबिन्द, हरि हरि धुर फ़रमाणा। सृष्ट सबाई मेटे चिन्द, भेव चुकाए राजा राणा। गहर गम्भीर गवर सागर सिन्ध, जल नीर ना कोई बुझाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उपजाए आपणी बिन्द, आप आपणा नाउँ धराना। आपणा लेख आप लिखा, आपणी कल वरताईआ। मूंड मुंडाए वेस वटा, रूप अनूप समाईआ। केसाधारी बणत बणा, केस गढ़ सुहाईआ। ग़रीब निमाणे गले लगा, चार वरन सरनाईआ। एका अक्खर रिहा जणा, दूजा भउ चुकाईआ। ग़रीब निमाणे

गले लगा, चार वरन सरनाईआ। अकाल पुरख प्रभ लैणा मना, ना दूसर सिर झुकाईआ। वेले अन्तिम होए सहा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। आवे जावे वेस वटा, वेस अनेका आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला साचे घर, घर सच वज्जी वधाईआ। पंचम मंगल साचा गाया, एका हरि लिव लाईआ। दूजा गुर मेल मिलाया, कुदरत रूप वटाईआ। एका अक्खर जाप जपाया, निरगुण सच्ची सरनाईआ। सतिगुर पूरा होए सहाया, आवे जावे ना मरे ना जाईआ। रसना जिह्वा जो जन ध्यावे, दिवस रैण वेख वखाईआ। परमानंद गुरसिख समावे, निजानंद दरसाईआ। जोती जोत जोत उपावे, जागरत जोत वखाईआ। साचा सिक्ख सिक्ख मोहे भावे, सिक्खी सिख्या इक्क सिखाईआ। लेखा लिख्या ना कोई मिटावे, लिखणहार हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता साचा वर, शब्द शब्दी करे जणाईआ। गुर गोबिन्द तेरा मेला, एका एकँकारया। दूजी वेरा बणे चेला, सोहे बंक द्वारया। पंचम होए सखा सुहेला, अमृत आत्म देवे ठंडी ठारया। आपणा खेल पारब्रह्म प्रभ आपे खेला, बाहर वसे नौ द्वारया। गुरमुखां होए सज्जण सुहेला, शब्दी शब्द करे प्यारया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, साची सेवा आप लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क निशाना धुर फ़रमाणा, गुर गोबिन्द आप जणा रिहा। गुर गोबिन्द सुण धुर फ़रमाणा, दोए जोड़ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरा रूप महाना, लेखा लेख ना कोई लिखाया। आदि जुगादी तेरा भाणा, मोहे मस्तक मंग लगाया। सति सरूपी बद्धा गाना, सति सन्तोख समाया। आवण जावण तेरे नाला, तेरा संग रखाया। नेड़ ना आए काल महांकाला, किशन बिशन ना कोई ध्याया। ना कोई हवन जोत ज्वाला, आदि शक्त इक्क मनाया। वरन गोत ना कोई रखवाला, बिन हरि तेरे ना कोई होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, लहिणा लहिणा झोली पाया। अन्तिम वेला हरि निरँकार, आपणा वेस वटाए। निहकलंका जामा धार, जोती जोत जगाए। शब्दी डंका अपर अपार, आदि पुरख वजाए। राउ रंकां करे ख़बरदार, साध सन्त उठाए। माया ममता मलेश दर दए दुरकार, जूठ झूठ रहिण ना पाए। गुरमुख साचे कर प्यार, धारी केस वेखे मूंड मुंडाए। चार वरनां इक्क प्यारा, एका दूजा भउ चुकाए। पंचम मेला सच दरबार, दर दुआरा इक्क सुहाए। आप आपणी किरपा धार, आपणी बणत बणाए। नारी कन्त इक्क प्यार, सति सरूप समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाए। गुर गोबिन्द सुण तराना, नेत्र रो रो नीर वहाया। पुरख अबिनाशी तेरा भाणा, तेरे दर सुहाया। तेरा मेरा आवण जाणा, विछोड़ा घोड़ा जोड़ा ना वेख वखाया। पुरख अबिनाशी कर परवाना, देवे माण सवाया। तेरा मन्दिर सच टिकाना,

हरि साचा आसण लाया। शब्द सरूपी बणे बिबाणा, हरि भगवाना, डेरा लाया। राग अनादी इक्क तराना, पारब्रह्म सुणाया। आदि जुगादी खेले खेल महाना, आप आपणी कल वरताया। कलिजुग जीव होए निधाना, पंच तत्त हलकाया। मन मति करे वैराना, पंज शैताना संग रलाया। गुर दर मन्दिर ना कोई वेखे हरि भगवाना, बेईमानां डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा वेखे साचा दर हरि मन्दिर इक्क सुहाया। हरि मन्दिर हरि सच दुआरा, एका एक उपाया। नौ दुआरे वस्सया बाहरा, पंज तत्त ना बणत बणाया। हड्ड मास नाड़ी रत ना लाया कोई गारा, रक्त बूंद ना कोए उपाया। महल्ल अटल अचल्ल उच्च मुनारा, प्रभ साचे आप सुहाया। आपे बैठ परवरदिगारा, नूर अलाही वेख वखाया। मुकामे हक्क पाए सारा, हक्क हकीकत दए दुहाया। लाशरीक इक्क ख़ुदाया, शरअ शरायत ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता साचा वर, दर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि सुहाउणा, हरि वड्डी वड्याईआ। जोती जामा भेख वटाउणा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्द आप उपजाउणा, शब्दी शब्द नाउँ धराईआ। कल्गी तोड़ा सीस लगाउणा, जोती जोड़ा मेल मिलाईआ। चिट्टा अस्व इक्क दड़ाउणा, नीला नीली धार पार कराईआ। पारब्रह्म प्रभ फेरा पाउणा, लोकमात वज्जे वधाईआ। ब्रह्मा वेता आप उठाउणा, अट्ठे नेत्र दए खुल्लाईआ। शिव शंकर जाग आप खुल्लाउणा, भोले नाथ भरम गंवाईआ। करोड़ तेतीसा फड़ हिलाउणा, सुरपति राजा इन्द आप उठाईआ। लक्ख चुरासी आप जगाउणा, एका डंक वजाईआ। राजा राणा तख्तों लौहणा, सीस ताज ना कोई रखाईआ। मावा पुत्तरां नाता जगत तड़ाउणा, कलिजुग वड्डी वड्याईआ। भाईआं भैणां संग रखाउणा, मस्तक टिक्का काली शाहीआ। साची सिख्या ना कोई सखाउणा, मनमति जगत पढ़ाईआ। गुरमति विद्या हथ्थ ना आउणा, साचा धर्म ना कोई धराईआ। गुरु ग्रन्थ घर घर वकाउणा, जगत हट्ट इक्क चलाईआ। शब्द खोज गुरु किसे ना पाउणा, ग्रन्थी पन्थी रसन हलकाईआ। अकाल तख्त अकाल पुरख ना किसे मनाउणा, अकाल मूर्त ना नज़री आईआ। रामदास सर सरोवर किसे ना नहाउणा, दुरमति मैल ना कोई गंवाईआ। कलिजुग जीवां वेसवा घर बणाउणा, धीआं भैणां पति गंवाईआ। आपणा कीता अन्तिम आपे पाउणा, वेखणहार सृष्ट सबाईआ। लिख्या लेख ना किसे मिटाउणा, गुर गोबिन्द हुक्म चलाईआ। आपणा लेखा आप छुपाउणा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। अन्तिम सरसे भेट चढ़ाउणा, कलिजुग जीव नेत्र दरस ना सके पाईआ। निहकलंक प्रगट हो फेर लिखाउणा, गुर गोबिन्द सेवा लाईआ। साचा नगर इक्क वसाउणा, सम्बल नाउँ धराईआ। सस्सा सतिगुर इक्क रखाउणा, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। बब्बा बोध ज्ञान इक्क कराउणा, अकाल मूर्त सच्ची सरनाईआ। लल्ला लेख फिर लिखाउणा, सतिजुग

साची बणत बणाईआ। पंचम मीता पंचम दर सुहाउणा, पंचम राग अलाईआ। एका रूपा दूजा वेस वटाउणा, जोती शब्दी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन आप रचाईआ। अपणी रचन आप रचा, आपणा कर्म कमाया। आपणा लेखा आप लिखा, आपे रिहा पूर कराया । भरम भुलेखे जगत भुल्ला, भरमी भरम भुलाया। धारी केसा कोई जाणे ना, गुर गोबिन्द फेरा पाया। दस दस्मेसा आया रूप वटा, शब्दी शब्द समाया। इक्क अदेसा रिहा करा, पारब्रह्म सरनाया। गणपति गणेश ना कोई लए मना, ना कोई दूसर सीस झुकाया। धुर संदेसा रिहा सुणा, एका जाप जपाया। ब्रह्मा विष्न महेषा दए मिटा, आप आपणा लेखा पूर कराया। दर दरवेशा एका अलख रिहा जगा, अलख निरँजण आप अख्वाया। एका भिच्छया रिहा पा, एका ब्रह्म जणाया। सच दुआरा रिहा सुहा, हरि साचे डेरा लाया। अगम्म अगम्मड़ा खेल करा, अगम्मड़ी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा वेस कर, हरि पंचम रंग रंगाया। पंचम रंग हरि हरि रत्ता, राग रत्न उपाया। एका सिख्या एका मता, एका बूझ बुझाया। एका सरूप एका सता, एका चेतन्न रिहा कराया। एका जोग एका जता, एका धीरज रिहा धराया। एका साधन एका हट्ठा, एका तट रिहा वखाया। एका पूजा एका पाठा, एका इष्ट देव मनाया। एका तीर्थ अट्ठ साठा, इक्क अशनान कराया। एका नाम पल्ले बन्न्हे गाठा, दो जहानां संग रखाया। ना कोई फेरे माला इक्क सौ आठा, अट्ठ अठोतरी ना कोए बणाया। सतिगुर पूरा पुरख अकाला आपे तुठा, दे दर्शन पार कराया। गुरसिख गुरमुख अन्तिम करे एका मुट्ठा, लुकया कोई रहिण ना पाया। ना कोई दीसे जूठा झूठा, कलिजुग अन्तिम दए रुढ़ाया। माया राणी वखाए खाली ठूठा, दर दर फिरे हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आप वसाया साचा घर, आपे वेखण आया। साचा घर हरि वसाए, कलिजुग अन्त निशानी। कलिजुग तेरी वंड वडाए, साढे तिन्न हथ्थ कुरबानी। भेख पखण्डा दए मिटाए, मारे तीर निशानी। नार दुहागण रंडा ना कोई दिसाए, ना कोई दीसे जीव अभिमानी। कलिजुग कन्ढा पार कराए, हरि शाहो भूप सुल्तानी। जेरज अंडा वेख वखाए, उत्भुज सेत्ज करे पछानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी बाणी। आपणा दर आप सुहाउणा, आपणी बणत बणांयदा । नौ द्वार जगत वखाउणा, नौ दर वेख वखांयदा। शब्द सिँघासण इक्क विछाउणा, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। पुरख अबिनाशी संग रलाउणा, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी आप हलाउणा, इक्क हुलार दवांयदा। मनमुख जीवां आप भुलाउणा, मनमति पड़दा पांयदा। मलेछ दरवेश आप कराउणा, करनी किरत ना कोए करांयदा। कर ख्वार फेर मिलाउणा, वीह सौ वीह बिक्रमी राह तकांयदा। उन्नी

उनीसा खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। अट्ठ अठारां धार चलाउणा, धरनी धरन धरांयदा। सति सतारां हुक्म चलाउणा, राज राजानां वेख वखांयदा। सम्मत सोलां हरि सति करौना, भेव कोई ना पांयदा। पन्थ ख़ालसा दर दर रलाउणा, ना कोई किसे बचांयदा। सम्मत पन्दरां लेख लिखाउणा, ना कोई मेट मिटांयदा। नौ दुआरे धाम सुहाउणा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। दसवें जोती जोत जगाउणा, शब्दी शब्द गुर अख्वांयदा। दो पंज इक्क धाम बहाउणा, नौ नौं लेख लिखांयदा। नौ पंज कर्म कराउणा, दोए धार मिटांयदा। दोए धार वक्त सुहाउणा, पंज नौ उठांयदा। पंच नौ रचन रचाउणा, दो दो वेख वखांयदा । दो पंज नौ साचा सगन मनाउणा, थित वार आप गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उपाए होए सहाए, आपे वेख वखांयदा। दो सौ उनाठ बरस, बरसी बरस कमाया। पुरख अबिनाशी कर तरस, जोती जामा भेख वटाया। गुर गोबिन्द मेटी हरस, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पहली विसाख वीह सौ पन्दरां गुरमुखां अमृत आत्म देवे बरस, निझर धार वहाया। वेखणहारा अरस कुर्श , नूरो नूर समाया। सुभाग दिहाड़ा हरिसंगत हरि पाया दरस, गुर गोबिन्द बूटा लाया। निरगुण जोत लोकमात धरत ओते आई फर्श, गुरसिक्खां धूढ़ मस्तक लाया। लौहण आया पिछला कर्ज़, दस दस्मेस वेस वटाया। हरिसंगत हरि करे अर्ज़, मन मति मरज़ रहिण ना पाया। एका गुर शब्द आदि जुगादी देवे धुर दी तर्ज़, अनहद सेवा लाया। कलिजुग अन्तिम आपणा पूरा करन आया फ़र्ज़, सेवक सेवा रिहा कमाया। सतिगुर पूरे रही सदा सदा इक्क गरज़, गुरसिख प्रेम भिच्छया देवे झोली पाया। कलिजुग माया जीवां जन्तां रही वरज, नौ दुआरे कोई ना पार कराया। साधां सन्तां होए हर्ज, नेत्र नैण पारब्रह्म ना दर्शन पाया। सतिगुर पूरा सदा सदा शब्द सरूपी रिहा गर्ज़, गढ़ हँकारी दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका जोती नूर धर, दूजा शब्द ल्या वर, पंचम मेला आपे कर, वेखणहारा नौ द्वार, दर दसवां इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा मेल मिलाया।

हरिसंगत हरि पाया, हरि दर वज्जी वधाईआ। हरिसंगत मंगल गाया, हरि हरि रूप समाईआ। हरिसंगत हरि वेख वखाया, भिनंड़ी रैण संग रलाईआ। हरिसंगत हरि रंग चढ़ाया, नेत्र नैण वेख वखाईआ। हरिसंगत हरि मंगण आया, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। भिनड़ी रैनड़ीए तेरा सच द्वार, हरिसंगत मेल मिलाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, आपणी कल वरताया। सखा सुहेला मीत मुरार, लोकमात वेख वखाया। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, एका घर सुहाया। इक्क अकेला पावे सार, एकँकारा रूप वटाया। पारब्रह्म गुर

लै अवतार, शब्दी शब्द समाया। शब्द गुर परउपकार, परउपकारी आप अख्वाया। चार वरन सुहाए इक्क द्वार, सो पुरख निरँजण दया कमाया। ऊँचां नीचां भेव निवार, राउ रंकां रंग रंगाया। साधां सन्तां दए सहार, जीवां जन्तां मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति देवे साचा वर, आत्म झोली आप भराया। गुरमति साची आत्म धर, शब्द करे कुड़माईआ। इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। आप खुल्हाए बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ उखेड़े जड़, माया ममता मोह चुकाईआ। हउमे हँगता जाए सड़, एका अग्नी अग्ग लगाईआ। दरस दिखावे अग्गे खड़, आप आपणा रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सच महल्ला फेरी पाईआ। हर घट अन्दर बैठा वड़, आप आपणा अंग कटाईआ। जोत निरँजण नाम धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। साध सन्त लए फड़, शब्द विचोला इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे वर, एका ढोला गीत सुणाईआ। नाम वैरागी साचा ढोला हरि हरि आप अल्हाया। चार वरन जैकारा एका बोला, एका गोबिन्द पाया। पंज तत्त विकारा जगत तोला, तोलणहार आप अख्वाया। लक्ख चुरासी आपे मवला, मौला रूप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वाया। वड दाता हरि हरि निरँकारा, हरि हरि आप अख्वांयदा। आपे देवणहारा जगत भण्डारा, आपे भिच्छया पांयदा। आपे करे कराए नाम वणजारा, एका वणज करांयदा। आप उपजाए धुन धुन्कारा, धुन अनादी आप सुणांयदा। आपे दीपक जोती कर उज्यारा, निर्मल नूर दरसांयदा। आपे बोले शब्द जैकारा, अनहद राग अल्हांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, हर घट आप समांयदा। आपे वेखे काया मन्दिर डूँघी कन्दर बजर कपाटी उच्चे टिल्ले पर्बत फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, एका मन्त्र नाम ज्ञान दृढ़ांयदा। नाम मन्त्र सर्ब गुर देवा, आदि शक्त समाया। अलख निरँजण अलख अभेवा, आदि जुगादि अख्वाया। आदि निरँजण साची सेवा, जुग जुग करदा आया। आपे वस्सया रसना जेहवा, आप आपणा नाम जपाया। जन भगतां कौस्तक मणीआ लाए थेवा, तिलक लिलाटी वेख वखाया। नमो देव सर्ब गुर देवा, निरगुण रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे एका वर, एका मार्ग लाया। एका शब्द नाम ज्ञानन, ज्ञान बोध प्रचण्डा। चरन कँवल बख्शे ध्यानन, खोज खोजाए ब्रह्मण्डा। एका देवे शब्द निशानन, लेख चुकाए जेरज अंडा। एका मारे तीर निशानन, पार कराए साचा कन्ढा। दर दुआरे देवे मानन, गुरमुख वंडाई साची वंडा। एका राग सुणाए कानन, मेट मिटाए भेख पखण्डा। गुर मूर्त गुर नेत्र गुर

नैनण बख्शे चानण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, तन पहनाए दया कमाए एका नाम खण्डा। नाम वस्त सच भिबूती, तन शृंगार कराया। चरन प्रीती इक्क अहूती, एका हवन सिखाया। वेख वखाए दहि दिशा चारे कूटी, हरि पवणी पवण समाया। शब्द उठाए साचा दूती, दूर दुराडा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेल मिलाया। शब्द गुर आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म जणाईआ। इक्क सिखाए साचा धर्म, धर्मी धर्म धराईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन ज़ात पात ना कोई रखाईआ। अबिनाशी करता एका सरन, सरनगत आप हो जाईआ। आप चुकाए मरन डरन, जिस जन दया कमाईआ। कादर करता तरनी तरन, तारनहार सृष्ट सबाईआ। जन भगतां खोल्हे नेत्र हरन फरन, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, हरि नाम वड्डी वड्याईआ। हरि नाम हरि हरि रूप, हरि हरि उपाया। हरि नाम शाहो भूप, शाह सुल्तान अख्वाया। हरि नाम सति सरूप, सति सरूप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, एका तत्त जणाया। एका नाम एका तत्त, एका बूझ बुझाईआ। एका शब्द एका रथ, एका रिहा चलाईआ। एका भगत एका वथ, एका झोली पाईआ। एका जगत एका अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकल आपे समरथ, अकल कला अख्वाईआ। भिन्नड़ी रैण मिले वधाई, हरिसंगत हरि हरि पाया। नेत्र लोचण नैण ख़ुशी मनाई, दरसी दरस दिखाया। उठ उठ वेखे चाँईं चाँईं, गुरमुख साजण मेल मिलाया। गुर सतिगुर पकड़नहारा बांहीं, जगत विछोड़ा दए कटाया। सदा सुहेला देवे ठंडीआ छाईं, जोती शब्दी जोड़ा जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वक्खर नाम जोग, जुगत जग सिखाया।

* पहली जेठ २०१५ बिक्रमी दरबार विच बचन होए जेठूवाल *

आदि पुरख अनादि, निरगुण निरंकारया। खेले खेल सर्ब ब्रह्मादि, निरगुण पसारया। आपे जाणे आदि जुगादि, जुग जुग खेल अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे आकारया। एका नूर हरि निरँकारा, आदि पुरख अख्वाया। जोत सरूपी लै अवतारा, लोकमात उठ धाया। लोआं पुरीआं बन्न्हे धारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जेरज अंड पावे सार, उत्भुज सेत्ज लए तराया। नार दुहागण वेखे रंड, मनमुख दए सजाया। गुरमुखां बन्न्हे पल्ले नाम गंढ, धुरदरगाही लै के आया। पुरख अगम्मा आपे रिहा वंड, ना कोई

दूसर संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। आदि पुरख एकँकारा, अकल कला कल धारीआ। जोत सरूपी जोत उज्यारा, जोती जोत अपारीआ। निरगुण खेले खेल अपारा, वड वड संसारीआ। आदिन अन्ता इक्क अवतारा, सतिगुर पुरख करतारीआ। ना कोई नारी ना कोई नारा, निरगुण वेस अपर अपारीआ। मात पित ना करे प्यारा, पिता गोद ना कोई उठा रिहा। भाई भैण ना कोई विचारा, साक सैण ना कोई बणा रिहा। आपे जाणे आपणी कारा, जुग जुग आप करा रिहा। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सारा, त्रैगुण वेस वटा रिहा। पंज तत्त करे प्यारा, पंचम मोह चुका रिहा। पंचम करे तन श्रृंगारा, पंज पंजी मेल मिला रिहा। अट्ठ तत्त वसे बाहरा, फल फलवाड़ी वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरता रिहा। आपणी कल हरि वरतंता, आदि पुरख अबिनाशा। हरिजन मेले साचे सन्ता, देवे चरन भरवासा। मेल मिलाए साचे कन्ता, होए दासी दासा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, देवे शब्द सच्चा भरवासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए पृथ्मी आकाशा। पृथ्मी आकाश हरि हरि डेरा, आपणी कल वरताईआ। प्रगट होए कलिजुग तेरी अन्तिम वेरा, जोती जामा भेख वटाईआ। लोआं पुरीआं पावे घेरा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए उठाईआ। लक्ख चुरासी करे निबेड़ा, हक्क हकीकत फोल फोलाईआ। जन भगतां बन्न्हणहारा बेड़ा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आपे वेखे काया खेड़ा, अन्दर मन्दिर खोज खोजाईआ। काया मन्दिर खुल्ह्रा वेहड़ा, हरि बैठा आसण लाईआ। पंजां चोरां मुक्के झेड़ा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जूठ झूठ दए उखेड़ा, माया ममता मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा खेल खिलाईआ। आदि पुरख हरि अगम्मड़ा, एका कल वरतांयदा। आपणा खाली रक्खे पलड़ा, दो जहानी फेरी पांयदा। जन भगतां राह दस्से सुखलड़ा, निज घर आत्म वेख वखांयदा। सच दुआरा आपे मलड़ा, आसण सिंघासण इक्क विछांयदा। जोती शब्दी आपे रलड़ा, पवण स्वास चलांयदा। ज्ञान दीपक आपे बलड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। दूई द्वैती मेटे सलड़ा, हउमे रोग गवांयदा। आदि पुरख इक्क अकलड़ा, हर घट डेरा लांयदा। पावे सार जल थलड़ा, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि करतारा, आपणा आप करांयदा। पारब्रह्म गुर लए अवतारा, एका नाउँ धरांयदा। अकाल अकाला दीन दयाला खेल निराला, खेलणहार आप अख्वांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग आप चलांयदा। काल महांकाल होए रखवाला, जन भगतां बेड़ा बन्ने लांयदा। दरस दिखाए काया धर्म सच्ची धर्मसाला, उच्चे टिल्ले मन्दिर वेख वखांयदा।

गुरमुख साजन साचे लाला, लाल अनमुल्लड़े आप तरांयदा। मेल मिलाए गुर गोपाला, गोबिन्द वेस वटांयदा। दरस दिखाए आदि शक्त जोत ज्वाला, रैण दिवस सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रंगाए हरि अवल्ला, एका रंग रंगाईआ। थिर घर बैठ इक्क अकल्ला, आपणा वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी आपणा घर आपे मल्ला, दिस किसे ना आईआ। आपे करदा आपणा हल्ला, आपे रिहा उठाईआ। आपे होए सहाई जला थला, डूँघी कन्दर पार कराईआ। आपे फड़े हथ्थ विच भल्ला, आपे तीर चलाईआ। आपे मेटे दूई द्वैती सला, आपे होए रथ रथवारीआ। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, समरथ पुरख अख्वाईआ। आपे लोकमात हो जाए झल्ला, ख़ाक आपणी आप उडाईआ। आपे खेले खेल घड़ी घड़ी पल पल्ला, खेलणहार दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। कलिजुग अन्तिम उठ बल धार, प्रभ साचा आप जगांयदा। प्रगट होया हरि निरँकार, निरगुण वेस वटांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। चतुर्भुज भुजां रिहा संवार, अष्टम् सेवा लांयदा। भेव गुझ ना जाणे जीव गंवार, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। पढ़ पढ़ वेद रहे विचार, पुराण अठारां लेख लिखांयदा। कादर करते तेरी कार, तेरा कर्म ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लहिणा आपणी झोली आपे पांयदा। आपणा लहिणा हरि निरँकार, आपणी झोली पाईआ। जन भगतां देवां विच संसार, वड्डी वड वड्याईआ। जोत सरूपी जामा धार, आपणा कर्ज़ा लाहीआ। सम्मत वीह सौ चौदां ना किया उधार, पिछला मूल चुकाईआ। सम्मत पन्दरां हो ख़बरदार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए हुलार, सत्तां दीपां लए जगाईआ। साधां सन्तां मारे मार, शब्द डण्डां हथ्थ उठाईआ। राज राजान शाह सुल्तान रोवण ज़ारो ज़ार, सीस ताज ना कोई रखाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सार, हरि गोबिन्द जोत जगाईआ। चार वरनां बख्शे इक्क प्यार, ऊँचां नीचां भेव मिटाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका घर वखाईआ। एका रूप आप करतार, करता पुरख अख्वाईआ। राम कृष्न कर प्यार, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। राणी अल्ला वेख विचार, ऐनलहक्क इक्क ख़ुदाईआ। बेऐब परवरदिगार, एका एक नूर अलाहीआ। गुरु गुर गुरू करतार, करनेहार इक्क अख्वाईआ। सति पुरख सति सिरजणहार, साख्यात जोत जगाईआ। अलख निरँजण अलखणा अलख रिहा विचार, आप आपणी बणत बणाईआ। अगम्म अगम्मड़े बन्ने अगम्मड़ी धार, भेव कोए ना पाईआ। हड्ड मास नाड़ी चमड़े वस्सया बाहर, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। एका इक्क सच्चा दरबार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, आप आपणा वेख वखाईआ। निर्मल जोत होए उज्यार, प्रकाश प्रकाश समाईआ। आपे जाणे आपणी

कार, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जामा भेख वटाईआ । वेद व्यासा बण लिखार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा लेख लिखाईआ। प्रगट हो विच संसार, उच्चे टिले पर्बत आसण लाईआ। किसे दिस ना आए मीत मुरार, पंडत पांधे रहे राह तकाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखार, लेखा गया लिखाईआ। प्रगट होवे हरि करतार, आप आपणा वेस वटाईआ। चार वरन रखाए एका धार, एका शब्द करे कुड़माईआ। अल्ला वाहिगुरू राम प्यार, कृष्ना किसना विच समाईआ। खाणी बाणी मीत मुरार, अञ्जील कुराना रिहा जगाईआ। वेद पुराणा करे अधार, कलिजुग अन्तिम मूल चुकाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र उग्घाड़, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी केहड़ी करे मात कार, भेव अभेदा भेव ना राईआ। शिव शंकर बाशक तशका गल लाहे हार, इक्क त्रिसूला हत्थ उठाईआ। निरगुण तेरा रूप अपार, भोले नाथ भुलाईआ। करोड़ तेतीसा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। गण गंधर्ब होए ख्वार, वेले अन्त ना कोए सहाईआ। लक्ख चुरासी रही पुकार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। धर्म राए रिहा ललकार, आप आपणा वेख वखाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, धर्म सपुत्री दर बहाईआ। लक्ख चुरासी वेख नार भतार, कन्त कन्तहूला कवण सजाईआ। नाल रला मुहम्मदी यार, अल्ला राणी कर कुड़माईआ। हत्थीं मैहन्दी इक्क प्यार, दिशा लहिंदी वेख वखाईआ। ईसा मूसा हो त्यार, हरि साचा रिहा जगाईआ। सम्मत चौदां लेख लिखाया अपर अपार, गुरमुखां लहिणा लहिणे झोली पाईआ। सम्मत पन्दरां पाए धरत मात उत्ते भार, ना सके कोई उठाईआ। धरत मात करे गिरयाज़ार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, खुलड़े केस रही कुरलाईआ। पुरख अगम्मड़े कर विहार, आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोत मात उपजाईआ। सम्मत पन्दरां पंचम जेठ, हरि जोती जोत जगांयदा। जन भगतां रक्खे साया हेठ, मनमुखां अग्नी अग्न लगांयदा। ना कोई दीसे वड वड सेठ, शाह सुल्ताना ख़ाक मिलांयदा। कलिजुग भन्ने कौड़े रेठ, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भाणा साचा राणा धुर फ़रमाणा एका एक सुणांयदा। धुर फ़रमाणा बेपरवाह, आपणा आप सुणाया। बिन गुर पूरे दीसे ना कोई मलाह, ना बेड़ा बन्ने लाया। कलिजुग रोवे मारे धा, ना होवे कोई सहाया। कूड़ कुड़यारा गल पया फाह, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। जूठ झूठ मुख काला शाह, ना सके कोई धवाया। मनमुख रोवण ना देवे कोई ठंडी छाँ, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। जिन्हां दु:खाई धरत माँ, लोकमात रहिण ना पाया। जिन्हां खाधी वढ्ढ वढ्ढ गां, वेले अन्तिम दए सजाया। मक्का मदीना शाह प्रबीना देवे ढाह, आप आपणा फेरा पाया। चार यारी संग मुहम्मद वेख वखा, हू हू

नाअरा एका लाया। आदि पुरख तेरा भुल्लया नाँ, तेरा मेरा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाया। कलिजुग तेरी काली धार, हरि जोत जोत जगांयदा। वेख वखाए सर्ब संसार, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। इक्क अकल्ला इक्क आकार, एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलांयदा। पंचम धार चलाए जेठा सुत्त, पंचम जेठ वड्डी वड्याईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत्त, आपणी करनी किरत कमाईआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, आपे वेख वखाईआ। मनमुखां मुख पाए थुक्क, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जन भगतां सन्तां आपणी गोदी लए चुक्क, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेट मिटाईआ। सिँघ शेर दलेर रिहा बुक्क, कलिजुग वेख वखाईआ। सम्मत सोलां रिहा ढुक्क, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। आप आपणी लाहे भुक्ख चौथे जुग ख़ुशी मनाईआ। चार जुग चौकड़ी पाए आपणी कुक्ख, आपे लए उपजाईआ। जड़ उखेड़े उलटे रुक्ख, मात गर्भ दए हलाईआ। हरे बूटे जाण सुक्क, ना सके कोई बचाईआ। वेद पुराणी अञ्जील कुरानी खाणी बाणी तेरा पड़दा ना सके कोई चुक्क, जगत विद्या ना कोई चतुराईआ। चरन दुआरे पारब्रह्म अकाल पुरख निहकलंक तेरी मेरी जाए मुक्क, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। शब्द निशाना तीर चल्लया ना जाए रुक, लोआं पुरीआं दए हिलाईआ। जन भगतां पैंडा रिहा मुक्क, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका साचा जाप जपाईआ। एका जाप सोहँ सो, बिन हरि अवर ना दीसे को। जन भगत सन्त दुलारा, काया मन्दिर अन्दर दुरमति मैल लए धो। एका बख्शे चरन प्यारा, जोत निरँजण करे लो। करे खेल अगम्म अपारा, दरस दिखाए अग्गे हो। डूँघी भवरी करे पारा, हड्ड मास नाड़ी चमड़े ना जाए छो। सुखमन तेरा पार किनारा, पंच विकारा रिहा रो। पंचम शब्द सच्ची धुंनकारा, गुरमुख विरला सुणे को। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे एका वर, वेले अन्त सृष्ट सबाई नेत्र दोवें रही रो। नेत्र दोवें नीर, कलिजुग वहाया। ना कोई सहाई पीर फकीर, दस्तगीर ना कोई बचाया। ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, ना कोई साचे मेल मिलाया। ना कोई बजर कपाटी देवे चीर, दूई द्वैती पड़दा दए मिटाया। ना कोई शब्द निराला मारे तीर, अमृत सीर ना कोई प्याया। एका गुर वड दाता सूरबीर, गुरमुख साचे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखण आया, आप आपणा वेस वटाया। पंचम जेठ पंचम पूता पारब्रह्म वड्याईआ। आप आपणा मोह चुकाउणा, हरि चरन एका लिव लाईआ। एका दूजा भेव गवाउणा, तीजा नेत्र वेख वखाईआ। चौथे पद इक्क समाउणा, घर साचे मिले वड्याईआ। पंचम

मेला आप कराउणा, पंचम वाला साचा माहीआ। छेवां मन्दिर इक्क वसाउणा, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण दरस दिखाउणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। अट्ठां तत्तां भाग लगाउणा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध साथ रलाईआ। नौ दुआरे बाहर कढाउणा, गुरमुख देवे सच सलाहीआ। दसवें दर आप बहाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। धुन अनादी राग सुणाउणा, एका ताल वजाईआ। आत्म सर सरोवर गुरमुख साचे आप नहाउणा, हँस काग बणाईआ। नारी कन्त मेल मिलाउणा, एका सेज विछाईआ। सुहञ्जणी रैण भिन्नड़ी भैण तन श्रृंगार कराउणा, एका बस्त्र वेख वखाईआ। नैणां कजला निरगुण आप वखाउणा, जगत नेत्र दिस ना आईआ। धाम अगम्मड़े आप बहाउणा, शब्द रंगीला पलँघ वछाईआ। पावा चूल ना कोई रखाउणा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण ना दिशा कोई जणाईआ। आप आपणे रंग रंगाउणा, एका रंग हरि रघुराईआ। दस्म दुआरी बाहर कढाउणा, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। सुन्न समाधी विच ना सौणा सुन अगम्मी वेख वखाईआ। एका घर आप रखाउणा, गुरमुख साचे संग रखाईआ। सो पुरख निरँजण नज़री आउणा, सतिगुर वड्डी वड्याईआ। हँ हँगता मेट मिटाउणा, हरि का रूप दरसाईआ। हरी हरि हरि आप अख्वाउणा, आप आपणा तत्त हंढाईआ। सोहँ देस प्रभ इक्क समझाउणा, गुरमुख पूरे भुल्ल ना राईआ। पंज तत्त चोला किसे कम्म ना आउणा, सुरत शब्दी शब्द समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड देवे वड्याईआ। सचखण्ड निरगुण धार, सन्तन वर घर पाया। पुरख अबिनाशी मिल्या मीत मुरार, साची नारी वेस वटाया। नारी कन्ता इक्क प्यार, एका सेज हंढाया। एका घर एका घर बार, एका रंग रंगाया। एका महल्ल उच्च मुनार, ना कोई दूसर वेख वखाया। सन्त जना हरि कर प्यार, आप आपणे मार्ग लाया। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा चरन उठाया। जिस जन बख्शे सच प्यार, अलख अलखणा एका अलख जगाया। होए प्रतक्ख साचे घर वसणा, आप आपणा रूप दरसाया। आपे रोणा आपे हस्सणा, आप आपणा रिहा चुप्प कराया। आपणा तीर निराला आपे कसणा, आपे रिहा लगाया। आपणे दुआरा आपे वसणा, आपे रिहा वखाया। आपणे घर विच्चों आपे नस्सणा, आपे पार कराया। पुरख अगम्मड़ा घर अगम्मड़े वसणा, वेद कतेब लेख भेव ना किसे लिखाया। ब्रह्मा देवे ना कोई दच्छणा, चार वेद ना कोई जणाया। पुराण अठारां लेखा लेख ना किसे लिखणा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गिणाया। आपणा मंगल आपे पा, आपे रिहा सुणाईआ। आपणी सतार आप वजा, आपे राग अल्लाईआ। आपणी धार आप चला, आपे वेख वखाईआ। आपणी कार आप करा, आपे रिहा कराईआ। करता पुरख करनेहारा आप अख्वा, अबिनाशी पुरख नाउँ धराईआ। अगम्म अगोचर भेव ना रा, आदि अन्त इक्क वड्याईआ । अकाल

मूर्त वेख वखा, अनभव प्रकाश कराईआ। आदि शक्त नाम धरा, लाल वेस वेस वटाईआ। सच सिँघासण आसण ला, आपणा आप उपाईआ। चतुर्भुज भुज दया कमा, आपणे विच समाईआ। आपणी सेवा आप कमा, आपणी भिच्छया आपणी झोली पाईआ। आपणा इष्ट आपणी देवी आप मना, आपणा रूप वटाईआ। आपणी सृष्ट आप उपा, आपे वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम दए खपा, ना देवे कोई सलाहीआ। कलिजुग कूड़ा भुल्लया राह, कूड़े धन्दे लाईआ। नौ खण्ड नौ दर नौ नौं नाथ नौ नौं वार ध्याईआ। सति पुरख सति उपदेश सति सतिवाद ना कोई सके गा, सांतक सति ना कोई कराईआ। चारे जुग चारे वेद चारे खाणी ना कोई सके पढ़ा, ना कोई बूझ बुझाईआ। सिमरत शास्त्र माण अभिमान रहे वधा, मन का मणका ना कोई फेर फिराईआ। पुराण अठारां घर घर दर दर मन्दिर अन्दर बैठे रहे गा, पारब्रह्म ना मेल मिलाईआ। गीता ज्ञान ना कोई जणा, मिले मेल ना बेपरवाहीआ। मुकंद मनोहर लखमी नरायण, तीजे नैण ना कोई दरसाईआ। अञ्जील कुराना रहे गा, अल्ला हू नाअरा रहे ला, ऐनलहक्क ना कोई मलाईआ। नूर अलाही इक्क ख़ुदा, आदि अन्त ना होए जुदा, इक्क लगाए सच सदा, एका रूप दरसाईआ। कलमा कलमी रिहा पढ़ा, साचे पौड़े रिहा चढ़ा, एका लड़ रिहा फड़ा, ख़ुदी ख़ुदाई रहिण ना पाईआ। कलमा अमाम इक्क सुणा, कायनात दए जणा, शरअ शरायत इक्क वखा, इक्क हदीस रिहा पढ़ाईआ। दन्द बतीसा रहे अल्ला, कवण जाणे प्रभ तेरा राह, कलिजुग करया पापा फाह, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल हरि रघुराईआ। खेले खेल खेलणहारा, आदि पुरख अकाला। वेद पुराणा पावे सारा, नाल रलाए राणी अल्ला। खाणी बाणी कर विचारा, वेखे गार डूँघी डल्ला। अर्जन तेरा लेख अपारा, मनमुख भुल्ले होए झल्ला। निहकलंक लए अवतारा, वस्सया सच महल्ला। गुर गोबिन्द तेरा भरे भण्डारा, ना करया वला छला। वेद व्यासा दए सहारा, जोती शब्दी आपे रला। सम्बल नगरी धाम अपारा, दस्म दुआरी उच्चा पर्बत वड टिल्ला। आप आपणा कर उज्यारा, आपणी रसना चाढ़े आपणा चिल्ला। फड़े शब्द हथ्थ तीर कटारा, पावे सार जलां थलां। लक्ख चुरासी वेखे मीत मुरारा, दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल्ला। जूठा झूठा तोड़े गढ़ हँकारा, उच्चा रहिण ना देवे कोई किला। चरन छुहाए विच दरबारा, राम दास गुर साची तेरी सिला। पंचम जेठ करे विहारा, प्रगट होए छैल छबीला, नौ खण्ड पृथ्मी मगर लगाए झूठी धाड़ा, जोती अग्नी लाए तीला। चारों कुन्ट लग्गे वा तत्ती हाढ़ा, ना दिसे कोई वसीला। कलिजुग अन्तिम ज़िमी अस्माना तुटे पाड़ा, धुरदरगाही ना मिले कोई वकीला। कलिजुग अन्तिम कढ्ढे हाढ़ा, राणी अल्ला दए दलीलां। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अखाड़ा, आप कराए चढ़के घोड़े नीला। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणा वेस जन भगत दुआरे। दर दुआरे दर दरवेश बण भिखारा, लोकमात उठ धाया । गुरमुख साचे मल दुआरा, आपणा आप छुपाया। जोत सरूपी करे उज्यारा, तीन लोक करे रुशनाया। एका साचा डंक वजाया, अनादी शब्द वज्जे धुन्कारा। अनाद अनादी इक्क अल्ह़ाया, छत्ती राग ना पायण सारा। नारद मुन आप उठाया, ब्रह्मा सुत दए हुलारा। विष्नूं वंसी वेस वटाया, किया खेल अपारा। भगवन जोती जोत जगाया, जोत जगाए विच संसारा। वरन गोती ना कोई रखाया, ना वस्सया किसे मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा। गुरमुख साचे वेख वखाया, प्रभ अबिनाशी डेरा लाया, घर सुहाया दस्म दुआरा। आप आपणा पड़दा लाहया। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। जोत निरँजण जोत जगाया। आदि शक्त होए सहाया। अकाल पुरख दए वड्आया। महांकाल ना नेड़े आया। दीन दयाला दर्शन पाया। गुर गोपाला भेव चुकाया। जगत जंजाला तोड़ वखाया। काया मन्दिर अन्दर, सच्ची धर्मसाला हरि मन्दिर नाउँ रखाया। दीपक जोती जगे अन्दरे अन्दर, दिस किसे ना आया। मनमुख भौंदे बाहर बन्दर, गुरमुख विरले आत्म घर वसाया। सतिगुर पूरा तोड़णहारा जन्दर, शब्द हथौड़ा दए लगाया। भाग लगाए डूँघी कन्दर, कन्त कन्तूहल होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत विहारा हरि निरँकारा निरगुण निरगुण आप कराया। निरगुण कारी निरगुण धारी, निरगुण आप करांयदा। निरगुण मीत निरगुण मुरारी, निरगुण रूप वटांयदा। निरगुण पुरख निरगुण नारी, निरगुण पूत सपूता आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस कर अनेका आपणे नेत्र आपे पेखा, ना कोई रूप ना कोई रेखा, जोत सरूपी धारया भेखा, लक्ख चुरासी लिखे लेखा, प्रगट हो दस दस्मेसा, पारब्रह्म प्रभ नर नरेशा, एका धाम हरि अवल्ला उच्च अटला आपणा आप सुहांयदा। सुहाया थान हरि बनवारी, आपणी जोत जगाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारी, भेव अभेदा बैठा भेव छुपाईआ। राम रहीम करीम बेऐब परवरदिगारी, निरँकारी जोती नूर करे रुशनाईआ। रामा कृष्ना मीत मुरारी, संग मुहम्मद वेखे यारी, नानक मेला सहिज सुभाईआ। नानक ढहि पया द्वारी, पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारी, एका देवे शब्द भण्डारी, लोकमात मार झात चार वरन इक्क जमात एका रूप दरसांयदा। शब्द सरूपी देवे दात, पुरख अबिनाशी वड करामात, चरन प्रीती बन्न्हे नात, लहिणा देणा हाथो हाथ, मेल मिलाए हरि समराथ, समरथ पुरख आप अख्वांयदा। मन्त्र नाम सच गाउणा, पुरख अबिनाशी घर में पाउणा, हउमे हँगता रोग गंवाउणा, साची संगता संग रखाउणा, भुक्खा नंगता कल मिटाउणा, एका मार्ग पांयदा। चार वरनां इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां दए सहारा, एका नूर हरि अवतारा, सतिगुर पूरा बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

जुग जुग देवणहारा वर, दर दरवाज़े ग़रीब निवाज़े जो जन आए भिच्छया पांयदा। आपे सद्दणहारा दर, आपे मंग मंगांयदा। आपे देवणहारा वर, आपे झोली भरांयदा। आप चुकाए आपणा डर, आपणी बूझ बुझांयदा। आप वखाए आपणा घर, जिस जन दया कमांयदा। एका पुरख हरी हरि, आप हरि अख्वांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख नाउँ धरांयदा। साध सन्त गुर पीर लए वर, वर दाता आप हो जांयदा। शब्द भण्डारा देवे भर, इक्क ज्ञान जणांयदा। इक्क वरतारा एका वर, एका वस्त रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर हाज़र हज़ूर सर्बकल भरपूर, निरगुण सरगुण वेस रखांयदा। निरगुण मेला हरि करतार, आपणा आप कराया। आपे होया सज्जण सुहेला, सखा सहाई आप हो आया। आपे गुर गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द वेस वटाया। आपे वस्सया रंग नवेला, दिस किसे ना आया। अचरज खेल पारब्रह्म जग खेला, जुग जुग वेस वटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी लक्ख चुरासी चाढ़े तेला, पंचम जेठी सगन मनाया। मनमुख सखीआं मिल मिल पावण वेलां, झूठी झोली रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, सरगुण आपे होए सहाया। सरगुण नाम सहारा, हरि जोत जगाईआ। देवे शब्द सच्ची धुन्कारा, राग अनादी ताल वजाईआ। मिल्या मेल कन्त भतारा, भिन्नड़ी रैण सुहाईआ। आत्म सेजा कर प्यारा, साची ख़ुशी कराईआ। देवे नाम धुर करतारा, धुर वस्त झोली पाईआ। पूरन भरया हरि भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। सम्मत वीह सौ चौदां पार किनारा, पन्दरां वेल वधाईआ। पंचम जेठ मीत मुरारा, जन भगतां होए सहाईआ। दरस दिखावे दया कमावे पार कराए नौ दुआरा, निज सरूप सति सरूप शाहो भूप आपणा आप दरसाईआ। मिल मिल सखीआं गाओ वारा, पाया पुरख इक्क अपारा, विछड़ ना जाए विच संसारा, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सरगुण तेरी सच अटारी, निरगुण जोत जगाईआ। जन भगतां करे नाम प्यारी, नाम नामां झोली पाईआ। आओ सन्तो करो वणज वपारी, हरि एका वणज कराईआ। कलिजुग अन्तिम होणा पए ख्वारी, दरस्न दुआरी ना कोई दरसाईआ। सारे बैठे अधविचकारी, उच्चे डण्डे राह तकाईआ। पार कन्ढे ना कोई उतारी, साची वंड ना कोई वंडाईआ। दुहागण नार रंड जीव जन्त निधान संसारी, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। नेत्र पेख जोत निरँकारी, मस्तक रेख दए मिटाईआ। पूरे गुर सदा बलिहारी, सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम रिहा जगाईआ। कलिजुग अन्तिम काली रैण, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। ना कोई दिसे साक सज्जण मात पित भाई भैण, झूठा नाता जगत बंधाया। हरि दरस ना पेखे कोई नैण,

माया ममता मोह वधाया। सन्त सन्त सतिगुर सारे कहिण, सतिगुर पद किसे ना पाया। जगत सिँघासण सारे बहिण, शब्द सिँघासण दिस ना आया। सिक्खी सिक्खी सारे वेखण नैण, साचा सिदक ना कोई निभाया। लेखी लिखी सारे देण, लेखा दए ना कोई मिटाया। मनमति लैण ना देवे किसे चैन, गुर दर मन्दिर मस्जिद पंडत पांधे मुलां शेख़ पन्थी ग्रन्थी होए हलकाया। किसे ना मिल्या सज्जण सैण, नूर अलाही बेपरवाही रामा कृष्ना नानक गोबिन्द मेटे चिन्द गुणी गहिंद, दर द्वार ना फेरा पाया। सारे बण बण बहिंदे नादी बिन्द, नादी सुत ना किसे जाया। घर घर वगायण सागर धार सिन्ध, अमृत धार ना कोई मुख चवाया। नौ खण्ड पृथ्मी नौ दुआरे पुरख अबिनाशी बख्शी निन्द, जीव जन्त होए हलकाया। मनमुख जीवां कलिजुग माया नाल रलाई इक्क रखाई साची बिन्द, नाम हट्ट ना कोई रखाया। सारे मंगदे नौ निध अठारां सिद्ध, नौ नाथ ना कोई सहाया। दो दो ताल पौंदे गिध्ध, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। जगत विद्या प्रभ मिलण दी दस्सण बिध, आत्म ब्रह्म ज्ञान ना कोई जणाया। किसे हथ्थ ना आया मार्ग सिध्ध, निरगुण रूप भुलाया। पंच विकारा जीवां जन्तां रिहा बिध्ध, जूठे झूठे सन्तां नाल रलाया। पारब्रह्म प्रभ प्रगट होया विच हिन्द, भारत खण्डी भाग लगाया। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, लक्ख चुरासी वंड वंडाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाया। पकड़ उठाए सुरपति राजा इन्द, वेला अन्तिम आया। शिव शंकर होए आप बख्शिंद, आपणी जोती लए मिलाया। ब्रह्मा बणाई आपणी बिन्द, कँवली कँवल उपाया। त्रैगुण माया किन्तू किन्द, किंगरा इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मन्दिर आप उपाए, आपणी इच्छया आपे ढाहे, ना कोई दूसर संग रखाया। ना कोई दूसर संगी साथी, ना कोई बणत बणाईआ। इक्क अकल्ला हरि रघुनाथी, आपणा रथ चलाईआ। सर्बकला आपे समराथी, आपणी समरथया विच समाईआ। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथी, कलिजुग वंड वंडाईआ। चिट्टे अस्व पंचम जेठा पाए काठी, सोलां कलीआं आसण लाईआ। वेख वखाणे तीर्थ ताटी, गंगा गोदावरी फेरा पाईआ। अन्दर मन्दिर वेखे पूजा पाठी, साचा हवन कवण कराईआ। कवण दुआरे अट्ठ साठी, कवण निर्मल निराधार वहाईआ। सर सरोवर मारे कवण ठाठी, इक्क उछाल रखाईआ। बिन गुर पूरे कोए ना देवे अमृत आत्म साची बाटी, भर प्याला मुख ना कोई लगाईआ। चौदां लोक वेखे जीव जन्त हाटी, प्रभ साचा हट्ट खुलाईआ। बजर कपाटी जिस जन पाटी, नेड़े वाटी नज़री आईआ। लहिणा देणा चुक्के आन बाटी, मात गर्भ ना कोए लटकाईआ। एका एक एक दिसाए सच प्रभाती, एका राग अलाईआ। साचे सन्तो अन्दर वेखो मार झाती, प्रभ बैठा भुजां उठाईआ। बन्द किवाड़ा खोले ताकी, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। चल के आया धुरदरगाही साचा साथी, नाम

सुराही हथ्थ उठाईआ। ज्ञानी ध्यानी विद्वानी ना करन देवे कोई चलाकी, अछल अछल्ल आप अख्वाईआ। अन्तिम नाता तुटना पंज तत्त खाकी, खाकी खाक मिलाईआ। प्रभ लै के आया एका शब्द राकी, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। चाल रखाए साची बांकी, निरगुण वागां आपणे हथ्थ उठाईआ। प्रगट होया पाकन पाकी, बेऐब बेगुनाहीआ। लेख लिखाए भविख्त वाकि्, देवे सच सलाहीआ। पंचम रक्खे जन जन की जा की, जानणहार सृष्ट सबाईआ। आपे तोले साचे टांकी, साचे भार आप तुलाईआ। एका नइया चलाए नाम नां की, एका पार कराईआ। कलिजुग अन्तिम रहिण ना देवे कोई आकी, शब्द खण्डां हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां चढ़े मार पलाकी, चरन आपणा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, हरन फरन दए खुल्हाईआ। चढ़या लाड़ा हरि बलवान, निहकलंक अख्वाया। सोहँ खण्डा तीर कमान, रसना चिल्ले आप उठाया। प्रगट होया वड बली बलवान, महां बीर सदवाया। इक्क मारे सच निशान, दो जहानां वेख वखाया। तिन्नां लोकां खेल महान, त्रिलोकी नाथ अख्वाया। लोकमात वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी जीव हलकाया। जीव जन्त सर्ब कुरलान, कलिजुग कूड़ा जाल विछाया। कूड़ी क्रिया सर्ब मिट जाण, कूड़ी कूड़े धन्दे लाया। झुलदा जाए धर्म निशान, हरि साचे आप झुलाया। उप्पर लिख्या लेख महान, सो पुरख निरँजण सेवा लाया। सति सतिवादी इक्क ज्ञान, जीवां जन्तां दए समझाया। बीस बीसा कर परवान, जगत जगदीसा होए सहाया। जागरत जोत जगे जहान, गुरमुख साचे लए जगाया। देवे नाम धुर फ़रमाण, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद पन्दरां वेखे जंगल जूह उजाड़ कन्दर तीर्थ तट्टां फेरा पाया। तीर्थ तट वेख किनारा, सन्तन दए हिलाया। भारत खण्ड खेल अपारा, प्रभ साचे आप रचाया। अयुध्या प्राग पावे सारा, सोया कोई रहे ना राया। काशी पंडत दए हिलाया, एका शब्द ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग एका राह, आपणा रिहा सिखाया। एका मार्ग हरि हरि लाउणा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। ब्रह्मा वेता शब्द जणाउणा, सोहँ नाम धराईआ। शिव शंकर कंठ माला गल रखाउणा, नील कंठ समझाईआ। सुरपति राजा इन्द उठाउणा, इक्क संदेश पुजाईआ। करोड़ तेतीसा संग रलाउणा, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। लक्ख चुरासी वेख वखाउणा, लोकमात वड्डी वड्याईआ। मनमुख जीव मेट मिटाउणा, धरत मात गोद सुहाईआ। धर्म राए दा दर सुहाउणा, खाली कुण्डां दए भराईआ। चित्रगुप्त दा लेख लिखाउणा, खाता वही पूर कराईआ। लाड़ी मौत दा मन परचाउणा, लक्ख चुरासी एका कन्त बणाईआ। सच सपुत्री पल्ले दाज आप बन्न्हाउणा, जूठी झूठी नाल कुड़माईआ। चार यारी मेट मिटाउणा, सदी चौधवीं

३२८
०७

वेख वखाईआ। अल्हा राणी नेत्र रो रो नीर वहाउणा, संग मुहम्मद रही सुणाईआ। कवण दुआरे पुरख अगम्म अपारे तेरा दर्शन पाउणा, कवण दरसाईआ। पारब्रह्म प्रभ एह जणाउणा। मेरा रूप मेरा सिक्ख बनाउणा। पूरन जोती पूरन विच रखाउणा। वरन गोती ना कोई उपजाउणा। पंज तत्त दर लेख मिटाउणा। नाड़ नब्ज सभ बन्द कराउणा। आपणा नाच आप वखाउणा। वड करामात शब्द चलाउणा। जन भगतां देवे दात, दूसर किसे हथ्थ ना आउणा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाउणा। गुर संगत बणाए इक्क बरात, साचे लाड़े सगन मनाउणा। पन्दरां कत्तक पार कराए घाट, लंका गढ़ चरन छुहाउणा। राम रामा तेरी वेखे वाट, भेख भबीखण लेख लिखाउणा। दुरमति मैल देवे काट, शब्द ज्ञान इक्क कराउणा। कलिजुग झूठे लुटे जाण हाट, साचा हाट इक्क खल्हाउणा। इक्क जणाए पूजा पाठ, एका इष्ट देव गुर बनाउणा। इक्क वखाए तीर्थ ताट, गुरचरन साचे नहाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा पड़दा आपे लौहणा। आपणा पड़दा आपे लाह, आपणी जोत करे रुशनाईआ। आपणा शब्द आप जणा, तूरत नाद इक्क वजाईआ। आपणा राग आप सुणा, धुन आत्मक रिहा सुणाईआ। आपणी वाग आप उठा, आप आपणा लए दौड़ाईआ। गुरसिख तेरी काया कन्दर ढूँघी भवरी पार लए करा, किला कोट ना कोई दिसाईआ। तन चोट नगारे दए लगा, अनहद शब्द ताल वजाईआ। हउमे रोग दए मिटा, सोहँ चोग चुगाईआ। जगत विजोग दए गंवा, धुर संजोग मिलाईआ। दरस अमोघ दए वखा, जोत सरूपी दर दुआरे फेरा पाईआ। एका जोग दए सिखा, एका लिव हरि सरनाईआ। एका भोग दए करा, आत्म सेजा आप सहिज सुखदाईआ। जगत तृष्ना दए मिटा, भगत भगती झोली पाईआ। काहना कृष्ना रूप वटा, मोहण माधव आप अख्वाईआ। राम रामा रंग रंगा, सीता सुरती लए प्रनाईआ। शब्द मृदंग इक्क वजा, सन्त सुहेले लए जगाईआ। आत्म गंग दए नुहा, आप आपणी दया कमाईआ। काया रंग मजीठी दए चढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। वस्त अनडीठी झोली देवे पा, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोई ना जाईआ। फड़ फड़ एका राह दए वखा, नौ दुआरे पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता रिहा कमाईआ। करणहार हरि भगवन्ता, जुग जुग करदा आया। देवे माण साचे सन्ता, सतिगुर पुरख अख्वाया। आप बणाए साची बणता, बेड़ा बन्ने लाया। कलिजुग वेखे जीवां जन्तां, जीवां जन्तां विच समाया। आपे पाई हउमे हँगता, माया ममता नाल रलाया। गुरमुख विरले मेल मिलाए साची संगता, साची संगता आप समाया। गुरसिक्खां दर दुआरे होया मंगता, धुरदरगाही मंगण आया। आपे होया भुक्खा नंगता, खाली हथ्थ रखाया। गुरसिख तेरे दर ना जाए संगदा, लोक लाज दए तजाया। गुरसिख लगाए अंग जिउँ नानक

अंगदा, अंगी कार अख्वाया। कलिजुग अन्तिम चोली रंगदा, रंगणहार दिस ना आया। कलिजुग माया मूल ना मंगदा, प्रेम भिच्छया मंगे अग्गे झोली डाहया। वेखो वेला आया कलिजुग करौणी जंग दा, चारों कुन्ट डौरु वाहया। करया खेल प्रभ साचे आपणे ढंग दा, जगत स्यासत भेव ना राया। होणा मेल हीर रांझ दा, कलिजुग कैदो लंङा विच रखाया। कलिजुग जीव मनमुख दा, भरम भुलेखा एका पाया। आपणा दर साचा घर जीव जन्त कोई ना लँघदा, दूजा दर राह तकाया। पारब्रह्म गुर पूरा कोई ना मंगदा, दोए जोड़ ना सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घोड़े तंग आपे कसदा, चरन रकाब आप टिकाया। आपे देवे चरन रकाबे आपे चरन उठाईआ। वेख वखाए दो दो आबे, दो दो आबा वेख वखाईआ। पकड़ उठाए मक्के काअबे, पीर गौंस कुतब शेख़ मुसायक मुल्लां एका दए हिलाईआ। कूड़ कुड़यारा बणया तुला, थल थला दए रुलाईआ। अन्तिम फल नौ खण्ड तेरा हुल्ला, शब्द हलूणा इक्क लगाईआ। सम्मत पन्दरां जो जन दर आए भुल्ला, बख्शे सरन सच्ची सरनाईआ। सम्मत सोलां दर किसे ना मिला खुल्ला, राज राजान शाह सुल्तान रोवण मारन धाहीआ। किसे सीस ना दिसे पगड़ी कुल्ला, ना कोई धीर धराईआ। घर घर अग्नी बुझी चुल्ला, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम अनमुल्ला, अनमुल्लड़ी दात झोली पाईआ। हरि का नाम सदा अनमुल्ल, गुरमुख हट्ट विकाया। कोई ना दूसर होर तुल, ना कोई तोल तुलाया। चरन प्रीती जो जन गए घुल, प्रभ सचा झोली पाया। माया ममता जीव जन्त गए रुल, नेत्र दरस किसे ना पाया। सिम्मल फल गए हुल्ल, फल हथ्थ किसे ना आया। अमृत आत्म गया डुल्ल, भर भण्डार ना कोई प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सम्मती देवे भेव खुलाया। सम्मत पन्दरां सति करतार, सति सति सति वरतांयदा। राम रामा हरि अवतारा, कृष्ना कृष्न समांयदा। नानक निरगुण इक्क प्यारा, एका राह तकांयदा। पूत सपूता सुत दुलारा, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। चारे कूटां पावे सारा, दहि दिशा वेख वखांयदा। जुग जुग विछड़या हरिजन रुठा लए मेल कर प्यार, आप आपणा मार्ग लांयदा। सोहँ देवे शब्द अधार, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। हँगता तोड़े गढ़ हँकार, हँ जीव समांयदा। एका दूजा कर प्यार, तीजे दर्शन पांयदा। चौथे घर सच्ची सरकार, पंचम डेरा लांयदा। छेवे साजन मीत मुरार, सति सतिवाद अख्वांयदा। अट्ठ तत्त कर प्यार, नौ दर वेख वखांयदा। दर घर साचा मीत मुरार, दर दसवां इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए साचा दर, दर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर काया गागर गुर सतिगुर पार कराईआ।

✻ पहली जेठ २०१५ बिक्रमी हरिमन्दिर साहिब श्री अमृतसर शब्द भेज्जया दरबार विच्चों पंज जेठ नूं जाण वास्ते ✻

हरि मन्दिर हरि वस्सया, हरि रूप अगम्म अपार। हरि मन्दिर हरि वस्सया, निरगुण जोत आकार। हरि मन्दिर हरि हस्सया, हरि बैठ सच्ची सरकार। हरि मन्दिर हरि आवे नस्सया, आदि जुगादी साची कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक ल्ए अवतार। निहकलंक हरि अवतारा, निरगुण जोत जगाईआ। प्रगट हो विच संसारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लेखा लिखे अपर अपारा, भेव अभेदा भेव जणाईआ। ना कोई जाणे जीव गंवारा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल हरि निरँकारा, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कल वरताईआ। आदि पुरख अन्त आदि गुर अवतारा, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारा, निरगुण निर्मल जोती नूर करे रुशनाईआ। निर्मल जोती जोत अकाला, अकल कल अख्वांयदा। प्रगट होए दीन दयाला, दीनां बंधप दया कमांयदा। हरि मन्दिर वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, धरनी धरत सुहांयदा। अमृत वेखे सर सरोवर इक्क उछाला, सर सरोवर वेख वखांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाला, जोती जोत कवण जगांयदा। कवण द्वार फल लग्गे डाल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरवैर आप अख्वांयदा। हरि मन्दिर हरि आदि निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। सर्ब जीआं दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराया। चरन धूढ़ी बख्शे साचा मजन, चरन चरनोदक मुख चुआया। सदा सुहेला इक्क अकेला आपे होया पड़दे कज्जण, गुर चेला रूप वटाया। वेखण आए ठग्ग सज्जण, ठग्ग ठगौरी कलिजुग कलिजुग पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, हरि की पौड़ी चरन छुहाया। हरि की पौड़ी हरि हरि भाए, हरि हरि वेख वखांयदा। दूसर किसे दिस ना आए, मनमुख मुग्ध भुलांयदा। गुरमुख विरले दया कमाए, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। मनमुख झूठे धन्दे लाए, माया ममता मोह वधांयदा। पापी गन्दे दर दुरकाए, निन्दक निन्दया विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती नूर दरसांयदा। हरि का मन्दिर हरि दुआरा, हरि हरि आप बराजे। आवे जावे वारो वारा, संवारे आपणा काजे। सतिगुर पूरा बण लिखारा, शब्द सरूपी मारे वाजे। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नाउँ धराए ग़रीब निवाजे। सृष्ट सबाई पार किनारा, खेल कराए देस माझे। सम्बल नगरी धाम न्यारा, उच्च मुनारे आपे गाजे। हरि मन्दिर हरि पाए सारा, जुग जुग रक्खणहारा लाजे। मनमुख जीव होए गंवारा, भेव ना पायण वड राजन राजे। जोती

३३२ ०७

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, हरि जी आए हरि हरि घर, पंचम जेठ साचे ताजे। पंचम जेठ पंच प्रधाना, पंचम रूप समाया। पंचम खेले खेल महाना, शाहो भूप अखवाया। पंचम होए गुण निधाना, रंग रूप ना कोई रखाया। पंचम होए बली बलवाना, अन्ध कूप होए सुहाया। पंचम मेला दो जहानां, आप आपणा लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस कर, हरि मन्दिर अन्दर वेख वखाया। पंचम जेठ पंचम धुन नादा, शब्दी शब्द जैकारा। परम पुरख घर साचा लाधा, धर्मी धर्म अखाड़ा। मनमुख जीव जाए भाजा, सम्मत सोलां सतारां हाढ़ा। जन भगतां रक्खणहारा लाजा, जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेखे साचा सर, पंचम जेठ दिन दिहाड़ा। पंचम जेठ साढे दस, साचा वक्त सुहाईआ। जन भगतां हिरदे जाए वस, मनमुखां दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेख अवल्ला इक्क अकल्ला आवे जावे फेरा पाईआ। लिख्या लेख धुर फ़रमाणा दर आए तख्त अकाल। मिले मेल गुण निधाना, लोकमात दीन दयाल। शब्दी शब्द सच निशाना, चले अवल्लड़ी चाल। नानक गोबिन्द कर परवाना, खेले खेल महान। लक्ख चुरासी इक्क निशाना, एका शब्द तीर कमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं रिहा लड़, खेले खेल वाली दो जहान। आए दर दर दरवेशा, परम पुरख सुल्ताना। वेख वखाणे धारी केसा, मेहरवान मेहरवाना। मेल मिलाए दस दस्मेसा, चतुर सुघड़ स्याणा। ना कोई रूप ना कोई रेखा, शब्दी शब्द तराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि देवे धुर फ़रमाना।

पंचम जेठ साढे दस वजे हरिमन्दिर साहिब गए, परंतू किसे ने कोई अग्गों बचन ना कीता पहरे ला दिते के शब्द ना बोलण। ग्यारां मिन्ट रहि के वापस आ गए।

* ५ जेठ २०१५ बिक्रमी कल्सी लिख्त होई जगत सिँघासण दे नवित्त जो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दे सरीर करके रिहा सी छिआठ साल तों बाअद मातलोक विच चुक्कया गया *

शब्द सिँघासण हरि लोकमात उपाया। साल बवन्जा खेल अपार, खेलणहार सृष्ट सबाया। पंज तत्त वेस निरँकार, निरगुण सरगुण विच समाया। लोआं पुरीआं वेख विचार, धरत मात डेरा लाया। अचरज खेल हरि निरँकार, आपणा आप कराया। वेख वखाणे आपणी धार, जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे

३३२ ०७

विच टिकाया। शब्द सिँघासण हरि रंग राता, लोकमात वछाया। आपे बैठा इक्क अकाता, अन्दरे अन्दर रखाया। वेखे खेल दिवस राता, दिवस रैण सुहाया। सृष्ट सबाई जगत पित माता, दाता दानी आप अख्वाया। जन भगतां देवे इक्क सुगाता, देवणहार आप अख्वाया। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, घर साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन सज्जण वेख वखाया। शब्द सिँघासण अपर अपारा, पंज तत्त करे प्यारया। लोकमात कर विचारा, उप्पर आसण ला रिहा। करे खेल सिरजणहारा, साची कल वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा रिहा। रंगे रंग हरि भगवन्ता, आपणी धार चलाईआ। खेले खेल आदिन अन्ता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सेव लगाए मनी सिँघ सन्ता, सतिगुर पुरख मनाईआ। रसना जिह्वा गाया गुणी गणंता, हरि गोबिन्द वेख वखाईआ। साची नारी पाया एका कन्ता, कन्त सुहाग हंढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता आप अख्वाईआ। शब्द सिँघासण हरि बिराजे, पंज तत्त डेरा लाया। आप कराया आपणा काजे, गति मित ना कोए जणाया। खेलया खेल देस माझे, घनकपुर वासी नाउँ धराया। दो जहानी साजन साजे, सतिगुर पूरा भेव ना पाया। लक्ख चुरासी देवणहारा वाजे, कलिजुग पल्ले गंढु बंधाया। जन भगतां रक्खणहारा लाजे, आप आपणी दया कमाया। चरन प्रीती रक्खे सांझे, साचा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दिवस सुहाया। पंचम जेठा लोकमात, काया तन उपांयदा। आपे वेखे मार झात, आपणा राग सुणांयदा। आपे देवे आपणी दात, आपणी झोली आप भरांयदा। उत्तम करी आपणी ज़ात, जागरत जोत जगांयदा। गुरमुख साजण लै बरात, घर साचे मंगल गांयदा। दूर दुराडी वेखे वाट, नेरन नेरा फेरी पांयदा। आप चढ़ावणहारा औखे घाट, पार किनारा इक्क दिसांयदा। कलिजुग चोली जाए पाट, ना कोई धीर धरांयदा। सच वस्त ना दिसे किसे हाट, वणज वणजारा ना कोई अख्वांयदा। चारों कुन्ट खेल बाजीगर नाट, नट नटूआ सांग वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दिवस सुहांयदा। पंचम जेठा हरि वड पाया, गोबिन्द बणत बणाईआ। सन्त मनी सिँघ सेवा लाया, साचा लेख लिखाईआ। देवी देवा भेव ना राया, भरमे भुल्ली लोकाईआ। गुरमुखां आत्म मेवा इक्क खवाया, हरि सोहँ चोग चुगाईआ। रसना जिह्वा जिस जन गाया, साचा जोग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका धार चलाईआ। एका धार हरि निरँकार, पंज तत्त रखांयदा। दूजा कर शब्द प्यार, तीजे दर सुहांयदा। चौथे मेल आपे कर, पंचम संग रलांयदा। छेवें चुक्के जगत डर, प्रभ साचा आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। एका खेल हरि करतार, आपणी आप कराईआ। दूजी वारी विच संसार, जोती धार बंधाईआ। तीजा शब्दी पहरेदार, गुरमुखां सेव कमाईआ। चौथे मिल्या मीत मुरार, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। पंचम मेला हरि करतार, करनहार सृष्ट सबाईआ। छेवें कर इक्क विचार, निरगुण रूप समाईआ। छे छे साचा कर प्यार, छे छे (६६) जोड़ जुड़ाईआ। बावन बवन्जा एका कार, चौदस संग रलाईआ। एका चौका (१४) हरि निरँकार, एका पद रखाईआ। पंज दो (५२) कर प्यार, पंज तत्त हंढाईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, साची कार कमाईआ। बदलया चोला खेल अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। सोहँ ढोला शब्द जैकार, चारों कुन्टा रिहा सुणाईआ। सम्मत पन्दरां कर विचार, बीस सद बिक्रमी नाल रलाईआ। भगत सिँघासण पावे सार, विष्नूं वंसी नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी दुष्ट सँघारे काहना कंसी, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साजण इक्क वखाए साची बंसी, ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। एका धार चलाए तरवर सरवर पंखी पंछी, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई रिहा हिलाईआ। सृष्ट सबाई इक्क हुलारा, देवणहार भगवाना। शब्द सिँघासण अपर अपारा, हरि रक्खे दो जहानां। बवन्जा तेरा करे विचारा, परम पुरख सुल्ताना। चौदां लोकां वसे बाहरा, ना दिसे कोई टिकाना। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, खेले खेल महाना। कलिजुग सिँघासण आर पारा, करे कराए आप गुण निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ शब्द सिँघासण वेखे हरि, जगत सिँघासण अग्गे धर, लक्ख चुरासी बन्न्हे गाना। जगत सिँघासण जाए उठ, पंज तत्त ना कोई बराजे। साध सन्त लुकया रहे ना किसे गुठ, ना कोई सीस रखाए ताजे। प्रभ लहिणा देण मुकाए जूठ झूठ, प्रगट जोत देस माझे। जन भगत सुहेला आपे जाए तुठ, आप रचाए अपणा काजे। कलिजुग तेरा झूठा दावा, हरि साचे वेख वखाणया। जगत सिँघासण चार पावा, नीचे मुख ध्यानया। दर दर घर घर रोवण पुतरां मावां, प्रभ साचा वरते भाणया। किसे ना माणी ठंडी छावां, ना कोई देवे ठंडा पाणीआ। गुरमुख साजन तेरे दर ते बलि बलि जावां, जिस मिल्या सतिगुर पूरा हाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण देवे वर, लेखा चुक्के चारे खाणीआ। चारे खाणी चारों चूल, चारों कुन्ट बंधाईआ। गुरमुख साजन ना जाणा भूल, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। करे खेल वड दूलों दूल, दो जहानां वेख वखाईआ। जन भगतां करे सूलीउँ सूल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वेला वक्त ना जाणा भूल, हरि पूरा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ रुत्त सुहाईआ। जगत सिँघासण मार उडारी, एक रंग समाया। तिन्नां लोकां वस्सया बाहरी, दिस किसे ना आया। घर घर पौंदा जाए

३३४
०७

ख्वारी, प्रभ साचे हुक्म जणाया। वीह सद पन्दरां तेरी वारी, निहकलंका फेरा पाया। चारों कुन्ट फिरे बहारी, धूढ़ चरन रहिण ना पाया। देवत सुर ब्रह्मा विष्न शंकर शिव राह तक्क तक्क रहे हारी, औदां जांदा दिस ना आया। गुर संगत तेरी आई वारी, हरि साचे खेल रचाया। जगत सिँघासण पार किनारी, प्रभ आपणे कंध उठाया। निरगुण जाए उच्च महल्ल अटारी, भेव कोए ना राया। जन भगतां पैज जाए स्वारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आपे पूर कराया। साल बवन्जा माणी सेज, जगत सिँघासण तेरी निमस्कारया। शब्द सुनेहड़ा पुरख अकाला रिहा भेज, कलिजुग अन्तिम वारया। सृष्ट सबाई नौ खण्ड जल धारा वहे नौ नौं नेज, जगत पलँघ ना कोए वछा रिहा। हरि जोती नूर चमके तेज़, दमक दामनी आप वखा रिहा। साध संगत बणी शमस तबरेज़, गुर पूरा चरन धूढ़ सूली इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा सिँघासण पुरख अबिनाशन, लोकमात आप मिटा रिहा। पंज तत्त तेरा सहारा, लोकमात तजाया। पुत्तर धीआं ना किया प्यारा, साक सनबंध ना कोई रखाया। एका दान साध संगत दीआ, दूसर हथ्थ किसे ना आया। आपे करया निर्मल जिया, चरन चरनोदक मुख प्याया। पंचम जेठ कर कर हीआ, आप आपणा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सिँघासण तेरा दर, तेरे दर बहाया। जगत सिँघासण रिहा पुकार, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। तेरा किया सच प्यार, आपणी छाती उत्ते लिटांयदा। करवट लै क्यों मारे मार, जिध्धर चाहें उधर सीस निवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बचन आप सुणांयदा। जगत सिँघासण तेरा दुःख, दिवस रैण मोहे भाया। तेरी सेजा ल्या सुख, बवन्जा साल हंढाया। पहलो छुपाया आपणा मुख, फिर तैनूं लै जावण आया। लक्ख चुरासी पौणी आपणे मुख, तेरा वड्डा मुख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण दे मति आप समझाया। जगत सिँघासण गया मन्न, दोए जोड़ करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी तेरा भाणा धन्न, लोकमात करे प्यारा। पंचम जेठ निकलया जन वीह सद पन्दरां लेख लिखारा। सृष्ट सबाई सुण लओ कन्न, चारों कुन्ट होए हुलारा। गुरमुखां सांतक सति वरताए साचे तन, देवे शब्द प्यारा। जूठा झूठा भाण्डा देवे भन्न, आपे वेखणहार ठठयारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ तेरा लहिणा देणा रिहा उतारा। सन्त मनी सिँघ चाढ़ी भाजी, आपणा लेख लिखाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होवे शाहो सुल्तान चढ़के आवे शब्द घोड़े साचे ताजी, गुर संगत संग रखाया। गुरमुखां रक्खणहारा लाजी, लाजावन्त आप हो जाया। जगत सिँघासण तेरी इक्को लग्गी पुट्ठी बाजी, नौ खण्ड दए उठाया। मेट मिटाए मुला शेख़ मुसायक काजी, हज़रत पीर दस्तगीर शाह हकीर कोए रहिण ना पाया। ना

कोई दीसे जगत निमाज़ी, रोज़ा बांग ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण देवे वर, तेरा वस्सया एका घर, प्रभ साचे आप वसाया। जगत सिँघासण मार उडार, एका राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यार, मैं तेरा राह तकांयदा। करे कराए करणहार, आपणी क्रिया किरत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत किनारा दए हुलारा, अन्तिम पार करांयदा। जगत हुलारा देवणहारा, एका एक अख्वाया। जगत सिँघासण शब्द सिँघासण मेल मिलाए अधविचकारा, आप आपणा संग रखाया। शब्द सिँघासण करे प्यारा, लोकमात उठ धाया। जगत सिँघासण हाहाकार, लक्ख चुरासी रिहा सुणाया। पारब्रह्म तेरा खेल न्यारा, भेव किसे ना पाया। नीचे उप्पर दए हुलारा, आवण जावण दिस ना आया। पंचम जेठ वीह सद पन्दरां पार किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप पार कराया।

आदि पुरख हरि भगवन्ता, पारब्रह्म अख्वाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। इक्क अकल्ला आदिन अन्ता, एकँकारा रूप समाया। मेल मिलाए साचे सन्ता, सतिगुर पुरख अख्वाया। वेख वखाए जीवां जन्तां, लक्ख चुरासी विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल करे रघुराया। आदि पुरख हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल दो जहानां, आप आपणी धार बंधांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजाना, आप आपणा मेल मिलांयदा। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, एका बूझ बुझांयदा। एका रंग श्री भगवाना, ना कोई दूसर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मीत मुरार आप हो जांयदा। आदि पुरख प्रभ बेअन्त, भेव किसे ना पाया। मेल मिलावा साचे सन्त, जुग जुग मेल मिलाया। आपे नारी आपे कन्त, साची सेज हंढाया। देवे नाम खजाना वड धनी धनवन्त, एका पल्लू नाम फड़ाया। दे वड्याई जीव जन्त, जागरत जोत दए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे विच रहाया। आदि पुरख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, जोत निराली अकाल्या। खेले खेल जगत जगतेश्वर, आपणी चले अवल्लड़ी चाल्या। वेख वखाए ब्रह्मा विष्न शिव महेश्वर, साह शहाना वाली दो जहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे दर होए सवाल्या। आपणा दर मंगणहारा, परम पुरख अख्वाया। आपणी झोली भरनहारा, आपणा भण्डार रिहा वरताया। आपणी किरपा करनहारा, करनी करता नाउँ धराया। आपणा कारज करनहारा, जुग जुग करदा आया। मरे जन्मे जन्मे मरे, जुग जुग आपणा खेल रचाया। जोत सरूप वसे तन तन मे, पंज तत्त रूप बणाया। मात कुक्ख जननी जन्मे, जन जणेदी लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस वटाया। आपणा वेस आदि

निरँजण, जुग जुग आप वटांयदा। सर्ब जीआं दर्द दुःख भय भंजन, भय भंजन नाम रखांयदा। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवांयदा। भगत सुहेला आए पड़दे कज्जण, लोकमाती वेस वटांयदा। गढ़ हँकारी झूठे भज्जण, कलिजुग तेरा रूप तेरी धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमाती जोत जगांयदा। लोकमात हरि अवतारा, जुग जुग आप कराया। ब्रह्मा वेता लिखे लिखारा, वेद विदांता नाल रलाया। शिव शंकर लाए एका नाअरा, हथ्थ त्रिसूल उठाया। करोड़ तेतीसा मंगे सच वपारा, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाया। पुरख अबिनाशी देवणहारा, जुग जुग भण्डार भराया। लोकमात पावे सारा, आपणा रूप वटाया। त्रैगुण तेरा इक्क प्यारा, पंचां नाल बंधाया। पंज पंजी वेख विचारा, चौबीसा नाउँ रखाया। हड्ड मास नाड़ी रत्त तन लाए गारा, महल्ल अटल सुहाया। मन मति बुध दए सहारा, हरि साचे संग रलाया। नौ दुआरे लाए तन, मानुस मानुख आप उपाया। पंच विकारा देवे डन्न, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाया। आपे वस्सया बिन छप्परी छन्न, महल्ल अटल ना कोई रखाया। जन भगतां पुकार सुणे आपणे कन्न, दिवस रैण वेख वखाया। सेवा लाए सूरज चन्न, रवि ससि लए तराया। तारा मण्डल बेड़ा बन्न, गगन गगनंतर वेख वखाया। आकाश प्रकाश कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। अपणा वेस आप वटाए, जुग जुग करदा आया। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर लेख लिखाया। कलिजुग तेरी धार बंधाए, आप आपणा वेख वखाया। लक्ख चुरासी भेव ना राए, भेव अभेदा अछल अछेदा बैठा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाया। आपणा रंग वटावण आया, पारब्रह्म बेअन्ता। गुरमुख साजन साचे सन्ता मेल मिलावण आया, देवे नाम सच सुगाता। काया चोली रंग चढ़ावण आया, वड दाता गुणी गुणंता। सृष्ट सबाई एका मार्ग लावण आया, एका जाप जपाए जीव जन्ता। एका राग सुणावण आया, धुंन अनादी इक्क वजन्ता। एका चोग चुगावण आया, तृष्ना भुक्ख मिटंता। एका भोग भोगावण आया, आत्म सेजा इक्क सुहंता। एका दरस अमोघ दिखावण आया, नाल रखाए साची संगता। कर्म विजोग मिटावण आया, बंक दुआरे एका मंगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजन साचे लए वर, आप आपणा रंग रगंता। अपणा रंग रंग करतार, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, आपणी बणत बणाईआ। पंज तत्त कर प्यार, हड्ड मास नाड़ी रत्त चोला इक्क बणाईआ। घनकपुरी हरि पावे सार, आप आपणा वेस वटाईआ। मात पिता घर हो उज्यार, पंचम जेठा रुत्त सुहाईआ। साचा मंगल गाए हरि निरँकार, एका धुन सुणाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर करन विचार, नेत्र

नैण रहे उठाईआ। लोकमात होई उज्यार, आदि शक्त रूप वटाईआ। भगती भगत करे प्यार, भगवन्त नाउँ धराईआ। साची शक्ती आप निरँकार, साख्यात वेख वखाईआ। बूंद रक्ती लए अधार, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। वेला वक्ती कर विचार, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। धरनी धरत करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। कलिजुग कूड़ा चारों कुन्ट फिरे कुड़यार, अट्ठे पहर वाहो दाहीआ। जूठ झूठ करे प्यार, पंजां तत्तां नाल लड़ाईआ। मन मति भरे भण्डार, गुरमति सर्ब भुलाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, जीव आत्म ना कोई वखाईआ। दर दर मंगण बण भिखार, नाम भिच्छया कोई ना झोली पाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, पुरी घनक भाग लगाईआ। साचे सन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख वखाईआ। लोकमात वेखण आया, धुरदरगाही दाता। मानस जन्म जगत धराया, बाल सुहाया पिता माता। शेर सिँघ शेर नाउँ धराया, जन भगतां देवे साचीआं दाता। सन्त मनी सिँघ आप उठाया, मिटे रैण अन्धेरी राता। कलिजुग कूड़ा रहिण ना पाया, देवे नाम सच सुगाता। साचा सन्त सेवा लाया, वेखी उत्तम जाता। एका शब्द ज्ञान दृढ़ाया, दूजा अक्खर ना कोई पछाता। आप आपणे मार्ग लाया, एका बूझ बुझाता। कलिजुग तेरा लेख लिखाया, बैठा रहे इक्क अकांता। बाल अवस्था खेल गंवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी गाथा। आपणी गाथा आप जणाई, आपे बूझ बुझांयदा। आपणे रथ आप चढ़ाई, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सगला संग रिहा निभाई, सगला साथ आप रखांयदा। प्रगट होया बेपरवाही, बेऐब परवरदिगार नाउँ धरांयदा। नूरो नूर उजाला नूर अलाही, नूरो नूर समांयदा। कलमा नबी रसूल वेखे इक्क थाँ ख़ुदाई, ख़ुदावंद ख़ुद वेस वटांयदा। लोकमात करे जुदाई, जोधा सूर आप हो जांयदा। हरिजन साचे करे कुड़माई, एका शब्द मुख लगांयदा। आत्म अन्दर काया मन्दिर वज्जदी रहे वधाई, साचा ताल आप वजांयदा। पंचम सखीआं गायण चाँई चाँई, एका राग अलांयदा। वेख वखाए थांउँ थाँईं, लेखा कोई रहिण ना पांयदा। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, जगत सुहेला आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा जामा पा, आपणी बणत बणाईआ। गोद सुहा पिता माँ, सीर मुख रखाईआ। माता सीर दए तजा, साचे सिक्ख समाईआ। जगत सिँघासण लए विछा, उप्पर आसण लाईआ। रैण दिवस डेरा ला, अट्ठे पहर वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई घेरा पा, भरमे भरम भुलाईआ। संझ सवेरा कोई जाणे ना, सच प्रभात ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस कराईआ। वेस कराया हरि अवल्ला, एका रंग करतारया। पुरी घनक वस्सया सच महल्ला, हरि साचा डेरा ला रिहा। बेमुख भुलाए कर कर वल

छला, कूकर सूकर वेख वखा रिहा। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, गुरमुख सोए आप उठा रिहा। जगत जगदीश दीपक एका बला, अज्ञान अन्धेर गंवा रिहा। आपे होया रिहा झल्ला, जगत हलूणा आप लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण आसण ला रिहा। जगत सिँघासण हरि बिराजे, पंज तत्त हंढाया। वेस वटाया देस माझे, माझा भरम भुलाया। लोआं पुरीआं रचया काजे। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। आपे चढ़या आपणे ताजे, एका अस्व रिहा दौड़ाया। सन्त सुहेला जुग जुग रक्खण आए लाजे, राम कृष्ना रूप वटाया। सुन्न अगम्मी अनहद बाणी मारे अवाज़े, एका शब्द ताल रखाया। नाम चढ़ाए सच जहाज़े, एका चप्पू आपणा रखाया। पकड़ उठाए राजन राजे, शाह सुल्ताना दए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण इक्क सुहाया। शब्द सिँघासण जगत दूर, जगत सिँघासण आप हंढाया। आपे बणया कलिजुग चोर, दिस किसे ना आया। लुकया रिहा अन्ध घोर, पंज तत्त दिवार बणाया। किसे भेत ना पाया गहर गौर, गहर गम्भीर समाया। मनमुख जीव आपणे नाल रिहा तोर, दिवस रैण संग रखाया। गुरमुखां देवे एका नाम शब्द साची तूर, राग नाद कन्न सुणाया। सर्बकला आपे भरपूर, भेव किसे ना पाया। सन्त मनी सिँघ सद हज़ूर, प्रभ आपणी बूझ बुझाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाया। मस्तक लाई चरन धूढ़, आत्म ब्रह्म जणाया। चतुर सुघड़ मूर्ख मूढ़, जन्म जन्मा लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार कर प्यार विच संसार, आपे रिहा वखाया। सन्त मनी सिँघ उठया जाग, हरि साचे आप जगाया। काया कुले लग्गा भाग, निर्मल जोत करे रुशनाया। दीपक जोती जगे चिराग, इक्क प्रकाश रखाया। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागी हँस बणाया। दो जहानां पकड़े वाग, वाली दो जहानां आप अख्वाया। आपे धोवणहारा दाग़, अमृत जाम आप प्याया। साची नारी मेला कन्त सुहाग, पुरख अबिनाशी एका पाया। एका मंगल एका राग, एका धुंन उपजाया। एका शब्द एका वाज, एका रिहा लगाया। एका करनी एका काज, एका करता आप अख्वाया। एका धरनी साजन साज, धरत धवल सुहाया। भाग लगाए देस माझ, पुरी घनक नाउँ धराया। सिँघ शेर शेर दलेर सोया गया जाग, जागणहारा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त देवे वर, काया मन्दिर इक्क सुहाया। पंज तत्त कर प्यारा, आपणा तन संवारया। कपड़ बस्त्र अपर अपारा, तन जोड़ा इक्क छुहा रिहा। जगत घोड़े हो अस्वारा, आपे आप दौड़ा रिहा। जन भगतां करे ख़बरदारा मनमुखां गूढ़ी नींद सुआ रिहा। जो जन जननी जणया चल आए दुआरा, जन जनका रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मनका आप फिरा रिहा। जगत सिँघासण इक्क वणजारा, कलिजुग

अन्तिम आया। अट्ठे पहर ख़बरदारा, आपणी सेवा रिहा लगाया। दिवस रैण करे प्यारा, एका धार वखाया। ना कोए जाणे मीत मुरारा, साक सैण ना कोई समझाया। सन्त मनी सिँघ सुत दुलारा, एका बूझ बुझाया। लेखे लग्गे अगम्म अपारा, भेव किसे ना पाया। अन्तिम प्रगट होया जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। शब्द सिँघासण साचा राज, लोकमात कमाया। जगत सिँघासण आप बराज, भरम भुलेखा पाया। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाज, तन चमड़ी वेस वटाया। आप आपणा साजन साज, साचे तत्त समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण, आदि शक्त रूप वटाया। आदि पुरख हरि अबिनाशी, परम पुरख सुल्ताना। प्रगट होए घनक पुर वासी, खेले खेल दो जहानां। निरगुण जोत हरि शाहो शबासी, हर घट वेख वखाना। भगत दुआरे दासन दासी, सेवक सेव कमाना। पूर कराए दर दर घर घर आसी, जो जन आस रखाया। गेड़ चुकाए दस दस मासी, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा तन हंढाया। जगत तन जगत हंढा, उलटी कल वरताईआ। बवन्जा साल वंड वंडा, बवन्जा देशां करे कुड़माईआ। बवन्जा अक्खर धार चला, बावन रूप रघुराईआ। बावण लेखा आप गणा, वाक भविख्त जणाईआ। आदि शक्ती रूप वटा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। भगतां भगती दए सुहा, भगवन वड वड्डी वड्याईआ। जगत जुगती दए बणा, एका जोग सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण एका धार चलाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकार, आदि अन्त रखाया। जुग जुग लै मात अवतार, जुग जुग वेस वटाया। सतिजुग साचे कर प्यार, परम पुरख उठ धाया। त्रेता तेरा कर्म विचार, राम रामा रूप वटाया। द्वापर तेरी बन्ने धार, साँवल सुन्दर मुख रखाया। कलिजुग तेरी कर विचार, ईसा मूसा लए उपाया। नानक गुर कर प्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। गोबिन्द गुर वेख विचार, पूत सपूता सेवा लाया। लिख्या लेख अपर अपार, ना कोई मेट मिटाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जामा वेस वटाया। साल बवन्जा काया तन कर लोकमात प्यारा, अन्तिम आपणा भाणा आपे मन्न, करया पार उतारा। आप आपणा बेड़ा बन्न, आपे लाए पार किनारा। आपणी वड्याई आपे जाणे धन्न धन्न धन्न, ना कोई लिखे लेख लिखारा। आपणा राग सुणे आपणे कन्न, आपे गावणहारा। आपणी जननी आपे जाया आपणा जन, मात पित ना कोई अधारा। किसे ना दिसे छप्परी छन्न, ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा। जोत सरूप हरि निरँकार निरगुण धार आपे जाणे आपणा जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा करे आप पसार। आपणा पसारा आप कराए, आपे मेट मिटांयदा। लोकमात जन्म धर, पंज तत्त हंढांयदा। अन्तिम अग्नी गया सड़, एका

हवन वखांयदा। काया कोट ढठ्ठा किला गढ़, त्रैगुण मूल चुकांयदा। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण वेख वखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई बणत बणांयदा। आपणे अन्दर आपे बैठा वड़, पुरख अबिनाशी पुरख मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण साल बवन्जा, लोकमात हंढांयदा। जगत सिँघासण कलिजुग धार, प्रभ साचे चरना हेठ दबाईआ। जीवां जन्तां करे ख्वार, गुरमुखां दए वड्याईआ। मूर्ख मुग्ध लाए पार, जो जन रसना रहे गाईआ। एका दूजा भेव निवार, एका दूजा भेव गंवाईआ। जोती जामा भेख न्यार, दिस किसे ना आईआ। शब्द डंका अपर अपार, हरि निरँकार आपणा रिहा वजाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेखा गया लिखाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आपे जाणे लम्मा चौड़ा ना जाणे कोई घर बार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मिठ्ठा कौड़ा ना करे विचार, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। धुरदरगाही आया दौड़ा बेऐब परवरदिगार, जोती नूर करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। एका अक्खर दए विचार, धुरदरगाही साचा माहीआ। बजर कपाटी पाड़े पथ्थर, दूई द्वैती परे हटाईआ। पंच विकारा होए सथ्थर, गूढ़ी नींद सवाईआ। सन्त सुहेले करे वक्खर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। जुग जुग भेख करनेहारा, आपणी कल वरतांयदा। चारे वेदां पावे सारा, पुराण अठारां फोल फोलांयदा। खाणी बाणी अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप अख्वांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। रवि ससि करे निमस्कारा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। गगन गगनंतर अधविचकारा, तारा मण्डल आप अख्वांयदा। अगम्म अगम्मड़ा दस्से अगम्मड़ी धारा, अगम्मड़ी धार आप चलांयदा। अलख निरँजण लेख लिख ना सके कोई जीव जन्त विचारा, भेव अभेदा भेव कोए ना पांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, अछल अछेदा आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, दो धारा आप चलांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी करे ख़बरदारा, राज राजानां आप उठांयदा। सम्मत पन्दरां इक्क विचारा, वीह सद बिक्रमी नाल रलांयदा। पंचम जेठ दिन दिहाड़ा, ख़ुशीआं नाल रलांयदा। जगत सिँघासण हरि अखाड़ा, दहि दिशा फोल फोलांयदा। पंज तत्त तजाया पंज तत्त मगर लगाई धाड़ा, अग्नी धार वहांयदा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, लक्ख चुरासी जीव कुरलांयदा। लेख लिखाए सतारां हाढ़ा, वाली हिन्द उठांयदा। साध सन्त पकड़ उठाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघे कन्दर उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलांयदा। त्रैगुण माया तेरा तत्त अग्नी साड़ा, आपणा मूल चुकांयदा। सुत शब्द साचा लाड़ा, पारब्रह्म प्रभ आप मिटांयदा। सोहँ शब्द सीस बन्ने दस्तारा, सच्चा नाम तिलक लगांयदा।

चार वरनां करे इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां मेट मिटांयदा। लोकमात वखाए इक्क दुआरा, वरन गोत ना कोई मिटांयदा। नूर अलाही पावे सारा, ऐनलहक्क जणांयदा। मुकामे हक्क ख़ुदी ख़ुदाई ना कोई लाए नाअरा, ना कोई दूजा भेव रखांयदा। एका एक हरि करतारा, एका रूप दरसांयदा। अल्ला राणी तेरा नाअरा, हू हू आप वखांयदा। तूं तूं होए पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, पंचम जेठा एका दिवस सुहांयदा। पंचम जेठ हरि वड्याई, पारब्रह्म जणाईआ। लक्ख चुरासी करे कुड़माई, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। एका मैहन्दी हथ्थीं लाई, लाल चूड़ा तन पहनाईआ। हाढ़ सतारा वेखे चाँईं चाँईं, लहिंदी दिशा फेरी पाईआ। उम्मत नबी रसूल उठाए थाउँ थाँईं, सोया कोए रहिण ना पाईआ। अञ्जील कुरान दर दुआरा अग्गे हो हो कहिंदी, अमाम मैहन्दी जोत जगाईआ। लोकमात भाणा एका सहिंदी, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अन्तिम वेले एका गाहे गहिंदी, ना दीसे कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ दिशा लहिंदी मुख भवाईआ। लहिंदी दिशा नेत्र खोलू, हरि आपणा कर्म कमाया। मुहम्मद तेरा कीता कौल, पूरा रिहा कराया। सदी चौधवीं वज्जा ढोल, इक्क नगार वजाया। ना कोई जाणे पंडत पांधा रोल, मुलां शेख़ भेव ना राया। प्रगट होया हरि कला सोल, जोती जामा भेख वटाया। चरन धरे उप्पर धौल, धरत मात ख़ुशी मनाया। चरन धूढ़ी मुख लगाए साची पौहल, सांतक सति कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां कलीआं शब्द सिँघासण वल्या छल्या पुरख अबिनाश वेखे खेल जगत तमाश, चारों कुन्ट उठ उठ धाया। दहि दिशा काली रैण, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाया। दिशा लहिंदी वेखे लाड़ी मौत डैण, तन शृंगार कराया। नाता तोड़े भाई भैण, साक सज्जण सैण इक्क प्यार रखाया। लुकया कोई ना देवे रहिण, पीर फकीर शाह हकीर दस्तगीर कुतब गौंस ना कोई सहाया। किसे हथ्थ ना आए नीर, बस्त्र चीर ना कोए हंढाया। चिट्टे उप्पर खिची जाए लकीर, कोई ना मेटे मेट मिटाया। उम्मत नबी रसूल तेरी कोई ना बन्ने धीर, तीर निराला इक्क चलाया। वीह सद उन्नी होए अख़ीर, रोज़ा बांग ना कोई रखाया। हक्क हकीकत वेखे फेर, बगल कुरान ना कोई उठाया। शरअ शरीअत साचे लोइण, जगत मसला दए चुकाया। सच सिँघासण कोए ना सोइण, पुरख अबिनाशी आपणा आसण दए उठाया। जो उपजे सो होए विनासन, थिर कोए रहिण ना पाया। ना कोई दीसे मदिरा मासन, घनक पुर वासन डंक वजाया। प्रगट होए शाहो शबासन, राज राजाना दए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग हरि करतार, सृष्ट सबाई वेख विचार, आपणे आप उपाया। आपणा रंग हरि उपा, आपणी रचन रचाईआ। आपणी जोती आप जगा, आपे करे रुशनाईआ। आपणी

गोती आप बणा, आपे नाउँ धराईआ। कोटी कोट रहे ध्या, गुरमुख सन्त सुहेले विरले बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ। एका नाउँ शब्द जैकारा, चार कुन्ट कराया। देस प्रदेसा पावे सारा, नौ सति वेख वखाया। लोआं पुरीआं दए हुलारा, एका रंग रंगाया। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, सगला संग आप निभाया। नाम मृदंग अपर अपारा, हरि हरि रिहा वजाया। सच दुआरे आपे लँघ सच वणजारा, साचा वणज रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण करे रुशनाया। निरगुण नूर जोत अकाला, आदि अन्त अख्वाया। प्रगट होए दीन दयाला, दया निध समाया। सन्त सुहेला सदा रखवाला, आदि जुगादी फेरा पाया। नेड़ ना आए काल महांकाला, सच दुआरा दए सुहाया। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाला, प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। तोड़नहारा जगत जंजाला, माया ममता मोह चुकाया। चार वरनां एका दस्से शब्द सुखाला, सो पुरख निरँजण आप अलाया। हउमे हँगता करे कराए जगत मुख काला, साची संगता मेल मिलाया। भुक्खा नंगता शाह कंगाला, एका रंग रंगाया। एका जोती हरि ज्वाला, एका नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जगत सिँघासण वक्त चुकाया।

३४३ ०७ जगत सिँघासण आप उठाया, आपणी कल वरतारया। औदां जांदा नज़र ना आया, वेखे सर्ब संसारीआ। साचा हिस्सा इक्क वंडाया, पवण पवणी दए हुलारया। दहि दिशा फेरा एका पाया, करे आपणी कारीआ। सन्त मनी सिँघ तेरा लेखा पूर वखाया, बवन्जा चौदां जोड़ करारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भार आप उठा रिहा। आपणा भार आप उठाए, दो जहानां वाली। सन्त सुहेले संग रखाए, चले चाल निराली। आपणा तिलक आपणा सीस धराए, गुरमुख करे रखवाली। आपणी चाली आपे पाए, दो हथ्थां दिसे खाली। आपणा पाली आप हो जाए, ना कोई संग रखाए लेफ निहाली। चौदां लोक चौदां हट्ट चौदां तबकां पार कराए, इक्क मुहम्मद मंगे विच दलाली। तीर्थ तट वेख वखाए, किसे पत्त ना दिसे ना डाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले चाल निराली। शब्द सिँघासण हरि उपा, जगत सिँघासण मात तजाया। शब्द सिँघासण जोत जगा, जगत सिँघासण दए बुझाया। शब्द सिँघासण रंग रंगा, जगत सिँघासण दए मिटाया। शब्द सिँघासण मृदंग वजा, जगत सिँघासण सुन कराया। शब्द सिँघासण अंग लगा, जगत सिँघासण मूल ना भाया। आपणा भाणा आप वरता, आपणे भाणे विच समाया। पंचम जेठी जामा पा, पंचम रुत्त सुहाया। पंचम जेठ जोत जगा, पंचम लए उपाया। वरन गोत मेट मिटा, एका सरन धराया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, जगत पूजा दए मिटाया। जगत पूजा मिटे भेव, हरि साचे आप मिटावणा। लेखा जाणे चारे वेद, ना भेव किसे छुपावणा। आपे जाणे जगत कतेब, वेद व्यास संग रखावना। अञ्जील कुरान ना करे फरेब, ईसा मूसा आप जगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा पंचम मीता पंचम मोह चुकावणा। पंचम नाता जगत तोड़, एका घर सुहांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा दर दिखांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, दाता दानी आप अख्वांयदा। दो जहानी लाए एका पौड़, डूँघी भवरी पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत पन्दरां वेख वखांयदा। सम्मत पन्दरां हरि ललकारा, चार कुन्ट उठ धाया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहाया। शिव शंकर वेखे इक्क दुआरा, हथ्थ त्रिशूल उठाया। करोड़ तेतीसा कढ्ढे हाढ़ा, वेला अन्तिम आया। नौ खण्ड पृथ्मी मारे धाड़ा, नौ दर फोल फोलाया। सत्तां दीपां इक्क अखाड़ा, प्रभ साचा रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पन्दरां तेरी पाए वंड, वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, लक्ख चुरासी जेरज खाणी उत्भुज सेत्ज अंड वंड वंडाईआ। पंचम जेठा शब्द खण्डा दो धारा, मनमुखां कंड वढाईआ। मगर लग्गे अगम्मी धाड़ा, प्रभ हथ्थ चण्ड प्रचण्ड उठाईआ। प्रगट होया साचा लाड़ा, भेख पखण्ड दए मिटाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, दोहागण नार रंड सर्ब वखाईआ। ना कोई सोए पैर पसारा, जन भगतां एका वंड वंडाईआ। रसना हरि हरि नाउँ उचारा, बेमुख बैठे कंड वढाईआ। अग्गे डिगे मूहे दे भारा, सिर बांहीआ हेठ दबाईआ। दुःख लग्गा अन्तिम भारा, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। पंज तत्त चल्लया मात विकारा, मात जगत प्रनाईआ। ना किया सच वपारा, जूठ झूठ होई कुड़माईआ। कलिजुग माया कन्त भतारा, रैण अन्धेरा एका छाईआ। दीपक होए ना कोए उज्यारा, ना कोई साचा मार्ग लाईआ। ना कोई दीसे पार किनारा, भरम भरमी रहे भुलाईआ। भरम भरमे गढ़ हँकारा, एका दूजा देवे ना कोई मिटाईआ। तीजे नेत्र ना दरस दिखाए हरि निरँकारा, चौथे घर ना कोई समाईआ। चौथा पद ना दए सहारा, पंचम मेला ना कोई मलाईआ। मिले मेल ना गुर अवतारा, छेवां घर ना कोई सहाईआ। उपजे शब्द सच्ची धुन्कारा, सत्तवें सति पुरख निरँजण ना मेल मिलाईआ। एका वेखे धुर दरबारा, थिर घर थाउँ ना कोई बहाईआ। निरगुण निरगुण ना रंग करतारा, प्रभ आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, शब्द डंका रिहा वजाईआ। खेले खेल अपर अपारा, घर साचे वज्जदी रहे वधाईआ। मिल्या मेल मीत मुरारा, आत्म सेजा आए चाँईं चाँईंआ। कन्त कन्तूहला हरि भतारा, आपे फड़े उठ उठ बांहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती वेस कर, मिल्या दर इक्क दुआरा। एका

मिल्या हरि दरवाज़ा, एका घर सुहांयदा। एका हरि ग़रीब निवाज़ा, एका दर वखांयदा। एका रक्खे अस्व ताजा, एका आप दौड़ांयदा। एका एक फिरे भाजा, वेस अनेका आप करांयदा। प्रगट होए देस माझा, पुरी घनक धाम सुहांयदा। भगत जनां प्रभ मारे वाजां, अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। लोकमात रचया काजा, कलिजुग अन्तिम फेरी पांयदा। इक्क चलाए सच जहाजा, सोहँ नाउँ धरांयदा। दुरमति मैल धोवे दागा, निर्मल नीर प्यांअदा। शब्द जणाई बोध अगाधा, धुन आत्मक आप सुणांयदा। रसना जिह्वा जिस जन अराधा, हरि गुण वेख वखांयदा। मेल मिलावे मोहण माधव माधा, विछड़ कदे ना जांयदा। सन्त सुहेला साधन साधा, सिदक सबूरी इक्क रखांयदा। पंचम वजाए साचा नादा, अनहद ताल वजांयदा। अनहद वजाए साचा वाजा, राग रागनी सच कमांयदा। वेख वखाए दो दो आबा, आब हयात आप प्यांअदा। भाग लगाए मक्का काया साचा काअबा, साचा हज्ज करांयदा। सुरत सवाणी देवे दाजा, साचा सगन मनांयदा। शब्द मिलावा धुरदरगाही साचा दाअवा, शाहो भूप वड राजन राजा, आप आपणा संग रखांयदा। आपणा संग हरि रखंदड़ा, ना कोई तोड़ तुड़ाए। बजर कपाटी तोड़े जंदड़ा, जो बैठा आप लगाए। दूई द्वैती ढाहे कंधड़ा, भाण्डा भरम भनाए। आपे होए सदा बख्शिंदड़ा, बख्शणहार हरि हरि राए। मनमुख जीव माया अन्धड़ा, भेव ना जाणे राए। मदिरा मासी गन्दड़ा, नौ दर फिरे हलकाए। गुरमुख विरला आत्म धुन सुणे सुणाए सुहागी राग छन्दड़ा, सतिगुर पूरा आपे गाए। जोती जोत प्रकाश आप रखदंड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाए। इक्क वखाए दया कमाए परमानंदड़ा, परमानंद समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम जेठा हरि भगवाना, जोत सरूपी पहरे बाना, जीवां जन्तां देवे माणा, साधां सन्तां देवे दाना, एका रंग रंगाए। एका रंगण रंग रंगाए, रंगणहार करतारा। दूसर दर ना मंगण जाए, भरया रहे भण्डारा। जुगां जुगन्तर फेरी पाए, आदिन अन्ता एकँकारा। साधां सन्तां लए जगाए, देवे नाम अधारा। मनमुख दर तों दए दुरकाए, भेव ना पायण गुर करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत सिँघासण पुरख अबिनाशन खेल कराए दया कमाए पार किनारा। पार किनारा आप कराए, एका एक वखाया। इक्क किनारा एका तट्ट, एका दर सुहाया। एका वस्सया घट घट, एका रूप समाया। एका खेल बाज़ीगर नट, नट नटूआं सांग वरताया। एका वेखे साचा हट्ट, चौदां लोकां फोल फोलाया। शब्द वरोले साचा पट, तन्दन नाम बंधाया। हरिजन जन हरि साचे वेख वखाए काया मट, साचा मन्दिर सुहाया। पंज तत्त तन जन जाणा ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। कलिजुग तपाया एका मट्ठ, जुग चौथा खेल वखाया। सम्मत सोलां करे अकट्ठ, हरि साचा शब्द जणाया। किसे ना मुकणा पैंडा नठ्ठ नठ्ठ, चारों कुन्ट वाहो

दाहया। राज राजाना शाह सुल्तानां कोई ना रक्खे हठ, ना कोई धीर धराया। पंचम जेठ करे चट्ठ, तीर निशाना एक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकल आपे समरथ, समरथ पुरख अख्वाया। सर्बकला आपे समराथा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। प्रगट हो त्रिलोकी नाथा, आपणी रचन रचाईआ। एका शब्द एका गाथा, एका करे पढ़ाईआ। एका जोती एका नूर हाज़र हज़ूर कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का लाए माथा, एका जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होए जिउँ रामा घर दसरत्था, लंका गढ़ तुड़ाईआ। आपे वेखण जाए तमाशा, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। शाह भबीखन होए उदासा, राजइन्द्र परशादि आप उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी खाली कासा, घर घर बैठे करन सलाहीआ। लक्ख चुरासी हारी बैठी पासा, धर्म धीर ना कोई धराईआ। मुख लगाया मदिरा मासा, ईसा मूसा पहले मिटाईआ। चीना रूसा वेख खुलासा, प्रभ साचा आप खुलाईआ। लाड़ी मौत करे हासा, उठ उठ वेखे चाँईं चाँईंआ। केहड़ी कूटे पहले जासा, राए धर्म लड़ फड़ाईआ। राए धर्म दए भरवासा, फड़ाए आपणी बाहींआ। जगत अधार कीआं वेले अन्त ना छुटे तोला मासा, अठाई कुण्डां दए भराईआ। प्रगट होया हरि शाहो शाबाशा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बवन्जा साल रक्खया घनक पुर वासा, जगत सिँघासण सेज विछाईआ। वीह सौ बिक्रमी अन्त विनासा, पंज तत्त तन देह तजाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाशा, गुरमुख साचे विच गया समाईआ। आपे होया दासी दासा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। वेख वखाणे पृथमी आकाशा, गगन पताला फेरा पाईआ। साचे मण्डल पावे साची रासा, गोपीआं काहन आप नचाईआ। आपणी कुदरत आपे बलि बलि जासा, आपे वेख वखाईआ। आपणी सुरती दए आप दलासा, लक्ख चुरासी विच टिकाईआ। कलिजुग बख्शे चरन कँवल इक्क भरवासा, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ। नाउँ धराए हरि निरँकार, निहचल धाम सुहाया। निहचल धाम अपर अपार, दीपक जोती इक्क जगाया। अट्ठे पहर होए उज्यार, दिवस रैण ना कोए बणाया। ना कोई मन्दिर चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई सुहाया। इक्क अकल्ला इक्क एकँकार, बैठा डेरा लाया। जुग जुग लोकमात लै अवतार, सनक सनंदन नाम धराया। सनातन सन्त कुमार, एका रूप वटाया। बराह तेरा रूप अपार, आपणा वेस कराया। यझे पुरश तेरी सति सति धार, सति सति वरताया। हाव गरीव कर दातार, ब्रह्मे माण दवाया। नर नरायण कर विचार, बदरी नरायण वेख वखाया। कपल मुन दत्तात्रै बन्ने धार, यदू बंसी इक्क धराया। रिखभ देव पावे सार, जैनी रूप वटाया। पृथू तेरी इक्क विचार, धरत मात रिड़क वखाया। कच्छ वेखे इक्क संसार, मुख मच्छ वटाया। धनंतर वैद वड धुन्कार, सृष्ट सबाई रिहा सुणाया।

मोहणी रूप कर अपर अपार, महांदेव भुलाया। करोड़ तेतीसा वेख विचार, सुर असुर लेखे लाया। बावन भेखा इक्क अपार, बल दुआरे मंगण आया। हँसा रूप वेख विचार, शब्दी शब्द उपाया। नर सिँघ ना तत्त कोई प्यार, बालक लेखे लाया। हरी हरि हरि अपर अपार, गज तन्दन तोड़ तुड़ाया। नारद मुन तेरी सुण पुकार, नर नरायण उठ उठ धाया। बालक धूृ दए प्यार, साचे धाम बहाया। सतिजुग तेरा पार किनार, त्रेता वेस वटाया। परसराम रूप अपार, आपणी बणत बणाया। कौरू कुशेतर धाम न्यार, पिता सीस कटाया। जगत जगदीस पावे सार, आत्म तत्त जणाया। आत्म तत्त कर विचार, क्षत्री वेख वखाया। राम रामा लै अवतार, घर साचे भाग लगाया। लंका गढ़ दए हुलार, रावण रावण विच समाया। एका दूजा कर किनार, शाह भबीखन ल्ए तराया। शाह भबीखन रोवे ज़ारो ज़ार, अन्तिम नीर वहाया। राज ताज ना मोहे प्यार, तोहे चरनन प्रीत इक्क रखाया। रघुपत बोले मुखों उचार, वेला वक्त अजे ना आया। कलिजुग वरते विच संसार, तेरा लेखा दए चुकाया। मातलोक आउणा जन्म धार, भारत खण्ड भाग लगाया। पावे वंड गुर करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाया। निरगुण करे इक्क प्यार, तेरा मेरा रूप वटाया। मरे ना जन्मे विच संसार, आवण जावण खेल रचाया। जगत भबीखन कर विचार, एका तिलक लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा रूप वटाया। त्रेता बेड़ा होया दूर, हरि साचे कल वरताईआ। द्वापर आए हाज़र हज़ूर, आपणा भेख वटाईआ। वेद व्यासा ना काया तन तपया तन्दूर, ना रोग सोग जणाईआ। एका नाद एका तूर, एका शब्द जणाईआ। नारद मुन करे भरपूर, चार सलोक जणाईआ। बारा अक्खर हाज़र हज़ूर, निशअक्खर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आपणे अन्दर आपे आप टिकाईआ। आप आपणा भेव खुल्हा, आपणा राग सुणाया। नारद मुन संग रला, साचा मार्ग लाया। चारे वेदां हिस्से दए वंडा, लेखा लेख आप कराया। पुराण अठारां दए लिखा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गिणाया। आपणी करनी आप कमा, आपणा भेख वटाया। साँवल सुन्दर रूप वटा, मोर मुकट कँवल नैण आप हो आया। अर्जन मीता साचा सज्जण आप अख्वा, एका गीता ज्ञान दृढ़ाया। दुष्ट हँकारी रहिण ना पायण, बण काहना कंसा मेट मिटाया। सहँस सहँसा सरबंस सरबंसा खाए लाड़ी मौत डाइन, आप आपणा हुक्म चलाया। सन्त भगत जटा जूट एका धाम अकट्ठे रहिण, विछड़ कदे ना जाया। बिप्पर सुदामे चुकाए लहिण देण, द्रोपद लज्जया पड़दा पाया। हरि हरि भेव कोए ना सके रसना कहिण, ना कोई लेखा लेख लिखाया। कलिजुग वेखे काली रैण, आपणा रंग रंगाया। ज्ञान बोधा बोध वखाए एका नैण, एका धार वहाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा भाणा आपे वेखे आपणे नैण, ना कोई दूसर संग रखाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणी धार वहाईआ। ईसा मूसा कर प्यारा, आपणी कल वरताईआ। इक्क अथर्बण कर प्यारा, ऐड़ा अथर्बण इक्क वड्याईआ। अल्ला राणी नूर उज्यारा, नूर अलाही रिहा कराईआ। संग मुहम्मद चार यारा, चार यारी इक्क दिखाईआ। अल्ला राणी कर प्यारा, आपे रिहा प्रनाईआ। एका देवे जगत प्यारा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। वेले अन्तिम दए हुलारा, आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे लेखा लिखणहारा आपे मेटे छाहीआ। आपे लेख लिखावण आया, आपे लिखणहारा। आपे भेख वटावण आया, खेले खेल न्यारा। आपे दर दरवेशी नाम धरावण आया, मंगे भगत दुआरा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश राह तकावण आया, आपे भरे भण्डारा। आपे खूंडी मोढ्ढे भूरी उठावन आया, नानक नाउँ धराया। आपे दर दुआरा मंगण आया, ढहि ढहि पए चरन दुआरा। नाम सति कर उज्यारा, लोकमात रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर मिल्या धुर धुर संजोग मिलाया। मिल्या धुर संजोग, हरि भगवानया। जीवां जन्तां कटे रोग, देवे नाम निशानया। धुरदरगाही देवे साचा जोग, हरि दाता वड मेहरबानया। दरस दिखाए इक्क अमोघ, आप आपणा रूप वटानया। इक्क सुणाए साचा जोग, सोहँ सो साची बाणीआ। सृष्ट सबाई कलिजुग अन्तिम होए विजोग, चारों कुन्ट रोए जेरज खाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द जणाई आप जणाए, धुरदरगाही बैठा बेपरवाही धुन अनादी सुन्न समाधी अनहद साची बाणीआ। अनहद बाणी आप वखाणी, रसना हरि हरि गाईआ। परा पसन्ती पुणी छाणी, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मधम बैखरी होए निताणी, जीवां जन्तां रही समझाईआ। आत्म अन्तर एका पाणी, अमृत आत्म रही प्याईआ। पाउणा पद इक्क निरबानी, परम पुरख मिलाईआ। गुर शब्द मिले साचा हाणी, साची सेज सुहाईआ। आवण जावण चुक्के काणी, राए धर्म ना दए सजाईआ। चरन कँवल इक्क ध्यानी, नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता एका वर, निर्मल जोती आत्म घर, दिवस रैण अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। नानक नाम सति वरताया। चार कुन्ट उठ धाया। दहि दिशा जीव जन्तां समझाया। एका मार्ग लाया। साध सन्त एका हुक्म जणाया। एका अक्खर वेख वखाया। पूरन भगवन्त जोत करे रुशनाया। कलिजुग वेला दए सुहाया। आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, एका दूजा भउ चुकाया। तीजा लोइण खोल्ल वखाया। चौथा घर इक्क सुहाया। पंचम मेला सहिज सुभाया। छेवां छप्पर छन्न तजाया। सत्तवें जोत प्रकाश समाया। अठवें अट्ठां तत्तां विच ना आया। नौवें नौ दर फेरा ना पाया। दसवें बैठा आसण लाया। गुरमुख विरले दर्शन पाया, जिस

जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दसवें गुर लेखा धुर शब्दी सुत उपाया। शब्दी सुत गुर गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। आपे मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता रोग विच ना आया। आपे बख्शे गुणी गहिंद, दाता दानी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे जाणे, भरम भुलेखा वेख वखाणे, धारी केसा मूंड मुडाया भेव ना राया। गुर गोबिन्द बण लिखारा, आपणा लेख लिखांयदा। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर नरायण जोत जगांयदा। चार वरनां करे इक्क प्यारा, वरन गोत मेट मिटांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सोहिण इक्क दुआरा, बीस बीसा राह तकांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां भरे नाम भण्डारा, आपणी वस्त आप वरतांयदा। सम्मत सोलां कर ख्वारा, मनमुख जीआं आप उठांयदा। सम्मत सतारां मारे मारा, ना कोई धीर धरांयदा। अट्ठ अठारां वहिंदी धारा, जल जल आप समांयदा। उन्नी उनीसा पार किनारा, ईसा मूसा आप कुरलांयदा। बीस बीसा नर अवतारा, छत्र सीस आप झुलांयदा। खेले खेल दिल्ली दरबारा, सच सिंघासण इक्क विछांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी बन्ने साची धारा, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। सतिजुग सोहे तेरा धर्म जैकारा, दहि दिशा आप लगांयदा। भगत वछल आप गिरधारा, गिरवर रूप वटांयदा। कलिजुग तेरा पार किनारा, लोकमात पार करांयदा। सतिजुग साचा लै अवतारा, धरत मात गोद सुहांयदा। भगत जनां करे प्यारा, एका कर्म कमांयदा। एका भरे नाम भण्डारा, बरन अठारां वेख वखांयदा। तरनी तरन सच्ची सरकारा, साची धार चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठा गुरमुखां रक्खे साया हेठा, नाम छत्र सीस झुलांयदा। पंचम जेठा जगत सिंघासण, हरि साचे मूल चुकाया। पार किनारा पृथ्मी आकाशन, आपणा आप वखाया। आप उठाए शाहो भूप हरि शाह शबाशन, शाहां शाह हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दित्ता वर, हरिसंगत मेल मिलाया। संगत मेला हरि हरि नाता, सतिगुर पुरख जुड़ाया। मिले मेल हरि पुरख बिधाता, पारब्रह्म सरनाया। उत्तम होए सतिजुग ज़ाता, वरन गोत ना कोई रखाया। अकाल पुरख होए साचा पिता आदि शक्त होए साची माता, गुरमुख साचे गोद उठाया। घर चौथे देवे सोहँ दाता, साचा नाम जपाया। इक्क चलाए साचा राथा, रथ रथवाही बणके आया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, त्रैभवण समीप समाया। आपे जाणे पूजा पाठा, हवण अहूती आप कराया। आपे अमृत सर सरोवर मारे ठाठा, आपे ताल भराया। आपे चारे कुन्ट दहि दिशा लोआं पुरीआं गगन पतालां फिरे नाठा, चारों कुन्ट फेरा पाया। आपे जाणे आपणी वाटा, आपे पन्ध मुकाया। आपे चढ़े आपणे घाटा, आपे राह वखाया। आपे जोती नूर उपाए एका लाटा, आपे अग्नी तत्त जलाया।

आपे आपणा रस आपणे अन्दर आपे चाटा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। आपणा लाहा आपे खाटा, दिस किसे ना आया। आपे आपणा जुग जुग पूर कराए घाटा, सन्त सुहेले संग रलाया। लेखा लिखे मस्तक जोती नूर लिलाटा, लहिणा देणा मूल चुकाया। आप खुल्हाए साचा हाटा, आपे हट्टो हट्ट विकाया। गुर संगत तेरा साचा नाता, हरि साचे आप बंधाया। कलिजुग रैण अन्धेरी राता, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। मनमति नार होई कमज़ाता, मनमुख जीवां लए प्रनाया। वेले अन्त ना पुच्छे कोई वाता, राए धर्म दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिसंगत माण दवाया। हरिसंगत हरि साचा माण, एका दर द्वारया। इक्क जणाई धुर फ़रमाण, आपणी आप जणा रिहा। साचा ढोला सारे गाण, काया मन्दिर आप वसा ल्या। आपणा गुर आपे पाण, आपे घर छुपा ल्या। आपणा पड़दा आपे लाहण, मुख घुँघट ना कोई रखा ल्या। दूई द्वैती पड़दा पड़ायण, बजर कपाटी किला तुड़ा ल्या। अनहद सुणे साचा गाण, पंचम सेवा ला ल्या। दस्म दुआरी सच मकान, प्रभ साचे आप बणा ल्या। नेड़ ना आयण पंज शैतान, ना कोई मोह वखा ल्या। गुरमुख विरले लोकमात पायण, जिस जन चरन ध्यान लगा ल्या। आत्म अमृत अन्तर देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठा गुण निधाना, हरिसंगत करे दर परवाना, एका देवे नाम निशाना, ना दूसर कोई वेख वखा ल्या। शब्द गुर सर्ब देवा, देव देवा अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, भेव किसे ना पाया। जन भगतां देवे अमृत आत्म साचा मेवा, एका फल खुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग मेला आप मिलाया। मेला मेलणहार बनवारी, निर्मल नूर नुराना। भगत वछल शब्द गिरधारी, देवे राग तराना। दर दुआरे बैठा पैज जाए संवारी, वेख वखाए गुणी निधाना। हरिसंगत हरि लगे प्यारी, बिरध बाल ना जाणे हरि नौजवाना। एका रंग रंगे करतारी, लोकमात उतर ना जाणा। जो जन ढहि पया द्वारी, दो जहानी पार कराणा। तोड़ विछोड़ा आपणी करे कारी, हरि का भेव किसे ना जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वखाए एका घर ना कोई दूसर महल्ल अटारी। एका हरि एका दर, एका घर सुहाया। एका देवणहारा वर, एका झोली नाम भराया। एका चुकाए जगत डर, धर्म राए ना दए सजाया। एका खेल रिहा कर, करनहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की साची सिक्खी साची धार बंधाया। एका इक्की कर आकार, आपणा रूप दरसांयदा। निरगुण रूप वस घर बार, वेद कतेब ना कोई जणांयदा। नौ द्वार विच संसार, पंज तत्त सुहांयदा। दसवां महल्ल इक्क उसार, काया मन्दिर डेरा लांयदा। अटल महल्ल उच्च मिनार, आप आपणा वेख वखांयदा।

गुरसिख ना लाए कोई किसे सल, ताहना मेहणा ना कोई धरांयदा। पुरख अबिनाशी जिस होया वल, फड़ बांहों पार करांयदा। जगत बुड़ेपा फल लगा डाल्, अमृत मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म देवे साचा सुख सुफल कराए मात कुक्ख, मानस मनुख लेखे लांयदा। हरिसंगत हरि नाता जोड़, एका मार्ग लाया। क्या कोई करे तोड़ विछोड़, प्रभ साचे आप जुड़ाया। चढ़या रहिणा शब्द घोड़, प्रभ साचे आप चढ़ाया। दर दुआरा वेखे दौड़ दौड़, दिवस रैण सेव कमाया। पंचां तत्तां मारे पहला पौड़, पंचम चोर दए मिटाया। गुरमुख आत्म लग्गी औड़, अमृत मेघ दए बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे एका वर, जगत सिँघासण मूल चुकाया। जगत सिँघासण गया तज, आपणा मोह चुकाया। शब्द सिँघासण चढ़या भज्ज, निरगुण वेस वटाया। जगत सिँघासण पड़दा कज्ज, अग्नी तत्त जलाया। शब्द सिँघासण बैठा सज, निहकलंकी जामा पाया। जगत सिँघासण ताल गया वज्ज, शब्द सिँघासण वेला आया। जो घड़या सो गया भज्ज, थिर कोई रहिण ना पाया। गुरसिक्खां सम्मत पन्दरां कलिजुग तेरी पार कराए पंचम जेठी हद्द, औखा घाट वेख वखाया। घर घर आप सुणाए अनहद वाजा साचा नाद, नाद अनादी धुन उपजाया। खोज खुजाए हरि ब्रह्मादि, पारब्रह्म अख्वाया। आपे बैठा विच अद्ध, गुरमुख साजण राह तकाया। विष्नूं वंसी वेखे साची यद्द, बंसा बंस सुहाया। गुरमुख वखाए एक पद, चौथा दर सुहाया। शब्द निशाना लए गड्ड, झण्डा धर्म झुलाया। मनमति विकारा बणे डूँघी खड, उप्पर पड़दा पाया। निर्मल करे तन मास नाड़ी रत्त हड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे इक्क वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचा दया कमाया। घर सज्जया शब्द सिँघासण, जग तज्या पुरख अबिनाशन, प्रगट होया घनक पुर वासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन देवे एका वर, एका घर शाहो शाबासन।

३५१
०७

* १८ जेठ २०१५ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे घर शब्द लिखाए बलोवाल ज़िला अमृतसर *

सरनगत सर्ब सुख पाया, पारब्रह्म सरनाई। पारब्रह्म गुर इक्क बुझाया, गुर पूरे हथ्थ वड्याई। एका तत्त शब्द जणाया, शब्दी शब्द उपाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, हरिजन मेला एका घर, एका देवे नाम वड्याई। आत्म घर हरि हरि मेला, हरि हरि आप कराया। आपे होए सज्जण सुहेला, जुग जुग वेस वटाया। आदि जुगादी इक्क अकेला, अकल कला अख्वाया। आपणा खेल अबिनाशी करता आपे खेला, ना कोई दूसर संग रलाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाया। सुहञ्जणा घर एका हरि, निरगुण वेस वटांयदा। गुरमुख जोती नूर धर, नूरो नूर समांयदा। शब्द सरूपी देवे वर, सति सन्तोख समांयदा। आपे पुरख नारी नर, नर नरायण आप हो जांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, आप आपणी रचन रचांयदा। आपणी किरपा आपे कर, करनी करता आप अख्वांयदा। नाम भण्डारा देवे भर, जो दर मंगण आंयदा। लक्ख चुरासी जाए हर, राए धर्म मुख शरमांयदा। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, चरन चरनोदक इक्क वखांयदा। काया तोड़ हँकारी गढ़, सच महल्ले कुण्डा लांहयदा। सुरत सवाणी आपे फड़, उच्चे टिल्ले आप बहांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुरमुख साजण वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर आदि निरँजण, एका एक रखाया। आपे बैठ दर्द दुःख भय भंजन, सगला संग निभाया। जन भगत कराए एका मजन, तीर्थ तट इक्क वखाया। नेत्र लोचण पाए साचा कज्जल, नाम निधाना आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत वेखे साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। हरि मन्दिर हरि वस्सया, पूरन गुर भगवन्त। जन भगतां राह साचा दस्सया, मेल मिलावा साचे सन्त। दर साचे बहि बहि हस्सया, खेले खेल हरि बेअन्त। मनमुख जाए दर तों नस्सया, दर दुरकाए जीव जन्त। तीर निराला एका कस्सया, खेले खेल जुगा जुगन्त। कलिजुग वेखे रैण अन्धेरी मस्सया, ना कोई मणीआ ना कोई मंत। पंच विकारा घर घर अन्दर वस्सया, माया भुल्ले भरमी सन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मेला साचे दर, दर मेला एका कन्त। एका कन्त सुहागी मीता, परम पुरख सुल्ताना। जुग जुग चलाए आपणी रीता, जन भगतां देवे नाम निधाना। ना कोई मन्दिर गुरुदुआरा ना कोई मसीता, आत्म जोती आत्म ब्रह्म धुन अनादी शब्द तराना। एका राग सुणाए गीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका दर, दर एका ठांडा सीता। ठांडा सीता हरि दरबारा, हरि हरि आप उपाया। आपे बैठा एकँकारा, ओंकारा रूप वटाया। निरगुण नूर जोती धारा, सरगुण भेव ना राया। शब्द अगम्मी करे कारा, लेखा लेख ना कोई लिखाया। थिर घर बैठ आप निरँकारा, निज आपणा वेस वटाया। करे कराए करनेहारा, करता पुरख अख्वाया। रवि ससि ना कोई सतारा, पृथ्मी आकास ना कोई रखाया। ना कोई ब्रह्मा वेद लिखारा, त्रैगुण माया ना वेस वटाया। पंज तत्त ना करे प्यारा, मन मति बुध ना नाल रलाया। खाणी बाणी ना कोए विचारा, गुर पीर

अवतार साध सन्त ना कोई उपाया। सच महल्ला उच्च अटला आपे बैठ सिरजणहारा, आप आपणा वेख वखाया। निर्मल जोती जोत उज्यारा, प्रकाश प्रकाश समाया। ना कोई पवण पाणी ना जल धारा, अप तेज़ वाए ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन मेला एका घर, घर साचा इक्क बणाया। साचा घर हरि उपा, निरगुण जोत जगाईआ। जोत सरूपी डगमगा, अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। ना कोई दूसर वेख वखा, ना कोई तीजा दर खुल्हाईआ। चौथा पद ना लए गिणा, पंचम मेल ना कोई मिलाईआ। छप्पर छन्न ना ल्या कोई उपा, छेवां घर ना कोई सुहाईआ। सत्तवें सति सतिवादी आप अख्वा, घर साचे बैठा आसण लाईआ। अट्ठां तत्तां भेव ना रा, ना कोई गणत गणाईआ। नौ दर ना लए खुल्हा, तृष्ना तामस ना कोए वधाईआ। दस दस लेखा आप जणा, आपणी रचना आप रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। वेद कतेब कोई जाणे ना, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे हरि, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर ग़रीब निवाज़ा, एका एक उपाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा ना कोई जाणे दर दरवाजा, नदरी नदर ना कोई दिसाईआ। सच महल्ले साजण साजा, सिरजणहार वड्डी वड्याईआ। आपे रचया आपणा काजा, आप आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग खेल भगतन मेल जोत जगाए देस माझा, पुरख अगम्म अगम्मड़ी धार चलाईआ। शब्द अनादी मारे वाजां, नादी सुत उठाईआ। भगत सुहेला रंग नवेला आपे रक्खणहारा लाजा, लाजावन्त हरि रघुराईआ। इक्क रखाए अस्व ताजा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। धुरदरगाही बेपरवाह नूर अलाही लोकमात आया भाजा, परवरदिगार आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे दर, दर साचा इक्क वखाईआ। साचा घर हरि वखाउणा, आपणी कल कल धारीआ। गुरमुख सोया मात आप उठाउणा, लोइना लोइन खुल्हारीआ। पूर्ब लहिणा झोली पाउणा, पिछला कर्ज उतारीआ। साचा मार्ग इक्क वखाउणा, निरगुण मेला जोत निरँकारीआ। सरगुण भरम भुलेखा मात मिटाउणा, सति पुरख वड वड्डा सिक्दारीआ। कूड़ कुड़यारा जगत जंजाला गलो कटाउणा, देवे नाम शब्द सच्ची ख़ुमारीआ। एका दीपक जोत निरँजण आप जगाउणा, करे प्रकाश महल्ल अटारीआ। अन्ध अन्धेरा मेट मिटाउणा, आप आपणी किरपा धारीआ। साचे मन्दिर कुण्डा आपे लौहणा, बजर कपाटी सिला पाड़ीआ। पंजां दुष्टां मार मुकाउणा, नेड़ ना आए काम क्रोध लोभ मोह हँकारीआ। साचा लड़ इक्क फड़ाउणा, डूँघी भवरे वेख वखाए पार किनारीआ। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाउणा, आप आपणी कल धारीआ। अन्दरे अन्दर हरिजन साचे मेल मिलाउणा, ना दिसे कोई चार दिवारीआ। सुरती शब्दी नाता इक्क जुड़ाउणा, ना कोई तोड़े जीव संसारीआ।

गुर पूरे सगन आपणी हथ्थी आप खुल्हाउणा, रसना रस ना जाणे सच द्वारीआ। अमृत आत्म इक्क पिआउणा, हउमे रोग बिमारीआ। तीजा लोचण इक्क खुल्हाउणा, दोए नेत्र बन्द किवाड़ीआ। अग्गे पिछे आप आपणा दरस दखाउणा, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़ीआ। अट्ठे पहर दिवस रैण सेवादार साची सेव कमाउणा, गुर पूरा वड सिक्दारीआ। दस्म दुआरी गुरमुख साचे तेरा घर सुहाउणा, जोती नूर कर उज्यारीआ। आपणी हथ्थी कुण्डा आपे लौहणा, खोल्हे ताक उलटी बारीआ। आत्म सेजा शब्द सिँघासण इक्क विछाउणा, फूलन बरखा अपर अपारीआ। रुत्त बसन्ती इक्क खिड़ाउणा, खिड़ी रहे सच्ची गुलज़ारीआ। जोत निरँजण तेल चढ़ाउणा, साचा वेला आप सुहारीआ। पंचम सईआं मंगल गाउणा, धुन अनादी ताल वजाल्या। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा आप प्रगटाउणा, आत्म ब्रह्म वेख वखाल्या। पारब्रह्म प्रभ विच समाउणा, एका दूजा भेव चुकाल्या। तीजे लोचण दर्शन पाउणा, घर चौथे हरि सवाल्या। पंचम मीता आप अख्वाउणा, जोती नूर इक्क अकाल्या। गुरसिख साजण तेरा घर सुहाउणा, दर आया बण सवाल्या। पंज तत्त तेरा लेखे लाउणा, फल लग्गे काया डाल्हीआ। एका मति हरि समझाउणा, जुग चले अवल्लड़ी चाल्या। चरन प्रीती साचा हठ रखाउणा, सच्चा जोग अभ्यास वड घालण घाल्या। रसन स्वास लेखे लाउणा, जिह्वा जप जप होई बेहाल्या। नौ दुआरे पार कराउणा, कर किरपा गुण निधानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, साचा घर मिल्या हरि चुकया डर, दीपक जगे मस्तक साची थाल्या। हरि सन्तन घर वस्सया सतिगुर पुरख सुजान। राह आपणा आपे दस्सया, गुर पूरे हो मेहरवान। घट भीतर आपे वस्सया, देवे शब्द धुर फ़रमाण। होए प्रकाश कोटन कोट रवि सस्सया, सूरज चन्न सर्ब शरमान। अगम्म अगम्मड़ा दर दुआरे आवे नस्सया, जन भगतां दर दरबान। भगत भगवन्त जुगा जुगन्त आदि अन्त एका घर वस्सया, विछड़ कदे ना जाण। आपे रोवे आपे हस्सया, खेले खेल जी जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर सन्त करे परवान। सन्तन घर सतिगुर मीता, सति सतिवाद समाया। लक्ख चुरासी आपे परखणहारा नीता, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। आपे जाणे हस्त कीटा, राज राजाना शाह सुल्ताना वेख वखाया। जिस जन हरि हरि नाम लागा मीठा, रसना जिह्वा गाया। देवे शब्द जगत इक्क अनडीठा, लेखा लिख्त विच ना आया। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठा, अनरस एका मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे दर, दर द्वार हरि भिखार, एका अलख जगाया। एका अलख अलख निरँजण, अगम्म अगम्मड़े धाम जगाईआ। आपणा दर आपे आया मंगण, दर दरवेश आप अख्वाईआ। आपणी चोली आपे चाढ़े रंगण, ना कोई दूसर रिहा रंगाईआ। आपणे घोड़े आपे कस्सया तंगण,

आपे बैठा बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं आपे रिहा लँघण, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर रहे नैण उठाईआ। जन भगतां तन पहनाए एका कंगण, लोकमात वड्डी वड्याईआ। आप रखाया आपणे अंगन, एका गोद सुहाईआ। आकाश प्रकाश वेखे गगन, गगन गगनंतर फोल दिखाईआ। गुरमुख दीपक आत्म जोती जगण, निरगुण बाती एका लाईआ। मनमुख जीव फिरदे नग्न, कलिजुग कूड़ा दए दुहाईआ। गुरमुख विरले नाम लगाया साचा सगन, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। मानस जन्म ना होया भंगण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। गुरसिख गुरमुख सन्त सुहेले इक्क अकेले दर द्वार घर साचा मंगण, मिले मेल प्रभ साचे माहीआ। साचा माही बेपरवाह, दीनां नाथ अनाथा। आपे बख्शे सिफ्त सलाह, सदा सहाई सगला साथा। लोकमात जगत मलाह, खेले खेल त्रिलोकी नाथा। हरिजन वखाए साचा राह, नाम जणाई साची गाथा। लेखे लाए पवण स्वासी साह, सर्बकला समराथा। इक्क वखाए साचा थाँ, लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा। आपे पिता आपे माँ, आपे लेखा लिखाए मस्तक माथा। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, आप चढ़ाए साचा राथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला एका घर, घर मिल्या पुरख समराथा। समरथ पुरख सर्ब गुरदेवा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। लेखा जाणे रसना जिह्वा, अन्तर मन्त्र इक्क रखाया। कौस्तक मणीआं मस्तक लाए थेवा, ललाट लिलाट समाया। मेल मिलावा अलख अभेवा, भेद अभेदा भेव लिखाया। बिरथा जाए ना हरिजन सेवा, सेवक सेवा पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा घर, घर मन्दिर काया अन्दर इक्क सुहाया। काया मन्दिर हरि घर वसेरा, घर घर आप समाए। आपे दूर आपे नेड़ा, हाज़र हज़ूर आप हो जाए। जिस जन चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा नज़र ना आए। आपे ढाहे भरमां डेरा, भरमी भरम गढ़ तुड़ाए। करे कराए हक्क निबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखाए। हरिजन हरि हरि वसे काया खेड़ा, मन्दिर अन्दर अन्दर मन्दिर वेख वखाए। बिन गुर पूरे वखाए केहड़ा, ना कोई पार कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर घर विच रिहा टिकाए। घर विच घर घर विच दीवा घर विच बाती, घर विच जोत निरँजण जोती, आदि निरँजण आप जगा मिल्या मेल हरि सज्जण प्रभ कमलापाती, नार सुहागण सोभावन्ती तन शृंगार सोला कल्या इक्क हंढाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर महल्ल अटल उच्च मुनारा, आपणा आप वसाए। उच्च मुनारा उच्चा मन्दिर, हरि हरि आप उपाया। आपे चढ़या अन्दरे अन्दर, दिस किसे ना आया। उच्चे टिल्ले फिर फिर थक्के गोरख मच्छन्दर, हथ्थ किसे ना आया। कलिजुग अन्तिम चार कुन्ट दहि दिशा लक्ख चुरासी माया ममता वज्जा जन्दर, साध सन्त ना कोई तुड़ाया। अठसठ

तीर्थ भेख पखण्डी फिरदे बन्दर, बण बण विच डेरा लाया। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी भगत सुहेला इक्क बख्शंदड़, जुग जुग वेस वटाया। जिस जन दरसाए परम पुरख प्रभ परमानंदन, निज घर वेख वखाए। काया होए सच साची चन्दन, निम वास रहिण ना पाए। सतिगुर पूरा तोड़नहारा जगत जंजाला बंधन, बन्दी तोड़ आप अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर दीपक इक्क जगाए। घर दीपक प्रकाश, अन्धेर विनास्सया। मिल्या मेल पुरख अबिनाश, हरि पाया शाहो साबास्सया। हउमे दुःखड़ा होया नास, मानस जन्म होया रास्सया। मेल मिलाए पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशा आप निवास्सया। लहिणा देणा चुकाए मात गर्भ दस दस मास, रक्त बूंद ना लग्गे तोला मास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा घर, घर साचा गुरचरन भरवास्सया। गुरचरन रंग महल्ला, प्रभ साचा इक्क वसा ल्या। आपे वेखे इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रला ल्या। आप वखाणे जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा डूँघी कन्दर डेरा ला ल्या। गुरसिख तेरी काया मन्दिर सच्चा दुआरा एका मल्ला, एका दर खुल्ह्आ ल्या। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला, चारे कुन्ट दहि दिशा उठ उठ तेरा राह तका ल्या। आप फड़ाया आपणा पल्ला, पौड़ी पौड़ी आप चढ़ा ल्या। सो पुरख निरँजण अग्गे खला, हँ हँगता मेट मिटा ल्या। जोती शब्दी आपे रल्ला, सोहँ साचा जाप जपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला इक्क घर, घर साचा जीउ पिण्ड काचा थिर कोई रहिण ना पा ल्या। काया तन जगत जग नाता, थिर रहिण ना पाया। ना कोई पिता ना कोई माता, भैण भाई साक सैण कोई दिस ना आया। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, दीन ईमान ना कोई रखाया। ना कोई दिवस ना कोई राता, रवि ससि ना कोई सुहाया। एका शब्द धुरदरगाही साची दाता, गुर पूरा झोली पाया। इक्क वखाए चौदां लोक साचा हाटा, हरि साचे आप खुल्ह्आया। वेख वखाए दया कमाए काया बाटा, कंचन गढ़ इक्क सुहाया। आप लेपेटे काया आन बाटा, आपे फंद कटाया। कलिजुग अन्तिम नेड़े आई वाटा, रिहा पन्ध मुकाया। मनमुखां मानस मानुख पया घाटा, ना कोई पल्ले गंढु बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन जन हरि गुरमुख गुरसिख सदा एका घर घर बारा, हरि निरँकारा आपणा आप वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नर सेवा रिहा कमाया।

हरि साजन जग मीतड़ा, पारब्रह्म करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, चाढ़े रंगण नाम अपार। देवे नाम सदा अनडीठड़ा, दिस ना आए विच संसार। जुग जुग जाणे आपणी रीतड़ा, आप आपणी कर विचार। सन्त सहाई साचा मीतड़ा, जोत

सरूपी खेल अपार। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, सो पुरख निरँजण किरपा धार। गुरमुख विरला मानस देही जीतड़ा, जिस पाया सिरजणहार। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पापी दए उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल अपर अपार। हरि साजन जग मीत है, आदि अन्त अख्वाया। पुरख अबिनाशी इक्क अचुत है, रूप रंग रेख ना राया। आपे माता पित आपे सुत है, आपणी गोदी आप उठाया। आप सुहाए आपणी रुत्त है, दर आपणा वेख वखाया। घर आपणा आपे रिहा लुट्ट है, आपे आप भण्डार भराया। जुगा जुगन्त ना जाए निखुट है, नाम धन ख़जाना इक्क वरताया। आपणी जड़ आपे देवे पुट्ट है, आपे रिहा लगाया। आप आपणा आपे रिहा कुट्ट है, हरि आपे दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वेस वटाया। हरि साजन जन संगीआ, सगला संग निभाए। खेले खेल बहु बहु रंगीआ, भेव अभेदा भेव ना राए। सखा सुहेला अंगी संगीआ, सगला संग निभाए। बैठा शब्द रंगीले सच पलँघीआ, नेत्र नैणां दिस ना आए। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले एका मंगण मंगीआ, नैणी नैण दर्शन पाए। मेल मिलावा दाता सूरा सरबग्गीआ, सर्बकल अख्वाए। अमृत धार नुहाए साची गंगीआ, सर सरोवर इक्क वखाए। अनहद वजाए सच मृदंगीआ, राग अनादी इक्क सुणाए। लेखे लाए बत्ती दन्दीआ, जो जन रसना रहे गाए। मेटे रैण अन्धेरी अन्धीआ, अन्ध अन्धेरा दए मिटाए। लक्ख चुरासी पार कराए पन्धीआ, आवण जावण फंद कटाए। धर्म राए तोड़े बन्दीआ, बन्दीखाना ना कोई सजाए। गुरमुख विरले प्रभ चरन द्वार एका मंग मंगीआ, पूरन इच्छया आप कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निराधार अख्वाए। हरि साजन जग पेख्या, परम पुरख सुल्तान। ना कोई रूप ना कोई रेख्या, ना कोई सूरत विच जहान, आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी जुग जुग धारे आपणा भेख्या, आपणी कल आप वरतान। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशिआ, दर दरवेशा आप कहाए। शाहो भूप नर नरेशिआ, सच सिँघासण आसण लाए। इक्क सुणाए नाम संदेशिआ, गुरमुख साजण ल्ए जगाए। आत्म ब्रह्म करे परवेशिआ, पारब्रह्म सरनाए। वेख वखाए धारी केस्सया, मूंड मुंडाए गणत गणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल रंग नवेल एका दर सुहाए। हरि साजण हरि मानया, सतिगुर दीन दयाल। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणया, ना कोई परखे पारखू लाल। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल। जन हरि हरिजन आपणा आपे आप पछाणया, देवे नाम सच्चा धन माल। तोड़णहारा जगत जंजालया, आपे शाह आपे कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल काया मन्दिर सच धर्म सच्ची धर्मसाल। हरि साजण घर वस्सया, उच्च महल्ल मुनार। राह आपणा आपे दस्सया, आप आपणी

कर विचार। शब्द सरूपी फिरे नस्सया, दिवस रैण एका धार। आपणा तीर निराला आपे कस्सया, आपणीआं भुजां रिहा संवार। गुरमुख मेटे रेण अन्धेरी मस्सया, पंच विकारा देवे मार। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, सूरज चन्न करे निमस्कार। हर घट अन्दर आपे वस्सया, रूप अगम्म अगम्मड़ी कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल अपर अपार। हरि साजन हरि रूप है, एका रंग समाए। वेख वखाणे चारे कूट है, दहि दिशा संग निभाए। तीर निराला रिहा छूट है, इक्क निशाना रिहा लगाए। मेट मिटाए जूठ झूठ है, माया ममता मोह मिटाए। अलख निरँजण आपे रिहा तूठ है, आपणी आप अलख जगाए। मनमुखां हथ्थ फड़ाए खाली ठूठ है, नाम भिच्छया कोई ना पाए। धुरदरगाही गया रूठ है, बैठा मुख भवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार अपर अपार, निज घर आपणी रिहा चलाए। हरि साजन हरि पाया, घर मेल सुहागी कन्ता। आप आपणा मोह चुकाया, मिल्या मेल श्री भगवन्ता। एका दूजा भउ गंवाया, एका शब्द मणीआ मंता। तीजा लोचण आप खुल्ाया, धन्न सुभागी साचा सन्ता। चौथे आप समाया, मिल्या मेल इक्क इकन्ता। पंचम मेल सहिज सुभाया, मेलणहार आदिन अन्ता। छेवे छप्पर छन्न ना कोई रखाया, बैठा आपे इक्क इकन्ता। सत्तवें सति सतिवादी डेरा लाया, ना कोई जाणे जीव जन्ता। अट्ठां तत्तां भेव ना राया, ना कोई बणाए बणता। नौ दर आपे रिहा तजाया, आप आपणी छड्ड सुगन्दता। दर साचा वेख वखाया, फल फुलवाड़ी इक्क बसन्ता। जन हरि हरि जन दर घर साचा पाया, मेट मिटाए सगली चिन्ता। चिन्ता रोग रहिण ना पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला विच संसार, पारब्रह्म गुर हरि करतार, करता पुरख रूप वटंता। हरि साजण हरि धन्न है, हरि हरि रंग समाए। हरिजन बेड़ा देवे बन्न् है, आप आपणी दया कमाए। निर्मल दीप जोत जगाए तन है, आकाश प्रकाश समाए। धुन अनादी राग सुणाए कन्न है, ताल तलवाड़ा इक्क वजाए। भरम भुलेखा कढ्ढे जन है, जन जननी वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेल सच घर घर सुहञ्जणा, जगे जोत आदि निरँजणा दीवा बाती ना कोई रखाए। हरि साजण हरि साथ है, सर्बकला समरथ। आपे रक्खे दे कर हथ्थ है, सगल विसूरे देवे मथ। एका नाम चलाए साची गाथ है, दो जहानी साचा रथ। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ है, प्रगट हो त्रिलोकी नाथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका दर, गुरमुख साजण साचे घर, आप कराए हरि रघुनाथ। हरि साजन हरि मेल है, मेला धुर दरगाह। आपे सज्जण सुहेल है, देवे सच सलाह। आपे गुरू गुरु गुर चेल है, आपे जगत मलाह। आपे वस्सया रंग नवेल है, आपे दस्सणहारा राह। जोती जोत सरूप हरि, आप

३५८ ०७

आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका दर, इक्क वखाए साचा नाँ। हरि साजन सच जोग है, जोगी जोग कमाए। आत्म रस साचा भोग है, भोगी भोग वखाए। पूरन गुर धुर संजोग है, धुर संजोगी मेल मिलाए। कट्टणहारा हउमे रोग है, हउमे हँगता रोग गंवाए। देवे दरस इक्क अमोघ है, अगम्म अगम्मड़ा रूप वटाए। नाम चुगाए साची चोग है, तृष्ना भुक्ख गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सेवा सेवादार लक्ख चुरासी डेरा लाए। लक्ख चुरासी डेरा ला, आपणा मुख छुपाया। आपे होया बेपरवाह, भेव कोई ना राया। आपे जाणे आपणा नाँ, ना कोई लेखा लेख लिखाया। आपे जाणे आपणा थाँ, घर आपणे डेरा लाया। आपे जाणे आपणी माँ, पिता पूत आप जणाया। आपे माणे आपणी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। दूसर कोई वखाणे ना, भेव अभेदा अछल अछेदा भेव कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप, दिस किसे ना आया। शाहो भूप हरि सुल्ताना, पारब्रह्म भगवन्ता। आपे वस्सया सच टिकाना, आपे जाणे आदिन अन्ता। आपे चढ़े नाम बिबाना, वेख वखाणे साचे सन्ता। आपे देवे जिया दाना, नाम नामा मणीआ मंता। आपे वेखे गोपी काहना, आप आपणा वेस वटंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे खेले जुगा जुगन्ता। जुग जुग खेल खेलणहारा, अकल कल अख्वाया। सतिजुग साचे पावे सारा, आप आपणा वेस वटाया। त्रेता तेरा मीत मुरारा, तेरा रंग रंगाया। द्वापर तेरा पार किनारा, विच संसार रहिण ना पाया। कलिजुग अन्तिम आई वारा, हरि साचा वेख वखाया। नानक गोबिन्द बण लिखारा, लेखा गया लिखाया। वेद व्यासा पावे सारा, पूरन ब्रह्म जणाया। पूत सपूता उच्च मुनारा, ऊँचे टिल्ले आसण लाया। सम्बल नगरी धाम न्यारा, धरनी धवल सुहाया। प्रगट होए एकँकारा, एका कल वरताया। जीव जन्त ना पाए सारा, लेखा लेख ना कोए जणाया। आपे जाणे आपणी कारा, करता कादर आप हो आया। खेले खेल अपर अपारा, खेलणहार सृष्ट सबाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, आप आपणा रिहा उठाया। दो जहानां पावे सारा, लोआं पुरीआं रिहा हिलाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाया। इक्क अकल्ला एकँकारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड एका वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, आपणा खेल वेखण आया। आपणी खेल खेलणहारा, आपे खेल खिलांयदा। आपणा मेल मेलणहारा, आपे मेल मिलांयदा। गुरु गुर चेले वेखे इक्क दुआरा, एका घर सुहांयदा। पंचम मीता कर प्यारा, पंचम मोह चुकांयदा। चौथे दर पावे सारा, साचा दर सुहांयदा। तीजे लोइण खेल अपारा, निरगुण रूप समांयदा। दोए मेला इक्क घर बारा, सुरती शब्दी घर बहांयदा। एका घड़न भन्नणहारा, समरथ पुरख नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण खेल रिहा कर, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचे वेख वखाईआ। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। ना कोई दीसे मीत मुरार, सगला संग ना कोई निभाईआ। माया भुल्ले जीव गंवार, माया ममता मोह रखाईआ। हउमे रुले विच संसार, हँ हँगता करी कुड़माईआ। फले फुल्ले सिम्मल धार, फल कोई दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणा रूप वटाईआ। निरगुण वेस हरि अवल्ला, आपणा आप कराया। आपे बैठा सच महल्ला, सच सिँघासण आसण लाया। वेख वखाणे जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाया। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका रंगण नाम रंगाया। शब्द फड़ाए साचा पल्ला, सो पुरख निरँजण दया कमाया। मनमुख भुलाए कर कर वल छल्ला, वल छल धारी आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस रिहा कर, वेस अनेका आप हो जाया। वेस अनेका हरि गिरधारा, अकल कल अखवाया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। पंज तत्त ना करे प्यारा, मन मति बुध ना कोई रखाया। ना कोई बस्त्र तन श्रृंगारा, ना कोई शस्त्र तन सजांयदा। इक्क अकल्ला करनेहारा, करता पुरख आप अख्वांयदा। इक्क अकल्ला शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व हो अस्वारा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। उप्पर चाढ़े साचा लाड़ा, दो जहानां वेखे एका अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। आप उठाए आपणी अगम्मी धाड़ा, अग्न लगाए बहत्तर नाड़ा, लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, मनमुख जीवां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण धार हरि करतार विच संसार, आपणी आप चलांयदा। निरगुण धार हरि करतार, आपणी आप चलाईआ। आपणी जोती कर उज्यार, आपे वेख वखाईआ। शब्द सरूपी जै जै जैकार, जै जैकारा रिहा कराईआ। लक्ख चुरासी सांझा यार, सगला संग निभाईआ। आपे वेखे अन्दर बाहर, गुप्त जाहर भेव ना राईआ। परखणहारा परखे कलिजुग तेरी अन्तिम वार, नाम कसवटी इक्क उठाईआ। सो पुरख निरँजण दया धार, दया निध दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल कर, निरगुण निरगुण वेस वटाईआ। निरगुण वेस हरि वटाया, अचरज बणत बणाईआ। गोबिन्द मेला इक्क कराया, घर मेला सहिज सभाईआ। घर विच घर रिहा सुहाया, घर बैठा आसण लाईआ। घर विच जोती रिहा टिकाया, घर घर करे रुशनाईआ। घर विच घर चोटी चढ़ वखाया, एका डण्डा उप्पर लाईआ। कोटी कोट फड़ वखाया, फड़णहारा दिस ना आईआ। आपणा घाड़न घड़ जगत घड़ाया, भन्नणहार आप हो जाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी लड़न समरथ पुरख आप

आईआ। खण्डा तीर कटार, बस्त्र शस्त्र ना कोई उठाईआ। शब्द सरूपी मारे मार, आपे जाणे आपणी कार, करे कराए करनेहार, कारज करता आप अख्वाईआ। गुरमुख सुहागण होए नार, मिले मेल हरि कन्त भतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग निरगुण संग निरगुण रूप निरगुण विच समाईआ।

* १६ जेठ २०१५ बिक्रमी अजीत सिँघ दे घर चाह तोती वाला फैज़पुर *

निरगुण रूप अपार, निरगुण समाया। निरगुण रूप अधार, निरगुण टिकाया। निरगुण रूप करतार, निरगुण नाउँ धराया। निरगुण कर प्यार, निरगुण वेख वखाया। निरगुण कर उज्यार, निरगुण सेवा लाया। निरगुण पावे सार, निरगुण वेख वखाया। निरगुण बन्ने धार, निरगुण मूल चुकाया। निरगुण एका कार, एका एक अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उपाया। आप आपणी बणत बणा, आपणी बणत बणाईआ। आपणा लेखा आप लिखा, आपणी गणत गणाईआ। आपणा वेसा आप वटा, आपणा रूप दरसाईआ। आपणा पेशा आप कमा, आपे वेख वखाईआ। आपणा संदेसा आप सुणा, आपे करे जणाईआ। आपणी रेखा आप उपा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखाईआ। आप आपणा कर विचार, आपणी कल धारीआ। आप आपणा लए उभार, आप आपणी पावे सारीआ। आप आपणी बणया नार, आप आपणा कन्त भतारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारीआ। आप आपणा रंग रंगाया, अकल कला कल धारी। आप आपणा संग रखाया, खेले खेल अपर अपारी। आप आपणी मंग मंगाया, आप आपणा बणे भिखारी। आप आपणा नंग कजाया, आप आपणा पड़दा पाए भारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वरते आपणी कारी। आप आपणी दृष्ट खुल्ा, आपणी करे जणाईआ, आप आपणा इष्ट मना, आपे वेख वखाईआ। आप आपणी सृष्ट उपा, आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर कर आकार, आपणा आप उपांयदा। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा दर सुहांयदा। आप आपणा वेख विचार, सर्बकल समरथ आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण रंग निरगुण विच समांयदा। निरगुण पाया निरगुण जाया, निरगुण जोत जगाईआ। निरगुण दाई निरगुण दाया, निरगुण रिहा उपाईआ। निरगुण पिता निरगुण माया, निरगुण पूत गोद उठाईआ। निरगुण रूप निरगुण माया, निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, आप आपणा वार कराईआ। निरगुण आपणा आप वरया, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ना कोई दूसर दिसे घरया, ना कोई बणत बणाईआ। आपणा कीता आपे भरया, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणी तरनी आपे तरया, तरनहार आप अख्वाईआ। आपणी करनी आपे करया, करता पुरख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल रंग नवेल करे बेपरवाहीआ। निरगुण खेल हरि खिलंता, आपणा रूप वटाया। आपणा नाम धरे भगवन्ता, भेव कोए ना राया। आपणी करे आपे मन्नता, आप आपणा पूज पुजाया। आपणी करे आप बेनंनता, सुनणहार आप हो जाया। आपणी महिमा जाणे अगणता, लेखा लेख ना कोई लिखाया। आपणा आप वखाए सुहागी कन्ता, नारी रूप आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल खेलणहार भेव ना राया। निरगुण खेल हरि खिलारा, आपणा आप खिलांयदा। रूप अगम्मा कर उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अलख अलक्खणा नाउँ धरांयदा। सति पुरख निरँजण खेल अपारा, सति सतिवादी धाम सुहांयदा। पारब्रह्म भेव न्यारा, परम पुरख अख्वांयदा। जोती जोत कर उज्यारा, जोती जोत जगांयदा। सर्ब गुणां भरे भण्डारा, आपणा दर सुहांयदा। आपणा बणे आप वरतारा, आपणी भिच्छया आपे झोली पांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणा कर शृंगारा, आप आपणा रूप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच दरसांयदा। निरगुण रूप हरि करतार, आपणा आप उपाया। आप आपणी बन्ह् धार, आपणा बेड़ा रिहा चलाया। ना कोई दूसर मीत मुरार, ना कोई संग रखाया। इक्क अकल्ला एकँकार, एका कार कमाया। आपे पुरख आपे नार, आप आपणी सेज हंढाया। आदि अनादी हो त्यार, आप आपणा लए अंगड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण लए उपाया। निरगुण रूप जोत जगा, जोती नूर सवाया। एका नूर डगमगा, प्रकाश प्रकाश समाया। आप आपणा सगन मना, आपणे मुख लगाया। आप आपणा लग्न सुधा, आप आपणा साह रखाया। आप आपणा बंधन पा, आप आपणा लए प्रनाया। आप आपणे अंगण लगा, आप आपणा मेल मिलाया। आप आपणा विच टिका, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा नाउँ धरा, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण आप अख्वाया। निरगुण रंग हरि करतारा, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। सति सरूपी एका कारा, बिन रंग रूपी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप एका हरि, जोती जोत समांयदा। जोती जोत कर उजाला, आपणा रंग रंगाया। आपे होया हरि गोपाला, दीन दयाला नाम धराया। आप आपणा तोड़ जंजाला,

आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा बण रखवाला, आपणी सेवा रिहा कमाया। आप बणाए आपणी धर्मसाला, थिर घर नाउँ धराया। जगे जोत इक्क अकाला, ना कोई दूसर संग रखाया। खेले खेल आप निराला, खेलणहार आप रघुराया। आपे चले आपणी चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क रखाया। आपणा फल लगाए आपणे डाल्हा, आपे वेख वखाया। आपे शाह आपे कंगाला, दर भिखारी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस कर, घर साचा इक्क उपाया। थिर घर साचे बणत बणा, निरगुण वड्डी वड्याईआ। आपणी सेवा आप कमा, आपे रिहा उपाईआ। आदि पुरख हरि करनेहारा, करे कराए खेला। आप आपणा भण्डारा भरनेहारा, आप सुहाए आपणा वेला। आप आपणे घर चढ़नेहारा, आपे होए सज्जण सुहेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका घर, घर साचे दए सहारा। थिर घर साचा हरि द्वार, छप्पर छन्न ना कोए रखाया। ना कोई बाढी रिहा उसार, ना कोई सेवक सेव कमाया। इक्क अकल्ला कर प्यार, आप आपणा रिहा उपाया। उच्च महल्ल अटल मुनार, पुरख अबिनाशी दए सहाया। उच्च अगम्म हरि निरँकार, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाया। वेखे विगसे पावे सार, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया साचे घर, थिर घर नाउँ धराया। थिर घर नाउँ महल्ल अटारी, हरि साची बणत बणाईआ। एका वस्सया एकँकारी, अकल कल अख्वाईआ। आदि निरँजण जोत उज्यारी, आदि पुरख समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे दए वधाईआ। साचे घर देवे माणा, हरि वड्डी वड्याईआ। आपणा तणया आपे ताणा, आपे वेख वखाईआ। आपे बणया साचा राणा, शाहो भूप आप हो जाईआ। आपे खेले खेल महाना, खेलणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा हरि उपाया, हरि हरि आप बराजे। आप आपणी बणत बणाया, आप रचया आपणा काजे। आलस निन्दरा विच ना आया, हरि साचा साजण साजे। आपणे अन्दर आपणा जन्दर आपे लाया, खेले खेल ग़रीब निवाजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर महल्ला उच्च अटला, एका एक सुहाया। थिर घर साचा हरि वसेरा, हरि हरी मन भाया। पुरख अबिनाशी नगर खेड़ा, आपणा आप उपाया। आप आपणा रक्खया खुल्हा वेहड़ा, लेखा गणत ना कोई गणाया। आप आपणा देवे गेड़ा, आपे रिहा भवाया। आप आपणा करे निबेड़ा, सालस विच ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणा इक्क सुहाया। आपणे घर बैठ निरँकार, आपणा रंग उपाया। जोत सरूपी कर उज्यार, चारों कुन्ट वेख वखाया। दहि दिशा एका धार, एका रूप नज़री आया। पाए हिस्सा अपर अपार,

आप आपणी वंड वंडाया। नेत्र पेखा हरि निरँकार, निज घर वेखे खेल सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाया। आपणी इच्छया आपे धर, आपे पूर करांयदा। आपणी भिच्छया पाए दर, आपणी झोली आप भरांयदा। आपणी रच्छया आपे कर, आपणा डर चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा दर, घर साचे भाग लगांयदा। साचे घर लग्गे भाग, प्रभ निरगुण जोत करे रुशनाईआ। एका दीप जगे चिराग, एका रंग वखाईआ। ना कोई दूसर दिसे दाग, ना कोई काली शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आपे रिहा व्याहीआ। आपणी इच्छया आपे कर, आपे बणत बणांयदा। चारे कुन्टां वेखे घर, कवण धाम सुहांयदा। निरगुण रूप आपे खड़, आपणा रूप वटांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई बणत बणांयदा। आपणी इच्छया आपे लई पढ़, आपणा हुक्म आप सुणांयदा। शब्द सिँघासण डव्वा थिर घर, घर साचे आपे डांयदा। निरगुण बैठा उप्पर चढ़, सच सिक्दार बणांयदा। आप सुहाया आपणा गढ़, आपणी नगरी भाग लगांयदा। आपणे अन्दर आपे वड़, आपे वेख वखांयदा। आपणी उंगली आपे फड़, चारों कुन्ट फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचे घर शब्द सिँघासण, हरि साचे आप सुहाया। उप्पर चढ़ पुरख अबिनाशन, आपणा मता आप पकाया। आपे होया दासी दासन, चोबदार आप हो जाया। आपणे अन्दर आपे रक्खया वासन, आप आपणा घर सुहाया। नाउँ धराया साबासन, शाह सुल्ताना हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे डेरा लाया। शब्द सिँघासण अपर अपारा, हरि साचा आप सुहांयदा। थिर घर सुहाए महल्ल मुनारा, अन्दर मन्दिर आपे डांयदा। उप्पर बैठ सिरजणहारा, साची बणत बणांयदा। आपणे रंग रवे करतारा, आपणी करनी आप करांयदा। आपणे घाड़ण घड़े घड़णेहारा, समरथ पुरख अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण इक्क सुहांयदा। शब्द सिँघासण साचा मूल, धुर दरगाह टिकाया। ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बंधन पाया। उप्पर बैठ कन्त कन्तूहल, आपणा हुलारा इक्क रखाया। आपणी सेजा आपे चाढ़े फूल, आपणी बरखा आपे लाया। आप चुकाए आपणा मूल, लहिणा आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण दए सुहाया। शब्द सिँघासण साची रास, थिर घर साचे आप टिकाईआ। करया खेल पुरख अबिनाश, वड वड्डी वड्याईआ। आदि अन्त ना होए विनास, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपे वस्सया आपणे पास, आप आपणा संग रखाईआ। आपणे अन्दर आपे करया वास, अन्दर बाहर आप हो जाईआ। आपणा देवे आप धरवास, आप आपणी धीर धराईआ। थिर घर बैठ ना होए

कदे निरास, सर्ब गुणा भरपूर वड दाता बेपरवाहीआ। ना कोई पवण ना स्वास, निरगुण जोत इक्क रखाईआ। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोए जणाईआ। ना कोई मण्डल मण्डप रास, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा सच मुनारा, हरि साचा आप सुहांयदा। साचा घर सच्चा दरबारा, सच सुल्ताना आसण लांयदा। उच्च अटला एकँकारा, अकल कला अख्वांयदा। करे खेल अपर अपारा, पारब्रह्म भेव ना पांयदा। आदि आदि इक्क पसारा, एका एक करांयदा। आप आपणा दए अधारा, आप आपणा विच टिकांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर देवे साचा वर, सच महल्ला शब्द सिँघासण आदि पुरख खेल अबिनाशन, सच घर वास आप रखांयदा। वस्सया घर हरि मेहरवान, वज्जी सच वधाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, आपणी बणत बणाईआ। आप झुलाया आपणा सति निशान, जोती नूर करे रुशनाईआ। सत्तां रंगां वेख वखान, निरगुण वड्डी वड्याईआ। घर बैठा आप आप मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। करया खेल इक्क महान, आपणी कल वरताईआ। आपणे अन्दर आपणा धर ज्ञान, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द तख्त बैठ सुल्तान, साचा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर करया साचा वेस, आपणी करे आप अदेस, आपे सिफ्त सलाहीआ। सिफ्त सलाह सच्ची सरकार, घर साचे डेरा लाया। आपणा बणया आप मलाह बेऐब परवरदिगार, नाउँ निरँकार नाम धराया। इक्क अकल्ला एकँकार, एका बन्ने आपणी धार, एका मार्ग रिहा वखाया। इक्क सिक्दार इक्क प्यार, इक्क विहार एका रिहा दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण साचा मीता, थिर घर चलाए आपणी रीता, आपे बैठा सदा अतीता, सति सन्तोख रखाया। सदा अतीत गहर सुख सागर, घर साचे आसण लांयदा। आपणा करे आप उजागर, आप आपणी दया कमांयदा। आपणा बणे आप सौदागर, आपणा वणज आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा घर आपे वेख वखांयदा। आपणा घर आपे फोल, आपणा गढ़ खुल्हाईआ। आपणी हत्थी लग्गा तोलण तोल, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। आपणा वाक आपे रिहा बोल, एका एक वड्डी वड्याईआ। आप आपणा करया चोल्ह, आप आपणा सखा सखाईआ। आप आपणे अन्दर गया मौल, आप आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। आपणा घर आप बणाया, आपणी दया कमांयदा। दर दरवाजा ना कोई रखाया, ना कोई बन्द करांयदा। आपणा राज आप हो जाया, आप आपणा अदल कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण शाहो भूप साचा नाम धरांयदा। आप आपणा

नाम धर आपणा वेस वटाया। आपणी करनी आपे कर आपणी क्रिया वेख वखाया। आपणा भाणा आपे जर, आपणे भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठ निरगुण आसण लाया। निरगुण आस आसावंद, एका आस रखाईआ। आपणा होया आप बख्शिंद, आपणी बख़शिश आप कराईआ। आपणा ख़ुशी कराया बन्द बन्द, आपणी आप करे वड्याईआ। आपणा आप सुणाया सुहागी छन्द, साचा नाउँ धराईआ। शब्दी शब्द मुकया पन्ध, जोती जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर देवे माण वड्याईआ। थिर घर नाता पुरख बिधाता, आपणा आप कराया। आपे बणया पिता माता, आप आपणी गोद सुहाया। आपे बख्शे आपणी दाता, आप आपणी झोली पाया। आप रखाए आपणी उत्तम जाता, इक्क अकल्ला नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लहिणा आपणी झोली पाया। आपे जोती आपे नारी, आपे जोग कमांयदा। आपे कन्ता कन्त भतारी, आपे सेज हंढांयदा। आपे मेला अधविचकारी, आपे जोड़ जुड़ांयदा। आप आपणा बण भण्डारी, अतुट्ट नाम रखांयदा। आपणी करे खेल न्यारी, जोग जुगत इक्क जणांयदा। आपणा शब्द आपणी धुन्कारी, आपणी आप अलांयदा। जोती माता कर प्यारी, साची गोद बिठांयदा। आदि पुरख पहरेदारी, सेवक सेव कमांयदा। वेखणहारा नर निरँकारी, निरगुण वेस वटांयदा। चोग चुगाए सिरजणहारी, साचा सीर पिलांयदा। आदि शक्त जाए वारी, साचा सगन मनांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहरी, भेव कोई ना पांयदा। थिर घर तेरी सच अटारी, शब्द सिँघासण आप सुहांयदा। शब्द सुत उठाए वड बलकारी, घर साचे जन्म दवांयदा। अमृत देवे ठंडी ठारी, चरनोदक मुख रखांयदा। एका बख्शे सच सिक्दारी, साचे मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या आपणा लेखा आपे लिख्या, शब्द सुत दुलार कर प्यार हरि निरँकार एका झोली पांयदा। शब्द सुत कर दुलारा, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। थिर घर सुहाया सच मुनारा, जोती मात सगन कराईआ। आदि अन्त देवे इक्क प्यारा, एका मुख सलाहीआ। एका रंग रंगे रंगणहारा, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत देवे वर, सार शब्द नाउँ धराईआ। सार शब्द तेरी धार, हरि साचे आप बणाईआ। ना कोई दूसर करे विचार, भेव कोई ना पाईआ। एका दूआ इक्क प्यार, एका घर सुहाईआ। एका पुरख एका नार, एका गोत होई कुड़माईआ। एका पूत होया उज्यार, एका सूत तन्द बंधाईआ। चारे कूट वेख विचार, दहि दिशा फेरी पाईआ। पुरख अबिनाशी गया तुठ, थिर घर सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम आपे दए वड्याईआ। शब्द सुत साचा लाड़ा, प्रभ साचे आप बणाया। थिर घर वेखे सच अखाड़ा, पुरख अबिनाशी मंगल गाया।

एका घर एका वर एका हरि एका अन्दर वड़, ना कोई दूजा मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता साचा वर, साचे सुत शब्द सुल्तान, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आपणा देवे हरि फ़रमाण, आप आपणी दया कमाया। आपे देवे धुर फ़रमाना, आपे करे जणाईआ। थिर घर बैठ श्री भगवाना, सुत शब्द रिहा सुणाईआ। एका बन्ने साचा गाना, साचा सगन मनाईआ। एका राग इक्क तराना, एका रिहा सुणाईआ। एका दाता बीना दाना, एका भिच्छया झोली पाईआ। एका रक्खे ठांडा सीना, सांतक सति वरताईआ। सति पुरख निरँजण एका रंग भीन्ना, एका रूप वखाईआ। आदि जुगादि जुग जुग एका नाउँ रसना चीना, एका होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्म अलख निरँजण सुत सुते हथ्थ वड्याईआ। सति पुरख हरि करनेजोग, करनहार अख्वाया। इक्क वखाए साचा जोग, साचे सुत समझाया। मेरा तेरा धुर संजोग, विछड़ कदे ना जाया। हरि दुआरे दरस अमोघ, दरसी दरसन पाया जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी दित्ता वर, साचा शब्द होए सरनाया। शब्द सुत कर निमस्कार, नेत्र नीर वहांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा सच प्यार, एका धार चलांयदा। विछड़ ना जाए रूप करतार, दोए धार ना होर रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, तेरी वंड वंडांयदा। शब्द सुत वंडी वंड, हरि साचे आप वंडाईआ। आपणा रंग आपे करया खण्ड, आपणा आप कटाईआ। आपणी सेजा आपे गया हंढ, आपणा माण धराईआ। आपणी वेखणहारा आपे कंड, आप आपणा मुख भुआईआ। शब्द सुत वस्सया सचखण्ड, सचखण्ड वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड हरि दुआरा, एका एक रघुराया। शब्द सुत कर प्यारा, साची सेवा लाया। एका नाद एका धुंनकारा, एका मंगल गाया। एका सुणे सुनणेहारा, समरथ पुरख नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा भर भण्डारा, आप आपणा रिहा वरताया। भरया नाम हरि भण्डार, शब्द ज्ञान दृढ़ाया। सच ज्ञान कर प्रधान, आपणे अन्दर आप वसाया। आपणी पाए आपे आण, आप आपणा रिहा मनाया। आपणा राग सुणाए आपणे कान, आप आपणी रसना गाया। आप आपणा देवे धुर फ़रमाण, धुर दी बाण रखाया। आप आपणा कर प्रधान, आप आपणा हुक्म चलाया। शब्द सुत उठ बलवान, प्रभ साचा रिहा जगाया। तेरा रूप सच निशान, सति सति अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल आपे कर, करनहार करता आप अख्वाया। सद बलिहार हरि भगवान, भगवन नाउँ धराया। सचखण्ड सच निशान, साचा आप उठाया। सचखण्ड सच ध्यान, हरि साचे आप लगाया। सचखण्ड सच ज्ञान, हरि साचे आप दृढ़ाया। सचखण्ड सच विधान, हरि साचे आप बणाया। सचखण्ड कर परवान, हरि साचे हुक्म सुणाया। सचखण्ड

सच दीबाण, हरि साचा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला मेल मिलाया। सचखण्ड साचा जोर, हरि साचे विच समाया। सचखण्ड सच घनघोर, हरि साचा रिहा सुणाया। सचखण्ड अवर ना दीसे होर, हरि साचा नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप हरि निरँकार, आपणा रूप समाया। सचखण्ड साची जोत, साचे सच वरताईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बंधन बंध बंधाईआ। सचखण्ड साची चोट, शब्द नगारे आप लगाईआ। सचखण्ड नाम भण्डार सदा अतोट, हरि साचा रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच वरतंता हरि भगवन्ता, एका एक अख्वाईआ। सचखण्ड सच भण्डारा, हरि साचे आप भराया। सचखण्ड सच वरतारा, सच सच्चा रिहा वरताया। सचखण्ड सच दातारा, सिरजणहार आप अख्वाया। सचखण्ड सच विहारा, साची सेवक सेव कमाया। सचखण्ड रूप अगम्म अपारा, सति सरूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वसाया। सचखण्ड सच प्रकाश, हरि साचा आप करांयदा। आपे जाणे आपणी रास, आपे वेख वखांयदा। सचखण्ड हरि शाहो शबास, सच सिँघासण आसण लांयदा। आदि अन्त ना होए विनास, एका रंग रंगांयदा। सचखण्ड सर्ब गुण तास, सर्बकल धरांयदा। आपे पूरी करे आपणी आस, इच्छा पूरन आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड सच महल्ला आपे वस्सया इक्क अकल्ला आप आपणा संग निभांयदा। इक्क अकल्ला एका धार, एका रंग रंगाईआ। सचखण्ड हरि कर प्यार, सच समग्री रिहा टिकाईआ। सच समग्री अपर अपार, आप आपणी रिहा उपाईआ। आपे वेखे वेखणहार, महिमा अगणत गणी ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण राग आपे रिहा अल्लाईआ। सचखण्ड सच धुन्कारा, हरि साचा नाद वजांयदा। पुरख अबिनाशी सुनणेहारा, इक्क ध्यान जणांयदा। आपणे गुण आपे सुणनेहारा, गुणवन्ता नाउँ धरांयदा। आप आपणा चुणनेहारा, आप आपणी चोण करांयदा। आप आपणा छाण पुण करनेहारा, आप आपणा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे कढ्ढे भरम भुलेखा आपे लेख लिखांयदा। आपणा लेखा आपे लिख, आपणी रचन रचाईआ। आपणी विद्या आपे सिख, आपे करे पढ़ाईआ। आपणी निध्या आपे पाए भिख, आपे रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा एका घर वसाईआ। आपणी भिख्या आपे पा, आपणा दर सुहाया। आपणा लिख्या वेख वखा, वाह वाह मंगल गाया। आप आपणी रचन रचा, आप आपणे विच टिकाया। आप आपणा गढ़ सुहा, आप आपणा आसण लाया। आपे बैठा बेपरवाह, बेअन्त नाम धराया। ऊँच अगम्म अगम्म अथाह, पारब्रह्म बेअन्त रूप वटाया।

आप सुहाए आपणा थाँ, आप आपणा आसण लाया। सचखण्ड रखाए साचा नाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम उपाया। आप आपणा नाउँ उपाए, आपणी अवाज़ लगाईआ। आप आपणा काम कराए, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा राज कमाए, आपे बैठा शहनशाहीआ। आप आपणा सीस सुहाए, एका ताज रिहा सुहाईआ। आप आपणी रीझ कराए, आपणा श्रृंगार आपणे हथ्थ रखाईआ। आप आपणी दर दलीज़ सुहाए, सचखण्ड दुआरा खोल्हे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा अलख जगाईआ। सचखण्ड दुआरा अपर अपारा, एका अलख जगांयदा। आपे मंगे बण भिखारा, दर दरवेशा नाउँ धरांयदा। आपे होया देवणहारा, आपे वंड वंडांयदा। आप आपणा सेवणहारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड पसारा कर निरँकारा, आपणी धारा आप चलांयदा। सचखण्ड साची रुत्त, हरि साचे आप सुहाईआ। आपे वेखे पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, परम पुरख वड्डी वड्याईआ। मेल मिलावा साचे सुत्त, सोया पूत उठाईआ। आपे गया घर साचे तुठ, एका वस्त झोली पाईआ। एका नाम एका मुद्ध, एका रिहा वरताईआ। एक प्याए साचा घुट्ट, अमृत मुख चुआईआ। आदि अन्त नाता ना जाए तुट्ट, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जोती शब्द मेल ना जाए छुट्ट, करी नाम सच्ची कुड़माईआ। आपणा घर आपे लुट्ट, आपणी खेल कराईआ। आपणे अन्दरों आपे बाहर रिहा सुट्ट, इक्क उछाला लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा साचा बंक, बंक द्वारी आप सुहाईआ। साचा दर हरि हरि बंक, एका एक सुहांयदा। आपे राउ आपे रंक, राज राजान आप अख्वांयदा। आप आपणी लाए तणक, आपे हुक्म सुणांयदा। आपे खेले खेल अनेक अनक, अनक कलधारी आप हो जांयदा। आपे मेटे आपणी शंक, आपणा सहिसा आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड वासी पुरख अबिनाशी घर आपणा वेख वखांयदा। साचे घर सच टिकाना, हरि साचे आप सुहाया। शब्द सुत कर प्रधाना, नामा नाम चलाया। आपणी हथ्थीं बद्धा गाना, साचा सगन मनाया। एका दित्ता धुर फ़रमाना, एका राग सुणाया। एका राग साचा गाणा, एका ताल वजाया। एका पद पद निरबाना, एका धाम सुहाया। एका धर्म धुर निशाना, एका रिहा चलाया। एका ज्ञान चरन ध्याना, एका एक लिव लाया। एका एक कर परवाना, एका हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड हरि ल्या वर, सुत साचा सेवा लाया। साचा सुत उठ बलवान, हरि साचे तन श्रृंगारया। अट्ठे पहर रहिणा नौजवान, गुर पूरा दए सहारया। एका देवे सच बिबान, धुरदरगाही काज संवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपणा कारज आप करा रिहा। सुत शब्द कर परवाना,

एक सीस निवांयदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, एका राह वखांयदा। तेरा मेरा खेल महाना, ना कोई वेख वखांयदा। एका घर इक्क टिकाणा, एका धाम सुहांयदा। एका गुण हरि पछाणा, अवगुण ना कोई जणांयदा। एका दाता बीना दाना, दाना बीना आप अख्वांयदा। एका देवे पीणा खाणा, अमृत जाम प्यांअदा। एका करे ठांडा सीना, एका लिव धरांयदा। एका जल एका मीना, इक्क प्यार समांयदा। एका अक्खर वक्ख कीना, एका विच टिकांयदा। एका नाम एका चीना, एका गुण वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत कर परवान, एका एक राह वखांयदा।

* २० जेठ २०१५ बिक्रमी हकीम काशी राम दे घर पिण्ड सनईआ तहसील बटाला ज़िला गुरदासपुर *

सचखण्ड सच दुआरा, हरि साचे आप सुहाया। आपे बैठ हरि निरँकारा, आपणा खेल खिलाया। आपे जाणे आपणी धारा, आपे रिहा बंधाया। आप आपणा कर पसारा, आपे वेखण आया। लोकमाती कर उज्यारा, दीवा बाती ना कोई रखाया। चन्द सूरज ना कोई सतारा, गगन मण्डल ना कोई उपाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी धारा, अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती नूर पुरख करतारा, करनहार अख्वाया। लोकमात लै अवतारा, जुग जुग वेस वटाया। लक्ख चुरासी पावे सारा, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। आत्म सेजा कर प्यारा, शब्द सिँघासण इक्क विछाया। जोत निरँजण सेवादारा, अनहद ताल वजाया। आपणा मंगल गाए आपणी वारा, ना कोई दूसर संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। सचखण्ड हरि वरतंता, हरि हरि आप अख्वांयदा। आपे जोती नूर भगवन्ता, आपे रूप वटांयदा। आप बणाए आपणी बणता बणांयदा। आपे वेखे साचे सन्ता, सति सरूप समांयदा। खेले खेल आदिन अन्ता, जुग जुग वेस वटांयदा। गुरमुख नारी मेला साचे कन्ता, सच सुहाग हंढांयदा। भेव छुपाए जीव जन्ता, माया पड़दा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा देवे वर, हरि साचा खेल खिलांयदा। खेलणहार सर्ब गुण ठाकर, पारब्रह्म अख्वाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, डूँघा सागर इक्क भराया। निर्मल कर्म करे उजागर, जो जन सरनाई आया। करे वणज सच्चा वपार सौदागर, नाम वस्त इक्क टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा, एका मार्ग रिहा वखाया। एका मार्ग एका धार, एकँकार चलांयदा। प्रगट हो विच संसार, आपणा रंग रंगांयदा। गुरमुख साचे कर त्यार, साची सेव कमांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, दिवस रैण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर दरवाजा ग़रीब निवाजा इक्क अकल्ला

उच्च महल्ला, साचा घर सुहांयदा। उच्च महल्ला शब्द सिँघासण, थिर घर आप वसाया। उप्पर बैठ पुरख अबिनाशन, धुर दरगाही राज कमाया। खेले खेल जगत तमाशन, आप आपणा वेस वटाया। गुरमुखां सदा सदा सद बलि बलि जासन, बलिहारी गुर पूरा पाया। आदि अन्त ना कदे विनासन, हरि जोती मेल मिलाया। पाया पुरख शाहो साबासन, विछड़ कदे ना जाया। लेखे लाए रसन स्वासन, वाह वाह सतिगुर पूरा गाया। गुर गोबिन्दा होया दासन, लोकमात फेरा पाया। जन भगतां मिटाए सगली चिन्दा, ब्रह्म ज्ञान दवाया। मनमुख लगाए आपणी निन्दा, निन्दक निन्दया झोली पाया। गुरमुख साचा सुत अनादी नादी बिन्दा, आपणा आप लए उपाया। गहर गम्भीर वड गुणी गहिंदा, दाता दानी नाम धराया। दो जहानी सदा बख्शिंदा, एथे उथे होए सहाया। एका वस्त नाम साची देंदा, चरन प्रीती रिहा सिखाया। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरे देवे वर, वर एका झोली पाया। एका नाम भर भण्डारा, काया रंग रंगांयदा। लोकमात बण वरतारा, आपणा कर्म करांयदा। साचा धर्म विच संसारा, साची रीत वखांयदा। लक्ख चुरासी इक्क प्यारा, जीव जन्त ना कोई रखांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म हरि पसारा, ब्रह्म ब्रह्म अख्वांयदा। आपे वस्सया एकँकारा, ओंकारा नाउँ धरांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे भगती वर, भगत भण्डारा इक्क वरतांयदा। भगत भगवन्त साचा मेला, जुग जुग आप कराया। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर चेला नाम धराया। आपे होया सज्जण सुहेला, सगला संग निभाया। आपे वस्सया रंग नवेला, आपे हर घट आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए जगाया। गुरमुख साजण उठ उठ जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। लोकमात लग्गा भाग, भेव कोई ना पांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। पूर कराए आपणा वाक्, गोबिन्द लेख लिखांयदा। गुरसिख बणाए सज्जण साक, जग नाता आप रखांयदा। ना कोई जात ना कोई पात, वरन बरन ना कोई बणांयदा। ना कोई दिवस ना कोई रात, ना कोई सूरज चन्न चढ़ांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई ध्यान लगांयदा। ना कोई सर सरोवर मारे ठाठ, तीर्थ तट ना कोई जणांयदा। गुरसिख तेरा इक्क रखाए हाठ, बिन गुर पूरे दूजा दर ना कोई सुहांयदा। अमृत रस लैणा चाट, निझर धारा आप वहांयदा। मानस देही लाहा लैणा खाट, माझा देस राह तकांयदा। माझा देस गुर गोबिन्द विछाई खाट, हरि गोबिन्द डेरा लांयदा। बजर कपाटी गई पाट, धाम अवल्ला इक्क सुहांयदा। इक्क खुल्हाया साचा हाट, साचा वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, सोया कोई रहिण ना पांयदा। गुरसिख

जाग सुत दुलारे, हरि साचे शब्द जणाईआ। प्रभ अबिनाशी लै अवतारे, भेखाधारी भेख वटाईआ। जगी जोत अगम्म अपारे, पंज तत्त रही समाईआ। मन मति बुध ना करी कारे, निरगुण वजदी रहे वधाईआ। निरगुण वसे जगत मुनारे, विच बैठा बेपरवाहीआ। गुर गोबिन्दा वाजां मारे, बैठा राह तकाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सारे, दो जहानां रथ रथवाहीआ। आया चल जगत दुआरे, आपणी सेवा रिहा कमाईआ। जन भगतां ढहि पए दुआरे, जिउँ सुदामा कृष्न रघुराईआ। गुरसिख साजन पार उतारे, बेड़ा आपणा आपे रिहा चलाईआ। ना कोई दूसर वंझ मुहाणे, ना कोई दूसर आस रखाईआ। वेख वखाणे दो जहाने, दो जहाना नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक रक्खे सिक, साची सिख्या सिख सिक्ख साख्यात एका रूप दरसाईआ। साची सिख्या साख्यात, पारब्रह्म सरनाया। गुरमुख होए पारज़ात, प्रभ पूरा दया कमाया। अन्तिम वेले पुच्छे वात, धर्म राए ना दए सज़ाया। लाड़ी मौत ना करे नात, देवे दर दुरकाया। चित्रगुप्त ना खोल्हे खात, ना लेखा कोए रखाया। जम्म डण्ड ना करे कोई घाट, गुरसिख नेड़ ना आया। प्रभ एका बख्शे नाम दात, मानस मानुख लए तराया। अन्दर मन्दिर वेख मार झात, बैठा मुख छुपाया। आपणी हथ्थीं खोल्हे ताक, गुरमुखां सम्मत सोलां राह तकाया। मनमुखां उडाए ख़ाकी ख़ाक, चारों कुन्ट दए वहाया। शब्द घोड़े चढ़या साचे राकी राक, सच सिंघासण आसण लाया। राज राजानां शाह सुल्तानां नकेल पाए नाक, शब्द डण्डा इक्क उठाया। वेख वखाए पाकी पाक, पतित पुनीता दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे अंमित आत्म बूंद स्वांत, निझर धारा इक्क चुआया। सचखण्ड सच घर बारा, साचा दर सुहांयदा। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन दया कमांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। माया ममता करे प्यारा, इष्ट देव ना कोई मनांयदा। मिल्या मेल ना मीत मुरारा, हउमे हँगता ना कोई गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, तन श्रृंगार इक्क करांयदा। तन श्रृंगार काया रंग, हरि आप करांयदा। गुरमुख मंगे साची मंग, आत्म ब्रह्म जणांयदा। कट्टणहारा भुक्ख नंग, इक्क दुशाला गुर गोपाला दीन दयाला नाम पड़दा उप्पर पांयदा। आपणा दुआरा आपे जाणा लँघ, मिले मेल सूरा सरबंग अट्ठे पहर राह तकांयदा। अमृत नुहाउणा साची गंग, शब्द सुणाउणा सच मृदंग, अनहद ताल वजांयदा। आप वछाया शब्द रंगीला सच पलँघ, गुरमुख तेरा उथे होए संग, ना कोई विछोड़ा सस्से उप्पर लग्गा होड़ा निरगुण सरगुण धार चलांयदा। सस्से तेरा सति सतिवादि, सति पुरख निरँजण आप बणाया। ऊड़ा ओअँ कर, हाहा हरि हरि नाउँ धराया। चौथे घर हो विसमादि, आपणी बणत बणाया। सस्सा किला बणाया आदि जुगादि, विच आपणा आसण लाया। उप्पर बैठ

शब्द गुर ब्रह्मादि, लोआं पुरीआं रिहा रचाया। आपे जाणे आपणी याद, ना कोई भरम भुलाया। जुग जुग सन्त सुहेले कर कर मेले आपे लए लाध, आप आपणा दर सुहाया। दिवस रैण रैण दिवस जो जन रहे अराध, इक्क मति चित होए लिव लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पाए आपणे खात, आपणा लेखा आप जणाया। लेखा लिखणहार बेपरवाहीआ। भगत सुहेला मीत मुरार, जुग जुग देवे सच सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वखाए एका घर, ना कोई दूजा राह तकाईआ। एका घर इक्क टिकाना, एका एक सुहांयदा। दूजा देवे शब्द बिबाना, गुरमुखां आप चढ़ांयदा। तीजे नेत्र इक्क ज्ञाना, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। चौथा पद पद निरबाना, आपणा मेल मिलांयदा। पंचम कर हरि परवाना, एका धार चलांयदा। छेवें घर शब्द तराना, अपणा नाद वजांयदा। सत्तवें जोत नूर महाना, अकल कला अख्वांयदा। अट्ठ तत्तां लोकमात निशाना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध नाल रलांयदा। नौ दर खेले खेल महाना, भरमी भरम भुलांयदा। जन भगतां बन्ने हथ्थी गाना, साचा सगन मनांयदा। देवे नाम धुर फ़रमाणा, आपणा कर्म कमांयदा। आपे वेखे मार ध्याना, उच्चे टिल्ले डेरा लांयदा। ना कोई पवण ना मसाणा, धूंआँधार ना कोई रखांयदा। निर्मल दीपक जोती इक्क जगाणा, प्रकाश प्रकाश करांयदा। टेडी बंक पार कराणा, एका घाट वखांयदा। आप सुहाए आपणा गाणा, पंचम राग अलांयदा। साचा नाद सच तराना, साचे दर सुहांयदा। करे खेल आप भगवाना, आपणे नेत्र आपणा दर खुलांयदा। गुरमुख साजन कर परवाना, आपणीआं भुजां उठांयदा। जोधा सूरबीर बली वड बलवाना, मर्द मरदाना गुर पूरा आप अख्वांयदा। आत्म सेजा साचा धाम सुहाना, सच सिँघासण डेरा लांयदा। नारी कन्त एका रंग रंगाना, सच सन्त आप वखांयदा। दस्म दुआरी तेरा रूप महाना, चारों कुन्ट बन्द कराना, सस्सा किला लोकमात दर, साचा छिला प्रभ साची बणत बणांयदा। सस्सा किला चार दिवार, तीजे अक्खर मात वड्याईआ। तिन्नां लोकां वस्सया बाहर, ना लेखा लेख किसे लिखाईआ। ब्रह्मा वेदा चारे रिहा उचार, चारे जुग रचन रचाईआ। पुराण अठारां कर विस्थार, वेद व्यासा बणत बणाईआ। शास्त्र सिमरत इक्क विचार, एका मनुआ दए दुहाईआ। गीता ज्ञान धुर करतार, एका एक समझाईआ। अञ्जील कुरान कर विचार, बख्शे जल्वा नूर अलाहीआ। मुकामे हक्क साचा यार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। करन आया लोकमात ख़बरदार, नानक निरगुण रूप वटाईआ। पंज तत्त कर प्यार, विच बैठा आसण लाईआ। आपणा मंगण गया आपे द्वार, दर अग्गे अलख जगाईआ। अग्गों उठ सच्ची सरकार, आप आपणा लए उठाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी करे रुशनाईआ। आपे आपणा खोल्ह किवाड़, नानक रिहा दरसाईआ। नानक गुर कहे तेरा अन्त

ना पारावार, तूं दाता बेपरवाहीअआ। तेरा मेरा नाता विच संसार, एका धार चलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सच सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। एका देवे नाम भण्डार, सतिनाम नाम धराईआ। निरगुण देवे निरगुण प्यार, निरगुण निरगुण आप रखाईआ। लोकमात होए अधार, तन काचे रचन रचाईआ। एका शब्द इक्क धुंनकार, एका सेवा लाईआ। एकँकारा कर प्यार, नाम सति रिहा चलाईआ। करता पुरख तेरा रूप अपार, भेव कोई ना पाईआ। निर्भय सच्ची सरकार, भय विच कदी ना आईआ। निरवैर तेरी जुग जुग धार, ना सके कोई बदलाईआ। अकाल मूर्त तेरा इक्क प्यार, एका रिहा दरसाईआ। अजूनी रहित ना फड़े कोई विच संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला इक्क घर, एका ताल एका सुर, एका शब्द देवे धुर, धुर फ़रमाणा आप जणाईआ। नानक वर घर साचा पाया, साची वज्जी वधाईआ। साची नारी तन श्रृंगार कराया, एका नैणा कज्जल पाईआ। दोए नैणां बन्द कराया, ना कोई वेख वखाईआ। सोलां कलीआं कन्त हंढाया, छैल छबीला साचा माहीआ। रंड रंडेपा दूर कराया, साची मींढी सीस गुंदाईआ। जगत बुड्ढेपा रहिण ना पाया, अट्ठे पहर एका रुत्त सुहाईआ। मात पित जणेपा ना कोई कराया, शब्दी सुत आप उठाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त दया कमाया, भेव अभेदा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, गुर नानक एह समझाया। तेरा मेरा भेव ना रा, हउँ सेवक रघुराया। आपणा रूप तेरे तन रिहा छुपा, सच सिँघासण आसण लाया। बहत्तर नाड़ा तेरी सितार रिहा वजा, ताल तलवाड़ा ना कोई रखाया। साचा शब्द एका गज रिहा हिला, दिस किसे ना आया। नानक आखे मरदाना मन्ने इक्क रज़ा, नानक तूही तूही पाया। मनमुखां देवण आया सजा, गुरमुखां ल्ए तराया। आपे बणया जगत गदा, दर दर फेरी पाया। नाम तेरा सति तेरी सदा इक्क लगा, सोए रिहा जगाया। सचा राह इक्क वखा, चारे वरनां रिहा वखाया। ऊँचां नीचां रिहा समझा, एका ब्रह्म जणाया। एका धर्म रिहा वखा, सच सुच्च दिड़ाया। धीरज यति सति सन्तोख देवे झोली पा, जो जन सरनाई आया। अन्तिम मोख दए करा, मुक्त दाता नाम धराया। हउमे हँगता दुःख दए मिटा, चिन्ता सोग रहिण ना पाया। आत्म सुख दए उपजा, पंचम पंचां दए सज़ाया। इक्क सलोक शब्द अनादी दए सुणा, सोहँ आपणी रसना गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मेला आपे आप कराया। नानक गुरमति गुर रूपा, सति सतिवादि अख्वांयदा। लोकमात बणया साचा भूपा, सच सिक्दार अख्वांयदा। आपे वेखे चारे कूटा, दहि दिशा फेरी पांयदा। जीव जन्त सुधारे जूठा झूठा, माया लूठा पार करांयदा। शब्द गुर आपे तुठ्ठा, शब्द शब्दी ज्ञान दृढ़ांयदा। लुकया रहिण ना देवे कोई गुट्ठा, अनभव दृष्टी

इक्क खुलांयदा। जो जन जाए राह पुट्ठा, अन्तिम खण्डा शब्द निशान इक्क लगांयदा। गुरमुख गुरसिख जो जन जगत जुगत जग रुट्ठा, दे मति आप समझांयदा। आपणा आप उठाया सुत्ता, आपणे अंग लगांयदा। अन्त सुहाई साची रुत्ता, सच फुलवाड़ी लोकमात आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी जोती आपे वर, गुरमुख साचे वस्सया घर, दिस किसे ना आंयदा। हर घट आपे वस्सया, खण्ड ब्रह्मण्ड हरि लो। आपणा मार्ग आपे दस्सया, अवर ना जाणे को। जुग जुग आवे नस्सया, जन भगतां वेखे साची सो। गुरमुख विरले बहि बहि हस्सया, मनमुखता रही रो। प्रभ तीर निराला एका कस्सया करे कराए सो अग्गे हो। जगत विकारा चरनां हेठ झस्सया, जन भगतां दुरमति मैल देवे धो। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, करे प्रकाश जोती नूर छब्बी पोह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत द्वार सुण पुकार कर आकार किरपा धार आपे आए वस्सया। गुरसिख तेरी सच सलाह, गुर पूरे एका भाईआ। गुरसिख बणे जगत मलाह, प्रभ बेड़ा रिहा उपाईआ। आपे जपे साचा नाँ, अवरा रिहा जपाईआ। धुरदरगाही देवे साचा थाँ, अटल महल्ल सुहाईआ। करनहारा सच न्याँ, पड़दा उहला रक्खे ना राईआ। कलिजुग अन्तिम पकड़न आया बांह, प्रगट होया बेपरवाहीआ। सदा सुहेला इक्क अकेला गुरू गुर चेला देवे ठंडी छाँ, छंपर छन्न ना कोई रखाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणाईआ। सखा सहाई पिता माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। आवण जावण कोई जाणे ना, जानणहार सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, जन्म जन्म दी मेटे लग्गी शाहीआ। जन्म जन्म दा लहिणा चुक्कया, आए हरि द्वार। आवण जावण पैंडा मुक्कया, मंगी मंग बण भिखार। गुरसिख राह विच कदे ना रुकया, कबीरा रिहा उचार। गुर नानक तेरा जाम कदे ना मुकया, भरया रहे भण्डार। हरया बूटा कदे ना सुकया, जिस पाले आप करतार। जो जन चरन दुआरे आए झुकया, गुर पूरा पार उतारनहार। कलिजुग वेला अन्तिम ढुकया, लक्ख चुरासी होए ख्वार। धर्म राए शेर एका बुक्कया, सृष्ट सबाई रिहा ललकार। चित्रगुप्त प्रगट होवे लुकया, लेखा लेख दए वखाल। मौत लाड़ी खण्डा अन्तिम आपणा चुक्कया, आपणे शस्त्र रिहा संभाल। तीर निशाना चल्लया कदे ना उकया, ना कोई जाणे शाह कंगाल। पाणी दिसे ना किसे हुक्कया, अल्ला राणी ना करे संभाल। पीर फकीरां भार जावे ना चुक्कया, जूठा झूठा फल लगाया काया डाल्ह। सतिगुर पूरा पारब्रह्म अबिनाशी करता एका एक आपे तुट्ठया, गुरमुखां पावे सार। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां गुरमुखां करे एका मुट्ठया, एका शब्द नाम जैकार। एका बीज दो जहानी प्रभ साचे आपे सुट्टया, एथे उथे लए संभाल। जगत विकारा फड़ फड़ कुट्टयां, नाम खण्डा इक्क वखाल। साचे खण्डे फड़ी मुट्ठया,

प्रभ होया आप दलाल। जीव जन्त दर घर मुग्ध आपे कुट्ठया, आपे वेखे हक्क हलाल। शौह दरयाए आपे सुट्टिआ, आपे पाया जगत जंजाल। कलिजुग जीव दिन दिहाड़े जाए लुट्टया, ना कोई संभाले धन माल। प्रभ दित्ता ख़जाना काया मन्दिर इक्क अतुट्टया, गुरमुख वेखे राह सुखाल। आपे चढ़े आपणी चोटीआ, सुरती शब्दी हो कृपाल। किसे हथ्थ ना आए तीर्थ तटयां, कोटी कोट कोट धूंणीआँ रहे बाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुख साजण आपे लए भाल। दिवस रैण वेखणहारा, अट्ठे पहर सवाधाना। करे खेल अगम्म अपारा, गुणवन्ता गुण निधाना। गुरमुखां दर दुआरे देवे पहरा, नेड़ ना आए पंज शैताना। साचे मन्दिर करे मेहरा, बैठा आप वड्डा विद्वाना। मेल मिलाए ना लाए देरा, जिस जन बख्शे चरन ध्याना। मनमुख भुलाए कर कर हेरा फेरा, ना दिसे सच निशाना। पंजां तत्तां लाया झेड़ा, भरमे भुल्ले जीव निधाना। जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा, देवे नाम धुर फ़रमाणा। गुरसिख तेरा काया नगर दिसे खेड़ा, एका दीप जोत जगे महाना। अग्गे पैंडा आया नेड़ा, मेला होए गोपी काहना। करन आया हक्क निबेड़ा, शाहो भूप सच सुल्ताना। धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा, चारों कुन्ट होए वैराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मारे शब्द तीर रुक ना जाए हरि निशाना। शब्द निशाना तीर चला, एका चिल्ला रिहा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी किला देवे ढाह, बंक द्वारी रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ दए मिटा, खाली ठूठ वखाईआ। हँकार विकार दए सजा, वड दाता बेगुनाहीआ। सच सुच्च दए वरता, साची जोत करे रुशनाईआ। एका बाती एका दीपक लक्ख चुरासी दए जगा, एका दए बुझाईआ। गुरमुखां शाह रग उप्पर डेरा ला, आपणा राह जणाईआ। चार वरन परा इक्क रखा, नाम दस्तार सीस बंधाईआ। साचा सगन इक्क मना, साची सिख्या इक्क समझाईआ। साचा सगन इक्क लगा, एका शब्द करे कुड़माईआ। वाहिगुरू अल्ला राम कृष्न एका दए वखा, भरम गढ़ तुड़ाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, डेरा डेरे विच टिकाईआ। लोआं पुरीआं घेरा पा, ब्रह्मा वेता लए उठाईआ। ब्रह्मा वेखे अट्ठे नेत्र उठा, लोकमाती राह तकाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, केहड़ी कूटे आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी दए जणा, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणत आप बणा, विच लुकया दिस ना आईआ। विष्नूं गणता रिहा गणा, घर घर फेरा पाईआ। राज़क रहीम करीम दया कमा, एका भिच्छया रिहा वरताईआ। सोए सिक्ख रिहा जगा, दिवस रैण सेव कमाईआ। पूरन इच्छया रिहा करा, भगवान वेस वटाईआ। गुर गोबिन्दे लिख्या ना सके कोई मिटा, प्रभ पूरा वेखण आईआ। कलिजुग जीवां जगत नेत्र मात ना दिस्सया, बैठे राह तकाईआ। नीले वाला नीला, नीली धारों पार कराईआ। कल्गी तोड़ा शब्द आपणे सीस टिका, जोती जोड़ा मेल मिलाईआ। आपणा

घोड़ा आप दौड़ा, चारे वागां रिहा उठाईआ। मिट्ठा कौड़ा वेख वखा, लक्ख चुरासी परखे भेव ना राईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा ला, बजर कपाटी सिला अग्गे रखाईआ। सस्सा किला रिहा बणा, विच बैठा आसण लाईआ। शब्द चिल्ला रिहा उठा, इक्क कमान खिचाईआ। बूरा बिला कक्का दए हिला, ईसा मूसा कर कुड़माईआ। अञ्जील कुराना मता पका, एका दए सलाहीआ। आपणे वत्ते आपणा बीज दए बिजा, चार यारी हल चलाईआ। मुहम्मद तेरी सेवा ला, अहिमद संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भगतन मीता इक्क अतीता सदा सरजीता, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण रूप हरि करतार, सरगुण विच समाया। सरगुण साचा कर प्यार, निरगुण मेल मिलाया। निरगुण मेला अपर अपार, दिस किसे ना आया। सरगुण वेखे सर्ब संसार, पंज तत्त अख्वाया। आपे बैठा अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राया। गुरमुखां जन भगतां जुग जुग बणया साचा यार, साचा सथ्थर हेठ विछाया। प्रगट हो राम रामा अवतार, राम रूप अख्वाया। करे कामा अपर अपार, ना कोई वेखे ना कोई पेखे ना कोई सके गणत गणाया। मीत मुरार रिहा पुकार, इक्क ध्यान लगाया। सुणे सुणाए सुणनेहार, आलस निन्दरा विच ना आया। अट्ठे पहर ख़बरदार, जोधा सूरबीर आप हो आया। आपणे करे तन शृंगार, शस्त्र बस्त्र इक्क सुहाया। शब्द खण्डा हथ्थ कटार, तन गात्रे विच लटकाया। आपे खिच्चे आपणी वार, गुर गोबिन्द सेवा लाया। वाली हिन्द रहिणा ख़बरदार, सम्मत पन्दरां रिहा जगाया। तिनका तोड़े गढ़ हँकार, पुरख अबिनाशी फेरा पाया। लहिण देण चुकाए भबीखन यार, कलिजुग वेला दए सुहाया। लक्ख चुरासी खड़ी कन्ढे मँझधार, प्रभ साचा वेखण आया। साधां सन्तां करे ख़बरदार, तीर्थ तट्टां फेरा पाया। जुग जुग जाणे आपणी धार, धार अवल्लड़ी इक्क चलाया। नानक गुर तोला बण संसार, तेरां तेरां बोल सुणाया। प्रगट होवे अन्तिम निहकलंक अवतार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। भोला भाला ना कोई पावे सार, भेखी बैठा भेव छुपाया। गुरदर मन्दिर मस्जिद पया रौला, निहकलंकी कवण अख्वाया। याद कराए सम्मत सोलां, सोया कोई रहिण ना पाया। धरत मात खिलाए होला, कलिजुग हरनाक्ष दैत आप बणाया। लाड़ी मौत चुक्के डोला, चार कहारां नाल रलाया। चार यारी बदले चोला, पंचम मुख सुहाया। पारब्रह्म प्रभ बणया तोला, रत्ती माशा ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे घर, घर साचा इक्क बणाया। साचा घर हरि बणा, साचे धाम सुहाया। साचे सन्तां दए जणा, सच ज्ञान दृढ़ाया। साचा राहे दए पा, पल्ला नाम फड़ाया। जम का कट्टणहारा फाह, लक्ख चुरासी मेट मिटाया। दम दमा लेखे लाए साह, स्वास स्वास ध्याया। जिस जन जपया एका नाँ, एका मेल मिलाया। सुणे पुकार भगत गां, लोकमात रही कुरलाया। धरत मात

मारे एका हाअ, रो रो नेत्र नीर वहाया। कलिजुग कूड़े चढ़या चा, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। मूर्ख मूढ़े नाल रला, कलिजुग जीवां रिहा भरमाया। कूड़ा कूड़े धन्दे रिहा ला, कूड़ी कार कराया। मदिरा मासी गन्दे नाम धरा, बेमुख नाम धराया। आत्म जिंदे ल्ए लगा, ना कोई कुण्डा लाहया। ख़ाकी बन्दे ख़ाक मिला, ख़ाकी ख़ाक दए सज़ाया। आत्म झाकी ना सके कोई पा, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाया। भविख्त वाकी सारे रहे गा, पढ़ पढ़ रसना होई हलकाया। गुर पूरा फेरा रिहा पा, दिस किसे ना आया। हेरा फेरा जगत करा, वल छल धारी नाम धराया। गुरमुख विरले तेरा मेरा दए मुका, एका रंग रंगाया। दरस अमोघ दए वखा, तृष्ना भुक्ख मिटाया। धुर संजोगी मेला दए मिला, विछड़ कदे ना जाया। रसना चोगी नाम चुगा, माणक मोती दए खवाया। आत्म भोगी एका भोग करा, आत्म सेजा दए सुहाया। जगत विजोगी दए कटा, जो जन सरनाई आया। साचा जोगी एका जोग दए सिखा, गुरचरन ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन सन्त बैठ अकन्त हरि भगवन्त एका वेख वखाया। इक्क अकल्ला हरि भगवन्ता, भगत रक्खे वड्याईआ। देवे माण साचे सन्ता, सति सति करे जणाईआ। आप बणाए साची बणता, लोकमात तराईआ। जगत महिमा गणत अगणता, जगत जोग ना कोई जणाईआ। जिस जन तोड़े हउमे हँगता, माया ममता रहिण ना पाईआ। आपे मेले साची संगता, काया चोली रंग रंगाईआ। दर दुआरे होए मंगता, भगत दुआरा इक्क सलाहीआ। गुरमुख उधारे जिउँ नानक अंगदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन हरि सरनाईआ। हरि साजन जग जाणया, जन्म मरन भउ कट्ट। घर सच करे परवानया, सर्बकला समरथ। देवे नाम हरि महानया, पारब्रह्म अलखना अलक्ख। गुरसिख साचा होए बलवानया, पंच विकारा जाए मथ। नेड़ ना आए पंज शैतानया, लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ। अनहद सुणे साची बाणीआ, अट्ठे पहर अकथना अकथ। पावे पुरख हरि सुल्तानीआ, सिर रक्खे दे कर हथ्थ। आवण जावण चुक्के काणीआ, लक्ख चुरासी होए भट्ठ। पाया पद इक्क निरबाणीआ, काया मन्दिर जाए ढठ्ठ। मिले जोत श्री भगवानीआ, घर साचे सदा अकट्ठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवणहारा वर, काया तपे ना अग्नी मट्ठ। काया अग्न तन तन्दूर, अट्ठे पहर तपाया। गुर का शब्द हाज़र हज़ूर, हिरदे आप टिकाया। मनमुख जानण दूरन दूर, गुरमुखां नेरन नेर बसाया। जगत नाता कूड़ो कूड़, थिर कोई रहिण ना पाया। भरमे भुल्ले मूर्ख मूढ़, माया मोह वधाया। गुरमुख विरला मांगे चरन धूढ़, चरन सरन सच्ची सरनाया। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे वस्त अनडीठी, जुग जुग झोली पाया। जुग जुग देवणहारा दातारा, जुग जुग जोत

जगांयदा। जुग जुग लै मात अवतारा, जुग जुग भगत तरांयदा। वेखे विगसे खेल न्यारा, जुग जुग वेस वटांयदा। जुग जुग बन्हे आपणी धारा, जुग जुग नाउँ धरांयदा। जुग जुग बणे आप सहारा, जुग जुग मुख भवांयदा। जुग जुग करे पार किनारा, जुग जुग आपे लांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, प्रभ साचा रूप दरसांयदा। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यारा, सच सुच्च ना कोई वरतांयदा। साधां सन्तां खाली दुआरा, नाम भिच्छया ना कोई पांयदा। राज राजान होए विभचारा, सच सुहाग ना कोई हंढांयदा। जूठ झूठ कर पसारा, कलिजुग डंक वजांयदा। कलिजुग जोधा सूरबीर बलकारा, आपणा तेज रखांयदा। नाल रलाए मुहम्मदी यारा, चौदां चौदां वेख वखांयदा। जोत सरूपी हरि निरँकारा, साची बणत बणांयदा। सत्तां दीपां पावे सारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। लक्खण दीप हो उज्यारा, जोती जोत उपांयदा। पुष्कर तेरी बन्हे धारा, दिस किसे ना आंयदा। करौच खेले खेल अपारा, आपणा कर्म कमांयदा। जम्बु दीप लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। सलमल डोबे अधविचकारा, ना कोई पार करांयदा। सान रोवे ज़ारो ज़ारा, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। कुशा करे अन्त पुकारा, एका नाअरा लांयदा। पुरख अबिनाशी आपे वेखे सुनणेहारा, सुन्न समाध समांयदा। नौ खण्ड हरि हो उज्यारा, आपणी वंड वंडांयदा। कुला खण्ड प्रभ हो त्यारा, शब्द प्रचण्ड चमकांयदा। इल्लाबुत हरि खेल खिलारा, साची खेल खिलांयदा। केतमाल लाए ताड़ा, एका राग अलांयदा। हरणयमह तेरी सुण पुकारा, भेखी भेख रखांयदा। किं पुरख जोत निरँकारा, जोती नूर डगमगांयदा। हरि वरख डोबे अधविचकारा, प्रभ आपणी रचन रचांयदा। भद्र रोवे ज़ारो ज़ारा, ना कोई धीर धरांयदा। भारत खण्ड प्रभ कर प्यारा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। वीह सद पन्दरां खेल न्यारा, सृष्ट सबाई आप हिलांयदा। लेखा लिखे धुर करतारा, ना कोई मेट मिटांयदा। लहिणा देणा चुक्के नौ दुआरा, सच सिँघासण इक्क विछांयदा। साढे तिन्न हथ्थ तेरा पार किनारा, रविदास चुमारा आप करांयदा। अन्तिम मेला मीत मुरारा, साची सेव लगांयदा। आपे बोले शब्द जैकारा, रविदास चुमारा चिट्टे उप्पर लिखे काला भेव कोई ना पांयदा। लक्ख चुरासी तेरा कढुण आया अन्त दवाला, भेखा धारी भेख वटांयदा। गुरमुख तेरी काया वेखे सच्ची पाठशाला, हरि मन्दिर डेरा लांयदा। अन्दरे अन्दर मेला गुर गोपाला, जोत ज्वाला सेव लगांयदा। आदि निरँजण हो रखवाला, अन्तिम फेरा पांयदा। शब्द बणाया विच दलाला, दो जहानां राह तकांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, गुर गोबिन्दा दर दुरकांयदा। जन भगतां होए आप रखवाला, भगत वछल नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन वेख वखांयदा। गुरमुख साजन साची सिक्ख, सिख्या गुर वीचार। जगत मिटे तृष्ना भुक्ख, देवे नाम अधार। मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख, दस दस मास ना खाए

मार। उज्जल करे हरि जी मुख, जो जन मंगे हरि द्वार। वाह वाह अन्दर बैठा लुक, गुरु रूप आप करतार। नीवां होके वेखे झुक, मिले मेल परवरदिगार। साध संगत विच बहिणा ढुक, लोकमात ना होए ख्वार। प्रभ का भाणा ना जाए रुक, सृष्ट दब्बी पापां भार। कलिजुग जीवां भार सके ना कोई चुक्क, धौल धर्म रिहा पुकार। ज्ञान गुरु पैंडा गया मुक्क, ज्ञान ध्यान डिगे मूह दे भार। कर्मा बूटा गया सुक्क, फल दिसे ना किसे डाल्। शरम बेड़ा गया डुब्ब, सति सतिवन्त ना कोई जहान। सचखण्ड खड़े ना कोई चुक्क, कलिजुग जीव होए विभचार। गुरसिख साचे भगत सुहेले सुखना रहे सुख, कद होसी तेरा इक्क दिदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द देवे वर, जुग जुग जाणे आपणी कार। कार करावण आया करता, करन करावण जोग। जन भगतां जग माया हरता, देवे नाम सच्चा जोग। अबिनाशी पुरख ना जन्मे ना कदे मरदा, खेले खेल रोज़ रोज़। आपणे भाणे आपे करदा, आपे रक्खे आपणा गोहझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे इक्क वर, वर दाता चोजी चोज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां मगर आपे लग्गा, धुरदरगाही कढ्ढुण आया खोज।

* २१ जेठ २०१५ बिक्रमी सिंघ दे घर पिण्ड खहिरा तहसील बटाला ज़िला गुरदास पुर *

सर्बकल समरथ, आप सुखदाया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, त्रैगुण माया नेड़ ना आया। शब्द जणाई अकथना अकथ, धुन अनादी इक्क सुणाया। हउमे हँगता पाए भड्ड, माया ममता दए जलाया। चरन द्वार इक्क वखाए अठसठ, सर सरोवर इक्क नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला मेल मिलाया। निरगुण मेला हरि निरँकारा, आपणा आप करांयदा। जुग जुग लै मात अवतारा, जोती जामा भेख वटांयदा। भगत जना जन पावे सारा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। दीपक जोती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। देवे नाम शब्द सच्ची धुन्कारा, साचा राग अल्लांयदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए इक्क सच्चा गुरदुआरा, गुर पूरा आसण लांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, आपणी सेव कमांयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, पंचम मेल मिलांयदा। धर्म वखाए इक्क अखाड़ा, हरि साचा आप लगांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, ताल तलवाड़ा इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका घर, एका घर सुहांयदा। एका घर आदि निरँजण, आदि पुरख उपाया। आपे होया दर्द दु:ख भय भंजन, जन भगतां संग निभाया। नेत्र पाए नाम अंजन, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। दो जहानां साचा सज्जण, लोकमात मेल मिलाया। चरन धूढ़

कराए साचा मजन, दुरमति मैल रहिण ना पाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, जो जन सरन सरनाई आया। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे आया पड़दे कज्जण, जोती जामा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला एका घर, गुरमुख साचे लए मलाया। गुरमुख साजन साचे मेला, हरि साचे आप कराया। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर गोबिन्द रूप वटाया। आपे वस्सया रंग नवेला, आपे हर घट आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेख साचा घर, थिर घर साचा नाउँ धराया। थिर घर साचा शब्द टिकाणा, हरि जोती नूर जगाईआ। आपे बणया शाह सुल्ताना, ना दूसर कोई दिसाईआ। एका रूप शाहो भूप, सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका घर, अलख निरँजण एका अलख रिहा जगाईआ। इक्क अलख गुरसिख जगा, एका नाम जैकारा। एका मन्दिर दए वखा, दिवस रैण होए उज्यारा। एका अक्खर दए पढ़ा, मिले मेल हरि मीत मुरारा। बजर कपाटी जिंदा दए तुड़ा, शब्द सरूपी लाए पाड़ा। पंचम विकारा सथ्थर दए वछा, नेड़ ना आए झूठी धाड़ा। गुरमुख साजन साचा लाड़ा दए नुहा, देवे नाम सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला इक्क दर, मेल मिलाए इक्क दुआरा। इक्क द्वार ग़रीब निवाज, आपणा आप रखाया। लक्ख चुरासी आपे साज, आप आपणा दरस दिखाया। जन भगतां देवे साचा दाज, धुरदरगाही नाम ल्याया। सीस रखाए साचा ताज, सति सन्तोखी दया कमाया। जुग जुग रचनेहारा काज, आदि जुगादी नाम धराया। खोज खुजाए हरि ब्रह्मादि पारब्रह्म हरि नाउँ धराया। इक्क वजाए साचा नाद, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। सोया कोई ना रहे सन्त साध, जीव जन्त रिहा मिलाया। शब्द जणाई बोध अगाध, गुरमुखां वंड वंडाया। जो जन रसन रहे अराध, नेत्र नैण लोचण दरस दिखाया। मनमुख जीवां इक्क रखाया वाद विवाद, हउमे सैंहसा रोग वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, वर दाता आप हो जाया। आपे दाता शब्द भण्डारा, आपे हरि वरतांयदा। आपे पावणहारा सारा, आपे ज्ञान दृढ़ांयदा। आप कराए सच जैकारा, आपे आप सुणांयदा। आप नुहाए आपणी धारा, आपे मेट मिटांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, आपे कार कमांयदा। आप आपणा कर उसारा, आपे वेखण आंयदा। आप आपणा बण लिखारा, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। आप आपणी मारे मारा, मारनहार आप हो जांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मित अख्वांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा रूप दरसांयदा। आप आपणा नाउँ धर निरँकारा, नर नरायण वेस वटांयदा। आप आपणा कर पसारा, पसर पसारी आप हो जांयदा। जुग जुग लए मात अवतार, भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा वेता बण लिखारा, चारे वेदां बोल अलांयदा। वेद व्यासा पुराण अठारां,

पुरानी पुरान जणांयदा। साशतर सिमरत कर विचारा, किरपा करनी आप करांयदा। गीता ज्ञान जगत उधारा, साची सिख्या आप सिखांयदा। अञ्जील कुराना पावे सारा, एका धार चलांयदा। नानक गुर मंगया इक्क दुआरा, एका बूझ बुझांयदा। एका शब्द इक्क प्यारा, चार वरनां आप जणांयदा। एका जोत नर निरँकारा, आपणा वेस वटांयदा। नानक गोबिन्द इक्क अधारा, एका रूप समांयदा। एका लेख लिखणहारा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। साची सिख्या सिखणहारा, गुर चेला रूप वटांयदा। सृष्ट सबाई मथिआ, मथणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला वस्सया साचे घर, घर सुहाया प्रभ मेल मिलाया, विछड़ कदे ना जांयदा। होए विछोड़ा आदि अन्त, जुग जुग आप कराया। जुग जुग वेखे साध सन्त, सतिगुर पूरा दया कमाया। मनमुखां माया पाए बेअन्त, बेअन्ता नाउँ धराया। गुरमुख मेला साची नारी हरि साचे कन्त, सति सुहागण नाउँ धराया। काया फुलवाड़ी दिसे इक्क बसन्त, अमृत आत्म झिरना रिहा झिराया। जुग जुग महिमा जाणे अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाया। कलिजुग तेरा वेला अन्त, प्रभ साचे वेस वटाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त, चारों कुन्ट रहे कुरलाया। ना कोई जिह्वा ना कोई मणीआ ना कोई मंत, ना कोई पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर शब्द गुर डेरा, पारब्रह्म उपाया। करे कराए हक्क निबेड़ा, लहिणा देणा मूल चुकाया। वसदा रहे साचा खेड़ा, हरि मन्दिर वेख वखाया। लक्ख चुरासी देवणहारा गेड़ा, पंज तत्त रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, इक्को शब्द वेख वखाया। नानक गोबिन्द बण लिखार, लेखा लेख लिखाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, प्रभ साचा होए सहाया। निहकलंकी जामा धार, शब्द डंका इक्क वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, नाम हलूणे रिहा लगाया। भेख पखण्डा मारे मार, शब्द डण्डा हथ्थ उठाया। मनमुख जीव अन्दर कोई रहिण ना देवे विच संसार, अन्तिम कन्ढा पार कराया। एका रक्खे तिक्खी धार, नौ खण्डां वेख वखाया। सत्तां दीपां हो उज्यार, एका नाम जपाया। चारे कुन्टां पावे सार, दहि दिशा वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए उभार, आप आपणा वेस वटाया। इक्क कराए शब्द जैकार, सो पुरख निरँजण नाम धराया। पावे वंडां अपर अपार, भेव कोए ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर हरिजन मेला आपे कर मेलणहार आप अख्वाया। साचा मेला धुर दरगाह, आदि जुगादि कराया। साचा शब्द सच मलाह, बेड़ा बन्ने लाया। ना कोई दूसर दिसे राह, देवी देव ना कोई सहाया। ना कोई कटे जम्म का फाह, ब्रह्मा शिव बैठे मुख छुपाया। ना कोई जपावे साचा नाँ, साध सन्त होए हलकाया। ना कोई दीसे साचा थाँ, साचा थान ना कोई सहाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, एका नाता पुरख बिधाता, आपणा आप बंधाया। एका नाता कमलापात, गुरमुख आप बणाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। चार वरनां इक्क जमाइत, एका शब्द पढ़ाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाईआ। दुरमति मैल देवे काट, हउमे रोग गंवाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, चौदां हट्ट भवाईआ। तिन्नां लोकां पार वाट, चौथे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए साचा दर घर सुहञ्जणा, जगे जोत निरँजणा, अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। आठ पहर एका चानण, एका रूप दरसाया। एका शब्द इक्क ज्ञानन, एका जाप जपाया। एका राग एका कानन, एका रिहा सुणाया। एका सतिगुर धुरदरगाही साचा ज़ामन, ना कोई दूसर संग रखाया। मेट मिटाए तृष्ना तामन, तृष्ना भुक्ख रहिण ना पाया। नेड़ ना आए कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दए सजाया। दूर कराए अन्धेर शामन, संझ सवेर इक्क कराया। लंका गढ़ तोड़े हँकार राम रामा रावण, शाह भबीखन होए सहाया। जन आप फड़ाए आपणा दामन, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख मेला एका हरि, हरि साचा आप कराया हरि साचा हरि सज्जणा, हरि हरि मीत मुरार। जो घड़या सो भज्जणा, अन्तिम विच संसार। बिन गुर पड़दा किसे ना कज्जणा, ना कोई पार उतारनहार। कलिजुग काल नगारा वज्जणा, चार कुन्ट धुँधूंकार। धर्म राए उठ उठ गज्जणा, एका एक रिहा ललकार। लाड़ी मौत घर घर जा जा सजणा, दिवस रैण करे शृंगार। चित्रगुप्त आपणा लेखा कढ्ढणा, पुरख अबिनाशी अग्गे खलार। लोकमात मनमुख जीवां तजणा, तुटे गढ़ हँकार। जूठा झूठा डुब्बे जहाजना, कूड़ी क्रिया ना लावे पार। सीस दिसे ना किसे ताजना, राज राजानां करे ख्वार। ना कोई बणीआं शाह दिसे महाजना, ना कोई लेखा मंगे द्वार। ना कोई मुलां शेख़ काज़ी काजना, पीर दस्तगीर ना कोई सहार। ना कोई पंडत पांधा मारे वाजना, ना कोई पत्री रिहा विचार। पन्थी पन्थ ना कोई निवाजना, बिन पूरे हरि करतार। अन्तिम प्रगट होए देस माझना, गुर गोबिन्द रिहा पुकार। सम्बल नगरी साचा राजना, बैठे शाहो भूप सिक्दार। साढे तिन्न हथ्थ सीआं नापना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। नौ खण्ड पृथ्मी कांपना, सत्तां दीपां हाहाकार। जीवां जन्तां भुल्ले आपो आपणा, ना कोई सके सुरत संभाल। त्रैगुण माया चाढ़े तीनो तापना, अट्ठे पहर हँकार बुखार। दूई द्वैती कोए ना काटना, ना कोई बख्शे इक्क प्यार। साचा नाम ना मिले किसे हाटना, घर घर दिसे हट बाजार। काया दिसे ना किसे साचा पटना, ना कोई करे शब्द शृंगार। तन चोला अन्तिम पाटणा, मनमुख जीव जगत विचार। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्टना, गंग गोदावरी गई हार। लहिणा देणा ना चुकाए कोई आन बाटना,

लक्ख चुरासी मारे मार। अग्गे नेड़े आई वाटना, कलिजुग कूड़ा रिहा पुकार। गुरमुख विरले लाहा खाटना, मंगे मंग दर भिखार। अमृत आत्म एका चाटना, नौ रस एका धार। बजर कपाटी पड़दा पाटना, मेल मिलावा दस्म दुआर। उप्पर बैठ सच सिँघासना, आत्म सेजा कर प्यार। प्रगट हो पुरख अबिनाशना, गुरमुख साचे लए उभार। आपे होया दासी दासना, सेवक सेवा करे अपार। वेख वखाए पृथ्मी आकाशना, चन्न सूरज वेख अवतार। मण्डल मण्डप पावे रासना, खेले खेल अपर अपार। आपे जाणे आपणी वासना, करे कराए करनेहार। दो जहानी शाहो शबाशना, सच तख्त सच्ची सरकार। कलिजुग वेखे इक्क तमाशना, डूँघी भवरी चुभ्भी मार। जीव जन्त मदिरा मासना, करया इक्क प्यार। आत्म छड्डी साची वासना, पारब्रह्म ना कोई वापार। ब्रह्म विद्या ना होए प्रकाशना, जगत विद्या होई नार। गुरमुख साचे बलि बलि जासना, जिस पाया पुरख अगम्म अपार। एका जपया साचा जापना, जम दंड ना खाए मार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले लए वर, इक्क सुहाए बंक द्वार। बंक द्वार हरि सुहाउणा, आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग कूड़ा मेट मिटाउणा, सतिजुग साचा नाउँ रखाईआ। भिन्नड़ी रैण मेल मिलाउणा, साचा संग रखाईआ। इक्क अनादी ताल वजाउणा, शब्द करे जणाईआ। बोध अगाधी भेव खुल्लाउणा, भेव अभेदा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, कर किरपा पार कराईआ।

* पहली हाढ़ २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

निरगुण रूप आदि निरँजण, एका नूर समाया। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन, आसा पूर अख्वाया। दो जहानी साचा सज्जण, लोक परलोक सुहाया। लोकमात आवे जावे पड़दे कज्जण, एका पड़दा उप्पर पाया। शब्द अनादी ताल साचे घर एका वज्जण, वजावणहार दिस ना आया। जो घड़े सो अन्तिम भज्जन, थिर कोई रहिण ना पाया। पंज तत्त पसारा सारे तजन, बिन हरि कोए ना होए सहाया। जुग जुग चलाए सच जहाजन, एका चप्पू नाम लगाया। आपे रचनहारा काजन, करता पुरख अख्वाया। शाहो भूप हरि ग़रीब निवाजन, दयानिध हो आया। शब्द अस्व साचा ताजन, एका रिहा दौड़ाया। नाम अमाम हाजी हाजन, काया काअबा वेख वखाया। दो दो आबा पुन्न सवाबन, सच रबाबा नाम धराया। इक्क वजाए हरि रबाबन आत्म तार हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल रचाया। आदि पुरख शब्द अनादी, पारब्रह्म अख्वांयदा। एका कलमा बोध अगाधी, नाम अमाम उपांयदा। सृष्ट सबाई रिहा साधी,

आप आपणी धार वहांयदा। प्रगट होया माधव माधी, मोहणी रूप वटांयदा। शब्दी शब्द सदा विस्मादी, गहर गम्भीर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ हरि बेअन्ता, गहर गम्भीर समाया। आपे वेखे साचे सन्तां, बेऐब परवरदिगार नाम धराया। मेल मिलाए नारी कन्ता, सच सुहञ्जणी सेज हंढाया। चाढ़े रंग इक्क बसन्ता, उतर कदे ना जाया। दूसर दर ना होए मंगता, आप आपणी झोली अग्गे डाहया। आपणा दर आपे लँघदा, दर दरवाजा वेख वखाया। नूर अलाही कदे ना संगदा, एका नाद तूर वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण रूप हरि अलाह, बेपरवाह अख्वाया। आपे बणे जगत मलाह, आप आपणा वेस वटाया। एका देवे शब्द सलाह, एका कलमा रिहा पढ़ाया। नबी रसूलां लए जगा, पीर दस्तगीर नाम धराया। ऐनलहक्क नाअरा ला, हक्क हकीकत वेख वखाया। लाशरीक इक्क ख़ुदा, ख़ुदी ख़ुदाई दए मिटाया । इक्क शरीयत दए वखा, चार वरनां इक्क सरनाया। एका दूजा भउ चुका, तीजे नेत्र ज्ञान दृढ़ाया। चौथा दर दए सुहा, पंचम मेला सहिज सुभाया। इक्क अकेला फेरी पा, अकल कला अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदिन अन्ता, एका गुण रखाया। एका गुण हरि निरँकारा, एका धार चलाईआ। एका शब्द एका नाअरा, एका रिहा लाईआ। एका घर इक्क दरबारा, एक धाम वखाईआ। एका रूप कर प्यारा, एका मेल मिलाईआ। एका होए परवरदिगारा, आप आपणी दए सलाहीआ। साचा मेला विच संसारा, आप आपणा लए मलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, पुरीआं लोआं लए जगाईआ। थिर घर बैठा करे विचारा, एका सिख्या रिहा सिखाईआ। एका मण्डल एका नाअरा, एका रूप दरसाईआ। डूँघी कन्दर पावे सारा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले रिहा मिलाईआ। शब्द सरूपी इक्क अखाड़ा, हरि साचा रिहा कराईआ। चौदां लोक चौदां तबक एका लाड़ा, एका धाड़ रिहा उठाईआ। वेख वखाए नाड़ बहत्तर नाड़ा, पंज तत्त फोल फुलाईआ। मुलां शेख़ मसायक पीर होए दस्तगीर, आप आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे रुशनाईआ। एका नूर हरि सुल्तान, सतिगुर पुरख अख्वाया। प्रगट हो विच जहान, आप आपणा नाउँ धराया। जोधा सूरबीर बली बलवान, एका खण्डा रिहा उठाया। ना कोई चिल्ला ना कोई तीर कमान, शस्त्र बस्त्र ना कोई रखाया। ना कोई हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई शाह अगफान, नमरूद फरून ना कोई जणाया। लेखा लिखे इक्क इरान, इक्क अकल्ला फेरी पाया। मेट मिटाए जीव शैतान, शरअ शरीअत इक्क लिखाया। एका आइत दे कुरान, इक्क हदीस पढ़ाया। एका कलमा इक्क ज़बान, एका नबी रिहा वखाया। एका घर कर प्रधान,

पंचम मेला दए मिलाया। पंडत पांधे जगत निधान, कलिजुग अन्तिम दए उठाया। वेख वखाए हरि भगवान, आप आपणी दया कमाया। सर्ब जीआं होए जाणी जाण, भेद अभेदा अछल अछेदा भेव कोई ना पाया। आपे वाचे अञ्जील कुरान, वेद पुराण फोल फुलाया। ग्रन्थ पन्थ होए हैरान, प्रभ का भेव किसे ना पाया। प्रगट होया विच जहान, मुस्लिम सुन्नी ना कोए जणाया। किसे हथ्थ ना आए गोपी काहन, चारों कुन्ट होए हलकाया। जोती नूर हरि महान, एका नूर करे रुशनाया। मेट मिटाए झूठ दुकान, लोकमात रहिण ना पाया। इक्क ख़ुदा इक्क ईमान, एका कलमा दए पढ़ाया। एका मंगल सारे गाण, एका शब्द रिहा जणाया। एका सीता एका राम, एका कृष्ना दए वखाया। चार यारी कर पछान, संग मुहम्मद मेल मिलाया। अहिमद नाम कर प्रधान, आप आपणा करे रुशनाया। मेट मिटाए जीव शैतान, शंकर बरन ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाया नूरी अल्ला, अल्ला हू अल्लांयदा। मुकामे हक्क इक्क अकल्ला, आपणा आसण लांयदा। दो जहानां पए तरथल्ला, आप आपणा तीर चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाया हरि भगवाना, आपणी कल कल धारीआ। ना कोई जीव जाणे निधाना, ना कोई लिखे लेख लिखारीआ। गुरमुख विरला पाए पद निरबाना, जिस मिल्या शाह अस्वारीआ। एका बख्शे चरन ध्याना, पूजा पाठ ना कोई विचारीआ। एका अक्खर जगत वक्खर आप पढ़ाना, साची सिख्या वड संसारीआ। दीन मज़्हब ना कोई रखाना, जात पात पार किनारीआ। एका घर जगत सुहाना, चार वरन सच्चा यारीआ। चारे कुन्टां फोल फोलाना, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण आपणी वारीआ। दहि दिशा हरि फेरी पाणा, ज़िमी अस्माना पार किनारीआ। एका राग एक तराना, लोआं पुरीआं आप सुणा रिहा। प्रगट होए जोधा सूर मरदाना, आप आपणा नाम धरा रिहा। खेले खेल दो जहानां, आप आपणी कल वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ धरा रिहा। निहकलंक निरगुण धार, हरि साचे आप उपाईआ। जोत सरूपी कर आकार, पंज तत्त समाईआ। शब्द शब्दी रिहा विचार, एका जोग कमाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, वड वड्डी वड्याईआ। ना कोई जाणे जीव गंवार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। खलक ख़ुदाए गई हार, ना दीसे कोई सहाईआ। चारों कुन्ट धूंआँधार, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जोती नूर ना कोई उज्यार, आकाश प्रकाश ना कोई समाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरुद्वार कर प्यार, शिवदवाला वंड वंडाईआ। हरि हरि वस्सया सभ तों बाहर, हथ्थ किसे ना आईआ। ग्रन्थी पन्थी रोंदे धाहां मार, पंडत पांधे रहे कुरलाईआ। मुल्लां शेख़ रहे पुकार, गल माला तसबीआं पाईआ। ऐनलहक्क तेरा इक्क दिदार, मुकामे हक्क मिले ख़ुदाईआ। साचा

३८६
०७

सालस विच संसार, एका एक अख्वाईआ। तालब तल्ब रक्खे तेरी परवरदिगार, एका अल्फ रिहा पढ़ाईआ। एका नुक्ता कर प्यार, एका हमज़ा रिहा समझाईआ। ऐन अक्ख रिहा उग्घाड़, गैन गनीमत भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ एका नूर सिफ्त सलाह, हरि हरि आप उपाया। लक्ख चुरासी बण मलाह, कलिजुग अन्तिम आया। जात पात दए मिटा, एका दूजा भेव चुकाया। एका लेखा दए लिखा, चार वरन इक्क सरनाया। धुर दा लेखा दए पढ़ा, ना सके कोई मिटाया। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई एका धाम बहा, एका मार्ग दए लगाया। दूई द्वैती दए मिटा, आत्म पड़दा दए मिटाया। आत्म ब्रह्म शब्द जणा, पारब्रह्म समझाया। एका घाटी दए चढ़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। एका तीर्थ ताटी दए वखा, अठसठ मेट मिटाया। जोत लिलाटी दए जगा, गगन गगनंतर करे रुशनाईआ। लहिणा देणा बाकी दए चुका, जो जन रहे सरनाया। साचा साकी जाम पया, आब हयात मुख चुआया। एका राकी तंग कसा, सोलां कलीआं आसण पाया। शाह खाकी डेरा ला, ख़ाकी ख़ाक दए सुआया। आकी कोई रहिण ना पा, एका खण्डा हथ्थ उठाया। राज राजाना शाह सुल्ताना, तख्त ताज दए गंवा, दर दर मंगण भिच्छया कोए ना पाया। ग़रीब निमाणे दए उठा, एका सिख्या आप समझाया। दर दरवाजा दए खुल्हा, ग़रीब निवाजा खेल रचाया। अनहद वाजा इक्क वजा, धुन नाद अल्हाया। पुन्न सवाबा इक्क करा, एका वेख वखाया। दए अज़ाबा जगत सजा, जीव शैताना रहिण ना पाया। साचा हाजी हज्ज दए करा, काया काअबा खोल्ह वखाया। शाह नवाबा दरस दिखा, आप आपणा लए वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाया। निरगुण तेरा रूप अगम्म, आदि अन्त अख्वाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण विच ना आया। ना कोई पवण स्वासी लए दम, ना नेत्र नीर वहाया। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। कलिजुग अन्तिम ढोल नगारा, कूड़ कुड़यारा वज्जया। चारों कुन्ट धुंधूकारा, पंच शैताना फिरे भज्जया। हक्क ना दिसे किसे किनारा, ना कोई रक्खे लज्जया। एका दूजा लाया नाअरा, तीजा दर ना किसे वस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आवे नस्सया। लोकमात हरि उजाला, एका एक अख्वाईआ। प्रगट होया दीन दयाला, दया निध नाम धराईआ। आपे चले आपणी चाला, चाल अवल्लड़ी इक्क रखाईआ। हरिजन वेखे काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, हरि बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग करता आप अख्वाईआ। करनहार हरि समरथा, जुग जुग करदा आया।

आप चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही नाम धराया। आप उपाए आपणी गाथा, आपे रिहा सुणाया। आपे हो त्रिलोकी नाथा, लोकमात फेरी पाया। आपे रामा घर दसराथा, आप आपणा वेस वटाया। ईसा मूसा सगला साथा, हरि साचा आप निभाया। आपे वेखे काया बाटा, नौ अट्ठ वेख वखाया। चौदां लोक साचा हाटा, चौदां तबक खुल्हाया। इक्क जणाए पूजा पाठा, एका नाम उपाया। इक्क सरोवर एका ठाठा, एका धीर धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा ल्ए उपाया। आप आपणा कर उज्यार, आपणी दया कमाईआ। वीह सौ बिक्रमी हो त्यार, लोकमात ल्ए अंगड़ाईआ। ब्रह्मा वेखे नीर वहाए ज़ारो ज़ार, अट्ठे नेत्र खोल्ह वखाईआ। शिव शंकर ना कोई धीर धराई सुरपति इन्द गया हार, करोड़ तेतीसा रिहा शरमाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जूठा झूठा जगत पसार, माया बंधन दए तुड़ाईआ। त्रैगुण माया तेरा अन्त विहार, आपणी हथ्थीं दए कराईआ। साची सखीआं मीत मुरार, हरि मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। आप आपणा नाउँ धरा, निहकलंक अख्वाया। जोती जामा भेख वटा, शब्द डंका इक्क लगाया। राउ रंकां रिहा उठा, सोया कोई रहिण ना पाया। द्वार बंका दए सुहा, आप आपणी दया कमाया। एका अक्खर दए पढ़ा, दोए दोए जाप जपाया। तीजा नेत्र दए खुल्हा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। चौथे घर रिहा समा, विरले गुरमुख पाया। पंचम मंगल एका गा, परम पुरख मनाया। छेवें छप्पर छन्न कोई दिसे ना, हरि साचे आसण लाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण साचे थाँ, आप आपणा आसण लाया। अट्ठां तत्तां रंग जाणे ना, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना सुहाया। नौ दर कोई पछाने ना, जीव जन्त होए हलकाया। दसवें घर पाया हरि, हरि वरते आपणे भाणया, जागरत जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाया। दस घर दस दस बीस, दस दस आप सिखाईआ। आपे जाणे आपणी हदीस, आपे रिहा पढ़ाईआ। आपे जाणे अपणी रीस, आपे रिहा कराईआ। भेव ना पाए राग छतीस, तीस बतीस ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम करे वड्याईआ। आप आपणा नाम धर, आपणा कर्म कमाया। वीह सद ग्यारां वस्सया घर, साढे तिन्न हथ्थ लेख चुकाया। वीह सौ बारां गया सड़, अग्नी मठ तपाया। नौ दुआरे जगत अग्गे खड़, आप आपणा भेव छुपाया। उच्च महल्ले बैठा चड़, दिस किसे ना आया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई तत्व तत्त जणाया। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, ना कोई वेद पुराण अल्हाया। ना किसे वस्सया किले गढ़, चार दिवार ना कोई रखाया।

३८६
०७

ना कोई नारी ना कोई नर, रक्त बूंद ना कोई उपाया। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणे दर सुहाया। खलक ख़ुदाई रिहा लड़, हरि ख़ालक दिस ना आया। आप उखेड़े सभ दी जड़, चौदां चौदां वेख वखाया। वीह सद बारां फड़ाया आपणा लड़, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि, जोत धर निहकलंक नरायण नर, साध संगत मेल मिलाया। सम्मत वीह सद तेरां तेरी धार, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। साधां सन्तां करे ख़बरदार, राज राजाना आप उठाईआ। आपे होया चोबदार, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। दर दरवेशा बण भिखार, मंगे भिच्छया बेपरवाहीआ। एका अलख जगाए हरि निरँकार, अलख नाउँ धराईआ। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कार, भेव कोई ना पाईआ। पैसा धेला दमड़ी ना कोई विचार, खाली हथ्थ रखाईआ। मात पित भैण भाई ना अम्मी अमड़ा, सज्जण सैण ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद तेरां तेरी धार, नानक गाई विच संसार, बैठा तोला बेपरवाहीआ। सम्मत चौदां चौदां हट्ट, हरि चौदां लोक खुल्हाया। शब्द नगारे मारे सट्ट आप आपणा सांग वरताया। जन भगतां दुरमति मैल देवे कट्ट, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। दीपक जोती जगाए लट लट, अन्ध अन्धेर मिटाया। हउमे हँगता मट्ठ जाए ढट्ठ, साची संगता मेल मिलाया। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठ, जगत नहावण कोई ना नहाया। ना कोई पूजा शिवदवाला मट्ठ, गुर दर मस्जिद वेख वखाया। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, आप आपणी कार कमाया। वरते सांग नटूआ नट, स्वांगी स्वांग रिहा रचाया। लोकमात खेड़ा भट्ठ, गुरमुख साचे मूल ना भाया। तामस तृष्ना जीवां जन्तां रही चट्ट,, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वधाया। कोई ना पार उतारे साचे घाट, नाम जहाज ना कोई चढ़ाया। जूठी झूठी चोली गई पाट, सच शब्द ना कोई तन पहनाया। कलिजुग नेड़े आई वाट, ना दीसे कोए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद चौदां देवे वर, एका इक्की रिहा पाया। एका इक्की एकँकारा आपणी आप पाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, नौ खण्ड करे जणाईआ। सत्तां दीपां इक्क आकार, एका मार्ग लाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। सम्मत पन्दरां हो त्यार, वीह सद बिक्रमी नाल रलाईआ। जोत सरूपी कर आकार, गोबिन्द गुर वेस वटाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठा आसण लाईआ। जोती जोड़ा शब्दी घोड़ा अपर अपार, दिवस रैण रिहा दौड़ाईआ। कल्गी तोड़ा इक्क करतार, नाम नामा सीस टिकाईआ। सस्सा उप्पर होड़ा करे विचार, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। हँ हँगता दए मार, एका एका टिप्पी रिहा गाईआ। दोहां विचोला आप करतार, भेव कोई ना पाईआ। साचा ढोला अपर अपार, ब्रह्मे रिहा सुणाईआ। गुरमुख साचा सच दुलार, शिव शंकर रिहा उठाईआ। बाल अञ्याणा मीत मुरार, इन्द इन्द्रासन

दए हिलाईआ। सृष्ट सबाई हो उज्यार, एका डंका शब्द वजाईआ। लक्ख चुरासी ख़बरदार, पंखी पंछी रिहा उठाईआ। सम्मत पन्दरां हरि निरँकार, आप आपणी रचन रचाईआ। पन्थ ख़ालसा हो त्यार, प्रभ साचे जोत जगाईआ। लेखा लिखे अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लंका गढ़ सुहाए बंक द्वार, राम रामा नाउँ धराईआ। शाह भबीखन रहिणा ख़बरदार, लोकमात वज्जी वधाईआ। राष्ट्रपति जीव नादान, हरि जागरत रिहा जगाईआ। लिख्या आवे धुर फ़रमाण, साल बसाला वेख वखाईआ। रूसा चीना इक्क ज्ञान, शाह इराना संग रलाईआ। खेले खेल हरि अफगान, भेव कोए ना पाईआ। बूरा कक्का विच मैदान, आपे वेख वखाईआ। मदीना मक्का धुर फ़रमाण, आपे दए अल्लाहीआ। भैण भाई सका ना सके कोई पछान, ना कोई जाणे दीन अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ पन्दरां तेरी वंड वंडाईआ। वीह सद सोलां सोलां कल धार, एका धर्म जैकारा। खेले खेल अगम्म अपार, करे भेव न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संग रखाए पंज प्यारा। पंज प्यारा शब्द लिखारी, नर नरायण अख्वाया। पहली चेत्र कर त्यारी, लाहौर शहर डेरा लाया। किला शाही जोत उज्यारी, नूर अलाही आप कराया। दीन इस्लाम पावे सारी, एका रूप वटाया। अमाम मैहन्दी बण पुजारी, मुख नकाब रखाया। लहिंदी दिशा कर त्यारी, खेले खेल हर घट थांया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका लेखा दए चुकाया। सम्मत सोलां लेख चुकाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। उम्मत उम्मती आप उठाउणा, नबी रसूला वेख वखाईआ। पीर पैगम्बर संग रलाउणा, रोड़ी सक्खर चरन छुहाईआ। शाह मलंग आप उठाउणा, फकीर फकीर मनाईआ। एका मृदंग सच वजाउणा, एका ताल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका कलमा दए जणाईआ। एका कलमा हरि कायनात, आपणा आप उपाया। आपे वेखे मार झात, ना कोई दूसर संग रखाया। एका राकी साचा राक, एका रिहा दौड़ाया। एका लेखा एका वाक, एका पूर कराया। एका पाकी एका पाक, पाकी पाक आप अख्वाया। वेखणहारा ख़ाकी ख़ाक, खलक खालक आप ख़ुदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां देवे वर, नूरी अल्ला नूर समाया। नूरी अल्ला नूरो नूर, हरि नूरो नूर उपांयदा। सच महल्ला कर त्यार, आपणा आसण लांयदा। इक्क अकल्ला परवरदिगार, दिस किसे ना आंयदा। साचा मीता सच प्यार, साचे घर वखांयदा। साची रचना विच संसार, एका मार्ग लांयदा। इक्क ज्ञान एका गीता, एका धार वहांयदा। एका मन्दिर इक्क मसीता, एका गुरुद्वार वखांयदा। एका हस्त एका कीटा, उचां नीचां एका रंग रंगांयदा। एका भाणे लागे मीठा, एका दर सुहांयदा। देवे कलमा इक्क अनडीठा, लिखण पढ़ण विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, दीन इस्लाम आप उठांयदा। आप उठाए हरि सुल्ताना, आपणा रंग रंगाया। अमाम मैहन्दी खेल महाना, खेलणहार आप अख्वाया। मौली मैहन्दी सच्चा गाना, तन्दन तन्द बंधाया। एका तीर इक्क निशाना, बत्ती दन्दन लाया। तीस बतीस कर परवाना, इक्क हदीस सुणाया। वेख अबलीस भए हैराना, भेव कोए ना पाया। यामबीन बी महिरवान, एका नाम धराया। अज़मतो करमतो अज़िबवा, अतिलहे तेरा नाम ध्याया। महिबान बीदो इक्क ख़ुदा, तेरा नूर सवाया। सच नबी ना होए जुदा, एका रंग रंगाया। मुलां शेख़ मुसायक गौंस कुतब होए फिदा, घर एका एक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां वंड वंडाया। सम्मत सोलां वंड वंडा, आपणी कल धारीआ। उर्दू फारसी अरबी लए पढ़ा, खेले खेल अपर अपारीआ। गज़नी आपणा चरन टिका, चरन चरनोदक आप वरतारीआ। एका रक्ती बूंद उपा, साची शक्ती करे उज्यारीआ। बल्ख बखारा धाम सुहा, नूरो नूर समारीआ। अहिमद मुहम्मद इक्क वखा, एका रंग रंगे करतारीआ। चार यारी भेव चुका, हरि खेले खेल अपारीआ। पंडत पांधे दए समझा, वेद पुराणा बन्ने धारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां करे खेल नर हरि निरँकारीआ। सोलां कलीआं सोलां तन शृंगारा, हरि हरि आप कराउणा। इक्क दलाल एका ऐली एका अल्ला, एका रूप एका नाअरा लाउणा। इक्क अकल्ला वसे काया खल्ला, उच्च महल्ला आप आपणा मुख छुपाउणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां सच विहारा लोकमात कराउणा। लोकमात जगत विहारा, हरि साचा आप करांयदा। सम्मत सोलां सतारां हाढ़ा, जगत अखाड़ा इक्क वखांयदा। सृष्ट सबाई अग्न लग्गे बहत्तर नाड़ा, ना कोई मात बुझांयदा। पीर फकीर पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी फिरन विच उजाड़ा, ना कोई धीर धरांयदा। मगर लगाए अगम्मी धाड़ा, हथ्थ नीर किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत सरूपी जामा धार, बस्त्र काला चीर तन छुहांयदा। काला चीर काला सूसा, पंज तत्त सुहाया। वेखे खेल ईसा मूसा, जगत जगदीस अख्वाया। चरन छुहाए चीना रूसा, सत सतारां फेरी पाया। नाल रलाए शाह अबनूसा, कोह तूरा नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नूर जल्वा जलाल, कादर करता कर्म करीम अख्वाया। आपणी विद्या आपे पढ़, आपणा सबक आप सिखांयदा। आपणे शस्त्र आपे लड़, दर आपे वेख वखांयदा। आपणे घोड़े आपे चड़, आपणा ताजी आप दौड़ांयदा। आपणे काअबे आपे वड़, ना कोई दूसर चरन टिकांयदा। आपणा लेखा जाणे सीस धड़ दा, ना कोई मूल मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सतरां वीह सौ प्यार, सृष्ट सबाई मारे मार, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। मारे मार लाशरीक, भेव कोई ना राया।

इक्क वखाए सच तारीख, लेखा लेख लिखाया। आपणा वक्त आपे करे नजीक, चौदां चौदां होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सतरां सति सतिवादि सति सरूप हरि करतार, सत जिमी सत अस्मान, चौदां तबकां इक्क ज्ञान, एका नेत्र कर प्रधान, एका कलमा धुर फ़रमाण, एका आइत हक्क कुरान, लाशरीक निगहबान, सृष्ट सबाई दए जणाया। अट्ठ अठारां एका बल धार, आपणी कार कमांयदा । खवाजा खिजर कर प्यार, राजा इन्द्र मेल मिलांयदा। दो जहानां मेला अधविचकार, आपे वेख वखांयदा। खेले खेल अपर अपार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार चलांयदा। एका धार आप उपाए, एका कर्म कमाया। एका मेघन मेघ बरसाए, एका वेख वखाया। एका तेगन तेग उठाए, समस तबरेजन नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी होए लबरेज़ ना दीसे कोई सहाया। एका धार आप वहा, आपणी कार कमांयदा। पंज शैताना दए रुड़ा, दिस किसे ना आंयदा। नौ नौ नेजे वेख वखा, नीरो नीर समांयदा। आपे आसण डेरा आपे ला, आपणा कर्म कमांयदा। भगत भगवन्ती मेल मिला, सन्त सुहेले आप उठांयदा। शेख मसायक लए रला, जिस जन एका राह वखांयदा। एका नूरो नूर समा, एका दर खुल्लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अट्ठ अठारां पार करांयदा। एका अलफ़ एका अल्ला, एका नूर अलाहीआ। एका राह दस्से सुखल्ला, एका ख़लक ख़ुदाईआ। एका वस्सया निहचल धाम अटला, उच्च मुनारा डेरा लाईआ। एका करे वल छल्ला, भेव कोई ना पाईआ। एका करनहारा हल्ला, एका दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। एका अल्ला अलाही नूर, अलफी अल्फ़ उपाया। अट्ठे पहर हाज़र हज़ूर, बन्द ना किसे कराया। तामस तृष्ना करे पूर, आलस निन्दरा विच ना आया। हउमें सहिसा चूरो चूर, जन का जिन्दरा दए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नौ लए मिलाया। एका नाया नौ दर, पंज तत्त वंड वंडाईआ। नौ खण्ड पृथमी रही लड़, ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। जेरज अंड रही झड़, उत्भुज सेत्ज रही खलाईआ। मन मति अग्नी रही सड़, सीतल सीत ना कोई कराईआ। बुध ढूँघी कुन्दर वेखण वड़, ना कोई बाहर कढाईआ। मनुआ अग्गे बैठा खड़, शाह शैताना नाउँ धराईआ। आप उखेड़नहारा जड़, आपणी बणत बणाईआ। हरिजन विरला एका अक्खर जाए पढ़, एका अलफ़ सिखाईआ। नौ दर झूठे देवे तज, एका नाया मेल मिलाईआ। जो घड़या सो रिहा भज्ज, वेला वक्त दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पड़दे रिहा कज्ज, एका पड़दा उप्पर पाईआ। एका नाया एका उनी, एका धार बंधांयदा। एका मुस्लिम एका सुन्नी, एका सिक्ख समांयदा। एका पंडत

एका गुनी, एका गुण जणांयदा। एका राम एका कृष्न एका रिखी एका मुनी, एका रूप दरसांयदा। एका नानक गोबिन्द सुणी, इक्क पुकार अलांयदा। सर्ब पुकार हरि दातार परवरदिगार आपे सुणी, सुणनहार आप अख्वांयदा। वेद पुराण अञ्जील कुरान ग्रन्थ पन्थ हरि देवे चुन्नी, एका पड़दा पांयदा। घर घर मन्दिर घर घर अन्दर वज्जे नाद धुनी, साची धुनी साचा नाम सुणांयदा। सृष्ट सबाई छाणी पुणी, एका मार्ग लांयदा। ना कोई जाणे हरि पछाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क ख़ुदाए सृष्ट सरनाए कायनात आबे हयात कलमा अमाम साचा नाम धुर फ़रमाण, जिया जहान, आत्म ज्ञान, इक्क ध्यान, एका रूप शाहो भूप चारे कूट एका धार चार यार सच मुहम्मद एका मुहम्मद एक नार एका ऐहमद एका अल्ला इक्क महल्ला एका धार एका राम इक्क संसार एका कृष्ना जिया अधार, एका नानक सोहे द्वार, एका गोबिन्द रिहा विचार, पारब्रह्म प्रभ परमेश्वर सच ख़ुदा सांझा यार, हक्को हक्क हक्क हकीकत लाशरीक वेख वखा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत उन्नी सृष्ट सबाई चोटी रिहा मुन्नी, भेव कोई ना पांयदा। एका कलमा दस दस बीस, एका एक वड्याईआ। एका शब्द इक्क हदीस, एका करे पढ़ाईआ। एका छत्र एका सीस, एका रिहा झुलाईआ। एका पीसन एका रिहा पीस, एका नाम जपाईआ। एका जगत इक्क जगदीस, जागरत जोत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। नौ खण्ड इक्क ज्ञान, एका शब्द दृढ़ाया। कुला खण्ड मार ध्यान, इल्लाबुत इक्क मकान, केतमाल वेख वखाया। हरणयमह हो प्रधान, नूरो नूर करे रुशनाया। रमक तेरा जाणी जाण, हरि साचा आप ख़ुदाया। भद्र देवे धुर फ़रमाण, भुल्ल रहे ना राया। भारत खण्ड जोत सरूपी हरि भगवान, अमाम मैहन्दी नाउँ धराया। निहकलंका विच जहान, जोती जामा भेख वटाया। चौदां लोकां वेखे मार ध्यान, इत्तल वितल सित्तल फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रसातल तलातल महातल पताल वेख वखाया। सत्त लोक चरन दबा आपणी दया कमाईआ। जोत सरूपी भेख वटा, नूरी नूर दरसाईआ। नूरी अल्ला नूर अलाह, आलम आलमां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नैण उठाईआ। आप आपणा नैण उठा, भूअ लोक हरि भउ चुका, आपणा कर्म कमाउँणा। दूवर लोक हरि भरम गंवा, धर्म जैकार रखाउणा। स्वर्ग लोक इक्क जणा, इक्क धार चलाउणा। जप लोक जाप जपा, जम पुर मेट मिटाउणा। तप लोक तख्त सुहा धीरज धीर धराउणा। सत्त लोक हरि फेरी पा, सत्त अस्माना आपणे सीस उठाउणा। आप आपणा मुख भवा, अगम्म अगम्म अखाउणा। एका चरन लए उठा, दिस किसे ना आउणा। साची सिख्या रिहा सिखा, दिस किसे ना आउणा। कलिजुग लेखा लिख्या दए मिटा, तकदीर तकसीर मेट मिटाउणा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह हकीर उच्च फकीर नीचो नीच ऊँचो ऊँच इक्क धाम बहाउणा। एका वरन एका गोत, एका धाम सुहांयदा। एका रूप एका जोत, एका नूर दरसांयदा। एका शब्द एका चोट, एका ताल वजांयदा। एका कलमा एका कोट, एका तन सुहांयदा। एका पिंजर एका पोट, एका तन टिकांयदा। लभ्भदे फिरदे कोटी कोट, नूर अलाही हथ्थ किसे ना आंयदा। अन्न पाणी पंज तत्त भरी ना पोट, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटांयदा। माया ममता करी ना छोट, तन लंगोट ना कोई रखांयदा। इक्क ख़ुदा ना रक्खी ओट, इक्क राम ना कोई मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका लेखा धुर दरगाह शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात आप चुकांयदा। शब्द मिलावा सच घर, साचे मेल मिलाया। इक्क वखाए साचा दर, सच सुहञ्जणा डेरा लाया। इक्क सरोवर एका सर एका नहावन रिहा नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा दए वडआया। बीस बीसा हरि जगदीसा सृष्ट सबाई होए कुड़माईआ। खेले खेल इक्क इकीसा, हरि साचा सगन मनाईआ। लेखे लाए करोड़ तेतीसा, ब्रह्मा शिव वेख वखाईआ। रसना गाए दन्द बतीसा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आपे जाणे आपणी हदीसा, चारे यार संग समाईआ। अल्ला राणी इक्क इकीसा, एका अक्खर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए राग छत्तीसा, भेव रहे ना राईआ।

* १८ हाढ़ २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

आदि गुर अवतारा, एका एक अख्वाया। एका रूप इक्क पसारा, एका रिहा कराया। एका जोत इक्क उज्यारा, एका वेख वखाया । एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका रिहा वजाया। इक्क महल्ला इक्क घर बारा, एका रिहा उपाया। एका दर इक्क दरबारा, एका आसण लाया। एका शाह एका भूप एका सच्ची सरकारा, रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाया । एका राग एका करतार, एका रिहा अलाईआ। एका खेल अपर अपारा, एका रिहा कराईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, एका रचन रचाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। इक्क सिँघासण इक्क अबिनाशन, एका पुरख अख्वाया। एका शाहो एका शाबाश, एका नाम धराया। एका खेल इक्क तमाश, वेखणहार इक्क हो आया। एका मण्डल एका रास, एका रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाया। एका राह एका घर, एका रिहा उपाया। एका नाम एका वर, एका रिहा दवाईआ। एका सर एका दर, एका रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी

दया कमाईआ। एका राग एका नाद, एका रिहा वजाईआ। इक्क शब्द इक्क ब्रह्मादि, एका खोज खुजाईआ। एका आदि एका जुगादि, एका नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक ल्या उपाईआ। एका एक एका धार, एका आप चलाईआ। जोती नूर अपर अपार, आप आपा लए उपाईआ। दोवें मुख वेख विचार, लेखा आपणा रिहा लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकारा कर पसार, आपणी कल वरताईआ। इक्क अकल्ला एकँकारी, एका नाम रखाया। एका निरगुण जोत कर उज्यारी, एका रूप वटाया। एका धुन एका धुन्कारी, एका नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक लए प्रनाया। एका एक आप प्रना आपणे अंग लगाया। इक्क सिँघासण लए विछा, एका आसण लाया। इक्क मृदंग लए वजा, एका रिहा सुणाया। एका रंग लए चढ़ा, एका भिच्छया पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला सच महल्ला रिहा वसाया। एका एक इक्क अकाला, आदि पुरख अख्वाया। एका एक दीन दयाला, भेव किसे ना पाया। एका एक चले अवल्लड़ी चाला, चाल आपणी चलदा आया। एका वस्सया धर्म सच्ची धर्मसाला, चार दिवार ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। एका एक कर पसार, एका रूप समाईआ। एका रूप हरि करतार, आपणा आप जणाईआ। एका कूट इक्क पसार, एका रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग एका अंग एका संग एका पलँघ रिहा विछाईआ। इक्क पलँघ एका आसण, एका हरि लगांयदा। एका दासी एका दासन, एका सेव कमांयदा। एका वासी पुरख अबिनाशन, एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्क विच टिकांयदा। एका रूप इक्क समाया, पारब्रह्म वड्याईआ। दूसर किसे भेव ना राया, ना लेखा कोई जणाईआ। तीजा दर ना कोई सहाया, चौथे घर ना कोई वधाईआ। पंचम मेल ना कोए कराया, छेवें छप्पर छन्न ना कोई छाईआ। सत्तवें सति सतिवाद, आप अख्वाया, सति पुरखा नाउँ धराईआ। अट्ठां तत्त विच ना आया, पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। नौ दर ना कोई सुहाया, दर दसवां ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला एकँकार, आपे जाणे आपणी धार, जोत सरूपी कर पसार, आपे रिहा विच समाईआ। आप आपणे विच समाया, पारब्रह्म बेअन्ता। ना कोई लेखा लेख लिखाया, ना कोई बणाए बणता। ना कोई भेद भेव चुकाया, ना कोई सुणाए सन्ता। अछल अछेदा आपणा नाउँ धराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आप पछाणे दर आपणे राह वखाणे सिध्धा, इक्क पसार हरि रघुराया। इक्क पसार हरि रघुराया, आपणा आप कराया। दूजा दर दए सुहाया, थिर घर नाउँ

धराया। सच दर मिले वड्याईआ, घर साचे मंगल गाया। चौथे घर मिले वर साची सईआ, साचा मेल मिलाया। पंचम मेला शब्द गुर चेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा नाउँ धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख आप अख्वाईआ। आपणी मरनी आपे मर, आप आपणा लए जणाईआ। आपणी चरनी आपे पड़, आप आपणा सीस झुकाईआ। आपणी बाणी आपे पढ़, आपणा अक्खर वेख वखाईआ। आपणी लाए आपे जड़, ना कोई दूसर संग रखाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़नहार रघुराईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, बैठा बेपरवाहीआ। आपणे पौड़े आप चढ़, खेले खेल सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा मन्दिर कर उसारा, आपे आसण लांयदा। आपे बैठ हरि निरँकारा, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा होए चोबदारा, आप आपणा सीस निवांयदा। आप आपणी कर निमस्कारा, आप आपणा आप मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। आप आपणा शब्द जणा, आप आपणा लए उठाईआ। आप आपणा झोली पा, आप आपणा लए मिटाईआ। आप आपणा भाणा सहिणा लए सिखा, भाणे विच आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणा भाणा आपे मन्न, आपणी धार चलाईआ। आप आपणा देवे डन्न, डन्नहार आप अख्वाईआ। आपणा घड़या आपे देवे भन्न, भन्नणहार देर ना लाईआ। आपणी जननी आपे जन, जन जननी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा कर लबास आपणा आप हंढाया। आप आपणा करया वास, आप आपणा लए उपाया। आप आपणी जाणे रास, आप आपणी वस्त वेख वखाया। आप आपणा जाणे बरस मास, लेख लेख ना कोई गणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा दर सुहाए, सोहे बंक दुआरा। आप आपणा बंस बणाए, नाउँ धराए हरि निरँकारा। आप आपणी अंस चलाए, शब्द चलाए सुत दुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे कराए सच प्यारा। आपणी अंस आप उपा, आपणा नाउँ धराईआ। आपणा बंस आप सुहा, आपे बैठा आसण लाईआ। आपणा विसा आप कमा, विश्व रूप वटाईआ। जोती जोत जोत जगा, निरगुण वड्डी वड्याईआ। वरन गोत ना कोई रखा, एका बरन बणाईआ। गुर पीर ना कोई रिहा मना, एका इष्ट रिहा समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, थिर घर बैठा आसण लाईआ। शब्द सिँघासण साचा नाँ, आपे लिअ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बंस चलाईआ। आप आपणी

बणत बणा, आपणा रूप वटाया। विष्नूं वंसी नाम धरा, धरनी विच समाया। बंस बंसा आप हो जा, भेव कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, एका एक अख्वांयदा। रूप अनूप कर पसारा, शाहो भूप नाउँ धरांयदा। सति सरूप कर उज्यारा, एका धार वहांयदा। एका रंग अपर अपारा, हरि आपणा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क आकार कर पसार, निरगुण धार आप चलांयदा। निरगुण धार धुर दरगाह, हरि आपणी आप चलाईआ। आप आपणी दए सलाह, आप आपणा मता पकाईआ। आप आपणा जाणे राह, आप आपणा मार्ग लाईआ। आप आपणी पकड़े बांह, आप आपणा ल्ए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा बेपरवाहीआ। एकँकारा आदि निरंजन, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा होए दर्द दुःख भय भंजन, रोग सोग ना कोई रखांयदा। आप आपणा आपणे नेत्र पाए अंजन, आप आपणा ज्ञान दृढ़ांयदा। आप आपणी धूढ़ी करे मजन, आप आपणी मैल गंवांयदा। आप आपणा बणया सज्जण, घर साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग साचा संग सगला संग रखांयदा। आप आपणा कारज कर, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। आप आपणे अग्गे धर, आपे वेख वखाईआ। आप आपणा चुकाए डर, निरभउ नाम धराईआ। आप आपणा दए हरि, निरवैर रूप समाईआ। आप आपणा जेहा ल्ए कर, आप करे वड्याईआ। एका मूर्ति वसे एका घर, अकाल पुरख नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ। इक्क अकाल एका मूर्त, एका रूप अख्वाया। एका नाद एका तूरत, एका नाद वजाया। एका मनसा एका पूरत, परम पुरख पारब्रह्म सदवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटाया। आप आपणा अंग कटा, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी मारे सट्ट, आप आपणा हथ्थ रखांयदा। आप आपणा वेखे घट घट, आप आपणा पड़दा लांहयदा। आप आपणा वेखे हट्ट, आप आपणा फोल फोलांयदा। आप आपणा वेखे तट्ट, तट किनारा आप सुहांयदा। आप आपणा रस ल्ए चट्ट,, रसक रसक विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वर वडिआंयदा। घर वड्याई पारब्रह्म वसे पुरख सुल्तान। एका कर्म एका जरम, एका वरन रखान। ना कोई सहिसा ना कोई भरम, ना कोई चिन्ता ना कोई सोग ना कोई पुरख अंजान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे पछान। आपणी आप कर पछान, आपणा मूल चुकाया। आप आपणा कर ध्यान, आप आपणा कन्त कन्तूहल मनाया। आप आपणा कर ज्ञान, आप आपणी भुल्ल बख्शाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। रचन

३६७ ०७

रचाए हरि भगवन्त, एका धार बंधांयदा। लोकमात बणाए बणत, जुग जुग वेस वटांयदा। मेल मिलावा साचे सन्ता सतिगुर पुरख मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। लोकमात खेल न्यारा, जुग जुग आप कराया। पारब्रह्म गुर लए अवतारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। एका शब्द एका धुन्कारा, गुरमुख साचे लए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग मेला मेलणहारा, आदि पुरख अख्वांयदा। गुर चोला सोहे इक्क दुआरा, आप आपणी दया कमांयदा। भगती भरे नाम भण्डारा, हरि भगवान भगती रूप अख्वांयदा। आपे मंगे मंग दुआरा, विष्न रूप आप करांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, नर नरेशा दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात, आपणा हिस्सा दहि दिशा चारों कुन्ट आप वडांयदा। चारों कुन्ट दहि दिशा, देवणहारा बाकी। आप वंडाए आपणा हिस्सा, हरि शाहो पाकन पाकी। लोकमात हरि वड्याई, हरि आपणी आप करांयदा। जुग जुग जोत करे रुशनाई, हरि हरि वेख वखांयदा। सन्त सुहेले लए जगाई, सतिगुर दया कमांयदा। भगतन मेले लए मिलाई, मेल विछोड़ा आप कटांयदा। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांही, दर दर फेरी पांयदा। हरिजन वेखे चाँईं चाँईं, घर घर कुण्डा लांहयदा। निथाविआं देवे साचा थाँईं, धुरदरगाह सुहांयदा। दो जहानां देवे ठंडीआं छाईं, सद आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमांयदा। आपणा कर्म कमावणहारा, अकाल मूर्त अजूनी। जुग जुग लोकमात लए अवतारा, खेले खेल गुण गुणी। गुरमुख साजण पावे सारा, लक्ख चुरासी छाणी पुणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर एका नाद वजाए हरि शब्द साची धुनी। धुनी शब्द नाद अनादा एका एक वजांयदा। आप सुणाए हरि ब्रह्मादा, पारब्रह्म नाम धरांयदा। करनहारा आदि जुगादा, जगत जुगत बणांयदा। आपे सीता राम कृष्ना राधा, आपे रूप वटांयदा। आप आपणा साधन साधा, सतिजुग त्रेता द्वापर लेखे लांयदा। आपे जाणे बोध अगाधा, ताली ताल वजांयदा। आप सुणाए अनहद वाजा, अनरागी राग अलांयदा। आप आपणा रचया काजा, आपे वेख वखांयदा। आपे कलिजुग देवणहारा दाजा, आपे झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी किरपा आपे आप करांयदा। कलिजुग करया साधन जोग, धर्मी धर्म कमाया। कूड़ कुड़यारा करया भोग, माया ममता लए उपाया। लेखा लिख्या धुर संजोग, ना सके कोई तुड़ाया। पंज तत्त विकारा हउमे रोग, काया मन्दिर तन वसाया। मनुआ चुगे झूठी चोग, गुर का ज्ञान हथ्थ ना आया। मति मती दिवस रैण रही सोच, शब्द निशाना ना कोई झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बीज बिजाया। कलिजुग तेरा बूटा ला,

३९८
०७

हरि आपणा कर्म कमांयदा। तेरा लहिणा तेरी झोली पा, तेरा दरस सुहांयदा। तेरा बस्त्र तेरा गहिणा तेरे तन दए छुहा, तेरा रूप वटांयदा। तेरा कज्जल तेरे नैणा पा, तेरी धार बन्न्हांयदा। तेरा भाणा गुरमुख सहिणा, दे मति आप समझांयदा। आपे जाणे आपणा कहिणा, आपे हुक्म चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सूसा तेरे तन पहनांयदा। कलिजुग सूसा तन संगार, हरि साचे आप कराया। लोकमात दे प्यार, धरत मात गोद उठाया। उत्तों पाणी दित्ता वार, तीर्थ तट ना कोई सुहाया। आपे वेखे आपणा दर द्वार, दर दरवाजा लए खुल्हाया। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आपणी झोली पाए भिच्छया मंगणहार परवरदिगार आपणे दर रिहा अलक्ख जगाया। आपणे दर अलक्ख जगा, हरि आपणी झोली पाईआ। सतिजुग वेखे साचा थाँ, नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रुत्त पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त, जुग जुग आप सुहाईआ। त्रेता तेरा कर प्यार, हरि साचे मेल मिलाया। राम रामा कर त्यार, राम रामा विच समाया। द्वापर तेरा तोड़ हँकार, झूठा गढ़ रहिण ना पाया। लेखा लिखे अपर अपार, एका नेत्र ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द निशाना एका तीर चलाया। कलिजुग तेरी कूड़ी रास, हरि साचे वंड वंडाईआ। इक्क वस्त तेरे रक्खे पास, दिस किसे ना आईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी वसे आस पास, भरमी भरम भुलाईआ। जन भगतां देवे इक्क धरवास, एका नाम वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वेखे दर सच्चा हरि दाता बेपरवाहीआ। घर मरदाना घर मेहरवाना, घर ही निशाना, घर ही आप लगाया। घर परवाना, घर गुण निधाना, घर वेखणहार आप आया। घर जोधा घर सूरा घर बलवाना, घर चिल्ला घर तीर रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दर एका घर, हरि साचे वेख वखाया। कलिजुग दर चार कुन्ट, दहि दिशा बणत बणाईआ। आपे देवणहारा वर, ईसा मूसा लए उपाईआ। आपणा नूर आपे कर, पंज तत्त करे रुशनाईआ। एका अन्दर एका मन्दिर बैठा वड़, ना कोई लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी छाहीआ। कलिजुग तेरा साचा शाह, हरि हरि नानक रूप वटाया। नाम सति बण मलाह, बेड़ा रिहा चलाया। होए सहाई बेपरवाह, एका मार्ग लाया। एका चप्पू दए दिखा, निरगुण सरगुण रूप वटाया। साचा दर दए सुहा, आपणा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क आकार एका रूप वखाया। एका रूप इक्क आकार, इक्क एकँकार अख्वाईआ। एका ऐड़ा अल्ला अलाही यार, एका नाम

४०० ०७

धराईआ। ईड़ी इष्ट अपर अपार, ईश जीव भेव ना राईआ। सस्सा किला कर त्यार, गुर नानक बैठा डेरा लाईआ। उप्पर होड़ा रंग करतार, दोवें मुख भवाईआ। एका मुख दस्म दुआर, दूसर सति पुरखे विच समाईआ। शब्द सरूपी चले धार, आर पार सुहाईआ । हरि विचोला सांझा यार, दो जहानां वेख वखाईआ। सुरती शब्द इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। अकाल मूर्ति पावे सार, कादर करता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सस्सा सतिगुर पुरख मनाईआ। सस्सा किला चार दिवार, चारों कुन्ट वहाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण कर विचार, एका रंग रंगाईआ। दक्खण दिशा रिहा विचार, हरि आपणा मुख भवाईआ। सस्से मोड़ा देवणहार, एका कुण्डी लाईआ। आपे बैठा गुप्त ज़ाहर, दिस किसे ना आईआ। सो पुरख निरँजण वड सिक्दार, हर घट होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दर दए सुहाईआ। एका दर इक्क दरवाजा, हरि साचे आप रखाया। सस्से मेल ग़रीब निवाज़ा, होड़ा उप्पर लाया। निरगुण रचया आपे काजा, सरगुण मेल मिलाया। सेवा लाए अनहद वाजा, तार सितार हिलाया। धुरदरगाही आया भाजा, आप आपणा राह तकाया। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजा, आप आपणा रूप वटाया। गुर नानक देवे इक्क जहाजा, सृष्ट सबाई ल्ए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा अक्खर ईड़ी वक्ख दए कराया। ईड़ी इष्ट इक्क अकाला, ऐड़ा अक्ख खुल़ाईआ। ऊड़ा वेखे त्रै त्रै काला, त्रैलोकां पार कराईआ। एकँकारा दीन दयाला, जन भगतां राह तकाया। सस्सा दस्से राह सुखाला, घर चौथे बैठा आसण लाईआ। हरि पुरख बणाई सच्ची धर्मसाला, जन भगतां मेल मिलाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, जम दंड ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण खोल़ दुआरा, नानक रूप दरसाया। आप आपणा कर उज्यारा, नूरो नूर उपाया। जोती जोत कर आधारा, जोती जोत लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआर दए दिखाया। सस्सा घर सतिगुर सूरा, सर्बकला अख्वांयदा। आप बणाए सर्बकल भरपूरा, ना कोई मेट मिटांयदा। आपे नेड़े आपे दूरा, नेरन नेर आप हो जांयदा। गुर नानक पाया हाज़र हज़ूरा, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्से तेरा सुहाए दर, उप्पर आपणा आसण लांयदा। सस्सा तेरा साचा घर, साख्यात दरसाया। गुर नानक मिल्या साचा वर, पारब्रह्म सरनाया। दो जहानां चुकया डर, तेरा मेरा भेव ना राया। ना कोई नारी ना कोई नर, करता पुरख भेव ना राया। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण ना कोई रखाया। सस्से किले जो गया वड़, लोकमात ना फेरा पाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखाया। जगत विद्या ना जाए पढ़, ज्ञान ध्यान ना कोए

जणाया। जिस जन फड़ाया आपणा लड़, फड़ बाहों पार कराया। ना कोई गोर ना कोई मढ़, ना कोई जल धार रुड़ाया। पारब्रह्म सतिगुर पूरे सरन सरनाई जाए पड़, प्रभ आपणी गोद उठाया। लहिणा देणा चुकाए बहत्तर नाड़ तिन्न सौ सट्ठ हाडी मेट मिटाया। चित्रगुप्त लाड़ी मौत ना सके अग्गे अड़, गुरसिख बैठे सीस झुकाया। साचे पौड़े जाणा चड़, हरि साचे आप चढ़ाया। साचे अन्दर जाए वड़, सस्सा किला बणाया। पुरख अबिनाशी पहरा देवे अग्गे खड़, निरगुण रूप वटाया। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई आकार दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा सुत्ता दए जगाया। साजन मीत, सतिगुर आप कराया। आपे बैठा रहे अतीत, घर आपणा आप सुहाया। ना कोई मन्दिर ना मसीत, गुरदुआरा शिवदुआला मट्ठ ना कोई बणाया। आदि जुगादी सदा अतीत, नठ्ठ नठ्ठ हथ्थ किसे ना आया। जुग जुग आपे जाणे आपणी रीत, हरिजन साचे इक्क इक्क्ठ चरन दुआर समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह वखाया। सस्सा किला कर त्यार, हाहा बणत बणाईआ। हाहा रूप आप करतार, एका अल्फ रिहा खिचाईआ। अग्गों मोड़ा अध विचकार, ना तोड़ कोई चढ़ाईआ। जोड़ा जोड़े विच संसार, आप आपणा अंग कटाईआ। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पावे सार, मन मति बुध नाल रलाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, ब्रह्म ब्रह्म विच समाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर पसार, लक्ख चुरासी लए उपाईआ। अगम्म अगम्म आप करतार, अलक्ख अलक्ख अख्वाईआ। ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। ना कोई पवण स्वामी लए दम, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। ना कोई ख़ुशी ना कोई गम, लक्ख चुरासी आप बणाए आपे लए मिटाईआ। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी आपे जाणे आपणा कम्म, ना दस्से किसे सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा अग्गे अक्खर धर, हाहा रूप वटाईआ। हाहा तेरा हरि गुण गा, हरि हरि नाम धराया। आप आपणी वंड वंडा, तेरी झोली पाया। तेरा मेरा भेव ना रा, तेरा मेरे विच समाया। उत्ते टिप्पी देवां ला, आप आपणा बन्द कराया। हेठां मुख खुल्हा दिआं रखा, पंज तत्त होए हलकाया। मन मति नाल रला, झोली दए भराया। गुरमति आपणे शब्द रखा, आपणा मुख लए भवाया। गुरमुख साचे लए जगा, जुग जुग वड्डी वड्याआ। इक्क अकल्ला जाणे आपणे नाँ, दूजा वेख ना कोई पाया। तीजा दर ना दए सुहा, चौथे घर ना मिले वड्याईआ। पंजवें गाए ना साचा नाँ, छेवें वज्जे ना कोई वधाईआ। सत्तवां दर दिसे ना, अट्ठ तत्त रहे कुरलाईआ। नौ नौ हरि वेख वखा, आपणी धार बंधाईआ। दोहां मेला दए मिला आपणी कल वरताईआ। एका अलफ़ दए खिचा, एका कोट वसाईआ। उप्पर मोड़ा देवे पा, अधविचकारे बन्द कराईआ। दो दो ना वेख विच, नौ

नौ करे कुड़माईआ। एका चौका संग रला, चारे कुन्टां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नौ नौं कर आकार, हरि चौकां नाल रलाया। नौ नौ सोहे द्वार, द्वार बंका इक्क सुहाया। नौ नौं कर विचार, चार यारी मेल मिलाया। चार यारी सुण पुकार, नौ द्वार फेरा पाया। नौ द्वार हाहाकार, नौ खण्ड होए हलकाया। नौ खण्ड रिहा ललकार निरगुण रूप वटाया। नौ दर मिले ना मीत मुरार, मनमुख होए हलकाया। चौथे जुग पावे सार, एका चौका नाल रलाया। चार नौ एका धार, एका रूप वटाया। नौ दर वस्सया बाहर, दिस किसे ना आया। नौ नौं करे पार, पारब्रह्म रूप अख्वाया। चौथा पद सच्ची सरकार, गुरमुखां रिहा दवाया। आपे बैठा अधविचकार, एका चप्पू नाम लगाया। कलिजुग बेड़ा कर त्यार, आप आपणा रिहा चलाया। हाहा तेरी सुण पुकार, हँगता दए मिटाया। पारब्रह्म रूप करतार, जीव ब्रह्म होए सहाया। आत्म ब्रह्म पावे सार, मेल विछोड़ा दए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ नौं अग्गे धर, चौका वेख वखाया। नौ सद नौ चार, हरि हरि रूप वटाया। अगाध बोध लेख अपार, लेखा लिख्त विच ना आया। साध सन्त रहे विचार, प्रभ का भेव किसे ना पाया। जुगा जुगन्ता आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा हाहा मेल मिलाया। सस्सा सोहे हरि निरँकार, हाहा हँ अख्वाईआ। अंग संग आप करतार, आपणा रंग रंगाईआ। आपणी मंग मंग द्वार, आपणी इच्छया पूर कराईआ। कलिजुग मलँग बणे भिखार, रोवे कूके दए दुहाईआ। काला सूसा तन शृंगार, ईसा मूसा नाल रलाईआ। संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी उठ उठ धाईआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, ख़ुलड़े केस सीस लटकाईआ । चार कुन्टां वेखे हरि निरँकार, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक वखाया इक्क घर, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। नानक गया हरि द्वार, हरि साचे आप बुलाया। पुरख अबिनाशी खोल्ह किवाड़, आपणा दरस दिखाया। लेखा लिख ना सक्कया कोई जीव गंवार, गुर नानक आपणी हथ्थीं ना लेख लिखाया। धन्न सो भाग दिहाड़ सतारां हाढ़, नानक निरगुण रूप समाया। पुरख अबिनाशी आपणे घर ल्या वाड़, आप आपणा भेव खुल्हाया। अग्नी बुझी बहत्तर नाड़, एका तत्त समाया। लहिणा देणा चुक्कया पंचम धाड़, शब्दी शब्द रखाया। सति नाम काया मन्दिर अन्दर देवे वाड़, आपणी हथ्थीं बन्द कराया। प्रभ होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मूल चुकाया। नानक दरस हरि हरि पा, एका गुण अल्हांयदा। तेरा रूप ते वड कोई जाणे ना, ना कोई लेख लिखांयदा। ना नैण लए खुल्हा, नैण नैण समांयदा। बिमल पद एका पा, एका

धार चलांयदा। हद्द बेहद्द बेपरवाह, ब्रहिमद वेख वखांयदा। आदि जुगादि तेरा एका थाँ, एका धाम सुहांयदा। जुग जुग तेरा तेरा नाँ, तेरा जाप जपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नेत्र इक्क ज्ञान, एका चरन इक्क ध्यान एका शब्द इक्क निशान, एका राह चलांयदा। एका शब्द इक्क निशाना, एका गुर पाया। एक हरि धुर फ़रमाणा, एका हरि रखाया। एका राग एका गाणा, एका रिहा सुणाया। इक्क सतार इक्क मरदाना, नानक निरँकार निरँकार समाया। पार कराए दो जहानां, जिस जन दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दए समझाया। नानक सतिगुर कर विचार, जीव जन्त समझांयदा। नाम सति दए अपार, सति सति विच समांयदा। रत्त तत्त कर प्यार, एका मति रखांयदा। रक्खी पत्त अन्तिम वार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। कमलापत मीत मुरार, कर प्यार गले लगांयदा। शब्द वथ विच संसार, साचा रथ चलांयदा। सृष्ट सबाई दए मथ, चारों कुन्ट फिरांयदा। लहिणा देण चुकाए सीआं साडे तिन्न हथ्थ, आप आपणी वंड वंडांयदा। तेरा नाम तेरी पूजा तेरा पाठ, चार वरनां आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वेख वखांयदा। तेरा नाम जगत सहारा, हरि साचा आप बणांयदा। सोहँ शब्द होए जैकारा, कलिजुग अन्तिम राह तकांयदा। चार वरनां करे इक्क प्यारा, एका धाम बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वर झोली पांयदा। आपणा शब्द आपे गा, आपणे तन सुहाया। आपणा ढोला आपे अल्ला, आपणा आप सुणाया। आपणा तोला आप अख्वा, आपणा तोल तुलाया। आपणा बोला आप बुला, आप आपणे कन्न सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दित्ता एका वर, एका शब्द सुणाया। सोहँ शब्द साचा ताल, गुर नानक तन वजांयदा। आपणी घाल आपे घाल, आपे पूर करांयदा। आपणी वस्त आप संभाल, आपणी झोली पांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, धन्न धनाढ आप हो जांयदा। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। सस्सा हाहा कर उज्यारा, सोहँ जोड़ जुड़ाया। सो पुरख निरँजण परवरदिगारा, हं हँगता दए मिटाया। एका दूजा भउ निवारा, साची संगता मेल मिलाया। जो दर आए भुक्खा नंगता, हरि शब्दी शब्द भण्डार भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नेत्र इक्क ज्ञान, इक्क पुरख इक्क ध्यान, एका नाम दृढ़ाया। सोहँ शब्द नानक गुर गा, आपणी अलक्ख जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ लेखे लवे ला, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए सुणा, सत्तां दीपां करे जणाईआ। ब्रह्मा फड़ फड़ लए उठा, शिव शंकर जाग खुल्लाईआ। सुरपति राजा इन्द जाग दए खुल्ला, करोड़ तेतीसा वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी लए प्रना, एका गानां तन्द

बंधाईआ। एका दूजा दए पढ़ा, साची सिख्या नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द करे वड्याईआ। एका शब्द इक्क जैकारा, एका हरि उपांयदा। एका गुर इक्क अवतारा, एका धार बंधांयदा। एका राग एका तलवाड़ा, एका ताल वजांयदा। एका धरत इक्क अखाड़ा, एका धर्म धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द मात वडिआंयदा। सोहँ शब्द हरि भगवाना, आपणा रूप दरसाया। आप आपणी कर पछाना, आप आपणा वेख वखाया। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, वेले अन्तिम लए उठाया। एका मारे तीर निशाना, बजर कपाटी पार कराया। एका बख्शे चरन ध्याना, नाम हाटी सच विकाया। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार सृष्ट सबाया। सृष्ट सबाई करे मान अभिमाना, गढ़ हँकारी रहिण ना पाया। जन भगतां बख्शे जीआं दाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हरि मेहरवाना, मेहरवाना नाम धराया। दीपक जोती जगे महाना, पंज तत्त ना कोई रखाया। गुर गोबिन्दा कर परवाना, शब्द सिँघासण आसण लाया। सम्बल नगरी इक्क टिकाना, पुरख अबिनाशी वेख वखाया। किसे हथ्थ ना आए वड विद्वाना, पढ़ पढ़ थक्के ध्यान लगाया। बहि बहि करन गोझ ज्ञाना, मन का मणका ना कोई भवाया। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ कर अशनाना, दुरमति मैल ना कोई गंवाया। रागी नादी बहि बहि गाण गाणा, गावणहारा दिस ना आया। साध सन्त होए बेपछाना, साचा दर ना कोई सुहाया। भरमे भुल्ले राजा राणा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। जीव जन्त होए हैराना, जीव ब्रह्म ना कोई जणाया। गुरमुख साचा होए निमाणा, प्रभ चरनी सीस निवाया। देवे शब्द धुर फ़रमाणा, सोहँ जाप जपाया। गुर नानक आत्म बद्धा गाना, ना कोई सके तोड़ तुड़ाया। पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, लोकमात वेखण आया। साल बवन्जा मुख छुपाना, उप्पर पड़दा पाया। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा रक्त बूंद कर परवाना, शेर सिँघ नाम धराया। वीह सौ बिक्रमी हो पछाना, आप आपणे घर सिधाया। थिर घर बैठा मल्ल टिकाणा, त्रैगुण विच ना आया। आपे इच्छया आपे दसाना, आप आपणा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। साल बवन्जा काली धार, मुख काली शाहीआ। पारब्रह्म लै अवतार, पंज तत्त करी कुड़माईआ। भरम भुल्लया सर्ब संसार, सोया सुत इक्क जगाईआ। मनी सिँघ ढहि पया चरन द्वार, हरि मूंह दे भार सुटाईआ। उप्पर पाया आपणा भार, अवण गवण परे हटाईआ। जगी जोत इक्क निरँकार, अठ्ठे पहर रहे रुशनाईआ। आए शब्द धुर दी बाण, हरि जुग जुग आप कराईआ। खाणी बाणी ना सके कर कोई पछाण, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। सति सतिगुर मिले हाणीआं हाण, शब्द विचोला इक्क बणाईआ। साची सवाणी हो प्रधान, घर मिल्या बेपरवाहीआ। मिल्या कन्त बेपछान, ना सके किसे वखाईआ। अठ्ठे पहर

रंग रिहा रंगान, एका सेज हंढाईआ। पुरख अबिनाशी वड बलवान, साची नार करे कुड़माईआ। साची नार हो प्रधान, घर बैठी सेज विछाईआ। आपणे दर आपणा मंगल आपे गाण, एका रीत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दए जणाईआ। साल बवन्जा कलिजुग चोला, पंज तत्त हंढाया। सोहँ शब्द विच विचोला, गुर पूरे आप रखाया। सन्त मनी सिँघ सुणे एका ढोला, एका लिव चित लाया। चरन दुआरे होया गोला, सेवक सेव कमाया। पारब्रह्म प्रभ बणया भोला, जीवां जन्तां विच डेरा लाया। आप आपणा रक्खया उहला, मात पित भाई भैण भ्रा सज्जण साक किसे हथ्थ ना आया। गुरसिख भाग लगाया काया चोला, अन्दर बहि बहि आपे बोला, जिउँ नानक बणया साचा तोला, तेरां तेरां धार चलाया। साची धरती आपे मौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साल बवन्जा लाए लेखे, भरम भुलेखे धारी केसे वेखे धारी केसा भेव ना राया। सन्त मनी सिँघ कर जणाई, आपणा भेव खुल्हाया। आपणा मुख रिहा छुपाई, सन्तन सेवा लाया। सन्तां देवे इक्क वधाई, एका राग अलाया। अट्ठे पहर कलम चलाई, भुल्ल रहे रहे ना राया। आपे देवणहार सजाई, आपे फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा शब्द आपे बन्द कर, बन्दीखाना आपणा आप कटाया। शब्द रखाया खाने बन्द, भेव ना राज राजाना। सन्त मनी सिँघ वेखे चढ़या चन्द, होए रुशनाई दो जहानां। मनमुख जीव भागांमन्द, ना करे कोई पछाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाना। आपणी लिख्त आप लिखा, आपे बन्द कराईआ। सृष्ट सबाई मिथ्या दए जणा, वेला वक्त सुहाईआ। लेखा लिख्या दए पुचा, शाह संगरूर उठाईआ। अन्तिम वेला नेड़े रिहा आ, प्रभ देवणहार सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आपे रिहा खिलाईआ । आपणी खेल आप खिला, आपणी कार कराया। आपणा मेला आप मिला, तोड़ विछोड़ा आप जणाया। सन्त मनी सिँघ लेखे ला, लहिणा लहिण झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे दर सुहाया। साल बवन्जा जगत सिँघासण, पंज तत्त हंढाया। अन्तिम तज्या पुरख अबिनाशन, ब्रह्मण्ड पार कराया। चरना हेठ दबाए पृथ्मी आकाशन, रवि ससि रहे शरमाया। आपणे घर करया वासन, घर साचे होए रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। रूप वटावणहार निरँजण, सदा सदा मेहरवाना। जन भगतां आया पड़दे कज्जन, खेले खेल दो जहानां। जगत नगारे घर घर वज्जण, विछड़या भगवाना। जो घड़े सो अन्तिम भज्जन, हरि मारे तीर निशाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होया जोधा सूरबीर बली बलवाना। जोधा सूरबीर बली बलवान, जोती जामा पांयदा। इक्क ल्याए धुर फ़रमाण, दूजे

दर सुणांयदा। तिन्ना लोकां कर परवाना, चौथे घर गांयदा। पंचम मेला दो जहानां, छेवां दर सुहांयदा। सत्तवें वेखे गोपी काहना, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। अट्ठ त्रै कर प्रधान, पंज तत्त उपांयदा। नौ दर खेले खेल महान, सगली सृष्ट भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस दसवें वेख वखांयदा। वीह सद इक्क इक्क अकल्ला, आपणा रूप वटांयदा। वीह सद दो करे हल्ला, गुरमुख साजन आप उठांयदा। वीह सद तिन्न आपणी जोती आपे रला, अस्सू तिन्न दिवस सुहांयदा। वीह सद चार कर कर हल्ला, आप आपणी बणत बणांयदा। वीह सद पंज इक्क उठाए भल्ला, चारों कुन्ट फिरांयदा। वीह सद छे वेखे निहचल धाम अटला, गुरसिख सोया आप जगांयदा। वीह सत्त आपणी जोती आपे रला, आपे शब्द उपांयदा। वीह अट्ठ पंज तत्त वेखे काया खला, कवण घर सुहांयदा। वीह सद नौ दूई द्वैती मेटे सल्ला, गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। वीह दस होए अछल अछल्ला, वल छल धारी नाउँ रखांयदा। वीह सद ग्यारां घर एका मल्ला, एका वंड वंडांयदा। साढे तिन्न हथ्थ तेरा भारा पल्ला, लक्ख चुरासी तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद ग्यारां तेरा विहारा हरि निरँकारा लोकमात चलांयदा। लोकमात सच विहारा, हरि साचे आप चलाया। वीह सद ग्यारां कर प्यारा, पहला पौड़ा इक्क उठाया। छोटा बाला साचा लाड़ा, साचे पौड़े आप चढ़ाया। वीह सद दस तेरा जगत दिहाड़ा, प्रभ साचे आप मनाया। वीह सद ग्यारां सतारां हाढ़ा, कलिजुग कूड़ा दए उठाया। राए धर्म उठ उठ वेखे लोकमात अखाड़ा, सम्बल नगरी धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा मठ तपाया। कलिजुग तेरा अन्तिम मट्ठ, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाया। हरिसंगत हरि कर अकट्ठ, लहिणा झोली पाया। सिँघ मनजीत आया नट्ठ, लोकमात वज्जी वधाईआ। जीवां जन्तां साधा सन्तां साढे तिन्न हथ्थ बुरज जाणा ढठ्ठ, अन्त कोई रहिण ना पाया। प्रभ गेड़न आया उलटी लट्ठ, जोती जामा भेख वटाईआ । लेख चुकाउणा तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी ना कोई नुहाईआ। हाढ़ सतारां करी चट्ठ, प्रभ सच घर वज्जी वधाईआ। गुरमुख साजन रक्खणा हठ, प्रभ कट्टण आया जम्म की फाहीआ। शब्द पहनाए तन साचा पट, इक्क दोशाला हथ्थ उठाईआ। चौदां लोकां किसे हथ्थ ना आए हट्ट, त्रैलोक बैठे मुख भवाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर मंगन नट्ठ नट्ठ, प्रभ नट्ठ नट्ठ मुख छुपाईआ। हरिसंगत तेरा कर अकट्ठ, जग करन आया कुड़माईआ। सृष्ट सबाई तपया मठ, पंज तत्त विकारा अग्नी थल्ले डाहीआ। अन्तिम निकले एका लाट, जोती लम्बू लाईआ। कोई ना उतरे पूरे घाट, धूंआँधार सृष्ट सबाईआ। हरिजन तेरी नेड़े वाट, वेखण आया धुरदरगाहीआ। ज़िमी अस्माना पड़दा गया पाट, जोती नूर करे रुशनाईआ। रवि ससि लेटे आपणी खाट, नेत्र रहे नीर वहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद ग्यारां दए वड्याईआ। एका साता इक्क प्यार, एका घर बणाया। एका साता कर विहार, एका मेल मिलाया। एका साता हरि निरँकार, पूर्ब लहिणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां वेख वखाया। हाढ़ सतारां धुर दा लेखा, मिले धुरदरगाह। हरि कढुण आया भरम भुलेखा, जन भगतां कटे जम्म का फाह। मस्तक लाए साची मेखा, इक्क जपाए साचा नाँ। ना कोई जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए ना वेख वखा। आपे करया आपणा वेसा, आपे वस्सया आपणे थाँ। आपे होए दस दस्मेसा, दहि दिशा फेरी पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दए जणा। आप आपणा हरि जणाया, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। बारां रासी वेख वखाया, बारां मास फिराईआ। दिवस दिवस हरि लेख लिखाया, रैण रैण जुदाईआ। घड़ी पल ना कोई जणाया, ना कोई गणत गणाईआ। वल छल कर कर खेल खिलाया, हरि वड वड्डी वड्याईआ। नौ अठारां मेल मिलाया, नौ अठारां पार कराईआ। वीह सद बारां ख़ुशी मनाया, घर घर मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी दृष्टी आपणे उप्पर आपे पाईआ। वीह सद बारां बारां रास, हरिसंगत वड वड्याईआ। हरिसंगत हरि वस्सया पास, हरि सज्जण मीत अख्वाईआ। हरि हरि पूरन करनहारा आस, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लोकमात बुझावण आया प्यास, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, पृथ्मी आकाश वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साची नींह धर, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। वीह सद बारां कर प्यार, हरि आपणा कर्म कमाया। लोकमात दिवस विचार, साचा सगन मनाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड लए जगाया। साधां सन्तां दए हुलार, सोया कोई रहिण ना पाया। राज राजाना शाह सुल्ताना रिहा ललकार, निहकलंका नाउँ धराया। जोती जामा भेख न्यार, शब्द डंका रिहा वजाया। चारों कुन्ट कर पसार, आप आपणा शब्द अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपाया। आप आपणा नूर उपा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गोबिन्द लेखा वेख वखा, साल बसाला पूर कराईआ। भरम भुलेखा दए कढा, भुल्ल रहे ना राईआ। एका मार्ग रिहा पा, नौ खण्ड सृष्ट सबाईआ। एका वरन रिहा बणा, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। एका इष्ट रिहा मना, इष्ट देव हरि रघुराईआ। साची सिख्या रिहा सिखा, साख्यात जोत जगाईआ। धुर दा लिख्या झोली देवां पा, पूर्ब कर्मां लेखे लाईआ। भाणा सहिणा देवे हुक्म सुणा, हरिजन भाणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां दए वड्याईआ। हाढ़ सतारां उठणा जाग, हरि साचा आप जगांयदा। लोकमात लग्गा भाग, जोती जामा भेख वटांयदा।

दुरमति मैल धोवे दाग़, जो जन सरनाई आंयदा। मेल मिलावा कन्त सुहाग, शब्दी शब्द प्रनांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, चारों कुन्ट फिरांयदा। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, दुरमति मैल गंवांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बुझाए आग, सांतक सति वरतांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ चोग चुगांयदा। दीपक जोती जगे चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द चढ़ाए साचे राक, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुर गोबिन्द तेरा पूरा वाक, भविख्त वेख वखांयदा। गुरमुख लभ्भे सज्जण साक, जो सरसे विच रुढ़ांयदा। घर घर बैठयां खोल्हे ताक, सम्बल नगरी राह तकांयदा। आपे बैठा दूर दुराडा रिहा झाक, आपणी किरत करांयदा। एका शब्द नकेल पाए नाक, दर दुआरे खिच लिआंयदा। कोई ना अग्गे रहे आक, आपणी करनी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा धर्म धरांयदा। हाढ़ सतारां वज्जी वधाई, त्रैलोक उठ धाया। ब्रह्मा वेता लए अंगड़ाई, लोकमात राह वखाया। शिव शंकर लए इक्क अंगड़ाई, हथ्थ त्रिशूल उठाया। सुरपति राजा इन्द दए दुहाई, छोटे बाल आण बुल्हाया। पारब्रह्म तेरी वड वड्याई, भेव किसे ना पाया। गुर नानक करी इक्क कुड़माई, सो पुरख निरँजण साचा कन्त हंढाया। गुर गोबिन्दे घर वज्जी वधाई, एका मंगल गाया। माछूवाड़े ना होए जुदाई, साची सेज हंढ्हाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरा गहिणा तेरे तन पहनाया। कलिजुग तेरा काया गहिणा, तेरा तन शृंगारना। पारब्रह्म प्रभ वेखे आपणे नैणा, जग नैण ना कोई चितारना। लक्ख चुरासी किसे ना मन्नया हरि हरि कहिणा, मनमति फिरे हँकारना। अन्तिम भाणा सभ ने सहिणा, हरि शब्द करे ललकारना। कलिजुग वहिण अन्तिम वहिणा, ना किसे पार उतारना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां बख्शे एका चरन प्यारना। चरन प्यार साचा नाता, हरिसंगत आप बंधाया। ना कोई वेखे जाता पातां, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। एका एक एका साका, दो जहाना जोड़ जुड़ाया। कलिजुग रैण अन्धेरी नार कमजाता, मनमुखां रही प्रनाया। गुरमुखां मिली हाढ़ सतारां भिन्नड़ी रैण देवे सच सुगाता, सोहँ नाम झोली पाया। मल्लया दर द्वार हरि पुरख बिधाता, माता पिता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेखे घर, कवण सुहञ्जणा घर सुहाया। कलिजुग वेख घर सुहञ्जणा हरि साचे जोत जगाईआ। हरिसंगत द्वार निरँजणा, आदि अन्त विच समाईआ। हरिसंगत हरि करन आया तेरी चरन धूढ़ मजना, पंज तत्त तेरे चरन हेठ दबाईआ। आपणे ताल आपे वज्जणा, तार सितार आप हलाईआ। हरिसंगत तेरा प्यार हरि पी पी रज्जणा, आपणी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अन्तिम पड़दा तेरा लोकमात प्रभ कज्जणा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। इक्क चलाए सच जहाजना, एका चप्पू रिहा उठाईआ।

एका शब्द मारे अवाजना, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। हाढ़ सतारां रचया काजना, जन भगतां होई कुड़माईआ। प्रभ करया खेल देस माझना, वीह सद बिक्रमी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत धार चलाईआ। गुर गोबिन्द तेरा अमृत पान, गुर पूरे आप कराया। आपे वेखे पंज निशान, वेखणहार आप हो जाया। आपे करे पंच प्रधान, आपे पंजां विच समाया। आपे पंचां मेल विच जहान, पंच पंचायण इक्क बणाया। गुरसिख तेरी काया बणाए नाम रसायण, सच कुठाली इक्क तपाया। सोहँ शब्द पहन साचा गहिण, प्रभ साचे आप घड़ाया। कलिजुग अन्तिम वेखण आया आपणे नैण, कवण नारी रही हंढ्ढाया। कवण कज्जल पया नैण, कवण धार बंधाया। कवण तज्ज तज्ज आया साक सज्जण सैण, मात पित भाई भैण हरिसंगत मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह चलाया। सतिजुग तेरा साचा राह, हरि साचा आप चलाया। शब्द सरूपी बण मलाह, एक मार्ग लाया। एका धाम दए सुहा, एका जाप जपाया। एका पौड़े दए चढ़ा, एका डण्डा हथ्थ फड़ाया। एका गौड़े दए मिला, एका ब्रह्म जणाया। मिट्ठे कौड़े वेखे थाउँ थाँ, लुकया कोई रहिण ना पाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जिस जन आपणी चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख तेरे आत्म दर, आप आपणा भोग कराया। आप आपणा भोगी भोग, आपणी दया कमांयदा। मेल मिलाया लिख्या धुर संजोग, ना कोई मेट मिटांयदा। दर आयां कटे हउमे रोग, चिन्ता सोग गवांयदा। एका बख्शे साचा जोग, गुर मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। दरस दिखाए आप अमोघ, घर घर फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धार एका रिहा वखांयदा। हरिसंगत हरि नाता जोड़, आपणी दया कमाईआ। आपे चढ़या आपणे घोड़, आपे रिहा दौड़ाईआ। आपे आया वागां मोड़, नीले वाला बेपरवाहीआ। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़, साचा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धार एका रिहा वखाईआ। अमृत आत्म साची धार, गुरमुखां आप प्यांअदा। निझर रस अपर अपार, निजानंद समांयदा। परमानंद कर आधार, परम पुरख अख्वांयदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भनांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, मंगलाचार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत एह समझांयदा। हरिसंगत हरि मेलया, भिन्नड़ी रैण अपार। आपे गुर गुरु गुर चेलया, आप सुहाए बंक द्वार। आपे सज्जण आप सुहेलया, आपे मीत मुरार। आपणा खेल आपे खेलया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखणहारा सर्ब संसार। सर्ब संसार लक्ख चुरासी, हरि हरि फोल फोलांयदा। जन भगतां करे बन्द खुलासी, आप आपणी दया कमांयदा। दर

दुरकाए मदिरा मासी, दर द्वार रहिण ना पांयदा। जो जन करन आए हासी, मनमुखता विच टिकांयदा। जो जन गायण स्वास स्वासी, फड़ फड़ बांहों पार करांयदा। आपे कट्टणहारा जम की फाँसी, राए धर्म आप समझांयदा। चित्रगुप्त हरि लाहे उदासी, लेखा लेख ना कोई वखांयदा। जिस जन दरसन पाया हाढ़ सतारां घनकपुर वासी, मात गर्भ फेर ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जल एका नर, एका धार आपणा रूप समांयदा। हरि का रूप भाण्डा नीर, हरि आपणे हत्थ उठाया। गुरमुखां कट्टण आया भीड़, भेखी भेख वटाया। मनमुखां लावण आया तीर, नेत्र दिस ना आया। सोहँ चले निराला तीर, सो रसना चिल्ला इक्क उठाया। वेख वखाए पीर फ़कीर, शाह हकीर फोल फोलाया। साधां सन्तां चोटी चढ़े अख़ीर, अन्दर मन्दिर कुंडा वेख वखाया। हरिसंगत तेरी बन्ने बीड़, हरि बीड़ा आपणा आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका निर्मल नीर वखाया। निर्मल नीर निझर धार, आत्म अन्तर दरसाईआ। सतिगुर पूरा किरपा धार, गुरमुखां प्यास रिहा बुझाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। सतिजुग साचा हो त्यार, लोकमात आया करके धाईआ। ल्या जन्म विच संसार, धरत मात गोद सुहाईआ। साधां सन्तां करे प्यार, इक्क सनेहुड़ा रिहा घलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दोए जोड़ पड़े सरनाईआ। हाढ़ सतारां दिवस विचार, हरि साचा मेल मिलाईआ। सतिजुग सोहे बंक द्वार, हरिसंगत वेखे चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ । गुर संगत तेरा साचा रूप, हरि साचे आप दरसाया। सेवादार हरि साचा भूप, जुग जुग करदा आया। होए सहाई चारों कूट, दहि दिशा वेख वखाया। जुग जुग जो गए रूठ, कलिजुग अन्तिम लए मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर आपणा आप सुहाया । सतिगुर तेरा सति सन्तोख, हरिसंगत आप धरांयदा। गुर दर ना मंगणी कदे मोख, गुर करता आपणी किरपा कर आपणी दया कमांयदा । हरि चरन द्वार ना हरख़ ना सोग, आवण जावण विच ना आंयदा। इक्क प्रीती लैणी जगत भोग, मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा रूप तेरे अग्गे धर, तेरा रंग वटांयदा। सतिजुग रंग सत्त सफैद, सच सुच्च वड्याईआ। एका शरअ एका आयत, इक्क हदीस पढ़ाईआ। इक्क सृष्ट इक्क कायनात, इक्क मकान सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार लक्ख जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी जुड़या जोड़ा, हरि साचे आप जुड़ाया। कलिजुग वेखे कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वखाए इक्क घर, मेट मिटाए दुरमति माया। कलिजुग माया दूर किनारा,

दर द्वार दुरकांयदा। हरि हरि शब्द जिस जन गाया, जन जननी लेखे लांयदा। अनन्द अनन्द मंगल इक्क रखाया, अनहद ताल वजांयदा। लक्ख चुरासी संगल दए कटाया, शब्द हथौड़ा एका लांयदा। हरिसंगत तेरा रूप वटाया, चिट्टा दुध्ध सतिजुग बणत बणाईआ। प्रभ मात करे उज्जल बुध्ध, पूरन बूझ बुझाईआ। जगत विकारा भुल्ले सुध्ध, सार रहे ना राईआ। शब्द अस्व चढ़े कुद्द, सोलां कलीआं आसण पाईआ। काम क्रोध ना करे युद्ध, अट्ठे पहर ना तन लड़ाईआ। करे प्रकाश अन्धेरी खुड, निर्मल जोत जगाईआ। गुरमुख आपणे आप लए बुझ, ना कोई दूसर मेल मिलाईआ। चरन प्रीती जो जन रहे झूज, वड भगती भगत रखाईआ। हरिसंगत मेला इक्क दर, भिन्नड़ी रैण वेख वखाईआ। भिन्नड़ी रैण चढ़या चा, पाया हरि दुआरा। संगत हरि मेलया बेपरवाह, प्रगट होया विच संसारा। दोहां मेला एका थाँ, सोहया बंक दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे भरे अमृत घर भण्डारा। साचा अमृत हरि वरताए, अमृत बरखा लाईआ। अमृत नीर आप हो जाए, गुरमुख दुध्ध विच समाईआ। गुरमुख दुध्ध नज़री आए, गुर पूरा नीर दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां हरिसंगत एका रंग रंगाईआ। हरिसंगत हरि रंग राता, आपणी दया कमांयदा। दिवस रैण जणाई इक्क प्रभाता, एका वक्त सुहांयदा। एका नाम एका दाता, एका झोली पांयदा। एका वखाए पूजा पाठा, सोहँ मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका अमृत मारे ठाठां, आत्म जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ बारां बिक्रमी तेरी धार, पुरख अबिनाशी कर त्यार, अमृत जल अपर अपार गुरमुख मुख चुआंयदा। अमृत आत्म हरि हरि चो, आपणा बीज बिजाया। हरिसंगत दुरमति मैल धो, निर्मल सरीर कराया। दरस दिखाए अग्गे हो, एका दूजा भउ चुकाया। जगत नाता तोड़े मोह, एका नाता घर बंधाया। हरिजन दूर ना जाणे को, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा मेल दर, दर द्वार दए सुहाया।

हरि पुरख समरथ, सर्बकल समाया। हरि पुरख समरथ, सतिगुर रूप वटाया। हरि पुरख समरथ, रूप अनूप दरसाया। हरि पुरख समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता नाम धराया। हरि पुरख समरथ, साचा मीतड़ा। हरि पुरख समरथ, हरिजन रंगे काया चोली चीथड़ा। हरि पुरख समरथ, देवे नाम शब्द गुण अनडीठड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधाना प्याला एका पीतड़ा। हरि समरथ हरि नाम प्याला, हरिजन आप पिलांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, दया निध अख्वांयदा। करे कराए सदा प्रितपाला, प्रितपालक नाम धरांयदा।

आदि पुरख हरि जोत ज्वाला, आदि शक्त वेस वटांयदा। आदि अन्त इक्क अकाला, अकाल पुरख वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। साचा मेल मिलावण योग, जोग जुगीशर इक्क अख्वाया। इक्क चुगावणहारा चोग, एका जोग सिखाया। एका भोगणहारा भोग, एका सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका भाणा आप फ़रमाया। आपणे भाणे हरि भगवन्त, आपणी रचन रचाईआ। आपे होया बेअन्त बेअन्त, बेअन्ता आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे साजन आपे सन्त, आपे सांतक सति वरताईआ। आपे नार सुहागण होए कन्त, आपे मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखाईआ। हरिसंगत तेरा काया घाट, हरि साचे वेख विचारया। आपे उतरया आपणे घाट, आपे करे पार किनारया। वेखणहारा तीर्थ ताट, तट किनारा फोल फुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा आपणे विच्चों बाहर कढा रिहा। आपणी धार आपे कढु, आपे रंग रंगाया। आप लडाया आपणा लड, आप आपणी गोद उठाया। ना कोई मास ना कोई हड्ड, ना कोई नाड़ी रक्त रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि वेख घर, घर बार दए सुहाया। घर दुआरा लोकमात, धरत धवल सुहाईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार झात, आप आपणी रचन रचाईआ। विष्नूं वंसी लै

४१२

०७

बरात, आया कर कर धाईआ। गुरसिख लछमी बणे नात, एका भूषन गल पवाईआ। लाल रंग धुर सुगात, घर साचे वेख वखाईआ। मिले मेल कमलापात, कन्त कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। अन्दर वेख मार झात, हरि बैठा जोत जगाईआ। अलक्ख निरँजण आप जणाए आपणी वाट, धुर धाम सुहाईआ। सचखण्ड एका हाट, मिले वस्त नाम ख़ुदाईआ। अमृत रस लैणा चाट, दुरमति मैल गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं वेस रिहा वटाईआ। विष्नूं वेस हरि करतार, आपणा आप उपाया। लछमी तेरा सच प्यार, माया मोह चुकाया। लाल रंग अपर अपार, तेरा रंग रंगाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, साचा आसण लाया। ना कोई वेखे विच संसार, दिस किसे ना आया। नेत्र नैण ना सके उग्घाड़, दोए लोचन रहे खुल्हाया। माया अग्नी कलिजुग रही साड़, दिवस रैण रही तपाया। गुरमुखां वंड वंडाई सतारां हाढ़, उज्जल मुखा मात कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार आप वड्आया। हाढ़ सतारां साची रीता, हरि साचे आप चलाईआ। ना कोई मन्दिर ना कोई मसीता, गुरुद्वार ना कोई बणाईआ। शब्द सिँघासण बैठा इक्क अतीता, निरगुण जोत जगाईआ। अट्ठे पहर ठांडा सीता, हरिसंगत सांतक सति वरताईआ। जिस जन लुकया काया मन्दिर अचिन्ता, देवे दरस बेपरवाहीआ। आपे करे पतित पुनीता, पुण छाण आप कराईआ। गुरमुख साजन लक्ख चुरासी जीता, गुर पूरा सीस

उठाईआ। लेखे लाए हस्त कीटा, जो आए चल सरनाईआ। देवे नाम शब्द अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। जन्म जन्म जन भगती पीसन पीठा, फल कलिजुग दए खवाईआ। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठा, जिउँ नानक अंगद अंग लगाईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठा, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आया कर कर धाईआ। लोकमात हरि चरन छुहाया, चार कुन्ट वधाईआ। धरत मात रही कुरलाया, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। कलिजुग कूड़ा उठ उठ धाया, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। जूठ झूठ नाल रलाया, फिरदा वाहो दाहीआ। कर्म धर्म कोई रहिण ना पाया, सति सतिवाद ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद बारां देवे वर, हरिसंगत नाम वधाईआ। वीह सद बारां हरिसंगत लेखे ला, आपणा कर्म कमाया। आपणा लेखा आपणे लहिणे पा, आपणा मूल चुकाया। सम्मत तेरां वेखे थाँ थाँ, साध सन्त रिहा उठाया। राज राजाना दए जणा, घर घर फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती लेखे लाया। सम्मत तेरां तेरी धार, तेरे हथ्थ रखाईआ। साधां सन्तां मारे मार, जो बैठे मुख भवाईआ। गुरमुख साजन लए उभार, जो जन रसना गाईआ। कोटी कोट डुब्बे मँझधार, कोटी कोट ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। सम्मत चौदां वेखे हट्ट, हरि साचे आप खुल्हाया। एका तीर्थ एका तट्ट, एका घाट पार कराया। एका काया एका हट्ट, एका पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, एका इक्की पाया। एका इक्की आपणी पा, आपणा सगन मनांयदा। साची सिक्खी नाम धरा, साचा मार्ग लांयदा। रिखी मुनी कोई जाणे ना, पंडत पांधा ना कोई वेख वखांयदा। ग्रन्थी पन्थी कोई पछाणे ना, प्रभ साचा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां चौदां वेख वखांयदा। चौदां लोक चौदां हट्ट पसारा, चौदां तबकां रिहा उठाईआ। करे खेल अपर अपारा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। जन हरि हरिजन देवे इक्क प्यारा, एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद पन्दरां आप आपणा राज कमाईआ। वीह सद पन्दरां हरि पहली चेत्र, चेतन्न रूप हो आया। सृष्ट सबाई वेखे खेतन, लोआं पुरीआं फेरा पाया। शब्द खण्डा हरि नेत नेतन, नित नवित्त वेस वटाया। जन भगतां कर कर हेतन, हाढ़ सतारां वंड वंडाया। आपणे नेत्र आपे आया वेखण, बिधना रेख दए मिटाया। आपे वेखे धारी केसन, धर धरनी इक्क कमाया। आपे होए दस दस्मेसन, दाता दानी नाम धराया। सेव लगाए ब्रह्मा विष्न महेष गनेशन, सेवक सेवा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदेस आदेस आपणा आप कराया। अमृत वेला अमृत रस, अमृत नाम उपाया। हरिजन

हरि होया वस, जन हरि दुआरे आया। एका रिहा राह दस्स, दूसर दर ना कोई सुहाया। निर्मल जोत करे प्रकाश कोटन रवि ससि, निरगुण जोत करे रुशनाया। जगत अन्धेरा जाए नस्स, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हरि नाम आप रखाया। हरि अमृत हरि बाणी आ, हरि रूप करतार। हरि शब्द हरि बाणी आ, हरि बोले अपर अपार। हरि कथा अकथ कहाणी आ, कथनी कथ ना सके विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। नाम वस्त अनमोल गुरमुखां देवे इक्क दुआरा, हरि साचे कंडे तोल। भरया रहे इक्क भण्डारा, भण्डार अतुट अतोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले आपणा होल। गावणहारा गा रिहा, गीत गोबिन्द अपार। पावणहारा पा रिहा, दर सच्चे दरबार। गावणहारा गा रिहा, परम पुरख करतार। पावणहारा पा रिहा, आत्म अन्तर कर विचार। गावणहारा गा रिहा, गाए गुण करतार। पावणहारा पा रिहा, मिले मेल सच्ची सरकार। गावणहारा गा रिहा, हरिसंगत दर भिखार। पावणहार पा रिहा, हउमे रोग निवार। साचा मेला आप मिला रिहा, लोकमाती लै अवतार। गुर चेला रूप वटा रिहा, खेले खेल सर्ब संसार। इक्क अकेला फेरी पा रिहा, निरगुण नूर कर उज्यार। आपणा वेला आप सुहा रिहा, सुहाए बंक द्वार। जन भगतां तेला आप चढ़ा रिहा, जोत निरँजण सेवादार। गीत सुहागी आपे गा रिहा, धुन अनादी वजाए इक्क धुन्कार। ब्रह्मादी खोज खुजा रिहा, आदि जुगादी एका कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण संग निभा रिहा। हरि साजन हरि हरि जाणया, हरि बिन अवर ना कोए। हरि किरपा हरि मन मानया, हरिजन दुरमति मैल धोए। हरि किरपा मिले मेल हरि भगवानया, गुरमुख सोया रहे ना कोए। हरि किरपा मिले नाम दानया, देवणहारा हरि त्रै लोए। एका शब्द धुर फ़रमाणया, सुणे सुणाए ना जग कोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां देवे साचे ढोए। हरि शब्द साचा ढोआ, प्रभ साचा लै के आए। गुरमुख सोया रहे ना कोया, फड़ बांहों आप उठाए। एका अमृत एका आत्म एका अन्तर हरि हरि चोया, एका दूजा भउ मिटाए। तीजा नैण वेख वखाए, चौथे पद आप समाए। आपणा बीज आपे बोया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे भाण्डे काचे, वेखे साचे हाटे, एका ताग एका सूत चारों कुन्ट लए परोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां जग आपे मेले, दूसर अवर ना वेखे कोए। जन भगतां हरिभगती मेलया, भगती भर भण्डारा। सच भगती सज्जण सहेलया, सोहे चरन दुआरा। आपणा खेले आपे खेलया, करया वणज सच्चा वपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम भण्डारा। हरि भण्डार सदा

भरपूर, आदि जुगादि रखाया। देवणहारा ना नेड़े ना दूर, जन जागरत विच समाया। आसा मनसा जुग जुग पूर, पूरन आसा आप कराया। सद सहेला हाज़र हज़ूर, हरि शब्दी शब्द समाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाया। जिस जन बख़्शे चरन धूढ़, नाम चरनोदक रसना मुख चुआया। चतुर बणाए मूर्ख मूढ़, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दर होए मंगत, एका भिच्छया मंग मंगाया। हरिसंगत हरि वड वड्याई, वेखे दो जहानां। वज्जदी रहे शब्द वधाई, गाए नाम तराना। सखी साजन होए कुड़माई, बन्ने साचा गाना। धाम निरंतर दए सहाई, बैठा हरि भगवाना। आत्म अन्तर मेल मिलाई, खेले खेल महाना। जगत बसन्तर दए बुझाई, अग्नी मह्व ना कोई तपाना। एका मन्त्र दए पढ़ाई, हरि सोहँ जाप जपाना। लक्ख चुरासी करे लड़ाई, मारे तीर इक्क निशाना। गुरमुख साचे लए तराई, आप आपणा लड़ फड़ाना। दर दर घर घर वेखे चाँईं चाँईं, आप आपणा पन्ध मुकाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, लक्ख चुरासी फंद कटाना। लक्ख चुरासी फंदी फंद, धर्म राए दरवेसा। रसन लगाए मदिरा मास गन्द, ना ओह मूंड ना धारी केसा। शब्द अनादी गाए छन्द, मिले मेल दस दस्मेसा। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, करे कराए सच अदेशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा वेसा। कलिजुग जीव उठ जाग, जागण वेला आया। लोकमात लग्गा भाग, हरि साचे खेल रचाया। एका जोती जगे चिराग, दीवा बत्ती ना कोई रखाया। धुरदरगाही निकले एका लाट, लाट लिलाटी दए वखाया। पार कराए औखा घाट, एका पौड़े दए चढ़ाया। सरोवर नुहाए साचा ताट, तट किनारा इक्क सुहाया। वणज कराए साचे हाट, नाम वणजारा नाम धराया। दुरमति मैल देवे काट, धोवणहार सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए वड्आया। कलिजुग जीव उठ बल धार, अन्ध अन्धेरी छाईआ। कूड़ी क्रिया रही ललकार, चारों कुन्ट पई दुहाईआ। माया ममता रही मार, दिवस रैण लड़ाईआ। हउमे हँगता रही साड़, बचया कोई रहिण ना पाईआ। पंचम लग्गी मगर धाड़, दिवस रैण सताईआ। कामन अग्नी बहत्तर नाड़, क्रोध लोभ हलकाईआ। दर घर साचे ना देवे कोई वाड़, ना कोई पार कराईआ। कलिजुग जूह होई उजाड़, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। लक्ख चुरासी आप चबावण आया आपणी दाढ़, आपणा मुख खुल्हाईआ। काल महांकाल वेखे इक्क अखाड़, काला वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई लहिणा देणा चुकणा सतारां हाढ़, जूठी झूठी गंढु बंधाईआ। गुरमुख बणौणे साचे लाड़, साचे घोड़े आप चढ़ाईआ। धुरदरगाह देवे वाड़, चाल बेहंगम इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण सहिज सुखदाईआ। सहिज सुख हरि जीवण दाता, जागरत जोत जगांयदा।

कलिजुग मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुखां पुच्छे एका आपे वाता, एका वतन वखांयदा। लोआं पुरीआं बहि बहि मारे झाका, दिस किसे ना आंयदा। हाढ़ सतारां खोल्हे ताका, गुरमुखां दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सुरत एका शब्द इक्क दुलार एका शब्द छोटा काका, सोहँ नाम धरांयदा। सोहँ शब्द साचा काका, हरि साचे बाल उपनिआ। निरगुण जोती बणी माता, थिर घर बैठा जणया। पिता बणया पुरख बिधाता, आप आपणा आपे मन्नया। रूप बणाया सांतक सति, ना घड़या ना भन्नया। ना कोई रक्खी ज़ाता पाता, वरन गोत ना कोई जणया। ना कोई वेखे दिवस राता, ना पक्ख रखाए सूरज चन्नया। जन भगतां मेला इक्क इकांता, देवे नाम सच्चा धन धन्नया। अन्तिम देवण आया लहिणा देणा बाका, आपणी ढाई पहलों छप्पर छन्नया। अमृत जाम प्याए बण बण साका, अनहद राग सुणाए कन्नया। आपणा लेखा आपे जाणे भविख्त वाक्, वेद पुराण कोई ना मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी देवे डंनिआ। कलिजुग जीव नेत्र खोल्ह, अन्त अन्धेरा छाया। पुरख अबिनाशी रिहा बोल, करता पुरख नाउँ धराया। शब्द अगम्मी वज्जे ढोल, नौ खण्ड रिहा सुणाया। ज़िमीं अस्मानां वेखे पोल, दोहां पड़दा फोल फुलाया। लोआं पुरीआं पया घोल, ना सके कोई छुडाया। लक्ख चुरासी लए वरोल, नाम मधाना एका पाया। सोहँ कंडे रिहा तोल, जन भगत दुआरे आप गडाया। आपे बोले हौले हौल, आप आपणी धार सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए वड्आया। कलिजुग जीव अक्ख उग्घाड़, हरि साचा दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई देखे उजाड़, जंगल जूह फिराईआ। जीआं जन्तां लहिणा देण चुकणा सतारां हाढ़, मनमुख कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख बणाए साचे लाड़, सत्त सतारां दए दुहाईआ। हरिसंगत घड़या आपे घाड़, आपे बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त लए उपाईआ। साचा सन्त सो जन पूरा, जिस हरि हरि दरसन पाया। मानस जन्म ना होए अधूरा, जिस घर आपणा वेख वखाईआ। नाता तुटे मोह कूड़ा, हउमें रोग जलाया। मस्तक लाए चरन धूढ़ा, साचा जोग कमाया। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़ा, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण रिहा रंगाया। कलिजुग जीव जगत बिलास, माया भरम भुलाईआ। वेले अन्तिम होए उदास, कर्मी कर्म सजाईआ। जन भगतां हरि वस्सया पास, जो जन रसना रहे ध्याईआ। मेल मिलाए शाहो शबास, शाह सुल्ताना वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। सज्जण वेखे ठग्ग चोर, आपणी दया कमांयदा। आपे चढ़या साचे घोड़, चारों कुन्ट फेरी पांयदा। गुरमुखां लभ्भे दौड़ दौड़, दहि दिशा वेख वखांयदा।

ना कोई नगर जाणे लभ्मा डूँघा चौड़ा सौड़, आप आपणा पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत धर, जोती जोत नूर रखांयदा। जोती नूर हरि उजाला, आपणा आप रखाया। करया खेल दीन दयाला, दयानिध नाम धराया। शब्द मारे इक्क उछाला, सागर सिन्ध सुकाया। गुरमुख उपजाए साचे लाला, जगत हट्ट ना कोई विकाया। आपे होया सदा रखवाला, सेवक सेवा रिहा कमाया। कलिजुग चली अवल्लड़ी चाला, भेव किसे ना राया। जन भगतां दस्से राह सुखाला, जोग अभ्यास ना कोई कराया। तोड़णहारा जगत जंजाला, दर द्वार निरास ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरन आस आपे कर, आसा मनसा पूर कराया। निरगुण रूप कर आकार, हरि हरि रचन रचाईआ। धरत धवल कर पसार, धरनी नाउँ धराईआ। एका शस्त्र मारे मार, श्री असकेत नाउँ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा चरन टिकाईआ। भगवन विष्नूं कर आकार, वेसी वेस वटाया। लछमी वेखे चरन द्वार, साची सेवा लाया। समुंद वरोले किरपा धार, बल्ख बुख़ारा फेरी पाया। धरनी धरत अधविचकार, आप आपणा चरन टिकाया। लछमी मंगे इक्क प्यार, चतुर्भुज रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा चरन छुहाया। ब्रह्म ब्रह्मा खेल खेला, खिलाए हरि दातारा। कपाल मोचन मेल मिलाए, सीस सीस अपारा। जगत दर्शन ना कोई मिटाए, रो रो करे पुकारा। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, धर धरनी दिसे धाम न्यारा। ब्रह्मा वेता चल के आए, पाए पुरख अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए सच दुआरा। शिव शंकर मेला जगत नाता, पार्बती कुड़माईआ। भोला नाथ इक्क अकांता, चल आया वाहो दाहीआ। वेखे खेल पुरख अबिनाशा, नेत्र नैण उठाईआ। पार्बती संग मिलाई निभाए सगला साथा, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी इक्क वखाईआ। राज सुत इन्द्र दुलार, दर दर फेरा पाया। माता अग्गे रोवे कर प्यार, बल राजा छल छिलाया। धर धरनी सोहे बंक द्वार, हरि पूरे लेख लिखाया। आया ध्रू सुत दुलारा, कटया रैण वसेरा। पुरख अबिनाशी दए हुलारा, शब्द अनादी पाया घेरा। भरम चुकाए मेरा तेरा, ढाया भरमां डेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहरा साचा वर, दो जहानां करया निबेड़ा। राम रामा रूप धर, अन्तिम वेख वखाया। आपणे सुत आपे लड़, आपणा बाण चलाया। बाल्मीक वेखे अन्तिम खड़, आपणा चरन टिकाया। सौ सौ कर्म एका घर, एका गढ़ सुहाया। जगत कताब लेखा लिख ना सकी ना कोई विद्या मात पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा धाम सुहाया। आपणा धाम सुहाए बनवारी, द्वापर वेख विचारया। अर्जन आए जोधा भारी, खेले

खेल शिकारया। बराट नगरी कर उज्यारी, मुख मुक्खड़ा मुख छुपा रिहा। शब्द सरूपी मिल्या मेल कृष्न मुरारी, साचा धाम सुहा रिहा। एका ज्ञान एका वारी, एका भगत जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धाम अवल्ला इक्क अकाला, आपे वेख वखा रिहा। आया नानक बण दरवेश, आपणी दिशा वखाईआ। हथ्थ खूंडी मोढे भूरी खेस, प्रेम सेज वछाईआ। गटीआं गिणे राह वेखे दस दस्मेस, अन्तिम होए सहाईआ। प्रभ दा भाणा मन्नणा मन्नदा रहे हमेश, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोधा सूरा नर नरेश, निरगुण नाउँ धराईआ। पंज तत्त वखाए धारी केस, सम्बल नगरी नाउँ उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी वेख वखाईआ। गुर गोबिन्दा हो उज्यारा, आपणा कर्म कमांयदा। मिल्या मेल हरि करतारा, एका लिव लगांयदा। एका शब्द इक्क धुन्कारा, एका राग अल्ांयदा। एका वणज इक्क वपारा, इक्क वणजारा आप अख्वांयदा। एका वेखे पार किनारा, आप आपणा नैण उठांयदा। पुरख अबिनाशी कहे ललकारा, उच्ची कूक सुणांयदा। तेरा लहिणा रहे अधारा, कलिजुग अन्तिम पूर करांयदा। पार ना करना ब्यास किनारा, एका अक्खर पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी वेख वखांयदा। गुर गोबिन्दा भाणा मन्न, हरि हरि इक्क ध्यांअदा। आपणा बन्न् आपे बन्न्, आपणी वंड वंडांयदा। आपणे तन देवे डन्न, आपणे तन धमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रक्त बूंद लेखे लांयदा। रक्त बूंद सुत दुलार, साचे लेखे लाया। ख़ाकी ख़ाक कर प्यार, नैणां विच टिकाया। पथ्थर लाए अपर अपार, ना कोई सके तोड़ तुड़ाया। आपे बैठा अधविचकार, दे मति रिहा समझाया। एका तत्त हरि निरँकार, हरि शब्दी शब्द उपाया। बीजी रत्त खिले फुले फुल फुलवाड़, बाग बगीचा मात लगाया। छोटा बाला हो त्यार, पहलों आपणा सीस कटाया। अग्नी जोत ज्वाला नैणा देवी रही धाहां मार, वेला वक्त ना किसे सुहाया। प्रभ अबिनाशी खेले खेल अपर अपार, छोटा वड्डा मेल मिलाया। दोहां मेला हरि द्वार, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी उखड़े जड़्, सतिजुग साची नीह रखाया। साचे सुत आपे वार, आपणी ख़ुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा इक्क प्यार, तेरा मेरा रूप दरसांयदा। लहिणा देणा दित्ता करज उतार, तेरा तेरी झोली पांयदा। पुरख अबिनाशी कहे पुकार, तेरा बूटा मात लगांयदा। सतिजुग साचे दए हलूणा, चार वरनां इक्क हुलार रखांयदा। डंक वजाए चारे कूटां, पुरीआं लोआं आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी हरि जोत जगा, आपणी दया कमाईआ। छे जोजन वंड वंडा, पुरी घनक सुहाईआ। त्रैलोक वेख वखा त्रैलोका वेख वखाईआ। तीजा हिस्सा आप आपणा रिहा वंडा, लोकमात वज्जी वधाईआ। पुरख

४१८ ०७

अबिनाशी जोत जगा गुर गोबिन्द मिल्या चाँईं चाँईंआ। दोहां मेला होया सहिज सुभा, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी दए वड्याईआ। गुर गोबिन्दा हरि हरि मेला, आपणा आप कराईआ। पारब्रह्म होया साचा गुर गुर गोबिन्द होया चेला, एका रूप वटाईआ। आपणा सगन आप मनाया आपणी हथ्थी चाढ़े तेला, आपे मंगल गाईआ। आपणीआं सख़ीआं आपे बहि बहि पाए वेला, आपणा मंगल गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धर धरनी दए सुहाईआ। धर धरनी सुहावणहारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्द कर प्यारा, मेल मिलावा साचे माहीआ। मिल्या मेल सुत दुलारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। लौहण आया पिछला कर्ज़ा भारा, बाकी रिहा चुकाईआ। लोकमात ना किया अधारा, हरिसंगत संग रखाईआ। सोलां मग्घर दिवस विचारा छोटा बाला भेट चढ़ाईआ। साडे तिन्न तिन्न हथ्थ बणाया इक्क मुनारा, रविदास चुमारा लेखे लाईआ। नानक सुरंगा वजाए सितारा, निरँकार निरँकार निरँकार गाईआ। जनक करे जगत अधारा, लहिणा देणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी अन्तिम बणत बणाईआ। साडे तिन्न हथ्थ जगत मुनारा, हरि साचे आप कराया। आपणी हथ्थी लाया इट्टां गारा, एका धाम सुहाया। लोआं पुरीआं पावे सारा, करोड़ तेतीसा दए हिलाया। सुरपति राजा इन्द रोवे जारो जारा, ना धीरज धीर कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा धाम सुहाया। धाम सुहाए हरि निरँकार, आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, साधां सन्तां रिहा उठाईआ। जगत जगदीसा देवे वार, जन भगतां भेट चढ़ाईआ। साचा सीसा लेखा लाए नौ दर दरबार, लेखा लिख्त विच लिखाईआ। अग्गे बैठ सच्ची सरकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सम्बल नगर अपर अपार, गुर गोबिन्दा आसण लाईआ। रक्त बूंद नाड़ी मास चम्म बणाई चार द्वार, उप्पर छप्पर छाईआ। आपे कीता आपणा बन्द किवाड़, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां भेव खुल्हाए सतारां हाढ़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। भाग लगाया विच उजाड़, हरिसंगत वड वड्याईआ। शब्द सिँघासण बैठ सच सच्ची सरकार, लक्ख चुरासी दए मिटाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वार, दर दर भिच्छया कोई ना पाईआ। साधां सन्तां मारे मार, जूठे झूठे रहे जो धूंणीआँ ताईआ। गुरमुख साजन लए उभार, जो जन हरि हरि नाम रसना रहे उचार, हरि साजन मेल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी करता सृष्ट सबाई सांझा यार, सगला संग निभाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इक्क वखाए जगत प्यार, जगत नाता इक्क बंधाईआ। आपे होया ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ दातार, चारों कुन्ट रिहा फिराईआ। तीर तुफंग

ना कोई कटार, खाली हथ्थ रिहा वखाईआ। लशकर शाही ना कोई फौज घोड़ा अस्वार, एका शब्द रिहा दौड़ाईआ। तोप तबक ना मारे मार, रसना चिल्ला रिहा चलाईआ। जार जाबर सभ जानणहार, गोबिन्द सीस उठाईआ। मढ़ी गोर भरे द्वार, धरत मात बैठी गोद विछाईआ। उत्तों पावे डाहडा भार, जूठ झूठ सीस टिकाईआ। गुरमुखां रखाए इक्क द्वार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ । गुर पीर ना दिसे कोई अवतार, ना कोई सहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सच सच्ची सरकार, दो जहानां इक्क अख्वाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जन भगतां वंडाई साची वंडा, हरि साचा धाम सुहाईआ। गुरसिख नार होए कदे ना रंडा, साचा कन्त हंढाईआ। प्रभ मेटण आया भेख पखण्डा, धुरदरगाही साचा माहीआ। ना कोई पूजे करीर जंडा, ना कोई मढ़ी मसाणी जाईआ। कलिजुग तेरा पार कन्ढा, देवी देव ना इष्ट रखाईआ। अञ्जील कुरान वेद पुराण खाणी बाणी ना कोई पाए वंडा, ना कोई बाईबल रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए धुरदरगाही उप्पर लाल रंग दरसाईआ। शब्द निशाना सच वखाउणा, लालन लाल रंगाया। पुरख अबिनाशी दर सुहाउणा, धुर धाम वेख वखाया। एका कारज आप कराउणा, ना विचोला कोए जणाया। सम्बल नगरी धाम उपजाउणा, साचा धाम वेख वखाया। नौ दुआरे दर खुल्हाउणा, गुरमुखां बेड़ा पार कराउणा, सिँघ तारा साडा छोटा एह समझाउणा, वड्डा लेख ना कोई लिखाया । बुध लेखा आपणा पाउणा, जगत मति नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे साचा घर, हरिसंगत आप सुहाया । संगत सुहाए हरि दुआरा, लेखे हरि हरि लग्गा। हरि हरि आप होए भिखारा, जन भगतां फिरे पिच्छे अग्गा। आओ सन्तो करो वणज वपारा, चरन सीस वेखे साचा पग्गो। ना कोई मंगो होर दुआरा, हँस हो कग्गो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेले साचे घर, दरस दिखाए उप्पर शाह रगो। ओअँ रूप आप करतारा, निरगुण नाम धराया। निरगुण जोती कर उज्यारा, नूरो नूर करे रुशनाया। एका वसे धाम न्यारा, दिस किसे ना आया। उच्च महल्ल अटल अगम्म अपारा, ऊँचो ऊँच रखाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकारा, सच सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ओंकारा नाम धराया। ओंकारा कर आकार, आपणा नाउँ धराईआ। आपणा वेखे आप पसार, वेखणहार दिस ना आईआ। आपे बन्न्हे आपणी धार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, एका नूर समाईआ। सति पुरख निरँजण साची कार, आप आपणी रिहा कमाईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपार, अलक्ख अलक्खणा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ओअँ एका एक अख्वाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, एका दर सुहाया। इक्क वसाया सच

महल्ला, भेव किसे ना पाया। जोती दीपक एका बला, प्रकाश प्रकाश समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क सुहाया। ओंकार कर प्रकाशा, आपणा रंग रंगांयदा। खेले खेल पुरख अबिनाशा, परम पुरख अख्वांयदा। जन सन्तां देवे नाम भरवासा, शब्दी शब्द उपांयदा। शब्द धुन हरि शाहो शबासा, अनहद ताल वजांयदा। काया मण्डल वेखे साची रासा, साची सतिआ आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन आत्म अन्तर रक्खे वासा, दिवस रैण एका रंग रंगांयदा। एकँकार सर्ब प्रकासी, सति पुरख अख्वांयदा। हरि सन्तन लाहे जगत उदासी, एका नाम वरतांयदा। मेल मिलावा शाहो शबाशी, घर मंगल साचा गांयदा। निज आत्म कर सच निवासी, निज घर साचा वेख वखांयदा। खेल कराए पृथमी आकाशी, पृथमी आकाश फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर धरांयदा। जोती नूर सर्ब घट अन्तर, हर घट आप टिकाया। जन सन्तां मेला पुरख निरंतर, निरगुण मेल मिलाया। पंज तत्त बुझाए लग्गी बसन्तर, अमृत आत्म जाम प्याया। आपे बिध जाणे अन्तर, सुरती शब्दी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका दर, दर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, आदि निरँजण वेख वखाया। आए दर सन्त सुहेले, हरि हरि मंगलाचार। मिले मेल गुर गुर चेले, सोहे बंक द्वार। वसे धाम इक्क अकेले, निरगुण खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलावे सिरजणहार। सन्त कन्त भगवन्त, एका धाम सुहांयदा। भेव ना जाणे कोई जीव जन्त, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। एका सेजा एका नारी एका कन्त, एका सन्त हंढांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जांयदा। रसन जीव नाम रसायण मणीआ मणत, मन मणका फेर वखांयदा। जुग जुग महिमा गणत अगणत, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। धन्न वड्याई हरिजन साचे सन्त, जिन हरि हरि मेल मिलांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, मनमुख जीवां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगवन रूप समांयदा। सन्तन घर सच सुहञ्जणा, निर्मल जोत आकारा। मिले मेल पुरख आदि निरँजणा, नाता तुट्टे सर्ब संसारा। आत्म धुन अनादी एका ताल वज्जणा, आप वजाए वजावणहारा। शब्द ब्रह्मादी खोज खुजाए साचे सज्जणा, लोआं पुरीआं पावे सारा। हरिजन हरि द्वार करे कराए साचा मजना, दुरमति मैल पार किनारा। काया भाण्डा जो घड़या सो भज्जणा, गुरमुख विरले मात विचारा। जीउ पिण्ड सभ ने तजणा, मेल मिले घड़न भन्नणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला एका घर, करे कराए एका एकँकारा। एका एकँकार अकल कल धार, अकल कल समाया। खेले खेल अपर अपार, अछल अछल्ल छलाया। वल छल करे विच संसार, गुरमुख विरले बूझ बुझाया।

जो जन आत्म अन्तर काया मन्दिर अन्दर एका गुण रहे उचार, रसना जेहवा ना कोए हिलाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। पार कराए नौ द्वार, सुखमन नाड़ी वेख वखाया। जोत निरँजण कर उज्यार, अनहद ताल वजाया। पंचम सखीआं गावण वारो वार, आपणा राग अल्हाया। आपे वेखे वेखणहार, घर मन्दिर बैठा आसण लाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, आत्म सेजा आप विछाया। निरगुण जोती कर उज्यार, उत्ते बैठा बेपरवाहया। अमृत आत्म भर भण्डार, निझर धार वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे दर, कागों हँस हँस काग दए बणाया। काग हँस मोती चोग, एका नाम रखांयदा। मेल मिलावा धुर संजोग, हरिजन मेल मिलांयदा। आत्म भोगे साचा भोग, रस रसीआ आप अख्वांयदा। इक्क वखाए साचा जोग, जुगत जगत आपणे हथ्थ रखांयदा। नाम जणाई धुर सलोक, सो पुरख निरँजण आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन वेखे साचा घर, घर साचा कवण सुहांयदा। कवण घर कवण दुआरा, कवण रिहा उपाईआ। कवण रूप हरि करतारा, बैठा आसण लाईआ। कवण मेल मिलाए विच संसारा, सन्त सुहेले वेख वखाईआ। कवण कराए आर पार किनारा, कवण मँझधार रुढ़ाईआ। हरि सन्तन पाया पुरख अपारा, एका दूजा भेव चुकाईआ। तीजा नेत्र कर उज्यारा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। चौथे घर पावे सारा, एका पद समझाईआ। पंचम मेला मीत मुरारा, मेलणहारा बेपरवाहीआ। छेवे छप्पर छन्न ना कोई महल्ल उसारा, शब्दी शब्द बणत बणाईआ। अठा तत्तां वसे बाहरा, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुद्ध ना कोए वड्याईआ। नौ दर ना कोए किवाड़ा, जगत वासना सर्ब तजाईआ। उच्चे टिल्ले बैठा चढ़ पहाड़ा, बजर कपाटी अग्गे डाहीआ। गुरमुख विरला वेखे सच अखाड़ा, हरि साचा रिहा लगाईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, दर द्वार दए दुरकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला विच संसारा, सहिज सहिज गुण गाईआ। सन्तन बोले नाम जैकारा, आत्म धुन उपजाईआ। मेल मिलाए कन्त भतारा, साची नारी लए प्रनाईआ। एका सेजा कर प्यारा, एका रुत्त सुहाईआ। एका वेखे धर्म दुआरा, धर्म धर्मी इक्क जणाईआ। निहकर्मी हरि पावे सारा, कर्म कांड विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन वेखे साचा घर, घर साचे नाम वज्जदी रहे वधाईआ। वज्जे नाम शब्द मृदंगा, सन्तन घर सुहांयदा। जिस जन लगाए आपणे अंगा, अंगीकार आप अख्वांयदा। मानस जन्म ना होए भंगा, जिस जन दया कमांयदा। वड दाता जोधा सूरा सरबंगा, एका इष्ट देव मनांयदा। शब्द सिँघासण बैठ पलँघा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दर द्वार रहे मंगा, भिख़क भिच्छया एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे एका

घर, धुन अनाद एका एक वजांयदा। नाद धुन वज्जे तलवाड़ा, सन्तन मंगल गाया। आप वजाए बहत्तर नाड़ा, साचा ताल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला साचे घर, घर साजन वेख वखाया। दर्शन पेखत दरस कर, दरसी दरस दिखाया। दर साचा रूप ना रेखता वेख हरि, निरगुण नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मंगे इक्क घर, दर द्वार इक्क सुहाया।

आदि निरँजण मूर्त अकाल, पारब्रह्म अख्वाया। दर्द दुःख भय भंजन दीन दयाल, दयानिध नाम धराया। निरगुण रूप सर्ब प्रितपाल, घर सज्जण बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे रुशनाया। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, निरगुण नूर समाया। आपणा वेखे आप तमाशा, आप आपणा खेल खिलाया। आप उपाए पृथ्मी आकाशा, रवि ससि सेवा लाया। मण्डल मण्डप पावे रासा, आप आपणा रूप वटाया। खेले खेल शाहो शबाशा, शाह सुल्ताना नाम धराया। हर घट अन्दर रक्खे वासा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाया। आदि पुरख सर्ब गुर दाता, हर घट आप समाईआ। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, एका वरन बणाईआ। एका रक्खे नाम सुगाता, आपणी झोली पाईआ। एका पिता एका माता, एका बाल सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण नूर कर उजागर, आपणा कर्म कमाया। आप आपणा बण सुदागर, आप आपणा वणज कराया। आप आपणा कर्म करे उजागर, आप आपणा लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। निरगुण वेस शाह निरँकार, सच तख्त सुल्ताना। जोती नूर कर उज्यार, बैठा आप श्री भगवाना। ना कोई मन्दिर चार दिवार, ना कोई दिसे होर निशाना। इक्क अकल्ला एकँकार, खेले खेल महाना। आपणा वेखे आप पसार, आपणी बणत बणाना। आप सुहाए आपणा बंक द्वार, थिर घर साचा इक्क टिकाना। महल्ल अटल उच्च मुनार, हरि साचे वेख वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे परवाना। निरगुण नूर कर परवान, आपणा मूल चुकाया। आपे वेखे मार ध्यान, आप आपणा वेख वखाया। आपणा वेखे आप निशान, आपणा नेत्र आप खुल्हाया। आपे जाणे जणाए आपणा इक्क ज्ञान, एका ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साजन वेख वखाया। निरगुण साजन हरि हरि मीता, हरि हरि नाम धरांयदा। आपे वस्सया आपणे चीता, आप आपणा कर्म कमांयदा। आपे बैठा इक्क अतीता, एका रूप समांयदा। आपे ठांडा आपे सीता,

सांतक सति आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, आपे धार चलांयदा। ना कोई मन्दिर गुरदुआरा दिसे मसीता, हरि साचा जोत जगांयदा। ना कोई हस्त ना कोई कीटा, शाह सुल्तान ना कोई अख्वांयदा। हरि का धाम सदा अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। आपणे घर आपे बैठा, आपणा आसण आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार इक्क वहांयदा। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। खेले खेल अपर अपार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपे मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। आपे देवणहार दातार, आपणी वंडण रिहा वंडाईआ। साचा शब्द कर त्यार, आपणा घर सुहाईआ। एका नाद वजाए वजावणहार, बोध अगाध जणाईआ। शब्द वधाई वज्जे दर निरँकार, एका रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण निरगुण आपणा वेख, आपणा रूप वटाया। आप आपणा लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। आप आपणी लाए मेख, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाया। अलक्ख अलक्खणा करे इक्क आदेश, अलक्ख निरँजण नाउँ धराया। थिर घर बैठ करे आदेस, आप आपणा वेस वटाया। सचखण्ड कर प्रवेश, जोती नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे शब्द करे वड्आया। साचे शब्द कर जणाई, हरि आपणा आप उपाया। एका रूप हरि रघुराई, अकल कला अख्वाया। शाहो भूप सहिज सुखदाई, भेव कोई ना राया। जोती जोत कर रुशनाई, अन्ध अन्धेर ना कोई दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटाया। आप आपणा अंग कटा, आपणा रूप वटांयदा। आप आपणी सेवा आपे ला, सेवक सेवा नाम धरांयदा। आपणा इष्ट आप मना, आपे सीस झुकांयदा। आपणी दृष्ट आप खुल्ा, आपे दर सुहांयदा। आपणा वेस आप वटा, विष्नूं वंसी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मिलावा साचे घर, साचा दर सुहांयदा। शब्द सुत वड बलवाना, हरि एका एक उपाया। एका देवे धुर माणा, एका सेवा लाया। खेले खेल दो जहानां, भेव किसे ना पाया। पारब्रह्म ब्रह्म आप पछाना, ब्रह्म ब्रह्म समाया। त्रैगुण माया कर प्रधाना, एका तत्त वखाया। पंज तत्त मिटाए हरि निशाना, सेवक सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे शब्द देवे वर, लोआं पुरीआं रचन रचाया। लोआं पुरीआं बन्ने धार, आपणी बणत बणाईआ। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। ब्रह्मा वेता कर त्यार, कँवल कँवला मुख भवाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। एका दाता दानी दान, एका झोली रिहा भराईआ। एका घर एका मन्दिर एका दिसे सच मकान, एका बैठा आसण लाईआ। एका राग एका कान, एका मंगल एका गाण, एका रिहा

गाईआ। इक्क अनादी धुर फ़रमाण, ब्रह्मादी खोज खोजाईआ। आदि जुगादी हरि भगवान, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण, आप आपणी कल वरताईआ। आपणी कल आप वरतंता, पारब्रह्म अबिनाशी। खेले खेल जुगा जुगन्ता, निरगुण जोत करे प्रकाशी। त्रैगुण माया बणत बणंता, पंज तत्त पवण स्वासी। मन मति बुध संग रखंता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी रासी। आपणी रासी आप उपा, आपे वंड वंडाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म सेवा ला, सेवक सेवा लगाईआ। विष्नूं वंसी नाम धरा, देवे रिज़क सबाईआ। एका लहिणा दए चुका, धूंआँधार समाईआ। भोला नाथ लए उपा, एका दर सुहाईआ। एका सेवा दए ला, अन्त विछोड़ा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तेरा साचा घर, त्रै देसां वंड वंडाईआ। त्रैगुण तेरा साचा रूप, हरि साचे आपे उपाया। आप वरताए चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाया। आप आपणा आपे गया तुठ, आप आपणा लए मनाया। आप आपणा आपे ल्या लुट्ट, आप आपणा घर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी बणत बणाया। लक्ख चुरासी तेरी धार, हरि साचे मात चलाईआ। लोआं पुरीआं कर विचार, ब्रह्मा विष्न शिव सेवक सेवा रिहा कमाईआ। पंज तत्त कर प्यार, त्रैगुण रंग रंगाईआ। पंझी मेला विच संसार, पंचम मोह वधाईआ। पंज दस एका घर, पंज दस रिहा दसाईआ। वड दाता सूरा सरबंग, आप आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण जोती चाढ़े रंग, नूरो नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी रिहा उपाईआ। लक्ख चुरासी तेरा नाता, हरि साचे आप बंधाया। अन्दर बैठा इक्क इकांता, दिस किसे ना आया। अट्ठे नेत्र मारे झाता, अन्दर मन्दिर इक्क सुहाया। दिवस रैण पुच्छे वाता, आप आपणा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट मेला सहिज सुभाया। हर घट मेला हरि निरँकार, आपणा आप कराया। आप सुहाया बंक द्वार, थंक दुआरा नाम धराया। आप आपणा कर पसार, पसर पसारा वेख वखाया। आपणा महल्ल लए उसार, आपे अन्तिम ढाहया। भेव ना पाए जीव संसार, लेखा लिख्त विच ना आया। ब्रह्मा वेता कर विचार, प्रभ चरनी सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, एका शब्द जणाया। एका शब्द गुण विचार, एका कर्म कमाया। पुरख अबिनासी तेरा सोहे दर दरबार, दर दुआरा इक्क सुहाया। ग़रीब निवाज़ा बेऐब परवरदिगार, एका नाम अल्लाया। मेरा रूप तेरा साजन साजा, सगला संग रखाया। एका बख्श अनहद वाजा, अन्दर मन्दिर सितार वजाया। शब्द गुर दर आए भाजा, तेरा धुर फ़रमाण सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वर साचा झोली पाया। शब्द गुर कर त्यार, ब्रह्मे शब्द जणाईआ।

ब्रह्मा ब्रह्म रिहा विचार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। वेखे विगसे करे विचार, नेत्र नैण खुल्हाईआ। भेव ना पाए हरि निरँकार, दोवें नैण रहे शरमाईआ। अन्तिम ढहि पया द्वार, मस्तक टिक्का लाए चरन धूढ़ साची छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बख्शे नूर अलाहीआ। नूर अलाही निरगुण जोत, ब्रह्मे ब्रह्म उपाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई जणाया। ना कोई किल्ला ना कोई गढ़ ना कोई कोट, ना कोई मन्दिर मस्जिद दए सुहाया। शब्द निराली मारे चोट, दिवस रैण रहे जगाया। दए भण्डारा इक्क अतोट, हरि साचे घर भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार आप अख्वाया। देवे नाम शब्द भण्डारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा मेला हरि निरँकारा, शब्द शब्दी रिहा मिलाईआ। धुन अनादी दए धुन्कारा, अनहद ताल वजाईआ। सच सुणाए सुनणेहारा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। लेख लिखाए अपर अपारा, आप आपणा गुण जणाईआ। आपणा वरते आप वरतारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। खेले खेल विच संसारा, आपणी विद्या आप चलाईआ। ब्रह्मे बख्शे नाम प्यारा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। तेरा रूप इक्क अपारा, मेरा अंग कटाईआ। निरगुण सरगुण दोवें धारा, दोहां विच समाईआ। सस्सा पुरख आप करतारा, हाहा हँ ब्रह्म समाईआ। हँ ब्रह्म आप अख्वा, सतिगुर पुरख अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ भेव ना रा, वेद कतेब ना कोई जणाया। चारे वेदां रिहा लिखा, सोहँ मूल मन्त्र अख्वाया। लेखा कोई ना सके गिणा, बेअन्त हरि बेपरवाहया। आपे वसे आपणे थाँ, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ा धाम सुहाया। ना कोई पिता ना कोई माँ, भाई भैण ना कोई जणाया। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा कोई दिसे ना, पंज तत्त ना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस साचे हरि, शब्द शब्दी शब्द उपाया। शब्दी ढोला धुर दरगाह, आपणा आप वजाया। आप उपाए आपणा बोला, आपे रिहा सुणाया। आपणा नाम आपे तोला, आपणा कंडा आपे रिहा उठाया। ना कोई दूसर विच पाए रौला, विच विचोला ना कोई जणाया। आपणी शक्ती आपे मौला, आदि शक्त नाम धराया। ब्रह्मा कँवला आपे खोल्हा, आपे मुख भवाया। आप उपाए जगत धवला, धर धरनी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मार्ग लाया। आपणा मार्ग आपे ला, आपे वेख वखाईआ। आपणा दर आप सुहा, आपे दए वड्याईआ। आपणा मन्दिर आप बणा, आपे ल्ए ढाहीआ। लोकमात रचन रचा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी गया समा, दिस किसे ना आईआ। मानस मानुख लेखे ला, आपणा कर्म कमाईआ। एका शब्द ज्ञान दवा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। एका विद्या सति पढ़ा, सांतक सति समाईआ। एका तत्त आप अख्वा, मितगत आप जणाईआ। एका रत्त दए सुहा, एका बूंद टिकाईआ। एका हट्ट दए विका, एका खोल्ह खोल्हाईआ।

एका तीर्थ तट दए नुहा, सर सरोवर इक्क जणाईआ। एका पट तन दए पहना, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। दीपक जोती लट लट दए जगा, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। शब्द अगम्मी सट्ट दए लगा, आप आपणा कर्म कमाईआ। दुरमति मैल कट्ट दए वखा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अमृत आत्म चट्ट, सच प्याला दए पिला, हरि साकी बेपरवाहीआ। दीन दयाला दया कमा, देवे दरस हर घट थाईंआ। जोत अकाला नाम धरा, अकल कला गुण गाईआ। आदि निरँजण सेवक ला, सेवा रिहा कमाईआ। आदि शक्त रही मना, एका इष्ट बेपरवाहीआ। पुरख पुरखोतम आप अख्वा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नर नरायण नाम धरा, नर नरायण आप हो जाईआ। शब्द गहिणा तन सजा, आप आपणा तन सुहाईआ। नाम नैणा कजल पा, नेत्र धार बंधाईआ। साचा सज्जण वेख हरि चढ़या चा, ब्रह्मे ख़ुशी मनाईआ। चरन धूढ़ी करया मजन बेपरवाह, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात करी कुड़माईआ। लोकमात कर कुड़माई, लक्ख चुरासी आप प्रनाया। घर घर वज्जदी रहे वधाई, दिवस रैण मंगल गाया। जीव जन्त ना सुणे लुकाई, माया संगल इक्क बंधाया। प्रभ अबिनाशी आपणी डोरी आपणे हथ्थ रखाई, दूसर लड़ ना कोई फड़ाया। आपणा नूर आपे कर रुशनाई, आप आपणा नाउँ धराया। हरि भगवन्त वड्डी वड्याई, सन्तन अन्दर डेरा लाया। साचा सन्त रहे सरनाई, हरि साचे मेल मिलाया। एका दूजा भउ चुकाई, तीजा लोइण आप खुल्हाया। चौथे पद दए समझाई, एका धाम रखाया। पंचम मेला चाँईं चाँईं, हरि एका राग अल्हाया। छेवें मेल मिलाए दया कमाए छप्पर छन्न कोई दिसे नाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला साचे घर, आपे वेखे सभनी थाईं। लक्ख चुरासी जीव जन्त उपा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आपणी जोती आपे रिहा समझा, आप आपणा वेस वटाईआ। आपणा नाम आपे लए धरा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्दी शब्द शब्द जाए समा, शब्दी धुन अल्हाहीआ। साचा सुत आप हो जा, हरि सन्तन आप हो जाईआ। नारी कन्त आप अख्वा, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपणी जोती रंग दए चढ़ा, रंगणहारा आप हो जाईआ। आपणा लड़ आपे लए फड़ा, आप आपणा लए प्रनाईआ। आपणी सेजा आपे रिहा हंढा, वड दाता बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले मेल मिला अगम्म अथाह, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। मेल मिलावे धुर संजोगी, सच संजोग धराया। पारब्रह्म प्रभ होया भोगी, एका भोग वखाया। जन भगतां देवे नाम चोगी, माणक मोती मुख रखाया। आपे देवे दरस अमोघी, अन्दर मन्दिर फेरा पाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त जन होए रोगी, ना कोई देवे रोग कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे आपणा घर, लोकमात फेरा पाया। लोकमात हरि का द्वार, सरगुण कर्म कमाया। सरगुण रूप कर करतार, जुग

जुग वेस वटाया। ब्रह्मा लिखे बण लिखार, चारे वेदां गया गणाया। चारे वेद अपर अपार, दे मति रिहा समझाया। वंडे वंड विच संसार, एका पक्ख तकाया। रवि ससि लए अवतार, हो प्रतक्ख रूप वटाया। गगन पतालां बन्न्ह धार, धरत धवल टिकाया। जल बिम्ब हरि कर प्यार, उप्पर आसण लाया। लक्ख चुरासी पावे सार, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। रंग समाए लाल गुलाला, आदि शक्त बनवारा। आपे होए जगत दलाला, करे कराए वणज वापारा। फल लगाए काया डाला, अमृत आत्म इक्क अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे उज्यारा। आपणा आप आप करा, आपे चोज वडानया। आपणी महिमा आप जणा, आपे वरते आपणे भाणया। आपणा तख्त आप सुहा, आपे वेखे राजे राणया। आपणा डंक आप वजा, लोआं पुरीआं आप उठानया। राउ रंक आप बणा, राउ रंकां करे पछानया। ब्रह्मा शिव सेवा ला, सेवक सेव करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे प्रगट करे नाम निशानया। नाम निशाना मात धर, धरत धवल सुहांयदा। मानस मानुख जोग कर, एका जोग वखांयदा। इक्क संजोग साचे घर, साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वंड वंडांयदा । लोकमात वंडे वंड, वंडणहार दातार। सतिजुग साची बन्न्ही गंढ, मिल्या नाम आधारा। त्रेता मंगे एका ठंड, सीतल सीतल धारा। द्वापर तोड़े आप घमंड, खेले खेल अपारा। कलिजुग नार दुहागण रंड, चारों कुन्ट हाहाकारा। घर घर वेखे भेख पखण्ड, ना मिल्या मीत मुरारा। जूठ झूठ चुक्की पंड, मनमुख जीव होवे गंवारा। आपे सुत्ता दे कर कंड, ना दिसे कोई किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लए मात अवतारा। सतिजुग साचे लै अवतार, आपणा कर्म कमाया। वार अठारां कर प्यार, निरगुण जोत करे रुशनाया। त्रेता तेरा रूप अपार, हरि करतार विच समाया। दोए दोए वेखे एका धार, एका धार बंधाया। द्वापर तेरा खेल न्यार, खेलणहार आप हो जाया। एका दूजा कर प्यार, दूजा एका लेख लिखाया। पुराण अठारां बन्न्हे धार, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक गिणाया। गीता देवे इक्क ज्ञान, भगतन भगती लाया। कलिजुग वेखे मार ध्यान, दूर दुराडा राह तकाया। जूठ झूठ होण प्रधान, प्रभ साचा दया कमाया। काला सूसा बेपहचान, तन चोली इक्क रखाया। ईसा मूसा कर प्रधान, अल्ला राणी नाल प्रनाया। इक्क मुहम्मद इक्क ज्ञान, इक्क अल्लाह एका नाअरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका आइत इक्क शरायत एका शब्द सुणाया। एका शब्द शरअ हदीस, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका गाए दन्द बतीस, एका रिहा सुणाईआ। इक्क उपाए सपारे तीस, एका लिव टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। कलिजुग वंड वंडावणहारा, एका एक अख्वाया। कलिजुग मंगे मंग दुआरा, देवणहार हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग रिहा वखाया। कलिजुग मंगे दानी दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। नाल रला पंज शैतान, मन मति मेल मिलाईआ। जूठ झूठ होए प्रधान, माया ममता मोह वधाईआ। वरन बरन होए ज्ञान, साची सरन ना कोए तकाईआ। आपणा आपणा राह चलाण, नबी रसूलां राह पाईआ। धुरदरगाही ना वखाए कोई सच निशान, दीन अलाही रहे भुलाईआ। मक्का काअबा वेख कुरान, काया कुरा दए समझाईआ। दो दो आबा हरि निगहबान, पुन सवाबा वेख वखाईआ। तन रबाब ना वजाए कोई अहिबाबा, ना कोई राग अलाईआ। ना कोई मारे साची वाजा, ना कोई साची सदा सुणाईआ। ना कोई चले तेरी रज़ा हरि साचे राजा, कलिजुग मंगे खलक ख़ुदाईआ। देवे वर ग़रीब निवाजा, भुल्ल रहे ना राईआ। एका देवे झूठा जूठा ताजा, कलिजुग उप्पर रिहा चढ़ाईआ। लोकमात फिरे भाजा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पैरां हेठ दबाईआ। चौदां लोकां साजन साजा चौदां तबकां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग झोली इक्क भराईआ। कलिजुग काले चढ़या चा, मिल्या दर अपार। इक्क मुहम्मद बणे मलाह, कल बेड़ा रिहा तार। अल्ला राणी दए सलाह, साचा कर प्यार। कलमा अमाम एका राह, कायनात करे विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दए नाम अधार। एका नाम जगत अधारा, हरि साचे आप रखाया। जो जन मंगे मंग दुआरा, देवणहारा नाउँ धराया। खेले खेल अपर अपारा, सृष्ट सबाई वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नबी इक्क रसूल, एका हज्ज कर कबूल हाजन हाजी आप कराया। एका हाजी एका हज्ज, एका रिहा कराईआ। एका ताजी एका तज्ज, एका रिहा दौड़ाईआ। एका मारे साची वाजा, एका रिहा सुणाईआ। नीर उछाले खिजर खवाजा, खैर ख़ुदी ख़ुदाईआ। बी पहर मैहबान महिबान राजा, निरमान नाम धराईआ। रचनहारा आपे काजा, इक्क निशान झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वंड वंडाईआ। कलिजुग वंड एका धार, एका नाअरा लाया। विसरया नाम राम मुरार, कृष्ना कोए ना गाया। एका अल्ला कर प्यार, बिस्मिल रूप समाया। एका छिला कटया साचे यार, एका हीला रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका कलमा रिहा पढ़ाया। एका कलमा ऐनलहक्क, मुकामे हक्क ख़ुदाईआ। कुतब गौंस पीर फकीर शाह हकीर राह रहे तक्क, दस्तगीर हथ्थ ना आईआ। खेले खेल बेनज़ीर, तकदीर तकसीर ना कोई मिटाईआ। कलिजुग काले चिट्टे उत्ते काली खिची जाए लकीर, ना किसे कोई मिटाईआ। संग मुहम्मद वज्झणा अन्त जंजीर, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। अल्ला राणी वहाए

नीर, रो रो रही कुरलाईआ। ना कोई सहायक पीर फकीर, मुस्लिम सुन्नी ना कोए बचाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका मारन आया तीर, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ चोटी वेखे इक्क अख़ीर, ढूँघी कन्दर फेरा पाईआ। चौदां तबकां आब हयात वरोले साचा नीर, नीर आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क मुहम्मद एका राह वखाईआ। इक्क मुहम्मद इक्क अल्ला, अलाही नूर समाया। पारब्रह्म प्रभ दए सलाह, तेरा तेरी झोली पाया। तेरा लहिणा दए चुका, मूल रहे ना राया। अन्तिम बूटा रिहा सुका, ना सके कोई जल प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वंड वंडाया। अल्ला राणी वंडी वंड, कलमा नबी रसूल्या। आपणी हथ्थी दित्ती गंढु, शरअ शरायत इक्क कबूल्या। वेखे खेल जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज दूलो दूल्या। रचन रचाए हरि ब्रह्मण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेट मिटाए जगत बेअसूल्या। जगत नाता जुग जुग जोड़ा, आपणा कर्म कमांयदा। आपे आए मात दौड़ा, आपणा रूप वटांयदा। धुरदरगाही लाए पौड़ा, एका डण्डा हथ्थ रखांयदा। ना कोई जाणे लभ्मा चौड़ा, लेखा लिख्त ना कोई जणांयदा। करया भेख ब्रह्मण गौड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे वरन फेरा पांयदा। चारे वरनां फेरा पा, ब्रह्मण ब्रह्म जणाईआ। वैश क्षत्री दए समझा एका वणज कराईआ। शूद्र लहिणा देवे पा, कूड़ी क्रिया रिहा मेट मिटाईआ। चार वरना इक्क समझौणी, हरि एका बणत बणाईआ। एका विद्या मात पढ़ौणी, एका रूप दरसाईआ। साचा ब्रह्म इक्क सनौणी, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। क्षत्री तेग इक्क उठौणी, रसना नाम हरि हरि गाईआ। वैश खेती इक्क बिजौणी, साचा वणज वापार कराईआ। शूद्र सिख्या इक्क दवौणी, दुरमति मैल गंवाईआ। चार वरनां एका जोत जगौणी, एका धाम करे कुड़माईआ। सतारां हाढ़ी साची नींह रखौणी, सतिजुग तेरी वड वड्याईआ। कलिजुग तेरी कूड़ी क्रिया आप मिटौणी, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। भिन्नड़ी रैण नाल रलौणी, हरिसंगत संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वंड वंडाईआ। वंडे वंड शब्द ज्ञान, पारब्रह्म बेअन्ता। पंज तत्त कर प्रधान, नानक गुर बणाए बणता। शब्द गुर हो प्रधान, मेल मिलावे साचे सन्ता। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, वेखे खेल आदिन अन्ता। मिल्या मेल गोपी काहन, सुहाई रुत्त बसन्ता। सुणया राग साचे कान, भेव ना पावे जीव जन्ता। काया पिण्ड जाता फनाह मकान, सरन सरनाई हरि बेअन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राग नाद इक्क वजन्ता। राग नाद सुण तलवाड़ा, नानक गुर गाया। गाया शब्द सतारा हाढ़ा, सोहँ नाम अलाया। धुरदरगाही गाया साचा लाड़ा, पारब्रह्म बुलाया। जोती नूर वेखे इक्क अखाड़ा, सति सरूप समाया। ना

कोई दीसे पंज तत्त हड्ड मास नाड़ी नाड़ा, पवण स्वास ना कोई चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर मिल्या हरि, घर मन्दिर वेख वखाया। वेखे मन्दिर हरि द्वार, नानक वज्जी वधाईआ। तज्या नाता नौ द्वार, मिल्या बेपरवाहीआ। इक्क आकातां पावे सार, अमृत प्याला प्याए सच सुराहीआ। इक्क वजाए नाम सतार, नाम सति आप चलाईआ। इक्क कराए वणज वापार, एका वस्त झोली पाईआ। गुणवन्ता हरि गुण निरँकार, निरगुण गुण करे वड्याईआ। सरगुण मेला विच संसार, अट्ठे पहर रखाईआ। नानक गुर गुर ढहि पया द्वार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नाम सति कर प्यार, सति सति विच समाईआ। सति सति कर उज्यार, सति सति करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक वंड वंडाईआ। नानक गुर वंड वंडाई, मिल्या नाम सति नामा। लोकमात आया करके धाई, लै कर धुर पैगामा। ग़रीब निमाणयां रिहा जणाई, मेटे रैण अन्धेरी शामा। काया तन नगारा वजाए इक्क दमामा अट्ठे पहर रहे रुशनाई, आपे होया अन्तरजामा। गुर नानक सेव कमाई, चार वरनां देवे इक्क ज्ञाना। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई रिहा समझाई, एका शब्द इक्क तराना। एका हरि लिव लाई, एका राग एका गाणा। एका रिहा सुणाई, इक्क वखाए पद निरबाना। घर चौथा मेल मिलाई, पंचम हरि हो प्रधाना। वेख वखाए थाउँ थाँईं, जन भगतां हथ्थीं बन्ने गाना। आप आपणा सगन मनाई, मेल मिलावा गोपी काहना। काहना गोपी आप हो जाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर दित्ता वर, लोकमात वज्जी वधाईआ। लोकमात मंगलाचार, गुर पूरे आप कराया। चारे कूटां दहि दिशा मारे इक्क अवाज़, शब्द घोड़ा रिहा उडाया। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकाया। रसना खिच्चे वार वार, हथ्थ ना कोई लाया। नेत्र बन्द कर ना मारे मार, ना कोई निशान तकाया। अन्दरे अन्दर कर रिहा विचार, दिस किसे ना आया। डूँघी कन्दर पावे सार, बैठा आसण लाया। जन भगतां दस्से चरन प्यार, साचा राह इक्क वखाया। ऊँचां नीचां भेव निवार, रंक राजानां शाह सुल्तानां एका धाम सिखाया। एका ब्रह्म पारब्रह्म करे पुकार, पूरन गुण आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दित्ता नाम वर, सरगुण निरगुण मेल मिलाया। निरगुण सरगुण साचा मेला, लोकमात करांयदा। सुरत शब्द गुरु गुर चेला, साचा धाम सुहांयदा। अकाल मूर्त होए सज्जण सुहेला, अनभव प्रकाश करांयदा। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, जोती शब्द नाउँ धरांयदा। शब्द सुत छैल छबीला, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। जन भगत बणाए लोकमात इक्क कबीला, साची गोती इक्क रखांयदा। आओ सन्तो चल द्वार जोती नूर अग्नी नाम लाओ तीला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी

वंड वंडांयदा। वंडे वंड वड संसारा, सिक्दार आप अख्वाया। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ले जीव गंवारा, हरि का भेव किसे ना आया। चारों कुन्ट मार उडारा, गुर नानक रिहा समझाया। पंडत पाधां शेख मुसायक पीर तीर्थ तट किनारा, आर पार फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर दित्ता नाम वर, मेरा तेरा रूप वटाया। नानक गुर कर्म कमा, अन्तर हरि लिव लाईआ। जीवां जन्तां रिहा समझा, भरमे भुल्ली लोकाईआ। भरम गढ़ ना सके कोई तुड़ा, कलिजुग वंड वंडाईआ। गुरमुख विरले जोड़ी दए जुड़ा, जोड़ी जोड़े हरि रघुराईआ। साची पौड़ी दए चढ़ा, एका सगन मनाईआ। एका पौड़ा दए लगा, थिर घर धाम सुहाईआ। कौड़ी वेल मिट्ठी दए बणा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। लहिणा लहिणा दए चुका, अंगद अंग लगाईआ। अंगद लेखा आप समझा, पंज तीस करे रुशनाईआ। पैंतीस अक्खर रिहा बणा, गुर मूर्त नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपे रिहा छुपाईआ। पैंतीस अक्खर कर उज्यार, पंज तत्त सुहाया। त्रैगुण माया वंड वंडे करतार, त्रैलोकां वेख वखाया। पुरीआं लोआं बन्ने धार, ब्रह्मा विष्न शिव नाल रलाया। भगत जनां सुणे पुकार, भगत भगती वेख वखाया। साधां सन्तां कर प्यार, सति सन्तोखी नाम दवाया। कलिजुग गुण आप विचार, गुर पूरा पूरा कर्म कमाया। प्रभ अबिनाशी भेव न्यार, अभेद अभेदा आपणा रिहा छुपाया। बवन्जा अक्खर निरगुण धार, ईश जीव आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी लए उचार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पहली हाढ़ी पावे सार, सतारां हाढ़ी पूर कराया। सतारां अक्खर जगत वक्खर कर पसार, जगत विद्या ना कोए लिखाया। वेद कतेब गए हार, पुराण अञ्जील कुरान दिस ना आया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आपे आसण लाया। वंडी वंड हरि निरँकार, कलिजुग लहिणा झोली पाया। अंगी अंग लाए करतार, नानक अंगद रूप समाया। निरगुण जोत कर उज्यार, शब्दी शब्द धार बंधाया। मूर्ख मूढ़ा काया चोली चढ़या रंग गूढ़ा, मस्तक लाई गुर नानक चरन धूढ़ा, दुरमति मैल नाता तोड़या कूड़ो कूड़ा, घर मन्दिर एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बंधाया। अंगद लहिणा गया चुक्क, हरि साचे आप चुकाया। अन्तिम पैंडा गया मुक्क, घर साचा इक्क सुहाया। अमरू निथावां ना गया सुक्क, अमृत सिंच हरया आप कराया। आपणी काया आपे ल्या भिंच, सर सरोवर इक्क नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती देवे वर, एका मंगल गाया। एका जोती नूर अपार, अमर अमर करांयदा। अमरापद विच संसार, गुर पूरा धाम सुहांयदा। सेवक सेवा करे अपार, बंस बंसी वेख वखांयदा। वेदी सोढी कर उज्यार, तिलक ललाट इक्क लगांयदा। औखी घाटी पार किनार, हरि करता आप करांयदा। नेड़े वाटी हरि करतार,

राह भीड़ा पन्ध वखांयदा। जोत ललाटी अपर अपार, हरि मस्तक आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा मेल मिलांयदा। गुर किरपा गुर मेलया, गुर ढहि ढहि पया द्वार। गुर होया सज्जण सुहेलया, फड़ बांहों लाए पार। गुर होया साचा चेलया, चेला रूप गुर करतार। आपे वस्सया रंग नवेलया, निरगुण खेल करे अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सज्जण सुहेलया, रामदास हरि दरस दिखा, एका एका अख्खाया। मिल्या मेल पुरख अबिनाशा, एका दर सुहाया। लेखे लग्गे रसन स्वासा, स्वास स्वासा रिहा ध्याया। नाम कंडे तुला ना रत्ती ना तोला मासा, ना कोई भार गिणाया। एका एक मिल्या धुर भरवासा, हउमे रोग जलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर एका वर एका हरि एका सर नुहाया। राम दास पाई वंड, एका वंड वंडांयदा। मनमुख जीवां सिर चुक्की पंड, चार वरनां वेख वखांयदा। सर सरोवर वखाए एका कुण्ड, अमृत ताल सुहांयदा। भट्ठ कराए भेख पखण्ड, तत्व तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क उछाल लगांयदा। इक्क उछाला शब्द जणाई, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। अर्जन गुर सेवा लाई, एका बूझ बुझाया। पुरख अबिनाशी मेल मिलाई, हउमे गढ़ तुड़ाया। काया मन्दिर वज्जी वधाई, निर्भय पद पाया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आप आपणा लहिणा लैण लेवणहार आप अख्खाया। अर्जन गुर कर प्रकाश, हरि जोती जोत जगाईआ। शब्दी शब्द चले स्वास, रसना रस वखाईआ। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, नाम शब्द बोध अगाधा, हरि हरि आप उपाया। गुर पूरे हरि साचा लाधा, हरि मन्दिर नाम धराया। पंज तत्त विकारा एका बाधा, एका सेवा लाया। कारज करे सन्तां साधां, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सीस उठाया इट्टां गारा, दिस किसे ना आया। अर्जन गुर ढहि पया दुआरा, हउँ सेवक रघुराया। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, आपणे गले लगाया। तेरा मेरा रूप अपारा, एका रूप दरसाया। अर्जन गुर मंगे मंग भिखारा, तेरे दर होए रुशनाया। कवण दिवस कवण वेला कवण गुर वेखे धुर, कवण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द ज्ञान दृढ़ाया। अर्जन गुर शब्द जणाई, आपणी बूझ बुझांयदा। एका अन्तर एका लिव एका जोत करे रुशनाई, एका गुण जणांयदा। एका शब्द इक्क कुड़माई, एका ढोल वजांयदा। एका दाता बेपरवाही, एका मंगल गांयदा। अर्जन गुर तेरा थाँ वेखे चाँईं चाँईं, आपणा वेस वटांयदा। सिर रखाए ठंडीआं छाँईं, तन अग्नी तत्त जलांयदा। हरि का भाणा ना सके कोई मिटाई, अर्जन गुर लोहां उप्पर बैठ ख़ुशी मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। अर्जन गुर वेख

विचार, हरि हरि सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी तेरी धार, भेव ना कोई राया। जुग जुग होवे सांझा यार, वरन बरन ना कोई रखाया। कवण सु वेला पायण सार, देवें दरस हरि घट थांया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा बचन अल्ाया। कलिजुग अन्तिम होए धूंआँधार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। गुर दर मन्दिर होए वेसवा दरबार, धीआं भैणां रहे तकाया। मदिरा मास करन अहार, लोभी लोभ होए हलकाया। मनमति होए विभचार, गुरमति साची दए गंवाया। नानक शब्द भुल्ले संसार, निरगुण भेव चुकाया। प्रगट होए आप निरँकार, जोती जामा भेख वटाया। अर्जन तेरे आए द्वार, पंचम जेठा रुत्त सुहाया। एका चरन अन्दर बाहर, अग्गा पिछा वेख वखाया। मूर्ख मुग्ध ना पायण सार, हउमे हँगता रोग वधाया। साची सिक्खी कर त्यार, एका इक्की मेल मिलाया। धारों तिक्खी विच संसार, ना कोई वेखे सृष्ट सबाया। धुर दा लेख आपणी हथ्थीं हरि साचा रिहा लिखी, ना कोई सके मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन एह समझाया। गुर अर्जन सुण शब्द अमोला, हरि हरि हरि रंग रतड़ा। आपणा पड़दा आपे खोल्ा, आपे चढ़या आपणे तक्कड़ा। आदि अन्त कदे ना डोला, मेरा माधो आप आपणी मति मतड़ा। पंज तत्त काया होए चोला, हरि मन्दिर आवे नट्ठड़ा। मनमुख जीव होए गोला, हरि सुत्ता दे कर पिठड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप आपे जाणे, आपणा आप हरि पछाणे, चलाए शब्द इक्क अनडिठड़ा। जोती जामा हरि हरि पा, हरि मन्दिर दर सुहावणा। नानक अंगद अमर रामदास मेल मिला, गुर अर्जन गुर उठावणा। मनमुखां ना दिसे कोई थाँ, अन्तिम दंड लगावणा। घर घर उडने झूठे काँ, हँस पंखी कोई दिस ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटावणा। जोती जामा भेख अपार, हरि करतार आप करांयदा। निरगुण रूप सच्ची सरकार, सरगुण विच समांयदा। सरगुण वेखे सच उधार, सच समग्री इक्क वखांयदा। जोत अकगरी इक्क आकार, एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेख वखांयदा। हरि जू हरि मन्दिर आया, दिस किसे ना आंयदा। मनमुख जीवां भरम भुलाया, नेत्र नैण दरस कोई ना पांयदा। कूड़ा कूड़े धन्दे लाया, कूड़ा मोह रखांयदा। काया चोली रंग गूढ़ा ना किसे चढ़ाया, ना कोई लालन लाल वखांयदा। ना कोई बणी साची मालण, फूलन खारी ना सीस उठांयदा। मन मति विकारा कढ्ढे गालन, वाहवा हरि रंग उठांयदा। आपणा कीता आपे पालण, दर द्वार दुरकांयदा। धर्म राए दर घाल घालण, ना कोई अन्त छुडांयदा। ना होए सहाई धर्मसालण, इट्टां गारा जो सेव कमांयदा। आई दर जोत अकालण, गुर अर्जन मंग मंगांयदा। साची वस्त ना कोई संभालण, माया मोह रखांयदा। पंच विकारा बहि बहि हरि हरि भालण, गुर

गुर रसना गांयदा। जूठ झूठ रक्खया विच दलालण, तख्त अकाल ना कोई सुहांयदा। माया राणी तणया तानण, हरि साचा जाल विछांयदा। कूड़ी क्रिया करया पालण, पंज तत्त जलांयदा। काल नगारा वज्जे तालण, महांकाल डौरु वांयदा। आपणी सुरत ना सकण संभालण, खण्डा खिच ना कोई ढांयदा। वाहो दाही नठ्ठन जगत चालण, ना कोई संग निभांयदा। गुर का शब्द ना कोई पालण, मनमती राह चलांयदा। रामदास गुर ना बणे अन्त दलालण, आपणा मुख भवांयदा। आदि निरँजण जोत अकालण, काली धार वखांयदा। फल ना किसे दिसे डालण, सिम्मल रुक्ख हिलांयदा। खाली खारी वेखे मालण, कलीआं हार गुंद ना कोई लटकांयदा। कलिजुग आपणी चली चालण, वाह वाह आपणा ताल वजांयदा। गुरमुखां चढ़या प्रभ आपे भालण, जुग विछड़े जग मिलांयदा। इक्क रखाई अवल्लड़ी चालण, शब्दी घोड़ा आप दौड़ांयदा। चरन प्रीती साची घालण, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। देवे नाम सच्चा धन धन मालण, सोहँ झोली पांयदा। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञानण, एका ब्रह्म वखांयदा। नेड़ ना आए कामनी कामन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मिटांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी शामन, साचा चन्द चढ़ांयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा दामन, सतारां हाढ़ी थित सुहांयदा। धुरदरगाही बणया जामन, दो जहानां वेख वखांयदा। आपे होया कृष्ना रामन, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। सीता सुरती देवे चानन, एका घर सुहांयदा। राधा मिले गोपी कानन, हरि साचा काहन आप हो जांयदा। एका मारे तीर बानन, रावण गढ़ तुड़ांयदा। रथ रथवाही चाल निरालण, आप आपणी कल वरतांयदा। नानक गुर शाह सुल्तानन, एका पुरख मनांयदा। अंगद अमर रामदास सहिज सुख भानन, दूसर दर ना कोई वखांयदा। गुर अर्जन बद्धा मात बानन, गुरु ग्रन्थ साचा पन्थ इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस रिहा कर, निराहार निराकार इक्क आकार करांयदा। अर्जन गुर वड वड्या, हरि हरि लेखा लिखाया। एका घर मार्ग दोए ला, दोहां वेख वखाया। तीजा बणया बेपरवाह, बेअन्त नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द दए सुहाया। हरि गोबिन्द मेला हरि करतार, दोवें रंग रंगाईआ। आप आपणी किरपा धार, आपणा रंग वखाईआ। खड़ग खण्डा फड़ कटार, दूतां दुष्टां दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे वड वड्याईआ। हरिराए हरि हरि पाए, हरि हरि मूल चुकाया। हरि हरिकृष्ना हरि वेख वखाए, आप आपणे लेखे लाए, बिरध बाल जवानी ना कोए जणाए, तेग़ बहादर तेग उठाए, एका खण्डा वाहया। सति सन्तोखी ढाल जणाए, जालम जुल्म रोक रुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वार चलाया। तेग बहादर नाम तेग, एका हथ्थ उठाईआ। मिल्या मेल खेल शमस तबरेज़, तबरेज़ सेवा रिहा कमाईआ। लिख्या लेखा

फरंगी अंग्रेज़, भारत खण्डी फेरा पाईआ। शब्द सुनेहड़ा हरि हरि साचा रिहा भेज, गुर तेग बहादर रिहा सुणाईआ। गुर पूरे विछाई आत्म सेज, उत्ते सुत्ता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रिहा जणाईआ। तेग बहादर बण लिखारा, लिख्या लेख शाह फरंगी। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, करे कटार नंगी। मूर्ख मुग्धां पावे सारा, दो धड़ कराए जंगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, गुर तेग बहादर अन्तिम मंग मंगी। गुर तेग बहादर मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी तेरा रंग, काया चोली तन रंगाईआ। सदा वसणा साचे संग, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। मेरा लहिणा ना होवे भंग, बिन तेरे ना सके मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी दए गवाहीआ। तेग बहादर रक्खणा याद, हरि साचे लेख लिखाया। तेरी अन्तिम सुणे फ़रयाद, शाह फरंगी दए कढाया। एका ढईआ रक्ख मनिआद, साचा सईआ वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लहिणा आपणे हथ्थ रखाया। अन्तिम कलिजुग फेरा पाउणा, पुरी घनक वसेरा। तेरा लिख्या मूल चुकाउणा, शाह फरंगी लाए डेरा। सन्त मनी सिँघ संग रलाउणा, करे हक्क निबेड़ा। आपणे उप्पर पड़दा पाउणा, छुपाउणा काया खेड़ा। सोया सुत इक्क जगाउणा, पंजां तत्तां चुक्के झेड़ा। राज राजाना आप समझाउणा, वखाए खुल्ह्हा वेहड़ा। भरम भुलेखे आप भुलाउणा, देवे उलटा गेड़ा। अन्तिम जोती जामा भेस वटाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम रखाउणा। आपणा नाम आपे रक्ख, आप अवाज़ लगाईआ। ना कोई वेखे रूप प्रतक्ख, साख्यात ना कोई जणाईआ। ना कोई कीमत पाए करोड़ी लक्ख, ना लक्खो कक्ख वखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे दुआरे सक्ख, जगत भण्डार ना कोई वरताईआ। प्रभ शब्द चलाए इक्क अकथ, चार वरनां करे जणाईआ। सर्बकला आपे होवे समरथ, ना कोई दूसर होर रखाईआ। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, जोग अभ्यास ना कोई जणाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी करे भट्ठ, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी कोई ना नहाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, एका चरन सरन सरनाईआ। गुरसिख तेरा रक्खणहारा हठ, अन्दर बैठा रथ रथवाहीआ। आपे मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, घर घर फेरा पाईआ। हाढ़ सतारां कर इक्ट्ठ, आपणा सीस गुर संगत तेरे पैरां हेठ दबाईआ। तेरे चरन आपणे सिर लए रक्ख, लै के जाए धुरदरगाहीआ। राए धर्म नेत्र रो रो नीर वहाए अथ्थ, चित्रगुप्त मारे धाईआ। इन्द्र पुरी होए भट्ठ, करोड़ तेतीसा रहे कुरलाईआ। शिव शंकर खोल्हे माला कंठ गट्ठ, बाशक तशका गलों लाहीआ। ब्रह्मा नेत्र अट्ठे खोल्हे आत्म अन्तर आपणे बोले दिस ना आए हरि समरथ, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। हरिसंगत

तेरा कर इक्ट्ठ, हाढ़ सतारां ख़ुशी मनाईआ। लक्ख चुरासी पैणी भट्ठ, कलिजुग रिहा आप तपाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां दो जहानां ना कोई सके रक्ख, गुर पीर ना कोई सहाईआ। त्रैगुण माया तेरे उडणे कक्ख, पल्ले गंढ्ढ ना कोई कराईआ। हरिसंगत हरि करे वक्ख, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दरस दिखाए हो प्रगट, हो प्रतक्ख पंज तत्त डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर तेग बहादर तेरा वर, अन्तिम पूर कराईआ। गुर तेग बहादर झोली डाह, एका आस रखाईआ। प्रभ अबिनाशी तेरा राह, नित नवित्ता रिहा तकाईआ। कलिजुग अन्तिम बण मलाह, मेरा बेड़ा बन्ने लाईआ। जूठी झूठी लग्गी ढाह, ना दिसे कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आपे मेल मिलाईआ। देवे वर मेल मिलाया, पाया पुरख अपारा। शब्द शब्दी रंग रंगाया, छुट्ट गया संसारा। साचा दर इक्क सुहाया, सोहे बंक दुआरा। राग अनादी इक्क वजाया, छत्ती रागां वसे बाहरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे विहारा। सगला संग सर्ब निभाउणा, हरि साचे वड वड्याईआ। पूत सपूता इक्क उपजाउणा, गुर गोबिन्द जणाईआ। एका मार्ग जगत लाउणा, एका राह चलाईआ। एका सिख्या दे समझाउणा, एका करे पढ़ाईआ। एका शब्द तन पहनाउँणा, इक्क दस्तार सजाईआ। एका रूप हरि दरसाउणा, ना कोई मूंड मुंडाईआ। धीरज यति दा बंधन पाउणा, दोए बन्द कराईआ। साचा नीर इक्क वखाउणा, निर्मल नीर धराईआ। आप आपणा विच टिकाउणा, दिस किसे ना आईआ। शब्द अनादी एका गाउणा, अर्जन गुर जणाईआ। भगत प्यार विच पाउणा, मिट्ठा रस वखाईआ। नाम खण्डा विच फिराउणा, लुहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। साची संगत हरि समझाउणा, आप आपणी रसन अलूाईआ। सतिगुर साचा जिस जन पाउणा, दर आउणा हो गुमराहीआ। आप आपणा भेट चढ़ाउणा, गुरमति एह वखाईआ। एका शब्द इक्क रसन इक्क अलूणा, एका आउणा करे धाईआ। पंचम मेला आप मिलाउणा, पंचम डेरा लाईआ। पंचम राग आप सुणाउणा, पंचम खोज खोजाईआ। हरि दरस आप दिखाउणा, प्रतक्ख दरस गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द खेल अपार, नैणा हवन कराया। एका इष्ट रक्ख करतार, देवी देव मनाया। सृष्ट सबाई ना पावे सार, ना कोई लेखा लेख लिखाया। पुरख अबिनाशी हो त्यार, लोकमात उठ धाया। केशो पंडत गया हार, आपणा मुख भवाया। जोत अकाला पावे सार, दीन दयाला नाम धराया। नाम खण्डा खिच कटार, गुर गोबिन्द तन छुहाया। हरि साचा करे इक्क प्यार, साची सिख्या दे समझाया। साचा शस्त्र साचा बस्त्र विच संसार, साचा अस्त्र नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आपे देवणहारा वर, आपे वेख वखाया।

नाम खण्डा अपर अपारा, हरि साचे तन पहनाया। सतिगुर पूरा कर प्यारा, तन श्रृंगार वखाया। एका अमृत ठंडी ठारा, धुरदरगाही जाम प्याया। मेल मिलाए पंचम प्यारा, पंचम होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन वेख वखाया। एका साता कर प्यार, गुर गोबिन्द वेख वखाया। एका साता कर उज्यार, सगली चिन्द मिटाया। एका साता बन्ने धार, गुणी गहिंद वड वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सत्त मुख रखाया। एका साता सत सतारा, सतिगुर रूप समाया। सतिगुर खेले खेल न्यारा, भेव कोई ना राया। पंचम मीता पंचम कर प्यारा, एका पांचा अग्गे लाया। छेवां घर सोहे बंक दुआरा, चौथा मुख उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका साता पांचा छीका एका डोर बंधाया। इक्क इकल्ला एकँकार, साता सति पुरख अख्वाया। एका साता बण सतार, सतारां, नाउँ धराईआ। पंचम प्यारे कर प्यार, पंचम मोह चुकाईआ। छेवां वेखे सच दरबार, गुर गोबिन्द बैठा लाईआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी कर विहार, पन्थ पन्था दए उपजाईआ। गुरु ग्रन्थ रक्ख संसार, दे मति गया समझाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादि पंज तत्त बदले चोला, ना कोई सके बन्द कराईआ। धुरदरगाही शब्द सरूपी गाए ढोला, आप आपणा नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची नींह लोकमात धराईआ। एका ढईआ लाए ढाह, कलिजुग पार किनारा। सतिगुर पूरा बण मलाह, लोकमात लए अवतारा। खाणी बाणी कोई जाणे ना, वेद पुराण ना जानण सारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वड मृगिन्द, एका देवे नाम सहारा। गुर गोबिन्द नाम वटा, सिँघ रूप अख्वाया। सिँघ गुर आप हो आ, गोबिन्द सिँघ मूल चुकाया। सच सिँघासण वेख वखा, निरगुण आसण लाया। पावा चूल ना कोई लई बणा, ना कोई बाडी बणत बणाया। किसे मन्दिर गुरद्वार मस्जिद मट्ठ शिवदवाले ना बैठा डाह, हथ्थ किसे ना आया। गुरसिख तेरा दिवस रैण काया मन्दिर अन्दर बैठा तक्के राह, इक्क ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, एका मार्ग लाया। चार वरन मार्ग ला, इक्क दस्तार बंधाईआ। एका अमृत जाम पया, एका गुण जणाईआ। एका बस्त्र तन छुहा, ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। एका गहिणा हथ्थ पा, नाम कंगण वंड वंडाईआ। धीरज यति सति सन्तोख रिहा वखा, एका बंधन पाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस लए वधा, साचा रूप दरसाईआ। आप आपणा विच ल्या टिका, आप आपणा भेव चुकाईआ। पंचम मीता नाम धरा, पंचम रिहा सेव कमाईआ। पंचम अग्गे झोली डाह, मंगे मंग सच निआईआ । मेरा बख्शो जगत गुनाह, एका सिख्या रिहा पढ़ाईआ। अमृत पीणा साचे थाँ, दूई द्वैती दए गंवाईआ। एका पिता एका माँ, एका गुर सहाईआ। जोती

४३८
०७

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मार्ग लाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे बूझ बुझाया। आपे हिरदे रिहा वस, आपे दरस दिखाया। आपे तीर निराला रिहा कस, आपे बाण उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति एह समझाया। तीर निराला वज्जे बाणा, गुर शब्दी बचन अलाया। हरि का साधो मन्नणा भाणा, हरि साचा विच समाया। धुरदरगाही साचा राणा, एका एक अख्वाया। अकाल पुरख एका गाणा, ना कोई दूसर गुरु मनाया। गुरु ग्रन्थ ज़ामन विच इक्क टिकाणा, दे मति रिहा समझाया। भुल्ल रुल्ल ना वक्त गंवाणा, कलिजुग कूड़ अन्धेरा छाया। शब्द खोज वेख पद निरबाना, हरि शब्दी खोज खोजाया। खेले खेल दो जहानां, भेव कोई ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। गुर गोबिन्द सिंघ रूप, सतिगुर नां धराया। मंगे मंग शाह भूप, भिख्या भिखक पाया। कलिजुग कूड़ पसारा जूठ झूठ, ठग्ग चोर यार होए हलकाया। पारब्रह्म प्रभ आपे जाए तुठ, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर बचन अलाया। सुणया शब्द गुर गोबिन्द, आत्म वज्जी वधाईआ। प्रभ आप उपजाई साची बिन्द, पूत सपूता नाउँ धराईआ। वड दाता शाह गुणी गहिंद, तेरी ओट तकाईआ। अन्तिम मिटौणी कलिजुग चिन्द तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। तेरा तेरी करे निन्द, तेरा मेरा भेव ना जाणे कोई राईआ। तूं सदा दाता बख्शिंद, सृष्ट सबाई होए सदा गुनाहीआ। जन भगतां मेटी सगली चिन्द, जो बैठे राह तकाईआ। लहिणा देणा चुकाउणा सुरपति राजे इन्द, करोड़ तेतीसे मेटे शाहीआ। शिव शंकर मिटौणी सगली चिन्द, अन्तिम लेखा पूर कराईआ। ब्रह्मे मिलाउणा आप आपणी बिन्द, आप आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल करनहारा आप हो जाईआ। पुरख अबिनाशी दए सलाह, गुर गोबिन्द हरि समझाया। तेरा बेड़ा हरि मलाह, कलिजुग अन्तिम दए चलाया। शब्द विचोला करे सलाह, दो जहानां फेरी पाया। एका ढोला लैणा गा, सोहँ नाम धराया। सो पुरख निरँजण हरि आप अख्वा, हँ तेरा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूआ दूआ एका एका रंग रंगाया। मेरी धार तेरा रंग, शब्द वज्जे वधाईआ। तेरा नाम मेरा मृदंग, लोआं पुरीआं करे जणाईआ। तेरी सेज मेरा पलँघ, बैठा आसण लाईआ। शब्द सुनेहड़ा आपे भेज पूरी करे तेरी मंग, अन्तिम मेल मिलाईआ। चरन धूढ़ नुहाए साची गंग, सरोवर इक्क वखाईआ। साचे अस्व कसे तंग, नीला नीली धारों पार कराईआ। अन्तिम मंगणा साची मंग, प्रभ पूरी दए कराईआ। दाता जोधा सूरा सरबंग, सर्बकल अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा संग निभाईआ। गुर गोबिन्द मिल्या वर, रसना शब्द अलाया। इक्क वसाउणा साचा घर, सम्बल नगरी धाम सुहाया।

बिन हरि होर ना कोई सके घड़, ना कोई बाढी बणत बणाया। बिन हरि होर ना सके कोई चढ़, ना पौड़ा दिस दिसाया। बिन हरि कोई ना सके अन्दर वड़, ना कोई कुण्डा कोई लाहया। अन्तिम तेरा लड़ लए फड़, ना सके कोई तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। कलिजुग अन्तिम हरि हरि आउणा, आपणा वेस वटा। जोती नूर खेल खिलाउणा, निहकलंका नाम धरा। शब्द डंका इक्क वजाउँणा, चोट तन नगारे ला। राज राजानां शाह सुल्तानां जगत उठाउणा, देवे शब्द सुणा। साधा सन्तां मूल चुकाउणा, जूठी झूठी ढेरी ढाह। आत्म गन्द मेट मिटाउणा, कलिजुग अन्तिम दिसे ना। जेरज अंडां फोल फुलाउणा, उत्भुज सेतज छड्डे ना। ब्रह्मण्डां हरि फेरा पाउणा, नौ खण्ड पृथ्मी वेखां थाँ। सत्तां दीपां आप हलाउणा, आप जणाए आपणा नाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां देवे ठंडी छाँ। निहकलंक नाम धर, शब्दी डंक वजावणा। वेखणहारा साचा घर, ना भेव छुपावणा। लक्ख चुरासी जाए हर, अन्तिम मुख भवावणा। गुरमुख विरला जाए तर, जिस चरनी सीस निवावणा। दरस दिखाए अग्गे खड़, पूर कराए भावना। ना कोई सीस ना कोई धड़, तोड़े लंका गढ़ रावणा। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, भेखाधारी धरे भेख बावना। जगत अग्नी गया सड़, अमृत बरखे सीतल सावना। पंच विकारा वगे हड़, मनमुख जीव सर्ब रुड़ावणा। गुरमुख विरला साचे पौड़े जाए चढ़, पूरन ब्रह्म करे पछानणा। साचे अन्दर जाए वड़, ना छुट्टे हरि का दामना। हरि सुहाए कंचन गढ़, धुरदरगाही होए ज़ामना। कोई ना सके अग्गे अड़, प्रभ मारे तीर निशानना। कलिजुग उखेड़े लग्गी जड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वावणा।

४४० ०७

निरगुण रूप जोत उजाला, आदि निरँजण दाता। पारब्रह्म प्रभ पुरख गोपाला, सर्ब जीआं पित माता। लक्ख चुरासी होए रखवाला, आत्म बंधाए नाता। चले चाल इक्क निराला, पूरन पत पुरख बिधाता। जोती नूर इक्क ज्वाला, आदि शक्त इक्क अकाता। थिर घर रक्ख सच्ची धर्मसाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी दाता। निरगुण रूप पुरख अकाल, आदि अन्त अख्वाया। सति सरूप सदा दयाल, नारी कन्त समाया। आपणी सुरत आप संभाल, आपणा मंत चलाया। आपणे अन्तर आपे मारे छाल, आपणा रस चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर अख्वाया। नूरो नूर हरि निरँकार, निरगुण धार चलाईआ। इक्क अकल्ला कर पसार, अकल कला अख्वाईआ। खेले खेल अपर अपार, खेलणहार आपे बेपरवाहीआ। आदि अनादी बेऐब परवरदिगार, पारब्रह्म पुरख

अख्वाईआ। सति सरूप सच्ची सरकार, सति सतिवाद अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि प्रकाश, परम पुरख अख्वाया। आदि जुगादि ना जाए विनास, आदिन अन्ता नाम धराया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, लोआं पुरीआं फेरा पाया। मण्डल मण्डप पावे रास, रवि ससि सेवा लाया। लक्ख चुरासी वसे पास, दिस किसे ना आया। पवण चलाए इक्क स्वास, आप आपणी दया कराया। हर घट आपे रक्खया वास, घर घर मन्दिर डेरा लाया। पारब्रह्म प्रभ होया दास, पंज तत्त समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग धारे भेस अवल्ला, पारब्रह्म बेअन्ता। आपे वस्सया इक्क अकल्ला, मेल मिलावा साचे सन्ता। वेख वखाए जल थलां, डूँघी कन्दर फोल फोलंता। करे कराए एका हल्ला, एका काम करंता। आपणे फल आपे फला, आपे तोड़ तुड़ंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण साचा धाम सुहंता। साचा धाम हरि बनवारी, एका एक सुहांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारी, आकाश प्रकाश चलांयदा। शब्द सिँघासण एका भारी, थिर घर डेरा लांयदा। तख्त बैठा सच्चा सिक्दारी, सच्चा शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। उठया शब्द पहरेदारी, दर दरबान अख्वांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदारी, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। हरि हरि करता देवे हुक्म वारो वारी, लोकमाती राह तकांयदा। जुग जुग खेले खेल न्यारी, खेलणहार वेस वटांयदा। आदिन अन्ता एका एकँकारी, ओंकारा नाम धरांयदा। जन भगतां पैज रिहा संवारी, एका आत्म ब्रह्म जणांयदा। वजाए धुन सच्ची धुन्कारी, अनहद साचा ताल रखांयदा। जोत निरँजण कर उज्यारी, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। बजर कपाटी देवे पाड़ी, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। नौ दुआरे पार किनारी, घर दसवां वेख वखांयदा। आत्म सेजा कर प्यारी, सच सिँघासण वेख वखांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, चिट्टी धार वहांयदा। अट्ठे पहर रिहा विचारी, हरिजन सुरती राह तकांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यारी, अकाल मूर्ति मेल मिलांयदा। आपे पुरख आपे नारी, नारी कन्ता आप हो जांयदा। सरगुण मेला वड संसारी, हरि सागर गहर गम्भीर समांयदा। वेखणहारा वारो वारी, जुग जुग वेस वटांयदा। लोकमात कर त्यारी, पंज तत्त समांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए आधारी, एका धीर धरांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहरी, भेव कोए ना पांयदा। करे खेल अपार अपारी, जोती नूर टिकांयदा। सतिजुग साचे दए अधारी, अट्ठ अठारां मूल चुकांयदा त्रेता तेरा भर भण्डारी, दोए दोए वेख वखांयदा। द्वापर तेरा मीत मुरारी, लहिणा देणा झोली पांयदा। कलिजुग तेरी खेल खिलारी, हरि आपणी वंड वंडांयदा। पाए हिस्सा हरि गिरधारी, वरन बरनी राह चलांयदा। एका दूजा कर सिक्दारी, तीजा राह वखांयदा। चौथे दर हाहाकारी, ना कोई पंचम मेल मिलांयदा।

छेवां मन्दिर होए उजाड़ी, सत्तवे सति पुरख निरँजण ना कोई ध्यांअदा। अट्ठां तत्तां मगर लगाए पंचम धाड़ी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रलांयदा। नौ दर वेखे अग्ग लग्गी बहत्तर नाड़ी, ना कोई मात बुझांयदा। दसवें बैठ जोत निरँकारी, आप आपणा बन्द करांयदा। माया पड़दा पाए भारी, जीव जन्त ना कोए लांहयदा। काया गढ़ बणा हँकारी, उप्पर चढ़ वेख वखांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनारी, दर साचा आप सुहांयदा। शब्द डंका मारे वारो वारी, लक्ख चुरासी आप उठांयदा। ईसा मूसा कर त्यारी, हरि जोती नूर रखांयदा। संग मुहम्मद चार यारी, एका मता पकांयदा। अल्ला राणी कर प्यारी, नाता जोड़ जुड़ांयदा। कलमा अमाम शाह सवारी, आपणा आप सुणांयदा। अज़मतो कसमतो खेल न्यारी, अहिबाब रबाब वजांयदा। दो दो आबा पैज संवारी, पुन्न सवाब ना कोई रखांयदा। कँवल नाभा अमृत धारी, आपणा मुख उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंड वंडांयदा। शब्द वंड करे बलवाना, पारब्रह्म अख्वांयदा। खेले खेल दो जहानां, भेव कोई ना पांयदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया कर प्रधाना, जूठ झूठ संग रलांयदा। माया ममता बद्धा गाना, हउमे हँगता मेल मिलांयदा। पंज रलाए नाल शैताना, अट्ठे पहर उठांयदा। मनमति कर प्रधाना, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। बुध बाली होए नादाना, ज्ञान गोहझ ना कोई जणांयदा। खेले खेल श्री भगवाना, श्री धर नाम धरांयदा। जन भगतां देवे नाम निधाना, अन्तर आत्म वेख वखांयदा। शब्द वखाए सच निशाना, धुरदरगाही आप चलांयदा। उप्पर लिखे लेख महाना, सोहँ नाउँ रखांयदा। मारे तीर इक्क निशाना, एका चिल्ला आप उठांयदा। खेले खेल गोपी काहना, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। सीता सुरती कर परवाना, राम रामा घर प्रनांयदा। अर्जन देवे इक्क ज्ञाना, एका शब्द अलांयदा। कलिजुग रक्खया नौजवाना, हरि साचा वेख वखांयदा। एका शरअ इक्क शरायत दए धुर फ़रमाणा, एका कलमा आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण खेल हरि खिलंता, अकल कला कल धारीआ। कलिजुग आपणा वेस वटंता, संग मुहम्मद चार यारीआ। अल्ला राणी मेल मिलंता, सुहाए बंक द्वारीआ। एका नाअरा आप सुणंता, हू हू तेरी वारीआ। एका साचा धाम सुहंता, मकामे हक्क मेला साचे यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल परवरदिगारीआ। निरगुण रूप परवरदिगार, एका नाम ख़ुदाईआ। ख़लक ख़लक ख़ुदाई कर पसार, दीन अलाहीआ। दीन अलाही कर विचार, इक्क शरायत सुणाईआ। इक्क शरायत बन्ने धार, एका आइत अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वंडन वंड वंडाईआ। निरगुण आपणा कर पसारा, जुग जुग खेल खिलांयदा। कलिजुग खेले खेल न्यारा, वेद कतेब ना कोई रखांयदा। पुराण अठारां पाए सारा, हरि साचा

मुख भवांयदा। अञ्जील कुराना कर न्यारा, आपणा राह वखांयदा। मुख छुपाया कृष्न मुरारा, रामा राम ना कोई ध्यांअदा। गणपति गणेशा गया हारा, शिव शंकर ना त्रिशूल उठांयदा। ब्रह्मा वेखे ना नैण उग्घाड़ा, अट्ठे नेत्र बन्द करांयदा। करोड़ तेतीसा ना कोई ललकारा, सुरपति राजा इन्द मुख छुपांयदा। पुरख अबिनाशी एका शब्द कर त्यारा, लोकमात रखांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, नानक नाम रखांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, निरगुण वेस वटांयदा। शब्द शस्त्र इक्क प्यारा, तन गात्रे आप लटकांयदा। मनमति मारे वारो वारा, गुरमति इक्क प्रनांयदा। जीवां जन्तां कर प्यारा, साधां सन्तां समझांयदा। दाता दानी खेल न्यारा, खेलणहार दिस ना आंयदा। मात पिता ना पावे सारा, ना कोई भेव जणांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, आपणे दर मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी वंड वंडांयदा। आपणे दर आपे सद्द, आपे दया कमाईआ। नाम प्याए साची मदि, इक्क ख़ुमार रखाईआ। भाग लगाए शब्दी पद, विष्नूं वंसी आप अख्वाईआ। इक्क जणाई बोध अगाधा, धुर दी धार समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आत्म अन्तर इक्क वजाए साचा नादा, अनहद सेवा लाईआ। रसना गाए ना कोई सदा, बत्ती दन्द ना कोई जणाईआ। अजप्पा जाप मिले माधव माधा, एका सच पढ़ाईआ। मेट मिटाए वाद विवादा, जिस घर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी वंड वंडाईआ। वंडे वंड नाम सति, लोकमात जैकारा। लेखे लाए पंज तत्त, जिस जन देवे कर प्यारा। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, पंज चोर ना करे ख्वारा। आत्म बीजे साचे वत, बीजणहार आप करतारा। फुल फुलवाड़ी वेख पत्त, फल अमृत लग्गे डाला। सति सन्तोखी देवे धीरज जत, काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला। हरि का मन्दिर कदे ना जाए ढठ्ठ, दीपक जगदी रहे ज्वाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल निराला। नाम सति पाई वंडी, हरि साचा वंड वंडांयदा। खेले खेल विच वरभण्डी, पाखण्डी मेट मिटांयदा। गुर नानक हथ्थ फड़ाई कंडी, एका तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता साचा बोला, सोहँ रसना गांयदा। नानक सोहँ रसना गा, आपणा मूल चुकाया। तेरा मेरा भेव ना रा, निरगुण सरगुण इक्क अख्वाया। सरगुण तेरा साचा थाँ, निरगुण डेरा लाया। निरगुण तेरा साचा नाँ, सरगुण साचा दए जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाया। नाम सति वंड वंडा, अल्ला हू विचारया। ऐनलहक्क वेख वखा, मेल मिलाए दस्म दुआरया। मुकामे हक्क इक्क ख़ुदा, सचखण्ड मेल मिला रिहा। दोहां विचोला बेपरवाह, भेव कोई ना पा रिहा। सति पुरख निरँजण आप अख्वा, नूरो नूर आप उपजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती नूर हरि, शब्दी

नाद ताल वजा रिहा। शब्दी नाद ताल वज्जे तलवाड़ा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे इक्क अखाड़ा, धुरदरगाही बैठा लाईआ। सच सिँघासण बैठ सच्चा लाड़ा, आप आपणा रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर धर जुग जुग वेखे आपणा घर, लोकमात खेल कर, कलिजुग करे कन्त कुड़माईआ। कलिजुग करी हरि कुड़माई, काम क्रोध प्रनाया। लोभ मोह करे लड़ाई, हथ्थ हँकार उठाया। माया ममता धी जवाई, ना सके कोई बचाया। मनमति नेत्र नैण कजला रही पाई, मनमुख जीव करे हलकाया। जूठ झूठ वज्जी वधाई, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। धरत मात नेत्र रो रो नीर रही वहाई, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कलिजुग पकड़ पछाड़े दोवें बांही, उप्पर आपणा भार उठाया। जीव जन्त ग़रीब निमाणे रहे कुरलाई, क्रिया कर्म ना कोई जणाया। साधां सन्तां मिल्या मेल ना हरि साचे माही, जूठे झूठे बैठे धूणीआँ ताया। कोटी कोट बन्नृ लंगोट फिरदे थाँईं थाँईं, यति सति ना कोई रखाया। कोई ना देवे सिर ठंडीआं छाँईं, गुरदर मन्दिर मस्जिद डेरा लाया। शिवदवाला मट्ठ पई दुहाई, पंडत पांधे रहे कुरलाया। मुल्लां शेख़ करन लड़ाई, कुतब गौंस ना कोई सहाया। पीर फकीर ना करे जणाई, दस्तगीर नज़र ना आया। अमृत सर सरोवर हँस बणाए फड़ फड़ काईं, भर प्याला ना किसे प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर दित्ता वर, एका शब्द अग्गे धर, एका राह वखाया। नानक गुर परउपकारा, चार वरन प्रनांयदा। चारे कुन्टां पावे सारा, दहि दिशा उठ धांयदा। जीवां जन्तां साधां सन्तां वेखे वारो वारा, मूर्ख मुग्ध गढ़ हँकार तुड़ांयदा। एका कंडा हथ्थ दो धारा, शब्दी नाउँ धरांयदा। उच्चे टिल्ले पावे सारा, गोरख मच्छन्दर फोल फोलांयदा। मुल्लां शेख़ मसायक काज़ी इक्क सुणाए साचा नाअरा, हक्क हकीकत इक्क सुणांयदा। पंडत पांधे ज्ञान ध्यान कर उज्यारा, एका ब्रह्म वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, अगम्म अगम्मड़ा रूप वटांयदा। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोई करे कल आकारा, दिस किसे ना आंयदा। जुग जुग आपणा लै अवतारा, जोती जामा भेख वटांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, ईसा मूसा कर त्यारा, नाल रलाए संग मुहम्मद चार यारा, लोकमाती वेख वखांयदा। नानक गुर कर प्यारा, एका देवे शब्द अधारा, जोती नूर कर पसारा, पंज तत्त समांयदा। इक्क ज्ञान इक्क ध्यान, इक्क चरन इक्क अशनान, इक्क धूढ़ एका मस्तक एका टिक्का इक्क ललाट एका घाट पार करांयदा। गुरमुखां दिसे नेड़े वाट, मनमुखां दर दुरकांयदा। चौदां लोक वखाए साचा हाट, चौदां तबकां फोल फोलांयदा। ज़िमीं अस्माना पाड़ा जाए पाट, गुर पूरा नेत्र आपणा आप उठांयदा। कदे ना सुत्ता ख़ाकी ख़ाक खाट, नूर विछाउणा इक्क विछांयदा। विच ना आए आन बाट, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। एका जोती नूर ललाट, आपणी आप रुशनांयदा। अन्तिम काया चोली

जाए पाट, थिर कोई रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप खेल कर, जुग जुग आपणी वंड वंडांयदा। नानक चोला हरि घर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। एका ढोला नाम रखाया, दिवस रैण रिहा गाईआ। सोहँ ढोला साचा गाया, एका दूजा भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप वखाए साचा घर, घर साचा आदि निरँजण बैठा बेपरवाहीआ। आदि निरँजण हरि बेअन्त, परम पुरख अपारा। खेले खेल जुगा जुगन्त, लोकमात अवतारा। गुरमुख उठाए साचे सन्त, जन भगतां मीत मुरारा। जिह्वा रसना जपाए मणीआ मंत, शब्दी शब्द अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर होए अवतारा। एका गुर इक्क अवतारा, एका रूप वटाईआ। एका शक्ती भर भण्डारा, आदि शक्त नाम वड्याईआ। इक्क विअकती पुरख अगम्म अगम्म अपारा, अगम्मड़ी धार चलाईआ। ना मरे ना पए जम्म विच संसारा, आवण जावण रचन रचाईआ। आप आपणा कर उज्यारा, आपे लए मिटाईआ। आपे वस्सया धूंआँधारा, धुंधूकार वखाईआ। सगल सृष्टी कर पसारा, बैठा आसण लाईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, करता पुरख नाउँ धराईआ। निरगुण रूप सच्ची सरकारा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्द सरूपी मारे एका नाअरा, घर घर अवाज़ लगाईआ। कलिजुग अन्तिम हो त्यारा, आया भेस वटाईआ। एका तत्त इक्क प्यारा, एका बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया पार किनारा, तत्व तत्त अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच टिकाईआ। निरगुण रूप अवर ना दोआ, गुरू गुरु गुर देवा। आलस निन्दर विच कदे ना सोया, पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेवा। उपाए खपाए ना कदे हस्से ना कदे रोया, आदि अन्त नूरो नूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात आपणा शब्द लै के आवे साचा ढोआ। नाम सति शब्द चला, हरि नामे वणज कराया। एका मति गया समझा, एका रूप दरसाया। एका पति गया रखा, पतिपरमेश्वर होए सहाया। एका यति गया बणा, धीरज धीर धराया। एका सति गया वखा, सति सन्तोख नाम उपाया। एका वत एका बीज गया बिजा, बिन अंगद फल किसे ना खाया। सृष्ट सबाई होई नंगत, ना पड़दा कोई पाया। नौ द्वार घर घर फिरदी मंगत, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटाया। मिल्या धाम ना साची संगत, बिन गुर पूरे कोई ना साचा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत वेस वटाया। जोती शब्दी वेस वटा, पंज तत्त समांयदा। अंगद गहिणा देवे पा, दिस किसे ना आंयदा। लहिणा देणा मूल चुका, काया तृप्त करांयदा। मनमुखता दए मिटा, अगम्म अगम्मता शब्द पढ़ांयदा। भुक्खा नंगता लेखे ला, शाह सुल्तान बणांयदा। नाम धन सच ख़जाना झोली पा, अतुट भण्डार चलांयदा। आपणा अक्खर आप सिखा, आपे लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप

४४५
०७

हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा कर विहार, तीजा नेत्र आप खुल्हांयदा। तीजा नेत्र अमरपद, गुर पूरे एका पाया। राम दास वज्जी सद, साचा नाम सुणाया। पार कराया कोट ब्रह्मद, पारब्रह्म मिलाया। आपे वेखे आपणी यद्द, आपणा रूप वटाया। गुर अर्जन शब्द डोरी बंध, एका चरन दिसाया। जोत सरूपी चाढ़े चन्न, लोकमात करे रुशनाया। रवि ससि देवत सुर ब्रह्मा शिव करन धन्न धन्न, गण गंधर्ब फुल बरसाया। पुरख अबिनाशी एका गया मन्न, गुर नानक राह वखाया। एका शब्द सुणाए कन्न, ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। लेखे लाया जननी जन, जन जनका आप बणाया। भाग लगाया काया तन, पंज तत्त करे रुशनाया। सृष्ट सबाई बेड़ा बन्न्ह, हरि का भेव खुल्हाया। जीवां जन्तां कढ्ढे जन, एका शब्द अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान एका शब्द दृढ़ाया। एका ज्ञान दीआ गुर नेत्र, हरि वड वड्डी वड्याईआ। खेले खेल काया खेत्र, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। रुत्त बसन्ती महीना चेत्र, सद ही रंग रंगाईआ। शब्दी शब्द बणया हेतड़, साचा हित कमाईआ। सन्त दुलारा जेठी जेठड़, जेठ अग्नी रिहा बुझाईआ। बोध अगाधा शब्दी लेखड़, गुरु ग्रन्थ उपाईआ। गुर तेग बहादर लाए पल्लेथड़, उप्पर पोच पुचाईआ। साधा सन्तां गुरमुखां भगतां रक्खे छाया हेठड़, मनमुखां दए दुरकाईआ। मस्तक टिक्का लाए रत्ती केसर, साचे किले सगन मनाईआ। कलिजुग अन्तिम मेला होए थनेसर, काहना कृष्ना गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रिहा वंड वंडाईआ। निरगुण साची वंड वंडौणी, हरि गोबिन्द हरि दाता। हरिराए हरि खेल खिलौणी, हरिकृष्ना मेल मिलाता। तेग बहादर एह समझौणी, सीस धड़ तोड़े नाता। गुर गोबिन्द इक्क कमान तीर उठौणी, मेटे रैण अन्धेरी राता। चार वरनां एका धार बणौणी, एका होए पिता माता। दुरमति मैल कट्ट वखौणी, उत्तम होए ज़ाता। अमृत धार मुख चुऔणी, वरन बरन कराए एका जाता। एका सिख्या सिक्ख समझौणी, अमृत आत्म बूंद स्वांता। आपणी लाज आप रखौणी, ना कोई दूसर भैण भ्राता। सच सुच्च संजम तेरा हथ्थ उठौणी, ज़ोरू ज़र जुल्म नेड़ ना आए कमज़ाता। पल्ले नाम गंढु बन्न्हौणी धुरदरगाही साची दाता। अकाल मूर्त इक्क धिऔणी, गुर पीर ना होर पछाता। इष्ट देव देवा इक्क वखौणी, निर्मल जोत जगे अकाता। आपणी पछाण आप समझौणी, इक्क ज्ञान इक्क जमाता। शब्द सुर ताल इक्क खड़कौणी, राग रंग ना कोई पछाता। निरगुण आपणी वंड आप वंडौणी, कलिजुग अन्तिम नाता तोड़े पित माता । शब्द कटार हथ्थ उठौणी, लोआं पुरीआं मारे झाका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम लहिणा देण चुकाए बाका। कलिजुग अन्तिम जोत जगा, हरि नूर करे रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ रक्खा, आपणा कर्म कमाईआ। शब्द डंका दए वज्जा, नौ

४४६
०७

खण्ड दए सुणाईआ। राउ रंकां दए उठा, साधां सन्तां हिलाईआ। द्वार बंका दए सुहा, गुरमुख साचे लए जगाईआ। जन जनका मेला लए मिला, हरिभगत वड्डी वड्याईआ। जोती तनका दए लगा, खिची जाए वाहो दाहीआ। वासी पुरी घनका दया कमा, हरिजन साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका वंडी रिहा वंडाईआ। शब्द सरूपी वंडे वंड, पारब्रह्म करतारा। वेख वखाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज पावे सारा। मेट मिटाए भेख पखण्ड, ना कोई दिसे दुहागण नारा। शब्द फड़े चण्ड प्रचण्ड, सोहँ बोले सच जैकारा। लक्ख चुरासी वढ्ढे कंड, लोआं पुरीआं दए हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक लए अवतारा। निहकलंक कल जामा धार, निरगुण जोत जगाईआ। साल बवन्जा कर प्यार, पंज तत्त हंढाईआ। वीह सद बिक्रमी कर उज्यार, पोह छब्बी रुत्त सुहाईआ। जोती जोत मेल सच्ची सरकार, आप आपणा मूल चुकाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, लोकमात कर कर आया धाईआ। साचे मन्दिर कर प्यार, अन्दर वड़या बेपरवाहीआ। साढे तिन्न हथ्थ महल्ल उसार, सम्बल नगरी नाउँ धराईआ। गोबिन्द खेड़ा कर उज्यार, हरि बैठा मुख छुपाईआ। कलिजुग झगढ़ा चार यार, चारों कुन्ट दुहाईआ। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। धरत धवल करे पुकार, गल पल्ला बैठी पाईआ। धर्म राए रिहा ललकार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा विचार, वही खाता फोल फोलाईआ। लाड़ी मौत नार मुटयांर, सीस आपणा रही गुंदाईआ। बस्त्र पाए तन श्रृंगार, सोहणी बणत बणाईआ। नैणा कज्जल तिक्खी धार, आपणा रही मटकाईआ। पढ़ी लिखी अपर अपार, लहिणा देणा लए चुकाईआ। उठ उठ वेखे दर द्वार, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकार, अग्गों भुजां उठाईआ। जूठ झूठ खण्डा दो धार, आपणा रिहा चमकाईआ। माया ममता कर हँकार, भुल्लया बेपरवाहीआ। नार दुहागण वेख संसार, रंग रलीआं रही मनाईआ। तृष्ना अग्न रही साड़, पंज तत्त विकारा लम्बू लाईआ। गटीआं गिण गिण वेखे सतारा हाढ़, कवण कूट होए रुशनाईआ। वाहो दाही फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले फेरा पाईआ। उब्बल रत्त नाड़ नाड़, इक्क उबाला रिहा लगाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप लग्गे इक्क उखाड़, हरि साचे रचन रचाईआ। कलिजुग जोधा अन्दर देवे वाड़, आपणीआं भुजां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वंड वंडाईआ। वंडी वंड धर्म दुआरे, हरि साचे धर्म कमाया। राए धर्म मारे ललकारे, उठ उठ बोल सुणाया। चित्रगुप्त पया पुकारे, लेखा लेख ना कोई लिखाया। धर्म सपुत्री सच दुलारे, साचा मुख दिखाया। लाड़ी मौत कर प्यारे, तेरा राह चलाया। कलिजुग अन्तिम वेख लक्ख चुरासी जीव कुँवारे, हरि साचा कन्त ना किसे व्याहया।

नानक गोबिन्द बण लिखारे, जग लेखा एह लिखाया। वेद व्यासा वाजां मारे, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले साचे पर्बत करे जोत उज्यारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल करे करतारे। कल जोधा रिहा ललकार, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। मिल्या मेल मुहम्मद यार, एका मता पकाईआ। अल्ला राणी करे विचार, सिर आपणी चुन्नी लाहीआ। अञ्जील कुरान रही ललकार, एका अलफ़ ख़ुदाईआ। साचा हल्फ़ उठाए सच्ची सरकार, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। प्रगट होए विच संसार, हरि नूरो नूर अलाहीआ। बेऐब इक्क परवरदिगार, जगत नक़ाब मुख रखाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, सच अमाम इक्क उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। वंडे वंड हरि बेअन्त, कारज करता आप अख्वाया। वेख वखाए साचे सन्त, धरनी धरत धवल सुहाया। आपणी विद्या आपे पढ़दा, आपणा मन्त्र रिहा चलाया। आपणे घोड़े आपे चढ़दा, आपे रिहा दौड़ाया। आपणी सृष्टी आपे लड़दा, ना कोई दूसर संग रलाया। आपणे घाड़न आपे घड़दा, आपे दए मिटाया। लक्ख चुरासी अन्दर आपे वड़दा, आपे बाहर हो जाया। आपणी अग्नी आपे सड़दा, आपे तेज़ वधाया। आपे लहिणा देण चुकाए सीस धड़ दा, आपे लए कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाया। वंडे वंड लोकमात, कलिजुग वेख वखाईआ। रैण अन्धेरा अन्धेरी रात, रवि ससि ना कोई रुशनाईआ। भरम भुलेखा ज़ात पात, वरन बरन पई लड़ाईआ। साची वस्त ना दिसे किसे हाट, साचा वणज ना कोई कराईआ। पढ़ पढ़ थक्के पूजा पाठ, प्रभ का रूप दिस ना आईआ। नहा नहा थक्के तीर्थ ताट, दुरमति मैल ना कोए गंवाईआ। अमृत रस ना सके चाट, निझर झिरना ना कोई झिराईआ। नेड़ ना दिसे किसे वाट, दूरो दूर तड़फाईआ। जोत ना जगे काया माट, डूँघी कन्दर ना होए रुशनाईआ। दूई द्वैती पड़दा गया ना पाट, एका दूजा भउ ना कोई हटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका वंड वंडाईआ। निहकलंका निरगुण रूप, शब्दी शब्द तराना। सृष्ट सबाई साचा भूप, पारब्रह्म श्री भगवाना। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फोल फुलाना। मेट मिटाए जूठ झूठ, मारे तीर निशाना। भगत वछल जाए तूठ, जन भगतां देवे जिया दाना। एका भिच्छया पाए नाम मुठ, शब्द संदेशा देवे धुर फ़रमाणा। जगत विकारा देवे कुट्ठ, आत्म अन्तर बख्शे ब्रह्म ज्ञाना। पंज तत्त विकारा कढ्ढे कुट्ट, जोधा सूरबीर बली बलवाना। हरि का तीर निराला गया छुट्ट, सोहँ रसना चिल्ला तीर कमाना। सृष्ट सबाई पाए फुट्ट, घर घर होए वैराना। कलिजुग अन्तिम लए लुट्ट, होए मात प्रधाना। कच्चा फल जाए टुट्ट, डालू फेर ना किसे लगाना। पुरख अबिनाशी शब्द नगारे लाए एका चोट, लोआं पुरीआं आप सुनाणा। नौ खण्ड

४४८
०७

पृथ्मी सत्तां दीपां कढ्ढे खोट, मनमुख कोई रहिण ना पाणा। जीव जन्त आलणिओ डिग्गे बोट, फड़ बाहों ना किसे उठाना। बिन सतिगुर पूरे कोए ना देवे भण्डारा अतोट, अतुट भण्डार ना किसे रखाना। दर दर घर घर मन्दिर मस्जिद गुरदुआरे लभ्भदे फिरदे कोटी कोट, कोटी कोट ब्रह्मण्डां मालक हथ्थ किसे ना आणा। कोटी कोट बन्नी फिरदे तन लंगोट, तन बस्त्र ना कोई छुहाना। कोटी कोट छड्डी फिरदे रोट, बिन अन्न जल ना मिले भगवाना। कोटी कोट माया ममता भरी फिरदे पोट, नाल रलाए पंज शैताना। गुरमुख विरले पारब्रह्म सरन सरनाई चरन कँवल जन एका ओट, मेल मिलाए दो जहानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल महाना। खेलणहार जगत खिलारी, जुग जुग खेल खिलांयदा। निहकलंका नर अवतारी, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारी, आपणे हथ्थ रखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर रिहा उभारी, सोया कोई रहिण ना पांयदा। नौवां खण्डां सत्तां दीपां वेखे वारो वारी, चिट्टे अस्व शब्द घोड़े सोलां कलीआं आसण लांयदा। निरगुण जोत जगे निरँकारी, पुरख अबिनाशी नाउँ धरांयदा। जन भगतां पैज रिहा संवारी, दासन दासी सेव कमांयदा। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहरी, जोत अकाला दीन दयाला सर्ब प्रितपाला आप अख्वांयदा। गुरमुख साचे मार उछाला, काया मन्दिर अन्दर वेख इक्क सच्ची धर्मसाला, धर्म आत्म ब्रह्म पुरख परमात्म उत्तम ज़ातम इक्क वखांयदा। उत्तम ज़ाता हरि करतारा, एका वरन रखाया। एका पिता एका माता, एका गोद उठाया। एका नाम एका दाता, एका झोली पाया। एका दिवस एका राता, एका वेख वखाया। एका पुरख एका नाता, एका तन्द बंधाया। एका पुच्छणहारा वाता, जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप एका कर, एका रंग रंगाया। एकँकार इक्क अकल्ला, एका कल वरताईआ। इक्क वखाए सच महल्ला, एका धाम सुहाईआ। एका वस्सया जला थला, डूंगी कन्दर आप टिकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एका मल्ला, थिर घर नाउँ रखाईआ। लोकमात आवे जावे घड़ी घड़ी पल पल्ला, नित नवित्त बणत बणाईआ। भगतां सन्तां दूई द्वैती मेटे सल्ला, एका शब्द करे कुड़माईआ। दीपक जोती एका बल्ला, एका नूर करे रुशनाईआ। पंज तत्त विकार ना करे हल्ला, बैठे मुख शरमाईआ। गुरसिख तेरा फड़या पल्ला, चल आया धुरदरगाहीआ। हरिसंगत वेख्या निहचल धाम अटला, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती शब्दी आपे रल्ला, आपणी बणत बणाईआ। हरिसंगत तेरे दर दुआरे खल्ला, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म शब्द सुनेहड़ा पंज तत्त आपणी हथ्थीं घल्ला, सोहँ ढोला एका गाईआ। होए सहाई जला थला, दो जहानां पार कराईआ। चरन दुआरा जिस जन मल्ला, धर्म राए ना दए सजाईआ।

लाड़ी मौत नेत्र मुख पाए पल्ला, गुरसिख तेरे दर ना आईआ। अन्तिम अन्त अन्त काल पारब्रह्म निरगुण रूप तेरे दर दुआरे खला, पूरन पंज तत्त दरसाईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वला छला, वाह वाह वड्डी वड्याईआ। गुर गोबिन्द दुआरा एका मल्ला, ढहि प्या सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद बिक्रमी करे रुशनाईआ। वीह सद कर उज्यारा, एका रूप दरसाया। एका दूआ खेल न्यारा, तीजे वेस वटाया। चौथे सोहे बंक दुआरा, पंचम पार कराया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई सहारा, सत्त सत्तवें आप दरसाया। अठ्ठां तत्तां कर किनारा, नौ दर धक्का लाया। दसवें मेला पुरख अपारा, आपणा आप कराया। गुरमुख साचे कर विचारा, वीह सद अधार बंधाया। छोटा बाला कर प्यारा, प्रभ साचे अग्गे लाया। हरिसंगत तेरा चुक्कया भारा, प्रभ साचे गोद उठाया। निर्धना देवे इक्क सहारा, निउँ निउँ सीस झुकाया। साढे तिन्न हथ्थ बणाया मन्दिर दुआरा, लोकमात निशान गडाया। रवि ससि करन निमस्कारा, दोए जोड़ सीस झुकाया। सतिजुग धाम बणे न्यारा, लक्ख चुरासी होए सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा तेरे अग्गे धर, साढे तिन्न हथ्थ तेरी झोली पाया। तेरा लहिणा साढे तिन्न हथ्थ, तेरी वंड वंडाईआ। प्रगट हो हरि समरथ, गुरमुखां गंढु घलाईआ। सोलां मग्घर कर अकट्ठ, वाह वाह वंड वंडाईआ। एका मन्दिर गया ढठ्ठ, हरिसंगत संग गया निभाईआ। पारब्रह्म आप बणाया आपणी हथ्थीं मट्ठ, जोती लम्बू लाईआ। उत्ते चढ़या आपे नठ्ठ, सज्जा चरन टिकाईआ। बाल अञ्याणा गोदी वड़या फट, आपणा मूल चुकाईआ। सचखण्ड दुआरा वेख्या साचा हट्ट, प्रभ बैठा बेपरवाहीआ। बणया खेल नटूआ नट, कलिजुग सांग वरताईआ। कलिजुग काया होए भट्ठ, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद बिक्रमी ग्यारां धार नाल रलाईआ। एका जोत इक्क प्यार, एका रंग रंगाया। मिल्या मेल मीत मुरार, मनजीता मेल मिलाया। बैठा आप सच्चे दरबार, सतिजुग साची रीत वखाया। काया सीत विच संसार, मात पित ना होइ कोई हलकाया। अक्खीं मींट तज गया घर बार, घर अनडीठ एका पाया। जांदी वारी कहि गया पुकार, हरिसंगत एह समझाया। हरि का सिक्ख छड्डे संसार, हरि हरि रूप समाया। मात पिता ना नेत्र वहाए कोई धार, घर सथ्थर ना कोई विछाया। गाओ गीत गोबिन्द करतार, जिस दा लहिणा उस दी झोली पाया। रीत चलाई विच संसार, गुर गोबिन्द राह वखाया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पन्थ ख़ालसे भेव ना आया। अन्तिम जोती जामा लए अवतार, आपणी कार कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा मार्ग लाया। सतिजुग साचा मार्ग ला, हरिसंगत एह समझांयदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण झूठा

हित, साचा संग ना कोई निभांयदा। बिन हरि वैराग ना होए किसे जित, आवण जावण खेल खिलांयदा। गुरमुखां दरस दिखाए ना कोई वेखे वार थित, घर घर फेरी पांयदा। मानस जन्म जन ल्ए जित, जो जन बचनी बचन कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा राह चलांयदा। साचा राह जोत अकालण, एका एक चलाईआ। गुरसिख तेरीआं हड्डीआं ना जाए कोई उठालण, जल धार ना कोई रुढ़ाईआ। तेरी करे आप प्रितपालण, जिस दित्ती बणत बणाईआ। दूजे दर क्यों होए सवालण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। पुरख अबिनाशी साची मालण, धुरदरगाही लै के आवे खारी सिर उठाईआ। गुरमुखां करे आप संभालण, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग रिहा लगाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, चार वरन जणाया। मढ़ी गौर ना किसे दबाउणा, ना कोई ख़ाक ख़ाक दबाया। एका मड्ड हरि तपाउणा, लहिणा देणा बाकी दए चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ ग्यारा नींह धर, सतारा हाढ़ी दिवस सुहाया। साढे तिन्न हथ्थ तेरा मूल चुका, आपणी बणत बणाईआ। पहली चेत्र लेख लिखा, गुरसिक्खां दर पुजाईआ। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार कमा, दे मति रिहा समझाईआ। हाढ़ सतारा चढ़या चा, वीह सौ बारां बिक्रमी दए दुहाईआ। प्रगट होया बेपरवाह, साधां सन्तां रिहा हिलाईआ। वीह सौ दस ग्यारा एका राह, बारां मूल चुकाईआ। नौ दर सुहाए साचा थाँ, एका इक्की सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल हरि रघुराईआ। वीह सद बारां कर प्यार, हरिसंगत मेल मिलाया। लंगर चलाया विच संसार, हरि मन्दिर फड़ फड़ाया। उन्नी हाढ़ वेख विचार, साचा समां सुहाया। गुरमुख बणाए साचे लाड़, साचे घोड़े दए चढ़ाया। साचे मन्दिर देवे वाड़, एका कुण्डा लाहया। अग्ग ना लग्गे तत्ती हाढ़, सीतल सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म जाम प्याया। गुरसिक्खां अमृत जाम पया, आपणी दया कमांयदा। साधां सन्तां रिहा उठा, वीह सद तेरां वेख वखांयदा। पहली चेत्र चरन उठा, राज राजाना आप ठुकरांयदा। दस चेत्र मुड़के आ, दहि दिशा भोग भुगांयदा। दसवां घर कोई जाणे ना, साध सन्त राह विच सर्ब तड़फांयदा। हरि कन्त सच्चा रंग कोई जाणे ना, मोहण माधव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। पहली अस्सू कर त्यारी, रावण गढ़ तुड़ांयदा। दूजी अस्सू नर निरँकारी, भेख पखण्डा मुख भवांयदा। तीजी अस्सू खेल न्यारी, आपणी बणत बणांयदा। शाह सुल्ताना करे ख़बरदारी, राष्ट्रपति आप उठांयदा। पंज निशाना देवे जोधा सूरबीर बली बलकारी, दे मति आप समझांयदा। भुल्ल ना जाणा जीव गंवारी, हरि साचा खेल खिलांयदा। निरगुण जोती इक्क उज्यारी, भारत खण्डी

डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। सम्मत चौदां हरि भगवन्त, वीह सद खेल खिलाया। गुरमुख वेखे साचे सन्तां, एका इक्की पाया। आप बणाए साची बणता, तिक्खी धार धराया। भेव ना पाए जीव जन्ता, मुनी रिखी बैठे मुख छुपाया। मेल मिलावा नारी कन्ता, घर साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की इक्की वार एका सिक्खी कर त्यार, चार वरनां अठारां बरनां एका राह चलाया। वीह सद पन्दरां हरि निरँकार, आपणी बणत बणांयदा। पहली चेत्र हो त्यार, सचखण्ड उठ धांयदा। त्रै त्रै वंडे वंड अपार, ब्रह्मलोक शिवलोक इन्दलोक वेख वखांयदा। चौदां लोकां दए हुलार, सत्त सत्त मूल चुकांयदा। अन्तिम वेखे सतारां हाढ़, हरिसंगत दर सुहांयदा। लहिणा देणा चुक्के उन्नी हाढ़, लहिणा देणा झोली पांयदा। खेले खेल हरि गिरधार, नवां सत्तां वेख वखांयदा। भारत खण्ड कर प्यार, पहली कत्तक चरन टिकांयदा। पटना निवासी कर विचार, पट पटना वेख वखांयदा। पप्पा पुरख अपार, टैंका टुट्टी गंढु बंधांयदा। नन्ना निरगुण खेल अपर अपार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका साता भारत वंड आपणी धार बंधांयदा। अट्ठ कत्तक हरि निरँकार, आपणी धार चलांयदा। शब्द सरूपी हो त्यार, गुरमुख संग रखांयदा। खेले खेल अपर अपार, आपे वेख वखांयदा। लंका वेखे सच सच्चा घर बार, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ांयदा। तीर्थ तट्टां पावे सार, छत्ती जुगां मूल चुकांयदा। सोलां कलीआं तन शृंगार, हरि साचा आप लगांयदा। गुरमुख वेखे सच द्वार, साची वंड करांयदा। सोलां खोल्ले बन्द किवाड़, गुरमुख आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां मग्घर मुख धर, उन्नी मग्घर लेख चुकांयदा। उन्नी मग्घर लेखा चुक्के, पंचम पंच समाया। छेवें दर लाए लेखे, पांचा एका इक्क बणाया। इक्क इकवंजा रिखी केशे, गवर्धन धार उठाया। दस लगाए आपणे लेखे, वीह मग्घर कर रुशनाया। उँणंती मग्घर दस दस्मेसे, गुरमुखां दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत पन्दरां तेरी धार आपे रिहा चलाया। छत्ती जुग छत्ती राग, छत्ती दिन वड्याईआ। छत्ती मील हीरा घाट, साचा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सोलां दिवस सोलां रात, सोलां प्रभात सोलां प्रविष्टे वेख वखांयदा। गुरमुखां अन्दर वेखे मार झात, दृष्ट दृष्ट आप खुल्लांयदा । आपे बैठा इक्क अकांत, एका इष्ट समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी आप करांयदा।

* पहली सावण २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

प्रेम विछाउणा शब्द सिँघासण, गुरमुखां बंक द्वार। आप विछाए पुरख अबिनाशन, सेवक सेवादार। खेले खेल शाहो शबासन, निरगुण रूप निरँकार। भेव ना पाए पृथ्मी आकाशन, गगन पताल रहे विचार। करोड़ तेतीसा दासी दासन, शिव शंकर करन निमस्कार। ब्रह्मा वेता होए उदासन, नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़। गुरमुख साजन साचे मीत घर सच्चे तेरा आसण, मिल्या पुरख अगम्म अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेलणहार विच संसार। घर सेजा हरि सुत्तड़ा, नैनण नैण मुँधार। गुरसिख मनाया रुठड़ा, सुहाया बंक द्वार। पारब्रह्म पुरख पुरख अनडिठड़ा, लोकमाती रिहा पैज संवार। लक्ख चुरासी रक्खे एका मुठड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठड़ा, लेखा लिख्या धुर दरबार। पारब्रह्म अबिनाशी अचुतड़ा, चेतन्न रूप सच्ची सरकार। कलिजुग अन्त सुहाई रुतड़ा, निहकलंका लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला विच संसार। आत्म सेजा हरि सुहौणी, हरि मूर्त अकाला। हरिजन पूर कराए भावनी, पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला। नेड़ ना आए कामन कामनी, तोड़ तुड़ाए जगत जंजाला। अन्त मेटे रैण अन्धेरी शामनी, सेवा लाए जोत ज्वाला। धुरदरगाही आप बंधाए आपणी दामनी, काल महांकाल होए रखवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए दया कमाए, मेल मिलाए सच्ची धर्मसाला। साचा मन्दिर साचा घर, हरि हरि आप सुहाया। गुरमुख साजन मिल्या वर, घर साचे आप दवाया। पुरख परखोतम मिल्या नर, नरायण नर नाउँ धराया। आवण जावण चुक्कया डर, सगला भउ गंवाया। करता करनी रिहा कर, जुग जुग करदा आया। जन भगतां भण्डारे रिहा भर, देवणहार सृष्ट सबाया। इक्क सुहाए साचा सर, चरन धूढ़ी ताल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, घर साचे मेल मिलाया। मेल मिलावा शाहो शबास, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ । पूर कराए घर घर आस, निरास ना कोई रखाईआ। जिस जन गाया स्वास स्वास, दस मास ना फेरा पाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास, डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। हर घट अन्दर पावे रास, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। सदा सुहेला वस्सया पास, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन मेल घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे घर नाद अनादा, हरि हरि आप वजाया। जीउ पिण्ड खोज ब्रह्मादा, गुरमुख मेल मिलाया। हरिजन मेला आदि जुगादा, हरि करता आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। घर मन्दिर ढोल मृदंगा, हरि साचा आप वजांयदा। रूप अनूप सूरा सरबंगा, सच सितार हिलांयदा।

रूप रेख ना कोई अनरंगा, नाद अनादी वेख वखांयदा। जोती शब्दी सदा हरि संगा, सगला संग निभांयदा। गुरमुख दान एका मंगा, नाम भण्डारा झोली पांयदा। लेखे लाए काया काची वंगा, कंचन गढ़ सुहांयदा। मानस जन्म ना होए भंगा, जो जन आए दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका घर, घर साचा मेल मिलांयदा। साचा मेला धुरदरगाह, हरि हरि आप कराया। हरि हरि देवे शब्द सलाह, ना कोई दूसर विच रखाया। शब्द गुर गुर बण मलाह, सतिगुर नाम धराया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, घर घर फेरा पाया। गुरसिख करे ना कोई नाह, दाता भिखारी एका आया। वेख वखाए थाउँ थाँ, दिवस रैण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, घर साचा इक्क दरसाया। साचा घर सच टिकाणा, हरि साचा आप सुहांयदा। शब्द सरूपी इक्क बिबाना, गुरमुखां राह तकांयदा। एका वसे आपणे भाणा, ना दूसर वेख वखांयदा। हरिजन साचा शाह सुल्ताना, दो जहानां माण रखांयदा। दर दरबान फिरे दरबाना, दर दरवेश अख्वांयदा। गुरसिख बन्ने हथ्थी गानां, साचा सगन मनांयदा। सोहँ देवे तीर कमाना, गुर गोबिन्द संग रलांयदा। प्रगट होया जोधा सूर बली बलवाना, पुरख अकाला नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी लोआं पुरीआं इक्क निशाना, ना कोई मेट मिटांयदा। हरिभगतन देवे नाम ज्ञाना, ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। हरि हरि शब्द धुर फ़रमाणा, हरि हरि आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, घर साचा इक्क वडिआंयदा। पंज तत्त पंज मकाना, हरि साचे आसण लाया। अन्दर वड़या गुण निधाना, गुणवन्ता नाम धराया। आपे जाणे पीणा खाणा, दाना बीना आप अख्वाया। आपे करे ठांडा सीना, सीतल धार वहाया। आपणा नाम आपे चीना, आपणी रसना आपे गाया। आपणा रंग आपे माणे भीन्ना, भिन्नड़ी रैण सुहाया। आपे मरना आपे जीणा, जीवत मरत नाम धराया। आपे वरते लोकां तीनां, तीना लोकां वेख वखाया। आपे आपणा आप वक्ख कीना, हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला आपे कर, घर साचा वेख वखाया। साचा घर रुत्त बसन्त, फुल फुली फुलवाड़ी आ। गुरमुख नारी हरि हरि मेला साचा कन्त, मिल्या मेल सतारां हाढ़ी आ। मानस लग्गा लेखे जीव जन्त, जिस चरन छुहाई दाढ़ी आ। सोहँ शब्द होया मणीआं मंत, लक्ख चुरासी आर पारी आ। पारब्रह्म आदि पुरख गुरसिख तेरा साचा सन्त, आवे जावे ना विच संसारी आ। चौथे जुग आप बणाई आपणी बणत, जोती जामा निहकलंक नरायण नर अवतारी आ। पूरन जोती जगे भगवन्त, पारब्रह्म सच्चा सिक्दारी आ। खेले खेल आदि अन्त, एका एक एकँकारी आ। जुग जुग महिमा हरि बेअन्त, ना कोई लिखे लेख लिखारी आ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

गुरसिख तेरा वेखे दर द्वारी आ। गुरसिख तेरा ठांडा द्वार, हरि आया बंक द्वारी आ। प्रगट हो नर अवतार, खेले खेल अपर अपारीआ। नानक गोबिन्द पाए सार, निरगुण जोत करी उज्यारीआ। चण्ड चण्डका ख़बरदार, हरि सिँघ करे अस्वारीआ। आदि शक्त वारो वार, खेले खेल न्यारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे घर, कलिजुग आया अन्तिम वारीआ। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, हरि साचे आप चुकाया। गुर संगत गल पाया गहिणा, आप खाली तन रखाया। आपणे बन्द कराए नैणा, गुरमुखां नैण खुल्हाया। गुरचरन प्रीती साचा भाणा सहिणा, साची सेव कमाया। पुरख अकाल दी गोदी बहिणा, दूसर धाम ना कोई बणाया। गुर गोबिन्द बणया साचा साक सज्जण सैणा, मात पित आप अख्वाया। पूत सपूते साचे रहिणा, साचा राह वखाया। चारे कुन्टा उच्चे मन्दिर दर दर घर घर ढहिणा, गुरसिख तेरा घर सुहाया। तेरा मन्दिर किला कोट चार जुग लोकमात रहिणा, प्रभ साचे लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा एका घर, एका धाम सुहाया। गुरसिख तेरा धाम अवल्ला, पंज तत्त मकाना। मिले मेल प्रभ इक्क अकल्ला, ना दूसर कोई निशाना। दूई द्वैती मेटे सल्ला, देवे नाम निधाना। पंज तत्त ना करे हल्ला, मारे तीर कमाना। दीपक जोती एका बल्ला, अज्ञान अन्धेर मिटाना। अमृत आत्म देवे साचा चुला, तृष्ना भुक्ख गंवाना। शब्दी जोती जोती शब्दी गुरसिख रल्ला, मिल्या मेल भगवाना। दर द्वार हरि निरँकार एका मल्ला, विछड़ ना जाए दो जहानां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा साचा घर, करे मात परवाना। घर मन्दिर हरि वस्सया, नाउँ निरँजण रूप। सच सिँघासण बहि बहि हस्सया, शाह सुल्ताना वड्डा भूप। राह सच्चा एका दस्सया, एका परोए धागे सूत। धुरदरगाही आए नस्सया, पकड़ उठाए गोबिन्द पूत सपूत। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, वेख वखाए चारों कूट। माया राणी जगत डस्सया, डंग लगाया जूठ झूठ। कलिजुग मन्दिर अन्तिम ढठ्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, एका वेखा साचा सूच। गुरमुख धाम धरत निराला, धरनी धरत सुहाया। मिल्या मेल पुरख अकाला, जुगती जगत तराया। दया कमाए दीन दयाला, भगती नां शक्त वखाए। सच मन्दिर सच्ची धर्मसाला, काया इक्क दरसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे घर, बैठा आसण लाए। काया साचा मठ्ठ, हरि साचे आप बणाया। जगत तत्त ना जाए ढठ्ठ, मनमति ना कोए दृढ़ाया। पंचम विकार करे ना अकठ्ठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाया। ना कोई तृष्ना तीर्थ तट्ट, अठसठ ना फेरी पाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई हवन कराया। जिस जन सतिगुर पूरा जाए तुठ, जरम कर्म धर्म लेखे लाया। दरस वखाए दया कमाए धुरदरगाही एका वथ, दूसर हथ्थ

४५५ ०७

किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मन्दिर वेखे घर, आप आपणा डेरा लाया। मन्दिर डेरा सच सुल्तान, आपणा आप कराया। निरगुण बैठ श्री भगवान, सति सरूप सरूप समाया। दिस ना आए कोई निशान, ना हथ्थ किसे फड़ाया। लिख लिख थक्के वेद पुराण, खाणी बाणी गाया। गुरमुख साचे सद कुरबाण, जिस सतिगुर पूरा पाया। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, हरि साचे दए मिलाया। हरि साचा देवे जिया दान, दाता दानी आप अख्वाया। इक्क जणाई धुर फ़रमाण, बोध अगाध शब्द सुणाया। आपे बैठ काया मन्दिर सच मकान, धुंन अनादी नाद वजाया। पंचम शब्द राग इक्क सुणाण, अनहद सेवा लाया। सुरती सुत्ती उठी नौजवान, आप आपणा तन सुहाया। बस्त्र भूषन पाया इक्क महान, तामश तृष्ना मगरों लाहया। नेत्र खोल्हे वड रकान, नैणा कज्जल पाया। परे हटाए पंज शतान, एका डण्डा लाया। सेवा लग्गी पवण मसाण, इक्क सुगंध रखाया। एका जोती जगी महान, जोत निरँजण वेख वखाया। जोत निरँजण हो प्रधान, अग्गे लग्गी वाहो दाहया। इक्क वखाए सच निशान, हरि का शब्द फड़ाया। दोहां मेला सच मकान, काया मन्दिर इक्क सुहाया। काया सुरती कर कुरबान, आपणी भेट चढ़ाया। अग्गे वेखे हरि भगवान, कवण कूटे डेरा लाया। अमृत जल मिल्या पीण खाण, अधविचकारे आप सुहाया। आपणा कीता आप असनान, दुरमति मैल गंवाया। बदलया चोला खेल महान, कागी हँस सुहाया। चुकया डोला गुण निधान, राह आपणा आप चलाया। अग्गे बैठ तख्त सुल्तान, मुख घुँघट आपणा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेख घर, साचा सगन मनाया। घर साचे मंगलाचार, सतिगुर आप करांयदा। गुरमुख नारी कर त्यार, गुर पूरा आप प्रनांयदा। सोला करे तन शृंगार, साचा वेस वटांयदा। हथ्थीं मैहन्दी लाल अपार, चूड़ा प्रेम खड़कांयदा। शब्द भूषन कर त्यार, शब्दी सेहरा सीस लटकांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वार, दक्खण दिशा फेरा पांयदा। पूर्ब पच्छिम बन्द किवाड़, उत्तर वेख वखांयदा। काया वेखे सच अखाड़, राग रागनी इक्क अल्हांयदा ।धुरदरगाही साचा लाड़, हरि साचा आप अख्वांयदा। गुरमुख तेरी बजर कपाटी जाए पाट, तेरे अन्दर डेरा लांयदा। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, सतारां हाढ़ी ख़ुशी मनांयदा। आपे होए पिच्छे अगाड़, गुरसिख लाड़ी आप प्रनांयदा। साचे पौड़े देवे चाढ़, सोहँ डण्डा हथ्थ फड़ांयदा। नाता तोड़े पंज तत्त हड्ड मास नाड़ी नाड़, निरगुण सरगुण विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, लोकमात फेरा पांयदा। वेखण आया गुरसिख डेरा, कवण मकाने लाया। रक्त बूंद पाया घेरा, पंज तत्त महल्ल बणाया। मनुआ बैठा हो दलेरा, आपणा डंक वजाया। बुध वसी नेरा नेरा, निज घर राह तकाया। मति सवाणी ढाहया डेरा, ना बेड़ा कोई उठाया। पंज विकारा

छिड़या झेड़ा, माया मोह वधाया। किसे ना दिसे काया खेड़ा, ना कोई दए वसाया। कलिजुग गेड़े आपणा गेड़ा, वेला अन्तिम आया। पारब्रह्म करे हक्क निबेड़ा, जुग जुग करदा आया गुरसिख तेरी काया मन्दिर तेरा खुल्हा वेहड़ा, हरि साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा दए सुहाया। साचा घर सच सलाह, हरि साचे इक्क रखाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, एका नाम जपाईआ। एका पथ्थर दए तुड़ा, एका खण्डा लाईआ। एका सथ्थर दए विछा, एका करे सफाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा वेखे घर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत कर उजाला, जागरत जोत जगाईआ। दरस दिखाए गुर गोपाला, हरि गोबिन्द मेल मिलाईआ। एका देवे नाम सुखाला, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। तोड़ी आया जगत जंजाला, हँ हँगता दए मिटाईआ। भाग लगाए सच्ची धर्मसाला, धर्म धर्मी रिहा कमाईआ। फल लगाए काया डाला, अमृत मेवा इक्क खवाईआ। शब्द गुर बण दलाला, लोकमात आया कर कर धाईआ। सेव लगाए पुरख अकाला, गुर गोबिन्द लेख लिखाईआ। शक्ती मंगे जोत ज्वाला, आदि शक्त कुरलाईआ। विष्नूं वंसी होए बेहाला, एका करे सुणाईआ। ब्रह्मा वजाए आपणा ताला, आपणा राग अलाईआ। भोले नाथ वेखे खेल निराला, बाशक तशक गल लटकाईआ। करोड़ तेतीसा हाल बेहाला, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ।

लोकमात अवल्लड़ी चाला, जोती जामा भेख वटाईआ। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदवाला, तीर्थ तट ना दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे तेरे घर, आपे रिहा समाईआ। हरि समाया सहिज सुख सागर, अनन्द अनन्द गुणी गहीरा। भाग लगाए गुरसिख तेरी काया गागर, अमृत भरया नीरा। निर्मल कर्म होए उजागर, सीस बंधाया सोहँ साचा चीरा। नाम कराया वणज सुदागर, कट्टी हउमे पीड़ा। देवे सच रत्ती रत्नागर, लेखे लाए हस्त कीड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे चुक्कण आया बेड़ा। आपणा बेड़ा आपे चुक्क, आपणे कंध उठांयदा। कलिजुग पैंडा रिहा मुक्क, ना कोई धीर धरांयदा। चारों कुन्ट पए थुक्क, सच सुच्च ना कोई वरतांयदा। जूठ झूठ रिहा सुक्क, अमृत सिंच ना हरया कोई करांयदा। भगत ना जननी रक्खे कुक्ख, भगवन्त ना मेल मिलांयदा। उज्जल होवे ना किसे मुख, कलिजुग संग रलांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता आदि निरँजण लोकमात जोती जामा बैठा लुक, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरले सन्त सुहेले इक्क अकेले लग्गी भुक्ख, नेत्र लोचन नैण दर्शन पांयदा। दर द्वार दर दरबार हरिजन साचा जाए झुक, बेमुख दर दुरकांयदा। अन्तिम अन्त काल आपणी गोदी लए चुक्क, चतुर्भुज आपणी सेवा लांयदा। गुरसिख भेव रहे ना गुझ, गोबिन्द लेख लिखांयदा। चरन कँवल जो जन जाए

झुक, इक्क प्रीत सिखांयदा। सो जन मेरा मेरा ल्ए बुझ, मेरा तेरा भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरे साचे घर आपणा आप छुपांयदा। आपणा आप हरि छुपा, चोरी चोर कमांयदा। मूर्ख मूढ़ धन्दे ला, झूठी क्रिया इक्क वखांयदा। पापी गन्दे दए खपा, धीरन धीर ना कोई रखांयदा। माया धारी आत्म अन्धे दए मुका, राज राजाना ख़ाक मिलांयदा। सद बख़सिंदे नाम धरा, गऊ ग़रीब निमाणे आप उठांयदा। एका अल्फी एका चोली गल देवे पा, एका बस्त्र तन सजांयदा। एका डोली दए सुहा, एका कंध उठांयदा। एका गोली दए बणा, एका घर वसांयदा। हौली हौली आपणी बोली दए समझा, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। गुरसिख चोली रंग रंगा, रंगणहार आप हो जांयदा। मौली मैहन्दी सगन मना, साचा सीस गुंदांयदा। आपणी करवट आप बदला, वेखणहार आप हो जांयदा। आपणी सिक्खी आप बणा, सखा सखाई नाउँ धरांयदा। धुर दी लिखी रेख दए मिटा, जो जन सरनाई आंयदा। नेत्र नैण जाए दर्शन पा, धर्म राए मुख छुपांयदा। चरन कँवल मस्तक ल्ए टिका, ब्रह्मा हौली हौली सीस झुकांयदा। विष्नूं वंसी तक्के राह, गुरसिख तेरा राह तकांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, शब्द शब्दी सेवा लांयदा। कलिजुग अन्तिम बणया मलाह, सोहँ नाउँ धरांयदा। साचे पौड़े दए चढ़ा, एका चप्पू रखांयदा। चौथे पद जाए समा, हरिसंगत वड वडिआंयदा। कागों हँस दए बणा, हँसा बंसा आप अख्वांयदा। सोहँ चोग दए चुगा, आप आपणी झोली पांयदा। दरस अमोघ दए वखा, जोती नूर दरसांयदा। जगत रोग दए कटा, आवण जावण फंद कटांयदा। सहिसा रोग दए मिटा, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। लोक परलोक होए सहा, सदा सहायक नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेख घर, सिर आपणा चीर बंधांयदा। आपणे सिर बद्धा चीरा, पंज तत्त सुहाया। गुरसिख साचा वेखण आया वीरा, सरसे जो रुढ़ाया। मेल मिलाया अमृत नीरा, नीर नीर समाया। बहत्तर करोड़ सुटाया साचा हीरा, अरब ख़रब ना कोई लिखाया। गुर गोबिन्द गाया वड पीरन पीरा, पुरख अकाल मनाया। कलिजुग अन्तिम देवे धीरा, तेरी आस तकाया। इक्क रविदासे भेट चढ़ाया कसीरा, कंगन हथ्थ फड़ाया। सरसा तेरी पई वहीरा, तेरा तेरी झोली पाया। लाड़ी मौत ना बन्न्या कलीरा, ना कोई सगन मनाया। नाल रखाया भथ्था तीरा, तन कटार सजाया। करे अरजोई खवाजा खिजर पीरा, दोए जोड़ सीस निवाया। सुरपति राजा इन्द आए कर कर वहीरा, रो रो नीर वहाया। गुर गोबिन्दा जोधा सूरबीरा, सभ दी आसा पूरी रिहा कराया। आप आपणा कर वहीरा, बेड़ा पार लँघाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, कलिजुग अन्तिम आया। कलिजुग तेरा तेरा मूल, तेरे हथ्थ रखाया। सतिगुर पूरा कदे ना जाए भूल, आवण जावण खेल खिलाया।

४५८
०७

गुरसिख सवाए साची सेज ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बस्त्र हेठ विछाया। गुर गोबिन्द एका रसना बरखे फूल, फूलन बरखा एका लाया। अन्तिम प्रगट होए कन्त कन्तूहल, तेरा मेरा लहिणा देणा दए चुकाया। गुरसिक्खां करे सूलीउँ सूल, सिर मेरे भार उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, दूर दुराडा नेड़े आया। गुरसिख तेरा वड्डा भार, हरि मेरे सिर टिकाया। पूत सपूता कर त्यार, मेरा नाउँ धराया। वल्या छल्या आप करतार, वल छल रिहा कराया। सीस बन्न्हू सच्ची दस्तार, शस्त्रधारी नाम धराया। पंज कक्के कर त्यार, करमां वेख वखाया। कक्का करता करणेनहार, भेव किसे ना आया। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, कलिजुग क्रिया दए मिटाया। कूड़ कुड़यारा अन्ध अन्धआर, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, महांसार्थी आप अख्वाया। रथ चलाए अपर अपार, दो जहानां आप चलाया। सर्बकला समरथ प्रगट होवे विच संसार, निहकलंका नाउँ धराया। मेट मिटाए तीर्थ अठसठ, पूजा पाठ ना कोई कराया। एका पल्ले बन्न्हे नाम गड्ड, गायत्री मन्त्र ना कोई गाया। सतिजुग साची करे चड्ड, दर दर सतिगुर पूरा होए सहाया। गुरसिख मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, तेरा मेरा झोली पाया। अन्तिम करे हाढ़ सतारा अकड्ड, साची हाढ़ी आप वढाया। कलिजुग उलटी गेड़े लड्ड, गेड़णहार आप अख्वाया। लक्ख चुरासी होए भड्ड, थिर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेखण घर, जोत अकाला रूप वटाया। गुर गोबिन्द सेवा ला, आपणी रसन अल्लाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा नाँ, तू ही रिहा जपाईआ। तेरा भाणा वरते हरि हरि थाँ, कोई मेट ना सके राईआ। तूही पिता तूही माँ, तूही भैण भ्राता सर्ब सुखदाईआ। तेरी माणा सदा छाँ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, एका बूझ बुझाईआ। एका बोल हरि जैकारा, गुर गोबिन्द आप समझाया। फतिह डंक अपर अपारा, पुरख अकाला रिहा वजाया। वाह वाह गुरु चरन बलिहारा, चरन कँवल चित लाया। करे खेल अपर अपारा, खेलणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका कन्न, एका नाद एका धुन, एका राग अल्लाया। एका राग हरि अला, आपणा भेव खुल्लांयदा। गुर गोबिन्द दए सलाह, साचा शब्द जणांयदा। तेरा नाम होए मलाह, जगत विचोला आप करांयदा। इक्क सुहाए साचा थाँ, थान थनंतर वेख वखांयदा। आपे पकड़े तेरी बांह, साचे मन्दिर डेरा लांयदा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ करे न्याँ निउँ निउँ वेख वखांयदा। वक्ख वक्ख करे हँस काँ, कागों हँस उडांयदा। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ रखांयदा। आप जपाए आपणा नाँ, आपणा नाउँ आप धरांयदा। सो पुरख निरँजण सो सो रिहा जणा, सो सति सति अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, गोबिन्द मेला एका घर, गुरसिख वेख वखांयदा। गुरसिख बोल शब्द जैकारा, गोबिन्द नाम धराया। गोबिन्द पूत सुत दुलारा, साचे घर वसाया। साचे घर मेल अपारा, विछड़ कदे ना जाया। नानक गुर दए हुलारा, इक्क हुलार वखाया। आपे वेखे पार किनारा, दूसर दिस किसे ना आया। एका अक्खर कर विचारा, एका दूजा रिहा पढ़ाया। एका नाम एका धारा, एका रिहा जणाया। लक्ख चुरासी कर विचारा, एका कर्म कमाया। एका कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, आप आपणा लए वटाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, शब्द शब्दी लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर गुरमुख मेला सहिज सुभाया। गोबिन्द पाया पारब्रह्म, घर साचे वज्जी वधाईआ। साचे घर गया जम्म, ना मरे ना जाईआ। गगन पताली दित्ता थम्म, ना सके कोई हिलाईआ। लक्ख चुरासी पुरख अकाल दीन दयाल आप जपाए दमा दम, ना दूसर कोई रसना गाईआ। दो जहानी आपणा आपे करे कम्म, ना दूसर वेख वखाईआ। आपणी आपे खाए तम, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, रक्त बूंद ना कोए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख देवे वड वड्याईआ। गुरमुख तेरा दर दरवाजा, हरि हरि आप मुकाया। दर दरवेशा आप ग़रीब निवाजा, निउँ निउँ सीस झुकाया। गुर गोबिन्द साजण साजा, साचा मार्ग

४६० ०७

लाया। नानक कबीर वजाए अनहद वाजा, राग रागनी रहे अल़ाया। नौ खण्ड पृथमी सृष्ट सबाई खोल़े पाजा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। सतिजुग चलाए सच जहाज़ा, चार वरनां लए चढ़ाया। प्रगट होए देस माझा, सम्बल नगरी नाउँ धराया। करता पुरख वड राजन राजा, शाह सुल्तान हो आया। गुरसिक्खां संवारे आपे काजा, जोग अभ्यास ना कोई कराया। राती सुत्तयां घर घर जाए मारे वाजां, रुढ़यां रिहा मनाया। शब्द अगम्मी चढ़या ताजा, चारे वागां रिहा उठाया। लोआं पुरीआं फिरे भाजा, नौ सत्त फेरा पाया। नाल ल्याया सोहँ दाजा, गुरमुख तेरी झोली पाया। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, अनन्द मंगल इक्क गाया। दर दुआरे जो भुल्ल भुल्ल आए भाजा, प्रभ साचा लए उठाया। चारों कुन्ट गुरसिख गुरमुख उच्ची बांह कर मारो वाजां, पारब्रह्म प्रभ आया। आपे जाणे रोज़ा बांग निमाजा, जगत मसल्ला हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस कर, इक्क अकल्ला गुरमुख तेरा सच महल्ला, धुरदरगाही वेखण आया। धुरदरगाही साचा लाड़ा, पारब्रह्म परमेश्वर। गुरमुख तेरा वेखण आया अखाड़ा, जगत पित जगतेश्वर। देवत सुर मुन जन गण गधंरब लोचण मंगण दिन सतारां हाढ़ा, प्रभ साचे मूल ना भाया। ब्रह्मा शिव गणेश कढुण हाढ़ा, लोकमात राह तकाया। गुर पूरा मेहरवान मेहरवान मेहरवान जन भगतां देवे जिया दान धुर फ़रमाण जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर मिटाया। त्रैगुण

माया तेरा तत्त गुरसिख दुआरे आपणी हथ्थीं साड़ा, इक्की जेठ दिवस सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, घर आपणा खोल्ह वखाया। पहला घर आपणा खोल्ह, दूजा गुरमुख राह तकांयदा। पहलों घर आपणे बोल, दूजे गुरमुख फेर सुणांयदा। पहलों आपणे घर तोले तोल, दूजे गुरमुखां फेर तुलांयदा। पहलों घर आपणे बदलया चोल, गुरमुखां चोला फिर बदलांयदा। पहलों घर आपणे आपणी जोती गया मौल, दूजे गुरमुखां जोत जगांयदा। पहलां आपणा घर सुहाए उत्ते धरती धवल, दूजा गुरमुखां घर धरत धवल सुहांयदा। पहलों आपणे घर आपणे कँवल गया आपे फुल, दूजे गुरमुखां घर फुल फुलवाड़ी आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण आया घर, घर सुहञ्जणा इक्क रखांयदा। घर सुहञ्जणा हरि करतारा, एका एक सुहाया। निरगुण जोती नूर उज्यारा, नूरो नूर रखाया। शब्दी धुन शब्दी राग अपर अपारा, शब्दी ताल वजाया। शब्दी गुर सुनणेहारा, सुनणेहार आप हो जाया। गुरमुख साचे सन्त कर प्यारा, क्रिया कर्मां दए मिटाया। रसना नाउँ जिस उचारा, कर किरपा पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा दुआरा, बिन सतिगुर पूरे किसे हथ्थ ना आया। कोटन कोट ब्रह्मा शिव विष्न महेष मंगन दर द्वार, बैठे सीस झुकाया। कोटन कोट राम कृष्न लै अवतार, आवण जावण खेल रचाया। कोटन कोट साध सन्त रहे पुकारा, दिवस रैण रसन अल्हाया। कोटन कोट रिख मुन रहे ध्या, ध्यान विच किसे ना आया। कोटन कोट कर रहे ज्ञान, ज्ञान नाम मन्त्र ना किसे दृढ़ाया। कोटन कोट कर रहे अशनान, हरि चरन अशनान ना कोए वखाया। कोटन कोट रसना रस करन पान, अमृत रस ना किसे चखाया। कोटन कोट जोधे सूर बली बलवान, बीड़ा धर्म कर्म ना किसे उठाया। कोटन कोट झुल्लदे पए निशान, पारब्रह्म तेरा निशान ना किसे झुलाया। नानक गोबिन्द दित्ता इक्क ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ाया। एका एक श्री भगवान, गुर गोबिन्द रिहा सीस झुकाया। आदि जुगादि रहे निशान, दो जहान ना कोई मेटे मेट मिटाया। सद अबिनाश ना बिरध बाल जवान, एका रंग समाया। घट घट अन्दर रक्खे वास, ना मरे ना जाया। गुरमुखां जन भगतां होए दासी दास, सीस आपणा भेट चढ़ाया। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन रूप वटाया। गुरसिख गुरसिख अन्तिम पूरी करे आस, निहकलंका नाउँ धराया। हउँ सेवक सदा वसां पास, विछड़ कदे ना जाया। सतिगुर सरनाई गुरमुख ना होए कदे निरास, हरि साचा वेख वखाया। सिँघ गोबिन्द सद बलि बलि जास, गुर पूरे मेल मिलाया। अन्तिम आया करन बन्द खलास, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। साची भगत रखाई रसन तजाउणा मदिरा मास, भगत भगती लेखे लाया। निज घर आत्म रखे वास, जगत तृष्ना चाह मिटाया। आपे होया स्वास स्वास, अजपा जाप आप हो जाया। सदा सुहेला

सहाई पृथ्मी आकाश, तिन्नां लोकां पार कराया। सच दुआरे कर निवास, गुरमुख साचे लए तराया। जोती जोत करे प्रकाश, अन्तिम जोती मेल मिलाया। करणहार सर्ब गुण तास, आपणी करनी रिहा कराया। जुग जुग पूरन करदा आस, कलिजुग अन्तिम दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, पौड़ी पौड़ी चढ़दा आया। पहले पौड़े आपे चढ़, आपणा राह तकाया। दूजे पौड़े गुरमुख सुरती लए फड़, चरन द्वार वखाया। तीजे पौड़े अग्गे खड़, हरिसंगत मेल मिलाया। चौथे पौड़े फड़ाया लड़, विछड़ कदे ना जाया। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणा रंग रंगाया। आपणी लड़ाई आपे लड़, आपणा सत्तरू आप मिटाया। आपणी पढ़ाई आपे पढ़, आपणा नाउँ रिहा अल्राया। आपणी जोती आपणी अग्नी आपणे हवन आपे सड़, आपे धूंआँधार मिटाया। आपणा सीस आपणा धड़, आपे लए कटाया। आपे चोटी आपे जड़, अधविचकार आप समाया। आपे गुरसिख वस्सया तेरी काया गढ़, पंज तत्त डेरा लाया। पंच विकार दर द्वार ना सके अड़, एका खण्डा रिहा वखाया। कलिजुग वहिण वहाए हड़, मनमुख माया दए रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, निराकार उठ उठ धाया। निरँकार शब्द अडोल, सतिगुर रूप समांयदा। करन आया पूरा कीता कौल, पूरन कर्म कमांयदा। जोती जामा उप्पर धवल, पंज तत्त समांयदा। सृष्ट सबाई करे मखौल, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुखां अन्दर वज्जे मृदंगा ढोल, प्रभ साचा आप वजांयदा। हौली हौली आपे रिहा बोल, आप आपणा नाम जपांयदा। तोलणहारा साचा तोल, तोला माशा ना कोई घटांयदा। किसे हथ्थ ना आए पंडत पांधे रौल, जगत विद्या भेव ना पांयदा। हरिजन काया गया मौल, मौला रूप अख्वांयदा। साँवल सुन्दर होए सँवल, मोहण माधव लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा बंक दुआरा, हरि वस्सया एकँकारा, घाड़न भन्नणहारा समरथ पुरख आप अख्वांयदा। समरथ पुरख सर्ब गुणवन्ता, ज्ञान बोध ज्ञाता। मेल मिलाए गुरमुख साचे सन्ता, देवे नाम सच्ची सुगाता। सेज सुहाई नारी कन्ता, मिटी अन्धेरी राता। धी जवाई बणाए बणता, सुरती शब्दी नाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल पुरख बिधाता। खेले खेल सर्ब घट अन्तर, करन करावण जोग। सोहँ शब्द सच्चा गुर मन्त्र, अमृत आत्म रसना भोग। इन्द्र रोवे वेख मनवन्तर, शिव ब्रह्मा पया सोग। हरि हरि खेल जुगां जुगन्तर, खेले खेल सदा त्रैलोक। सर्ब थान आप निरंतर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचा घर, देवे दरस अमोघ। दरस अमोघ अजूनी रहिणा, निर्भय रूप समाया। आपणी बाणी आपे कहिणा, आपणा नाम धराया। आपणा भाणा आपे सहिणा, सहिण जोग आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेखण घर,

कलिजुग रैण अन्धेरा रिहा मिटाया। कलिजुग मेट अन्धेरी राता, सतिजुग चन्द चढ़ांयदा। गुरमुखां देवे साची दाता, धुरदरगाही वंड वंडांयदा। नादी दरस इक्क अकांता, नादी सुत्त रूप वटांयदा। खेले खेल बहु बिध भांता, भरमी भरम भुलांयदा। कूड़ी क्रिया ज़ात पाता, ज़ात जाति वेख वखांयदा। मन मति नार कमज़ाता, घर घर ताल वजांयदा। गुरमुख विरले मात पछाता, जिस जन आपणी बुझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां दस्से साचा घर घर साचा इक्क वखांयदा। साचा घर इक्क अपार, एका एक सुहाया। ना कोई दीसे चार द्वार, छंपर छन्न ना कोई जणाया। रवि ससि ना कोई चमत्कार, तारा मण्डल ना कोई दिसाया। गगन पताल ना कोई आकार, पुरी लोअ ना कोई दिसाया। ब्रह्मा शिव ना कोई सहार, विष्नूं वेस ना कोए वटाया। त्रैगुण माया ना कोई भण्डार, राजस ताजस सांतक ना मेल मिलाया। नाभी कँवल ना कोई उज्यार, पारब्रह्म ना ब्रह्म उपाया। धरत धवल ना कोई पसार, जल बिम्ब ना कोई उपाया। लक्ख चुरासी ना कोई धार, ना कोई रूप दरसाया। इक्क अकल्ला एकँकार, एक घर वसाया। जुग जुग आपणी धार, शब्दी शब्द लए उपाया। शब्द वंड सिरजणहार, ब्रह्मण्ड खण्ड उपाया। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख विचार, आपणी रचन रचाया। सेवक सेवा लाए सेवादार, जोती जोत करे रुशनाया। अलक्ख अगम्म अथाह सिरजणहार, सिर सिर देवे रिज़क सबाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आप समाया। लोकमाती लै अवतार, जुग जुग वेख वखाया। सन्त सुहेले लाए पार, आपणा नाम दृढ़ाया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, गुरसिख साचे लए जगाया। एका बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क सिखाया। दूई द्वैती घुँघट दए उतार, मस्तक काली शाही टिक्का दए गंवाया। नूरो नूर नूर जोत चमत्कार, मस्तक मस्तक भाग लगाया। मस्तक फोड़ खोलू किवाड़, बिन्दराबन दरसाया। गोकल मथरा कर विचार, काहना बंसरी इक्क वजाया। नाम बंसरी अपर अपार, धुन आत्मक रिहा उपजाया। उपजे धुन सुणे सुनणेहार, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। गुरसिख साजन गुण अवगुण ना रिहा विचार, जो जन सरनाई आया छाण पुण वेख सृष्ट सबाई संसार, हीरा लाल अमोलक गुरसिख इक्क साचे हट्ट विकाया। घर घर वज्जदे ढोलक छैणे, अनहद ताल ना कोई वजाया। गुरदर मन्दिर गुरु ग्रन्थ अग्गे रक्खी गोलक, सच भण्डार ना किसे भराया। गुर अर्जन दित्ता नाम अमोलक, धुर खज़ाना नानक हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख वेखण आया घर, जगत विछोड़ा दए तजाया। जगत विछोड़ा दित्ता तज, हरि साचे शब्द जणाईआ। गुर संगत हरिसंगत घर आपणे आउणा भज्ज, घर बैठा रिहा राह तकाईआ। लोक लज्जया सिँघ नरायण देणी तज, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। दो जहानां पड़दे रिहा कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। झूठा

४६३ ०७

ताल रिहा वज्ज, जूठ झूठ डंका लाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सूरा हाज़र हज़ूरा गुरसिख मन्दिर अन्दर बैठा सज, दिस किसे ना आईआ। घर घर सुत्तयां अमृत आत्म प्याए रज रज, शब्द कृपान सीस जगदीश तन गात्रे आप लटकाईआ। एका शब्द इक्क हदीस, पुरख अकाल मनाईआ। गा गा थक्के राग छत्तीस, भेव कोई ना पाईआ। प्रगट होया शाहो शबीस, गुर गोबिन्द संग रलाईआ। खेले खेल बीस इकीस, सिर आपणे छत्र झुलाईआ। मूर्ख मुग्ध अजाण नादान गुर गोबिन्द तेरी करन रीस, हथ्थ आपणे शस्त्र उठाईआ। अन्तिम माया ममता जाण पीस, कलिजुग चक्की रिहा चलाईआ। साध सन्त होए जिन खवीस, पूजा धान बेड़ा रिहा डुबाईआ। गुर की सेवा हरि की पौड़ी किसे ना रक्खी सीस, ना कोई सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख तेरा वेखण घर, चोरी चोरी आईआ। चोरी चोर करे नित चाकर, जुग जुग करदा आया। कलिजुग अन्तिम साचे घोड़े पाए पाखर, नीला नीली धारों पार कराया। खेले खेल कलिजुग तेरी अन्त आखर, ना कोई मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, आपणा कुण्डा रिहा खुल्हाया। आपणा कुण्डा खोल्ह ताकी, हरि नेत्र नैण उग्घाड़या। गुरमुखां दित्ती लोकमात बाकी, लहिणा चुकया सतारां हाढ़या। लेखे लाउणा जन्म ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक पार उतारया। अमृत प्याला देवे बण बण साकी, आत्म अन्तर पंज प्यारया। पैज रक्खे जन जीव जां की, जिस दित्ता नाम अधारया। जुग जुग चाल रक्खी बांकी, हरि सच्चा शाह अस्वारया। कलिजुग अन्तिम साचे अस्व एका चढ़या मार पलाकी, सोलां कलीआं आसण पा रिहा। आपणा जाणे आपे भविख्त वाकी, आपे लेखा लिखा रिहा। आपणा पड़दा आपे रिहा ढाकी, आपे मुख छुपा रिहा। धुरदरगाही अछल अछेद कलिजुग अन्तिम करन आया इक्क चलाकी, बेमुखां दिस ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेख घर, सोया सुत उठा रिहा। सोया सुत आप उठाया, दित्ता धुर फ़रमाणा। फड़के बांहों राहे पाया, मारया तीर निशाना। जोधा सूरा लड़ने आया, रामदास तेरे विच मैदाना। साचा खण्डा हथ्थ फड़के आया, कढुया बाहर म्याना। एका अक्खर पढ़ के आया, बोले नौजवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेखण घर, खेले खेल महाना। एका अक्खर रसना बोल, जगत हँकारा छाया। तेरा खोल्हण आया पोल, हरि मन्दिर वेख वखाया। गुर बाणी गुर करे मखौल, गुर का भेव ना पाया। हरि हरि अग्गों कहिंदा बोल, हरि हरि शब्द सुणाया। हरि पूरा तोलण आया तोल, अगम्म अथाह बेपरवाह नाम धराया। आदि अन्त ना जाए कदे डोल, डोलणहार सृष्ट सबाया। सिँघ संगत तेरा पूरा करन आया कीता पिछला कौल, गढ़ी चमकौर जो कराया। आपणा ताज तेरा सीस

उप्पर धौल, मेरा तेरा रूप वटाया। हौली हौली पड़दा देवे खोल्ह, पिछला जन्म दए दरसाया। तेरे अन्दर तेरा आपे पए बोल, तेरा तेरी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखण घर, हरि बाल अञ्याणा ल्ए धुर फ़रमाणा, हस्सदा खिडंदा वेखदा विखंदा लोकमात आया।

* १८ सावण २०१५ बिक्रमी मंगल सिँघ दे घर पिण्ड धारड़ ज़िला अमृतसर *

पुरख अगम्म निरगुण धार, जोती जोत उपांयदा। करता पुरख आप करतार, करनी करता नाम धरांयदा। पारब्रह्म रूप अपार, परम पुरख सदवांयदा। नूरो नूर नूर उज्जयार, आकार आकार समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क अकल्ला इक्क अख्वांयदा। जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि नाउँ धरांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, भेव कोई ना पांयदा। मूर्त अकाल जोत अकाला, अकल कला अख्वांयदा। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक सदा अख्वांयदा। आपणी शक्ती जोत ज्वाला, आप नाद उठांयदा। आपणा दीपक आपे बाला, प्रकाश प्रकाश आप टिकांयदा। आपणी आप उपा सच्ची धर्मसाला, थिर घर नाउँ धरांयदा। आपणे सर सरोवर मार उछाला, अमृत धार प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण रूप हरि करतार, अभेद भेव रखांयदा। आप आपणी पावे सार, ना कोई लेखा लेख लिखांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, एका घर सुहांयदा। सच महल्ला उच्च मिनार, दिस किसे ना आंयदा। आपणे अन्दर गुप्त ज़ाहर, आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धरांयदा। आदि पुरख आदि अनादि, एका एक अख्वाया। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाया। बणत बणाए ब्रह्म ब्रह्मादि, बेअन्त बेअन्त नाम धराया। शब्द चलाए बोध अगाध, एका नेत्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण रूप वटाया। निरगुण धार हरि अलक्ख, अलक्ख अलक्ख प्रवेस्सया। आप आपणा कर प्रतक्ख, आपणी करे आप अदेस्सया। आप आपणा करणहारा वक्ख, भेव ना जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेस्सया। आप आपणा जाणे पक्ख, आपणा लेखा आपे लेख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणी देवे आपे सीख्याा। निरगुण सिख्या पुरख अकाल, आपणी आप जणाईआ। प्रगट हो दीन दयाल, दयानिध धार चलाईआ। इक्क उपजाए साचा लाल, जोती माता गोद सुहाईआ। साचा सुत कर दलाल, आप आपणा ल्ए उठाईआ। इक्क बिठाए सच्ची धर्मसाल, चार दिवार ना कोई रखाईआ। छप्पर छन्न ना कोई पसार, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। अगम्म अगम्मड़े

करी एका कार, अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। थिर घर तेरा रूप अपार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। चारों कुन्ट बन्द किवाड़, दहि दिशा ना कोई खुल्हाईआ। लोआं पुरीआं ना कोई आकार, धरत धवल ना कोई सहाईआ। आकाश प्रकाश ना कोई विचार, ब्रह्मण्ड खण्ड ना रचन रचाईआ। ब्रह्मा शिव विष्न ना कोई प्यार, देवत सुर ना कोई उपाईआ। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई रखाईआ। पंज तत्त ना कोई आकार, हड मास नाड़ी रत्त ना कोई रलाईआ। रक्त बूंद ना कोई विहार, नारी कन्त ना कोई हंढाईआ। सूरज चन्न ना कोई पसार, तारा मण्डल दिस ना आईआ। जेरज खाणी ना बन्ह्रे धार, उत्भुज सेत्ज ना रचन रचाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, सच महल्ला बैठा आसण लाईआ। साचे सन्त कर प्यार, एका देवे सच सलाहीआ। अमृत प्याए ठंडी ठार, चरनोदक मुख छुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल अकाल मूर्त अकल कला समाईआ। मूर्त अकाल दर्द दु:ख भय भंजन, हरि हरि आप अख्वाया। आपणा शब्द बणाया साचा सज्जण, साचा संग रखाया। आपणी धूढ़ी आप कराया मजन, साचा ताल सुहाया। अनहद नाद अनादी वज्जण, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप एका धर, थिर घर साचा दए सुहाया। थिर घर साचा हरि सुहाया, निरगुण जोत जगाईआ। आपणा दीपक आप टिकाया, तेल बाती ना कोई रखाईआ। आपणे नेत्र आपे वेख वखाया, दूसर दर ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस हरि कर, करनी करता आप हो जाईआ। करनेहार हरि करतारा, आदि अन्त अख्वाया। निर्मल जोती नूर कर उज्यारा, नूरो नूर समाया। थिर घर साचे भर भण्डारा, शब्द भण्डारी नाम धराया। आपे बणया हरि वरतारा, ना कोई दूसर संग रलाया। खेले खेल अगम्म अपारा, आप आपणी कल वरताया। निहचल धाम अटल मुनारा, दर साचा आप सुहाया। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन बैठ सच्ची सरकारा, आप आपणा मार्ग लाया। आपणे अन्दर आपे करया वासन, पिता पूत ना कोई रखाया। ना कोई पृथ्मी ना आकाशन, गगन मण्डल ना कोई उपजाया। आपे प्रगट होया हरि शाहो शबाशन, शाह सुल्ताना नाम धराया। आपणे मण्डल आपे पावे रासन, आपे आपणी वेख वखाया। आपणे दर आपे होया दासी दासन, सेवक सेवादार ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका हरि हरी हरि दए उपजाया। हरी हरि हरि नूर, हरि हरि आप उपजांयदा। सर्बकला आपे भरपूर, समरथ पुरख अख्वांयदा। आपे हाज़र सदा हज़ूर, हाज़र हज़ूर नाम धरांयदा। आपणी मनसा आपे पूर, आसा पूरी आप करांयदा। आपणा सहिसा आपे करे दूर, सांतक सति वरतांयदा। आपणे घर आपे वसे नेड़े दूर, दूर नेड़े ना कोई जणांयदा। एका शब्द अनादी वजाए साची तूर, अनहद तार हिलांयदा।

थिर घर तेरा दर घर हरि मन्जूर, आदि जुगादी आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वसांयदा। साचा घर हरि महल्ला, एका एक वसाया। निरगुण रूप बैठ अकल्ला, जोती जोत जगाया। ना कोई दूई द्वैती दिसे सल्ला, एका धार बंधाया। आपे वस्सया उच्च अटला, उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह नाउँ धराया। ना कोई जल ना कोई थला, ना कोई सागर सिन्ध रुढ़ाया। ना कोई पंज तत्त विकारा करे हल्ला, मन मति बुध ना दए सज़ाया। निरगुण धार हरि निरँकार इक्क अकल्ला, एकँकारा सति पुरख निरँजण पसर पसार पारब्रह्म रूप वटाया। थिर घर बैठ आप करतार, सच सिँघासण हरि सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाया। जोती जोत हरि उपा, आपणी धार चलाईआ। नाउँ निरँकारा आप रखा, निरगुण वेस वटाईआ। थिर घर दरबारा दए वसा, धुरदरगाही बेपरवाहीआ। शब्द अखाड़ा दए लगा, वज्जे ताल वाहो दाहीआ। आपणी सतार आपे दए हिला, हिलावणहार आप अख्वाईआ। आपणा नाअरा आपे दए ला, आपणे दर अलक्ख जगाईआ। आपणी पुकार आपे लए सुणा, आप आपणा नाउँ उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण धार निरगुण रिहा आप वखाईआ। निरगुण धार करनी करते, आपणी आप चलाईआ। आपणी धरनी धरत आपे धरते, धरत धवल सुहाईआ। आपे चरनी आपणी सरनी आपे पड़ते, आप आपणा सीस झुकाईआ। आपणी विद्या आपणे अक्खर आपे पढ़ते, आपे करे जणाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़ते, घड़णहार आप अख्वाईआ। आपणे सिँघासण आपे चढ़ते, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी नाउँ धराईआ। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म, एका एकँकारा। ना मरे ना पए जम्म, ना होए किसे सुत दुलारा। ना कोई गगन पताल दिसे थम्म, ना कोई पार किनारा। ना कोई खाए पीए तम, ना कोई रसना रस करे प्यारा। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, ना कोई त्तत्व तत्त आकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर पाए आपणी सारा। आपणी सार आपे पा, आपणा मूल चुकाया। आपणी जोती आप जगा, आप आपणा वेख वखाया। आपणी गोती आप बणा, वरन गोत ना कोई रखाया। आपणी सोई सुरती आप जगा, आपणी आप लए अंगड़ाया। आपणी चोटी आपणे आप लए चढ़ा, आप आपणे अन्तर आसण लाया। आपणा कोट गढ़ आपे दए सुहा, थिर घर नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वेस हरि, हरि सज्जण आप अख्वाया। हरि सज्जण हरि मीतड़ा, एका एक अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, भेव कोए ना पांयदा। ना कोई मन्दिर गुरुद्वार मसीतड़ा, शिवदवाला ना कोई रखांयदा। ना कोई राग नाद ना गीतड़ा, ना कोई साज वजांयदा। ना कोई नाम ख़ुमार

मदि प्याला किसे पीतड़ा, ना कोई जोत ज्वाला जगांयदा। निरगुण रूप इक्क अतीतड़ा, थिर घर आसण लांयदा। ना ठंडा ना सीतड़ा, अग्नी अग्ग ना कोई जलांयदा। आपणा आप आपे चीतड़ा, जोधा सूरबीर आप अख्वांयदा। आपणा गुर सतिगुर आपे होया बीठल बीठला, मोहण माधव नाम धरांयदा। आपे वस्सया आपणे चीतला, चितवत ठगौरी आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग हरि करतार, करणहार पुरख अख्वांयदा। आदि पुरख हरि करनेहारा, एका एक अख्वाया। एका बैठ सच्चे घर बारा, एका थान सुहाया। एका रूप अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाया। अलक्ख निरँजण अलक्ख अलक्ख लगाए नाअरा, अलक्ख अलक्खणा नाउँ धराया। थिर घर नर हरि हो प्रतक्ख, आप आपणा रूप दरसाया। जोती शब्दी कीता वक्ख, आपणी धार बंधाया। आपे भरे आपे करे सक्ख, आपे करणहार हो जाया। आप उपाए खपाए लए रक्ख, रक्खणहार हरि रघुराया। थिर घर दुआरा आदि अन्त ना जाए ढठ्ठ, हरि साचे आप बणाया। घर बैठ पुरख समरथ, आपणा रंग रंगाया। आपणे विसूरे घर आपणे गए लथ्थ, आप आपणा दर्शन पाया। आपणे दुआरे आपे गया ढठ्ठ, आपणा सीस आपणे चरन टिकाया। ना कोई मन्दिर दिसे मट्ठ, चार दिवार ना कोई रखाया। ना कोई तीर्थ अठसठ, खाणी बाणी ना वेख वखाया। जोती शब्दी इक्क अकट्ठ, थिर घर साचे दए सुहाया। आपे वेखे नठ्ठ नठ्ठ, आपणा पैंडा आप मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा लए उपाया। सच महल्ल उच्च अटारी, हरि साचे आप बणाईआ। जगे जोत इक्क निरँकारी, हरि साचा वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारी, आप आपणी कल वरताईआ। सति पुरख निरँजण बन्ने धारी, आदि अन्त इक्क रघुराईआ। अकाल मूर्त हो न्यारी, साची सूरत लए प्रगटाईआ। जोती करता करे खेल आपणी कारी, करन करावणहार भेव ना राईआ। सच तख्त सच सुल्तान बैठा हरि सिक्दारी, साची सिख्या इक्क जणाईआ। एका शब्द शब्द गुर अपारी, गुर सतिगुर नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप एका हरि, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर साचा शब्द सिँघासण, हरि साचा आप बराज्जया। जगे जोत पुरख अबिनाशन, आपणा रचया आपे काज्जया। खेले खेल शाहो शबाशन, आपणी मारे आपे वाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा साजन आपे साज्जया। आपणा साजन हरि आपे साज, आपणी रचन रचाईआ। आपे करे कराए ग़रीब निवाज़, आपणी दया आप कमाईआ। आप आपणी रक्खे लाज, आप आपणा पड़दा पाईआ। आप आपणा रक्खे ताज, आप आपणे सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घर आप वजाए शब्द सच्ची वधाईआ। शब्द वधाई हरि घर वाजा, अनहद ताल वजाया।

थिर घर तेरा साजन साजा, हरि साचे ताल सुहाया। सच सुल्तान वड राजन राजा, राज़िक रहीम आप अख्वाया। पारब्रह्म सुल्तान नबाबा, एका नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा काज रचाया। थिर घर साचे रचया काज, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। आप आपणी मार अवाज़, आप आपणा लए उठाईआ। आप आपणे दर देवण आया दाज, आपणे घर करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख निरजंण थिर घर बैठ ख़ुशी मनाईआ। साचा सगन थिर घर लग्गा, हरि साचे आप लगाया। जोती सुत शब्द दुलारे बद्धा तगा, एका तन्द बंधाया। एक जैकारा एका घर एका वक्त लग्गा, एका रिहा सुणाया। एका रूप शाहो भूप वड सूरा सरबग्गा, एक नाम धराया। एका जोती एका नूर एका शाह सर्बकला भरपूर इक्क अखाड़ा साचा लग्गा, एका नाद सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा दए सुहाया। थिर घर तेरी साची धार, हरि साचे आप चलाईआ। जोती सुत कर प्यार, शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द रूप आप करतार, निरगुण वेस वटाईआ। धुन अनादी अपर अपार, आप आपणी रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा अंग आपे रिहा कटाईआ। थिर घर बैठ हरि निरँकार, आपणा आप कटाया। साचा सुत कर त्यार, दूल्हा इक्क सजाया। एका पाए साचा हार, दिस किसे ना आया। सोलां कलीआं तन शृंगार, सति सरूपा आप वखाया। इक्क अकल्ला एकँकार, एका रंगन रंग रंगाया। सीस सेहरा नाम दस्तार, मस्तक ललाटी औखी घाटी थिर घर दरबार, सच महल्ले आप बठाया। जोती माता कर प्यार, अमृत उत्तों वार वखाया। पाया गहिणा हरि शृंगार, नेत्र नैण सुहाया। साचे कन्त कर प्यार, पूत सपुत्री एह समझाया। एका पुरख एका नार, एका घर वसाया। नाता बणया अपर अपार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। सो पुरख निरँजण किरपा धार, आपणा देणा मूल चुकाया। हँ रूप हो निरँकार, शब्द शब्दी विच समाया। सोहँ शब्द अपर अपार, पारब्रह्म आपणा आप उपाया। सो पुरख निरँजण बणया करनेहार, हँ रूप अनूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा एका साचे सुत देवे वर, लोआं पुरीआं रचन रचाया। लोआं पुरीआं कर आकार, हरि साची रचन रचाईआ। शब्द दुलारा ख़बरदार, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। निरगुण वेखे वारो वार, आपणी जाणे वड वड्डी वड्याईआ। आदि अन्त इक्क एकँकार, आपणी कल रखाईआ। साध सन्त ना पावे सार, भेव अभेदा बैठा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस करनेहारा आप, आपणा रिहा कराया। आप आपणा धर धरवास, धीरज धीर दए धराया। त्रैगुण रूप शाहो शबास, आप आपणा लए वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कँवल

कँवला नाम धराया। आप आपणी रचन रचा, आपणी बणत बणाईआ। ब्रह्मा विष्न महेष सेवा ला, खेले खेल बेपरवाहीआ। शब्द संदेसा दए सुणा, बोध ज्ञान इक्क जणाईआ। निरगुण सरगुण मेल मिला, त्रैगुण खेले खेल पंज तत्त करे कुड़माईआ। आकाश प्रकाश गया समा, जल धारा धवल टिकाईआ। सेवक सेवा आप लगा, दे सिख्या मति समझाईआ। महिमा अगणत गणत आप गणा, वेद कतेबा रिहा लिखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म झोली पा, ब्रह्म ब्रह्म दरसाईआ। लक्ख चुरासी वेख वखा, निज बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल खेलणहारा, आदि अन्त एकँकारा, निरगुण दाता पुरख बिधाता घर घर बैठा सेज वछाईआ। लक्ख चुरासी आसण लाया, पारब्रह्म अनरूपा। गुरमुख विरले दर्शन पाया, जिस मिल्या शाहो भूपा। बजर कपाटी कुण्डा लाहया, पार कराए नौ दुआरे दहि दिशा चारे कूटा। एका साचा दर सुहाया, सतिगुर पूरा आपे तुठा। हरिजन साचे लए मिलाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण मेला जोती धार, शब्दी धार चलाईआ। प्रगट हो विच संसार, आदि जुगादी खेल खिलाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा वेता लए उभार, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। शिव शंकर बख्शे इक्क प्यार, त्रिसूल हथ्थ फड़ाईआ। विष्नूं वंसी खेल अपार, राजक रिज़क सबाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट बैठा आसण लाईआ। जोग जुगत जुग जुगन्तर पावे सार, मुन मुनीश्वर बेपरवाहीआ। साध सन्त गुर पीर लै अवतार, आप आपणा नाउँ धराईआ। वेस अनेका करे कराए हरिजन यार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंडण आप वंडाईआ । निरगुण आपणी वंड वंडा, आपणा रूप दरसाया। लोकमात कन्ढा वेख वखा, पंज तत्त वसेरा पाया। ब्रह्मण्ड साचे खोज खुजा, जेरज अंड लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग लेखा लिखणहारा, साची चलत चलांयदा । सतिजुग साचा कर पसारा, साचा धर्म धरांयदा। त्रेता तेरा खेल न्यारा, तिंआ वेस वटांयदा। राम रूप राम करतारा, रघुपति नाउँ धरांयदा । तोड़े गढ़ लंका हँकारा, एका बाण चलांयदा। द्वापर तेरा खेल न्यारा, धरत धवल सुहांयदा। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण हरि करतारा, मोर मुकट सीस टिकांयदा। ग़रीब निमाणे पावे सारा, जन भगतां पैज रखांयदा। बेमुख मारे पकड़ पछाड़ा, रथ रथवाही नाम धरांयदा। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, अन्तिम अन्त रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आप वेस वटांयदा। कलिजुग वेस हरि अवल्ला, आपणी खेल वरताईआ। ईसा मूसा वसे महल्ला, वेखे सहिज सुभाईआ। संग मुहम्मद नाल रलाई राणी अल्ला, एका नाअरा लाईआ। जूठ झूठ वल छल्ला,

माया ममता करी कुड़माईआ। लोकमाती फलया फुला, एका मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल खेलणहार, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। जुग जुग खेल हरि खिलंता, खेलणहार अख्वाया। निरगुण जोत श्री भगवन्ता, आप आपणा वेस वटाया। आपे पुरख नारी कन्ता, नानक गोबिन्द रूप सुहाया। नाम सति जणाई जीवां जन्ता, धुर फ़रमाण अल्लाया। गढ़ तुड़ाया हउमे हँगता, माया मोह चुकाया। मेल मिलाया साची संगता, दर साचा इक्क सुहाया। अंग लगाया नानक अंगदा, निरगुण जोत जगाया। अमरदास दर एका मंगदा, हरि झोली नाम भराया। रामदास घर साचा लँघदा, निज घर आपणे दर्शन पाया। गुर अर्जन खेल सूरा सरबंग दा, आप आपणा भेव खुल्लाया। हरिगोबिन्द तंग एका कसदा, शस्त्र बस्त्र तन सजाया। हरिराए भुक्ख नंग कट्टदा, जो जन सरनाई आया। हरिकिशन जगत दुआरे मूल ना संगदा, पंज तत्त लेखे लाया। तेग बहादर गुरमुखां काया चोली आपणी रंगदा, सीस आपणा भेट चढ़ाया। गुर गोबिन्द प्यार एका मंगदा, गुर संगत मेल मिलाया। दर द्वार जो जन आए भुक्खा नंगता, दाता दानी नाम दान झोली पाया। खेले खेल जगत जंग दा, जगत विकारा दए मिटाया। कलिजुग अन्तिम मंग एका मंगदा, माछूवाड़े डेरा लाया। तेरा दर्शन हरि पलँघ दा, नेत्र लोचन नज़री आया। खेड़ा छुट्टे लोकमात स्सयाल झंग दा, यार यारड़े मेल मिलाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी शब्द सुनेहड़ा एका घलदा, मेरा तेरा तेरा मेरा तेरी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्मादि गुर पीर अवतार सन्त साध नाम धराया। गुर गोबिन्द सच सलाह, हरि साचे शब्द जणाईआ। कलिजुग अन्तिम बण मलाह, प्रभ बेड़ा बन्ने लाईआ। ईसा मूसा रहिणा ना, संग मुहम्मद दए दुहाईआ। सदी चौधवीं लग्गे ढाह, कलिजुग वेखे बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे हा, सत्तां दीपां इक्क दुहाईआ। लक्ख चुरासी पत्त कोई रक्खे ना, राज राजानां मेट मिटाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता जन भगतां पकड़े अन्तिम बांह, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द सुहेला इक्क इकेला सिर रक्खे ठंडी छाँ, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। आपे बणे पिता माँ, आप आपणी गोदी लए उठाईआ। हरि हरि भेव कोई जाणे ना, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। निहकलंकी जोती जामा कोई पछाणे ना, सम्बल नगरी इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, कलिजुग मेला सहिज सुभाईआ। गुर गोबिन्द सुनणेहारा, सुणया नाम अमोला। प्रभ अबिनाशी बोलणहारा, ना कोई वस्सया पंज तत्त चोला। पूरे तोल तोलणहारा, नानक बणया दर घर गोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होवे वीह सौ बिक्रमी सोलां। सम्मत सोलां तेरी धार, हरि गोबिन्द मात रखाईआ। प्रगट

होए हरि निरँकार, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। शब्द डंका अपर अपार, राउ रंकां रिहा सुणाईआ। साधां सन्तां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। तोड़े गढ़ लंका हँकार, पन्दरां कत्तक फेरा पाईआ। वाली हिन्द रिहा विचार, ना दीसे कोई सहाईआ। लहिंदी दिशा पावे सार, लेखा लिखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा गोबिन्द पूर कराईआ। गुर गोबिन्द सतिगुर साचा, धुर फ़रमाण सुणाया। जीउ पिण्ड तन जीव काचा, थिर रहिण ना पाया। पंज तत्त नौ दुआरे नाचा, हरि का शब्द दिस ना आया। नाम सति ना हिरदे वाचा, माया मोह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका फतिह वजाया। फतिह डंक हरि निरँकार, आपणा आप वजांयदा। खेले खेल अपर अपार, सृष्ट सबाई दिस ना आंयदा। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। निर्मल जोती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। सच धर्म इक्क जैकार, सो पुरख निरँजण नाअरा लांयदा। हँ हँगता दए मार, एका खण्डा चलांयदा। साची संगता कर विचार, सतिगुर सिख्या इक्क बुझांयदा। काया चोली रंग करतार, नाम मजन इक्क रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भाणा साचा राणा आपणे हथ्थ रखांयदा। आप आपणी कल वरता, आपणे रूप समाया। सृष्ट सबाई लए उठा, चारों कुन्ट फेरा पाया। शब्द खण्डा इक्क चमका, आदि शक्त वेस वटाया। नाम भगौती दए रखा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी भरम भुलाया। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ला, हरि हरि मूल ना भांयदा। माया ममता जूठा झूठा रुला, सच सुच्च ना कोई दृढ़ांयदा। भाग लगाया ना काया कुला, बुध बिबेक ना कोई रखांयदा। मन मति ना होई सुलह, गुरमति ना कोई दरसांयदा। पाणी प्या झूठी चुला, अमृत धार ना कोई प्यांअदा। काम क्रोधी देस भुल्ला, हरि का नाम ना कोई ध्यांअदा। चारों कुन्ट अन्धेरा झुल्ला, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम फलया फुला, सिम्मल रुक्ख हुलार रखांयदा। आपणे कंडे आपे तुला, सतिगुर नानक तेरां तेरी धार चलांयदा। पारब्रह्म दर द्वार जो जन आए भुल्ला, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। पुरख अकाल दर द्वार तेरा सदा खुल्ला, ना कोई बन्द करांयदा। कलिजुग अन्तिम फल हुला, फुल्ल कोई दिस ना आंयदा। सम्मत सम्मती पैणा मुल्ला, परखे परखणहार नाम सोटी इक्क लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जामा जोती नूर दरसांयदा। निहकलंक जोती नूर, शब्दी डंक वजाया। शब्द अनादी वज्जे तूर, धुर फ़रमाणा रिहा सुणाया। कलिजुग मिटे पसारा कूड़, कूड़ी

क्रिया रहिण ना पाया। कामी क्रोधी माया ममता ना दिसे मूढ़, विकार हँकार रहिण ना पाया। पारब्रह्म जो जन मांगे तेरी धूढ़, सो जन रहे सरनाया। सतिगुर पूरा काया चोली रंगन चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, एका शब्द डंक वजाया। शब्द डंक धुर दरगाह, हरि साचे सच जणाईआ। सतिगुर पूरा बण मलाह, जन बेड़ा बन्ने लाईआ। सचखण्ड दुआरा एका राह, एका मार्ग रिहा वखाईआ। चार वरनां पकड़े बांह, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई छिंटो बणाए भैण भ्रा, फारसी यूनानी करे कुड़माईआ। एका नाता दए सिखा, ब्रह्म जोती ब्रह्म धी जवाईआ। पुरख बिधाता दया कमा, साचा सगन रिहा मनाईआ। कलिजुग अन्धेरी राता दए मिटा, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाईआ। एका गाथा दए सुणा, एका कर्म कमाईआ। एका राथा दए चला, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। सगला साथा दए निभा, जो मिल्या विछड़ ना जाईआ। लहिणा देणा मस्तक माथा दए चुका, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म लेखा दए मुका, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना लए प्रना, जिस मिली हरि सरनाईआ। थिर घर बहाए साचे थाँ, हरि जोती जोत मिलाईआ। नाता तोड़े पिता माँ, साक सज्जण ना भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच सुच्च दए वरताईआ। सच सुच्च हरि वरतारा, घर साचे हरि पाया। जोती जामा लै अवतारा, निहकलंका नाउँ धराया। चार वरनां पावे सारा ऊँचां नीचां मेल मिलाया। राउ रंक वखाए इक्क दुआरा, एका धाम सुहाया। एका जाप एका अक्खर आपे आप, एका नाउँ उपाया। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण रंग रंगाया। राजस तामस तेरा प्रताप, कलिजुग झोली पाया। सांतक सति कर वरतांत, सतिजुग साचे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका दर साचे हरि लोकमात आप खलाया। लोकमात खुल्ह्या दर, हरि साचे जोत जगाईआ। चार वरनां मिले वर, वर दाता इक्क अख्वाईआ। आवण जावण चुक्के डर, मात गर्भ फंद कटाईआ। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। आप खुल्हाए बन्द किवाड़, बजर कपाटी सिला तुड़ाईआ। अन्दर मन्दिर वेखे आपे चढ़, दर साचे फेरा पाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुर पूरे वड वड्याईआ। पंचां चोरां आपे लड़, आपे करे सफाईआ। हवन मढ़ी गोर ना जाए सड़, अग्नी अग्ग ना अग्ग जलाईआ। गुरमुख साचे लए फड़, दिस किसे ना आईआ। उच्चे टिल्ले वेखे चढ़, एका दर खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी हर घट

बैठा आसण लाईआ। हर घट हरि सज्जण वस्सया, पारब्रह्म बेअन्त। जन भगतां दर दुआरे फिरे नस्सया, मेल मिलावा साचे सन्त। शब्द निराला तीर कस्सया, रसना जिह्वा मणीआ मंत। काया चोली मन्दिर अन्दर बहि बहि हस्सया, गुरमुख विरली नारी पाया हरि साचा कन्त। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोत जगाता हरि रघुराता, गुरसिख साचे वज्जी वधाई, घर पाया वर पाया हरि हरि हरि बेअन्ता।

* १८ सावण २०१५ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे घर भलाई पुर *

हरि ठाकर अबिनाश, हरि हरि नाम ध्याया। आदि अन्त ना जाए विनास, एका रंग समाया। आप आपणे वस्सया पास, ना कोई दूसर संग रखाया। आप आपणी वेखे रास, आप आपणा मण्डल अग्गे टिकाया। आप आपणे घर करया वास, शाहो भूप नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती नूर जगाया। जोती नूर हरि करतार, अकल कला समांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अभेव अभेदा भेव छुपांयदा। आदि निरँजण नर निरँकार, वेस अवेसा वेस वटांयदा। पारब्रह्म खेल अपार, खेलणहार दिस ना आंयदा। जुग जुग जाणे आपणी धार, धरनी धार आप चलांयदा। इक्क अकल्ला एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। सच घर हो त्यार, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे दर आपणा मंगल आपणी रसना आपे गांयदा। आपणा दर हरि आप सुहा, आप आपणी जोत जगाईआ। आपणा दरस आपे पा, आपे करे सिफ्त सलाहीआ। आपणा तख्त आपणा चरन टिका, आपे बैठे बेपरवाहीआ। आपणा बचन आपे दए सुणा, शब्द शब्दी नाउँ धराईआ। एका गढ़ लए रचा, थिर घर वेख वखाईआ। रूप रंग कोई जाणे ना, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल खेलणहार आप अख्वाईआ। खेलणहार सर्ब हरि ठाकर, एका एक अख्वाया। आपणा कर्म आपे करे उजागर, ना कोई दूसर लेख लिखाया। आपणे बणे आप सुदागर, आप आपणा वणज रखाया। आपणी जोत आप जगाए आपणी गागर, आपणा दीपक आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणा रूप दरसाया। निरगुण हरि आप आदि निरँजण, आदि पुरख अकाला। आप आपणा बणया दर्द दु:ख भय भञ्जण, करे कराए सदा रखवाला। आप आपणा होया सज्जण, पारब्रह्म प्रभ दीन दयाला। आपणे घर आपे आया पड़दे कज्जण, आप सुहाए सच्ची धर्मसाला।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला। जुग जुग चाल चलणेहारा, हरि हरि आप अख्वाया। लोकमात लै अवतारा, भेखा धारी भेख वटाया। खेले खेल अगम्म अपारा, लेखे लेख ना कोई लिखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। नानक गोबिन्द बण लिखारा, एका मंग मंगाया। मंगी मंग धुर दरबारा, देवणहार हरि रघुराया। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी पावे सारा, धुन अनादी ताल वजाया। बोध अगाधी इक्क जैकारा, आपणा नाम सुणाया। सतिनाम कर प्यारा, लोकमात वरताया। एका शब्द एका धारा, एका मार्ग पाया। भरमे भुल्ला सर्ब संसारा, हरि का भेव दिस ना आया। माया ममता मोह कर प्यारा, हउमे हँगता रोग वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा रक्खया नाउँ, आपणी कल वरताईआ। आपे वस्सया आपणे नगर गराउँ, थिर घर साचा थान सुहाईआ। आप आपणी देवे ठंडी छाउँ, छप्पर छन्न ना कोई जणाईआ। आप आपणा करे न्याउँ, लोकमात फेरा पाईआ। फड़ वरोले हँस काउँ, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुर पूरे बलिहार बलिहार सद बलि बलि जाउँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सज्जण सुहेल, इक्क अकेल बेपरवाहीआ। खेलणहार जगत खिलारी, पारब्रह्म अख्वाया। कलिजुग अन्तिम लै अवतारी, आपणा नाउँ धराया। शब्द डंका वड संसारी, एका रिहा वजाया। जोती नूर कर उज्यारी, अन्ध अन्धेर दए मिटाया। चार वरन अठारां बरन उठाए वारो वारी, सोया कोई रहिण ना पाया। मन्दिर मस्जिद गुरुद्वार बोले इक्क जैकारी, आपणा नाअरा लाया। पुरख अकाला दीन दयाला कर त्यारी, जोती जामा फेरा पाया। नौ खण्ड सत्त दीप करे सच्ची सिक्दारी, साचा तख्त सुहाया। ब्रह्मा विष्न शिव होए सेवादारी, सेवक सेवा इक्क रखाया। करोड़ तेतीसा कर पनहारी, आप आपणा लए सुहाया। आपणे तन कर सिंगारी, आपणा बस्त्र लए सजाया। एका खण्डा नाउँ निरँकारी, हरि आपणे हथ्थ उठाया। लोआं पुरीआं पावे सारी, लोकमाती उठ उठ धाया। कलिजुग अन्तिम कर ख्वारी, लक्ख चुरासी दए सज़ाया। गुरमुख साचे लए उभारी, जिस जन एका बूझ बुझाया। हउमे हँगता रोग दए निवारी, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। अमृत आत्म देवे ठंडा ठारी, सीतल सति सन्तोख वरताया। काम क्रोध लोभ मोह नेड़ ना आए हँकारी, जूठ झूठ मेट मिटाया। सचखण्ड देवे सच सच्ची सिक्दारी, हरि सच्चा शाह हो आया। खेले खेल वारो वारी, जुग जुग आपणा वेस वटाया। राम कृष्न जोत उज्यारी, कलिजुग रंग रंगाया। वेद व्यासा बण लिखारी, आप आपणा मूल चुकाया। उच्चा टिल्ला गढ़ अपारी, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा डेरा लाया। सम्बल नगरी खेल न्यारी, शब्द सिँघासण आसण डाहया। जगे जोत एक एकँकारी, एका रूप दरसाया। चार कुन्ट दहि दिशा

पावे सारी, रवि ससि होए सरनाया। पृथ्मी आकाश करे निमस्कारी, मण्डल मण्डप सीस झुकाया। गुर पीर अवतार साध सन्त ढहि पए द्वारी, चरन धूढ़ मस्तक लाया। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगारी, औल्या पीर शेख़ मुसायक लेखा लिख सके ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल जोत निरँकारीआ। जोत निरँकारी जोत उजाला, जोती जोत जगाईआ। प्रगट होया दीन दयाला, दयानिध अख्वाईआ। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, घट घट बैठा आसण लाईआ। आपे आदि शक्त जोती नूर उजाला, आपे आप डगमगाईआ। आपे नाउँ धराए पुरख अकाला, पुरख अकाल नाउँ धराईआ। आपे बैठा आपणी धर्म सच्ची धर्मसाला, चार दिवार ना कोई रखाईआ। जुग जुग आदि जुगादि जन भगतां दस्से राह सुखाला, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। नाम पहनाए तन साची माला, अट्ठ अठोतर पार कराईआ। अजप्पा जाप रसन सुखाला, सोहँ रसना गाईआ। कलिजुग आया तोड़न जगत जंजाला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन लहिणा देणा मूल चुकाईआ। हरिजन लहिणा हरि दर लैणा, हरि साचा आप चुकांयदा। तन पहनाए बस्त्र गहिणा, एका कप्पड़ वेख वखांयदा। हरि हरि भाणा लक्ख चुरासी सिर ते सहिणा पैणा, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। घर घर मन्दिर मस्जिद गुरदर बहि बहि सभ ने कहिणा, पारब्रह्म दिस ना आंयदा। गुरमुख विरला नेत्र लोइण नैण दर्शन पेखे नैणा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। मनमुखां खाए लाड़ी मौत डैणा, धर्म राए हुक्म चलांयदा। गुरसिख गुरमुख धाम अवल्ले एका बहिणा, हरि साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि निरँकार, गोबिन्द सेवा लाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, एका हथ्थ फड़ाईआ। लोआं पुरीआं मारे मार, ना सके कोई बचाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा रोवण ज़ारो ज़ार, ना दिसे कोई सहाईआ। नौ खण्ड हाहाकार, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। त्रैगुण माया कर शृंगार, बैठी कजला पाईआ। पंज तत्त करे प्यार, जूठ झूठ कुड़माईआ। माया ममता कर प्यार, हउमे रोग गोद उठाईआ। कलिजुग कूड़े मारे मार, चारों कुन्ट डंक वजाईआ। साध सन्त होए विभचार, हरि हरि दरस कोई ना पाईआ। तीर्थ तट्टां कर विचार, साचा हट्ट ना कोई जणाईआ। हरि का शब्द ना करे कोई विचार, घर घर बैठे करन पढ़ाईआ। ग्रन्थी पन्थी गए हार, नानक गोबिन्द दरस ना पाईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, अट्ठे पहर जोती जोत डगमगाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, धुर दरबारे रिहा वजाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहार, समरथ हथ्थ वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कथनी अकथ कथा आपणी आप करे जणाईआ। कथनी अकथ कथा हरि जणाए, भेव कोई ना पाईआ। सर्बकला समरथ आप अख्वाए, देवी देव ना कोई मनाईआ। सृष्ट सबाई मथ वखाए, आपणी कल वरताईआ। सीआं साढे तिन्न हथ्थ वक्त चुकाए, रविदासे वंड वंडाईआ। लक्ख चुरासी भज्ञ कराए, गुरमुख साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। निहकलंका लै अवतार, शब्दी डंक वजाईआ। शब्द डंक अपर अपार, जीवां जन्तां रिहा जगाईआ। साधां सन्तां दए हुलार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। तीर्थ तट्टां पावे सार, सर सरोवर वेख वखाईआ। मनमुख जीवां वेखे नौ द्वार, गुरमुखां आत्म बूझ बुझाईआ। आपे खोले बन्द किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, आपणी हथ्थीं जोत जगाईआ। जोत जगाए नाड़ नाड़, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। दस्म दुआरी महल्ल अटल उच्च मुनार, जोती जोत डगमगाईआ। पंचम गायण वारो वार, साची सखीआं एका मंगल सुणाईआ। साची सेजा कर प्यार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। गुरमुख साजन लए उभार, घर साचे मेल मिलाईआ। विछड़ ना जाए संसार, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख मेला सच घर, मनमुखां दए सज़ाईआ। गुरमुख सतिगुर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। मानस मानुख लेखे लाया, सुरती सुरत प्रनाईआ। भरम भुलेखा दूर कराया, जो जन आए सरनाईआ। मनमुख वेखा वेखी वक्त लँघाया, वेला गया हथ्थ ना आईआ। औल्या पीर शेख़ कुतब गौंस रिहा कुरलाया, पीर दस्तगीर पई लड़ाईआ। पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मस्तक मेख ना कोई लगाया, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। गुर दस्मेसे जोत जगाया, लोकमात होए रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव रहे सरनाया, जुग जुग खेल रचाईआ। निरगुण जोत करी कुड़माया, वाह वाह साचा सगन मनाईआ। सम्बल नगरी रुत्त सुहाया, सच सिँघासण आसण डाहीआ। उत्ते बैठा बेपरवाहया, दिस किसे ना आईआ। गुर अर्जन दए गवाहया, हरि पूरा हरि हरिजन हरि मन्दिर एका एक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे लए जगाईआ। गुरमुख साचे उठ उठ जाग, हरि साचे जोत जगाईआ। सम्बल नगरी लग्गा भाग, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। आपणी हथ्थीं पकड़े वाग, गुर चेला रूप दरसाईआ। साचे चेला नारी कन्त सुहाग, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। सो पुरख निरँजण दए वैराग, हँगता हँ मेट मिटाईआ। पंज तत्त विकारा बुझे आग, जो रसना हरि हरि गाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागों हँस बणाईआ।

दीपक जोती जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आप जणाए आपणा भविख्त वाक्, वेद कतेब ना कोई जणाईआ। शब्द घोड़े चढ़या साचे राक, शाह अस्वार नाउँ धराईआ। वेख वखाए ख़ाकी ख़ाक, चौदां लोकां फेरा पाईआ। चौदां तबकां पाकी पाक, नबी रसूलां दए उठाईआ। दर दुआरे बैठा रिहा झाक, दिस किसे ना आईआ। लोकमात कलिजुग अन्तिम खोल्ह्या आपणा ताक, आपणे घर करे रुशनाईआ। त्रैगुण तेरा चुक्के बाकी बाक, पिछला मूल चुकाईआ। कलिजुग तेरा नाता तोड़े जूठा झूठा साक, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग वेखे अन्तिम राह, कवण दुआरे हरि बेपरवाह बैठा आसण लाईआ। कवण दुआरे हरि हरि बैठ, आपणा रंग रंगाया। वेख वखाणे राज राजान शाह सेठ, लेखा कोए रहिण ना पाया। अन्तिम भन्ने कौड़े रेठ, शब्द हथौड़ा एका लाया। जन भगतां रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हत्थ टिकाया। मनमुख जीवां वेखे काया खेत, अमृत फल ना कोई खवाया। घर घर रोणा पए पंचम जेठ, लिख्या लेख ना कोई मिटाया। उठ उठ वेखण धारी केस, गुर गोबिन्दा कवण कूटे बैठा डेरा लाया। जोधा सूरबीर बीरा गुर दस्मेसा, नीला नीली धारों पार लए कराया। बस्त्र शस्त्र करया वेस, आप आपणा रूप वटाया। कलिजुग माया तेरी कोई ना चले पेश, शब्द खण्डा हत्थ उठाया। तख्त ताज ना बैठे कोई नरेश, सीस मुकट ना कोई सुहाया। आपणे नेत्र आपणी अक्खीं लैणा वेख, प्रभ साचा दए वखाया। भेख पखण्डा मिटे भेख, भेखाधारी कोई दिस ना आया। पुरख अकाल तेरी एका रेख, लक्ख चुरासी दए पढ़ाया। गुरमुखां मस्तक लाए मेख, जोत ललाट करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा बस्त्र गहिणा तेरी झोली पाया। कलिजुग तेरा लहिण चुकाउणा, हरि साचे हत्थ वड्याईआ। सतिजुग सोया पुत्त उठाउणा, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग तेरा रंग मिटाउणा, काली रेख रहिण ना पाईआ। सतिजुग तेरा साचा चन्द चढ़ाउणा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दोहां विचोला शब्द बणाउणा, हरि शब्दी दए गवाहीआ। कलिजुग तेरा भेख पखण्डा, चारों कुन्ट पसारया। साध सन्त आत्म रंडा, तीर्थ तट फिरे हंकारया। ज्ञानी ध्यानी होए घमंडा, जगी जोत ना आत्म अपारया। नज़र ना आया पार कन्ढा, डुब्बे विच मँझधारया। चौथे पद ना मिल्या डण्डा, ना चढ़े सिखर मुनारया। पारब्रह्म प्रभ लै के खण्डा, लोकमात लए अवतारया। लक्ख चुरासी वढ्ढे कन्ढां, जो अड़या सो करया पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेस तेरे दर सुहा रिहा। सतिजुग साचे उठ बल धार, हरि साचा आप जगांयदा। धरत मात दी सुणी पुकार, तेरा राह वखांयदा। भगतां मेला विच संसार, साचा संग निभांयदा। इक्क अकेला पावे सार, नाम मृदंग वजांयदा। गुर चेला

सोहे इक्क द्वार, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। सदा सुहेला हरि निरँकार, विछड़ कदे ना जांयदा। साचा मेला अपर अपार, जोती शब्दी आप जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरा दर, सतिजुग उठाए साचे घर, दर साचा आप सुहांयदा। सतिजुग साचे लै अंगड़ाई, दोए जोड़ करे निमस्कारा। पारब्रह्म तेरे घर वज्जदी रहे वधाई, तेरा अन्त ना पारावारा। जन भगतां संग करे कुड़माई, एका सोहे बंक दुआरा। एका घर वसे धी जवाई, सुरती शब्दी कर प्यारा। कलिजुग अन्तिम नेत्र रो, आपणा नीर वहाया। दुरमति मैल कोई ना सके धो, चारों कुन्ट उठ उठ धाया। चार यारी संग मुहम्मद अग्गे हो, आपणा दुःखड़ा रिहा सुणाया। अञ्जील कुराना तुटा मोह, अल्ला राणी नैण शरमाया। जूठा झूठा करया धरो, तेरा संग ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा मूल तेरी झोली पाया। सतिजुग साचा कर शृंगार, आपणा घर सुहांयदा। बस्त्र पाए अपर अपार, सच सुच्च नाउँ धरांयदा। सति सन्तोख कर प्यार, धीरज यति समांयदा। अन्तिम मोख इक्क करतार, तेरा नाम जपांयदा। हरख़ सोग तों वस्सया बाहर, सो पुरख मनांयदा। सो पुरख गुप्त ज़ाहर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, दर साचा इक्क वखांयदा। कलिजुग तेरी कूड़ी रास, हरि साचा मेट मिटांयदा। सच वस्त ना तेरे पास, ना कोई तक्कड़ तोल तुलांयदा। तेरा संग तेरे संग होणा नास, ना कोई धीर धरांयदा। कूड़ कुड़यारा बण मलँग, चारों कुन्ट नचांयदा। माया ममता मदि पीती भंग, अमृत रस ना कोई चखांयदा। झूठा नुहावण नुहाया गोदावरी गंग, सर सरोवर ना कोई वखांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद वजाए झूठे मृदंग, अनहद ताल ना कोई वजांयदा। तत्त रत्त कपड़े रंगे आपणे रंग, रंग मजीठी ना कोए चढ़ांयदा। माया ममता पुत्तर धीआं मंगी मंग, हरि का नाम कोई ना झोली पांयदा। सदा सुहागी मंगी सच मंग, कामनी नार इक्क हंढांयदा। आत्म सेज ना चढ़या सच पलँघ, साचा सज्जण ना कोई वखांयदा। आपणा अन्दर ना आपे वेख्या लँघ, कोटन कोट गुरदुआरे चार द्वारी वेख वखांयदा। शब्द घोड़े ना कस्सया तंग, शाह अस्वार नाउँ धरांयदा। इक्क अकल्ला ना लाया आपणे अंग, लक्ख चुरासी वेस हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा तोड़े गढ़, पुरख अबिनाशी उप्पर चढ़, सोहँ खण्डा हथ्थ फड़, ना कोई मेट मिटांयदा। सोहँ खण्डा हथ्थ प्रभ फड़या, तिक्खी धार रखाईआ। लोआं पुरीआं आपे चढ़या, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जेरज अंड अन्दर वड़या, उत्भुज सेतज विच समाईआ। खण्ड खण्ड प्रभ आपे करया, खण्डणहार आप हो जाईआ। सृष्ट सबाई रंड करया, कन्त सुहागी ना कोई हंढाईआ। गुरमुख साजन आपे फड़या, आप आपणा मेल मिलाईआ। वक्ख कराए

सीस धड़या, पंज तत्त ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा घर वेखे थाउँ थाँईंआ। सतिजुग साचा सुत दुलारा, हरि साचे आप उठाया। एका दिसे राह न्यारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। चार वरनां कर इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां भेव ना राया। इक्क सुहाउणा बंक दुआरा, एका दर सुहाया। राउ रंक राज राजन शाह सुल्तान ना करे कोई विचारा, एका माण जणाया। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा लाया। एका बस्त्र कर प्यारा, एका तन सजाया। एका कज्जल पाए धारा, नेत्र नैणां नूर सवाया। एका करे सच शृंगारा, सोलां कलीआं वेस वटाया। एका घर एका वर मिले कन्त भतारा, साची सखीआं मेल मिलाया। छुटया जग विछड़या संसारा, घर साचा इक्क सुहाया। सतिजुग साचे तेरी पावे सारा, पतित पावण नाम धराया। लोकमात कर उज्यारा, तेरा रूप तेरी दृष्ट तेरा इष्ट सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे शब्द सुणाया। सतिजुग साचा सुण सलाह, चरन कँवल बलिहारया। प्रभ अबिनाशी बण मलाह, बेड़ा लोकमात विच तारया। इक्क जपाउणा आपणा नाँ, देणा सच सहारया। वेले अन्तिम पकड़े बांह, लाईं पार किनारया। तूही पिता तूही माँ, हउँ बालक सुत दुलारया। तेरी माणी ठंडी छाँ, समरथ पुरख करतारया। बिन तेरे चरन ना दिसे कोई थाँ, ढहि पए तेरे द्वारया। दीन दयाल सदा कृपाल कदी करीं ना नाह, तेरा तक्कया इक्क सहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे देवे वर, आप आपणी किरपा धारया। सतिजुग साचे देवे मति, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। एका नाम एका जप, एका पूजा पाठ सखाईआ। एका तत्व एका तत्त, एका अग्न समाईआ। एका रक्खणहारा पत्त, पतिपरमेश्वर नाउँ धराईआ। एका वसे घट घट, बैठा आसण लाईआ। एका खोल्हे चौदां हट्ट, चौदां लोक खुल्हाईआ। एका वस्सया तीर्थ घट, एका घाट नुहाईआ। एका खेले खेल हरि नटूआ नट, स्वांगी स्वांग वरताईआ। एका मन्दिर एका मट्ठ, एका मस्जिद रिहा उपाईआ। हरि का मन्दिर कदे ना जाए ढठ्ठ, इट्ट गारा ना कोई लगाईआ। जोती जोत जगे लट लट, तेल बाती ना कोई रखाईआ। ढोलक ढोल ना मारे कोई सट्ट, अनहद वज्जे वाहो दाहीआ। गुरमुख विरले लाहा लैण खट्ट, सतिजुग तेरा संग निभाईआ। तेरा नाता जोड़े दुरमति मैल पहलों कट्ट, सोहँ साचा जाप जपाईआ। इक्क रखाए साचा हट्ट, मदिरा मास रसन तजाईआ। कोटन कोट कोट जन्म जन्म करे पूजा पाठ, हरि हरि कोए ना मेल मिलाईआ। सतिजुग एका कन्ढा एका घाट, एका रिहा चढ़ाईआ। अग्गे नेड़े दिसे वाट, हरि दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, जन भगतां बजर कपाटी जाए पाड़, अट्ठे पहर स्वच्छ सरूप जोती

नूर करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम काला काला सूसा, आपणे हथ्थ उठांयदा। दर घर वेखे ईसा मूसा, काली कफ्नी ना कोई सिर टिकांयदा। चौदां तबकां फिरया रुसा, संग मुहम्मद चार यार ना कोई मनांयदा। अल्ला राणी चढ़या गुस्सा, मुख घुँघट नैण शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा भार तेरे सीस आप चुकांयदा। कलिजुग भार लैणा चुक्क, अन्तिम वार आईआ। चारों कुन्ट पया मुख थुक्क, ना दीसे कोई सहाईआ। सृष्ट सबाई बूटा रिहा सुक्क, ना हरया कोई कराईआ। काम क्रोध रिहा बुक्क, घर घर पई लड़ाईआ। गुरमुख कोई घर साचे ना झुक, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। साध सन्त जूठे झूठे बैठे लुक, माया पड़दा उप्पर पाईआ। हरि का भाणा कदे ना जाए रुक, नानक गोबिन्द लेख लिखाईआ। प्रभ वेखणहारा मात गर्भ अन्दर कुक्ख, ना कोई सके भेव छुपाईआ। निन्दकां अन्त करे काले मुक्ख, मुख काली शाही लाईआ। गुरमुख गुरसिख जन्म जन्म सुखणा रहे सुख, मिले दाता बेपरवाहीआ। बूटा हरया करे उलटा रुख, लेखा लेखे लए लाईआ। सिँघ गुरमुख दुआरे गया झुक, हरि सच सच्ची सरनाईआ। चतुर्भुज आपणी भुजां लए चुक्क, लोआं पुरीआं पार कराईआ। ना एह मानस ना एह मनुख, ना कोई माता पिता जन्मे कुक्ख, ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, ना किसे मन्दिर गुरदुआरे बैठा लुक, गुरमुख साचे तेरे साचे अन्दर, आपे तोड़या आपणा जन्दर, किसे हथ्थ ना आए मुनी मच्छन्दर, दर साचा इक्क सुहाया। साचा घर इक्क महल्ला, सतिजुग रंग रंगाया। पारब्रह्म चढ़या इक्क अकल्ला, एका आसण लाया। आपे वस्सया जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूँघी कन्दर समुंद सागर डेरा लाया। जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पला, ब्रह्मा विष्न शिव इन्द इन्द्रासन वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम तेरा वेखे खाली पल्ला, सच वस्त ना कोई गंढु बंधाया। पंज तत्त विकारा करे हल्ला, हरि साचा रिहा उठाया। ना कोई तीर कमान ना शस्त्र फड़या भल्ला, एका खण्डा नाम उठाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मनमुख जीवां दए समझाया। मनमुख जीव जन्म अमोला, मानस मात गंवाया । गुर नानक बणया साचा तोला, नाम कंडा इक्क लगाया। सोहँ रक्खया साचा बोला, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया। मनमुख जीवां काया मन्दिर होया पोला, हरि का नाम ना किसे वसाया। कूड़ी क्रिया खेलया होला, काया कपटी रंग चढ़ाया। अन्तिम लाड़ी मौत चुक्के डोला, घर घर फेरी पाया। पारब्रह्म प्रभ बदलया चोला, जोती जामा भेख वटाया। प्रगट होए सम्मत सोलां, सृष्ट सबाई दए उठाया। आपे हटाए आपणा पड़दा ओहला, एका शब्दी डंक वजाया। मनमुख जीव घर घर पावण रौला, अग्गे कोई दिस ना आया। हरि का शब्द झूठ ना होए रत्ती चौला, ना कोई तोला तोल तुलाया। राए धर्म चित्रगुप्त होया गोला, दिवस रैण सीस झुकाया। जन

भगतां अन्दर जोत सरूपी आपे मौला, आप आपणी बूझ बुझाया। अमृत भरे नाभ कँवला, उलटा कँवला मुख भवाया। देवे वड्याई उप्पर धवला, गुरमुख पाल नाम धराया। प्रगट होया साँवल सँवला, काहना कृष्ना रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा तेरे दर तेरा पूर कराया। कलिजुग कूड़ा कर निमस्कार, ढहि पए सरनाईआ। झूठे दिसे मीत मुरार, ना सके कोई बचाईआ। वेद कतेब रहे विचार, मस्तक तिलक लगाईआ। थक्के मांदे विच संसार, अगला पन्ध ना कोई मुकाईआ। अञ्जील कुराना आई हार, सच मसल्ला ना कोई विछाईआ। अल्ला राणी करे पुकार, नेत्र रोवे नीर वहाईआ। संग मुहम्मद चार यार, चौदां तबकां करे दुहाईआ। अजराईल जबराईल पावे सार, मेकाईल असराफील वेख वखाईआ। हक्क हकीकत ना कोई विचार, शरअ शरीअत ना कोई समझाईआ। मुकामे हक्क जगत दलील ना बुझे गंवार, ऐनलहक नाअरा कोई ना लाईआ। सदी चौधवीं उम्मत रसूल गई थक्क, ना सके कदम उठाईआ। मनमुखता फल गया पक्क, प्रभ साचा झाड़न आईआ। सिँघ शेर शेर दलेर बुक्के विच लोकमात ढक, चारों कुन्ट रिहा कुरलाईआ। जप तप कोई ना सके किसे रक्ख, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उडने कक्ख, जोती अग्नी अग्ग लगाईआ। जोत अकाल सर्ब प्रितपालण प्रगट होए प्रतक्ख, गोबिन्द संग रखाईआ। गुरसिक्खां गुरमुखां जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। सम्मत वीह सौ पन्दरां करन आया वक्ख, गुर गोबिन्द जोड़ जुड़ाईआ। कीमत करता कोई ना पाए तेरी करोड़ी लक्ख, ना कोई लोकमात चुकाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना घर घर भाण्डे दिसण सक्ख, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा नाता पुरख बिधाता आपे जोड़े आपे तोड़े आपे बंधन लाहीआ। कलिजुग तेरा बंधन तोड़, हरि साचा आप अखवाया। पन्थ ख़ालसा हिले जोड़, जोड़ ना कोई जुड़ाया। नीले वाला चढ़या नीले घोड़, दिस किसे ना आया। आपे मारे पहला पौड़, लहिंदी दिशा वेख वखाया। सम्बल नगरी वेखे परखे मिठ्ठा कौड़, दो जहान वेख वखाया। शब्दी दाता धुरदरगाही आया दौड़, औदां जांदा दिस ना आया। गुरमुखां अन्दर आपे बौहड़, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी रास तेरे रक्खे पास, ना दूसर कोई चुराया। कलिजुग तेरी झूठी रास, तेरी झोली पाईआ। जिस जन खाया मदिरा मास, लोकमात रहिण ना पाईआ। नानक गुर ना पुच्छे वात, दर द्वार दए दुरकाईआ। गुर अर्जन ना वेखे मार झात, हरि मन्दिर जो बैठे सेज विछाईआ। गुर गोबिन्द ना मेला होए नीले राक, जो खण्डे रिहा चमकाईआ। सो जन मिले जिस मेले आप, मेल विछोड़ा

आपणे हथ्थ रखाईआ। राम दास तेरा घर जोत बाकी बाक, पतित पावन आप कराईआ। सम्मत सतरां सिक्ख सिखाया नाता तोड़े साक, रावण हँकारी दए मिटाईआ। गुर गोबिन्द तेरा पूर कराए भविख्त वाक, आप आपणा संग निभाईआ। जिस जन खोल्हे आपणा ताक, धारी केस सेव कमाईआ। पंज तत्त मलाउणा ख़ाकी ख़ाक, शब्द शहीदी कोई ना पाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा देणा चुकया बाकी बाक, प्रभ साचा आप चुकाईआ। सतिजुग साचा सुत दुलारा, घर साचे आपे वस्सया। एका मंगे मंग भिखारा, दर दुआरे फिरे नस्सया। मिले मेल विच संसारा, गुरमुख साचे किले सस्सया। हँ हँगता तोड़े गढ़ हँकारा, तीर निराला एका कस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, तेरे अन्दर तेरा रूप आपे हरि हरि वस्सया। सतिजुग साचे मिल्या वर, लोकमात वज्जी वधाईआ। धरत मात तेरा सुहाए साचा घर, नौ नंख इक्क रखाईआ। सत्त सरोवर मिटाए एका गढ़, समुंद सागर आप प्रनाईआ। आपे अन्दर बैठे वड़, वेखे सृष्ट सबाईआ। आपणी चोटी आपे चढ़, आपे अधविचकार टिकाईआ। आपे बणया बहत्तर नड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ाईआ। रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी घाड़न घड़, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त रखाईआ। अग्नी पवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपणी मोख मुक्त रखाईआ। आपणे दुआरे आपे चढ़, आपणा बंक सुहाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण जोत वड्डी वड्याईआ। सतिजुग फड़या आपणा लड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सोहँ शब्द सृष्ट सबाई जाए पढ़, वीह सौ वीह बिक्रमी पन्दरां कत्तक दए वड्याईआ। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मास ना रसन लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, शब्द विचोला विच रखाईआ। हरि का शब्द बण विचोला, लोकमात उठ धाया। कलिजुग सतिजुग सुणाए आपणा ढोला, आपणा राग अल्हाया। इक्क जैकारा एका बोला, दो जहानां रिहा सुणाया। दोहां बणया आपे तोला, एका खण्डा हथ्थ उठाया। कलिजुग कूड़ा होया पोला, हौले भार तुलाया। सतिजुग साचा उतरया कला सोला, सोलां रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग वेखे दर, दर आपणा इक्क सुहाया। साचे कंडे तोले तोल, कलिजुग आप तुलाया। चौथे जुग चारे अक्खर एका रसना बोल, वाहिगुरु जाप जपाया। वाह वाह गुर देवे साची पौल्ह, पुरख अकाल मनाया। आदि अन्त ना जाए डोल, अडोल अडुल नाम धराया। आपे आपणा पूरा करे कौल, कीता कौल पूर कराया। कलिजुग अन्तिम चार अक्खर गुरसिख हिरदे गया मौल, अन्तिम लहिण लहिण चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा गेड़ा लोकमात चुक्के झेड़ा, लक्ख चुरासी होए निबेड़ा, आपणी हथ्थीं रिहा कराया। सतिजुग साचा

साची धार, एका रिहा चलाईआ। दूजी रक्खी शब्द कटार, आपणे तन सज़ाईआ। आपे वेखे वेखणहार, आपणी दया कमाईआ। लेखे लाए विच संसार, वड दाते वड्डी वड्याईआ। बेऐब होया परवरदिगार, ख़ुदी ख़ुदाई नेड़ ना आईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। राम कृष्न नानक गोबिन्द वाहिगुरु अल्ला कर प्यार, एका धाम बहाईआ। चौथे जुग तेरा लहिणा कर्ज़ दए उतार, चौथे अक्खर विच टिकाईआ। प्रगट होए हरि करतार, आपणी खेल खिलाईआ। पहले पंज तत्त कर प्यार, सिँघ शेर नाउँ धराईआ। दूजी वारी जोत निरँकार, आपणा वेस वटाईआ। गुर चेले कर इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। निर्मल जोती नूर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। सतिजुग साची करे विचार, साची धार चलाईआ। दोए रूप आप करतार, दोए अक्खर लए उपजाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धार, अकाल पुरख आप अख्वाईआ। अकाल मूर्त निराकार, निरवैर आप हो जाईआ। अजूनी रहित सिरजणहार, वरन गोत ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर लए उपाईआ। एका अक्खर शब्द उजाला, हरि साचे आप कराया। सेवा लाई जोत ज्वाला, आदि शक्त नाल रलाया। ओंकारा गल पाए माला, एकँकारा वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, निरगुण वेस वटाया। निरगुण वेस हरि करतार, करनी रिहा कमाया। आदि निरँजण भेव न्यार, जोत निरँजण जोत जगाया। सज्जण मीत मुरार, थिर घर साचे वेख वखाया। एका जोधा सूरबीर बली बलकार, लोकमात उठ धाया। एका रंग रंगाए सचखण्ड सच्ची सरकार, पूरन पूरन तत्त समाया। पंच तत्त कर प्यार, गुर गोबिन्द वेस वटाया। माझा देस करे ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोत सरूपी कर प्रवेश, सोहँ साचा डंक वजाया। सति पुरख को सदा आदेस, नानक निरगुण आप कराया। आदि जुगादि खेले खेल भेस, ना कोई बंधन बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो अक्खर दोआ जाप, मेट मिटाए तीनो ताप, गुरमुख पछाणे आपणा आप, एका दूजा भेव चुकाया। एका दूजा भउ चुकाउणा, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख साजण मेल मिलाउणा, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जन्म जन्म दा लेखा लेखे पाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। शाह सुल्ताना घर दर मन्दिर किसे ना मिले सौणा जंगल जूह ना लेफ तलाईआ। गुरमुखां मेटे अवणा गवणा, पूरी भवना आप कराईआ। अमृत आत्म मेघ बरसे सवना, सांतक सति कराईआ। कलिजुग दुष्ट हँकारी मारे रावना, एका चिल्ला नाम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वखाए साचा किला सस्सा सतिगुर नाम धराईआ। ऊड़ा, एकँकारा त्रै भवनी, त्रैभवन त्रैभवन सुहाया। ऐड़ा आपणी अक्ख आप उग्घाड़, आप आपणा वेख वखाया। ईड़ी इष्ट रूप करतार, निरगुण जोत करे

रुशनाया। सस्सा, सतिगुर हो त्यार, चार दिवारी किला इक्क बणाया। शब्द गुर पहरेदार, चौथे घर वेख वखाया। चौथा अक्खर हरि निरँकार, थिर घर नाम धराया। हाहा, हरि हरि विच संसार, पंचम अक्खर पंचम मीता पंचम मेल मिलाया। निरगुण रूप हरि दातार, त्रैगुण माया विच टिकाया। लक्ख चुरासी कर पसार, जोती जोत करे रुशनाया। आप उपाए आप खपाए आपे पावणहारा सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग वेखे साचा घर, अन्तिम चुकया जगत डर, जग नाता तोड़ तुड़ाया। जगत नाता जाए तुट्ट, सम्मती सम्मत नेड़े आया। दीनां मज़बां बंधन जाए छुट्ट अल्ला वाहिगुरु राम कृष्न ना कोई ध्याया। सतिजुग साचा लक्ख चुरासी चार वरन अठारां बरन एका लाहा लैण लुट्ट, सोहँ जाप जपाया। पंजां चोरां अन्दरों कढ्ढे कुट्ट, मनमति रहिण ना पाया। अमृत सोमा पया फुट्ट, निझर धार वहाया। भर प्याला पीणा घुट्ट, गुर पूरे हथ्थ फड़ाया। मनमुख जीवां भाग गए नखुट, वेला गया हथ्थ ना आया। पंजां चोरां पौणी लुट्ट, बन्द कोठड़ी वेख वखाया। अन्तिम शौह दरयाए देवे सुट, बेड़ा कोई ना बन्ने लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचे वस्सया घर, गुरमुख साचे लए जगाया। गुरमुख साचे नेत्र खोल्ह, जगत अन्धेरा छाया। अगम्म अगम्मड़ा रिहा बोल, अगम्मड़ा धाम सुहाया। हड्ड मास नाड़ी अन्दर वज्जे ढोल, अनहद मृदंग सुणाया। आपणा पड़दा आपणे मन्दिर अन्दर आपे खोल्ह, क्यों बैठा नैण शरमाया। सच वस्त हरि साचे कोल, आदि जुगादी जन भगतां देंदा आया। जो जन मंगे रसना बोल, रस रसना दए चखाया। पुरी अनन्द कीता कौल, सम्बल नगरी पूर कराया। शब्दी गुर गुरमुखां अन्दर आपे गया मौल, जोती नूर दरसाया। भेव ना पाए कोई पंडत पांधा रौल, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी वेख ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी काया गुरमुखां उत्तों आपे घोल, घोली घोल घुमाया। मनमुख जीवां कलिजुग अन्तिम विआवण आया बोली, जो बैठे हरि भुलाईआ। नाल रलाए लाड़ी मौत गोली, फड़ उंगली राह वखाईआ। लाल रंगाए हथ्थ बंधे सिर अट्टी मौली, सोहणा सीस गुंदाईआ। राह वखाए हौली हौली, आपणा पड़दा आपे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम करया वेस, पारब्रह्म दर दरवेश, गुरमुख साचा नर नरेश, जिस दर बैठा आसण लाईआ। गुरमुख तेरा सच दुआरा, हरि हरि साचा वस्सया। भरया रहे शब्द भण्डारा, कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी मस्सया। निरगुण रूप बण वरतारा, लोकमात आवे नस्सया। करे कराए करनेहारा, जुग जुग राह साचा आपे दस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे लए वर, हरि हिरदे अन्दर वस्सया। काया मन्दिर हरि वसेरा, गुरमुख खोज खोजाया।

ੴ੭ ४८६

जूठा झूठा ढाहया भरमा डेरा, सच सुच्च समाया। दर्शन पाया नेरन नेरा, निज घर वेख वखाया। हरिसंगत चढ़या चाउ घनेरा, प्रभ अबिनाशी फेरा पाया। आप चुकाए मेरा तेरा, तेरा मेरा रहिण ना पाया। गुरमुख तेरा वसदा रहे साचा खेड़ा, हरि साचे आप तराया। आपणा बद्धा आपे बेड़ा, सगला भार उठाया। करे कराए हक्क निबेड़ा, दाता दानी एका आया। कलिजुग अन्तिम देवे गेड़ा, चरन धूढ़ अशनानी लए बचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई चुकाए डर, निरभउ निरवैर रूप आप हो आया। निरवैर पुरख अकाल, अकाल पुरख अख्वाया। गुरमुख बिठाए सच धर्म सच्ची धर्मसाल, दूजा तत्त ना कोई वखाया। नेड़ ना आए काल महांकाल, आप आपणी गोद रखाया। सर्ब सुख दाता सदा सदा करे प्रितपाल, प्रितपालक नाम धराया। गुरसिख दुलारे साचे लाल, माणक मोती आप उपाया। आपे रक्खे आपणे थाल, गगन गगनंतर उप्पर टिकाया। रवि ससि सूरज चन्न करन निमस्कार, तारा मण्डल सीस झुकाया। ब्रह्मा वेखे नेत्र नैण उग्घाड़, गुरसिख तेरा राह तकाया। विष्नूं होवे सेवादार, तेरी सेवा रिहा कमाया। शिव शंकर तेरा कर प्यार, बासक तशका गलों देवे लाहया। करोड़ तेतीसा करे निमस्कार, सुरपति राजा इन्द नाल रलाया। नौ खण्ड तेरे नाम जैकार, भगत भगवन्ती मेल मिलाया। सत्तां दीपां एका धार, साध सन्त वेख वखाया। गुरमुख तेरा इक्क प्यार, ब्रह्मण्ड विच होर ना कोई रखाया। जेरज अंड उत्भुज सेत्ज ना कोई पाए वंड, खाणी बाणी ना लेख लिखाया। गुरमुख ब्रह्म ज्ञान ज्ञान ब्रह्म बध्धी पंड, पारब्रह्म रिहा उठाया। सतिगुर पूरा निरगुण रूप सुत्ता दे कर ना कदी कंड, हाज़र हज़ूर आप अख्वाया। सदा सुहागण शब्द वैरागण गुरमुख नारी होए कदे ना रंड, कन्त कन्तूहला सच सुहाग हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन हरि हरि सुहाए साचा दर, दर दरवाज़ा वेख वखाया। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, गुरमुख वेख वखांयदा। आप आपणा साजन साजा, साजणहार नाम धरांयदा। जुग जुग रक्खण आया लाजा, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। पुरख अगम्मड़ा धुन अनादी शब्द शब्दी मारे वाजा, जोती जोत जगांयदा। नाम जणाई बोध अगाधा, सच वस्त झोली पांयदा। गुरमुख दर दुआरे बणया पांधा, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख नाउँ सुहागी छंत, गीत गोबिन्द एका गांयदा।

* १६ सावण २०१५ बिक्रमी ऊधम सिँघ दे घर जलालाबाद ज़िला अमृतसर *

हरि सज्जण हरि मेलया, हरि हरि किरपा धार। हरि पाया सज्जण सुहेलया, सोहे बंक द्वार। हरि वेखे रंग नवेलया,

करता पुरख करतार। आपणा खेल आपे खेलया, पूर्ब लहिणा कर्म विचार। घर मेला गुरू गुर चेलया, मेल मिलावा सिरजणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे इक्क द्वार। घर द्वार सुहञ्जणा, मेला गोबिन्द राए। जगे जोत आदि निरँजणा, एका दीप करे रुशनाए। वर पाया साचा सज्जणा, विछड़ कदे ना जाए। पी अमृत आत्म रज्जणा, तृष्ना भुक्ख मिटाए। पंज तत्त विकारा पड़दा कज्जणा, शब्द दुशाला उप्पर पाए। अनहद ताल अनादी वज्जणा, हरि साचा रिहा वजाए। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाए। गुरमुख विरले सन्त द्वार गुरचरन दुआरे बहि बहि सज्जणा, पाया परम पुरख करतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार साचा नाता, गुर पूरा आप बुझांयदा। उत्तम करे हरिजन जाता, ज़ात अजाती मेट मिटांयदा। मिटे रैण अन्धेरी राता, एका साचा चन्द चढ़ांयदा। धुरदरगाही देवण आया नाम अनमुल्ली एका दाता, साची झोली आप भरांयदा। सोहँ शब्द सुणाए साची गाथा, साचे मार्ग लांयदा। लोकमात बणया हरि रघुनाथा, सगला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन पार करांयदा। गुरमुख साजन बन्नृया बेड़ा, आपणी दया कमाईआ। भाग लगाया काया खेड़ा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। हक्क हकीकत लाशरीक इक्क ख़ुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा खुल्ला वेहड़ा, जन भगतां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेला धुरदरगाह, हरि साचा आप मिलांयदा। खेले खेल अगम्म अथाह, बेपरवाह नाम धरांयदा। फड़ फड़ उठाए आपणी बांह, दिवस रैण सेव कमांयदा। अन्तर आत्म जपाए एका नाँ, अजपा जाप जपांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजण मेल मिलांयदा। हरिजन साजण सच दुआरा, हरि एका एक सुहाया। जोत सरूपी कर उज्यारा, नूरो नूर दरसाया। अगम्म अगोचर अलक्ख अपारा, अलक्ख अलक्खणा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विचोला शब्द अमोला एका नाम चलाया। शब्द अमोला साची धारा, हरि साचे आप चलाईआ। प्रगट हो विच संसारा, आपणी बणत बणाईआ। नाउँ धराया निहकलंक नरायण नर अवतारा, माता पिता ना कोई रखाईआ। आप आपणा बणया सुत दुलारा, आप आपणा गोद उठाईआ। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणी दया कमाईआ। आप आपणा बण वणजारा, आप आपणी वणज कराईआ। आप आपणा भर भण्डारा, आपे रिहा वरताईआ। गुरसिख साजन लोकमात ना होए ख्वारा, प्रभ पूरा रिहा जणाईआ। देवे वस्त थिर घर सच्चे दरबारा, तोट रहे ना राईआ। देवणहार आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि सिरजणहारा, साध सन्त रिहा तराईआ। निरगुण सरगुण खेल अपारा,

जोती शब्दी रचन रचाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव अपारा, आदि निरँजण वड वड्याईआ। जोत निरँजण पावे सारा, हरि साजण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, हरि शब्द करे कुड़माईआ। हरि शब्द हरि साचा नाता, हरिजन आप बंधाया। आपे बणया पिता माता, पिता पूत आप अख्वाया। आपे पुच्छणहारा वाता, दिवस रैण वेख वखाया। चार कुन्ट दहि दिशा आकाश प्रकाश फिरे नाठा, गगन पतालां फेरा पाया। सर सरोवर समुंद सागर मारे ठाठा, गहर गम्भीर नाम धराया। वेख वखाए तत्त आठा, नौ दर फोल फोलाया। गुरसिख पल्ले बन्ने साची गाठा, चोर यार कोई लुट्ट ना जाया। पिछला पूरा करन आया घाटा, एका जोती जोत समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाया। गुरसिख साचा आप उठाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आत्म ब्रह्म ज्ञान दवाउणा, आत्म ब्रह्म करे जणाईआ। एका अक्खर जगत वक्खर हरि शब्द पढ़ाउणा, साची बूझ बुझाईआ। एका मार्ग एका मग्ग एका पन्थ लगाउणा, एका राह वखाईआ। एका पूजा एका पाठा एका ग्रन्थ रखाउणा, ना कोई दूजी होर जणाईआ। आत्म अनादी धुन अनहद साचा संख वजाउणा, ना झूठी करे सुणाईआ। चरन कँवल प्यार रोज़ा बांग कराउणा, ना मसल्ला हेठ विछाईआ। ऐनलहक नाअरा एका लाउणा, मुकामे हक्क मिले ख़ुदाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाउणा, अन्दर मन्दिर करे रसाईआ। साचे मन्दिर आप बहाउणा, आपे वेखे चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा मूल चुकाउणा, भुल्ल रहे ना राईआ। एका राग एका शब्द रसन गाउणा, गुण गावत रैण विहाईआ। रैण दिवस एका रंग रंगाउणा, अट्ठे पहर करे जणाईआ। गुरमुख साजण आप उठाउणा, हरि साचा आप जगाईआ। सेव लगाए पवण पवणा गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। जन भगतां अमृत आत्म मेघ बरखे सवणा, एका धार चलाईआ। हरिजन तेरी महिमा हरि बिन जाणे कवणा, भरमे भुल्ली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी मरना जम्मणा, जम्मणा मरना खेल रचाईआ। मर मर जम्मे जीव गंवार, जुग जुग खेल रचाया। आवे जावे विच संसारा, लक्ख चुरासी गेड़ भवाया। गुरमुखां मेला सच दरबार, धुर दी बाण तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े जग मेल मिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़या, कलिजुग मेला हरि गोबिन्द। गुरमति साची सिक्ख सिक्खी सिक्खड़या, मिले मेल गुर गोबिन्द। धुर दा लेख ललाट जो हरि लिखड़या, मेट मिटाए सगली चिन्द। राह धुर दा सदा बिखड़या, बिन गुर पूरे पार ना करावे कोई सागर सिन्ध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे दर, आप मिटाए सगली चिन्द। हरि सज्जण जग मीतड़ा, हरि हरि आप अख्वाया। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, ना कोई वेखे वेख वखाया। करे पवित पतित पुनीतड़ा,

पतित पवित नाम धराया। काया माटी कौड़ा रीठड़ा, पंच तत्त विकार भराया। रस रसना साचा मीठड़ा, हरि हरि शब्द सुणाया। गुरमुख गाए सुहागी गीतड़ा, घर मेला सहिज सुभाया। कलिजुग चली अवल्ली रीतड़ा, वेद पुराण भेद ना राया। ना कोई मन्दिर गुरद्वार मसीतड़ा, शिवदवाला मट्ठ ना कोई रखाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता जोती नूर बैठा अतीतड़ा, दिस किसे ना आया। आपणा खेल आपे कीतड़ा, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लए मिलाया। हरि सज्जण घर पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। गुर पूरा पतिपरमेश्वर स्वामी वेख्या, काया जंगल जूह उजाड़। घर मन्दिर बहि बहि लिखे लेख्या, बजर कपाटी सिला पाड़। मनमुख भुल्ले भरम भुलेख्या, वा लग्गे तत्ती हाढ़। किसे हत्थ ना आए धारी केस्सया, जोती अग्नी नाड़ नाड़। जोती जामा श्री भगवाना मेल मिलावा श्री दस दस्मेस्सया, धरत मात सच अखाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेखे हरि, आप बणाए साचे लाड़। गुरमुख साजण साचा लाड़ा, हरि साचे आप सजाया। शब्दी घोड़े आप चाढ़ा, आपे राह तकाया। लोकमात वेखे धर्म अखाड़ा, कल धर्मी धर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण एका दर, दर दुआरा वेख वखाया।

४८६ ०७

* १६ सावण २०१५ बिक्रमी बलवन्त सिँघ दे घर जलालाबाद *

एका इक्की एका कार, एका कर्म कमाया। एका सिक्खी सिक्ख विचार, साची सिख्या दे मति समझाया। लेखा लिख्या धुर करतार, मस्तक लहिणा पूर्ब रिहा चुकाया। ना कोई मेट मिटाए विच संसार, भरम भुलेखा रहे ना राया। दस दस्मेसा कर प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआया। बाली बाला मीत मुरार, गोबिन्द गोपाला वेख वखाया। मति बुध पाए सार, मन मनसा पूर कराया। धर्म युध तत्त विचार, आत्म पड़दा लाहया। कर्म बस्त्र तन श्रृंगार, साचा वेस वटाया। नाम शस्त्र तेज़ कटार, अंगीकार अख्वाया। नेत्र नैणा दरस अपार, तृष्ना भुक्ख मिटाया। भगत भगवन्त एका धार, एका मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जननी वेख वखाया। जन जननी जन जाणया, जाननहार दातार। घर आपणा आप पछाणया, वेखे दर सच्चा दरबार। अमृत मिले ठंडा पाणीआ, आत्म तृष्ना दए निवार। शब्द मिलावा साचे हाणीआ, एका रंग रंगे करतार। शब्दी शब्द सुणाए साची बाणीआ, अट्ठे पहर रहे ख़ुमार। लेखे जेरज खाणीआं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा करे परवरदिगार। किरपा निध सर्ब जिया दाता, जिया दान बख्शिंद। आत्म ब्रह्म सर्ब ज्ञाता, नाम सखाई सदा बख्शिंद। दो जहानी पिता माता, दाता दानी गुणी गहिंद। मेटे रैण अन्धेरी राता,

जगत मिटाए सगली चिन्द। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, सुत उपजाए साची बिन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
जोत धर, मेल मिलावा नरेश नरिंद। नरेश नरिंद शब्द सुल्ताना, मेहरवान अख्वाया। जुगती भुगती कर परवाना, शक्ती
शक्त समाया। एका बन्ने साचा गाना, वेला वक्त ना कोई रखाया। पूरन भगती कर परवाना, लहिणा देणा झोली पाया।
आत्म मारे तीर निशाना, तीर निराला इक्क लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बाली बाला गोद
उठाया। बाली बाला सुत दुलारा, सज्जण सच घर वस्सया। मिल्या मेल पुरख अपारा, नित नवित्त इक्क अदेस्सया। ढहि
ढहि पए चरन दुआरा, लेखे लग्गे सीस केस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम शब्द संदेशिआ।
नाम संदेशा काया मन्दिर, हरि साचा आप जणांयदा। तोड़े गढ़ हँकारी जन्दर, नाम कुण्डा इक्क वखांयदा। भाग लग्गे
डूग्घी कन्दर, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। मनमुख जीव भौंदे बन्दर, हरि हरि रूप दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर, मेल मिलावा अन्दरे अन्दर, घर साचा बंक सुहांयदा। बंक दुआरा साचा घर, घर घर आप टिकाया।
आपे देवणहारा वर, आपे वेख वखाया। गुरमुख मीता साजण फड़, गीत सुहागी इक्क अलाया। जोत प्रकाश नाड़ी नड़,
आकाश आकाश वखाया। आपे बैठा अन्दर वड़, दिस किसे ना आया। पौड़ी पौड़ी गया चढ़, आपणा पन्ध मुकाया। दरस
दिखाए अग्गे खड़, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाया। सरन सरनाई सरनगत जो जन गए पड़, चरन प्रीती इक्क वखाया। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लाल दुलारा कर प्यारा, घर साचे दए सहाया। घर साचा हरि वसंदड़ा, पारब्रह्म
करतार। गुरसिख लेखे लाए माटी चम्मड़ा, हड्ड मास नाड़ी रत्त अपार। करया खेल अगम्म अगम्मड़ा, सुरती शब्द मिलावा
विच संसार। मनमुख जीव ना जाणे अन्धड़ा, हउमे हँगता डुब्बा विच संसार। जूठा झूठा नाता मात पित भाई भैण साक
सैण अम्मी अंमड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम अधार। नाम अधार निझर रस, आत्म
मुख चुआया। हरि कन्त मिलावा हस्स हस्स, साची नारी सेज सुहाया। उच्च अटल मुनारा आपणा राह आपे रिहा दस्स,
दूसर दिस किसे ना आया। मेल मिलाए नस्स नस्स, आदि जुगादी फेरा पाया। हरिजन हिरदे आपे वस, आप आपणा
मुख वखाया। सुफ़ल कराई मात कुक्ख, जन जननी वेख वखाया। उलटा मात गर्भ ना होए रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद
कटाया। जगत जीवण जीवण दाता कटे दुःख, रोग सोग ना कोए मिटाया। अट्ठे पहर बख्शे आपणा दरस, नेत्र लोचण
नैण खुल्हाया। आप मिटाए झूठी हरस, तामस तृष्ना रहिण ना पाया। एका मेघ देवे वरस, जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, बाली बुध बुध बिबेक पाया। शब्द शब्द गुर हरि एक , एका नाम दृढ़ाया। नाम शब्द गुर बिबाना,

एका एक रखाया। गुरसिख साचा चतुर सुघड़ स्याणा, गुर पूरे आप बहाया। जाणे जणाए आपणा भाणा, भाणा राणा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग तणया आपणा ताणा, आपे तणदा आया। जुग ताणा आपे तण, तन्दी तन्द बंधाया। सुघड़ स्याणा आपे बण, आपणा राह वखाया। गुरसिख जगाए साचे जन, जन जनका दए कढाया। जोत जगाए निर्मल तन, दीपक बाती इक्क रखाया। फेर फिराए मणका मन, मन मनुआ लए समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराया। गुरसिख मिलावा हरि हरि कन्त, साची सेज सुहावणी। काया चोली चढ़े रंग बसन्त, प्रभ पूर कराए भावनी। सखा सखाई सदा सुहेला आदि अन्त, धुरदरगाही देवे जामनी। मिल्या मेल थाल निधान बली बलवन्त, सिँघ फड़ाए आपणी दामनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेटे रैण अन्धेरी शामनी।

* १६ सावण २०१५ बिक्रमी नरैण सिँघ दे घर पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर *

आदि पुरख हरि निरँकार, निरगुण रूप समाया। निरगुण जोती कर उज्यार, निज घर वेस वटाया। आप आपणी बन्ने धार, ना कोई दूसर संग रखाया। इक्क अकल्ला कर प्यार, एका एकँकारा नाम धराया। खेले खेल खेलणहार, आपणी रचना रिहा रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका कर, एका आपणा रंग रंगाया। निरगुण हरि हरि अवतारा, आपणी जोत जगाईआ। जोती जोत नूर उज्यारा, एका एक रुशनाईआ। ना कोई दूसर होर पसारा, ना कोई थान सुहाईआ। ना कोई दीसे दर दुआरा, दर दरबार ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोत सरूपी जोत अकाली, एका जोत जगाईआ। एका जोत बण दलाली, एका वणज कराईआ। एका करे हक्क हलाली, हक्क हलाल हो जाईआ। एका शाह एका कंगाली, शाह कंगाल नाउँ धराईआ। एका धर्म एका धर्मसाली, एका दर वखाईआ। एका खेले खेल निराली, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। अग्नी जोती जोत ज्वाली, आपे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत नूर निशानी, नूरो नूर समाया। आप आपणा बणाए आदि भवानी, आदि शक्ती नाम धराया। आपणी कर आप कुरबानी, आप आपणा भेंट चढ़ाया। आप आपणा बणया दानी, दाता दानी मंगण आपे आया। आप आपणी मारे कानी, आप आपणा निशान रिहा टिकाया। आप आपणी चढ़या जवानी, आप आपणा जोबन रिहा हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

४६१
०७

जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, एका एक एकँकारा। आप आपणा कर पसारा, आपे वेखे सच्ची सरकारा। आप आपणा ला दर दरबारा, आप सुणाए हुक्म अपर अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर एका नूरो नूर होए उज्यारा। जोती नूर हरि उजाला, अचरज खेल खिलाईआ। आपे होया गुर गोपाला, गोबिन्द नाउँ धराईआ। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ धराईआ। आपणी अग्नी आपे लाए जोत ज्वाला, आपणा तत्त आप रखाईआ। एका फल वेखे आपणे डाल्ला, आपे लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाए इक्क अकल्ला, एका कार कमांयदा। आप आपणा मेटे सल्ला, आप आपणा दुःख वंडांयदा। आप आपणा करे हल्ला, आप आपणा मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि हरि निरँकारा, एका एक कराया। इक्क अकल्ला पावे सारा, एका दर सुहाया। ना कोई गुरु पीर साध सन्त दिसे अवतारा, ना कोई सगला संग रखाया। खेले खेल खेलणहारा, अकल कला आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि निरँकार, आपणी करे आप वड्याईआ। आपे कर दर जैकार, आपणा नाअरा लाईआ। आपणा आप करे ख़बरदार, आप आपणा लए उठाईआ। आप आपणा बणे पहरेदार, आप आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेखे वेखणहार आप हो जाईआ। ना कोई दूसर उथे करे सवाल, ना कोई मंगे मंग बण सवाल्या। पंज तत्त ना कोई वज्जे ताल, थिर घर लग्गा इक्क दरबारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप सच सिँघासण बैठा सच सिक्दारीआ। सच सिक्दार हरि निरँकारा, एका एक अख्वाया। खेले खेल अपर अपारा, भेव कोए ना पाया। लोआं पुरीआं ना कोई आकारा, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई रचाया। रवि ससि ना कोई सतारा, मण्डल मण्डप ना कोई सुहाया। पृथ्मी आकाश ना दिसे पाड़ा, ना कोई वेखण वेख वखाया। त्रैगुण माया ना लाए कोई अखाड़ा, ना कोई संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वस्सया एका घर, आप आपणा कर्म कमाया। निरगुण वेस पुरख अबिनाश, आपणा आप कराया। आपणे चरन करे आप आदेश, आप आपणा सीस झुकाया। आपणी जोती आपे कर प्रवेश, आपे डगमगाया। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाया। ना कोई नानक गोबिन्द बाल जवानी अल्लड़ वरेस, हरि जोती नूरो नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा थान सुहाया। थान सुहाए पुरख अनादा, एका धार चलाईआ। ना कोई ब्रह्म दिसे ब्रह्मादा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क अकल्ला आदि जुगादा, आपणी रचना

रिहा रचाईआ। ना कोई मात पित ना कोई भैण भ्रा ना कोई दादी दादा, साक सैण ना कोई रखाईआ। ना कोई सुर ताल वजाए वाजा, ना कोई तार सतार हिलाईआ। ना कोई अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे वाजां, उच्ची कूक ना दए दुहाईआ। आपणे घर आपे वस्सया ग़रीब निवाज़ा, आपणी दया कमाईआ। आप आपणी आपे रक्खे लाजा, लाजावन्त आप हो जाईआ। आपणे सीस आपणा रक्खे ताजा, सीस जगदीस इक्क टिकाईआ। आपे शाहो भूप सुल्तान वड राजन राजा, शाह सुल्ताना नाउँ रखाईआ। आपणा रचया आपे काजा, आपे कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका हरि, एका नूर करे रुशनाईआ। एका जोती जोत जगा, हरी हरि हरि डगमगाया। आपणा सगन मुख लगा, आपणा बंधन पाया। आपणा तन्दन आप बंधा, बन्दीछोड़ नाम धराया। आपणा चन्दन आप लगा, आपे वेख वखाया। आपणे परमानंदन आपे गया समा, आप आपणा रस वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका धर, एका शक्त नाम रखाया। एका शक्त हरि बलवान, आपणी आप कराईआ। अट्ठे पहर नौजवान, ना मरे ना जाईआ। आदि अन्त विच मैदान, रिहा फेरीआं पाईआ। खाणी बाणी ना कर सके कोई पछाण, वड दाता बेपरवाहीआ। आपे जाणे आपणा आवण जाण, ना कोई लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस एका कर, एका नूर करे रुशनाईआ। निरगुण रूप हरि करतारा, आपणा आप उपाया। आपे बैठ सच सच्चे दरबारा, आपणा धुर फ़रमाण जणाया। आपणी करे आपे कारा, एका धन्दे लाया। एका नाम कर प्यारा, आप आपणा लए उपाया। जोती माता सुत दुलारा, शब्दी शब्द जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। निरगुण रूप जोत जगा, शब्दी सुत उपांयदा। आपणा शस्त्र आप घड़ा, आपणे हथ्थ उठांयदा। ना कोई दूसर सके वेख वखा, दिस किसे ना आंयदा। आपणा लेखा आपे रिहा लिखा, लेखा लिख्त विच ना कोई गणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खण्डा कर त्यार, आपे वेखे हरि सिक्दार, आपणे हथ्थ उठांयदा। साचा खण्डा नाम धार, हरि साचे आप उपाईआ। वेखे विगसे करे विचार, आप आपणी दया कमाईआ। सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा मता पकाईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, मण्डल मण्डप दए सुहाईआ। शब्द सुत कर प्यार, दे मति रिहा समझाईआ। शब्द सुत गुर करतार, आपणा नाउँ धराईआ। रूप रंग ना करे कोई विचार, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाईआ। जोती नूर जोत उजागर, हरि आपणा कर्म कमाया। एका शब्द कराए सौदागर, एका वणज रखाया। ब्रह्मण्ड सुहाए साची गागर, आपणा ताल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणा रंग रंगा, आप आपणी दया कमाईआ। आप आपणी मंग मंगा, आपणी इच्छया पूर कराईआ। आप आपणा संग रखा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचन रचणहारा, त्रैगुण वेस वटाया। पारब्रह्म पुरख करतारा, रूप अनूप दरसाया। पंज तत्त कर उज्यारा, तत्व तत्त बंधाया। निरगुण बैठ विच करे खेल अपर अपारा, दिस किसे ना आया। लोकमात कर पसारा, लक्ख चुरासी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाया। पंज तत्त कर त्यार, लक्ख चुरासी रिहा उपाईआ। मानस मानुख देवत सुर लए उभार, गण गंधर्ब वेख वखाईआ। यच्छ किन्नर हो उज्यार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड कर विचार, क्रिया करनी किरत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंड वंडाईआ। आपणी वंड वंडणहारा, एका एक अख्वाया। आप आपणा डन्नणहारा, वेस अनेका लए वटाया। आपणी कंड वढ्ढणहारा, आपणा खण्डा लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे खेल सबाया। खेल सबाया वेखणहारा, जुग जुग वेख वखांयदा। लोकमात लै अवतारा, भेखी भेख वटांयदा। जीव जन्त ना पायण सारा, हउमे गढ़ भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत धार कर विचार, दोए वेख वखांयदा। जगत धार साची कुक्ख, हरि हरि बणत बणांयदा। मानस देवत करे मनुख, मूर्ख धन्दे लांयदा। आपणी खेल आपे जाणे अबिनाशी अचुत्त, भेव कोई ना पांयदा। आप उपाए साचे सुत्त, सुंभ निसुंभा नाउँ धरांयदा। आपणी नगरी आपे लुट्ट, आपे शोर मचांयदा। आप आपणा कढ्ढे खोट, आप आपणा मुख भवांयदा। आप आपणे नगारे लाए चोट, आप आपणा ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस हरि निरँकार, आपणी जोत जगाईआ। आपणी शक्ती कर प्यार, आपणा हुक्म सुणाईआ। आपणी भगती दे अधार, भगवन्त नाउँ रखाईआ। जोग जुगती कर उज्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। ना कोई जाणे नारी नार, नर नरायण वेस वटाईआ। आपणे घर आपणा कर त्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा खण्डा फड़ दो धारा, आपणे हथ्थ रिहा चमकाईआ। चतुर्भुज भेव न्यारा, चारे भुजां रिहा फड़काईआ। आपणा रूप वटाए विच संसारा, दूजा लेख लिखाईआ। अष्टभुज दे ललकारा, आपणी खेल खिलाईआ। खेले खेल एकँकारा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। तीर कटार बरछा फड़ तिक्खा आरा, दो धड़ रिहा चिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल करे रघुराईआ। अष्टभुज इष्ट ज्वाला आपणा नाउँ धराया। प्रगट हो गुर गोपाला, लोकमात उठ धाया। आपणा बणया आप रखवाला, आपणा शस्त्र आप उठाया।

आपणी जोती आप ज्वाला, आपणा नाउँ रखाया। दुर्गा दरगाह वेखे खेल अकाला, काल महांकाल नेड़ ना आया। दो जहानी तोड़ जंजाला, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, आप आपणा इष्ट उपाया। आपणा इष्ट आपणी दृष्ट, आपे आप खुल्हाईआ। भेव ना जाणे जीव सृष्ट, भरमे भुल्ली लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। आप आपणा करया वेसा, आपणा तन शृंगारया। आपणी चरनी कर प्रवेशा, आपे उठ ललकारया। मातलोक वेख्या जगत वेसा, कामी क्रोधी जीव हंकारया। जगत नरिंद झूठ नरेशा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर करे ख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमाती जोत धर, आपणी शक्ती आपे वखा रिहा। आदि शक्ती जोत भवानी, लोकमात उठ धाईआ। एका फड़या तीर कानी, शस्त्र आपणे हथ्थ उठाईआ। शब्द दलेर बण रकानी, बैठी आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुरदरगाही बख्शी साची दात, सगली झोली पाईआ। जगत शेर शब्द गुर, हरि हरि आप उपाया। जोत ज्वाला उत्ते गई चढ़, दुर्गा अष्टमी नाउँ धराया। सुंभ निसुंभा मारे पहला पौड़, अठवंजा लक्ख पदम दल खपाया। पारब्रह्म अबिनाशी लोकमात आपे जाए बौहड़, आप आपणा वेस वटाया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेखे दौड़ दौड़, दिवस रैण सेव कमाया। दैंत यक्ख रहिण ना देवे कोई कौड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी शक्ती आपे लए उपाया। आपणी शक्ती नाम धरा, आपणी कल धारीआ। चारों कुन्ट वेख वखा, दहि दिशा पावे सारीआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए मना, बख्शे सच सच्ची सिक्दारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए आपणा बंक द्वारीआ। बंक दुआरा हरि बराजे, हरि हरि धाम सुहाया। आदि जुगादी रचया काजे, जुग जुग करदा आया। गुर गोबिन्द मारे वाजे, एका शब्द सुणाया। पारब्रह्म प्रभ साजण साजे, नाम खण्डा हथ्थ फड़ाया। एका चढ़या साचे ताजे, एका अस्व रिहा दौड़ाया। अन्तिम लहिणा देणा पूर कराए देस माझे, निहकलंकी जामा पाया। नौ खण्ड पृथ्मी रचया काजे, सत्तां दीपां वेख वखाया। लक्ख चुरासी खोल्हे पाजे, मूर्ख मूढ़े दए खपाया। जन भगतां रक्खणहारा लाजे, जुग जुग रक्खदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि आपणा नाउँ रखाया। हरि जोत हरि रूप है, हरि हर विच समाए। हरि जोत चारों कूट है, दहि दिशा डेरा लाए। हरि जोत शाहो भूप है, सच सिक्दार अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगाए। हरि जोत हरि रंग है, रंग रूप अपार। हरि जोत मंगे आपणी मंग है, बण आपणे दर भिखार। हरि जोत वेखे आपणे संग है, प्रगट हो नूरी नूर संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, अगम्म अथाह बेपरवाह, एका एक एकँकार। एका जोत हरि उजाला, आपणी आप करांयदा। सतिजुग साचा बण रखवाला, सनक सनंदन सनातन सन्त कमारा नाउँ धरांयदा। बराह रूप खेल निराला, आपणा वेस वटांयदा। आपणी चले अवल्लड़ी चाला, यज्ञे पुरश अख्वांयदा। जोती जोत नूर गोपाला, हाव गरीव अख्वांयदा। नर नरायण अकल अकाला, आप आपणा वेख वखांयदा। कपल मुन मार ध्यान, धुनी नाद वजांयदा। दत्ता त्रै मेल मिलाउणा, दीपक इक्क टिकांयदा। रिखभ देव कर परवाना, आपणी बूझ बुझांयदा। पृथू मेला गुण निधाना, गुण दायक आप अख्वांयदा। मत्तस खेले खेल निधाना, आप आपणी कल वरतांयदा। कच्छ रूप वड प्रधाना, मिन्दिरा पिठ उठांयदा। धनंतर वैद उठ जवाना, औषध मेट मिटांयदा। बावन भेख कर गुण निधाना, बल राजा छल छलांयदा। हँस बणया खेल परवाना, एका ज्ञान ध्यान दृढ़ांयदा। मोहणी रूप हरि भगवाना, मोहण माधव आप दरसांयदा। नर सिँघ जोत जगत जहानां आपणी आप जगांयदा। हरी हर वड बलवाना, गज बेड़ा पार करांयदा। नर नरायण खेल महाना, बालक ध्रू तरांयदा। वार अठारां जोत जगाना, सतिजुग बेड़ा पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेख वखांयदा। त्रेता तेरी बन्ने धार, तेरा रंग रंगाया। परस परसा कर प्यार, कौरू कुशेतर धाम सुहाया। राम रामा पाए सार, आप आपणी जोत जगाया। रावण तोड़े गढ़ हँकार, लहिणा देणा मूल चुकाया। प्रगट हो विच संसार, सीता सुरती लए प्रनाया। अकाल मूर्ति कर प्यार, एका इष्ट मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा लहिणा तेरी झोली पाया। द्वापर उठ लग्गा भाग, हरि साचे जोत जगाईआ। वेद व्यासा लग्गा दाग़, आपे रिहा धवाईआ। पुराण अठारां एका वाक्, चार लक्ख हज़ार सतारा सलोक लिखाईआ। कृष्न कृष्ना पूरा करे वाक्, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आपणे अन्दर आपे वेखे मार झाक, आपणा कुण्डा आपे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी वंड आप वंडाईआ। द्वापर तेरी वंडी वंड, हरि साची जोत जगाईआ। काहना कृष्ना खेल ब्रह्मण्ड, त्रिलोकी नाथ अख्वाईआ। आपे करे खण्ड खण्ड, आपे मेट मिटाईआ। आपे वेखे नार दुहागण रंड, गुरमुख आपे लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस आपे रिहा कराईआ। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, बोध ज्ञान दृढ़ाया। कलिजुग बैठा इक्क अकल्ला, परवरदिगार अख्वाया। ईसा मूसा हरि देवे पल्ला, आपणा लड़ फड़ाया। सृष्ट सबाई राणी अल्ला, एका नाअरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस आपणा कर, जिउँ भावे तिउँ रिहा कराया। जिउँ भावे तिउँ करदा आया जग, जुग वड्डी वड्याईआ। लहिणा देणा किसे ना दर, दर आयां ना डन्न लगाया। आपणे

अमृत आपणा ताल आपे सर, सरोवर भरदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस वटाया। आपणा वेस हरि वटा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। बूंद रक्त लेखे ला, माता पिता दए वधाईआ। हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ा, साची बणत बणाईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश गया सुहा, मन मति बुध नाल रलाईआ। मात गर्भों बाहर गया आ, हरि साचा वेख वखाईआ। आपणी धार आप बंधा, आपे बूझ बुझाईआ। मात पिता घर चढ़या चा, नानक नाम धराईआ। हरि का भाणा कोई जाणे ना, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बाल अञ्याणे कोई पछाणे ना, नेत्र नैणां बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दित्ता एका वर, शब्द भण्डारा देवे भर, जोती विच टिकाईआ। शब्द भण्डारा हरि भरपूरा, आपणा आप भराया। नानक अग्गे हरि हज़ूरा, हरि हरि नज़री आया। आपे वसे नेड़े दूरा, भाण्डा भरम भन्नाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, लड़ आपणा आप फड़ाया। मनमुख जीव ना जाणे मूर्ख मूढ़ा, हरि का भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक सद्दया आपणे घर, घर साचा आप सुहाया। शब्द सुनेहड़ा हरि हरि घल्ल, नानक दर बुलाया। नानक चढ़या निहचल धाम अटल, दूसर कोई ना राह तकाया। दो जहानां मिटया सल, पुरख अबिनाशी पाया। आदि निरँजण तेरे चरन बैठा मल, विछड़ कदे ना जाया। ना कोई दीसे काया माटी खल, शब्दी शब्द समाया। जोती जोत गई बल, हरि जोती जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक मेल मिलाया। नानक ढहि पए द्वार, घर साचे वज्जी वधाईआ। मेल मिलावा हरि निरँकार, रसना हरि गुण गाईआ। लेखा लिख ना सके कोई विच संसार, भेव अभेद गया छुपाईआ। दर्शन पाया गुर करतार, एका दूजा रिहा मिटाईआ। सोहँ शब्द ल्या उचार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, ना कोई दूसर होए सहाईआ। मेरी चोली रंग विच संसार, एका रंगन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया नानक गुर पाए भिच्छया आत्म झोली रिहा भराईआ। हरि हरि देवे हरि भण्डारा, गुर नानक झोली भरांयदा। एका शब्द आप उचारा, रसना बोल सुणांयदा। सतिनाम कर वरतारा, तेरा मेरा रंग रंगांयदा। कूड़ा नाता तुटे संसारा, जो जन तेरा दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। अलक्ख निरँजण दया कमा, अगम्मड़ा धाम सुहाया। सचखण्ड दुआरा जोत जगा, नानक मेल मिलाया। शब्द गहिणा तन पा, इक्क शृंगार वखाया। प्रेम प्याला जाम प्या, अट्ठे पहर ख़ुमार रखाया। एका सुर ताल दए वजा, नानक निरँकार निरँकार निरँकार गाया। लोकमात उठ आवे धा, आ आपणा रूप वटाया। जीव जन्त कोई जाणे ना, जलधारा फोल फुलाया। हरि का शब्द हरि का रूप बिन हरि

जोत कोई पछाणे ना, लेखा लिख्त विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक जोत एका धर, शब्द भण्डार वरताया। शब्द भण्डार हरि वरतंता, आत्म करे जणाईआ। पूरन जोग देवे साचे सन्ता, जिस जन दृष्टी पाईआ। ग़रीब निमाणे मेले हरि हरि साचे कन्ता, साची नारी रूप मनाईआ। आत्म सेजा इक्क सुहंता, बन्द किवाड़ा दए खुल्हाईआ। काया चोली तन रंगता, नाम मजीठी इक्क रंगाईआ। ग़रीब निमाणा हो हो गुरमुखां दर दुआरे फिरे मंगदा, आपणी अग्गे झोली डाहीआ। हउँ सेवक भुक्खा नंगता, दर दरवेश आप अख्वाईआ। माण देवे साची संगता, सतिनाम जो जन रहे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक बूझ बुझाईआ। नानक गुर शब्द जणाई, हरि साचा आप करांयदा। एका धार धुर दरगहि आप रखाई, इक्क सतार हिलांयदा। शब्द सुनेहड़ा देवे बेपरवाही, परा पसन्ती नाम धरांयदा। नानक गाए चाँईं चाँईं, मधम बैखरी वेख वखांयदा। जन भगतां मेल मिलाए थाउँ थाँईं, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। फड़ फड़ उठाए बाहीं, दर दर घर घर वेख वखांयदा। चार वरनां देवे ठंडी छाईं, ऊँचां नीचां भेव मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक मेला एका घर, एका घर दरसांयदा। नानक गुर दया कमा, आपणी कार कमाईआ। आपणा गहिणा वेख वखा, आपणा नेत्र रिहा उठाईआ। गुरमुख साचा मेल मिला, आपणे रंग रंगाईआ। अंगद अंग गया समा, जोती जोत टिकाईआ। शब्द गुर बेपरवाह, लोकमात करी कुड़माईआ। नाता तोड़े भैण भ्रा, पुतर धीआं ना कोई दसाईआ। अमरदास हरि सेव कमा, अमरापद पाईआ। रामदास वेख वखा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अर्जन गुर दए लिखा, अगाध बोध शब्द चलाईआ। हरिगोबिन्द नाम धरा, मीर पीर आप अख्वाईआ। एका खण्डा लए उठा, दुष्टां करे सफाईआ। दूजा खण्डा हथ्थ चमका, गुरु ग्रन्थ तेरी रच्छया आपणी सेवा लाईआ। हरिराए हरि हो सहा, लेखा लेख मुकाईआ। हरिकृष्न हरि हरि रूप गया समा, बाल बाला वड वड्याईआ। गुर तेगबहादर आपणा आप भेट चढ़ा, गुरमुख साचे गया बचाईआ। गुर गोबिन्द अकाल पुरख इक्क मना, पूत सपूता नाम धराईआ। एका शस्त्र तन ल्या सजा, मिल्या धुरदरगाहीआ। पंचम पंचां जोत जगा, पंचम अग्गे झोली डाहीआ। इष्ट देव गुर आप अख्वा, आपे सेवक रूप हो जाईआ। गुरु ग्रन्थ गुर बणा, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। जीव जन्त कोई भुल्ले ना, अकाल पुरख वड वड्याईआ। आदि अन्त करे कदे ना नाह, ना कोई सके डुलाईआ। लोकमात त्रैगुण माया कदी रुले ना, पंज तत्त ना डेरा लाईआ। मात गर्भ कदी फले फुले ना, दस दस मास ना सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द वेख वखाईआ।

पंचम मुख पंचम ताज, पंचम आप सुहाईआ। पंचम देवे साचा राज, पंचम सेव कमाईआ। पंचम रचया आपे काज, पंचम वड वड्याईआ। पंचम रक्खणहारा लाज, गुर गोबिन्द वेस वटाईआ। पंचम साजन रिहा साज, दिल्ली तख्त करे रुशनाईआ। पंचम खेल खेले देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। वाली हिन्द उठाया मार अवाज़, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाईआ। प्रभ गुरमुखां रक्खण आया लाज, जोती नूर करे रुशनाईआ। किसे सीस ना दिसे कोई ताज, राज राजानां दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम बणाया साचा घर, दर दरबार दिल्ली सुहाईआ। पंचम मुख पंचम ताज, हरि साचे बणत बणाईआ। सत रंग निशाना मारे अवाज़, सत्तां दीपां लए उठाईआ। लक्खण पुष्कर करौच जम्बु आपे भाज, ढहि ढहि होए सरनाईआ। सलमल सान खोल्हे पाज, देवे पड़दा लाहीआ। कुशा तेरा करया काज, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। पंचम निशाना पंचम सीस, हरि साचा आप बंधांयदा। खेले खेल जगत जगदीश, आप आपणी रचन रचांयदा। सच विहारा कराए वीह सौ बीस, बिकर्मी पन्दरां कत्तक रुत्त सुहांयदा। शाह सुल्तानां नौ खण्ड पृथ्मी खाली करे खीस, ख़ाकी ख़ाक उडांयदा। ना कोई पढ़े कुरान अञ्जील हदीस, शरअ शरीअत ना कोई अलांयदा। अल्ला राणी जाए पीस, मूसा ईसा संग तुड़ांयदा। ना कोई गाए सपारे तीस, बतीस दन्द ना मुख हिलांयदा। लहिणा देणा चुक्के सम्मत उनीस, हरि साचा आप चुकांयदा। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई एका दस्स सच तारीख, ओहला पड़दा भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंच निशाना पंचम सिक्ख पंचम धार चलांयदा। शब्द डण्डा हथ्थ करतार, आपणा आप उठाया। आपे रक्खी तिक्खी धार, चण्ड प्रचण्ड समाया। जोती जामा भेख न्यार, नौ खण्ड पृथ्मी वंड वंडाया। कुला खण्ड तेरी पावे सार, इलाबुत डेरा लाया। केतमाल तेरी सुण पुकार, हरणयमर उठ धाया। किंपुरख रोवे ज़ारो ज़ार, भद्र रिहा कुरलाया। भारत खण्ड तेरे जोत कर उज्यार, निहकलंका नाउँ धराया। गुर गोबिन्द होया ख़बरदार, गुरमुख साचे लए जगाया। अन्तिम मेला दिल्ली दरबार, सीस गंज थान सुहाया। सच निशाना देवे चाढ़, धर्मी धर्म कमाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका सिक्खी एका धार, रक्खे तिक्खी ना कोई मोड़ मुड़ाया। हरि का भेव कोई ना जाणे मुनी रिखी, वेद पुराण शास्त्र सिमरत खाणी बाणी रही गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे मुख सुहाया। पंचम नाता हरि हरि जोड़, आपणा कर्म कमावणा। गुर गोबिन्द चढ़या शब्द घोड़, सृष्ट सबाई आप उठावणा। पुरीआं लोआं वेखे दौड़ दौड़, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सर्ब कुरलावणा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, कौड़ा रीठा रहिण ना पावना। धुरदरगाही लाए एका पौड़, गुरसिख साचा आप चढ़ावणा। गुरमुख गुरसिख गुर पूरा अन्तिम कलिजुग जाए बौहड़, शब्द डंक जिस

वजावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई लए वर, चरन नाता इक्क वखावणा। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मोह चुकांयदा। सृष्ट सबाई बन्ने धार, एका मार्ग लांयदा। एका नाम इक्क जैकार, सिख्या इक्क सिखांयदा। एका धर्म इक्क द्वार, इक्क दरबार सजांयदा। चार वरनां कर प्यार, ऊँचां नीचां मेट मिटांयदा। राउ रंकां पावे सार, राज राजानां वेख वखांयदा। गुरसिख साजण कर त्यार, पंचम मस्तक टिक्का आप लगांयदा। साचा बस्त्र तन शृंगार, आत्म खण्डा इक्क पहनांयदा। मारी जाए वारो वार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पांयदा। साचा करे जगत विहार, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। आप आपणा उत्तों वार, गुरमुखां भेट चढ़ांयदा। ख़ाकी तन ना किया कोई प्यार, शब्दी शब्द समांयदा। जोती जोत कर उज्यार, आपणा कर्म कमांयदा। आदि जुगादी एका एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। वीह सद पन्दरां गुरमुखां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। पन्दरां कत्तक चरन छुहाए लंका तोड़े गढ़ हँकार, वाली हिन्द उठांयदा। सम्मत सोलां पैणी मार, लोकमात ना कोई बचांयदा। सम्मत सतारां हाहाकार, घर घर वेख वखांयदा। सम्मत अठारां वेखे जल धार, जल जल रूप समांयदा। उन्नी उनीसा खेल करतार, संग मुहम्मद वेखे चार यार, चौदां लोकां फेरी पांयदा। बीस बीसा प्रगट हो विच संसार, जगत जगदीशा नाउँ धरांयदा। इक्क इकीसा कर विचार, एका इक्की साची सिक्खी तेरे दर पांयदा। गुर गोबिन्द गया लेख लिखी, ना कोई मेट मिटांयदा। निरगुण धार रक्खी तिक्खी, आदि जुगादि चलांयदा। जिस जन आपणे नेत्र पेखी, सैंहसा रोग मिटांयदा। लोकमात रहिण ना देणा कोई भेखी, पंज तत्त कोई ना सीस निवांयदा। अकाल पुरख गुर हरि करदा इक्क आदेसी, आवण जावण चलत चलांयदा। कोटन कोट दर द्वार मंगण ब्रह्मा विष्न महेषी, लेखा गणत ना कोई गणांयदा। मुख सहँसर गाए शेषी, दोए सहँसर रसन हिलांयदा। सतिगुर पूरा गुर दस दस्मेस भरम ना भुल्ले धारी केसी, हरि साचा वेख वखांयदा। हरिसंगत करे आप आदेशी, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई एका देवे कर, एका ख़ालस शब्द गुर बण सालस पन्थ दए रचाया। शब्द गुर साचा सालस, धुरदरगाही आया। गुरमुख वेखे आत्म ख़ालस, घर घर फोल फोलाया। कवण दुआरे तृष्ना आलस, कवण दुआरे जूठ झूठ डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, गुरमुखां रिहा सेव कमाया। हरि सेवक सेवादार, जुग जुग आप अख्वांयदा। जन भगतां पावणहारा सार, नित नवित्त वेस वटांयदा। जूनी रहित आप करतार, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। निरभउ सर्ब कहित, भय विच ना कोई रखांयदा। अकाल मूर्त तेरी एका सच्ची रहित, तेरा रूप गुर गोबिन्द साचा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, पंचां देवणहारा वर, पंचां राह चलांयदा। पंचम मार्ग साचा लाउणा, साची करी जणाईआ। सच संदेसा इक्क सुणाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जूठा झूठा गढ़ तुड़ाउणा, कलिजुग अन्तिम रहिण ना पाईआ। भेखाधारी सन्त खपाउणा, साचे सन्त लए तराईआ। भगत भगवन्त मेल मिलाउणा, सुरती शब्दी कर कुड़माईआ। नौ दुआरे पार कराउणा, डूँघी भवरी फेरा पाईआ । सुखमन तेरा अलामा लौहणा, अग्गे हो हो दरस दिखाईआ। शब्द सरूपी लड़ फड़ाउणा, उच्चे पौड़े दए चढ़ाईआ। बजर कपाटी पथ्थर तुड़ाउणा, शब्द खण्डा एका लाईआ। पंचम नाता मुख भवाउणा, सगला संग ना कोई निभाईआ। अनहद राग इक्क सणाउणा, धुन अनादी ताल वजाईआ। पंचम सखीआं मंगल गाउणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। सर सरोवर इक्क नहाउणा, कागों हँस बणाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, दस्म दुआरी इक्क सुहाईआ। आत्म सेजा फूलन बरखा लाउणा, निरगुण रूप वड्डी वड्याईआ। नारी कन्ता एका धाम बहाउणा, घर साचे दए सुहाईआ। साचा राग इक्क अलाउणा, गीत सुहागी आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम सखीआं देवे वर, आत्म धुन शब्दी शब्द वज्जदी रहे वधाईआ। पंचम सिक्ख कर त्यार, आपणी दया कमांयदा। हउमे हँगता तोड़ हँकार, काया गढ़ सुहांयदा। निर्मल जोती कर उज्यार, दीवा बाती आप टिकांयदा। अमृत बूंद देवे स्वांती, निझर धार आप वहांयदा। दरस दिखाए इक्क इकांती, स्वच्छ सरूपी नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम गुरमुखां दरस दिखाए बहु बहु भांती, वेस अनेका आप करांयदा। पकड़ उठाए सुत्तयां रातीं, शब्द हलूणा एका लांयदा। ना कोई जाणे जाति पाती, ऊँचां नीचां एका धार वखांयदा। अट्ठे पहर रक्खे प्रभाती, जो जन चरन ध्यान रखांयदा। अन्तिम वेले पुच्छे वाती, दर आए फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां भण्डारे रिहा भर, भरनहार समरथ जुग जुग महिमा जगत अकथ, कथनी कथा ना कोई कथांयदा। अमृत आत्म गुर गुर दीआ, निझर धार वहाईआ। संगत सारी नाम निधाना पिया, जीअ हरा कराईआ। लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआं, आवण जावण फंद कटाईआ। आत्म अन्तर वस्सया गुर गोबिन्द साचा पिया, गुर चेला एका रूप अख्वाईआ। गुरसिक्खां मेले कर कर आपणा हीआ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग साची रक्खे नीआं, पहले काम क्रोध लोभ मोह हँकार गंवाईआ। निर्मल करे हरिजन जिया, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सिख्या आपे रिहा सिखाईआ। हरिसंगत हरि आप समझाए। माया मोह तजाउणा, काम क्रोध नेड़ ना आए। लोभ मोह हँकार दिस ना आउणा, साची सिख्या इक्क सिखाए। गफ्लत नींद किसे ना सौणा धुर दा लेखा आप जणाए। ना कोई मेटे ना किसे मेट मिटाउणा, वीह सौ वीह बिक्रमी

साची सिक्खी अमृत इक्क पिआउणा, साची रीत जणाए। रसना जूठ झूठ ना किसे मुख लगाउणा, जो अमृत मुख लगाए। अट्ठे पहर हरि गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रसना गाउणा, दूसर राग ना कोई कढाए। वड्डी खोर ना कोई पन्थ रखाउणा, दूई द्वैती मेट मिटाए। अकाल पुरख तेरा धुन अनादी एका संख वजाउणा, लोआं पुरीआं दए वखाए। गुरमुखां अन्दर गुरु दुआरा सच वखाउणा, गुर गोबिन्द नज़री आए। अमृत प्याला भर पिआउणा, आपणी हथ्थीं अग्गे डाहे। साचा रस इक्क रसाउणा, रस रसीआ नाम धराए। चार वरनां एका मार्ग पाउणा, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेला रिहा बताए।

पूत सपूता कर प्रधान, मातलोक उपाया। दुष्ट दमन नौजवान, सेवक सेवा लाया। अकाल पुरख दे ज्ञान, एका नाम दृढ़ाया। अट्ठे पहर बख्श ध्यान, आपणा दरस दिखाया। आपे होया जाणी जाण, गुर चेला नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त करे कुड़माया। गुर गोबिन्द साचा सूर, हरि हरि आप उपाया। आपे बख्शे आपणा नूर, आपणी जोत जगाया। आपणी कल करे भरपूर, आपणा रंग रंगाया। आपे वसे नेड़े दूर, हाज़र हज़ूर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। आप आपणा बोल जैकारा, आपणी दया कमाईआ। आप आपणा कर प्यारा, लेखा रिहा लिखाईआ। आप आपणा कर उज्यारा, आपणा नूर रिहा दरसाईआ। आप आपणा कर शृंगारा, आप आपणा दरस दिखाईआ। अमृत देवे ठंडी धारा, साचा जल प्याईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, एका भगौती रिहा चमकाईआ। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, पूरन बूझ बुझाईआ। लोकमात बन्ने धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुर गोबिन्द दरस दिखा, हरि आपणा दरस दिखाया। मुच्छ दाढ़ी केस लए वधा, शब्द घोड़ा हेठ रखाया। नीला नीली धारों पार करा, लोकमात वेख वखाया। कल्गी तोड़ा सीस टिका, शब्दी चीरा इक्क बंधाया। नाम तीरा तन सजा, रसन कमान हिलाया। दो जहान वहीरां दए पा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। शाह कंगाल फकीर दए मना, राज राजानां ख़ाक रुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। शब्द सुनेहड़ा हरि करतार, गोबिन्द रिहा घलाईआ। तेरा रूप मेरा संसार, लोकमात वेख वखाईआ। करना खेल अपर अपार, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। इक्क लगाए साचा नाअर, वाहिगुरू फतिह गजाईआ। वाहिगुरू ख़ालसा कर त्यार, चार वरनां फोल फुलाईआ। ऊँचां नीचां बण प्यार, नानक गया समझाईआ। बन्ने सीस सेहरा

दस्तार, रूप अनूप दए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे घर, गुर गोबिन्द बूझ बुझाईआ। गोबिन्द सुणया हरि हरि राग, आत्म वज्जी वधाईआ। लोकमात जगे चिराग़, ख़ालस ख़ालसा दए बणाईआ। साचा साजण देवे साज, साची रचन रचाईआ। इक्क पंज दो छे, चौदां लोकां फिरे दुहाईआ। इक्क सत्त पंज छे, उन्नी उनीसा अल्ला राणी दए मिटाईआ। सतारां सौ छपंजा बिक्रमी लग्गा नेंह, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द सिँघ रहे शरनाईआ। सिँघ गोबिन्द गोबिन्द सिँघ, गुरू गुर नाम धराया। आपणी मेटे आपे चिन्द, आपणा मोह चुकाया। गुरसिक्खां बणाए उपजाए साची बिन्द, सीस सीस लेखे लाया। प्रगट हो गुणी गहिंद, एका खण्डा हथ्थ उठाया। आपे दाता दानी होया बख्शिंद, आप आपणे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। साची मति शब्द गुर मन्त्र, एका एक दृढ़ाया। सच बसन्तर लग्गी बसन्तर, ना सके कोई बचाया। हरि बिन कोई ना जाणे अन्तर, गुर पूरा होए सहाया। वेस वटाए जुगा जुगन्तर, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा शस्त्र, शस्त्र धारी नाम धराया। शस्त्रधारी साचा खण्डा, पंज तत्त शृंगारया। पहले वंडाई आपणी वंडा, पंचम मोह चुका रिहा। दूजे मेट भेख पखण्डा, साची सिख्या इक्क समझा रिहा। तीजे गुरसिख नेत्र होए ना अन्धा, अट्ठे पहर दरस दिखा रिहा। चौथे वेखे विच ब्रह्मण्डा, आपणा नाम धरा रिहा। पंजवें बणया आपे खण्डा, गुरमति एह जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महीना चेत्र पहली विसाखी रुत्त सुहा रिहा। गुरमुख तेरी साची मत, गुर पूरे आप बंधाईआ। तुट ना जाए तेरा जत, कोटन कोट पदमनी नाच कराईआ। तेरी काया तन ना उब्बल रत्त, नौ अठारां वेख वखाईआ। तेरी धीरज मेरा चरन हठ, ना किसे कोई तुड़ाईआ। धुरदरगाही करां अकट्ठ, राह विच ना कोई अटकाईआ। मानस जन्म ना होए भट्ठ, गुर गोबिन्द जो रिहा ध्याईआ। मेल मिलावा नट्ठ नट्ठ, चार वरनां कर कुड़माईआ। लहिणा देणा चुकावां तीर्थ अट्ठ सट्ठ, अमृत आत्म ताल भराईआ। एका पूजा एका पाठ, वाहिगुरू फतहि गजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। हथ्थी कंगन तन शृंगार, गुर पूरे आप बंधाया। बंधन पाए अपर अपार, जीव जन्त ना कोई तुड़ाया। गुरसिख ना होए ठग्ग चोर यार, दूसर धन ना कोए चुराया। दो हथ्थां रक्खे साझां यार, एका वंड वंडाया। ग़रीब निमाणयां पावे सार, साचा खण्डा लए चमकाया। जो जन ढहि पए द्वार, फड़ बांहों गले लए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता साचा वर, गुर संगत रिहा सुणाया। साचे केस दस दस्मेस, धुर दी धार पार कराईआ।

सीस बैठ हरि जगदीस, तेरा पड़दा पाईआ। तेरी करे ना कोई रीस, तेरा लेख ना कोई लिखाईआ। तेरी कीमत पाए बीस बीस, दूर दुराडा बैठा राह तकाईआ। तेरे छत्र झुलाए सीस, आपणे हथ्थ आप उठाईआ। जगत विकारा जाए पीस, गुरमुखां रिहा समझाईआ। गुरसिक्खां नाता छड्डुना राग छतीस, मन काविआ करे पढ़ाईआ। बुध बणाए आपणी हदीस, गुरमति दए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, गुरमति गुर रिहा सुणाईआ। साचा कंघा बत्ती दन्द, मक्खू मुख लगाया। सीस जगदीस चढ़या चन्द, आपणे हथ्थ टिकाया। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, दुरमति मैल गंवाया। आत्म उपजे परमानंद, जिस जन आपणी केसी वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म जणाया। पंचम धार नाता, पंचम रिहा जणाईआ। तन रखाए बस्त्र छाता, बस्त्र शस्त्र आप सजाईआ। धीरज यति पाए काछा, कामन नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दिसे साचा घर, साची सिख्या इक्क सिखाईआ। साची रीत गुर दस्तार, शब्दी चीर बंधाया। पाई तन हरि कटार, गुर गोबिन्द वेख वखाया। कंघा केस कर प्यार, दोए मेल मिलाया। दस दस्मेसा ख़बरदार, सोए रिहा जगाया। गणपति गणेशा ना कोई पूजे गुरमुख विचार, पुरख अकाल इक्क मनाया। आपणा आप कर त्यार, गुरसिख साचा त्यार कराया। आपणी रक्खया कर विच संसार, दे मति आप समझाया। आपे ढहि पया द्वार, गुरमुखां अग्गे झोली डाया। पंचम सेवक होया सेवादार, मुख अमृत आप चवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत वेला रिहा सुहाया। जिउँ भावी तिउँ भावना, हरि करन करावण जोग। दूती दुष्ट खपाए जिउँ रामा रावणा, गुरमुख मेला धुर संजोग। नेत्र बख्शे साचा चानणा, आत्म रस साचा भोग। गुरसिख तेरा ब्रह्म ज्ञानणा, एका पढ़ना सच सलोक। मेरा तेरा रूप एका जानणा, मेरी तेरी इक्क दुआरे मोख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपे जाणे आपणा हरख़ सोग।

एका दर हरि भगवान, मांगण कोटी कोट। देवणहार जिया दान, आदि अन्त अतोट। जिस जन बख्शे चरन धूढ़ सच्चा अशनान, जगत तृष्ना भरी पोट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल आपणे दर, जन्म जन्मांतर कढ्ढे खोट। मम्मा मूल पछान, मन बैरागया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, मानस जन्म धोवे दाग़िआ। देवे दरस दरस महान, फड़ फड़ हँस बणाए कागया। आत्म अन्तर बख्शे ब्रह्म ज्ञान, हथ्थ आपणे पकड़े वागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम शब्द सुभागया। मम्मा मेला मेल कर, मिल्या पुरख अगम्म। गुरमुख सज्जण सुहेल दर, ना मरे ना पए जम्म। आप आपणे जेहा कर, लक्ख चुरासी तोड़े बंधन बन्न्ह। इक्क नुहाए साचे सर, थिर घर

बहाए ना कोई रखाए छप्पर छन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखे लाए काया तन। तन खाकी चमड़ा, पंज तत्त सजाया। धन्न जणेंदी अम्मी अंमड़ा, पूत सपूता कुक्ख रखाया। मेल मिलावा अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़ा थान सुहाया। हरि हरि गुरमुख दर ना कोई लाए पैसा दमड़ा, कीमत करता ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा मनसा पूरन दए कराया। मन मनसा मन मानया, आत्म भया अनन्द। गुर पूरा हो मेहरवानया, शब्द सुहागी सुणाए छन्द। जोती नूर प्रकाश करे कोटन कोट भानया, मेट मिटाए अन्धेरा अन्ध। इक्क वखाए धुर फ़रमाणया, तन मन्दिर अन्दर निजा नंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दूई द्वैती ढाहे दूजी कंध, मात पित पिता पूत बंधी बंध। एका तागा एका सूत, एका तन्द रखाया। जुड़या जोड़ा शब्द घोड़ा, हरि साचे आप जुड़ाया। दहि दिशा उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेख वखाए चारे कूट, खण्ड ब्रह्मण्ड उत्भुज सेत्ज होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वक्खर सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाया। सो पुरख हरि करनेहारा, सतिगुरु रूप समांयदा। जन भगतां देवे नाम भण्डारा, धुर दरबारा आप सुहांयदा। खेले खेल अपर अपारा, दिस किसे ना आंयदा। नन्ना निरगुण रूप अपारा, निज घर बैठा आसण लांयदा। जोत सरूपी जोत उज्यारा, शब्दी शब्द चलांयदा। पारब्रह्म गुर अवतारा, आदि अन्त अख्वांयदा। ना कोई रूप नारी नारा, ना कोई तत्त उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां विचोला एका गुण, शब्दी नाउँ रखांयदा। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण रंग रंगाया। निरगुण चेला निरगुण गुर, निरगुण सोहे बंक द्वार, सच दुआरा इक्क खुल्हाया। निरगुण मेला विच संसार, विछड़ कदे ना जाया। माता पिता सुत प्यार, पूत सपूता धर्मी जाया। बूंद रक्त कर अधार, नाड़ी चमड़ी वेख वखाया। मन मति बुध दए सुधार, नाम बिबेकी आप रखाया। शब्द टेकी इक्क निरँकार, ना कोई दूसर सीस झुकाया। आपणी करनी आपे वेखी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। मोख मुक्त ना गुरमुख मंगे, सोहे बंक द्वारया। काया चोली आपणी रंगे, उतर ना जाए विच संसारया। दुरमति मैल धोवे दाग़े, घर पावे साचे सारया। जगत तृष्ना बुझे आगे, दर्शन पाए गुर करतारया। चरन कँवल कँवल चरन प्रीती साची लागे, दो जहानी हो उज्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, आप आपणी दया कमा रिहा। सतिगुर मेहरवान, साख्यात उठ धाया। गुरुमुख साचे कर पछान, पारजात लए बणाया। एके देवे धुर फ़रमान, वेद कतेब ना किसे जणाया। शब्दी शब्द ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म समाया। जगत नेत्र बन्द करान, दोए लोचन ना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे लिखा,

लिखणहार नाम धराया। घग्गा घर विचार, घर घर वेख्या। घर घर पावे सार, घर घर लिखे लेख्या। घर घर महल्ल उसार, घर घर बैठा देवे आपणी सीख्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आया करन सच्ची प्रीख्या। लक्ख चुरासी परखणहारा, पारब्रह्म बेअन्ता। गुरमुख साचे जगत जलन्दा रक्खणहारा, पार उतारे साचे सन्ता। एका मार्ग जोत निराली शब्द दुआरा दस्सणहारा, खेले खेल आदिन अन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, मेल मिलावा साचे कन्ता। मान सिँघ मन लाई चोट, हरि साचे वड वड्याईआ। दुरमति मैल कढ्ढुया खोट, निज आत्म करे जणाईआ। शब्द भण्डारा भरे अतोट, तोट रहे ना राईआ। कलिजुग जीव भरमे भुल्ले कोटी कोट, कोटी कोट फिरन हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन्म जन्म लेखे लाईआ। मानस जन्म साचा लहिणा, घर साचे इक्क वसांयदा। दर्शन पाए नेत्र नैणा, आवण जावण फंद कटांयदा। थिर घर साजन साचे बहिणा, जोती जोत समांयदा। अकाल मूर्त गुर एका कहिणा, निरगुण निरगुण रंग रंगांयदा। शब्दी भाणा हरि हरि सहिणा, हरि साचा लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन देवे वर, पंज तत्त विकारा मेट मिटांयदा। पंज तत्त विकारा काया गढ़, हरि साचे आप वसाया। अन्दरे अन्दर लए फड़, दिस किसे ना आया। आपणे अन्दर आपे जाए चढ़, एका पौड़ा रिहा रखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, गुर पीर ना कोई मनाया। ना कोई अग्नी हवन गया सड़, जल धार ना कोई चढ़ाया। नाड़ बहत्तर घाड़न घाड़, आप आपणा तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए जगाया। गुरमुख साजन आप जगाया, आपणी दया कमाईआ। हउमे हँगता रोग गंवाया, ममता नेड़ ना आईआ। जिउँ नानक अंगद अंग लगाया, अंगीकार आप अख्वाईआ। साची संगता मेल मिलाया, सगला संग निभाया। भगत दुआरे पुरख अबिनाशी जोत सरूपी मंगता मंगण आया, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। चरन प्रीती साची रीती आत्म अतीती एका मार्ग दिस ना आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। गुरमुख साजन मन चाउ घनेरा, हरि हरि दर्शन पाया। दूर दुराडा वसे नेड़ा, निज घर बैठा आसण लाया। आत्म सेजा एका वेखे संझ सवेरा, दिवस रैण ना कोई जणाया। लेखा चुक्के मेरा तेरा, तेरा मेरा रूप दरसाया। आपे बन्न्हणहारा बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाया। गुरसिख तेरा वसे काया खेड़ा, हरि साचे भाग लगाया। बिन गुर पूरे अवर ना कोई जाणे केहड़ा, कवण द्वार होए रुशनाया। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी करे हक्क निबेड़ा, लहिणा देणा मूल चुकाया। सिँघ मान मन लैणा जित, मनमति जगत तजाईआ।

हरि साजन करे साचा हित, आवे जावे फेरा पाईआ। ना कोई जणाई वार थित, अट्ठे पहर रंग रंगाईआ। आपे माता आपे पित, आपणी गोद लए उठाईआ। पंच विकारा लैणा जित, हरि सच सच्ची सरनाईआ। खेले खेल बूंद रत्त, मात कुक्ख सुफ़ल कराईआ। मेल मिलावा नित नवित्त, आदि जुगादी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखाईआ। जुग जुग आवे जोत जगा, हरि सच वड्डी वड्याईआ। भगत सुहेले नाल रला लोकमात करे कुड़माईआ। मानस मानस लए उपजा, मानस जोत जगाईआ। चरन कँवल प्रीती नाता लए बंधा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सृष्ट सबाई मूर्ख मूढ़ मुग्ध जीव जन्त दए समझा, हरि सन्तन दए वड्याईआ। जूठ झूठ कूड़ो कूड़ दए खपा, सच सुच्च करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आए दया कमाए भगत सुहेला संग निभाए, सगला संग निभाईआ। मात पिता घर जम्मया लाल, लोकमात वज्जी वधाईआ। गुर पूरे हाज़र हज़ूरे आपे ल्या भाल, जगत विचोला ना कोई बणाईआ। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, जोती नूर डगमगाईआ। साचा दीपक साचे थाल, गगन मण्डल आप टिकाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, दर दुआरे रिहा दुरकाईआ। एका मारे सच उछाल, सच दुआरा वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी निरगुण रूप चले नाल नाल, गुरमुख वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम बणया आप दलाल, भेखाधारी भेख वटाईआ। गुरमुख बणाया सच्चा शाह दर बणया आप कंगाल, प्रेम भिच्छया मंगे वाहो दाहीआ। गुरसिख तेरी जगत अवल्लड़ी चले चाल, मिल्या मेल बेपरवाहीआ। मात पित घालना लई घाल, अन्तिम लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुण बिनंती इक्क इकन्ती, एका वेख वखाईआ। गुरसिख साजन कर बिनंती, आपणा आप दरसाया। पूरन जोत श्री भगवन्ती, भगवन वेस वटाया। ना कोई जाणे साधन सन्ती, लक्ख चुरासी ना वेख वखाया। हरिजन नारी वर पाया साचा कन्ती, घर मन्दिर इक्क सुहाया। साचा वेस रंग बसन्ती, कंचन रूप वटाया। लाल भूषन रंग रगंती, साचा सगन मनाया। सूहा वेस इक्क वखंती, आपणा मंगल गाया। चिट्टी धारी धार बधंती, बंधणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा तेरे दर, तेरा लहिणा झोली पाया। जगत नाता जगत बंस, जगत मोह रखाया। गुरमुख साजन साचा हँस, सति सरूप समाया। सतिगुर पूरा बणाए आपणी अंस, सहँस सहँसी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ मान बाल निधान, बाली बुध लए तराया।

५०८ ०७

५०८ ०७

* २० सावण २०१५ बिक्रमी मक्खण सिँघ दे घर नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर *

हरि पुरख अकाल अगम्मड़ा, पारब्रह्म बेअन्त। ना हड्ड मास नाड़ी चमड़ा, ना रूप साध सन्त। ना मिले कोई दमड़ा, ना कोई धनाड धनवन्त। ना मरे ना कदे जम्मड़ा, हरि एका आदि अन्त। आपे जाणे आपणा कम्मड़ा, महिमा गणत अगणत। आपे अम्मी अंमड़ा, आप बणाए आपणी बणत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल भगवन्त। हरि जोत हरि हरि वस्सया, हरि हरि रूप अपार। हरि घर हरि वस्सया, महल्ल अटल ना कोई चार दिवार। हरि घर हरि प्रकास्सया, रवि ससि ना कोई उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल तमास्सया। खेले खेल हरि भगवान, आपणी कल वरताईआ। दीपक जोती जोत महान, इक्क अकेला रिहा जगाईआ। ना कोई दूसर होर निशान, ना कोई रचन रचाईआ। ना कोई किला कोट मकान, कंचन गढ़ ना कोई सुहाईआ। ना कोई राज शाह सुल्तान, दर दरबान ना कोई वखाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, मण्डल रास ना कोई नचाईआ। ना कोई मात पिता ना बाल निधान, साक सैण ना कोई जणाईआ। ना कोई कर्म ना कोई धर्म ना कोई ज्ञान, ना कोई सिख्या रिहा सिखाईआ। ना कोई अक्खर ना कोई निशान, ना कोई रसना रिहा अल़ाईआ। ना कोई माया गुण त्रै प्रधान, पंज तत्त ना कोई वड्याईआ। ना कोई बुध मति मन शैतान, रक्त बूंद ना कोए वखाईआ। ना कोई नैण नेत्र नक्क कान, मुख दन्द ना कोई वखाईआ। भुजां शस्त्र ना कोई जवान, सूरबीर ना कोई जणाईआ। चरन कँवल ना कोई ध्यान, ना कोई बैठा सीस झुकाईआ। ना कोई ब्रह्म करे ज्ञान, ना कोई विष्नूं रूप वटाईआ। ना कोई शंकर वेखे मार ध्यान, बाशक तशका गल लटकाईआ। ना कोई इन्द इन्द्रासन बैठ होए प्रधान, करोड़ तेतीसा अमृत जाम ना कोई प्याईआ। चार वेद ना कोई निशान, चार युग ना वंड वंडाईआ। पुराण अठारां ना कोई वखान, वेद व्यास ना कलम चलाईआ। नारद मुन ना कोए जवान, राग छतीस ना कोए अल़ाईआ। रूप रंग ना कोई वखान, आकार साकार ना कोई जणाईआ। राज जोग ना कोई अभिमान, माण मोह ना कोई वधाईआ। तिंआ सेज ना कोई सुआण, अंगीकार ना कोई कराईआ। पंचम नाता ना कोई जहान, पंचम मोह ना कोई वधाईआ। गुर दाता ना देवे कोई बलीदान, नाम मन्त्र ना कोई जणाईआ। दुर्गा गायत्री ना कोई रकान, अंस बंस ना कोई सरनाईआ। शेष सहँस मुख ना कोई खुल़ान, दोए सहिंस ना जिह्वा हिलाईआ। धरत धवल ना जल टिकान, जलबिम्ब ना रचन रचाईआ। खेले खेल श्री भगवान, खेलणहार आप अख्वाईआ। इक्क अकल्ला हो प्रधान, आप आपणा रंग रंगाईआ। ना कोई गीता ना ज्ञान, ना कोई कृष्ना बंसरी वजाईआ। ना कोई रामा राम प्रधान,

सीता सुरत ना कोई रखाईआ। ना कोई ईसा मूसा करे ज्ञान, मुहम्मद यार ना कोई जणाईआ। अल्ला राणी ना हो प्रधान, नेत्र कज्जल कोई ना पाईआ। अबलीस ना दिसे नाल शैतान, अली शाह ना नाअरा लाईआ। हक्क हकीकत ना कोई गुण निधान, शरअ शरीअत ना कोई वखाईआ। मुकामे हक्क ना कोई सके पछान, ऐनलहक्क ना कोई अल्लाईआ। ना कोई अञ्जील ना कोई कुरान, बंस बंसा ना कोए गाईआ। ना कोई नानक पंज तत्त फिरे विच जहान, नेत्र नैण दरस ना पाईआ। ना गोबिन्द तीर कमान, ना कोई भथ्था पिठ उठाईआ। ना कोई अर्जन करे ज्ञान, बोध अगाध ना शब्द जणाईआ। गुरु ग्रन्थ ना दिसे किसे मकान, ना करे कोई पढ़ाईआ। इक्क अकल्ला एका एकँकार आपणे घर आपे बैठा मेहरवान, दूसर कोई दिस ना आईआ। आपणी करे आप पछान, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा देवे आप ज्ञान, आपणी करे आप पढ़ाईआ। आप आपणे वस्सया मकान, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। लाल कंचन सूहा चिट्टा ना दिसे कोई निशान, पीला रंग ना कोई वखाईआ। नीली धार ना कोई जहान, काला सूसा दिस ना आईआ। निर्मल जोत जगे महान, घर साचे डगमगाईआ। शाहो भूप सच्चा सुल्तान, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। आपे होए मन्त्री प्रधान, आप आपणी दए सलाहीआ। आपे जोग राज राज जोग करे परवान, आप आपणी कार कमाईआ। आपणा आपे देवे हुक्म फ़रमान, आपे निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया आपणे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि निरँकार, आपणा आप उपाया। आपे बैठ सिरजणहार, साचा तख्त सुहाया। निरगुण जोत जगे अगम्म अपार, नूरो नूर दरसाया। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दर आप सुहाया। आपणा दर आप सुहा, आपणी दया कमाईआ। दर दरवाज़ा ना कोई ल्या लगा, ना कोई उप्पर छन्न टिकाईआ। बन्द किवाड़ ना ल्या रखा, ना कोई कुण्डा लाहीआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा ना लई कोई जणा, दहि दिशा ना वंड वंडाईआ। गगन पताल मण्डल मण्डप ना बैठा मुख छुपा, पड़दा उहला ना कोई रखाईआ। निरगुण दाता बेपरवाह, अलक्ख निरँजण नाउँ धराईआ। आपणे दर आपणी अलक्ख जगा, आप आपणी मंग मंगाईआ। आपणी भिच्छया आपणी झोली आपे पा, देवणहार दातार आप अख्वाईआ। सच भण्डार ल्या उपा, तोट रहे ना राईआ। हरि द्वार हरि आपणे ल्या टिका, दिस किसे ना आईआ। जोती पहरा ल्या लग्गा, जोत हुक्म जणाईआ। शब्द सुत संग रखा, अट्ठे पहर वेख वखाईआ। आपणा लेखा आप गणा, आपे पूर कराईआ। आपणी जननी आपणा आप लए जणा, आप आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साचा धाम सुहाईआ। साचा धाम पुरख अकाल, आपणा

आप सुहाया। आपे होया दीन दयाल, आपणा बंधप नाम धराया। आपे शाह आपे कंगाल, राज राजान आप हो जाया। आपे पुरख आप सुल्तान, सच सिक्दार नाम धराया। आपे जोती दीप महान, आपे शब्द ज्ञान दृढ़ाया। आपे बूझे आपे करे परवान, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर महल्ला दए वसाया। वस्सया घर सच महल्ला, हरि जोती जोत जगाया। अबिनाशी करता बैठा इक्क अकल्ला, पारब्रह्म अख्वाया। आदि पुरख ना जन्मे ना कदे मरता, जोत निरँजण वेस वटाया। आपे आपणा घाड़ण घड़ता, घड़नहार समरथ पुरख आप धराया। आपणे डण्डे आपणे पौड़े आपे चढ़दा, आपे वेख वखाया। आपणी इच्छया आपे लड़दा, आपणा शस्त्र आप उठाया। आपणा अक्खर आपे पढ़दा, ना कोई विद्या होर रखाया। आपणी जोती आपे सड़दा, ना कोई हवन हवन तपाया। घर सच सचखण्ड दुआरे आपे वड़दा, घर बहि बहि मंगल गाया। ना कोई नाता सीस धड़ दा, निरगुण जोत करे रुशनाया।

आपणे अग्गे आपे मेट मिटाया। आपे खेले खेल चोटी जड़ दा, आपे अधविचकार रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाया। घर दर साचा बुरज मुनारा, हरि हरि आप उपाया। एका दीपक कर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश रखाया। एका धुन शब्द जैकारा, एका घर अल्लाया। एका सुणे सुनणेहारा, सुनणहार आप अख्वाया। एका गावे गावणहारा, एका ताल वजाया। एका पावे पावणहारा, घर आपणे आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा दए सुहाया। साचा घर सद वड भागा, हरि हरि आप उपांयदा। एका नूर जगे चिराग़ा, ना कोई मेट मिटांयदा। एका राग एका नादा, एका धुन वजांयदा। एका शब्द एका वाजा, एका ताल रखांयदा। एका हरि ग़रीब निवाजा, एका धर्म धरांयदा। एका रक्खणहारा लाजा, लाजावन्त आप हो जांयदा। दर दरवाजा आपे खोल्ह, आपणा मुख वखाया। आपणे मन्दिर आपे बोल, आपणा दुःख मिटाया। आपणा वजाए आपे ढोल, आपणा मृदंग आप उठाया। आपणे वेखे आपे घोल, आपणा वेस आप वटाया। आपणी शक्ती आपे गया मौल, आदि शक्त नाम धराया। आपणा करे आपे कौल, घर आपणे मता पकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे साचा दर, दर साचा इक्क सुहाया। बंक दुआरा हरि नरायण, एका इक्क खुल्हाया। महिमा कोई ना सके कहिण, वेद कतेब किसे ना जाया। ना कोई लहिण ना कोई देण, हिसाब कताब ना कोई पुछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती शब्दी लए वर, धाम अकट्ठे एका बहिण, घर साचा दए सुहाया। साचा घर हरि हरि एक, एका एक वखाया। आप सुहाए द्वार बंक, बंक द्वारी नाम धराया। ना कोई भगत ना कोई मणक, ना कोई शब्दी सीता जाया। ना कोई रावण मारे डंक, काल

नगारा ना कोई रखाया। ना कोई राए धर्म पाए शनक, चित्रगुप्त ना कोई जणाया। ना कोई राउ रंक, रघुपति ना कोई मनाया। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त, बेअन्त घर बैठा आसण लाया। आपणी करे आपे मन्नत, आप आपणी पूज पुजाया। आपणा बणे आपे सन्त, आपणी सतिआ विच टिकाया। आपे शब्द आपे धर चलंता, आपे ताल वजाया। आपणा आप आपे खोज खोजन्ता, खोजत खोजत आपणा मूल आपे पाया। आपणा माण आपे रखंता, दर आपणा माण रखाया। आपणा घर आप सुहंता, आप आपणा आसण लाया। आपणी जोत आप जगंता, निरगुण नूर करे रुशनाया। आपणा नाउँ आप धराए भगवन्ता, आपणा आप नाउँ सलाहया। आप बणाए आपणी बणता, आपणी इच्छया विच समाया। आपणी भिच्छया पाई भिच्छया आपे बणे नारी आपे कन्ता, आप आपणा मेल मिलाया। आपे दाता आप भिखारी आप आपणी जणता, आपे पूत सपूता जाया। आपे नाम आपे मणीआ आपे मणता, आपे रिहा अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वसेरा साचे घर, घर साचा इक्क सुहाया। सो दर सोहे, जिस हरि सुहाया। सुहाया घर आपणा, दूसर कोई ना भाया। ना कोई पूजा पाठ जपानया, तीर्थ तट ना कोई रखाया। ना कोई पिता पूत बाणी बाणया, ना कोई बालक गोद जणाया। ना कोई त्रैगुण मारे तानया, पंज तत्त ना कोई सताया। ना कोई पाप पुन्न करानया, ना कोई इष्ट दृष्ट मनाया। आपणा प्रगट कीता आपे आनया, आपे पिता आपे माया। आपे देवे वर सराप्या, आपे रिहा भुगताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि घर वस्सया साचा हरि, हरि सज्जण आप अख्वाया। आपे साजन आपे मीता, आपे प्रेम प्यारा। आपे ठांडा आपे सीता, आपे सागर धारा। आपे राग रागनी होए गीता, आपे शब्द हुलारा। आपे देहुरा आपे मन्दिर आपे गुरुदुआरा होए मसीता, आपे आपणा नाम जपाया। आपे मरया आपे जीता, आपे मढ़ी गोर दबाया। आपे हस्त आपे कीटा, ऊँचा नीचां विच समाया। आपे होए कौड़ा रीठा, अमृत रस आप चखाया। आपे सुत्ता दे कर पीठा, आपे मुख भवाया। हरि का रूप सदा अनडीठा, हरि घर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा मंगल गाया। मंगल गाए अनादी धुन, आपणी तार हिलाईआ। आप आपणा राग रिहा सुण, सुंन समाद खुलाईआ। आपणे परखे आपे गुण, अवगुण आपणा वेख वखाईआ। आपणा आप आपे ल्या चुण, आप आपणा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया एका घर, एका घर वज्जे वधाईआ। साचे घर वज्जे वधाई, पुरख अनादी आप वजांयदा। एका मंगल रिहा गाई, एका राग अलांयदा। एका थान रिहा सुहाई, एका रंग रंगांयदा। एका दान झोली रिहा पाई, इक्क भण्डारा आप भरांयदा। देवणहार दातार गोसाँई, आप आपणा खेल खिलांयदा। निरगुण रूप बेपरवाही,

बेपरवाह नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वस्सया आपणे घर, आपणी सेवा आपे लांयदा। आपे हुक्म धुर फ़रमाणा, आपे करे जणाईआ। आपे बणे शाह सुल्ताना, आपे रईयत नाम धराईआ। आप आपणा लिख परवाना, आपणी हथ्थीं आप फड़ाईआ। आपणा लिख्या आप सुनाणा, आपे करे शनवाईआ। आपणा कीता आपे जाणा, जानणहार दया कमाईआ। आपणा वरते आपे भाणा, लोआं पुरीआं रचन रचाईआ। रवि ससि कर परवाना, मण्डल मण्डप दए टिकाईआ। एका जोती देवे नूर ध्याना, नूरो नूर चमकाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधाना, आपणी शक्त वखाईआ। आपणा रूप कर जुदाना, कँवली कँवल टिकाईआ। काया रंग श्री भगवाना, आपणी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ दित्ता दाना, ब्रह्म ल्या उपजाईआ। ब्रह्मा देवे इक्क ज्ञाना, शब्दी शब्द कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। आप आपणी रचन रचा, आपणा आप कटाया। निरगुण आपणा अंग कटा, आपणी वंड वंडाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर गया समा, दिस किसे ना आया। आवण जावण जाणे आपणा राह, बंधन कोई ना पाया। पंज तत्त आकारा वेख वखा, नौ दर दए सुहाया। निरगुण मति निरगुण बुध, निरगुण मन जोती जोत उपाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई दीन मज़्हब ना कोई दुःख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। निरगुण रूप कर प्रवेश, पंज तत्त संवारया। ब्रह्मा करे हरि आदेस, चरन कँवल निमस्कारया। आदि अन्त हरि रहे हमेश, खेले खेल न्यारया। मात पताल आकाश वेखे देस प्रदेस, लोआं पुरीआं फेरा पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आदि पुरख अलक्ख अभेव लोकमाती आपे ला रिहा। लोकमात हरि सेवा लाई, आपणा हुक्म जणाया। लक्ख चुरासी रचन रचाई, त्रैगुण बंधन पाया। राजस राज वखाया। तामस तृष्ना फिरे तिसाई, तृखा ना कोई बुझाया। तिन्हां ना मिल्या सच्चा गोसाँई, आपणा मुख रिहा छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल हरि हरि करतो, आपणे हथ्थ रखाया। हरि करता हरि करनेहारा, अकल कला कल धारीआ। आपणी जोत करे उज्यारा, करे खेल अपारीआ। लोकमात लै अवतारा, नाउँ धराए साध सन्त गुर पीर वड्डा सिक्दारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल सरगुण मेल, खेले खेल अपर अपारीआ। निरगुण मेला पंज तत्त प्यारा, जोती जोत जगांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आपणा नाउँ धरांयदा। आपे गुरू गुरदेव इष्ट बण विच संसारा, आपे सीस झुकांयदा। आपे करे कराए निमस्कारा, निउँ निउँ मस्तक चरन धूढ़ी आपे लांयदा। आपे मूर्ख मुग्ध मूढ़ होए गंवारा, आपे हँकार विकार नाउँ धरांयदा। आपे शब्द चण्ड होए तेज़ कटारा, आपे खण्डा वांयदा। आपे रण भूमी सुत्ता पैर पसारा, आपे पिठ वढांयदा।

आपे मारे आपणा नाअरा, चारों कुन्ट सुणांयदा। आप आपणा बोल जैकारा, लोआं पुरीआं आप जगांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, तिक्खी धार वखांयदा। खेले खेल विच संसारा, आदि जुगादी नाउँ रखांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारा, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। सरगुण मेला हरि करतार, लोकमात कराया। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, सज्जण सुहेला नाउँ धराया। इक्क अकेला खेले खेल अपार, खलक ख़ुदाई वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस वटावणहारा, हरि हरि साजण मीत। आप आपणा रूप दरसावणहारा, आदि जुगादी सदा अतीत। आपणा मार्ग आपे लावणहारा, जुग जुग चलाए रीत। सतिजुग त्रेता द्वापर खेल खिलावणहारा, खेले खेल सदा अनडीठ। हरि जोती जोत जगावणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणी पीठ। आपणी पीठ आपे लेट, आपे लए अंगड़ाईआ। माया ममता हउमे हँगता दब्बी हेठ, ना सके कोई उठाईआ। राज राजान शाह सुल्तान वड वड सेठ, हरि हरि नामा गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा निहकामा, निहकर्मी रिहा कमाईआ। कलिजुग झूठ जगत पसारा, चारों कुन्ट पसारया। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा, मनमती जीव फिरे हंकारया। ना कोई राम कृष्न नानक गोबिन्द मेला विच संसारा, नेत्र दर्शन कोई ना पा रिहा। घर घर पूजा अन्दर बाहरा, आत्म धुन ना कोई उपजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा अन्तिम वेख वखा रिहा। चारों कुन्ट झूठा गढ़, कलिजुग आप उपाया। माया राणी वेखे चढ़, तन शृंगार कराया। कज्जल धार हउमे बन्न्, लक्ख चुरासी रही भरमाया। कामन चेशटा बद्धा मन, चितवित ठगौरी पाया। सच ना दिसे चड़या चन्न, दहि दिशा अन्धेरा छाया। हरि का राग ना सुणाए कोई कन्न, रागी राग रहे शरमाया। ना कोई मेल मिलावा कराए जन, हरि धन ना पल्ले गंढु बंधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा देवे डन्न, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर तेरे फेरा पाया। कलिजुग भरया इक्क हँकारा, एका चोग चुगाईआ। चारों कुन्ट लाए नाअरा, आपणी अलक्ख जगाईआ। पंडत पांधे कर ख्वारा, तिलक ललाटी दए बुझाईआ। मुल्लां शेख़ ना कोई किनारा, पीर दस्तगीर वेख वखाईआ। ग्रन्थी पन्थी पावे ना सारा, आत्म ब्रह्म ना कोई पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे थाउँ थाँईंआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई ब्रह्म दृढ़ाया। काम क्रोध मारे ठाठ, गुर मन्दिर इक्क टिकाया। साध सन्त किसे रिहा ना हाठ, तन लंगोट ना कोई बन्न्हाया। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, तट किनारा

दिस ना आया। गंगा गोदावरी रो रो डिगी आपणे खाट, मुख नेत्र नीर वहाया। रामदास तेरा सर सरोवर कलिजुग जीआं ल्या चाट, मुख विष्टा इक्क रखाया। कोई ना उतरया तेरे साचे घाट, धीआं भैणां रिहा तकाया। मस्तक जोत ना जगे किसे ललाट, हैड ग्रन्थी नाम धराया। दुरमति मैल ना आपणी लई काट, दिवस रैण पढ़ पढ़ गुरु ग्रन्थ सुणाया। गुरु नानक तेरा रस ना ल्या चाट, रसना लोभ मोह हँकार होए हलकाया। बजर कपाटी पड़दा ना गया पाट, दूई द्वैती ना गलों लाहया। गुर गोबिन्द तेरा नाम तेरा घर ना ल्या घाट, बस्त्र शस्त्र तन सज़ाया। खेले खेल नटूआं नाट, हरि का स्वांग दिस ना आया। पंचम जेठ नेड़े कीती वाट, मनमुखां दूर कराया। चार वरन चार दरवाजे चारों कुन्ट वेखे मार झात, वेखणहारा आप रघुराया। अन्तिम लहिणा देणा चुकौण आया बाकी बाक, तेग बहादर गया लिखाया। गुरसिक्खां गुर गोबिन्द तेरा बणाया झूठा साक, तेरा झूठा रूप वटाया। अन्दरों होए ना पाकी पाक, निरगुण जोत ना करे रुशनाया। लेखे लग्गा ना तन ख़ाकी ख़ाक, हरि की पौड़ी डेरा लाया। सम्मत सतारां कोई रहिण ना देणा आकी आक, फड़ बाहों बाहर कढाया। मनमुख जीव तेरे उच्च दुआरे सर सरोवर कोई ना सके झाक, जिस मदिरा मास मुख रखाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणा लिखाए भविख्त वाक्, गुर गोबिन्द गया लिखाया। शब्द सरूपी नकेल पाए नाक, चारों कुन्ट दए फिराया। जोती नूर जोती घर हरि मन्दिर वड़ रहे बराज, जोती जोत करे रुशनाया। हरि का मन्दिर हरि आपे रक्खणहारा लाज, खण्डा तीर कमान कोए ना हथ्थ उठाया। जूठे झूठे जायण भाज, अग्गे ठहिर कोई ना पाया। कलिजुग तेरा रचया काज, दस दस्मेसा सेवा लाया। जन भगतां उठाए मारे आवाज़, जो सरसे गया रुड़ाया। अन्तिम देवण आया शब्द सरूपी साचा राज, थिर घर साचे दए बहाया। आपे रचया आपणा काज, सम्बल नगरी वेख वखाया। करे खेल देस माझ, भेव कोई ना पाया। नाम चलाए सच जहाज़, एका चप्पू लाया। चार युग चौथे घर तेरा चौथा मुकया राज, ना देवे कोई बचाया। अन्तिम पैणी लोकमात भाज, प्रभ साचे खण्डा हथ्थ उठाया। धुरदरगाही लाए इक्क अवाज़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड उत्भुज सेत्ज जेरज अंड दए सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार अक्खर चार युग चार गुर आपणा रूप दरसाया। कलिजुग तेरा वेखण घर, जोती जामा भेख वटानीआ। जोती जामा भेख धर, करे खेल हरि हैरानीआ। पंडत पांधे ल्ए फड़, जो करन जगत शैतानीआ। तीर्थ तट्टां वेखे खड़, पाए फास बेईमानीआ। चौदां हट्टां उखेड़े जड़, ना कोई दीसे जीव शैतानीआ। किला हँकारी तोड़ गढ़, मारे तीर शब्द कानीआ। लक्ख चुरासी अन्दर मन्दिर बैठा आपे रिहा लड़, जोधा सूरबीर बड़ा बलवानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मारे

दुष्ट जगत दुरानीआ। जगत दुष्ट पंच दुरानी, पंचम तीर चलांयदा। मनूआं रलया नाल ईरानी, साचा संग रखांयदा। अल्ला राणी देवे पाणी, जगत कटोरा इक्क वखांयदा। मदीना मक्का कर पछानी, साचा राह तकांयदा। मनका तसबी पाए गानी, मौला मुसल्ला हथ्थ उठांयदा। शरअ शरीअत अञ्जील कुरानी, नूर अलाही आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमाती फेरा पांयदा। लोकमात हरि हरि आ, आपणा वेस वटाया। जो जन पढ़ पढ़ बहि बहि रहे गा, दिस किसे ना आया। जो जन लड़ लड़ मंगण थाँ, भेव कोई ना पाया। जो जन विचोला रक्खे सूर गां, पार ना कोए कराया। जो जन पछाणे एका हरि हरि नाँ, हरि साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणे लए जगाया। आपणे आप जगावण आया, हरि साचा सच सलाही। मनमुख जीआं सवावण आया, ना सके कोई उठाई। कलिजुग तेरा अन्त करावण आया, लक्ख चुरासी पकड़ साध सन्त जीव जगत गुनाही। गुर साजण मेल मिलावण आया, अन्तर बुझे चाँई चाँई। कूड़ी क्रिया मेट मिटावण आया, सच सुच्च रिहा वरताई, चार वरनां एका राह वखावण आया, आप बणाए भैणां भाई। एका साचा नाम जपावण आया, अक्खर वक्खर रिहा लिखाई। सो पुरख निरँजण दया कमावण आया, लोकमात करके धाई। हँ हँगता मेट मिटावण आया, एका दूजा भउ चुकाई। बरन अठारां साची संगता आप बणावण आया, नौ खण्ड पृथ्मी बहाए एका थाँई। एका नाम वंड वंडावण आया, जन भगतां झोली रिहा भराई। भेख पखण्डा मिटावण आया, लोकमात कोई दीसे नाही। एका नाम चण्ड प्रचण्ड चमकावण आया, दुर्गा अष्टभुज वेख वखाई। कलिजुग सुंभ निसुंभ आप खपावण आया, आपणीआं भुजां आप उठाई। गुरमुख गुरसिख किसे नाल ना लड़ावण आया, दे मति रिहा समझाया। साची सिख्या इक्क सखावण आया, एका रंगण रंग रंगाईआ। धुर दा लिख्या लेखा आप वरतावन आया, ना कोई दूजा संग रलाईआ। सोहँ शब्द हरि साचा आपणा आप जपावण आया, सतिजुग साची करे कुड़माईआ। जूठ झूठ कलिजुग हँकारी मारन आया, राम रामा रूप वटाईआ। दर्योधन कंसा केसी पकड़ गिरावण आया, काहना कृष्ना बेपरवाहीआ। कलिजुग जीवां जिया दान दे समझावण आया, नानक निरगुण नूर अलाहीआ। गोबिन्द बस्त्र तन सजावण आया, चार वरनां बणे मलाहीआ। एका रूप सर्ब दरसावण आया, एका इष्ट अकाल मनाईआ। ज़ोरू ज़र ग़रीब निमाणयां आप बचावण आया, बल रक्खया आपणी बाहींआ। जगत जुल्म आप मिटावण आया, बलीदान आपणा आप कराईआ। दे मति गुरमति आप समझावण आया, एका धर्म एका जरम एका कर्म साचा वरन हरि सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चारों कुन्ट फेरीआं पाईआ।

चारों कुन्ट पाए फेरा, खेले खेल निराला। साध सन्त करन हेरा फेरा, हथ्थ फड़ी अठोतर माला। ना कोई गुरु ना कोई चेला, ना कोई होए किसे रखवाला। तीर्थ तट्टां गुर दर मन्दिर लग्गा मेला, धर्म ना जाणे कोई सच्ची धर्मसाला। हर घट हरि मन्दिर हरि अन्दर वस्सया इक्क अकेला, आपे चले आपणी चाला। ना कोई सज्जण ना कोई मीत ना कोई सहेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल आप निराला। खेल निराली जोत अकाली, चारों कुन्ट उठ धाईआ। पुरीआं लोआं वेखे खाली, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। लोकमात ना देवे कोई धुर दलाली, ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे मुख छुपाईआ। किसे नज़र ना आए जोत ज्वाली, दुर्गा अष्टमी काली रहे मनाईआ। किसे ना दिसे गऊआं रखवाला पाली, घर घर धन्ने बण बण बैठे ध्यान लगाईआ। सुरती गाँ ना मरी किसे ज्वाली, कोटन कोट नाम देव रहे अख्वाईआ। किसे ना मिल्या धुर दा वाली, आप आपणे बूटे बैठे लाईआ। कलिजुग होए सर्ब बेहाली, ना सच सुच्च देवे किसे गवाहीआ। कलिजुग गुरुआं सदी चौधवीं मस्तक लग्गी शाही, ना सके कोई धुआईआ। आपणी आत्म होई अन्धी, जीवां जन्तां गुरु ज्ञान दृढ़ाईआ। साध सन्त जगत पान्धी भुल्ले राही, दूसरिआं रहे राह बताईआ। आपणी सवाणी किसे ना बांधी, पंचां नाल रंग रलीआं रही मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वेखण आया चारों कुन्ट झूठी शाहीआ। चारों कुन्ट झूठी शाह, सलतनत रखाईआ। साध सन्त चलावण आपणा राह, जगत वंड वंडाईआ। बेपरवाह ना सके कोई मिला, बैठे धूणीआँ ताईआ। वेले अन्तिम सारे कर जाण ना, राए धर्म दए सजाईआ। बिन गुर पूरे कोई ना पकड़े बांह, फड़ बांहों ना पार कराईआ। गद्दीदार बणे हँस काँ, काग अवस्था ना अज्जे तजाईआ। सच दुआरे ना मिले किसे थाँ, अट्ठे पहर रहे राह तकाईआ। जोग अभ्यास आसण सिद्ध निओली कर्म रहे रखा, साची क्रिया ना कर्म कमाईआ। नौ निधां अठारां सिद्धां रहे मना, रूप अनूप ना कोई दरसाईआ। मनमुख जीव ना देवे कोई समझा, गुर मन्त्र ना कोई पढ़ाईआ। गुरदर मन्दिर हरि द्वार तट वसेरा वसेरा घर ल्या बणा, चोर यार वड्डी चतुराईआ। जगत कूड़यार हिस्से बैठे पा, मस्तक झूठे तिलक लगाईआ। साचे सर आत्म सरोवर अमृत सर ना सके कोई नहा, रामदास दास राम ना दर्शन पाईआ। काग हँस दुरमति मैल धो चिट्टा रंग ना सके वखा, नित नवित्त तारीआं लाईआ। आपणा आप ना सके बणा, घर बैठे सेज वछाईआ। सतिगुर पूरा पारब्रह्म निरगुण जोत गुर अर्जन घर वेखण आए हो के नेरा, अग्गों पहरे देवण लाईआ। सतिगुर पूरा करे अन्त निबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। वीह सौ पन्दरां प्रभ छेड़णहारा छेड़ा, सोए रिहा जगाईआ। सम्मत सतारां देवे गेड़ा, उलटी लट्ठ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

तेरा वेखे सर, कवण सर कवण हरि कवण दर कवण घर कवण नर रिहा नुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सेवा आपे रिहा कमाईआ।

* २१ सावण २०१५ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे घर पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर *

हरि जोत गुर नुरानया, शब्द भूप गुर देव। पारब्रह्म प्रभ खेल महानया, आदि अन्त अलक्ख अभेव। सतिगुर पुरख गुण निधानयां, जुगा जुगन्त सदा निहकेव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी सेव। जोत धार गुर प्यार, शब्दी तन्द बंधाया। रंग रूप अगम्म अपार, वेस अनेक कराया। खेल खिलंता सिरजणहार, नर नरेश अख्वाया। जुगा जुगन्ता विच संसार, जगत जुगत आप बंधाया। भेव खुलंता गुर करतार, सरगुण मेल मिलाया। ताल वजन्ता धुन सतार, नादी राग इक्क अलाया। बोल बुलंता इक्क जैकार, अनहद मंगल गाया। धाम सुहंता अपर अपार, नूरो नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर पूरा नाउँ धराया। जोती नूर सतिगुर धार, गुर गुर दए उपाईआ। हरि हरि खेल अपर अपार, शब्दी शब्द जणाईआ। शब्द गुर अन्त ना पारावार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। भेव अभेदा जाणे आपणी सार, आपणी कीमत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सतिगुर वेस वटाईआ। सतिगुर रूप हरि अबिनाशा, गुरु गुर नाम धराया। निरगुण खेले खेल तमाशा, सरगुण कारे लाया। जोत सरूपी पावे रासा, काया मण्डल दए सुहाया। आदि अन्त एका नूर प्रकाशा, परम पुरख अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा नाम धराया। सतिगुर साचा साचा सुख सागर, गुर गुर ताल भराया। हरि हरि कर्म करे उजागर, धर्मी धर्म धराया। सतिगुर द्वार गुर सुदागर, हरि हरि नामा वणज कराया। नामा नाम रत्ती रत्नागार, कर करते झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा शब्द उपाया। हरि का शब्द सतिगुर धार, गुर विच आप टिकाईआ। गुर का शब्द जगत प्यार, गुरमुखां लए जगाईआ। गुरमुख मेला मीत मुरार, आत्म बूझ बुझाईआ। मनमुख डुब्बे वहिंदी धार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। कलिजुग कपड़ कूड़ कुड़यार, तन बैठा बस्त्र पाईआ। झूठी शाही मस्तक छार, एका टिक्का लाईआ। नार दुहागण जगत विभचार, कूड़ी क्रिया रही कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। हरि डंक नाम अपारा, सतिगुर पुरख मनांयदा। सतिगुर पुरख रूप अपारा, गुर गुर वेख वखांयदा। गुर गुर सोहे बंक दुआरा, गुरमुखां पड़दा लांहयदा। गुरमुख साजण पावे सारा, जिस

५१७ ०७

५१८
०७

जन दया कमांयदा। मनमुख सुत्ते पैर पसारा, गूढ़ी नींदे सवांयदा। संग रलाया काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, माया ममता पड़दा पांयदा। जूठा झूठा वणज वापारा, पंज तत्त करांयदा। मन मति दए सहारा, आपणा राह वखांयदा। बुध बिबेकी कर किनारा, आपणा मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि आपणा शब्द चलांयदा। शब्द गुर धुन शब्द अनादि, हरि हरि आप जणाईआ। गुर का शब्द बोध अगाध, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। गुरमुख साचे रहे अराध, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। मनमुखां वंड वंडाई वाद विवाद, रसना रसक होई हलकाईआ। रसना ला ना सके स्वाद, अमृत जाम ना कोई प्याईआ। मिल्या मेल ना माधव माध, मन इच्छया पूर ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे सृष्ट सबाईआ। हरि जोत हरि शब्द, सतिगुर नाम अधारया। गुर शब्द सदा आदेस, गुरमुख करे निमस्कारया। गुरमुख साचा जाणे वेस, जन खोल्ह बन्द किवाड़या। मनमुख भुल्ले जगत नरेश, भरम भुलेखा जीव गंवारया। किसे हथ्थ ना आए धारी केस, फड़ सके ना मूंड मुंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा रिहा। जोती हरि सतिगुर दाता, पारब्रह्म अख्वांयदा। गुरु का रूप नाम ज्ञाता, ज्ञान ध्यान दृढ़ांयदा। गुरमुख विरले साजण मात पछाता, जिस जन भेव चुकांयदा। मनमुख सुत्ते अन्धेरी राता, काला घुँघट मुख रखांयदा। मात पित बद्धा नाता, भाई भैण कुटम्ब अख्वांयदा। उत्तम होई ना मात ज़ाता, वरनां बरनां वंड वंडांयदा। ना कोई निभाए सगला साथा, सगला संग ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। हरि अगम्म पुरख सुल्तान, आदि निरँजण नाम धराया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, गुर गुर लए तराया। गुर गुर देवणहारा दान, एका नाम झोली पाया। गुरमुख साचा कर परवान, आप आपणे रंग रंगाया। मनमुख भुल्ले जीव निधान, सच दाता दिस ना आया। कूड़ी क्रिया जगत ज्ञान, जागरत जोत ना कोई जगाया। सुण सुण थक्के रागी कान, अनहद राग ना कोई अल्हाया। दए सुनेहड़ा पवण मसाण, गुर का शब्द ना कोई अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेस वटाया। निरँकार शब्द गुर दीना, सति सरूप समाया। सतिगुर पुरख सदा प्रबीना, परम पुरख अख्वाया। गुर मूर्त अकाल चीना, निरगुण वेख वखाया। गुरमुख साजण ठाडां सीना, स्वच्छ सरूपी दर्शन पाया। मनमुख तड़फे जिउँ जल मीना, अमृत नीर ना कोई प्याया। मिले वड्याई ना लोक तीनां, सचखण्ड ना कोई सुहाया। लेखा चुक्के ना मरना जीणा, राए धर्म दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। हरि नूर प्रकाश, हरि हरि आप करांयदा। सतिगुर नाउँ पुरख अबिनाश, आपणा आप धरांयदा।

गुर गुर करता होया वास, सेवक सेव कमांयदा। गुरमुखां अन्दर रक्खे वास, दिस किसे ना आंयदा। मनमुख जीव सदा निरास, निज घर ताड़ी कोए ना लांयदा। काया जंगल जूह उजाड़ होई प्रभास, चन्दन निम्म ना कोई महिकांयदा। बिन हरि नामे खाली दिसन स्वास, रसना जिह्वा कोई ना गांयदा। अन्तिम पूरी कोई ना करे आस, ना कोई बंधन बंधांयदा। राए धर्म गल पाए फास, अठाई कुण्डा आप फिरांयदा। जिस जन खाया मदिरा मास, लक्ख चुरासी विच रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा राह चलांयदा। हरि का नूर जोत उजाला, जोती जोत समाया। सतिगुर पूरा दीन दयाला, दयानिध नाम धराया। गुर गुर रूप होए अकाला, अकाल पुरख मनाया। गुरमुखां होए सदा रखवाला, दिवस रैण सेव कमाया। मनमुखां मुख करे काला, मुख काली शाही लाया। किसे हथ्थ ना आए सच्ची धर्म धर्मसाला, ना कोई अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहया। उच्चे टिल्ले किसे हथ्थ ना आए जोत ज्वाला, हवण पवण ना कोई समाया। सर सरोवर अमृत आत्म कोई ना नुहाए साचा नाला, काग हँस ना कोई बणाया। फल ना दिसे किसे डाल्ला, कलिजुग जीव सिम्मल रहे लहराया। अन्तिम होए हाल बेहाला, जिस जन हरि हरि इक्क भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा संग रखाया। हरि अलक्ख अलक्खणा रूप, अगम्म अथाह अख्वाया। सतिगुर पूरा सच्चा भूप, सच सुल्तान उपाया। गुर गुर वेखे चारों कुन्ट, दहि दिशा वेख वखाया। गुरमुखां आपे जाए तुठ, आप आपणा मेल मिलाया। मनमुख जीव गए रुठ्ठ, बैठे मुख भवाया। खाली दिसण हथ्थ विच ठूठ, नाम वस्त कोई ना पाया। काया भण्डारा अज्ञान जूठ झूठ, माया ममता रही वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। हरि भगवाना धुर फ़रमाणा, एका एक जणाईआ। सतिगुर पूरा हो मेहरवाना, आपे रिहा सुणाईआ। गुर गुर गुर कर परवाना, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुरमुखां देवे सति निशाना, सति सतिवाद वेख वखाईआ। मनमुखां ना दिसे कोई टिकाणा, चारों कुन्ट रहे कुरलाईआ। आपणा आप ना किसे पछाणा, ब्रह्म ब्रह्मे रहे अख्वाईआ। जगत विकारा तणया ताणा, पंज तत्त रहे बंधाईआ। वेले अन्त ना किसे छुडाणा, गुरमति जिन्नां भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखण आया आपणी जगत लोकाईआ। हरि आदेस निमस्कार, दर करे परवानया। सतिगुर पूरा हो ख़बरदार, खेले खेल दो जहानया। गुर गुर मंगे मंग भिखार, शब्द भण्डार भरे खज़ानया। गुरमुखां देवे बण वरतार, आप आपणी दया कमानया। मनमुख जीव झक्ख रहे मार, ना टिके कोई किसे टिकानया। चारों कुन्ट रैण अध्यार, साचा चन्न ना कोई वखानया। जोती जोत

५१६
०७

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी करे पछानया। हरि रंग रतड़ा हरि रंग, हरि हरि रंग अमोल। सतिगुर पूरा सदा संग, सद तोलणहारा तोल। गुर गुर मंगे एका मंग, अनादी धुन एका बोल। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग, अन्दर मन्दिर जाए मौल। मनमुख जीव फिरन नंग, चारों कुन्ट रहे डोल। कलिजुग कूड़ा बण मलँघ, फेरा पाए उप्पर धौल। चरन छुहाए गोदावरी गंग, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ करे मखौल। कूड़ी क्रिया चढ़ी कंग, आप रुढ़ाए पंडत पांधे रौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पूरा करन आया कौल। हरि इन्द मृगिन्द, शाहो शबाशिआ। सतिगुर पूरा सागर सिन्ध, पूरन भरवास्सया। गुर गुर सदा बख्शिंद, होए सहाई पृथ्मी अकास्सया। गुरमुखां लाहे आपे चिन्द, दो जहान देवे दलास्सया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, हरि वेखे खेल तमास्सया। धर्म राए कढ्ढे जिंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरे मन्दिर करया वास्सया। हरि नरायण एका एकया, एका एकँकार। सतिगुर पूरा एका वेख्या, पारब्रह्म रूप अपार। गुर गुर करता लिखे लेख्या, लिखणहार सर्ब संसार। गुरमुख विरले नेत्र पेख्या, जिस खोल्हे बन्द किवाड़। मनमुख जीव रहे भरम भुलेख्या, वा लग्गी तत्ती हाढ़। मातलोक फिरया देस पर्देस्सया, नज़री आई जंगल जूह उजाड़ पहाड़। मिल्या मेल ना गुर दस दस्मेस्सया, जोत जगी ना नाड़ नाड़। पाया दरस ना इक्क विषेशिआ, शब्द डंक ना वज्जा काड़ काड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखण आया तेरी धाड़। हरि बेअन्त बेपरवाह, बेपरवाह अख्वाया। सतिगुर पूरा इक्क मलाह, जुग जुग बणदा आया। गुर गुर देवे साचा नाँ, नाम मन्त्र इक्क दृढ़ाया। गुरमुखां वखाए साचा थाँ, थिर घर नाउँ रखाया। मनमुख जीव दर दर उडदे काँ, विष्टा मुख चुगाया। वेले अन्त ना पकड़े कोई बांह, सहिसा दु:ख वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मानस मानुख वेख वखाया। हरि राजन वड राज, शाह राजानया। सतिगुर पूरा सीस रक्खे एका ताज, सिक्दार दो जहानया। गुर गुर रक्खणहारा लाज, सेवक सेव कमानया। गुरमुखां मार उठाए आपणी वाज, देवे धुर फ़रमानया। मनमुख जीव दर तों जाए भाज, मारे तीर तिक्खी कानीआ। कलिजुग कुड़यारे चढ़े जहाज़, सच मलाह ना कोई पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरीआं वेखण आया जगत निशानीआं। हरि साचा सिक्दार, साचे तख्त सुहांयदा। सतिगुर पूरा पहरेदार, आप अख्वांयदा। गुर गुर मारे मार, हुक्म चलांयदा। गुरमुख साचे लए उभार, कर्म कमांयदा। मनमुख डोबे अधविचकार, ना बन्ने कोई लांयदा। करे खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना पांयदा। मरे ना जन्मे विच संसार, आवण जावण चलत चलांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, जुग जुग मेल मिलांयदा। गुरमुख चेला गुरमुख मेला, गुर गुर आप कराया। गुर गुर साचा सज्जण सुहेला, गुर गुर लए तराया। गुर गुर वेखे इक्क अकेला, गुर गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे वेख वखाया। गुर मिलाया सतिगुर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। आवण जावण गेड़ कटाया, लक्ख चुरासी रहिण ना पाईआ। थिर घर साचे मंगल गाया, मिल्या मेल साचे माहीआ। साची नारी साचा कन्त हंढाया, नाता जुड़या बेपरवाहीआ। आपणी सेज पलँघ रंगीले लए सवाया, ऊपर फूलन बरखा लाईआ। ज़िमी अस्मानां चरना हेठ दबाया, गुर पूरे वड वड्याईआ। गुरसिख जोती जोत मिलाया, एका दूजा भउ चुकाईआ। आपणी गोती आप रखाया, अकाल मूर्त विच समाईआ। साची चोटी आप चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। हरि हरि कोटन कोटी वेख वखाया, गुरमुख तेरे तुल ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां लहिणा देणा नेत्र नैणां रिहा चुकाईआ। लहिणा देणा मूल चुकाउणा, सिर हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सतिगुर पूरे भेव खुलाउणा, पूरन ब्रह्म जणाईआ। गुर गुर मेला इक्क वखाउणा, एका धाम सुहाईआ। गुरसिख चोली रंग रंगाउणा, उतर कदे ना जाईआ। ब्रह्मा शिव देवत तेरा नां गाउणा, रसना जिह्वा हिलाईआ। विष्नूं तेरा दर्शन पाउणा, धन्न तेरी वड्याईआ। पवण मसाना तेरी चरन धूढ़ी सीस झुकाउणा, उँणंजा पवण सेव कमाईआ। हरि हरि हरि निरगुण रूप तेरा पहरेदार अख्वाउणा, हथ्थ शस्त्र ना कोई उठाईआ। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाउणा, गुरमुखां वंड वंडाईआ। कोटन ब्रह्मण्ड गुरमुख तेरी भेट चढ़ाउणा, आपणी दया कमाईआ। तेरा रंग आपणा रूप वखाउणा, जोती नूर नूर समाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म इक्क वखाउणा, पंज तत्त ना कोई जणाईआ। दरगहि साची साचा धाम सुहाउणा, अचल अटल महल्ल इक्क वखाईआ। हरि गोदी गूढ़ी नींद सवाउणा, चार युग ना सके कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवण आया, लोकमात सच्ची वधाईआ।

* २१ सावण २०१५ बिक्रमी सेवा सिँघ दे घर पिण्ड गोले वाली पंडोरी ज़िला अमृतसर *

हरि सतिगुर पुरख मनाया, आत्म भया अनन्द। गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया, मिटाई सगली चिन्द। गुरमुख साजन बूझ बुझाया, हरिजन बणाई बणत। मनमुखां दिस ना आया, जग माया पाई बेअन्त। हरि जोती नूर उपाया, शब्द मिलावा साचे कन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल आदि अन्त। गुर सतिगुर पूरा सेविआ, नाम निरँजण

देव। गुर पाया अलक्ख अभेविआ, घर लग्गा साचा नेंह। कलिजुग गाया रसना जिहविआ, दर पाया साचा थाउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, घर साचे घनेरा चाउ। हरि सतिगुर साचा पारब्रह्म, आदि पुरख अबिनाशा। आदि जुगादी जाणे कर्म, आवे जावे वेखे खेल तमाशा। लक्ख चुरासी तेरे कर्म, तेरे कर्म बलि बलि जासा। नौ खण्ड वेखे चारे वरन, कवण द्वार दासी दासा। भगतन मेला इक्क प्यार, हरि शब्द सच्चा भरवासा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, निर्मल जोत ना दीप प्रकाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे आपणी रासा। हरि सतिगुर साजन पाया, घर घर वज्जी वधाईआ। गुर पूरे मेल मिलाया, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख साचे मंगल गाया, धुन अनादी इक्क वजाईआ। मनमुख मूढ़े जन्म गंवाया, नेत्र नैण दरस ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल हर घट थाँईआ। पारब्रह्म हरि बेअन्त, गुर पूरे राह साचा दस्सया। मेल मिलावा साचे सन्त, गुरसिख दुआरे आवे नस्सया। भरम भुलेखा जीव जन्त, मनमुख वेखे रैण अन्धेरी मस्सया। मिले मेल ना साचे कन्त, माया ममता बहि बहि हस्सया। झूठ विकारा बणया सन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी महिमा आपे जाणे खेले खेल आदि अन्त। हरि हरि सतिगुर साजन मीता, परम पुरख अख्वाया। गुर गुर भाणा लागा मीठा, धुर फ़रमाणा रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। हरि दुआरा साचा दर, हरि साचा आप खुल्हांयदा। सतिगुर पूरा देवणहारा वर, पूरन इच्छया आप करांयदा। गुरू गुर मेला दए कर, विछड़ कदे ना जांयदा। गुरमुख चुकाए आवण जावण डर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। मनमुख जीव आपणा कीता लैण भर, राए धर्म वेख वखांयदा। चारों कुन्ट आवे डर, दहि दिशा सर्ब कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर तेरा खेल खिलांयदा। हरि सतिगुर हरि पारब्रह्म, हरि हरि पुरख अबिनाशा। गुर करता गुर सच कर्म, गुर खेले खेल तमाशा। गुरसिख साचा ना जन्मे ना मरदा, मिल्या मेल शाहो शबाशा। मनमुख जीव लहिणा देणा आपणा आपे भरदा, ना कोई घटाए तोला मासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल पृथ्मी आकाशा। हरि का खेल हरि अवल्ला, सतिगुर आप कराया। गुर गुर वेखे इक्क अकल्ला, दरस दरसी किसे ना आया। गुरमुख साचे दर घर साचा मल्ला, थिर घर नाउँ रखाया। मनमुख जीव मुख पाया पल्ला, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाया। पंच विकारा मारे हल्ला, दिवस रैण रिहा तड़फाया। भाग ना लग्गा काया कुला, अन्ध अन्धेरा छाया। अन्तिम वेले ना पए कोई मुल्ला, राए धर्म दए सज़ाया।

गुरमुख साजण सन्त सुहेला पूरे तोल एका तुला, तोलणहार आप रघुराया। लोकमात फलया फुला, भगत भगती वेख वखाया। मल्लया धाम निहचल इक्क अटला, ऊँचो ऊँच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन वेखे आपणे नेत्र, आपणी दया कमाईआ। भाग लगाए काया खेत्र, दिवस रैण वज्जी वधाईआ। रुत्त बसन्त रहे चेत्र, फल फुलवाड़ी इक्क महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, जोती शब्दी मेल मिलाईआ। जोती शब्द हरि प्यारा, निरगुण रूप समाया। सरगुण मेला विच संसारा, आपणा आप कराया। आपे वेखे परखे परखणहारा, नाम कसवटी इक्क लगाया। गुरमुख साचे रक्खे रक्खणहारा, जुग जुग रक्खदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन तेरा लहिणा देणा मानस देही मूल चुकाया। मानस देही मानुख जित, मन तन होए बैरागया। हरि चरन प्रीती साचा हित, सोया उठे जागया। सतिगुर पूरा साचा मित, दुरमति मैल धोवे दाग़िआ। दरस दिखाए नित नवित्त, सरन सरनाई जो जन लागया। आपे माता आपे पित, आपे नारी कन्त सुहागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, शब्द गुर गुर शब्द शब्द सरूपी फिरे भाज्जया। चरन कँवल सच दुआरा, गुरमुख विरला पांयदा। जो जन मंगे बण भिखारा, देवणहार दया कमांयदा। गुर का शब्द अपर अपारा, किसे हट्ट हथ्थ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, नाम निधाना झोली पांयदा। गुर का चरन जगत भरवासा, गुर पूरा आप दृढ़ांयदा। जो जन तजाए मदिरा मासा, हरि साचा दरस दिखांयदा। काया मन्दिर अन्दर वेखे निर्मल जोती कर प्रकाशा, नूरो नूर डगमगांयदा। शब्द भण्डारा भरे माटी देही कासा, अतोट अतुट रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। सतिगुर साजन मीता, एका एक अख्वाया। अट्ठे पहर परखे नीता, अंग संग हो जाया। ना मरे ना कदे जीता, एका रंग रंगाया। वेखे विगसे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां दया कमाया। नाम निधाना जिस जन पीता, गुरचरन चित लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, लक्ख चुरासी बंधन तोड़ तुड़ाया। चरन प्रीती नाता जोड़, हरि शब्दी शब्द सुणांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, लोआं पुरीआं पार करांयदा। धुर दरगाही आपे बौहड़, आप आपणा कर्म कमांयदा। जीव जन्त वेखे मिट्ठा कौड़, आत्म रस इक्क चखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, सोहँ मन्त्र इक्क सुणांयदा। भव सागर जन उतरे पार, मिले हरि मीत। काया गागर डूँघा ताल, गुर बैठा इक्क अतीत। गुरसिख

वरोले मार उछाल, करे पतित पुनीत। सोहँ शब्द सच दलाल, आप चलाए आपणी रीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए वर, एका घाट उतारे हस्त कीट। कलिजुग सागर पार किनारा, दिस किसे ना आया। मनमुख डुब्बे विच मँझधारा, ना कोई पार चढ़ाया। गुरमुख विरले मिल्या गुर करतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, फड़ बांहों पार कराया।

५२४
०७

* २१ सावण २०१५ बिक्रमी चरन सिँघ दे घर तरन तारन अमृतसर *

निरगुण फूल निरगुण रंग, निरगुण आप रंगाया। निरगुण सेज निरगुण पलँघ, निरगुण आसण लाया। निरगुण वेखे निरगुण संग, निरगुण संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि फूलन रूप समाया। हरि फूलन फुलवाड़ीआ, नाम शब्द अनमोल। पत्त वेखे सच्ची डाल्हीआ, घट घट आपे टोल। कवण शृंगारे साची लाड़ीआ, कवण दुआरे करे चोहल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पड़दा आपे खोल्ह। निरगुण डाल्ही निरगुण पाती, निरगुण फूल महिकाईआ। निरगुण मेला कमलापाती, साचा कन्त मनाईआ। निरगुण मेटे अन्धेरी राती, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निर्मल दीवा निर्मल बाती, निर्मल अमृत प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी पंखड़ी आप समाईआ। आपे फूल आपे फुलाए, निरगुण खेल खिलांयदा। वेखणहारा दिस ना आए, अचरज बणत बणांयदा। आपणा हिस्सा आप वंडाए, आपणी मंग मंगांयदा। दहि दिशा हरि फेरी पाए, चारों कुन्ट फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी महक महिकांयदा। आपणा नूर आप नुराना, आपे डगमगाईआ। आपे खेले खेल दो जहानां, खेलणहार आप अख्वाईआ। आपणा सगन आप मनाणा, आपणे तन्दन तन्द बंधाईआ। आपे बन्न्हे आपणा गाना, आप आपणी खुशी मनाईआ। आपे अन्तर वेखे मार ध्याना, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। निरगुण सरूप सदा नौजवाना, बिरध बाल ना कोई जणाईआ। निरगुण नारी कर परवाना, आपणी सेज वखाईआ। हरि हरि होए मेहरवाना, आपणी किरपा फूलन बरखा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फूल माला तन सुहाया। करया तन शृंगार, कमलापाती इक्क मनाया, ढहि ढहि पए द्वार। अन्दर झाकी इक्क वखाया, खोल्हे बन्द किवाड़। साचा साकी नाम धराया, जाम प्याए अमृत धार। शब्द राकी इक्क दौड़ाया, निरगुण रूप शाह अस्वार। मानस माटी वेख वखाया, वेखे विगसे कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणे रंग समाया। फूलन हार साची मालण, हरि हरि एका एक

उठाईआ। सेवा लग्गी जोत अकालण, आपणी इच्छया पूर कराईआ। गुरमुख साजन चली भालण, आप आपणा वेस वटाईआ। ना कोई रक्खया विच दलालण, ना कोई पुछ पुछाईआ। नूरी जोत इक्क जमालण, अट्ठे पहर डगमगाईआ। साची वेखे इक्क धर्म धर्मसालण, हरि बैठा बेपरवाहीआ। दिवस रैण एक चानण, अन्ध अन्धेर दिस ना आईआ। दर आपणे घर आपणे रंग आपणा माणण, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फूलन खारी इक्क वखाईआ। फूलन खारी साचा हरि हरि हरि रंग रंगाया। निरगुण रूप कर प्यारा, निरगुण तन छुहाया। निरगुण वेखे अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप हो आया। निरगुण खेल एकँकारा, अकल कला वरताया। निरगुण रूप पारब्रह्म करतारा, करता पुरख नाउँ धराया। निरगुण भरे इक्क भण्डारा, वड भण्डारी नाम धराया। आदिन अन्ता हो वरतारा, जुग जुग वरतौदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर माला वेख वखाया। घर माला फूलन फुलया, वेखे हरि बसन्त। साचे कंडे साचा तुल्या, महिमा गणत अगणत। लक्ख करोड़ी पाए ना कोई मुलया, भेव ना जाणे कोई जीव जन्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल भगवन्त। निरगुण हार हरि शब्द शृंगारा, हरि जोती भेट चढ़ाईआ। कली कली पावे सारा, पंखड़ी वेख वखाईआ। कवण कूटे भवर उठे हुलारा, आपणी गूंज गुंजाईआ। आपे वेखे वेखणहारा, निरगुण वड वड्याईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे लड़ गुंदाईआ । लड़ गुंदाया दया कमाया, एका धार चलांयदा। निरगुण सेवक सेवा लाया, निरगुण सेव कमांयदा। निरगुण नारी नाल प्रनाया, निरगुण कन्त हंढांयदा। निरगुण कजला धार बंधाया, निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण आपणा शब्द चलाया, निरगुण राग अलांयदा। निरगुण सेजा दए सुहाया, निरगुण फूल बरसांयदा। निरगुण निरगुण विच दए टिकाया, निरगुण निरगुण आप उपजांयदा। निरगुण दाई निरगुण दाया, निरगुण पूत सपूता नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सेहरा इक्क वखांयदा। साचा सेहरा हरि जगदीश, एका एक सुहाया। आपे करे आपणा आदेश, ना कोई दूसर संग रखाया। आपणा छत्र झुलाए आपणे सीस, आप आपणा छत्र झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा ल्ए उपजाया। साचा सेहरा बन्नॄ डोर, कली कली गुंदाईआ। आपे चढ़या आपणे घोड़, आपणा सगन मनाईआ। आप उठाया आपणा पौड़, आपणे घर दए टिकाईआ। आपणे घर आपे बौहड़, आपणा कुण्डा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे घर बेपरवाहीआ। आपणे घर आपे आ, आपणा राह तकाया । आपणी नारी आपे वेख वखा, आपणा वेख वखाया। जोती जोत लई प्रना, नाता इक्क बंधाया। वरन

गोती गया समा। एका एक अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सेहरा आपणे हथ्थ उठाया। साचा सेहरा जगत हार, भगती दर सुहांयदा। शब्द विचोला कर प्यार, दोहां मेल मिलांयदा। होया गोला दर दरबार, एका मंग मंगांयदा। काया चोला रंग करतार, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फूलनहार वेख वखांयदा। फुलन माला जोत ज्वाला, आदि शक्त भवानीआ। देवणहारा साचा दाना, वड दाता दानी मेहरवानीआ। जुग जुग करे आप पछाना, आपे वेखे वड निगहबानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपणा कर, खेले खेल आप महानीआ। फूलनहार कवण मुल्ल, कवण तोल तुलाया। कवण दुआरे जाए रुल, कवण करता कीमत पाया। कवण दुआरे जाए भुल्ल, बंधी बंधन तोड़ तुड़ाया। कवण दुआरे फल फुलवाड़ी जाए हुल, पत्त डाली रहिण ना पाया। भाग लगाए कवण दुआरे साची कुल, भगत भगवन्ती मेल मिलाया। कवण दुआरे अमृत आत्म जाए डुल्ल, तृष्ना भुक्ख गंवाया। कवण दुआरा जाए खुल्, हरि शब्दी शब्द वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग फूलन वेख वखाया। जग फूलन जग मौलया, जगत खिड़ी गुलज़ार। कवण करे उलटा कँवलया, अमृत भरे भण्डार। जगत वड्याई उप्पर झूठी धवल्या, थिर घर मिले ना कोई दरबार। आपणी सुरती आपणी काया गुर के शब्द कँवल मौलया, कवण चाढ़े रंग अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल कवण अपार। फल फलया जग वेख्या, जगत होया उजाला। गुरमति गुर पूरे लिख्या लेख्या, हरि बैठ सच्ची धर्मसाला। लोकमाती भरम भुलेख्या, भेव ना जाणे जोत अकाला। जिस जन नेत्र लोचन नैण आपणे पेख्या, जिस जन मिल्या दीन दयाला। धुरदरगाहों लिखी रेख्या, जन बख्शे फूलन माला। मस्तक लाए मेख्या, सुहाए दर शाह कंगाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले अवल्लड़ी चाला। फूलन फल कच्चा तन्द, जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। हरि हरिजन मेला हरि हरि ख़ुशी बन्द बन्द, तृष्ना अग्न बुझांयदा। गा गा थक्के बत्ती दन्द, बत्ती धार ना कोई बख्शांयदा। विसरया जन परमानंद, निजानंद ना कोई दरसांयदा। गगन मण्डल ना चढ़या चन्द, सीतल धार ना कोई समांयदा। अनहद रागी अनादी धुन ना सुणया साचा छन्द, ताल तलवाड़ा ना कोई वजांयदा। दूई द्वैती भरमा कंध, पड़दा कोई ना लांहयदा। जूठ झूठ रसना गन्द, सच सुच्च जाम ना कोई प्यांअदा। गुरमुख विरला मुकाए आपणा पन्ध, घर आपणे राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन ल्ए वर, आप आपणी दया कमांयदा। गुरमुख साजन घर निज वेखे, निज घर वज्जे वधाईआ। गुर किरपा कढ्ढे भरम भुलेखे, भरमे गढ़ तुड़ाईआ। सतिगुर शब्द नेत्र पेखे, स्वच्छ सरूपी उत्तों आईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केसे, ना

कोई मूंड मुंडाईआ। सो पुरख सदा अदेसे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गुरमुखां मेल मिलाए कर कर वेसे, हरि विच वड्डी वड्याईआ। कोटन कोट नचाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशे, दर बैठे अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी माला आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी माला आपणे हथ्थ उठा, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। गुरमुख जो जन दिसे रुट्ठा, फड़ बांहों आप मनांयदा। निरगुण रूप आपे तुट्ठा, आपे वेख वखांयदा। लुकया कोई ना रहे गुट्ठा, हर घट मन्दिर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फूलणहार विच संसार गुरमुखां कर प्यार, प्यार भेट इक्क चढ़ांयदा।

* २१ सावण २०१५ बिक्रमी सुरैण सिँघ दे घर जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर *

हरि हरि रूप आप समा, हरि हरि नाउँ धराया। सतिगुर पूरा जोत जगा, जोती नूर करे रुशनाया। गुर गुर इष्ट इक्क जणा, एका रूप दरसाया। गुरसिख साजण लए जगा, जागरत दिशा वखाया। मूर्ख मूढ़े दए भुल्ला, मनमुखता नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल रचाया। हरि सुल्तान तख्त ताजा, धुर दरगाह समाए। सतिगुर साजन ग़रीब निवाजा, आपणी दया कमाए। गुर गुर रक्खणहारा लाजा गुर करणहार कराए। गुरमुख साचे मारे वाजा, सोई सुरत उठाए। मनमुख दर तों जाए भाजा, नेत्र नैण छुपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाए। हरि राजन शाह भूप, सच सच्चा सिक्दारा। सतिगुर पूरा सति सरूप, जोती जोत नूर चमत्कारा। गुर गुर वेखे चारे कूट, दहि दिशा पावे सारा। गुरमुख नाता तोड़े जूठ झूठ, एका शब्द करे प्यारा। मनमुख जीव गए रुट्ठ, विसरया करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए बंक दुआरा। हरि साजन हरि भालया हरि हरि वेख वखाए। सतिगुर पूरा चले नाल नालया, विछड़ कदे ना जाए। गुर गुर शाह कंगालया, शाह कंगाला नाउँ धराए। गुरमुखां देवे नाम धन सच्चा खजानया, सच खज़ाना इक्क खुल्हाए। मनमुख भुल्ले जीव निधानया, माया भरमी भरम भुलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल खिलाए। हरि हरि मीत सच गोबिन्द, रूप अनूप दरसाया। सतिगुर पूरा मेटे सगली चिन्द, हरख सोग रहिण ना पाया। गुर गुर होए सदा बख्शिंद, आपणी बख़शिश हथ्थ रखाया। गुरमुखां मेला गुणी गहिंद, घर साचा साजन पाया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, कूड़े धन्दे मोह लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा बंधन पाया। हरि बंधन हरि बंध्या, डोरी

नाम करतार। सतिगुर पूरा वेखे साचा चन्दया, नूरो नूर होए उज्यार। गुर गुर एका शब्द गुर साचा मन्नया, आदि अन्त लए अवतार। गुरमुखां कढ्ढे तन जनिआ, देवे नाम अधार। मनमुख जाए दर तों भन्नया, मानस जन्म आई हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेल अपार। हरि साजन हरि खेलया, खेले खेल अगम्म अपार। सतिगुर पूरे मेलन मेलया, हड्ड मास नाड़ी ना चम्म। गुर गुर पाया सज्जण सुहेलया, पवण स्वामी लए ना दम। गुरमुख मेला इक्क इकेलया, आप संवारे आपणा कम्म। मनमुखां दिसे वक्त दुहेलया, नेत्र नीर वहाइन छम्म छम्म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल भिन्न भिन्न। खेले खेल हरि भगवाना, जुग जुग खेल खिलांयदा। जोती जोत जगे महाना, निरगुण रूप डगमगांयदा। आप आपणा कर पछाना, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा कर प्रधाना, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा बण निशाना, आप आपणा आप झुलांयदा। आप आपणा देवे धुर फ़रमाणा, आप आपणा राज कमांयदा। आपे आपणा वेखे तख्त शाह सुल्ताना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि भगवन्त, आपणा आप उपाया। भेव ना जाणे कोई सन्त, दिस किसे ना आया। कलिजुग माया पाए बेअन्त, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। माया भरमे जीव जन्त, हउमे हँगता रोग वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल सृष्ट सबाया। निरगुण खेल खेलणहारा, आदि पुरख अख्वाया। आदि निरँजण पावे सारा, भेव कोई ना राया। अगम्म अगम्मड़ा करे कारा, अगम्मड़ा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती नूर करे रुशनाया। जोती नूर हरि दातार, आपणा आप कराईआ। आपे बैठ सच्चे दरबार, साचा मता पकाईआ। कलिजुग वेखे अन्तिम वार, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। साध सन्त नार होई विभचार, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आवे कर कर धाईआ। लोकमात हरि उठ उठ धाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अलक्ख अलक्खणा आपणा लेखा वेख वखाया, दूसर जाणे कोई ना राईआ। सचखण्ड दुआरा फोल फोलाया, साध सन्त कोई नज़र ना आईआ। आपणा राह आप तकाया, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। ब्रह्म बांहों फड़ हिलाया, अट्ठे नेत्र दए खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला आया, हरि वेखे काली शाहीआ। शिव शंकर नेत्र इक्क खुल्हाया, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। बाशक तशका जिस लटकाया, देवे गलों लाहीआ। बार अंका खेल खिलाया, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी नाम धराया, आदि निरँजण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाईआ। विष्नूं रूप विष्न आकारा, आपणा आप कराया।

आपणा दए आप हुलारा, आपे रिहा जगाया। आपणी पावे आपे सारा, आपणा दर सुहाया। आपणी लाए आपे कारा, करन करावणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल थाउँ थाया। करोड़ तेतीसा लए उठा, सुरपति इन्द संग रलाया। एका अक्खर दए पढ़ा, भुल्ल रहे ना राया। एका डण्डा देवे ला, धरत धवल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेखण आया। आप आपणा वेखणहारा, लोकमात उठ धाया। कलिजुग वेखे कूड़ पसारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। नाउँ धराए नर निरँकारा, निरगुण रूप अख्वाया। सरगुण मेला अपर अपारा, भेव अभेदा भेव रखाया। खेले खेल विच संसारा, लेखा लेख ना कोई जणाया। चार वरन हाहाकारा, बरनी बरन रहे कुरलाया। गुरमुख विरला दिसे सन्त दुलारा, जिस हरि हरि रसना गाया। मनमुख जीव रुले जगत पंच विकारा, पंचम मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा वेखे पार किनारा, वेखणहार अकाल पुरख अकाला। जुग जुग वेखे जगत दुआरा, दीपक जोती इक्क ज्वाला। लोआं पुरीआं गगन पतालां दिसे न्यारा, खेले खेल हरि गोपाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे चले चाल निराला। चाल अवल्लड़ी हरि निरँकार, लोकमात चलाईआ। वेद पुराण ना पायण सार, अञ्जील कुरान ना कोई दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत होए ख्वार, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। खाणी बाणी वस्सया बाहर, वड दाता बेपरवाहीआ। आवण जाण खेल महान, आप आपणी रचन रचाईआ। शब्द निधानी कर त्यार, आपणी दया कमाईआ। धुर फ़रमानी ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। आपणी कर आप कुरबानी, हरि आपणा भेट चढ़ाईआ। गुरमुखां वखाए पद निरबानी, मनमुखां दिस ना आईआ। हर घट अन्दर जाण जाणी, बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेटे कूड़ी शाहीआ। कूड़ी शाही कूड़ पसारा, कूड़ो कूड़ कमांयदा। कूड़ राज कूड़ सिक्दारा, कूड़ा कर्म कमांयदा। कूड़ा घर कूड़ दरबारा, कूड़ा हुक्म सुणांयदा। कूड़ो कूड़ कर पसारा, कूड़ी क्रिया विच टिकांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सारा, उच्च अगम्मा वेख वखांयदा। लोकमात लै अवतारा, लक्ख चुरासी धार बंधांयदा। निहकलंक नरायण नर जोती नूर कर उज्यारा, शब्दी डंक वजांयदा। आपे जाणे आर पार किनारा, मँझधार आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर चेले वेख वखांयदा। गुर चेला जग जाणया, हरि साचे मूल पछान। चले चलाए आपणे भाणया, देवे नाम निधान। इक्क सुणाए साचा गाणया, धुन अनादी धुर फ़रमाण। दर दुआरे देवे माणया, निमाणयां देवे माण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

जन हरि करे परवान। हरिसंगत हरि मेलया, हरिजन रूप करतार। पूर कराए लेखा गुर गुर चेलया, चेला गुर इक्क द्वार। हरि होए सज्जण सुहेलया, दर ठांडे दरबार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेले विच संसार। हरिसंगत हरि वेख्या, नेत्र लोचन खोल्ह। हरिसंगत हरि पेख्या, आप आपणा वेख्या कौल। हरिसंगत लिखे लेख्या, आदि अन्त ना जाए डोल। हरिसंगत हरि लाए मेख्या, जड़ लगाए उप्पर धौल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत जोती जाए मौल। हरिसंगत हरि पाया, सागर गहर गम्भीर। हरिसंगत हरि गाया, ठांडा तन सरीर। हरिसंगत दर सुहाया, कढ्ढे हउमे पीड़। हरिसंगत दर मनाया, शाह सुल्ताना पीरन पीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साची धीर। हरिसंगत धीरज जत, एका एक अख्वाया। हरिसंगत देवणहारा मत, एका बूझ बुझाया। हरिसंगत वेखे एका तत्त, एका धार चलाया। हरिसंगत लेखे लाए रत्त, दस पंज मेल मिलाया। पंज दस बीजे वत, आप आपणा हल चलाया। वेखे फल फुलवाड़ी पत्त, डाल्ही डाल्ही वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत ल्ए तराया। हरिसंगत हरि तारना, तरन तारन समरथ। एका बख्शे चरन प्यारना, सदा रक्खे दे कर हत्थ। मूर्ख मुग्ध पार उतारना, जिस जन जणाए आपणी गाथ। घर साचा इक्क संवारना, लहिणा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हत्थ। कर किरपा पार उतराना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साची वथ्थ। साची वथ्थ साची वक्खर, नाम ज्ञान दृढ़ाईआ। बजर कपाटी पाड़े पथ्थर, एका चोट लगाईआ। पंच विकारा करे सथ्थर, पंचां मोह वधाईआ। गुरमुख नेत्र नीर ना विरोले अथ्थर, रोग सोग ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमति रिहा समझाईआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, हरिसंगत विच विआपया। एका मांगे दरस अमोघ, हरि रसना जिह्वा जापया। शब्द चुगे साची चोग, आप आपणा थापन थापया। नाता तोड़े तीनो लोक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत करे वड प्रतापया। हरिसंगत हरि तेरा मूल, कलिजुग अन्तिम चुकावणा। मातलोक ना जाणा भूल, लिख्या लेख ना किसे मिटावणा। सम्मत पन्दरां सावन सुरती करे सूलीउँ सूल, एका इक्की पावणा। एका इक्की पावा चूल, शब्द सिँघासण आप टिकावणा। उप्पर बैठ कन्त कन्तूहल, साची सखीआं मेल मिलावणा। साची सखीआं बरखन फूल, नेत्र नीर माणक मोती आप वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा मूल, चुकावणा। हरिसंगत तेरा सच प्यारा, हरि साचा आप निभांयदा। एका इक्की कर त्यारा, साची सिक्खी नाउँ धरांयदा। धारों तिक्खी विच संसारा, निक्की निक्की दिस ना पांयदा। लेख लिखी धुर दरबारा, ना कोई मेट मिटांयदा। नेत्र पेखी हरि गिरधारा, आप आपणा

रंग रंगांयदा। मरे ना जन्मे विच संसारा, जल धारा ना कोई रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवणहारा वर, एका बेड़े पार करांयदा। एका बेड़ा कर त्यार, हरिसंगत ल्ए चढ़ाईआ। जगत खेड़ा कर ख्वार, उच्चे मन्दिर देवे ढाहीआ। करे निबेड़ा सिरजणहार, दो जहानां बण मलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे सच सलाहीआ। सच सलाही देवणहारा, आपणा कर्म कमांयदा। वेखे विगसे करे विचारा, भुल्ल विच कदे ना आंयदा। भाणा वरते अपर अपारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। सतिजुग बेड़ा कर त्यारा, गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। आपे लाए पार किनारा, एका चप्पू वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरिसंगत वेखणहार दयाला, एका एक अख्वाया। आदि जुगादि सदा रखवाला, सच सच सेव कमाया। नाम पाए गल साची माला, अजप्पा जाप जपाया। धुन अनादी वज्जे ताला, ताल तलवाड़ा रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेखे साचा दर, दर साचा हरि सुहाया।

पारब्रह्म गुर अवतारा, हरि हरि आप अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। अलक्ख निरँजण जोत उज्यारा, जोती नूर दरसांयदा। जोत निरँजण कर पसारा, हर घट आप जगांयदा। एकँकारा बन्हे धारा, अकल कला अख्वांयदा। आदि पुरख हरि करतारा, करनी करता नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी खेल न्यारा, आपे खेल खिलांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड रहांयदा। उत्भुज सेत्ज जेरज अंड कर अधारा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, हर घट आप टिकांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, त्रैगुण मेल मिलांयदा। मन मति बुध बन्हे धारा, नौ दर सुहांयदा। अंग संग हरि करतारा, निज घर आसण लांयदा। मन्दिर अन्दर उच्च मुनारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमांयदा। काया मन्दिर सच द्वार, हरि साचा आप सुहांयदा। अन्दर बैठ सच्ची सरकार, साचा तख्त सुहांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, नूरो नूर उपांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। आपे वेखे खोल्ह बन्द किवाड़, आपे मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर दरसांयदा। पंज तत्त कर प्यारा, जोती जोत धराया। शब्द धुन अनाद अनादी धारा, आपे रिहा सुणाया। जीउ पिण्ड खोज निरँकारा, आपणा वेख वखाया। वसे घर सच दुआरा, दर दरवाजा दिस ना आया। भरे नाम सच्चा भण्डारा, शब्द भण्डारी आप हो आया। वरते वरतावे विच संसारा, अतोट अतुट रखाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर दए सुहाया। काया मन्दिर साचा गढ़, हरि जोत करे रुशनाईआ। आपे वेखे उप्पर चढ़, वड दाता बेपरवाहीआ। करे प्रकाश बहत्तर नड़, अट्ठे पहर डगमगाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। पंजां चोरां नाल रिहा लड़, आप आपणी करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन मेल मिलाईआ। हरिभगत हरि भगवानना, हरि हरि रूप समाया। सतिगुर करे पछानना, अकाल मूर्त वेख वखाया। आदि शक्त देवे चानना, अन्ध अन्धेर गंवाया। गुर का शब्द हरि हरि ज्ञानना, गुरमुख विरले पाया। जोती नूर तेज़ कोटन भानना, रवि ससि रहे शरमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि साचे लए उठाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा शाह सुल्तान, घट घट अन्दर रक्खे वासा। ना दीसे कोई निशान, साचे मण्डल पावे रासा। आपे गोपी आपे काहन, सीता सुरती ना होए उदासा। मेल मिले रमईआ राम, निज घर आत्म रक्खे वासा। लेखे लाए काया माटी चाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा नाम। साचा नाम धुरदरगाही रंग, हरि साचा आप रंगांयदा। जो जन आत्म मंगे मंग, पूरन इच्छया आप करांयदा। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। रसना गाए बत्ती दन्द, दुरमति मैल धवांयदा। आत्म उपजाए परमानंद, परम पुरख अख्वांयदा। जो जन तजाए मदिरा मास गन्द, हरि साचा दरस दिखांयदा। सोहँ शब्द सुहागी छन्द, जन भगतां झोली पांयदा। बजर कपाटी तोड़े जंद, आप आपणी दया कमांयदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, वरन बरन ना कोई रखांयदा। दाता दानी सदा बख्शंद, बख्शणहार नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमांयदा। हरि नाम हरि रंग राता, हरि हरि करे जणाईआ। हरि का शब्द पिता माता, गुर गुर रूप वटाईआ। गुरमुख होए उत्तम जाता, जिस जन बूझ बुझाईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, साँवल सुत्ता आप अख्वाईआ। दरस दिखाए इक्क अकांता, आप आपणा वेख वखाईआ। अन्दर बहि बहि मारे झाता, लुकया बेपरवाहीआ। आत्म सेज सुहाई साची खाटा, पावा चूल ना कोई रखाईआ। ना कोई ताणा ना कोई पेटा, आर पार ना कोई जणाईआ। शब्द रंगीले पट लपेटा, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। नाम मन्त्र शब्द ज्ञान, गुरमुख विरले पाया। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, चरन चरनोदक मुख छुहाया। अन्ध अन्धेर सर्ब मिट जाण, भरमी भरम गढ़ तुड़ाया। धर्म रखाए इक्क निशान, जात पात ना कोए वड्आया। चार वरनां इक्क भगवान, ऊँचां नीचां विच समाया। जीआं दाता देवे दान, दाता दानी नाम धराया। सो पुरख निरँजण राग सुणाए कान, अनहद ताल वजाया। काया मन्दिर

५३२
०७

बैठ मकान, हरि मन्दिर दए सुहाया। दीपक जोती जगे महान, दिवस रैण डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, नाम निधाना झोली पाया। नाम निधाना हरिजन अतुट, एका एक वखाईआ। जगत जिज्ञासू खोल्हे दृष्ट, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। भरमे भुल्ली सर्ब सृष्ट, हरि का भेव कोई ना पाईआ। आपे रामा आपे गुर वशिसट, आपे सिख्या रिहा सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां करे आपणी आप पढ़ाईआ। हरि का शब्द शाह सुल्तान, शाहो भूप अख्वाया। खेले खेल दो जहान, दिस किसे ना आया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, लोकमात उठ उठ धाया। निरगुण निरगुण कर पछाण, निरगुण खेल करे रघुराया। सरगुण मेला विच जहान, आप आपणा ल्ए कराया। काया मन्दिर अन्दर बैठ मकान, दस्म दुआरी डेरा लाया। धुन अनादी देवे धुर फ़रमाण, अनहद सेवा लाया। जोत निरँजण जगे महान, अन्ध अन्धेरा दए मिटाया। नेड़ ना आयण पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन एका नाम दृढ़ाया। नाम जपत जगत सुख सागर, गहर गम्भीर अख्वांयदा। भाग लगाए काया गागर, निर्मल नीर वहांयदा। जो जन बणे सच सौदागर, हरि माणक झोली पांयदा। निर्मल कर्म होए उजागर, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। मिले नाम रत्ती रत्नागर, काया चोली रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। काया कंचन नाम सुहागा, गुर पूरे आप लगाया। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, हउमे रोग जलाया। इक्क सुणाए साचा रागा, तार सितार आप हिलाया। अगम्म अगम्मी मारे वाजा, शब्दी शब्द उठाया। लोकमात रक्खे लाजा, जिस जन आपणे अंग लगाया। करे कराए साचा काजा, करते कारज आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नाम जगत अनमोल, पुरख अबिनाशी आपणे कंडे आपे तोल, मासा तोला रत्ती ना कोई रखाया। ना कोई मासा ना कोई तोला, ना रत्ती रत्त वखाईआ। आपे कंडे रिहा चढ़ाईआ। जन भगत दुआरे होया गोला, दर दरवेशा फेरी पाईआ। सोहँ शब्द सुणाए साचा ढोला, हँ हँगता दए मिटाईआ। साचे मन्दिर साचा बोला, सच जैकारा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, वर भिच्छया झोली पाईआ। भिच्छया पा हरि हरि नामा, नामा वणज कराया। करे कराए पूरन कामा, जिस जन रसना गाया। कोई ना लग्गे हरि घर दामा, ना कोई मूल चुकाया। घट घट अन्तरजामा, घट घट वेख वखाया। कलिजुग बसन्तर पंज शैताना, जीवां जन्तां रहे सताया। गुर पूरा मारे तीर निशाना, शब्द चिल्ला इक्क उठाया। गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना, साचा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका

देवे साचा वर, नाम मन्त्र धुर फ़रमाण, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। टेक एक रघुनाथ, त्रिलोकी नाथिआ। करे बुध बिबेक, सगला साथिआ। काया तन ना लागे सेक, लेखा लिखे मस्तक माथिआ। आपणे लोचन नैणां वेख, सोहँ गौणी साची गाथिआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, जोती नूर पुरख समराथिआ। मूंड मुंडाए ना कदे हमेश, शब्द सरूपी चढ़या साचे राथिआ। जुग जुग करे आपणा वेस, दो जहानां फिरे नाठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे पूजा पाठया। एका टेक सगला संग, हरि चरन वड्डी वड्याईआ। काया चोली चढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। अमृत आत्म नहाउणा साची गंग, साची सुरसती वेख वखाईआ। मन्दिर बैठ दर पलँघ, सीतल सेजा इक्क विछाईआ। आपणा दुआरा आपे जाणे लँघ, अग्गे मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन मेटे काली शाहीआ। इक्क टेक चरन द्वार, हरिजन आप रखाईआ। मंगे मंग बण भिखार, अग्गे झोली आपणी डाहीआ। देवे नाम शब्द भण्डार, कृपानिध दया कमाईआ। सोलां कराए तन श्रृंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिछला लिख्या अग्गे वेख वखाईआ। लेखा लिखणहार निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। भगत सुहेला सदा दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराया। नेत्र पाए एका अंजन, नाम नामा आप रखाया। साचा बणे हरि हरि सज्जण, सच सुनेहड़ा रिहा घलाया। शब्द नगारे भगत दुआरे वज्जण, साचा ताल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप नुहाए आपणे मजन, तीर्थ तट किनारा इक्क वखाया। चरन टेक साचा टिक्का, धुर दीबाण रखाईआ। रसना रस तजाउणा फिका, आत्म रस वखाईआ। ना कोई वड्डा वड्डा निक्का, नाम नामा तोल तुलाईआ। तोला बणया जी जी का, जीवण दाता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच्चा देवे नाम वर, सच्ची सिख्या इक्क सिखाईआ।

* पहली भाद्रों २०१५ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल *

दर भिखार दर दरवेश, आदि पुरख अख्वांयदा। शब्द लिखार नर नरेश, जोती जामा भेख वटांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए ना कोई रखांयदा। एकँकारा कर वेस, निरगुण धारा आप चलांयदा। आप आपणे विच कर प्रवेश, आप आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण सेव कमांयदा। दर दरवेश सर्ब गुणवन्ता, जोती नूर अकालया। पूरन पुरख श्री भगवन्ता, आदि शक्त जोत जवाल्या। महिमा जाणे आप अगणता, आप आपणा भेव छुपा ल्या। बणाए आपणी आप बणता, आपणे दर बणे सवाल्या। दर दरवेश होया मंगता, आपणी झोली

अग्गे डाह ल्या। जोत सरूपी भुक्खा नंगता, दोवे हथ्थीं फिरे खाल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण होए सवाल्या। आदि निरँजण हरि हरि सज्जण, हर घट रूप समांयदा। करन आया आपणा मजन, आपणी धूढ़ी आप रमांयदा। आपणा पड़दा आया कज्जण, एका पड़दा नाम पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि पुरख हरि अबिनाशा, एका एकँकारया। आपे खेले खेल तमाशा, खेलणहार आप अख्वा रिहा। आपे रोवे आपे जाणे आपणा हासा, आप आपणा रंग रंगा ल्या। आप आपणे अन्दर करया वासा, आप आपणा दर सुहा रिहा। आपे शाह सुल्तान शाहो शाबाशा, दर दरबान आप अख्वा रिहा। आपे मण्डल पावे रासा, आपे गोपी काहन नाम धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख रूप वटा रिहा। रूप अनादि सर्ब गुर देवा, आदि अन्त अख्वा ल्या। पारब्रह्म प्रभ करन आया सेवा, भेखाधारी भेख वटा ल्या। इक्क ल्याया आपणा साचा मेवा, शब्दी शब्द नाउँ रखा ल्या। ना कोई रसना ना कोई जिह्वा, बत्ती दन्द ना कोई गा ल्या। ना कोई मस्तक मणीआ लाए थेवा, जोत निरँजण ना कोए जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटा ल्या। आदि निरँजण करन योग, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा कर संजोग, आप आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणा करया भोग, आप आपणा सुत उपजांयदा। आप आपणा करया जोग, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि अन्त ना होए विजोग, गुणवन्ता गुण जणांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता गम ना कोई रखांयदा। आपणा कर आपे दरस अमोघ, आप आपणी हरस मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण एका चोग, आपणी मुख रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आदि आदि अख्वाया। आपे वसे हर घट थाँ, थान थनंतर आप सुहाया। आपे बणया पिता माँ, पूत सपूता नाउँ धराया। आपे देवे ठंडी छाँ, थिर घर साचे आसण लाया। आप आपणी पकड़ी बांह, आप आपणा ल्ए उठाया। दर दरवेश आपणे घर आपणी करे हां, सेवक सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण आपणा लेख आपे आप लिखाया। आदि निरँजण लेख लिखंता, आपे लेख लिखा रिहा। आप बणाए आपणी बणता, आपे पावे सारीआ। आपे नारी आपे कन्ता, आपे खेल प्यारीआ। आपणी चोली आपे रंगता, आपे बणे सच ललारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण खेले खेल अपारीआ। आदि निरँजण हर घट वासा, हरि हरि रूप समाया। आपे उपजे आप आपणा करे विनासा, आप आपणे विच टिकाया। ना कोई पवण ना स्वासा, पंज तत्त ना कोई रखाया। ना कोई पृथ्मी ना आकासा, मण्डल मण्डप ना कोई सुहाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण, एका एक अख्वाया। एका एक हरि नरायण निरगुण रूप समांयदा। आपणा वेखे आपे नैण, दोए लोचन ना बणत बणांयदा। आपणा बणे साक सज्जण सैण, बंधन बंध ना कोई पांयदा। आप आपणा बणे मात पित भाई भैण, पिता पूत आप अख्वांयदा। आप आपणा चुकाए लहिण देण, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता करन करावणहारा एका एकँकारा नाउँ धरांयदा। एका एकँकारा इक्क अकल्ला, अकल कला समाया। पारब्रह्म प्रभ बैठ अकल्ला, आप आपणा मता पकाया। निरगुण वसाए सच महल्ला, थिर घर नाउँ रखाया। थान सुहाए उच्च अटला, सिँघासण आसण लाया। ना कोई जल ना कोई थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना नज़री आया। दर दरवेश आपणा द्वार आपे मल्ला, द्वारपाल ना कोई रखाया। आपणी जोती आपे बला, दीपक आपणा आप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण हरि रघुराया। आदि निरँजण एक ओंकारा, एका एक अख्वाईआ। आप आपणा कर पसारा, आपे वेख वखाईआ । आप आपणी बन्ने धारा, निरगुण धार आप चलाईआ। जोत सरूपी कर आकारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द सरूपी इक्क जैकारा, थिर घर लाए बेपरवाहीआ। दहि दिशा पावे सारा, चारों कुन्ट सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण सोहे दर, दर दरवेशा नाउँ धराईआ। दर दरवेशा दीना नाथ, दर्द दु:ख भय भंजना। आप आपणा रक्खया साथ, आप आपणे नेत्र पाए आपणा अंजना। आप आपणी जाणे गाथ, आप कराए आपणा मजना। आप चलाए आपणा राथ, आप बणे साचा सज्जणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण जोत जगाए इक्क निरँजणा। आदि निरँजण जोत जगा, आपणी दया कमाईआ। जोत निरँजण वेस वटा, रूप अनूप समाईआ। सेवक सेवा आपणी ला, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ । आदि पुरख हरि दीन दयाला, दयानिध अख्वाया। खेले खेल जोत अकाला, कलधारी नाउँ धराया। थिर घर वखाए सच्ची धर्मसाला, चार दिवार ना कोई रखाया। जोती नूर इक्क ज्वाला, लाट लिलाट टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण दर सुहाया। दर सुहञ्जणा आदि पुरख, सेवा सेव कमाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्दया चिन्ता रहिण ना पाईआ। आपणी करणहारा आपे परख, ना कोई दूसर संग रखाईआ। आपणे उप्पर आपे करे आपणा तरस, आप आपणी दया कमाईआ। आपणी मेटणहारा आपे हरस, आपणी इच्छया पूर कराईआ। आदि निरँजण जोत सरूप हरि लोकमात आया उत्ते धरती खाक फर्श, निरगुण जोत करे रुशनाईआ । ना कोई अर्श ना कोई कुर्श , पारब्रह्म

वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ। आदि पुरख बेपरवाह, एका नाम धराया। आपे जाणे आपणा राह, आपे वेख वखाया। आपणा बणे आप मलाह, आपणा बेड़ा रिहा चलाया। आपणा चप्पू आपे देवे ला, आपणे हथ्थ फड़ाया। पार किनारा दए वखा, मँझधार ना कोई रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस कर, वेस अनेका आप अख्वाया। वेस अनेक अकल कलधारी, जोती नूर करे रुशनाईआ। जुग जुग लोकमात लै अवतारी, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। सेवक सेवा करे न्यारी, करणहार आप अख्वाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर निउँ निउँ करन निमस्कारी, दिवस रैण सीस झुकाईआ। रवि ससि आकाश प्रकाश चन्द सतारी, गगन मण्डल दए दुहाईआ। धरत मात नेत्र नीर वहाए वहिंदी धारी, धीरन धीर ना कोई धराईआ। लक्ख चुरासी होए ख्वारी, ना कोई कढ्ढे पीर पराईआ। जूठी झूठी लग्गी यारी, माया ममता मोह वधाईआ। हउमे हँगता वड सिक्दारी, चारों कुन्ट डौरु वाहीआ। ना कोई पुरख ना कोई नारी, नारी पुरख ना कोई सेज हंढाईआ। जीव जन्त साध सन्त होए विभचारी, क्रिया कर्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेखे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचे घर सर्ब गुण ज्ञाता, जोत सरूप समाया। आपणा बन्ने आपे नाता, आपे तोड़ तुड़ाया। आप आपणी देवणहारा दाता, देवणहार नाउँ धराया। जुग जुग वेखे अन्धेरी राता, लोकमात अन्धेरा छाया। पुरख अकाल उच्च अगम्मा अलक्ख अलक्खणा वेखे मार झाता, दिस किसे ना आया। ना मरया ना कदे जम्मा जन भगतां पुच्छे सदा वाता, आवण जावण खेल बणाया। खेले खेल बहु बहु भांता, वेद कतेब भेव ना राया। निरगुण रूप ना कोई ज़ात ना कोई पाता, वरन गोत ना कोई उपाया। आपे बैठ इक्क अकल्ला एकँकारा सदा अकांता, एका धार चलाया। ना कोई जुमला ना जमाता, शरअ शरायत ना कोई जणाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ना कोई हवन कराया। ना कोई तट तीर्थ सरोवर मारे ठाठा, जल धार ना कोई वहाया। निरगुण जोती जोत जगाए गुरसिख तेरे मस्तक माथा, जोत निरँजण सेवा लाया। अनहद शब्द सुणाए साची गाथा, अन्दर मन्दिर ताल वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण खेल खिलाया। आदि निरँजण खेल निराला, आपणा आप करांयदा। आपे जोती जोत ज्वाला, आदि शक्त नाउँ धरांयदा। आपे पुरख अकाल अकाला, अकल कला समांयदा। आपे आपणा दीन दयाला, दीना बंधप आप अख्वांयदा। आपे वस्सया धर्म सच्ची धर्मसाला, धर धरनी आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आपणी करनी आप करांयदा। करनी करता हरि करतारा, एका एक अख्वाया। जुग जुग लोकमात लै अवतारा, नाम नामा लए वटाया। भेखी

भेख करे न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपाया। लक्ख चुरासी वसे बाहरा, लक्ख चुरासी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, हरि नाम धराया। हरि सागर गुण गहर गम्भीर, करता कर्म कमांयदा। पंज तत्त वसेरा तन सरीर, त्रैगुण बस्त्र तन पहनांयदा। आपणे अन्दर मन्दिर आपे चढ़े घत्त वहीर, उच्चे टिल्ले फोल फोलांयदा। गुरमुख बजर आपे चीर, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। अमृत आत्म बख्शे सीर, एका जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस धर, जुग जुग सेव कमांयदा। जुग जुग सेवा करनहार, लोकमात उठ धाया। कलिजुग वेख कूड़ पसार, कूड़ कूड़ा दए मिटाया। चारों कुन्ट धूंआँधार, जगत अन्धेरा छाया। ना कोई साजन मीत मुरार, ना कोई सगला संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस कर, आप आपणा रूप वटाया। रूप वटाया कादर करता, करनी किरत कमाईआ। आपणे दर आपणे घर आपणा अक्खर एका पढ़दा, एका करे पढ़ाईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़दा, मढ़ी गोर ना कोई दबाईआ। उच्च महल्ले आपे चढ़दा, निहचल धाम सुहाईआ। तोड़े किला हँकार गढ़ दा, नाम खण्डा इक्क उठाईआ। लक्ख चुरासी आपे लड़दा, आपे फड़ फड़ाईआ। गुरमुख साजन तेरे मन्दिर अन्दर वड़दा, तेरी सेवा रिहा कमाईआ। लेखा चुकाए चोटी जड़ दा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। लहिणा देणा मुकाए बहत्तर नड़ दा, रक्त बूंद लेखे लाईआ। अग्गे कोई ना दिसे अड़दा, प्रभ मारे मार बेपरवाहीआ। कलिजुग विकार आपणी अग्नी आपे सड़दा, चारो कुन्ट पए दुहाईआ। खेले खेल सीस धड़ दा, मनमति करे चढ़ाईआ। क्रोध हँकारी आपे फड़दा, लोभ मोह नाल रलाईआ। कामी क्रिया आपणी करदा, त्रिया वेस वटाईआ। हरिजन अक्खर एका पढ़दा, दो जहान मिले वड्याईआ। सो पुरख निरँजण घाड़न घड़दा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख किरपा कर, सोहँ शब्द करे जणाईआ। सोहँ शब्द सति सरूप, सति सति समाया। ना कोई रंग ना कोई रूप, ना कोई वेस वटाया। पारब्रह्म जाणे महिमा अनूप, नानक रसना गाया। आत्म सुगंधी देवे साचा धूप, इच्छया हवन भराया। करे जणाई चारे कूट, कवण कवण लेख लिखाया। हरि का नूर हरि मन्दिर आपे गया फूट, एका दूजा वेख वखाया। तीजे नेत्र पई लूट, तीजा दर सुहाया। चौथे घर सुहाई साची कूट, एका पद रखाया। गुरमुख काया मन्दिर जगत अन्धेरे पहु गई फूट, हरि साचा चन्द चढ़ाया। लहिणा देणा मुकाए जूठ झूठ, एका नेत्र ज्ञान दृढ़ाया। सतिगुर पूरा सति पुरख आपे जाए तुठ, आप आपणा दए जणाया। लक्ख चुरासी जगत दलाल रक्खे एका मुट्ठ, आप आपणे हत्थ उठाया। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं उत्भुज सेत्ज जेरज अंड देवे तोल, कंडा आपणे हत्थ रखाया। शब्द गुर हरि

सेवा लाई सोहँ वजाए साचा ढोल, सोया कोई रहिण ना पाया। जन भगतां वसे सदा कोल, बेमुखां गूढ़ी नींद रिहा सवाया। जोत जगाई उप्पर धवल, त्रैलोक करे रुशनाया। गुरसिख तेरा उलटा करे नाभ कँवल, अमृत धारा मुख चुआया। दरस दिखाए साँवल सँवल, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण नर नरायण रूप वटाया। लक्ख चुरासी रिहा मौल, मौला मौला विच समाया। साध सन्त रहे अनभोल, माया ममता रही भुलाया। गुर गोबिन्द करया कौल, हरि पूरा दए कराया। नानक आपणा आप गया फोल, आपणी जोती जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका दर, दर दरवेसा रिहा सुहाया। दर दरवेश हरि निरँकारा लोकमात अख्वांयदा। जोती जामा भेख न्यारा, शब्दी डंक वजांयदा। अकाल मूर्त नूर अपारा, नूरो नूर दरसांयदा। धुंन अनादी अनहद धारा, ताल तलवाड़ा इक्क वजांयदा। शब्द अगम्मी सच जैकारा, एका नाअरा लांयदा। खेले खेल अपर अपारा, परवरदिगार नाउँ धरांयदा। हक्क हकीकत पावे सारा, लाशरीक इक्क अख्वांयदा। अज़मतो कसमतो पार किनारा, अतोल अतुल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख चुकाए डर, ना दूसर कोई डरांयदा। आपणा डर आप चुका, आपणी लए अंगड़ाईआ। आपणा पैंडा आप मुका, आपे बैठा साचा राहीआ। आपणा राह आपे रिहा तका, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर कर उज्यार, निरगुण कर्म कमाया। पारब्रह्म लै अवतार, लोकमात डेरा लाया। गुर शब्द पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाया। जन भगतां करे ख़बरदार, जुग जुग विछड़े लए मिलाया। सतिजुग त्रेता द्वापर मिल्या सांझा यार, विछड़ कदे ना जाया। आए दर बण भिखार, दर दरवेशा नाउँ धराया। गुरमुखां चरनी ढहि ढहि मंगे इक्क प्यार, पिया प्रीतम अग्गे झोली डाहीआ। सखा सुहेला बणया साची नार, गल फूलन माला पाया। नाता जोड़े विच संसार, गुरमुख साचे दर वेखण आया। जोत निरँजण होई मुटयांर, हरि शब्द लए प्रनाया। दोहां विचोला आप करतार, कलिजुग अन्तिम लए मिलाया। सोहँ ढोला सिरजणहार, घर साचे आप गाया। बदलया चोला खेल अपार, दिस किसे ना आया। लभ्भदे फिरदे कलां सोला, अकल कला कलधारी नाउँ धराया। सृष्ट सबाई खेलण आया होला, गुरमुख साचे लए जगाया। जगत भुलाया सिँघ पूरन बणाया भोला, पंज तत्त करी कुड़माया। प्रभ चुक्की फिरदा आपणी कंधी डोला, सेवक सेव रिहा कमाया। गुरसिक्खां आपणी हथ्थीं बन्ने तन्द मौली मौला, साचा सगन मनाया। मनमुखां सिर गुरसिख तेरी पाहनी मारन आया पौला, कबीर कबीरा वेख वखाया। धरनी धरत सिर होया धौला, अन्त बुढेपा आया। नौ खण्ड पृथ्मी लए झकोला, ना सके भार उठाया। सत्तां दीपां प्या रौला, राम रौला ना कोए हटाया। गुर गोबिन्द पूरा करन आया कोला,

कँवल कौल इकरार जो आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख लए वर, वर दाता नाम रखाया। वर मंगया पारब्रह्म, गुरमुख वज्जी वधाईआ। पूर्ब होया मानस कर्म, कर्मगति जणाईआ। लेखे लग्गा पंज तत्त जन्म, त्रैगुण संग रखाईआ। चरन दुआरे साचा धर्म, धर्मी धर्म कमाईआ। गुरमुख उत्तम तेरा वरन, जोत निरँजण वेख वखाईआ। जोत निरँजण आई चरन, आदि पुरख लए उठाईआ। आदि पुरख प्रभ करनी करन, जुग जग वड्डी वड्याईआ। हरिजन सीस निवाया साचे चरन, चरन कँवल इक्क सरनाईआ। आवण जावण चुक्के मरन डरन, मात गर्भ फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका नाअरा नर नरायण आप लगाईआ। नर नरायण एका नाअरा, एका तत्त सुहागीआ। लक्ख चुरासी लए वर, वड दाता वड वड भागीआ। आपणी करनी आपे कर, आपे बणे वैरागीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हँस बणाए कागीआ। हँस सरोवर माणक मोती, गुरमुख ताल सुहाया। निरगुण जोत जगाए जोती, जोती जोत जगाया। शब्द फड़ाए साची सोटी, नाम सहारा इक्क रखाया। आप चढ़ाए एका चोटी, एका दर सुहाया। गुरमुख लभ्भे विच्चों कोटन कोटी, कोट कोटी फोल फुलाया। कोटन कोट बन्ह़ी फिरन लंगोटी, तट तीर्थ फेरा पाया। कोटन कोट तन कटायण बोटी बोटी, कीमिआ कबाब बणाया। बिन गुर पूरे कोई ना कढ्ढे वासना खोटी, दुरमति मैल ना कोई धुआया। कोटन कोटी साध सन्त मंगदे फिरन रोटी, पेट कारन ताल वजाया। कोटन कोट मदि प्याले भंग पीती घोटी, आत्म रस ना कोई प्याया। कोटन कोटी छप्पर छन्न बणाई बैठे छोटी, मन छोटा ना किसे कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। आदि निरँजण वड बलकारा, सति पुरख अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतारा, निहकलंक नाउँ धरांयदा। वेद व्यासा बण लिखारा, भेव अभेद खुल्ह़ांयदा। नानक गुर कर प्यारा, एका राह तकांयदा। गुर गोबिन्द मंग सहारा, अकाल पुरख मनांयदा। अकाल पुरख पावे सारा, शब्दी शब्द जणांयदा। एका चोट लग्गे नगारा, एका डंक वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठांयदा। लक्ख चुरासी तोड़े गढ़ हँकारा, मन मति दर दुरकांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, निरगुण आप चमकांयदा। आदि शक्त संग सुत दुलारा, जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। अष्टभुज दए ललकारा, सिँघ शेर नाउँ रखांयदा। चौथे जुग पावे सारा, अष्टभुज शस्त्र इक्क वखांयदा। रावण तोड़ गढ़ हँकारा, लंका गढ़ तुड़ांयदा। शाह भबीखण कर प्यारा, आपणे अंग लगांयदा। दुर्योध्न तेरा पार किनारा, ना कोई धीर धरांयदा। अर्जन तेरा बण लिखारा, गीता ज्ञान जणांयदा। अठारां ध्याए एका धारा, एका

रूप दरसांयदा। एका जोत दस अवतारा, पंज तत्त प्रनांयदा। गुर रूप विच संसारा, ज्ञान गुर दृढ़ांयदा। शब्द शब्द शब्द कर प्यारा, शब्दी शब्द वजांयदा। सति सति सति कर वरतारा, सति सति सति वणज करांयदा। मित गति जाणे जीव जन्त गंवारा, साध सन्त मार्ग लांयदा। मात पित इक्क करतारा, एका इष्ट वखांयदा। अठसठ तट किनारा, धुर दरबारा आप जणांयदा। मस्जिद मठ मन्दिर गुरदुआरा, गुरचरन इक्क सुहांयदा। निरगुण जोत दीप कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। साचे मन्दिर बहि न्यारा, आप आपणा रंग रंगांयदा। डूँघी भवरी पार किनारा, जोती सेवा लांयदा। शब्द धुन अनादी आत्मक गाए वारो वारा, गावणहार आप अख्वांयदा। सुर ताल वज्जे तलवाड़ा, राग छत्ती भेव ना पांयदा। जोत जगे बहत्तर नाड़ा, बत्ती दन्द ना लेख लिखांयदा। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़ा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। पंच विकारा चबाए आपणी दाढ़ा, गुरमुख मेल मिलांयदा। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश पाड़े पाड़ा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। भगतन मीता सदा अतीता निरगुण रूप गुरमुखां अग्गे कढ्ढे हाढ़ा, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। अछल अछल्ल पारब्रह्म लक्ख चुरासी लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। नौ खण्ड पृथ्मी लोआं पुरीआं वेखे इक्क अखाड़ा, आप आपणी रचन रचांयदा। मनमुखां करे बन्द किवाड़ा, माया पड़दा एका पांयदा। फिराए दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, ख़ुदी ख़ुदाई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण सेवक सेवादार आप अख्वांयदा। सेवादार हरि भगवान, पारब्रह्म अतीत। गुरमुखां वखाए सच निशान, दिस ना आए किसे मन्दिर मसीत। प्रगट होया वाली दो जहान, लक्ख चुरासी जाए जीत। एका राग सुणाए कान, मेट मिटाए हस्त कीट। चरन धूढ़ बख़्शे सच्चा अशनान, आत्म रस चखाए मीठ। गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, चरन प्रीत अनडीठ। मनमुख जीव सर्ब पछतान, सुत्ते दे कर पीठ। राए धर्म मंगे धुर फ़रमाण, बनास्पत तपाए अंगीठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण जन भगतां वस्सया चीत। चेतन्न चित वसंदड़ा, सदा सदा कृपाल। गुरमुख साजन मेल मलंदड़ा, दीना बंधप दीन दयाल। चरन प्रीती इक्क रखंदड़ा, काया गढ़ सच्ची धर्मसाल। मनमुख जीव भागां मन्दड़ा, दो जहान रहे कंगाल। माया ममता आत्म अन्धड़ा, फल दिसे ना किसे डाल। दूई द्वैती होई कंधड़ा, आप आपणा ना सके भाल। मदिरा मासी गन्दड़ा, अन्तिम शौह दरयाए मारे छाल। जन भगतां हरि भगवान आप बख़्शंदड़ा, बख़्शणहार सदा मेहरवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण सोहे दर बंक द्वार इक्क परवान। बंक दुआरा हरि भगवन्ता, भरमी गढ़ तुड़ाया। मेल मिलाया साचे सन्ता, सतिगुर पुरख मिलाया। सुहावी सेज नारी कन्ता, कन्त कन्तूहला पाया। चोली रंगे रंग बसन्ता, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। आप बणाए

साची बणता, बेड़ा बन्नूणहार आप अख्वाया। गुरमुख लगाए आपणे अंगा, अंगीकार नाउँ धराया। हरिसंगत तेरी चरन धूढ़ी हरि साचा मंगदा, कलिजुग उलटा वहिण वहाया। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आकाश प्रकाश लोक परलोक गगन मण्डल आपे लँघदा, हरिजन मन्दिर डेरा लाया। जोती नूर हाज़र हज़ूर निहकलंक शब्द गुर कदे ना संगदा, भगत दुआरे आवे जावे फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रिखी केश गवर्धन धार, जोत सरूपी कर आकार, नानक गोबिन्द इक्क विहार, गुरमुख मेला विच संसार, आप आपणा रिहा कराया।

५४२

०७

*** १२ भाद्रों २०१५ बिक्रमी फूला सिँघ दे घर पिण्ड गंडी विंड ज़िला अमृतसर ***

आदि पुरख सर्ब गुणवन्ता, एका एकँकारया। पूरन जोत जगे भगवन्ता, पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारया। निरगुण नूर इक्क रखंता, आप आपणी धार चला रिहा। साचा धाम हरि सुहंता, थिर घर आसण ला रिहा। सच सिँघासण इक्क रखंता, पावा चूल ना कोई रखा रिहा। खेले खेल नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल सेज हंढा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धरा रिहा। आदि पुरख हरि भगवाना, एका एक अख्वाया। दीपक जोती जगे महाना, भेव कोई ना पाया। खेले खेल दो जहाना, दो जहाना नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरजंण आपणा वेस वटाया। आदि पुरख हरि भगवन्ता, हरि हरि रूप समाया। आपणा खेल आप खिलंता, खेलणहार आप हो जाया। आपणी जोती आप जगंता, जोती जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वस्सया एका घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर दर दरबारा, हरि एका एक सुहांयदा। इक्क इकल्ला कर पसारा, आप आपणी धार चलांयदा। निरगुण रूप खेल निरँकारा, निरवैर नाउँ धरांयदा। सुहाया बंक सच दुआरा, थिर घर वेख वखांयदा। ऊँच महल्ल अटल मुनारा, आप आपणा आसण लांयदा। गगन मण्डल ना पावे सारा, धरत धवल ना कोई रखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड ना करे विचारा, रवि ससि दिस ना आंयदा। अलक्ख अगम्म बेपरवाह बेऐब परवरदिगारा, आप आपणा धाम सुहांयदा। नूरो नूर होया उज्यारा, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि ना अन्ता, एका दर सुहांयदा। एका दर हरि दरवेश, आपणी अलक्ख जगाईआ। अलक्ख निरँजण कर कर वेस, आपणी अग्गे झोली डाहीआ। आपे दाता दानी बण नर नरेश, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस कर, आप आपणी कल वरताईआ। आपणी कल आपे

५४२

०७

धार, अकल कला अख्वाया। मंगी मंग हरि द्वार, हरि हरि भिच्छया पाया। ग़रीब निवाज़ा बण भिखार, दर ठांडा मंगण आया। संवारे काजा आपणी करे कार, काज करता प्रभ नाउँ धराया। शाहो भूप वड राजन राजा, शाह सुल्तान इक्क रघुराया। जोती नूर हाज़र हज़ूरा अगम्म अगम्मड़ी मारे वाजा, भेव कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस धर, जोती नूर लए उपाया। जोती जोत दे दे वर, हरि साची बणत बणाईआ। थिर घर वस्सया साचा घर, घर बैठा बेपरवाहीआ। आपणी किरपा आपे कर, घर आपणे ख़ुशी मनाईआ। आपणी झोली आपे भर, आपणा भण्डार रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण एका करता नाउँ धराईआ। करता पुरख करनेहारा, आपणी कार कमांयदा। आपे देवे वड भण्डारा, आपे दर सुहांयदा। आपणी जोती जोत कर प्यारा, जोती मेल मिलांयदा। आपे पुरख आपे नारा, नारी कन्त वेस वटांयदा। सच सिँघासण अपर अपारा, हरि आपणा आपे डांयदा। उप्पर बैठ निरगुण निरँकारा, साचा वेस वटांयदा। करया खेल अपर अपारा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नारी दित्ता वर, एका सुत उपजांयदा। एका सुत सुत दुलारा, हरि आपणा आप उपाया। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, साचा नाउँ धराया। शब्दी शब्द कर जैकारा, शब्द शब्दी डंक वजाया। देवे वर जोधा सूर बली बलकारा, बली बलवान नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस धर, साचा सुत लए उपजाया। शब्द सुत वड बलवाना, एका एक उपाया। पुरख अबिनाशी कर ध्याना, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका दूजा एका ज्ञाना, एका सिख्या रिहा सिखाया। एका तीर इक्क निशाना, एका चिल्ला रिहा चढ़ाया। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका घर वसाया। एका दीपक दीप जगे महाना, दिवस रैण डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, घर साचे मेल मिलाया। शब्द सुत घर साचे मेला, हरि साचे आप कराया। पारब्रह्म प्रभ बणया गुर गुर चेल, गुर चेला रूप दरसाया। शब्द चेला मिल्या मेल, विछड़ कदे ना जाया। एका राग एका ताल, एका सुर एका नाद वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वस्सया घर, सुत अनादी एका शब्द जाया। अनादी सुत शब्द गुर पूरा, हरि साचे आप उपाया। आसा मनसा कर कर पूरा, पूरी इच्छया दए कराया। आदि अन्त हाज़र हज़ूरा, हाज़र हज़ूरा नाउँ धराया। सर्ब गुणा आपे भरपूरा, पूरन पुरख अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेखे दर, पूत सपूता लेखे लाया। पूत सपूता साचा मीत, हरि हरि आप उपांयदा। इक्क सुणाए अनादी गीत, सुहागी छन्द अल्लांयदा। एका चेतन्न एका चीत, एका चित वसांयदा। एका नेत्र एका नैण,

एका नित नवित्त दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, आपणी इच्छया पाए भिच्छया आपणा भण्डार आप वरतांयदा। आपणी भिच्छया झोली पा, आपणी दया कमाईआ। शब्द सुत दित्ता समझा, एका बूझ बुझाईआ। लोआं पुरीआं बणत बणा, ब्रह्मण्ड खण्ड विच समाईआ। ब्रह्मा वेता सेवा ला, कँवल कँवला मुख भवाईआ। शिव शंकर लेखा आप गणा अन्ध अन्धेर समाईआ। विष्नूं वंसी वेस वटा, आपणी कल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत सुहाए दर, दर दरवाजा इक्क खुल्हाईआ। शब्द सुत दरवाजा खोल्ह, आपणा कर्म कमाया। ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा बोल, दिस किसे ना आया। त्रैगुण माया गया डोल, भेव अभेदा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, वर दाता नाम धराया । वर दाता आदि निरँजण, एका एक अख्वांयदा। शब्द ज्ञान पाया अंजन, नेत्र नित खुल्हांयदा। बणया दाता दर्द दुःख भय भंजन, सगला संग निभांयदा। आपणी चरन धूढ़ करे साचा मजन, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। दो जहानां साचा सज्जण, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त इक्क वजाए साची तूरत, धुन अनादी शब्द ब्रह्मादी आपे आप अख्वांयदा। शब्द ब्रह्मादि डंक वजा, हरि आपणी बणत बणाईआ। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहा, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। अलक्ख अलक्खणा आपणी अलक्ख जगा, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। थिर घर साचा दए वसा, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। जोत सरूपी रिहा डगमगा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरा सुहाए साचा थाँ, घर साचे बैठा आसण लाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई ना कोई जणाईआ। इक्क अकल्ला आपे जाणे आपणा नाँ, एकँकारा नाउँ धराईआ। शब्द शब्दी खेल खिला, खेलणहार आप हो जाईआ। लोआं पुरीआं डेरा ला, ब्रह्मण्ड खण्ड वेस वटाईआ। त्रैगुण तेल चढ़ा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। ब्रह्मा वेता झोली पा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश डेरा ला, मन मति बुध करे पढ़ाईआ। नौ दुआरे खोल्ह खुल्हा, लोकमात वड्डी वड्याईआ। आपणे मन्दिर आपे बैठा आसण ला, बजर कपाटी कुण्डा लाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, कोए भेव ना जाणे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, सुत दुलारा हरि निरँकारा त्रैलोक करे रुशनाईआ। त्रैलोक एका नाअरा, एका शब्द जणाईआ। लोआं पुरीआं दए हुलारा, एका खेल खिलाईआ। चौदां लोक हट्ट पसारा, एका वणज वखाईआ। गगन मण्डल पावे सारा, रवि ससि मेल मिलाईआ। धरत धवल दए सहारा, जल बिम्ब आप टिकाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। इक्क अकल्ला एकँकारा, अकल कला समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत

दित्ता वर, दर घर साचे इक्क सलाहीआ। शब्द सुत सच सलाह, हरि साचा आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी बण मलाह, हर घट डेरा लांयदा। निरगुण नाता जोड़ जुड़ा, पुरख बिधाता सगन मनांयदा। इक्क अकांता बैठा डेरा ला, अन्दर मन्दिर आप सुहांयदा। जोती नूर डगमगा, नूरो नूर अख्वांयदा। अनहद साचा ताल वजा, पंचम राग अल्लांयदा। पंचम सखीआं मंगल गा, साचा दर सुहांयदा। एका रंगन रंग रंगा, रंग रंगीला मोहण माधव काया चोली आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, आदि जुगादि जुग जुग वेस वटांयदा। जुग जुग वेस शब्द गुरदेव, हरि हरि वेस वटाया। पारब्रह्म अलक्ख अभेव, भेव कोई ना पाया। आप लगाए आपणी सेव, सेवक सेवादार अख्वाया। अकाल मूर्त सदा निहकेव, निहचल धाम सुहाया। गुण ना जाणे रसना जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म चलाया। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, हरि साचा आप चलांयदा। कर्मी कर्म करे परवान, कर्म कर्मा वेख वखांयदा। गुर गुर मूर्त इक्क ध्यान, गुर गुर इष्ट मनांयदा। शब्द शब्दी शब्द ज्ञान, शब्दी शब्द पढ़ांयदा। आदि जुगादि हरि भगवान, हरिभगतन मेल मिलांयदा। होए विचोला दो जहान, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे वस्सया घर, शब्द शब्दी नाउँ धरांयदा। शब्द सुत सतिगुर पूरा, अकाल पुरख उपाया। अजूनी रहित सर्ब गुण भरपूरा, ना मरे ना जाया। आपे वसे दूर नेड़ा, नेड़े दूर इक्क रखाया। हरिजन नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सच साचे मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण आदि पुरख अबिनाशी करता आपणा खेल रिहा खिलाया। खेल खिलावणहार दातारा, एक एक अख्वांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, आप आपणा वेस वटांयदा। नित नवित्त साची कारा, साचा धर्म धरांयदा। शब्दी शब्द लगाए सच जैकारा, साचा खण्डा हथ्थ उठांयदा। रूप रंग हरि वस्सया बाहरा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। कोटन कोट कोट लिख लिख थक्के विच संसारा, हरि का भेव कोई ना पांयदा। ब्रह्मा वेता रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण उठांयदा। शिव शंकर बाशक तशका गल पाया हारा, कंठ माला इक्क लटकांयदा। करोड़ तेतीसा करे प्यारा, सुरपति राजा इन्द कुरलांयदा। विष्नूं वंसी खेल न्यारा, जुग जुग खेल खिलांयदा। चतुर्भुज भेव अपारा, आपणा रूप वटांयदा। आदि शक्त दए ललकारा, आपणा तेज़ रखांयदा। सति सतिवाद थिर घर वेखे धुर दर दरबारा, बोध अगाध शब्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेस वटांयदा। आदि अन्त हरि अवतारा, एका एक अख्वाया। निरगुण रूप कर उज्यारा, सरगुण विच समाया। शब्द बोले सच जैकारा, एका नाअरा लाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड लए वखाया।

वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर, समुंद सागर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे आपणे मन्दिर, हरि मन्दिर नाउँ धराया। हरि मन्दिर शब्द सिँघासण, हरि साचा शब्द वैरागीआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, लोआं पुरीआं बण त्यागीआ। वेख वखाणे पृथ्मी आकाश, लक्ख चुरासी सुणे सुणाए साचा रागीआ। घट घट अन्दर रक्खे वास, आप आपणा साजन साजिया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात मार झात, प्रगट होए स्वांग स्वांगीआ। लोकमात तेरी धार, हरि साचे आप चलाईआ। सतिजुग साचा वेख विचार, सति पुरखा नाउँ धराईआ। एका एक एकँकार इक्क आकार, अट्ठां तत्तां बंध बंधाईआ। बंधन पावे अपर अपार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मानस मानुख कर प्यार, भगवन भगती दए जणाईआ। नाम शक्ती अपर अपार, हरिजन विच टिकाईआ। अमृत आत्म ठंडी धार, भर प्याला रिहा प्याईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। नानक जोती गुरमुख विचार, हँस चोग चुगाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोती, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। भरमी भरम भुलाए कोटन कोटी, कोटी कोट रिहा फिराईआ। बिन गुर पूरे ना कोए चढ़े उप्पर चोटी, घर मन्दिर ना कोई दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराईआ। सतिजुग साचे पार किनारा, वार अठारां बरन अठारां तराईआ। चार वरनां खेल न्यारा, ऊँच नीच वड्याईआ। राउ रंक राज राजन शाह सुल्तान भर भण्डारा, भरमी भरम भुलाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकारा, घड़न भन्नणहार समरथ पुरख अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। सतिजुग साचे पार किनारा, त्रेते वज्जी वधाईआ। राम रमईआ खेल न्यारा, हरि खेले बेपरवाहीआ। लंका गढ़ तोड़े हँकारा, दुष्ट हँकारी दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। त्रेते तेरा पूरा वेस, हरि पूरे आप कराया। ब्रह्मा विष्न शिव करे आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाया। रिख मुन खुल्ह्ड़े केस, केसी चवर कराया। पूज पुजाए गणपति गणेश, राम सीता नाम ध्याया। द्वापर होए दर दरवेश, आप आपणी अलक्ख जगाया। वेख वखाणे नर नरेश, हउमे गढ़ तुड़ाया। प्रगट होए रिखी केश, गवर्धन धारी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करया वेस, नाम बंसरी इक्क वजाया। नाम बंसरी साची फूक, हरि साचे आप सुणाईआ। लोआं पुरीआं सुणाए साची कूक, एका नाम वड्याईआ। मूर्ख मुग्ध सुत्ते घूक, गूढ़ी नींद ना कोए उठाईआ। द्वापर खेल गई चूक, हरिभगत निशाना लाईआ। एका शब्द रिहा फूक, गीता ज्ञान वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल वड दाता बेपरवाहीआ। द्वापर अन्तिम

गया रुट्ठ, वेला वक्त चुकाया। राज राजना शाह सुल्ताना खाली ठूठ, दर मंगन भिख ना पाया। हँकारी विकारी टंगे पुठ, राए धर्म दए सज़ाया। आपणा दुआरा आपे लुट्ट, काहना कृष्ना मुख छुपाया। गुरमुख विरले अमृत आत्म पीता घुट्ट, जिस जन दया कमाया। आवण जावण गया छुट्ट, लक्ख चुरासी विच ना आया। कलिजुग कूड़ कुड़यारी पौह गई फुट्ट, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। नाल ल्याया जूठ झूठ, मोह विकारा बंध बंधाया। पुरख अबिनाशी गया तुठ, हउमे हँगता गढ़ सुहाया। सच वस्त ना दित्ती इक्क मुट्ठ, खाली हथ्थ भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत भण्डार इक्क भराया। जगत भण्डारा माया मोह, हरि साचा आप भरांयदा। कलिजुग कूड़ा घर घर मन्दिर अन्दर रिहा छोह, आप आपणा तन कटांयदा। साध सन्त जीव जन्त बचया रहे ना को, दहि दिशा फेरी पांयदा। चारों कुन्ट दहि दिशा गुरमुख आत्म पंच विकारा रही रो, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता तुध बिन कोई ना सुणे सो, सो पुरख निरँजण आप अल्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल कलिजुग आप वरतांयदा। कलिजुग कूड़ा हो जवान, चार कुन्ट उठ धाया। जूठ झूठ फड़ निशान, एका झण्डा रिहा झुलाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज शैतान, सगला संग निभाया। माया ममता खोल्ह दुकान, जीवां जन्तां रिहा वखाया। तोला बैठा बेईमान, पूरा तोल ना कोई तुलाया। काला चोला विच जहान, एका बस्त्र तन छुहाया। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, हरि साचा ख़ुशी मनाया। कलिजुग मिल्या धुर फ़रमाण, लोकमात पूरा कर्म रिहा कराया। पंडत पांधे मिले ना मेल श्री भगवान, जूठा झूठा मस्तक तिलक लगाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, वेद पुराणी दिस ना आया। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, आप आपणा रूप वटाया। शब्द सुत कर बलवान, एका हुक्म सुणाया। लोकमात नौजवान, आप आपणा दरसाया। पंज तत्त कर परवान, ईसा मूसा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत हदीसा एका रिहा पढ़ाया। इक्क हदीसा एका राग, एका रिहा अल्ाईआ। एका सीसा एका ताज, एका रिहा हंढाईआ। एका करता एका काज, एका रिहा कराईआ। एका मारनहारा वाज, आप आपणी वाज सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सदा वाहिद ख़ुदा आपणी आप अल्ाईआ। आपणी सदा आप लगा, आपणा दर खुल्ाया। आपणा गदा आप अख्वा, घर आपणा वेख वखाया। आपणा मता आप पका, आपणा हुक्म चलाया। लोकमात वेखे आपणा राह, आप आपणा मार्ग लाया। शब्द सरूपी बण मलाह, इक्क मुहम्मद ल्या उठाया। एका अल्फ ल्या पढ़ा, एका दर खुल्ाया। एका नाअरा ल्या सुणा, एका आइत पढ़ाया। कायनात सारी वेख वखा, कलमी कलमा इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, शब्द शब्दी वेस वटाया। शब्द अमाम कलमा एक, एक नूर अलाहीआ। एका नेत्र रिहा वेख, एका दीन सलाहीआ। एका औल्या एका पीर शेख़, दस्तगीर इक्क अख्वाईआ। एका मुल्लां इक्क मुसायक एका धारे भेख, परवरदिगार इक्क अख्वाईआ। एका लावणहारा मेख, एका दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी दए वड्याईआ। शब्दी शब्द कर पसारा, शब्दी वेस वटाया। महिबान बीदो बी खैर या अल्ला एकँकारा, एका करनी रिहा कराया। आदि शक्त सेवादारा, आदि निरँजण संग रखाया। जोत निरँजण मेला कन्त भतारा, नारी पुरखा रूप वटाया। खेले खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। हक्क हकीकत वेख किनारा, लाशरीक आप ख़ुदाया। ऐनलहक्क कर प्यारा, मुकामे हक्क मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी दित्ता वर, शब्द शब्दी रिहा चलाया। शब्द डोर हथ्थ करतार, आपणी आप रखाईआ। वेख वखाणे चार यार, संग मुहम्मद दए सलाहीआ। अल्ला राणी इक्क प्यार, सिर बस्त्र एका पाईआ। वेख वखाणे हरि परवरदिगार, चौदां तबकां फोल फोलाईआ। चौदां हट्टां वणज वापार, एका रिहा कराईआ। तोला तोल तोले अपर अपार, नाम वटा एका पाईआ। बोली बोला बोले शब्द जैकार, एका नाअरा लाईआ। कलिजुग वेखे तेरा कूड़ पसार, कूड़ी क्रिया किरत कमाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, मुहम्मद मुहम्मदी संग रखाईआ। अन्तिम अहिमदी पार किनार, चौदां चौदां दए दुहाईआ। चौदां चौदां रोवण ज़ारो ज़ार, सति सति पुरख वड्डी वड्याईआ। एका शरअ शरायत कर त्यार, शाह शहाना दए जणाईआ। तीस बतीसा सेवादार, रसना जिह्वा रिहा हिलाईआ। कुरान हदीसा अपर अपार, बीस बीसा आप गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, संग मुहम्मद वेख वखाईआ। संग मुहम्मद चार यार, चार यारी वड वड्याईआ। चारों कुन्ट हाहाकार, जीव जन्त रहे कुरलाईआ। धरत मात करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। साधां सन्तां हाहाकार, अट्ठे पहर धुन उपजाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द गुर वड वड ज्ञाता, हरि आपणा आप उपाया। उत्तम रक्खणी एका जाता, वरन बरन विच ना आया। आदि शक्त बणी साची माता, अकाल पुरख पिता नाउँ धराया। जुग जुग लोकमात मिटे अन्धेरी राता, एका साचा चन्द चढ़ाया। धुरदरगाही देवे साची दाता, साची भिच्छया झोली पाया। गऊ ग़रीबां पुच्छे वाता, आवे जावे खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरत मात दित्ता वर, एका धीरज धीर बंधाया। धरत मात सुण पुकार, हरि साचे नैण उग्घाड़या। नेत्र नीर ना वहाउणा ज़ारो ज़ार, प्रभ पावणहारा सारया। लोकमात करे विचार, आप आपणा

खेल खिला रिहा। आपणा अंग करे भंग, चाढ़े रंग सृष्ट सबाई अपर अपारया। अनाथ अनाथां कटे भुक्ख नंग, देवे नाम शब्द सहारया। इक्क वजाए सच्चा मृदंग, ताल आपणा आप वखा रिहा। शब्द गुर लोआं पुरीआं आपे लँघ, लोकमात धरत सुहा रिहा। नानक आत्म सेज वछाई सच पलँघ, हरि साचा आसण ला रिहा। निरगुण रूप लाया आपणे अंग, निरगुण निरगुण विच समा रिहा। सरगुण होया सूरा सरबंग, हरि साचे दर्शन पा रिहा। दोए जोड़ एका दात लई मंग, खिमा ग़रीबी तेरे चरन द्वारया। मन मति लक्ख चुरासी लग्गा जंग, नाम शस्त्र शब्द खण्डा दे अपर अपारया। पारब्रह्म दर दरवेश ना गया संग, रसना बोले निरँकार निरँकार निरंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, साचा दर वखा ल्या। दर दरवेश दर परवाना, नानक निरगुण रूप वटाया। ना कोई दीसे पंज तत्त निशाना, घर साचे आसण लाया। मिल्या मेल श्री भगवाना, थिर घर साचा वेख वखाया। एका खेल खेल महाना, निरगुण नूर होए रुशनाया। एका शब्द इक्क तराना, एका गाणा रिहा गाया। छत्ती राग ना कोई परवाना, राग रागनी ना कोई सुणाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवाना, आप आपणा नाद रिहा वजाया। नानक निरगुण सुणे काना, एका कान रखाया। पाया पद हरि निरबाना, हरि हरि विच समाया। मिल्या नाम धुर फ़रमाना, नाम सति वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रक्खणहारा पत्त दो जहाना होए सहाया। नानक दर घर साचा पा, दोए जोड़ करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, देवे शब्द हुलारा। दोहां विचोला एका थाँ, ना कोई दूसर पार किनारा। एका अक्खर एका नाँ, चौथे जुग आप विचारा। चौथे जुग दिसे राह, चार अक्खर कर प्यारा। चार अक्खर रक्खे वक्खर, सति नाम अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार अक्खर खोल्हे किवाड़ा। ऊड़ा ओंकार, हरि रघुराया। ऐड़ा अक्ख उग्घाड़, हरि हरि दर्शन पाया। ईड़ी इष्ट अपार, नानक गुर इक्क मनाया। सस्सा सतिगुर पुरख अपार, सति सरूप समाया। तिन्न तत्त ना करे आकार, ना कोई आकार रखाया। नन्ना निरगुण वेस अपर अपार, निझधारा रिहा चलाया। मम्मा मेला विच संसार, नानक नामे नाम मिलाया। गुर चेला सोहे इक्क दुआरा, चेला गुर वेख वखाया। नाम सति कर प्रधान, चार कुन्टां चक्र चलाया। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ाया। एका आत्म एका हरि हरि एका ध्यान, पारब्रह्म इक्क अख्वाया। भरमे भुल्ले जीव निधान, माया बंधन बंध बंधाया। एका कलमा इक्क ईमान, एका पूजा पाठ वेद पुराण, एका इष्ट देव गुर मनाया। एका जोत श्री भगवान, एका शब्द करे जणाया। जुग जुग खेले खेल महान, आप आपणी खेल खिलाया। कलिजुग कूड़ा कर परवान, कूड़ कूड़े निहों लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका

वस्त हरिजन झोली पाईआ। नानक गुर वस्त अनमोल, चार वरनां रिहा वंडाईआ। तेरां तेरां तोले तोल, कलिजुग कंडा हथ्थ उठाईआ। मनमुख जीव रहे अनभोल, भेव कोई ना पाईआ। कलिजुग अन्तिम वज्जण ढोल, चारों कुन्ट होए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक एह समझाईआ। नानक गुर कर विचार, सतिगुर पुरख मनाया। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, सदा सदा चित लाया। सदा सुहेला दो जहान, नित नवित्त वेख वखाया। वेख वखाए गोपी काहन, रास मण्डल डेरा लाया। कलिजुग तेरी कूड़ दुकान, सृष्ट सबाई फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर दित्ता वर, तीर निशाना इक्क सिखाया। तीर निशाना मारे मार, शब्द गुर वड्याईआ। नानक गुर आर पार, अंगद अंग तुड़ाईआ। अंगद होया ख़बरदार, अमरदासे लए जगाईआ। अमरदास मीत मुरार, अर्जन सेव कमाईआ। अर्जन होया ठांडा दरबार, हरिगोबिन्द लए अंगड़ाईआ। हरिगोबिन्द जोधा सूरबीर बली धीर बलवान, हरि हरि दए बूझ बुझाईआ। हरिराए हरि पाए सार, हरिकृष्ना दए वड्याईआ। हरिकृष्ना बाल निधान, बाल बाला रूप वटाईआ। तेग बहादर हो मेहरवान, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। गुर गोबिन्द कर निशान, पंचम पंचां करे पढ़ाईआ। पंचम मेला दो जहान, दर दुआरे रिहा कराईआ। मन्दिर वेखे सच मकान, काया खोज खोजाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, एका नाम पढ़ाईआ। ऊँचां नीचां इक्क ज्ञान, वरन गोत इक्क रखाईआ। अमृत साचा पीण खाण, लोकमात वंड वंडाईआ। शब्द खण्डा तीर कृपान, तन गात्रे रिहा लटकाईआ। केस सीस हरि जगदीस, मेल मेला सहिज सबाईआ। धीरज यति सति सन्तोखी कच्छ गुरमुख तन पहनाईआ। नाम कड़ा तोड़ हँकारी गढ़ा, एका तन्दन हथ्थ बंधाईआ। सच कंघा आपणे नाम रंगा, दुरमति मैल दए गंवाईआ। रणजीत नगारा वज्जे मृदंगा, अनहद ढोल सेवा लाईआ। अन्दर मन्दिर मिले मेल सूरा सरबंगा, ना मरे ना जाईआ। गुरमुख तेरी आत्म सेजा शब्द रंगीले बैठ पलँघा, दिवस रैण नैण उठाईआ। सर सरोवर वखाए गोदावरी कन्ढा, नादेर देर लाईआ। गुरमुखां वंडाई आपणी वंडा, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखणहारा कोटन कोट कोट ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रिहा जणाईआ। गुर गोबिन्द जगत जणा, आपणा रूप वटाया। पुरख अबिनाशी दए सलाह, साचा मार्ग लाया। शब्दी शब्द बण मलाह, हरिजन लए उठाया। जो खोजे सो लेवे पा, आपणा बोल अलाया। मनमुख भुल्ले कोई जाणे ना, राह खैहिड़ा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह दसाया। गुर गोबिन्द हरि करतार, एका रंग रंगाया। दोहां मेला इक्क द्वार, एका घर सुहाया। एका मंगे बण भिखार, अग्गे आपणी झोली डाहया। एका बणे

दाता दानी वड दातार, आपणी भिच्छया देवे झोली पाया। सुणाए शब्द अपर अपार, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। जुग जुग खेल हरि निरँकार, लोकमाती वेस वटाया। आवण जावण जगत प्यार, गुरमुखां लए तराया। गुर गोबिन्द बोले ललकार, तेरा भाणा मोहे भाया। सथ्थर विछाया तेरा यार, सूला सेज हंढाया। खंजर प्याला कर त्यार, गुरमुखां लहू चुआया। तेरे दर दित्ता वार, तेरा तेरी झोली पाया। तेरा मेरा रिहा आधार, मेरा कर्ज़ा तेरे सिर रखाया। अग्गों बोले नर निरँकार, गुर गोबिन्द आप मनाया। गुर गोबिन्द तेरा बोला होए जैकार, जै जैकारा नाउँ धराया। निरगुण जोत जगे अगम्म अपार, दिस किसे ना आया। गुरसिख उठाए जिउँ आलणिउं डिगे बोट, आप आपणी गोद उठाया। तेरे तन शब्द नगारे लग्गे चोट, दो जहानां दए सुणाया। लक्ख चुरासी कढ्ढे खोट, भुल्ल रहे ना राया। भेख पखण्डी साध सन्त पकड़ उठाए कोटी कोट, तीर्थ तट्टां फेरा पाया। कलिजुग काला काली बन्ही फिरे लंगोट, चारों कुन्ट उठ उठ धाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा लए वड्आया। गुर गोबिन्द हरि दर पा, नेत्र नैण उग्घाड़या। तेरा तेरे लहिणे दित्ता पा, तेरा कारज तेरे आप संवारया। तेरा भाणा सहिणा तेरे दर रिहा सुणा, मेरा तेरा इक्क किनारया। वंझ मुहाना एका चप्पू ला, एका बेड़ा अपर अपारया। एका खेवट खेट नाम धरा, एका धक्का ला रिहा। पिता पूत मात पित बेटा गोद उठा, पिछला मूल चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आपणा वेस वटा रिहा। इक्क अकल्ला पुरख अगम्म अपारा। आपे वस्सया जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा। आपणी जोती दीपक आपे बला, आपणा आप किया उज्यारा। आपणा घर आपणा दर हरि आपे मल्ला, आपे करे पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग आपणा आप ल्या अवतारा। हरि अवतार जोत सरूप, जोती जामा पाया। राज राजन शाह भूप, वड सिक्दार अख्वाया। डंक वजाए चारों कुन्ट, निहकलंका नाउँ धराया। मेट मिटाए जूठ झूठ पखण्ड, सच सुच्च दए वरताया। जन भगतां आपे जाए तुठ, आप आपणा मेल मिलाया। अन्तिम करे एका मुठ, पंचम पंचम गंढु बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया। निहकलंक हरि नरायण, निरगुण जोत जगाईआ। रसना किसे ना सके कहिण, वेद पुराण ना कोई अलाईआ। अञ्जील कुरान पावे वैण, अन्तिम रो रो दए दुहाईआ। कलिजुग कूड़ा नाता साक सज्जण सैण, प्रभ साचा रिहा तुड़ाईआ। लाड़ी मौत करे श्रृंगार धर्म सपुत्री डैण, चारों कुन्ट नैण उठाईआ। राए धर्म चुकाए लहिण देण, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। चित्रगुप्त किसे ना देवे बहिण, लिख्या लेखा अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका एक अख्वाईआ। एका एक अकल कल धारी, आदि पुरख अख्वाया। जोती जामा भेखा न्यारी, एका डंक वजाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारी, सो पुरख निरँजण हथ्थ उठाया। हँ हँगता करे ख्वारी, पंज तत्त करे जणाया। मति बुध होए पनहारी, मन मनुआ दए सजाया। सुरत सुरती कर प्यारी, शब्द शब्दी मेल मिलाया। खिची जाए वारो वारी, एका दूजा पन्ध मुकाया। तीजा नैण रिहा उग्घाड़ी, अन्ध अन्धेर मिटाया। चौथा पद इक्क निरबानी, परम पुरख समाया। पंचम मेला साचे हाणी, सतिगुर घर सुहाया। छेवे छप्पर छन्न ना कोए वखानी, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वार दिस ना आया। सत्तवें मेला पुरख सुल्तानी, सति पुरखा वेख वखाया। अठवें अट्ठां तत्तां कर कुरबानी, आप आपणा भेट चढ़ाया। नौवें नौ दर होए खाली, दर साचा एका भाया। दसवें मेला हरि शब्द पाली, जोती जोत लए मिलाया। अमृत नीर सुहाए साचे ताली, सर सरोवर इक्क वखाया। अमृत फल लग्गे काया डाली, रस मिट्ठा इक्क चखाया। पारब्रह्म पुरख परखोतम मूर्त अकाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द एका दर एका हरि एका घर एका दए सुहाया। एका दर हरि सुहाउणा, घर साचे वज्जी वधाईआ। कलिजुग अन्तिम मेट मिटाउणा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, चार वरनां करे कुड़माईआ। ऊँचां नीचां राउ रंकां, राज राजना शाह सुल्ताना एका धाम बहाउणा, एका दर सुहाईआ। एका राग सृष्ट सबाई गाउणा, मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई इक्क पढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण साचा जाप जपाउणा, हँ हँगता दए मिटाईआ। धर्म निशाना इक्क झलाउणा, सत्तां दीपां दए रखाईआ। नौ खण्ड एका मार्ग लाउणा, नौ दर वेख वखाईआ। कोटन कोट काया गढ़ बंक द्वार सुहाउणा, आप आपणी जोत करे रुशनाईआ। सच सुच्च सति सन्तोख सति वरताउणा, सांतक सति समाईआ। कलिजुग जीव काग फड़ फड़ हँस बणाउणा, सोहँ चोग चुगाईआ। चरन दुआरे आप रखाउणा, सचखण्ड वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी फंद कटाउणा, मात गर्भ फेर ना आईआ। राए धर्म दर बन्द कराउणा, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। सतिगुर पूरे हाजर हज़ूरे एका सगन मुख लगाउणा, एका गीत सुहागी गाईआ। धाम अवल्लड़े मेल मिलाउणा, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। पंचम सखीआं मिल मिल मंगल गाउणा, अनहद ढोल वजाईआ। निरगुण रूप सति सांतक जिस जन पाउणा, निहकलंक सच्ची सरनाईआ। गोबिन्द गोबिन्द सिँघ हरि दरस दिखाउणा, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। मुकंद मनोहर हरि नज़री आउणा, काहना बंसरी इक्क वजाईआ। राम रामा वेस वटाउणा, चिल्ला तीर कमान चढ़ाईआ। अष्टभुज हरि संग रखाउणा, सिँघ शेर वड्डी वड्याईआ। आदि शक्त हरि खेल खिलाउणा, खेले खेल हर घट थाँईंआ। आदि निरँजण आपणा कर्म कमाउणा, आदि पुरख आप अख्वाईआ। अकाल मूर्त

नाउँ धराउणा, अकल कला समाईआ। अज़ूनी रहित इक्क सुत उपजाउणा, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। पारब्रह्म अबिनाशी आपणी गोद उठाउणा, आपे रिहा हिलाईआ। जिस जन आपणा आप आपणे मन्दिर आपे पाउणा, आए चल सच्ची सरनाईआ। परखणहारा अवणा गवणा, अवण गवण पार कराईआ। जुग जुग पूरन भगवन्त भगत पूरी करनहारा भावना, जो भावनी मन रखाईआ। भेस वटाए जिउँ बल दुआरे बावना, कलिजुग शुकर परोहत आपणी अक्ख कढाईआ। गुरसिख पकड़न आया दामना, गुर गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर पूरा बणया ज़ामना, ना सके कोए लड़ छुड़ाईआ। नेड़ ना आए तृष्ना कामना, तामस तृष्ना दए जलाईआ। मोह चुकाए कामन कामना, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मिटे रैण अन्धेरी शामना, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। गुरसिक्खां लहिणा देणा चुक्के आहमणो साम्हणा, घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी मेटण आया काली शाहीआ। कलिजुग कूड़ा लग्गा दाग़, ना कोए मात धुआया । जीव जन्त बणे काग, जूठ झूठ विष्टा मुख रखाया। कोए ना सुणे आत्म अन्तर अनहद राग, घर घर वाजे रिहा वजाया। सुरत सवाणी ना गई जाग, पंच विकारा रिहा जगाया। घर साजन साचे ना लाया भाग, तन मुनारा खाली इक्क दिसाया। दीपक जोत ना जगे चिराग़, दीवा बत्ती ना कोए टिकाया। नहावण नहाए ना मजन माघ, सर सरोवर ना वेख वखाया। कलिजुग जीव होए काग, दिवस रैण रहे कुरलाया। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरे गा गा थक्के आपणा राग, नादी राग किसे ना गाया। घर घर नारी सेज हंढाए जगत सुहाग, साचा कन्त ना किसे हंढाया। घर घर चुल्ले अग्नी मिले आग, अग्न तत्त ना किसे जलाया। मात पित पुत्तर धीआं होया वैराग, बिरहों वैराग ना कोई सताया। आपणी करनी आपे गए लाग, आप आपणा कर्म कमाया। आपणा मन्दिर महल्ल अटल ना वेख्या भाग, चारों कुन्ट उठ उठ धाया। सतिगुर पूरे चरनी गया ना लाग, मूर्ख मूढ़े जन्म गंवाया। काया माटी झूठी देह मलम्मा पाज, जगत कुठाली दए तपाया । गुरमुख नाम सवरन उत्ते लग्गे सुहाग, कंचन रूप वटाया। सति सन्तोख तन बद्धा किसे ना ताग, मावां पुत्रां तन तड़ाग रखाया। अन्तिम किसे ना पकड़ी वाग, बेमुहारा उठ उठ धाया। मनुआ मन ना ल्या साध, मन का मणका ना फेर फिराया। मति मतवाली ना सुणया राग, आप आपणा मता पकाया। बुध सोई ना गई जाग, कलिजुग पड़दा पाया। नाता जोड़या जगत सज्जण साक, हरि सज्जण दिस ना आया । गुर दर मन्दिर धीआं भैणां रहे झाक, आपणे अन्दर झाक ना कोई लगाया। रैण सबाई मूर्ख झूठे धन्दे खोल्ह्‌ण ताक, आपणा ताक ना कोई खुल्ह्‌आया। हउमे हँगता माया ममता चढ़े राक, शब्द अस्व ना कोई दौड़ाया। साध सन्त जीव जन्त बण बण बैठे पाकी पाक, पतित पावन ना कोई मनाया। दूर दुरेडे देस प्रदेस लिख

लिख भेजण डाक, आपणा सुनेहड़ा गुर गोबिन्द ना किसे घलाया। घर घर बैठे करोड़ी लक्ख, नाम वणज ना कोई रखाया। रुत्त बसन्त वेखे फुल्ल फल डाल्ही पत, आपणा सिम्मल ना किसे लहराया। भैण भ्रावां पुच्छदे फिरदे वात, आपणी सूझ ना कोई कराया। शाह बाणीआ लेखा कढ्ढी फिरदे बाकी बाक, आपणी बाकी ना कोई जणाया। भर भर प्याले मदि पयावण बण बण साक, साचा साकी दिस ना आया। मन मति बुध कर कर वेस होए चलाक, गुरमति भेव ना राया। कर कर थक्के पूजा पाठ, इष्ट देव दिस ना आया। नहा नहा थक्के तीर्थ ताट, दुरमति मैल ना कोई गंवाया। वणज कर कर अक्के हाटो हाट, नाम हट्ट ना कोई खलाया। काया बस्त्र अन्तिम जाणा पाट, थिर कोई रहिण ना पाया। गुरसिख गुरचरन दुआरा औखा घाट, गुरमुख विरले पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका घर एका दर एका हरि सुहाया।

* १३ भाद्रों २०१५ बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे घर पिण्ड बस्ती ख़लील ज़िला फिरोज़पुर *

हरि पुरख समरथ, हरि हरि नाउँ धराया। हरि हरिजन रक्खे दे कर हत्थ, आदि जुगादी सेव कमाया। एका बख्शे नाम वथ्थ, धुरदरगाही झोली पाया। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर दुआरे आया। भगत जणाई अकथना अकथ, अकथ कथा सुणाया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया। जगत विकारा देवे मथ, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाया। हरि पुरख समरथ सर्ब गुर दीना, सारंगधर अख्वाया। गुरसिख मेल मिलाए जिउँ जल मीना, जल धारा मुख चुआया। नेत्र लोचण नैण दरस अमोघ ठांडा सीना, तृष्ना भुक्ख मिटाया। तन चोली पंज तत्त भीन्ना, भिन्नड़ी रैण सुहाया। सर्ब जीआं प्रभ दाता दाना बीना, बीना दाना आप हो आया। वेख वखाए लोकां तीनां, लोक परलोक फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। हरि पुरख समरथ गहर गम्भीर, गुणवन्त गुण दाना। जन भगतां देवे आत्म नीर, चरन धूढ़ सच्चा अशनाना। कट्टणहारा अन्तिम भीड़, देवे नाम गुण निधाना। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच राज राजाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगती खेल खिलाना। भगती मेल हरि निरँकार, हरि हरि आप कराया। भगत वछल्ल सच्ची सरकार, सच सुच्च रिहा वरताया। अछल अछल्ल करे विच संसार, भेव कोई ना राया। हरिजन मेला इक्क द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर ठांडा वेखण आया। ठांडा घर सच दुआरा, हरि हरि आप उपाया।

आपे वेखे एकँकारा, ओंकारा वेस वटाया। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़ा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचे आप जगा, आपणी कल वरताईआ। एका राग रिहा सुणा, नादी धुन वजाईआ। लहिणा देणा रिहा चुका, हरि वड्ड वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन साचे आप जगा, आपणी कल वरताईआ। एका राग रिहा सुणा, नादी धुन वजाईआ। लहिणा देणा रिहा चुका, हरि वड वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मेला मेल मिलाईआ। घर मेला साजन मीतड़ा, हरि हरि पुरख अपार। घर आया इक्क अतीतड़ा, सोहया बंक द्वार। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, देवे नाम अधार। धाम वखाए इक्क अनडीठड़ा, दिस ना आए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन साचा बाल निधान, हरि साचा वेख वखांयदा। दर दुआरा कर परवान, भगत भगवान मेल मिलांयदा। शब्द जणाई इक्क निशान, दो जहानां वेख वखांयदा। साची गोपी मेला साचे काहन, हरि साचा धाम सुहांयदा। निरगुण जोत जगे महान, शब्दी डंक वजांयदा। नारद मुन हो प्रधान, एका दूजा राह वखांयदा। खेले खेल हो मेहरवान, मेहरवाना नाउँ धरांयदा। बाल बाले देवे शब्द ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। बाल अञ्याणा सच संदेश, एका शब्द जणाईआ। निरगुण रूप सदा अदेस, अन्दर मन्दिर सीस झुकाईआ। प्रगट होए कर कर वेस, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवणहारा वर, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। भगतन मेला भगत द्वार, हरि हरि आप करांयदा। आपे खेले खेल खेलणहार, खेल खिलंता नाउँ धरांयदा। सज्जण सुहेला मीत मुरार, आप आपणा वेस वटांयदा। दर सुहाए बंक द्वार, दर दुआरे फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन वेखणहार बेअन्ता, एका एक अख्वाया। गुरमुख उधारे साचे सन्ता, सतिगुर नाम धराया। बैठा रहे इक्क इकन्ता, आदि जुगादी लेख लिखाया। लोकमात होए मंगता, भगत भिखारी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आए दर, बाल अञ्याणा गोद उठाया। ध्रू बाला कर प्यार, आपणी दया कमाईआ। देवे दरस दर दिदार, हरि हरी वड्याईआ। बाल प्रहलाद कर उज्यार, निरगुण जोत रिहा दरसाईआ। बल बावन खेल अपार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। अमरीक करया इक्क प्यार, दुरबाशे मुख भवाईआ। जनक जन ल्या उधार, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाईआ। हरी चन्द सोहे द्वार, राणी तारा नाल रलाईआ। बिदर सुदामा उतरया पार, नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। द्रोपद लज्जया रक्खे

मुरार, हरि वड वड्डी वड्याईआ। जै देव करे उधार, पत्त पत्त डाल्ही वेख वखाईआ। कबीर कबीरा सोहे द्वार, चरन कँवल कँवल चरन टेक रखाईआ। सैण नाई होया सांझा यार, राज द्वार सेव कमाईआ। रक्खे पत्त रविदास चुमार, शब्द कंगन इक्क पहनाईआ। नामदेव करया पार, सत्त दो नाल रलाईआ। धन्ना धन्न वडभागा पाया एका यार, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, जुग जुग जन भगतां दए आप वड्याईआ। भगतन मीता हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल हरि अपार, जुग जुग वेस वटांयदा। पतित पापी लावे पार, जिस जन दया कमांयदा। गणका अजामल ना होए ख्वार, रसना गोबिन्द गांयदा। पापन पूतना दित्ती तार, आप आपणे भार दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा साक सैण, हरि सेण आप तराया। नाता तोड़े भाई भैण, एका नेत्र नाम दृढ़ाया। एका धाम अकट्ठे बहिण, घर साचे मंगल गाया। ना कोई दिवस ना कोई रैण, घड़ी पल ना कोई जणाया । ना कोई मज़्हब ना कोई ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक ना वेख वखाया। जिस जन मिल्या हरि कमलापात, सो जन साचा घर साचे डेरा लाया। अबिनाशी करता आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां पुच्छणहारा वात, लोकमात आवे जावे फेरा पाया। चरन कँवल बंधाए साचा नात, चरन दुआरा इक्क वखाया। आप सुणाए आपणी गाथ, गावणहारा नाम धराया। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, धुर दा लेखा रहिण ना पाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई तीर्थ नहाए अठसठ, ना पलँघ ना कोई वछाउणा ना खाट, ना कोई किनारा तट ना कोई घाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणी दया कमाया। भगत अधारी आप हरि, आपणी करनी आपे कर, आपे वेखण आया। आपणी धरनी धरत धरनी उप्पर धर, आपे धरत धवल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वड्आया। हरिजन साचा वड बलकार, हरि हरि आप उपाया। देवे नाम शब्द कटार, साचा खण्डा हथ्थ उठाया। पंचम मारे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचम लए जगाया। पंचम धुन अनादी धार, पंचम राग अल्हाया। पंचम सुन्न समाधी डिगे मूह दे भार, पंचम आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचे तेरा लहिणा, जुग जुग आप चुकाया। आपे बस्त्र पाए गहिणा, तन शृंगार आप रखाया। आपे वेखे नेत्र नैणां, नेत्र इक्क खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे धन्दे लाया। धन्दे लाए वड बजवाड़ा, आपणा कर्म कमांयदा। डाका मारे दिन दिहाड़ा, बाल्मीक सदांयदा। मिले मेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, दे मति आप समझांयदा। पंच तत्त नौ दर मन मति बुध इक्क अखाड़ा, धर्म गत ना कोए जणांयदा। बहत्तर नाड़ वज्जे ताड़ा, सारंगी

सारंग धार गुरमति गुरमुख दर बहि बहि कढ्ढे हाढ़ा, गुर पूरा सेवा लांयदा। हरिभगत बणाए साचा लाड़ा, सीस सेहरा नाम गुंदांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला एका दर, दर साचा इक्क सुहांयदा। दर साचा हरि दयावान, एका एक अख्वाया। भगत वछल श्री भगवान, भगत भगती वेख वखाया। जीव जन्त ना जाणे जगत निधान, भेव अभेदा भेव रिहा छुपाया। बधक मारे तीर बाण, चरन चरना पार कराया। बांहों पकड़ गुण निधान, आप आपणे गले लगाया। तेरा मेरा मेला दो जहान, जुग जुग करदा आया। द्वापर चुक्कया त्रेता कान, तेरा तेरी झोली पाया। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, मेल मेला लए मिलाया। बाल्मीक चढ़ाए इक्क निशान, रविदास चम्यारा नाल रलाया। बिदर मेला हरि भगवान, बिप्पर सुदामा लए तराया। ध्रू भगत इक्क ज्ञान, प्रहलाद नज़री आया। बल दुआरा कर परवान, वेस वेसी वेस वटाया। गुरमुख आत्म जनक सपुत्री सीता सुरती लए व्याहया। हरी चन्द सच दुकान, गुरमति राणी तारा नाम धराया। जैदेव दे ज्ञान, गुरमुख उठाए बाल निधान, एका सोहँ नाम पढ़ाया। कबीर कबीरा कर परवान, सैण सैण कर जवान, एका घर सुहाया। पूतना मेला विच जहान, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ाया। तोता तमां मेट निशान, तोए तल्ब मिटाया। अल्फ एका कर प्रधान, ऐन अक्ख खुल्हाया। गैन गफ्लत सुत्ता सर्ब जहान, गुढ़ी नींद सर्ब सुआया। गुरमुख उठाए चतुर सुजान, जिस जन आपणी दया कमाया। आपे बख्शे चरन ध्यान, चरन दुआरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। धुर धुर मेला ग़रीब निवाज़, हरिजन आप कराया। जुग जुग साजन साचा साज, घर साचे डेरा लाया। महल्ल अटल उच्च मुनार, छड्डुणे तख्त ताज, ख़ाकी ख़ाक वेख वखाया। भगतन मीता लोकमात रक्खणहारा लाज, लाजावन्त आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख दर, दर दरवेशा फेरी पाया। दर दरबान हरि भगवाना, एका नाम धराया। कलिजुग अन्तिम लै के आया धुर फ़रमाणा, साधां सन्तां रिहा जणाया। हथ्थीं बन्न्हे साचा गाना, नाम तन्दन तन्द रखाया। खेले खेल जगत महाना, जगत जलन्दा लए तराया। पार कराए ज़िमीं अस्माना, गगन गगनंतर चरना हेठ दबाया। रवि ससि उठ उठ मारन ध्याना, हरिजन तेरा आसण हरि दर पुरख अबिनाशन दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, ग़रीब निमाणे गले लगाया। हरिभगत जग आसरा, पारब्रह्म प्रभ ओट। हरि आपे होए निआसरा, हरिभगती हरिजन फड़ी हथ्थ सोट। वेखण आया जगत तमाशड़ा, भरम भुलाए कोटी कोट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बख्शणहारा हरि, हरिजन तन नगारे लाए शब्द चोट। शब्द चोट तन नगारा, गुरमुख आप वजाया। महल्ल अटल उच्च मुनारा, हरि

साचा वेख वखाया। एका वस्सया एकँकारा, दूसर कोए ना संग रलाया। राज राजाना शाह सुल्ताना, ना कोई वेखे हरि दुआरा दर घर ना दर्शन पाया। गुरमुख गुरसिख साजन उतरे पारा, प्रभ पूरे पार कराया। थिर घर सोहे सच दुआरा, थिर घर वासी मेल मिलाया। आदि अन्त अन्त आदि हरि नर गुर इक्क अवतारा, एका रूप वटाया। भगतन भगती भरे भण्डारा, अतोट अतुट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सोहे दर, दर द्वार इक्क सुहाया। कलिजुग डूँघी धार, वहिंदी वहणया। मनमुख डुब्बे विच संसार, ना लाए कोई बन्नया। गुरमुख उधरे पार, जिन हरि हरि भाणा मन्नया। दरस दिखाए दर घर सच्चे दरबार, भाग लगाए छप्पर छन्नया। गुरमुख सोहे बंक द्वार, कलिजुग दिसे जीव ना अन्नया। पंज तत्त सतिगुर पूरे गुरमुखां दित्ता उत्तों वार, जोत सरूपी चाढ़े साचा चन्नया। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, दर आया जिउँ क्यारे मोड़े धन्नया। देवे दरस अगम्म अपार, राए धर्म ना देवे डन्नया। जन जननी दोवें उधरे पार, जन भगत जिस जननी जणया। सुणाए राग अपर अपार, बन्द किवाड़ खोल्हे कन्नया। फड़ फड़ बांहों ल्या उभार, आपणा कीता आपे मन्नया। गुरमुखां करे सच प्यार, माटी भाण्डा आपे घड़े आपे भन्नया। भव जल उतरे सागर पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, लक्ख चुरासी लावे सन्नया। गुरमुख मंग अपार, एका एक रखाईआ। मंगे दरस अगम्म अपार, आत्म तृष्ना तृख वधाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। निरगुण वेखे वेखणहार, वेखणहारा दिस ना आईआ। सरगुण करन आया सच प्यार, लोकमात वड्डी वड्याईआ। जन भगत दुआरे होया पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। आदि जुगादि जुग जुग भरदा रहे भण्डार, नाम भण्डारा आप वरताईआ। देवणहारा सर्ब संसार, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपे जन भगतां ढहि पए द्वार, सोया भगत आप उठाईआ। जन भगतन मंगण आए द्वार, आप आपणी भिच्छया पाईआ। अन्दर मन्दिर खोल्हे बन्द किवाड़, नाम वस्तू इक्क टिकाईआ। अमृत आत्म उत्तों देवे वार, जोती माता सगन मनाईआ। पंचम सखीआं मंगल गाइन वारो वार, अनहद साची सेवा लाईआ। गुरमुख सुरती करे सच प्यार, गुर का शब्द होए कुड़माईआ। सोहे दर सच्चा द्वार, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। इक्क अकल्ला बैठ निरँकार, आदि निरँजण वेख वखाईआ। करे कराए आपणी कार, दर्द दुःख भय भंजन नाउँ धराईआ। गुरमुख आत्म सेजा कर प्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। उप्पर रक्खे फूलनहार, गुरमुखां भेट चढ़ाईआ। करे कराए सांझा इक्क प्यार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत जोग जुगीशर लिख लिख गए हार, हरिजन तेरा लेख ना कोई लिखाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी मेल मिलाया सभ तों बाहर, महल्ल अटल उच्च मुनारा

इक्क वखाईआ। सिँघ पाल मंगी मंग द्वार, प्रभ देवे सच वड्याईआ। मिले मेल हरि कन्त भतार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। चतुर्भुज आपणीआं भुजां रिहा पसार, गुरमुखां गलवकड़ी रिहा पाईआ। जोती जोत करे प्यार, जोत निरँजण आदि निरँजण विच टिकाईआ। वरन गोती पार किनार, वरन बरन ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखणहारा दर, जन भगतां दर सुहाईआ। भगत भगवन्त साचा नाता, हरि हरि आप बंधाया। कलिजुग वेख अन्धेरी राता, पारब्रह्म उठ धाया। चार कुन्ट दहि दिशा लक्ख चुरासी भरम भुलाए जाता पाता, हरि हरि रूप दिस ना आया। मनमुख मनमति नार होई कमज़ाता, घर घर वेस वटाया। धुर दीबाण ना देवे कोई सच सुगाता, शब्द निशान ना कोई झुलाया। कूड़ कुड़यारा पिता माता, भाई भैण बंधप बंध बंधाया। लहिणा मुकाए अठसठ तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी फेरा पाया। दूई द्वैती पड़दा किसे ना पाटा, माया ममता मोह वधाया। कर कर थक्के पूजा पाठा, अमृत आत्म रस किसे हथ्थ ना आया। साध सन्त चारों कुन्ट उठ उठ नाठा, धीरज धीर ना कोए धराया। उच्चे पर्बत वेखे जोत लिलाटा, जगत ज्वाला रहे मनाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद एका घाटा, हरि का शब्द ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवण आया नाम वर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया।

५५६ ५५६

०७ ०७

कुली कक्ख रैण सुहञ्जणी, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। जगे जोत दरस दिखाए हो प्रतक्ख जोत आदि निरँजणी, लोकमात वड्डी वड्याईआ । मिल्या साक सैण हरि सज्जणी, साध संगत वज्जी वधाईआ। चरन धूढ़ कराया साचा मजनी, दुरमति मैल गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सुहाए एका दर, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। भगत दुआरा आपे खोल्ह, आपणा बिरध रखाया। शब्द अनादी आपे बोल, आपणा रूप वटाया। पारब्रह्म ब्रह्मादी आपणे कंडे तोल, नाम तोला तोल तुलाया। सोहँ ढोला साचा बोल, गुरमुखां आख सुणाया। पंज तत्त बदलया चोला, गुर शब्दी वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई खेलण आया होला, गुरमुखां लाल गुलाल गूढ़ी रंगन रंग रंगाया। गूढ़ा रंग लाल अनमुल्लड़ा, हरि साचे रंग रतया। दर पावन आया मुलड़ा, तोले नाम साचे वट्टया। सद दुआरा रक्खे खुल्ह्ड़ा, वेख वखाए एका हट्टया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, घर मेला एका रक्खया। धन्न सुभागी रैण वड वड्डी वड्याईआ। जन वेखे आपणे नैण, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। आपणी रसना गुण आपणा कहिण, गुणवन्ता गुण वधाईआ। जग चुकया जुग लहिणा देण, हरि जागरत जोत जगाईआ। साध संगत नाता

भाई भैण, पुरख बिधाता आप बणाईआ। चार वरन सज्जण सैण, बरन अठारां मेट मिटाईआ। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ऊँच नीच धाम अकट्ठे बहिण, धर्म द्वार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरि हरि वेख वखाईआ। चार वरन शब्द उपदेश, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। पारब्रह्म सच संदेश, अनादी नाद सुणाया। जोत सरूपी कर प्रवेश, ब्रह्मादी खोज खुजाया। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाया। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाया। आपणी बख़शिश आपे करे दस दस दस्मेस, दस दुआरे वेख वखाया। आपणी रखशिश आपे करे नर नरेश, आपणा खण्डा तीर कमान चिल्ला आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमाती फेरा पाया। लोकमात तेरी धार, तेरा रंग रंगाया। पुरख अबिनाशी कर प्यार, गुरमुखां वेख वखाया। गुरमुख साजन लाए पार, आप आपणे कंध उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगती भगत लेखे लाया।

लेखा लिख्या धुर दरगहि, बणया धुर लिखारा। लोकमात बण मलाह, बेड़ा लाए पार किनारा। चार वरनां देवे इक्क सलाह, सोहँ शब्द सच्चा जैकारा। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेरी किसे ना दिसे कोई राह, चारों कुन्ट धुंधूकारा। जरम कर्म धर्म गल पाई बैठे फाह, ना करे कोई अधारा। बिन हरि साचे कोई ना पकड़े बांह, नानक गोबिन्द हरि ढहि पया दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बणे पिता माँ, आए दर वेखे घर सुहाए बंक दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे जिया दान, जी आत्म भरया रहे भण्डारा। जीव आत्म भर भण्डार, आपणी बूझ बुझाईआ। धर्म सनातन ना करे विचार, सन्यास वैराग ना बूझ बुझाईआ। हरि का भेव बातन ना जाणे कोई जमाल, नूरो नूर ना कोई दरसाईआ। अन्धेरी रातन कल खेल कमाल, गुरमुख सोए रिहा उठाईआ। कक्खा कुली रक्खे अनमुल्लड़े लाल, जगत जवाहिरी कीमत कोई ना पाईआ। ना कोई रक्खया विच दलाल, भगत विचोला आप हो जाईआ। वेखे छप्परी काया धर्म सच्ची धर्मसाल, अन्दर मन्दिर खोज खोजाईआ। फल लगाए साचे डाल्ह, फल फुलवाड़ी इक्क महिकाईआ। सुहाया अमृत साचा ताल, कागों हँस बणाईआ। गुरसिख मारी इक्क उछाल, त्रै लोकां पार कराईआ। आपे मेल मिलावा दीन दयाल, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। चले चलाए आपणी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। गुरसिख दर द्वार दुरकाए काल महांकाल, दोए बैठे नेत्र नीर वहाईआ। अन्तिम अन्त गुरमुख साजण सन्त आप आपणे लए भाल, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। थिर घर वासी थिर घर साचे रक्खे संभाल, घर साचा इक्क वखाईआ। जिस जन हरिसंगत सेवा हरि चरन प्रीती

लई घाल, ना मरे ना जाईआ। सतिगुर पूरा आपे चले नाल नाल। आप आपणा लड़ फड़ाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार ठग्ग लुट्ट कोई ना जाईआ। गुरसिख सच्चा ना शाह कंगाल, गुरचरनां ओट रखाईआ। करणहार सदा प्रितपाल, हरि सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा देवे वर, दर दुआरा एका एक सुहाईआ। कुली कक्ख कर वक्ख, जगत महल्ल तजाया। जगत महल्ल होण सक्ख, कक्ख कक्खों लक्ख बणाया। राज राजानां शाह सुल्तानां कोई ना सके रक्ख, चारों कुन्ट देण दुहाया। गुरमुखां दरस दिखाए हो प्रतक्ख, घर घर फेरा पाया। लक्ख चुरासी छाछ वरोले गुरमुख कढ्ढे मक्ख, नाम मधाणा एका पाया। आदि जुगादि जन भगतां करदा आया पक्ख, मनमुखां दए सजाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मारे झक्ख, निन्दक निन्दया रिहा लगाया। सृष्ट सबाई लौदे भक्ख, हरि अंग्यिारा इक्क तपाया। जन भगतां मीता इक्क अतीता पड़दे लए ढक, आप आपणा पड़दा पाया। भगत भगती फल गया पक्क, अन्तिम झोली दए भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचा मेला एका दर, दर दुआरा दए सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण जोत सरगुण सोए रिहा उठाया।

५६१
०७

* १४ भाद्रों २०१५ बिक्रमी बीबी गुरचरन कौर दे घर हीरा मंडी दरवाज़ा फिरोज़पुर शहर *

आदि पुरख हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाया। जोती जोत कर उज्यारा, जोती नूर दरसाया। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव कोई ना राया। इक्क दिसाए सच मनारा, थिर घर साचे नाउँ धराया। इक्क अकल्ला बैठ एकँकारा, अकल कला अख्वाया। सति सरूप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आदि पुरख हरि भगवाना, पारब्रह्म बेअन्ता। खेले खेल दो जहानां, आदि जुगादि जुगा जुगन्ता। रूप रंग ना कोई वखाना, तत्व तत्त ना कोई बणंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलंता। आदि पुरख आदि निरँजण, आदि अन्त अख्वाया। आप आपणा बणे सज्जण, साजण मीत नाम धराया। आप आपणा करे मजन, आप आपणे तीर्थ नुहाया। आप आपणा पड़दा आपे कज्जण, आप आपणा पड़दा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धराया। आदि पुरख हरि अकाला, अकल कला अख्वाया। जोती नूर दीन दयाला, दिस किसे ना आया। आपे वेख आपणी धर्म सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचे आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वड वड्आया। आदि पुरख सर्ब गुणवन्ता, एका एक अख्वांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आपे आपणा वेस वटांयदा।

आप आपणा चाढ़े रंग बसन्ता, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धरांयदा। आदि पुरख सर्ब घट वासी, आदि अन्त अख्वाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, एका नाउँ धराया। थिर घर वासी, थिर घर साचे वेख वखाया। सच तख्त सुल्तान शाहो सबाशी, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वेस धर, दर दुआरा इक्क सुहाया। दर द्वार हरि निरँकारा, आपणा आप सुहांयदा। निरगुण जोती कर उज्यारा, प्रकाश प्रकाश रखांयदा। ना कोई महल्ल अटल उच्च मनारा, चार दिवार दिस ना आंयदा। सच सिँघासण अपर अपारा, आप आपणा आसण लांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकारा, साचा हुक्म आपणा आप जणांयदा। आप आपणी बन्ने धारा, आप आपणे विच्चों प्रगटांयदा। आप आपणी पावे सारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ धर हरि निरँकारा, आप आपणी अलक्ख जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अख्वांयदा। अगम्म अगम्मड़ा बेपरवाह, आदि पुरख अख्वाया। आदि निरँजण वसे आपणे थाँ, भेव किसे ना पाया। थिर घर वासी शाहो शबाशी राह, आपणा आपे दस्सणा लेखा, लेख विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख दित्ता वर, आप आपणी झोली पाया। आदि पुरख बण भिखार, आप आपणी मंग मंगाईआ। आप आपणे खड़ द्वार, आप आपणी झोली भिच्छया पाईआ। आप आपणा भर भण्डार, आप आपणा वेख वखाईआ। थिर घर बैठ दर द्वार, दर द्वार इक्क सुहाईआ। निरगुण निरगुण कर प्यार, निरगुण निरगुण सेज हंढाईआ। निरगुण रूप निरगुण धार, निरगुण विच समाईआ। निरगुण जोत निरगुण आकार, निरगुण वेस वटाईआ। निरगुण खेल अपर अपार, नर निरँकार आप कराईआ। आप सुहाए आपणा बंक द्वार, दर द्वार वेख वखाईआ। आप आपणा खोल्ह किवाड़, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख देवे वर, घर साचे वज्जी वधाईआ। मिल्या वर धुरदरगाह, हरि साचे आप दवाया। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपणा लेखा आप लिखाया। आप आपणा बणाए मलाह, आपणा बेड़ा आप चलाया। आपणा मार्ग आपे लए ला, आप आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वस्सया घर, घर साचा इक्क सुहाया। घर वसेरा हरि निरँकार, घर साचे वज्जी वधाईआ। निरगुण जोत होई उज्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणी भिच्छया आपे धार, आपे पूर कराईआ। पाए भिच्छया भर भण्डार, आपणी घड़ी आप सुहाईआ। आपणे घर लए उतार, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती माता कर श्रृंगार, साचे सुत वेख वखाईआ। साचा सुत अपर अपार, एका रंग समाईआ। पुरख

अबिनाशी किरपा धार, साचा सगन मनाईआ। जोती माता करे प्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। बालक अञ्याणा कवण गुण लवां पुकार, कवण नाउँ धराईआ। पारब्रह्म रिहा उचार, आपणा गुण आपे गाईआ। शब्द सुत बाल बलकार, एका एक सुहाईआ। ना मरे ना जन्मे ना आवे जावे वारो वार, एका रंग रंगाईआ। गगन पताला आकाश प्रकाश आपे वेखे आप आपणा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दए वड्याईआ। शब्द सुत आप उपा, आपणी दया कमाईआ। आपणे घर दए वसा, आप आपणी दया कमाईआ। आपणी सिख्या दए सिखा, एका सिख्या वड वड्याईआ। आपणी भिच्छया देवे पा, एका भिच्छया झोली पाईआ। दहि दिशा दए दिखा, पड़दा रहे ना राईआ। थिर घर साचा धाम सुहा, सुत शब्द करे कुड़माईआ। साचे सुत सगन मना, हरि पूरन ख़ुशी मनाईआ। पतिपरमेश्वर आप अख्वा, अकाल मूर्त वेख वखाईआ। अकाल मूर्त रंग रंगा, नादि तूरत इक्क वजाईआ। नादि तूरत इक्क सुणा, धुन आपणे हथ्थ रखाईआ। धुन अनादी आप उपा, आपे बन्द कराईआ। थिर घर वासी पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह आपणे घर बैठा डेरा ला, घर साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण अलक्ख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह बेऐब परवरदिगार नाउँ धराईआ। धाम वसेरा इक्क अकल्ला, हरि हरि आप सुहाया। आपे वस्सया सच महल्ला, निज घर डेरा लाया। ना कोई जल ना कोई थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दिस ना आया। गगन पताल ना कोई मला, आकाश प्रकाश ना कोई वखाया। ना कोई रवि ससि ना सूरज चन्ना, तारा मण्डल ना कोई सुहाया। ना कोई ब्रह्मण्ड खण्ड पाए वंड, उत्भुज सेत्ज ना कोई रखाया। ना कोई ब्रह्मा शिव देवत सुर देवे कंड, ना कोई पूज गणेश मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा सच दरबारा, हरि साचे आप दसाया। इक्क अकल्ला बैठ नर निरँकारा, आप आपणी कल वरताया। करे कराए आप पसारा, पसर पसारी नाउँ धराया। निरगुण खेल खेले खेलणहारा, सरगुण रूप दिस ना आया। जोती शब्दी एका धारा, पूत सपूता नाउँ धराया। मात पित इक्क प्यारा, एका नाता जोड़ जुड़ाया। पुरख अकाल होया ख़बरदारा, साचे सुत दए जगाया। आप आपणा दए हुलारा, नाम हुलारा इक्क रखाया। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठ साचे घर, घर साचे मंगल गाया। थिर घर साचा शब्द अनादि, हरि साचे आप वजाया। आपे खोजी खोज करे ब्रह्मादि, पारब्रह्म नाउँ धराया। आपे वेखे आदि जुगादि, जुग जुग वेख वखाया। आपे जाणे आपणा बोध अगाध, बोध अगाधा नाम धराया। आप आपणा ल्या अराध, आप आपणी सेव कमाया। आप आपणा बणया मोहण

५६३
०७

माधव माध, आप आपणा सीस झुकाया। आप आपणी सुण फ़रयाद, आप आपणा रूप वटाया। आप आपणी देवे दाद, नाम दाद झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे एका हरि, एका दर सुहाया। दर दरवाज़ा थिर घर खोल्ह, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। शब्द अगम्मड़ा आपणा बोल, आप आपणा रिहा सुणाईआ। दूसर कोई ना दिसे कोल, ना कोई वेख वखाईआ। घर आपणे तोल्लया आपणा तोल, तोलणहार आप हो जाईआ। आपणा जैकारा आपे बोल, आप आपणी करे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर सचा वेख घर, निरगुण निरगुण करे रुशनाईआ। निरगुण रूप कर उजाला, आपणा आप दरसाया। आपे बणया गुर गोपाला गुर गुर रूप वटाया। आप आपणा बण दीन दयाला, दया निध नाम धराया। थिर घर बणया धर्म सच्ची धर्मसाला, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। आपे चले आपणी अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क चलाया। अकाल मूर्त जोत अकाला, निरगुण नाउँ धराया। आप आपणा बण रखवाला, आप आपणी सेव कमाया। शब्द सुत कर दलाला, आप आपणा बिरध धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेख साचा घर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। दर मन्दिर सच अनादी, थिर घर आप सुहांयदा। जगे जोत इक्क निरँकारी, एका रूप दरसांयदा। आप आपणी पावे सारी, आप आपणा भेव चुकांयदा। आप आपणा बणया मीत मुरारी, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणी पैज रिहा संवारी, आप आपणा कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख घर, शब्द सुत देवे वर, वर दाता नाउँ धरांयदा। वर दाता हरि भगवाना, एका एक अख्वाया। शब्द सुत देवे दाना, आप आपणी दया कमाया। एका बन्न्हे साचा गाना, तन्दन तन्द रखाया। मेल मिलाए दो जहानां, दो जहानां वेख वखाया। लोआं पुरीआं कर परवाना, गगन मण्डल आसण लाया। ब्रह्मण्ड खण्ड कर प्रधाना, एका हुक्म जणाया। शब्दी शब्द शब्द धुर फ़रमाणा, धुर दा लेखा रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेख साचा घर, दर दरवाजा पार कराया। दर दरवाजा पार किनारा, शब्द सुत उठ धाया। लोआं पुरीआं पताल आकाश सुहाया। गगन मण्डल रवि ससि सतारा, आपणे बंध बंधाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारा, रूप अनूप दरसाया। शब्द शब्दी भर भण्डारा, ब्रह्म ब्रह्म उपाया। पारब्रह्म गुर इक्क अवतारा, आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा दर, दर दरवेशा फेरी पाया। दर दरवेशा हरि हरि धार, दर दर अलक्ख जगाईआ। सर्ब रंग अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। घट घट करे ख़बरदार, घर घर बैठा आसण लाईआ। ब्रह्मा वेता कर प्यार, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द गुर भर भण्डार, लेख रिहा लिखाईआ। पंज तत्त कर प्यार,

मन मति बुध टिकाईआ। निरगुण रूप हरि करतार, आप आपणा वेख वखाईआ। शब्द डंक अपार अपार, आत्म धुन उपजाईआ। नौ द्वार खोल्ह किवाड़, घर आपणे बैठा मुख छुपाईआ। जगे जोत अगम्म अपार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। करे खेल अपर अपार, आप आपणा पड़दा पाईआ। बजर कपाटी लाए ताल, ना कोई खोल खुल्हाईआ। साची हाटी एका करे वणज वपार, आपणे हट्ट आपे बन्द कराईआ। तीर्थ ताटी अमृत धार, काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोत लिलाटी अपर अपार, पुरख अबिनाशी आप जगाईआ। औखी घाटी अधविचकार, टेडी बंक सुहाईआ। जीव जन्त कोई ना उतरे पार, खेले खेल आप रघुराईआ। लोकमात कर पसार, लक्ख प्रतक्ख रिहा समाईआ। चार धार पंज प्यार सत उज्यार अट्ठ घर बार, नौ द्वार वड्डी वड्याईआ। दसवें जोत जगे अगम्म अपार, बैठा बेपरवाहीआ। मानस देही सच सिक्दार, लक्ख चुरासी विच बणाईआ। देवत देव लए अधार, सुर नर मुन जन वेख वखाईआ। गण गधंरब बन्न्हे धार, भुल्ल रहे ना राईआ। धर्म राए दए उचार, दर द्वार इक्क सुहाईआ। चित्रगुप्त बणाए साची नार, घर घर वेख वखाईआ। लाड़ी मौत नार मुटयांर, लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। करे खेल प्रभ खेलणहार, दिस किसे ना आईआ। आप आपणी करे कार, करता पुरख नाउँ धराईआ। धरनी धरत जल धार, जल बिम्ब टिकाईआ। करे खेल प्रभ खेलणहार, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख घर, शब्द सुत देवे वर, लोआं पुरीआं लए उसार, मात आकाश धरत धवल लोक परलोक अवण गवण फेरा पाईआ। अवण गवण पुरी आकाश, हरि हरि वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर पाए रास, मण्डल मण्डप दए सुहाया। आपे वस्सया पृथ्मी आकाश, समुंद सागर वेख वखाया। दाता दानी सर्ब गुणतास, गुणवन्ता नाउँ धराया। वेखे खेल दस दस मास, मानस मानुख लए प्रनाया। निज घर आत्म रक्खे वास, निज आत्म नाउँ धराया। परम पुरख प्रभ होया दास, सेवक सेवा रिहा कमाया। आप चलाए पवण स्वास, पवण पवणा विच टिकाया। रक्त बूंद सुहाए हड्ड नाड़ी मास, पंज तत्त सुहाया। मेल मिलाए अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, त्रैगुण रूप वटाया। मन्दिर अन्दर मण्डल मण्डप पावे रास, आप आपणा सांग वरताया। खेले खेल पुरख अबिनाश, पुरख अबिनाशी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेखण आया। जोत धर पुरख अकाल, आपणी दया कमांयदा। धरत मात साची धर्मसाल, धरत धवल सुहांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, जुग करता नाउँ रखांयदा। नाल रखाए काल महांकाल, आदि अन्त वेस वटांयदा। आदि शक्त रूप अपार, भगत भगौती इक्क चमकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा ज्ञान कर ध्यान, लोकमात आप दृढ़ांयदा। आपे शब्द आपे ज्ञाना, आपे बूझ बुझाईआ। आपे

रसना आपे जिह्वा आपे काहना, आपे राग अल्लाईआ। आपे दाता आपे दानी गुण निधाना, गुण करता भेव ना राईआ। आपे शब्द आपे गुर आप आपणा बणे हाणी, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे अंडज आपे जेरज आपे उत्भुज सेत्ज खाणी, आपे वेख वखाईआ। आपे परा आपे पसन्ती आपे मधम आपे बैखरी बाणी,, आपे रिहा अल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे शब्द दए वड्याईआ। शब्द शाह सुल्तान, हरि हरि आप उपाया। खेले खेल दो जहान, जुग जुग वेस वटाया। ब्रह्मे देवे इक्क ज्ञान, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ मेहरवान, मेहरवान अख्वाया। धुर दा दाता धुर दीबाण, धुरदरगाही झोली पाया। अड्ढे नेत्र वेखे खोल्ह निधान, शब्द सनेहुड़ा इक्क घलाया। आपे लेखा लिखणहार जीव जहान, जीव जन्त लए उपाया। तेरी खोल्हे मात दुकान, तेरा हट्ट चलाया। कराए वणज हरि भगवान, चौदां लोक जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेख साचा घर, लोकमाती राह तकाया। लोकमाती बणत बणा आपणी कल वरतांयदा। लक्ख चुरासी रचन रचा, नौ दस ग्यारां बीस तीस लक्ख चार वेख वखांयदा। भाण्डा कच्चा नौ दर नचा, नौ नौं खेल खिलांयदा। शब्द अगम्मी अनहद वाजा आप वजा, गुरमुख साचे आप जगांयदा । अस्व घोड़ा रक्खे ताजा, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे कुन्टां फोल फोलांयदा। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाजा, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। धरत धवल मारे वाजां, पतित पापी भार दबांयदा। वेखण आए आपणा काजा, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत वेस कर, लोकमात खेल खिलांयदा। लोकमात खेल खिलारी, हरि हरि आप अख्वाया। आदि अन्त इक्क अवतारी, एका गुर समझाया। जगे जोत अगम्म अपारी, निरगुण वेस वटाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारी, जोधा सूरा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग रचन रचाया। जुग नाता जग जोड़या, आपणी किरपा धार, जन भगतां आपे बौहड़या, लोकमात लै अवतार। धुर दरगाही आए दौड़या, करे वेस निरँकार। फल वेखे मिट्ठा कौड़या, धरत धवल लक्ख चुरासी पावे सार। ना कोई जाणे पैंडा लम्भा चौड़या, आपे वस्सया आर पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्न्हे आपणी धार। लोकमात हरि धीर धरा, धीरज वेख वखांयदा । जुग जुग आपणा वेस धरा, अछल अछल्ल छल कमांयदा। सतिजुग लेखा आप लिखा, आपणा मूल चुकांयदा। वार अठारां जोत जगा, जागरत जोत दरसांयदा। नेत्र नैणां दरस दिखा, भगत भगवन्त मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमांयदा। सतिजुग साचे पार किनारा, सच सुच्च कुड़माईआ। त्रेता लए मात अवतारा, राम रामा संग रलाईआ। बरस बरसा कर अधारा, लंका गढ़ तुड़ाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सारा, ताल सुहावा

इक्क सुहाईआ। अन्तिम करे पार किनारा, द्वापर जोत जगाईआ। द्वापर तेरा सच मुनारा, वेद व्यासा रिहा लिखाईआ।
साँवल सुन्दर रूप अपारा, काहना बंसरी इक्क वजाईआ। गीता ज्ञान भेव न्यारा, अर्जन मुख सालाहीआ। तोड़े गढ़ माण
हँकारा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। बिदर सुदामा उतरे पारा, द्रोपद लज्जया आप रखाईआ। आपणे दर आपणे घर
आपणा किया पार उतारा, आप आपणा लए मनाईआ। कलिजुग खेल करे न्यारा, काली रैण अन्धेरी छाईआ। जूठ झूठ
कर पसारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। माया ममता कर प्यारा, जूठा झूठा बंधन पाईआ। चारों कुंट धूंआँधारा, अज्ञान
अन्धेरा छाईआ। ईसा मूसा कर उज्यारा, एका हक्क ख़ुदाईआ। इक्क वखाए साचा नाअरा, साचा दर सुहाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ । कलिजुग तेरी काली धार, हरि साचे रंग रंगाया।
नाल रलाया मुहम्मद यार, साचा मता पकाया। चार यारी करे ख़बरदार, एका राह वखाया। कर्म धर्म जरम दित्ता धक्का
मार, बेड़ा रिहा रुढ़ाया। मदीना मक्का कर उज्यार, मक्का काअबा मुख रखाया। खेले खेल अपर अपार, दो दो आबा
वेख वखाया। पुन्न सवाबा ना कोई विचार, ऐनहलहक्क नाअरा लाया। मुकामे हक्क ख़ुदाई सांझा यार, दिस किसे ना
आया। पीर फ़कीर शाह हकीर कुतब गौंस औलीए गए हार, हरि का भेव किसे ना पाया। अन्दर मन्दिर इक्क द्वार, ना
कोई देवे पड़दा लाहया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा खेल खिलाया। नानक गुर , मन्त्र नाम
दृढ़ाया। नाम सति कर विचार, लोकमाती झोली पाया। चारों कुन्ट करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। एका
जोत दस गुर अवतार, गुर गोबिन्द एह समझाया। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, पुरख अकाला मूल चुकाया। दीन दयाला
करे प्यार, सूलां सथ्थर वेख वखाया। गले लगाए दए आधार, एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता जुग जुग आपणा वेस वटाया। वेस वटा पुरख बिधाता, आपणी कल वरतांयदा।
मेट मिटाए अन्धेरी राता, अज्ञान अन्धेर गवांयदा। जन भगतां देवे साची दाता, धुर दा कर्म कमांयदा। आपे पिता आपे
माता, गुरमुख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। ना कोई वेखे आउणा जाणा, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजाना शाह सुल्ताना
एका धाम सुहांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। अन्तिम कलिजुग पुच्छे वाता, जोती जामा
वेस वटांयदा । दरस दिखाए बहु बहु भातां, राम कृष्ना नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,
कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरा वेस अवल्ला, हरि हरि आप कराया। खेले खेल
इक्क अकल्ला, ना कोई दूसर संग रलाया। भेव खुलाए जला थला, डूँघी कन्दर वेख वखाया। वेख वखाए उच्च महल्ला,

५६७ ०७

पर्बत टिल्ले रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटा हरि निरँकार आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मे कीता ख़बरदार, एका शब्द जणाईआ। मन मनवन्तर गए हार, इकत्तर चौकड़ी वेख वखाईआ। नौ नौं चार पावे सार, नौ नौं दए सुहाईआ। अट्ठ सट्ठ अखाड़, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ । पुरख अगम्मी वेख धाड़, एका नाअरा रही लाईआ। पुरी ब्रह्म होई उजाड़, सुंञ मसाण वखाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे इक्क अखाड़, जोधे सूर वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण टोहे नाड़ नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी वेख वखाईआ। चिट्टे अस्व चढ़या साचा लाड़, वड दाता धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा सुण शब्द जैकारा, आपणी लए अंगड़ाईआ। कवण पुरख बन्ने धारा, कवण वेख वखाईआ। कवण अस्व आए अस्वारा, कवण कूटे फेरा पाईआ। कवण मारनहारा नाअरा, थिर कोई रहिण ना पाईआ । सो पुरख निरँजण लै अवतारा, जोती नूर करे रुशनाईआ। सचखण्ड खोल्ह दुआरा, पुरीआं लोआं आया कर कर धाहीआ। ब्रह्म वेता पार किनारा, बीस बीसा एह समझाईआ। जगत जगदीसा खेल किनारा, शिव शंकर दए उठाईआ। बाशक तशका गल विच्चों लाहे हारा, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, प्रभ आए सीस झुकाईआ। प्रभ का शब्द जैकारा, एका हुक्म सुणाईआ। अन्तिम छड्डणा पया दुआरा, भोले नाथ वड्डी वड्याईआ। गुरमुख सच घर सच्चे होए सिक्दारा, सतिगुर साची बणत बणाईआ। जोती जोत अपर अपारा, जोती जोत लए मिलाईआ। सुरपति राजा इन्द करे ख़बरदारा, करोड़ तेतीसा नाल रलाईआ। कलिजुग अन्तिम आए पार किनारा, बल बावन कोई ना सुहाईआ । मात सुलक्खणी ना करे प्यारा, ना रो रो नीर वहाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी बन्ने आपे धारा, हरि दर वड्डी वड्याईआ। जोत सरूप लै अवतारा, निरगुण खेल करे रघुराईआ। ब्रह्मा सुत नारद मुन रोवे ज़ारो ज़ारा, चोटी सीस मुंडाईआ। वेद शास्त्र करन पुकारा, ब्रह्मा एह समझाईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, पुराण अठारां लक्ख चार हज़ार सतारा सलोक गया जणाईआ। खेले खेल किष्शन मुरारा, ज्ञान गीता इक्क दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान वेख जहान, बंस बंसा एक गुण वखाईआ। नानक अर्जन कर पछान, बाणी बोध इक्क ज्ञान, राग छतीसा रिहा अल्हाईआ। गुर गोबिन्दे अमृत आत्म दित्ता पीण खाण, बस्त्र शस्त्र इक्क समाईआ। नाम खण्डा तीर किरपान, ब्रह्मण्डां होए सहाईआ। जेरज अंडा वेख वखान झूठ दुकान, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। इत्तल वितल सितल हो मेहरावान, तलातल महातल रसातल पताल लोक करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ। चौदां लोक चौदां तबक चौदां हरि हुलारा। चौदां खेल खेल तबरेज़ शमस, चौदां अल्ला राणी नाअरा। चौदां लोक चौदां हट्ट,

चौदां चौदां होए ख्वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल सिरजणहारा। ब्रह्मा शिव देवत सुर, प्रभ साचे इक्क समझाया। रिख मुन साध सन्त जो बैठे जुड़, तीर्थ तट्टां लए उठाया। गुरदर मन्दिर शिवदवाले जो रहे रुड़, पार कन्ढ्ढा दए वखाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, अन्दर मन्दिर खोज खोजाया। लेख लिखाए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम जोत अकाली जोत सरूपी लोकमाती आया दौड़ा, शब्द डंका इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाया हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। लोआं पुरीआं बन्न्हे धार, लोकमात वज्जे वधाईआ। सति सति पार किनार, सति सति वेख वखाईआ। भू लोक ख़बरदार, दूवर करे जणाईआ। स्वर्ग लोक कर प्यार, महरह नाम जपाईआ। जप लोक पार किनार, तप तपसवी इक्क वखाईआ। सति लोक सति पुरख निरँजण सिरजणहार, बैठा बेपरवाहीआ। लोकमात आया सांझा यार, चार वरनां करे जणाईआ। नौ खण्ड पृथमी पावे सार, कुला खण्ड डेरा लाईआ। इल्लाबुत मारे मार, केतमाल वज्जी वधाईआ। हरणयमह वेख विचार, भद्र खेल खिलाईआ। रमक रोवे ज़ारो ज़ार, हरिवरख फोल फोलाईआ। किं पुरख पावे सार, भारत खण्ड होए जै जैकार, सत्तां दीपां मेला नारी कन्त दर सुहाईआ। लक्खण दीप हो उज्यार, करौच फेरा पाईआ। पुष्कर तेरी बन्न्हे धार, जम्बु दीप आप आपणा रंग वटाईआ। सलमल तेरा इक्क प्यार, भुल्ल रहे ना राईआ। शान तेरी बन्न्हे धार, एका गुण रखाईआ। कुशा वेख सच्ची सरकार, सीस साचा ताज पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नौ सत दे मति इक्क तत्त रिहा समझाईआ । एका तत्त इक्क ज्ञान, एका नाम दृढ़ाया। एका धीरज एका यति इक्क ध्यान, एका मार्ग लाया। इक्क दुआरा इक्क अस्थान, गुरचरन दुआरा इक्क वखाया। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाया। एका राग सुणाए कान, धुंन अनादी ताल वजाया। एका मारे साचा बाण, बजर कपाटी चीर वखाया। सो पुरख हरि मेहरवान, हँ हँगता दए गंवाया। एका चिल्ला इक्क कमान, एका तीर रिहा उठाया। एका किला एका धर्म निशान, एका दए झुलाया। एका वरन एका गोत एका घर इक्क मकान, एका ब्रह्म दए जणाया। एका नारी एका कमलापात, एका सेज रिहा हंढाया। एका मन्दिर अन्दर रिहा झाक, पड़दा ओहला इक्क रखाया। एका खोल्ल्हणहारा ताक, अन्ध अन्धेरा दए गंवाया। एका सज्जण आपणा साक, एका मीत मुरार बणाया। एका पाकी एका पाक, पतित पापी पुनीत दए कराया। एका जाणे जणाए भविख्त वाक, ना कोई दूसर लेख लिखाया। जुग जुग जन भगतां पड़दा रिहा ढाक, शब्द दोशाला उप्पर पाया। कोई ना रहे अग्गे आकी आक, शाह

सुल्तानां खाक मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जामा हरि हरि अवल्लड़ा, हरि हरि जोत जगाईआ। शब्दी डंक वज्जे घर घरा, घर घर विच करे जणाईआ। वेख वखाए दर दर दरा, दर दरवाजा खोल्ह खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ उपाईआ। आप आपणा नाउँ रक्ख, आपणा बिरध रखाया। आप आपणा कर वक्ख, आप आपणा वेखण आया। आप आपणा कर प्रतक्ख, आप आपणा सगन मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि निहकलंक, शब्द डंक वजांयदा। लोकमात उठाए राउ रंक, रंक राजाना आप जगांयदा। जन भगत सुहाए द्वार बंक, बंक द्वारी नाउँ धरांयदा। दरस दिखाए वार अनक, अनक कल वरतांयदा। प्रगट होया वासी पुरी घनक, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। गुरमुख आत्म सीता सपुत्री जनक, घर साचे आप प्रनांयदा। आपे रूप वटाए सनंदन सनक, सनातन सन्त कुमारा वेख वखांयदा। रूप बराह वजाए डंक, यज्ञे पुरश कुरलांयदा। हाव गरीव लाए अंक, नर नरायण धार रखांयदा। कपल मुन लाए तनक, दत्ता तैं समझांयदा। रिक्खभ देव कढ्ढे शनक, पृथू मथ वखांयदा। मत्तसय लेखा इक्क अकन्त, कच्छप भार उठांयदा। धनंतर उठाया एका धनख, औषद मेट मिटांयदा। बावन हँसा हरी नरायण नर सिँघ रूप इक्क अकन्ता, एका धार बंधांयदा। मोहणी रूप खेल खिलंता, बल राजा दर सुहांयदा। परसरामा वेख वखंता, क्रिया कर्म कमांयदा। वेद व्यासा कृष्न भगवन्ता, मुखी मुख सलांहयदा। बोध बोधा धाम सुहंता, जगत ज्ञान दृढ़ांयदा। अन्तिम कलिजुग निहकलंक वजाए डंका, नानक गोबिन्द लेख लिखांयदा। लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथमी कढ्ढे शंका, आप आपणी कल वरतांयदा। जिस जन लाए जोती तनका, शब्दी शब्द उठांयदा। आपे फेरनहारा मन का मणका, मन मनुआ मेट मिटांयदा। बुध मति वज्जे डंका, सुर ताल इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दर घर घर लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त पंज तत्त काया रथ वेख वखांयदा। काया रथ, हरि रथवाही घट घट आप चलांयदा। आपणे हथ्थ रक्खे नथ्थ, चारों कुन्ट फिरांयदा। जन भगतां देवे आपणी वथ, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सृष्ट सबाई लथ्थी सथ, पंज विकारा सथ्थर हेठ विछांयदा। जूठा झूठा बुरज जाणा ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पांयदा। नाम शब्द गुरदर मन्दिर मस्जिद ना कोई संग रखांयदा। अकाल पुरख चरन दुआरे इक्क अकट्ठ, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। माण दवाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा। उलटी गेड़नहारा लठ्ठ, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती अग्नी लाए मठ्ठ, तत्व तत्त रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी कल वरतांयदा। करन करावन जोग, हरि भगवन्तया। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना हरख ना कदे सोग, आप आपणा खेल खिलन्तया। सृष्ट सबाई कलिजुग चुगौणी, जूठी झूठी चोग, मान अभिमान जीव निधान जीव जन्तया। गुरमुख विरले देवे दरस अमोघ, साचा मेला नारी कन्तया। लेखा लिख्या धुर संजोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलन्तया। कलिजुग धार हरि निराली, आपणी आप चलाईआ। खेले खेल जोत अकाली, निरगुण रूप वटाईआ। गुरमुखां बणया साचा माली, धुर दा वाली बेपरवाहीआ। दूर दुराडे काया मन्दिर अन्दर बहि बहि जाए भाली, मनमुख जीवां दिस ना आईआ। मनमुख जीव सुरत सवाणी होई बेहाली, दिवस रैण रही कुरलाईआ। मनमति वजाया आपणी ताली, ताल तलवाड़ा ना कोई रखाईआ। अन्तिम फल ना दिसे किसे डाल्ही, सिम्मल बैठा मुख भवाईआ। माया ममता जगत जंजाली, जगत जंजीर बन्न्हाईआ। हउमे हँगता काया ढाली, जूठ झूठ कुठाली ताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेखण आया, आप आपणा रूप वटाया। कवण साध कवण सन्त, कवण जीव कवण जन्त, कवण मणीआ कवण मंत, कवण रसना रस रही पाईआ। कवण रस जगत संसारा, कवण रूप दरसाया। कलिजुग माया मेला हस्स हस्स, घर घर सगन मनाया। मनमति फिरे नस्स नस्स, आप आपणा कर्म कमाया। सच प्रकाश छुपा बैठे रवि ससि, मुख एका पल्लू पाया। धरत मात आपणे अन्दर आपे गई धस, पापां भार झल्लया ना जाया। भाईआं भैणां माणया एका रस, काम क्रोध होए हलकाया। पारब्रह्म अकाल मूर्त जोत निरँजण आदि निरँजण तेरा किसे ना गाया साचा जस, रसना गा गा वाद वधाया। जिह्वा लाया मदिरा मास, गुर का शब्द भुलाया। लेखे लग्गा ना इक्क स्वास, गुर गोबिन्द लेख लिखाया। ना कोई सहाई पृथ्मी आकाश, नानक गुर धक्का लाया। गुर अर्जन ना दए दर धरवास, जिस जन हरि हरि दिस ना आया। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे बन्द खलास, वेद पुराणा एका गाया। जन भगतां पूरी करे आस, जुग जुग जोती जामा भेख वटाया। लहिणा देण चुकाए दस दस मास, मात गर्भ फेर ना आया। निज घर आपणे आप रखाए वास, थिर घर वासी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण अबिनाशी करता निहकलंक वेस वटाया। निहकलंक अकल कल धार, लोकमात उठ धाया। पंज तत्त ना करया कोई प्यार, शब्दी डंक वजाया। कलिजुग मेटे कूड़ा कूड़ कुड़यार, रैण अध्यारी रहिण ना पाया। सतिजुग साचे साची बन्न्हे धार, आप आपणा मार्ग लाया। प्रगट होए विच संसार, भुल्ल रहे ना राया। वेख वखाए मुहम्मदी यार, अल्ला राणी संग रखाया। ईसा मूसा कर विचार, काला सूसा तन छुहाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा बिरध धराया। कवण हरि कवण सिँघासण, कवण जोत जगांयदा। कवण पुरख कवण अबिनाशन, कवण मेल मिलांयदा। कवण निवासी घट घट वासन, घट घट धाम सुहांयदा। कवण गुर सद बलि बलि जासन, बलिहारी नाउँ उपांयदा। कवण पृथ्मी कवण आकाशन, कवण खोज खोजांयदा। कवण दास कवण दासी दासन, कवण सेवक सेवा कमांयदा। कवण पूरी करे कराए जन भगतां तृष्ना आसन, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। पारब्रह्म प्रभ शाहो शबाशन, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचा लोकमात, पंज तत्त समाया। सतिगुर पूरा वेखे मार झात, दूसर किसे दिस ना आया। जिस जन मिटाए अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर गंवाया। दीपक जोती करे प्रकाश, सच महल्ल दरसाया। आप रखाया आपणा वास, जोती जोत डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखणहारा दर, दर दुआरा इक्क सुहाया। दर दुआरा गुरमुख खेड़ा, हरि साचे आप सुहाया। आपे मेटे पंचम झेड़ा, पंचम मोह चुकाया। आपे करे हक्क निबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखाया। आपे बन्ह्णहारा बेड़ा, लाशरीक ख़ुदा अख्वाया। बिन सतिगुर पूरे जाणे केहड़ा, कवण दुआरे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन लए वर, आप आपणा बंधन पाया। बंधन पाया नाम डोर, शब्दी तन्द बंधाया। मेट मिटाए पंज चोर, पंचम लए जगाया। पंच सुणाए शब्द घनघोर, पंचम सेवा लाया। अनहद वजाए साचा ढोल, मृदंगा आपणे हथ्थ उठाया। आत्मक धुन अनादी बोल, बोध अगाधा दए जणाया। अमृत आत्म देवे साची पौहल, एका अमृत मुख चुआया। उलटा करे नाभ कँवल, निझर धारा रस भराया। मिले वड्याई उप्पर धवल, जिस जन आपणा मोह चुकाया। मेल मिलावा साँवल सँवल, सालस नाम विचोला इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे अन्दर वड़, दर मन्दिर इक्क सुहाया। काया मन्दिर सच दुआरा, हरि हरि वेख वखाया। गुरमुख साजन मीत मुरारा, आप आपणा मेल मिलाया। आपे खोल्ह बन्द किवाड़ा, निझधारा दए चुआया। धर्म वखाए सच अखाड़ा, पंचम सखीआं मंगल गाया। आत्म सेजा कर प्यारा, आप आपणा वेस वटाया। सोलां इच्छया कर श्रृंगारा, तन्दन तन्द रखाया। पाए भिच्छया अगम्म अपारा, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, सुरत सवाणी लए वर, एका गीत सुहागी गाया। गीत सुहागी साचा ढोला, अनहद राग वजन्ता। सुरत सवाणी बदलया चोला, पाया हरि भगवन्ता। दर दुआरे होया गोला, महिमा अगणत अगणता। दिवस रैण वस्सया कोला, मेल मिलावा साचे सन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

हरिजन आत्म वेख घर साचा इक्क सुहंता। घर वस्सया हरि निरँकार, घर घर विच वज्जी वधाईआ। हरि पाया कन्त भंतार, विछड़ कदे ना जाईआ। साची सईआ मंगलाचार, अनहद राग अलाईआ। ताल सुहावा अमृत आत्म ठंडी ठार, गुरमुखां मुख चुआईआ। पार किनारा नौ द्वार, दसवां दर सुहाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, चिट्टी धारा इक्क विछाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपार, हरि साचा रिहा तराईआ। पावा चूल ना कोई किनार, ना कोई बाडी बणत बणाईआ। गुरसिख तेरी आत्म अपर अपार, गुर मिल्या सहिज सुभाईआ। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, एका रूप सुहाईआ। शब्दी शब्दी कर प्यार, जोती जोत मिलाईआ। जोत अगम्मी होई बाहर, दस्म दुआरा दए तजाईआ। सुन्न समाधी वेख विचार, निरगुण खेल खलाईआ। सचखण्ड कर आकार, सन्तां भगतां मेल मिलाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, घर साचे अलक्ख जगाईआ। आपणा करे आपे पार किनार, छप्पर छन्न ना कोई जणाईआ। एका शब्द एका धुन्कार, सुनणहार इक्क अख्वाईआ। ना कोई रूप रंग ना कोई पसार, ना कोई तत्त वखाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी धार, उच्च अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण एका वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचा दर दरबारा, हरि साचे आप सुहाया। आवण जावण खेल अपारा, नित नवित्त फेरी पाया। कलिजुग तेरा वेख कूड़ पसारा, आप आपणा कर्म कमाया। जोती नूर निरगुण धार निहकलंक नरायण लए अवतारा, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। सम्बल नगरी वेख मुनारा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाया। हड्ड मास रक्त बूंद चार दिवारा, प्रभ अबिनाशी आप रचाया। आपे अन्दर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना किला ना कोई गढ़, राज राजान शाह सुल्तान जीव जन्त ना सके कोई फड़, आप आपणा मुख छुपाया। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, अन्दर मन्दिर मेल मलाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। ना कोई घाड़न दूजा लए घड़, घड़नहार पुरख समरथ आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण वेस वटाया। नर नरायण श्री भगवाना, बीठलो बीठ अख्वांयदा। भगत सुहेला बन्ने गाना, अनडीठला दिस ना आंयदा। नाम वखाए सच निशाना, साची रीतला इक्क चलांयदा। जोधा सूर बली बलवाना, मन्दिर मसीतला आपे ढांयदा। दो जहानां मारे इक्क निशाना, लक्ख चुरासी पार करांयदा। जन भगतां तोड़े बन्दीखाना, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। इक्क वखाए पद निरबाणा, परम पुरख सदवांयदा। शब्द सुणाए सच तराना, एका राग अलांयदा। एका पीणा एका खाणा, एका मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरे नैणां तेरी झोली पांयदा। कलिजुग

कूड़ा लै अंगड़ाई, रो रो नीर वहांयदा। चारों कुन्ट ख़लक ख़ुदाई, ना कोई धीर धरांयदा। अञ्जील कुराना पई दुहाई, अल्ला राणी मुख शरमांयदा। चार यार करन जुदाई, ना मुहम्मद मूंह वखांयदा। ना कोई कलमा अमाम रिहा पढ़ाई, कायनात ना कोई दिसांयदा। ना कोई जणाए दीन अलाही, रोज़ा बांग ना कोई रखांयदा। सच मसल्ला ना कोई रिहा विछा, ना कोई कूज़ा हथ्थ उठांयदा। ना कोई अजा ना कोई कज़ा, मिटांयदा। पारब्रह्म तेरी इक्क रज़ा, राज़क रहीम आप अख्वांयदा। जुग जुग देवणहारा सज़ा, जुग जुग वेस वटांयदा। जुग जुग जोती जोत जगा, जुग जुग कर्म कमांयदा। जुग जुग वरन गोती लए उपा, जुग जुग वेख वखांयदा। जुग जुग जन्त जीव चोटी लए चढ़ा, जुग जुग आपे ढांयदा। जुग जुग कोट कोट लए भल्ला, कूड़ कूड़े धन्दे लांयदा। जुग जुग वासना खोटी दए भरा, मनमति विकार धरांयदा। जुग जुग गुरमुख साचे सन्त सुहेले इक्क अकेले लए जगा, जागरत दिशा इक्क वखांयदा। सुफन सखोपत लए भुल्ला, तुरीआ मेल मिलांयदा। तुरीआ धाम अगम्म अथाह, लेखा लिख्त ना कोई जणांयदा। पुरख अगम्मा आपे वस्सया आपणे गिरा, नगर खेड़ा आप सुहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ मोती चोग चुगांयदा। पार कराए फड़ फड़ बांह, अधविचकार ना कोई डुबांयदा। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत तेरा नाँ, हरि हरि साचा आप गांयदा। आदि जुगादि सुहाए तेरा थाँ, तेरी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन वेख घर, हरिसंगत मेल मिलांयदा। हरिसंगत हरि नाता जोड़, आपणा कर्म कमाया। इक्क चढ़ाए शब्द घोड़, लोआं पुरीआं पार कराया। दो जहानी जाए बौहड़, जोती जोत करे रुशनाया। सस्सा किला सति पुरख निरँजण लाया एका होड़, एका पौड़ा निरगुण सरगुण मेल मिलाया। दोहां दर द्वार आया दौड़, हँ हँगता दए मिटाया। लग्गी प्रीत ना सके कोई तोड़, गुर शब्दी डोर रखाया। मनमुख जीव दर दवारिउँ देवे होड़, दर दुआरे रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मनमुख गुरमुख वेख वखाया। गुरमुखां हरि प्यार, आपणा आप कराया। मनमुखां मारे मार, चारों कुन्ट दए सजाया। दोहां विचोला आप निरँकार, आपणी करनी रिहा कमाया। गुरमुखां ढोला सुणाए शब्द धुन्कार, सोए रिहा जगाया। बेमुखा रौला पाया विच संसार, दिवस रैण रिहा कुरलाया। खेले खेल अनभोला अपर अपार, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा डंक वजाया।

जरम जरम कर्म प्रभ हथ्थ, हरि वड्याईआ। खेले खेल पुरख समरथ, भेव कोए ना पाईआ। पंज तत्त मानस वथ,

काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोड़ जुड़ाया हड्ड मास नाड़ी रत्त, बणती बणत बणाईआ। अन्दर वस्सया कमलापत, सच सिंघासण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा मानस जग, हरि हरि आप चुकांयदा। जगत विछोड़ा हरि चरन पग, गुरमुख मुख भवांयदा। दर गंवाया उप्पर शाह रग, हरि साचा मूल गवांयदा। आपणी हथ्थीं लाए आपे अग्ग, तग ना कोई तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लिख्या धुर, धुर लेख आपे मस्तक रिहा वेख, लेखा वेख वखाईआ। धुर दा मस्तक लेख लहिणा दर दर होए सुहञ्जणा। पंचम पाया साचा गहिणा, घर खेल साचा सजणा। दरस गंवाया आपणा नैणा, दर आपणा आपे तजणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए पड़दे कज्जणा। ऐड़ा अक्खर अक्खर विचार, रारा राम दुहाईआ। जज्जा जन जग द्वार, ना निउँ लगाईआ। कमाया ध्रो विच संसार, भेव ना जाणे राईआ। तपया मद्ध इक्क अन्गयार, आपणी हथ्थीं बालण डाहीआ। धूंआं मिटे धूंआँधार, आसमानां मुख छुपाईआ। रसन ना आई सीतल धार, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। आत्म तपया इक्क अन्गयार, हउमे रोग सताईआ। घर मन्दिर वेख महल्ल अटार, होया वड गुमराहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे बेपरवाहीआ। आपणे तन हो बलवान, आपणा हुक्म चलाया। ना कोई लेखा शाही धुर फ़रमाण, ना कोई कलम लिखाया। आपणी क्रिया आपे कर आपणा करे नाम प्रधान, आपणा हुक्म चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा वेखे दर, नेत्र नैणां दिस ना आया। मन हँकार जगत तत्त, हउमें रोग जलाया। आपणी वेख आपे कार, आपणा कर्म कमाया। सच सपुत्री होई मुटयांर, कँवल नाता जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे विच समाया।

जग नाता जग बंध्या, परम पुरख करतार। दिस ना आए आत्म अंध्या, भरमे भुल्ले सर्ब संसार। शब्द धार सुहागी छंदिआ, गावणहार सिरजणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे लए उभार। जग नाता जुग जोड़या, जोग जुगत समरथ। वेखे परखे मिट्ठे कौड़या, पंज तत्त काया जगत रथ। गुरमुख साजन आपे बौहड़या, जिस जन रक्खणहारा दे कर हथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन साजन लए रक्ख। जग नाता जग फास है, फांदक फंद फंदाए। गुरमुखां पूरन कराए आस है, आस निरासा ना कोई जाए। चिन्ता रोग सोग करे बन्द खुलास है, बन्दी तोड़ नाम धराए। लेखे लाए काया हड्ड नाड़ी चम्म मास है, पंज तत्त होए सुहाए। निज घर आपणे

आत्म रक्खे वास है, आत्म ब्रह्म जणाए। जन गाया रसन स्वास है, लहिणा देणा मूल चुकाए। किसे हथ्थ ना आए पृथ्मी आकास है, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूँघी कन्दर वेख वखाए। हरिजन मेला शाहो शाबाश है, घर साचे लए मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम धराए। जग नाता जग पेख्या, पेखत पेखत मीत। प्रभ लिखणहारा लेख्या, जुग जुग चलाए रीत। नेत्र लोचण नैण गुरमुख विरले पेख्या, चरन कँवल वखाई सच प्रीत। मनमुख भुल्ले भरम भुलेख्या, हरि दिस ना आया सदा अतीत। लेखे लग्गा ना मुच्छ दाढ़ी केस्सया, पाया गोबिन्द ना हरि हरि मीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आत्म अन्दर परखे नीत। जग नाता जग वेस है, वेस अनेक कराए। हरिजन साचा घर साचे करे इक्क आदेश है, आदि जुगादी लेखे लाए। जन हरि बाल अञ्याणा अलड़ वरेस है, हरि भोले भाउ मिलाए। जगत भुलाए नर नरेश है, नर नरायण दिस ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जुग जुग वेख वखाए। जगत नाता जगत दुःख, जगत जीव विहाज्जया। उज्जल होया ना मात मुख, कूड़ा लाए पाज्जया। सुफल ना करे मात कुक्ख, फिरे भटके नौ दरवाज्जया। सतिगुर पूरा गुरमुख साचे आप आपणी गोदी लए चुक्क, कर किरपा ग़रीब निवाज्जया। मनमुखां मुख पाए थुक्क, अन्तिम पड़दा किसे ना काज्जया। काया बूटा जाए सुक्क, दिस ना आए जिस साजन साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप निवाज्जया। जगत दुःख काया अग्ग, तृखा तृष्ना रही तिहाईआ। मानस हँस होया कग, जूठ झूठ चोग चुगाईआ। पंच तत्त विकारा सरनी गया लग्ग, ढहि ढहि पिठ वढाईआ। दीपक जोती ना गई जग, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। मिल्या मेल ना सूरे सरबग्ग, सरनगत ना कोई वड्याईआ। दरस ना पाया उप्पर शाह रग, शहनशाह बेपरवाहीआ। सति सन्तोख नाम सूत ना बद्धा तग, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। खण्डा शब्द ना फड़या खड़ग खग, चण्ड प्रचण्ड ना कोई उठाईआ। जीव जन्त होए नंग, कलिजुग कूड़ी क्रिया छाईआ। मनुआ फिरे दर मलँघ, अट्ठे पहर अलक्ख जगाईआ। मनमति मंगी मंग, गुरमति रही शरमाईआ। बुध्धी देवे ना कोई संग, नेत्र नीर वहाईआ। पंच विकारा लग्गा जंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत्त रहे लड़ाईआ। मानस जन्म होया भंग, लक्ख चुरासी ना कोई छुडाईआ। हरि चरन दुआरा जो जन वेखे लँघ, मिले मेल बेपरवाहीआ। सुहाए थान आत्म सेजा पलँघ, थान थनंतर वड वड्याईआ। अमृत धार वहाए साची गंग, गंगा गोदावरी मुख भवाईआ। नाम रंगण चाढ़े रंग, काया चोली इक्क रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मेला लए कराईआ। दुःख भुक्ख जगत संताप, हउमे रोग चलाया। ना

कोई जाणे आपणा आप, आपणा आप ना खोज खोजाया। नाता बद्धा माई बाप, भैण भाई कटुम्ब रचाया। हरि हरि मिल्या ना साक, सज्जण सैण दिस ना आया। जगत वासना सुंघे नाक, सच सुगंध ना कोई सुंघाया। रसना रस ना पाया पाक, पतित पवित ना कोई कराया। दोए लोचण रहे झाक, तीजा लोइण ना कोए खुल्हाया। बत्ती दन्द कढ्ढण वाक्, काया मुख सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर दर आपणा वेख वखाया। जगत नाता जगत दु:ख जगत सुहेला, जुग जुग आप कराया। खेले खेल इक्क अकेला, आप आपणा वेस वटाया। आपे गुर आपे चेला, चेला गुर नाम धराया। सदा वसे रंग नवेला, लक्ख चुरासी आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचा दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। पंज तत्त नाड़ी रत्त, अग्नी तत्त जलाया। पंचम विकारा जगत प्यारा बीजे वत, सति सन्तोख ना कोई उपजाया। पंचम करया इक्क अकट्ठ, उलटी गेड़े आपे लट्ठ, धर्म कर्म ना कोई जणाया। फिर फिर थक्के अठसठ, गुर मन्दिर वेखे नट्ठ नट्ठ, आत्म हट्ठ ना कोई रखाया। झूठा बुरज जाणा ढट्ठ, थिर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे एह समझाया। हरिजन साचे शब्द जणा, आपणी बूझ बुझांयदा। नेत्र नैणा नाम कजला पा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द सुहागी गीत सुणा, अनहद ताल वजांयदा। राग अनादी इक्क उपा, आपणे दर सुहांयदा। सेज सुहञ्जणी दए विछा, उप्पर आसण लांयदा। जोत निरँजण सेवा ला, हरि साचा कर्म कमांयदा। दु:ख दर्द भय भंजन नाम धरा, जन भगतां दु:ख कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर मन्दिर वेख वखांयदा। अन्दर मन्दिर डूँघा आसण, हरि साचे आप विछाया। उप्पर बैठ पुरख अबिनाश, आपणा डेरा लाया। हरिजन मेला शाहो शबाश, शाह सुल्ताना वेख वखाया। निज घर आत्म रक्खे वास, निज घर वासी नाउँ धराया। आपणे मण्डल पावे रास, काहना गोपी रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मन्दिर दए सुहाया। हरिजन मन्दिर हरि दुआरा, हरि हरि जोत जगाईआ। आपे वेखे नर निरँकारा, निरगुण रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी साची धारा, अनादी नाद वजाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहारा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर डेरा लाईआ। हरि मन्दिर गुरमुख तेरा काया गढ़, हरि साचे आप सुहाया। निरगुण बैठा अन्दर वड़, दिस किसे ना आया। आपणे पौड़े आपे गया चढ़, ना डण्डा कोई रखाया। जोत सरूपी अग्गे खड़, नूरो नूर करे रुशनाया। गुरमुख साचे लए फड़, आप आपणी गोद उठाया। पंच विकारा जाए झड़, आलस तृष्ना हउमे रोग नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे

दर दर अन्दर मन्दिर खोज खुजाया। अन्दर मन्दिर सच दरबारा, हरि साचे इक्क सुहाया। इक्क अकल्ला कर पसारा, बैठा आसण लाया। दीपक जोती कर उज्यारा, अज्ञान ज्ञान समाया। शब्द सरूपी बन्ने धारा, शब्दी ताल वजाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। शाहो भूप हरि साचा लाड़ा, आत्म सेजा नज़री आया। आपे वेखे सच अखाड़ा, आप आपणा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरे साचे घर, घर साचा आप सुहाया। हरिजन तेरा काया घर, अन्दर अन्दर जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ दित्ता वर, आपणी आप करे रुशनाईआ। ना उह नारी ना उह नर, निरगुण वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरे काया मन्दिर बैठा डगमगाईआ। डगमगाई निरगुण जोत, नर नरायण निरँकारा। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बरन पसारा। ना कोई नगारा ना कोई चोट, ना कोई गावे गावणहारा। ना कोई तन भिबूती बन्ने लंगोट, ना पाणी वेखे जल जल धारा। ना कोई पर्बत चढ़े चोट, ना कोई वेखे महल्ल मुनारा। ना कोई दर्शन पाए कोटी कोट, कोटी कोट ना कोई उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेख घर, घर साचा करे पसारा। साचे घर हरि पसारा, अचरज बणत बणाईआ। पारब्रह्म हरि करनेहारा, करनी रिहा कमाईआ। दस्म दुआरी खोल्ह दुआरा, आप आपणा वेख वखाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा, चार दिवारा ना कोए जणाईआ। शब्द रंगीला पलँघ निवारा, हरि बैठा आपे डाहीआ। गुरमुखां करे सच प्यारा, अट्ठे पहर राह तकाईआ। मेल मिलावा वारो वारा, कलिजुग जीवां दिस ना आईआ। भरमे भुल्ले भरम संसारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए इक्क गुरुदुआरा, गुर बैठा आसण लाईआ। अट्ठे पहर रहे उज्यारा, दीवा बत्ती ना कोई टिकाईआ। अनादी धुन अनहद वजाए सच्ची धुन्कारा, ढोलक छैणा ना कोई खड़काईआ। बोध अगाधी शब्द अपारा, ना कोई ग्रन्थी रिहा पढ़ाईआ। गुरमुखां करे आप प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़े जगत संसारा, जगत प्रीती रहिण ना पाईआ। ना कोई नारी ना कोई कन्त भतारा, पुत्तर धीआं ना धी कोई जवाईआ। जिस जन मिल्या हरि मीत मुरारा, विसर गई दात पराईआ। चरन कँवल ढहि पया चरन दुआरा, प्रभ साचे लाज रखाईआ। मंगे मंग बण भिखारा, आत्म झोली दए भराईआ। सुहाए हरि बंक दुआरा, द्वार बंक आप सुहाईआ। निरगुण रूप निरवैर निरँकारा, निशअक्खर वक्खर डेरा लाईआ। जन भगतां करे लोकमात प्यारा, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखे परखे जन जन हरि हरि साचे लए उठाईआ।

जंगल जूह उजाड़ प्रभाश, हरि हरि रंग रंगाया। जगे जोत पुरख अबिनाश, साचा थान सुहाया। हर घट सतिगुर पूरा रक्खे वास, महल्ल अटल ना कोई जणाया। हरिजन साचे सद वसे पास, दूर नेड़ा ना वेख वखाया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजाया। सन्त सुहेला होया दासी दास, दासन दास नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन साजन वेख वखाया । जंगल जूह जगत पहाड़ा, हरि हरि आसण लाया। हरिभगत वखाए सच अखाड़ा, धरनी धरत सुहाया। मेट मिटाए पंचम धाड़ा, हउमे रोग जलाया। नाड़ बहत्तर वज्जे ताड़ा, अनहद राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख कर्मी कर्म कमाया। जल थल जंगल जूह, हरि हरि जोत जगांयदा। गुरमुखां लोकमात धवाए मुखड़ा मूंह, अमृत नीर बरसांयदा। करे मेहर नदर आए तूहे तूं, तूही तूं गीत अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थल जल वेख वखांयदा। जगत थल तिनका घास, फूलन सेज विछाईआ । पुरख अगम्मा शाहो शबास, बैठा आसण लाईआ। आपणे मण्डल आपणी पावे रास, गोपी काहन आप नचाईआ। हरिजन लेखे लाए रसन स्वास, जिह्वा हरि गुण गाईआ। लहिणा देणा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ फंद कटाईआ। निज दाता निज घर रक्खे वास, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार, जगत जग ना होए उदास, गुर साचा धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थल थल रिहा सुहाईआ। जगत थल जगत खेत हरि साचा बीज बिजांयदा। हरिजन वेखे नेतन नेत, नेत्र ज्ञान दृढ़ांयदा। बुध बिबेकी चेतन्न चेत, चात्रिक तृखा मिटांयदा। भेव अभेदा खोल्ह भेत, अनभव प्रकाश वखांयदा। रुत्त बसन्ती रहे चेत, फूलन बरखा एका लांयदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्त हरिजन करदा आया हेत, नित नवित्त वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत थल दीपक जोती रिहा बल, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जगत थल जगत अस्गाह, हरि हरि आसण लाया। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, गुरमुख ल्ए तराया। सज्जण सुहेला पकड़े बांह, आप आपणी दया कमाया। थिर घर वास जपाए एका नाँ, एका मन्त्र ज्ञान दृढ़ाया। इक्क सुहाए साचा थाँ, थान साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जूह पार कराया। जगत जूह डूँघी कन्दर, हरिजन पार कराईआ। आपे तोड़े लग्गा जन्दर, तन हाटी वेख वखाईआ। मनमुख जीव भौदे बन्दर, हरि रूप दिस ना आईआ। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ बैठे गोरख मच्छन्दर, गुर ज्ञान ना कोई दृढ़ाईआ। माया ममता भागां मन्दड़, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मदिरा मासी जीव गन्दड़, रस रसना गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जूह वेख वखाईआ। जगत जूह डूँघा सागर, गहर गम्भीर समाया। काया

वेखे हरिजन गागर, अमृत ताल भराया। वणज कराए ना सुदागर, एका वस्त झोली पाया। निर्मल कर्म करे उजागर, जो जन आए सरनाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जूह डेरा लाया। जगत जूह काची धार, रैण अन्धेरा छाया। चारों कुन्ट धूंआँधार, रवि ससि रहे सजाया। दीवा बाती ना कोई उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोई सुहाया। कमलापाती ना मिल्या मीत मुरार, नारी कन्त ना कोई हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। जगत टिल्ला उच्च मुनारा, हरि हरि जोत जगाईआ। उप्पर बैठ बेऐब परवरदिगारा, बेपरवाह नाउँ धराईआ। हरिजन साजन पाए सारा, मीत मुरारा सहिज सुखदाईआ। एका देवे नाम अधारा, वस्त अनमोल झोली पाईआ। जोती नूर कर उज्यारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। वरन गोती पार किनारा, बरन बरना ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ । साचा मेला जगत रुक्ख, उलटी जड़ लगाईआ। लेखे लग्गा मानुस मनुख, माया भरम गंवाईआ। सफल कराए मात कुक्ख, जन जननी लेखे लाईआ । रोग निवारे हउमे दु:ख, चिन्ता सोग रहिण ना पाईआ। जगत मिटाए तृष्ना भुक्ख, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए सताईआ। हरिजन बूटा ना जाए सुक्क, अमृत आत्म मुख चुआईआ। मनमुखां मुख पाए थुक्क, जो जन बैठे हरि भुलाईआ। सन्त सुहेले इक्क अकेले जुग जुग सुखणा रहे सुख, मिले मेल सहिज सुखदाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता जन भगतां आपणी गोदी आपे लए चुक्क, देवे मात वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जरम कर्म धर्म गुरमुख उत्तम जाती नाम वरन बरन शंकर ना कोई जणाईआ।

*** १५ भाद्रों २०१५ बिक्रमी करनैल सिंघ दे घर डोगर बस्ती फरीदकोट शहर ***

निरगुण जोत हरि निरँकार, जोती नूर करे रुशनाईआ। आदि अन्ता एका एकँकार, एका कल वरताईआ। लोआं पुरीआं पसर पसार, ब्रह्मण्डां खण्डां वंड वंडाईआ। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। चौदां लोक हट्ट वपार, एका वणज कराईआ। तिन्नां लोकां पहरेदार, सेवक सेव कमाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर करे ख़बरदार, एका शब्द जणाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ । हरि का रूप अगम्म अपार, दिस किसे ना आईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई आकार, पंज तत्त ना मेट मिटाईआ। रंग रूप ना कोई संसार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जुग जुग खेले खेल अपार, जुग करता नाम धराईआ। सतिजुग त्रेता करया पार, द्वापर धार बंधाईआ। कलिजुग अन्तिम

लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका विच संसार, आपणा रिहा लगाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, राज राजानां शाह सुल्तानां दए हुलार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई मारे मार, चारों कुन्टां वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी पावे सार, सत्तां दीपां लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत नूर अल्ला, एका नूर दरसाया। पारब्रह्म प्रभ इक्क अकल्ला, आप आपणा कर्म कमाया। वेख वखाए जलां थलां, जल थल डेरा लाया। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, ऊँच अगम्म समाया। करे खेल घड़ी घड़ी पल पल्ला, जोती जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई हरि रघुराई आप भुलाए कर कर वल छला, भेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंका हरि मेहरवान, निरगुण रूप अख्वांयदा। शब्द गुर कर प्रधान, लोकमात धरांयदा। चार वरन देवे इक्क ज्ञान, ऊँचां नीचां एह समझांयदा। एका पुरख हरि सुल्तान, दूसर कोई दिस ना आंयदा। आदि जुगादी जीवां जन्तां देवे जिया दान, दाता दानी नाम धरांयदा। मेट मिटाए कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई होई वैरान, चारों कुन्ट धूंआँधार करांयदा। मन्दिर मस्जिद गुर दर मढ्ढ सर्ब कुरलान, हरि हरि रूप दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात जोत जगांयदा। निहकलंक कल जामा धार, लोकमात करे रुशनाईआ। राज राजाना दए हुलार, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, हरि साचा रिहा उठाईआ। मनमुखां जीवां मारे मार, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। दर दर घर घर रोवे नारी नार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरमुख विरले करे हरि प्यार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी रिहा जणाईआ। लक्ख चुरासी जगत महल्ला, लोकमात पसारा। हरि वेखणहारा इक्क अकल्ला, जुग जुग लए मात अवतारा। गुरमुखां मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका देवे नाम अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे पार किनारा। कलिजुग तेरा पार किनारा, अन्तिम वेख वखाईआ। चारों कुन्ट हाहाकारा, ना कोई धीर धराईआ। नाता तुटे मुहम्मदी यारा, चार यारी मुख भवाईआ। अञ्जील कुराना आई हारा, ना दीसे कोई सहाईआ। वेद पुराणी करे ख़बरदार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द निशानी इक्क संसार, धुर दरगाही रिहा दिखाईआ। तीर कानी मारे मार, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाईआ। दो जहानी करे विचार, जोत सरूपी बेपरवाहीआ। सृष्ट निधान होई गंवार, हरि का भेव

ना जाणे राईआ। सिक्ख हिन्दू ईसाई मुस्लमानी आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि निरँकार, आपणा आप उपांयदा। जीवां जन्तां पावे सार, साधां सन्तां वेख वखांयदा। राउ रंकां पार किनार, ख़ाकी ख़ाक समांयदा। गुरमुख विरला जनका लाए पार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई शब्द हुलार, हरि आपणा आप दवांयदा। कलिजुग वखाए धुँदूकार, धूंआँधार ना कोई मिटांयदा। काया गढ़ हउमे हँगता भर भण्डार, कलिजुग मार्ग लांयदा। जूठ झूठ वड सिक्दार, साचे तख्त सुहांयदा। धरत मात करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। पुरख अबिनाशी पावे सार, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप उठांयदा। हरिजन साचा उठ उठ जाग, हरि साचे जोत जगाईआ। लोकमात लग्गा भाग, भारत वज्जी वधाईआ। सृष्ट सबाई वेखे हँस काग, कागों काग रहे कुरलाईआ। दुरमति मैल लग्गा दाग, ना सके कोई धुआईआ। माया डस्से डस्सनी नाग, अट्ठे पहर हलकाईआ। दीपक जोत ना जगे चिराग, मन्दिर अन्दर अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। एका जोत सर्ब गुणवन्ता, हरि हरि आप अख्वाया। हरिजन वेखे साचे सन्तां, सतिगुर पुरख मनाया। देवे वड्याई जीआं जन्तां, जिया दान झोली पाया। आप बणावणहारा बणता, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखावे साचे सन्त, दर घर डेरा लाया। साचा सुत सन्त दुलारा, हरि हरि आप उपांयदा। एका घर नाम भण्डारा, लोकमात वरतांयदा। करे कराए करनेहारा, करता पुरख नाउँ धरांयदा। आवण जावण खेल अपारा, आप आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका डंक वजांयदा। निहकलंका आदि निरँजण एका एक अख्वाया। भगत सुहेला साचा सज्जण, लोकमात वेख वखाया। हरिजन कराए साचा मजन, धूढ़ी चरन नुहाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, जिस जन दर्शन पाया। अनहद ताल तलवाड़े वज्जण, राग अनादी एका गाया। नौ दुआरे जगत तजण, घर साचा वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ मिल्या साचा सज्जण, कलिजुग वेला अन्त सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड रिहा उठाया। नौ खण्ड शब्द जैकारा, एका एक सुणांयदा। वरन बरनां पार किनारा, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। इक्क अकल्ला एकँकारा, कायनात समांयदा। जलां थलां वेखे समुंद सागर डूँघी गारा, टिल्ले पर्बत फोल फोलांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर कर पसारा, आप आपणा मुख छुपांयदा। गुरमुख

विरला करे प्यारा, आप आपणा पड़दा लांहयदा। जोती नूर कर उज्यारा, मन्दिर अन्दर डगमगांयदा। देवे शब्द सच्ची धुन्कारा, धुन अनादी ताल वजांयदा। सुणे सुणाए सुनणेहारा, जीवां जन्तां दिस ना आंयदा। भगतन मीता कर प्यारा, हरिभगती मेल मिलांयदा। बैठा रहे इक्क अतीता नर निरँकारा, सच सिँघासण आसण लांयदा। अगम्म अगम्मड़ा करे अगम्मड़ी कारा, अलक्ख अलक्खणा नाउँ रखांयदा। सचखण्ड सुहाए सच दुआरा, थिर घर वासी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जोती जामा वेस वटांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम मूल, हरि साचे आप चुकावणा। लक्ख चुरासी गई भूल, हरि एका मार्ग लावणा। नारी मेला कन्त कन्तूहल, साचा कन्त सुहाग वखावणा। सतिजुग फुलवाड़ी लाए फूल, रुत्त बसन्ती वेख वखावणा। शब्द सिँघासण हरि बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, साचा धाम सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी पूर कराए भावना। कलिजुग तेरी अन्तिम आस, हरि साचा पूर करांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ प्रभास, घर घर डेरा लांयदा। साधां सन्तां वेखे पवण स्वास, रसना जिह्वा कवण गुण गांयदा। कवण बैरागी होए उदासी, कवण त्यागी नाउँ धरांयदा। कवण सुरत सवाणी सोई जागी, शब्द हाणी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा क्रिया कर्म वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, कूड़ा डंक वजाया। चारों कुन्ट एका नाअरा, एका कूक सुणाया। सृष्ट सबाई होए ख्वारा, वेला नेड़े आया। राणी अल्ला लाए नाअरा, चौदां तबकां दए हिलाया। संग मुहम्मद पार किनारा, ना कोई धीर धराया। पुरख अबिनाशी करे खेल अपारा, खेलणहार सृष्ट सबाया। आदिन अन्ता एका एकँकारा, अकल कला अख्वाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, लोकमात लए अंगड़ाया। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, दहि दिशा रिहा भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करता पुरख आप अख्वाया। चौदां लोक चौदां हट्ट, हरि चौदां वेख वखाईआ। चौदां खेल बाज़ीगर नट, स्वांग स्वांगी वरताईआ। चौदां लोक पए भट्ठ, हरि भठयाला एका ताईआ। अन्तिम करन आया कट्ठ, एका दिवस मनाईआ। झूठ मुनारा जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी कोई ना नहाईआ। सृष्ट सबाई गेड़नहारा उलटी लट्ठ, आपे दाता शब्द सलाहीआ। धूंआँधार चौदां हट्ट, पृथ्मी आकाश ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, वेख वखाणे सृष्ट सबाईआ। अल्ला राणी कर प्यार, कलिजुग रूप दरसाया। नेत्र नैण वेख उग्घाड़, चारों कुन्ट होए दुहाया। ईसा मूसा इक्क अखाड़, एका महल्ला दए वसाया। पुरख अबिनाशी आप चढ़ाए अगम्मी धाड़, दिस किसे

ना आया। लुकया रहिण ना देवे कोई झाड़, दहि दिशा फोल फोलाया। अग्नी लग्गे सतारा हाढ़, ना कोई लेखा मेट मिटाया। सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़, आप आपणा हुक्म सुणाया। धरत मात वेखे इक्क अखाड़, नौ खण्ड रूप वटाया। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़, ख़ुदी ख़ुदाई रहिण ना पाया। गुरमुख साजण वेखे साचे लाड़, चारों कुन्ट फोल फोलाया। शब्द घोड़े देवे चाढ़, आप आपणी दया कमाया। थिर घर साचे देवे वाड़, महल्ल अटल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। निहकलंका हरि निरँकारा, एका रूप समांयदा। वेद व्यासा बण लिखारा, आपणी कार कमांयदा। नानक गुर लाया नाअरा, सृष्ट सबाई एह समझांयदा। गुर गोबिन्द बण वणजारा, हरि हरि वणज करांयदा। मंगे मंग अपर अपारा, अकाल पुरख ध्यांअदा। अकाल मूर्त अजूनी रहित दर्द दु:ख भय भंजन प्रभ पावे सारा, दे मति आप समझांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे पार किनारा, प्रभ आपणा राह तकांयदा। निहकलंका लए अवतारा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। सम्बल नगर धाम अपारा, पुरख अबिनाशी डेरा लांयदा। जगे जोत अगम्म अपारा, ज्ञान ज्ञान समांयदा। शब्द धुन वज्जे धुन्कारा, अनहद सेवा लांयदा। राग रागनी ना पायण सारा, वेद पुराण ना भेद चुकांयदा। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी खेल करे न्यारा, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग तेरा दर दुआरा, हरि साचा फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद बिक्रमी आप वडिआंयदा। वीह सद हरि जोत जगा, जोती नूर करे रुशनाईआ। एका एक आप अख्वा, एका नाउँ धराईआ। दूजा दर डेरा ला, द्वार बंक वेख वखाईआ। तीजा नेत्र नैण खुल्हा, आपणा दरस दिखाईआ। चौथे घर गया समा, वीह सौ चार बिक्रमी वज्जी वधाईआ। पंचम मेला सहिज सभा, ब्रह्म रिहा कराईआ। छेवें छप्पर छन्न कोई दिसे ना, हरि बैठा बेपरवाहीआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप जपाए आपणा नाँ, आपणे नाम करे वड्याईआ। अट्ठां तत्तां वेखे थाउँ थाँ, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध होए सहाईआ। नौ दर कोई जीव जन्त भुल्ले ना, वेला गया हथ्थ ना आईआ। दसवां घर बिन गुर पूरे खुल्ह्ले ना, वीह सौ दस बिक्रमी ख़ुशी मनाईआ। पूरे कंडे साचे तोल कोई तुले ना, ना कोई तोले तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वीह सद ग्यारा, एका धारा चार वरनां रिहा चलाईआ। चार वरनां एका रंग, हरि साचे आप रंगाया। अन्दर मन्दिर वजाए सच्चा मृदंग, एका ढोला गाया। अमृत आत्म नुहाए साची गंग, दुरमति मैल रहिण ना पाया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, गऊ ग़रीबां होए सहाया। जगत हँकारी भन्ने काची वंग, शब्द हथौड़ा एका लाया। जन भगतां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, वीह सद बारां मूल चुकाया। सुत सुल्तानी आप बणाए आपणे

५८४ ०७

फर्ज़ंद, आप आपणी गोद उठाया। तेरां तेरा चाढ़े चन्द, नानक तोला तोल तुलाया। राज राजानां शाह सुल्ताना सुणाए आपणा छन्द, सोहँ साचा मंगल गाया। तीजी चेत्र हरि आए गोबिन्द, कोट फरीद डेरा लाया। भेव ना पायण, राज राजान वड नरिंद, नर हरि साचा दिस ना आया। पारब्रह्म प्रभ जोत जगाई विच हिन्द, निहकलंका नाउँ रखाया। शब्द चलाए धार सागर सिन्ध, मनमुख जीवां दए रुढ़ाया। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, आप आपणा हुक्म सुणाया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख टिकाया। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जुग जुग कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद तेरां तेरी धार चलाया। वीह सद चौदां तेरी धार, एका इक्की पाईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, वंडन वंड वंडाईआ। निक्की तिक्खी एका धार, पारब्रह्म कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात मार झात, एका डंका रिहा वजाईआ। शब्द डंका हरि भगवाना, एका एक वजाया। उठया जोधा सूरबीर वड मरदाना, शाह सुल्ताना दए हिलाया। सोहँ चिल्ला रसना तीर कमाना, सस्सा किला इक्क बणाया। हँ हँगता मेट मिटाणा, मेटणहार आप रघुराया। कलिजुग तेरा वेखे कूड़ कुड़यारा प्रधाना, चारों कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेस वटाया। वीह सद पन्दरां हरि हरि निरँकारा, आपणी कल वरतांयदा। उठया जोधा सूर बली बलकारा, शब्द खण्डा इक्क चमकांयदा। खण्ड ब्रह्मण्ड देवे हुलारा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी करे ख्वारा, लेखा लिख्त लिखांयदा। कलिजुग रावण हो त्यारा, आपणा दर सुहांयदा। दिवस रैण मारे ललकारा, मन मति बुध नाल रलांयदा। पुरख अबिनाशी खेल न्यारा, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। आपे रामां राम अवतारा, लंका गढ़ तुड़ांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। चरन छुहाए दिल्ली दरबारा, शाह भबीखन आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पन्दरां देवे वर, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। लेखा लिख्त हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखांयदा। वेद पुराण अञ्जील कुरान शास्त्र सिमरत ना सके विचार, भेव अभेदा भेव छुपाया। खाणी बाणी पढ़ पढ़ गए हार, पार किनारा दिस ना आया। ज्ञानी ध्यानी रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। वड विद्वानी होइण ख्वार, हरि का रूप दिस ना आया। पंडत पांधे कर विचार, तिलक लिलाटी रहे लगाया। पंडत काशी ना होए अधार, ठग्ग ठगोरी पाया। कलमा अमाम ना कोई यार, नबी रसूला ना कोई सहाया। ऐनलहक ना कोई विचार, मुकामे हक्क ना कोई ख़ुदाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई इक्क दूजे दा राह रहे तक्क, दर द्वार ना कोई खुल्हाया। अन्तिम मेला होणा विच ढक्क, धरत मात रही बुलाया।

लाड़ी मौत नकेल पाए नक्क, धर्म दुआरा दए दिखाया। कूड़ कुड़यारा फल गया पक्क, प्रभ साचा वेखण आया। महल्ल अटल ना सके कोई रक्ख, राज राजान ना कोई सुहाया। जोगी जतीए अभ्यासी हठीए चढ़ चढ़ पौड़े गए थक्क, हरि का पौड़ा दिस ना आया। ब्रह्मण गौड़े राह रहे तक्क, पूत सपूता फेरा पाया। नीले वाला करे वक्ख, नील धारी पार कराया। सृष्ट सबाई भाण्डे सक्ख, नाम भण्डारा दिस ना आया। पारब्रह्म हो प्रतक्ख, नेत्र लोचण नैणां वेखण आया। वेखे भाग लग्गा कुली कक्ख, कवण गुरमुख डेरा लाया। लक्ख चुरासी विच्चों लए रक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। सम्मत पन्दरां देवणहारा साची वथ्थ, एका नाम झोली पाया। समरथ कल आपे समरथ, जगत निवासी नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद बिक्रमी कर विचार, सृष्ट सबाई दए हुलार, नाम हुलारा एका लाया। सम्मत पन्दरां पन्दरां कत्तक, लंका गढ़ चढ़ाईआ। ना कोई जाणे पांधा पंडत, कवण कूटे हरि साचे जोत जगाईआ। ना कोई जाणे जेरज अंडज, पंज तत्त ना कोई रुशनाईआ। ना कोई वखाए साची संगत, हरि हरि रूप दिस ना आईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद बैठे नंगत, तृष्ना झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे खलक ख़ुदाईआ। ख़लक ख़ुदाई तेरा रूप, हरि साचा वेख वखांयदा। सदी चौधवीं चौथी कूट, लहिंदी दिशा फेरा पांयदा। ज़िमी अस्माना पाड़ा जाए फूट, ना कोई बंधन बंध बंधांयदा। दिन दिहाड़े पए लुट्ट, सम्मत सोलां राह तकांयदा। जगत चोग जाए निखुट, ना कोई आलणिउँ डिगे बोट उठांयदा। आपणी हथ्थीं जड़ देवे पुट्ट, ना कोई बूटा मात धरांयदा। शौह दरयाए दए सुट्ट, लहिंदी धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां सोलां तन शृंगार, निहकलंकी लै अवतार, जोती नूर डगमगांयदा। जोती नूर कर उजाला, सम्मत सोला करे रुशनाईआ। प्रगट होए गुर गोपाला, नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे वधाईआ। सत्तां दीपां जगाए दीप माला, जोती नूर डगमगाईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्याना, नेत्र नैण खुल्हाईआ। भोला नाथ होए सवाधाना, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा वेख वखाना, निउँ निउँ सीस झुकाया। लोआं पुरीआं करे पछाना, जोती जोत वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई बन्न्हे गाना, हाढ़ सतारां सगन मनाईआ। राज राजान दर दरबान ना कोई वखाना, सीस ताज ना कोई टिकाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ मिले टिकाना, राज महल्ल ना लेफ तलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां देवे वर, सृष्ट सबाई करे हलकाईआ। सृष्ट सबाई तेरी धार, हरि साचे आप चलाईआ। घर घर रोवे नर नार, नारी नर रिहा कुरलाईआ। जीव जन्त होए गंवार, साध सन्त रसन हलकाईआ। माया

मदि मते भरे भण्डार, नाम वस्त ना कोई रखाईआ। जगत कामना कर श्रृंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। पारब्रह्म ना पाए सार, गुर पूरा दिस ना आईआ। हउमे हँगता गढ़ हँकार काया तन सजाईआ। निरगुण जोत ना जगे अगम्म अपार, बिन दीवा बाती ना होए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया करया जगत पसार, झूठा बंधन बंध बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां बदले चोला सृष्ट सबाई खेले होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। लाल गुलाल रंग चलूल, हरि ख़ाकी ख़ाक रंगांयदा। शिव शंकर सुट्टे हथ्थ त्रिसूल, ब्रह्मा मुख भवांयदा। करोड़ तेतीसा ना बरसे फूल, ना कोई सेज हंढांयदा। सच पंघूड़ा ना कोई लए झूल, नाम हुलारा ना कोई लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती देवे वर, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। भाणा हथ्थ करतार, भेव कोई ना पाया। जुग जुग लहिणा देणा रिहा कर्ज़ उतार, चारे पग वेख वखाया। कलिजुग आयू लक्ख चार बत्ती हज़ार, पंज पंज विच समाया। पंज पंज मारे मार, पंचम नरायण मेट मिटाया। पंचम पंचम भुल्लया संसार, साचा मार्ग गए भुलाया। भरमे भुल्लया जीव गंवार, जीव धर्म ना कोई धराया। कर्मी कर्म ना करे विचार, कुकर्म ा लेख लिखाया। हरि दाता बेपरवाह सृष्ट सबाई वेखणहार, वेखणहार दिस ना आया। सेवक सेवा लाए आप आप उपाए धर्म द्वार, चित्रगुप्त संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सोलां दए वड्आया। सम्मत सोला कर विचार, राए धर्म उठ धाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, नेत्र रो रो नीर वहाया। खाली भर मेरे भण्डार, दर साचा दए सुहाया। पारब्रह्म सुण पुकार, दे मति एह समझाया। खोल्ह किवाड़ सतारां हाढ़, सम्मत सोलां दिन मनाया। धरत मात वेख अखाड़, चारों कुन्ट दए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सगन मनाया। चित्रगुप्त कर विचार, आपणा मता पकांयदा। लेखा वेखे सर्ब संसार, साचे कंडे तोल तुलांयदा। सच सुच्च ना करे कोई वणज वापार, जूठ झूठ झोली भरांयदा। अन्तिम बेड़ा होया त्यार, कलिजुग कूड़ा आप चलांयदा। नाल रलाया मुहम्मदी यार, चार यारी जीव इक्क वखांयदा। संसार सागर ना दीसे पार किनार, पार किनारा ना कोई जणांयदा। सम्मत सतारां हुलारा दए मार, एका धक्का लांयदा। सृष्ट सबाई दो दो धार, वक्ख वक्ख करांयदा। हो प्रतक्ख विच संसार, रूसा चीना चरन छुहांयदा। सम्मत सोलां लाए नाअर, लाहौर शहर वेख वखांयदा। उम्मती उम्मत हो त्यार, पीर दस्तगीरां एह समझांयदा। शाह हकीरां करे ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजांयदा। सम्मत सतारां सत्त रंग, सति सति आप समाया। भेख वटाए शब्द मलँघ,

५८७
०७

गुर गुर रूप दरसाया। सृष्ट सबाई करे नंग, तन कपड़ रहिण ना पाया। सील सन्तोख सति रहिण ना पाए राज राजान शाह सुल्तान दर दर मंगण मंग, दर भिच्छया कोई ना पाया। गुरमुख मिले मेल हरि सूरे सरबंग, पूर्ब लहिणा झोली दए भराया। चरन प्रीती मंगे साची मंग, चरन नाता जोड़ जुड़ाया। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत सतारां वेख वखाया। सत सतारां वेख पुकार, सति सति जणाईआ। करता पुरख करे कराए आपणी कार, करनी करता नाउँ धराईआ। मरनी मरे ना विच संसार, जन्म मरन विच ना आईआ। आदि जुगादी जुग जुग कार, जन भगतां होए सहाईआ। खोजे खोज शब्द ब्रह्मादी ब्रह्माद डेरा लाईआ। बाण चलाए बोध अगाध, बोध अगाधी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अट्ठ अठारां दए उठाईआ। वीह सद अठारां तेरा लेख, हरि साचे आप लिखाया। ना कोई लाए मस्तक मेख, ना कोई भरम गंवाया। ना कोई सहाई औल्या पीर शेख़, पीर फ़कीर ना कोए दसाया। ना कोई पंडत पांधा नेत्र लए पेख, ज्ञान नेत्र ना कोई खुल्हाया। ना कोई ग्रन्थी पन्थी जाणे धारी केस, दस दस्मेस फेरा पाया। ना कोई विचारे ब्रह्मा विष्न महेष, गणपति गणेश ना कोई दसाया। पारब्रह्म दर दरवेश, लोकमात आपणी अलक्ख रिहा जगाया। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई वंड वंडाया। आदि जुगादि जुग जुग रहे सदा हमेश, आवण जावण चलत चलाया। पारब्रह्म प्रभ सदा आदेश, निरगुण सरगुण विच समाया। सरगुण बणाए रिखी केश, जगत गवर्धन लए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सद अठारां वेख वखाया। वीह सद अठारां गंगा धार, जल जल रूप समाया। मेघा बरसे कर प्यार, अन्दर अन्दर आसण दए तजाया। खिज़र रोवे ज़ारो ज़ार, खवाजा ख़ुशी मनाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका धार, जल धारा दए रुढ़ाया। गुरमुख साचे लए उभार, साचे बेड़े नाम चढ़ाया। सोहँ गाइन रसना जै जैकार, जल चरन छोह मुड़ जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण वेखण आया। सम्मत उनीसा, अकल कल आपणी आप रखांयदा। ना कोई पढ़े कुरान हदीसा, तीस बतीसा ना कोई सुहांयदा। अल्ला राणी खाली खीसा, खाली हथ्थ फिरांयदा। वक्त चुकाए मूसा ईसा, चौदां तबकां मेट मिटांयदा। माया राणी त्रैगुण पीसन पीसा, कलिजुग चक्की आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत उनीसा ना कोई दीसे मुस्लिम सुन्नी, ना कोई चोटी मूंड मुंडांयदा। सम्मत बीस बीस सद धारा, हरि हरि जोत जगाए। वेख वखाए जमन किनारा, आप आपणा चरन छुहाए दिल्ली दरबारा, नौ खण्ड करे रुशनाए। नौ खण्ड ढहि पए दुआरा, प्रभ साचा वेख वखाए। शब्द सुणाए इक्क जैकारा, सो पुरख निरँजण

लेख लिखाए। हँ हँगता दूर किनारा, दूई द्वैती रहिण ना पाए। होए मंगता सत्त दीप विचारा, अग्गे आपणी झोली डाहे। सतिगुर पूरा भरे भण्डारा, नाम भिच्छया इक्क वखाए। इक्क सुणाए सच्ची धुन्कारा, एका ताल वजाए। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई आप ल्याए सच दुआरा, एका कलमा दए पढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा हरि जगदीसा आपणे छत्र झुलाए सीसा, पन्दरां कत्तक वेख वखाए। वीह सद बीस पन्दरां कत्तक पन्दरां सोहे सीस हरि ताजा। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी, नाम धराए ग़रीब निवाजा। ना कोई दीसे मदिरा मासी, सृष्ट सबाई एका काजा। ना कोई बोले पंडत कासी, मक्का मदीना ना कोई हाजी हाजा। गुरमुख वेखे शब्द स्वासी, हरि चढ़या साचे ताजा। जोत जगाए घनक पुर वासी, सतिजुग रक्खे साची लाजा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा साजण साजा। साजण साज गुरू ग़रीब निवाज, गोबिन्द रूप वटाया। प्रगट होया देस माझ, सम्बल नगरी आसण लाया। दो जहानां रचया काज, लोआं पुरीआं वेख वखाया। सतिजुग चलाए सच जहाज़, सोहँ चप्पू एका लाया। चार वरन सुणाए इक्क अवाज़, एका ज्ञान दृढ़ाया। धुरदरगाही देवे साचा दाज, धुरदरगाही लै के आया। ऊँचां नीचां राउ रंकां आप बणाए इक्क समाज, ना कोई वंडन वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद इक्की तेरी रक्खे धार तिक्खी, नौ खण्ड पृथ्मी निक्की सिक्खी लए बणाया। नौ खण्ड पृथ्मी एका सिख्या हरि साचा दए सिखाईआ। सृष्ट सबाई दिसे मिथ्या, थिर कोई कहिण न पाईआ। जुग जुग लेखा लिखणहार प्रभ लिख्या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साची करे पढ़ाईआ। सतिजुग साची सतिगुर धार आपणी आप चलांयदा। चार वरनां इक्क प्यार, एका नाम सुणांयदा। ज़ात पात पार किनार, वरन बरन ना कोई रखांयदा। क्षत्री ब्रह्मण वैश शूद्र ना देवे कोई दुरकार, ना कोई मुख भवांयदा। ना कोई धन धनाड करे हँकार, माया भण्डार ना कोई भरांयदा। जगत विद्या ना करे कोई विचार, ब्रह्म विद्या इक्क सिखांयदा। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सांतक सति वखांयदा। धीरज यति बन्न्हे विच संसार, सति सन्तोख मोख रखांयदा। देवे मति आप निरँकार, गुरमति एह समझांयदा। द्वैती दूई मेटे फट, डूँघी गार वेख वखांयदा। एका वणज एका हट्ट, दूजा हट्ट ना कोई रखांयदा। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, मन्दिर मस्जिद ना कोई सुहांयदा। प्रभ दरस दिखाए निरगुण जोत हो प्रगट, सरगुण विच समांयदा। दीपक जगे लट लट, जोती जोत उपांयदा। वेख वखाए घट घट, ना कोई पड़दा पांयदा। वीह सद इक्की तेरे नगारे शब्द अगम्मी लग्गे सट्ट, चारों कुन्ट सुणांयदा। शब्द चोट सच नगारे, हरि साचे आप

लगाईआ। करे खेल अगम्म अपारे, भेव कोए ना पाईआ। वेद कतेब लिख लिख थक्के हारे, हरि का रूप ना कोई दरसाईआ। पढ़ पढ़ भरे भण्डारे, नाम भण्डारा दिस ना आईआ। चढ़ चढ़ बैठे उच्च चुबारे, जगत महल्ल सुहाईआ। अन्दर मन्दिर ना कोई मिलावे नर निरँकारे, घर बैठा बेपरवाहीआ। वीह सद इक्की आप खुल्हाए बन्द किवाड़े, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। सतिजुग तेरी साची नींह रक्खे सतारां हाढ़े, कलिजुग लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गुण वड्डी वड्याईआ।

* १६ भाद्रों २०१५ बिक्रमी मकंद सिँघ दे घर
पिण्ड महराज ज़िला बठिंडा *

आदि निरँजण जोत सरूप, हरि हरि निरंकारया। राज राजान शाह सुल्तान वड वड भूप, पारब्रह्म बेअन्त परवरदिगारया। ना कोई रंग ना कोई रूप, ना कोई रेख वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा आप उपा रिहा। आदि पुरख हरि भगवाना, एका एकँकारा। एका जोत जगे महाना, रूप रंग अपारा। खेले खेल हरि महाना, ना कोई लेखा लेख विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे पसारा। आदि पुरख हरि भगवन्त, एका एक अख्वाया। एका एक आदि अन्त, एका रंग रंगाया। आप बणाए आपणी बणत, आप आपणी रचन रचाया। आपे बणया आपणा कन्त, आप आपणी सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण रूप उपाया। निरगुण रूप साची धार, हरि आपणी आप उपाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा संग रखाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणा कर पसार, वेखणहारा आप हो जाईआ। आप आपणा नाउँ धर निरँकार, आप आपणा ल्ए बुलाईआ। आप आपणा करे ख़बरदार, आप आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत कर उजाला, हरि आपणा कर्म कमाया। आप आपणा बण दीन दयाला, दया निध नाउँ रखाया। आप आपणी सुहाए धर्मसाला, आप आपणा दर वखाया। आप आपणा तोड़ जंजाला, आप आपणा बन्द कटाया। आप आपणा खेले खेल निराला, खेलणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाया। जोती नूर बेपरवाह, एका एक अख्वाया। आपे जाणे आपणा राह, आपे मार्ग लाया। आप आपणा बण मलाह, आपे बेड़ा रिहा चलाया। आप आपणी दए सलाह, सिफ्त सलाह ना

कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। निरगुण जोत पुरख अबिनाश, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा होया दास, आप आपणी सेव कमाईआ। आप आपणी पाए रास, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा करे बिलास, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख गहर गम्भीर, एका एक अख्वाया। आपे दाता जोधा सूरबीर, सूरबीर नाम धराया। आपे आपणे घर चोटी चढ़े अख़ीर, दूसर दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धराया। आदि पुरख दर्द दुःख भय भंजन, आपणा रोग मिटांयदा। आप आपणा बणया सज्जण, मीत मुरारा आप अख्वांयदा। आपे होया पड़दे कज्जण, आपणा पड़दा आपे पांयदा। आप आपणा करे मजन, आप आपणा ताल सुहांयदा। आप आपणे चढ़े जहाजन, आप आपणा चप्पू लांयदा। आप आपणा बणया राजन, राजन राजान आप अख्वांयदा। आप आपणा रचया काजन, करता पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर इक्क चमकांयदा। जोती नूर कर आकार, आपणा कर्म कमाया। आप आपणी पाए सार, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणी बणत बणाया। आप आपणा महल्ल लए उसार, आप आपणा आसण लाया। आप सुहाए आपणा दर दरबार, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा खेल कर करतार, करनी करता आप अख्वाया। आप आपणा घाड़न घड़ अपर अपार, आप आपणा बाढी नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वसे आपणे घर, घर साचा इक्क सुहाया। घर महल्ल उच्च अटारी, हरि आपणी आप बणाईआ। जगे जोत इक्क निरँकारी, निरगुण धारा इक, वखाईआ। इक्क अकल्ला एका एकँकारी, एका खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वस्सया घर, आप आपणा मेल मिलाईआ। आदि पुरख हरि हरि मेला, पारब्रह्म कराया। आप आपणा बण सज्जण सुहेला, साजण मीत नाम धराया। आप आपणा जाणे वेला, आप आपणा लए उपाया। अचरज खेल आप आपणी आपे खेला, खेलणहार दिस ना आया। आप आपणे रंग रवे नवेला, रूप रंग ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका दर, एका एका घर सुहाया। घर सुहाया आदि निरँजण, आपणा कर्म कमाया। आपणे नेत्र पाए अंजन, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे भाग लगाया। साचा घर हरि अवल्ला, एका एक उपाया। एका बैठा रहे अकल्ला, एका वेख वखाया। एका जोती आपणी रल्ला, एका जोती नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आप आपणा देवे वर, आप

आपणी झोली अग्गे डाहया। देवे वर हरि दातारा, आपणा कर्म कमांयदा। आपणे दर बण भिखारा, दर आपणे सगन मनांयदा। आपणी जोती आपे करे निमस्कारा, आपे सीस निवांयदा। आपणा भरे आप भण्डारा, आपे हरि वरतांयदा। आप सुहाए आपणा बंक दुआरा, थिर घर साचा नाउँ रखांयदा। थिर घर साचा सच मुनारा, चार दिवार ना कोई रखांयदा। छप्पर छन्न ना कोई उसारा, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। अनभव प्रकाश कर उज्यारा, नूरो नूर समांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे कारा, अगम्म अगम्मड़े धाम टिकांयदा। उप्पर बैठ सच्ची सरकारा, सच तख्त सुल्तान सुहांयदा। नाउँ नरायण नर निरँकारा, अकल कला वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, भेव कोई ना पांयदा। आदि पुरख हो उज्यारा, आपणी धार चलांयदा। अकाल पुरख खेल अपारा, आपणी खेल खिलांयदा। करता करे करनी करनेहारा, कादर करता नाउँ धरांयदा। मरनी मरे ना परवरदिगारा, ना कोई मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख घर, सच सिँघासण आसण लांयदा। थिर घर साचा धुर दरबारा, हरि हरि आप उपाया। उप्पर बैठ पुरख करतारा, आप आपणा वेख वखाया। निरगुण जोती नूर अपारा, नूरो नूर समाया। आपणी इच्छया पाए भिच्छया भर भण्डारा, आपणा लहिणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख साचे हरि, घर साचे आसण लाया। थिर घर साचे जोत जगा, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। सच सिँघासण बैठा बेपरवाह, आप आपणा मता पकाईआ। आप आपणी दए सलाह, आपे बूझ बुझाईआ। आप आपणा नारी रूप वटा, कन्त कन्तूहल आप हो जाईआ। आपणी सेजा आप विछा, आपे रिहा हंढाईआ। निरगुण निरगुण विच दए टिका, निरगुण निरगुण करे कुड़माईआ। निरगुण निरगुण दए उपा, निरगुण दए वधाईआ। निरगुण आपणा नाउँ धरा, आपे रिहा सुणाईआ। निरगुण आपणी सुफल कुक्ख आप करा, आप आपणी दए वधाईआ। शब्द सुत बणत बणा, जोती मात दए वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपणी करनी रिहा कमाईआ। थिर घर वसाए साचा थाँ, शब्द सरूपी नाअरा लाईआ। शब्द सुत बद्धा नाता, माँ पिता पूत वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख वस्सया घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, एका एक डगमगाईआ। थिर घर साचा धुर दरबारा, थान थनंतर सोहया। आपे वेखे पुरख करतारा, ना कोई दूसर हूआ ना होया। करे खेल अगम्म अपारा, आप आपणा दए ढोआ। शब्द सुत सच दुलारा, आदि जुगादि नवां नरोआ। अबिनाशी करता करे खेल अपारा, एका अमृत मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा दर, दर द्वार ना कोई सुहाईआ। दर द्वार ग़रीब निवाज़, एका एक सुहाया। आप दरबान आपणी मारे आपे आवाज़, आप आपणा लए जगाया। आप आपणा रचे काज, आप आपणी

५६२
०७

रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाणा श्री भगवाना, आप आपणा हुक्म सुणाया। साचा सुत हरि उठा, एका राग सुणाया। एका दूजा भेव चुका, एका मार्ग लाया। एका साचा नाउँ रखा, एका डंक वजाया। एका बंक दुआरा दए सुहा, एका धाम वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, थिर घर साचे आसण लाया। शब्द सुत दे हुलारा, आपणा कर्म कमांयदा। शब्द अगम्मी एका धारा, एका आप सुणांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लोआं पुरीआं कर पसारा, आकाश प्रकाश रखांयदा। गगन मण्डल कर त्यारा, रवि ससि उपांयदा। धरनी धर उप्पर जल धारा, शब्दी शब्द बंधांयदा। शब्द सुत वड बलकारा, चार कंट दहि दिशा फेरी पांयदा। आपणा दए आप सहारा, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे अन्दर आपे बाहरा, गुप्त ज़ाहर आप हो जांयदा। आपे करता पुरख हरि करतारा, नर निरँकारा आप अखवांयदा। आप आपणा वेख पसारा, आपे लेख लिखांयदा। आप आपणे घर बण वणजारा, आप आपणा वणज करांयदा। आपणा देवे नाम अधारा, नाम अधारी आप अखवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, एका कर्म कमांयदा। एका हरि इक्क वरतंता, एका रिहा कराईआ। एका जोत श्री भगवन्ता, निरगुण रूप समाईआ। एका बैठा रहे इक्क अकन्ता, एका वेख वखाईआ। एका महिमा अगणत अगणता, एका लेखा विच ना आईआ। एका खेले खेल आदिन अन्ता, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। एका जोत हरि भगवन्ता, थिर घर करे रुशनाईआ। थिर घर साचा धाम सुहंता, आप आपणी बणत बणाईआ। बणत बणाए साचा कन्ता, जोती नारी ख़ुशी मनाईआ। पूत सपूता वड धनवन्ता, शब्दी नाउँ धराईआ। अकाल पुरख होए पति पतिवन्ता, पतित पावण नाम धराईआ। जाणे भेव अगम्म अगम्मता, अगम्म पुरख वड्याईआ। अलक्ख अलक्खणा होए मंगता, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड खण्ड आपे रंगता, कोटन कोट वखाईआ। आपणा दुआरा आपे लँघदा, आपे पार कराईआ। आपणे अस्व आपणा तंग आपे कसदा, शाह अस्वार आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मात पताल आकाश रिहा सुहाईआ। मात पताल हरि बणत बणा, शब्दी शब्द कमाया। चौदां हट्ट दए खुल्ह्ा, चोदां लोक जणाया। रवि ससि लए लगा, सेवक सेवा लाया। ब्रह्मा वेता वेख वखा, पारब्रह्म ब्रह्म उपजाया। त्रैगुण माया झोली पा, राजस तामस सांतक सति वरताया। पंज पंजी मेल मिला, किरती किरत कमाया। निरगुण आपणा खेल खिला, मन मति बुध लए प्रनाया। अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश लए सुहा, आपे खेल खिलाया। आपणी बाती आपणा दीवा आप जगा, आपे करे रुशनाया। आपणा कमलापाती आप मना, आपणी सेजे आसण लाया। आपणे दर दुआरे लए सुहा, नौ दरवाजे खोल्ह् खुल्ह्ाया। आपणा पड़दा आपे लए पा, आप

आपणा बन्द कराया। पंज तत्त हरि वंड वंडा, महल्ल अटल सुहाया। घर विच घर ल्या बणा, हरि साचे डेरा लाया। जोती नूर डगमगा, निरगुण वेस वटाया। अमृत ताल आप सुहा, अन्तर आप भराया। राग अनादी रहे सुणा, धुन अनादी रिहा वजाया। शब्द ब्रह्मादी खोज खुजा, अनहद वेख वखाया। डूँघी भवरी दए भुला, आप आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख वखाया। थिर घर सच द्वार दरवाज़ा खोल्, हरि आपणी खेल खिलाईआ। शब्द अनादी आपे बोल, ब्रह्मादी गया समाईआ। आदि जुगादी वज्जे ढोल, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव तोले आपणे तोल, कंडा आपणे हथ्थ रखाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रिहा एका मुख सलाहीआ। लक्ख चुरासी गया मौल, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अमृत भरया साचे कौल, कँवल नाभी मुख भवाईआ। आप सुहाए धवल धौल, धर धरनी वेख वखाईआ। इक्क अतीता रिहा अडोल, डोल कदे ना जाईआ। हर घट अन्दर वस्सया कोल, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख घर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। लोकमात कर उज्यारा, पंज तत्त सुहाया। निरगुण रूप कर पसारा, सरगुण मेल मिलाया। शब्द विचोला बण करतारा, साचा खेल खिलाया। अन्दर मन्दिर पावे सारा, आपे खोज खोजाया। सृष्ट चलाए आपणी धारा, दो दो मुख भवाया। नौ दस कर प्यारा, ग्यारां बीस वेख वखाया। तीस नूर कर उज्यारा, चार करे कुड़माया। मानस देही खेल अपारा, गगन मण्डल दए सुहाया। अन्दर मन्दिर इक्क चुबारा, हरि साचे आसण लाया। एका पड़दा पाया भारा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा वेख वखाया। सृष्ट सबाई बन्ने धारा, मार्ग राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख घर घर वसेरा आप कराया। घर वसेरा सर्ब सुख दाता, आदि निरँजण दीना। ज्ञान ध्यान होए ज्ञाता, आपणी रसना आपे चीना। आपे रक्खे उत्तम ज़ाता, आपे मज़्बी दीना। आपे पुच्छणहारा वाता, आपे अक्खर वक्खर वक्ख कीना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात खेले खेल वड रीता। खेले खेल नर निरँकारा, आदि जुगादि समाया। शब्द जोत जोत शब्द भेव न्यारा, हथ्थ किसे ना आया। शब्द डंका इक्क नगारा, जन भगतां वंड वंडाया। मेट मिटाए पंज विकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना नेड़े आया। आसा तृष्ना पार किनारा, हउमे रोग ना कोई सताया। नेत्र नैण लोचन एका हरि हरि दिसना, दूसर दिस कोई ना पाया। त्रैगुण माया कोई ना चाढ़े विसना, जगत जंजाल ना कोई बंधाया। सेवक सेव लगाए ब्रह्मा शिव विष्ना, सेवक सेवा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात जोत करे रुशनाया। लोकमात हरि बणत बणा, जीव जन्त उपाया।

साचे सन्त बूझ बुझा, सति सरूप दरसाया। आपणी महिमा आप जणा, आपणा नाउँ वड्आया। आपणे भाणे आप समा, हरि भाणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात जोत धर भगत भगवन्त मेल मिलाया। भगतन मेला सच द्वार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म लै अवतार, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। निरगुण रूप अपर अपार, सरगुण खेल खिलाईआ। सरगुण बद्धा मोह प्यार, तन्दन तन्द बंधाईआ। शब्द गुर वड बलकार, होए मात सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाउँ करे रुशनाईआ। आदि पुरख दया कमा, आपणी जोत जगांयदा। साध सन्त सेवा ला, गुर सतिगुर वेस वटांयदा। धर्मी धर्म इक्क कमा, धरत धवल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा लिख्त भविख्त आपे आप लिखांयदा। आपणा लेखा बण लिखारा, आपे रिहा लिखाया। ब्रह्मा वेता बण लिखारा, चारे वेदां दए जणाया। चारे करे पार किनारा, चारे वंड वंडाया। चार चार दर दरबारा, दर दरबान चार रखाया। चार घर पावे सारा, चार महल्ल करे रुशनाया। चार दीवार दए अधारा, सृष्ट सबाई पड़दा पाया। चार युग कर पसारा, चार यारी इक्क कराया। चारे विद्या कर उज्यारा, एका शब्द पढ़ाया। चारे मुख गायण वारो वारा, अट्ठे नेत्र वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात खोल्ह दर, आप आपणा रंग रंगाया। चार युग वंड वंडा, हरि आपणी बणत बणांयदा। कर्म धर्म पल्ले गंढु बन्न्हा, साचा भार चुकांयदा। जेरज अंड वेख वखा, उत्भुज सेत्ज फोल फोलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा रूप वटांयदा। जुग जुग साचे साचा रंग हरि साचे आप चढ़ाया। एका नाम वज्जे मृदंग, ना कोई दूसर होर सुणाया। एका कट्टणहारा भुक्ख नंग, गुर पीर ना कोए मनाया। एका एक दरवाजा बैठा लँघ, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाया। इक्क सुणाए छन्द, अनहद ताल वजाया। नाम रंगीले बैठ पलँघ, साचा सगन मनाया। सन्त सुहेले इक्क अकेले मंगी मंग, हरि नेत्र दर्शन पाया। मानस जन्म ना होए भंग, काची वंग ना कोई तुड़ाया। नाम तन्दन बन्न्हे तन्द एका डोरी पाया। नाड़ बहत्तर ख़ुशी ख़ुशी बन्द बन्द, तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ जुड़ाया। आत्म ढाए दूई द्वैती कंध, बजर कपाटी पड़दा लाहया। इक्क उपजाए परमानंद, परम पुरख अख्वाया। भगत सुहेला सदा बख्शंद, लोकमात करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। जोत निरँकार जगत महल्ला, आपे वेख वखाईआ। आपे वस्सया जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत रिहा समाईआ। आपे जाणे निहचल धाम अटला, ऊँच अगम्म अथाह दाता बेपरवाहीआ। आपे दो जहानी करणहारा सच न्याँ, सच तख्त सुल्तान सच सिक्दार अख्वाईआ। आपे जाणे जणाए आपणा नाँ, आप आपणा नाउँ

धराईआ। आपे वेखे थाउँ थाँ, गगन गगनंतर फोल फोलाईआ। लोआं पुरीआं पकड़े बांह, पुरी शिव देवत सुर सोया कोई रहिण ना पाईआ। लोकमात मार झात, जन भगतां वेख वखाईआ। शब्द देवे साची दात, वड दाता बेपरवाहीआ। सुफल कराए कुक्ख धरत मात, आप आपणा वेस वटाईआ। पंज तत्त विछाए साची खाट, उप्पर आपणा आसण लाईआ। मात गर्भ ना आए आन बाट, दस मास ना कोई अटकाईआ। ना कोई दीसे औखा घाट, लक्ख चुरासी ना कोई फिराईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, तट किनारा ना कोई वखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई रसना रिहा हिलाईआ। आपे जाणे आपणी वाट, घर आपणा वेख वखाईआ। आदि निरँजण जोत सरूप आपणा रस आपे रिहा चाट, घट घट अन्दर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख घर, जुग जुग वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि मेहरवाना, आपणा आप कराया। जन भगतां देवे जिया दाना, आत्म ब्रह्म जणाया। मेल मिलाए श्री भगवाना, जगत विछोड़ा दए कटाया। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, साचा सगन मनाया। साचा मंगल गाए गाणा, अनहद सेवा लाया। सखीआं मेला कर परवाना, दर दर दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। मातलोक हरि जोत जगा, आपणी कल वरताईआ। सतिजुग साची सिख्या इक्क सिखा, एका करे पढ़ाईआ। एका लहिणा झोली पा, एका मूल चुकाईआ। एका धार अनेक वेस करा, वार अठारां कर रुशनाईआ। जगत मार्ग आपे पा, आपे गया सिखाईआ। राज बणतर जगत बणा, जोग जुगत वड्याईआ। कर्म आसण दए सिखा, अभ्यास त्याग वड्याईआ। नारी कन्त लए मिला, सच सुहाग रघुराईआ। भगतन वेखे साचा थाँ, साचा धाम सुहाईआ। वेले अन्तिम होए सहा, आप आपणी दया कमाईआ। रक्खे लाज आपणे नाँ, नाम नामा झोली पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन रसना रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा वेख वखाईआ। सतिजुग उतरया आपे घाट, हरि साचे तोल तुलाया। त्रेता रिहा आपणे आन बाट, धरत मात गोद बाहर कढाया। लोकमात राम विकया आपणे हाट, राम रामां नाउँ धराया। दोए दर एका खाट, एका आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरी वेखे धार, तोड़े गढ़ जगत हँकार, हउमे रोग रहिण ना पाया। त्रेता सुत्ता पैर पसार, आपणा पल्ला पाया। द्वापर अक्ख रिहा उग्घाड़, नेत्र नैण खुल्लाया। वेख वखाए सृष्ट सबाई जगत उजाड़, कवण आसण हरि सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आप जणाया। आपणा लेखा आपे वेख, आपे करे जणाईआ। वेद व्यासा धारे भेख, पिता पूत समझाईआ। पुराण अठारां लिख्या लेख, चार लक्ख सतारा हज़ार सलोक गिणाईआ। नारद मुन रिहा वेख, साचा

संग समाईआ। ब्रह्मा करे इक्क सलोक, चार बारां वड वड्याईआ। चार सलोक दर दरवेश, तीजे जुग दए सुलाहीआ। तीजा जुग नेत्र पेख, बारां अक्खरी रास बणाईआ। बारां कुण्डल कर अदेश, एका कुण्डली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मण्डल मण्डली वेख वखाईआ। लोकमात जगत द्वापर, हरि साचे रूप दरसाया। मनमुख सवाए माया पड़दा थापड़, गुरमुख लए उठाया। भरम भुलाया भाई बापड़, नाता बिधाता इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत द्वापर वेख घर, आप आपणा काज रचाया। जगत काज एका घाट, हरि साचे बणत बणाईआ। दोहां विचोला त्रिलोकी नाथ, नथ्थ आपणे हथ्थ रखाईआ। दोहां देवे साचा साथ, लहिणा रिहा चुकाईआ। एका मस्तक लेख लिखाए जोत लिलाट, एका लेखा रिहा मिटाईआ। अन्त उतारे आपणे घाट, आपणी करे आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम करे वड्याईआ। आपणा नाम भगत ज्ञान, एका एक दृढ़ाया। अठारां ध्याए कर प्रधान, अर्जन मोख रखाया। भगत वछल आप भगवान, भगवान हित नवित्त नित अबिनाशी अचुत्त करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा वेख घर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाया। द्वापर लहिणा गया चुक्क, अन्तिम वज्जी वधाईआ। लोकमात पैंडा गया मुक्क, घर साचे गया कर कर धाहीआ। कलिजुग भार आपणा रिहा चुक्क, आपणी वंड वंडाईआ। धुर दरगाहों आया रुह्ट, हरि साचा मुख भवाईआ। जूठ झूठ फड़ाए एका मुठ, एका भिच्छया पाईआ। आत्म विद्या रिहा लुट्ट, जगत विद्या करे पढ़ाईआ। घर घर पौदा जाए फुट्ट, ना दीसे कोई सहाईआ। सति सन्तोख कढ्ढया कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता तेरी जड़ आपे देवे पुट्ट, ईसा मूसा संग रलाईआ। एका कलमा अमाम कायनात लगाए चोट, चारों कुन्ट ख़ुदी ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात खेल खिलाईआ। लोकमात हरि अवतारा, जुग जुग करदा आया। कलिजुग वेखे खेल पसारा, आप आपणा रूप वटाया। हक्क मुहम्मदी चार यारा, सगला संग रखाया। अल्ला राणी कर प्यारा, नाता जोड़ जुड़ाया। काला सूसा तन शृंगारा, मुख घुँगट रिहा वखाया। नेत्र नैणां कजला भारा, तामस तृष्ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाम आपे जानणहार होया ख़ुदाया। सच ख़ुदा बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर अलाहीआ। नूरी अल्ला कर प्यार, बिसमल गया समाईआ। जगत मसल्ला कर त्यार, धरत मात उप्पर रिहा विछाईआ। एका कलमा कर त्यार, नबी रसूलां रिहा पढ़ाईआ। जल्वा जलाल हक्क करतार, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। मक्का काअबा चार दिवार, साची दिशा आप टिकाईआ। दो दो आबा मेल विच संसार, शाह नवाबा खोज खोजाईआ। पुन्न सवाबा बन्ने धार, इक्क

अहिबाबा वेख वखाईआ। चरन घोड़े दे रकाबा, हरि उठे बेपरवाहीआ। आपे देवणहारा अजाबा, आपे दए सजाईआ। आपे मारनहारा वाजा, आपे रिहा उठाईआ। आपे शाहो भूप वड राजन राजा, राज राजान आप अख्वाईआ। आपे आपणी रक्खे लाजा, लाजावन्त आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाया राणी अल्ला, नूरो नूर समाया। करे खेल इक्क अकल्ला, भेव कोई ना पाया। शाह शमस तबरेज़ तेरी लथ्थी खल्ला, रत्ती रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। वेस अवल्ला परवरदिगार, आपणा रंग रंगाईआ। काया चोला वेख संसार, आपणा बोला रिहा अलाईआ। सुणाए ढोला हो त्यार, साचा गोला नाउँ रखाईआ। भोला भाला खेल अपार, दिस किसे ना आईआ। तोलण तोल तोले जगत संसार, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। आपे करनहार आर पार, मँझधार आप रुड़ाईआ। आपे वेखे समुन्दर सागर डूँघी गार, उच्चे टिल्ले फोल फोलाईआ। लहिणा देणा चुकाए मुहम्मदी यार, अनहद राणी ताल रलाईआ। चौदां तबकां रिहा विचार, भुल्ल रहे ना राईआ। चौदां हट्ट ना कराए वणज वपार, जगत वस्त झोली पाईआ। जूठ झूठ भर भण्डार, आत्म वेख वखाईआ। मनमति रलाई नाल कमज़ात नार, दिवस रैण दए सलाहीआ। अल्ला राणी रही पुकार, उच्ची कूके दए सलाहीआ। अञ्जील कुराना आए हार, वेला वक्त दए गवाहीआ। काला सूसा दए उतार, मुख नक़ाब रहिण ना पाईआ। प्रगट होए हक्क जनाब, मरीआ सुत गया लिखाईआ। सृष्ट सबाई जाए हार, लक्ख चुरासी धीर ना कोई धराईआ। ज़िमी अस्माना पाड़ा जाए पाट, करे खेल बेपरवाहीआ। इक्क अकल्ला आप उतारे आपणे घाट, ना दूसर कोई सालाहीआ। पुरख अबिनाशी अग्नी लाए लाट, चारों कुन्ट धूंआँधार रखाईआ। सर सरोवर अमृत जल कोई ना मारे ठाठ, अग्नी तत्त ना कोई बुझाईआ। किसे ना सुझे पूजा पाठ, नेती धोती ना कोई जणाईआ। ना कोई मस्तक तिलक लगाए लिलाट, ना कोई जञ्जू तन लटकाईआ। ना कोई मसल्ला ना कोई कुरान ना कोई बांग नाअरा लाए इक्क सदा उच्च अवाज़, ना कोई कूक दए सुणाईआ। ना कोई शाह सुल्तान मारे आवाज़, प्रभ बेऐब परवरदिगार धुरदरगाहीआ। लोकमात आवे भाज, भारत वंड वंडाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज वरनां बरनां चलाए इक्क जहाज़, एका चप्पू लाईआ। कलिजुग अन्तिम करन आया आपणा काज, ना दूसर कोई सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी जोती नूर कर अल्ला, बिसमिल्ला बिस्मिल रहे कराईआ। बिस्मिल हक्क हलाल, आप ख़ुदाया। आपे नूरी जल्वा हक्क जलाल, नूरो नूर समाया। आपे वस्सया गगन गगनंतर आपे थाल, दीपक जोत करे रुशनाया। आपे मन्दिर मस्जिद काअबा होए धर्मसाल, आपे आपणा दरस दिखाया।

आपे अर्श फर्श मारे एका छाल, आप आपणा रंग रंगाया। भगत सुहेले कर लए संभाल, दूसर कोई रहिण ना पाया। चारों कुन्ट अग्नी देवे बरस, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार कमाया। मनमुख जीवां नाता तोड़े जगत हरस, अज़राईल जबराईल मेकाईल असराफील सेवा लाया। मिहबान बीदो बी खैर या अल्लाह, एका नाअरा दए सुणाया। पीर दस्तगीर शाह हकीर ना कोई कराए आपणा जल्वा, ना कोई पल्लू रिहा फड़ाया। ख़ुदाई हुक्म अलाही नूर एका बलवा, काया नाता दए कराया। चुल्ले चढ़या रहि जाए हलवा, मुख कोए पाण ना पाया। सिर नीवां कर ना पढ़े कोई कलमा, ना कोई सयद मस्जिद सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटा हरि निरँकार, नानक जोत जगाईआ। पंज तत्त किया ख़बरदार, लोकमात वज्जी वधाईआ। मात पिता घर सुत दुलार, भेव कोई ना पाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, एका धार रखाईआ। निरगुण सरगुण साची कार, करता पुरख रिहा कराईआ। एका शब्द विचोला नज़र ना आए विच संसार, नेत्र नैणां दिस ना आईआ। अकाल पुरख हरि मीत मुरार, गुर नानक दए सलाहीआ। उज्जल रूप सच दरबार, मिले मेल साचे माहीआ। मारे गोता अपर अपार, पाया घर बेपरवाहीआ। निरगुण रूप खड़ा दर द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अबिनाशी करता सुणे धुन्कार, कवण दर दरवाज़ा रिहा खड़काईआ। कोई ना आया पहरेदार, ना सोया कोई जगाईआ। करनेहारा आपे होया ख़बरदार, आपणी उठ लए अंगड़ाईआ। निरगुण रूप कर पसार, आपणा ताक खुलाईआ। नानक गुर वेखे नेत्र नैण उग्घाड़, बैठा दाता बेपरवाहीआ। साची नारी पाया कन्त लाड़, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नानक निरगुण दर्शन पा, निरगुण विच समाया। तूही पिता तूही माँ, तेरा पूत अख्वाया। आदि जुगादि पकड़े तूं बांह, तेरा मेरा तेरे हथ्थ फड़ाया। दो जहानी देवे ठंडी छाँ, तेरा तेरी झोली पाया। तेरे चरन कँवलां सद बलि बलि जां, चरन दुआरा इक्क सुहाया। तेरा सिँघासण वेखे साचे थाँ, दूसर ना कोई वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर नानक वखाया घर, आप आपणा रंग रंगाया। अंगीकार नानक कर, नन्ना मुक्ता आप कराईआ। निरगुण विच निरगुण धर, सिहारी रिहा वखाईआ। निरगुण बैठ सरगुण वड़, औकड़ इक्क वधाईआ। तिन्ने नानक गए बण, सच घर मिली वधाईआ। त्रैलोक त्रैगुण माया रही डर, नानक नाम ल्या शरमाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे वर, करता पुरख झोली रिहा भराईआ। सतिनाम भण्डारा दित्ता भर, भुक्ख रहे ना राईआ। सृष्ट सबाई अग्गे धर, एका हुक्म जणाईआ। गुर नानक बोले अग्गे खड़, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। एका वेख्या तेरा दर, सो दर सहिज सुखदाईआ। कवण अक्खर लवां पढ़, शब्दी वज्जे वधाईआ। पुरख

अबिनाशी बोले ना कोई सीस ना कोई धड़, एका शब्द सुणाईआ। सोहँ अक्खर किसे बन्द ना होए किले गढ़, चार दीवारी ना कोई रखाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरद्वार कोई ना सके फड़, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भिच्छया आपे रिहा वरताईआ। आप आपणी भिच्छया पा, आपणी दया कमाया। साची सिख्या इक्क समझा, एका मार्ग लाया । दहि दिशा फेरी पा, चारे कूटां वेख वखाया। एका मन्त्र नाम दित्ता दृढ़ा, सति नाम झोली पाया। नाम सति होए सहा, जिस जन रसना गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। हरि जोती हरि निरँकार, लोकमात रचन रचांयदा। पंज तत्त कर प्यार, नानक विच समांयदा। नानक करता गुर करतार, गुर करतार गुर गुर रूप वटांयदा। धरती दब्बी पापां भार, कोई ना भार चुकांयदा। किरपा कर अपर अपार, जीवां जन्तां एह समझांयदा। नाम चप्पू सति नाम नाम सति सति सति करतार, सति सति विच समांयदा। नाता तोड़ काम क्रोध लोभ मोह हँकार, साचे पौड़े आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दित्ता इक्क वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे गुर आपे चेला, आपे सतिगुर रूप समाया। आपे निरँकार आपे नानक मेला, आपे रिहा छुपाया। आपे खेल पंज तत्त खेला, आपे पंज तत्त मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर जोती वेस वटाया। हरि जोत गुर उजागर, सतिगुर वड वड्याईआ। चार बणाए घर सच सौदागर, एका वस्त वखाईआ। भाग लगाए काया गागर, जो जन आए सरनाईआ। निरगुण कर्म करे उजागर, दुरमति मैल कटाईआ। देवे नाम रत्ती रत्नागर, काया रंगन इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक जोत निरगुण धार, सतिगुर सति पुरख आप अख्वाईआ। सति पुरख सर्ब गुणवन्ता, सारंगधर अख्वाया। पूरन जोत श्री भगवन्ता, नानक वेस वटाया। जगत विचारे नारी कन्ता, दिस किसे ना आया। नाद वजाया किंगरे किंगरे, इक्क मृदंग वखाया। जीव आत्म कढ्ढी पंज तत्त विकार बध्धी पिंजरे, एका ध्यान रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक निरगुण वेख वखाया। नानक निरगुण धार अवल्ली, लोकमात चलाईआ। निरँकार करे खेल जोत जोत अकल्ली, जोती जोत नाउँ धराईआ। आदि अन्त वली छली, वल्या छल्या भेख वटाईआ। होका देवे गलीओ गली, चारे कुन्टां रिहा उठाईआ। नाम सति अमृत फली, गुरमुखां मुख लगाईआ। आत्म खिड़े साची कली, अट्ठे पंखड़ीआं खोल्ह खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणया नानक वली, मुल्लां शेख़ पीर मुसायक कुतब गौंस आप समझाईआ। आपे शरअ शरीअत, आपे कर्म कमाया। आपे हक्क हकीकत वेखे कायनात, आपे काअबा फेरी पाया । आपे पुछणहार वात, आपे लेखा

लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक वस्सया साचे घर, पंडत पांधे दए पढ़ाया । पंडत पांधे आत्म ज्ञान, नानक गुर समझाईआ। एका शब्द मारे बान, एका तीर चलाईआ। एका अमृत दिसे पीण खाण, सुच्च संजम इक्क जणाईआ। एका धूप दीप इक्क मकान, एका कृष्न मनाईआ। एका राम पकड़े दाम, सीता राम सीता सुरती ल्ए प्रनाईआ। एका गीता इक्क ज्ञान, एका अर्जन भगत सबाईआ। एका वेद इक्क पुराण, एका रिहा लिखाईआ। एका करे आप वख्यान, एका करे पढ़ाईआ। जीव जन्त कलिजुग खोल्ह बैठे दुकान, हरि का नाम ना कोई विकाईआ। घर घर मस्तक तिलक सारे लाण, जोत लिलाट ना कोई जगाईआ। दे दे चौका बहिंदे पीण खाण, मन क्रिया ना कोई साफ कराईआ। पढ़ पढ़ करदे रहे जगत ज्ञान, आत्म विद्या ना कोई पढ़ाईआ। फड़ फड़ करौदे अठसठ असनान, दुरमति मैल ना कोई गंवाईआ। दुर्गा मन्त्र सुणौदे कान, दूई द्वैती पड़दा कोई ना लाहीआ। टल्लीआं वजौण विच चार दिवार माटी मकान, काया मन्दिर अन्दर अनहद ताल ना कोई वजाईआ। नानक गुर हो मेहरवान, लोकमात करे शब्द जणाईआ। एका गुर इक्क ध्यान, एका बूझ बुझाईआ। एका दाता श्री भगवान, जीआं दान रिज़क सबाईआ। एका देवे पीण खाण, सेवक सेवा रिहा कराईआ। दीन मज़्हब ना कोई ईमान, ज़ात पात विच ना आईआ। ना कोई हिन्दू ना मुस्लमान, एका ब्रह्म रखाईआ। शूद्र वैश ब्रह्मण क्षत्री ना कोई विधान, एका बणत बणाईआ। हर घट बैठा हो प्रधान, आपणा थान सुहाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना सके पछान, पढ़ पढ़ थक्के सर्ब लोकाईआ। जिस जन होए आप मेहरवान, आप आपणा दरस दिखाईआ। एका मण्डल एका मण्डप एका गोपी एका काहन, एका रास पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, नानक नाउँ रखाईआ। नानक धरया जगत नाँ, निरगुण दिस ना आया। पूत पुकारे पिता माँ, बालक लाड लडाया। हरि का भेव कोई जाणे ना, ना कोई वेख वखाया। नानक निरगुण कोई पछाणे ना, चारों कुन्ट धक्के खाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी सेवा आपे रिहा कराया। नानक निरगुण कर प्यारा, चारों कुन्ट उठ धांयदा। पंज तत्त जगत विकारा, माया मोह लोभ हलकांयदा। आसा तृष्ना ना कोई बन्न्हे धारा, जगत जंजाला ना कोई तुड़ांयदा। सतिनाम देवे खण्डा दो धारा, जन भगतां हथ्थ उठांयदा। कलिजुग जीव सुत्ते पैर पसारा, कोई ना अक्ख खुल्हांयदा। नानक गुर कर विचारा, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी तेरी धारा, तेरे अग्गे टिकांयदा। आपणा कर्म आप विचारा, लहिणे झोली पांयदा। अंगद अंग ठंडा किया अंग्यिारा, जगत त्रिष्न गवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख दर, तेरा दर हरि सुहांयदा। नानक गुर अगम्मा बोल, हरि हरि आप

सुणाया। जगत तोल्लया आपणे तोल, पूरा तोल ना कोए कराया। त्रैगुण माया पाया घोल, पंज तत्त अखाड़ा लाया। जूठ झूठ वज्जे ढोल, जगत नगारा रिहा सुणाया। सच वस्त ना रक्खे कोई कोल, बैठे मुख भवाया। तेरी करनी कादर करते सृष्ट सबाई करी अनभोल, भुल्ल भुल्ल आपणा मार्ग रहे गंवाया। नानक बुलाया तेरा बोल, चारों कुन्ट सुणाया। मनमति करे जगत मखौल, दोए जोड़ सीस ना कोई झुकाया। तेरा मेरा पूरा होया कौल, तेरा तेरे अग्गे डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर शब्द जणाया। नानक गुर तेरी धार, मेरे विच समाईआ। तेरां तेरां तोल्लया विच संसार, तेरा बोला पूरा दए कराईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी नार होए विभचार, ना कोई कन्त मनाईआ। कुँवार कन्या करन शृंगार, कज्जल धार बंधाईआ। पूत मात सेज भतार, भैणां भईआ संग रखाईआ। सुत दुलारी तक्के नार, पिता नैण शरमाईआ। दुष्ट दुराचारी होए हँकार, चारों कुन्ट गढ़ सुहाईआ। वरन बरन हाहाकार, घर घर पए लड़ाईआ। नाता तुटे कन्त भतार, सथ्थर सेज ना कोई हंढाईआ। वेसवा घर बणे मस्जिद मन्दिर गुरुद्वार, मति बुध ना कोई रुशनाईआ। कलिजुग रैण होई अँध्यार, रवि ससि बैठण मुख छुपाईआ। रिखी मुनी जंगल जूह वेख पहाड़, सुन्न समाध ना कोई खुल्हाईआ। अठसठ तीर्थ झूठी धाड़, तन लंगोट ना कोई बंधाईआ। साधां सन्तां अग्नी लग्गे तत्ती हाढ़, सांतक सति ना कोई वरताईआ। जोत ना जगाए कोई बहत्तर नाड़, लिख लिख नाउँ झोली पाईआ। बजर कपाटी कोई ना देवे पाड़, नाम खण्डा ना कोई उठाईआ। ना कोई मेटे पंचम धाड़, जूठे झूठे बैठे धूंणीआँ ताईआ। सर सरोवर लग्गा इक्क अखाड़, नारी पुरश नंगे रहे तारीआं लाईआ। बण मरग ना वेखे कोई उजाड़, पसू प्रेतां मूल चुकाईआ। पंखी पंछी सरवर तरवर होए भाग माढ़, आप आपणे घौसले रहे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द देवे वर, गुर नानक करे जणाईआ। गुर नानक सुण हरि हरि धार, घर घर ख़ुशी मनाईआ। तेरा खेल हरि निरँकार, तेरा तोहे भाईआ। कवण रूप आवें विच संसार, कवण नाउँ धराईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता बोले इक्क जैकार, एका नाउँ उपाईआ। निहकलंका लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्तां दीपां इक्क बणाए बंक द्वार, चार वरन अठारां बरन रहिण ना पाईआ। राज राजान शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां वखाए इक्क दरबार, एका थान सुहाईआ। शब्द खण्डा फड़े हथ्थ तेज़ कटार, सोहँ नाउँ धराईआ। मनमुख करे ख्वार, गुरमुखां चोग चुगाईआ। तेरा नाम सति होए उज्यार, सतिजुग साची बणत बणाईआ। एका तत्त करे संसार, तत्व तत्त इक्क जणाईआ। एका रत्त भरे अपर अपार, आप आपणे अंग लगाईआ। बीजे नाम साचे वत सच्ची सरकार, फल साचा इक्क उगाईआ। फल लगाए सति सन्तोख धीरज यति हठ तप इक्क वखाईआ। एका

ज्ञान एका मत, गुरमति इक्क बुझाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका करे पढ़ाईआ। एका शब्द एका सोटी एका लाठ, लक्ख चुरासी हथ्थ फड़ाईआ। एका वणज एका हाट, एका हट्ट कराईआ। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क वखाईआ। एका रस लैणा चाट, नौ रस रहे शरमाईआ। नौ दुआरे पार घाट, नौ खण्ड वड्डी वड्याईआ। नौ चार मारे ठाठ, नानक लेखा गया लिखाईआ। नौ नौं युग बाकी वाट, चौका दए सलाहीआ। छत्ती युग तेरी नेड़े वाट, नौ सद चुरानवे चौकड़ी आपणा वक्त रही वंडाईआ। ब्रह्मे मनवन्तर ना विके किसे हाट, ना कोई मुल पवाईआ। लहिणा देणा चुक्के भोले नाथ, बाशक तशका गलों लाहीआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द आपणा आपे ल्या चाट, अन्तिम करे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नानक एह बुझाईआ। निरगुण सुण हरि सलाह, वड वड्डा वड्आया। तूं दाता दानी बेपरवाह, तेरा अन्त किसे ना पाया। जुग जुग बणे जगत मलाह, सेवक सेवा रिहा कमाया। निथाविआं देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणयां लए उठाया। भगत जना जन पकड़े बांह, जन जणेंदी लए तराया। आदि जुगादि देवणहार भण्डार, सिर रिहा हथ्थ टिकाया। आपे पिता आपे माँ, सखा सखाई नाम धराया। तेरा मेरा एका थाँ, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला इक्क घर, घर सुहञ्जणा आदि पुरख निरँजणा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणे विच समा, आपणी खेल खिलांयदा। अंगद अंगी अंग करा, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। जोती जोत जोत जगा, शब्दी शब्द उपजांयदा। शब्दी शब्द रचन रचा, शब्दी नाद वजांयदा। शब्द नाद मात प्रगटा, शब्द गहिणा बस्त्र पांयदा। शब्द नेत्र कजला पा, एका धार बंधांयदा। निरगुण नूर दर्शन पा, नानक नानक रसना गांयदा। मिल्या मेल सहिज सुभा, पूरा गुर दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। अंगद जोत अमरदास जगाई, नूरो नूर समाया। शब्द गुर कर कुड़माई, साचा सगन मनाया। बाल बिरध ना कोई जणाई, एका रंग रंगाया। एका मंगल एका गीत सुहागी गाई, एका छन्द अल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमर अमरापद वखाया। अमरापद पद निरबाणा, गुरमति गुर आप टिकाया। राम दास धुर निशाना, तीर निशाना इक्क चलाया। सति सन्तोखी बद्धा गाना, आप आपणा ल्या उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास दास राम हो आया। रामदास दास गुर मन्त्र, नानक गुर जणाईआ। सृष्ट सबाई वेखे खेत्र, एका अक्ख खुल्ाईआ। लक्ख चुरासी फुलवाड़ी बसन्त रुत्त महीना चेत्र, फुल डाल्ी महक महिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन वेख वखाईआ। गुर अर्जन इक्क ज्ञाना, एका गुर दृढ़ाया। अट्ठे पहर इक्क ध्याना, एका रूप समाया। एका

रूप श्री भगवाना, एका मंग मंगाया। एका शब्द इक्क तराना, एका मंगल गाया। एका लेखा लिखे धुर महाना, चौथे अंक रलाया। चारे घर होए प्रधाना, गुर अर्जन मेल मिलाया। पंचम मेल गुणी निधाना, हरि हरि वेख वखाया। हरि हरि खेले खेल महाना, आपणा हुक्म जणाया। बोध अगाधा इक्क ज्ञाना, एका मार्ग लाया। लेखा लिख्त जगत जहानां, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाया। सन्त भगत भगवन्त बैठण इक्क मकाना, गुरु ग्रन्थ बणाया। जगत विद्या होई निधाना, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेखा आप लिखाया। हरि का लेखा अगम्म अपार, नानक गुर वड्याईआ। अंगद गुर बन्ने धार, नानक रसना गाईआ। अमरदास ढहि पया द्वार, काया महल्ल अटल इक्क सुहाईआ। वेखे उच्च अटल मिनार, जोत जगे बेपरवाहीआ। लेख लिखाया अपर अपार, आप आपणी दए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग दरसाईआ। रामदास, अन्दर मन्दिर लेख लिखाया। रामदास रसन स्वास, हरि हरि साचा गाया। पुरख अबिनाश वस्सया पास, दिवस रैण सेव कमाया। हरि मन्दिर लोकमात कर प्रकाश, भेद अभेद अभेव खुल्हाया। सर सरोवर इक्क बणाया चारे कूंटां खोल्ह किवाड़ करे बन्द खलास, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण एका रंग रंगाया । ना कोई हड्ड नाड़ी मास, चम्म दृष्टी ना कोई रखाया। इट्टां गारा जगत तमाश, दे मति रिहा समझाया। अन्दर वेख मार ध्यान हरि बैठा शाहो शबाश, निरगुण जोत करे रुशनाया। गुरसिख रामदास तेरा होए दासी दास, जो जन काग हँस बण जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ताल वखाया। हरि मन्दिर हरि द्वार हरि साचा ताल सुहाया। निरगुण जोती कर उज्यार, गुर अर्जन वेख वखाया। अट्ठे पहर रंग करतार, अन्ध अन्धेर दिस ना आया। दिवस रैण शब्द धुन्नकार, धुन अनादी रिहा वजाया। चरन कँवल हरि कर प्यार, गुर नानक नज़री आया। नानक बोले कर प्यार, अर्जन वेख वखाया। आए दान धुर फ़रमाण, लेखा एह समझाया । चिट्टे उत्ते लिख काला निशान, ना कोई सके मेट मिटाया। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, भेख पखण्ड रहिण ना पाया। गुर का ज्ञान ना कोई वेचे विच दुकान, ना हट्टो हट्ट फिराया। दो जहान कीमत कोई ना सके चुकान, ना कोई मुल्ल पवाया। धुर दी बाणी धुर दीबाण, धुर करता रिहा लिखाया। अकाल पुरख होया मेहरवान, गुर अर्जन सेवा लाया। शब्द गुर आया विच मैदान, आपणा पड़दा लाहया। गुरमुख विरला करे ध्यान, जिस जन बूझ बुझाया। जगत ज्ञान ना सके पछान, पढ़ पढ़ वादि वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन दित्ता एका वर, एका गुर वखाया। एका गुर इक्क ग्रन्थ, एका रूप दरसांयदा। एका सिक्ख एका सिख्या एका पन्थ, एका मार्ग लांयदा। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या ना कोई रहे अन्त, अस्थिल कोई रहिण

ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर जणाई लोकमात वज्जे वधाई धाम सुहाए इक्क अनडीठया। गुरु ग्रन्थ शब्द चोट, एका तन लगाईआ। मनमुखां कढ्ढे काया खोट, जो जन हिरदे रिहा वसाईआ। ग्रन्थी पन्थी माया भरे ना कोई पोट, ना कोई विष्टा वढ्ढी लै लै खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा शब्द धर, शब्द गुर रिहा सलाहीआ। शब्द गुर गुर दीनां, शब्दी लेख लिखाया। शब्दी शब्द शब्द रस भीन्ना, शब्दी रंग चढ़ाया। शब्द जल शब्द मीना, शब्द शब्द विच समाया। शब्द बन्ने लोक तीनां, आकाश प्रकाश शब्द टिकाया। शब्द दाना शब्द बीना, दाना बीना शब्द अख्वाया। शब्द खाणा शब्द पीणा, शब्द तृष्ना तृप्त कराया। शब्द मरना शब्द जीणा, शब्द शब्द लए उपाया। शब्द जोधा शब्द प्रबीना, शब्द डंक वजाया। शब्द पंचम नीचो नीच शब्द हीणा, शब्द निउँ निउँ सीस झुकाया। शब्द राज शब्द राजाना, शब्द शाह सुल्तान अख्वाया। शब्द काज शब्द साज, शब्द बंध बंधाया। शब्द सीस शब्द ताज, शब्द रिहा टिकाया। शब्द मन्त्री शब्द जोग राज, शब्द रयीअत रिहा अख्वाया। शब्द रक्खे जगत सांझ, शब्द नाता दए तुड़ाया। शब्द गुर आए लोकमात भाज, शब्द गुर रूप वटाया। शब्द गुर रक्खे लाज, शब्द गुर होए सहाया। नानक सुणाई नौ खण्ड पृथ्मी इक्क अवाज़, गुर अर्जन लेख लिखाया। गुर अर्जन मारे इक्क अवाज़, हरि मन्दिर दए सुहाया। हरि जू संवारे आपणा काज, गुर अर्जन एह समझाया। कलिजुग अन्तिम आवे भाज, जोती जामा भेख वटाया। भाग लगाए देस माझ, छे योजन वंड वंडाया। छे शास्त्र खोल्ले पाज, चार वेद फोल फोलाया। कलिजुग रावण गढ्ढ हँकारी तोड़े जगत समाज, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। सज्जा चरन छुहाए दिल्ली दिहलीज, आर पार आप हो जाया। गुरु ग्रन्थ उप्पर बाणी कलिजुग जीवां इक्क नक़ाब, पड़दा इक्क रखाया। अकाल तख्त अकाल मूर्त निरगुण सुणाए ना कोई अवाज़, ढड्ड सारंगे रहे वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन वेखे तेरा दर, हरि मन्दिर सोहे साचा घर, गुरु ग्रन्थ मिले वर, भेव चुकाए नारी नर, हरि साचा ढाडी दो जहानी बणे गाडी, दूई द्वैती जाए वाडी, एका दर रखाया। गुर गोबिन्द हरि भगवन्त, आपणी दया कमांयदा। अकट्ठे कराए साचे सन्त, वाग अर्जन हथ्थ फड़ांयदा। मेल मिलावा नारी कन्त, लोकमात काज रचांयदा। दे मति समझावे जीव जन्त, ज्ञान गुर मन्त्र दृढ़ांयदा। कलिजुग माया नाल रलाए बेअन्त, सगला संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर सुहांयदा। हरिजू हरि मन्दिर फेरा पा, आपणा मूल चुकावणा। चारों कुन्टां दए हिला, एका डंक वजावणा। रसना चिल्ला लए चढ़ा, एका तीर उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अर्जन वेख्या साचा घर, घर साचा इक्क सुहावणा। साचा घर हरि सुहाए, हरि गोबिन्द वज्जे वधाईआ।

पीर फकीर आप हो जाए, बस्त्र चीर बंधाईआ। शाह फकीर इक्क बणाए, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम करे वड्याईआ। हरि गोबिन्दा जोधा बलवाना, खण्डा खड़ग खड़कांयदा। धर्मी धर्म रक्खे निशाना, धरत धवल सुहांयदा। पकड़ पछाड़े बेईमाना, हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए हरि हरिराए, राए राम समाया। अकथना अकथ कथा सुणा, अकथ कथा समझाया। समरथ पुरख सिर हथ्थ टिका, साचा मेल मिलाया। नानक जोती एका राह, ना सके कोई उलटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। वेस कराए हरिकृष्ना, बाल निधाना नाउँ धराईआ। जोती जगे नूर महानां, ज्ञानीआं ज्ञान जणाईआ। गुरमुख कर परवाना, पूरन बूझ बुझाईआ। अन्तिम लेख चुकाया जगत जहानां, एका राह वखाईआ। लुक लुक बैठा करे पछाना, कवण सेवक सेवा रिहा कमाईआ। सतिगुर सतिगुर कवण अख्वाना, कवण गुर नाम धराईआ। घर घर बैठे हो प्रधाना, बैठे आसण लाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना कोई चुक्के वंझ मुहाणा, ना कोई पार कराईआ। इक्क अकल्ला गुरसिख मक्खण होए शाह लबाना, एका वणज कराईआ। अन्तिम मन्ने तेरा भाणा, तेरे भाणे विच टिकाईआ। तेरा सीस हरि जगदीस तेरी भेटा आप चढ़ाईआ। तेरा गुर तेरे घर कर प्रधाना, तेरे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। अकाल मूर्त रूप पछाना, गुर गोबिन्द विच समाईआ। सति दुआरा कर प्यारा हरि मेहरवाना, एका बूझ बुझाईआ। एका वसे धाम न्यारा, हवन पवन इक्क जणाईआ। एका अग्नी एका जोत ज्वाला, एका दरगहि वेख वखाईआ। एका काल एका महांकाला, एका क्रिया रिहा कराईआ। एका तख्त इक्क धर्मसाला, एका बैठा आसण लाईआ। एका बस्त्र इक्क दोशाला, एका तन पहनाईआ। एका खण्डा होए रखवाला, एका करे सहाईआ। एका कड़ा कर निशाना, हँकारी गढ़ तुड़ाईआ। एका कच्छ कर प्रधाना, तन ढकन को पति आप अख्वाईआ। एका केस दस दस्मेश, साची सूरत इक्क वखाईआ। प्रगट होए दरस दिखाया अकाल पुरख नर नरेश, आप आपणा वेस वटाईआ। गुर गोबिन्द आपणे नेत्र पेख, लोकमात राह चलाईआ। नानक गुर मोढे उठाई भूरी खेस, तेरे हथ्थ कटार फड़ाईआ। तेरे दर भिखार होए अकाल पुरख दर दरवेश, तेरी सेव कमाईआ। दूर दुराडे तक्कण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। राम कृष्न ना कोई आदेश, गुर पीर ना कोई मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ नज़री आए हमेश, अट्ठे पहर वेख वखाईआ। तेरा रूप मुच्छ दाढ़ी केस, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। धुरदरगाही रिहा वेख, दूसर कोई भेव ना पाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्का वेद, हरि का लेख ना लिख्या जाईआ। जुग जुग आपे जाणे आपणी कतेब, आपे करे पढ़ाईआ। ना कोई इष्ट ना कोई तेरा देव, ना कोई

६०६
०७

पूज पुजाईआ। इक्क अकला अकाल पुरख सदा निहकेव, तेरे संग समाईआ। बिरथा जाए ना तेरी सेव, प्रभ साचा रिहा करवाईआ। तेरे काया फल लग्गा साचा मेव, सृष्ट सबाई दए खुआईआ। एका कौस्तक मणीआ मस्तक लाउणा थेव, एका करे रुशनाईआ। दाता दानी अलक्ख अभेव, तेरी झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डा नाउँ प्रचण्डा रिहा चमकाईआ। नाम प्रचण्डा खिच कटार, नैणां रूप वटाया। पाया पुरख अगम्म अपार, हरि साचे दरस दिखाया। केशो पंडत गया हार, साचा हवन ना कोई कराया। गुर गोबिन्द तेरी कोई ना पाए सार, तेरा भेव तेरे विच छुपाया। अकाल पुरख तेरा पहरेदार, अट्ठे पहर रिहा जगाया। दिवस रैण होया ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। बन बिन्दरा ना कोई प्यार, मकंद मनोहर लक्खमी नरायण घर साचे वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, आप आपणा रूप दरसाया। आप आपणा रूप वटा, गोबिन्द गुर दरसांयदा। मुच्छ दाढ़ी केस ल्या लगा, तन चोला इक्क वखांयदा। तन गात्रे खण्डा ल्या लटका, मुड्ड आपणे हथ्थ रखांयदा। एका कंगन रिहा पहना, दो जहानां पार करांयदा। धीरज यति रिहा सिखा, माँ भैण सर्ब जणांयदा। एका नारी कन्त लए हंढा, सो सिक्ख मेरा अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द एह समझांयदा। गुर गोबिन्द वर घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। आपणा बाणा आप रंगाया, आपणी चोली वेख वखाईआ। आपणा वेला आप सुहाया, आपणी आप करे कुड़माईआ। आपणा डेरा आपे लाया, आपे वेख वखाईआ। आपणी संगत आप बणाया, आपे विच रिहा समाईआ। आपे मंगत दर दरवेशा बण के आया, दर दुआरे झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द सूरा दाता, हथ्थ खड़ग उठांयदा। गुरमुखां करन आया पछाना, आपे पुच्छ पुछांयदा। चार वरन बणाए इक्क जमाता, ऊँचां नीचां मेट मिटांयदा। लोकमात धुर दी देवण आया साची दाता, जो जन सीस भेट चढ़ांयदा। आपणे सिक्ख आपे करे ज्ञाना, आपे फड़ उठांयदा। आपणे अन्दर आपे मारे झाता, ना कोई दूसर वेख वखांयदा। पंज प्यारे फड़ फड़ अन्दर मन्दिर खोल्हे ताका, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। वाहिगुरू शब्द चढ़ाए साचे राका, वाह वाह गुर पूरा दया कमांयदा। कलिजुग तेरा लहिणा देणा चुकाउणा बाका, आप आपणी बणत बणांयदा। किसे हथ्थ ना आउणा ख़ाकी ख़ाका, तन माटी खेह रखांयदा। हरिसंगत बणाउणा साचा साका, साक सज्जण आप समझांयदा। ऊँचां नीचां अमृत प्याया एका बाटा, भाण्डा भरम भनांयदा। एका अमृत आत्म मारे ठाठा, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। गुर गोबिन्द गुरसिख तेरे घर आए नाठा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, पंच प्यारे पंच प्यार पंचम मोह चुकाया। पंचम गुर पंच श्रृंगार, पंचम तन सजाया। पंचम बन्नू सीस दस्तार, आपणा रूप दरसाया। पंचम तन रक्ख कटार, शस्त्र हथ्थ फड़ाया। पंचम पंचम रक्ख दर दरबार, पंचां ताज सुहाया। पंचम मीता होया ख़बरदार, सोए रिहा जगाया। ऊँचां नीचां इक्क प्यार, चार वरनां रिहा समझाया। सांझी वंड करे करतार, ना कोई हिस्सा वंड वंडाया। आपे गुरु रूप हो करतार, गुरमुख साचे लए सजाया। गुरमुखां करे इक्क प्यार, गुरसिख नाउँ धराया। सिँघ शेर शेर कहे ललकार, एका बुरका तन पहनाया। तेरा रूप वेख करतार, पंचम तन सजाया। आपे पंचां ढहि पया द्वार, गुरसिख आप अख्वाया। मंगे मंग बण भिखार, आप आपणा अग्गे डाहया। गुरसिक्खां उत्तों पहलां आपणा आप दित्ता वार, सीस चरनां हेठ दबाया। साची सिक्खी कर प्यार, साची सेवा रिहा कमाया। धारों तिक्खी करे विचार, आपणे तन पार कराया। किसे कलम ना लिख्या विच संसार, ना कोई लेखा दए जणाया। करे खेल जोत दस दस्मेसी, गुर नानक वेस वटाया। दर दुआरे आए तरसण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, अमृत चुलू ना कोई प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुर रूप वटाया। गुर चेला गुर गुर करतार, गुर गुरमुख विच समाईआ। गुर सज्जण सुहेला हरि निरँकार, गुर सेवक सेव कमाईआ। गुर मेला अपर अपार, गुर खेले खेल खिलाईआ। वक्त दुहेला आपे जाणे निरँकार, ना दूसर कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल पुरख दित्ता वर, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। अकाल पुरख अकाल मूर्त, अकल कला अख्वाया । अजूनी रहित गुर गोबिन्द वखाल आपणी मूर्त, आपणा रूप वटाया। नाद वजाया साचा तूरत, वाहिगुरू फतिह गजाया। आसा मनसा जुग जुग पूरत, जग जीवण दाता नाम धराया। सदा हज़ूर ना नेड़े दूरत, दूर नेड़े ना कोई रखाया। कलिजुग अन्तिम नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, एका मार्ग लाया। एका मार्ग हरि निशान, पंज तत्त सजाया। पंज तत्त कर प्रधान, पंचम मेल मिलाया। पंचम जोधा सूरबीर बलवान, पंचम वेख वखाया। पंचम वेखे धर्म निशान, पंचम रिहा उठाया। पंचम पाए एका आण, एका तन्द बंधाया। पंचम गीत एका गाण, पंचम राग अलाया। पंचम बैठ इक्क मकान, एका थान सुहाया। लोकमात कर ध्यान, गुर पूरे हो मेहरवान, आप आपणा निशान तुड़ाया। पन्थ ख़ालसा कर प्रधान, आपणा हुक्म जणाया। अमृत आत्म पीण खाण, ना कोई दूसर वस्त तकाया। धी भैण ना कोई ध्यान, ठग्ग चोर यार ना कोई अख्वाया। काया कप्पड़ ना कोई श्रृंगार, रूप वेसवा ना कोई बणाया। गुरमुख साचे सोहे गुरु द्वार, गुरचरन ध्यान रखाया। पंचम मारे पंचां मार, पंचम कटारा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, एका कर्म कमाया। आपणा कर्म आप कमा, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। अनन्द अनन्द गया समा, पूरी बणत बणाईआ। गढ़ केस डेरा ला, गढ़ी दए वड्याईआ। सीस धड़ लेखे ला, गुरमुखां ख़ुशी मनाईआ। अन्तिम लेखा दए चुका, भाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी भेटा आपे रिहा सुटा, सरसे विच टिकाईआ। गुरमुख साचे सन्त सुहेले सेवा ला, शब्दी शब्द समाईआ। आपे वेखे आपणा थाँ, जाए अठसठ धाईआ। कच्ची गढ़ी डेरा ला, पूर्ब लहिणा भार चुकाईआ । चारे चार घर दए सहा, सुंञा कोई रहिण ना पाईआ। आपे सुत्ता बेपरवाह, सूलां सथ्थर हेठ विछाईआ। एका सुणावे साचा राह, तेरा राह तकाईआ। तेरा लहिणा तेरी झोली दित्ता पा, तेरा तेरे विच टिकाईआ। दोवें हथ्थ चारे कानीआं खाली रिहा वखा, पल्ले गंढु ना कोई बणाईआ । गुरसिक्खां गया एह समझा, वंड खाणा रीत चलाईआ। गुरु ग्रन्थ लैणा मना, एका गुर बुझाईआ। घर घर दर दर एहदी कीमत ना देणी पा, एहदी मोख ना कोई चुकाईआ। एका मोख गया समझा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। कलिजुग जीव अन्तिम भुल्लणा मेरा नाउँ, हट्टो हट्ट विकाईआ। करन आवां सच न्याँ, भुल्ल रहे ना राईआ। फड़ दाढ़ी दिआं हिला, जो मेरा अंग कटाईआ। दो जहानां ना देवा थाँ, जो रहे वणज कराईआ। विच विचोला कोई दिसे ना, ना विद्या कोई सिखाईआ। धुर दा गोला आप अख्वा, गुरमुखां सेव कमाईआ। साचा तोला तोल तुला, एका तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, होया मेला एका घर, एका दर सुहाईआ। सथ्थर सूलां जगत विछाउणा, गोबिन्द आप विछाया। नेत्र नैणां दर्शन पाउणा, एका राह तकाया। धाम अकट्ठे एका बहिणा, मेरा दुःख तेरी वंड वंडाया। तेरी सुफल होणी कुक्ख, पूत सपूता गोबिन्द जाया। अकाल पुरख मेरी उतरी भुक्ख, तेरा दर्शन पाया। सृष्टी वेखे मैनूं मनुख, मैं तेरी नार अख्वाया। माता गुजरी गर्भ ना होया उलटा रुख, बाहर आया जोत जगाया। गुर तेग बहादर मंगी मंग सुखणा सुख, घर साचे मेल मिलाया। दुष्ट दमन बूटा ना जाए सुक्क, हेम कुन्ट तप तपाया। कलिजुग पैंडा अज्जे ना गया मुक्क, प्रभ तेरा राह तकाया । लक्ख चुरासी चार कुन्ट मुख पैणा थुक्क, कोए ना होए सहाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता जोत सरूप निरगुण धार गुर गोबिन्दे आपणी गोदी लए चुक्क, आपणे धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा हुक्म चलाया। उठ गुर गोबिन्द हो बलवान, तेरा रंग रंगाया। चारों कुन्ट इक्क निशान, तेरा रिहा झुलाया। गोदावरी वेख मार ध्यान, कन्ढा रिहा तरसाया। गुर नानक लाया इक्क निशान, तेरा लहिणा तेरे हेठ दबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वर दाता आप अख्वाया। आपे दाता दर भण्डारा, आपे देवणहारा। आपे वसे धाम न्यारा, आपे

देवे शब्द हुलारा। आपे करे जोती नूर उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द देवे प्यारा। गुर गोबिन्द उठ उठ धा, आपणा कर्म कमाया। आपणी बणत आप बणा, आप आपणा वेख वखाया। देस मालवे चरन टिका, राह नदेड़ रिहा तकाया। बन्दा बन्दीखानिउँ दित्ता छुडा, आपणा बन्दा आप बणाया। एका अमृत जाम पया, दे मति समझाया। गोदावरी कन्ढ्ढा चरन छुहा, एका घाट उपाया। एका तीर ल्या चला, इक्क कमान कसाया। एका दिशा ल्या उठा, एका तन्द खिचाया। छे छे छिआठ गया लगा, अठसठ मेट मिटाया। एका मढ्ढ ल्या तपा, साचा धाम सुहाया। नीले घोड़े तंग कसा, उत्ते आसण लाया। चरनी जोड़ा इक्क छुहा, चरन कँवल मनाया। जगत किनाता रिहा वखा, अग्नी हवन तपाया। आप आपणा विच ल्या टिका, औदां जांदा दिस ना आया। गुरसिक्खां एह गया समझा, मेरा पड़दा कोई ना लाहया। गुरसिख कलिजुग माया करे गुमराह, गुर का हुक्म भुलाया। आपणी हथ्थीं फोली जगत स्वाह, सिर आपणे रहे पवाया। सतिगुर पूरा कदे ना होवे दाह, ना मरे ना जाया । शब्द सरूपी गुर गोबिन्द अग्गों रिहा सुणा, मनमुखां दवां सज़ाया। मेरा मेरे जो गए भुला, मैं मेरा विच समाया। हउमे डेरा देवे ढाह, गढ़ हँकार रहिण ना पाया। सम्बल नगरी वेखां साचा थाँ, आप आपणा आसण लाया। अकाल पुरख लवां मना, साचा संग निभाया। दोहां मेला होवे एका थाँ, सुधा सर डेरा लाया। सुधा सर वखाए अमृत आत्म साढे तिन्न हथ्थ बणत बणा, उच्च महल्ले आप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, साचा घर आप सुहाया। गुर गोबिन्द कहे ललकार, कलिजुग होए कुड़माईआ। पारब्रह्म प्रभ लए अवतार, गुर गोबिन्द विच समाईआ। दोहां मेला होए संसार, भेव कोई ना पाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठे आसण लाईआ। नौ खुल्हाए जगत किवाड़, बेमुखां दए सज़ाईआ। दस्में जोत जगे अगम्म अपार, हरि दाता बैठा आसण लाईआ। गुरसिख आए दर द्वार, नौ दर करे पार, अग्गे जाणा सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम लाए पार, फड़ बांहों लए तराईआ। शब्द खण्डा फड़, तेज़ कटार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरसिख लड़ ना मरे विच संसार, चरन प्रीती घोल घुमाईआ। शब्द युद्ध करे गुर करतार, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ । मन मति बुध ना कोई विहार, ना कोई जगत करे पढ़ाईआ। कारज सिद्ध आप करे निरँकार, कलिजुग अन्तिम मेट मिटाईआ। निहकलंका लै अवतार, गुर गोबिन्द करे प्यार, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। सम्मत सम्मती मारे मार, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। खेले खेल गुरू रूप गुर करतार, करता पुरख वड वड्याईआ। धर्मी धर्म धर्म करे जैकार, कर्मी गत ना वेख वखाईआ। नौ खण्ड सत दीप एका धार, एका रिहा बंधाईआ। जगत निशाना, कर त्यार, सत रंगा रंग रंगाईआ। सृष्ट दब्बी आपणे भार, ना

कोई सके पिठ उठाईआ। घर घर दर दर रौंदे ज़ारो ज़ार, गुर गोबिन्द दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां रिहा सेव कमाईआ।

* १६ भादरों २०१५ बिक्रमी वधावा सिँघ दे घर पिण्ड महराज *

हरि सज्जण अनडीठड़ा, घर घर रिहा समाए। गुरसिख प्रेम प्याला लग्गे मीठड़ा, आत्म रिहा प्याए। सुफल कराए मात कुखड़ा, मोख मुखंतर इक्क वखाए। हउमे रोग कटे दुःखड़ा, दर्द दुःख रहिण ना पाए। नेत्र नैण लोचन जो जन दर्शन भुखड़ा, दे दरस त्रिष्न बुझाए। हरिजन बूटा कदे ना सुकड़ा, फल फुलवाड़ी इक्क वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन वेख वखाए। हरि साजन जग मीतड़ा, परम पुरख करतार। काया रंगे चोली चीथड़ा, रंगन रंग अपार। सांतक सति कराए ठांडा सीतड़ा, अग्नी तत्त निवार। मिठ्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, जो जन ढहि पए द्वार। आप चलाए आपणी रीतड़ा, जुग जुग वेस करे करतार। पतित पवित करे पुनीतड़ा, पतित पावणहार सिरजणहार। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, सोहँ शब्द जै जै जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण पावे सार। हरि सज्जण हरि साख्यात, साजन मीत मुरारा। गुरसिख बणाए पारजात, देवे नाम अधारा। मेल मिलावा कमलापात, नारी कन्त प्यारा। जोत निरँजण देवे धुर सुगात, शब्दी शब्द धुंनकारा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, दीपक जोती कर उज्यारा। सच चढ़ाए नाम राथ, रथ रथवाही गुर करतारा। सदा सुहेला सगला साथ, आदि अन्त होए रख्वारा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ, जो जन ढहि पए दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण पावे सारा। हरि साजण हरि रतिआ, रत्न नाम अमोल। आपे दे समझावे मतिआ, पतिपरमेश्वर वसे कोल। इक्क वखाए तीर्थ तटयां, तट किनारा अन्दर फोल। सच दुआरा एका वस्सया, दर दरवाज़ा एका खोलृ। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, गीत अनादी शब्दी बोल। दर दर घर घर फिरे नस्सया, गुरसिख रहे ना कोई अनभोल। मनमुख जीव वेख वेख कल हस्सया, काल नगारा वज्जे ढोल। तीर निराला एका कस्सया, सृष्ट सबाई खेले होल। जन भगतां हिरदे अन्दर आपे वस्सया, आपे करे चोलृ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण रिहा मौल। हरि सज्जण हरि जागया, जागरत जोत जगाए। चरन कँवल जो जन लागया, दुरमति मैल धवाए। जगत तृष्ना बुझे आग्गा, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाए। फड़ फड़ हँस

बणाए कागया, अमृत एका जाम प्याए। मेल मिलावा कन्त सुहागया, सति सतिवन्ती नार कराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेखे साचा दर, दर मन्दिर इक्क सुहाए। हरि साजण हरि मन्दिर, हरि हरि जोत जगाईआ। भाग लगाए काया कन्दर, डूँघी भवरी पार कराईआ। आपे तोड़नहारा जन्दर, चिन्ता सगल मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मेला सहिज सभाईआ। हरि सज्जण हरि मेलया, हरि हरि रूप गोबिन्द। हरि वसे धाम अकेलया, वड दाता गुणी गहिंद। हरि होया सज्जण सुहेलया, हरिजन उपजाए साची बिन्द। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेलया, सृष्ट सबाई लगाई आपणी निन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन हरिजन सदा बख्शिंद। हरि साजन जिन जाणया, आपणा मूल पछाण। चले चलाए गुर गुर भाणया, सुणे सुणाए धुर फ़रमाण। लेखा चुक्के आवण जाणया, धर्म राए ना कोई आन। पाया परम पुरख सुल्तानया, घर साचे सच मकान। जोती नूर जगे महानया, उपजे धुन सच्ची धुनकान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरि सज्जण लए पछान।

* १७ भाद्रों २०१५ बिक्रमी गुलज़ार सिँघ दे घर पिण्ड साहो ज़िला फीरोज़पुर *

आदि जोत हरि निरँकार, पारब्रह्म अख्वाया। नूरो नूर अपर अपार, नूरो नूर समाया। करता पुरख खेल अपार, भेव कोई ना राया। अगम्म अगम्मड़े वस्सया धाम न्यार, धाम अवल्लड़ा इक्क वखाया। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोई पंज तत्त आकार, रूप रंग दिस ना आया। ना कोई साध सन्त गुर पीर अवतार, ना कोई सज्जण वेख वखाया। लक्ख चुरासी ना कोई प्यार, ब्रह्म ब्रह्म ना कोए वंड वंडाया। शिव शंकर ना करे कोई विचार, करोड़ तेतीसा ना दए सुणाया। सर्बकला एका एकँकार, अकल कला अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अपणा रूप उपाया। पारब्रह्म हरि बेपरवाह, एका एक एकँकारया। निरगुण जोत हरि अथाह, भेव कोए ना पा रिहा। आप आपणा जाणे थाँ, थान थनंतर इक्क सुहा रिहा। ना कोई गगन मण्डल करे छाँ, धरत धवल ना कोई रखा रिहा। रवि ससि ना करे कोई छाँ, तारा मण्डल ना कोई दिशा रिहा। पवण हवन ना कोई करा, ना कोई अग्न हवन करा रिहा। दीवा बत्ती ना कोई जगा, ना कोई तेल धार बंधा रिहा। कमलापती आप अख्वा, आप आपणा रूप वटा रिहा। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई बणत बणा रिहा। ना कोई भैण ना भ्रा, साक सज्जण ना कोई अख्वा रिहा। ना कोई नगर ना ग्रां, ना कोई कूचा गली

सुहा रिहा। ना कोई राग धुनी रिहा सुणा, ताल तलवाड़ा ना कोई वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे घर डगमगा रिहा। जोती नूर पुरख अकाला, एका रूप समाया। आप अपरम्पर होए दीन दयाला, दयानिध नाम धराया। पीर पैगम्बर ना कोई सवाला, ना कोई आए सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण पारब्रह्म बेअन्त कन्त आप आपणे दर सुहाया। हरि पुरख हरि भगवान, हरि हरि रूप समाया। आपे जाणे आपणी आण, आप आपणा धर्म धराया। आप बणाए आपणा मकान, आप आपणा आसण लाया। आप झुलाए आपणा इक्क निशान, दूसर दिस किसे ना आया। आपे शाह आपे सुल्तान, ग़रीब निमाणा आप हो जाया। आपे राज आप राजान, आपे ताज सीस टिकाया। आपे तेज़ कोटन भान, आपे नूरो नूर करे रुशनाया। आपे कर्म आपे धर्म आपे दीन मज़्ब ईमान, ज़ात पात ना कोई रखाया। आपे वेद आप पुराण, सिमरत शास्त्र वेखे मार ध्यान, आप आपणा लेख लिखाया। आपे गीता आपे ज्ञान, आपे भगत वछल भगवान, आप आपणा रूप वटाया। आपे अञ्जील आपे कुरान, आपे बेऐब परवरदिगार करे खेल महान, खेलणहार आप हो जाया। आपे खाणी बाणी करे पछाण, गावणहारा नाम धराया। आपे जोधा सूरबीर बली बलवान, दानी दाता आप अख्वाया। आपे तीर आपे कमान, शस्त्र बस्त्र आप समाया। आपे राग आपे कान, आपे नादी नाद वजाया। आपे पारब्रह्म ब्रह्म करे निशान, भेव कोई ना राया। आदि अन्ता हरि भगवन्ता एका एक पुरख सुल्तान, सति सतिवादी नाउँ धराया। जुगा जुगन्त खेले खेल महान, जुग जुग वेस वटाया। जन भगतां देवे नाम दान, आत्म ब्रह्म जणाया। एका दूजा भउ चुकान, तीजा नैण खुल्हाया। चौथे पद कर परवान, आपणा मेल मिलाया। पंचम मेला धुर फ़रमाण, विछड़ कदे ना जाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई मकान, थिर घर साचे डेरा लाया। सत्तवें सति पुरख हो मेहरवान, आप आपणा आसण डाहया। निर्मल जोती जगे महान, नूरो नूर करे रुशनाया। ना कोई गोपी ना काहन, राम रामा दिस ना आया। इक्क अकल्ला खेले खेल महान, एकँकारा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख पुरख अबिनाश, आप आपणा घर सुहाया। पुरख अबिनाश पारब्रह्म, आप आपणा दर सुहांयदा। आपे जाणे आपणा वरन, आप आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी लागे सरन, सरनगत आप अख्वांयदा। आप आपणी करनी करन, करता पुरख नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख सदा आदेस, जुग जुग वेस वटांयदा। हरि हरि वेस हरि अवल्ला, एका एक कराया। थिर घर वसाए सच महल्ला, एकँकारा रूप वटाया। एकँकारा खेले खेल अकल्ला, अकल कल अख्वाया। आपे वस्सया जला थला डूँघे सागर डेरा लाया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़,

६१३
०७

उचां टिल्ला फोल फोलाया। आदि जुगदि जुग जुग जन भगतां रक्खे लाज, लोकमात राह चलाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। मेट मिटाए पंचम धाड़, हउमें रोग गंवाया। हउमे हँगता देवे साड़, माया ममता मोह चुकाया। धर्म वखाए इक्क अखाड़, अनहद वाज़ा इक्क वजाया। काया सुहाए गागर ताल, अमृत जल भराया। हरिजन मारे इक्क उछाल, कागों हँस बणाया। मेल मिलावा दीन दयाल, गुर शब्दी मेल मिलाया। पाया गोबिन्द हरि गोपाल, गोबिन्द रूप समाया। वेख धर्म सच्ची धर्मसाल, मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहया। जोती नूर जगे महान, अट्ठे पहर डगमगाया। गुरमुख लेखे लग्गे काया माटी खाल, पंज तत्त वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख हरि भगवन्ता, खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणी धार चलाया। हरि निरँकारा खेल अपारा, इक्क आकार कराया। कोटन कोटी कोट ना पावण सारा, कोट कोटी वेख वखाया। चोटी जड़्ह ना वेखे कोई धारा, कवण रूप हरि सहाया। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त आपे गुर आपे अवतारा, आप आपणा लेख लिखाया। अलक्ख अगम्म अगोचर भेव अभेद ना कोई बुज्झे ना किसे विचारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपारा। खेल खिलंता हरि गोबिन्द, हरि हरि रूप समाया। आपे मेटे आपणी चिन्त, चिन्ता चिखा रहिण ना पाया। आप उपजाए आपणी बिन्द, आप आपणा नाउँ उपाया। आपे गहर गम्भीर सागर सिन्ध, डूँघा सागर आप अख्वाया। आपे दाता दानी आप बख्शिंद, आपणी झोली आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका एक समाया। आदि अन्त एकँकारा, एका रंग समांयदा। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारा, गुर गुर वेस वटांयदा। गुर मूर्त अकाल विच संसारा, पंज तत्त समांयदा। निरगुण जोती शब्द धारा, शब्दी डंक वजांयदा। ब्रह्मा वेद ना पाए सारा, शिव शंकर ना गणत गणांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा पुकारा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। अकाल पुरख दीन दयाल मारे एका नाअरा, लोआं पुरीआं आप जगांयदा। मात पताल आकाश दए सहारा, गगन मण्डल वेख वखांयदा। रवि ससि जोती नूर मण्डल मण्डप दए सहारा, सति पुरख नाउँ धरांयदा। धरनी धरत धवल जल धारा, जल बिम्ब आप उपांयदा। आप आपणा कर प्यारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। आप आपणा कर किनारा, आप आपणी वंड वंडांयदा। त्रैगुण माया कर पसारा, पंज तत्त अख्वांयदा। आप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश बन्न्हे धारा, रत बूंद हड्ड मास नाड़ी चम्म बणत बणांयदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, जगत वेख वखांयदा। महल्ल अन्दर धर मुनारा, घर विच घर टिकांयदा। उच्च महल्ल अटल चढ़ उच्च मुनारा, आपणा आसण लांयदा। डूँघी भवरी पार किनारा, दिस किसे ना आंयदा। पंचम गायण वारो वारा, साची सेवा लांयदा। जोत निरँजण होए उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अमृत

आत्म रक्खे ठंडी ठारा, एका जल भरांयदा। बजर कपाटी तोड़े ताला, आपणी हथ्थी कुण्डा लांहयदा। दस्म दुआरी बैठा दीन दयाला, जन भगतां राह तकांयदा। गुर शब्द आदि अन्त जुगो जुगन्त होए रखवाला, सदा सद सेव कमांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, धर्म राए मुख छुपांयदा। अग्नी साड़े ना जोत ज्वाला, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। जिस जन पाया गुर धुर पुरख अकाला, जोती जोत समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आदि जुगादि आपणी रचन रचांयदा। आदि पुरख सर्ब घट दीना, घट घट आप निवाज्जया। आपे खाणा आपे पीणा, आपे साजन साज्जया। आपे मरना आपे जीना, आपे खोलणहारा पाज्जया। आपे जल आपे मीना, आपे रक्खणहारा लाज्जया। आपे चाढ़े रंग भीन्ना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस मात धर जन भगतां संवारे काज्जया। भगत वछल करतार, आपणी कल धारीआ। लोकमात लै अवतार, खेले खेल अगम्म अपारीआ। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण सरगुण मेल मिला रिहा। सरगुण बन्ने साची धार, शब्दी शब्द समा रिहा। शब्दी डंक अपर अपार, लोआं पुरीआं आप हिला रिहा। राम रामा शाह सुल्ताना करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पा रिहा। साधां सन्तां दए आधार, आदि जुगादी कर्म कमा रिहा। ग़रीब निमाणयां पावे सार, खिमा ग़रीबी झोली पा रिहा। जीवां जन्तां कर प्यार, करता कीमत आपणी आप चुका रिहा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे गढ़ हँकार, नाम खण्डा इक्क उठा रिहा। वेद व्यासा बण लिखार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नाम धरा ल्या। उच्चे टिल्ले करे विहार, हरि का पर्बत दिस ना आ रिहा। बजर कपाटी लाई सिला, ना कोई पाड़ पार करा रिहा। रसना एका चढ़या चिल्ला, हरि शब्दी तीर चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चला रिहा। आदि पुरख हरि हरि देवा, एका एक अख्वाया। जन भगतां करे जुग जुग सेवा, आप आपणा वेस वटाया। अमृत आत्म देवे साचा मेवा, निहचल धाम खवाया। जो जन गाए रसना जिह्वा, जन जननी लेखे लाया। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, जोती जोत करे रुशनाया। मिले मेल पुरख अगम्म अलक्ख अभेवा, अभेद अभेदा विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ करे रुशनाया। नाउँ हरि निरँकार, नानक निरगुण अख्वाईआ। त्रैगुण माया मारे मार, पंज तत्त दुरकाईआ। शब्द खण्डा इक्क कटार, नाम सति रिहा चलाईआ। बीजे बीज सर्ब संसार, काया खेत हल्ल चलाईआ। डाली पत्त लग्गे फुल फुलवाड़, सिंच क्यारी अमृत इक्क भराईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर गुर नानक निरगुण रूप नर हरि निरवैर आप अख्वाईआ। निरवैर मूर्त अकाल, दर्द दुःख भय भंजना। नानक पाया हरि घर सच्ची धर्मसाल, मिल्या मेल साचे सज्जणा।

६१५
०७

अकाल पुरख बणाया साचा लाल, आप आपणा पड़दा कजना। दोहां विचोला नाम सति दलाल, ना घड़या ना भज्जणा। लोकमात करे रखवाल, पंचम विकारा जिस जन तजना। आप वखाई अवल्लड़ी चाल, ना कोई मक्का काअबा हाजी हजना। काया तत्त पंच मुनारा भाग लगाए माटी खाल, अनहद शब्द नगारा एका वज्जणा। आप आपणा लए भाल, आप आपणा करे मजना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस नानक धर, दर दरवेश नर नरेश आपे रक्खे आपणी लजना। आपणी लज्जया आपे रक्ख, करनी किरत कमाईआ। नानक रूप हो प्रतक्ख, सृष्ट सबाई डेरा लाईआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, मनमुखां दए सज़ाईआ। एका दे समझावे मत, मुस्लिम हिन्दू ना कोई जणाईआ। एका बीज हर घट अन्दर देवे घत, गुर पूरे वड वड्याईआ। पारब्रह्म बंधाए नात, चरन नत ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए ज़ात पात, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। सर्ब जीआं दा दाता हरि हरि कमलापात, ब्रह्म भिच्छया झोली पाईआ। अन्तिम वेले पुच्छे वात, मात पित भाई भैण साक सज्जण कोए संग ना जाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लहिणे दित्ती एका दात, अंगी अंग समाईआ। वेख वखाए काया नात, काया गढ़ महल्ल अटल लाज रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज मार झात, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। गुर नानक बख्शी शब्द दात, जोती सेवा लाईआ। एका शब्द वड करामात, ना दूसर बूझ बुझाईआ। अमर मिलावा कमलापात, कन्त कन्तूहला सेज हंढाईआ। लहिणा चुक्कया तीर्थ अट्ठ साठ, तट किनारा ना कोई वखाईआ। गुर सेव वखाई साची पूजा पाठ, पूरन इच्छया आप कराईआ। काया खुल्हाया साचा हाट, नाम वस्त विच रखाईआ। जोती निकले सच लाट, निरगुण नूर करे रशनाईआ। एका उतरया पूरे घाट, पार किनारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास दास राम हो हो सेव कमाईआ। रामदास जोत निरँजण, आदि निरँजण अख्वाया। नेत्र पाए एका अंजन, एका मन्त्र दृढ़ाया। एका मिल्या साचा सज्जण, वर घर साचा पाया। एका ताल एका मजन, एका नुहावण नुहाया। एक नगारा एका धुन अनाद ब्रह्माद ताल सुहावे वज्जण, ताल तलवाड़ा इक्क वखाया। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़े अन्तिम भज्जन, थिर कोई रहिण ना पाया। गुरू गुर गुर आए पर्दे कज्जण, नाम पर्दा एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत लए जगाया। जोती जोत अर्जन देव, हरि हरि आप टिकाया। नानक जोत साची सेव, निरगुण रिहा कमाईआ। निरगुण रूप सदा निहकेव, निहचल धाम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए साचा दर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मेला हरि करतारा, पंचम रूप समाया। पंचम जोती कर उज्यारा, पंचम वेख वखाया। पंचम बन्हे साची

धारा, पंचम मोह चुकाया। पंचम राज जोग सच्चा दरबारा, पंचम तख्त सुहाया। पंचम शब्द शब्द धुन्कारा, पंचम शब्दी नाद वजाया। पंचम सुणे सुणाए सुनणेहारा, दिस किसे ना आया। पंचम वसे धाम न्यारा, गुर अर्जन वेख वखाया। पंचम बोले एका नाअरा, वाह वाह गुरू मनाया। एका एक धुर फ़ुरमाणा, पंचम रिहा सुणाया। अबिनाशी करता वड जरवाना, लेखा लेख लिखाया। सच तख्त हरि बैठ सुल्ताना, थिर घर डेरा लाया। खेले खेल दो जहाना, नानक गुर विचोला विच टिकाया। सतिनाम कर प्रधाना, सति सति सति रिहा वरताया। गुर अर्जन देवे धुर फ़रमाणा, एका बूझ बुझाया। आदि पुरख सन्त सतिगुर भगत भगवन्त बणे जगत निशाना, साची रचन रचाया। लिख्या लेख वड महाना, दो जहानां भेव ना राया। गुर नानक गाया इक्क तराना, अकाल पुरख मनाया। गुर अंगद पाया पद निरबाणा, गुर जोती जोत समाया। अमर दास बिरध बाल निधाना, शब्दी डंक इक्क वजाया। अमर दास हो मेहरवाना, राम दास वेख वखाया। राम दासा धुर भरवासा, हरि हरि मेल मिलाया। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, आकाश आकाश प्रकाश समाया। गुर अर्जन देवे हरि दिलासा, तेरा लिख्या लेख ना सके कोई मिटाया। चार वरनां पावे एका रासा, एका राह जणाया। ना कोई खाए मदिरा मासा, माया ममता मोह चुकाया। जो जन होए अमृत आत्म प्यासा, निज नेत्र वेख वखाया। काया मन्दिर अन्दर जोत जगे पुरख अबिनाशा, हरि मन्दिर डेरा लाया। आपे पवण आप स्वासा, आपे रिहा चलाया। आपे सरगुण निरगुण खेल तमाशा, खेलणहार आप अख्वाया। गुर सतिगुर जाए बलि बलि जासा, हरि चरनी सीस झुकाया। आपे वेखे आपणा जगत तमाशा, हरि गोबिन्द रूप वटाया। बस्त्र शस्त्र शाह नवाबा, तन श्रृंगार कराया। चरन घोड़े दे रकाब, सोलां कल्या आसण लाया। सोलां कलीआं गुरमुखां उठाए मारे वाजां, एका शब्द अलाया। वाहिगुरू रक्खणहारा लाजा, जो जन सरनाई आया। अस्व रक्खया साचा ताजा, लोआं पुरीआं रिहा दौड़ाया। लोकमात रचया काजा, नानक रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस कर हरि, हरिराए डेरा लाया। हरिराए हरि हरि जाण, आपणा मूल चुकाया। पारब्रह्म प्रभ कर पछाण, परमानंद समाया। एका जोती एका शब्द एका धुन एका कान, इक्क मकान इक्क ताल वजाया। एका एक रिहा सुण, इक्क बैरागी नाम रखाया। एका एक रिहा चुण, लक्ख चुरासी वेख वखाया। अकाल पुरख दीन दयाल सर्ब घट वासी कवण जाणे हरि तेरे गुण, तेरा तेरे विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत हरि, हरि हरि वेख वखाया। हरि रूप हरि भगवान, हरि हरि रिहा समाईआ। हरि जोत हरि शब्द हरि पद निरबाण, पुरख बैठा आसण लाईआ। हरि गुर हरि अवतार, हरि नाम हरि भण्डार, हरि हरि रिहा वरताईआ। बाल कृष्ना कर प्यार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ।

बाली बुध हो उज्यार, पंडत पांधे रिहा पढ़ाईआ। अन्तिम लेखा लिख्या दिल्ली दरबार, हँकारीआं जड़ गंवाईआ। मिले मेल सांझा यार, एका गया राह वखाईआ। दो दो धार कर ख्वार, गुर तेग बहादर जोत जगाईआ। चिट्टी चादर कर त्यार, आपणी रत्त नाल रंगाईआ। रत्ती रत्त कर उज्यार, गुरमुखां विच रिहा समाईआ। गुरमुख विरला उतरे पार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। लाई मेख दिल्ली दरबार, सीस आपणा भेट चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम सोहे बंक दुआर, निहकलंका डंक वजाईआ। चारों कुन्ट होए ख्वार, दहि दिशा दए दुहाईआ। तेरा लहिणा तेरे उत्तों दित्ता वार, आपणा मूल चुकाईआ। तेरा सुत हरि गोबिन्द दुलार, तेरी झोली पाईआ। अकाल पुरख कर प्यार, लोकमात दए वड्याईआ। सिँघ रूप भर भण्डार, शेरा शेरा विच बणाईआ। सिक्ख सिँघ कर त्यार, साची सिख्या गया समझाईआ। पंज तत्त इक्क आकार, पंज करे कुड़माईआ। पंजे कक्के करे खबरदार, पंजां मोह चुकाईआ। भुक्खे नंगिआं कर त्यार, सिर सीस ताज बंधाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस अपर अपार, अकाल मूर्त इक्क दरसाईआ। सीस बद्धी इक्क नाम दस्तार, तन गात्रा शब्द इक्क लटकाईआ। कच्छा कड़ा किरपान विच मैदान, गुरमुखां होए सहाईआ। धर्म झलाउणा इक्क निशान, ना दूसर सीस झुकाईआ। धरक हेत मरना विच मैदान, ना सिख्या अवर कोई पढ़ाईआ। अमृत पीणा आत्म पीण खाण, दुरमति मैल गंवाईआ। मेरा रूप तेरी धार, गुरसिख वड्डी वड्याईआ। पंचम नाता जोड़ संसार, गुर नानक जोत करे रुशनाईआ। आपे पंचां ढहि पया दुआर, आप आपणा भेट चढ़ाईआ। बंस सरबंसा दित्ता वार, पूत सपूता सेव कमाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, वालों तिक्खी धार चलाईआ। मुनी रिखी ना पायण सार, वेद कतेब ना कोई जणाईआ। गुरु ग्रन्थ सच्चा सिक्दार, दो जहानां आप बणाईआ। अकाल पुरख बिन तेरे चरन गुरसिख ना करे किसे निमस्कार, गुर गोबिन्द सीस ना कोई झुकाईआ। चण्डी चमके अपर अपार, चण्ड प्रचण्ड नाउँ रखाईआ। पाए वंड ब्रह्मण्ड आप करतार, नौ खण्ड भेख पखण्ड दए मिटाईआ। पुरी अनन्द होया अड्ड, सरसे भेट चढ़ाईआ। शब्द दात रक्खी छड्ड, वेले अन्तिम लए कढाईआ। गुरसिक्खां लेखे लाया हड्ड, जो सेव गए कमाईआ। आपणी गोदी आप लडाया लड, साचे पूत बणाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, एका बख्शी हरि सरनाईआ। धर्म राए दी कोई ना डिगे डूँघी खड्ड, चित्रगुप्त ना हिसाब वखाईआ। लाड़ी मौत ना झोली रही अग्गे अड्ड, ना लछमी शृंगार कराईआ। वाली हिन्दा गुणी गहिंदा फड़ फड़ बाहों बाहर लए कढ्ढ, आपणे अंग लगाईआ। एका लिव हरि करतार, दूजा दर ना रखाईआ। अकाल मूर्त रूप अपार, हर घर बैठा आसण लाईआ। अनभव प्रकाश हरि उज्यार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। मेरा सांझा इक्क प्यार, एका दूजा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गोबिन्द विच समाईआ।

गोबिन्द गुर हरि करतार, करता पुरख अख्वाया। पूत सपूता कर उज्यार, सेवक सेवा रिहा कमाया। हउँ सेवक चाकर गुरमुखां दर, गुर गुर आपणा बचन सुणाया। पारब्रह्म बेऐब परवरदिगार, एका नाम ख़ुदाया। सृष्ट सबाई सांझा यार, ना कोई वंड वंडाया। इक्क इकल्ला खेले खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द एका घर, एका डेरा लाया। एका घर इक्क टिकाणा, एका जोत जगाईआ। एका शब्द इक्क बबाणा, एका रिहा चढ़ाईआ। एका चरन इक्क ध्याना, एका बूझ बुझाईआ। एका गुर इक्क ज्ञाना, एका नाम दृढ़ाईआ। एका राज जोग जगत कमाना, सच सुच्च वड्डी वड्याईआ। एका धीरज यति रखाना, आत्म तृष्ना मेट मिटाईआ। पीर फ़कीर ना कोई मनाणा, ना कोई सीस झुकाईआ। ब्रह्मा विष्न महेष गनेश दर द्वार ना कोई रखाना, ना कोई भिच्छया झोली पाईआ। शब्द राग अनादी धुन सुणा साचा गाणा, हरि अनहद धुन वजाईआ। जोती जोत डगमगाणा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अकाल पुरख अजूनी रहित इक्क मनाणा, पंज तत्त ना कोई गुरआईआ। शब्द गुर वड बलवाना, जुग जुग आवे वेस वटाईआ। खेले खेल दो जहानां, दो जहानी खेल खलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्याना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सत्तां दीपां मिटे निशाना, नौ खण्ड करे जणाईआ। लक्ख चुरासी भेड़ भिड़ाना, खड़ग खण्डा इक्क उठाईआ। तीर कमान शस्त्र बस्त्र इक्क रखाणा, दिस किसे ना आईआ। एका चिल्ला इक्क उठाणा, इक्क कमन्द खिचाईआ। लोआं पुरीआं वेख वखाणा, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हिलाईआ। चार वरनां देवे इक्क ज्ञाना, बरन अठारां दए मिटाईआ। पंचम घर पंच प्रधाना, पंचम मोख रखाईआ। सृष्ट सबाई बन्ने गाना, आप आपणा सगन मनाईआ। भरमे भुल्ले जीव निधाना, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। हरि का भेव किसे ना जाणा, घर घर पए लड़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, अञ्जील कुराना खोज खुजाईआ। दिस ना आया हरि भगवाना, नूरो नूर ना कोई रुशनाईआ। मक्का काअबा वेख दुकाना, हाजी हज्ज रहे वखाईआ। पंडत पांधे पढ़ सुनौण काना, आत्म ब्रह्म ना कोए जणाईआ। ग्रन्थ पन्थ लायण तराना, नानक गोबिन्द दिस ना आईआ। नानक रूप निरगुण धार सदा मेहरबाना, हर घट बैठा आसण लाईआ। जो जन आपणी करे आप पछाणा, हरि जोती जोत डगमगाईआ। कलिजुग कूड़ा हो प्रधाना, सृष्ट सबाई रिहा भवाईआ। धर्म ना झुलाए कोई निशाना, वंडीआं रहे वंडाईआ। गुर गोबिन्द मारे इक्क ध्याना, सिँघ रूप वटाईआ। सिँघ शेर सूरबीर आप अख्वाणा, सगली चिन्त मिटाईआ। फड़े खण्डा नाम प्रचण्डा तिक्खी धार वखाणा, आर पार आप कराईआ। नाउँ रखाए निहकलंक नरायण नर वाली दो जहान, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां गुरमुखां गुरसिक्खां हथ्थीं बन्ने गाना, वीह सद सोलां सगन मनाईआ। सोया कोई ना रहे जीव निधाना, हरि

शब्दी डंक उठाईआ । तख्त ताज ना दिसे किसे राज राजाना, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आपे कर, पंचम देवे राज जोग भगत भगवन्त, अन्त कन्त सन्त वड्डी वड्याईआ।

हरि खेल अभेदा, हरि हरि आप खुल्हांयदा। भेव ना पायण चारे वेदा, ना कोई वेख वखांयदा। भेव ना पाए वेद कतेबा, ना कोई पढ़ पढ़ बूझ बुझांयदा। भेव ना पाए रसना जिह्वा, मन मति बुध ना कोई जणांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता जुग जुग जाणे आपणा वेसा, आपे वेस वटांयदा। हरि अवतारा हरि हरि रूप, हरि हरि आप करांयदा। खेले खेल सति सरूप, सति पुरख अख्वांयदा। दाता दातार शाहो भूप, शाह सहाना आप अख्वांयदा। वेख वखाए खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप आपणी बणत बणांयदा। निरगुण धार आपे जाणे आपणी वंड, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। निरगुण जोत निरगुण धार, लोकमात करे कुड़माईआ। पंज तत्त कर प्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। वरते वरतावे विच संसार, आपणी बूझ बुझाईआ। ज्ञान गोझ देवे भेव निवार, अन्तर राग समझाईआ। गुर रूप अपर अपार, बेअन्त आप हो जाईआ। सन्त साजण लए उभार, हरि पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अवतार आप अख्वाईआ। गुर अवतारा हरि निरँकारा, शब्दी शब्द डंक वजाया। वेखे विगसे सर्ब संसारा, हर घट फोल फुलाया। आदि जुगादी एका कारा, एका कर्म कमाया। नित नवित्त बन्ने धारा, वार थित आपणे हथ्थ रखाया। कदी नाउँ रखाए मात पित, पिता पूत आप हो जाया। कदे आपे करे आपणा हित्त, शब्दी शब्द करे जणाया। आपे होए आपणे घर उत्पत, आप आपणा वेस वटाया। ना कोई बूंद ना कोई रित, मात गर्भ ना फेरा पाया। करे खेल अबिनाशी अचुत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। हरि अवतार सुधार, गुर गुर मार्ग लाईआ। साधां सन्तां कर प्यार, एका बूझ बुझाईआ। मूर्ख मुग्ध बाल अञ्याणे करे पार, आप आपणी दया कमाईआ। डूँघा सागर वेख संसार, सतिगुर वेस वटाईआ। भव सागर जल करे पार, वहिंदी धार ना कोई रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर करता आप अख्वाईआ। गुर करता कादर करीम, करनेहार अख्वाया। आपे होया ख़ुदी ख़ुदाई गनीम, ग़फ्लत विच रहिण ना पाया। आपे ऐन अक्ख मुक्ता डण्डा बणया मीम, आपे अलफ़ अलफ़ी पाया। आपे मुख रखाए तिन्नो सीन, सहिसा रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग मार्ग वेख वखाया। जुग मार्ग जग रचन, हरि हरि आप रचांयदा। आप जणाए आपणा बचन, आपणा नाउँ

धरांयदा। आप साचो साच होए सज्जण, सच सुच्च आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुर रूप हरि अवतार, पारब्रह्म वेस वटांयदा। गुर अवतारा हरि निरँकारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। हरि का भेव रहे न्यारा, भेव कोई ना पाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जिस जन बुझाए सो जन बूझे, अवर भेव ना राईआ। सृष्ट सबाई ओट रखाई एका दूजे, पढ़ पढ़ रहे सुणाईआ। भेव ना पायण दर्शन ना नैण तीजे, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्लाईआ। राग नाद ना हरि हरि भीजे, पारब्रह्म बेअन्त आप समझाईआ। आदि जुगादी आपणी खेल आपे कीजे, आपणा बिरद धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर नाउँ रखाईआ। सन्त सतिगुर जगत मलाह, एका मार्ग लाया। भगत भगवन्त बण मलाह, आपणा वेस वटाया। थित वार कोई जाणे ना, नित नित हित्त कराया। बेअन्त बेपरवाह अथाह, वेस अनेका लए कराया। आप उपाए आप मिटाए जुग जुग चलाए आपणा नाँ, जुग जुग वेस वटाया। अकाल पुरख अकाल मूर्त अजूनी रहित प्रगट हो, जोत सरूप हरिभगतन लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। भगतन मीता इक्क अतीता, अकल कला कल धारीआ। ध्रू प्रहलाद करे ठंडा सीता, निरगुण जोत करे उज्यारीआ। किसे ना वस्सया मन्दिर मसीता, गुरदुआर बन्द ना चार दिवारीआ। प्रगट होया पतित पुनीता, हरि साजण पार कराए भव सागर पार उतारीआ। आप चलाए आपणी रीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात आवे जावे खेले खेल अपर अपारीआ। खेले खेल हरि भगवाना, वड वड्डा सिक्दारा। आपे जाणे आपणा धुर निशाना, धुर बैठ साचे दरबारा। गुर सन्त सुणाए सच तराना, लिखे लेख विच संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी बणत, कवण रूप लए अवतारा। दो धार दो जहान, दोए दोए रूप समाईआ। निरगुण सरगुण कर पछाण, सतिगुर वड्डी वड्याईआ। शब्द देवे धुर फ़रमाण, लोकमात करे कुड़माईआ। दुष्ट दुराचार भेख पखण्ड करे कुरबान, आप आपणा खण्डा वाहीआ। सन्त साजण गुरसिख गुरमुख मेल विच जहान, आप आपणा मेल मिलाईआ। करे कराए करनेहार निगहबान, करनी करता नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जुग जगत आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

निहकलंक हरि रूप है, निरगुण जोत समाए। शब्द सरूपी डंक है, ना कोई दूसर ताल वजाए। हर घट वस्सया राउ रंक है, घट घट बैठा आसण लाए। पारब्रह्म बेअन्त, हरि ठाकर कल ना लख्या जाए। गुरमुख वेखे साचे सन्त, निरगुण

धार चलाए। कलिजुग माया पाए आपणी बेअन्त, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाए। आदि जुगादि जुग जुग महिंमा अगणत, अगणत ना लेखा कोई लिखाए। गा गा थक्के साध सन्त, खाणी बाणी रहे सुणाए। नानक गाया हरि बेअन्त, सो निहकलंक अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक जोती विच टिकाए। गुर ब्रह्म पारब्रह्म, एका एक अख्वाया। ना मरे ना पए जम्म, जूनां विच कदे ना आया। ना कोई तृष्ना भुक्ख ना कोई तम, आलस निन्दरा ना कोई रखाया। नेत्र नीर वहाए ना कोई छम्म छम्म, माता गोद ना कोई उठाया। पवण स्वासी लए ना दम, रसना जिह्वा ना कोई जपाया। आपणे घर प्रभ आपे पए जम्म, जोती माता शब्द सुत बणाया। दो जहानां रक्खे एका थम्म, नाम सहारा दए लगाया। वेद व्यासा लिख्या लेख प्रभ अन्तिम पूरा करे कम्म, भविख्त पुराण नौ हज़ार सलोक जणाया। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, रक्त बूंद ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा ब्रह्म लए उपाया। ब्रह्म रूप आप जगत सहारा, पारब्रह्म अख्वाया। शब्दी शब्द पए जम्म, शब्दी शब्द डंक वजाया। जोती नूर हाज़र हज़ूर जाणे आपणा कम्म, कादर करता आप अख्वाया। आदि जुगादि ना ख़ुशी ना गम, ना कोई जगत तृष्ना भुक्ख ना रहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गौड़ ब्रह्मण पूत सपूता उच्चा टिल्ला साचा पर्बत एका रिहा वखाया। उच्चा टिल्ला जगत पहाड़, दिस किसे ना आंयदा। पंज तत्त जोड़ जुड़ाया बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी वेख वखांयदा। नाउँ धराए नौ द्वार, सरगुण वेस वटांयदा। बज़र कपाटी लाए ताल, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। ब्रह्म सरूप आप निराधार, आपणा रूप छुपांयदा। आपणी जाणे कार, आप आपणा रंग रंगांयदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, ब्रह्म पारब्रह्म समांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म होए उज्यार, शब्दी धार चलांयदा। डंका वज्जे विच संसार, नौ खण्ड आप उठांयदा। सत्तां दीपां दए हुलार, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप शाहो भूप सति सरूप हरि मेहरवान, गौड़ ब्रह्मण पारब्रह्म एका एक अख्वांयदा। थान थनंतर वस्सया, पारब्रह्म ब्रह्म गौड़। घर आपणा आपे दस्सया, ना कोई जाणे लम्भा चौड़। साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़ अन्दर मन्दिर फिरे नस्सया, धुरदरगाही आया दौड़। तीर निराला एका कस्सया, लोआं पुरीआं गगन पताला खण्डा ब्रह्मण्डां एका लाया सच्चा पौड़। त्रैगुण माया नागनी जगत डस्सया, सृष्ट सबाई होई कौड़। कलिजुग रैण अन्धेरी मस्सया, कोई ना सके किसे होड़, सुरती सुरत शब्द राह किसे ना दस्सया, सुरत सवाणी होई प्यासी हउमे लग्गी औड़। पारब्रह्म ब्रह्म अन्दर निरगुण रूप हो हो अन्दर धस्सया, जुड़या जोड़ा जोड़ी जोड़। कोटन कोट ब्रह्मण्ड प्रकाश करे रवि सस्सया, शब्द सरूपी चढ़या साचे घोड़। जन भगतां पूरन सन्तां राह पूरा दस्सया, कलिजुग

माया अग्गों ना सके मोड़। साध संगत हरि रंगत, नाम मंगत आई दौड़। हरि जोती नूर हाज़र हज़ूर, हरिसंगत करे निमस्कार।

गुर गोबिन्द लेख लिखाया, लोकमात वधाईआ। भरम भुलेखा सर्ब कढाया, भुल्ल रहे ना राईआ। सृष्ट सबाई एह समझाया, दे मति गया समझाईआ। राउ रंकां आख जणाया, हरि वड वड्डी वड्याईआ। एका जोती नूर करे रुशनाया, जोती जोत डगमगाईआ। सगला मेरा संग रखाया, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग वेला अन्त दसाया, निहकलंक वज्जे जगत वधाईआ। गुर गोबिन्दा सेवा लाया, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। नानक गुर वेखण आया, नेत्र नैण उठाईआ। गुर अर्जन साचा भेख वटाया, शब्दी शब्द रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द तेरा लेखा साचे दर, आपे पूर कराईआ। गुर गोबिन्द लिख्या लेख अपारा, हरि जोती जोत जगांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, पूरन बूझ बुझांयदा। साढे तिन्न हथ्थ बणाया इक्क मुनारा, हरि साचा आसण लांयदा। ना कोई लाया इट्टां गारा, ना कोई बाढी बणत बणांयदा। छप्पर छन्न ना ल्या सहारा, ना कोई सीस टिकांयदा। घर विच घर कर उज्यारा, आप आपणा आसण लांयदा। गुर गोबिन्द पंज तत्त प्यारा, हरि निरगुण रूप समांयदा। जूठ झूठ ना कोई किनारा, माया ममता ना कोई रखांयदा। ठग्ग चोर यार ना कोई ठठयारा, ठग ठगौरी ना कोई पांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई कोई ना लाए आपणा नाअरा, हरि एका राग अलॣांयदा। आपे वस्सया उच्च महल्ल अटल मुनारा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। दीपक जोती कर उज्यारा, दीवा बाती ना कोई जगांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, पारब्रह्म अख्वांयदा। नाम खण्डा हथ्थ कटारा, हरि साचा आप उठांयदा। वीह सौ बिक्रमी हो उज्यारा, लोकमात जोत जगांयदा। वीह सौ इक्क पार किनारा, वीह सौ दो रचन रचांयदा। वीह सौ तिन्न खेल अपारा, वीह सौ चार जगत हलांयदा। वीह सौ पंज धर्म जैकारा, वीह सौ छे आपणे अन्दर वेख वखांयदा। वीह सौ सत्त खेल न्यारा, सति पुरख नाउँ धरांयदा। वीह सौ अठ्ठ अठ्ठां तत्तां वसे बाहरा, तत्व तत्त ना कोई रखांयदा। वीह सौ नौ वेखे दुआरा, सृष्ट सबाई खोज खुजांयदा। वीह सौ दस दसवें घर कर प्यारा, गुरमुख साचे आप उठांयदा। वीह सौ ग्यारां हो ज़ाहरा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। वीह सौ बारां खोलॣ कवाड़ा, नौ दरवाजे जगत रखांयदा। वीह सौ तेरां ख़बरदार कराए राज राजाना, शाह सुल्तानां साधां सन्तां आप उठांयदा। वीह सौ चौदां गुरमुखां कर प्यारा, घर घर आपणी इक्की पांयदा। साची सिक्खी कर त्यारा, गुर गोबिन्द दरस दखांयदा। सम्मत पन्दरां

बन्ने धारा, लंका गढ़ तुड़ांयदा। पन्दरां कत्तक दिवस विचारा, आपणा चरन छुहांयदा। कलिजुग रावण वेखे दुष्ट दुराचारा, शाह भबीखण मेल मिलांयदा। सम्मत सोलां हो त्यारा, चिट्टे अस्व आसण लांयदा। सोलां कलीआं तन शृंगारा, शब्द खण्डा इक्क चमकांयदा। लोआं पुरीआं मारे मारा, बचया कोई रहिण ना पांयदा। सृष्ट सबाई बणे अखाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, ना कोई तत्त बुझांयदा। सम्मत सतारां मारे मार अगम्मी धाड़ा, धुरदरगाही खेल खलांयदा। राज राजाना शाह सुल्तानां आप फिराए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, महल्ल अटल ना कोई सुहांयदा। घर घर रोवे नारी नारा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। नारी मेल ना होए भतारा, भैणां भईआ ना संग निभांयदा। चारों कुन्ट होए ख्वारा, कलिजुग आपणा रंग रंगांयदा। अल्ला राणी मारे नाअरा, रो रो नीर वहांयदा। हरि वेख वखाए संग मुहम्मद चार यारा, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। प्रगट होए बेऐब परवरदिगारा, अमाम मैहन्दी नाउँ धरांयदा। गल चोली पाए शृंगारा, काला सूसा वेख वखांयदा। हत्थ तसबी गल कंठ माला, कासा एक वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस आपे कर मक्का काअबा वेख वखांयदा। सम्मत अठारां बीस, हरि साचे खेल खिलावणा। मनमुखता तेरी पार हद्द, शौह दरया रुढ़ावना। कोई ना लाए रसना मदि, जाम किसे हत्थ ना आवणा। साक सज्जण ना कोई बहाए घर सद्द, ना कोई मेल मिलावणा। ना कोई हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई दीसे यद, ना कोई वरन सुहावणा। आपणा आपणा भार सभ ने जाणा लद, कलिजुग बेड़ा आपणा आप चलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात एका जल धार रुढ़ावणा। वीह सद बीसा जगत रीता, हरि साचा खेल खलांयदा। ईसा मूसा ख़ाली ख़ीसा, कोई ना दर सुहांयदा। चरन लगाए चीना रूसा, शाह अबिनूशा मूल चुकांयदा। अञ्जील कुरान कोई ना गाए तीस बतीसा, नां कोई बांग सुणांयदा। ना कोई कलमा ना नबी रसूल पढ़े हदीसा, ना कोई अमाम अख्वांयदा। अल्ला राणी मारे चीसा, ना कोई धीर धरांयदा। प्रगट होए हरि शाहो शबासा, बीस बीसा ख़ुशी मनांयदा। छत्र झुलाए आपणे सीसा, दिल्ली दरबार सुहांयदा। पन्दरां कत्तक करे खेल इक्क अकीसा, एका इक्की पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप हरि निरँकार, आप आपणी बन्ने धार, साची सिक्खी चलांयदा। वीह सद इक्की साची धार, हरि साचे सच वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क प्यार, एका शब्द जणाईआ। एका राज जोग सच्चा सिक्दार, पंचम बूझ बुझाईआ। लिख्या लेख दिल्ली दरबार, राज इन्द्र प्रशाद समझाईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, राज राजानां शाह सुल्तानां करे अन्त जुदाईआ। पंचम मीता पंचम करे प्यार, पंचम देवे हत्थ वड्याईआ। सत रंगां निशाना चढ़े विच संसार, सत्तां

दीपां आप हिलाईआ। लक्खण दीप पावे सार, करौच रिहा समझाईआ। पुष्कर तेरा कर प्यार, जम्बु दीप करे रुशनाईआ। सलमल साचा इक्क आधार, सान रक्खे वड्याईआ। कुशा खेल हरि करतार, काली धारा दए मिटाईआ। लाल रंग अपर अपार, कंचन हेठ बंधाईआ। सूहा वेस अपर अपार, चिट्टे नाल सलाहीआ। नीला नीली धारों करे पार, पीला वेस वटाईआ। कलिजुग तेरी काली मिटे धार, सत्त रंग निशान वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ रक्खया चार दिवार, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, करनी करता करनी रिहा कमाईआ। पूर्ब दिशा पूरन प्रकाश, प्रभ पूरन रिहा कराईआ। चढ़दिउँ आया विच प्रभास, काया मन्दिर डेरा लाईआ। गोबिन्द पूरी करे आस, अट्ठे पहर रहे रुशनाईआ। लहिदी दिशा चले स्वास, उप्परों हेठां धार चलाईआ। आपे वसे आस पास, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उत्तर दिशा नानक लिख्या बोल, आपे गया समझाईआ। महांबली होए उतरसी, नानक लेख लिखाए। पुत्तर धीआं कोई ना जम्मसी, मात पिता ना कोई अख्वाए। वार थित ना जाणे अष्टमी, ना नौमी वेख वखाए। जोत जगाए दिशा दस्मी, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दिशा पूर्ब हिस्सा पूर्ब लहिणा नेत्र नैणां गुरमुखां झोली पाए। अनहद शब्द अनाहद बाणी, धुनी धुन समाईआ। बोध अगाध आपे जाणी, आपे बूझ बुझाईआ। परा पसन्ती साची राणी, साची सेव कमाईआ। गुरमुख विरला जाणे जाण जाणी, जिस जन बूझ बुझाईआ। अमृत वारे ठंडा पाणी, साचा सगन मनाईआ। शब्द मिलाए साचे हाणी, विछड़ कदे ना जाईआ। आत्म सेजा इक्क सुहाणी, साचा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणे घर, अनहद अनाहद आप अख्वाईआ।

* १८ भाद्रों २०१५ बिक्रमी हाकम सिंघ दे घर पिण्ड समाल सर ज़िला फ़िरोज़पुर *

त्रैगुण माया रूप अपार, हरि हरि बणत बणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लाए सेवादार, सेवक सेव कमाईआ। पंच तत्त कर प्यार, पंचम जोड़ जुड़ाईआ। रक्त बूंद हड्ड मास नाड़ी चम्म मेल अपार, हाडी हाडी जोड़ जुड़ाईआ। मन मति कर त्यार, बुध संग रलाईआ। नूरो नूर हरि उज्यार, जोती जोत जगाईआ। नौ दर खोले आप कवाड़, दसवां बन्द कराईआ। मानुख मानुस मेल संसार, मातलोक वड्याईआ। आलस निन्दरा दे विचार, जागरत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे धरत वड्याईआ। पंचम तत्त तन बणा, हरि हरि जोत जगाईआ। जीव जन्त

अगणत गणा, भेव अभेद भेव छुपाईआ। साचे सन्तां हिस्सा दए वंडा, आपणी वंड वंडाईआ। दहि दिशा चारे कुन्टां फेरा पा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। रवि ससि सूरज चन्न रहे शरमा, नेत्र नैण बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन वेख वखाईआ। गुरमुख साजण तेरी रास, हरि साचे आप बणाईआ। वेख वखाणे पृथमी आकाश, गगन मण्डल वड वड्याईआ। खेले खेल सर्ब गुणतास, गुण दाता बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जगत तमाश, वेखणहार हर घट थाँईंआ। लेखा जाणे पवण स्वास, आपणी जिह्वा वेख वखाईआ। वासना वेखे नासका नास, सरवन कन्न सुणे शनवाईआ। दन्द बतीसा करे हास, मुखड़ा मुख बिगसाईआ। नेत्र नैणां वसे पास, निज नेत्र डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। गुरमुख साजण तेरी धार, हरि हरि आप चलाईआ। पंच तत्त तत्त कर प्यार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। हउमे हँगता रोग निवार, चिन्ता सोग मिटाईआ। माया ममता दए दुरकार, दर द्वार रहिण ना पाईआ। आसा मनसा तृष्ना देवे मार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। मन मनसा ना कहे ललकार, एका खण्डा रिहा वखाईआ। मति मतवाली करे विचार, एका विद्या सच पढ़ाईआ। बुध बबेकी विच संसार, एका एकी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण साचे तेरी रिहा बणत बणाईआ। पंज तत्त हरि समरथ, आपणा आप टिकांयदा। हरिजन राखे दे कर हथ्थ, हरि आपे वेख वखांयदा। शब्द जणाई अकथना अकथ, कथनी कथ कथ ना कोई सुणांयदा। नाम चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। पंच विकारा पाए नथ्थ, एका डोरी नाम बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखांयदा। गुरमुख सज्जण काया चोला, गुर सतिगुर आप रंगाया। पंज तत्त दुआरे होया गोला, दिवस रैण वेख वखाया। नादी शब्द वजाए साचा ढोला, एका मंगल गाया। दर दुआरा एका खोल्हा, एका भिच्छया पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाया। गुरसिख साचे तेरी प्रीत, हरि हरि आप उपाईआ। आपे वेखे हस्त कीट, ऊँचां नीचां आप समाईआ। आपे जाणे आपणी रीत, हरिजन साचे रिहा समझाईआ। सदा सुहेला होए पतित पुनीत, पतित पावण पतित पापी रिहा तराईआ। इक्क वखाए धाम अनडीठ, हरि साचे जोत जगाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर लक्ख चुरासी परखे नीत, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेखे सहिज सुभाईआ। गुरसिख साजण तेरा बाणा, हरि हरि आप सुहाया। कोटन कोट कोटी तरसे राजा राणा, हथ्थ किसे ना आया। कोटन कोट वसण जगत मकाना, उच्च महल्ला नज़र ना आया। गुरमुखां देवे नाम बबाना, घर घर फेरा पाया। मूर्ख मूढ़ मुग्ध बणाए चतुर

सुघड़ स्याणा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरी सेवा सेवक आप कमाया। गुरमुख साचा सज्जण शाह, हरि सोहे बंक द्वार। दर दर मंगे बेपरवाह, भेखी भेख अपार। सिफ्ती सिफ्त करे सलाह, लेखा लिख लिखे विच संसार, दो जहानी बण मलाह, बेड़ा करन आया पार। निथाविआं देवे साचा थाँ, साचा धाम चरन द्वार। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख उठाए बाल अञ्याण। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेखे दर, दर साचा घर साचा हरि हरि करे परवान। गुरमुख तेरा साचा राज, हरि हरि चरन द्वारया। कलिजुग अन्तिम ध्रू प्रहलाद आवे लाज, निउँ निउँ वेखण नैण उग्घाड़या। पारब्रह्म प्रभ लोकमात रचया काज, कवण दुआरे जोत जगा रिहा। कवण भगत कवण गुरसिख कवण सन्त कवण गुरमुख मारे वाज, सोए आप उठा रिहा। धुरदरगाही सोहँ शब्द देवे साची दात, दाता दानी झोली पा रिहा। हरिसंगत बणाए सच बरात, गुरमुख आत्म नारी इक्क प्रना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कमलापाती सगन मना रिहा। कमलापाती साजण हरि, हरि रचन रचांयदा। आपे फूलण माला हार पाए गल, आपे वेख वखांयदा। आप सीस सेहरा लए धर, आप वाग गुंदांयदा। आपे रांगली मैहन्दी हथ्थ लाल लए कर, आपे गाना तन्द रखांयदा। शब्द विचोला वेखे दोवें दर, एका दूजे घर फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दरस दिखांयदा। शब्द रंगीला साचा लाड़ा, हरि साचे आप सजाया। आपणे घोड़े आपे चाढ़ा, आपे वेखण आया। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, साचा वाजा इक्क वजाया। पंचम सखीआं लाया अखाड़ा, गीत सुहागी गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा सगन मनाया। सुरत सवाणी कर प्यारी, गुरमुख घर वधाईआ। चढ़या तेल हाणीआं हाणी, एका वटना लाईआ। हथ्थ कलीरे बैठी बन्नू सवाणी, साचा सगन मनाया। माता उत्तों वारे पाणी, अमृत धारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणा आप सुहाईआ। साचा लाड़ा हो त्यार, सीस दस्तार टिकांयदा। पुरख अगम्मा कर प्यार, आपणे राहे पांयदा। आपे होया अस्व अस्वार, शाह अस्वारा नाउँ धरांयदा। लोआं पुरीआं आया बाहर, लोकमात वेख वखांयदा। गुरमुख वेखे तेरा इक्क द्वार, दर दुआरे डेरा लांयदा। शब्द विचोला ख़बरदार, घर सुत्या जा जगांयदा। बाहर बैठा हरि निरँकार, आपणे नूर समांयदा। जोती चमके अपर अपार, भेव कोई ना पांयदा। लशकर फौज ना कोई शाही दरबार, दर दरबान ना कोई वखांयदा। बरछी तीर ना कोई कटार, खण्डा खड़ग ना कोई चमकांयदा। इक्क इकल्ला एका एकँकार, आप आपणी कल वरतांयदा। आदि निरँजण लै अवतार, जोत निरँजण वेखण आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

शब्द विचोला एह समझांयदा। शब्द विचोला धुर संदेशा एका एक सुणाईआ। दर द्वार आया हरि नर नर नरेशा, सीस सेहरा इक्क बंधाईआ। सरबाला बणया गुर दस्मेशा, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी किसे ना देखा, ना कोई सीस झुकाईआ। पंडत पांधा ना कोई दस्से रेखा, ना कोई दिवस सुहाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना रक्खे केसा, ना कोई मूंड मुंडाईआ। तिस पुरख को सदा अदेसा, निरगुण जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दए सुनेहड़ा काया घर, घर साचा आप सुहाईआ। काया घर वेख महल्ला, सुरती सुरत जगाईआ। वरुन आया इक्क अकल्ला, बाहर बैठा बेपरवाहीआ। आपणे तन वटना आपे मला, आपे मैल गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सखीआं रिहा उठाईआ। साची सखी उठ निधान, शब्दी शब्द जणाया। बस्त्र कर तन परवान, सोलां श्रृंगार वखाया। नेत्र कजला नाम दान, एका धार बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुरत सवाणी दए वखाया। सुरत सवाणी लै अंगड़ाई, आपणा नैण उग्घाड़या। साचे घर होई कुड़माई, कन्त वेख्या हाणी हाणीआं। मापिआं घर बैठी धी बाहर बैठा इक्क जवाई, ना मंगे पीणा खाणयां। ना बोले किसे नाल चाची ताई, भैण भाई ना कोई स्याणयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विचोला वेख वखाणयां। जगत विचोला शब्द गुर, एका एक रखाया। दोहां मिलावा करे धुर, साचा राह जणाया। साची जोड़ी जाए जुड़, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। कन्त भतारा हरि भगवन्त, वेखे दर दरवाज्जया। कवण दुआरे साजण सन्त, गुरमुख ग़रीब निवाज़िआ। आपे जाणे आपणी खेल भेव ना जाणे जीव जन्त, खेले खेल आदि जुगादिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादिआ। सुरत सवाणी कर श्रृंगार, नेत्र नैण रही शरमाईआ। आपणे अन्दरों आई बाहर, नौ दुआरे दए तजाईआ। मिले मेल मीत मुरार, एका आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, आप आपणी भुजां उठाईआ। अन्दर मन्दिर खोल्ह कवाड़, एका धाम रखाईआ। साची सेजा कर प्यार, आत्म वेख वखाईआ। मेल मिलावा हरि मीत मुरार, कन्त कन्तूहला नाउँ धराईआ। शब्द झूला झुलाए अपर अपार, इक्क हुलारा रिहा दवाईआ। निर्मल जोती जगे अगम्म अपार, दीवा बाती ना कोई रखाईआ। गुरमुख नारी कर प्यार, हरि हरि कन्त रही हंढाईआ। मिल्या मेल विच संसार, लोकमात वज्जी वधाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां सुहाए बंक द्वार, दर दुआरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कृपानिध नाउँ रखाईआ। हरि चरन दुआरा सच है, साचो साच समाए। काया माटी भाण्डा कच्च है, थिर रहिण ना पाए। नौ दुआरे रिहा नच्च है, मन

६२८
०७

मनुआ हो हलकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लए तराए। हरि चरन दुआरा हरि रंग, हरि हरि रंग रंगांयदा। गुरमुख मंगी साची मंग, प्रभ पूरन भिच्छया पांयदा। आत्म वखाए सच पलँघ, सच सिँघासण आसण लांयदा। एका शब्द इक्क तरंग, एका धार वहांयदा। एका तीर्थ एका तट्ट, एका गोदावरी एका गंग, एका जल समांयदा। एका रूप एका रंग कट्टणहारा भुक्ख नंग, जन भगतां दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन द्वार इक्क वखांयदा। चरन द्वार हरि रंग राता, गुरमुखां मुख सलाहीआ। मेट मिटाए अन्धेरी राता, एका चन्द चढ़ाईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, दो जहानां वेख वखाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांता, एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा एका बूझ बुझाईआ। चरन द्वार हरि साचा सज्जण, गुरमुखां मेल मिलांयदा। नेत्र नैण पाए कज्जल, अन्ध अन्धेर गवांयदा। दुरमति मैल धवाए कराए मजन, साचा धाम सुहांयदा। आदि जुगादी आया पर्दे कज्जण, नाम पर्दा एका पांयदा। काल नगारे घर घर सिर सिर वज्जण, धर्म राए डौरु वांयदा। किसे ना मेल कोई सज्जण, ना कोई मेल मिलांयदा। लाड़ी मौत चारे कुन्ट आए नच्चण, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन द्वार हरि निरँकार एका बूझ बुझांयदा। चरन द्वार हरि गोबिन्द, हरि हरि नज़री आया। मेट मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता चिखा गंवाया। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, आप आपणी रक्त तराया। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर समाया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, निन्दक निन्दया मुख भराया। जोधा सूरा वड मृगिन्द, गुरमुख लए उठाया। दाता दानी देवे दान गुणी गहिंद, नाम झोली दए भराया। प्रगट होए धरत धवल हिन्द, भारत खण्डी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन नाता इक्क बंधाया। चरन नाता धुर संजोग, गुरमुख वड वड्याईआ। आदि जुगादि ना होए विजोग, ना कोई मुख भवाईआ। आत्म रस साचा भोगे भोग, रस रसीआ आप अख्वाईआ। शब्द चुगाए साची चोग, माणक मोती हँस सुहाईआ। एका देवे साचा जोग, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। प्रगट हो दरस देवे हरि अमोघ, गुरमुखां वज्जे वधाईआ। दूई द्वैती हउमे हँगता कटे रोग, महल्ल अटल अचल उच्च करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन कँवल उप्पर धवल, जन भगतां मेल मिलाईआ। धरत धवल सहारा, ब्रह्मण्डां राह तकाईआ। गगन मण्डल रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहाईआ। ब्रह्मा चारे मुख करे पुकारा, अट्ठे पहर गाईआ। शिव शंकर मुंडीआं पावे हारा, सीस आपणा भेट चढ़ाईआ। करोड़ तेतीसा करे विचारा, सुरपति राजा इन्द वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करे कारा, करन कारन आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी जन्म हारा,

जूए जन्म गंवाईआ। गुरमुख विरले पावे सारा, जिस जन बूझ बुझाईआ। चरन कँवल कँवल चरन ढहि पए दुआरा, मोख मुक्त गुरचरन हेठां रही शरमाईआ। गुरमुख तेरा उच्च मुनारा, दिस किसे ना आईआ। भरया रहे हरि भण्डारा, प्रभ साचा आप वरताईआ। दीपक जोती जगे अपारा, नूरो नूर समाईआ। इक्क इकल्ला बैठा एका एकँकारा, गुरमुखां राह तकाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जुग जुग पावे सारा, दर दर घर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन दुआरा साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। चरन द्वार हरिजन वेख, आपणा मूल चुकाईआ। नेत्र लोचण नैण पेख, तृष्ना तृप्त कराया। मेटणहारा बिधना लेख, लेखा लेखे लए लगाया। वेख वखाए देस प्रदेश, दूर नेड़ ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ।

पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, घट घट आप समाया। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, आकाश आकाशा विच समाया। भगत सुहेला होए दासन दासा, लोकमात फेरा पाया। निज घर आत्म रक्खे वासा, दर दरवाज़ा वेख वखाया। शाहो भूप हरि ग़रीब निवाज़ा, शाह सुल्ताना आप अख्वाया। शब्द अनादी धुन वजाए अनहद वाजा, राग रागनी सेवा लाया। शब्द रक्खे चिट्टा अस्व ताजा, सच सिँघासण आसण लाया। जन भगत संवारे आपे काजा, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। शब्द शब्दी मारे वाजा, दिवस रैण रिहा जगाया। कलिजुग जोत अन्तिम प्रगटाए देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहाया। धुरदरगाही आया भाजा, राम रामा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख सुल्ताना, एका एकँकारया। जोती नूर जगे महाना, जोती जोत डगमगा रिहा। शब्दी शब्द इक्क तराना, एका नाद वजा रिहा। लोआं पुरीआं वेख वखाणा, ब्रह्मण्डां खण्डां आप समा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर देवे दाना, नाम भिच्छया झोली पा रिहा। लक्ख चुरासी कर पछाणा, गुरमुख सोए मात उठा रिहा। आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां हथ्थीं बन्ने गाना, भगत वछल नाम धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा रिहा। पारब्रह्म हरि दातार, निरगुण रूप समाया। निरगुण खेल अपर अपार, वेद कतेब भेव ना राया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला समाया। आवे जावे विच संसार, आप आपणा वेस वटाया। जलां थलां पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलाया। लक्ख चुरासी मीत मुरार, घट घट बैठा आसण लाया। भरम भुलाए जीव गंवार, माया ममता मोह रखाया। हउमे हँगता गढ़ हँकार, तन अन्दर इक्क टिकाया। गुरमुख साचे कर उज्यार, मन मनुआ बंध बंधाया।

मति बुध कर प्यार, एका बूझ बुझाया। शब्द धुन सच्ची धुन्कार, अन्दर मंगल एका गाया। गावत गाए मीत मुरार, पंचम पंचम वेख वखाया। जोत निरँजण सेवादार, जोती नूर करे रुशनाया। आपे खोलणहारा बन्द कवाड़, आपे कुण्डा लाहया। गुरमुख साजण सन्त सुहेले कर प्यार, आप आपणा राह रखाया। जुग जुग जोती जगे अपार, दस्म दुआरी डेरा लाया। अलक्ख अगोचर भेव न्यार, हथ्थ किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म सेजा इक्क सुहाया। आत्म सेजा सच सिँघासण, हरि साची जोती जोत जगाईआ। बैठा इक्क पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। साचे मण्डल पावे रासन, गोपी काहन आप अख्वाईआ। खेले खेल शाहो शबाशण, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, भगवन रूप आप हो जाईआ। आदि पुरख शाह सुल्ताना, नर नरायण अख्वाया। खेले खेल दो जहानां, पतित पावण नाम धराया। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां डेरा लाया। लक्ख चुरासी कर प्रधाना, त्रैगुण माया जोड़ जुड़ाया। पंचम मेला खेल महाना, पंचम पंचम वेख वखाया। दर घर बैठा हरि भगवाना, दिस किसे ना आया। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। आत्म अन्तर देवे नाम निधाना, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। एका राग इक्क तराना, एका कान सुणाया। एका घर इक्क टिकाणा, एका एक हरि हरि नज़री आया। एका शब्द इक्क बिबाना, एका रिहा चढ़ाया। भेव ना पाए कोई राजा राणा, राज राजानां दिस ना आया। मेल मिलाए ग़रीब निमाणा, ग़रीब निवाज़ा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाए हरि निरँकार, अकल कला अख्वाया। जुग जुग लोकमात लै अवतार, आप आपणी रचन रचाईआ। निरगुण सरगुण कर उज्यार, धरत मात वेख वखाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा पावे सार, अगम्म अथाह बेपरवाह खेले खेल हर घट थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, सगला संग निभाईआ। सगल संग सगल हरि साथा, आपणी कल वरताईआ। आपे पूत सपूता रामा दसराथा, लंका गढ़ आप तुड़ाईआ। आपे होए मुकंद मनोहर लख़मी नरायण रथ रथवाही आप अख्वाईआ। आपे नानक गोबिन्द गाए गाथा, गुर गुर वड्डी वड्याईआ। आपे पूजा आपे पाठा, आपे मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। आपे सर सरोवर मारे ठाठा, जल धारा आप वहाईआ। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाटा, नटूआ सांग वरताईआ। आपे जोत ज्वाला अग्नी लट लाटा, आदि शक्त आप अख्वाईआ। आपे जुग जुग पूरा करणहारा घाटा, जीवां जन्तां वेख वखाईआ। वेख वखाणे तीर्थ ताटा, तट किनारा वेख वखाईआ। चौदां लोकां खोल्हे हाटा, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता आप अख्वाईआ। जुग करता हरि करनेहारा, एका एक अख्वन्तया। आदि अन्त लै अवतारा, खेले खेल सूरा सरबन्गया। चले चलाए आपणी धारा, आपे शाह कंगाल आपे भुक्खा नम्गया। आपे राज जोग शाह सुल्तान सच सिक्दारा, आपणा दर आपे मंगया। आपे लोआं पुरीआं आपे खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज दे सहारा, आपे वेख विखन्तया। आपे जाणे आपणा आर पार किनारा, डूँघा सागर खोज खुजन्तया। जोती नूर कर उज्यारा, खेले खेल श्री भगवन्तया। भगतन मीता विच संसारा, देवे नाम सच सुगन्तया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सृष्ट सबाई वेख वखन्तया। चार वरन लगायण आपणा नाअरा, एका शब्द ना कोई रखन्तया। पारब्रह्म प्रभ लै अवतारा, लक्ख चुरासी बूझ बुझन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव खुल्हाए साचे सन्तया। साचा सन्त हरि रंग राता, दिवस रैण प्रभात। होए सहाई पिता माता, मेट मिटाए जात पात। शब्द देवे साची दाता, बैठा रहे इक्क इकांत। चार वरन बंधाए एका नाता, अमृत आत्म प्याए बूंद स्वांत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी वाट। कलिजुग अन्तिम अन्धेरी रैण, जगत अन्धेरा छाया। रसना किसे ना सके कहिण, ना कोई लेख लिखाया। गुरमुख आत्म पाए वैण, नेत्र रो रो नीर वहाया। नाता तुटा मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण, सतिगुर पूरा दिस ना आया। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरे सारे बहिण, गुर का शब्द ना किसे कमाया। खाणी बाणी वेखे नैण, नैण नैणां इक्क दरसाया। कलिजुग माया ममता लोभ मोह हँकार किसे लैण ना देवे चैन, चारों कुन्ट फिरे दुहाया। वर वेखे लाड़ी मौत डैण, उच्चे टिल्ले डेरा लाया। धर्म राए चुकाए लहिण देण, लेखा आपणा वेख वखाया। चित्रगुप्त अग्गे हो सारे कहिण, ना कोई मेटे मेट मिटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, कलिजुग वरती विच संसार, पुरख अबिनाशी आया लैण, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि भगवाना, जोती जोत जगाईआ। शब्द खण्डा शब्द तीर कमाना, शब्द गुर रिहा उठाईआ। शब्द जोधा शब्द सूरबीर बलवाना, शब्द शब्दी नाउँ उपाईआ। शब्दी आए विच मैदाना, शब्द शब्द करे कुड़माईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लक्ख चुरासी होई निधाना, कलिजुग कूड़ा रिहा सवाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना भुल्ले पीणा खाणा, मदिरा जाम इक्क प्याईआ। अन्दर मन्दिर ना सुणया गाणा, राग ताल रहे वजाईआ। पाया पद ना इक्क निरबाणा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जगत भेख ना पार कराना, बिन गुर पूरे ना कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। एका डंका हरि निरँकार, आपणा आप वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सोया कोई रहिण ना पांयदा। सत्तां दीपां नौआं खण्डां

६३२
०७

बन्ने धार, एका नाअरा लांयदा। वरनां बरनां रिहा वेख विचार, चार यारी फोल फुलांयदा। संग मुहम्मद चुक्कणा पए भार, वेला अन्तिम आंयदा। अल्ला राणी करे विचार, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। प्रगट होया बेऐब परवरदिगार, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। ख़लक खुदाई सांझा यार, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। ऐनलहक्क ना करे कोई पुकार, मुकामे हक्क ना कोई वखांयदा। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, काया कुरा ना कोई पार करांयदा।

* १६ भाद्रों २०१५ बिक्रमी साधू सिँघ दे घर
पिण्ड रोडे ज़िला फ़िरोज़पुर *

हरि दाता मेहरवान, आदि जुगादि समाया। जोती नूर हरि भगवान, एका एक अख्वाया। पारब्रह्म पुरख सुल्तान, सतिगुर नाम धराया। आदि निरँजण इक्क निशान, एका रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपाया। जोती नूर हरि कर करतार, करता पुरख नाउँ धराईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, निहचल धाम सुहाईआ। करे खेल खेलणहार, खेल खलंता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि हरि रूप समाईआ। हरि रूप हरि रतड़ा, हरि हरि पुरख सुजान। वसे एका धाम अनडीठड़ा, ना लेखा लिखे कोई जहान। दाता दानी हरि बसीठड़ा, परम पुरख सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त एका काहन। आदि पुरख हरि अबिनाशा, परम पुरख सुल्तानया। जोती नूर खेल तमाशा, नूरो नूर करे महानया। आपणा वेखे आप तमाशा, आपणा मण्डल आप सुहानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत उपाए जगाए इक्क भगवानयां। जोती नूर करे उजाला, हरि नूर करे रुशनाईआ। दीनां बंधप दीन दयाला, दयानिध अख्वाईआ। थिर घर वेख सच्ची धर्मसाला, बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत हरि गोबिन्द, आपणी आप उपांयदा। आप आपणी मेटे चिन्द, आप आपणा दुःख गवांयदा। आप आपणा बणे बख्शिंद, आप आपणी भिच्छया झोली पांयदा। आप आपणी उपजाए बिन्द, जोती जोत सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धरांयदा। आदि पुरख हरि पुरख अकाला, निरगुण रूप समाईआ। आपे चले आपणी चाला, चाल अवलड़ी इक्क रखाईआ। आपणे फल लाए डाला, फल फुलवाड़ी आप सुहाईआ। आपणे दर सुहाए ताला, अमृत ताल भराईआ। आपणे दर वखाए जोत ज्वाला, आदि शक्त रूप

वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण रूप हरि करतार, एका एक अख्वाया। इक्क इकल्ला एकँकार, एका नाम धराया। एका वसे धाम न्यार, धाम अवल्लड़ा आप सुहाया। ना कोई दूसर दिसे मीत मुरार, सगला संग ना कोई रखाया। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई जणाया। ब्रह्मा विष्न शिव ना करे कोई प्यार, करोड़ तेतीसा ना वेस वटाया। ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई अधार, उत्भुज सेत्ज ना बणत बणाया। रवि ससि ना कोई उज्यार, मण्डल मण्डप ना कोई सहाया। लक्ख चुरासी ना पसर पसार, त्रैगुण माया ना कोई उपाया। पंज तत्त ना कोई अधार, ना कोई पंजी मेल मिलाया। अप वाए तेज पृथ्मी आकाश ना कोई करे ख़बरदार, मन मति बुध ना कोए टिकाया। नौ द्वार ना पार किनार, दसवां गुप्त ना कोई रखाया। ना कोई रसना जिह्वा गाए राग मलार, बत्ती दन्द ना कोई हिलाया। ना कोई सर सरोवर तीर्थ तट किनार, ना कोई नुहौणी नुहावण जाया। चौदां लोक चौदां तबक ना हट्ट बज़ार, ना कोई वेसी वेस वटाया। खाणी बाणी ना कोई रिहा उचार, वेद पुराण ना कोई लिखाया। शास्त्र सिमरत ना बन्ने धार, अञ्जील कुरान ना कोई गाया। मन्दिर मस्जिद ना कोई गुरुदुआर, शिवदुआला मट्ठ ना कोई रखाया। थिर घर बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा कर्म कमाया। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रिहा राह वखाया। जोती जोत कर उज्यार, जोती नूर करे रुशनाया। धरया नाउँ नर निरँकार, निरगुण वेस वटाया। जोती सेजा कर प्यार, आपे रिहा हंढाया। शब्द सुत जन दुलार, आपणा वेस वटाया। आप सुणाए करे ख़बरदार, एका बूझ बुझाया। पिता पूत इक्क प्यार, पारब्रह्म समझाया। अकाल पुरख तेरी बन्ने धार, अकाल मूर्त नज़री आया। नाद तूरत विच अपर अपार, हरि साचा रिहा वजाया। आपे नेड़े दूरत दर घर सच दरबार, दर दरवाज़ा इक्क वखाया। आसा मनसा पूरत हरि निरँकार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। शब्द सुत उठ बलकार, आपणा सीस रिहा झुकाया। पारब्रह्म प्रभ ढहि पया द्वार, तेरा तेरी सेव कमाया। करता पुरख करे ख़बरदार, एका हुक्म सुणाया। सच तख्त बैठ सुल्तान, सति सरूपा वेख वखाया। नादी सुत देवे धुर फ़रमाण, लेखा लिख्त विच ना आया। रचना आप करे हो मेहरवान, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा उपाया। लोक परलोक कर प्रधान, पतिपरमेश्वर वेख वखाया। वेखे खेल धरत धवल जल बिम्ब ज़िमी अस्मान, आकाश आकाश प्रकाश रखाया। त्रैगुण माया कर परवान, त्रै त्रै वेस वटाया। आप आपणा दर पछाण, दर साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, शब्द सुत इक्क उपजाया। शब्द सुत वड बलकारा, एका एक अख्वांयदा। आपणा करे आप विहारा, आप आपणी रचन रचांयदा। कँवल कँवला देवे धारा, अमृत मुख चुआंयदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, ब्रह्मे झोली पांयदा। लक्ख चुरासी कर उज्यारा,

आप आपणा विच टिकांयदा। खेले खेल विच संसारा, हर घट आसण लांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, आप आपणा धर्म धरांयदा। शब्द सुत बण लिखारा, ब्रह्म ए समझांयदा। वेद वेदा कर उज्यारा, चारे जुग वंडांयदा। सतिजुग तेरा सोहे दुआरा, हरि निरँकारा वार अठारां मेल मिलांयदा। त्रेता तेरा रूप अपारा, दोए धारा आप रखांयदा। जन भगतां करे पार किनारा, हँकारी गढ़ तुड़ांयदा। द्वापर तेरी बन्ने धारा, पुराण अठारां वेख वखांयदा। वेद व्यासा मीत मुरारा, एका गुण सुणांयदा। काहना कृष्ना खेल न्यारा, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। दूतां दुष्टां कर सँघारा, बंस सरबंसा आप आपणा मेट मिटांयदा। कलिजुग वेखे तेरी धारा, तेरे रंग समांयदा। ईसा मूसा कर प्यारा, एका बूझ बुझांयदा। वेख वखावे मुहम्मदी यारा, चार यारी संग रखांयदा। आपे लाए आपणा नाअरा, हक्क बहक्क आप जणांयदा। आपे पावणहारा सारा आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बंधांयदा। कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। नानक गुर हरि कर प्यार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, नाम सति हथ्थ फड़ाईआ। हउमे हँगता कर ख्वार, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। रंगन रंग चाढ़े जगत अपार, रंगणहारा आप अख्वाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा करे विचार, दर दर फेरी पाईआ। एका जोती नूर दस कर उज्यार, गोबिन्द धार इक्क बंधाईआ।
६३५
०७
शस्त्र बस्त्र कर त्यार, तन गात्रा इक्क सजाईआ। एका रक्खे खण्डे धार, तिक्खी सिक्खी बणत बणाईआ। लेखा लिखे अपर अपार, अन्तिम सरसे गया रुढ़ाईआ। देवे सुनेहड़ा साचे यार, सथ्थर हेठ विछाईआ। अकाल पुरख प्रभ सुण पुकार, वेखे राह वाहो दाहीआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, पूत सपूता एका जाईआ। तेरा सोहे बंक द्वार, दर दुआरा वेख वखाईआ। भरया रहे जगत भण्डार, ना ख़ाली कोई कराईआ। पहरेदार आप करतार, तेरी सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा वेख वखाईआ। साचा घर धुर दरबारा, हरि एका एक विखानयां। आदि पुरख आदि निरँजण जगे जोत अगम्म अपारा, जोती नूरो नूर महानयां। शब्द सुत वड सिक्दारा, खेले खेल विच जहानयां। आदि जुगादि जुग जुग आवे वारो वार, लोकमात हो परधानयां। गुर गोबिन्द लिख्या लेख अपारा, लेखा लिख्त ना कोई मिटानयां। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, शब्द खण्डा इक्क चमकानयां। लोआं पुरीआं ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलारा, सृष्ट सबाई पुण छाण करानयां। लक्ख चुरासी वेखे परखे जीव जन्त गंवारा, अन्दर मन्दिर फोल फुलानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत शब्द सुणाए सच तरानयां। शब्द गाणा साचा राग, हरि साचा आप गाईआ। हरिजन सोए जायण जाग, मनमति गूढ़ी नींद सवाईआ । जन

भगतां बुझाए तृष्ना आग, मनमुखां रही सताईआ। गुरसिख बणाए फड़ फड़ हँस काग, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। शब्द कवाड़ा खोल्हे ताक, आपणी बूझ बुझाईआ। भगत सुहेला वेखे मारे झाक, एका दूजा पर्दा लाहीआ। तीजे नैण मिले पाकी पाक, चौथे पद रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई तेरा खेल, हरि साचे सच खिलाया। आदि जुगादी करया मेल, जगत विछोड़ा आप कटाया। आपे होए सज्जण सुहेल, आपे बैठा मुख भवाया। आपे वस्सया रंग नवेल, हर घट आपे डेरा लाया। आपे गुरू गुर चेल, गुर चेला नाम धराया। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेल, फंदन फंद ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा डंक वजाया। शब्द डंक हरि निरँकार, जुग जुग आप वजांयदा। कलिजुग अन्तिम हो त्यार, जोती जामा भेख वटांयदा। निरगुण रूप खेल अपार, निरगुण धारा इक्क चलांयदा। निरगुण खण्डा तेज़ कटार, निरगुण आपणे हथ्थ उठांयदा। निरगुण ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, जेरज अंडां वेख वखांयदा। निरगुण भेख पखण्डा दए निवार, एका खण्डा आप उठांयदा। निरगुण उच्चा डण्डा लाए अपर अपार, सो पुरख निरँजण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा शब्द उपजांयदा। शब्द गुर जगत अवतारा, हरि हरि आप कराया। हरि हरि बणया मीत मुरारा, एका धाम सुहाया। दोहां मेला विच संसारा, भेव कोई ना राया। वेद कतेब ना किसे विचारा, ना कोई लेखा लेख लिखाया। रसना जिह्व किसे ना गाया, ना पाया धुर दरबारा। कलिजुग माया पाया छाया, भुल्लया सर्ब संसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखणहार पसारा। जोती नूरी हरि दातार, आपणी आप जगाईआ। कलिजुग कूड़ा वेख संसार, लोकमात करे रुशनाईआ। मनमति होई ख्वार, बुध रही शरमाईआ। धीरज यति सति सन्तोख ना कोई अधार, सांतक सति ना कोई कराईआ। हउमे हँगता गढ़ हँकार, जीवां जन्तां वंड वंडाईआ। साध सन्त होए नार विभचार, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। खाली होए नाम भण्डार, नाम भण्डार ना कोई वरताईआ। दर दर मंगण बण भिखार, साध सन्त ना कोई वड्याईआ। मिल्या मेल ना हरि मीत मुरार, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। मानस जन्म ना ल्या संवार, लक्ख चुरासी फंद ना तोड़ तुड़ाईआ। गुर का शब्द अपर अपार, गुरमुखां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजाईआ। निहकलंक डंक अपार, हरि हरि आप वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। वासी पुरी घनका हो त्यार, सम्बल नगरी डेरा लाया। जननी जन जन गा लए अधार, भगत वछल आप अख्वाया । जोती शब्दी तिनका इक्क हुलार,

सृष्ट सबाई दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मृदंग रिहा वजाया। शब्द मृदंगा वजाया ढोल, सतिगुर पूरा आप वजांयदा। सृष्ट सबाई पर्दे खोल्ह, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। लक्ख चुरासी खेले होल, हौली हौली बणत बणांयदा। नाम कंडे देवे तोल, तोलणहार आप अख्वांयदा। राज राजान शाह सुल्तान सुत्ते अनभोल, माया पर्दा एका पांयदा। सम्मत सोलां रचया घोल, वेखणहारा वेख वखांयदा। नाम वस्त जिस जन साचे कोल, अग्गे हो हो दर्शन पांयदा। मन मति माया जगत करे मखौल, हरि का भेव कोई ना पांयदा। नानक गोबिन्द कीता कौल, हरि जोती पूर करांयदा। जन भगतां आत्म अन्तर पर्दे देवे खोल्ह, बज़र कपाटी कुण्डा लांहयदा। अनहद शब्द अनादी धुन वजाए ढोल, अनहद वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्म ब्रह्म फोल फुलांयदा। पारब्रह्म वेख ब्रह्माद, आपणा रूप वटाया। शब्द वजाए साचा नाद, अनादी धुन रखाया। लेख लिखाए बोध अगाध, बोध अगाध आप अख्वाया। जीवां जन्तां लक्ख चुरासी देवे दाद, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाम रखाया। निहकलंक हरि अकाला, एका एक अख्वाया। दूजा वसाए सच महल्ला, तीजा दर सुहाया। चौथे पद आपे मला, निरगुण नूर करे रुशनाया। पंचम मेटे द्वैती सला, सालस नाम रखाया। छेवें वस्सया ना छप्पर छन्ना, छप्पर छन्न ना कोई सुहाया। सति पुरख निरँजण सति सति सति कर आप आपणा आपे मन्ना, ना कोई दूसर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए जगाया। हरिजन साचे जगावणहारा, एका पुरख अकालया। आवे जावे विच संसारा, दीनां बंधप दीन दिआलया। देवे नाम सच्चा सहारा, शब्द सहारा दो जहानयां। इक्क वखाए पार किनारा, मँझधार ना कोई रुढ़ानयां। चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां भेव मिटानयां। राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां भीख मंगाए, घर घर फेर फिरानयां। गुरमुख सुहाए बंक दुआरा, बंक द्वारी हरि भगवानयां। नाम खण्डा शस्त्र बण कटारा, अमृत आत्म इक्क पयानयां। काया करे ठंडी ठारा, सीतल सांतक धार वहानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल जगत जहानयां। जगत जहानां हरि भगवाना, आप आपणा खेल खलांयदा। शब्द चिल्ला तीर कमाना, रसना आप चलांयदा। जोधा सूर बली बलवाना, बल धारी आप अख्वांयदा। लोआं पुरीआं करे इक्क निशाना, राह विच ना कोई अटकांयदा। सृष्ट सबाई वेख वखाणा, वेखणहार दिस ना आंयदा। गुरमुखां वेखे काया मन्दिर अन्दर सच मकाना, घर घर विच आप बणांयदा। जोती नूर जगे महाना, जोत

निरँजण सेवा लांयदा। पंचम सखीआं एका गाणा, एका राग अलांयदा। आत्म सेजा धाम सुहाना, सच सुहञ्जणी सेज विछांयदा। शब्द सरूपी गुर बन्ने गाना, दिस किसे ना आंयदा। अमृत आत्म सर सरोवर इक्क कराए अशनाना, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचांयदा। कलिजुग तेरा काला वेस, हरि साचा वेख वखांयदा। चारों कुन्ट दर दरवेश, दर दर फेरी पांयदा। भरमे भुल्ले नर नरेश, राज राजान ना कोई उठांयदा। जोती जोत जगे दस दस्मेश, दहिसर रावण कलिजुग रामा मेट मिटांयदा। आदि जुगादि जुग जुग खेले खेल हमेश, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर आप चमकांयदा। जोती नूर हरि चमत्कार, जुग चौथे आप चमकाया। सृष्ट सबाई होए उज्यार, ना कोई पर्दा सके पाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां बन्ने धार, एका धर्म वखाया। एका रंग रंगे करतारा, करता करनी रिहा कराया। एका दर भरे भण्डारा, चार वरन मंगण आया। अठारां बरन पार किनारा, नीच ऊँच ना कोई वखाया। ब्रह्म ब्रह्म कर पसारा, हड्ड मास नाड़ी चम्म इट्टां गारा लाया। आदि पुरख अबिनाशी करता ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग वेस वटाया। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, ना कोई आलस निन्दरा रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दोए धार वेख वखाया। दोए धार हरि निरँकार, आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग कूड़ा मेट पसार, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, सोया सुत लए उठाईआ। देहां मेला विच संसार, अन्तिम दए कराईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सतिजुग साचा हो उज्यार, धरत मात गोद सुहाईआ। दोहां विचोला मीत मुरार, हरि शब्द आप अख्वाईआ। कलिजुग कूड़ा नेत्र खोल्, चारों कुन्टां वेख वखाईआ। सतिजुग साचा बोले बोल, इक्क जैकारा लाईआ। गुर का शब्द तोलणहारा तोल, विच विचोला इक्क रखाईआ। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट वेख विचारया। सतिजुग साचा हो त्यारा, अन्दरों निकलया बाहरया। हरि का शब्द तेज कटारा, दे मति आप समझा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम रैण, लोकमात जग आईआ। सतिजुग उठया साचा सैण, सज्जण मीत सहिज सुख दाईआ। गुर का शब्द गुर गुर रसनी कहिण, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, अन्तिम रूप वटाया। सतिजुग साचा हो उज्यारा, लोकमात करे रुशनाया। गुर का शब्द करे प्यारा, गुर गुर वेस वटाया। कलिजुग तेरा कूड़ा नाता, हरि साचे तोड़ तुड़ावणा। सतिजुग तेरी उत्तम ज़ाता, लोकमात आप धरावनां। दोहां विचोला पुरख बिधाता, वेला अन्त सुहावणा। कलिजुग पैंडा जाए मुक्क, हरि साचा आप मुकाईआ। चारों कुन्ट मुख पैणे थुक्क, सगला संग ना कोई रखाईआ। सुफल ना होई धरत मात कुक्ख,

कूड़ा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत तृष्ना ना उतरी भुक्ख, जूठ झूठ ना मात तजाईआ। अन्तिम बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दर घर घर वेख वखाईआ। सतिजुग साचा बाल निधाना, एका लै अंगड़ाईआ। हरि का शब्द कर परवाना, नेत्र रिहा खुल्हाईआ। जन भगतां बन्न्हे हत्थीं गाना, लोकमात सगन मनाईआ। आत्म देवे जिया दाना, आत्म ब्रह्म जणाईआ। दर द्वार वखाए इक्क महाना, एका घर सुहाईआ। एका जोत श्री भगवाना, पुरख अकाल इक्क मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम सतिजुग वेखे साचा दर, दर दरबारा आप सुहाईआ। दर दरबारा हरि हरि ला, आपणा तख्त सुहाईआ। कलिजुग कूड़ा ल्या बुला, एका हुक्म जणाया। झूठा जगत झूठा मलाह, झूठा बेड़ा रिहा चलाया। झूठा धंधा झूठा राह, झूठा मार्ग वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दए सजाया। बैठ तख्त हरि सुल्तान, आपणी बूझ बुझाईआ। सतिजुग साचे देवे दान, एका वस्त झोली पाईआ। चार वरन इक्क ज्ञान, हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई ना कोई जणाईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, इष्ट गुरदेव इक्क मनाईआ। एका पीण एका खाण, एका बस्त्र तन पहनाईआ। एका राग एका नाद सारे गाण, गावत गावत मुख सुहाईआ। चौदां हट्ट वखाए दुकान, चौदां तबक इक्क दर बणाईआ। वेख वखाणे लोआं पुरीआं ज़िमी अस्मान, खण्डां ब्रह्मण्डां इक्क वड्याईआ। एका गोपी एका काहन, एका सीता राम जणाईआ। एका अल्ला राणी कर प्रनाम, परवरदिगार इक्क ख़ुदाईआ। एका ब्रह्म कर पछाण, ब्रह्म विद्या दए पढ़ाईआ। सतिजुग साचे हो मेहरवान, हरि साची भिच्छया झोली पाईआ। उठ बालक बाल निधान, बाली बुध वड्याईआ। धरत धवल मंगे इक्क निशान, धर्म निशाना इक्क वखाईआ। सत रंग रंगे महान, सति सतिवादी आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे बूझ बुझाईआ। कलिजुग नेत्र नीर वहा, रो रो दर पुकारया। कोई ना पकड़े मेरी बांह, ना कोई दिसे मीत मुरारया। ना कोई देवे ठंडी छाँ, ना कोई सगला संग निभा रिहा। जीव जन्त बुध होई काँ, काग काग वांग कुरला रिहा। किसे हत्थ ना आए साचा ना, नाम भण्डारा ना कोई रखा रिहा। मुख लगाई बैठे सूर गां, अन्तिम कोई ना लड़ फड़ा रिहा। नाता तुट्टा पुत्तरां माँ, भैण भाई ना कोई मिला रिहा। दरगहि साची ना मिले सच्चा थाँ, राए धर्म राह अटका रिहा। चित्रगुप्त करे सच न्याँ, लिख्या लेख खोल्ह आप वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साचा वेख वखा रिहा। सतिजुग साचे तेरी साची रीत, हरि साचे मात चलाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, देहुरा मट्ठ ना कोई वखाईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीट, वरन बरन ना वंड वंडाईआ। देवे धाम

अवल्ला इक्क अनडीठ, धाम अनडीठड़ा डेरा लाईआ। सन्त सहेले रक्खणे चीत, चित वित ठगौरी ना पाईआ। सोहँ शब्द सुनाउणा सुहागी गीत, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म आप चलाए आपणी रीत, शब्द गुर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल सृष्ट सबाईआ।

*** २० भाद्रों २०१५ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ***

हरि रूप अपार, हरि हरि समाया। हरि भूप सिक्दार, शाहो भूप अख्वाया। रंग रूप अपर अपार, रंग रंगण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दरस दिखाया। पारब्रह्म हरि दातार, हरि साजण शाहो शाबासा। निर्मल दीआ कर उज्यार, घर आपणे करे वासा। शब्द शब्दी बन्ने धार, शब्द शब्दी खेल तमाशा। शब्द शब्दी कर श्रृंगार, शब्दी शब्द पावे रासा। शब्द खड़ग खण्डा कटार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दए आधार। आपणा मीत हरि भगवाना, पारब्रह्म बेअन्ता। शब्द गुर वड बलवाना, एका एक संग रखंता। आप उठाए सच निशाना, साचे धाम आप सुहंता। लेख लिखाए आप महाना, ना कोई वेख वखंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा धाम सुहंता, धाम सुहंता धुर दरबारा, हरि हरि थान सुहाया। घर मन्दिर बैठ हरि निरँकारा, आप आपणा खेल खिलाया। शब्दी डंक अपर अपार, शब्द शब्दी रिहा वजाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, घट घट अन्दर वेख वखाया। काया चढ़ उच्च मुनार, दर साचा वेख विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा इक्क चमकाया । शब्द खण्डा खड़ग खग, पुरख अकाल रखांयदा। उप्पर टिकाए शाह रग, आर पार आप करांयदा। वेख वखाए सृष्ट जग, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धीर धरांयदा। खड़ग खण्डा तेज़ कटारी, शब्दी धार चलाईआ। गुर गोबिन्द बण ठठयारी, साची बणत बणाईआ। खेले खेल वड बलकारी, जोधा सूरा नाउँ धराईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारी, आप आपणा थान सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। हरि सज्जण साँईं मैंडड़ा, नढड़ी शाहो नाल। लहिणा देणा चुकाए तैंदड़ा, गुर शब्दी सुरत संभाल। लोकमात चुक्के पैंडड़ा, लोआं पुरीआं करे खाल। इक्क जैकारा अलक्ख अलख आपे कहिंदड़ा, एका जल्वा नूर जलाल। धाम अवल्ले आपे रहन्दड़ा, ना कोई वेखे जीव जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी चले चाल। सखी मैंडी सखीआ, साजण पूरी आस। आस एका रखीआ, मिले मेल

सर्ब गुणतास। काया चोली लाई पक्खीआ, छप्पर छन्न निवास। अन्दर बहि बहि आपे हस्सीआ, आपे करे हास बिलास। आपणे आप आपे आवे नस्सीआ, वेख वखाए पृथ्मी आकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्द करे बन्द खलास। सखी मैंडड़ा रंगीला कन्त, नढुड़ा रूप अपार। दिस ना आवे जीव जन्त, जगत खेल करतार। लभ्भ लभ्भ थक्के साध सन्त, मिल्या मेल ना मीत मुरार। कलिजुग माया पाए बेअन्त, चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार। बूझ बुझाए पूरन सन्त, निर्मल जोत कर उज्यार। सुणाए इक्क सुहागी छंत, हरि शब्दी रसन उचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर वेखे दर द्वार। हरि सज्जण अनडीठड़ा, रंग रंगीला राम। आपे सुत्ता दे कर पिठ्ठड़ा, छैल छबीला नौ जवान। साचा धाम इक्क सुहंदड़ा, ना दिसे कोई निशान। गुरमुख साचे वेख वखंदड़ा, शब्दी देवे धुर फ़रमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे मार ध्यान। साँईं मेरा साख्यात, सखी सुहेली संग। वेख वखाए कायनात, घर घर वजाए मृदंग। सच सवाणी वेखे मार झात, कवण रंगीले बैठा इक्क पलँघ। कवण मुख गाए वाक्, कवण मंग रही मंग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण साचा साक। नारी कन्त पछानणा, मुखड़ा घुँगट खोल्ह। घर मन्दिर होए चानणा, शाहो सज्जण सच्चा पए बोल। नाम फड़ाए एका दामना, तन काया जाए मौल। धुरदरगाही होए जामना, पूर कराए आपणा कौल। पूरी करे तृष्ना कामना, चरन प्रीती जन जन घोल। मेल मिलावा राम रामना, राम रामा वसे कोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्द कंडे रिहा तोल। हरि सज्जण वेख वखानयां, परम पुरख करतार। छैल छबीला नौजवानयां, बिरध बाल ना कोई आकार। एका जोबन रंग मस्तानयां, एका नैणां कजल धार। बस्त्र भूषन इक्क विखानयां, घड़े घड़ाए ना कोई सुन्यार। पलँघ रंगीला इक्क परवानयां, रूप रंग अपर अपार। दीपक जोती सच मकानयां, जगे अगम्म अपार। आपणा घर आपे करे परवानयां, गुर शब्दी वड सिक्दार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धार। सखी सुहञ्जणी निरँजणी जोत, आपणा वेस वटाईआ। आपणा वेख किला कोट, बैठे घर सुहाईआ। शब्द रंगीले लाए चोट, करे आप कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सखी साचा मंगल, घर साचे आप गाईआ। दर सच्चा शाह सुल्तान, हरि हरि अख्वाया। हथ्थीं गाना नाम निशान, सोहणा सगन मनाया। अस्व घोड़े चढ़या हो मेहरवान, चरन रकाबे ल्ए टिकाया। नाम पलाणा सिफ्त महान, सोलां कलीआं वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। साची सखी कर श्रृंगार, आपणा आप संवारया। आपणे घर हो त्यार, सखीआं मेल मिला रिहा। सखीआं मेला अपर अपार, एका

राग अला रिहा। एका तन्द बण कर विहार, एका घर सुहा ल्या। गाया छन्द हरि निरँकार, एका मंगल आप वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर सज्जण वेख विखा ल्या। पुरख सुल्तान साचा कन्त, कन्ता रूप वटाया। आपणी चोली रंगे बसन्त, एका रंग रंगाया। मिले मेल खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सज्जण सच्चा आया। सखी सहेली मंगलाचार, शब्दी गावण गाया। दर दुआरे आए कन्त भतार, नेत्र नैण रहे शरमाया। उठ उठ वेखे मार ध्यान, कवण कूटे डेरा लाया। गुर का शब्द दए ज्ञान, गुर गुर भेव खुल्हाया। उठी सखी नौजवान, आप आपणा पल्लू आपणे लड़ बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क सुहाया। साजण हरि करतार, मन्दिर डेरा लाईआ। आपे करे आपणी कार, करता पुरख नाउँ धराईआ। चरन टिकाए दर दलीज़ अन्दर बाहर, दर साचा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि रघुराईआ। आया कन्त साचे मन्दिर, सखी नैण उग्घाड़या। भाग लगा डूँघी कन्दर, नाता तुट्टा जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। लहिणा देणा चुक्कया जीव जन्त, हउमे तन अग्नी अग्ग साड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे लड़ बंधा ल्या। आपणा लड़ आप फड़ा, आपणा सगन मनाया। आपणा आसण आपे डाह, आपे आसण लाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, आप आपणे गिरद रिहा फिराया। पहला गेड़ा दए दवा, जगत नाता तोड़ तुड़ाया। दूजा गेड़ा दस्से राह, काया खेड़ा रहिण ना पाया। तीजा गेड़ा झेड़ा दए चुका, नेत्र लोचण इक्क वखाया। चौथा गेड़ा चौथे पद पुरख अबिनाशी दए मिला, साचा दर सुहाया। साचे घर सेज सुहञ्जणी दए विछा, फूलण बरखा लाया। नाद अनादी पुरख अगम्मा धुन अनाहद दए वजा, साचा ताल रखाया। निरगुण जोती कर रुशना, नूरो नूर डगमगाया। सखी सहेली लए मिला, साचा सगन मनाया। जोती जोत लए टिका, जोती जोत समाया। कलिजुग अन्तिम बेपरवाह, निहकलंका नाउँ रखाया। गोबिन्द नारी आप बणा, लोकमात उठ धाया। जोड़ी वसे एका थाँ, एका पलँघ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। हरि कन्त पुरख अबिनाश, साचा हुक्म सुणाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, दे मति रिहा समझाईआ। लोआं पुरीआं वेख रास, गगन मण्डल फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची नारी एह जणाईआ। गोबिन्द नारी सुण धुर फ़ुरमाणा, दोए जोड़ करे निमस्कारा। कन्त मैंडड़े तेरा धुर फ़रमाणा, लग्गे मोहे प्यारा। खेले खेल दो जहानां, लोकमात करां उज्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम धुर करतारा। पुरख सुल्तान सति सतिवादी, आपणा हुक्म जणांयदा। नाम रखाए बोध अगाधी, आपणी

बूझ बुझांयदा। साचे घर होए शादी, साचा संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। नारी गोबिन्द कर प्यार, एका करे सुणाईआ। सज्जण मैंडड़े मीत मुरार, तैंडड़े चरनां घोल घुंमाईआ। नैण मंगेदड़े दरस अपार, रो रो नीर वहाईआ। दोहां मेला होया अपर अपार, घर साचे वज्जी वधाईआ। उपज्या सुत ना कोई दुलार, मेरी गोद ना हरी कराईआ। तेरा नाउँ नर निरँकार, तेरी सेवा बिरथा ना जाईआ। खड़ग खण्डा खड़काया विच संसार, दुष्ट दमना सेव कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म तेरे उत्तों दित्ता वार, पूत सपूता वेख वखाईआ। पंज तत्त ना करया कोई प्यार, मात पित ना वेख वखाईआ। एका मंगी मंग द्वार, हउँ नार तूं कन्त कन्तूहला साचा साँईंआ। ना ज़ोरावर सिँघ फतिह ना अजीत जुझार, रक्त बूंद सुत ना कोई रखाईआ। पंज तत्त ब्री ना कर विहार, ना कोई सेज हंढाईआ। अन्तिम मंगया कर प्यार, तेरा दरस साचे माहीआ। ढहि ढहि पई चरन द्वार, चरन दासी नाम रखाईआ। किरपा कर एकँकार, लक्ख चुरासी जून तजाईआ। वेख्या दर सच्चा दरबार, अग्गे बैठा झोली डाहीआ। नारी कन्त इक्क प्यार, एका घर सुहाईआ। साचा बख्श सुत दुलार, ना मरे ना जाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता करे सच विहार, एका रंग रंगाईआ। पारब्रह्म हरि खेल न्यारा, आपणा आप कराया। साची नारी कर प्यारा, साचा धाम सुहाया। भाग लगाए महल्ल अटल उच्च मुनारा, ऊँचो ऊँच सुहाया। शब्दी शब्द आप उपाए सुत दुलारा, साचा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेख वखाया। उपज्या पूत सुत दुलार, घर साचे वज्जे वधाईआ। गोबिन्द नारी करे प्यार, आपणी गोद उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, देवे सच सलाहीआ। कलिजुग अन्तिम लोकमात करना इक्क विहार, तेरे नाउँ वड्डी वड्याईआ। हरि का सुत सच जैकार, सोहँ नाउँ रखाईआ। प्रगट होए विच संसार, गुर गोबिन्द ख़ुशी मनाईआ। साचा सुत फड़ दुलार, आपणी हथ्थीं घोड़ी दित्ता चाढ़, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी टोहे नाड़ नाड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां फिरे पिच्छे अगाड़, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। लोकमात मेल मिलाया सतारां हाढ़, वीह सद बारां ख़ुशी मनाईआ। अन्तिम अन्त होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल बेपरवाहीआ। सुत दुलारा साचा सूरबीरा, लोकमात उठ धाया। वेख वखाणे हस्त कीटा, ऊँच नीच भेव खुल्हाया। त्रैगुण माया जूठा झूठा पीसण पीठा, कलिजुग चक्की रिहा चलाया। मनमुक्ख होया कौड़ा रीठा, अमृत रस ना कोए वखाया। माता पुत्तरां सुत्ती दे कर पिच्छा, छाती नाल ना कोई लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द रखाए साचा दीवा बाती, बाती दीवा नाम रखाया। शब्द दीवा शब्द बाती, शब्द करे रुशनाईआ। शब्द शाह शब्द मलाह शब्द गुर कमलापाती, शब्द

कँवल कँवल विच समाईआ। शब्द अमृत बूंद स्वांती, शब्द मुक्खड़ा रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पूत सपूता इक्क वखाईआ। पूत सपूता नौजवाना, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। पुरीआं लोआं वेखे मार ध्याना, आप आपणा नैण उठाईआ। शस्त्र उठाए तीर कमाना, रसना चिल्ला तीर चढ़ाईआ। मारे मार शाह सुल्ताना, शाह अफगाना मेट मिटाईआ। दीन मज़्हब ना कोई विखाना, वरन बरन करे सफाईआ। लक्ख चरासी बन्न्हे गाना, लाड़ी मौत सेव कमाईआ। गुरमुख वेखे मार ध्याना, जो जन बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सुत वस्सया घर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। मन्दिर घर वस्सया खेड़ा, भगतन मेल मिलाया। पंच विकारा चुक्के झेड़ा, जगत निबेड़ा आप कराया। खुल्ह्रा रखाए आपणा वेहड़ा, दर द्वार ना कोई रखाया। आपे दूर आपे नेड़ा, हाज़र हज़ूर नाम धराया। आपे उलटा देवणहारा गेड़ा, आपे चारों कुन्ट रिहा फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नारी कन्त दित्ता वर, शब्द सुत सुत दुलार कर प्यार, जन भगतां रिहा जगाया।

* २१ भाद्रों २०१५ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर रामूवाला ज़िला फ़िरोज़पुर *

हरि जोत नूर आकार, पुरख अकालया। निरगुण जोत करे उज्यार, दीन दिआलया। पारब्रह्म इक्क अवतार, आदि अन्त खेल निरालया। आदि पुरख पुरख अपार, जोती जोत अकालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी आप करे प्रितपालया। हरि अगम्म अगम्म, अगम्म सुहाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल रचाया। आपे जाणे आपणा कम्म, कारज करता अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपाया। नूर उजाला हरि करतार, आपणा आप करांयदा। आप आपणी पावे सार, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणी बन्न्हे धार, धार आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती नूर उपांयदा। जोती नूर पुरख अबिनाश, आपणा आप कराया। आप आपणे मण्डल पावे रास, आप आपणा थान सुहाया। आप आपणा खेले खेल तमाश, वेखणहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच टिकाया। निरगुण रूप अपर अपार, हरि आपणा आप उपांयदा। जोती जोत पसर पसार, जोती जोत जगांयदा। वरन गोत ना कर विचार, एका एक दिसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर सुहांयदा। जोती नूर हर घट वास, हरि हरि रिहा कराया। आपे पृथ्मी आप आकाश, गगन मण्डल आप समाया। आपे उपजे आपे होए विनास, आपे आप

६४५
०७

आपणा लए तराया। आपे जोती आप स्वास, पवण स्वासा आप चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूरो नूर समाया। हरि का नूर हरि हरि धार, हरि साचे आप उपाईआ। हरि सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, आदि पुरख वेख वखाईआ। आदि निरँजण करनेहार, हरि करता नाउँ धराईआ। एका घर सोहे बंक द्वार, घर साचा इक्क सुहाईआ। जोत निरँजण अपर अपार, एका रूप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे घर करे रुशनाईआ। घर दीवा घर बाती, घर वस्त रुशनाया। घर मेल हरि कमलापाती, घर बैठा आसण लाया। घर वेखे मार झाती, आप आपणा पर्दा पाया। आपे आपणी देवणहारा बाकी, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाया। पारब्रह्म साचा साकी, निरगुण आपणा जाम आप प्याया। आपे जाणे आपणा वाकी, लेखा लिख्त ना आया। आपे चढ़े आपणे राकी, नेत्र नैण दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। घर साचा पुरख अबिनाशी, आपणा आप उपाया। इक्क इकल्ला सर्ब गुण तासी, आप आपणा वेख विखाया। आदि शक्त ना होए निरास, आस निरासा आप हो जाया। आपे करे आपणी बन्द ख़ुलास, बन्दी छोड़ आप अख्वाया। आप आपणे घर रक्खे वास, घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर तख्त हरि शाहो शाबाश, हरि साचा नाउँ धराया। आप आपणे वसाया पास, सज्जण सुहेल आप अख्वाया। आप आपणा होया दास, दासी दास नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर एका राह, एका कार कमांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, दर दरवाज़ा खोल्ह वखांयदा। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई उपांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनार, करता पुरख वेख वखांयदा। आदि निरँजण जगे जोत अगम्म अपार, तेल बाती ना कोई पांयदा। नूरो नूर हरि करतार, नूरो नूर धरांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सिँघासण वेख वखांयदा। ना कोई दीसे जीव गंवार, ना कोई वेख वखांयदा। राज जोग ना कोई दुआरपाल, ना कोई सीस झुकांयदा। गुरु पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई रखांयदा। लक्ख चुरासी ना पहरेदार, त्रैगुण वेस वटांयदा। पंज तत्त ना कोई आकार, रक्त बूंद ना कोई तरांयदा। तीर्थ तट ना कोई किनार, सर सरोवर ना कोई नुहांयदा। वेद पुराण ना कोई रिहा उचार, ब्रह्मा मुख ना कोई खुल्हांयदा। शिव शंकर बाशक ना कोई पावे हार, गल माला ना कोई रखांयदा। करोड़ तेतीसा ना कोई आधार, सुरपति राजा इन्द ना मुख वखांयदा। विष्नूं वंसी ना करे आकार, चतुर्भुजा ना अंग रखांयदा। आदि शक्त ना हो त्यार, सिँघ शेर ना आसण लांयदा। शस्त्र बस्त्र ना कोई कटार, ना कोई मुठ्ठ हथ्थ फड़ांयदा। ना कोई शत्रु ना मीत मुरार, हार जित ना कोई वखांयदा। ना कोई पसर ना पसार, पहाड़ उजाड़

ना कोई विखांयदा। कन्दर मन्दिर ना डूँघी गार, उच्चे टिल्ले ना कोई रखांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना कोई चार दीवार, ना कोई बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार हरि निरँकार, एका घर साचे वेख वखांयदा।

* पहली अस्सू २०१५ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे घर पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर *

आदि पुरख हरि अबिनाश, जोत सरूप समाया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां डेरा लाया। आपणे मण्डल पावे रास, मण्डल मण्डप दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण रूप उपाया। आदि पुरख दीन दयाला, पारब्रह्म अख्वांयदा। नूरी जोत इक्क अकाला, अकल कला समांयदा। आप आपणा बण रखवाला, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण हरि बेअन्त, पारब्रह्म अख्वाया। आदि जुगादि महिमा अगणत, भेव किसे ना पाया। वेख वखाए साजण सन्त, साजण मीत आप हो जाया। मेल मिलावा नारी कन्त, कन्त कन्तूहला नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर हरि अगम्म, एका एक अख्वांयदा। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खलांयदा। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, गुर पीर अवतार सेवा लांयदा। गगन पताल रहाए बिन बिन थम्म, शब्दी शब्द समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला आप अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला कल धारीआ। निरगुण जोती कर उज्यार, पारब्रह्म रूप अपारीआ। नादी पूत करे प्यार, आपे नर नारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा फल खिलारीआ। आदि पुरख हरि भगवन्त, एका एक अख्वाया। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। आप बणाए आपणी बणत, तत्व तत्त ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। दर सुहञ्जणा पुरख अकाल, एका बंक द्वारया। जोती नूर इक्क जमाल, नूरो नूर विखा रिहा। ना कोई दूसर विच दलाल, सगला संग ना कोई निभा रिहा। आपे चले आपणी चाल, चाल निराली आप रखा ल्या। आपणी घाल आपे घाल, आप आपणा थान सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप वटा ल्या। निरगुण धार हरि निरँकार, आपणी आप कराईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपे नारी कन्त भतार, पतिपरमेश्वर आप समाईआ। आपे रागी नादी वेखे विगसे करे विचार, आपे गावे शब्द धुन वजाईआ।

६४६ ०७

आपे पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्माद, खोजत खोजत भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वाईआ। आदि पुरख हरि भगवाना, एका धाम सुहांयदा। दीपक जोती जगे महाना, तेल बाती ना कोई टिकांयदा। ना कोई पवण ना मसाणा, ना कोई हवनी हवन करांयदा। ना कोई राग ना कोई गाणा, ना कोई ताल वजांयदा। ना कोई शब्द ना बिबाना, ना कोई उडान रखांयदा। ना कोई जणाए पद निरबाणा, हँ ब्रह्म भेव ना पांयदा। इक्क इकल्ला सच तख्त बैठ सुल्ताना, आप आपणा थान सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा थाउँ सुहांयदा। आपणा थान आप सुहा, आपणी जोत जगाईआ। आपे दाता बेपरवाह, बैठा बेपरवाहीआ। रूप रंग कोई जाणे ना, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच तख्त सच सुल्तान, बैठा नूर इलाहीआ। सच तख्त हरि सुल्तान, बैठा बेऐब परवरदिगारया। आप आपणा हो मेहरवान, आप आपणी करे सिक्दारया। आप आपणा कर पछाण, आपे वेखे अन्दर बाहरया। निरगुण जोती इक्क महान, निरगुण नूर होए उज्यारया। ना कोई दूसर दिसे निशान, ना कोई बणत बणा रिहा। पुरख अगम्म अगम्मड़े धाम बैठा नौजवान, एका आपणा जोबन हंढा रिहा। आप आपणा वेखे मार ध्यान, आपणी कल वरता रिहा। निरगुण जोती इक्क रकान, अकाल पुरख मेल मिला रिहा। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध दया कमा रिहा। कारज करे सिद्ध हरि भगवान, भगवन भगवान मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धाम हरि अवल्ला, निज घर आसण ला ल्या। धाम अवल्ला पुरख अबिनाश, एका एक रखाया। ना कोई पृथ्मी ना आकाश, गगन मण्डल ना कोई वखाया। ना कोई मण्डल मण्डप पावे रास, जल बिम्ब ना कोई धराया। आप आपणे वस्सया पास, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा वेखे खेल तमाश, खेलणहार आप हो जाया। आदि अन्त ना जाए विनास, आदि जुगादी भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर एका एक सुहाया। एका घर इक्क निरँजण, आदि पुरख अख्वाया। आप आपणा बणया सज्जण, साजण मीत नाम धराया। आप आपणा करया मजन, आप आपणे दर नुहाया। आप आपणा होया पर्दे कज्जण, आपणा पर्दा आपे पाया। आप चलाए आपणा जहाज़न, आप आपणी धार बंधाया। आप आपणा बणया शाह राज राजन, शाहो भूप आप अख्वाया। आप आपणा करे काजण, करता पुरख नाउँ धराया। आप आपणी रक्खे लाजण, आप आपणा संग निभाया। आप आपणे चढ़े ताजन, आप आपणा अस्व रिहा दौड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाया। निरगुण नूर हरि दातार, आपणा आप करांयदा। आपे खेले खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आंयदा। थिर घर बैठ सच्चे

दरबार, धुरदरगाही नाउँ धरांयदा। बेऐब होवे परवरदिगार, ख़ुदी ख़ुद ख़ुदा मिटांयदा। इक्क इकल्ला साचा यार, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। आपे अल्ला राम रूप अपार, बिस्मिल्ला विच समांयदा। जोती जोत कर आकार, निराकार आप हो जांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी करे कार, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ धरांयदा। थिर घर बैठ हरि हरि हरि, आपणी आप करे वड्याईआ। आपणी जोती नूर आपे वर, आपे करे कुड़माईआ। आपणा नाम सुत दुलारा आपे धर, आप आवाज़ लगाईआ। आपे वस्सया आपणे गढ़, चार दिवार ना कोई रखाईआ। सच महल्ले रिहा चढ़, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि उजाला, खेले खेल अपारया। पारब्रह्म प्रभ गुर गोपाला, गोबिन्द नाम धरा रिहा। विखाए दिसाए सच्ची धर्मसाला, थिर घर डेरा ला रिहा। आदि शक्त वेखे जोत ज्वाला, लिलाट लिलाटी डगमगा रिहा। दीनां नाथ पुरख अकाला, सर्बकला समरथ नाम धरा रिहा। हरि का मन्दिर थिर घर नाउँ, आदि जुगादि जाए ना ढठ्ठ, ना कोई बणत बणा रिहा। ना कोई शिवदवाला मन्दिर मस्जिद दिसे मट्ठ, गुरुद्वार ना कोई वखा रिहा। ना कोई लक्ख चुरासी मानस देही चार चार करे इक्ट्ठ, पंज तत्त ना कोई उपा रिहा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, इष्ट देव ना कोई मना रिहा। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, साध सन्त ना कोई धूंणीआँ ताअ रिहा। ना कोई चौदां लोक दिसे हट्ट, त्रैलोक ना वेख वखा रिहा। ना कोई ब्रह्मा विष्न शिव करे हट्ठ, ना कोई रूप अनूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, पुरख अकाला दीन दयाला जोती नूर डगमगा रिहा। जोत सरूप हरि समरथ, वड्ड वड्डी वड्याईआ। आप आपणा आपे मथ्था, आप आपणा ल्ए उपाईआ। आप आपणे चाढ़े रथ, आप आपणा रथ चलाईआ। आप आपणी देवे आपे वथ्थ, आप आपणी झोली अग्गे डाहीआ। आप आपणी महिमा जाणे अकथ, अकथ कथा अख्वाईआ। जुग जुग चलाए आपणी गाथ, हरि दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूरो नूर धराईआ। धरया नूर अबिनाशी अचुत, आपणी किरपा धारीआ। आप सुहाए आपणी रुत्त, आप सुहाए दर द्वारीआ। आप उपजाए आपणा सुत्त, शब्दी नाउँ धरा रिहा। आप आपणा सीर ल्या घुट्ट, आप अमृत मुख चुआ रिहा। आप आपणा लाहा ल्या लुट्ट, अतुट्ट भण्डार भरा ल्या। आदि जुगादि ना जाए निखुट, घर साचे आप भरा ल्या। सेवा करे आदि निरँजण सरूप जोत, जोती जोत जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धारा धार वहा रिहा। निरगुण धार आप चला, निरगुण वेस वटाया। निरगुण अखाड़ा आप लगा, निरगुण वेख विखाया। निरगुण लाड़ा आप सजा, आपे

तेल चढ़ाया। निरगुण साचा सगन मना, साचा मंगल गाया। निरगुण विचोला विच रखा, निरगुण फेरा पाया। निरगुण जोती लए मना, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। निरगुण कजला देवे पा, नाम धारा इक्क चलाया। निरगुण बस्त्र भूषन दए सजा, निरगुण वेख वखाया। निरगुण निरगुण मेला दए करा, घर सुहञ्जणा इक्क रघुराया। निरगुण कन्त निरगुण नारी निरगुण जोती लए प्रना, निरगुण निरगुण रंग रंगाया। निरगुण सेजा माणे निरगुण थाँ, दिस किसे ना आया। निरगुण पिता निरगुण माँ, निरगुण पूत सपूता शब्दी जाया। पारब्रह्म प्रभ पकड़ी बांह, सिर आपणा हथ्थ रखाया। इक्क वखाए थिर घर ग्रां, दूसर दर ना कोए सुहाया। बिन हरि भेव कोई जाणे ना, हरि बैठा भेव छुपाया। आदि पुरख कोई पछाणे ना, आदि अन्त रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखाया। संग रखाया पिता पूत, निरगुण जोत जगाईआ। आपे तागा आपे सूत, ताणा पेटा आप अख्वाईआ। आपे दहि दिशा आपे चारे कूट, हर घट आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, शब्द शब्दी रचन रचाईआ। शब्द सुत हरि दुलारा, हरि साचे आप उठाया। किरपा करे हरि करतारा, करता करनी रिहा कमाया। लोआं पुरीआं कर उसारा, ब्रह्मण्डां खण्डां बणत बणाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर उज्यारा, जोती जोत जगाया। त्रैगुण माया बन्ने धारा, तेरा मेरा रूप वटाया। सो पुरख निरँजण कर आकारा, आप आपणा राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत दित्ता वर, सेवक सेवा रिहा कमाया। शब्दी सुत सेवादार, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। पारब्रह्म खेले खेल अपर अपार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। त्रै त्रै देसा देस आकार, त्रै त्रै रंग रंगाईआ। त्रै त्रै देसा रंग करता करे करनेहार, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। धरनी धरत धवल धरे संसार, जल बिम्ब आप धराईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म गए विचार, कँवला कँवल रूप वटाईआ। शब्द अनादी धुन सुणे सुणाए इक्क धुन्कार, आपणा ताल वजाईआ। आपे किया ख़बरदार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। लेख लिखाए हरि निरँकार, शब्दी चोट नगारे लाईआ। वंडी वंड करे करतार, एका वंड वंडाईआ। लोकमात होया ख़बरदार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। आप आपणा कर आकार, मन मति बुध नाल रलाईआ। नौ दर खोल्ह इक्क कवाड़, नौ खण्ड बणत बणाईआ। सत्त दीप पावे सार, जोत निरँजण सेव कमाईआ। दस्म दुआरी अद्धविचकार, प्रभ साचे आप रखाईआ। निरगुण बैठ सच्ची सरकार, चिट्टी धारा इक्क वहाईआ। नूरो नूर करे उज्यार, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। आपे करया बन्द कवाड़, आपे लए खुल्हाईआ। आपे फिरे पिछे अगाड़, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निरगुण धार, लोकमात वज्जी वधाईआ। शब्द डंक एकँकार, आपणा

आप वजाया। ब्रह्मा वेता किया ख़बरदार, वेद विदाता रिहा लिखाया। चारे मुख गए हार, अट्ठे नेत्र दए तरसाया। पाया पुरख ना अगम्म अपार, आवण जावण ना मूल चुकाया। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, दिवस रैण नीर वहाया। लक्ख चुरासी कर त्यार, तेरा भेव कोई ना पाया। वंडे वंड विच संसार, नौ दस ग्यारां बीस तीस चार लिखाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आपे डेरा लाया। मानस मानुख कर उज्यार, हरि पूरन बूझ बुझाया। पूरन पुरख किरपा धार, साचे सन्त लए जगाया। जन सन्तां देवे नाम अधार, अन्दर मन्दिर ज्ञान दृढ़ाया। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, निरगुण जोत करे रुशनाया। निरगुण जोत हो उज्यार, अग्गे बैठी सीस झुकाया। आदि निरँजण पावे सार, आपे वेखे वेख वखाया। शब्द जणाई अपर अपार, बोध अगाध नाम धराया। अनहद वज्जे साचा ताल, ताल तलवाड़ा इक्क वखाया। पंचम गायण वारो वार, साची सखीआं मेल मिलाया। कर किरपा हरिजन लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाया। आपे खोल्ह्णहार बन्द कवाड़, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया। मेट मिटाए पंचम धाड़, काम कामनी नेड़ ना आया। त्रैगुण माया देवे साड़, पंचम तत्त ना तत्त जलाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी वेख वखाया। अग्नी तपे ना तत्ती हाढ़, सीतल धार ना कोई ठराया। आपे होए पिछे अगाड़, आप आपणा बिरध रखाया। सन्तन दोखी आप चबाए आपणी दाढ़, वेस अनेक नित नवित्ता करदा आया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाया। आदि जुगादी धुरदरगाही साचा लाड़, आदि निरँजण नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूर्त अकाल, अकाल मूर्त विच टिकाया। मूर्त अकाल रहित अजूनी, एका एक अख्वांयदा। दाता दानी वड गुण गुणी, गुणवन्ता नाम धरांयदा। आप आपणा आपे छाणी पुणी, पुण छाण आप करांयदा। आपणी पुकार आपे सुणी, सुनणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग मात वेस कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। लोकमात वेस अवल्ला, करे हरि निरंकारया। आवे जावे इक्क इकल्ला, खेले खेल वड संसारया। शब्द रखाए एका भल्ला, तिक्खी रक्खे धारया। भगतन मीता करे हल्ला, बुलाए नाम जैकारया। धाम सुहाए निहचल इक्क अटला, उच्च महल्ल मुनारया। आपणी जोती आपे बला, नूरो नूर अपारया। आपणा दर आपे खला, हरि साचा सिरजण हारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त गुर अवतारया। आदि अन्त हरि अवतारा, जुग जुग वेस विटाया। वेद कतेब ना पाए सारा, ना कोई लेख लिखाया। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, पढ़ पुस्तक भेव ना राया। चोटी चढ़ चढ़ थक्के जीव अंजाणा, दर साचा दिस ना आया। किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, शाह सुल्तान ना वेख वखाया। गुरमुख विरला सन्त सुहेला दर होए निमाणा, ढहि ढहि चरनी सीस निवाया। देवे दरस

श्री भगवाना, आदि जुगादी मेल मिलाया। सतिजुग साचा वेख वखाणा, द्वापर मूल चुकाया। कलिजुग लोकमात हो प्रधाना, आपणा डंक रिहा वजाया। जूठ झूठ इक्क निशाना, माया ममता नाल रलाया। काम क्रोधी बद्धा गाना, हउमे सगन मनाया। जगत विकारा कर इशनाना, पंच तत्त सुहाया। आपणा मूल ना आप पछाणा, हरि का भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। कलिजुग जोधा सूर बलकार, चार कुन्ट उठ ललकारया। दित्ता वर परवरदिगार, नाल रलाया चार यारया। अल्ला राणी कर प्यार, एका धाम वखा ल्या। एका कलमा रसन उचार, एका नाअरा ला ल्या। एका काअबा कर प्यार, एका हाजी हज वखा ल्या। दो दो आबा मेल विच संसार, पुन्न सवाबा आप जणा ल्या। शाह नवाबा आप करतार, आपणा वेस वटा ल्या। चरन घोड़े दे रकाब, दुलदुल ऐली आप सुहा ल्या। मारे वाजां मुख नकाब, दूई द्वैती पर्दा पा ल्या। अन्तिम किसे हथ्थ ना आउणा आबेहयात, भर प्याला ना कोई पया रिहा। चौदां लोक वेखे कायनात, चौदां तबकां हट्ट खुल्ला ल्या। पुरख अगम्मा वेखे मार झात, शब्द सिंघासण ला ल्या। जगत मसला वेख जमात, पंचम सीस झुका ल्या। रैण अन्धेरी वसे रात, साचा चन्द ना कोई चढ़ा ल्या। अग्गे दूर ना कोई वाट, लेखा मुहम्मद आप गणा ल्या। सदी चौधवीं चढ़या घाट, घाटा किसे ना पूर करा ल्या। लहिणा देणा चुक्के धरत मात, तेरी कुक्ख आन बाट आप आपणा भार उठा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा संग निभा ल्या। कलिजुग सूरा वड बलवान, चारों कुन्ट हंकारया। जूठ झूठ लै निशान, फिरे विच संसारया। चारों कुन्ट पाए आण, हउमे गढ़ पसारया। साध सन्त ना करन पछाण, माया पर्दा उत्ते पा रिहा। मुलां शेख़ मुसायक फड़ बगल कुरान, जगत कलमा इक्क पढ़ा ल्या। सच ना दिसे कोई ईमान, नाम अमाम ना कोई वखा रिहा। हउमे पीए जगत जाम, आब प्याला ना मुख लगा ल्या। धुरदरगाही ना देवे कोई दात, जगत झोली सर्ब भरा रिहा। वेले अन्त ना कोई पुच्छे वात, इक्क मुहम्मद लेख लिखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी धीर धरा ल्या। कलिजुग तेरा रंग चलूल, चारों कुन्ट रंगाया। सृष्ट सबाई गई भूल, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। ना कोई फल ना कोई फूल, अमृत मेवा ना कोई विखाया। शब्द पंघूड़ा ना कोई रिहा झूल, ज़िमी अस्माना वेख वखाया। ना कोई चुकाए आदि जुगादि जुग जुग मूल, लहिणा लहिणे झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क मुहम्मद वेख वखाया। हरि मुहम्मद शब्द जणा, आपणा आप दरसांयदा। कलमा अमाम इक्क बणा, कायनात वसांयदा। ऐनलहक्क नाअरा ला, हक्क हकीकत आप जणांयदा। लाशरीक आप ख़ुदा, ख़ुद ख़ुदी विच ना आंयदा। बन्दा बन्दगी दए भुला, ख़ालक ख़लक

विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख रंग, आप आपणा रंग रंगांयदा। चार यारी रंगया रंग, हरि साचे आप रंगाया। चारों कुन्ट वज्जा मृदंग, मृदंगा इक्क विखाया। सच सुच्च होई नंग, ना कोई पर्दा पाया। वरन बरन वहे गंग, कलिजुग डूँघी धार वहाया। कोई ना दिसे किसे संग, जीव जन्त रहे कुरलाया। धरत मात मंगी मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। नाम रतड़ा चोली देणी रंग, तेरा चीथड़ा तन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाया। दया कमा हरि करतार, आपणा कर्म कमाया। निरगुण आपणा कर्म कमा, आपणा वेस वटाया। नानक निरगुण कर्म विचार, कर्मी कर्म कमाया। पंज तत्त कर प्यार, जोती नूर दरसाया। शब्दी धुन अपर अपार, अनहद ताल वजाया। इक्क महल्ल इक्क उसार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाया। उप्पर चढ़ आप करतार, घर साचे डेरा लाया। दिस ना आए विच संसार, नानक गुरु दर दर फेरा पाया। ढोला गाया हरि निरँकार, घर साचा इक्क सुहाया। पुरख अबिनाशी कर प्यार, घर आपणा इक्क सुहाया। सोहे दुआरा बंक द्वार, प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। जगे जोत अगम्म अपार, नूरो नूर दरसाया। गगन मण्डल ना कोई संसार, चन्द सूरज दिस ना आया। नानक गुर ढहि पया द्वार, दर दरवेशा नाउँ धराया। अबिनाशी करता पावे सार, फड़ बाहों गले लगाया। सचखण्ड साची धार, हरि साचा रिहा चलाया। पंज तत्त ना कोई प्यार, नानक निरगुण निरगुण विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक नंना नाम निरगुण निरगुण आप कराया। नंना मुक्ता निरगुण धार, चरन द्वार सुहांयदा। नंना सिहारी कर प्यार, चरन सीस निवांयदा। नंना औंकड़ हरि विचार, प्रभ झोली नाम भरांयदा। सति नाम भरे भण्डार, त्रैगुण विच ना आंयदा। त्रै लोकां वस्सया बाहर, नानक नाम धरांयदा। पाया वर पुरख करतार, साची नारी सेव कमांयदा। दोए जोड़ करे निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। तेरा घर तेरा दर हरी हरि मिले वर विच संसार, मैं तेरा तूं मेरा मेरा मेरा तेरा रूप वटांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता किरपा धार, एका शब्द जणांयदा। सोहँ शब्द रसन उचार, नानक झोली पांयदा। नानक मिल्या विच करतार, विछड़ कदे ना जांयदा। हँ हँगता देवे मार, सो पुरख निरँजण जो जन गांयदा। नानक गुर पाई सार, आपणा भेव चुकांयदा। सचखण्ड सुहाया एका थान, थान थनंतर वेख वखांयदा। निरगुण जोती हरि भगवान, जोती जोत डगमगांयदा। सति सरूपी दिसे निशान, सत रंगा आप झुलांयदा। सते जोती इक्क मकान, आपे रूप वटांयदा। पंज तत्त कर प्रधान, दीवा दीवा इक्क जगांयदा। घर घर विच घर महल्ल अटल इक्क मकान, महल्ल अटल आप रखांयदा। आपे जाणे जाणी जाण, भेव कोई ना पांयदा। नानक गुर गुर नानक नानक हरि देवे दान, दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसांयदा। निरगुण नानक दर्शन पा, आपणा मूल चुकाया। सो पुरख निरँजण एका गा, हँगता रोग मिटाया। सोहँ शब्द अजपा जाप रखा, जपत जपत सुख पाया। आपणे अन्दर गया छुपा, ना दूसर किसे हथ्थ फड़ाया। पुरख अबिनाशी तेरी अमानत तेरे अग्गे दए टिका, तेरा तेरी झोली पाया। अग्गों बोले दाता बेपरवाह, नानक तोला आप बणाया। सोहँ कंडा हथ्थ फड़ा, मोदीख़ाना इक्क चलाया। सति नाम डण्डा दित्ता लगा, जगत जीवां आप वखाया। कलिजुग पार कन्ढा दए करा, जिस जन रसना गाया। कलिजुग अन्तिम आपणी वंडा लए वंडा, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। पारब्रह्म बेपरवाह, अन्तिम खेले खेल सृष्ट सुबाया। नानक तेरा जैकारा सोहँ शब्द लोआं पुरीआं लोकमात दए ला, जो अन्दर मुख रखाया। गीत सुहागी एका गा, एका ढोला दए जणाया। ताल अनादी इक्क वजा, एका राग अल़ाया। शब्द ब्रह्मादी खोज खुजा, ब्रह्मादी वेख वखाया। सोहँ चोग जन भगतां अन्तिम दए चुगा, कागों हँस बणाया। निहकलंकी जामा पा, निरगुण नूर करे रुशनाया। एका डंक दए वजा, लक्ख चुरासी दए उठाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई वरन बरन दए समझा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। अञ्जील कुरान वेद पुराण शास्त्र सिमरत लेख लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। खाणी बाणी दए पढ़ा, लहिणा लहिणे झोली पाया। तन बस्त्र देवे इक्क सजा, अंगद अंगीकार कराया। शब्द विचोला विच टिका, जोती जोत करे रुशनाया। साचा बोला इक्क बुला, बोल बुलारा इक्क रखाया। साची धारा इक्क वहा, निरगुण रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक सेवा वेख वखाया। सेवा वेख बाल जवानी बिरध बुढ़ेपा, इक्क वखाईआ। पंज तत्त कटया रंड रंडेपा, नार सवाणी रही कुरलाईआ। आपणा छड्डया आपे पेका, घर सौहरे आई घर घर धाईआ। अमरू निथावां आपे वेखा, आपे लए प्रनाईआ। आपे मस्तक लाई रेखा, आपे जोत जगाईआ। आप उलटाया आपणा वेसा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अकाल पुरख प्रभ सदा अदेसा, पारब्रह्म वज्जी वधाईआ। वज्जी वधाई साचे मन्दिर, काया गढ़ सुहाया। आप तुड़ाया वज्जा जन्दर, किला कोट खुल्हाया। जोती शब्दी मेला अन्दरे अन्दर, आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलावा साचे हरि, हरि मन्दिर आप सुहाया। हरि मन्दिर हरि काया, घर एका एक विखांयदा। अमरदास नहाता साचे सर, सच सरोवर इक्क जणांयदा। रामदास किरपा कर, आपणी बूझ बुझांयदा। कंचन सोहे साचा गढ़, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशा भवांयदा। अमृत सरोवर ताल भर, दस्म दुआरी धाम वखांयदा। गुर किरपा हरि की पौड़ी गया चढ़, हरि हरि रूप नज़री आंयदा। आपणे अन्दर आपे वड़, आपणा पुरख मनांयदा। अग्नी हवन ना गया सड़, सो सतिगुर नज़री आंयदा। नानक गुर लाई जड़, वेदी सोढी

मेल मिलांयदा। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, चरन ध्यान इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि का रूप आप दरसांयदा। हरि का मन्दिर हरि द्वार, हरि हरि आप सुहाया। रामदास गुर कर प्यार, घर आपणा आप वखाया। महल्ल अटल सोहे इक्क मुनार, घर घर विच घर टिकाया। शब्द धुन नाद अनादी वज्जे धुन्कार, अनहद वेख वखाया। सखीआं मंगलचार, दिवस रैण कराया। अमृत बरखे ठंडी ठार, जल धारा इक्क वहाया। सुरती शब्दी इक्क प्यार, एका रूप समाया। एका गुर करता करनेहार, करता पुरख नज़री आया। अन्दर बाहर पावे सार, गुप्त ज़ाहर भेव ना राया। अमरदास कृपा धार, रामदास वेख विचार, नेत्र नैण दर्शन पाया। दर्शन पाया हरि दातार, हर घर वज्जी वधाईआ। सुणया शब्द अगम्म अपार, अगम्मड़ी धुन रखाईआ। एका रंग रवे करतार, आदि जुगादी बणत बणाईआ। निरगुण जोती कर प्यार, सरगुण विच समाईआ। सरगुण साचा मीत मुरार, निरगुण डेरा लाईआ। दोहां मिलावा विच संसार, पंज तत्त वेख वखाईआ। राग रागनी ना पावे सार, राग छतीसा रहे गाईआ। वेद कतेब ना कोई लेख लिखार, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास वखाया इक्क घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, दिवस रैण डगमगाईआ। साचा घर ग़रीब निवाज़ा, एका एक रखाया। आपे खोल्हे बन्द दरवाज़ा, आपे बन्द कराया। आपे बैठा राजन राजा, शाहो भूप नाम धराया। आपे मारनहारा वाजां, शब्दी शब्द रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास मिल्या एका दर, घर साचा दए दरसाया। हरि मन्दिर हरि करतार, गुर गुर दए समझाईआ। गुर गुर पूरा पावे सार, सतिगुर वेख वखाईआ। लोकमात कर उज्यार, इट्टां गारा रचन रचाईआ। पंचम शब्दी बन्न्हे धार, शब्द करे कुड़माईआ। अर्जन मेला मीत मुरार, पुरख अबिनाशी पाया साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे देवे शब्द ज्ञाना, आपे बूझ बुझांयदा। आपे देवे नाम निधाना, आपे जाम प्यांअदा। आपे देवे दो जहानां माणा, माण निमाणयां आप अख्वांयदा। आपे बन्न्हे हथ्थीं गाना, आपे सगन मनांयदा। आपे लिखे लेख महाना, आपणा लेखा आप जणांयदा। सन्त भगत भगवन्त हो प्रधाना, मीत मुरारा नाउँ धरांयदा। गुरु ग्रन्थ इक्क वखाणा, इकवंजा बवन्जा धार वखांयदा। शब्द गुर गुर शब्द ना कोई दूसर होर मनाणा, एका हुक्म सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, साचा मार्ग लांयदा। चार वरनां इक्क ध्याना, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बोध अगाध अगाध बोध शब्द शब्दी आप उपांयदा। शब्द अनादी धुर तराना, गुर अर्जन हरि हरि गाईआ। पाया पद इक्क निरबाना, निर्भय विच समाईआ। अकाल मूर्त वेख विखाणा, अनभव प्रकाश कराईआ। अजूनी

रहित देवे दाना, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। लेख लिखाया जगत महाना, धुर दी बाण चलाईआ। एका गुरू इक्क पछाणा, एका गोबिन्द वेख वखाईआ। ना कोई दिसे होर टिकाणा, ना कोई सीस झुकाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटे निहकलंक बली बलवाना, हरि मन्दिर फेरा पाईआ। हरि मन्दिर होवण जीव शैताना, मदिरा मास मुख लगाईआ। अमरदास तेरा भुल्लया अमृत पीणा खाणा, साचा जाम ना कोई प्याईआ। अर्जन तेरी बाणी ना लाए बाणा, मूर्ख मूढ़े गए भुलाईआ। अकाल तख्त बहि बहि गायण गाणा, अकाल पुरख नज़र ना आईआ। विद्या पढ़ पढ़ होए विद्वाना, ब्रह्म विद्या ना कोई जणाईआ। सृष्ट सबाई सुणायण कर कर वख्याना, आपणी व्याख्या ना कोई कराया। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ पहन किरपाना, साढे तिन्न हथ्थ रच्छया ना कोई कराईआ। मिल्या मेल ना श्री भगवाना, धुर धाम ना कोई जणाईआ। गुरु ग्रन्थ गुर इष्ट इक्क मनाना, अकाल पुरख गया समझाईआ। गुरु ग्रन्थ इक्क विखाना, बिन हरि होए ना कोई सहाईआ। नानक अंगद अमरदास विटहो कुरबाना, निउँ निउँ रहे सीस झुकाईआ। रामदास कर परवाना, हरि मन्दिर आप टिकाईआ। गुर अर्जन देवे जगत ज्ञाना, शब्दी शब्द जणाईआ। निरगुण जोत इक्क भगवाना, खाणी बाणी जिस रचन रचाईआ। सो पुरख सेवो सदा मेहरवाना, अन्त जोती जोत मेल मिलाईआ। आपे गोपी आपे काहना, सीता राम आप अख्वाईआ। खेले खेल दो जहानां, दो जहानां खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिगोबिन्द वेख वखाईआ। हरिगोबिन्द जुड़या जोड़ा, जोती जोत जगांयदा। नाम रखाए साचा घोड़ा, शब्दी शब्द दौड़ांयदा। भगत जनां जन आपे बौहड़ा, आप आपणा बिरध रखांयदा। वेखे परखे मिठ्ठा कौड़ा, मेरी तेरी तेरी मेरी आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिराए एका नईआ नाम चढ़ाए, एका मार्ग लांयदा। एका मार्ग एका धार, निरगुण आप चलाईआ। नानक सरगुण कर प्यार, जोती जोत टिकाईआ। जोती खेल अगम्म अपार, हरिकृष्न लए उठाईआ। हरिकृष्न पाया हरि द्वार, बाल बाली बुध वड्याईआ। गुरमुखां एह गया पुकार, एका राह वखाईआ। दो दो कर ख्वार, जगत पखण्डा दए मिटाईआ। प्रगट हो विच संसार, गुरमुखां भार उठाईआ। अन्तिम लहिणा देणा देवे करज उतार, सीस आपणा भेट चढ़ाईआ। दिल्ली वखाए इक्क दरबार, कलिजुग वंड वंडाईआ। गोबिन्द सुत इक्क दुलार, एका एक उपजाईआ। अबिनाशी अचुत्त किरपा धार, आपणा संग रखाईआ। माता गुज़री जगत सुहाए रुत्त फल फुल्ल खिड़ी गुलज़ार, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाईआ। आपणा रूप आप दरसा, आपणी कल वरतांयदा। नैणां नैणां हवन करा, एका मंग मंगांयदा। अकाल पुरख ल्या ध्या, अकाल मूर्त नजरी आंयदा। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपणी दया कमांयदा। आपणा

रूप आप दरसा, तन शस्त्र इक्क लटकांयदा। मुच्छ दाढ़ी केस उपा, सति सरूप बणांयदा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सिँघ बणा, सिँघ अस्वार करांयदा। तीर कटार हथ्थ फड़ा, एका धार वहांयदा। लोकमात जोत जगा, पंचम पंचम उठांयदा। पंचम मेला आप मिला, पंचम मोह चुकांयदा। पंचम खण्डा भेट चढ़ा, पंचम आप उठांयदा। पंचम चोली रंग रंगा, रंगणहार आप हो जांयदा। पंचम अमृत मुख चुआ, पंचम जाम प्यांअदा। पंचम बाणी दए पढ़ा, पंचम रोग कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द दित्ता आपणा वर, हरिगोबिन्द रूप वटांयदा। गोबिन्द सिँघ सिँघ रूप, हरि हरि नाम धराया। आपे अमृत सोमा गया फूट, आपे धार वहाया। आपे बिरछ लगाया पंज भूत, आपे वेख वखाया। आपे भर प्याला प्याया ठूठ, ऊँच नीचां मेट मिटाया। चढ़या रंग इक्क अनूठ, काया चोली रंग रंगाया। सतिगुर पूरा आपे गया तूठ, आप आपणी दया कमाया। चार वरन कराए एका मुट्ठ, दूई द्वैती पर्दा लाहया। कलिजुग दुआरे अग्गे बैठा रुठ्ठ, नेत्र रो रो नीर वहाया। गुर गोबिन्द मैं जावां केहड़ी गुठ्ठ, मेरा वेला अन्त नहीं आया। संग मुहम्मद ना कीता अजे ख़ाली ठूठ, चार यारी ना पर्दा पाया। पंच जैकारा ना लायण दहि दिशा चारे कूट, हरि का भाणा ना कोई मिटाया। अमृत दे दे एका घुट्ट, तेरा ढईआ वेख वखाया। तेरी रसना तीर जाए छुट्ट, ना कोई रोके सृष्ट सबाया। तेरा रूप तेरा सिक्ख मैनूं कढ्ढे ना कुट्ट, मैं वास्ता तेरे अग्गे पाया। गुर गोबिन्दा गया तुठ, आया दर निरासा कोई ना जाया। तेरे बुल्लां लावां एका घुट्ट, अन्दर बूंद ना कोई कराया। पन्थ ख़ालसे अन्दर पए फुट्ट, तेरा लहिणा देवां चुकाया। गुरदर मन्दिर बहि बहि धीआं भैणां रहे लुट्ट, वेसवा घर बणाया। एका ढईआ रक्खी ओट, कलिजुग तेरा तेरे अग्गे रखाया। अमृत पी ना भरे किसे पोट, तृष्ना अग्ग वधाया। अर्जन शब्द ना लाए तन चोट, बाणी बाण ना कोई वखाया। वीह सौ बिक्रमी आलृणिउँ डिग्गणे बोट, ना सके कोई उठाया। कोटी कोट बन्नृी फिरदे साध लंगोट, धीरज यति ना कोई रखाया। कोटी कोट मुनी फिरदे चोट, चोटी चढ़ दरस किसे ना पाया। कोटी कोट भंगी भंग रहे घोट, नाम घोटा ना कोई लगाया। कोटी कोट दर दर मंगदे फिरन रोट, आत्म तृष्ना ना कोई बुझाया। कोटी कोट जीवां जन्तां कढ्ढदे फिरन खोट, आपणा खोट ना कोए गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेख्या घर, कलिजुग मंगण आया दर, दर दरवेशा झोली पाया । गुर गोबिन्दा बेपरवाह, पुरख अकाल मनांयदा। दूसर ना कोई दिसे थाँ, ना कोई धाम सुहांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, गुज़री लाल ना कोई जणांयदा। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, दुष्ट दमन सुहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, गुरमतिी आप समझांयदा। अमृत जाम दए पया, पी अमृत दु:ख मिटांयदा। कलिजुग अन्तिम गया समझा, आपणा

६५६
०७

राह वखांयदा। संग मुहम्मद अल्ला राणी कर कर कूके उच्ची बांह, उच्चे टिल्ले बांग सुणांयदा। जगत समेरू वेखे थाँ, कोहतूर फिरांयदा। अमाम मैहन्दी नाम रखा, नूरो नूर दरसांयदा। दिशा लहिंदी घेरा लए पा, पीर फ़कीर औल्या कुतब शेख़ मुसायक दस्तगीर ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वंड वंडांयदा। कलिजुग वर घर साचा पा, आया बंक द्वार। सिँघ गोबिन्द तेरा नाँ, रसना रिहा उचार। फतिह डंक इक्क वजा, वाहिगुरू फतिह जैकार। राउ रंक दई भुला, मन मति भर हँकार। जगत अखाड़ा दई वखा, गुर मन्दिर हरि द्वार। स्यासत लाड़ा घोड़ चढ़ा, सीस करे श्रृंगार। सिँघ तारा भेव ना रा, प्रगट होए हरि अवतार। गुर गोबिन्दा लेख लिखा, लिखाया लेख धुर दरबार। मातलोक ना सके कोई मिटा, ना कोई मारे तीर कटार। शब्द गुर उठया दाता बेपरवाह, चारों कुन्ट रिहा ललकार। लक्ख चुरासी देणी फाह, सुहाए धर्म राए दा इक्क द्वार। सन्त सुहेले लए जगा, आप आपणी किरपा धार। शब्द खोजी लए बचा, गुर गोबिन्द कर विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा धुर प्यार। गुर गोबिन्द सिँघ तेरी बणत बणा, पन्थी पन्थ चलांयदा। घर बाहर दर दरबार गया तजा, सूलां सथ्थर हेठ विछांयदा। अकाल पुरख इक्क मना, इक्क सुनहेड़ा साचे माही आप सुणांयदा। तेरा तेरी झोली दित्ता पा, मेरा मेरा मूल चुकांयदा। अन्तिम मेला केहड़े थाँ, कवण कूट सुहांयदा। पारब्रह्म प्रभ रिहा जणा, शब्दी शब्द उपांयदा। कलिजुग अन्तिम मेला लवां मिला, तेरा विछोड़ा झल्लया ना जांयदा। तेरी नगरी डेरा ला, सम्बल नाउँ रखांयदा। साढे तिन्न हथ्थ बणत बणा, अन्दर मन्दिर इक्क वखांयदा। ना कोई बाढी बणत दए बणा, इट्टां गारा कोई ना लांयदा। ना कोई दूई दुष्ट दए वसा, ठग्ग चोर यार ना कोई दिस आंयदा। ना कोई खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी तैनूं लए पढ़ा, जगत विद्या ना कोई रखांयदा। ना कोई पौड़ी डण्डा लए लगा, ना कोई सुखमन राह तकांयदा। एका धाम दए वखा, सच सिँघासण फूलण आसण आप विछांयदा। पुरख अबिनाशी मेल मिला, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। पूरन गोती इक्क करा, जोती जोत जगांयदा। शब्द सोटी हथ्थ फड़ा, लोआं पुरीआं आप फिरांयदा। कोटी कोट ब्रह्मण्डां दए जगा, तेरी सेवा लांयदा। जेरज अंडां वेख वखा, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। कलिजुग भेख पखण्डा दए मिटा, एका खण्डा आप चमकांयदा। नार दुहागण रंडा कोई दिसे ना, मनमुक्ख ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गुर दित्ता वर, कलिजुग तेरा मेरा मेरा घर एका घर सुहांयदा। अकाल पुरख सुण संदेश, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। सम्बल नगरी कवण वेस, कवण कूट वसाईआ। कवण राजा होए नरेश, कवण सुल्तान अख्वाईआ। कवण वेखे महेष गणेश,

शिव शंकर कवण जणाईआ। कवण ब्रह्मा करे अदेश, कवण करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। कवण दुआरे हो प्रवेश, आपणी बूझ बुझाईआ। मंगे मंग दस दस्मेश, अग्गे झोली डाहीआ। पारब्रह्म प्रभ सदा अदेश, सतिगुर पुरख इक्क अख्वाईआ। आपे होए नर नरेश, आपे बैठे तख्त सुहाईआ। आपे सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, आपे करोड़ तेतीसा वेख वखाईआ। आपे होए दर दरवेश, लोकमात फेरा पाईआ। आप पकड़ उठाए दस दस्मेश, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। मेल मिलावा रिखी केस, जगत गवर्धन भार चुकाईआ। धरत मात पुकारे रोवे गल विच खुल्ह्ड़े केस, दिवस रैण रही कुरलाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा चलण ना देवे पेश, भरमे भुल्ली लोकाईआ। घर घर होया वेसवा वेस, नार दुहागण सृष्ट सबाईआ। सिक्ख ना जाणे मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाए भेव ना राईआ। अन्तिम वेले कर कर वेस, आपणा वेस लए वटाईआ। शब्द डंक वजाए देस प्रदेस, निहकलंका नाउँ रखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां कोई ना चले पेश, साधां सन्तां रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेखे वेखणहार आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम कूड़ हुलारा, हरि हरि आप लगाया। संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी वेस वटाया। चौदां तबकां एका नाअरा, एका कलमा रिहा पढ़ाया। साचा सबक ना करे प्यारा, मुकामे हक्क ना वेख वखाया। अमाम मैहन्दी कर अवतारा, वेसी वेस वटाया। मक्का मदीना पावे सारा, मुख नकाब रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दए समझाया। कलिजुग अन्तिम जगत पांधे, विद्या रहे पढ़ाईआ। पार किनारा दिसे ना थक्के मांदे, नौ दर बैठे डेरे लाईआ। ढोलक छैणे गीत आ गौंदे, गीत अनादी ना कोई सुणाईआ। तिलक ललाटी बहि बहि लौंदे, जोत ललाटी ना कोई जगाईआ। नेड़े वाटी सर्ब वखौंदे, औखी घाटी ना पार कराईआ। ब्रह्मण गौड़ पूत सपूता ऊँचे टिल्ले पर्बत किसे ना पौंदे, पढ़ पढ़ धीर धराईआ। लंका गढ़ ना कोई तुड़ौंदे, राम रामा रहे ध्याईआ। कलिजुग कंस ना कोई मटौंदे, राधा कृष्न मुख अलाईआ। माया डसनी जगत नाग गलों ना लौंहदे, शिव शंकर आस रखाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म घर घर ध्यौंदे, ब्रह्म ब्रह्म ना कोई सुणाईआ। जपि जी साहिब रसना ध्यौंदे, जी जाप ना कोई कराईआ। रहिरास नित वेख वखौंदे, आपणी रास ना कोई बणाईआ। कीर्तन सोहला कहि कहि सुणौंदे, तन लकीर ना कोई खिचाईआ। साध सन्त जगत जंजीर तुड़ौंदे, आपणा जंजीर ना कोई तुड़ाईआ। घर घर पूजा पाठ सुणौंदे, आपणा मन ना कोई समझाईआ। जगत पाठ अखण्ड करौंदे, अखण्ड रहित ना कोई वखाईआ। मन मति नार रंड हंढौंदे, गुर दर बैठे आसण लाईआ। आपणा भार ना आप वंडौंदे, वेले अन्त ना चुक्कया जाईआ। पूजा धान ना पार करौंदे, विच सरसे रिहा रुढ़ाईआ। सन्धया उठ उठ संख वजौंदे, आत्म

नाद ना कोई वजाईआ। गुर दर मन्दिर बहि बहि धूप धखौंदे, घर सुगंधी किसे ना पाईआ। जीवां जन्तां दी वा तत्ती हटौंदे, मुख आपणे लग्गी शाहीआ। गीत सुहागी सारे गौंदे, गुरमुख विरले मिल्या साचा माहीआ। लक्ख चुरासी औंदे जांदे, आवण जावण बणत बणाईआ। गुरसिख साचे हरि द्वार आपणी भुल्ल बख्शौंदे, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मनमुक्ख दर तों मुख भवौंदे, उठण कर कर धाईआ। नानक ढोला जो जन गौंदे, लक्ख चुरासी कट्टी फाहीआ। गुर गोबिन्द जो दर्शन पौंदे, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सोहँ शब्द जो जन बत्ती दन्द गौंदे, नानक गोबिन्द मेल मिलाईआ। साचे गुर धुरदरगाह गुरमुखां आप बख्शौंदे, फड़ फड़ दोवें बाहींआ। मनमुख जीव जगत शरमौंदे, लोक लाज मगर लगाईआ। निन्दया गीत एका गौंदे, आंढ गवांढ वंड वंडाईआ। धर्म राए नूं अन्तिम भौदे, लाड़ी मौत ख़ुशी मनाईआ। चित्रगुप्त दा लेख लिखौंदे, लेखा छुपया रहे ना राईआ। सम्मत सोलां राह तकौंदे, घर घर मैहन्दी लाईआ। औसीआं पा पा सगन मनौंदे, पूरी दी दस्सण झूठी छाहीआ। सम्मत सतारां वेखे काग उडौंदे, जिन्हां भुल्लया बेपरवाहीआ। पन्थ ख़ालसा दर आए कुरलौंदे, निउँ निउँ सीस निवौंदे, हरि बैठा मुख भवाईआ। चार वरन चौथे जुग एका तत्त बणौंदे, वरन बरन मेट मिटाईआ। जीव जन्त साध सन्त उठौंदे, जमन किनारा धाम सुहाईआ। सीस गंज दुआरा इक्क वखौंदे, गोबिन्द मेला साचे माहीआ। दिल्ली तख्त चरन टिकौंदे, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक रिहा वजाईआ। निहकलंक प्रभ प्रगट होया, गुर गोबिन्द जैकारा। वरन बरन कोई रहे ना सोया, उठया सूरबीर बलकारा। अट्ठे पहर नवां नरोया, एका चण्ड प्रचण्ड चमकाए चमक चमकारा। जन भगतां गुरमुखां देवे साचा ढोआ, सोहँ शब्द कर प्यारा। बिन हरि तेरे अवर ना जाणे कोआ, सृष्ट सबाई धूआंधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे होए कल्कि अवतारा। कल्कि अवतार दस दस्मेश, आपे आप अख्वांयदा। आपे बणया नर नरेश, लोकमात फेरा पांयदा। गुरमुख दुआरे दर दरवेश, सेवक सेव कमांयदा। नानक हथ्थ उठाए मोढे भूरी खेस, साची बणत बणांयदा। गुरमुखां भार उठाया दस दस्मेश, बाल अञ्याणे नीआं हेठ दबांयदा। आपणे नेत्र आपे रिहा पेख, जगत लोचण बन्द करांयदा। धरत धवल कुरलाए नीर वहाए शेश, सहँसर मुख दो सहँसर रसना गांयदा। अकाल पुरख प्रभ सदा आदेश, जुग जुग नाउँ धरांयदा। कलिजुग अन्तिम नाउँ निरँकार, निहकलंक रखाया। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाया। सोलां कर तन शृंगार, चिट्टे अस्व आसण लाया। चिट्टा अस्व हो त्यार, दक्खण दिशा बाहर कढाया। पूर्ब आवे पहली वार, उत्तर फेरा पाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, सिँघ सिँघासण आसण

६६०
०७

लाया। लोआं पुरीआ पावे सार, ब्रह्मा वेता रिहा उठाया। देवे सुनेहड़ा एका वार, एका सेवक सेवा लाया। विष्नूं वंसा हो त्यार, बाशक तशका शिव शंकर गल लटकाया। हथ्थ त्रशूल वेख कटार, आपणा मूल चुकाया। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा पुरी इन्द्र ना बन्ने धार, नेत्र नीर वहाया। ध्रू बाला बाल अञ्याणा रोवे ज़ारो ज़ार, वेला अन्त अन्त नज़री आया। सप्त रिखी ना करे विचार, सांतक सति ना कोई रखाया। गण गधंरब रहे पुकार, यश सेव ना कोई कराया। अपच्छरां ना लाए कोई श्रृंगार, अस्थूल देह ना वेख वखाया। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, आपणा वेस वटाया। निहकलंक कल जामा धार, पुरीआं रिहा जगाया। एका खण्डा इक्क कटार, एका रिहा चमकाया। एका मारनहारा मार, एका रूप दरसाया। अष्टभुजां कर प्यार, इष्ट देव रखाया। सुंभ निसुंभ होए हँकार, कलिजुग रूप वटाया। चारों कुन्ट धूआंधार, रावण गढ़ सुहाया। एका पावणहारा सार, राम रामा नाउँ धराया। पकड़ उठाए भबीख़ण यार, लहिणा लहिणे झोली पाया। ग़रीब निमाणे लए आधार, भीलणी भोग दर द्वार लगाया। गौतम अहल्लया देवे तार, आपणा चरन छुहाया। सीता सुरत सवाणी कर प्यार, गुरमुख लए प्रनाया। मेल मिलावा हाणीआं हाणी विच संसार, आप आपणा दए कराया। बाल्मीक बजवाड़ा तन श्रृंगार, एका रूप वटाया। त्रेता तेरा कर विचार, तेरे रंग समाया। द्वापर बन्ने आपणी धार, धरत धवल सुहाया। वेद व्यासा कर त्यार, कुँवारी कन्या जाया। नारद मुन कर प्यार, एका संग रलाया। चार सलोक ब्रह्मा उचार, रसना दए अलाया। बारां अक्खर विच संसार, एका जाप जपाया। पुराण अठारां लेख लिखार, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाया। द्वापर तेरा सति सरूप, हरि साचे वेस वटाया। आदि जुगादि महिमा अनूप, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणे साथ, प्रगट हो त्रिलोकी नाथ, त्रिलोकी नंदन नाम रखाया। त्रिलोकी नाथ त्रिलोकी नंदन कृष्ना काहना, मोहण रूप वटाया। मोहण माधव खेल महाना, लख़मी नरायण आप अख्वांयदा। सुन्दर कुण्डल मुकट नैण मटकाना, प्रेम कजला एका पांयदा। गोकल मथरा हो प्रधाना, बिन्दरा बन सुहांयदा। साची सखीआं खेल खिलाना, साची रास रचांयदा। मुकंद मनोहर आप अख्वाणा, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। ग्वाला बण गऊ चराणा, बन खण्ड डेरा लांयदा। जमन किनारे जल धार आप विखाणा, काली नथ्थ विखांयदा। दोंपद लज्जया आप जगत रखाणा, नाम पर्दा पांयदा। बिपर सुदामा गले लगाणा, अलूणा साग भोग लगांयदा। दलिद्री सुदामा कर प्रधाना, सच सिँघासण आप बहांयदा। आपे हो निमाणयां निमाणा, चरनी सीस झुकांयदा। भगत वछल आप भगवाना, फड़ तन्दल मुख चबांयदा। खेले खेल जगत महाना, द्वापर अन्तिम

बणत बणांयदा। पंचां देवे हरि हरि ज्ञाना, सद सद मुख भवांयदा। रण भूमी वेखे इक्क मैदाना, एका दर वखांयदा। जोधे सूर वड वडे बलवाना, फड़ फड़ आप उठांयदा। अर्जन बणया इक्क निधाना, हरि का भेव ना पांयदा। छड्डुया तीर चिल्ला कमाना, अग्गे सीस झुकांयदा। कवण छत्तरू विच जहाना, कवण संग तुड़ांयदा। कहे बोल कृष्न भगवाना, तेरा कोई ना ना तूं किसे बण जांयदा। मेरा मेरे विच समाना, मेरा मेरी धार धरांयदा। चौदां लोक कर प्रधाना, वराट रूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे आपणा वर, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। एका मन्त्र इक्क ज्ञान, एका भगत दृढ़ाया। एका तीर निशान, एका चिल्ले चढ़ाया। एका मन्दिर इक्क मकान, एका गढ़ तुड़ाया। इक्क सुणाए धुर फ़रमाण, अठारां ध्याए दए लिखाया। उठया अर्जन बाल निधान, आपणी भुल्ल बख्शाया। सत्त ग्यारां वेख विच मैदान, अट्ठ अठारां लेख चुकाया। युधिष्टर मंगे इक्क दान, अग्गे झोली डाहया। कवण वक्त तेरा मेला होए विच जहान, पंज तत्त सुहाया। त्रिलोकी नाथ बोले कृष्ना काहन, एका शब्द सुणाया। कलिजुग अन्तिम मेला होए विच जहान, वेला आपणे हथ्थ रखाया । वेद कतेब भेव ना पायण, लेखा लेख ना किसे लिखाया। जोत सरूपी प्रगट होए हरि भगवान, वीह सौ पन्दरां बिक्रमी वेख वखाया। चल के आए कौरू कुक्षेतर विच मैदान, पन्दरां मग्घर रुत्त सुहाया। परस राम तेरी वेखे लग्गी जगत दुकान, इक्क कुहाड़ा हथ्थ उठाया। ख़ाली हथ्थ उठे हरि नौजवान, रथ रथवाही ना रूप वटाया। ना कोई भथ्था ना कोई तीर ना कोई चिल्ला ना कमान, ना खण्डा रिहा वखाया। ना कोई जोधा सूरबीर ना रक्खे बलवान, गुरसिख सिक्ख निमाणे नाल रखाया। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा लाहे घाण, शब्द खण्डा सेवा लाया। राष्ट्रपति उठाए आप निधान, पन्दरां कत्तक लंका गढ़ लेख लिखाया। चरन छुहाए हरि मेहरवान, पहली कत्तक रुत्त सुहाया। गुर गोबिन्द कोई ना सके पछाण, मनमुखां दए सजाया। तिन्न दिन वेखे भूमका अस्थान, तिन्नां लोकां बाहर रखाया। चौथे दिवस आपणा घर आप पछाण, आपणा संदेशा जाए सुणाया। पन्थ ख़ालसा सुत्ता रहे ना निधान, निहकलंक कल्गी धर आया। जिस दा झुल्लणा धर्म निशान, सृष्ट सबाई रिहा वखाया। राउ रंकां देवे धुर फ़ुरमाण, देस प्रदेशा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाया। पंचम कत्तक पंचम प्यार, पंचम मूल चुकाया। छेवें बन्ने साची धार, छप्पर छन्न टिकाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप करतार, नानक दुआरा वेख वखाया। जगत पुरी पावे सार, जगन्नाथ नाम धराया। अठवें घरों होए बाहर, आप आपणा राह तकाया। पन्दरां कत्तक हो मेहरवान, लंका पती दए समझाया। सोहँ शब्द लिख्त अपार, इक्क निशाना दए विखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, जै जै कार आप समझाया। भुल्ल रहे ना विच संसार, भरम भुलेखा रिहा कढाया। अन्तिम आउणा चल दिल्ली दरबार, वीह सौ बिक्रमी लेख लिखाया। जगे जोत अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी सच सिँघासण डेरा लाया। नौ खण्ड पृथ्मी ढहि ढहि पए द्वार, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। एका शब्द एका धुन्कार, एका मंगल एका गीत एका राग इक्क संगीत, एका कान सुणाया। नौ खण्ड सृष्ट सबाई आपे लए जीत, हार जित आपणे हथ्थ रखाया। धर्म निशान सत रंग वखाए सिँघ मनजीत, प्रभ साचे सेवा लाया। नौ द्वार नाता तुट्टे जगत जगदीश, जुग साचे वेख वखाया। ना कोई पढ़े कुरान हदीस, बाईबल अञ्जील ना कोई सुणाया। अल्ला राणी ना गुंदाए आपणा सीस, सिर पल्लू ना कोई रखाया। ना कोई गाए राग छतीस, छत्ती रागां भेव ना पाया। वेद पुराण पीसना रहे पीस, कलिजुग चक्की रिहा चलाया। नानक शब्द इक्क हदीस, सृष्ट सबाई दए सुणाया। सोहँ गाउणा दन्द बतीस, रसना जिह्वा हिलाया। मार्ग लग्गे तेरा बीस बिक्रमी विच इकीस, सतिजुग साचा सच वरताया। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, राज राजान कोई दिस ना आया। त्रैगुण माया ख़ाली ख़ीस, जगत भण्डार ना कोई भराया। साधो सन्तो उठो गाओ सुहागी गीत, हरि साची जोत जगाया। थिर ना रहिणा वसेरा मन्दिर मसीत, गुर द्वार ना वेख वखाया। आपे वस्सया हस्त कीट, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, चरन चरनोदक मुख चुआया। बैठा रहे सद अतीत, एका एकँकारा नाम धराया। जुग जुग चलाए आपणी रीत, आपणे भाणे विच समाया। आपणा शब्द जाणे जणाए अनडीठ, लिखण पढ़ण विच ना आया। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाया। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, घर मन्दिर दिस ना आया। हरिजन मिट्ठे करे कौड़े रीठ, अमृत आत्म मुख चुआया। हरि साजण बीठलो बीठ, सेवक सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाया। वज्जे डंका ख़बरदार, चार यारी रिहा उठाईआ। लहिंदी दिशा हाहाकार, आपे वेख वखाईआ। डूँघी कन्दर मारे मार, उच्चे टिल्ले गोरख मच्छन्दर लए लाहीआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त मनमती भौंदे बन्दर, दिवस रैण होए हलकाईआ। कलिजुग माया कीते अन्धड़, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। मदिरा मासी पापी गन्दड़, विष्टा मुख रखाईआ। नानक गोबिन्द ना होए बख्शंदड़, गुरु अर्जन ना दए गवाहीआ। फिर फिर भुल्ले भागां मन्दड़, गुर वाक मुख गवाईआ। माया राणी झूठा धंधड़, थिर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, मुलां शेख़ मुसायक पीर पंडत, पांधे वेख अखीर, ग्रन्थी पन्थी आवण आया समझाईआ। अकाल पुरख बोध अगाधा, शब्दी शब्द भण्डारया। शब्द चलाए आदि जुगादा, जुग जुग लए अवतारया। माण रखाए सन्तन साधा,

ग़रीब निमाणयां गले लगा रिहा। धुरदरगाही देवे दादां, नाम वस्त झोली पा रिहा। सुरत बणाए साची राधा, स्वामी कृष्न वखा रिहा। सुरती राम एका लाधा, सीता संग निभा रिहा। नानक गुर नाम सति इक्क पछाता, एका बूझ बुझा रिहा। वाह वाह गुरू देवे दातां, वाहिगुरू रूप वटा रिहा। चौथे अक्खर चौथे जुग वड करामाता, कर्म कर्म मिटा रिहा। सतिजुग साचे देवे सच सुगाता, दो दो मेल मिला रिहा। सो पुरख निरँजण उत्तम जाता, पारब्रह्म अख्वा रिहा। हँ रूप ब्रह्म पछाता, ब्रह्म ब्रह्म आप समा रिहा। आपे पिता आपे माता, पिता पूत नाम धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पट पटना वेख विखा रिहा।

* पहली अस्सू २०१५ बिक्रमी हरि मन्दिर साहिब पटना नूं शब्द भेज्जया *

पटना जोत जगे अकाली, पहली कत्तक वड वड्याईआ। गुर गोबिन्द आया पन्थ दा वाली, पन्थ मार्ग वेख वखाईआ। आपे जल्वा नूर जलाली, जल्वा जलाल आप अख्वाईआ। आपे करे कराए सदा प्रितपाली, प्रितपालक नाउँ धराईआ। आपणा गगन बणाए आपणी थाली, आपणा दीपक विच टिकाईआ। आपणी जोती आप जगाली, आपे करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। आपणी जोत आप जगा, आपणा घर सुहांयदा। आपणी मात आप उपा, आपे वेख विखांयदा। आपणा पिता आप बणा, आपे नाउँ धरांयदा। आपणी सेजा आप हंढा, आपे विच समांयदा। आपणा जन्म आप दवा, आपे नाउँ रखांयदा। निहकलंक नाउँ रखा, गुर गोबिन्द संग वखांयदा। पटने करे सच न्याँ, साचा कर्म कमांयदा। निरगुण वेखे साचा थाँ, भरम भुलेखा दूर करांयदा। दूजी वार गोबिन्द ना जन्मे गुजरी माँ, तेग बहादर ना गोद उठांयदा। राणी घर ना देवे भोग लगा, पंडत पांधा ना कोई समझांयदा। मुस्लिम सजदा ना रिहा करा, ना कोई सीस झुकांयदा। सभ तों बैठा मुख छुपा, दिस किसे ना आंयदा। पहली कत्तक चरन टिका, साची जड़ लगांयदा। चारों कुन्ट कटक उठा, आपणी धार बणांयदा। मोर मुकट सिर टिका, लंका गढ़ सुहांयदा। शाह शहाना जोती तिनका दए लगा, राज राजाना आप उठांयदा। वासी पुरी घनका आप अख्वा, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणे संग रखांयदा। लहिणा देणा झोली देवे पा, जिउँ नानक अंगद अंग लगांयदा। सिक्खां अन्दर सिक्ख सिक्ख गुर जाए समा, गुर चेला रूप वटांयदा। गुर गोबिन्द तेरा लेखा लिख्या पूरा दए करा, ना कोई मेट मिटांयदा। पुरख अकाल साचा सुत कलिजुग अन्तिम ल्या मना, शब्दी नाउँ धरांयदा। दुष्ट दमन दी सेवा ला, गुर गोबिन्द नाउँ रखांयदा।

गुर गोबिन्दे घाल घाली ख़ुशी होया बेपरवाह, बंस सरबंस वेख वखांयदा। सतिजुग चलाए साचा राह, गुर गोबिन्दा अग्गे लांयदा। अकाल पुरख बण मलाह, जोती जामा पांयदा। पटने डंक दए वजा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। अकाल तख़्त लेखा दए लिखा, हरि मन्दिर आप जगांयदा। नदेड़ भुलेखा दए कढा, गोदावरी कन्ढ्ढा डेरा लांयदा। अनन्द पुरी दए छुडा, वेला अन्तिम आंयदा। जो सरसे रोड़े सो ल्ए जगा, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका इक्की साची सिक्खी झोली दित्ती पा, आपणा पल्लू अग्गे डांयदा। वालों निक्की धारों तिक्खी, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सोहँ कंडे तोल तुला, नानक तेरां धार चलांयदा। बदलया चोला खेले खेल दो जहान, दो जहान आप अख्वांयदा । फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन सरनाई आंयदा। कोट कोट जन्म पूजा पाठ तप संजम नेम एका अक्खर लेखे ल्ए ला, जो जन सन्मुख रसना गांयदा। लक्ख चुरासी देवे फंद कटा, धर्म राए नेड़ ना आंयदा। लाड़ी मौत रही शरमा, गुरसिख दर ना वेखण पांयदा। धर्म दुआरे चित्रगुप्त आपणा लेखा खोल्ह ना रिहा वखा, ना अग्गे कोई टिकांयदा। सदा सुहेला देवण आया ठंडी छाँ, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। आपे पिता आपे माँ, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। कलिजुग जीव उठ उठ जाग, रैण अन्धेरी छाईआ। पारब्रह्म प्रभ चरनी लाग, दुरमति मैल धोवे शाहीआ। पंच विकारा जगत त्याग, दुरमति मैल गंवाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघ, अठसठ मूल चुकाईआ। आत्म अन्तर उपजाए इक्क वैराग, आत्म ब्रह्म जणाईआ। धुन अनादी वजाए एका नाद, अनहद ताल उठाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, काया मन्दिर जणाईआ। जो जन रसना रहे अराध, सेवक सेवा वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा साजण मीत जिस जन साचे ल्या लाध, एका दूजा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे साचे घर, घर मन्दिर वेख वखाईआ। गुरसिख सच द्वार, हरि सुहाया । हरिसंगत कर प्यार, डेरा लाया। वज्जे शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद मंगल एका गाया। धुर दी गाए साची वार, आसा मनसा पूर कराया। जो जन आए चल द्वार, निरासा कोई ना दर तों जाईआ। भरे नाम शब्द भण्डार, अतुट भण्डारा आप रखाया। वरते वरताए विच संसार, सैंहसा रोग दए चुकाया। अन्दर मन्दिर गुप्त ज़ाहर पावे सार, ना कोई सके भेव छुपाया। लक्ख चुरासी वेखे साची नार, साचा कन्त कवण रही हंढाया। कवण दुहागण होई विभचार, दर दर नैण रही मटकाया। बिन हरि सेज ना सोए कोई पैर पसार, सुहञ्जणी सेज सर्ब वखाया। कन्त कन्तूहला कर प्यार, शब्द झूला दए झुलाया। आ सखी इक्क द्वार, हरि साचे आप सुहाया। मंगल गाए वारो वार, पंचम दर वखाया। चौथे घर पावे सार, परमानंद समाया। तीजा नैण दए उग्घाड़, आपा मूल चुकाया। दोए दोए लोचण ना वेखणा पाड़, हरि का

रूप दोए नेत्र नज़र ना आया। दोए नेत्र वेखण उग्घाड़, माया ममता मोह हलकाया। पंच विकारा रचया नाड़ नाड़, दिवस रैण रही नचाया। कलिजुग कूड़ा घड़या घाड़, सच ठठयारा दिस ना आया। अन्तिम भाण्डा भज्जणा विच उजाड़, मन्दिर अन्दर रहिण ना पाया। लिखी थिती सतारां हाढ़, ना कोई मेटे मेट मिटाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आपणे मन्दिर देवे वाड़, शब्द द्वारी इक्क वखाया। हरिसंगत हरि पिछे अगाड़, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुरमुख साचे साचे घोड़े देवे चाढ़, एका अस्व नाल रखाया। दरगहि साची देवे वाड़, धुर धामी धुर दा माण रखाया। जिस जन चरन छुहाया दाढ़, अद्ध विच रहिण ना पाया। गगन पतालां पर्दा देवे पाड़, गुरसिख तेरा राह बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। गुरमुखां बन्ने नाम डोरी, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग करदा आया चोरी, सुत्ते रिहा जगाईआ। कलिजुग अन्तिम रैण अन्धेर घोरी, मूर्ख गूढ़ी नींद सवाईआ। हरिसंगत आपणे नाल जाए तोरी, नठ्ठा जाए वाहो दाहीआ। सोहँ शब्द चुकाए मोरी तोरी, तोरा मोरा रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म चढ़ाए साची घोड़ी, जोती जोत सेवा लाईआ। गुरसिक्खां घाल घाली रहि गई थोड़ी, वेला अन्त मुकाईआ। वेख वखाए पूत सपूते ब्रह्मण गौड़ी, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। चारों कुन्ट होए बौहड़ी बौहड़ी, धीरज धीर ना कोई धराईआ। उच्चे मन्दिरां जो ला ला थक्के पौड़ी, बस्त्र ख़ाक रलाईआ। किसे याद ना आए राग गौड़ी, धनासरी जैजैवन्ती ना कोई गाईआ। वार आसा ना पढ़े कोई सलोक पौड़ी, सुधासर अशनान ना कोई कराईआ। सम्मत पन्दरां सभ नूं रिहा होड़ी, उठो जागो दाता आया बेपरवाहीआ। रामदास सरवर मनुक्ख मनुश काग हँस करे कोढ़ी, गुरसिख दुरमति मैल नुहावनी कोई नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक चुकाया डर, ना लुकया किसे अन्दर वड़, शब्द डंका रिहा वजाईआ। साचे सिक्ख सन्त दुलार, पाया पुरख अबिनाशा। मिल्या मेल हरि कन्त भतार, जगत दुःखड़ा नासा। सांतक सति होया संसार, बुझी तृष्ना प्यासा। रत्ती रत्त इक्क अपार, तुल्या तोल ना तोला मासा। मित गत जाणे करतार, जिस जन किया अन्दर वासा। गुरचरन हित्त सच प्यार, चरन कँवल भरवासा। जो जन ढए चरन द्वार, मेल मिलावा शाहो शाबाशा। आदि निरँजण हरि करतार, निहकलंक जोत सरूप वेखण आया जगत तमाशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका वर, रसन तजाउणा मदिरा मासा। मदिरा मास रसन तजाउणा, गुरमति वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी घर में पाउणा, गुर अर्जन गया समझाईआ। एका पद इक्क निशान रखाउणा, एका तीर चलाईआ। एका मदि जाम पिआउणा, भर प्याला अमृत सच सुराहीआ। आपणी यद भाग लगाउणा, कुलवन्त नाम धराईआ। नौ दुआरे हद्द पार कराणा, घर दसवां वेख वखाईआ।

जोती दीप इक्क जगाउणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सति पुरख निरँजण दर्शन पाउणा, सति सति समाईआ। अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाउणा, घर आवे दए दुहाईआ। अगम्म अगोचर अथाह, बेपरवाह साचा संग निभाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। सतिजुग साचे दस्से राह, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। एका शब्द बणे मलाह, गुर शब्द होए सहाईआ। निरगुण रूप नर नरायण आपणे नैण वेखे थाउँ था, थान थनंतर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी करनी किरत रिहा कमाईआ।

* २१ अस्सू २०१५ बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच *

आदि जुगादि जुग जुग धार, हरि हरि आप चलाईआ। निरगुण रूप कर आकार, निराकार समाईआ। अकल कल खेल अपार, अकाल पुरख अख्वाईआ। आदि शक्त रूप अपार, अनभव प्रकाश समाईआ। अलक्ख अगम्म बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। राम रूप अपर अपार, रूप रेख ना कोई जणाईआ। आपे वस्सया धाम न्यार, धाम अवल्लड़ा इक्क सुहाईआ। आदि निरँजण पुरख करतार, अजूनी रहित नाम रखाईआ। सवै शक्त जोत निराकार, रूप अनूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि खेल खिलाईआ। आदि जुगादि हरि निरँकारा, एका एक समाया। पारब्रह्म प्रभ हरि अवतारा, हरि हरि जोत जगाया। कोटन कोट कोट कर पसारा, आप आपणा रिहा छुपाया। महल्ल अटल उच्च मुनारा, एका एक सुहाया। आपे बैठ सिरजणहारा, सच समग्री लए उपाया। जोती जोत धर प्यारा, जोती जोत मेल मिलाया। शब्द अनादी उपजे बाहरा, धुन अनाद वजाया। गाए गंवाए गावणहारा, सुनणहार आप हो जाया। वेखे विगसे कर विचारा, वेखणहारा दिस ना आया। ब्रह्मण्ड खण्ड कर पसारा, लोआं पुरीआं बणत बणाया। लोक परलोक दए सहारा, चौदां हट्ट खुल्हाया। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादारा, आपणा अंग कटाया। त्रैगुण मेल अपर अपारा, पृथ्मी आकाश टिकाया। पंज तत्त खेल न्यारा, मन मति बुध मेल मिलाया। निरगुण ब्रह्म कर पसारा, आत्म आप दरसाया। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, भेव किसे ना पाया। जुग जुग चले आपणी धारा, धार अवल्ली इक्क रखाया। गुर पीर साध सन्त सेवक लाए सेवादारा, मार्ग पन्थ चलाया। जोग तप हट्ठ सन्यास वैराग त्याग दिसे विच संसारा, तन लंगोट बंधाया। कपड़ कूड़ क्रिया कर उज्यारा, माण मोह बंधाया। पंज तत्त कर हितकारा, हउमे गढ़ सुहाया। रक्त बूंद मेल कन्त भतारा, नारी नारा वेस वटाया। उपजे सुत जगत दुलारा, धरत मात गोद सुहाया । वेख वखाए रवि ससि सूरज चन्न सतारा, मण्डल

मण्डप सुहाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव किसे ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के जीव जन्त गंवारा, लेखा लिख्त विच ना आया। ब्रह्मा वेता बण लिखारा, चारे मुख रिहा खुल्हाया। प्रभ अबिनाशी खेल न्यारा, भेव अभेदा भेव छुपाया। करे कराए करनेहारा, कादर करता आप अख्वाया। घड़ण भन्नणहार समरथ पुरख अपारा, सारंगधर नाम धराया। मरे जम्मे विच संसारा, आवण जावण खेल रचाया। बिन थम्मे गगन दए सहारा, धरत धवल जल बिम्ब टिकाया। थिर घर सुहाए ना कोई लाए इट्टां गारा, हरि मन्दिर नाउँ रखाया। निर्मल जोती कर उज्यारा, दीपक इक्क सुहाया। नादी शब्द वज्जे धुंनकारा, राग रागनी ना कोई गाया। बोध अगाध शब्द जैकारा, सुन्न समाध सुणाया। वेखे खेल आप निरँकारा, निरवैर नाम धराया। नूरो नूर नूर चमत्कारा, आप आपणा रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, हरि आपणी जोत जगाईआ। खेले खेल सृष्ट सबाई इक्क इकल्ला, घट घट बैठा आसण लाईआ। सुहाए निहचल धाम अटला, उच्च महल्ला डेरा लाईआ। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आदि पुरख हरि दीन दयाला, अकल कला अख्वांयदा। आदि शक्ती जोत ज्वाला, एका एक डगमगांयदा। आपे काल आपे महांकाला, महांकाल आप खपांयदा। आपे धर्म राए धर्मसाला, धर धरनी आप सुहांयदा। आपे पृथ्मी करे प्रितपाला, आकाश प्रकाश आप रखांयदा। आपे खेले खेल निराला, खेलणहार मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग वेस सति पुरख सदा अदेस, जूनी रहित भेव कोई ना पांयदा। मूर्त अकाल जोत निरँजण, जूनी रहित अख्वाया। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, सगला संग निभाया। लक्ख चुरासी नेत्र ज्ञान देवे अंजन, निरत सुरत वेख वखाया। काया गढ़ सुहाए कंचन, उप्पर चढ़ डेरा लाया। आप कराए आत्म सर आपणा मजन, सर सरोवर इक्क नुहाया। आत्म अन्तर शब्द अनादी एका भजन, दिवस रैण रिहा सुणाया। अनहद अनहत ताल आपे वज्जण, ताल तलवाड़ा इक्क रखाया। सेवा करे प्रभ साचा सज्जण, पंज तत्त डेरा लाया। हउमे गढ़ हँकारी भज्जण, नाम खण्डा इक्क चमकाया। नौ द्वार गुरमुख साचे तजण, दर दुआरा इक्क सुहाया। काया काअबा साचा हाजन, हाजी हज्ज वखाया। शब्द अगम्मी चढ़या ताजन, लोकमात फेरा पाया। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़न, ग़रीब निमाणे वेख वखाया। जोत जगाए देस माझन, निहकलंकी नाउँ रखाया। गोबिन्द रक्खे तेरी लाजण, सम्बल नगरी डेरा लाया। सुत दुलारे मारे वाजन, जो सरसे गया रुढ़ाया। मनमुखां खोल्हण आया पाजण, वीह सद पन्दरां वेख वखाया। प्रगट होया शाहो भूप वड राज राजान,

राज राजाना दए हिलाया। वेखे शेख़ मुसायक नवाबन, पीर फ़कीर दस्तगीर दए उठाया। जगत मसला वेखे साचा हाजी हाजन, मुख नकाब पर्दा लाहया। तालब तल्ब करे गालब गलब करे वेखे खेल पुन सवाबन, अहिबाब रबाब इक्क वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा नाउँ धराया। जोती जामा हरि गोबिन्द, सगली चिन्त मिटाईआ। प्रगट होए भारत हिन्द, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। शब्द धार वहाए सागर सिन्ध, बेमुखां दए रुढ़ाईआ। शब्द गुरू दाता सूरा वड मृगिन्द, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। पंडत पांधिआं मेटे चिन्द, जो बैठे मस्तक तिलक लगाईआ। दर दर घर करन निन्द, नेत्र ज्ञान ना कोई रखाईआ। पूज पूज थक्के करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द, शिव शंकर सीस भेट चढ़ाईआ। ब्रह्मा ब्रह्मा अख्वाए आपणी बिन्द, ब्रह्म असमी ब्रह्म समाईआ। पारब्रह्म प्रभ मेटणहारा सगली चिन्द, कलिजुग अन्तिम मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग वेस आदि पुरख आप कराईआ। लोकमात धर धर वेस, आपणा कर्म कमांयदा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, आपे सीस निवांयदा। आपे पूजा गणपति गणेश, आपे पाहन गल लटकांयदा। आपे देवणहारा शब्द संदेश, भगत भगती आप करांयदा। आपे रिख मुन करे आदेश, आप आपणा वेस वटांयदा। आपे राज राजाना शाह नर नरेश, भेख भिखारी आप हो जांयदा। आपे बणे दर दरवेश, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। आपे मूंड मुंडाए धारी केस, आपे मस्तक तिलक लगांयदा। आपे पंज ककारा दस दस्मेश, आपे लबां मुख कटांयदा। आपे कराए आपणा वेस, आपे वेख वखांयदा। किसे ना चले अग्गे पेश, हुक्मी हुक्म सर्ब फिरांयदा। आपे पावे सार नौ खण्ड पृथ्मी साचे देस, सत्तां दीपां आप जगांयदा। आपे खूंडी ओडे भूरी खेस, आपे मज्झीआं बण चरांयदा। आदि जुगादि आपे रहे हमेश, आदि अन्त आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वर प्रगट होए नर नरेश, निहकलंका नाउँ रखांयदा। किसे हथ्थ ना आए पुस्तक रेख, पंडत पांधा ना कोई वखांयदा। फिरी दुहाई चार कुन्ट दहि दिशा गगन मण्डल सभ रहे वेख, कवण कूटे कवण धार हरि निरँकार जोती जोत जगांयदा। साध सन्त अन्दर वड़ रहे वेख, काया जिंदा कवण तुड़ांयदा। पंडत पांधे मन्दिर बैठ रहे पढ़, गीता ज्ञान गायत्री दुर्गा राम कहांयदा। ग्रन्थी पन्थी रहे फड़, हथ्थ किसे ना आंयदा। पीर फ़कीर उच्चे टिल्ले रहे चढ़, जगत महिराबे बांग सुणांयदा। किसे हथ्थ ना आया पंज तत्त काया धड़, रो रो सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग वगाया आपणा हड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार धार इक्क वखांयदा। हउमे हँगता गए सड़, तृष्ना तृप्त ना कोई करांयदा। कोई ना वेखे चोटी चढ़, निज घर ना कोई सुहांयदा। सम्मत पन्दरां राह विच सारे बैठे अड़, अग्गे दिस कुछ ना पांयदा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़,

६६८
०७

काया धूणी मड्ड तपांयदा। आपणा मूल जानण जड़, साचा लड़ ना कोई वखांयदा। वेद कतेबां ग्रन्थां रहे पढ़, हरि की पौड़ी चढ़ दरस कोई ना पांयदा। आपणे अन्दर आपे रहे लड़, ना झगढ़ा कोई मिटांयदा। डूँघी भवरी बैठे वड़, ना पार कोई करांयदा। सूफ़ी मति मारी दड़, सच निशान ना कोई लगांयदा। सनातन धर्म रिहा सड़, धरनी धवल ना कोई सुहांयदा। भगवे वेस घर घर कर, दाढ़ी मुच्छ कटांयदा। वेसवा वेस ल्या कर, दर दर गुरू फिरांयदा। सन्यास आस पूरी ना रिहा कर, सुरत ज्ञान ना कोई दृढ़ांयदा। पंचम विकारा रिहा सड़, तत्व तत्त जलांयदा। पंडत पांधा पी पी नड़, आपणा मूल चुकांयदा। मुस्लिम सुन्नी तीस बतीस अक्खर पढ़, सच आइत ना कोई सुणांयदा। ग्रन्थी पन्थी बणया गढ़, हउमे गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। इक्क इकल्ला पारब्रह्म कलिजुग अन्तिम लए फड़, लेखा कोई रहिण ना पांयदा। पहली कूटे रिहा चढ़, शब्दी डंक वजांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, हर घट आप सुहांयदा। गोबिन्द बाला लए फड़, आपणी गोद उठांयदा। मनमुखां नाल रिहा लड़, माया पर्दा एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख इक्क इकल्ला, खेले खेल जगत महल्ला, आप आपणा वेस वटांयदा।

६६८ ०७ गोबिन्द गुर कर प्यार, राम रूप समाईआ। काहना कृष्ना खेल न्यार, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। अहिमद मुहम्मद पावे सार, ऐनलहक्क जणाईआ। सच ख़ुदाई परवरदिगार, पारब्रह्म अख्वाईआ। खेले खेल विच संसार, गुरमुखां रिहा उठाईआ। तोड़े गढ़ लंका हँकार, बज़र कपाटी इक्क जणाईआ। रावण रोवे धाहां मार, मन रावण रहिण ना पाईआ। सीता सुरती कर प्यार, शब्द रामा लए प्रनाईआ। गुरसिख तेरा सच प्यार, शाह भबीख़ण नाउँ रखाईआ। राष्ट्रपति मीत मुरार, सोया सुत उठाईआ। अन्तिम मेला विच संसार, सम्मत सोलां दए समझाईआ। थित वार रिहा विचार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरिसंगत हरि सेवादार, राज राजाना शाह सुल्ताना देवे ख़ाक मिलाईआ। जोधा सूरबीर वड मर्द मर्द मरदाना, एका खण्डा रिहा चमकाईआ। पहली कत्तक बन्ने गाना, साचा सगन मनाईआ। गुरसिख ना फड़े तीर कमाना, रसना सोहँ एका गाईआ। खेले खेल हरि दो जहानां, दो जहानां वाली आप अख्वाईआ। जन भगतां देवे पद निरबाना, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ । अन्दर बैठे करन ध्याना, हरि ध्यान विच ना आईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मड्ड, शिवदवाले बहि बहि करन ज्ञाना, ज्ञान ध्यान ना कोई जणाईआ। छत्ती राग गा गा गाणा, नाद धुन कान ना कोई सुणाईआ। भाई भैण साक सज्जण सैण धीआं पुत्तर रहे पछाना, पूरा सतिगुर दिस ना आईआ। उच्चे मन्दिर बैठे विच मकाना, निज अस्थान

६६८ ०७

ना वेख वखाईआ। जगत पदार्थ रस भोग खाया खाणा, आत्म रस ना कोई खवाईआ। तख्त ताज बहि बहि सजण राजा राणा, राज जोग ना कोई दवाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगटे निहकलंक बली बलवाना, आप आपणा तेज रिहा चमकाईआ। चात्रिक तृखा आप बुझाणा, चेतन्न सता जगाईआ। एका नाम देवे धुर फ़ुरमाणा, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। भेव ना पायण अञ्जील कुराना, वेद पुराण रहे सद गाईआ। खाणी बाणी होए हैराना, नानक निरगुण गया समझाईआ। अर्जन लिख्या लेख महाना, भेव कोए ना पाईआ। हरि मन्दिर सुहाए इक्क टिकाणा, गुर गोबिन्द लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। एका डंक हरि निरँकार, आपणा आप वजांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। इक्क इकल्ला बन्ने धार, धरत धवल सुहांयदा। जगत महल्ला वेख पसार, क्रिया कूड़ी मेट मिटांयदा। शब्द पल्ला फड़ाए अपर अपार, आप आपणी बणत बणांयदा। जोग जुगत जग हरि करतार, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। सूरा सरबंग सिरजणहार, अल्पग जीव तरांयदा। दरस दखाए उप्पर शाह रग, नेत्र लोचण नैण खुल्ांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग, कागों हँस बणांयदा। सीस बंधाए नाम दस्तार साची पग, सीस जगदीश लेखे लांयदा। सोहँ बन्ने तन तग, लोकमात ना कोई तुड़ांयदा। जोत निराली पुरख अकाली रही जग, ना कोई मात बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सन्त वेखे धर्म राए दा झूठा वग, आत्म अन्तर फोल फुलांयदा। ज्ञान सुणाए शाम अथर्बण युजर रिग, वेद विदांता भरम भुलांयदा। अग्नी ला ला काठ बहिण यग, तन बभूत रमांयदा। दर दर नाद वजौंदे फिरदे मृदंग, मृग सिंग स्वांगी स्वांग रखांयदा। जोगी जुगीशर हथ्थ उठाई फिरदे किंग, मन दा किंगरा कोई ना ढांयदा। ग्रन्थी पन्थी रहे अड़िंग, साचा ताल ना कोई वजांयदा। सूफ़ी सन्त फ़कीर पोसत अफीम खा खा बैठे भंग, मस्त आत्म ना कोई दसांयदा। ना कोई कढ्ढे दूई द्वैती विंग, सिध्धी धार ना कोई चलांयदा। मन्दिर मट्ठ पूजन लिंग, शिव शंकर दर्शन कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे सप्त सरिंग, हेम कुन्ट फेरा पांयदा। हेम कुण्ड ठांडी धार, कलिजुग कर्मा बन्द कराया। शब्द गंढु ना खोल्े कोई विच संसार, गुर नानक गाना एका हथ्थ बंधाया। आपणी रसना हरि का बोला गया उचार, सोहँ ढोला गाया। जामे दस सेवादार, गोबिन्द वेस वटाया। अन्तिम ढहि पए द्वार, पारब्रह्म तेरी इक्क सरनाईआ। अबिनाशी करता पावे सार, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नानक गोबिन्द बण भिखार, एका मंग मंगाया। कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, तेरा मेरा दिस ना आया। चारों कुन्ट धूंआँधार, सच चन्द ना कोई चढ़ाया। रवि ससि रहे हार, प्रकाश प्रकाश प्रकाश

मुख छुपाया। धरत धवल करे पुकार, अग्गे आपणी झोली डाहया। तेरे तेरी करन विचार, तेरा राह तकाया। कवण घर कवण दर कवण दरबार, कवण कूटे डेरा लाया। पारब्रह्म प्रभ रिहा पुकार, गोबिन्द एह सुणाया। तेरा धड़ मेरा गढ़, सम्बल नगरी नाउँ रखाया। कलिजुग अन्तिम वेखां उप्पर चढ़, हरि जू हरि मन्दिर बैठा आया। अग्नी हवन ना जावां सड़, मात गर्भ ना कोई रखाया। हथ्थो हथ्थी ना कोई लए फड़, किले कोट ना बन्द कराया। सृष्ट सबाई आपे लवां आपणे नाल फड़, आप आपणे नाल लड़ाया। कोटन कोटी कोटां विच्चों सीस चरन लए धर, दूसर दर ना कोई भाया। निहकलंक नाउँ धर, नानक गोबिन्द तेरी पूरी आसा दए कराया। चार वरन इक्क दुआरे धर, एका मन्त्र नाम जपाया। एका वरन देवे कर, एका बरन रिहा समझाया। साची सरन तरनी तरन, जगत जगदीश आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करता करनी कार कलिजुग तेरी अन्तिम वार, विच संसार करने आया। शब्द गुरदेव हरि हरि राखा, सखा सखाई अख्वाए। लहिणा देणा मस्तक माथा, एका झोली नाम भराए। भगत भगती साची गाथा, मन्त्र इक्क दृढ़ाए। जगत चलाए साचा राथा, रथ रथवाही सेव कमाए। साचा संगी सगला साथा, सगला दुःख मिटाए। दिवस रैण रैण दिवस अट्ठ साठा, नैणी रैण दिसाए। उत्तम सुख काया माटा, सांतक सति वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाए। जगत समग्री साची रास, गुरचरन टिकाईआ। सति सन्तोख रख्या पास, सच सच्ची वड्याईआ। पूरा पूरी करे आस, निरास रहे ना राईआ। सदा सुहेला वसे पास, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। सेवक सेवा विटों बलि बलि जास, बलिहारी हरि सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया मण्डल रास सुहाईआ। सुत दुलारा जोत जगा, जागरत दया कमाईआ। पर्बत टिल्ले फोल फुला, पारब्रह्म उठाईआ। लहिणा देणा मूल चुका, आप आपणे मार्ग लाईआ। शब्द सनेहुड़ा इक्क सुणा, शब्दी शब्द जगाईआ। लोकमात वखाए जगत राह, भगत भगवन्त वड्डी वड्याईआ। पंज तत्त काया भाग लगा, पट पटना इक्क सुहाईआ। गोबिन्द रूप वेख वखा, गोबिन्द घाट नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूत सपूता नाउँ धराईआ। पूत सपूते मंगी मंग, मेला दो जहाना। पुरख अबिनाशी चाढ़े रंग, खेले खेल महाना। आप लगाया आपणे अंग, अंगीकार श्री भगवाना। ब्रह्मण्ड वजाए इक्क मृदंग, पुरख अकाल गाणा। आदि शक्त रोवे नीर धारा गंग, चरन धूढ़ करे अशनाना। विष्न वंसी कस तंग, वेखे राह बिबाना। ब्रह्मा वेता दर आपणा लँघ, आपे होए बाल बिरध, बिरध बाल नौजवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे साचा धाम अस्थाना। धाम अस्थान जगत गुरदेव,

भारत वंड वंडाईआ। पुरख अकाल करी सेव, दिवस रैण गाईआ। अन्तिम महल्ला अलक्ख अभेव, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेखे रिहा लगाईआ। हरि हरि लेखा आप चुकाउणा, जोती नूर रुशनाईआ। पंज तन ना कोई जणाउणा, शब्दी सुत समझाईआ। निरगुण निरगुण निरगुण सरगुण संग मिलाउणा, नाम मिलावा सहिज सुभाईआ। हरिसंगत प्यार साची सेज आसण लाउणा, सच सिँघासण इक्क वखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन आप छपाउणा, जगत नेत्र दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भेव अभेदा आप आपणा दए खुल्हाईआ।

* २२ अस्सू २०१५ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर करोल बाग नवी दिल्ली *

हरि जोत हरि नूर अपार, हरी हरि हरि आप उपाईआ। आदि पुरख अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। निरगुण नां हरि निरँकार, रूप रेख ना कोई जणाईआ। आदि शक्त वेख विचार, जोती नूर करे रुशनाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, नामा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर पुरख अकाला, अकल कला अख्वाया। ठाकर करता दीन दयाला, एका एक एक रूप दरसाया। आदि शक्ती जोत ज्वाला, जागरत जोत जगाया। हक्क हकीकत खेल निराला, खेलणहार दिस ना आया। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, भेव अभेदा भेव छुपाया। अबिनाशी करता गुर करतार, गुर गुर वेस वटाया। थान थनंतर सोहे द्वार, थिर घर डेरा लाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, शाहो भूप सुहाया। राज राजाना एका एकँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। जोत अकाला पुरख करतार, आपणी आप जगांयदा। आदि जुगादी जाणे सार, लिख्या लेख ना कोई वखांयदा। गुणवन्ता हरि गुण दातार, गुण गुण गुण विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त भेव अभेद अछल अछेद, आपणा आप करांयदा। अछल अछेद हरि भगवाना, एका एक अख्वाईआ। एका जोधा सूर बली बलवाना, एका तीर चलाईआ। एका शस्त्र दो जहानां, आप आपणा रिहा चमकाईआ। एका लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर वेख वखाईआ। राग अनादी देवे धुर फ़रमाणा, शब्दी शब्द सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस दर दरवेश अलक्ख निरँजण एका अलख जणाईआ। अलक्ख निरँजण नाम जैकारा, एका एक अल्हांयदा। सुहाए घर थिर दरबारा, थिर घर वेख वखांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, नूरो

नूर दरसांयदा। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकारा, सच सुल्ताना नाउँ धरांयदा। लोआं पुरीआं बन्ने धारा, ब्रह्मण्ड खण्ड बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण विच टिकांयदा। निरगुण रूप हरि करतार, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। आप आपणा सुहाए बंक द्वार, दर आपणे अलक्ख जगाईआ। मंगे मंग निराकार, निरगुण झोली अग्गे डाहीआ। शब्दी भर शब्द भण्डार, अतोट अतुट्ट रखाईआ। वरते वरतावे आप संसार, त्रैगुण माया रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया वेस अपार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। ब्रह्मा वेता कर प्यार, एका अंग लगाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, मन मति बुध नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटाईआ। आप आपणा अंग दए कट्ट, आपणी दया कमांयदा। वेख वखाए चौदां लोक चौदां हट्ट, दहि दिशा फेरी पांयदा। खेले खेल बाज़ीगर नटूआ नट, हरि स्वांगी स्वांग वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर लट लट, पारब्रह्म अख्वांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म प्यार, भेद अभेद कराया। पंज तत्त कर पसारा, नौ दर फेरा पाया। नौ दर वेखे जगत दुआरा, आपणी खेल खिलाया। उच्च महल्ला इक्क अटला घर घर विच आप टिकाया। आपे बैठ इक्क इकल्ला आप आपणी रचन रचाया। दीपक जोती एका बला, अज्ञान अन्धेर गंवाया। शब्दी धुन अनादी वजाए ताला, तलवाड़ा इक्क सुणाया। गगन मण्डल गगन गगनंतर वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, साचा सुन्दर रूप सुहाया। बज़र कपाटी तोड़े ज़िंदा, दूई द्वैती मेट मिटाया। मेल मिलावा अन्दरे अन्दर, कर किरपा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग वेस पुरख अकाला दीन दयाला, आप आपणा रिहा कराया। दीन दयाल हरि भगवन्ता, हरि हरि आप अख्वाया। आप उपाए साचे सन्तां, सतिगुर मेल मिलाया। वेख वखाए लक्ख चुरासी जीव जन्तां, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड फोल फुलाया। गुरमुख विरले मेल मिलावा नारी कन्ता, आत्म सेजा इक्क विछाया। फुल्ल फुलवाड़ी नाम सुहाए रुत्त बसन्ता, साचा धाम वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी आपणा वेस करे कराए नर हरि निरगुण सरगुण वेख वखाया। निरगुण सरगुण साची धार, हरि हरि आप चलाईआ। आप उपाए आप खपाए विच संसार, दूसर दिस किसे ना आईआ। हर घट बैठा दीपक जोती कर उज्यार, सच सिँघासण डेरा लाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा गुरदर मन्दिर मस्जिद जीव जन्त करन विचार, हथ्थ किसे ना आईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, सो जन बूझे दर साचा सूझे, एका दूजा भेव गंवाईआ। तीजे नैण आपे लूझे, चौथे पद समाईआ। पंचम पारब्रह्म प्रभ आपे बूझे, मिले सच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण अबिनाशी करता

नाउँ धराईआ। आदि पुरख सर्ब घट देवा, हरि हरि रूप समाया। अजूनी रहित अलक्ख अभेवा, निरगुण नूर करे रुशनाया। हरि सन्तन वेखे साची सेवा, लोकमात फेरी पाया। गुण विखाए रसना जिह्वा, जो जन रसना रहे गाया। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, लहिणा देणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस करनेहारा, करता पुरख अख्वाईआ। आदि शक्त खेल अपारा, खेले खेल सृष्ट सुबाईआ। नाम भगौती खण्डा अपारा, ब्रह्मण्डां रिहा चमकाईआ। मेट मिटाए धूंआँधारा, रैण अन्धेरा रहिण ना पाईआ। रवि ससि करन निमस्कारा, बैठे सीस झुकाईआ। मण्डल मण्डप दए सहारा, गगन पताला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाईआ। आप आपणी वंड वंडा, आपणी दया कमांयदा। आपणा लहिणा आपणी झोली पा, आपे वेख वखांयदा। भाणा सहिणा हुक्म जणा, गुर पीर अवतार लोकमात धरांयदा। शब्द सुनेहड़ा इक्क घला, जोती जोत जगांयदा। नेत्र नैणां दरस दिखा, आत्म तृष्ना बुझांयदा। बस्त्र गहिणा एका पा, शब्द शृंगार करांयदा। साचे घोड़े रिहा चड़ा, चिटा अस्व इक्क दौड़ांयदा। सोलां कलीआं आसण ला, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूप शाहो भूप हरि भगवाना, दो जहानां आपणा आप वटांयदा। भगवन रूप भगतन लेखा, जुग जुग आप चुकाया। लक्ख चुरासी पाए भरम भुलेखा, दिस किसे ना आया। आपे लिखणहारा मस्तक रेखा, आपे दए मिटाया। आपे वेखे मूंड मुंडाए धारी केसा, हर घट बैठा आसण लाया। आपे जोती राम कृष्ना रूप वटाया। आपे ब्रह्मा विष्न महेषा गणपति दर दरवेशा, आपे अलक्ख जगाया। आपे शब्द सिँघासण बैठ नर नरेशा, आप आपणा हुक्म सुणाया। आपे लोकमात करे कराए वेसा, जुग जुग वेस वटाया। एका रूप ना कोई दाढ़ी मुच्छ केसा, पंज तत्त ना कोई जणाया। सन्त सुहेले विरले वेखा, दर कबीर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी खेले खेल घनक पुर वासी, घट घट वासी नाम रखाया। घट घट अन्तर हरि निरँकारा, घट घट जोत जगाईआ। घट घट करे आप पसारा, घट घट बैठा डेरा लाईआ। घट घट जोत निरँजण कर उज्यारा, घट घट आदि निरँजण वेख वखाईआ। घट घट अनहद शब्द वजाए सच्ची धुन्कारा, घट अनहद ताल वजाईआ। घट घट आत्म सेजा कर प्यारा, घट घट आपे मेल मिलाईआ। घट घट अन्दर पुरख पुरषोत्तम नारी नारा, घट घट सुहञ्जणी सेज जणाईआ। गुरमुख विरले मेले विच संसारा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। इक्क इकल्ला पावे सारा, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। त्रेता तेरा पार किनारा, हरि साचा आप कराईआ। वेद व्यासा बण लिखारा, लेखा गया लिखाईआ। नानक

गोबिन्द बण भिखारा, मंगे मंग बेपरवाहीआ। पारब्रह्म लै अवतारा, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, दो जहानां आप चमकाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, हँ हँगता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण रूप करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि करतार, आपणा आप कराया। गोबिन्द मेला विच संसार, दिस किसे ना आया। पंचम मीता कर प्यार, पंचम मोह चुकाया। पंचम ढहि पए द्वार, पंचम गले लगाया। पंचम मारे तेज कटार, पंचम खण्डां हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि निरँकार तेरा तेरी झोली पाईआ।

* २३ अस्सू २०१५ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर १२ ए, १६ डब्बलीउ ई ऐफ करोल बाग नवीं दिल्ली-५ *

सच्च द्वार सच सिँघासण, जोती नूर डगमगाईआ। शाहो भूप पुरख अबिनाश, उप्पर बैठा बेपरवाहीआ। शाह सुल्तान सर्ब घट वास, रूप रंग ना कोई जणाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग जुग लोआं पुरीआं लोकमात वेखे खेल तमाश, खेल खिलारी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरँकार निरवैर नाउँ धराईआ। सच द्वार सच दरबारा, हरि साचा तख्त सुहाया। उप्पर बैठ हरि निरँकारा, आप आपणा वेख वखाया। आप सुहाए सच्चा घर बारा, थिर घर साचा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण निरगुण नूर उपाया। सच दर सच दरबार, हरि साचे वड वड्याईआ। अकाल मूर्त जोत निरँकार, आदि शक्त वेस वटाईआ। पारब्रह्म रूप अपार, सति सरूप समाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। राज राजान शाह सिक्दार, भूपत भूप आप अख्वाईआ। दर दरवेशा बण भिखार, दर आपणे सीस झुकाईआ। आपणा खण्डा कर त्यार, आप आपणा ल्ए उठाईआ। दूसर कोई ना पावे सार, लिख्त लेखा ना कोई लिखाईआ। आदि जुगादी एका धार, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर घर बारा एकँकारा इक्क दिसाईआ। वस्सया घर आदि निरँजण, तख्त ताज सुहाया। दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, कल भरपूर अख्वाया। आपणे नेत्र आपे पाए अंजन, ज्ञान नेत्र आप रखाया। आपणी धूढ़ी आपे करे मजन, आप आपणे सर सरोवर नुहाया। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि दरबार दए वड्आया। दर दरबारा धुर दरगहि, धुर दी बाण रखाईआ। बेऐब परवरदिगार बेपरवाह, बैठा आसण लाईआ। सच सिँघासण सेज विछा, धाम

अवल्ला इक्क सुहाईआ। निहचल अटला आप जणा, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता जुग जुग वेस वटाईआ। शब्द सिँघासण हरि निरँकारा, थिर घर आप रखाया। आप आपणा पहरेदारा, आप आपणी सेव कमाया। आप आपणा चोबदारा, आप आपणा रिहा उठाया। आप आपणा मीत मुरारा, आप आपणा हुक्म चलाया। आप आपणी लाए कारा, आप आपणा मोह वधाया। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा अंग कटाया। आप आपणा कर पसारा, ब्रह्म ब्रह्म रूप पारब्रह्म धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क रखाया। सच द्वार आदि अन्त, हरि हरि आप रखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग धार चलांयदा। शब्द जणाई साचे सन्त, आप आपणा बचन अलांयदा। मेल मिलावा नारी कन्त, घर साची सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती करता नाउँ रखांयदा। जोती करता हरि करतारा, जोती जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाईआ। खेले खेल अपर अपारा, आप आपणा भेव छुपाईआ। पंज पंजी कर प्यारा, त्रैगुण तन्द बंधाईआ। अट्ठां तत्तां वसे बाहरा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोई रखाईआ। पवण पवणी पवण स्वास, साची रास चलाईआ। गगन मण्डल पृथ्मी आकाश, काया खण्ड ब्रह्मण्ड इंड पिण्ड वखाईआ। जेरज अंड शाहो शाबाश, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। वंडे वंड सर्ब गुणतास, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। रवि ससि मण्डल मण्डप होए दास, दिवस रैण रिहा भवाईआ। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा रक्खी आस, नेत्र नैण रिहा उठाईआ। साध सन्त आत्म मंगण साची रास, गोपी काहन मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द दुआरा हरि निरँकारा, एका घर सुहाईआ। हरि द्वार हरि अवल्ला, हरि हरि आप उपाया। आपे वस्सया इक्क इकल्ला, ना कोई दूसर संग रखाया। पावे सार जलां थलां, डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। भाग लगाए काया खला, जोत निरँजण कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। सरगुण मेला विच संसार, हरि साचे रचन रचाईआ। पंज तत्त कर प्यार, पंझी प्रकृति वेख वखाईआ। नाता जोड़ अपर अपार, रक्त बूंद मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म कर आकार, एका गढ़ वखाईआ। नौ दर खोल्ह कवाड़, साची बणत बणाईआ। उप्पर चढ़ पावे सार, घर घर विच रिहा टिकाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, दिवस रैण डगमगाईआ। शब्द अनादी साची धार, धुन आत्मक रिहा वजाईआ। बोध अगाधी खेल अपार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा आपे वेख, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणा लिखे लेख, लेखा

आपणे हथ्थ रखांयदा। आप आपणा धारे भेख, भेखाधारी नाउँ उपांयदा। आप आपणे उपाए मुच्छ दाढ़ी केस, आप आपणा मूंड मुंडांयदा। आपे दाता दस दस्मेस, नानक गोबिन्द रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। जुग जुग धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सार, कलिजुग मोख वड्याईआ। रैण अन्धेरी अन्ध अँध्यार, धूंआँधार सृष्ट सबाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रोवे ज़ारो ज़ार, लक्ख चुरासी रही कुरलाईआ। साधां सन्तां आई हार, सच घर ना कोई सुहाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, जगत विद्या मात पढ़ाईआ। गुर का शब्द ना सके विचार, गुर मूर्त नज़र ना आईआ। फिर फिर थक्के हरिद्वार, हरी हरि दिस ना आईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद कर रहे पुकार, पूरी आस ना कोई रखाईआ। गीता ज्ञान रहे उचार, काहना कृष्ना निहकलंक हंढाईआ। सीता राम जै जै जैकार, सीता सुरत ना कोई प्रनाईआ। अल्ला हू लाया नाअर, ऐनलहक्क ना कोई मिलाईआ। मिल्या मेल ना सांझे यार, मुकामे हक्क ना कोई पुचाईआ। ज्ञानी ध्यानी ज्ञान ध्यान रहे उचार, नेत्र ज्ञान ना कोई खुल्हाईआ। नानक नानक रहे उचार, नानक निरगुण दिस ना आईआ। पंचम पंचम रहे सुधार, पंचम मिल्या ना साचा माहीआ। पंचम कक्के कर श्रृंगार, तन गात्रा रहे लटकाईआ। मरया दुष्ट ना काम क्रोध लोभ मोह हँकार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। सीस बन्न्ह काले दस्तार, मन काला दुरमति मैल ना कोई धवाईआ। वाहिगुरू फतिह बोल जैकार, शब्द डंक ना कोई वजाईआ। दर सुहाया ना बंक द्वार, निरगुण जोत ना होए रुशनाईआ। जगत नैण डुब्बा मँझधार, कलिजुग बेड़ा रिहा डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग आपणा वेस वटाईआ। जुग जुग वेस हरि भगवान, आपणा आप वटांयदा। धर्मी धर्म झुलाए इक्क निशान, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सर्ब कुरलाण, नेत्र नैण वेख वखांयदा। गण गणधर्ब रसना गाण, यस किन्नर मृदंग वजांयदा। भूत प्रेत पचास मिल मिल मंगल इक्क वखाण, धर्म राए दर सुहांयदा। चित्रगुप्त नौजवान, लेखा लिख्या लेख वखांयदा। पारबहम प्रभ कर परवान, शब्दी शब्द जणांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, नानक गोबिन्द लेख लिखांयदा। मिटे ना लेखा दो जहान, ना कोई मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा कर्म कमांयदा। कलिजुग तेरी साची रास, तेरी झोली पाईआ। कूड़ कुड़यारा तन मास, तेरी वंड वंडाईआ। जगत लुभाया हास बिलास, बिमल रूप ना कोई समाईआ। पंज तत्त विकारा होया वास, पंचम मोह रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती नूर कर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि उजाला, हरि हरि रूप वटाया। प्रगट होए दीन दयाला, दीनां अनाथां होए सुहाया। वखाए

धर्म सच्ची धर्मसाला, घर मन्दिर अन्दर फेरा पाया। फल लगाए काया डाला, हरिसंगत वेख वखाया। हरिसंगत तेरा खेल निराला, दिस किसे ना आया। इक्क सद इक्क इक्क कढुया जगत दवाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाया। इक्क सद इक्क अग्गे धर, हरिसंगत चरन निमस्कारया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, चौथे जुग चौथी वंड चारे झोली पा रिहा। पहले मेटे भेख पखण्ड, दर दरबारे नीहां हेठ दबा रिहा। नौ द्वार जगत जीव दिसण रंड, दस्म दुआर ना कोई मिला रिहा। होए ख्वारी विच वरभण्ड, हरि भंडी डाहडी पा रिहा। नार दुहागण दिसे रंड, साचा कन्त ना कोई मना रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ ग्यारां तेरी धार, दसवें घरों करे बाहर, एका एक एका करा रिहा। दूजी वंड हरि निरँकार, आपणी आप वंडाईआ। हरिसंगत तेरा सति प्यार, सृष्ट सबाई दए दिखाईआ। सत्त रंग निशाना कर त्यार, सत्तां दीपां दए चढ़ाईआ। राज राजाना शाह सुल्तानां करया ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। प्रगट होया वाली दो जहान सांझा यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द डंका वजाए अपर अपार, लोकमात वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा हिस्सा आपे रिहा पाईआ। तीजी वंड कर करतार, करते कर्म कमाया। पंचम मुख सीस कर श्रृंगार, साचा ताज सुहाया। पंच निशाना बन्ने धार, पंचम रूप वटाया। हथ्थ सोटा वड बलकार, शब्द डण्डा रिहा वखाया। चरन जोड़ा चरन कँवल पसार, चरन चरनोदक इक्क उपाया। आया चल दिल्ली दरबार, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाया। वीह सद तेरां तेरी धार, राष्ट्रपति एह समझाया। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, गोबिन्द वेस वटाया। सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी राज राजानां शाह सुल्तानां अन्तिम बाज़ी जाण हार, पाशा सार ना कोई खेल खिलाया। ना कोई दिसे वड सिक्दार, सीस ताज ना कोई टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिख्त लेख हथ्थ फड़ाया। तीजी वंड हरि कर, आपणा कर्म कमांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां जगत माया जाणा हर, दर दर आप फिरांयदा। सुञे महल्ल आवे डर, दीवा बत्ती ना कोई जगांयदा। हरिसंगत तेरा भण्डारा भर, पंचम पंचम सेवा लांयदा। चार वरनां वखाए एका घर, ऊँच नीच कोई रहिण ना पांयदा। इक्क नुहाए साचे सर, कागों हँस बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई रिहा लिखाई, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। चौथी वंड कर त्यार, हरि जोत सेवा लाईआ। हरिसंगत अग्गे कर निमस्कार, हरि बैठा जोधा सूरबीर, वड वडा भेव कोई ना पाईआ। मेटी जाए धुर दी लिखी तकदीर, अकसीर ना कोई जणाईआ। चिट्टे उप्पर काली खिच्ची जाए

लकीर, धुर दा शब्द धुर दी दए गवाहीआ। आपे बणया शाह फ़कीर, शाह कंगाला आप अख्वाईआ। जन भगतां कट्टण आया त्रैगुण माया वज्झा जंजीर, पंज तत्त मोह चुकाईआ। अठसठ तीर्थ अमृत रहिण ना देवे किसे नीर, चरन छुहाए दया कमाए आप आपणे विच टिकाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सभ दे सिर ते आए भीड़, ना सके कोई बचाईआ। लक्ख चुरासी अन्दरे अन्दर उठे पीड़, नाम दारू ना कोई मुख चुआईआ। ना कोई सगला संग रखाए पीर दस्तगीर, शिव शंकर ब्रह्मा विष्न देवत सुर ना कोई भार उठाईआ। धुर दीबाण लाया एका तीर, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वीह सौ पन्दरां तेरी रुत्त सुहाईआ। वीह सौ पन्दरां चवी अस्सू चवीआं अवतार, निरगुण रूप वटाया। निवाए सीस दिल्ली द्वार, दर दरबारा सच सिँघासण इक्क विछाया। चौथी भेटा अग्गे चाढ़, हरिसंगत सीस ताज इक्क टिकाया। चौथे घर चौथे पद चौथे युग देवे वाड़, ना बाहर कोई कढाया। सवा पंज ख़ाली करे कारू गंज, एका इक्की एका पाया। नूर नुरानी शाह सुल्तानी ना सवेर ना सञ्झ, रवि ससि सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि सेवा रिहा कमाया। सवा पंज कर अरदास, पल्ले गंढु बंधाईआ। पट पटने कर निवास, सिर सिर वेख वखाईआ। पुरी अनन्द करन आया तेरी पूरी आस, मनमुख जीवां उत्ते पर्दा पाईआ। हरि वस्त सच हरिसंगत तेरी रक्खी आपणे पास, अन्त तेरी झोली पाईआ। गुरसिख गुरमुख ना होए कदे उदास, जिस मिल्या पूरा सतिगुर वड दाता बेपरवाहीआ। पहली कत्तक साचे घर करे वास, निवासा आप अख्वाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, तख्त अकाल हरि मन्दिर दए जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द गोबिन्द वेस वटाईआ।

* २४ अस्सू २०१५ बिक्रमी मकान नं० ६७८६ गली नं० ७ पहाड़ गंज नवीं दिल्ली *

चौथे जुग चौथी धार, चार वरन चलाईआ। लोकमात पैंडा रिहा मुक्क, पान्धी पन्ध मुकाईआ। मनमुख बूटा रिहा सुक्क, गुरमुख हरा कराईआ। आदि निरँजण बैठा प्रमुख, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। लेखा चुकावे गुजरी कुक्ख, तेग बहादर हरि वड्याईआ। आपणी गोदी रिहा चुक्क, आपे रिहा खिडाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, अमृत सीर प्याईआ। ना मानस ना दिसे मनुक्ख, जोत अगम्म टिकाईआ। हरिसंगत हरि रिहा झुक, आप आपणा सीस झुकाईआ। उज्जल होया मात मुक्ख, मस्तक मिटी काली शाहीआ। तृष्ना मिटे जगत दुःख, चिन्ता रोग गंवाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुख, दस

मास कुण्ड ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आया संगत सच्ची सरनाईआ। भगत सरन वड सरनाई, हरि हरि आप तकाईआ। लोक लज्जया जगत तजाई, पंज तत्त करे कुड़माईआ। मात पिता घर वज्जे वधाई, साचा मंगल गाईआ। वेखे खेल साचा माही, हरि दाता धुरदरगाहीआ। देवणहार ठंडीआं छाईं, बिन छप्पर छन्न समाईआ। काग हँस रिहा बणाई, कागों काग समझाईआ। दरस तरस रिहा कमाई, सांतक सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लहिणा देणा हरि हरि भार, हरिसंगत सीस उठांयदा। जुग जुग कर्ज़ा रिहा उतार, आप आपणी वंड वंडांयदा। बैठे तख्त सच्चे दरबार, सच सलाही सच कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा वेख वखांयदा। वेखे खेल पुरख करतारा, वड वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण मेल संसारा, गुर सतिगुर रूप समाईआ। सन्त भगत कर दुलारा, एका दर वखाईआ। मस्तक सेहरा सीस दस्तारा, साचा सगन मनाईआ। वेखे घाट जगत किनारा, शब्द घोड़ चढ़ाईआ। मनाए सगन अगम्म अपारा, जलधारा वार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दए सलाहीआ। सच सलाह सिफ्त गुरदेव, साचा जोग कमाईआ। आदि अनादि अलक्ख अभेव, देवी देव अख्वाईआ। करता अबिनाश सदा निहकेव, निहचल धाम सुहाईआ। रसना गाया गोबिन्द जिह्व, जिह्वा नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब पूर्ब वेख वखाईआ। पूर्ब कहिणा शब्द गहिणा, तन तत्त तत्त श्रृंगारया। नेत्र लोचण दर्शन नैणां, आपा उत्तों वारया। मंगी मंग शब्द गहिणा, लिख्या लेख ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखा वेखी जगत भुला रिहा। पूर्ब लहिणा अग्गे रक्ख, आपणा कर्म कमांयदा। गोबिन्द दाता हो प्रतक्ख, गुरमुख मेल मिलांयदा। साजण साचे लए रक्ख, साचा संग निभांयदा। सृष्ट सबाई नालों करे वक्ख, नेत्र नाम ज्ञान दृढ़ांयदा। बिन कटार लड़ाए सथ्थ, लक्ख इक्क इक्क नाल लड़ांयदा। चारों कुन्ट दिसण भक्ख, गोबिन्द साजण रुत्त बसन्ती फुल्ल खिड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। पिछला लहिणा साची रास, सच दरगहि आप टिकाईआ। गुर गोबिन्द वसे पास, घर बैठा बेपरवाहीआ। सिक्खां गया दे धरवास, वेला अन्त जणाईआ। पूरी करे अन्तिम आस, जिस जन बणत बणाईआ। होए सहाई पृथ्मी आकाश, गगन पतालां चरनां हेठ दबाईआ। रवि ससि वेख प्रकाश, नैणां नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण खोज खुजाईआ। सज्जण सच्चा शाहो भूप, शब्द रूप सिक्दारा। वेख विखाए चारों कूट, जोधा सूरबीर बलकारा। नित विरोले जूठ झूठ, फोले गढ़ हँकारा। गुरमुखां गुरसिक्खां उत्ते आपे आए जाए तुठ, देवे नाम प्यारा।

सिक्खी तिक्खी रक्खे एका मुट्ठ, एका इक्की एकँकारा। रिखी मुनी बैठे रुठ, साध सन्तन ना पायण सारा। पंडत पांधे रहे लुट्ट, जीव जन्त हाहाकारा। ग्रन्थी पन्थी पीता मदिरा घुट्ट, भुल्लया नानक दर दरबारा। मन्दिर मस्जिद पई लुट्ट, दिवस रैण पुकारा। जगत सरोवर दिसे ना अमृत इक्क घुट्ट, तट तीर्थ भरे किनारा। नहा नहा थक्के कोटी कोट, ना कोई उतरे पारा। गुर गोबिन्द इक्क लगाए साची चोट, सोहँ वज्जे रणजीत नगारा। लक्ख चुरासी आलृणिउँ डिगे बोट, ना कोई देवे मात सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम वर, अतुट अतोट भण्डारा। नाम अतोट सदा अतुट्ट, हरि हरि आप रखाया। गुरमुख लाहा लैण लुट्ट, मनमुखां हथ्थ ना आया। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, पंचम मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की एका सिक्खी, एका धार चलाया। एका सिक्खी एका वंडा, एका रिहा कराईआ। एका शब्द एका ब्रह्मण्डा, एका खण्डा रिहा दिसाईआ। एका जेरज एका अंडा, एका सेत्ज उत्भुज नाउँ रखाईआ। एका भेख एक पखण्डा, एक कल वरताईआ। एका नर इक्क सुहागण एका रंडा, एका ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेले खेलणहारा आप अख्वाईआ। एका इक्की एका रास, एका नगर अपारया। एका सिक्खी कर प्रकाश, नौ खण्ड करे उज्यारया। एका मण्डल एका रास, सीस निवाए रवि ससि सतारया। देवणहार धुर धरवास, दीवा बाती इक्क जगा रिहा। पूरन करनहारा आस, लेखा आपणा आप मुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम उपा रिहा। एका इक्की मंग अपार, गोबिन्द आप मंगाईआ। पंचम मीता ख़बरदार, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। सोलां कर दर शृंगार, सोलां इच्छया वेख वखाईआ। पाए भिच्छया नर निरँकार, सोलां पंचम मेल मिलाईआ। दोहां मेला विच संसार, एका इक्की बणाईआ। इक्की सिक्खी वड सिक्दार, निहकलंक अख्वाईआ। बीस बीसा ढहि ढहि पए द्वार, आप आपणा सीस झुकाईआ। गोबिन्द नाम सीस दस्तार, शब्दी नाम बंधाईआ। कल्गी तोड़ा अपर अपार, जगत जगदीश सुहाईआ। जोती जोड़ा शब्दी धार, हरि नामा डंक वजाईआ। जोत निरँजण सेवादार, आदि शक्त फेरा पाईआ। काल महांकाल बण भिखार, दर बैठण सीस झुकाईआ। नाम भगौती लए हथ्थ हथिआर, भगवन वेस विटाईआ। होए सहाई आदि गिरधार, गिरवर रूप वटाईआ। फतिह डंक इक्क जैकार, राउ रंकां रिहा जणाईआ। ख़ालस ख़ालसा कर त्यार, एका इक्की पाईआ। जगत मलाह गुर अवतार, नानक बेड़ा रिहा चलाईआ। चप्पू लाए अपर अपार, गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। सरसा तेरी टेडी धार, कलिजुग जीवां दिस ना आईआ। चरन सुहाया शाह अस्वार, नीले वाला बेपरवाहीआ। मंगे मंग अग्गे दातार, दर अग्गे आसण लाईआ। पुरख

अकाला भर भण्डार, भरया रहे तोट ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ रिहा विचार, आप आपणे दर वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणे घर, घर साचा इक्क रखाईआ। साचे घर एका इक्की, गोबिन्द मंग मंगांयदा। आपणे नेत्र पारब्रह्म प्रभ आपे पेखी, तेरा रूप सदांयदा। रक्खी लाज दाढ़ी केसी, तेरा तेरे अग्गे टिकांयदा। सेव कमाई जोत दस दस्मेशी, नानक निरगुण निरगुण विच समांयदा। सच अदालत शाहो भूप नर नरेशी, साचा अदल कमांयदा। बीस सद तेरे अन्तिम कलिजुग निकले एका पेशी, एका लेख लिखांयदा। गोद रखाए गणपति गणेशी, नारद शिव शंकर आपणे नाल उपांयदा। ब्रह्मा लिखणहारा लेखी, हथ्थ आपणी कलम उठांयदा। दूर दुराडा आपे बैठा रिहा वेखी, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की धार तिक्खी, वालों निकी आप जणांयदा। वालों निक्की सिक्खी धार, दिस किसे ना आईआ। आत्म अन्तर गुर प्यार, गुरचरन चरन चित लाईआ। साचा कक्का रूप करतार, करते विच समाईआ। पंचम माया मोह प्यार, पंचम मोह दए तुड़ाईआ। पंचम मीता कर शृंगार, सोलां कलीआं तन बंधाईआ। पुरख अबिनाशी शाहो अस्वार, गोबिन्द घोड़ चढ़ाईआ। दोहां मेला अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। गुर चेला वस्सया एका घर बाहर, एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाईआ। वंडे वंड हरि ब्रह्मण्ड, गोबिन्द सेवा लाईआ। मेट मिटाए भेख भखण्ड, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। मनमुखता देवण आया दंड, गुरमुखता करे पढ़ाईआ। वढ्ढणहारा सभ दी कंड, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंग चलूल, एका भट्ठी रिहा तपाईआ। आप तपाया आपणा भट्ठ, आपणी अग्नी डांयदा। तट उपाए अठसठ, सीतल धार ना कोई रखांयदा। वेख वखाए नठ्ठ नठ्ठ, हरिसंगत मूल चुकांयदा। एका इक्की तेरा हठ, धीरज धर्म रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिक्खी नींह रखांयदा। साची सिक्खी महल्ल उसार, आपणी बणत बणाईआ। काया मन्दिर कर त्यार, शब्द सिंघासण रिहा विछाईआ। नौ दुआरे लाहे किवाड़, आपे वेख वखाईआ। मेल मिलावा सतारां हाढ़, साची रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मेला बेपरवाहीआ। सज्जण मेला एका घर, एका इक्की पांयदा। इक्क सुहाए साचा दर, एका सिक्खी वेख वखांयदा। एका पुरख एका नर, एका नारी रूप दरसांयदा। एका वरनी ल्ए वर, वर दाता आप हो जांयदा। एका मरनी सृष्ट सबाई जाए मर, मरनगत इक्क जणांयदा। एका विद्या अक्खर चौदां लोक जायण पढ़, एका नाम जपांयदा। एका रूप एका सीस इक्क जगदीश एका धड़, रूप अनूप दरसांयदा। एका खण्डा एका शब्द एका हथ्थ रिहा फड़, चारों कुन्ट चमकांयदा। एका किला एका गढ़,

दर आपणे आप तुड़ांयदा। एका रामा एका सीता एका रावण रिहा लड़, एका लंका गढ़ तुड़ांयदा। एका हनवन्ता लए फड़, एका सेव लगांयदा। एका चोटी उप्पर गए चढ़, इक्क पताली फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिक्खी तेरी साची सिख्या जगत विचार, मुनी रिखी भेव ना पांयदा। मुन रिख जप तप सुच्च संजम नेम बणाया। आप उपाए पुन्न पाप, पाप पुन्न आप जणाया। आप रखाए तीनों ताप, त्रैगुण मेल मिलाया। एका जपाए आपणा जाप, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला धुरदरगाह, साची सखी जगत मलाह, एका इक्की पाया। एका इक्की एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सृष्ट सबाई बन्ने धार, साची जुगत चलाईआ। वरन बरन ना कोई विचार, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। राउ रंक ना कोई सिक्दार, शाहो भूप ना कोई अख्वाईआ। माया लोभ ना कोई हँकार, काम क्रोध ना कोई सताईआ। नेत्र नैण ना जगत शृंगार, नाम कज्जल एका पाईआ। शस्त्र बस्त्र अपर अपार, शब्द संजोआ इक्क सजाईआ। साचा खण्डा तेज कटार, हरि भगौती आप उठाईआ। फतहि डंका अपर अपार, वाहिगुरू आप लगाईआ। वाह वाह गुरू गुरु गुर बलिहार, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। दो जहानां पावे सार, तिन्नां लोकां वेख वखाईआ। घर मन्दिर अन्दर उच्च मुनार, बैठा जोत जगाईआ। हवनी पवनी कर प्यार, स्वास स्वास नाम जपाईआ। एका इक्की जगत विहार, साची सिक्खी नाउँ धराईआ। नौ खण्ड हो उज्यार, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। सोलां विद्या भरपूर करतार, चौदां लोक करे जणाईआ। तिन्नां लोकां इक्क प्यार, दो जहानां रथ रथवाहीआ। नौ सत्त सोलां सच विहार, घर साचे रिहा कराईआ। चुक्कया डोला गुरमुखां आप करतार, आपणे कंध उठाईआ। तीर्थ तट वेखे जगत किनार, औखे घाट चढ़ाईआ। चरन छुहाए सच द्वार, धाम भूमका इक्क सुहाईआ। आपणा करे आप विहार, दूसर भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की साची सिक्खी देवे नाम सच्ची वड्याईआ। साची सिक्खी साचा दरस, हरि हरि आप रखाया। आप आपणा कीता वस, आप आपणा मोह चुकाया। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपणा पन्थ रचांयदा। आप कसाए आपणा कमरकस, तीर कमान आपणा हथ्थ उठाया। दिवस रैण सेव लगाए रवि ससि, चारों कुन्ट फिरांयदा। वेखणहारा बीस बीसा, आलस निन्दरा विच ना आया। गुरमुखां गौंदा रिहा सदा जस, साचा वक्त सुहाया। मनमुखां बेड़ा पैरां हेठ रिहा झस्स, अन्त रहिण ना पाया। त्रैगुण तपाए अग्नी मठ, जोती लम्बू एका लाया। लहिणा देणा चुकाए अठसठ, तीर्थ तट ना कोई वखाया। गंगा गुदावरी होवे भट्ठ, शिव शंकर मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिक्खी तेरी धार, आप चलाए विच संसार, साचा मार्ग इक्क वखाया।

साचा दर हरि दुआरा, हरि हरि आप जणाईआ। प्रगट होया हरि निरँकारा, सतिगुर रूप वटाईआ। दहि दिशा पावे सारा, अनभव रूप समाईआ। दो जहानां दए हुलारा, त्रै त्रै वेख वखाईआ। चौदां चौदां कर पसारा, दस पंज बंधाईआ। दस छे कर शृंगारा, आपणा वेस वटाईआ। रंक राजानां शाह सुल्तानां इक्क जैकारा, एका रिहा सुणाईआ। एका सज्जण मीत मुरारा, एका शस्त्र नाम वड्याईआ। एका वेखे मार उडारा, एका मृदंग वजाईआ। एका वज्जे ढोल नगारा, एका रिहा सुणाईआ। एका इक्की सिक्खी तेरे फिरे दुआरा, घर घर फेरा पाईआ। बन्द ना करे कोई चार दुआरा, किला कोट ना कोई रखाईआ। पावे सार अन्दर बाहरा गुप्त ज़ाहरा हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की सिक्खी एका धार, प्रगट कर विच संसार, शब्द गुर हो त्यार, आप आपणा दर सुहाईआ। शब्द गुर वड भरपूरा, एका एक अख्वाया। आपणी अल्लाए अनादी तूरा, आपणा राग अल्लाया। आपणा नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, सच सुच्च समाया। आपणा रंग आपे चाढ़े गूढ़ा, आपणा तन रमाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, राम नाम जाम इक्क प्याया। पहलों लगाए मस्तक चरन धूढ़ा, फेर पटने फेरा पाया। जगत नाता तुट्टे कूड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी इक्की कर, पंचम पंचम वेख विखाया। पंचम पंचम सवा पंज, पंचम धार चलाईआ। गुर का रूप नाम ख़ज़ाना करे कारू गंज, राज राजाना दए सजाईआ। सृष्ट सबाई नीर वहाए अंञ, गुरमुख ख़ुशी मनाईआ। मनमुखता होई नार बंझ, सच सपूत ना कोई जाईआ। गुरमुखता गुरसिक्खां नाल गई बज्झ, ना सके कोई तुड़ाईआ। धुर दरबारे बैठी सज, गुर गोबिन्द दए गवाहीआ। लौण ना देवे किसे अज पज, मुख घुंगट देवे लाहीआ। इक्की सिक्खी तेरा पर्दा दए कज्ज, पंच रूप दरसाईआ। गुर का शब्द रणजीत नगारा रिहा वज्ज, ताल आपणा आप वजाईआ। ना घड़े ना जाए भज्ज, आर पार कोई चोर यार ना कोई चुराईआ। आपणे अन्दर आपे रक्खया लज्ज, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पुरी अनन्द गया तज, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। आप रखाई आपणी लज्ज, लाजवन्त आप हो जाईआ। अमृत प्याए रज रज, तृष्ना भुक्ख रहे ना काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की इक्क प्यार, एका सिक्खी कर त्यार, एका लेखा रिहा लिखाईआ। इक्क प्यार एका नाता, एका रंग रंगाया। एका पुरख पुरख बिधाता, मात पित इक्क अख्वाया। एका वरन एका बरन एका ज़ाता, जात अजाति मेट मिटाया। एका दाती एका दाता, देवणहार इक्क अख्वाया। एका शब्द एका गाथा, एका मन्त्र नाम सुणाया। एका सज्जण एका साथा, एका संग निभाया। एका होए दीनां नाथा, दीनां ग़रीब निमाणे गले लगाया। एका जपाए पूजा पाठा, एका मार्ग एका मार्ग लाया। एका जप एका तप एका हठ, गुरचरन ध्यान

६८४
०७

रखाया। इक्क सरोवर मारे ठाठ, चरन धूढ़ी आप नुहाया। आप फिराए मणका इक्क सौ अठ, जिस जन रसना सोहँ गाया। आपे जोत जगाए ज्वाला लट लट, आदि शक्त वेख वखाया। गुर गोबिन्द आपणा पूरा करन आया घाटा, लेखा आपणा आप चुकाया। अमृत छकाया एका बाटा, पंज बाणी मन्त्र पढ़ाया। नाल रलाया मिट्ठा पंचम कीता कट्ठा, पंचम जोड़ जुड़ाया। मनमुखता तपाया आपणा भट्ठा, अग्नी तत्त तपाया। आपणा घर वेख्या ढठ्ठा, धुरदरगाही दर दुआरा आया। गुरसिख फिरे अठसठ नठ्ठा, गुर का रूप दिस ना आया। माया ममता ताप चढ़या मट्ठा, दिवस रैण रिहा सताया। ग्रन्थी पन्थी करन चट्ठा, सच अरदास ना कोई कराया। नाम वेचिआ हट्टो हट्टा, कीमत करते ना कोई चुकाया। लाल रोल्लया कौडीआं घट्टा, कूड़ी क्रिया बंध बंधाया। सांग वरताया बाज़ीगर नटा, नट नटूआ वेख वखाया। तृष्ना वधाई काया मट्टा, लोभ मोह वधाया। नानक शब्द ना बणया साचा मीता, सच शृंगार ना कोए कराया। अमृत जाम ना खोल्ल्या गटा, मदिरा पान वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, गुरसिक्खी आप तराया। साची सिक्खी कर उजागर, आपणा कर्म कमांयदा। निर्मल कर्म करे साचा शाह सौदागर, नाम वणजारा इक्क विखांयदा। रत्ती नाम सच्ची रत्नागर, रत रत्न आप बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की एका गुर एका सिक्खी लिख्या धुर, धुर लेखा आप चुकांयदा। लिख्या धुर आप चुकावणा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। गुरमुख रूप सच दरसावना, दर दर अलक्ख जगाईआ। लिख्या लेख पूर करावना, गोबिन्द वड वड्याईआ। हरि हरि सेवा आप कमावणा, सेवक सेव आप अख्वाईआ। झूठा दाग जगत मिटावणा, सच सुच्च रुशनाईआ। नाम ठूठा हथ्थ फड़ावणा, चार वरन भुक्ख मिटाईआ। जुग जुग रुठा फेर मनावणा, पूरे हथ्थ वड्याईआ। शब्द भथ्था तन सजावणा, नाम तीर कमान उठाईआ। साचे नेत्र निशान इक्क तकावणा, दोए नेत्र जगत बन्द कराईआ। चण्ड प्रचण्ड इक्क चमकावणा, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। आप आपणी वंड वंडावणा, वंडे वंड हर घट थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा वेख वखाईआ।

* २५ अस्सू २०१५ बिक्रमी बिशन सिँघ दे घर गुड़गाउँ *

तख्त ताज जगत निशान, थिर रहिण ना पाईआ। जुग जुग खेले खेल महान, समरथ पुरख वड्याईआ। शाहो भूप हरि मेहरवान, सच सिक्दार अख्वाईआ। सति सरूप निगहबान, सांतक सति समाईआ। जोती नूर नूर महान, निरगुण धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्त इक्क अख्वाईआ। जगत निशाना जगत ताज,

जगत दिस ना आईआ। जगत कुड़यारा रिहा भाज, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जगत जुगीशर रक्खे लाज, जागरत जोत जगाईआ। जगत जुगत रचे काज, जोग जुगत इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी साजण साज, साची बणत बणाईआ। अगम्म अगम्मड़ा मारे अवाज, अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दए गवाहीआ। सच सुल्ताना शाहो भूप, हरि हरि आप अख्वाया। वेख वखाए चारों कुन्ट, दहि दिशा लोआं पुरीआं फेरा पाया। मनमुखां हथ्थ ख़ाली ठूठा, मंगण भिक्ख ना पाया। माया ममता जीव जहानी ढठ्ठा, हउमे हँगता गढ़ सुहाया। दिवस रैण भुक्खा नंगता, घर घर अलक्ख रिहा जगाया। लोभ हँकार झोली रंगदा, आसा तृष्ना नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार बंधाया। राज ताज जगत आधार, हरि हरि वड्याईआ। जीव जन्त साजण साज, साची बणत बणाईआ। आपे रक्खणहारा लाज, आपे दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल वेख वखाए सृष्ट सुबाईआ। सृष्ट सबाई वेखणहारा, एका एकँकारया। जोती सरूपी भेव न्यारा, भेत कोई ना पा रिहा। शब्दी डंक अपर अपारा, दिवस रैण वजा रिहा। चारों कुन्ट हाहाकारा, धीरज धीर ना कोई धरा रिहा। राज राजान शाह सुल्तान रोवण ज़ारो ज़ारा, ज़र दर ना कोई सुहा रिहा। धर्म कर्म करे पुकारा, हरि किरती मुख छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुगा जुगन्तर वेख विखा रिहा। जुगा जुगन्तर एका मीत, हरि हरि आप अख्वाईआ । आदि जुगादी साची रीत, हरि साचा आप चलाईआ। करे कराए पतित पुनीत, जिस जन दया कमाईआ। मानस देही जाए जीत, जीउड़ा अग्न तत्त ना जलाईआ। एका गाए सुहागी गीत, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बूझ बझाईआ। किरपा कर हरि निरँकार, हरिजन आप जगांयदा। आत्म अन्तर कर प्यार, एका बूझ बुझांयदा। जगत तृष्ना तोड़ हँकार, माया मोह चुकांयदा। भरमी भरम ना पावे सार, भरमी भरम भुलांयदा। गुरमुख सज्जण ढहि पए द्वार, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस वटांयदा। वेस अवल्ला हरि करतारा, आपणा आप कराईआ। अछल अछल्ल खेल न्यार, खेले सृष्ट सबाईआ। खेवट खेट वेख पार किनार, डूंघी भवरी नइया रिहा चलाईआ। सागर डूँघा वड संसार, पार किनारा दिस ना आईआ। सृष्ट सबाई वसे मँझधार, सागर सिन्ध वहाईआ। गुरमुखां देवे चरन प्यार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। शब्दी धुन अनाहद धार, अनहद रूप समाईआ। त्रै लोकां दरसी पावे सार, तिन्नां लोकां वेख वखाईआ। चौदां हट्टां खोल्ह किवाड़, गुरमुखां वंड वंडाईआ। लोआं पुरीआं पार किनार, साचे धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

६८७ ०७

जगत नाता मोह चुकाईआ। जगत नाता जाए तुट्ट, ममता मोह चुकाईआ। आसा तृष्ना जाए छुट्ट, सगला संग ना कोई वखाईआ। हउमे हँगता जड़ देवे पुट्ट, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। नेत्र लोचण नैण दरस लाहा लैण खट्ट, मानस देह वड वड्याईआ। दूई द्वैती कढ्ढण फट्ट, एका धर्म रखाईआ। अमृत आत्म पीणा गट गट, दुरमति मैल गंवाईआ। तन नगारे लाए चोट, शब्दी शब्द उपाईआ। पंच विकारा कढ्ढे खोट, निर्मल धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां एका बूझ बुझाईआ। गुरमुख सज्जण सच्चा शाह, सतिगुर आप समाया। जगत विचोला बेपरवाह, गुर शब्दी नाउँ धराया। देवणहारा इक्क सलाह, दूजा दर ना कोई वखाया। तीजे नेत्र पावे राह, चौथे पद टिकाया। पंचम मेला सहिज सुभा, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख वखाया। हरि सज्जण रंग रुत्तया, राम रत्न अपार। आपे दे समझावे मत्तया, पूरन किरपा धार। चरन कँवल बंधाए नत्या, बख्शे इक्क प्यार। पंचम विकारा करे हत्या, पंचम देवे मार। आप जगाए चेतन्न सत्या, चेतन्न रूप करतार। नेतन नेतन हो हो वसया, दूर दुराडा पन्ध निवार। हरिसंगत दुआरे आवे नस्सया, आदि जगादी साची कार। तीर निराला एका कस्सया, शब्द सरूपी नाम कमान। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, सच सुच्च करे प्रधान। धुरदरगाही आए नस्सया, गुरमुख साचे लए पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त भगती राह एका दस्सया आपणा देवे नाम निशान। भगत मीता आदि निरँजण, आदि पुरख अबिनाशिआ। नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर विनास्सया। सखा सुहेला साचा सज्जण, हर घट अन्दर रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम दान, चरन कँवल सच्चा भरवास्सया। चरन कँवल साची ओट, हरिजन आप रखांयदा। माया ममता कढ्ढे खोट, दुरमति मैल गंवांयदा। इक्क वखाए साची पोट, नाम पास हथ्थ फड़ांयदा। जगत सागर तरसन कोटी कोट, हथ्थ किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी आलणिउँ डिग्गे बोट, फड़ कोई ना विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर मन्त्र देवे नाम निधान, जगत निधाना आप अख्वांयदा। जगत निधाना हरि भगवन्त, जगत नेत्र बन्द कराईआ। आपे जाणे आपणी बणत, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुखां धीरज देवे साचे सन्त, सद भाणे विच समाईआ। मनमुखां आपणी माया पाए बेअन्त, जीव जन्त सर्ब भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। रंग रंगाए हरि अवल्ला, रंगे रंग अमोल। खेले खेल इक्क इकल्ला, सृष्ट सबाई तोले तोल। वेख वखाए जला थला, उच्चे पर्बत वेख अडोल। करे खेल घड़ी घड़ी पल पला, शब्द जैकारा एका बोल। शब्द गुर करनहारा हल्ला, सृष्ट सबाई

वेखे कोल। हरिजन तेरा भारा पल्ला, हरि वस्सया सदा कोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा दर, सच दुआरा आपे खोल्ह। खुल्हा दर हरि दरवाज़ा, आपणी दया कमाईआ। मेल मिलाए ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। शब्दी देवे साचा दाजा, सुरती गंढु बंधाईआ। आत्म अन्तर रचया काजा, पारब्रह्म कुड़माईआ। आपणी मारे आपे वाजा, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुहञ्जणा एका धाम सुहाईआ। एका धाम धुर दरगाह, हरि हरि आप समांयदा। दूसर कोई दिसे ना, ना कोई संग रखांयदा। ना कोई पकड़े किसे बांह, ना कोई कोल बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, वरभण्डी वेख वखांयदा। वरभण्डी तेरा जगत तोल, हरि कंडे नाम तुलाया। शब्द जैकारा एका बोल, चण्ड प्रचण्ड आप अख्वाया। नाम मृदंगा वज्जे ढोल, हर घट आप रिहा सुणाया। तेरे खेले हौली हौल, आप आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रथ चलाया। रथ रथवाही हरि समरथ, आपणा रथ चलांयदा। महिमा अगणत अगणता कथना अकथ, कथ ना कोई कथांयदा। राज राजाना पाए नथ्थ, एका डोरी हथ्थ रखांयदा। खेले खेल अठसठ, अठसठ फेरी पांयदा। तख्त ताज करे भट्ठ, जगत सिँघासण मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म पुरख अबिनाशण, करता पुरख आप अख्वांयदा। करता पुरख सर्ब गुण ठाकर, निर्भय रूप समाया। जन भगत करे कर्म उजागर, एका नाम दृढ़ाया। वणज कराए सच सौदागर, नाम ख़ज़ाना इक्क लुटाया। भाग लगाए काया गागर, अमृत ताल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए जगाया। उठ जाग जगत निधान, हरि साचे वड वड्याईआ। खेले खेल दो जहान, भेव अभेद छुपाईआ। जोती नूर जोत महान, जोती जोत उपाईआ। जोधा सूरबीर बलवान, शब्दी नाउँ रखाईआ। सच सुच्च उठाए इक्क निशान, भरमी भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, नाम दात झोली पाईआ। नाम वर साचा पाया, दर पाया पुरख अगम्मा। धुरदरगाही मिल्या वर, पूरन होया कमा। आवण जावण चुक्कया डर, ना मरया ना जम्मा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखणहारा, गुरमुख तेरा तमा। तमा तृष्ना जगत चाटड़ी, दिवस रैण रही कुरलाईआ। जन भगतां करे हरि साचा राखड़ी, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। जगत तृष्ना जाए नाठड़ी, दर द्वार मुख शरमाईआ। एका जाणे पूजा पाठड़ी, पूर्ब दिशा वखाईआ। लाल विरोले काया गाठड़ी, आपणी गंढु वखाईआ। आपे होए चातरी, वरन बरन ना कोई रखाईआ। मिटे रैण अन्धेर रातड़ी, साचा चन्न करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

६८८ ०७

कर, एका दर सुहाईआ। एका दर साचा घर, साचा आप रखांयदा। हरिजन मंगे एका वर, दूजा दर ना कोई पांयदा। तीजे लोचण दरस कर, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। चौथे मन्दिर आपे वड़, आपणा धाम सुहांयदा। पंचम मीता पंचम प्यारा आपे कर, पंचम मोह मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वेखे साचा घर, काया कंचन गढ़ सुहांयदा। कंचन गढ़ साची लंका, रावण मन बणाईआ। दिवस रैण वजाए डंका, पंचां नाल रलाईआ। आवे जावे बार अनका, अनक बार सहाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्ता, दिवस रैण रिहा तड़फाईआ। नानक गोबिन्द बणया मंगता, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। रोग निवारे साची संगता, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे तेरा साचा घर, रामा राम रूप समाईआ। लंका गढ़ तुट्टे हँकार, हरिजन वज्जे वधाईआ। रामा सीता सुरती कर प्यार, आपणे दर दए बहाईआ। अकाल मूर्ति इक्क निरँकार, निरगुण रूप समाईआ। धरत धवल ना कोई पसार, जल बिम्ब ना कोई उपाईआ। खाणी बाणी ना कोई अधार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज ना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सुहाए साचा घर, घर साचा वेख वखाईआ। कंचन गढ़ साचा मन्दिर, हरि हरि आप सुहाया। राम रामा वस्सया अन्दर, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहया। आपे तोड़णहारा जन्दर, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा इक्क सुहाया। बंक द्वार सुरत ज्ञान, शब्दी बणत बणाईआ। शाह भबीख़ण कर पछाण, गुरमुख नाउँ रखाईआ। मेल मिलावा विच जहान, सत्तया सत्तया विच टिकाईआ। देवे मति धुर फ़रमाण, एका तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क उपाईआ। साचा घर उच्च मुनारा, हरि हरि आप सुहाया। राम रूप लए अवतारा, रघुवंसा नाउँ रखाया। समुन्दर सी खाई चार दुआरा, आपणा गढ़ सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे अग्गे खड़, दूर दुराडा नेड़े आया। रावण गढ़ अपर अपारा, कलिजुग आप बणाईआ। चारों कुन्ट समुंद खारा, चौथा जुग वड्डी वड्याईआ। अन्दर वस्सया काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, सैनापती मन अख्वाईआ। बुध रोवे खड़ दुआरा, नेत्र नैण नीर वहाईआ। मति मतवाली ढहि पए दुआरा, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। शाह भबीख़ण मीत मुरारा, गुरसिख गुरमुख आसा आप उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ आए दुआरा, एका शब्द अलाईआ। अलक्ख निरँजण लए अवतारा, लोकमात वेख वखाईआ। सम्मत सम्मती पावे सारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल रचाईआ। गुरसिख तेरा सच्चा पास, हरि साचे हथ्थ रखाया। सतिगुर पूरा मनमुखता ना होया कदे दास, ना अग्गे सीस झुकाया। निज

आत्म रक्खणहारा वास, सो क्यों मनो भुलाया। जोती नूर कर प्रकाश, लोकमात उठ धाया। आदि अन्त ना होए विनास, लोआं पुरीआं फेरा पाया। शब्द डोरी विच आकाश, गगन पताला वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे उलटी रास, आपणा मण्डल दए सुहाया। जगत किनारा औखा घाट, हरि हरि आप रखांयदा। गुरसिख विके ना किसे हाट, ना कोई मुल्ल पवांयदा। आपणा रस लए चाट, आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर अवतार हरि दातार, जोती धार शब्दी प्यार विच संसार, आपणी रचन रचांयदा। कवण लंका कवण गढ़, कवण डंक वजाईआ। कवण वेखे उप्पर खड़, कवण अन्दर डेरा लाईआ। कवण हनवन्ता अग्नी गया सड़, कवण तत्त जलाईआ। कवण रामा ल्या फड़, कवण सीस टिकाईआ। कवण विद्या गया पढ़, कवण वेद सुणाईआ। कवण शास्त्र रिहा लड़, कवण भेद खुल्हाईआ। कवण अस्त्र तोड़े गढ़, कवण चक्र चलाईआ। कवण उखेड़े लग्गी जड़, कवण मेट मिटाईआ। कवण लहिणा देणा चुकाए सीस धड़, कवण पंज तत्त मिटाईआ। कवण दूर दुराडा वेखे खड़, कवण सन्मुख करे लड़ाईआ। कवण हथ्थो हथ्थी लए फड़, कवण कमन्द उठाईआ। कवण अग्गे रिहा अड़, कवण मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा खेल, भेव कोई ना पाईआ। जगत खेल कर त्यार, जगत रिहा भुलाईआ। जगत वेखे जगत न्यार, जगत सागर जगत तराईआ। जगत डुब्बा विच मँझधार, जगत रिहा रुढ़ाईआ। जगत दए ना कोई सहार, जगत ना पार कराईआ। जगत रोवे ज़ारो ज़ार, बिन गुर जुगत किसे हथ्थ ना आईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, समरथ पुरख करे मात लड़ाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, हथ्थ फड़या धुरदरगाहीआ। तुटे गढ़ लंका हँकारा, चार दिवार रहिण ना पाईआ। गुरसिक्खां करे तन श्रृंगार, जो जन संग निभाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, इक्क इकल्ला वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण निरगुण आप अख्वाईआ। निरगुण कारे आपे ला, निरगुण कर्म कमाया। निरगुण वेखे थाउँ थाँ, निरगुण डेरा लाया। निरगुण पकड़णहारा बांह, निरगुण दिस किसे ना आया। निरगुण करनहारा ठंडी छाँ, निरगुण बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेलणहार आप करतार, जुग जुग आपणी खेल खिलाया।

* २६ अस्सू २०१५ बिक्रमी श्री विश्व नाथ गोपाल मन्दिर कानपुर शहर *

हरि अदेश अगम्म अथाह, दिस किसे ना आया। पारब्रह्म बैठा इक्क बेपरवाह, जोती नूर कर रुशनाया। अगम्मड़ा धाम रिहा सुहा, अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। विश्व नाथ जगत विश्म्बर, परम पुरख उपाया। आप कराया आप उपाया मात स्वयम्बर, आपे वेख वखाया। आपे धरत धवल कर अडम्बर, आपे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, धारा तेरी वेख वखाया। जगत नाथ जगत नरायण, जुग जुग वेख वखाया। पंडत पांधे मन्दिर रहिण, मन प्रबोध ना कोई वखाईआ। इक्वे हो हो सारे बहिण, पारब्रह्म भेव ना राईआ। तन पाया काया माटी गहिण, दम दम ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोपाल वेख वखाईआ। गुर गोपाल हरि रघुनाथ, घट घट वेख वखाया। वेद विदांत आप चलाई आपणी गाथ, जगत राह वखाया। पुराण पुराणा देवे साथ, गीता ज्ञान दृढ़ाया। शास्त्र सिमरत वेखे नाथ, नाथ त्रिलोकी आया। हरि हरि नाउँ विके ना किसे हाट, मन्दिर अन्दर ना किसे टिकाया। कर कर थक्के पूजा पाठ, पूरन ब्रह्म ना कोए जणाया। आत्म जोती बुझे लिलाट, जगत लिलाट रहिण ना पाया। सम्मत सम्मती आवे घाट, हरि साचा माण गंवाया। बीस बीसा नेड़े रक्खे एका वाट, एका घाट हरि सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे मूल चुकाया । कलिजुग मूल जाए चुक्क, मन्दिर चार दिवारया। जगत बूटा रिहा सुक्क, ना कोई देवे अमृत जल सिंच कयारया। पंडत पांधे रहे थुक्क, मुख खाण पान सपारीआ। आपणा भार ना सके कोई चुक्क, जीवां जन्तां करन ख्वारया। अन्तिम वेला रिहा ढुक, ख़ाली करे दर द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर हरि निरँकार, अछल अछल्ल विच संसार, खेले खेल अगम्म अपारया। मन्दिर अन्दर खोजे खोज, जोती जोत जगाईआ। जगत विकारा बज्झा बोझ, ना सके कोई उठाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई गोहज़, गुर का ज्ञान दिस ना आईआ। तिलक ललाटी लाया रोज़, तिलक ललाट ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा दर दर, जग मन्दिर फोल फुलाईआ। जग मन्दिर चरन छुहा, ठाकर करता आया। कलिजुग वेला रिहा सुहा, आपणी धार बंधाया। सति सति किसे रहे ना, असति असति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, पुर काहन मार ध्यान, विश्व नाथ हरि गोपाल प्राग मन्दिर बण दलाल, नैण नेत्र वेख वेख वखाया।

* २६ अस्सू २०१५ बिक्रमी अवतार सिँघ दे घर कानपुर *

थिर घर साचा हरि करतार, आपणा आप उपाया। छप्पर छन्न ना कोई चार दीवार, दर दरवाज़ा दिस ना आया। जोत सरूपी कर पसार, शब्दी रचन रचाया। अकाल मूर्त खेल अपार, निरगुण धाम सुहाया। पारब्रह्म प्रभ बैठ करतार, करनी किरत कमाया। अबिनाशी करता मीत मुरार, अलक्ख अगम्म वेख वखाया। रंग महल्ल उच्च मुनार, अटल अचल्ल दरसाया। दीपक जोती कर उज्यार, प्रकाश प्रकाश टिकाया। सच सिँघासण अपर अपार, पावा चूल ना कोई रखाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, साचा तख्त सुहाया। सरगुण मेला हरि निरँकार, हरी हरि आप अख्वाया। गुरमुखां करे मातलोक प्यार, आप आपणा नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहाया। थिर घर साचा शब्द अटारी, हरि हरि आप वसाईआ। निरगुण जोत जगे निरँकारी, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। गुरमुखां देवे नाम ख़ुमारी, शब्दी शब्द उपजाईआ। धुनी नाद एकँकारी, एका रिहा वजाईआ। तोड़े हउमे गढ़ हँकारी, माया ममता मोह चुकाईआ। देवे दरस दर द्वारी, दर दरवेशा फेरा पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वारी, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। आदिन अन्ता साधन सन्ता, सखा सुहेला जोधा सूरबीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट बैठा आसण लाईआ। थिर घर साचा सच दरवाज़ा, हरि साचा आप खुल्हांयदा। जन भगतां मारे अनहद वाजा, धुनी नाद वजांयदा। अस्व घोड़ा रक्खे ताजा, लोआं पुरीआं आप दौड़ांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, सच सिक्दार आप अख्वांयदा। जुगा जुगन्तर लोकमात रचया काजा, भेखाधारी भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल कराए देस माझा, देस दिसन्तर फोल फुलांयदा। गुरमुख साचे रक्खे लाजा, माया ममता मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वखाए साचा घर, थिर घर नाउँ रखांयदा। थिर घर हरि अपारा, हरि हरि जोत जगाईआ। इक्क इकल्ला कर पसारा, बैठा आसण लाईआ। जन भगतां देवे नाम अधारा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। चरन कँवल बख्शे सच प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। अमृत आत्म ठंडी धारा, निझर रस वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, शब्द भण्डारा इक्क वरताईआ। शब्द भण्डारा हरि निरँकारा, सतिगुर रूप समांयदा। सन्त सुहेले पावे सारा, गुर गुर चेले मेल मिलांयदा। अचरज खेले खेल विच संसारा, भेखाधारी भेख वटांयदा। आदि निरँजण जोत आकारा, निरगुण रूप सरगुण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, हरि वड्डी वड्याईआ। मिल्या मेल दर्द दु:ख

भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नैण शब्द ज्ञान पाए अंजना, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमत्त मैल गंवाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे तेरी रक्खे लज्जणा, नाम पर्दा उप्पर पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वखाए साचा घर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर बैठा बेपरवाह, नूरो नूर दरसांयदा। आपे वसे आपणे थाँ, दूसर कोई दिस ना आंयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, सखा सखाई ना कोई रखांयदा। जन भगतां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आत्म अन्तर जपाए एका नाँ, अजपा जाप करांयदा। फड़ फड़ पार कराए बांह, भव सागर ना कोई रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचे घर, सो घर दुआरा इक्क खुल्हांयदा।

६६३
०७

* २७ अस्सू २०१५ बिक्रमी त्रबैणी संगम इलाहाबाद *

कैलाश पर्बत, केशो धार बहाईआ। भोले नाथ सगला साथ, जटा जूट अख्वाईआ। सति सुरसती मार ठाठ, चरन कँवल उठ धाईआ। सागर सपुत्री जमना नाथ, जम पुर रही तजाईआ। साचा मेला लोकमात, हरि साचा आप कराईआ। रजो तमो सतो त्रैगुण धार एका घाट, एका रूप दरसाईआ। एका ब्रह्म विकी हाट, कीमत करते पाईआ। एका जोबन मारे ठाठ, एका लए अंगड़ाईआ। एका गाए हरि हरि पाठ, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार वहाईआ। अमृत धार साचा रस, गरुड़ चुंज भरांयदा। लोकमात आया नस्स, देवतिआं तड़फांयदा। इन्द इन्द्रासन रहे नस्स, राह खेड़ा दिस ना आंयदा। पारब्रह्म प्रभ राह रिहा दस्स, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार वहांयदा। गंगा जल उज्जल नीर, निर्मल आप कराया। भगत वछल गहर गम्भीर, गुर मन्त्र विच समाया। सांतक करे सति सरीर, दुरमति मैल गंवाया। भगती कढे जगत पीड़, एका मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। सच सुरसती साची धार, सच सच आप वहाईआ। छत्ती रागां रही उचार, आपणा मुख सालाहीआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, हरि विछोड़ा बेपरवाहीआ। खुल्ही मैंहडी छुटा श्रृंगार, सच श्रृंगार ना कोई वखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, वैंहदी आए डूँघी गार, जल धार नाम रखाईआ। जमन सपुत्री हो त्यार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। मंगे मंग वर भतार, प्रभ आए झोली पाईआ। वेख्या लोकमात संसार, धरत धवल सुहाईआ। सन्त सुहेले मीत मुरार, दर दर मुख सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

६६३
०७

आप आपणा राह वखाईआ। गंगा उट्ठी बाल निधान, नेत्र नैण उग्घाड़या। सुरसती कर हरि पछाण, रोवे ज़ारो ज़ारया। जमना ढहि पई द्वार, कर किरपा हरि करतारया। तेरा दर सोहे इक्क द्वार, साचा बंक इक्क सुहा रिहा। लोकमात आवे डर, पंज तत्त जीव हंकारया। दुरमति मैल देवण भर, अमृत जल ना कोई वखा रिहा। जगत विभचारन नारी नर, नर नरायण ना संग रखा ल्या। आपणी किरपा कर, आपणा मन्त्र आप दृढ़ा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, वर दाता आप अख्वा रिहा। सो पुरख निरँजण देवे वर, आपणी दया कमाईआ। धरनी धरत धवल उप्पर धर, धरत धवल सुहाईआ। जलधारा नाम साचे भर, एका वंड वंडाईआ। ब्रह्मा विष्न वेखे खड़, विष्नूं हत्थ वड्याईआ। चतुर्भुज रिहा लड़, चक्र गदा इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाईआ। जमना तेरा साचा रूप, हरि हरि आप उपाया। सुरसती तेरा कूट, दिस किसे ना आया। गंगा धार रही लूट, बेमुख रही रुढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै त्रै बंधन एका पाया। त्रै त्रै बंधन एका पा, एका रंग रंगाईआ। त्रैगुण वेस रिहा वटा, एका थान सुहाईआ। रवि ससि विच गया समा, सांतक सति वरताईआ। जल जलधारा जाए आप लटका, जल जल नीर वहाईआ। जल थल पार किनारा आप करा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। साची खेल हरि खिलंदा, आदि अन्त एकँकारा। मेल मिलाए जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेख किनारा। साचा भोगी भोग भुगंता, साचा घर कर प्यारा। साचा बालक इक्क उपजन्ता, नारद सुत दुलारा। ब्रह्मा वेता वेख वखंता, होए मात उज्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहार भण्डारा। गंगा गंगोतरी भर भण्डारा, एका धार चलाईआ। सच सपुत्री कर त्यार, जमना डेरा लाईआ। सुरसती उठे अद्धविचकार, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। विष्नूं वंसी कर प्यार, आपणा वेस वटाईआ। लछमी सोहे दर द्वार, बस्त्र भूषन लाल रंगाईआ। नेत्र नैणां कर श्रृंगार, कज्जल रही पाईआ। दूर दुराडी आवे वारो वार, वहिंदी धार वहाईआ। अन्तिम मेला विच संसार, एका संगम रही बणाईआ। जोगी जती जंगम गए हार, सन्यासी बैरागी त्यागी कर हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। साची भिच्छया हरि हरि पा, लोकमात वड्आया। पूरन इच्छया आप करा, सतिजुग वेख वखाया। हँस रूप डेरा ला, संगम डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा दर सुहाया। त्रै त्रै तेरी त्रिया धार, हरि साचे आप चलाईआ। राम रामा हो अवतार, गया फेरी पाईआ। वशिष्ट गुर नाल प्यार, बैठा सीस झुकाईआ। हत्थ फड़ तीर कमान, शस्त्र विद्या इक्क जणाईआ। जोधा

सूर होए बलवान, सीता सवाणी लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। राम रामा हो त्यार, संगम डेरा लांयदा। आया आपा कर प्यार, आपा वेख वखांयदा। थापन थापा कर अपार, थापणहारा भेव ना पांयदा। रामा वेखे गढ़ हँकार, लंका रूप वटांयदा। रामा बोले इक्क जैकार, शास्त्र वेद भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विकारा देवे हर, राम रामा इक्क जणांयदा। राम जणाई हरि करतार, आपणी आप जणाईआ। चौदां चौदां वसण बाहर, चौदां घर तजाईआ। हनवन्ता मेला मीत मुरार, आपे दए तराईआ। बाली बनसा कर ख्वार, अंगद अंग समाईआ। सीता सपुत्री लए उधाल, रावण हथ्थ वड्याईआ। जटा जटाओ होए कंगाल, आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अछल अछल्ल खेल खिलाईआ। गंगा जमना सुरसती धार, रामा चरन छुहाया। आप आपणा कर प्यार, आपणे रंग रंगाया। तोड़णहारा जगत जंजाल, रूप अनूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रै त्रै तेरा अन्तिम खेल, आपणे हथ्थ रखाया। जमना जागी सारी रैण, नेत्र नैण खुल्हाईआ। नाल रलाई सुरसती भैण, आपणे अंग उठाईआ। गंगा चुक्के लहिण देण, साचा दर सुहाईआ। सन्त साध सारे कहिण, नेत्र नैणां दिस ना आईआ। नहा नहा थक्के आपणे वहिण, डूँघा वहिण पार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस वटाईआ। सुरसती तेरा सच प्यार, हरि साचे मन्न भांयदा। काहना कृष्ना रूप अपार, संग रुकमणी फेरा पांयदा। जमना मेला पहली वार, चरन कँवल छुहांयदा। तीजे घाट उतरी पार, गंगा धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रबैणी वेख वखांयदा। त्रबैणी तेरा नेत्र खोल्ह, रूप वराट वटाया। अर्जन गीता एका बोल, नाम ज्ञान दृढ़ाया। सच वजाए एका ढोल, कौरो रिहा उठाया। सृष्ट सबाई करया घोल, छुपया कोई रहिण ना पाया। आपणे कंडे तोल्लया तोल, तोलणहारा इक्क अख्वाया। रथ रथवाही बैठ अडोल, एका रथ चलाया। लक्ख चुरासी रही अनभोल, भेव किसे ना पाया। पंचम मीता पंचम वस्सया कोल, दिवस रैण करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा पर्दा उप्पर पाया। सुत दीपद कर प्यार, द्रोपती लाज रखाईआ। कपड़ तन होए शृंगार, जगत लाज रखाईआ। कर किरपा जग जाए तार, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। सच सुरसती साची मार, त्रिया वेस वटाईआ। लिख्या लेख वेद व्यास, वाक भविक्ख गया जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेलणहार हरि भगवाना, हरि हरि रूप समाया। गंगा बन्न्हे हथ्थीं गाना, जमना सगन मनाया। सुरसती मेला विच जहाना, अद्धविचकारे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप

आपणा राह तकाया। हथ्थीं बन्न्ह गाना, गंगा ख़ुशी मनाईआ। जमना आपणा आप पछाणा, रूप रंग सुहाईआ। सुरसती वेख मार ध्याना, एका वेख वखाईआ। करे खेल हरि भगवाना, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची ख़ुशी मनाईआ। कलिजुग अन्तिम साची धार, हरि साचा आप वहांयदा। जोत सरूपी खेल अपार, निरगुण वेस वटांयदा। शब्द डंका अपर अपार, आपणा साज रखांयदा। साचा लाड़ा हो त्यार, लोआं पुरीआं पार करांयदा। धरत मात वेख विचार, आप आपणा रूप वटांयदा। सन्त सुहेले मीत मुरार, साचा संग निभांयदा। गुर गोबिन्दा कर प्यार, लोकमाती सगन मनांयदा। छोटा बाला बण सरबाला होया नाल त्यार, साचा मंगल एका गांयदा। साचे घोड़े चढ़या शाह अस्वार, सच सिँघासण आसण लांयदा। जोती जोड़े मेल निरँकार, पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। साचा लाड़ा हरि जगदीश, एका एक अख्वांयदा। नाम दस्तार बन्न्हे सीस, साचा रूप सुहांयदा। भगत प्यार सेहरा बीस इकीस, आपणा मुख लटकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा कर्म कमांयदा। साचा सेहरा साचे हथ्थ, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। आदि निरँजण चढ़या चन्न, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। सगन मनाया साचे तन, नाम वटना एका लाईआ। राग सुणाया अनादी कन्न, साची सईआं नाल सुहाईआ। आपणा बिस्त्र आपे बन्न्ह, आपे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची रचन रचाईआ। साचा लाड़ा हो त्यार, लोकमात वेख वखांयदा। शब्द घोड़ा इक्क अपार, सोलां कलीआं आसण लांयदा। मेंढी गुंदे विच संसार, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सगन वेख विखांयदा। साचा सगन कर कर चाँईं, आपणी ख़ुशी मनाईआ। गुरमुख उठाए थाउँ थाँईं, आपणे दर बहाईआ। आपे जाणे आपणा नाईं, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जंञ सुहाईआ। गुरमुख साजण कर त्यार, साचा रूप दरसाया। चिट्टे बस्त्र कर प्यार, दुरमति मैल गंवाया। पुरख अबिनाशी पाए सार, इक्क इकल्ला संग रखाया। घट घट वासी ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाम धराया। विष्नूं रूप हरि करतार, आपणी कल वरताईआ। दाता भण्डारी ख़बरदार, देवे रिज़क सुबाईआ। भगत भगवन्त मेल संसार, आपे रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे लड़ बंधाईआ। विष्नूं वंसी हरी हरि, हरि हरि रूप समाया। आपणी किरपा आपे कर, एका दूजा वेस वटाया। आपणी नारी आपे लए वर, आपणा

धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेव किसे ना पाया। साचा दूला हो त्यार, गुरमुख संग रखाईआ। फलया फुला अपर अपार, फल फुलवाड़ी रही महिकाईआ। नाम झूला अपर अपार, गुरसिक्खां सीस उठाईआ। कन्त कन्तूहला हरि भतार, नार सुहागी वेख वखाईआ। आए बैठा तट किनार, दर आपणे डेरा लाईआ। पहलां वरे गंगा नार, जमना फेर व्याहीआ। चरन दास सुरसती प्यार, साची सेव कमाईआ। तिन्नां खिच ल्याए चरन द्वार, चरन चरनोदक आपणा चरन रखाईआ। ख़ाली करया भरया भण्डार, ना फेर कोई भराईआ। इक्की सिक्ख कर उज्यार, आप आपणा दए जणाईआ। गुरमुखां उत्तों जमना सुरसती गंगा तिन्ने देवे वार, चरनां विच बहाईआ। चरन कँवल इक्क प्यार, एका एक वखाईआ। घरों चली पेईआ छड्डे नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, भैण भाई मात पित ना कोई सहाईआ। गुरमुखां डोली चुक्कणी आपणे भार, लै चले कंध उठाईआ। इक्की सिक्ख बणे कहार, लाड़ा सोहे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी नैणी आपे लए प्रनाईआ। इक्की सिक्ख एका रंग, हरि हरि आप रंगाया। जमना सुरसती गंगा मंगी मंग, प्रभ दरस तेरा अन्तिम पाया। मेरा पर्दा ना होए नंग, ना दूसर कोई वेख विखाया। विष्नूं तेरी लग्गे तेरे अंग, कलिजुग सेज ना कोई हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम मेल मिलाया। त्रबैणी नैण रही उग्घाड़, गुरमुखां राह तकाईआ। गुर गोबिन्द कर प्यार, माता गुज़री कुक्ख सुहाईआ। उज्जल मुख विच संसार, हरि साची सिख्या सिक्ख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे रक्खी धार तिक्खी, भेव कोए ना पाईआ। साचे सिक्ख एका इकी, लोकमात रखांयदा। आपणे दर आपणी किरपा कर आपे रक्खे निक्की, लोकमात वडिआंयदा। जाणे लेख जन हरि जी की, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। तट किनारा तीर्थ घाट, हरि हरि वेख वखांयदा। गुरमुखां मस्तक जोत जगाए ललाट, नेत्र नैण खुल्हाया। अग्गे नेड़े दिसे वाट, पिछा दूर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सतिगुर आप अख्वाया।

विष्नूं भगवान खेल अपारी, आपणा खेल खिलाया। निहकलंक जोत निरँकारी, लोकमात वेख वखाया। तीर्थ तट्टां पावे सारी, तट किनारा डेरा लाया। सिँघ दर्शन बण लिखारी, पिछला मूल चुकाया। पंज प्यारे बख़्शे सच्ची सिक्दारी, साचा ताज सीस टिकाया। सतिजुग तेरी एका इक्की आई वारी, इक्की सिक्खां बेड़ा बन्ने लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, आपणा झेड़ा आपे मात चुकाया। आपे जगत पसारा कर, आपे वेख वखाईआ। आपे जोत जल धारा धर, आपे खिच वखाईआ। आपे तीर्थ तट्टां उत्ते वेखे खड़, आपे मुख भवाईआ। आपे गंगा जमना सुरसती अन्दर बैठा वड़, आपे बाहर निकल नट्ठ जाईआ। आपे दुर्गा मन्त्र रिहा पढ़, आपे इष्ट देव अख्वाईआ। आपे हवन पवन रिहा सड़, आपे सुगंध रूप हो जाईआ। आपे वेद शास्त्र रिहा लड़, आपे रावण लंका गढ़ तुड़ाईआ। आपे बीर बैताले रिहा फड़, आपे रक्खे हथ्थ वड्याईआ। आप भगतन लाए धुरदरगाह जड़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर गोबिन्द लिख्या लेख सतिजुग इक्की सिक्ख लए फड़, भारत खण्ड वज्जे वधाईआ। चारों कुन्ट उखेड़े जड़, बूटा कोई रहिण ना पाईआ। कोई ना सके अग्गे अड़, शस्त्र शब्द ना कोई उठाईआ। आदि गुर जुगादि गुर जुग जुग आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रबैणी नैणी आपणी वस्त आपणे विच रखाईआ। आपणी वस्त आपे रक्ख, आपे लए कढाईआ। आपे करणहारा वक्ख, ना दूसर संग रखाईआ। रविदास कबीरा ना होए लक्ख, ना कक्खों लक्ख बणाईआ। कबीर जंजीर ना कोए कटे हो प्रतक्ख, गंगा सीर ना रहे वड्याईआ। हरि भाण्डे करके चल्लया सख, चरन चरनोदक विच वहाईआ। भगत भगवन्त भगती करे भक्ख, भगवत गीता रही जणाईआ। पंडत पांधे मारन झक्ख, गऊ मूत्र रहे प्याईआ। गुर संजम रहे रक्ख, ज्ञान गोहझ ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दात जगत करामात, आपणे हथ्थ आपे रहे खिचाईआ।

६८८
०७

*** २६ अस्सू २०१५ बिक्रमी अयुध्या ब्रह्म कुण्ड सरजू नदी कन्ढे ***

त्रै काल दरसी त्रैगुण धार, त्रै त्रै रूप समाईआ। निरगुण जोती नूर अपार, शब्दी शब्द वड्याईआ। विष्नूं विष्न कर आकार, वास्तक रूप समाईआ। त्रै त्रै मिल्या विच संसार, त्रै त्रै देशा आप जणाईआ। परम पुरख सदा आदेसा, सांतक सति अख्वाईआ। निरगुण रूप नर नरेशा, सहिज सहिज सुखदाईआ। ब्रह्मा भेख खेल हमेशा, आदि अन्त कराईआ। सनक सन्त दए गणेशा, साख्यात वड्याईआ। आपे करे वेस अनेका, अकल कला अख्वाईआ। आपे होए जगत बबेका, ज्ञान गुरु आप अख्वाईआ। आप आपणी बणे रेखा, आपे दए मटाईआ। आपे रूप धारे धारी केसा, मुच्छ दाढ़ी ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त इक्क गुण गाईआ। आदि ना अन्त हरि निरँकार, त्रै त्रै वेस

६६६
०७

वटांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव रूप अपार, आदि आदी मेल मिलांयदा। निरगुण निरगुण बन्ने धार, निरगुण चलत चलांयदा। शब्दी शब्द डंक अपार, शब्दी हुक्म सुणांयदा। तख्त ताज बैठ सुल्तान, थिर घर वेख वखांयदा। शाहो भूप हरि राज राजान, राम रूप आप हो जांयदा। आपे होए मन्त्री प्रधान, आप आपणा मार्ग लांयदा। आप आपणा फड़ निशान, आप आपणे धाम झुलांयदा। आप आपणा हरि दरबान, आप आपणा सीस झुकांयदा। आप आपणा दए फ़रमाण, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आप आपणा वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं फेरी पांयदा। आप आपणा होए जाणी जाण, लोकमात डेरा लांयदा। आप आपणा बण वेद पुराण, आप आपणा खेल खिलांयदा। आप आपणा देवे दान, गुरू गुर रूप हो जांयदा। आप आपणा रक्खे माण, साधां सन्तां इक्क ध्यान वखांयदा। आप आपणा कर प्रधान, आप आपणी कला चलांयदा। आप आपणा वेखे हाणी हाण, आप आपणा आप प्रनांयदा। आप आपणे बैठ मकान, आप आपणा दर सुहांयदा। आप आपणी सुहाए भूमका अस्थान, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। आदि पुरख हरि मेहरवान, एका एक अख्वाया। त्रैगुण मेटे जगत निशान, त्रै त्रै सेवा लाया। तिन्नां लोकां हो मेहरवान, दाता दानी झोली पाया। राज जुगीशर जगत ज्ञान, नमो देव रूप समाया। आदि शक्त खेल महान, नारी नारा रूप वटाया। ना कोई लिंग ना कोई निशान, ना कोई चिन्न बणाया। आपे वस्सया सभ तों भिन्न, घट घट में डेरा लाया। आदि जुगादी जाणे एका गुण, गुणी गहिंदा आप अख्वाया। खेल कराए खिंन खिंन, वेस अनेका रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वाया। आदि पुरख हरि करतार, त्रै त्रै रंग रंगाया। एका जोती कर उज्यार, नूरो नूर समाया। शब्द डंका अपर अपार, ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणाया। ब्रह्म रूप कर पसार, घट घट डेरा लाया। निहचल धाम अगम्म अपार, दिस किसे ना आया। धुरदरगाही साचा लाड़, घर बैठा बंक सुहाया। हड्ड मास ना कोई नाड़ी नाड़, पंज तत्त ना कोई उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप दरसाया। हरि रूप अपार, भेव कोई ना पांयदा। त्रै त्रै खेले खेल अपार, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। अकाल मूर्त निरगुण धार, निरवैर आप अख्वांयदा। अजूनी रहित सर्ब पसार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा चलत चलांयदा। करनेहार हरि समरथ, हरि हरि आप अख्वाया। आपे जाणे आपणी वथ, आपणे घर टिकाया। आपे शब्द बाणी अकथना अकथ कथ कथनी ना कोई लिखाया। आदि जुगादी चलाए साची गथ, नाम नामा इक्क वखाया। त्रै त्रै लोकां आपे देवे आपणा रथ, रथ रथवाही सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, लोकमात करे रुशनाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता अचुत्त, आप अख्वांयदा। आप सुहाए आपणी रुत्त, त्रैगुण वेस वटांयदा। पंज तत्त सुहाए काया रुत्त, घट घट डेरा लांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पया फुट्ट, आपणी धार रखांयदा। अमृत आपे आपणा सुट्ट, हर घट ताल भरांयदा। आपे चढ़ाए बैठा चोट, घर घर विच आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेल खलांयदा। जुग जुग वेस हरि निरँकार, आपणा आप कराया। आपे लेखा लेख अपार, आपणा बंधन पाया। निरगुण जोती कर उज्यार, निरगुण डेरा लाया। सतिजुग वेखे वार अठार, त्रेता रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। सतिजुग तेरा साचा रंग, हरि साचे आप चढ़ाया। पारब्रह्म मंगी मंग, सन्त कुमार लेख लिखाया। एका वेखे हरि हरि रंग, दूसरा रंग ना कोई भाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पलँघ इक्क विछाया। सति रंग सूत्र धार, हरि हरि आप रूप विछाया। बस्त्र विछाउणा अपर अपार, सति सन्तोख विछाईआ। सच सुच्च कर त्यार, ताणा पेटा चलाईआ। लोआं पुरीआं वेख विचार, आपणी हथ्थीं बंधन बंध बंधाईआ। आपे बैठा कर शृंगार, चौदां हट्टां खोल्ह खुल्हाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन विचार, नेत्र नैण रहे उठाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द खोल्हे हथ्थीं हार, दर दुआरे वेख वखाईआ। गण गंधर्ब सुण रहे विचार, पुष्प बरखा रहे लाईआ। ब्रह्मा भेव ना पाए कोई विच संसार, लक्ख चुरासी दिस ना आईआ। सन्त कुमार रिहा पुकार, एका धाम सुहाईआ। सरजू किनारा हरि गिरधार, लहिंदी दिशा डेरा लाईआ। चढ़दी कूटे पावे सार, जोती जोत कर रुशनाईआ। पूत सपूता सुत दुलार, मात पित मिले वड्याईआ। राम रूप हो करतार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शस्त्र बस्त्र अपर अपार, तीर कमान इक्क उठाईआ। हँकार विकारी करे ख्वार, ग़रीब निमाणे लए तराईआ। रावण निवारे गढ़्ह लंका हँकार, हनवन्ता संग पढ़ाईआ। त्रै त्रै वेस कर कर जाए हार, अन्तिम आपणी पति गंवाईआ। धन्न धन्नवन्त ना कोए सहार, जस दसरथ कोए ना गाईआ। ढहि ढहि पए महल्ल मुनार, अचल अटल रहिण ना पाईआ। आप आप वहाए जल जलधार, जलधारा रूप समाईआ। जुग जुग वेस आप करतार, आप आपणा रिहा कराईआ। त्रेता त्रिया वेस अपार, हरि साचा आप कराईआ। जोती जामा धर धर भेस, आप आपणा वेस वटाईआ। जगत अयुध्या लग्गी मेख, भगत निशाना दिस ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम नानक गुर हो दरवेश, दर दुआरे फेरी पांयदा। नेत्र खोल्हे दस दस्मेश, आप आपणा राह वखांयदा। पारब्रह्म हरि बेअन्त तेरे दर तेरे घर किसे ना चले कोई पेश, आदि अन्त ना कोई जणांयदा। लभ्भ लभ्भ थक्के रिखी केस, गवर्धन धारी मुख छुपांयदा। दो जहानां नर नरेश, नेत्र नैण नज़र ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्म अगम्मी धार, नानक गोबिन्द कर प्यार, अन्तर मन्त्र इक्क जणांयदा। नानक गुर शब्द सलाह, हरि हरि आप जणाईआ। गोबिन्द गुर बण मलाह, बेड़ा लए उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, अन्तिम बन्ने लए लगाईआ। अयुध्या चरन छहाए आपे आ, निहकलंका नाउँ रखाईआ। मन्दिर अन्दर करे ख़ाली थाँ, सच वस्त रहे ना राईआ। घर घर उडदे दिसण काँ, पंछी डार ना कोई वखाईआ। जन भगतां बणे पिता माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। नानक गुर शब्द जैकारा, हरि हरि आप सुणांयदा। पारब्रह्म तेरा भेव न्यारा, तेरा भेव कोई ना पांयदा। जुग जुग करे खेल अपारा, आप आपणी सेव कमांयदा। आदि अन्त इक्क अवतारा, सो पुरख निरँजण नज़री आंयदा। एका दर सच्चा दरबारा, घर साचा आप सुहांयदा। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। वजाए डंका अपर अपारा, शाह सुल्तान आप उठांयदा। जगत निशाना बैठे विच संसारा, आपणी धार आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत किनारा इक्क वखांयदा। जगत किनारा कलिजुग घाट, हरि साचा वेख वखांयदा। प्रगट हो नर अवतार, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। सर्बकल आपे समरथ, अकल कला हो जांयदा। शब्द चलाए एका रथ, रथ रथवाही आप दौड़ांयदा। वेख वखाए अठसठ, तट किनारे फोल फुलांयदा। मन्दिर अन्दर वेखे पूजा पाठ, रसना जिह्वा कवण गुण गांयदा। कवण जोती जगे ललाट, अन्ध अन्धेर कवण मिटांयदा। कवण कपाटी बज़र गया पाट, कवण मुख भवांयदा। कवण खुल्ल्हे साचा हाट, कवण गढ्ढी डेरा लांयदा। दर दर वेखे खेल बाज़ीगर नाट, नट नटूआ स्वांग वरतांयदा। कोए ना चढ़या साचे घाट, जूठा झूठा मस्तक नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत समग्री इक्क अकगरी इक्क अकाला दीन दयाला खेले खेल जगत निराला, आप आपणी झोली पांयदा। जगत समग्री कर इक्ट्ठ, चरन कँवल लगाईआ। वेख वखाए अठसठ, मन्दिर अन्दर फेरा पाईआ। भगत भगवाना गया तुठ, भगतन मेल मिलाईआ। कलिजुग गेड़ी उलटी लट्ठ, धरत धवल वड्याईआ। अन्तिम सभ ने होणा भट्ठ, नाल कोई ना जाईआ। ना कोई सहाई अठसठ, सिर हथ्थ ना कोई टिकाईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मट्ठ, पूजस सिला ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वथ्थ, साचा साची झोली पाईआ। मुक्के झेड़ा तट किनार, जगत विछोड़ा पाया। राम रामा मिल्या विच करतार, लोकमात ना फेरा पाया। कृष्ना काहना मीत मुरार, हरि रंग रंगण विच समाया। गुर नानक लेखा अपर अपार, लिख्या लेख ना किसे मिटाया। गोबिन्द गुर वेखे साचे घाट, हरि का रूप ना कोए जगत वखाया।

दो जहानां नेड़े वाट, एका घर सुहाया। अन्तिम कल आपणे तट आपे उपजे आपणा पड़ जाए पाट, दूई द्वैती पर्दा पाया। लहिणा देणा चुकाए अठसठ, आपणा भार आप उठाया। गुरसिक्खां जन भगतां हरि सन्तां मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, एका इक्की साची सिक्खी, आपणी हथ्थी लिखी, गुर गोबिन्द जल धार गया भेट चढ़ाया। माण गंवाए मुनी रिखी, पंडत पांधे जगत भेखी, चोटीआं मुंनण वेखो वेखी, चोटी चढ़ दरस किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, इक्की सिक्खां देवे जिया दान, गुर गोबिन्द वेखे मार ध्यान, आपणी हथ्थीं जो गया रुढ़ाया। साचा मिले धुर फ़ुरमाण, पवण पवणी सारे गाण, सुणे सुणाए गुण निधान, धर्म झुलाए इक्क निशान, आप आपणा रंग रंगाया। अमरापद गुरमुख साचे सारे गाण, जिस जन साचा संग रखाया। आवण जावण छुट्टा विच जहान, जगत स्वांग गुरसिख चरनां हेठ दबाया। धुर दरगाही मिले इक्क मकान, नाता छुट्टे पीण खाण, कन्न ना सुणे कोई कान, नेत्र ना लाइन कोई ध्यान बुध ना जाणे कोई ज्ञान, मन ना दिसे कोई शैतान, ब्रह्म ना होए तन प्रधान, पारब्रह्म गुरसिख आप उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच खण्ड खण्ड सच द्वार, इक्क सुहाया।

* ३० अस्सू २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा गुरू का बाग कांशी *

अनभव भगत भण्डार, जगत ज्ञान हथ्थ ना आया। भगवन्त सन्त रूप अपार, ना कोई वेख वखाया। अलक्ख अगम्म बेऐब परवरदिगार, उच्च अथाह अख्वाया। निरगुण जोती कर उज्यार, निरगुण रूप रिहा समाया। सतिगुर रूप विच संसार, सतिगुर नाम धराया। शब्द विचोला अपर अपार, डंका नाम वजाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस वटाया। आदि पुरख पुरख अकाला, एका पुरख अख्वांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, दयानिध आप हो जांयदा। लोकमात बण दलाला, शब्द शब्दी वेस वटांयदा। चले चलाए अवलड़ी चाला, अभेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। पंज तत्त बणाए धर्म सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण आसण लांयदा। दीपक जोती कर उजाला, गुर ज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण अबिनाशी करता आप आपणा वेस वटांयदा। आप आपणा वेस वटाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। सतिगुर साचा दए जणाए, आप आपणे विच टिकाईआ। एका जोती डगमगाए, दूसर वस्त ना कोई रखाईआ। शब्द धुन

नाद वजाए, अनहद तार हिलाईआ। पंचम घर बहि बहि गाए, साचा मंगल इक्क सुणाईआ। आदि जुगादी खेल कराए, भेव कोई ना पाईआ। नानक निरगुण रिहा ध्याए, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। निरगुण मेला सहिज सुभाए, घर साचा दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मूर्त अकाल दीन दयाल, बिन गुर पूरे नज़र ना आईआ। दीन दयाल हरि बेअन्ता, हरि हरि रूप अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटांयदा। मेल मिलावा साचे सन्ता, आप आपणी बूझ बुझांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर सतिगुर रूप शाहो भूप तरांयदा। आदि पुरख हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। सतिगुर रूप विच संसार, पंज तत्त समाया। जन भगतां देवे नाम अधार, शब्दी डंक वजाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, दिस किसे ना आया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट बैठा डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख विखाया। निरगुण रूप हरि अकल्ला, अकल कला अख्वांयदा । सतिगुर वेखे पंज तत्त महल्ला, आप आपणा आसण लांयदा। जन भगतां दरस दिखाए जलां थलां, डूंघी कन्दर फोल फुलांयदा। मनमुखां दूई द्वैती मेटे सल्ला, हरि का भेव कोई ना पांयदा। आपे होए अछल अछल्ला, अछल अछल्ल आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग जुग करता करता पुरख नाउँ धरांयदा। करता पुरख आदि निरँजण, हरि हरि आप अख्वाया। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराया। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, नाम निधाना इक्क रखाया। मनमुख जीव दर तों भज्जण, दर द्वार दिस ना आया। सृष्ट सबाई सांझा सज्जण, लोकमात वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे साचा वर, लोकमात फेरा पाया। आदि पुरख हरि अबिनाशा, एका एकँकारया। सतिगुर पूरा वेखे मात तमाशा, आवे जावे वारो वारया। साधां सन्तां होए दासी दासा, सेवक सेवा आप कमा रिहा। मनमुखां आए हार पासा, साचा दर ना कोई खुल्ह्आ रिहा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे रासा, मण्डल मण्डप आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती आप अख्वा रिहा। अजूनी रहित आप करतार, एका एक निराकारया। सतिगुर रूप विच संसार, खेल अगम्म अपारया। भगती भगत भगत अधार, नाम कराए वणज वणजारया। मनमुखां डोबे विच मँझधार, बेड़ा कोए ना पार कराया। खेले खेल अपर अपार, भेद अभेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर इक्क मकान, एका एक रखाया। अजूनी रहित हरि गिरधारा, हरि हरि रूप समाया। लोकमात कर उज्यारा, सतिगुर रूप समाया । गुरसिख बहाए सच दुआरा, आप आपणी दया कमाया। मनमुख ना जाणे जीव गंवारा, हउमे हँगता गढ़ सुहाया। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। हरि जू हरि हरि वेस अवल्ला, हरि हरि आप करांयदा। सतिगुर पूरा इक्क इकल्ला, लोकमात वेख विखांयदा। जन भगतां जोती शब्दी रला, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। मनमुखां पंच विकारा करे हल्ला, दिवस रैण सतांयदा। वस्सया निहचल धाम अटला, अगम्म अगोचर आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेल मिलांयदा। निरगुण दाता बेपरवाह, एका एक अख्वाया। सतिगुर पूरा बण मलाह, लोकमात उठ धाया। गुरमुखां दस्से साचा राह, नाम मन्त्र इक्क दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगन रंग चढ़ाया। एका रंग अकाल मूर्त, आपणा आप चढ़ाईआ। शब्द अनादी साची तूरत, धुरदरगाही आप वजाईआ। सतिगुर पूरा नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, सुच्च संजम मेल मिलाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, दे मति ज्ञान समझाईआ। जिस जन बख्शे चरन धूढ़त, दुरमति मैल गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी करता सतिगुर पूरा देवे मात वड्याईआ। सतिगुर पूरा सति सरूप, हरि हरि आप अख्वांयदा। राजन राज शाहो भूप, थिर घर डेरा लांयदा। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग धार चलांयदा। जुग जुग धार हरि करतार, आपणी आप चलाईआ। सतिजुग त्रेता पार किनार, द्वापर वेख वखाईआ। रामा कृष्ना रूप अपार, रूप अनूप दरसाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। नानक गुर गुर अवतार, आप आपणी जोत जगाईआ। ब्रह्म ब्रह्म करे प्यार, पारब्रह्म समाईआ। नारी कन्त हरि भतार, सच सुच्च पढ़ाईआ। माया पाया हरि हरि निरँकार, एका अंक समाईआ। नाम सति लए अधार, लोकमात वज्जी वधाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, जीवां जन्तां मिले जणाईआ। हउमे हँगता तोड़ हँकार, साची संगता लए बणाईआ। वेखे वेख कर विचार, नदरी नदर आप कराईआ। कर्मा कर्म रिहा विचार, करता पुरख आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात हरि जोत धर, नानक निरगुण रूप समाईआ। नानक वर घर हरि हरि पाया, साची वज्जी वधाईआ। साची सखीआं मंगल गाया, साचा ढोला इक्क सुणाईआ। साचे दर डेरा लाया, एका दूजा भउ चुकाईआ। अकाल पुरख प्रभ नज़री आया, जोती नूरो नूर समाईआ। नानक निरगुण दर्शन पाया, सोहँ रसना गाईआ। एका चोली रंग रंगाया, पंज तत्त ना कोई हंढाईआ। अन्दर मन्दिर हरि बहाया, अट्ठे पहर समाईआ। एका डेरा सचा लाया, विछड़ कदे ना जाईआ। एका रसना एका गुण गाया, एका वज्जी वधाईआ। एका अंगद अंग लगाया, अंगीकार आप हो जाईआ। एका अमर निथावां पार कराया, अमरापद समाईआ। रामदास सिर हथ्थ टिकाया, घर साचे रिहा जगाईआ। गुर अर्जन लेखा आप लिखाया,

ज्ञान बोध बोध रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता वस्सया एका घर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम गुर हरि हरि गाए, रसना नाम वखानया। नानक निरगुण नज़री आए, चले चलाए आपणे भाणया। एका दूजा भेस वटाया, तीजे चौथे डेरा लाए पारब्रह्म आप पछाणयां। पंचम साची बाणी गाए, उपजे राग धुन तरानयां। लेखा लिख्त आप लिखाए, आप सुणाए धुर फ़रमाणयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता वस्सया एका घर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा हरि समरथ, एका इक्क अख्वांयदा। गुरमुखां रक्खे दे कर हथ्थ, आपणी दया कमांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो नेत्र लोचण दरस पांयदा। शब्द जणाई काया मन्दिर कथनी कथा कथ, कथा आप सुणांयदा। नाम चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। पंच विकारा देवे मथ, जिस सिर हथ्थ आप टिकांयदा। आवण जावण लक्ख चुरासी धर्म राए गेड़ा पाए भट्ठ, दो जहानां पन्ध मुकांयदा। गुरमुखां मेला नठ्ठ नठ्ठ, आदि जुगादी जुग जुग वेस वटांयदा। शब्द ब्रह्मादी इक्क रखाए साचे रथ, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। लेखे लग्गे जोग अभ्यास, मन्त्र ज्ञान ध्यान इशनान पूजा पाठ, जिस जन आपणी गोद उठांयदा। कलिजुग कूड़ कुड़यारा मारे ठाठ, माया ममता धार वहांयदा। सति सन्तोख अन्तिम मोख ना दिसे किसे तीर्थ तट्ट, पंडत पांधा ना कोई पार करांयदा। मन मतवाला फेरी उलटी लट्ठ, बुध बबेक ना कोई विखांयदा। जिस जन सतिगुर पूरा लोकमात लए रक्ख, एक एक एका नेत्र ज्ञान खुल्हांयदा। सृष्ट सबाई नालों करे वक्ख, आपणा दरस दिखांयदा। नानक गोबिन्द प्रगट होए दरस दिखाए आप प्रतक्ख, प्रीख्या विच किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द देवे साचा वर, नानक सोहे बंक द्वार, सम्बल नगर जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ साचा डंक वजांयदा। सो पुरख निरँजण आप करतार, नानक निरगुण आप रसना गाया। हउमे हँगता देवे मार, जिस जन आपणा दर बुझाया। जन भगतां दर होए मंगता, जुग जुग फेरी पाया। गुरसिख मिलाए जिउँ नानक अंगद, आप आपणे गले लगाया। धुरदरगाही मजीठी रंग, चोली नाम रंग दो जहान उतर ना जाया। औंदा जांदा कदे ना संगदा, लोक लज्जया ना कोई रखाया। लेखा चुकाए भेख पखण्ड दा, कूड़ी क्रिया दए मटाया। नानक द्वार गुरू बाग सच सिँघासण अकाल पुरख अजूनी रहित करते पुरख सरबंग दा, सर्ब घट वेखे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंडत पांधा बण हँकार, सूकर दृष्टी दए विचार, ज्ञान रूप पंज तत्त आकार, सति सरूप आप वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि वेस अनेक आप कराया।

७०६ ०७

* ३० अस्सू २०१५ बिक्रमी विश्व नाथ मन्दिर काशी *

मात गर्भ दस दस मास, हरि हरि आस रखाईआ। आए बाहर जगत प्यास, तृष्ना होए हलकाईआ। नाता जुड़या रसन स्वास, रामा नाम भुलाईआ। मात पिता घर करया वास, बंधन जगत बंधाईआ। होया विछोड़ा पुरख अबिनाश, मातलोक वड्याईआ। सच वस्त ना किसे पास, जगत वणज कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बाल बाला वेख वखाईआ। बाल अवस्था हो प्रधान, जगत जुग वड्याईआ। पंज तत्त नौजवान, पंज तत्त कुड़माईआ। पंचम मीत होए शैतान, पंचम मोह बंधाईआ। पंचम रूप हरि प्रधान, पंचम रिहा गाईआ। जूठा झूठा फड़ निशान, धरत धवल रहे झुलाईआ। उच्चे मन्दिर वेख मकान, भुल्लया हरि रघुराईआ। माया ममता खोल्ह दुकान, आप आपणा रहे लुटाईआ। रसना जिह्वा पीण खाण, तृष्ना भुक्ख वधाईआ। भरमे भुल्ले जीव निधान, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त बैठा डेरा लाईआ। पंज पंजी कर प्यार, पंचम मेल मिलांयदा। मन बुध कर त्यार, मती मति समझांयदा। नौ दुआरे खोल्ह कवाड़, दर दरवाज़े वेख वखांयदा। दस्म महल्ल उच्च मुनार, घर घर विच आप टिकांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, दीपक दीआ इक्क रखांयदा। शब्दी धुंन अपर अपार, आत्म धुंन अल्हांयदा। पंचम गाए वारो वार, पंचम मीता आप हो जांयदा। नेत्र नैण खोल्ह किवाड़, आप आपणा राह विखांयदा। सुखमन नाड़ी डूँघी गार, टेडी बंक धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंधन पांयदा। जगत बंधन हरि हरि पाया, भेव कोई ना पांयदा। पंज तत्त जोड़ जुड़ाया, हड्ड मास नाड़ी रत्त वेख विखांयदा। भैण भाई साक सैण कुटंभ बणाया, नारी कन्त मेल मिलांयदा। धीआं पुत्तर दए वड्आया, माया मोह अख्वांयदा। आप आपणा राह भुलाया, झूठे धन्दे सर्ब लगांयदा। कलिजुग कूड़ा कुड़यारा डंका रिहा वजाया, आपणा डौरु आप फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार चलांयदा। आत्म लिव छुटा नाता, धरत धवल सुहांयदा। भुल्लया दर पुरख बिधाता, नाभी कँवल ना कोई भवांयदा। अनहद मिली ना साची गाथा, जगत राग चित लुभांयदा। मिल्या मेल ना साचे नाथा, जगत अनाथा आप सतांयदा। जगत विकारा मारे ठाठा, डूँघी धार वहांयदा। हरि का शब्द ना पाया कर कर थक्के पूजा पाठा, पूजा पाठ ना कोई वखांयदा। अड्ड अठोतरी फेरी माला वेख वखाए अठसाठा, तीर्थ तट किनारा डेरा लांयदा। चौदां लोक खोल्ह हाटा, नट नटूआ राह चलांयदा। बिन हरि नामे कोई ना करे पूरा घाटा, लहिणा लहिणा ना कोए चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्त्र शब्द ज्ञान, एका नेत्र इक्क ध्यान, नानक गुर दृढ़ांयदा।

७०६ ०७

नानक गुर शब्द संदेशा, लोकमात सुणाया। पंज तत्त कर प्रवेशा, साचा डंक वजाया। आपे वेखे धारी केसा, गोबिन्द रूप वटाया। आपे होए दस दस्मेसा, दहि दिशा फेरी पाया। आपे होए नर नरेशा, साचे तख्त सिँघासण आसण लाया। आपे वेखे गणपति गणेशा, ब्रह्मा विष्न शिव सीस रहे झुकाया। सति पुरख सदा आदेशा, घर साचा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम जपाया। नाम मन्त्र सति करतार, सृष्ट सबाई जणांयदा। दाता दानी धुर दरबार, आप आपणा कर्म कमांयदा। वरते वरतावे विच संसार, अतोट अतुट रखांयदा। जगत जुगती रक्खे आपणे हथ्थ करतार, भेव कोए ना पांयदा। जीव जन्त करन विचार, जीअ दान ना कोई करांयदा। सन्त भगत भगवन्त मेल अपार, काया खेड़ा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम बीजे साचे घर, आपणा वत रखांयदा। नाम वत शब्द क्यारी, हरि हरि आप उपाईआ । बीजे बीज अगम्म अपारी, फुल्ल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। किरपा कर नानक निरँकारी, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, घर घर वेखे सहिज सुबाईआ। नाम अनमोल सर्ब गुणवन्ता, हरि हरि आप रखाया। कर किरपा देवे साचे सन्ता, जो जन मंगण आया। मेल मिलावा नारी कन्ता, सुरती शब्दी मेल मिलाया। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, निरगुण निरगुण वेख वखाया। चोली रंगण आपे रंगदा, नाम मजीठी इक्क चढ़ाया। नौ दुआरे आप लँघदा, दस्म दुआरी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। दस्म दुआरी खोल्ह दरवाज़ा, निरगुण जोत करे रुशनाया। शब्द सिँघासण बैठ ग़रीब निवाज़ा, आप आपणा रूप दरसाया। जन भगतां मारे अनहद वाजां, धुनी नाद सुणाईआ। एका रक्खे अस्व ताजा, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ । पूर्ब पच्छिम उत्तर दक्खण खेले खेल रचया काजा, वेखणहार दिस ना आईआ। नाम चलाया सच जहाजा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्म दुआरी साचे मन्दिर सज्जण साचे लए मिलाईआ। साचा मन्दिर सच टिकाणा, हरि हरि आप सुहाया । शब्दी शब्द धुर फ़रमाणा, एका एक गाया। अगम्म अगम्मड़ा गाए एका गाणा, एका ताल वजाया। इक्क विखाए पद निरबाणा, दूजा धाम ना कोई उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेला आपणे दर, दर साचा आप सुहाया । सतिनाम जगत वड्याई, नानक गुर जणाईआ। सोहँ शब्द रसना रहे गाई, आप आपणा विच टिकाईआ। एका दूजा भेव चुकाई, तीजे नैण मेल मिलाईआ। चौथे घर वज्जे वधाई, सति सति वड्डी वड्याईआ। पंचम मेला चाँईं चाँईं, चात्रिक तृखा बुझाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाई, थिर घर बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण खेल रचाई, अजूनी रहित अनभव

प्रकाश इक्क वखाईआ। निरगुण जोत करे रुशनाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, जगत तृष्ना मात गर्भ जम की फाँसी लक्ख चुरासी दए मिटाईआ।

* पहली कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा हरिमन्दिर साहिब पटना साहिब जन्म अस्थान *

आदि पुरख हरि निरँकार, एक एक अख्वांयदा। जोती नूर कर उज्यार, जुग जुग वेस वटांयदा। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपार, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण नाम धरांयदा। आदि पुरख हरि अबिनाश, एका आप अख्वाया। जुग जुग वेखण आए जगत तमाश, गुर गोबिन्द नाउँ रखाया। करे खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखाया। पारब्रह्म हरि बेअन्ता, आदिन अन्ता इक्क अवतारया। गुरमुख वेखे साचे सन्ता, सुहाए बंक द्वारया। आदि जुगादी महिमा अगणता, महिमा अगणत लेखा लिख्त विच ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिला रिहा। गोबिन्द मीत हरि करतार, लोकमात करे रुशनाईआ। गोबिन्द मेला गुरमुख साचे लए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका देवे नाम आधार, नानक मन्त्र इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाईआ। आदि पुरख दीन दयाला, एका नूर सुहाया। जगी जोत इक्क अकाला, दहि दिशा वेख वखाया। दीपक जोती एका बाला, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जन भगतां तोड़ण आया जगत जंजाला, अमृत जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण वेख वखाया। हरि सज्जण हरि मीतड़ा, एका एकँकार। जुग जुग जन भगतां वसे काया चोली चीथड़ा, ना सके खेले खेल अपार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, दिस ना आए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात दित्ता वर, गुर गोबिन्द खेल अपार। गोबिन्द गुर गुर करतार, हरि हरि आप अख्वाया। पंज तत्त कर प्यार, मातलोक जन्म दवाया। नाम खण्डा तेज कटार, आप आपणा हथ्थ फड़ाया। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेख वखाया। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपाया। नाउँ धर हरि अपार, गोबिन्द सिँघ वड्याईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम देवे वड वड्याईआ। अचरज रीता इक्क अपार, आपणी आप चलाईआ। जन भगतां मेला विच संसार, माया मोह चुकाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, झूठा

नाता तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ती मात वड्याईआ। गोबिन्द गुर दीन दयाल, एक एक अख्वाया। गुरमुख वेखे साचे लाल, आप आपणा वेस वटाया। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस सिर हथ्थ टिकाया। शब्द बणाए इक्क दलाल, नाम मन्त्र इक्क पढ़ाया। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल, वेले अन्तिम मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वखाए साचा घर, हरि शब्द नाम धराया। गोबिन्द गुर शब्द जणाई, लोकमात जैकारया। फतिह डंका गया वजाई, सुणे सर्ब संसारया। राउ रंकां रिहा समझाई, कलिजुग अन्तिम होए अन्ध अँध्यारया। निरगुण जोत होए रुशनाई, लोकमात लए अवतारया। नीले वाला आवे साचा माही, खेले खेल अगम्म अपारया। जूठी झूठी मेटे शाही, सच धर्म करे जैकारया। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बाहीं, जो डुब्बे मँझधारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क सुहा रिहा। सूरबीर वड बलवान, हरि गोबिन्द नाम धराया। धर्म झुलाए जगत निशान, आपणा लेखा आप लिखाया। सम्बल नगरी धाम मकान, अन्तिम डेरा लए लगाया। हरि शब्द चिल्ला तीर कमान, एका खण्डा दए चमकाया। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, सिँघ सिँघ इक्क अख्वाया। गोबिन्द सिँघ सच सिक्दारा, दो जहानां आप अख्वांयदा। मिल्या मेल मीत मुरारा, एका रंग रंगांयदा। पंज तत्त करे विचारा, विछड़या संसारा शब्दी शब्द उपांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, लोकमात वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी तोड़े गढ़ हँकारा, अन्दर वड़ वड़ मुख वखांयदा। भेख पखण्डा पार किनारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। सच सुच्च करे विहारा, साची सिख्या इक्क समझांयदा। एका गुर इक्क अवतारा, अकाल पुरख आप अख्वांयदा। ना कोई दूसर दए सहारा, ना कोई पार करांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धाम धाम अवल्ला, गुर गोबिन्द मीता इक्क इकल्ला, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सिँघासण, हरि मन्दिर आप उपाया। आपे बैठ पुरख अबिनाशण, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। साचा शाहो शाह शाबाशण, गुरमुखां वेखण आया। हरि शब्द होए दासी दासन, निउँ निउँ सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर अन्दर हरिसंगत सतिगुर दर आई मंगत, नाम भिच्छया पूरी करे इच्छया, दहि दिशा वेख वखाया।

* २ कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा गुरु का बाग पटना सहिब *

पुरख अकाल अकल कल धार, लोकमात प्रवरयो। जोती नूर जल्वा जलाल, पारब्रह्म हरि करयो। अबिनाशी पुरख खेल कमाल, रूप अनूप सति सरूप धरयो। शब्द गुर बण दलाल, आप आपणा आपे वरयो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे करयो। अकाल पुरख मूर्त अकाल, आपणी कल वरताईआ। आपणी कर आप प्रितपाल, परम पुरख अख्वाईआ। आपणी वेख वस्सया धर्मसाल, धर्म दुआरे बैठा डेरा लाईआ। आपणी करनी आपणी चले चाल, जुग जुग वेस वटाईआ। आपणी जोत आपणी जोती आपे बाल, आप करे रुशनाईआ। आपणा वरन आपणी गोती आपे पाल, आप आपणा बंध बंधाईआ। आपणा शब्द आपणी सोटी आप संभाल, आपे लए उठाईआ। आपणे घर आपणी जोती आपे बाल, आप करे रुशनाईआ। आपणे घर आपणी चोटी शाह कंगाल, आपे बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आप अख्वाईआ। नर नरायण हरि भगवाना, भगवन वेस वटाया। जोती शब्दी सच तराना, दो जहानां मेल मिलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल खिलाणा, भेव अभेद भेव छुपाया। लोकमात कर ध्याना, आप आपणा वेस वटाया। शब्द गुर वड बलवाना, गोबिन्द नाउँ रखाया। हरि मन्दिर अन्दर ना कोई पचाणा, जगत नेत्र बन्द कराया। बाल बाला खेल महाना, चरन कँवल छुहाया। तीर्थ तट घाट वखाना, घट घट डेरा लाया। बाग बगीचा सगल जहाना, मालक माली आप हो जाया। लक्ख चुरासी वेखे जगत दुकाना, पंज तत्त बन्दीख़ाना इक्क बणाया। दीपक जोत ना कोई जगाणा, घर घर तेल बाती रहे टिकाया। अमृत जल ना किसे वखाणा, जगत सरोवर रहे भराया। अमरापद ना कोई पाणा, पढ़ पढ़ सन्त होए हलकाया। अनहद राग ना सुणया साचा गाणा, जगत ताल रहे वजाया। पाया दरस ना हरि भगवाना, गुरदर मन्दिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर रूप धर, शब्द शब्दी जन्म दवाया। शब्द गुर शब्द दस्मेश, शब्द वज्जी वधाईआ। शब्द मुच्छ दाढ़ी शब्द केस, शब्द बस्त्र शस्त्र चोला तन सजाईआ। शब्द खण्डा रहे हमेश, शब्द गात्रे आप लटकाईआ। शब्द कड़ा रिहा वेख, शब्द करनी किरत कमाईआ। शब्द कंघा सच नरेश, सीस जगदीश बैठा आसण लाईआ। शब्द कच्छ हो प्रवेश, धीरज यति सति धराईआ। गुर गोबिन्द करे आदेश, पुरख अकाल मनाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। सृष्ट सबाई रिहा वेख, नेत्र इक्क खुल्हाईआ। वेख वखाए गणपति गणेश, शिव शंकर पूज पुजाईआ। ब्रह्मा विष्नूं आदि शक्त हमेश, दर दर सीस झुकाईआ। गवर्धन धार रिखी केश, जगत जुगीशर फोल फुलाईआ। राम रमईआ सन्त संदेश, सुरती सुरत सुणाईआ। थिर घर बैठा

खेले खेल कर कर वेस, वेस अनेका आप कराईआ। कलिजुग अन्तिम जोत जगाए माझे देस, सम्बल नगर डेरा लाईआ। पट पटना वेखे आपणे नेत्र आपे पेख, घर मन्दिर खोज खुजाईआ। लिखणहारा साचे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द उपाईआ। शब्द गुर हरि बलवान, एका एक उपांयदा। शब्द चिल्ला तीर कमान, शब्द शब्दी हथ्थ उठांयदा। शब्द खण्डा शब्द म्यान, शब्द गात्रे आप लटकांयदा। शब्द भथ्था हरि मेहरबान, शब्द शब्दी भार उठांयदा। शब्द मारे इक्क निशान, शब्दी चिल्ला आप चलांयदा। शब्द शब्दी खेले दो जहान, दो जहानां वेख वखांयदा। शब्द राजा शब्द राजान, शब्द शाह सुल्तान अख्वांयदा। शब्द तख्त शब्द सुल्तान, शब्द ताज सीस टिकांयदा। शब्द दाता शब्द जीअ शब्द दान, शब्द शब्दी झोली पांयदा। शब्द गोपी शब्द काहन, शब्द मण्डल शब्द रास, शब्द धाम सुहांयदा। शब्द सीता शब्द राम, शब्द पूजा दो जहान, शब्द शब्दी आप करांयदा। शब्द ब्रह्मा शब्द विष्नूं शब्द महेष शब्द गनेश, शब्द शब्दी सेवा लांयदा। शब्द पुरख शब्द नरेश, शब्द शब्दी वेख विखांयदा। शब्द सति शब्द असति शब्द मन शब्द मति शब्द नाउँ शब्द रत्त, शब्द शब्दी इक्क बूंद उपांयदा। शब्द तीर शब्द हथ्थ, शब्द शब्दी खेल समरथ, शब्द शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। शब्द द्वार नौ इक्ठ, शब्द शब्दी साचा हट्ठ, शब्द शब्दी आप उपांयदा। शब्द द्वार दस्म घर बार, शब्द किवाड़ आप लगांयदा। शब्द जोत अगम्म अपार, शब्द धुन सच्ची धुन्कार, शब्द नादी नाद वजांयदा। शब्द कँवल शब्द प्यार, शब्द धवल शब्द उसार, शब्द आकाश प्रकाश विखांयदा। शब्द माया शब्द छाया शब्द होए रूप वटाया, शब्द तृष्ना भुक्ख उपांयदा। शब्द पिता शब्द माया, शब्द जननी जन जाया, शब्द गोदी आप टिकांयदा। शब्द दाई शब्द दाया, शब्द घर मंगल गाया, शब्द वधाई शब्द वजांयदा। शब्द सगन शब्द मनाया, शब्द कंगन शब्द बणाया, शब्द रंगण शब्द चढ़ाया, शब्द शब्दी वेख विखांयदा। शब्द जोड़ा शब्द घोड़ा शब्द गुर आपे बौहड़ा, शब्द शब्दी डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। शब्द गुर शब्द दातार, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ । शब्द नाम शब्द भण्डार, शब्द रिहा वरताईआ। शब्द बंक शब्द द्वार, हरि शब्द रिहा सुहाईआ। शब्द रूप शब्द करतार, शब्द भूप सहाईआ। शब्द शाह शब्द सिक्दार, शब्द राज कमाईआ। शब्द जोग शब्द भोग शब्द विहार, हरि शब्दी शब्द कमाईआ। शब्द मीत शब्द मुरार, शब्द गीत सुहागी गाईआ। शब्द कन्त शब्द नार, शब्द शब्दी सेज हंढाईआ। शब्द सुत शब्द दुलार, शब्द लाल लालन नाउँ रखाईआ। शब्द रुत्त शब्द बहार, शब्द फुल फुलवाड़ी आप उगाईआ। शब्द रूप शब्द संसार, शब्द त्रैगुण बणत बणाईआ। शब्द तत्त शब्द प्यार, शब्द पंज तत्त अख्वाईआ। शब्द बीज शब्द वत, हरि

बीजे सहिज सुभाईआ। शब्द नाम शब्द लड्ड, हरि समरथ आप अख्वाईआ। शब्द मन्दिर शब्द तीर्थ अठसठ, शब्द शब्दी विच समाईआ। शब्द गुरुद्वार शब्द वेखे नठ्ठ नठ्ठ, शब्द शब्दी खिच लगाईआ। शब्द खेड़ा शब्द भट्ठ, शब्द करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दए वड्याईआ। शब्द गुर शब्द शाह, हरि साचे आप उपाया। शब्द गुर शब्द मलाह, लोकमात आप रखाया। शब्द दाता शब्द बेपरवाह, भेव कोई ना पाया। शब्द नाउँ निरँकारा आप रखा, वासदेव रूप वटाया। शब्द जैकारा आप लगा, निउँ निउँ सीस झुकाया। शब्द भण्डारा इक्क भरा, इष्ट दृष्ट इक्क विखाया। शब्द वरतारा आप बणा, सृष्ट सबाई वेख विखाया। शब्द श्रृंगारा आप करा, लक्ख चुरासी लए प्रनाया। शब्द ब्रह्म शब्द अंग कटा, शब्द शब्दी डंक वजाया। शब्द हँ गया समा, ब्रह्म हँ इक्क कराया। शब्द पारब्रह्म शब्द उच्च अगम्म, शब्द बेअन्त अथाह नां धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर करे रुशनाया। शब्द गुर दातार, हरि हरि रूप समांयदा। शब्द गुर हरि निरँकार, हरि हरि रूप वटांयदा। शब्द गुर खेल अपार, हरि हरि आप करांयदा। शब्द गुर तेज़ कटार, हरि नर आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी नाउँ धरांयदा। शब्द गुर वड बलकार, एका एकँकारया। शब्द गुर खेल न्यार, खेले खेल विच संसारया। शब्द गुर लै अवतार, गुर गोबिन्द वेख वखा रिहा। शब्द गुर पावे सार, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटा ल्या। वेस अवल्ला हरि निरँकार, शब्दी शब्द उपाया। जोती जोत जगे संसार, वरन गोती ना कोई रखाया। माणक मोती गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणे कंठ लगाया। चढ़ चढ़ चोटी पावे सार, शब्द सोटी लए जगाया। कोटन कोटी कर ख्वार, तेड़ लंगोटी इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा घर घर, हरि दर मन्दिर अन्दर फेरा पाया। हरि नरायण पुरख अबिनाश, जोती जोत जगाईआ। गोबिन्द वेखे जगत तमाश, हरि साचे सेवा लाईआ। कलिजुग अन्तिम जन भगतां देवे इक्क धरवास, चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाईआ। शब्द गुर बाली बाला, हरि हरि आप उपाया। पारब्रह्म बण मात दलाला, साची सेव कमाया। चरन रखाए काल महांकाला, दिवस रैण रहे सीस झुकाया। गुर सिक्खां तोड़े जगत जंजाला, जगत जुआरी एका आया। फल लगाए काया डाला, बाग बगीचा इक्क सुहाया। हउमे हँगता तोड़े ताला, त्रबैणी नैणी दरस सर सरोवर इक्क नुहाया। हरि मन्दिर अन्दर मारे छालां, गुरमुख साचा हरि हरि गाया। सतिगुर पूरा आपे भाला, हठ जोग ना कोए कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा

खेल खलाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि हरि जोत जगाईआ। वीह सौ पन्दरां कर प्यार, तीर्थ तट्टां वेख वखाईआ। मन्दिर अन्दर हो उज्यार, अकाल मूर्ति मूर्ति विच समाईआ। गंगा जमना सुरसती कर पनिहार, चरनां विच बहाईआ। शिवदवाले मड्ड कर पसार, रघुवंसा जोत मिलाईआ। नानक गोबिन्द इक्क अधार, एका रूप दरसाईआ। पंडत काशी कर ख्वार, सृष्ट सबाई करे हलकाईआ। पटना वेख सच्चा घर बार, हरि मन्दिर चरन छुहाईआ। पहली कत्तक दिवस विचार, आपणा सगन मनाईआ। भरमे भुल्ला भरम संसार, माया पर्दा एका पाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। फेरा पाए दूजी वार, वीह सद इक्की रुत्त सुहाईआ। जोती नूर होए उज्यार, साढे तिन्न हथ्थ जीव जन्त कोई नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर मात धर, साची बणत बणाईआ। शब्द गुर सच सलाह, हरि हरि आप करांयदा। धुरदरगाही बण मलाह, दर घर वेख विखांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई गोद उठांयदा। ना कोई फिरे फड़ फड़ बांह, ना उंगली कोई लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती शब्दी भेख धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा कर्म कमांयदा।

७१३ ०७

* ३ कत्तक २०१५ बिक्रमी मैणी साहिब गुरदुआरा पटना साहिब *

परम पुरख हरि करतार, आदि अन्त अख्वांयदा। जोती नूर कर उज्यार, निरगुण वेस वटांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, लोकमात करांयदा। नाम वंड अपर अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड आप वंडांयदा। जेरज अंड वेख विचार, उत्भुज सेत्ज फोल फुलांयदा। शब्द अनादी बोल जैकार, हरिजन मात उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। घर मन्दिर हरि निरँकारा, हरि हरि जोत जगाईआ। दिवस रैण कर उज्यारा, नूरो नूर डगमगाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। नौ दुआरे पार किनारा, महल्ल अटल अचल इक्क सुहाईआ। अनहद शब्द सच्ची धुन्कारा, आत्म अन्तर आप सुणाईआ। अमृत आत्म ठंडी धारा, निझर मुख चुआईआ। बज़र कपाटी खोल्ह किवाड़ा, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। दस्म दुआरी खेल निराला, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। आत्म सेजा कर श्रृंगारा, कजल धार इक्क वहाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, आप अपरम्पर साचा माहीआ। हरि सज्जण वेखे मीत मुरारा, गुरमुखां राह तकाईआ। भरमे भुल्ले भरम संसारा, माया ममता मोह हलकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना करे पार किनारा, लक्ख चुरासी ना कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, आदि पुरख अबिनाशी करता समरथ पुरख आप अख्वाईआ। समरथ पुरख आप करतारा, हरि हरि रूप समांयदा। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ विच संसारा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथ जोती नूर कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। नाम चढ़ाए साचे रथ आप कराए पार किनारा, मँझधार ना कोई रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण अगम्म अथाह बेपरवाह आप अख्वांयदा। बेपरवाह पुरख अबिनाशा, पारब्रह्म अख्वाया। जुग जुग वेखे जगत तमाशा, जोती जामा भेख वटाया। मण्डल मण्डप पावे रासा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। वेख वखाए पृथ्मी आकाशा, गगन पतालां विच समाया। गुरमुख साचे बलि बलि जासा, बलिहारी गुर रासा पाया। लेखे लग्गे स्वास स्वासा, हरिजन हरि हरि रसना गाया। अन्त ना आवे हार पासा, धर्म राए ना दए सजाया। हउमे हँगता रोग दुःखड़ा नासा, सो पुरख निरँजण नज़री आया। प्रभ पूरन करनहारा आसा, आदि जुगादी वेख वखाया। भगत वछल दासी दासा, सेवक सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटाया। रूप अवल्ला हरि करतार, आपणा आप कराईआ। अछल अछल्ल विच संसार, जुग जुग वेस वटाईआ। निहचल धाम अटल महल्ल उसार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण मेला मीत मुरार, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा हो उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। नाम खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे इक्क लटकाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर धारा मुख चुआईआ। चरन कँवल कर प्यार, उप्पर धवल दए वड्याईआ। साँवल सँवल कृष्न मुरार, राम रामा आप अख्वाईआ। नानक गोबिन्द जोत उज्यार, पूरन ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म सच्ची सरकार, सच सिँघासण बैठा आसण लाईआ। आदिन अन्ता एकँकार, गहर गम्भीर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण नाउँ धराईआ। आदि निरँजण हरि भगवन्ता, हरि हरि रूप समांयदा। हरिजन वेखे साचे सन्ता, दर साचा वेख वखांयदा। मेल मिलावा नारी कन्ता, आत्म सेजा डेरा लांयदा। काया चोली रंग चाढ़े बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, काम क्रोध लोभ मोह हँकार, नेड़ ना आंयदा। जो जन दुआरे आए मंगता, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा। गुरसिख अंग लगाए जिउँ नानक अंगदा, अंगीकार आप अख्वांयदा। साचे मन्दिर अन्दर आपे लँघदा, दस्म दुआरी कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोती नूर हरि उजाला, रूप अनूप समाया। पारब्रह्म प्रभ गुर गोपाला, भेव कोई ना पाया। गुरमुखां गुरसिक्खां जन भगतां वेखे काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, अन्दर बैठा डेरा लाया। नेड़ ना आए काल महांकाला, जगत जंजाला तोड़ वखाया।

आपे शाह आपे कंगाला, हरिभगतन मेल मिलाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, कलिजुग वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम वर, नाम भण्डारा हरि निरँकारा, पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह अकाल मूर्त अजूनी रहित जन जन तन तन अनभव प्रकाश कराया।

*** ३ कत्तक २०१५ बिक्रमी लछमण सिंघ दे घर दाना पुर पटना ***

हरिसंगत हरि नाम प्यार, फूलण बरखा लाईआ। पारब्रह्म प्रभ रूप करतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेला मीत मुरार, एकँकार आप अख्वाईआ। निरगुण खेल अगम्म अपार, भेव अभेद भेव छुपाईआ। सरगुण मेला विच संसार, जुग जुग वेखे बेपरवाहीआ। साजण मीत जोत अधार, घट घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाईआ। फूलण बरखा धुर दरगाह, हरि हरि आप सुहाईआ। शब्दी शब्द शब्द मलाह, गुर गुर रूप वटाईआ। नाम अमोला सच सलाह, हरिजन मात वड्याईआ। पुरख पुरखोतम बण मलाह, बेड़ा रहे चलाईआ। जागरत जोत इक्क जगा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। अन्ध अन्धेर दए मिटा, जो जन दर्शन पाईआ। सञ्झ सवेर इक्क करा, एका जोत करे रुशनाईआ। अनहद साचा ताल वजा, धुन आत्मक नाम सुणाईआ। पंचम सखीआं मंगल गा, एका राग अल्हाईआ। बज़र कपाटी दए तुड़ा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। दस्म दुआरी आसण ला, शब्द सिँघासण सेज विछाईआ। आत्म अन्तर मेल मिला, माया ममता मोह चुकाईआ। जगत बसन्तर दए बुझा, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। गगन गगनंतर पार करा, गगन मण्डल इक्क वखाईआ। आत्म अन्तर बेपरवाह, हरिजन हरि मन्दिर बैठा डेरा लाईआ। देवणहारा साचा थाँ, वड दाता बेपरवाहीआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे गोद उठाईआ। जिउँ नानक अंगद अंग ल्या लगा, अंगीकार करे सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। फूलन बरख़ा निझर धार, हरिजन वेख विखांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, पारब्रह्म अख्वांयदा। जोती जोत कर उज्यार, दर साचे तोट ना कोई रखांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आपे आसण लांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, उत्भुज सेत्ज जेरज अंड फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेखे साचे घर, घर साचा वेख वखांयदा। फूलण बरखा हरि द्वार, हरिजन मात लगाईआ। आप सुहाए बंक द्वार, दर द्वार खोल्ह वखाईआ। ग़रीब निवाज़ा पावे सार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। अस्व घोड़ा ताजा धुरदरगाही हो अस्वार, लोकमात वेख वखाईआ। लोआं

पुरीआं फिरे भाजा, ब्रह्मा विष्नूं शिव देवत सुर आप अलाईआ। लक्ख चुरासी रचया काजा, नौ खण्ड वज्जी वधाईआ। सत्तां दीपां एका धार , एका शब्द सुणाईआ। धुन अगम्म मारे वाजा, दिस किसे ना आईआ। शाहो भूप वड बलवाना राजन राजा, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाईआ। फूलण बरख़ा उप्पर धवल, हरिजन मात लगाईआ। मेल मिलावा साँवल सँवल, राम रमईआ नज़री आईआ। उलटी करे नाभ कँवल, अमृत आत्म मुख चुआईआ। सुरत सवाणी होए बवल, हरि शब्दी वेख वखाईआ। शब्दी जोती जाए मवल, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। फूलण बरखा शब्द श्रृंगार, हरि हरि आप करांयदा। भगत सुहेला मीत मुरार, जुग जुग वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल सर्ब संसार, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। हउमे हँगता तोड़े गढ़ हँकार, माया ममता मोह चुकांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, आदि जुगादी दया कमांयदा। भगत वछल हरि गिरधार, भगत भगती सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखांयदा। हरि फूलण बरख़ा इन्द इन्द्रासन, साचे धाम लगाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकास, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गण गधंरब वेख तमाश, लोकमात वज्जी वधाईआ। प्रगट होए शाहो शाबाश, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां लेखे लाए रसन स्वास, जो जन रसना रहे गाईआ। लहिणा देणा चुकाए दस दस मास, मात गर्भ रहिण ना पाईआ। पूर कराए दर दर आस, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला सहिज सुभाईआ। पुरख अकाल जोत अकालण, हरि हरि आप उठांयदा। जन भगतां देवे नाम दानन, भगत भण्डारा आप वरतांयदा। शब्दी शब्द बण सवालण, एका भिच्छया मंग मंगांयदा। आदि अन्त करे सदा प्रितपालण, प्रितपालक नाम धरांयदा। तोड़णहारा जगत जंजालण, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। देवे नाम सच्चा धन मालण, धन धनवन्ता, आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखांयदा। फूलण बरख़ा हरि फुलवाड़ी, हरि हरि आप लगाईआ। आपे खेले खेल न्यारी, जुग जुग वेस वटाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारी, रूप अनूप समाईआ। जल थल महीअल पावे सारी, जल थल इक्क दरसाईआ। खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघे सागर फोल फुलाईआ। जन भगतां गुरमुखां रक्खे लाज, चरन छुहाई दाढ़ी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी, दो जहानां पार कराईआ। कर्मां फल पक्के हाढ़ी, धर्मी धर्म इक्क जणाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़ी, दिवस रैण करे रुशनाईआ। ममता तृष्ना देवे साड़ी, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। साचे मन्दिर दस्म दुआरी, बैठा

कुण्डा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाईआ। फूलण बरख़ा कन्त सुहाग, हरि हरि वेख वखांयदा। जन भगतां देवे नाम वैराग, आत्म अन्तर इक्क जणांयदा। फड़ हँस बणाए काग, माणक मोती नाम चोग चुगांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर गवांयदा। बन्द किवाड़ी खोल्हे ताक, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। लेखे लाए तन ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समांयदा। पंज तत्त विकारा ना होए आक, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। सज्जण सुहेला साचा साक, पारब्रह्म मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख विखांयदा। फूलण बरखा उच्च अथाह, हरि हरि आप लगाईआ। शब्द सिँघासण शब्द बेपरवाह, थिर घर साचा रिहा सुहाईआ। जोती नूर इक्क करा, नूरो नूर डगमगाईआ। शब्द नादी आप सुणा, धुन अनादी इक्क सुणाईआ। निहकर्मी कर्म कमा, लोकमात वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए जगाईआ। फूलण रुत्त हरि बसन्त, आपणी आप लगाईआ। गुरमुख मेला नारी कन्त, विछड़ कदे ना जाईआ। सुहञ्जणी रैण मेल मिलावा साचे सन्त, घर साचे मंगल गाईआ। मनमुखां माया पाए बेअन्त, जगत रैण अन्धेरी छाईआ। भरमे भुल्ले जीव जन्त, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वड्डी वड्याईआ। फूलण बरख़ा हरि दातार, आपणी आप लगांयदा। भगतन मीत विच संसार, नित नवित्त जोत जगांयदा। वार थित ना कोई विचार, आदि जुगादी खेल खिलांयदा। सृष्ट सबाई साचा पित, आपणा नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक सुहाया। जगे जोत आदि निरँजणा, निर्भय रूप अख्वाया। गुरमुखां चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल गंवाया। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहिण ना पाया। बिन सतिगुर पूरे तेरा पर्दा किसे ना कज्जना, लक्ख चुरासी दए कटाया। काल नगारा सिर ते वज्जणा, धर्म राए डौरु वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सज्जण वेख वखाया। सज्जण साचा मीतड़ा, मिल्या मेल करतार। काया चोली रंगे चीथड़ा, रंगण रंग अपार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा लिख ना सके कोई विच संसार। आदि जुगादि जुग जुग जाणे आपणी रीतड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। मन्दिर मस्जिद विखाए देहुरा सच मसीतड़ा, नौ दुआरे कर कर पार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, जिस जन बख़्शे चरन प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मेला सज्जण सुहेला इक्क इकेला पावे सार। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धार चलाईआ। आदि निरँजण खेल अपार, जुग जुग वेस वटाईआ। आदि निरँजण पुरख गिरधार, अबिनाशी करता नाउँ

रखाईआ। आदि शक्त जोत उज्यार, अनभव प्रकाश कराईआ। अगम्म अगम्मड़ा खेल अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा पंज तत्त ना कोई आकार, मन मति बुध ना कोई रखाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। शब्द शब्दी सुत दुलार, पूत सपूता एका जाईआ। लोआं पुरीआं पावे सार, त्रैगुण वेख वखाईआ। पंज तत्त तोड़ हँकार, सांतक सति वरताईआ। जन भगतां देवे नाम अधार, नाम नामा झोली पाईआ। इक्क कराए वणज वपार, सच वस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे वर, फूलण बरखा हरिजन उप्पर लाईआ। गुरमुख दरस अपार, हरि हरि द्वारया। छुट्टया सर्ब संसार, पाया पुरख अगम्म अपारया। सुहाए घर सच्चा घर बार, बंक द्वारी पैज रखा रिहा। निरगुण मेला विच संसार, सरगुण चेला रूप वटा ल्या। सज्जण सुहेला हरि निरँकार, इक्क इकेला फेरी पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। गुरमुख साजण साचा मीत, हरि दर मिली वड्याईआ। गाया नाम सुहागी गीत, मिल्या दाता बेपरवाहीआ। नाम नरायण वस्सया चीत, चितवित ठगौरी ना पाईआ। आप जणाई आपणी रीत, काया कवरी फोल फुलाईआ। साचा देहुरा गुरुद्वार मन्दिर मसीत, काया मन्दिर इक्क वखाईआ। शब्द अनादी गाए गीत, अनहद राग अलाईआ । एका रंग रंगाया हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे नाम वड्याईआ । नाम रत्न रत्न अमोल, गुरमुख झोली पांयदा। शब्द कंडे आपे तोल, नाम बोल सुणांयदा। चरन प्रीती जो जन रिहा घोल, घोली घोल वेख वखांयदा। अगम्म अगम्मड़ा वस्सया कोल, दिवस रैण दरस दिखांयदा। आपणा मन्दिर आपे खोल्ह, स्वच्छ सरूपी नज़री आंयदा। आत्म अन्तर रिहा मौल, एका दूजा भउ चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण वेख वखांयदा। गुरसिख सज्जण सच द्वार, पाया हरि निरँकार। एका दूजा भउ निवार, सोहे बंक द्वार। नैण तीजा इक्क उग्घाड़, निरगुण जोत करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लाए पार। गुरमुख सज्जण जगत मीत, हरि जी आप उपजाया। आपे परखणहारा नीत, नित नवित्त फेरा पाया। वसणहारा जगत मसीत, दिवस रैण डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया नगर खेड़ा वेखे घर, घर साचा इक्क सुहाया। लल्लाः लिख्त अपार, लेख लिखाया। छच्छाः छल्ल संसार, जगत भुलाया। मंमाः मोह प्यार, चरन कँवल चित लाया । नंनाः निरगुण रूप अपार, नर हरि सच्चा वेख विखाया। सस्साः साख्यात जोत उज्यार, सांतक सति वरताया। सिहारी टेडी बंक द्वार, पार किनारा दए कराया। टिप्पी उप्पर डूँघी गार, आप आपणी

वेख वखाया। घग्घा : घोड़ा शब्द अपार, प्रभ साचे इक्क रखाया। जोती जोड़ा नाम निरँकार, दो जहानां वेख विखाया। लोकमात आए दौड़ा आपणी वार, गुरमुख साचे लए चढ़ाया। लछमण सिँघ दए प्यार, प्रभ अन्दरे अन्दर मेल मिलाया। जगे जोत अगम्म अपार, तेल बाती ना कोए रखाया। नाम शब्द भण्डारा भरे भण्डार, चोर यार लुट्ट कोई ना जाया। दरस दिखाए आप करतार, निरगुण सरगुण वेस वटाया। नानक गुर गोबिन्द वेखे इक्क द्वार, एका सतिगुर नज़री आया। अमृत आत्म बरखे ठंडी ठार, निझर धारा मुख चुआया। लक्ख चुरासी उतरे पार, आवण जावण पतित पावण गेड़ कटाया। इक्क वखाए सच सच्चा द्वार, थिर घर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त गुरमुख हित्त, आदि जुगादि जुग जुग वेस वटाया। सिँघ सिक्ख गुरमुख सुजान, हरि नामे हरि लिव लाईआ। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, एका बूझ बुझाया। पारब्रह्म प्रभ कर पछाण, पूर्ब वेख वखाईआ। साचा मेला गोपी काहन, सीता सुरती रिहा प्रनाईआ। चेला गुर दर दरबान, एका धाम सुहाईआ। सतिगुर पूरा सद मेहरवान, गुरमुखां दए वड्याईआ। जीवां जन्तां जिया दान, एकँकारा झोली पाईआ। जगी जोत पुरख सुल्तान, दो जहानां करे रुशनाईआ। ब्रह्मा नेत्र खोल्ह मारे ध्यान, कवण कूट होए रुशनाईआ। शिव शंकर बाशक तशक गल लटकान, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। विष्नूं खेले खेल महान, रूप अनूपा वेस वटाईआ। सुरपति राजा इन्द होए हैरान, करोड़ तेतीसा दए सालाहीआ। खेले खेल श्री भगवान, लोकमात वज्जी वधाईआ। नौ सत्त हो प्रधान, धरत धवल सुहाईआ। खेले खेल दो जहान, आप आपणी रचन रचाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वेख इक्क मकान, सम्बल नगरी आसण लाईआ। जोधा सूरबीर नौजवान, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नाउँ रखाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे मार ध्यान, बज़र कपाटी सिला टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत नूरी अल्ला, राम रहीम अखवाया। परवरदिगार इक्क इकल्ला, एका रचन रचाया। खेले खेल जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाया। लक्ख चुरासी दूई द्वैती मेटे सला, आप आपणा कर्म कमाया। पंज तत्त विकारा मारे हल्ला, नौ दर होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होया अछल अछल्ला, भेव कोई ना पाया। गुरमुख साचा सोहे बंक, पाया पुरख अथाह। लेखा चुक्के राउ रंक, ना कोई दिसे राज राजान शाह। नाम वज्जे साचा डंक, आप सुहाए थाउँ थाँ। खेले खेल वासी पुरी घनक, निहकलंका नाउँ रखा। गुरमुख उठाए जिउँ जन जनक, आप आपणी पकड़े बांह। शब्द शब्दी लाए तनक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि देवे ठंडी छाँ। सिर हथ्थ समरथ, गुरसिख आप रखाया। देवे नाम साची वथ्थ, अन्दर मन्दिर

इक्क भराया। काया चलाए जगत रथ, रथ रथवाही नाम धराया। बोध अगाध अगाध जणाई अकथ, कथनी कथ ना सके राया। सगल विसूरे जायण लथ्थ, नेत्र नैण जिस जन दर्शन पाया। लहिणा देणा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चुमारे मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए तीर्थ तट अठसठ, अमृत आत्म सुहाया। अमृत आत्म साचा ताल, गुर गुर आप भरांयदा। गुरमुख साचा मारे छाल, दुरमति मैल गंवांयदा। आप बणाए अनमुल्लड़ा लाल, गति मित ना कोई जणांयदा। चौदां लोक बण दलाल, चौदां तबकां फेरी पांयदा। खेले खेल हक्क हलाल, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख गुरसिख सज्जण मीत मुरार कर प्यार, दरस दरस सेवक सेवा लेखे लांयदा।

* ४ कत्तक २०१५ बिक्रमी बोध अवतार दे मन्दिर गया शहर *

अबिनाश अबिनाशी आदि जुगादि, निरगुण नूर नुरानयां। पृथ्मी आकाश खेल ब्रह्माद, जुग जुग वेस वटानयां। सर्ब घट वास शब्द नाद, पुरीआं लोआं आप वजानयां। नाम वास बोध अगाध, अकाल पुरख श्री भगवानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलानयां। पुरख अबिनाश हरि हरि करतारा, करनहार अख्वांयदा। नूरो नूर नूर जोत उज्यारा, दीपक दीपक दीपक आप जगांयदा। शब्द शब्द शब्द धुन्कारा, अगम्म अगम्म आप उपांयदा। अलख अलख अलख खेल न्यारा, प्रतक्ख प्रतक्ख रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बंधांयदा। निरँकार निरँकार निरँकार, हरि आप अख्वांयदा। निराकार निराकार निराकार, निरगुण वेस वटांयदा। निराधार निराधार निराधार भेस अपार, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाम रखांयदा। नाम सति नाम सति नाम सति, नामे नाम वड्याईआ। आदि सति आदि सति आदि सति, सति सति अख्वाईआ। जुगादि सति जुगादि सति जुगादि सति, सति सरूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। करता पुरख करता पुरख करता पुरख, करनहारा अख्वाया। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता चिखा ना कोई सताया। आदि जुगादि जुग जुग कर ना सके कोई परख, परख परीक्षा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर हरि अपार, आपणा आप उपाईआ। जोती नूर कर उज्यार,

७२० ०७

निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्दी डंक हरि अपार, दो जहानां आप सुणाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह अस्वार आप हो जाईआ। खेले खेल जगत द्वार, लोकमात वज्जी वधाईआ। अन्तर आत्म इक्क प्यार, ब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। नाउँ धर हरि अपार, आपणा आप उपाईआ। जोती नूर कर उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्दी डंक हरि अपार, दो जहानां आप सुणाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह अस्वार आप हो जाईआ। खेले खेल भगत द्वार, लोकमात वज्जी वधाईआ। अन्तर आत्म इक्क प्यार, ब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीवा बत्ती इक्क रखाईआ। दीवा बत्ती एकँकार, आपणा आप उपाया। कमलापाती खेल अपार, आपे खेल खिलाया। उत्तम जाति विच संसार, जन भगतां आप कराया। पिता माती मीत मुरार, परम पुरख अख्वाया। बूंद स्वांती ठांडी ठार, निझर मुख चुआया। मिटे रैण अन्धेरी राती, प्रकाश प्रकाश कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग भेख अवल्ला, आपणी धार चलाईआ। थिर घर बैठ इक्क इकल्ला, त्रै त्रै लोकां वेख वखाईआ। सच दुआरा आपे मल्ला, लोकमात ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ चलाईआ। नाम चलंता हरि हरि दातार, एका एक अख्वांयदा। खेल खलंता अपर अपार, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। नाम धरंता आप करतार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग तेरी नींह उसार, तेरा मार्ग लांयदा। धरत धवल दए सहार, एका दान झोली पांयदा। दूसर वेखे खेल महान, कलिजुग कूड़ा वंड वंडांयदा। धुरदरगाही खोल्ह दुकान, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। साचे मन्दिर बैठ मकान, आप आपणी दया कमांयदा। लेखा चुकाए गोपी काहन, नाम बंसरी ना कोई वजांयदा। गीता पढ़ पढ़ सर्ब सुनाण, हरि हरि मेल ना कोई मिलांयदा। पतित पुनीत श्री भगवान, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। कलिजुग बाला हो जवान, आप आपणा रंग वटांयदा। जूठ झूठ कर प्रधान, लक्ख चुरासी नाल प्रनांयदा। ख़ाली दिसे जीव निधान, आत्म ब्रह्म ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप अनूपा हरि करतारा, एका जोत जगाईआ। जुग जुग खेले खेल अपारा, खेलणहार भेव ना राईआ। आदिन अन्ता एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। कलिजुग तेरा वेख अँध्यारा, आप आपणा वेस वटाईआ। ज्ञान नाम कर उज्यारा, मन मति समझाईआ। बुध बबेक एका धारा, पंज तत्त वड्याईआ। सति सरूपी खेल न्यारा, सति सति अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बिध रखाईआ।

बुध बल हरि निरँकार, एका एक कराया। दीवा दीवा कर उज्यार, बाती बाती मेल मिलाया। दिवस रैण प्रभाती कर प्यार, एका रंग रंगाया। डूँघी घाटी काया गार, उच्चे टिल्ले फड़ बहाया। मारे झाती निरगुण धार, आत्म ताकी आप खुल्हाया। कलिजुग साकी बण संसार, नाम प्याला हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त करे रुशनाया। पंज तत्त बाली बाल, बंधन बंध बंधांयदा। खेले खेल गुर गोपाल, चन्दन चन्द चढ़ांयदा। आपणे फल लाए डाल, फल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपे बूझे कर विचार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। मात पिता घर सुत दुलार, सेवक सेवा रहे कमाईआ। सीर प्याया कर प्यार, सांतक सति ना कोई रखाईआ। तन कराया जगत श्रृंगार, नाम दोशाला ना कोई पहनाईआ। नैण वखाया जगत दरबार, हरि द्वार दिस ना आया। बाल अवस्था होई पार, जगत जवानी रूप वटाया। विद्वानी ना लिखे कोई लिखार, हरि का भेव ना कोई जणाया। बुद्धिमानी भर भण्डार, बोध ज्ञान जणाया। इक्क ज्ञानी एका धार, एका राग सुणाया। चौदां भूमिका पावे सार, दर दरवेशा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मार्ग लाया। जगत बुध माया मोह, जगत जंजाल तुड़ाया। आपणी जोती आपे छोह, आपणा मेल मिलाया। आपणे मन्दिर आपे अग्गे हो, आप आपणा रूप दरसाया। आपणा अन्धेरे आपे करे लो, अन्ध अन्धेर आप मिटाया। आपणी मैल आपे धो, आप आपणा वेख वखाया। आपणा बीज आपे बो, आप आपणा फल लगाया। हरि बिन अवर ना जाणे को, सृष्ट सबाई भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दरस दिखाया। बुध बुध बबेक इक्क कराईआ। एका नेत्र आपणे वेख, एका बूझ बुझाईआ। एका लिख्या सच्चा लेख, वेद व्यासा गया समझाईआ। खेले खेल रिखी केस, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। अलक्ख निरँजण वेखे दर दरवेश, धाम भूमका इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जोती जोत जगाईआ। आपणी जोती जोत जगा, मन्त्र नाम दृढ़ाया। अन्ध अन्धेरा जगत मिटा, प्रकाश प्रकाश समाया। रूप अनूप इक्क दरसा, नेत्र नैणां तृखा बुझाया। आपणा हिस्सा आप वंडा, एका हुक्म सुणाया। दहि दिशा फेरी रिहा पा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लेख लिखाया। शब्द मन्त्र नाम ज्ञाना, धुर फ़ुरमाणा हरि जणाईआ। एका अक्खर वड विद्वाना, जीवां जन्तां रिहा भुलाईआ। एका तीर इक्क निशाना, कोटन कोट घाइल कराईआ। एका राज इक्क राजाना, शाह सुल्तान इक्क अख्वाईआ। एका भूप इक्क मेहरबाना, दीनां नाथ इक्क हो जाईआ। एका गोपी एका काहना, एका मण्डल रास रचाईआ। एका खेले खेल

दो जहानां, दो जहानां फेरा पाईआ। एका दाता गुण निधाना, गुणवन्ता नाउँ धराईआ। एका एक विखाए पद निरबाणा, परम पुरख इक्क अख्वाईआ। एका एक विखाए सच टिकाणा, एका एक शब्द जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ज्ञान बोध वड्डी वड्याईआ। बोध ज्ञान जगत जैकारा, हरि हरि आप लगांयदा। नाम नामा बण वरतारा, नर नरायण वेस वटांयदा। पंज तत्त कर उज्यारा, धरत धवल सुहांयदा। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़, जंगल जूहां फेरी पांयदा। विष्नू वेखे इक्क अखाड़ा, शिव शंकर नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म अख्वांयदा। ब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। त्रै त्रै देसां खेल करतार, त्रै त्रै लोकां खेल ना राईआ। नर नरेश सच्ची सरकार, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, जीवां जन्तां होए सहाईआ। बुध बबेकी अपर अपार, ज्ञान गुर रिहा समझाईआ। साची टेक हरि निरँकार, हरि बिन अवर ना कोई दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सिख्या आप पढ़ाईआ। सिख मति बुध कर हरि विचार, आपणा आप दरसाया। मदिरा मास तज अहार, हरि हरि विच टिकाया। ग़रीब निमाणे पावे सार, अनाथ अनाथां मेल मिलाया। नाम सुनेहड़ा अपर अपार, सगला साथा आप उपजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। आदि खेल कलिजुग रूप, हरि हरि हरि वड्याईआ। बोध बोधा सति सरूप, सति पुरख भेव ना राईआ। मिटे अन्धेर अन्ध कूप, मेटे रैण अन्धेरी छाईआ। आपणा पंघूड़ा आपे झूट, करे दरस बेपरवाहीआ। कलिजुग अन्तिम चुक्के लहिणा देणा जूठ झूठ, विकार हँकार रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता आपे आए तुठ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी त्रैगुण माया लए लुट्ट, पंच विकारा रहिण ना पाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे एका घुट्ट, जगत तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। हरिजन आवण जावण जाए छुट्ट, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा लोकमात दी गोदी विच्चों कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। लहिणा देणा चुकाए पूजा पाठ, पंज तत्त नाम रत्त इक्क सुहाईआ। शब्दी शब्द रखाए साचा सुत्त, लोआं पुरीआं आप वड्याईआ। आपे बहे लक्ख चुरासी विच्चों लुक, दिस किसे ना आईआ। आपणा आप आपणी चुक्क लए कुक्ख, मात पित ना कोई अख्वाईआ। नाता रक्खे मानस मानुख, अन्दर वसे बेपरवाहीआ। आदि अन्त ना हरया ना जाए सुक्क, एका रंग रहे, हरि हरि सच्चा माहीआ। गुरसिख सज्जण मीत मुरार हरिजन भगत सुहेले आपणी गोदी लए चुक्क, जगत ज्ञान ना कोई वड्याईआ। आपणा भाणा साचा राणा आपे वेखे लोकमात ना जाए रुक, ना कोई मेट मिटाईआ। मनमति सृष्ट सुबाई मुख पाए थुक्क, जो जन हरि हरि गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे

करे उज्जल मुक्ख, जगत चिन्न ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरगुण निरगुण धार, सरगुण सरगुण सरगुण धार कर प्यार, अद्धविचकारे बैठा डेरा लाईआ।

* ५ कत्तक २०१५ बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह विखे सी आई टी रोड कलकता शहर *

निरगुण हरि हरि मेलया नामा, हरि हरि रूप अपार सजाया। जोती जोत जोत जोत महाना, जोती जोत जोत जगाया। शब्द शब्द तराना, हरि हरि आप सुणाया। जुग जुग खेले खेल महाना, दीन दयाला नाउँ रखाया। अकाल मूर्त श्री भगवाना, आदि जुगादी वेस वटाया। एकँकार खेल दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलाया। नाउँ निरँकार पुरख अबिनाश, एका एक अख़वांयदा। खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता भेव ना आंयदा। पुरख प्रखोतम शाहो शाबाश, धन्न धन्नवन्ता नाउँ रखांयदा। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, गगन पतालां फेरी पांयदा। मण्डल मण्डप पावे रास, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लांयदा। आदि अन्त ना होए विनास, जूनी रहित नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसांयदा। अकाल मूर्त हरि निरँकार, एका एकँकारया। परम पुरख अगम्म अपारा, जोती नूरो नूर उज्यारया। ना मरे ना पए जम्म, आवे जावे वारो वारया। लक्ख चुरासी जाणे कम्म, पारब्रह्म ब्रह्म उपा रिहा। ब्रह्म ब्रह्म एका नाम, एका नाउँ धरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त आप उपा रिहा। पंज तत्त कर आकार, हरि साचे बणत बणाईआ। ब्रह्म ब्रह्म रूप अपार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल न्यार, मन मति बुध जोड़ जुड़ाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराईआ। नाउँ धर हरि निरँकारा, लोकमात वेख विखांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकारा, एका डंका आप रखांयदा। राज राजान शाह सुल्तान करे ख़बरदारा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। जन भगतां देवे नाम प्यारा, आत्म ब्रह्म जणांयदा। एका दूजा भेव न्यारा, तीजे नेत्र दरस दिखांयदा। चौथा दर सच्चा घर बारा, साचे मेल मिलांयदा। पंचम मीता हरि निरँकारा, पंचम मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख विखांयदा। हरि सज्जण हरि मीतड़ा, पारब्रह्म करतार। जुग जुग जाणे आपणी रीतड़ा, इक्क इकल्ला एकँकार। लक्ख चुरासी परखे नीतड़ा, मन्दिर अन्दर बैठा दिस ना आए नौ द्वार। हरिजन करे पतित पुनीतड़ा, बख्शे एका नाम अधार। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले

खेल अपर अपार। खेल खिलंता हरि निरँकार आदि निरँजणा, जुग जुग वेस वटांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर वेख विखांयदा। जन भगतां देवे नेत्र ज्ञान अंजना, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, एका मैल गंवांयदा। दो जहानी पर्दे कज्जणा, नाम पर्दा एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस कर, हरि सज्जण मेल मिलांयदा। जुग जुग वेस हरि करतार, आपणा आप कराया। सतिजुग साचे पावे सार, सति सतिवादी नाउँ धराया। त्रेता तेरा कर श्रृंगार, आप आपणा तन बंधाया। राम रामा रूप अपार, लेखा लेख ना कोई लिखाया। द्वापर तेरी बन्ने धार, तेरा मेरा मोह चुकाया। भगतन मीता हरि करतार, रूप अनूपा रूप दरसाया। शाहो भूप सच्ची सरकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, भेव कोई ना पांयदा। आदि अन्ता एकँकारा, जुग जुग वेस वटांयदा। नाम खण्डा तेज कटारा, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। दो जहानां पावे सारा, सृष्ट सबाई वेख विखांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी इक्क आधारा, सत्तां दीपां सेव कमांयदा। चौदां लोकां खोल्ह किवाड़ा, हट्टो हट्ट फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। द्वापर तेरी तेरी धार, तेरी झोली पाईआ। खेले खेल अपर अपार, कलिजुग काला रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई हो उज्यार, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका हरि, एका बणत बणाईआ। एका हरि इक्क करतारा, एका रूप वटाईआ। एका कर जगत पसारा, एका हट्ट विकाईआ। एका खेले खेल न्यारा, एका वेख वखाईआ। एका रंग रवे करतारा, एका दिस ना आईआ। एका बूझे जीव गंवारा, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक अख्वाईआ। एका पुरख इक्क अबिनाश, एका धार चलांयदा। एका शाहो इक्क शाबाश, एका ताज रखांयदा। एका पवण इक्क स्वास, एका धीर बंधांयदा। एका मण्डल एका रास, एका गोपी काहन अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख विखांयदा। कलिजुग तेरी काली धार, हरि साचे आप चलाईआ। ईसा मूसा कर त्यार, संग मुहम्मद वेख वखाईआ। अल्ला राणी तन श्रृंगार, जोती रंगण इक्क रंगाईआ। नानक गोबिन्द कर अधार, एका शब्द करी कुड़माईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण वेख वखाईआ। दोहां मेला विच संसार, विछड़ कदे ना जाईआ। लेखा लिख्या अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई ना पावे सार, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। साध सन्त सुत्ते पैर पसार, माया पर्दा एका पाईआ। ज्ञान ध्यान ना कोई विचार, जगत विद्या होई हलकाईआ।

भगत भगवन्त ना पावे सार, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। नारी कन्त ना कोई प्यार, सुहञ्जणी सेज ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे काली शाहीआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। सृष्ट सबाई अन्ध अँध्यारा, सति प्रकाश ना कोई कराया। मनमुख जीव होए हँकारा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार वसाया। मनमति एका जगत पसारा, गुरमति गए भुलाया। इक्क तृष्ना खेल न्यारा, हउमे हँगता नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा डंक, चारों कुन्ट वजांयदा। जूठ झूठ राउ रंक, राज राजान ना कोई दिसांयदा। कर कर भेख वेखे वार अनक, धरत मात मुख शरमांयदा। गुरमुख कोई ना दिसे जिउँ जन जनक, जनक सपुत्री सीता ना कोई जणांयदा। राम नाम ना उठाए कोई धनुख, तीर पार ना कोई करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी धार विच संसार, आपे वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़ नाता, जगत रास चलाईआ। दिस ना आया पुरख बिधाता, रैण अन्धेरी छाईआ। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ले जाता पाता, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। नज़र ना आए इक्क इकांता, हरि बैठा आसण लाईआ। देवणहारा जिया दाता, जीआं दान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत पुरख इक्क इकल्ला, एका एक अख्वांयदा। सृष्ट सबाई वेखे जगत महल्ला, नौ खण्ड फेरा पांयदा। मेल मिलावा राणी अल्ला, ऐनलहक्क मेल मिलांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, जल थल विरोल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा डौरु तेरी धार, तेरे हथ्थ रखांयदा।

सतिगुर शब्द दीन दयाल, सर्ब गुणा गुण भरपूरया। आदि जुगादि करे प्रितपाल, हरिजन हाज़र हज़ूरया। काया बैठ सच्ची धर्मसाल, जोती वेखे नूरो नूरया। धुन अनादी वजाए शब्द ताल, अनहद सेवा ला रिहा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना इक्क वखा रिहा। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तर मन्त्र इक्क वखा रिहा। अन्तर आत्म शब्द ज्ञान, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जिस जन देवे हो मेहरवान, सो जन बूझ बुझाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादान, माया ममता मोह हलकाईआ। नाता ना छुट्टे पंज शैतान, पंचम मेल ना कोई मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, आप आपणा

रंग रंगाईआ। आपणा रंग हरि करतार, हरिजन आप रंगांयदा। पहले बख्शे चरन प्यार, साचा राह वखांयदा। दूजे मेल अपर अपार, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। तीजे नेत्र खोल्ह किवाड़, निज दरस दरस दिखांयदा। चौथे घर देवे वाड़, परमानंद समांयदा। पंचम वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, जिस जन हथ्थ समरथ टिकांयदा। धर्म विखाए इक्क अखाड़, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़, हरि सज्जण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका गुर वड्याईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका हरि लिव लाईआ। एका जोती ब्रह्म ज्ञान, एका पारब्रह्म सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। देवे मति पुरख अकाला, हरि हरि वड वड्डी वड्याईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। शब्दी गुर बण दलाला, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक आप अख्वाईआ। साची मति जगत संसार, हरिजन हरि जणांयदा। एका तत्त अपर अपार, एका दर ना कोई वखांयदा। तीर्थ तट पार किनार, थिर घर डेरा लांयदा। मस्जिद मन्दिर मट्ठ गुरद्वार, काया गढ़ सुहांयदा। दीवा बाती कर उज्यार, प्रकाश प्रकाश वखांयदा। अमृत आत्म भर भण्डार, सर सरोवर इक्क जणांयदा। आपे बण जगत वरतार, नाम प्याला इक्क प्यांअदा। भरमे भुल्ले ना जीव संसार, जीवण मरन फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वक्खर, साची सिख्या सिक्ख समझांयदा। नाम अक्खर नाम वक्खर , प्रभ नाम मेल मिलाया। आपणे डण्डे ना कोई जाए चढ़, हरि साचे आप दिखाया। दरस दिखाए ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण जोत करे रुशनाया। गुरमुख आपणे आपे ल्ए फड़, आप आपणा मेल मिलाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना किसे दबाया। आप बंधाए आपणे लड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण एका एक नाम दरसाया। सो पुरख निरँजण हरि भगवान, सर सरोवर इक्क सुहाया। हँ ब्रह्म पारब्रह्म कर ध्यान, ओअँ सोहँ एका रंग रंगाया। कर्म धर्म जरम मिटे निशान, जिस जन आपणा नाम दृढ़ाया। किरपा कर गुण निधान, लेखा लेख दए मिटाया। जगत वखाए सच निशान, सच वस्त झोली पाया। जोधा सूरबीर होए बलवान, सुत दुलारा आप उपाया। दूजा देवे जिया दान, जगत जोड़ी जोड़ जड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्दी वर, पूत सपूता मेल मिलाया। माता सीर बत्ती दन्द, पिता पूत वड्याईआ। साचे दर चढ़े चन्द, जगत होए रुशनाईआ। ख़ुशी करे बन्द बन्द, संसा रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत रोग ढाहे कंध, सुख सुख सहिज

सहिज समाईआ। निरगुण रूप निराकार, हरि हरि आप अख्वाया। सतिगुर रूप अपार, शब्दी शब्द धराया। भगतन मीत मुरार, नामा नाम दृढ़ाया। गुरमुखां मेल संसार, गुरमति इक्क जणाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग अन्धेरा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकल कल अख्वाया। हरि हरि रूप अपार, जोती अकल कल आप अख्वाया। हरि हरि रूप अपार, जोती जोत रुशनाईआ। सतिगुर शब्द अधार, पारब्रह्म जणाईआ। गुरमुखां चरन प्यार, एका बूझ बुझाईआ। मनमुख जीव गंवार, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता दानी सूरा सरबंग, एका एक अख्वाया। हरि हरि हरि भगवान, निरगुण रूप अपारया। सतिगुर दाता मेहरबान, आप आपणा नाउँ धरा रिहा। गुरमुखां देवे जिया दान, आत्म ब्रह्म जणा ल्या। मनमुख भुल्ले जीव नादान, भरमे गढ़ ना कोई तुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। कलिजुग जीव जगत नादान, माया मोह रखाईआ। गुरमुख साचे हरि हरि गाण, हरि नामे लिव लाईआ। सतिगुर पूरा वेखे मार ध्यान, आलस निन्दरा विच ना आईआ। हरिजन मेला दो जहान, हरि हरि साचा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि दाता बलवान, एका एकँकारया। सतिगुर पुरख सुल्तान, शाह शहाना आप अख्वा रिहा। गुरमुख सुघड़ स्सयान, घर साचे मंगल गा रिहा। मनमुख मुग्ध अंञान, हउमे रोग वधा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा मूल चुका रिहा। मनमुख जीव जगत अँध्यार, काम क्रोध हलकाया। गुरमुख बूझे गुर विचार, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। सतिगुर पूरा पावे सार, घर साचे मेल मिलाया। नर नरायण आप करतार, निरगुण जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख विखाया। हरि नरायण हरि करतार, एका एकँकारया। सतिगुर पूरा विच संसार, लक्ख चुरासी दए अधारया। गुरमुखां भरे नाम भण्डार, जगत तृष्ना मेट मिटा रिहा। मनमुखां मारे अन्तिम मारे मार, धर्म राए हथ्थ फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वंड वंडाया। मनमुख जीव आत्म अन्ध, जगत अन्धेरा छाया। गुरसिख गायण सुहागी छन्द, हरि हरि नाम ध्याया। सतिगुर पूरा सद बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जाया। हरि हरि लख़मी नरायण मुकंद, भगवन भगवान रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग क्रिया आप मिटाया। नर नरायण दीनां नाथ, एका जोत अकालया। सतिगुर पूरा सगला साथ, दीनां बंधप दीन दिआलया। गुरमुख सगल वसूरे जायण लाथ, तुट्टा जगत जंजालया। मनमुख कुछ ना आया हाथ, अन्त खाए जम कालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग

७२८ ०७

खेले खेल निरालया। मनमुख जीव रहे रो, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुखां दुरमति मैल धो, आप आपणा वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा अग्गे हो, देवे दरस हर घट थाँईंआ। पुरख अकाल अगम्म अथाह आपे वसे पुरीआं लोअ, गगन पताला आप समाईआ। हरी हरि हरि आपे वंड, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाया। सतिगुर पूरा वेखे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। गुरमुख नार ना होए रंड, कन्त सुहागी इक्क हंढाया। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोती नूर करे रुशनाया। जोती नूर हरि उपा, आपणा कर्म कमाया। सन्तन साजण मेल मिला, आप आपणा रंग रंगाया। राजन राज आप अख्वा, शाह सुल्तान वेस वटाया। देस माझन धाम सुहा, सम्बल नगरी डेरा लाया। गोबिन्द गुर दए वड्या, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा रूप वटा, आप आपणा नाउँ रखाया। वेद व्यासा गया लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाया। उच्चे टिल्ले डेरा ला, बैठा मुख छुपाया। सस्सा किला इक्क बणा, सतिगुर रूप समाया। उप्पर होड़ा दए लगा, निरगुण सरगुण वेख वखाया। जोती जोड़ा मेल मिला, शब्दी डंक वजाया। अस्व घोड़ा आप दौड़ा, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। दो जहानी पौड़ा इक्क लगा, एका मार्ग दए विखाया। चार वरनां बणाए भैण भ्रा, हउमे हँगता रोग गंवाया। कलिजुग नाता कूड़ा दए तुड़ा, थिर कोई रहिण ना पाया। सृष्ट सबाई एका अक्खर दए पढ़ा, नाम मन्त्र इक्क जणाया। एका मार्ग दए लगा, एका चन्द रिहा वखाया। एका कादर करता करीम आप अख्वा, बेऐब परवरदिगार नाम धराया। इक्क मुकामे हक्क ख़ुदाए दए वखा, हक्क हकीकत फोल फुलाया। एका कलमा दए पढ़ा, कायनात आप समझाया। गाइर्ती मन्त्र इक्क सिखा, एका वेद पुराण उपाया। शास्त्र सिमरत इक्क जणा, एका रूप दरसाया। एका इष्ट देव दए वखा, देवी देवा आप हो जाया। अलक्ख निरँजण आप आपणी जोत जगा, हर घट वेखे थाउँ थाया। खाणी बाणी डेरा ला, दूई द्वैती पर्दा दए चुकाया। मेरा तेरा भेव चुक्का, सञ्झ सवेरा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, चार वरनां अठारां बरनां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगाया। एका रंग हरि रंगा, चार वरन प्रनांयदा। जमना सुरसती वेखे गंगा, चरन द्वार इक्क सुहांयदा। अठसठ तीर्थ वज्जे मृदंगा, अनहद सेवा लांयदा। अलक्ख अगोचर सूरबीर सूरा सरबंगा, आप आपणा नाउँ रखांयदा। आकाश पताला गगन मण्डल लोक परलोक चौदां हट्ट पृथ्मी आकाश आप लँघा, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। चिट्टे अस्व कस्सया तंगा, सोलां कलीआं आसण पांयदा। जीव जन्त वेखे भुक्खा नंगा, नौ खण्ड फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती दीपक इक्क

जगांयदा। जोती दीपक इक्क उज्यारा, हरि साची जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई पावे सारा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। दहि दिशा मेटे अन्ध अँध्यारा, रवि ससि इक्क रुशनाईआ। पंचम मीता पंचम कर प्यारा, पंचम मोह चुकाईआ। गण गधंरब यख गायन सभ वारो वारा, दिवस रैण सेव कमाईआ। इन्द इन्द्रासन वस्सया बाहरा, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, बाशक तशका गलों लाहीआ। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़ा, चारों कुन्ट मुख भवाईआ। लोकमात लए अवतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चौदां तबकां वेखे पाड़ा, ख़लक ख़ुदाए फोल फुलाईआ। मंगी मंग मुहमन्दी यारा, अन्तिम पूर कराईआ। गोबिन्द मेला मीत मुरारा, घर साचे वज्जी वधाईआ। निहकलंक पुरख करतारा, आप आपणा नाउँ धराईआ। रूप रंग ना कोई विचारा, वरन गोत ना कोई रखाईआ। मात पिता घर ना सुत दुलारा, बत्ती दन्द ना सीर लगाईआ। रत्ती रत्त ना कोई रक्त बूंद गारा, इट्टां ना बणत कोई बणाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना किया त्यारा, ना कोई बणत बणाईआ। मन मति ना कोई आधारा, बुध बिबेक ना कोई वखाईआ। जोत निरँजण ना होए उज्यारा, ब्रह्म ब्रह्म ना कोई सरनाईआ। पारब्रह्म हरि लए अवतारा, आप आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप अख्वाईआ। निहकलंक पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। एका वेखे खेल तमाशा, सृष्ट सबाई खेल खिलांयदा। मात गर्भ ना आए दस दस मासा, जननी जन ना कोई रखांयदा। किसे तोल ना तुले तोले मासा, मण सेर ना कोई रखांयदा। भेव ना पायण पृथ्मी आकाशा, जल थल आप समांयदा। आपणे मन्दिर आपे करया वासा, सम्बल नगरी इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। नर नरायण मूर्त अकाल, निरभउ रूप समाया। प्रगट हो दीन दयाल, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे नैण वेख सच्ची धर्मसाल, साचे मन्दिर डेरा लाया। चौथे पद रिहा समाल, पंचम मेला सहिज सुभाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई वखाल, चार दिवार ना कोई रखाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण खेल निराल, दीपक जोत इक्क जगाया। गोबिन्द फल लगाए साचे डाल, अमृत मेवा दए खुआया। नानक निरगुण आपे पाल, नाम निधाना वेख विखाया। गुरमुख साचे बाल अंञान, आप आपणी गोद उठाया। शब्द जणाई धुर फ़रमाण, बोध अगाध आप सुणाया। एका धुनी राग सुणाए साचे कान, अनहद वेख विखाया। पंचम मेला मीत जहान, मेल मिलावा आप कराया। रिखी केस श्री भगवान, दर द्वारका दए सुहाया। सीता सुरती कर परवान, राम रामा घर वसाया। गुरमुख साचा चतुर सुजान, घर साचे मंगल गाया। पाया पुरख शाह सुल्तान, विछड़ कदे ना जाया। लेखा चुक्के विच जहान, आवण जावण पन्ध मुकाया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान,

ग़रीब निमाणे रिहा गले लगाया। सतिजुग झुलाए सति निशान, सत रंग आप वखाया। पंचम सीस सोहे ताज महान, पंचम मुक्खी उपाया। पंचम राग जोग सुल्तान, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। पंचम जोधा सूरबीर बलवान, पंचम चरन कँवल ध्यान रखाया। पंचम रखाए इक्क निशान, पंचम एका राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, शब्द डंक राउ रंक, एका एक रिहा सुणाया। शब्द डंका धुर दरगाह, हरि साचा आप वजांयदा। अगम्म अगम्मड़ा बेपरवाह, भेव कोई ना पांयदा। सृष्ट सबाई बण मलाह, लोकमात वेख वखांयदा। दर घर जपाए एका नाँ, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। चार वरनां बहाए एका थाँ, एका धर्म रखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवांयदा। आप उठाए फड़ फड़ बांह, दिवस रैण सेव कमांयदा। करनहारा सच न्याँ, साचे तख्त आप सुहांयदा। थिर घर बैठा एका थाँ, दूजा दर ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई आपे पिता माँ, पिता पूत आप हो जांयदा। मात पिता मीत सुत दुलारा, हरिजन हरि अख्वांयदा। भगतन मीता हो उज्यारा, सत लोक फेरा पांयदा। शब्दी शब्द धुन्कारा, नादी नाद वजांयदा। बाती दीप जोत उज्यारा, मन्दिर अन्दर करांयदा। खण्डा खड़ग तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड वरतांयदा। तीर कमान रसना चिल्ला एकँकारा, इक्क कमान खिचांयदा। पंज तत्त विकारा मारे मारा, बज़र कपाटी चीर चिरांयदा। जूठी झूठी मेटे धाड़ा, सच सुच्च इक्क दरसांयदा। सतिजुग तेरा सच अखाड़ा, घर साचे आप लगांयदा। दिवस सुहाए सतारां हाढ़ा, हरिसंगत मेल मिलांयदा। जगे जोत बहत्तर नाड़ा, आकाश प्रकाश करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेले खेल गुरमुख मेल जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण सगन मनांयदा।

* ५ कत्तक २०१५ बिक्रमी मेहर सिँघ दे घर कलकता *

अलक्ख गुरदेव नमो सति, नमो नमो निमस्कार। पारब्रह्म ब्रह्म उत्पत, ब्रह्मा विष्न शिव अधार। नाम बीजे साचे वत, लक्ख चुरासी वेख गुलज़ार। एका दात कमलापत, इष्ट देव सृष्ट संसार। जोती जोत सरूप हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल अपार। आदि शक्त जोत भवानी, अष्टभुज बौराया। नाम शक्त चण्ड निधानी, खण्ड बहिमंड फिराया। गदा चक्र तीर निशानी, संख नाम वजाया। आदि जुगादी खेले दो जहानी, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। निरगुण जोत जोत उज्यार, निराकार समाईआ। सरगुण निरगुण

खेल अपार, भेव कोई ना पाईआ। चण्ड प्रचण्ड खेल ब्रह्मण्ड लोकमात पसार, चार कुन्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। खड़ग खण्डा तेज कटार, उप्पर शाह रग मारे मार, धरत धवल वड्याईआ। सीस पग्ग धरनी धार, जगत जुग मिटे संसार, भगवत भगवती नाम वड्याईआ। अग्नी अग्ग मुख अन्गयार, त्रै त्रै लोआं रही साड़, ज्वाला जोत रुशनाईआ। सिँघ शेर हरि अस्वार, रूप अनूप सरगुण धार, नारी नर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्त आदि इष्ट आप आपणा वेख वखाईआ। आदि रूप अनभव प्रकाश, नूरो नूर समानया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, धरत धवल वेख विखानया। लक्ख चुरासी लेखा वेखे हड्ड नाड़ी मास, रक्त बूंद फोल फुलानया। भेव खुल्हाए पवन स्वास, रसना जिह्वा खोज खुजानया। आप आपणी पावे रास, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज होए प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शक्त रक्त वेस वटानया। शक्त रक्त हरि हरि, सरगुण रूप समाईआ। सरगुण खेल विच संसार, निरगुण मुख छुपाईआ। शस्त्र धुज अपर अपार, बस्त्र तन सजाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, बैठा बेपरवाहीआ। जल थल पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ सागर सिन्ध वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त हरि भगवन्त, आप आपणी जोत जगाईआ। जागरत जोत डगमगा, नैणां नैण श्रृंगारया। बाती दीवा इक्क टिका, अज्ञान अन्धेर मिटा ल्या। अमृत आत्म बूंद स्वांती इक्क पया, तृष्ना भुक्ख गंवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे जगत पूजा, भेव चुकाए एका दूजा, नैण खुल्हाए हरिजन तीजा, चौथे पद मिला रिहा। चौथे पद भगत वड्याई, भगवान मेल मिलाया। पंचम घर सहिज सुखदाई, हरि हरि मंगल गाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई विखाई, निरगुण सरगुण विच समाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण अबिनाशी करता अकाल मूर्त अूजनी रहित, आदि शक्त इक्क प्रकाश विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे ल्ए जगाया। जगत पुस्तक पूजा पाठ, ज्ञान ध्यान वड्याईआ। सृष्ट सबाई नाता अठसाठ, तीर्थ तट वेख वखाईआ। चारों कुन्ट गऊ घाट, गावत गावत रैण वहाईआ। नौ खण्ड जगत हाट, लक्ख चुरासी रही खुल्हाईआ। त्रिलोक आन बाट, आवण जावण रचन रचाईआ। बिन हरि साचे ना कोई चुकाए लहिणा देणा मस्तक माथ, जोत लिलाट ना करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा सखा सुहेला सदा सुहेला साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। आदि चुगादि जुग जुग गुरमुखां हरिभगतां हरिजनां देवे नाम दात, आप आपणी बूझ बुझाईआ। चरन कँवल उप्पर धवल राख, परम पुरख दया कमाईआ। आप बंधाए सच्चा नात, सच सुच्च सच समग्री झोली पाईआ। अन्दर मन्दिर आपे खोल्हे ताक, घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, दर घर हरि मन्दिर अन्दर वड़, उप्पर चोटी चढ़, महल्ल अटल दस्म दुआर हरि निरँकार जोत अगम्म अपार, सति सरूप शाहो भूप मेल मिलाईआ।

* ६ कत्तक २०१५ बिक्रमी मुखत्यार सिँघ दे घर कलकता *

निरगुण जोत हरि निरँकार, आदि पुरख अख्वाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अलक्ख अलक्खणा नाउँ धराईआ। जोती नूर कर उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। लोआं पुरीआं वेख विचार, आप आपणी बणत बणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर कर पसार, आप आपणा रंग रंगाईआ। जुग जुग मात लए अवतारा, रूप अनूप हरि दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण आप अख्वाईआ। आदि निरँजण हरि करतार, एका अंक समाया। खेले खेल अगम्म अपार, वेद कतेब भेव ना राया। दो जहानां पावे सार, मात पताल आकाश वेख विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आप आपणी कार कराया। करनहार हरि समरथ, आपणी कल वरतांयदा। सृष्ट सबाई चलाए रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। शब्द जणाई अकथना अकथ, बोध अगाध शब्द जणांयदा। लक्ख चुरासी दए मथ, नाम मधाना एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई वेख महल्ला, जोत सरूपी जोत जगांयदा। निर्मल जोती निरँकार, एका नूर रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लोकमात वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका अपर अपार, ब्रह्मण्डां खण्डां दए सुणाईआ। सेवक सेवा करे अपार, दिवस रैण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। पारब्रह्म हरि पुरख बिधाता, परम पुरख अख्वाया। खेले खेल इक्क इकांता, अकल कला अख्वाया। सृष्ट सबाई पिता माता, लक्ख चुरासी बाल उठाया। उत्तम रक्खे आपणी जाता, वरन बरन ना कोए रखाया। जिस जन देवे साची दाता, नाम पदार्थ झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटाया। आदि निरँजण हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाया। खेले खेल कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जोती जामा भेख वटाया । रूप अलक्ख अगम्म अपारा, मात पित ना किसे जाया। ना कोई सज्जण मीत मुरारा, बंधन बंध ना कोई बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। आपणा खेल खिलाए हरि भगवन्त, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। वेख वखाए जुगा जुगन्त, जुग जुग वड वड्याईआ। गुरमुख उठाए साचे सन्त, आप आपणी बूझ बुझाईआ।

मनमुखां माया पाए बेअन्त, गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, लोकमात करे रुशनाईआ। निरगुण जोती नूर अकाला, हरि हरि आप अख्वाया। दीनां बंधप दीन दयाला, हरि साजण मेल मिलाया। आवण जावण तोड़े जगत जंजाला, लक्ख चुरासी फंद कटाया। इक्क वखाए धर्मसाला, काया मन्दिर इक्क सुहाया। दीपक जोती जगे निराला, नाम बाती एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि नामा नाउँ वेख वखाया।

* ६ कत्तक २०१५ बिक्रमी हरभजन सिंघ दे घर कलकता *

धन्नभाग हरि पाया, अन्तिम मोख द्वार। जगत नेत्र दिस ना आया, आत्म अन्तर इक्क प्यार। काया खेड़ा वेख वखाया, आप आपणी किरपा धार। कर्म कुकर्मां लेख लिखाया, मानस मानुक्ख आप अधार। पूर्ब लहिणा झोली पाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म जन्म कर्म विचार। पूर्ब जन्म पूर्ब लहिणा, पूर्ब झोली पाईआ। पूर्ब दर्शन पाए नैणां, कर्म कुकर्म गणाईआ। लक्ख चुरासी लहिणा देणा, राए धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण वेख वखाईआ। पूर्ब जन्म मानस रासी, हरि हरि वेख वखांयदा। मानस जन्म पंडत कांसी, तिलक लिलाट लगांयदा। मन्दिर अन्दर बहि बहि खादा मासी, हरि हरि नदर ना आंयदा। पंज तत्त विकारा काया देही अन्त विनासी, धर्म राए दंड लगांयदा। नौ नौं नौ जन्म काग काग कुरलासी, कागी काग कुरलांयदा। अन्तिम मेला भगत उदासी, सन्तन वेख वखांयदा। सन्तन पूरी कर आसी, दर द्वार सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब जन्मां वेख वखांयदा। पूर्ब जन्म जगत नाता, हरि हरि आप बंधाया। साचे सन्त बख्शी एका दाता, अमृत जल मुख चुआया। कागी काग आप पछाता, नेत्र रो रो नीर वहाया। कवण मेटे अन्धेरी राता, कवण बंस रूप जणाया। कवण प्याए अमृत बूंद स्वांता, आवण जावण गेड़ कटाया। हरि शब्द जणाए बहु बहु भांता, आप आपणा राग अल़ाया। अन्तिम मेला कमलापाता, माणक मानस वेख वखाया। दरस दिखाए इक्क इकांता, एकंकरा रूप वटाया। आपे वेखे मार झाता, वेखणहार दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूर्ब लहिणा लिख्या लेख, धुर मस्तक वेख वखाया। धुर मस्तक लेखा हरि निरँकार, जीव जन्त पछानयां। निरगुण जोती कर उज्यार, वेखे खेल दो जहानयां। जगत नैण अन्ध अँध्यार, हरि हरि भेव कोई ना पानया। आत्म तृष्ना इक्क प्यार, एका मंग मंगानया। चरन कँवल जन

७३५

०७

वेखे ढहि पए द्वार, कर किरपा देवे मति हरि मेहरबानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब कर्मा वेख विखानया। पूर्ब कर्मा नाता जोड़, हरि साचा दया कमांयदा। इक्क चढ़ाए साचे घोड़, रथ रथवाही शब्द अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार कमांयदा। अगम्मड़ी कार हरि करतार, आपणी आप कराईआ । लेखे लाई हड्ड मास नाड़ी चम्म विच संसार, जो जन ढहि पए सरनाईआ। नौ नौं नौ जन्म उतरे पार, रंग राता रंगे रंग साचा माहीआ। कर्मी कर्म करे विचार, अमृत मुख खवाईआ। गावत गावत होए अधार, रसना जिह्वा हरि गुण गाईआ। पावत पावत मीत मुरार, पतित पुनीत कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र लोचण नैण अन्दर मन्दिर वेख वखाईआ। अन्दर मन्दिर साचा नेत्र, हरि हरि आप सुहाया। गुरमुख फुलवाड़ी काया महीना चेत्र, सच सुगंधी आप धराया। आपे मीत मुरारा मेतर, दर दरबारे फेरी पाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन लेखा हरि द्वार, मंगी मंग बण भिखार, कागी काग रूप वटाया। कागी काग हँसा बोल, आत्म रंग तरानयां। रंग मजीठी काया चोल, वेखे खेल श्री भगवानयां। नाम कंडे साचे तोल, देवे दाता दानी धुर फ़ुरमानयां। आपणा दर आपे खोल्ह, आपणे घर करे परवानयां। आपे माया ममता हउमे हँगता लए विरोल, सति सन्तोख इक्क विखानयां। साजण मीता इक्क अतीता दिवस रैण वसे कोल, आप आपणा भेख वटानया। शब्द अनादी धुन आत्मक अनहद वजाए ढोल, राग सुणाए साचे कानया। गहर गम्भीर देवे नाम शब्द अडोल, कर किरपा विच जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिरध जवानी अवस्था बाल, बाल जवान बेड़ा नेत्र नैण वखानया।

चरन धूढ़ हरि द्वार, हरिजन वड वड्याईआ। मंगे मंग बण भिखार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। नेत्र दरस अगम्म अपार, अन्तिम हरि लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बख्शणहार सच सरनाईआ। आपे पिता आपे माता, बालक अञ्याणे गोद उठांयदा। आपे देवणहारा नाम दाता, आप आपणा नाम जपांयदा। एका मेटे अन्धेरी राता, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अमृत आत्म प्याए बूंद स्वांता, अमृत आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, भगत भण्डार आप भरांयदा। नाम वस्त जगत अमोल, गुरमुख विरले पाईआ। अक्खर वक्खर शब्द बोल, दो अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। आप आपणा पर्दा खोल्ह, आप आपणा दर्शन पाईआ। पुरख अगम्मा बैठा कोल, दिवस रैण वेख वखाईआ। नाम मृदंगा वजाए ढोल, अनहद राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

७३५

०७

धर, जिस जन देवे नाम चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। चरन कँवल जन ध्यान, हरि हरि आप रखांयदा। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म वखांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, भुक्ख मिटांयदा। धुनी राग सुणाए कान, राग अनादी आपे गांयदा। जुग जुग होया जाणी जाण, घट घट डेरा लांयदा। सृष्ट सबाई सुंञ मसाण, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन कँवल कँवल चरन आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रत्ता हरि करतार, निज घर वेख वखांयदा। देवे मति जगत संसार, दर मन्दिर इक्क सुहांयदा। हउमे तृष्ना रोग निवार, हउमे हँगता गढ़ तुड़ांयदा। नाम देवे सच ख़ुमार, दिवस रैण इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, भगत भगवंना दो जहानां एका एक, एका मेल मिलांयदा। हरिजन हरि हरि पेख्या, पारब्रह्म करतार। जुग जुग कराए आपणा वेस्सया, आदि अन्ता एकँकार। सच सिँघासण नर नरेशिआ, रूप अनूपा अगम्म अपार। थिर घर बैठा लिखे लेख्या, गुणवन्ता गुण विचार। जोती शब्दी आप प्रवेस्सया, नज़र ना आए रूप करतार। सेवक सेवा लाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशया, लक्ख चुरासी करे ख़बरदार। जन भगतां करे बुध बिबेकया, देवे नाम अधार। चरन कँवल जन सच्ची टेकया, आत्म अन्तर इक्क प्यार। वेख वखाए धारी केस्सया, मूंड मुंडाए सच दरबार। नानक गोबिन्द दाता दस दस्मेस्सया, रामा कृष्ना रूप अपार। संग मुहम्मद लिखे लेख्या, मेल मिलावा चार यार। ईसा मूसा कर अदेस्सया, दोए जोड़ चरन निमस्कार। धर्म राए नेत्र पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण लाए पार। हरि सज्जण हरि रंग माणया, पाया परम पुरख करतार। एका दूजा भउ चुकानया, हउमे हँगता रोग निवार। तीजा नेत्र इक्क खुल्हानया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार। चौथे पद अन्त समाणया, घर मेला मीत मुरार। पंचम शब्द अनाहद बाणीआं, सुणे सुणाए अपर अपार। छप्पर छन्न ना कोई वखाणया, जोती नूर हरि उज्यार। सति पुरख सुल्तानया, अकाल मूर्त भेव न्यार। अट्ठां तत्तां विच ना आनया, मन मति बुध ना कोई सिंगार। नौ द्वार ना वेख विखानया, लक्ख चुरासी गई हार। दस्मे मेल श्री भगवानया, हरिजन मेला मीत मुरार। शब्द सिँघासण इक्क महानया, शब्द सिँघासण अपर अपार। आत्म सेजा आप विछानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साजण लाए पार, काया मन्दिर हरि द्वार हरि साचा आप सुहानया। दरस दान आत्म मंग, जो जन दर मंग मंगाईआ। दिवस रैण वसे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, नाम रंगण इक्क रंगाईआ। अमृत धार वहाए गंग, समरथ पुरख हथ्थ वड्याईआ। अंगीकार लाए अंग, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, आत्म दरसी दरस

दिखाईआ। आत्म दरस तृष्ना प्यास, हरिजन इक्क विखांयदा। निरगुण जोती कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। सतिनाम स्वास स्वास, रसना जिह्वा आप हिलांयदा। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, काया मण्डल मण्डप फेरा पांयदा। मानस जन्म करे रहिरास, बरन वरनी वेख वखांयदा। भगत जन दासी दास, आदि जुगादी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, घर साचे दरस दिखांयदा। साचे घर दरस अपार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। दीवा बाती इक्क उज्यार, एका आप जगाईआ। कमलापाती मीत मुरार, नर नरायण आप अख्वाईआ। अमृत बूंद स्वांती देवे ठंडी ठार, गुरमुखां दया कमाईआ। उत्तम जाति मंगे मंग संसार, जिस जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस दर द्वार, आत्म अन्तर इक्क प्यार, एका वेख वखाईआ। दरस नेत्र नैण हरि निरँकार, मिले मेल साक सज्जण पारब्रह्म गुर अवतारया। नाता तोड़े मात पित भाई भैण, सगला संग आप निभा रिहा। आप चुकाए लहिण देण, मानस मानुख लेखे ला रिहा। रसना किसे ना सके कहिण, जो जन स्वच्छ सरूपी दर्शन पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आत्म वर, नेत्र नैण दरस दिखा रिहा। दर्शन वेख नेत्र पेख, नैनण नैण संगारया। आप आपणा आपे वेख, आत्म ब्रह्म करे विचारया। पारब्रह्म प्रभ धरे भेख, लोकमात जोत उज्यारया। वेख विखाए धारी केस, मूंड मुंडाए मेल मिला रिहा। आपे दाता दानी दस दस्मेश, रामा कृष्ना आप अख्वा रिहा। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, दर दुआरे फेरी पा रिहा। आपे होए रिखी केश, जगत गवर्धन आप उठा रिहा। गुरमुख सज्जण मीत आपणे नेत्र आपे पेख, आप आपणा दरस दिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे भगती वर, नाम भण्डारा झोली पा रिहा। आत्म दरस सांतक सति, सति सरूप समाया। हरिजन दे समझावे मति, पूरन ब्रह्म जणाया। बीज बीजे साचे वत, फल फुलवाड़ी नाम लगाया। तन ना उब्बल रत्ती रत्त, माया ममता रहे ना राया। मेल मिलावा कमलापात, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाया। एका देवे सति सन्तोखी धीरज जत, ज्ञान ध्यान इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, दर दर दर्शन दिखाईआ। दर्शन पेखत हरि करतार, आत्म तृष्न बुझाईआ। हउमे रोग जगत निवार, एका दूजा भेव चुकाईआ। पंचम लेख अगम्म अपार, शब्दी शब्द चलाईआ। अबिनाशी करता एकँकार, अकल कला वरताईआ। आदि शक्त रूप अपार, दर्द दुःख भय भंजन नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, नेत्र अंजन एका पाईआ। नेत्र अंजन नाम ज्ञाना, हरि हरि जन हरि हरि पाया। एका देवे धुर फ़रमाणा,

बोध अगाधी शब्द जणाया। आत्म अन्तर इक्क तराना, अनहद ताल वजाया। पंचम सखीआं मेल जहानां, साचा मंगल गाया। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाना, आप आपणी दया कमाया। आत्म सेजा वेख वखाना, प्रभ बैठा आसण लाया। जोती नूर डगमगाना, दिवस रैण करे रुशनाया। गुरमुख साचे विच समाना, वर घर साचा एका पाया। चारों कुन्ट श्री भगवाना, नर नरायण आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, दर दर दर्शन सेव कमाया। हरि दर्शन घर द्वार, थिर घर आप वसाया। उच्च अगम्म बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर रखाया। ख़लक ख़ुदाई सांझा यार, ख़ालक खलक विच समाया। इक्क इकल्ला एकँकार, वेस अनेका रिहा वटाया। राम रामा कर प्यार, भगत भगवन्त वेख वखाया। काहना कृष्ना मीत मुरार, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आप अख्वाया। नानक गोबिन्द पावे सार, एका जोत करे रुशनाया । सति पुरख निरँजण खेल अपार, भेव कोई ना पाया। अकाल मूर्त हो त्यार, आकाश प्रकाश कराया। अजूनी रहित आवे जावे ना मरे ना जम्मे, मरन जन्म ना कोई रखाया। गर्भ ना आए ल्या वास, दस दस मास ना डेरा लाया। शब्दी डंक अपर अपार, जुग जुग आपणा रिहा वजाया। साधां सन्तां करे ख़बरदार, जीवां जन्तां रिहा समझाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, लोआं पुरीआं फेरा पाया। गुरमुख साचे ल्ए उभार, साची वस्त झोली पाया। निर्मल बाती जोती कर उज्यार, डूँघी भवरी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे साचा घर, घर साचे हरिजन दर्शन पाया। साचा घर आदि निरँजण, एका एक रखाया। जन भगतां मेला साचे सज्जण, साजण मीत आप हो जाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, हउमे रोग रहिण ना पाया। अनहद ताल तलवाड़े वज्जण, मन्दिर अन्दर खोज खुजाया। चरन धूढ़ जिस जन बख्शे साचा मजन, दुरमति मैल गंवाया। काया दिसाए मक्का काअबा हाजी हजन, दो दो आबा वेख विखाया। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े चड़या ताजन, गगन पतालां फेरा पाया। शाहो भूप वड राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वाया। आपे रचया आपणा काजा, आपे वेख वखाया। शब्द अगम्मी मारे अवाज़ा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे आपणा वर, दर दर्शन सोई पाया। पाया दरस लोचण नैण मुँधार, हरि हरि वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पाए सार, हर घट बैठा आसण लाईआ। गोबिन्द साजण दए हुलार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जीव जन्त सुत्ते पैर पसार, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोई उज्यार, निरगुण नूर ना वेख वखाईआ। सरगुण मेला काया मोह प्यार, पंज तत्त करी कुड़माईआ। गुर का शब्द ना मीत मुरार, अन्तर लिव ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

७३८
०७

आपणी किरपा कर, जिस जन देवे भगती वर, साचे मार्ग लाईआ। आत्म दर्शन नाम अनमुल्ल, नर हरि झोली पांयदा। गुरमुख साचे लाए फुल्ल, फल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। वेखणहार साची कुल, कुलवन्ता नाउँ धरांयदा। लक्ख चुरासी पायण हार फुल्ल, कलिजुग क्रिया ना कोई रखांयदा। जो जन दर दुआरे आए भुल्ल, आप आपणी दया कमांयदा। साधां सन्तां अन्दर मन्दिर जाए मौल, कँवल नाभ आप उलटांयदा। देवे वड्याई उप्पर धवल, धरत धवल आप सुहांयदा। मेल मिलावा साँवल सँवल, साँवल सुन्दर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा आत्म ताक, गुरमुख विरला मात खुल्हांयदा। पुरख अगम्मा वेखे मार ध्यान, अन्दर मन्दिर डेरा लांयदा। आपे होए पाकी पाक, नूर इलाही आप अख्वांयदा। एका अस्व घोड़ा राक, धुरदरगाही आप दौड़ांयदा। पंचम विकारा नकेल पाए नाक, दर द्वार रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे साचा घर, घर साचे सो जन बहांयदा। साचे घर साचा शब्द शृंगार, हरि साचा आप कराईआ। पंज तत्त ना कोई आकार, रक्त बूंद ना कोई जणाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई प्यार, मन मति बुध ना कोई वड्याईआ। नौ द्वार ना कोई किवाड़, ना कोई वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, इक्क विखाए धर्म अखाड़, हरि बैठा बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द साचा लाड़, आप आपणा थान सुहाईआ। गुरमुखां फिरे पिछे अगाड़, दर दर घर घर फेरा पाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, माया मोह ना राईआ। सच सुच्च निज घर आत्म देवे वाड़, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, दर दर्शन सो जन पाईआ। दर्शन पा सोभावन्त, आत्म ब्रह्म जणाईआ। हरि हरि मेला साचे सन्त, सन्त कन्त एका रंग रंगाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, एका एक पूरन पछानयां। हरिजन नाता श्री भगवन्त, जोड़ जुड़ाए दो जहानयां। मेल मिलावा आदि अन्त, आदि अन्त इक्क विखानयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, मेल मिलाए श्री भगवानया।

७३६
०७

* ६ कत्तक २०१५ बिक्रमी जगन्नाथ पुरी मन्दिर शब्द लिखाए *

अकथ कथा हरि मेहरवान, हरि हरि आप रखाईआ। आदि अन्त श्री भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दो

जहानां वेख विखाण, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड खेल खिलाईआ। जेरज अंड कर पछाण, गुरमुख साचे लए जगाईआ। उत्भुज सेत्ज कर परवान, आप आपणे चरन छुहाईआ। निरगुण सरगुण खेल महान, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्त वखाए इक्क निशान, आदि पुरख निरँजण आप बुझाईआ। सतिजुग त्रेता रूप महान, द्वापर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि रघुराईआ। इक्क इकल्ला दीन दयाला, एका एकँकारया। जुग जुग खेले खेल निराला, आदि अन्त इक्क अवतारया। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाला, भेव कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। आपे हरि हरि खेल खिलंदड़ा, आपे वेख विखाए। आपे भेखी भेख वटंदड़ा, भेखाधारी नाम धराए। आपे जुग जुग धार चलंदड़ा, आपे मेट मिटाए। आपे मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदवाले धाम रचन्दड़ा, आपे लेखे लाए। आपे रूप अनूप करंदड़ा, शाहो भूप भेव ना राए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमाए। आदि पुरख अबिनाशी करता, करनहार अख्वाया। सृष्ट सबाई वेखे धरनी धरत, धवल सुहाया। जाणे भेव लोआं पुरीआं दर दर घर घर, दर दर घर घर बैठा वेख विखाए। खेले खेल नारी नर, नर नरायण रूप वटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाए। खेलणहार हरि निरँकारा, एका एकँकारया। कलिजुग तेरी धार वखाना, रूप अनूप विच संसारया। काहना कृष्ना जोत महाना, जोती जोत उज्यारया। वल छल सृष्ट सुहाना, जीव जन्त वेख वखा रया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवी देवा रूप वटा रिहा। आत्म आत्मा वासदेव, निरगुण हरि निरंकारया। पारब्रह्म अलक्ख अभेव, वेद कतेब भेव कोई ना पा रिहा। आपे जाणे आपणी पूजा सेव, आप आपणी सेव कमा रिहा। आपे वसे निहचल धाम निहकेव, निरगुण सरगुण वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचा रिहा। रचनहार हरि रघुनाथा, एका एक अख्वांयदा। आप चलाए आपणा राथा, रथ रथवाही आप हो जांयदा। प्रगट हो त्रिलोकी नाथा, त्रैलोकां वेख वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव गाइन गाथा, करोड़ तेतीसा रसन अल्लांयदा। राज राजान शाह सुल्तान निउँ निउँ टेकन माथा, सरन सरनाई इक्क वखांयदा। समरथ कला आपे समराथा, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम धरांयदा। आप आपणा नाम धरा, आपणी कला वरताईआ। जज्जाः जग गया समा, जागरत दिस ना आईआ। गग्गाः गोबिन्द वेस वटा, रूप रेख ना राईआ। नन्नाः निरगुण फेरी पा, नर हरि वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी लग्न लगाईआ। नन्नाः नाम

निरगुण धार, नर हरि आप उपाईआ। थथ्था: थिर घर बैठ दरबार, खेले खेल हर घट थाँईआ। जगन्नाथ जगत भिखार, दर दर फेरा पाईआ। बलदेव सुभद्रा कृष्न मुरार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। लहिणा देणा विच संसार, लोकमात वेख वखाईआ। जीव जोत जगत अधार, दे मति समझाईआ। नारी नर ना होए ख्वार, नारद मुंन वेख वखाईआ। सुखदेव बोले कर प्यार, ब्रह्म सलोक चार जणाईआ। बारां अक्खर बन्ने धार, द्वापर वड वड्याईआ। कलिजुग कूड़ा वेख पसार, कूड़ा टिक्का काली मस्तक छाहीआ। आप आपणे नैण उग्घाड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत क्रिया वेख वखाईआ। जगत क्रिया चार जुग, हरि नाता जोड़ जुड़ाया। सिल पूजस पाहन बुत्त, दर दरवेश वेख वखाया। करे भेख अबिनाशी रूप, आप आपणा भेख वटाया। आप अपाया आपणा सुत्त, आपे दे मति समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम डेरा लाया। आपणा सुत दुलार, धर्मी धर्म जैकारया। खेले खेल अगम्म अपार, पंडत पांधा भेव कोई ना पा रिहा। राज राजान सुत्ते पैर पसार, आत्म ब्रह्म ज्ञान ना कोई वखा ल्या। आदि निरँजण वेखे मार ध्यान, दर द्वार इक्क सुहा रिहा। जोत निरँजण मेहरवान, भुल्ल भुलावा आप करा रिहा। भगत भगती कर परवान, भगवान दरस दिखा रिहा। इक्क वखाए सच निशान, त्रै त्रै वेस वटा ल्या। एकँकारा रंग महान, ओंकारा संग रखा ल्या। शब्द शब्द जैकार, त्रै त्रै लोक वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा बंधन पा रिहा। जगन्नाथ करया गुर मीता, परम पुरख वड्याईआ। सेवक सेवा लाए रामा सीता, काहना कृष्ना वेख वखाईआ। लेखा जाणे अठारां ध्याए गीता, पुराण अठारां फोल फुलाईआ। रिख मुन वेख अतीता, ब्रह्म ब्रह्म फोल फुलाईआ। वासदेव हस्त कीटा, ऊँच नीच समाईआ। करे खेल इक्क अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां मुख रस लगाए मीठा, मनमुक्ख होए हलकाईआ। कलिजुग काया कौड़ा रीठा, मिट्ठा फल ना कोई खवाईआ। आपणा मन ना किसे जीता, जूठा झूठा मस्तक तिलक लगाईआ। नाम निधान किसे ना पीता, आत्म अतीता ना कोई जणाईआ। हरि हरि मिल्या ना साचा मीता, घर घर बैठे टल्लीआं रहे खड़काईआ। आप अपरम्पर पतित पुनीता, भेखाधारी बावण रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी परखणहारा नीता, इक्क ज्ञान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका बूझ शब्द ज्ञान, हरिजन आप जणांयदा। वेख वखाए मार ध्यान, नेत्र इक्क खुल्हांयदा। एका एक श्री भगवान, वरन बरन ना कोई जणांयदा। धर्म झुलाए इक्क निशान, दो जहाना वेख वखांयदा। चौदां लोकां हरि प्रधान, चौदां हट्ट खुल्हांयदा। पुरख अगम्मा हरि मेहरबान, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, वेखणहारा दर दर, मन्दिर मट्ठ शिवदवाला दीना बंधप दीन दयाला, गुर गोपाला आप आपणा मेल मिलांयदा। जगत मट्ठ कर त्यार, कलिजुग बणत बणाईआ। चरन रखाए अठसठ, हरि वड्डी वड्याईआ। करोड़ तेतीसा कर इक्ट्ठ, अन्दर मन्दिर बंधन पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव गणपति गणेशा वेखण नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमाईआ। रवि ससि छड्डया हठ, बैठै मुख छुपाईआ। धर्म राए बन्ने गट्ठ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर इक्ट्ठ, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत क्रिया बन्द कराईआ। कलिजुग क्रिया जगत पसार, हरि साचा वेख वखांयदा। मन्दिर मट्ठ कर त्यार, अन्दर मन्दिर डेरा लांयदा। नठ्ठ नठ्ठ वेख द्वार, नानक निरगुण फेरा पांयदा। मंगी मंग मट्ठ ढहि द्वार, राजस तामस सांतक लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द इक्क ज्ञान, एका मन्त्र हरि भगवान, एका तीर इक्क निशान, एका चिल्ले आप चढ़ांयदा। नानक गुर जगत त्याग, निरगुण विच समाया। आए चल बण भिखार, वेस अनेका इक्क कराया। पंडत पांधे मारे मार, भेव अभेदा भेव छुपाया। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण चारे दिशां विचार, पूर्ब डेरा लाया। आप आपणी किरपा धार, नेत्र नैण आप खुल्हाया। एका वेखे मीत मुरार, सृष्ट सबाई कूड़ कूड़ा धन्दा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। नानक गुर शब्द वरतार, एका शब्द जणाईआ। सारंग बोले निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण वेख वखाईआ। मट्ठ दवाला ख़बरदार, मन्दिर अन्दर पए दुहाईआ। राज राजान चरन द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर गुर मेहरवान, आप आपणी दया कमाईआ। अन्दर बाहर एको जाण, एका रंग समाईआ। घट घट वेख श्री भगवान, दे मति रिहा समझाईआ। काया मन्दिर सच मकान, घर बैठा बेपरवाहीआ। उत्तर दिशा कर प्रधान, आप आपणा चरन कढाईआ। वेखे राह दो जहान, आप आपणा मुख सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दित्ता वर, एका ताल वजाईआ। शब्द हरि जगत मलाह, नानक मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण इक्क सलाह, एका रूप समांयदा। एका अक्खर एका नाउँ, एका जाप जपांयदा। एका पिता एका माँ, सृष्ट सबाई इक्क रखांयदा। एका देवणहारा ठंडी छाँ, एका धार चलांयदा। नानक निरगुण वेखे थाँ थाँ, हर घट हरि हरि नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द जणांयदा। नानक निरगुण जैकार, शब्दी शब्द जणाया। तेरा मेरा इक्क प्यार, एका रूप समाया। तेरा चरन सच्चा दरबार, थिर घर इक्क विखाया। तेरा तेरी पावे सार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। निहकलंक लए अवतार, जोती नूर दरसाया। जोती खिच ल्याए चरन द्वार, पूजा पाठ ना कोई जणाया। करोड़ तेतीसा रोवे ज़ारो ज़ार, ब्रह्मा विष्न शिव

कुरलाया। सेवक लाया मन्दिर मट्ठ ना कोई धार, पंडत पांधा ना कोई जणाया। अठसठ लेखा चुक्के अगम्म अपार, नठ्ठ नठ्ठ फेरा पाया। तट किनारा ना कोई विचार, सर सरोवर ना कोए नुहाया। जोत लट लट लट जगे करतार, निरगुण नर नरायण हरि फेरा पाया। घट घट मेला मीत मुरार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाया। दुरमति मैल कट्ट कट्ट, हरिजन साचे वेख वखाया। नेत्र लोचण दस्से धीरज साचा जत, चरन कँवल सति सन्तोख वखाया। गुरमति देवे साची मति, झूठी रत्त रहे ना राया। एका एक मिलावा कमलापति, नारी कन्ता रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरा भेख, आपे वेखे वेखणहार दिस किसे ना आया। मट्ठ दवाला जगत मन्दिर, हरि हरि जोत खिचाईआ। जागरत जोती रहे ना किसे अन्दर, पंडत पांधा ना कोई वड्याईआ। दस्म दुआरी मारे जन्दर, ना कोई खोल्हे खोल्ह खुल्हाईआ। नौ दुआरे नच्चे बन्दर, हरि कलन्दर आप नचाईआ। बीस बीसा आपे करे कराए खण्डर, जगत ढेर ना कोए उठाईआ। लेखा चुकाए बिक्रमी बीस सौ पन्दरां अन्दरे अन्दर, भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ।

७४३ ०७

* १६ कत्तक २०१५ बिक्रमी लछमन कुण्ड रामेश्वरम श्री राम चन्द्र जी *

एकँकार पुरख अबिनाश, हरि हरि रूप समाया। आदि पुरख जोत प्रकाश, आदि निरँजण नाउँ धराया। अकल कला कल खेल तमाश, अकाल मूर्त सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अजूनी रहित नाम धराया। एकँकार पुरख अनादि, पारब्रह्म बेअन्ता। लेखा जाणे बोध अगाध, आदि जुगादि आदिन अन्ता। आप आपणे विच रहे विस्माद, आप आपणा भेव खुलंता। आप आपणी रक्खे दाद, आप आपणी भेट चड़ंता। आप आपणा आपे अराध, आप आपणा थान सुहंता। आप आपणा साधन साध, आप आपणा जोग करंता। आप आपणा आपे लाध, आप आपणा रूप वखंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर हरि भगवन्ता। एकँकार पुरख भगवाना, पारब्रह्म अख्वाया। आदि अन्त इक्क निशाना, एका मार्ग वेख वखाया। एका धाम भूम अस्थाना, अगम्म अगम्मड़े डेरा लाया। जोधा बीर इक्क सुल्ताना, राज राजान इक्क अख्वाया। रूप रंग ना कोए वखाना, अनभव प्रकाश समाया। खेले खेल दो जहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। एकँकार इक्क इकल्ला, अकल कला समाईआ। एका वस्सया सच महल्ला, दूसर दर ना कोई सहाईआ। आपणी जोती आपे रला, जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, एकँकारा ओअँ आप हो जाईआ। ओअँ रूप पुरख अबिनाश, रेख रंग ना राया। ना कोई पवण ना स्वास, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। आवण जावण ना कोई लक्ख चुरासी वास, बंधन बंध ना कोई बंधाया। देवत देव ब्रह्मा विष्न शिव ना दासन दास, द्वार पाल ना कोई रखाया। ना कोई पृथ्मी ना आकास, गगन मण्डल ना कोई सहाया। जोती जोत जोत अबिनाश, आदि अन्त आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखाया। ओअँ करता हरि निरँकार, नर निरवैर समाया। निरगुण रूप पसर पसार, परम पुरख अख्वाया। सति सरूप साची धार, सति सति वेस वटाया। मितगत ना कोई विचार, रत्ती रत्त ना कोई वखाया। अबिनाशी अचुत्त खेल अपार, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाया। ओअँ राम रंग ना रेख्या, निरगुण निरगुण ओंकारया। सति पुरख निरँजण साचा भेख्या, शब्द हँ आप उपा रिहा। हँ ब्रह्म करया वेस्सया, पारब्रह्म भेव न्यारया। आप आपणा कर प्रवेसा, निरगुण जोती जोत उज्यारया। आपणी अग्नी आप उपजाए शिव महेषा, शंकर बरन ना कोई जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार चला रिहा। शिव शंकर आप उपा, मस्तक वेख वखाया। त्रै त्रै लेखा मेट मिटा, त्रै त्रै धार बंधाया। पंज तत्त तत्त सुहा, नाम नाम चोला पाया। अंगी अंग आप करा, रंगन तन छुहाया। रंगण रंग इक्क रंगा, रंग चलूल चढ़ाया। दर भिखारी आप जणा, एका शब्द अलाया। मंगे भिख्या अग्गे बेपरवाह, दोए जोड़ सीस झुकाया। करनहारा सच न्याँ, आप आपणा रिहा कराया। तेरा तेरी पकड़ी बांह, लक्ख चुरासी झोली पाया। वेख वखाए साचा थाँ, थिर घर डेरा लाया। करे कराए आप न्याँ, निज घर वेख वखाया। जुगा जुगन्ता देवे ठंडी छाँ, चार चार पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलाया। ब्रह्मे वस्त हरि हरि घत्त, शिव शिव आप उपजाईआ। एका जोती नूर लट लट, काया मट सहाईआ। आपणी मैल आपे कट्ट, पतित पुनीत आप हो जाईआ। आप पहनाए शब्द पट्ट, बस्त्र इक्क सुहाईआ। लेखा चुकाए आन बाट, मात गर्भ ना कोए तकाईआ। इक्क सुहाया साचा हट्ट, एका दर खुल्हाईआ। खेले खेल नटूआ नट, स्वांगी स्वांग वरताईआ। पारब्रह्म प्रभ लग्गा फट्ट, दो दो धार वखाईआ। आपणा अमृत आपे झट, आपे सिंच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। आपणी जोती आपे धार, आपणा आप सुहाया। लक्ख चुरासी जीव उभार, गोदी गोद बहाया। अन्तिम सन्धया जै जै जैकार, पूजस पूज वखाया। एका रूप आप करतार, अनूप रूप दरसाया। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सिँघासण वेख वखाया। ब्रह्मा शिव सेवादार, आप आपणी रचन रचाया।

अगम्म अगोचर अलक्ख अपार, अलक्ख निरँजण भेव ना राया। होए प्रतक्ख हर घट रूप अपर अपार, आप आपणा वेस वटाया। चतुर्भुज खेल न्यार, दहि दिशा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाया। अगम्म अथाह जोत निरँकार, निरगुण रूप समा ल्या। आप आपणा बल आपे धार, आपे खेल करे निरालया। आप आपणा कर उपकार, आप आपणी करे प्रितपालया। आप आपणा लए संभाल, आप आपणा वेख वखा ल्या। आप आपणा कर तन श्रृंगार, पंज तत्त ना रूप वटा ल्या। मित गति ना कोई विचार, लेखा लिख्त विच ना आ रिहा। लोआं पुरीआं पसर पसार, गगन पताला डेरा ला ल्या। समुंद सागर डूँघी धार, गहर गम्भीर समा ल्या। सेवक सेवा अपर अपार, आप आपणा रंग रंगा ल्या। आपणी जोती आपे धर, करता पुरख नाउँ धरा ल्या। लेखा लिख ना सके वेद चार, ब्रह्मा भेव ना पा ल्या। वेद व्यासा गया हार, पुराण अठारां होए खाल्या। मनुआ रोवे ज़ारो ज़ार, शस्त्र सिमरत कढ्ढे दवाल्या। अञ्जील कुराना करन विचार, अगम्म अगम्मड़ा दिस ना आ रिहा। नानक लेखा अपर अपार, बेअन्त बेअन्त बेअन्त दर सुणा ल्या। अर्जन एका शब्द अधार, एका मुख सलाह ल्या। गोबिन्द ढहि पया द्वार, हरि हरि भेव सदा निरालया। जोत अकाली जगे अपार, नूरो नूर नुरानया। आपे खेले खेल सरकार, सच तख्त शाहो सुल्तानया। आदि पुरख एका एकँकार, अकल कला अख्वानया। भेख रेख ना कोई धार, ना कोई रूप वटानया। आपे बासक हो अपार, आपे आपणा नाउँ धरानया। आपे मुख सहँसर खोल्ह उग्घाड़, दो सहँसर जेहवा आप हिलानया। आपे सुत्ता पैर पसार, आप आपणा दर सुहानया। आप आपणा वेख करे विचार, जोधा बीर वड बलवानया। आदि पुरख नर निरँकार, रूप रेख ना कोई विखानया। विश्व रूप अपर अपार, भगवन भगवन खेल खिलानया। विष्नूं भगवान जोत आकार, जोती जोत समानया। आदि अन्त कर पसार, सागर धार इक्क वखानया। जल जल बीज कर आकार, धरत धवल सुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता करनहार, खेले खेल आप महानया। करता करनहार समरथ, समरथ पुरख अख्वाया। आपणी महिमा जाणे अकथ, वेद कतेब भेव ना राया। लिख लिख गए थक्क, लिख्या लिख ना सके कोई राया। महल्ल अटल उच्च मुनार, चढ़ चढ़ गए अक्क, निरगुण निरगुण निरगुण दिस ना आया तीर्थ तट्टां लक्ख चुरासी पाणी रहे झट्ट, हरि हरि रूप ना कोई वखाया। जुगा जुगन्तर खेले खेल नटूआ नट, आप आपणा सांग वरताया। सतिजुग तेरा खेल हरि हरि मेल, मेल मिलावा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अनादी एका नाद वजाया। एका नाद हरि करतार, आपणा आप वजांयदा। जोती धुन शब्द प्यार, शब्दी राग इक्क सुणांयदा। लोआं पुरीआं एका धार, ब्रह्मण्डां

खण्डां वेख वखांयदा। एकँकार कर पसार, ओअँ रूप समांयदा। सो पुरख निरँजण सच प्यार, हँ ब्रह्म इक्क सुणांयदा। त्तत्व तत्त कर प्यार, रत्ती रत जणांयदा। चरन कँवल नित खेल अपार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। आत्म नाम बीज बीजे साचे वत, फुल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। आदि जुगादी कमलापात, कन्त कन्तूहल नाम धरांयदा। सतिजुग साचा वेखे पक्ख, आप आपणा खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। सतिजुग साचे साची धार, सति पुरख आप चलाईआ। एकँकारा कर पसार, ओंकारा रूप समाईआ। सोहँ धारा हरि निरँकार, हरि निरँकार साचे सच वड्याईआ। नाम सति अपर अपार, निरगुण विच टिकाईआ। अकाल मूर्त भेव न्यार, दिस किसे ना आईआ। खेले खेल विच संसार, धरत धवल सुहाईआ। धरनी धरत कर प्यार, कँवल कँवला इक्क उपाईआ। एका मीत इक्क मुरार, एका नाम वड्याईआ। एका शब्द इक्क कटार, एका हथ्थ उठाईआ। एका खण्डा दो दो धार, दो जहानां लए हिलाईआ। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, आदिन अन्ता इक्क रघुराईआ। वेस अनेका कर अपार, लोकमात आवे कर कर धाईआ। भगत भगवन्त मेल अपार, साधां सन्तां लए जगाईआ। जग नाता बंधन चार, चारे कुन्टां लए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जुग त्रेता त्रिया वेस, त्रैगुण रूप समाया। आप आपणा करया दरस, आप आपणा मुख छुपाया। आप आपणे रक्खे खुल्ह्ड़े केस, मुच्छ दाढ़ी ना कोई जणाया। आप आपणा वेख हमेश, इष्ट देव गुर मनाया। वशिष्ट मुन शाहो सबेश, शिव शंकर मूल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेव खुल्हाया। खेले खेल हरि हरि राम, नाम राम वड्याईआ। भगत भगवन्त प्याया एका जाम, एका तृष्न बुझाईआ। इक्क खवाया साचा ताम, भुक्ख रहे ना राईआ। आपे पूरन करनहारा काम, आपे खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता अपरम्पर स्वामी आदि निरँजण अलक्ख अलक्खणा लेख ना राईआ। लिख लिख शास्त्र पुराण, जुग जुग लेख लिखांयदा। भेद अभेद हरि भगवान, दिस किसे ना आंयदा। अछल अछल्ल विच जहान, आप आपणी खेल खलांयदा। माता पिता सुत दुलार, बंधन बंधप आप रखांयदा। सरगुण रूप कर आकार, निरगुण डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रिया तेरा वेख वखांयदा। प्रभ अबिनाशी कर प्यार, जोती नूर कर उज्यार, आप आपणा रंग रंगाईआ। आपणा अंग आपे कट्ट, आपणी जोत जगाईआ। पंज तत्त पए भट्ठ, अट्ठ अट्ठ रहिण ना पाईआ। काया गढ़ साचा हट्ट, साचा धाम सुहाईआ। एका जोती लट लट, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आप सुहाया। साचा दर आपे लेख लिखाया,

आपणे भाणे आपे रक्ख, आपे वेख वखांयदा। आपे भाण्डे करे सक्ख, आपे आप भरांयदा। आपे प्रगट हो प्रतक्ख, आप आपणी चलत चलांयदा। आपे वसेरा करे कुली कक्ख, मन्दिर महल्ल अटल, आपे डेरा लांयदा। आप आपणा करे वक्ख, आप आपणे विच समांयदा। आप आपणी वस्त देवे वथ्थ, आप आपणी झोली डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा आप प्रनांयदा। आपणा आप आप प्रना, आपणी दया कमाईआ। आप जणाए आपणा नाँ, आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणा रखाए आपणा थाँ, नगर खेड़ा ना कोई वसाईआ। आपे वेखे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। आप आपणा खेले खेल, आपणी दया कमांयदा। आपे सीता करे मेहर, आपे साचा संग निभांयदा। आपे वसे रंग नवेल, आपे घट घट डेरा लांयदा। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेल, सचखण्ड आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत लाए तनक जनक सपुत्री आपे वेख, राम रामा आप प्रनाया। चरन कँवल वसी कोली, दिवस रैण सेव कमाईआ। जगत जागत वज्जी बोली, घर बाहर तजाईआ। आपणा भेव आपे रिहा खोल्ही, मुख पर्दा एका पाईआ। साचे कंडे नाम तोली, राम नामा वणज कराईआ। दर दरवाज़ा गया खोल्ही, आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाईआ। आपे सीता राम मौली, राम रामा रूप समाईआ। साचा तन्द बद्धा मौली, लछमण गंढु बंधाईआ। दूसर कोई ना सके खोल्ही, ना कोई हथ्थ छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता तेरा त्रिया वेस, आपे फेरा पाईआ। त्रेता वेस कर अपार, आपणा खेल खलाया। आपे राम रूप हो अवतार, आपे गवर्धन डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे फड़ तीर कमान, शस्त्रधारी नाम धराया। आपे जोधा सूरबीर बलवान, आप आपणा वेख वखाया। आपे आपणा वेखे मार ध्यान, आपे चरन कँवल आपणा आप ध्यान लगाया। आप आपणे बैठ बिबान, हरि का शब्द सुणे दिवस रैण सुणाया। त्रेता तेरी करन कल्यान, राम रामा रूप वटाया। दूसर दर वेख महान, विष्नूं वंसी खेल खलाया। रावण लंका जीव शैतान, शंकर बरन इक्क जणाया। वल छल खेल निधान, आपणी कल वरताया। आया दर बण भिखार, भेखाधारी रूप वटाया। सति सतिवन्ती इक्क अधार, आपणे कंध उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मृगनैणां मृगछाला मृग मृगावली भेव ना राया। आपे कंध आप उठा, आपे ल्ए अंगड़ाईआ। जट जटाऊ रिहा ढाह, आपणा बल वखाईआ। रावण रेख ना सके कोई मिटा, राम रामे वड वड्याईआ। दर दर सुहञ्जणा इक्क करा, दर आपणे लेख जगाईआ। इक्क नगारा ल्या वजा, सृष्ट सबाई रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता तेरा त्रिया वेस तेरे दर

वेख वखाया। राम रूप कर अपार, आपणी खेल खलांयदा। लहिणा देणा खेल अपार, शाहो भूप वेख वखांयदा। अंगद अंग अंगीकार, बाली सुत उपजांयदा। मंगी मंग धुर दरबार, त्रेता झोली पांयदा। आपे वेखे हो त्यार, दो जहानां फेरी पांयदा। मात पूत इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा त्रिया वेस, त्रैगुण रंग रंगांयदा। त्रैगुण तेरा नाता जोड़, हरि साचे खेल खिलाया। पंज तत्त विकारा चढ़या आपणे घोड़, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। दहि दिशा वेखे दौड़ दौड़, चारों कुन्ट फेरा पाया। रस मिट्ठा होया कौड़, रसना रस ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। आपणा खेल आपे कर, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी करनी आपे फड़, आपे फोल फुलाईआ। अपणी धरनी आपे वेखे खड़, धरत धवल सुहाईआ। आपणी लग्गी आपे उखेड़े जड़, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी अग्नी आपे जाए सड़, रत्ती रत्त आप जलाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपे रिहा सुणाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे भेव खुल्हाईआ। आपणे शस्त्र आपे लड़, मूरछा गत आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हनवन्ता अंगद सेवा लाईआ। हनवन्ता अंगद वेख विचार, आपणी बूझ बुझांयदा। लंका लंकासा कर प्यार, ख़ाली कासा इक्क वखांयदा। पृथ्मी आकाश हाहाकार, जै जै जै ना मुख छुपांयदा। भरया तन लोभ हँकार, माण मोह वधांयदा। दमोदरी ढहि ढहि पए द्वार, मुख सलाही सलाह ना कोई रखांयदा। अन्तिम मेला विच संसार, अन्तिम लेख लिखांयदा। शाह भबीखण मीत मुरार, दर दरबार दर्शन पांयदा। खुल्हया दर सच्चा दरबार, घर साचे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता तेरा वेस धर, तेरा लेख चुकांयदा। त्रेता तेरा लिख्या लेख, हरि साचा आप वखांयदा। आप आपणा धर धर भेस, शाह भबीखण संग रखांयदा। रावण राम कर अदेस, लंका गढ़ सुहांयदा। एका जोधा नर नरेश, दोहां धार बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपणा मेल आपे कर, आपे दया कमाईआ। दोहां धिरां देवे वर, साची धरनी वेख वखाईआ। इक्क दूजे दे अग्गे कर, आपे करे लड़ाईआ। आप चुकाए आपणा डर, आपे भय रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचना आपे रच, आपे खेल खलांयदा। खेल खेलणहार साच, सच सुच्च वरतांयदा। आपे रण भूमी रिहा नच्च, आपे मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रेता तेरा वेस कर, दर द्वार सुहांयदा। त्रेता त्रिया दर दरवेश, हरि हरि आप अख्वाया। दित्ता वर ब्रह्मा महेष, रावण राम विखाया। आपे पूजे गणपति गणेश, सिल पाहन रिहा मनाया। आपे पायण नर नरेश, आपे निझर

धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे युध आपे कुद्द, आपणी बुध आपे लड़ फड़ाया। जगत बुध जगत जैकारा, दोहां धिरां जुड़ाईआ। एका खण्डा एका धारा, एका नाम वखाईआ। एका गढ़ सुहाए दुआरा, एका रूप वटाईआ। एका वेखे पसर पसारा, एका बंधन पाईआ। मेट मिटाए जोधा सूरबीर बलकारा, मूर्छागत आप कराईआ। रण भूमी सुत्ते पैर पसारा, कुंभ करन मेघ नाथ ना कोई सहाईआ। रावण आए विच अखाड़ा, आप आपणी कर चतुराईआ। सीस धड़ पार उतारा, लेखा लिख्त विच ना आईआ। अन्तिम लाए एका नाअरा, राम रामा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत खेत्र इक्क वखाईआ। जगत खेत्र साचा खेत, हरि हरि आप उपाया। आपे शत्तरू करन आया हित्त, नित नवित्त वेस वटाया। आपे लिखणहारा लेख, आपे लेखा रिहा चुकाया। आपणे नेत्र आपे पेख, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम रावण दित्ता वर, लहिणा देणा झोली पाया। रावण अन्त कर विचार, आपणा आप चितारया। राम रामा तेरा सच प्यार। तेरा दर सुहा रिहा। अन्तिम मेला विच संसार, त्रेता मुख भवा ल्या। जुग जुग खेल करतार, साचा संग निभा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर एका वर सुहा ल्या। एका शब्द शब्द अगम्मा, हरि हरि आप सुणाया। अकाल पुरख ना मरे ना कदे जम्मा, अजूनी रहित नाम धराया। माता सीर ना चुंघे मुम्मा, बाल गोद ना कोई हंढाया। गगन पताल रहाए बिन बिन थम्मा, पंज तत्त ना कोई रखाया। शब्द धार इक्क दमामा, मृदंगा नाउँ धराया। आपे करनहारा पूजा पाठा, करनहार इक्क रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द दित्ता वर, रावण रामा राम आप समझाया। रावण रावण हरि आप समझा, चार वेद हरि जणाईआ। छे शास्त्र जगत पढ़ा, सिमरत वेख वखाईआ। काल कलूआ वेस करा, महांकाल भेव ना राईआ। शब्द खण्डा आप चमका, निरगुण बाण चलाईआ। धरत धवल लेखा दए चुका, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। नर्क कुण्डां ना भरा, तेरी वड वड्याईआ। तेरी अन्तिम वंडा ना वेख वखा, साचा कन्त इक्क हंढाईआ। तेरा मेरा सच न्याँ, मेरी तेरी बणत बणाईआ। जुग जुग वेख्या थाउँ थाँ, तेरा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवणहारा वर, एका शब्द जणाईआ। शब्द भेव आप खुल्हा, आपणी धुन वजाईआ। रावण बोला हरि सुणा, आपे दए समझाईआ। एका तोला इक्क मलाह, एका बेड़ा रिहा चलाईआ। आपणा बोला दए समझा, पंज तत्त ना कोई वड्याईआ। आपणी खेला रिहा खला, जुग जुग भेव ना राईआ। कलिजुग अन्तिम मेला दए मिला, नर हरि रूप सृष्ट सुबाईआ। लक्ख चुरासी तेरी वंड वंडा, पंज तत्त दए टिकाईआ। जूठ झूठ पल्ले गंढु बन्न्हा, काम क्रोध

लोभ मोह हँकार करे हलकाईआ। आसा तृष्ना संग रला, तेरा संग रखाईआ। तेरा दर तेरा घर दिआं सुहा, कालख टिक्का मस्तक शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, शब्द शब्द आप सुणाईआ। शब्द सुण साचे मीत, रावण नीर वहाया। पारब्रह्म प्रभ सदा अतीत, तेरा भेव कोए ना पाया। मेरी काया कवण करे ठंडी सीत, पंज तत्त तत्त दर तपाया। जुग जुग तेरी अवल्लड़ी रीत, तेरा लेखा ना कोई लिखाया। कवण सुणाए सुहागी गीत, तेरा मेरा मेल मिलाया। कवण बंधाए चरन प्रीत, जगत नाता तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे दित्ता आपणा वर, आप आपणी बूझ बुझाया। रावण तेरा तेरा दर, हरि साचे आप सुहावणा। कलिजुग अन्तिम जोती जामा भेख धर, निहकलंक नाम रखावणा। लक्ख चुरासी लए फड़, अन्दर मन्दिर खोज खुजावणा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई सुहावणा। तेरी अग्नी आपे पहलों जाए सड़, गुरमुखां फेर उठावणा। गुरमुख साचे एका अक्खर जायण पढ़, हरि साचे आप पढ़ावना। सोहँ शब्द अग्गे धर, दूई द्वैती पर्दा लाहवणा। दस्म दुआरी मिले वर, साचा घर साचा रंग रंगावणा। साचा भाणा रहे जर, जर जर ना वेस वटावणा। चरन चरन लाग जायण तर, सर सरोवर ना कोई नुहावणा। आपणी बांह आपे लए फड़, आपे होए धुरदरगाही जामना। आपे तोड़े हँकारी किला गढ़, राम रामा वेख वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेख चुकाए बलि बलि बल बावना। बलि बलि बावन हरि लेख चुकावणा, हरि साचे वड वड्याई। करोड़ तेतीसा मेट मिटावना, लिख्या लेख वखाई। हरिजन साचे जोत जगावणा, जोती जोत रुशनाई। वरन गोत ना कोई रखावणा, एका मार्ग लाई। लक्ख चुरासी एका शब्द पढ़ावणा, एका इष्ट इक्क जणाई। अकाल पुरख नज़री आवणा, निरवैर नाम धराई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लेखा दए चुकाईआ। त्रेता रावण अन्त कल, नेत्र नैण मुँधारया। प्रभ अबिनाशी तेरा वल छल, अन्त ना पारावारया। तेरे अग्गे ना चले कोई बल, तुट्टा गढ़ हंकारया। तेरा भाणा ना जाए टल, ना कोई मेटे मेट मिटा रिहा। तेरा दित्ता तेरे दर रिहा ना बल, दिसे अन्ध अँध्यारया। इक्क इकल्ला वेखे खड़्, दूसर कोई दिस ना आ रिहा। आपे वसे निहचल धाम अटल, जल थल समा रिहा। पावे सार जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे वेख वखा ल्या। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। रावण तेरा सच्चा दर, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। निरगुण रूप जोती आकार कर, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। गुरमुखां अन्दर जाए वड़, आप आपणा दए टिकाईआ। काया मन्दिर लए फड़, जगत मन्दिर ना कोई जणाईआ। बहत्तर नाड़ी वेखे नाड़ नाड़, आप आपणा फोल

७५० ०७

फुलाईआ। तेरा तुट्टे लंका हँकारी गढ़, राम रामा इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लहिणा देणा दए चुकाईआ। रावण रो रो करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुका ल्या। लहिण देणा देवे कर्ज़ उतार, कवण करे पार उतारना। सतिजुग त्रेता द्वापर मिल्या मेल अपार, त्रै लेखा लिख्या वेख वखावणा। हरनाक्ष हरन कशप हो उज्यार, धरत धवल सुहा ल्या। जुग द्वापर आए वार, भेद अभेद छुपा ल्या। चौथे लेखा लिख्या अपर अपार, कलिजुग वेस वटा ल्या। नाता छुट्टे सर्ब संसार, लोकमात ना कोई वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अगम्म अगम्मी धार, शब्दी शब्द जणा ल्या। शब्द संदेश हरि निरँकार, आपणा आप सुणाया। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा चुक्के ब्रह्मा विष्न महेष गणेश अपर अपार, लेखा लिख्या रहिण ना पाया। नर नरेश सच्ची सरकार, करोड़ तेतीसा दए मिटाया। दर दरवेश भगत भण्डार, नाम नामा झोली पाया। कूड़ी क्रिया दए निवार, भेख पखण्डा मेट मिटाया। एक नाम करे जैकार, सो पुरख निरँजण वड वड्आया। हँ हँगता करे ख्वार, साची संगता लए मिलाया। रावण भिख्या मंगदा आए द्वार, गुरमुखां अग्गे सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी खोल्ह् किवाड़, गुरमुखां एह समझाया। नेड़ ना आए पंचम धाड़, नेत्र नीर ना कोई वहाया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, आप आपणा डेरा लाया। लेखा लिख्या सतारां हाढ़, हरि जू हरि हरि रावण शब्द सुणाया। त्रेता जुग कीता पार, द्वापर वेख वखाया। कलिजुग तेरी पावे सार, राम रामेश्वर भेव ना राया। राम रामेश्वर खेल न्यार, शिव शंकर लए उठाया। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाया। पार्बती करे पुकार, खुल्ह्ड़े केस वखाया। लछमण जोधा छड्ड हँकार, यति सति तोड़ तुड़ाया। नाम रत्ती कर प्यार, गुरमुख साचे लए तराया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, लोकमात फेरा पाया। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका मन्त्र रिहा दृढ़ाया। एका चरन इक्क ध्यान, एका लिव लगाया। एका पीणा एका खाण, एका तृप्त कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, राम रामेश्वर वेख वखाया। राम राम बल धार, दसरथ सुत अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ अन्त ना पारावार, पिता पूत ना कोई जणाया। दोहां मेला विच संसार, शब्दी बणत बणाया। रावण हरि कर प्यार, सच संदेश सुणाया। जगत वेला लए विचार, तेरा आपणा मूल चुकाया। नेत्र नैणां कर शृंगार, कजल धार बंधाया। बस्त्र गहिणा अपर अपार, हरि हरि शब्द पहनाया। गुरमुख साचे कर त्यार, साचा संग रलाया। समुंद सी खाई करी पार, सति सागर वेख वखाया। आए दर सचे दरबार, दर दर लेखा रिहा मुकाया। अन्त ना दिसे कोई मुनार, तिलक ललाट ना कोई लगाया। सम्मत पन्दरां वेख विचार, हरि साचा वेख वखाया। त्रेता तेरा भेख, तेरा तेरा रिहा मिटाया। तेरी सतिआ पुरख अबिनाशी आपणी

चरनी खिच बहाया। पंडत पांधे बहि बहि करदे रहिण कथिआ, साचा मता ना किसे पकाया। नाम बीज ना बीज्जया साचे वतिआ, राम रामा दिस ना आया। ग़रीब निमाणे करदे रहे हत्या, हरि के पौड़े कोई ना चढ़या। आपणे पेट बंधाया नतिआ, आपणी झोली अग्गे डाहया। कुँवारी कन्या ना कोई दिसे सतिआ, लज पति ना कोई वखाया। मन्दिर अन्दर तीर्थ तट्टां ठंडा पाणी होवे तत्तया, ठंडा ठार ना कोई बणाया। गुरमुख सीता सुरती हरि सच्चा करे रक्खया, राम रामा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, रामेश्वर राम ईश चरन टिकाया।

* १६ कत्तक २०१५ बिक्रमी राष्ट्रपती राजिन्दर प्रशादि पृथाए रामेश्वर शब्द लिखाए *

मुकंद मनोहर लख़मी नरायण, हरि हरि जोत जगाईआ। वाली हिन्द खोल्ह नैण, रैण अन्धेरी छाईआ। पारब्रह्म खेले खेल साचा सज्जण सैण, साख्यात रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम चुकाए लहिण देण, लोकमात रहिण ना पाईआ। गंगा गोदावरी वेखे तर्बैन, सुरसती चरनां विच टिकाईआ। अयुध्या कांशी पैण वैण, पुरी जगन ना कोई सहाईआ। रामेश्वर चुकया लहिण देण, राम राम हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई लेखा मंगे लाड़ी मौत डैण, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। राज मन्त्री सारे कहिण, सर्ब रक्खया ना कोई कराईआ। अन्तिम वहिणा झूठा वहिण, ना सके कोई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दे मति रिहा समझाईआ। जीव निधान उठ बलधार, हरि साचे जोत जगाईआ। निहकलंक ल्ए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां पावे सार, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, गणपति गणेश आप उठाईआ। तीर्थ तट्टां पार किनार, अठसठां फोल फुलाईआ। चौदां हट्टां वणज वपार, लोक परलोक आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पन्दरां पन्दरां रिहा सुणाईआ। सम्मत पन्दरां पन्दरां कत्तक, करनी कर्म कमाया। शब्द सरूपी चढ़या कटक, ना कोई वेखे वेख वखाया। सृष्ट सबाई ना सके अटक, ना कोई रोके रोक रुकाया। शाह सुल्तानां राज राजानां सारे रहे लटक, ना कोई धीर धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, एका खण्डा रिहा उठाया। शब्द खण्डा हरि बलवान, आपणे हथ्थ उठांयदा। वेख वखाए ज़िमीं अस्मान, पारब्रह्म भेव ना पांयदा। लेख चुकाए अञ्जील कुरान, वेद पुराण फोल फुलांयदा। पंडत पांधे सर्ब पछतान, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। जगत

विद्या होई नादान, हरि का भेव कोई ना पांयदा। प्रगट होया शाह सुल्तान, सच सिँघासण इक्क वखांयदा। दिल्ली तख्त राज राजान, राज भूप आप उठांयदा। अन्तिम छड्डुणा पए मकान, सीस ताज ना कोई टिकांयदा। निरगुण जोत जगे महान, भगत भगवन्त लेख लखांयदा। खेले खेल रमीआ राम, राम रामा नाउँ धरांयदा। काहना कृष्ना नौजवान, रथ रथवाही आप हो जांयदा। कलिजुग अन्तिम मार ध्यान, निहकलंक डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म अन्तर कढ्ढे शंक, भरम भुलेखा दूर करांयदा। भरम भुलेखा जगत शाह, हरि हरि आप चुकांयदा। अन्तिम वेले कवन मलाह, कवण बन्ने लांयदा। जगत स्यासत झूठ सलाह, साचा मार्ग ना कोई वखांयदा। बिन हरि पकड़े ना कोई बांह, ना कोई तोड़ निभांयदा। महल्ल अटल उडणे अन्तिम काँ, सीस छत्र ना कोई झुलांयदा। बिन हरि चरन ना कोई थाँ, निहकलंक शब्द समझांयदा। सम्बल नगरी सच ग्रां, साढे तिन्न हथ्थ, पर्दा तेरा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। सम्बल नगरी शब्द सिँघासण, हरि हरि जोत जगाईआ। पारब्रह्म बैठा पुरख अबिनाशण, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी करया वासन, शाह सुल्ताना रिहा उठाईआ। शाह भवीख़ण अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा दस दस मासन, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी गति मित आपे रिहा जणाईआ। सम्बल नगरी जोत प्रकाशण, हरि हरि आप कराईआ। आपे होया दासी दासन, जन भगतां मेल मिलाईआ। त्रेते जुग लग्गी प्यासन, कलिजुग अन्तिम दए बुझाईआ। रामेश्वरम लिख्या शाहो शाबाशन, दिल्ली तख्त सुहाईआ। वीह सौ बीस किसे हथ्थ ना आए आपणा ग्रासन, आपणी तृखा ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शे चरन धरवास, जो जन आए शरनाईआ। हरि सरनाई सच टिकाना, हरि हरि आप जणांयदा। राष्ट्रपति पति ना बण अञ्याणा, वेला वक्त ना हथ्थ गंवाईआ। कोई ना रहिणा राजा राणा, शाह सुल्तान ना कोई अख्वाईआ। पारब्रह्म पुरख भगवाना, सीस जगदीश इक्क टिकाईआ। दिल्ली तख्त हो मेहरवाना, बीस बीसे वड वड्याईआ। पन्दरां कत्तक खेल महाना, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लिख्या साचे दर, दर दुआरा वेख वखाईआ। लंका गढ़ जगत हँकार, काम क्रोध हलकाया। राम रामा रूप अपार, नेत्र नैणां दिस ना आया। जूठे झूठे होए सिक्दार, सच सिक्दार ना कोई कराया। अन्तिम कलिजुग पैणी मार, मारनहारा आप हरि आया। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। सोहँ डंका वज्जे सर्ब संसार, सृष्ट सबाई दए सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां सोलां धार

सोलां सोलां वेख वखाया। सम्मत सोलां रक्खणा याद, हरि साचे सच वड्याईआ। राज मन्त्री ना सुणे कोई फरियाद, सगला संग ना कोई निभाईआ। एका धुनी एका वज्जे नाद, सृष्ट सबाई दए उठाईआ। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग कूड़ी देवे दाद, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्बल नगरी शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशण, बैठा डेरा लाईआ।

* २१ कत्तक २०१५ बिक्रमी टोपन राम दे घर किरकी पूना *

संगम तीर्थ तट किनार, सागर धरनी धरत सुहाया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, बेअन्त बेअन्त हरि हरि रघुराया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, आदि निरँजण वेस वटाया। हरी हरि जोत उज्यार, आदि पुरख अख्वाया। लोआं पुरीआं पसर पसार, मात पताल आकाश वेख वखाया। अंडज जेरज उत्भुज सेत्ज पाए सार, चौदां हट्ट वेख वखाया। सागर सिन्ध रूप करतार, अनभव रूप दृष्टाया। जोती जोत कर उज्यार, त्रै भवन वेख वखाया। मूर्त अकाल एकँकार अकल कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ खण्ड वेख वखाया। नौ खण्ड सागर सति, सति सति अख्वांयदा। इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड खण्ड, निरगुण वंड वंडांयदा। वेखे रंग हरि ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म भेव छुपांयदा। आदि जुगादि आपणी वंड, आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी नंगी कंड, समरथ हथ्थ ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अबिनाशी करता, एकँकारा वेस वटांयदा। एकँकारा अकाल मूर्त, नूरो नूर समाया। अजूनी रहित नाद तूरत, नाम नाद वजाया। अबिनाशी करता साची सूरत, एका तत्त वखाया। आपे वसे नेड़े दूरत, नेड़ा दूर ना कोई जणाया। सदा सुहेला हाज़र हज़ूरत, हरि हिरदे डेरा लाया। हरिजन आसा मनसा पूरत, मनमुखां दए सजाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, काया गढ़ सुहाया। बख्शणहारा चरन धूढ़त, मस्तक टिक्का तिलक लगाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, आप आपणा रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकार कर पसार, अबिनाशी करता एका धार, एका रंग रंगाया। रंग रंगीला एकँकार, एका रूप दरसांयदा। आदि न अन्ता लए अवतार, जुग जुग वेस वटांयदा। धरनी धरत दए सहार, आकाश प्रकाश टिकांयदा। आपे वसे सभ तों बाहर, लक्ख चुरासी दिस ना आंयदा। नाम खण्डा तेज कटार, समरथ हथ्थ उठांयदा। खण्डा तीर अपर अपार, जीव जन्त ना भार चुकांयदा। अगम्म अगम्मड़ा

७५४
०७

भेव न्यार, नाड़ चम्मड़ा ना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शस्त्र एका बाण, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे मार ध्यान, एका राह तकांयदा। नाम धनुख शब्द चिल्ला रसन कमान, नाम नामे उठाईआ। पारब्रह्म जोधा सूरबीर बली बलवान, राम रामा वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई साचा काहन, अकाल मूर्त इक्क दरसाईआ। हरिजन साचे लए पछाण, आदि अन्त वड्डी वड्याईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। नेत्र लोचण नैण दरस महान, सांतक सति वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा घर, घर मन्दिर काया अन्दर आत्म सेजा शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशण, निरँकार धार एकँकार बैठा आसण लाईआ। निरगुण रूप आदि निरँकार, आदि जुगादि समाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, भेव कोई ना राया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। जोती नूर कर उज्यार, नूरो नूर डगमगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। आदि पुरख हरि करतारा, एका एकँकारया। आदि जुगादी लए अवतारा, करे पसर पसारया। एका शब्द इक्क जैकारा, एका नाअरा ला ल्या। आपे वेखे वेखणहारा, दूसर कोई दिस ना आ रिहा। पारब्रह्म ब्रह्म गुर अवतारा, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वा रिहा। आदि पुरख आदि निरँजण, हरि हरि आप अख्वांयदा। आप आपणा साचा सज्जण, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा पर्दा कज्जण, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा करे मजन, आप आपणी मैल गंवांयदा। आप आपणा चलाए जहाज़न, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा रचया काजन, लेखा लिख्त ना कोई मिटांयदा। आप आपणा राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। आप आपणा ग़रीब निवाजन, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खलांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार, भेव कोई ना राया। हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोई आकार, रक्त बूंद ना कोई उपाया। मात पित भैण भाई ना कोई विचार, साक सज्जण ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण अबिनाशी करता, आप आपणा नाउँ धराया। अबिनाशी करता हरि गोपाल, एका एक अख्वांयदा। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध नाम धरांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव कोए ना पांयदा। दीपक जोती आप आपणा बाल, आपणा मुख वखांयदा। थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाल, घर साचा इक्क सुहांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणांयदा। आपणी बणत हरि बनवारी, आपे आप बणांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, दीपक इक्क जगांयदा। अटल

महल्ल उच्च अटारी, सच सिँघासण डेरा लांयदा। प्रभ अबिनाशी खेल न्यारी, आप आपणी किरत कमांयदा। जोधा सूरबीर बलकारी, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। एका खण्डा तेज़ कटारी, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारी, ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वेख वखांयदा। आवे जावे वारो वारी, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख नाउँ धरांयदा। आदि पुरख पुरख बिधाता, एका एक अख्वाया। उत्तम रक्खे आपणी ज़ाता, वरन बरन ना कोई जणाया। ना कोई पिता ना कोई माता, बालक गोद ना कोई उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर करे रुशनाया। आपणा नूर आप उपा, आपणी कल वरताईआ। आपणी जोती आप जगा, आपे वेख वखाईआ। आपणे मन्दिर आप टिका, आपे वेखे बेपरवाहीआ। आपणा सगन आप मना, आपणा गीत आपे गाईआ। आपणी रंगन आप रंगा, आपणा रंग रंगाईआ। आपणी मंग आप मंगा, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे कुड़माईआ। आपे जोती नूर धर, आपे कर्म कमाया। आप आपणा ल्या वर, आप आपणा घर सुहाया। आप अपणी धरनी ल्या धर, आप आपणा दर खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलाया। आपणा मेल आपे मेल, आपे मेल मिलाईआ। आप आपणा खेले खेल, अचरज खेल खलाईआ। आप आपणा सज्जण सुहेल, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। आप आपणी बणत बणा, आपणा अंग कटाया। जोती जोत जोत जगा, जोती जोत रुशनाया। वरन गोती ना ल्या उपा, रूप रंग ना कोई जणाया। महिमा अगणत गणा, बेअन्त बेपरवाहया। एकँकारा गया समा, निरगुण सरगुण डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाया। जोती जोत हरि जगा, आपणी कल वरताईआ। आपणी वस्त आपे पा, आपे दए वड्याईआ। आपणी शक्त आप भरा, आदि शक्त नाउँ धराईआ। आपणी शक्त आप सुहा, आपे वेख वखाईआ। नित नवित्त खेल खिला, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी भेस वटा, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। शब्द अनादी सुत उपा, एका नाउँ धराईआ। आपणे दर आप बहा, आपणी खोज आप खुजा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। एका रागी राग सुणा, एका ताल वजाईआ। दूजा थिर घर डेरा ल्या ला, दूसर दर ना कोई सुहाईआ। शब्द सिँघासण ल्या सजा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पारब्रह्म बैठा शहनशाह, राम रामा रूप अख्वाईआ। आपणा मता आप पका, आपे दए सलाहीआ। साचा सुत दर बुला, दर दरबान वखाईआ। इक्क इकल्ला सज्जण सुहेला रिहा सुणा, भुल्ल रहे ना राईआ। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाईआ। गगन

पातालां वेख वखा, रवि ससि करे रुशनाईआ। त्रैगुण तत्त झोली पा, एका मार्ग वखाईआ। कँवल कँवली आप उलटा नाभी फूल फुलाईआ। निरगुण सरगुण वेस वटा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। मन मति बुध विच टिका, दिस किसे ना आईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए सजा, रक्त बूंद उपाईआ। नौ दुआरे दए लगा, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। बज़र कपाटी पर्दा पा, बैठा मुख छुपाईआ। ढोल मृदंगा इक्क रखा, अनहद रिहा वजाईआ। आत्म बैठा बेपरवाह, भेव ना जाणे कोई राईआ। दस्म दुआरी महल्ल सुहा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। पंज कर प्यारा, आपणा आप उपाया। शब्दी शब्द सुत दुलारा, शब्द शब्दी धुन उपजाया। सुणे सुणाए सुनणेहार, दूसर कोए ना संग रखाया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। रूप अगम्म अगम्मड़ी कार, भेव अभेद छुपाया। रंग महल्ल अटल उच्च मुनार, बैठा डेरा लाया। पारब्रह्म लए उभार, ब्रह्म ब्रह्म नाउँ धराया। ब्रह्म ब्रह्म कर विचार, पारब्रह्म वेख वखाया। पारब्रह्म खेल अपर अपार, ब्रह्म ब्रह्म भेव खुल्ह़ाया। ब्रह्म ब्रह्म नेत्र नैण उग्घाड़, लोचण नैण दर्शन पाया। पारब्रह्म वेख वखाए इक्क अखाड़, हरि हरि साचा मंगल गाया। ब्रह्म ब्रह्म नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, रो रो अग्गे सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आप आपणी दया कमाया। दोहां विचोला अपर अपार, हरि शब्दी मेल मिलाया। हरि का शब्द हरि जैकार, लोआं पुरीआं दए सुहाया। ब्रह्मा वेता कर ख्वार, आप अपणी बूझ बुझाया। चारों कुन्ट पावे सार, चारे मुख खुल्ह़ाया। वजाए डंक अपर अपार, अनन्द मंगल एका गाया। ऊँच अगम्म अपार परवरदिगार, महल्ल अटल इक्क सुहाया। निरगुण जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क जगाया। खेले खेल अपर अपार, वेखणहार दिस ना आया। शब्दी धुन अपर अपार, अनहद साची सेव कमाया। कन्दर डूँघी ना पाइन सार, बहत्तर तलवाड़ा ना कोई गाया। गावत गाए ना कोई संसार, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। बत्ती दन्द ना कोई आकार, मुख गुंग ना कोई दिसाया। पारब्रह्म करता करनेहार, आदि जुगादि इक्क अख्वाया। पूरन ब्रह्म हरि विचार, ब्रह्म एह समझाया। शब्द शब्दी सच दुलार, साचा मार्ग लाया। एका शब्द नाम आधार, दूसर ओट ना कोई तकाया । सृष्ट सबाई बन्न्हे धार, मात पताल आकाश वेख वखाया। तेरा रूप अपार, शिव शंकर दए उभार, विष्नूं रूप निरगुण धार, सरगुण वेस वटाया। तिन्नां मेला आप करतार, आप आपणा रंग रंगाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, नेत्र नैणां दिस ना आया। ब्रह्मा सेवक सेवा करे अपर अपार, हरि साचे शब्द जणाया। लेखा लिखे नर निरँकार, नर नरायण नज़री आया। अट्ठे नेत्र लए उग्घाड़, चारे मुख चारे जुग प्रनाया। पंज तत्त लए उसार, बाहू बल वखाया। खेले खेल हरि करतार, तत्व तत्त समाया। रत्ती रत्त ना होए उज्यार, साची

वस्त सति सतिवाद इक्क टिकाया। शब्द नाद अपर अपार, पारब्रह्म वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल करनी कर, करता पुरख नाउँ धराया। करता पुरख हरि अबिनाश, एका एक अख्वांयदा। आदि जुगादि खेले खेल तमाश, जुग जुग वेस वटांयदा। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन नाउँ धरांयदा। आपे वसे पवण स्वास, आप आपणा मेल मिलांयदा। आपे करणहार विनास, उत्पत आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। आदि जुगादी नाउँ धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जुग जुग वेस मात कर, लोकमात करे कुड़माईआ। चौदां लोक वेखे खड़, त्रै त्रै वज्जी वधाईआ। गगन पताला फड़ाए लड़, दूर दुराडा बेपरवाहीआ। साचे घोड़े आपे चढ़, नौ खण्ड होए सहाईआ। सत्तां दीपां लाए जड़, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। आपणी अग्नी आपे सड़, जोती जोत समाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। आपे तोड़णहारा आपणा गढ़, आपे करे चढ़ाईआ। आपणी सृष्टी आपे रिहा लड़, आपे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वाईआ। आदि पुरख प्रभ हरि नरायण, एका एक अख्वाया। रसना कोई ना सके कहिण, लेखा लिख्त विच ना आया। ना कोई साक सज्जण दिसे सैण भाई भैण, मात पित ना कोई अख्वाया। ना कोई दिवस ना कोई रैण, रवि ससि ना कोई रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आपणा रंग रंग करतार, आपणी कार कमाईआ। वल छल अपर अपार, जुग जुग वेख वखाईआ। निहचल धाम अटल मिनार, बैठा बेपरवाहीआ। शब्द साची मारे मार, दिस किसे ना आईआ। निरगुण जोत ना मरे ना जम्मे विच संसार, दो जहानां बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जुगा जुगन्त हरि हरि खेल, आपणा आप करांयदा। आप आपणा कर कर मेल, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। आप आपणा चाढ़े तेल, जोत निरँजण सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड सच दरबार, हरि हरि जोत जगाईआ। इक्क इकल्ला कर आकार, बैठा आसण लाईआ। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखाईआ। करोड़ तेतीसा दर भिखार, सुरपति राजा इन्द बैठा झोली डाहीआ। लक्ख चुरासी ढहि पए द्वार, पशू प्रेत ना कोए वड्याईआ। साध सन्त भगत भगवन्त एका प्यार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता रूप अपार, साची बणत बणाईआ। पंज तत्त कर उज्यार, पारब्रह्म ब्रह्म टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण दित्ता वर, हँ हँगता विच समाईआ।

सो पुरख निरगुण रूप, हरि हरि आप अख्वाया। सच सुल्तान शाहो भूप, भेव किसे ना पाया। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा डेरा लाया। आपणा शब्द पंघूँड़ा आपे रिहा झूट, आपे दए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। सतिजुग साचे तेरी धार, हरि साचे मात चलाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपार, हँ ब्रह्म इक्क वखाईआ। हँ ब्रह्म पावे सार, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजा नैण खोल्ह उग्घाड़, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़, माया मोह ना कोई हलकाईआ। तत्त अग्नी देवे साड़, त्रैगुण बंध बंधाईआ। धरती लग्गा इक्क अखाड़, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सच दुआरे देवे वाड़, हरि वड्डी वड्याईआ। शब्द घोड़े आपे चाढ़, डोर आपणी रिहा उठाईआ। सन्त सुहेला साचा लाड़, भगतन मीता आप अख्वाईआ। आपे होए पिछे अगाड़, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। हउमे हँगता चबाए आपणे दाढ़, माण मोह रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे तेरी धार, एका मुख लगाईआ। इक्क हुलारा इक्क आकारा, एका रूप वटाया। एका हरि इक्क जैकारा, एका नाम धराया। एका वरन इक्क प्यारा, एका एक कराया। एका बरन एका सरन इक्क प्यारा, दूसर होर ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त सन्त भगवन्त वेख वखाया। चार वरन एका नाता, सतिजुग धार चलांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, एका मार्ग लांयदा। एका पिता एका माता, गुरमुख अञ्याणे गोद उठांयदा। एका देवे नाम सुगाता, एका नाम झोली पांयदा। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, निझर धार मुख चुआंयदा। दरस दखाए इक्क इकांता, एका मुख वखांयदा। शब्द ज्ञानी आप ज्ञाता, ब्रह्म ज्ञान आप समझांयदा। आप बंधाए साचा नाता, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, सच सुच्च प्रकाश वखांयदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। पारब्रह्म प्रभ सगला साथा, त्रिलोकी नाथा आप अख्वांयदा। आप चलाए आपणी गाथा, आपणा नाम धरांयदा। सतिजुग चलाए साचा राथा, रथ रथवाही वेख वखांयदा। एका पूजा एका पाठा, एका राग अलांयदा। एका गेड़णहारा उलटी लाठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। सच सरोवर मारे ठाठां, इक्क अशनान करांयदा। धुरदरगाही आए नाठा, लोकमात फेरा पांयदा। लोआं पुरीआं खुल्हाए एका हाटा, ब्रह्मा शिव वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा वेखे ताटा, दर दुआरे फेरी पांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी आन बाटा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। आपे जाणे आपणी वाटा, दूर नेड़े ना कोई रखांयदा। जन भगतां पूरा करणहार घाटा, नाम कंडे तोल तुलांयदा। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका रंग रंगांयदा। जोत प्रकाश काया मट, एका धार वखांयदा। शब्द लपेटे साचे पट्ट, आप आपणी गोद उठांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची धार, चार वरनां इक्क प्यार, एकँकार पावे सार, इक्क ख़ुदाई परवरदिगार, राम रामा रूप आप निरँकार, काहना कृष्ना वेख वखांयदा।

जुग जुग धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। सतिजुग त्रेता पावे सार, द्वापर वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा रूप अपार, लोकमात वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल मीत मुरार, संग मुहम्मद इक्क रखाईआ। चार यारां कर त्यार, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ। बेऐब परवरदिगार पावे सार, मुकामे हक्क दिसे ख़ुदाईआ। ऐनलहक्क रिहा ललकार, एका नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। आपणी बणत आप बणा, आपे लेख लिखांयदा। आपणा लेखा आप गणा, आपे वेख वखांयदा। आपणी जन्ता आप जगा, आपे गूढ़ी नींद सवांयदा। जुग जुग दाते दानी दित्ता वर, दर दरवेशा फेरी पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर, गणपति गणेशा आप उठांयदा। अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख कर, नाम वस्त झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी धार तेरे रंग रंगांयदा। तेरा भेव लक्ख चार हज़ार, बत्ती हज़ार बत्ती बत्ती दन्द गणाया। भेव ना पावे कोई संसार, पारब्रह्म ना भेव खुल्हाया। आदि अन्त एकँकार, भाणे आपणे आप समाया। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन बूझ बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम धराया। कलिजुग धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। जोत सरूप कर आकार, नानक गया समाईआ। नानक सरगुण कर विचार, अट्ठे पहर ध्याईआ। एका लिव एका धार, एका दर इक्क द्वार, एका बैठा बेपरवाहीआ। एका मंगण मंग बण भिखार, आप आपणी झोली डाहीआ। आप आपणी अबिनाशी करता पावे सार, निरगुण मेला मेल मिलाईआ। सच महल्ले बैठा एकँकार, आपणा थान सुहाईआ। नानक ढहि पए द्वार, मंगे चरन धूढ़ मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अपणी इच्छया पाई भिच्छया, तोट रहे ना राईआ। हरि हरि हरि बेअन्त, बेअन्त आप अख्वाया। सतिगुर मेला साजण सन्त, साचा दर आप सुहाया। आदि पुरख एका कन्त, एका नारी वेख वखाया। इक्क सुणाए सुहागी छंत, एका धीर धराया। आदि जुगादी महिमा अगणत, भेव ना कोई पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला साचे घर, घर साचा विछड़ कदे ना जाया।

* २१ कत्तक २०१५ बिक्रमी सतिपाल दे घर पूना *

आसा मनसा पूर कर, हरिजन दया कमाईआ। पुरख बिधाता वेखे दर, दर दुआरे फेरा पाईआ। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणा मेल मिलाईआ। आप नुहाए आत्म सर, अमृत मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईआ। हरिजन हरि रंग माणया, परम पुरख करतार। चले चलाए सतिगुर भाणया, साचा मेला विच संसार। दरगहि साची देवे माणया, चरन कँवल इक्क प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत दुःखड़ा दए निवार। जगत दुःखड़ा जगत सोग, जगत चिन्त मिटाईआ। आत्म नाम साचा जोग, एका दर वखाईआ। देवे दरस हरि अमोघ, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। नाम जपावे साची चोग, आप आपणी बूझ बुझाईआ। हउमे दूई द्वैती कढ्ढे रोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे दर, हरि सज्जण वेख वखाईआ ।भगतन मीता हरि गिरधार, निरवैर रूप समाया। आपे बन्ने आपणी धार, जुग विछड़े जग मेल मिलाया। आत्म अन्तर इक्क प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, दीवा बाती इक्क जगाया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, पंज तत्त ना होए हलकाया। दर घर साचे देवे वाड़, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मित नित नवित्त अबिनाशी अचुत्त दर दरवेश शाह नरेश, लोकमात आवे जावे फेरी पाया।

* २१ कत्तक २०१५ बिक्रमी ठाकर सिँघ दे घर पूना *

हरि सज्जण हरि दर मेलड़ा, परम पुरख करतार। आबिनाशी करता इक्क अकेलड़ा, खेले खेल सर्ब संसार। वेख वखाए गुरु गुर चेलड़ा, सुहाए बंक द्वार। वसे धाम सद नवेलड़ा, अगम्म अगम्मड़ी करे कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन हरि हरि पाया, आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुर पूरा वेख वखाया, शब्दी शब्द निशान। धुन आत्मक राग अल्हाया, आप सुणाए साचे कान। दर मन्दिर इक्क सुहाया, पंज तत्त महल्ल मकान। निरगुण बाती दीप जगाया, वेखणहार गुण निधान। त्रैगुण माया भेव ना राया, मेट मिटाए पंज शैतान। पंचम सेवा साची लाया, अनहद वजाए साचा तान। घर मंगल एका गाया, मिल्या मेल श्री भगवान। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे कर परवान। हरिजन हरि भेटयां, पारब्रह्म करतार। सतिगुर पूरा खेवट खेटयां, गुरमुख साचे लाए पार। मात पित उपाए बेटी बेटयां, बख्शणहार चरन कँवल प्यार। शब्द दोशाले आप लपेटयां,

लक्ख चुरासी उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए उभार। गुरमुख साचा मीतड़ा, हरि हरि मेल मिलंन। काया चोली रंगे चीथड़ा, देवे नाम धन। शब्द अनादी सुणाए गीतड़ा, राग अनादी एका कन्न। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बेड़ा देवे बन्न्ह। बेड़ा बन्न्हणहार समरथ, एका एकँकारया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, जुग जुग लोकमात लए अवतारया। आप चलाए आपणी गाथ, आप आपणा मार्ग ला रिहा। आप निभाए आपणा साथ, सगला संग आप रखा रिहा। देवणहारा सच्ची वथ्थ, नाम दान झोली पा रिहा। पंज तत्त विकारा कर इक्ठ, जोती लम्बू ला रिहा। त्रैगुण माया तेरा भट्ठ, हरि साचे वेख वखा रिहा। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा देवे मथ्था, जीव जन्तां आप मिला रिहा। गुरमुख विरले बख्शे एका हठ, सच वस्त इक्क बुझा रिहा। दरस दखाए नठ्ठ नठ्ठ, अबिनाशी करता खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। मिल्या मेल हरि निरँकार, हरिजन वड्डी वड्याईआ। नाता मेटे सर्ब संसार, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। कलिजुग मेटे अन्ध अँध्यार, दीवा बाती इक्क जगाईआ। शब्द उपजाए सच्ची धुन्कार, अन्दर मन्दिर मंगल गाईआ। दरगहि साची कर परवान, आप आपणा संग रखाईआ। धर्म वखाए इक्क निशान, गुण निधाना आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। धाम अवल्लड़ा हरि निरँकार, एका एक रखाया। इक्क इकल्ला खेले खेल अपार, दिस किसे ना आया। सचखण्ड दुआरा आपे मलड़ा, शब्द सिँघासण डेरा लाया। दूर दुराडा धुरदरगाही खलड़ा, लोकमात वेख वखाया। गुरमुखां भारी करे पल्लड़ा, हरि नाम झोली पाया। करनी करता कीमत कोई ना लाए दमड़ा, आप अपणा अंग कटाया । हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्मड़ा, लहिणा देणा मूल चुकाया । मात पित ना अम्मी अंमड़ा, भैण भाई ना कोई दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए तराया। तारनहार पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग वेखे जगत तमाशा, भेखाधारी भेख वटांयदा। चौदां लोकां खोल्ह्रे हाटा, हट्ट वणजारा इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वखाए साचा दर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। दर द्वार परवरदिगार, एका एकँकारया। शब्द सुहेला मीत मुरार, जुग जुग वेस वटाया। आदिन अन्ता एकँकार, लिख्या लेख ना कोई मिटाया। भगत वछल आप गिरधार, एका एक अख्वाया। दाता दानी दर भिखार, दर दुआरे फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लए जगाया। हरि सज्जण हरि जागरत जोत, एका एक जगांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, दूसर रंग ना कोई वखांयदा। दुरमति मैल रिहा धोत, निर्मल नीर आत्म जल प्यांअदा।

७६२
०७

लभ्भ लभ्भ थक्के कोटी कोट, कोटन कोट नेत्र नैण दरस ना कोई पांयदा। जिस तन नगारे लाए शब्द चोट, आप आपणी बूझ बुझांयदा। हउमे ममता माया कढ्ढे खोट, ज्ञान ध्यान इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा साचे मार्ग लांयदा। साचा मार्ग हरि करतार, जुग जुग आप कराया। आप आपणी बन्ने धार, दूसर संग ना कोई रलाया। एका दूजा भेव निवार, तीजे नेत्र वेख वखाया। चौथे पद सच्ची सरकार, आप आपणा मार्ग लाया। पंचम मेला मीत मुरार, छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाया। सत्तवें सति पुरख कर पसार, इक्क इकल्ला बैठा हरि घट डेरा लाया। लक्ख चुरासी महल्ल उसार, निरगुण धारा जोत जगाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, दर घर साचा ना कोई वखाया। गुरमुख विरला उतरे पार, जिस जन आपणी दया कमाया। मेल मिलावा सिरजणहार, आत्म अन्तर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण दर सुहाया। आत्म दर दुआरा खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। शब्द अनादी अनहद बोल, गुरमुख सोए उठांयदा। साचा मीता वसे कोल, आप आपणा मूल चुकांयदा। आत्म अन्तर जाए मौल, भेद अभेद भेव खुल्हांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अंमित धारा मुख चुआंयदा। सुन्दर साँवल सँवल, राम रामा आप हो जांयदा। गोबिन्द मेला उप्पर धवल, धरत धवल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे दर, दर दुआरा इक्क वखांयदा। काया महल्ल अटल उच्च मुनार, हरि हरि आप सुहाया। दीवा बाती कर उज्यार, आप आपणी जोत जगाया। कमलापाती खेल न्यार, घर बैठा आसण लाया। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन दूई द्वैती मेट मिटाया। आत्म सेजा कर प्यार, साचा मीत मुरार नज़री आया। हस्त कीट ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचा वेखणहारा, एका एक अख्वांयदा। आपे करे बन्द किवाड़ा, आपे कुण्डा लांहयदा। आपे मन्दिर महल्ल उसारा, आपे अन्तिम ढांयदा। आपे दीपक जोती कर उज्यारा, आपे गुल करांयदा। आपे खेले खेल विच संसारा, खेलणहार दिस ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव कोए ना पांयदा। आदि जुगादी एकँकारा, अकल कला अख्वांयदा। लोकमात लए अवतारा, जोती जोत जगांयदा। सन्त सुहेला मीत मुरारा, हरिभगती वेख वखांयदा। गुरमुख साजण सोहे दुआरा, साचा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, दर साचा इक्क वखांयदा। साचा दर हरि दरवाज़ा, आपणा आप वखाया। प्रगट हो ग़रीब निवाज़ा, नेत्र नैणां वेख वखाया। शब्द घोड़ा अस्व ताजा, गुरमुख साचे आप जगाया। शब्द अगम्मी मारे वाजा, अनहद सेवा लाया। शाहो भूप वड राजन राजा, सच सुल्तान आप अख्वाया।

लोकमात रचया काजा, लक्ख चुरासी वेखण आया। जन भगतां देवे नाम दाजा, साची वथ्थ हरि समरथ हथ्थ फड़ाया। वेले अन्तिम रक्खे लाजा, राए धर्म ना दए सजाया। गऊ ग़रीबां आप निवाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साची दादा, घर साचा इक्क सुहाया। दर घर साचा हरि निरँकार, आपणी बणत बणाईआ। गुरमुख नारी कर प्यार, हरिजन मेल मिलाईआ। एका सेजा कर उज्यार, एका रूप वटाईआ। एका मीता मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। धन्न धन्नवन्ता खेल अपार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। हरिजन मेला विच संसार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां मेला होए इक्क द्वार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। थिर घर बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा वेख वखाईआ। अलक्ख निरँजण पावे सार, लेखा लिख्त ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। वज्जी वधाई मंगलाचार, हरि हरि सज्जण पाया। सुरत सवाणी होई ख़बरदार, चरन कँवल ध्यान लगाया। शब्द गुर मीत मुरार, आप आपणा लड़ फड़ाया। डूँघी भवरी करे पार, पंज तत्त नेड़ ना आया। अनहद राग साचा ताल, ताल तलवाड़ा इक्क वखाया। मन्दिर अन्दर सच्ची सरकार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। सुहाए अमृत साचा ताल, सर सरोवर वेख वखाया। गुरमुख साचे लए संभाल, कागों हँस बणाया। माणक मोती मार उछाल, एका चोग चुगाया। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल, आप आपणा बंध बंधाया। आपे शाह आपे कंगाल, राज राजान आप अख्वाया। काया मन्दिर वेख मकान, घर घर विच डेरा लाया। सच दुआरे हो मेहरवान, निरगुण जोत करे रुशनाया। हरिजन साचे कर परवान, आप आपणे दर सुहाया। आवण जावण छुट्टी कान, मात गर्भ ना फेरा पाया। मिल्या मेल श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाया। पारब्रह्म एका रूप महान, एका नूर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, आदि जुगादि फेरा पाया। आदि जुगादि पुरख अगम्मा, अगम्मड़ी कार कमांयदा। ना मरे ना कदे जम्मा, मात गर्भ ना फेरा पांयदा। पवण स्वास ना लए दमा, नेत्र नीर ना कोई वहांयदा। आपे जाणे आपणा कम्मा, हरिजन साचे वेख वखांयदा। लेखे लाए काया माटी हड्ड मास नाड़ी चम्मा, नौ दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, वर दाता आप अख्वांयदा। गुरमुख वड वड्याई, वड वड्डा हरि हरि पाया। जगत सगली चिन्त मिटाई, लहिणा देणा मूल चुकाया। तन मन्दिर वज्जी वधाई, सईआं मंगल साचा गाया। सर्ब मिथ्या जगत लोकाई, पुरख बिधाता नज़री आया। गुर शब्द करी कुड़माई, साचा मंगल गाया। मिल्या मेल साचे माही, विछड़ कदे ना जाया। नौ द्वार ना ठंडीआं छाईं, साचा संग ना कोई जणाया। सतिगुर पूरा पकड़े

७६४
०७

बाहीं, आप आपणा दर खुल्हाया। आत्म सेजा गुरमुख चढ़या चाँईं चाँईं, गुर पूरा नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच दीवा घर विच बाती, घर मेला कमलापाती, हरिजन वेख वखाया। घर जोती घर प्रकाश, घर घर आप कराईआ। घर घर पुरख अबिनाश, आपणा बैठा मुख छुपाईआ। घर घर वेखे सर्ब गुणतास, वेखणहारा दिस ना आईआ। आदि जुगादि जुग जुग ना जाए विनास, करते करनी कीमत किसे ना पाईआ। भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिक्खां संग काया मन्दिर अन्दर मण्डल मण्डप पावे रास, रवि ससि सतार, सूरज चन्न सेवा लाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन पतालां वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए सर्ब धरवास, निरगुण जोती जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ।

* २१ कत्तक २०१५ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे घर किरकी पूना *

नाम दान हरि भण्डार, जुग जुग आप वरतांयदा। हरिजन देवे कर प्यार, वरन बरन ना कोई रखांयदा। चरन कँवल जगत अधार, नाता बिधाता आप बंधांयदा। भव सागर करणहारा पार, आप आपणा मेल मिलांयदा। काया गागर जोत उज्यार, निरगुण रूप दरसांयदा । शब्द खड़ग खण्डा तेज कटार, सच गात्रे आप लटांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, दिवस रैण आप जगांयदा। पंच विकारा मारे मार, हउमे हँगता मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी दया कमांयदा। दया कमाए दीन दयाला, हरि हरि आप अख्वाया। भगत वछल जगत कृपाला, भगत भगवन्ता वेख वखाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, जीवण दाता जीवां जन्तां लए तराया। देवे नाम सच्चा धन माला, साची शक्ती तन वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग रंगाए शाह कंगाला, भेव ना राया। शाह कंगाला गहर गम्भीर, हरि हरि आप सुहांयदा। जन भगतां करे सांत सरीर, अमृत आत्म मुख चुआंयदा। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, हउमे हँगता मेट मिटांयदा। बज़र कपाटी पर्दा चीर, आप आपणा मुख दरसांयदा। शाह सुल्ताना सच्चा पीर, पीर पीरां आप अख्वांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीट कीटां डेरा लांयदा। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, काया मन्दिर अन्दर वेख वखांयदा। जिस जन साजण रक्खया चीत, स्वच्छ सरूप दरस दखांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत, आदि जुगादी वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरला लए वर, चरन प्रीत इक्क रखांयदा। चरन प्रीती नाता जोड़, आपणी दया कमांयदा। जगत जंजाला देवे तोड़, एका नाम जपांयदा। शब्द चढ़ाए

साचे घोड़, लोआं पुरीआं बाहर करांयदा। पुरख अगम्मा आपे बौहड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख दर, कर किरपा भेव खुल्हांयदा। खोल्हे भेव दर दरवेश, आप आपणी कल धारीआ। निरगुण जोती कर कर वेस, खेले खेल अगम्म अपारीआ। आपे वस्सया आपणे देस, आप सुहाए बंक द्वारया। आपे जोधा दाता सूरबीर नर नरेश, नर नरायण आप अख्वा रिहा। आपे निरगुण जोती दस दस्मेश, आप आपणी कल वरता रिहा। आपे वेखे वेखणहारा धारी केस, मूंड मुंडाए आप उपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण वेखे घर घर सुहञ्जणा इक्क सुहा रिहा। सुहञ्जणा घर हरि गोबिन्द, एका एक रखाया। एका मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण ना पाया। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, आप आपणा मूल चुकाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर सागर सिन्ध नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गुर वेस वटाया। गुर गुर वेस गुर गुर दाना, गुर गुर जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख वखाए लोक तीनां, सृष्ट सबाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां लेख लिखाईआ। लक्ख चुरासी जोत उज्यार, दीवा बाती आप जगाईआ। आपे करे अन्ध अँध्यार, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आपे मेल मिलाए मेलणहार, मेल विछोड़ा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए तराईआ। तारनहार पुरख अकाल, एका एकँकारया। गुरमुख वेखे काया मन्दिर धर्मसाल, सच दुआरा इक्क सुहा ल्या। अन्दर मन्दिर बैठा दीन दयाल, दिवस रैण पावे सारया। जोत निरँजण दीपक बाल, दहि दिशा वेख वखा ल्या। अनहद वजाए साचा ढोल, गुरमुख सोया आप उठा ल्या। नाम रत्न गल पाए हार, फूलण बरख़ा एका ला ल्या। शब्द विचोला बण दलाल, आपणा मार्ग आप वखा ल्या। नेड़ ना आए काल महांकाल, धर्म राए मुख छुपा ल्या। चित्रगुप्त दर बहाल, लाड़ी मौत ना फेरा पा ल्या। सतिगुर पूरा लए संभाल, अन्तिम आपणी गोद उठा ल्या। लक्ख चुरासी तोड़ जंजाल, आवण जावण पन्ध मुका ल्या। दो जहानां बण रखवाल, गुरमुख साजण मेल मिला ल्या। सुहाए बंक काया धर्म सच्ची धर्मसाल, अबिनाशी करते डेरा ला ल्या । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेला आपणे दर, दर साचा इक्क सुहा ल्या। साचा दर हरि भगवान, एका एक रखाईआ। आदि जुगादी इक्क निशान, एका रिहा झुलाईआ। खेले खेल दो जहान, पुरीआं लोआं आप समाईआ। लक्ख चुरासी मेहरबान, जिया दान झोली पाईआ। सन्त कन्त कर परवान, आदि अन्त मेल मिलाईआ। जीव जन्त जगत निदान, शब्द हलूणे रिहा उठाईआ। गुरमुख साचे काया चोली रंगे रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

७६६
०७

धर, एका शब्द मणीआं मंत, मन मनुआ बन्द बंधाईआ। मनुआ बंधे शब्द डोर, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए पंचम चोर, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ । अनहद राग सुणाए साची घनघोर, दिवस रैण शनवाईआ। आपणे संग आपे लए तोर, नाम पल्ला इक्क फड़ाईआ। होए सहाई अन्ध घोर, मेटे रैण अन्धेरी शाहीआ। हरिजन अवर ना दीसे होर, गुरमुख पूरे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण लए तराईआ। तारनहार आप अपरम्पर, आदि पुरख अख्वाया। खेले खेल सर्ब घट अन्तर, अन्तरजामी भेव ना राया। लक्ख चुरासी लग्गी बसन्तर, ना सके कोई बुझाया। हरि का खेल जुगा जुगन्तर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए जगाया। गुरमुख साजण दया कमा, आपणी बूझ बुझाईआ। लहिणा देणा झोली पा, पूर्ब गहिणा तन पहनाईआ । नेत्र नैणां दरस वखा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव जणा, भेद अभेद समाईआ। अछल अछल्ल जगत भुला, वल छल खेल खलाईआ। हरि सज्जण वेखे थाउँ थाँ, थाँ सुहञ्जणा इक्क वड्याईआ। काया मन्दिर वेखे सच ग्रां, नौ दर करे रुशनाईआ। पुरख अगम्मा करे सच न्याँ, दरगहि साची दर सुहाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे गोद उठाईआ। शब्द सुहेला फड़नहारा बांह, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
७६७ ०७ आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सज्जण साचा वेख वखाईआ। गुरसिख सज्जण सच्चा शाह, शाह सुल्तान अख्वाया। ७६७ ०७
मिल्या दाता बेपरवाह, भाण्डा भरम भन्नाया। इक्क वखाया साचा थाँ, एका मन्त्र नाम ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे दे मति रिहा समझाया। गुरमुख साजण साची मति, गुर गुर आप दवाईआ। एका ब्रह्म एका तत्त, एका भेव खुल्हाईआ। एका जोत सति असित, सति सरूप समाईआ। एका बीज नाम वत, काया काअबा बीज बिजाईआ। एका खोल्हे साचा हट्ट, चौदां हट्ट खुल्हाईआ। एका वणज लए खट, नाम वपारा इक्क कराईआ। एका शब्द एक पट्ट, तन श्रृंगार कराईआ। एका शब्द अगम्मी मारे सट्ट, बजर कपाट तुड़ाईआ। भाग लगाए काया मट्ट, गुर मन्दिर खोज खुजाईआ। सच सरोवर तीर्थ तट्ट, आत्म अन्तर इक्क इशनान कराईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, सगली चिन्त मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सज्जण वेखे चाँई चाँईआ।

* २२ कत्तक २०१५ बिक्रमी टोपन राम दे घर किरकी पूना *

खड़ग निवास खड़ग कुण्ड, हरि हरि वेख वखांयदा। जोती खेल विच ब्रह्मण्ड, भेव कोई ना पांयदा। उत्भुज सेत्ज वेखे जेरज अंड, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। गुरमुखां करे आपे वंड, आप आपणी धार बंधांयदा। नाता तोड़े भेख पखण्ड, साचा मार्ग एका लांयदा। गुरमुख गुरसिख आत्म होए ना रंड, सृष्ट सबाई मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। खड़ग कूट जगत निवास, हरि हरि दिस ना आया। पारब्रह्म प्रभ अबिनाश, खेले खेल सृष्ट सुबाया। जीवां जन्तां वेखे खेल तमाश, आदि अन्त वेस वटाया। साचे मण्डल पावे रास, हरिजन साचे वेख वखाया। काया मन्दिर वेख प्रभास, फल फुलवाड़ी दए लगाया। लहिण देण चुकाए दस दस मास, जो जन मंग मंगाया। पूरन करणहारा आस, करनी करता नाम धराया। जिस जन बख्शे चरन धरवास, धर धरनी दए सुहाया। पार कराए पृथ्मी आकाश, गगन पतालां वेख वखाया। हरिजन हरि मन्दिर काया घर, आप आपणा कर दरस, आप आपणा मेल मिलांयदा। साचा मेला हरि करतार, हरि हरि आप जणांयदा। काया मन्दिर सच द्वार, घर सुहञ्जणा इक्क वखांयदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, सृष्ट सबाई संग निभांयदा। आपणा महल्ल आप उसार, अन्दर मन्दिर इक्क बणांयदा। डूँघी कन्दर पावे सार, अछल अछल्ल आप रखांयदा। निरगुण बाती कर उज्यार, दीपक जोती इक्क जगांयदा। शब्दी धुन अपर अपार, अनहद ताल वजांयदा। नारी नर ना पावे सार, गुरमुख साजण मेल मिलांयदा। आदि जुगादी साची कार, जुग जुग मात करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा घर, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। काया मन्दिर घर उजाला, हरि हरि जोत जगाईआ। गुरमुखां मेला दीन दयाला, घर मन्दिर दए मिलाईआ। वेख वखाए साचे लाला, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लहिणा नेत्र नैणां, आप आपणा दरस दखाईआ। नेत्र नैण आपे खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। शब्द अगम्मी आपे बोल, भेद अभेद आप खुल्हांयदा। नाम कंडे एका तोल, साचा तोला नाम धरांयदा। भाग लगाए काया चोल, जो जन मंग मंगांयदा। बज़र कपाटी कुण्डा खोल्ह, दस्म दुआरी वेख वखांयदा । आत्म सेजा वसे कोल, आप आपणा मुख छुपांयदा। हौली हौली रिहा बोल, आप आपणा राग अल्हांयदा। काया धरती रिहा मौल, धर धरनी इक्क वखांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत धारा मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा । गुरमुख मेला सच द्वार, हरि हरि आप कराईआ। मेले मेल मेलणहार, भेव ना कोई रखाईआ। गुरमुख सोहे इक्क द्वार, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी

कार, आदि जुगादि आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंस सरबंस कोटन कोट सहँस सहँसर पार कराईआ। कोटन कोटी कोट, एका एक अख्वानया। गुरमुखां कढ्ढे वासना खोट, दुरमति मैल मिटानया। आलणिउँ डिग्गे जीव जन्त बोट, आप आपणी गोद उठानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहानया। साचा घर हरि सुहंता, एका एकँकारया। एका जोत श्री भगवन्ता, जुग जुग लए मात अवतारया। मेल मिलाए साचे कन्ता, वेखे बन्द किवाड़या। जो जन दर दुआरे होए मंगता, मंगे नाम दान दरस अगम्म अपारया। काया चोली आपे रंगदा, रंग मजीठी इक्क चढ़ा रिहा। आपणे अन्दर आपे लँघदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, टुट्टी गंढुणहार गोपाल, गुरमुख वेखे साचे लाल, सन्त सुहेला इक्क अख्वा रिहा। सन्त साजण हरि हरि मीत, सतिगुर आप अख्वा रिहा। आप आपणी चले रीत, चाल अवल्लड़ी इक्क वखा रिहा। आपे हस्त आपे कीट, आपे पतित आप पुनीत, पतित पावन नाम धरा ल्या। गुरसिख ना देहुरा मन्दिर मसीत, गुरद्वार ना कोई जणा रिहा। गुरमुखां दए शब्द अनडीठ, काया मन्दिर अन्दर ताल वजा ल्या। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, सन्त मनी सिँघ लेख लिखा ल्या। आप आपणे रक्खे साया हेठ, जिस जन आपणी दया कमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, दर साचा इक्क सुहाया। शब्द सुनेहड़ा साचे सन्त, हरि हरि जोत जगाईआ। मेल मिलावा हरि हरि कन्त, नारी कन्त इक्क अख्वाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। रसना जिह्वा मणीआं मंत, नाम अमोला झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे दए वधाईआ। साचा घर सन्त दुलार, मनी सिँघ मन मानया। पारब्रह्म प्रभ लए अवतार, खेले खेल दो जहानया। लोआं पुरीआं पावे सार, नौ खण्ड होए प्रधानया। सत्तां दीपां दए हुलार, लक्ख चुरासी जोधा सूरबीर बली बलवानया। गुरमुख साचे लए उभार, जिस जन देवे नाम निधानया। एका अक्खर कर प्यार, दूजा भेव मिटानया। तीजा खोल्हे बन्द किवाड़, नेत्र नैण इक्क वखानया। चौथे पद देवे वाड़, देवे साचा ब्रह्म ज्ञानया। पंचम मेला मीत मुरार, हरिजन साचा घर पछानया। छप्पर छन्न ना कोई पसार, घर घर बैठा हरि भगवानया। निरगुण जोत कर उज्यार, लक्ख चुरासी खेल महानया। सन्त मनी सिँघ सांझा यार, सतिगुर पूरा देवे माणया। सिँघ बिशन कर प्यार, महल्ल अटल इक्क वखानया। अनहद देवे इक्क सतार, बहत्तर नाड़ा आप हिलानया। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी खेल अपार, पंज तत्त होए परधानया। रक्त बूंद दए अधार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वखानया। मन मति पाए सार, बुध बिबेक इक्क वखानया। नौ दर रहे विचार, खेले खेल श्री भगवानया। दसवें मेला हरि करतार,

जो दर आए मंगे वर, दरस दरस दरस इक्क महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ दर दर द्वार, सर्ब वखानयां। सन्त मनी सिँघ तेरा दर, हरि हरि जोत जगाईआ। आप आपणा लए वर, लोकमात करे कुड़माईआ। जोती शब्दी खेल कर, पंज तत्त दए तजाईआ। अगम्म अगम्मड़े धाम वड़, अलक्ख निरँजण एका अलख जगाईआ। सृष्ट सबाई रिहा फड़, दिस किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई आकार जणाईआ। पंच विकारा रिहा लड़, दर दर दए सजाईआ। गुरमुख विरला साचे पौड़े जाए चढ़, जिस आत्म ब्रह्म जणाईआ। एका अक्खर जाए पढ़, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। कलिजुग अग्नी ना जाए सड़, काम क्रोध लोभ मोह, हँकार ना होए हलकाईआ। पुरख अबिनाशी हरिजन हर घट जाए वड़, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मढ़ी गौर ना जाए सड़, ख़ाकी ख़ाक ना कोई रखाईआ। सन्तन मीता एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। आदि जुगादी कर पसार, लोकमात भेख वटांयदा। कलिजुग तेरी खेल न्यार, लेखा लिख्त भेव ना पांयदा। हरि जू वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आपे डेरा लांयदा। गुरमुखां देवे नाम अधार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। वेखणहार सच द्वार, कवण द्वार जन सुहांयदा। एका देवे नाम भण्डार, गुरमुखां झोली आप भरांयदा। सतिजुग साचा बण वरतार, सन्त मनी सिँघ विच विचोला आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका बोला, इक्क जैकारा लांयदा। साचा घर मात सुहावणा, हरि साचा मेल मलन्नया। आप आपणा भेट चढ़ावणा, दूई द्वैती भाण्डा भन्नया। मदिरा मास रसन तजावना, भाग लग्गे काया छप्पर छन्नया। कोटन कोट प्रकाश रवि ससि करावणा, मिटे रैण अन्धेरी मस्सया। राग अनादा इक्क सुनावणा, पंच विकारा जाए भन्नया। महल्ल अटल उच्च मिनार डेरा लावणा, बजर कपाटी तोड़े जिंदिआ। गुरमुख साचा संग रलावणा, पारब्रह्म सतिगुर पूरा घर साचे आपे मन्नया। हरिसंगत हरि मेल मिलावणा, खेले खेल दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, खड़ग खण्डा हथ्थ उठावणा। घड़ग पुर निवास, हरि खण्डा तेज चमकारया। जन भगतां पूरन करे आस, देवे नाम सहारया। जिस जन तृष्ना लग्गी प्यास, तृष्ना भुक्ख निवारया। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना गा रिहा। पावे सार पृथ्मी आकाश, दो जहानां मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझा रिहा। गुरमुख वेख अधार, गुरमुख बूझ बुझाईआ। गुरमुख पावे सार, मनमुख भेव ना राईआ। सतिगुर पूरा कर उज्यार, आप आपणी जोत करे रुशनाईआ। गुरसिख मेला मीत मुरार, मेल मिलावा साचा माहीआ। मनमुखां दिसे अन्ध अँध्यार, एका रैण अन्धेरी छाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रंग रंगाईआ।

सन्त मनी सिँघ सच प्यार, हरि साचे वड वड्याईआ। मित गत जाणे आप करतार, पुरख अबिनाशी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, आप आपणी दया कमाईआ। दया कमाए दयानिध दाता, हरिजन वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई आप ज्ञाता, भेव अभेद ना कोई जणांयदा। जिस जन बंधाए चरन नाता, आदि जुगादि संग निभांयदा। दरस दखाए इक्क इकांता, घर साचे फेरा पांयदा। खेलणहार आपे दाता, आप आपणा कर्म कमांयदा। सतिजुग तेरी साची गाथा, तेरा नाम जपांयदा। नाम चलाए एका गाथा, गुरमुख आप चढ़ांयदा। इक्क जपाए पूजा पाठा, एका इष्ट रखांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। सो पुरख निरँजण हरि मेहरवान, हरी हरि आप अख्वाया। जिस जन देवे जिया दान, नाम नामा झोली पाया। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म समझाया। धर्म झुलाए इक्क निशान, दर साचे आप झुलाया। ना कोई दीसे पंज शैतान, जगत विकारा ना कोई रखाया। एका अक्खर इक्क ज्ञान, जगत विद्या मूल ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख देवणहारा वर, घर साचा वेख वखाया। घर साचा दर साचा, साची बणत बणाईआ। जीउ पिण्ड जन वेखे काचा, पंज तत्त करी कुड़माईआ। त्रैगुण माया लग्गी आंचा, दिवस रैण रही जलाईआ। मन मनुआ नौ दुआरे नाचा, मति मतवाली रही शरमाईआ। बुध मति ना देवे साथा, बैठी नैण मटकाईआ। सगल विसूरा हरिजन लाथा, जो जन हरि नेत्र दर्शन पाईआ। सर्बकला आपे समरथा, गुरमुखां वेख वखाईआ। खेले खेल त्रिलोकी नाथा, त्रैभवन दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आप आपणा रंग रंगाईआ। काया चोली रंग रंगावणा, रंगणहार करतार। पहली मंग मंग मंगावना, शब्दी भरे भण्डार। दूजे तृष्ना भुक्ख गंवावना, खोल्हे बन्द किवाड़। चौथे चौथे पद समावणा, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। पंचम मीता घर साचे पावना, पुरख अबिनाशी साचा लाड़। नारी कन्त एका धाम सुहावना, साचा वेख इक्क अखाड़। शाह सुल्ताना वेख वखावणा, मेट मिटाए पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, जिस जन दर्शन पावणा।

७७१ ०७

बिशन सिँघ हरि तेरी याद, हरि हरि वेख वखाईआ। वेखणहार पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्माद, आदि जुगादि खोज खुजाईआ। हरि अनादी सुत वजाए साचा नाद, शब्द सुत उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मुख छुपाईआ। आप आपणा मुख छुपा, भेव अभेद रखांयदा। सन्त मनी सिँघ आप जगा, साची

सेव लगांयदा। लेखा लिख्त विच ना गया आ, लिखणहार दिस ना आंयदा। सन्त मनी सिँघ उच्ची कूके सृष्ट सबाई दए हिला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव रखांयदा। सन्त मनी सिँघ सुत दुलार, हरि हरि आप उपाया। शब्द शब्दी कर प्यार, जोती जोत जगाया। साचे अन्दर कर उज्यार, बाती दीवा इक्क टिकाया। कमलापाती खेल न्यार, दिवस रैण कराया। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, आपणा मुख दिखलाया। शब्द अगम्मी कर त्यार, गुर पूरे आप चढ़ाया। लहिणा देणा चुकाए बाकी विच संसार, जोती जोत कर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, दर घर साचा आप दवाया। सन्त मनी सिँघ सति जणाई, हरि हरि आप करांयदा। अट्ठे पहर वज्जदी रहे वधाई, गीत गोबिन्द अल्हांयदा। बिशन सिँघ रिहा समाई, पारब्रह्म आप अख्वांयदा। माया पर्दा बैठा पाई, शेर सिँघ शेर नज़र नहीं आंयदा। अन्तिम वेले पकड़े बाहीं, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। गुरमुखां देवणहारा ठंडीआं छाईं, जुग जुग वेस वटांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कांईं, चिन्ता सोग मिटांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँईं, समरथ पुरख अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मुख छुपांयदा। सन्त मनी सिँघ शब्द जैकार, बिशन सिँघ सुणाया। सतिगुर पूरा लै अवतार, नर नरायण अख्वाया। पंज तत्त कर प्यार, आपणा रूप वटाया। प्रगट होवे विच संसार, कलिजुग अन्तिम डंक वजाया। जोती जगे अगम्म अपार, दो जहान वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न देवत सुर दए हुलार, करोड़ तेतीसा आप जगाया। लक्ख चुरासी मारे मार, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। गुरमुखां करे इक्क प्यार, एका नाम दृढ़ाया। चार वरनां दए सहार, ऊँचां नीचां मेल मिलाया। राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाया। नाम खण्डा तेज कटार, मारी जाए वारो वार, दूसर दिस किसे ना आया। जोधा सूरबीर बली बलकार, गुर गोबिन्द वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ दित्ता वर, लेखा शब्द जणाया। शब्द जणाई हरि गोपाल, आपणी बूझ बुझांयदा। सन्त मनी सिँघ साचा लाल, आपणी गोद उठांयदा। करे कराए आप प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। काया मन्दिर वेख सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण आसण लांयदा। शब्दी शब्द चलाए पुरख अकाल, पुरख अकाल रूप वटांयदा। सिँघ बिशन आपे भाल, आपे सन्त मेल मिलांयदा। सन्त विचोला जगत दलाल, गुरसिख आप उठांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, धर्म राए ना डन्न लगांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, अन्त कन्त फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन विच समांयदा। सिँघ बिशन अग्गों मोड़, सन्तन बचन अल्हाया। शेर सिँघ ना चढ़या साचे घोड़, वाग ना कोई हथ्थ उठाया। अन्दर मन्दिर ना लाया आपणा पौड़, महल्ल अटल ना वेख वखाया।

सुखमन नाड़ी गली सौड़, डूँघी भवर ना पार कराया। जगत तृष्ना लग्गी औड़, आत्म तृप्त ना कोई कराया। मिट्ठा होया रीठा कौड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मुख छुपाया। सन्त मनी सिँघ नाम ललकार, एका एक लगाईआ। सिँघ बिशन तेरा सच प्यार, साचा दर सुहाईआ। पुरख अबिनाशी एकँकार, आपणी कल वरताईआ। चरन ढहि पए द्वार, नेत्र नैण खुल्हाईआ। बन्द ना होए खुल्हा किवाड़, जोती नूर ना कोई खिचाईआ। आपणे अन्दर आपे लए वाड़, आपणा बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ देवे सच सालाहीआ। सिँघ बिशन अग्गों बोला, एका एक सुणाया। ज्ञानी गुणी ना भाला भोला, ठग्ग ठगौरी ना कोई रखाया। मेरी बुध मेरा तोला, मेरा कुण्डा मेरे तन रखाया। तेरी सुध्ध तेरा डोला, तेरा तेरी झोली पाईआ। सिँघ शेर दुआरे ना होया गोला, आप आपणा मुख भवाया। काया मन्दिर अन्दर पाए रौला, दिवस रैण अन्धेरा छाया। फल फुलवाड़ी खिली गुलज़ार, रूप बसन्त ना वेख वखाया। झिरना झिरया ना नाभ कँवला, मुख स्वांत बूंद ना कोए चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ दित्ता वर, मेला घर घर साचा मेल मिलाया। सन्त मनी सिँघ साचा गुर, सिँघ बिशन जणाईआ। मिल्या मेल लिख्या धुर, घर साचे वड वड्याईआ। एका मार्ग रिहा धर, एका राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन देवे साचा वर, साची धार चलाईआ। साची सिफ्त सलाह, आदि जुगादि एका एक अख्वाईआ। सन्त विचोला मात बणा, साचा सुख जणाईआ। अन्तिम ढोला दए सुणा, आप आपणे मुख अल्हाईआ। आत्म पर्दा ओहला दए चुका, पूत सपूता विचोला इक्क रखाईआ। काया चोला दए सुहा, पंज तत्त करे रुशनाईआ। राए धर्म ना दए सज़ा, सन्त मनी सिँघ संग रखाईआ। चरन कँवल कँवल लए बहा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी मित आपणी गत, आपणे हथ्थ रखाईआ। गतिमित हथ्थ करतार, करनी करता आप रखाया। रत्ती रत्त विच संसार, रक्त बूंद मेल मिलाया। पंज तत्त कर प्यार, हड्ड मास नाड़ी चम्म वेख वखाया। मनमति दए अधार, बुध बबेका नाल रलाया। आप आपणा कर किनार, बैठा धाम सुहाया। घर महल्ल अटल उच्च मिनार, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। निरगुण जोती कर उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाया। सन्तन मीता हरि करतार, सति सति वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन संग देवे वर दर द्वार घर हरि नर नरायण एका पाया।

७७३ ०७

७७४ ०७

* २३ कत्तक २०१५ बिक्रमी किरकी पूना *

तारनहार हरि समरथ, आदि पुरख अख्वांयदा। हरि सन्तन देवे साची वथ्थ, नाम नामा झोली पांयदा। शब्द जणाई साची गथ, एका बूझ बुझांयदा। सच चढ़ाए आपणे रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण वेस वटांयदा। आदि निरँजण पुरख अबिनाश, एका एकँकारया। हर घट अन्दर रक्खे वास, जोती नूरो नूर उज्यारया। मण्डल मण्डप पावे रास, थिर घर बैठ सच्ची सरकारया। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, गगन पतालां फेरा पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता वेस वटा रिहा। पारब्रह्म हरि निरँकार, एका रंग समाया। निरगुण जोती नूर उज्यार, रूप रंग ना कोई वखाया। उच्च महल्ल अटल मिनार, थिर घर वासी नाउँ धराया। अगम्म अगम्मड़ा बैठ करे खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। धरया नाउँ हरि निरँकार, आपणी दया कमाईआ। आपणा महल्ल लए उसार, आपे बैठा आसण लाईआ। सच सिँघासण खेल न्यार, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। शब्दी सुत मीत मुरार, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकाल मूर्त आप अख्वाईआ। अकाल मूर्त अकल कल धार, आपणी खेल खलांयदा। शब्द सुत सुत कर प्यार, आपणी धार चलांयदा। सो पुरख निरँजण पावे सार, आदि जुगादि वेस वटांयदा। भगत वछल वछल गिरधार, भगवन रूप समांयदा। सन्त कन्त अन्त प्यार, एका दर वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलांयदा। धार चलाए हरि भगवन्ता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लोकमात उठाए साचे सन्ता, आत्म ब्रह्म जणाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, माया मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता वेख विचार, द्वापर तेरी पावे सार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, हरि हरि वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई होई नंग, हरि हरि नाम दिस ना आंयदा। मानस जन्म होए भंग, लक्ख चुरासी ना कोई तुड़ांयदा। अंगीकार ना लाए अंग, दर द्वार ना कोई सुहांयदा। पंच विकारा होया जंग, दिवस रैण वेख वखांयदा। अमृत धार ना दिसे गंग, सर सरोवर ना कोई नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त वेस वटांयदा। आदि अन्त एकँकार, एका इक्क अख्वाया। सतिजुग सुहेला खेले खेल अपार, खेलणहारा रूप वटाया। त्रेता तेरा भेव न्यार, राम रामा वेस वटाया। तोड़े गढ़ लंका हँकार, रावण हँकारी रहिण ना पाया। ग़रीब निमाणे करे प्यार, आप आपणे गले लगाया। भव सागर पार कराए, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाया। त्रेता तेरा रंग अपार, पुरख अगम्मड़ा आप चढ़ांयदा। वेस अनेका आप करतार, आपणा आप करांयदा। द्वापर तेरा मीत मुरार, तेरा संग रखांयदा। इक्क इकल्ला कर पसार, मुकंद मनोहर नाम धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। नाम बंसरी शब्द काहन, सुरती गोपी आप नचाईआ। शब्द शब्दी हो बलवान, पंज तत्त समाईआ। साँवल सुन्दर मेहरबान, मुकट बैन नाउँ धराईआ। नेत्र नैण वेख वखाण, आप आपणी कल वरताईआ। खेले खेल दो जहान, त्रिलोकी नाथ वड वड्याईआ। वेख वखाए जीव निधान, नार कन्त वेख वखाईआ। भगत जन भगत वछल कर पछाण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्रह्म जोती देवे ब्रह्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूढ़ कराए सच इशनान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। भगत वछल हरि मीता, एका एक अख्वाया। जुग जुग जाणे आपणी रीता, आप आपणी धार चलाया। आपणी सुणाए आप गीता, ज्ञान गोझ खुल्हाया। दिवस रैण वस्सया चीता, चितवित ना ठगौरी पाया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच लए तराया। आपणा भाणा आपे लाए मीठा, आपणे भाणे आप समाया। खेले खेल जगत अनडीठा, वेद शास्त्र भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात कर प्यार, आप आपणा वेस वटाया। कलिजुग अथर्बण अल्ला इलाही नूर, हरि हरि जोत जगाईआ। आपे बैठ शाह कोहतूर, नाद अनादि दए वजाईआ। सर्बकला आपे भरपूर, अकल कला अख्वाईआ। आपे नेड़े आपे दूर, हर घट आपे वेख वखाईआ। ईसा मूसा आसा पूर, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। सहँसर मुख गाए हाज़र हज़ूर, नेत्र साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग वेख जगत महल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। संग मुहम्मद चार यार नाल रलाई राणी अल्ला, एका रंग रंगाईआ। जलां थलां पावे सार, डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा अक्खर आपे रिहा पढ़ाईआ। आपणा अक्खर आप पढ़ा, आपणी दया कमांयदा। शरअ शरीअत इक्क बणा, कलमा नबी रसूल आप मिटांयदा। हक्क हकीकत वेख वखा, रोज़ा बांग इक्क वखांयदा। लाशरीक इक्क ख़ुदा, कायनात विच समांयदा। मुकामे हक्क वेख वखा, ख़ुदी ख़ुदाई मेट मिटांयदा। चौदां तबकां फेरा पा, ज़िमीं अस्माना आप टिकांयदा। रवि ससि प्रकाश आप करा, आप आपणा रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलांयदा। लेखा लिखे आप करतार, आपणी खेल खलाईआ। आवे जावे विच संसार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। शब्दी धुन अपर अपार, अनादी तूर सुणाईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, सोया रहिण

ना पाईआ। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़, आप आपणा रूप दरसाईआ। साचे मन्दिर आपे वाड़, दे मति रिहा समझाईआ। धर्म वखाए इक्क अखाड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, हरि नामे वड वड्याईआ। नानक वर एका पा, एका अलक्ख जगांयदा। अलक्ख निरँजण भेख अपार, भेव कोई ना पांयदा। निरगुण जोती जोत उज्यार, निरगुण रूप ना कोई दरसांयदा। इक्क इकल्ला कर पसार, आप आपणा थान सुहांयदा। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, सच सिँघासण आसण लांयदा। ना कोई दिसे चोबदार, भेव अभेद ना कोई रखांयदा। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त ना कोई जणांयदा। धरत धवल ना कोई आकार, आकाश प्रकाश ना कोई रखांयदा। विष्नूं ना करे कोई आकार, लछमी संग ना कोई रखांयदा। शंकर त्रशूल ना हथ्थ रिहा उठा, जटा जूट ना कोई जणांयदा। पार्बती ना कोई धार, ना कोई मेल मिलांयदा। सुरपति इन्द ना कोई वखाण, करोड़ तेतीस ना कोई उठांयदा। निरगुण ना कोए पछाण, पंज तत्त ना कोए बणांयदा। ना कोई पूजा वेद पाठ पुराण, गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ांयदा। ना कोई अञ्जील ना कोई कुरान, मसल्ला हेठ ना कोई विछांयदा। खाणी बाणी ना कोई पछाण, ना कोई नाअरा नाम लगांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, नानक निरगुण दर्शन पांयदा। मंगे मंग दर दरबान, आप आपणी झोली डांयदा। पारब्रह्म प्रभ हो मेहरवान, नाम सति झोली पांयदा। देवे शब्द धुर फ़रमाण, सोहँ रसना गांयदा। सो पुरख बली बलवान, हँ हँगता मेट मिटांयदा। ब्रह्म हँ पारब्रह्म रूप महान, एका दूजा भेव चुकांयदा। एका रंग रंगे रंगणहार, करनी करता पुरख नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता हरि हरि वर, एका शब्द जणांयदा। नानक शब्द हरि जणा, आपणी दया कमाईआ। चार वरन बनाउणा भैण भ्रा, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। हिन्दू मुस्लिम धाम सुहा, एका गुण गाईआ। एका नाम सच जपा, बिन हरि नामे कोई ना थाँईंआ। गणपति गणेश रिहा सुणा, शिव शंकर वड वड्याईआ। वेद व्यासा आप उपा, पुराण अठारां रिहा सुणाईआ। शास्त्र सिमरत फोल फुला, गुण अवगुण जणाईआ। कृष्ना मिले ना किसे थाँ, साध सन्त रहे कुरलाईआ। भगत भगवन्त करे सच न्याँ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग जीव जन्त होए काँ, जूठ झूठ विष्टा रहे खाईआ। ना कोई मात पिता पूत माँ, ना नाता खेल खलाईआ। ना कोई नगर ना कोई गरां, सच धाम ना कोई दरसाईआ। ग़रीब निमाणयां ना देवे कोई थाँ, राज राजानां जूठ झूठ मस्तक छाहीआ। बिन हरि करे ना कोई न्याँ, दरगहि साची सच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक दे मति रिहा समझाईआ। नानक गुर वर घर पा, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी सच भण्डार, तेरे नाम सहारया। लोकमात हरि वेख्या

साचा थाँ, चारों कुन्ट फेरा पा रिहा। दहि दिशा चरन टिका, आप आपणा डंक वजा रिहा। नाम नामा आप सुणा, सति सति वरता रिहा। पूरन कामा हरि करा, करणहार आप अख्वा रिहा। जगत दमामा आप वजा, तन नगारा इक्क सुणा रिहा। अनहद ढोलक आप वजा, सरन सरनाई आप अख्वा रिहा। साचा मार्ग इक्क वखा, हिन्दू मुस्लिम आप समझा रिहा। पारब्रह्म नाता जोड़ जुड़ा, दूई द्वैती मेट मिटा रिहा। पुरख बिधाता इक्क ख़ुदा, नाम अमाम इक्क बणा रिहा। दोहां दिसे ना कोई जुदा, एका रंगन रंग चढ़ा रिहा। चरन कँवल सरन जो होए फिदा, ख़ालक ख़लक विच दिसा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता इक्क वर, साची सेवा मात करा रिहा। नानक सेवा सेवादार, कलिजुग खेल खलाया। कूड़ कूड़ा वेख अन्ध अँध्यार, नाम साचा चन्द चढ़ाया। गुरमुख साचे लाए पार, आप अपणी दया कमाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, गूढ़ी नींद ना कोई उठाईआ। शब्द डंका रिहा मार, धरत धवल मिलाया। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां आप जगाया। कलिजुग जीव होए विभचार, हरि का भेव किसे ना पाया। नानक गुर कर पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरी धार, तेरा तेरे विच समाया। लक्ख चुरासी पसर पसार, तेरा रूप दिस ना आया। सृष्ट सबाई नाता तोड़े कुड़यार, जूठा झूठा मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता शब्द वर, आप आपणा शब्द सुणाया। पुरख अबिनाशी शब्द जणाई, नानक गुर कराईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे कूड़ी छाही, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग जुग लोकमात आवे जावे फेरा पाई, अभेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखे घर घर, आप आपणी खेल खलाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्ध घोर, हरि हरि वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई मीता पंचम चोर, साचा शब्द ना कोई जणांयदा। नाम शब्द ना बन्ने डोर, घर मंगल कोए ना गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग आपणी बणत बणांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल खलावणा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। निहकलंकी जामा पावणा, शब्दी डंक वजाईआ। राउ रंकां आप समझावणा, साधां सन्तां दए हिलाईआ। ब्रह्मा विष्न देवत सुर मेल मिलावणा, नौ खण्ड करे कुड़माईआ। जूठ झूठ मेट मिटावणा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, एका शब्द पढ़ाईआ। चार वरनां इक्क बणावणा, नाता तोड़े भैणां भाईआ। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम बहावणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सीस ताज किसे नज़र ना आवणा, दर दरबान ना कोई रखाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खलावणा, नौ खण्ड पृथ्मी एका नाम जपाईआ। सत्त रंग निशान झुलावणा, आपणे हथ्थ उठाईआ। पंचम मुख ताज सीस उठावणा, सत्तां दीपां आप जगाईआ। चरन

कँवल ध्यान रखावणा, चरन चरनोदक इक्क प्याईआ। शब्द खण्डा हथ्थ उठावणा, कूड़ कुड़यारा मेटे छाहीआ। राम रूप हरि वेस वटावणा, हनवन्ता मेल मिलाईआ। काहना कृष्ना दर सुहावणा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। सीता सुरती मेल मिलावणा, रामा कृष्ना इक्क वखाईआ। संग मुहम्मद चार यारी संग तुड़ावणा, अल्ला राणी पर्दा लाहीआ। नानक नामे दर सुहावणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। गोबिन्द लेखा लेख चुकावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। पूत सपूता आप अख्वावणा, रूप रंग ना कोई जणाईआ। कलिजुग वेला अन्त सुहावणा, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। मनी सिँघ माण दिवावणा, सतिजुग धार चलाईआ। सतिगुर साचा आप बणावणा, समरथ हथ्थ सिर टिकाईआ। नाम रथ इक्क चलावणा, चार वरना लए चढ़ाईआ। सोहँ चप्पू आप लगावणा, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। फड़ फड़ बाहों पार करावणा, बेड़ा बन्ने लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त भगत जीव जन्त आदि अन्त, आप आपणा मेल मिलाईआ। भगतन मीता हरि भगवन्त, एका एक अख्वांयदा। वेख वखाए साचे सन्त, हरि सन्तन संग निभांयदा। गुरमुख मेला हरि हरि कन्त, साचा धाम सुहांयदा। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम मजीठी इक्क चढ़ांयदा। आप आपणी सेजा चढ़े कन्त, लेखा लिखण विच ना आंयदा। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वेस वटांयदा। भरमे भुल्ले जीव जन्त, कलिजुग माया पर्दा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा नूर अपार, हरि हरि करे रुशनाईआ। सन्त मनी सिँघ कर कर प्यार, एका ब्रह्म जणाईआ। गुरमुख साचा मीत मुरार, सगला संग निभाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप हो जाईआ। आपे नारी आपे नार, करता पुरख आप अख्वाईआ। आपे करे तन शृंगार, आपे वेख वखाईआ। आपे बख्शे फूलणहार, आपणी सेजा आप सुहाईआ। आप राग रागनी गाए कर प्यार, मंगलाचार आप वखाईआ। आपे गण गधंरब पावे सार, देवत सुर आप अख्वाईआ। आपे शंकर बरन होए विभचार, आपे विष्नूं रूप वटाईआ। ब्रह्मा मीता आप निरँकार, आप आपणी करे रुशनाईआ। कँवल कँवला हो उज्यार, धरत धवल सुहाईआ। त्रैगुण माया खेल अपार, हरि करता वेख वखाईआ। पंज तत्त गढ़ हँकार, आपे लए वसाईआ। उप्पर चढ़ सच्ची सरकार, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। गुरमुख विरला पावे सार, भगतन राह जणाईआ। भगत वछल आप करतार, गिरवर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लोकमात वेस धर, आप आपणी धार बंधाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस अवल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। निरगुण वस्सया इक्क इकल्ला, सरगुण वेख वखाईआ। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलाईआ। सच सिँघासण एका मल्ला,

उच्चे पर्बत डेरा लाईआ। वेद व्यासा फड़या पल्ला, आप आपणी दया कमाईआ। सम्बल नगरी करया हल्ला, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। वस्सया निहचल धाम अटला, उच्च अपार वड्डी वड्याईआ। सन्त मनी सिँघ हथ्थ फड़ाया भल्ला, एका कलम चलाईआ। आप आपणा करया वल छला, वल छल धारी आप अख्वाईआ। जोती जगे घड़ी घड़ी पल्ल पल्ला, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। दीवा बाती एका बला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमाईआ। कर्म करावणहार संसार, एका एक अख्वाया। आदि अन्त लए अवतार, जुग जुग वेस वटाया। भगतन मीता कर प्यार, हरि साचे सन्त जगाया। गुरमुखां देवे नाम अधार, एका नाम बुझाया। गुरमुख साचा पावे सार, जिस जन भेव खुल्हाया। एका अन्दर एका मन्दिर एका घर सच्चा घर बार, घर साचा वेख वखाया। एका राम एका नाम एका गुर इक्क गोबिन्द इक्क ख़ुदाई बेऐब परवरदिगार एका मीता सांझा यार, एका धाम सुहाया। एका शब्द इक्क जैकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त दित्ता वर, आप आपणा लेख लखाया। नाम सति सति जैकार, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई कर प्यार, एका बूझ बुझाईआ। एका राम इक्क अवतार, एका कृष्न अख्वाईआ। एका मुहम्मद अहिमद सांझा यार, ऐनलहक्क एका गाईआ। मुकामे हक्क एका नाअरा, एका दर वखाईआ। एका नानक गोबिन्द कर उज्यारा, जोत दस दस रूप वटाईआ। निहकलंक इक्क आकारा, कलिजुग अन्तिम जोत करे रुशनाईआ। सन्त मनी सिँघ सुत दुलारा, बाल बाला आप उठाईआ। एका शब्द सच्ची धुन्कारा, एका राग अल्हाईआ। गुरसिक्खां करया मात प्यारा, आप आपणा राह चलाईआ। मिल्या मेल मीत मुरारा, घर साचे वज्जे वधाईआ। सोहया बंक इक्क दुआरा, नौ दुआरे गया तजाईआ। डूँघी भवरी पार किनारा, हरि सन्तन वेख वखाईआ। सन्तन जोती कर उज्यारा, जोती सन्त सिक्ख समाईआ। सिक्ख सन्त ढहि पए दुआरा, चरन कँवल बिगसाईआ। चरन कँवल सच्चा दरबारा, गुर पूरा आप जणाईआ। देवे नाम अतुल भण्डारा, तोट रहे ना राईआ। कराए वणज सच्चा वपारा, राम रत्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सन्तन भेव खुल्हाईआ। खोल्ह्या भेव पुरख अबिनाशा, सन्त वज्जी वधाईआ। चरन कँवल होया दासी दासा, अट्ठे पहर रसना गाईआ। एका एक बख्शे चरन भरवासा, भरम भुलेखा दूर कराईआ। मिल्या भूप सर्ब गुणतासा, हर घट नज़री आईआ। गुरमुखां बणे आपे राखा, हरिभगतन लए तराईआ। प्याए जाम बण बण साका, नाम प्याला इक्क रखाईआ। अन्ध अन्धेर अन्दर मन्दिर खोल्हे ताका, एका जोत करे रुशनाईआ। एका भविख्त वखाए वाका, जीव जन्त भेव ना राईआ। आपे होया पाकी पाका, पतित पापी लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त

मनी सिँघ दित्ता वर, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। मेल मिलावा सन्त सिक्ख, एका घर सुहाया। पुरख अबिनाशी लेखा लिख, घर साचे डेरा लाया। मस्तक लाई आपणी मेख, ना कोई मेटे मेट मिटाया। आपे वस्सया धारी केस, मूंड मुंडाए आपे गले लगाया। आपे होया दस दस्मेश, राम रूप आप समाया। आपे होए नर नरेश, दर दरवेश आप अख्वाया। आपे होए रिखी केश, जगत गवर्धन हथ्थ उठाया। आपे होए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, गणपति आप उठाया। आपे होए भगत भगवन्त आपणे नेत्र ल्ए पेख, अर्जन मेला मेल मिलाया। कलिजुग माया ना लग्गे सेक, सन्त मनी सिँघ वेस वटाया। आप आपणी वेख रेख, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त द्वार कर प्यार, आप आपणा डेरा लाया। अर्जन रत्त अर्जन प्यार, अर्जन हरि रंगाईआ। पंज तत्त कर उज्यार, दे मति समझाईआ। तीर्थ तट इक्क अपार, हरि चरन सरनाईआ। निरगुण जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। खेले खेल हरि निरँकार, चौदां लोक वज्जी वधाईआ। वस्सया घर सच्चा घर बार, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। दूई द्वैती मेट फट्ट, हँगता गढ़ तुड़ाईआ। अमृत आत्म ल्या चट्ट,, काया सिंच क्यारी हरी कराईआ। चरन कँवल गया ढठ्ठ, मुख धूढ़ लाए चरन धोए मस्तक छाहीआ। पुरख अबिनाशी गेड़णहारा लट्ट, मन मति आप जगाईआ। शब्द अगम्मी मारे सट्ट, धुनी नाद वजाईआ। नाता तुट्टा अट्ठ तत्त, नौ दर तजाईआ। आत्म सेजा चढ़या नठ्ठ, घर दसवें फेरा पाईआ। जोती जगे लट लट, अट्ठे पहर रुशनाईआ। सन्त मनी सिँघ सुत दुलार करे प्यार आपणा पैंडा आपे कट्ट, मिल्या मेल साचे माहीआ। गुरमुखां देवे साची वथ्थ, साची वस्त झोली पाईआ। सतिगुर चढ़ाए साचे रथ, कलिजुग वड्डी वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ बुरज सृष्ट सबाई जाणा ढठ्ठ, रविदासे वंड वंडाईआ। गुरमुख उठाए नठ्ठ नठ्ठ, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया तपया मट्ठ, कूड़ कुड़यारा लम्बू लाईआ। कोई ना दिसे अठसठ, गंगा गोदावरी रही कुरलाईआ। वेख वखाए गुरदर मस्जिद मन्दिर मट्ठ, शिवदुआला फेरा पाईआ। मदि प्याले पींदे गट गट, जगत हत्या रहे कराईआ। भेखी स्वांगी स्वांग करया नट, हरि नाटक ना कोई कराईआ। पूरा करे ना कोई घाट, दीन मज़्ब रही लड़ाईआ। सृष्ट सबाई सुत्ती सूलां खाट, ना विछाउणा कोई विछाईआ आवण जावण आण बाट, लक्ख चुरासी फेरा पाईआ। सति सन्तोख ना धीरज जत, ना दिसे पूजा पाठ, राम नाम ना कोई मिलाईआ। जगत माला फेरी इक्क सौ अठ, अट्ठ तत्त ना करे रुशनाईआ। गइतरी मन्त्र गाई गाथ, दुर्गा इष्ट ना कोई मनाईआ। शरअ शरीअत नाअरा एका गाथ, रोज़ा बांग ना कोई सुणाईआ। मुलां शेख़ मुसायक दस्तगीर शाह हकीर वेखे नौ नौं नाथ, सिद्ध चुरासी आप उठाईआ। किसे दर दुआरे दिसे ना नाम गाठ, कलिजुग कूड़ा भार उठाईआ। जगत विकारा मारे ठाठ,

जीवां जन्तां रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, गुरमुख साचे लए जगाईआ। सन्त दुलारा एका सुत्त, हरि साचा आप जगांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, चित्रकूट वेख वखांयदा। आप सुहाए आपणी रुत्त, रंग रंगीला माधव नाम धरांयदा। पंज तत्त वेखे बुत्त, कंचन गढ़ सुहांयदा। गुरमुखां उप्पर रिहा तुठ, आप आपणा मेल मिलांयदा। लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठ, जो जन नाम ध्यांअदा। अन्तर आत्म रस रहे लुट्ट, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग जीवां नाता जूठ झूठ, माया मोह पिसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला साचे दर, साचा दर सुहांयदा। सन्त मनी सिँघ सुण पुकार, हरि हरि दया कमाईआ। बस्त्र गहिणा तन श्रृंगार, एका शब्द पहनाईआ। नेत्र नैणां कज्जल धार, नामा नाम रखाईआ। सच सिँघासण अपर अपार, आत्म सेज विछाईआ। फूलण बरख़ा लाए करतार, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। लेखा लिखे जग संसार, कलिजुग वेख वखाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, धरत मात रिहा सुणाईआ। धरत मात रही पुकार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। खुल्ह्ड़े केस दब्बी पापां भार, ना कोई भार उठाईआ। साध सन्त होए विभचार, सच क्रिया ना कोई कराईआ। पुरख अबिनाश कवण पाए बिन तेरे सार, तेरी धरनी तेरे अग्गे रही कुरलाईआ। करता पुरख रिहा ललकार, आप आपणी करी जणाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंका डंक वजाईआ। मेट मिटाए दुष्ट हँकार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। सतिजुग साचा कर उज्यार, एका शब्द करे पढ़ाईआ। सोहँ शब्द जै जैकार, चार वरनां लए तराईआ। बीस बीसा ख़बरदार, सम्मत बिक्रमी करे कुड़माईआ। चरन छुहाए दिल्ली दरबार, नौ खण्ड पृथ्मी करे इक्क कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मनी सिँघ बूझ बुझाईआ। सन्त मनी सिँघ मन्नया मन, आत्म ब्रह्म जणाया। जोत निरँजण चढ़या चन्न, गुर साचा वेख वखाया। जूठा झूठा भाण्डा भन्न, भरमी गढ़ तुड़ाया। आपणे चोरां आपे दित्ता डन्न, आपणा खण्डा हथ्थ उठाया। आपणा राग सुणा आपणे कन्न, काया मन्दिर रहे गाया। रसना कहे धन्न धन्न, पारब्रह्म तेरी वड्आया। सन्त भगत जननी मात लए जण, धन्न धन्न जणेंदी माया। सतिगुर पूरा बेड़ा देवे बन्नृ, जुग जुग लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त संग शब्द तुरंग, अमृत धार गंग हरि हरि आप वहाया। अमृत धार डूँघां सागर, जल जल आप रखाईआ। गुरमुख वेखे काया गागर, राम रत्नागर इक्क कराईआ। वणज कराए सच्चा सौदागर, सच वस्त इक्क टिकाईआ। निर्मल कर्म होए उजागर, जिस जन साचा मेल मिलाईआ। मेल मिलावे साचे करते कादर, कर्मां मेट मिटाईआ। दो जहानां देवे आदर, सचखण्ड निवास रखाईआ। शब्द सरूपी देवे चादर, चिट्टी धार वहाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल

गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला साचे दर, सन्तन डोला हथ्थ फड़ाईआ। सन्तन डोली हथ्थ करतार, आपणी आप फड़ांयदा। गुरमुख साचे कर प्यार, आपणा रंग रंगांयदा। छैल छबीला विच संसार इक्क निरँकार, भगत कबीला कर त्यार, नाम वसीला आप जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन संग निभांयदा। सन्तन नाता सच द्वार, हरि हरि आप बंधाया। सन्तन वेखे विच संसार, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। गुरमुख साजण मीत मुरार, हरि हरि मेल मिलाया। निरगुण मेला अपर अपार, सरगुण भेव ना राया। सरगुण सोया पैर पसार, निरगुण लए उठाया। लहिणा देणा कर्म विचार, पूर्ब लहिणा झोली पाया। सन्त मनी सिँघ कर प्यार, साचा सिक्ख मिलाया। सिँघ बिशन कर प्यार, प्रेम प्याला इक्क प्याया। प्रेम सति होया उज्यार, साची कुल तराया। पुरख अबिनाशी पावे सार, जो बैठा मुख छुपाया। प्रगट होया विच संसार, निहकलंका डंक वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, आप आपणा भेव खुल्हाया। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ रिहा उठाया। लक्ख चुरासी मारे मार, बचया कोए रहिण ना पाया। लक्खण दीप हो उज्यार, करौच लए जगाया। पुष्कर खेल अपर अपार, जम्बु जोत करे रुशनाया। सलमल दए नाम आधार, शान भेख वटाया। कुशा कर आप उज्यार, आप आपणा दर मिलाया। सत रंग निशाना खेल करतार, सत्तां दीपां दए वखाया। वाली हिन्द करया ख़बरदार, शाह भबीखण राम रामा आप उठाया। मेटे सगली चिन्द हरि दातार, गुणी गहिंद गहर गम्भीर अख्वाया। आप लगाए मनमुखां आपणी निन्द, गुरमुख साचे लए जगाया। सिँघ बिशन बिशन सिँघ हरि मेटे चिन्द, बिशन सिँघ विचोला विच रखाया। प्रेम सिँघ सिँघ प्रेम दो जहानां पंच, निज नेत्र आप खुल्हाया। रुत्त बसन्ती महीना चेत्र, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया गागर निर्मल जोत करे उजागर, घर मन्दिर वेखे मार ध्यान, धुन शब्द धुन अनहद ढोल अपार वजाए बहत्तर नाड़, सतार वेखे पार नौ द्वार, दस्म दुआरी डेरा लाया।

आदि निरँजण हरि भगवान, एका एक अख्वाया। जोती जोत नूर महान, आप आपणा लए उपाया। आदि निरँजण मेहरबान, भेद अभेव भेव छुपाया। आदि शक्त कर प्रधान, आप आपणा रंग रंगाया। अकाल मूर्त नौजवान, एका एक एक अख्वाया। एकँकारा सच निशान, आप आपणा लए तराया। आप आपणा वेखे मार ध्यान, दूसर कोए ना संग रखाया। आप आपणा जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाया। आप आपणा जाणे धुर फ़रमाण, देवणहार नाउँ धराया। आप आपणा कर परवान, आप आपणा सीस झुकाया। आप आपणा शाह सुल्तान, आप आपणा तख्त सुहाया। आप आपणी पावे आण,

७८२
०७

आप आपणा बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। अबिनाशी करता हरि निरँकारा, एका एक अख्वांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा धाम सुहांयदा। आप आपणा मीत मुरारा, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा बंधन पांयदा। आप आपणा वेखे वेखणहारा, आप आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगांयदा। जोती नूर हरि अकाला, एका एक अख्वाया। आपे होए गुर गोपाला, दीना बंधप नाम धराया। आप आपणी फेरे माला, आप आपणा नाम जपाया। आप आपणी बैठ धर्मसाला, आप आपणा धर्म कमाया। शब्द सिँघासण खेल निराला, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताया। आपणी कल आप वरता, आपणा खेल खलांयदा। आपणी जोती आप जगा, आपणा मेल मिलांयदा। आपणी सेजा आपे चढ़, आपे वेस वटांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, घड़ण भन्नणहार आप अख्वांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आप आपणे विच टिकांयदा। आप आपणी लाए जड़्ह, आप आपणी आप उखड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण नाउँ धरांयदा। आदि निरँजण हरि मेहरबान, जोती जोत जगाईआ। दूसर ना कोई होर निशान, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई ज़िमी ना अस्मान, धरत धवल ना कोई सुहाईआ। रवि ससि ना कोई पछाण, मण्डल मण्डप ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप करे रुशनाईआ। निरगुण रूप हरि दातार, एका एक अख्वाया। आप आपणी बन्न्हे धार, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणा मीत मुरार, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी बणया नार, नारी कन्त आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। दर सुहाए हरि दातार, आपणी जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी खेल न्यार, खेलणहार दिस ना आईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। अलक्ख निरँजण इक्क जैकार, आपणा नाअरा लाईआ। हो प्रतक्ख पावे सार, जोती जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर सुहाईआ। आदि पुरख हरि भगवान, हरि हरि खेल खिलांयदा। जोती नूर इक्क महान, इक्क आपणा आप जगांयदा। आपे खेले खेल दो जहाना, दो जहानां वाली आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा घर आप सुहांयदा। घर सुहाए थिर दरबार, दर मन्दिर आप सुहाया। शाहो भूप निरगुण धार, निरगुण निरगुण विच उपाया। महल्ल अटल उच्च मुनार, बैठा डेरा लाया। रूप रंग ना कोई विचार, अकाल मूर्त नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा दर दुआरा

खोलू, आपणी दया कमाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा वजाए ढोल, आप आपणा लए जगाईआ। आप आपणे वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। आप आपणे अन्दर आपे मौल, आप आपणे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर बैठा बेपरवाह, आपणा दर सुहाया। साचा धाम आप सुहा, आपे वेख वखाया। निरगुण जोती इक्क जगा, एका रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मन्दिर इक्क सुहाया। हरि मन्दिर हरि द्वार, आपणा आप उपाया। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। सूरज चन्न ना कोई उज्यार, तारा मण्डल ना कोई दिसाया। गगन मण्डल ना कोई पताल, जल बिम्ब ना कोई तराया। इक्क इकल्ला एकँकार, बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। खेलणहार हरि भगवन्ता, आपणी कल वरतांयदा। आप बणाए आपणी बणता, आपणी धार चलांयदा। आपणा धाम आप सुहंता, आपे वेख वखांयदा। आपणे दर आपे होए मंगता, आप आपणी झोली अग्गे डांयदा। आपणी काया आपे रंगदा, रूप रंग ना कोई रखांयदा। आपणे दर कदे ना संगदा, सुते प्रकाश करांयदा। आपणा मन्दिर आपे लँघदा, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर वेख साचा घर, दर दुआरा आप सुहांयदा। आपे बैठ ग़रीब निवाज़ा, आपणा मेल मिलांयदा। आप आपणी मारे वाजा, आपणा आप उठांयदा। आप आपणा रचया काजा, आप आपणा मंगल गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे डेरा लांयदा। थिर घर साचे वड वड्याई, हरि हरि जोत जगाईआ। आप आपणी कर कुड़माई, आप आपणा संग निभाईआ। आपे धी आप जवाई, आप अपणा वेख वखाईआ। आपणी सेजा आप हंढाई, नारी कन्त आप अख्वाईआ। मात पित पूत आपणी गोद उठाई, शब्दी शब्द नाउँ धराईआ। घर साचे वज्जी वधाई, पुरख अबिनाशी ख़ुशी मनाईआ। मंगलाचार इक्क कराई, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रचन रचाईआ। शब्द सुत सुत दुलार, हरि हरि आप उपाया। आपे करे ख़बरदार, आप आपणा मार्ग लाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, आप आपणा विच टिकाया। त्रैगुण माया दए आधार, पंचम मेल मिलाया। पंचम मीता हरि निरँकार, कँवल कँवल समाया। कँवल कँवल कर उज्यार, पारब्रह्म ब्रह्म उपाया। एका दूजा खेल अपार, सो पुरख निरँजण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लेख लिखाया। आपणी वंड आपे वंड, आपणी दया कमाईआ। वेख वखाए हरि ब्रह्मण्ड, आप आपणे लए उठाईआ। शब्द शब्दी रिहा वंड, वंडणहार दिस ना आईआ। आप उपजाए लक्ख चुरासी जेरज अंड, उत्भुज

सेत्ज आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म ब्रह्म करे रुशनाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गया समा, अकल कला धारीआ। ओअँ रूप आप वटा, सोहँ नाम धराईआ। हँ हं नाम धरा, निरगुण जोत करे उज्यारया। पंज तत्त डेरा ला, आप आपणा खेल खिला रिहा। मन मति बुध नाल रला, आप आपणा वेख वखा रिहा। नौ दुआरे जगत वखा, दसवें मुख छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात खेल खिला रिहा। लोकमात किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। लक्ख चुरसी दए वर, घर साचे वज्जी वधाईआ। आप आपणा वेखे दर, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी गाथा आपे मात चलाईआ। शब्द डंका हरि निरँकार, आपणा आप सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वेख वखांयदा। नाम रथ अपर अपार, हरि साचा आप चलांयदा। पूजा पाठ जीव आधार, जुग जुग मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडांयदा। वंडे वंड हरि निरँकार, आपणी खेल खलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर करया पार, त्रै त्रै वेख वखाईआ। कलिजुग वेखे कूड़ अँध्यार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। बुध बबेकी ना कोई आकार, मनमति ना कोई वखाईआ। संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी नाअरा लाईआ। ईसा मूसा हो उज्यार, परवरदिगार बेपरवाहीआ। चारों कुन्ट इक्क अखाड़, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। जरम कर्म धर्म प्रभ रिहा विचार, कलिजुग तेरी खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग तेरा रंग अमोला, हरि हरि आप रंगाया। जूठ झूठ रंगया चोला, रंग उतर कदे ना जाया। माया ममता हट्ट हटवाणा खोल्हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण वेस आप धर, पंज तत्त वेख वखाया। पंज तत्त कर उज्यार, हरि हरि आप उपांयदा। आपे पावणहार सार, अन्दर मन्दिर डेरा लांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, जोत निरँजण आप जगांयदा। शब्द अनादी धुन अपार, अनहद ताल वजांयदा। राग रागनी ढहि पए द्वार, पंचम सखीआं संग रलांयदा। गावत गाए वारो वार, आप आपणी धार चलांयदा। गुरमुखां खोल्हे बज़र कपाट, झूठी धाड़ मेट मिटांयदा। अमृत आत्म देवे ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। दस्म दुआरी मीत मुरार, आप आपणा मेल मिलांयदा। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार, जन भगतां राह तकांयदा। दिवस रैण करे विचार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। कलिजुग कूड़ा कूड़ पसार, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। प्रभ अबिनाशी बन्न्हे धार, आप आपणा वेस वटांयदा। पंज तत्त कर आकार, मात पित गोद सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग रूप तेरी धार, अन्तिम वेख वखांयदा।

७८५ ०७

टोपन राम आत्म सिक, हरि हरि आप मिटाईआ। जगत मेटे तृष्ना भुक्ख, सांतक सति वरताईआ। धुरदरगाही देवे एका सुख, ना सके कोई मिटाईआ। वेख वखाए धारी केस, मुंड मुंडाए लेखे लाईआ। दाता दानी दस दस्मेश, राम रामा रूप वटाईआ। भार उठाए रिखी केश, गवर्धन मुख भवाईआ। आदि जुगादि सन्त सुहेला सृष्ट सबाई अन्दर आपे वेख, जोती जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख दए वड्याईआ। गुरसिख सज्जण साचा मीत, हरि हरि आप बणाया। आप सुणाए सुहागी गीत, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। काया मन्दिर अन्दर गुरदुआर सच मसीत, शिव दुआला इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बंधाए चरन प्रीत, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाया। चरन प्रीती साचा रंग, गुरमुख आप चढ़ाईआ। आत्म दर आपे लँघ, आपे वेख वखाईआ। शब्द रंगीली सेज पलँघ, बैठा आसण लाईआ। गुरमुख साजण मंगे मंग, झोली नाम भराईआ। मानस जन्म ना होए भंग, आवण जावण जगत कटाईआ। अमृत धार वहाए गंग, जमना सुरसती विच मिलाईआ। शब्द घोड़े कसे तंग, सच सिँघासण लए बिठाईआ। सच दुआरा आपे लँघ, सचखण्ड इक्क वखाईआ। अंगीकार लाया अंग, आप आपणा दरस दिखाईआ। काया माटी झूठी वंग, जगत रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन निर्धन वेख वखाईआ। निर्धन मीता हरि निरँकार, निरगुण रूप समाया। ग़रीब निमाणे लए उभार, जुग जुग वेस वटाया। आए दर सच्चे द्वार, दर द्वार बंक सुहाया। जिउँ सुदामा मीत मुरार, काहना कृष्ना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण रंग रंगाया। रंग रंगीला माधव मोहन, हरि हरि आप अख्वांयदा। हरि का भेव जाणे कवण, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। गुरमुखां दिवस रैण देवे सवण, दरस अगम्मा दरस दिखांयदा। आत्म चलाए ठंडी पवण, स्वास स्वासी जो ध्यांअदा। पंच विकारा मारे रावण, राम रामा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां अवणा गवणा मात कटांयदा। गुरसिख साचा सज्जण सुहेला, एका रंग रंगाया। कलिजुग अन्तिम करया मेला, हरि हरि वेख वखाया। साचे दर चढ़या तेला, हरिसंगत संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आत्म शब्द जोती नूर सर्बकला भरपूर, आप आपणा रूप वटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूर नूर हरि हाजर हज़ूर, कर रुशनाया।

७८७ ०७

* २६ कत्तक २०१५ बिक्रमी बीबी अमृत दे नवित्त प्रेम धार विच बम्बई शहर गुरदुआरा सिँघ सभा *

पुरख अकाल एकँकार, अकल कला अख्वाया। आदि जुगादी लै अवतार, जोती जामा वेस वटाया। अलक्ख निरँजण अगम्म अपार, भेव किसे ना राया। निरगुण जोती कर उज्यार, लोकमात करे रुशनाया। शब्द शब्दी डंक अपार, लोआं पुरीआं आप तजाया। साधां सन्तां लए उभार, हरिजन साचे वेख वखाया। भगत भगती कर पसार, आत्म ब्रह्म जणाया। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, एका दूजा भेव मिटाया। नेत्र नैण खोल्ह किवाड़, आत्म दरसी दरस दिखाया। मेट मिटाए पंचम धाड़, हउमे गढ़ तुड़ाया। एका शब्द सच्ची सरकार, अन्दर मन्दिर ताल वजाया। निरगुण जोती दीप देवे बाल, भगतां अन्दर ब्रह्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, आप आपणे रंग रंगाया। गुरमुख साजण सच दुलार, हरि हरि मेल मिलाईआ। आप सुहाए बंक द्वार, काया अन्दर मन्दिर वेख वखाईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार, बैठा बेपरवाहीआ। दिस ना आए विच संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। इक्क इकल्ला खेल न्यार, हरि कन्त बैठा बेपरवाहीआ। जलां थलां पावे सार, ऊँचे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। गुरमुखां वेखे सच महल्ला , घर साजण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, एका एक अख्वाया। लोआं पुरीआं पावे सार, खण्डां ब्रह्मण्डां वेख वखाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर नौ खण्ड फोल फुलाया। लक्ख चुरासी पार किनार, गुरमुख साजण लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे मेल मिलाया। घर आपणे मेल मिलाया, पारब्रह्म आत्म वज्जी वधाईआ। लेखे लाए मानस जन्म, जीवां जन्तां बूझ बुझाईआ। जगत विछोड़ा मिटे कर्म, कर्मी कर्म दसाईआ। वेख वखाए साचा धर्म, हरि हरि सच्ची सच सरनाईआ। ना कोई गोत ना कोई वरन, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मेट मिटाए जूठ झूठ भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। तरनी तरन, तारनहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेलणहार, दर द्वार इक्क खुल्हाईआ। दर दरबार सच दरगाह, हरि हरि आप खुलांयदा। गुर शब्द पार कराए बण मलाह, पूत सपूता गोद उठांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, सो पुरख निरँजण आप उपांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, थान थनंतर इक्क वखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जो जन रसन ध्यांअदा। समरथ पुरख सिर देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। पार कराए फड़ फड़ बांह, भव सागर पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, एका तत्त एका ब्रह्म, एका रूप दरसांयदा।

७८७ ०७

एका ब्रह्म इक्क ज्ञाना, एका शब्द जणाईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका कँवल अख्वाईआ । एक राग एका कान, एका कान सुणाईआ। एका पुरख इक्क सुल्तान, शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। एका मीता दो जहान, त्रैलोक करे रुशनाईआ । आदि पुरख सदा मेहरबान, अकाल मूर्त आप अख्वाईआ। रूप रंग ना कोई वेख वखाण, सच सिँघासण बैठा बेपरवाहीआ। काया महल्ल अटल उच्च मकान, घर घर विच जोत जगाईआ। गुरसिख साजण कर प्रधान, आप आपणे अंग लगाईआ। दाता दानी देवे नाम गुण निधान, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। धर्म वखाए इक्क सच निशान, सचखण्ड द्वार आप झुलाईआ। आवण जावण चुक्के कान, गुरमुखां लक्ख चुरासी मेट मिटाईआ। धर्म राए नेत्र नैण शरमाण, चित्रगुप्त ना लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणा देवे वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुखां देवे साचा घर, चौथे पद समाईआ। शब्द सरूपी वज्जे नद, अनहद धुन उपजाईआ। मेल मिलावा ब्रह्म ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नौ दुआरे पार हद्द, दस्म दुआर इक्क सुहाईआ। गुरसिख तेरी साची यद, अकाल पुरख आप उपाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढु, आप आपणी जोत मिलाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर लडाए लड, आप आपणी गोद उठाईआ। जगत विकार लोभ मोह काम क्रोध हँकार देवे कढु, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। लेखे लाए काया माटी मास नाड़ी हड्ड, पंज तत्त करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, वर दाता आप अख्वाईआ। नाम दाता भगत भगवानन, एका एक अख्वाया। एकँकारा देवे ब्रह्म ज्ञानन, पारब्रह्म नाउँ धराया। आत्म अन्तर एका जानण, एका दर खुल्हाया। धुरदरगाही साचा जामन, शब्द गुर आप अख्वाया। नेड़ ना आए कामनी कामन, तृष्ना तृखा रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए साचा घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर थिर दरबार, हरि हरि वज्जे वधाईआ। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। एकँकारा बैठा कर पसार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अगम्म अगोचर अलक्ख अलक्खणा अलक्ख अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई आकार, निराकार आप हो जाईआ। पुरख निरँजण खेल अपार, जोती जोत डगमगाईआ। वरन गोती वस्सया बाहर, बरन अठारां ना कोई सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाया साचा घर, काया अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। काया मन्दिर डूँघा सागर, हरि हरि ताल भराया। जिस जन निर्मल कर्म करया उजागर, आप आपणा मेल मिलाया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्त रत्ती रंग रंगाया। चरन द्वार बणाए सच सौदागर, सो पुरख वड वड्आया। निर्मल बाती जोत जगी

काया गागर, आकाश आकाश समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेख वखाए साचा घर, आदि निरँजण जगे जोत, जोत निरँजण मेल मिलाया। जोती मेला शब्द धुन्कार, हरि हरि खेल खलांयदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, आप आपणी धार चलांयदा। निरगुण सरगुण हो उज्यार, लोकमात वेख वखांयदा। खण्ड ब्रह्मण्ड पावे सार, जेरज अंड फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं इक्क सहार, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लांयदा। गुरमुख साजण लए उभार, आत्म अन्तर वेख वखांयदा । चरन प्रीती बख्शे इक्क प्यार, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी विच्चों वस्सया बाहर, हर घट आपे डेरा लांयदा। आपे साजण मीत मुरार, सगला संग आप निभांयदा। आपे पुरख आपे नार, कन्त सुहागी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, घर साचा इक्क रखांयदा। वर घर साचा आदि निरँजण, एका एक रखाया। गुरमुखां नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाया। दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवाया। कलिजुग अन्तिम आया पर्दे कज्जण, गुरमुख बाल अञ्याणे, आप आपणे गले लगाया। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाया। कलिजुग नगारे नौ खण्ड धरत वज्जण, जीव जन्त होया हलकाया। बंक द्वार शाह सुल्तान अन्तिम तजण, तख्त ताज रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेला साचे घर, चरन द्वार हरि निरँकार, एकँकार इक्क दरसाया। एका घर इक्क दरवाज़ा, एका बूझ बुझाईआ। एका एक ग़रीब निवाज़ा, एका वेख वखाईआ। एका अस्व एका ताजा, एका नाम दृढ़ाईआ। एका रक्खणहारा लाजा, एका वेख वखाईआ। एका शाहो भूप सुल्तान राजन राजा, राजन राज इक्क अख्वाईआ। इक्क शाह इक्क नवाबा, पीर दस्तगीर इक्क अख्वाईआ। एका मक्का एका काअबा, तीर्थ तट इक्क जणाईआ। वेखणहारा दो दो आबा, भेव कोई ना पाईआ। शब्द घोड़े चरन दे रकाबा, सोलां कलीआं आसण लाईआ। खेले खेल अन्तिम कलिजुग माझा, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेख वखाईआ। सज्जण मीता हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, गुरमुख साचे लए उठाईआ। शब्द अगम्मड़ी मारे मार, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्त पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आपे वेखे आपणी रुत्त, आप आपणे गले लगाईआ। बाल बिरध नौजवान, हरि हरि रूप समाया। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, एका एक रूप दरसाया। एका देवे धुर फ़रमाण, तीजा नैण आप खुल्हाया। चौथे पद श्री भगवान, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। पंचम खेले खेल महान, पंचम मेला सहिज सभाया। छेवें छप्पर छन्न महान, ना कोई बाढी बणत

बणाया। अट्ठ तत्त ना कोई निशान, रक्त बूंद ना कोई वेख वखाया। नौं दुआरे जीव जहान, लक्ख चुरासी होए हलकाया। दस्म दुआरी सच मकान, गुरमुख साचे वंड वंडाया। मिले मेल गुण निधान, आत्म सेजा वेख वखाया। इक्क सुणाए सच्ची धुंनकान, अनहद राग इक्क सुणाया। अमृत आत्म इक्क इशनान, सर सरोवर इक्क सुहाया। आवण जावण छुट्टे कान, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जिस जन देवे आपणा नाम, सो पुरख निरँजण आप जपाया। सो पुरख निरँजण हरि भगवान, अकल कला अख्वाईआ। हँ ब्रह्म खेल महान, दोअँ दोआ भेव चुकाईआ। एका रूप दो जहान, मात पताल आकाश दिसाईआ। लोआं पुरीआ शब्द निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड वड्याईआ। गुरमुख आत्म सेजा कर परवान, बैठा आसण लाईआ। कोटन कोट ला ला वेखण अन्तर ध्यान, हरि हरि रूप दिस ना आईआ। कोटन कोट रसना गान, रस रसना होए हलकाईआ। कोटन कोट तीर्थ नहान, अठसठ फेरा पाईआ। कोटन कोट जंगल जूह उजाड़ डेरा लाईआ। कोटन कोट ख़ाकी ख़ाक रहे छाण, सीस आपणे भस्म पवाईआ। कोटन कोट नक्क मूंह नैण रहे मुंदान, जोत निरँजण नज़र ना आईआ। कोटन कोट छड्डी बैठे पीण खाण, सुन्न समाध ना इक्क वखाईआ। कोटन कोट बहि बहि सुणन कान, अनहद ताल ना कोई वजाईआ। कोटन कोट बैठे मढ़ी मसान, कोटन कोट गोर फोल फुलाईआ। कोटन कोट बन्न्हदे फिरन पंज शैतान, पंच विकारा ना कोई गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म प्रभ दाता दानी वड मेहरबान, गुरमुखां दया कमाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। दहि दिश ना भरमे मनुआ मन शैतान, शब्द डोर डोरी एका पाईआ। आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। एका राग एका कान, नादी धुन इक्क वजाईआ। मिले मेल श्री भगवान, निरँजण जोती जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख सज्जण साचे मीत, जगत अवल्लड़ी दिसे रीत, बैठा रहे इक्क अतीत, एका रंग रंगाया।

७६० ०७

७६० ०७

* २७ कत्तक २०१५ बिक्रमी सन्त नर हरी नरायण सिँघ पंडत गोदावरी घाट, नासिक शहर *

आदि पुरख एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूरो नूर समाईआ। अकाल मूर्त खेल अपार, अनभव प्रकाश रखाईआ। जुगा जुगन्त वेख विचार, आप आपणी बणत बणाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अभेद अभेव बुझाईआ। लोआं पुरीआं बन्न्हे धार, गगन पतालां वेख वखाईआ। रवि ससि कर उज्यार, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ।

थिर घर बैठ सच्ची सरकार, निरगुण रूप इक्क जणाईआ। आदि जुगादी एका कार, अकल कला अख्वाईआ। पारब्रह्म रूप अपार, नेत्र नैण दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेलणहार तमाशा, आप आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी पावे रासा, आप आपणा वेख वखांयदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गहर गम्भीर समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण आप अख्वांयदा। आदि निरँजण हरि करतार, एका एकँकारया। लोकमात लए अवतार, खेले खेल सर्ब संसारया। पावे लक्ख चुरासी सार, जीवां जन्तां वेख विखा रिहा। जेरज अंडां कर उज्यार, उत्भुज सेत्ज रूप वटा रिहा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए अधार, करोड़ तेतीसा संग रलाया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट मन्दिर आप सुहाया। जोती नूर कर उज्यार, दीपक जोती इक्क जगाया। जोत निरँजण खेल न्यार, अन्ध अन्धेर मिटाया। शब्दी धुन सच्ची धुन्कार, आत्मक आप उपजाया। पंचम गायण वारो वार, मीत मुरारा सेवा लाया। बज़र कपाटी बन्द किवाड़, आप आपणा बन्द कराया। वेखणहार पंचम धाड़, पंचम मोह वधाया। हरि सन्तां फिरे पिच्छे अगाड़, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। आदि न अन्ता हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। जुग जुग लए मात अवतार, आप आपणा वेस वटाया। सतिजुग साचे बन्ने धार, सति सरूप समाया। त्रिया त्रेता तेरा लेख अपार, त्रै त्रै रूप दरसाया। द्वापर खेल अगम्म अपार, मुकंद मनोहर नाम धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। खेलणहार हरि समरथ, एका एकँकारया। जगत महिंमा अकथना अकथ, कथ सके ना कोई जीव गंवारया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाम धरा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी जोत जगा रिहा। जोती जोत हरि उज्यार, एका एक करांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, आप आपणा रूप वटांयदा। ईसा मूसा कर प्यार, संग मुहम्मद संग रखांयदा। चार यारां कर त्यार, अल्ला राणी नाल प्रनांयदा। हक्क हकीकत ख़बरदार, लाशरीक वेख वखांयदा। बेऐब परवरदिगार, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे लाए ऐनलहक्क साचा नाअर, मुकामे हक्क ख़ुदाए इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम खेल खलांयदा। कलिजुग कूड़ कुड़यार , हरि हरि आप रखाया। भरमे भुल्ला हस्त कीटा, ऊँचां नीचां दिस ना आया। आपणा मन्न किसे ना जीता, हउमे हँगता गढ़ सुहाया। नेत्र दरस गुरु ना कीता, गुर मन्त्र नाम ना दृढ़ाया। पारब्रह्म इक्क अतीता, आदि जुगादि वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप

आपणी धीर धराया। पारब्रह्म हरि करतार, आपणी दया कमाईआ। पंज तत्त कर उज्यार, नानक जोत करे रुशनाईआ। मेल मिलाए दर दरबार, दर दरवेशा वेख वखाईआ। मंगे मंग बण भिखार, आत्म अन्तर झोली डाहीआ। निरगुण रूप पावे सार, नर हरि वड्डी वड्याईआ। देवे नाम सति अधार, नाम नामा वज्जी वधाईआ। नानक ढहि पया द्वार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साचा मेला मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। दो जहानां पावे सार, त्रैगुण फंद कटाईआ। पंचम जोती कर उज्यार, माया मोह चुकाईआ। वरन गोती ना कोई प्यार, एका रंग रंगाईआ। साची सोटी हथ्थ करतार, लोकमात फड़ाईआ। चढ़या चोटी इक्क द्वार, दस्म दुआरी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक वेख वखाईआ। नानक मिल्या हरि मलाह, घर साचे वज्जी वधाईआ। सन्तां देवे शब्द सलाह, एका राग जणाईआ। अक्खर वक्खर इक्क समझा, एका बूझ बुझाईआ। बज़र कपाटी पथ्थर दए तुड़ा, जिस जन दया कमाईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, सिर हथ्थ समरथ टिकाईआ। भेव अभेदा दए विखा, चार वरनां इक्क जणाईआ। राउ रंकां दे समझा, एका धर्म बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द शब्द ज्ञान, खेले खेल दो जहान, नानक नाम वड्डी वड्याईआ। नानक गुर चार कुन्ट, चार वरन जणाईआ। सृष्ट सबाई रही लुट्ट, मन मति होई हलकाईआ। जगत विकारा जूठ झूठ, हउमे हँगता रोग जलाईआ। गुरमुख विरला पीवे अंमित आत्म घुट्ट, निझर धार मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नानक गुर सदि बलिहार, हरि हरि रसना गाया। चारों कुन्ट दहि दिशा कर प्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। जीव जन्त ना पायण सार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाया। अन्तिम वेखे विगसे कर विचार, नौ खण्ड फेरा पाया। पुरख अबिनाशी अग्गे करे पुकार, तेरा भाणा तेरे सिर रखाया। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यार, जूठा झूठा रिहा डंक वजाया। चारों कुन्ट अन्ध अँध्यार, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, एका बूझ बुझाया। पारब्रह्म शब्द जणाई, नानक बूझ बुझाईआ। जुग जुग खेले खेल बेपरवाहीआ। नानक तेरी सच्ची शाही, चार वरन करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ । कलिजुग अन्तिम काली धार, हरि हरि वेख वखांयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा अपर अपार, समरथ हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, लोआं पुरीआं आप उठांयदा। भेख पखण्डा दए निवार, झूठ जूठ रहिण ना पांयदा। निहकलंक लए अवतार, आप आपणा नाउँ जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला मेल मिलांयदा। नानक

७६२ ०७

निरगुण शब्द सुण, आत्म दर सालाहीआ। कवण जाणे प्रभ तेरे गुण, तेरी वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई छाण पुण, हरिजन साचे लए जगाईआ। आत्म अन्तर वजाए एका धुन, एका राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूजा भेव मिटाईआ। एका जोती इक्क उज्यार, दस दस रूप वटाया। गुर गोबिन्द मीत मुरार, आपणे रंग रंगाया। साचा मेला सुत दुलार, गुर चेला रूप समाया। अकाल पुरख निरगुण जोती कर उज्यार, जोती जोत जगाया। शब्द डंक अपर अपार, तन नगारा रणजीत वजाईआ। पंचम मीता ख़बरदार, पंचम वेख वखाया । अचरज रीता विच संसार, आप आपणी दए चलाया। देहुरा मन्दिर मसीता ना कोई गुरुदुआर, गुरमुख काया मन्दिर अन्दर दीपक जोती जोत जगाया। अट्ठे पहर रहे उज्यार, अन्ध अन्धेर ना कोई वखाया। मिले मेल साचे यार, मीत मुरार साचा पाया। साची सेजा कर प्यार, आपणा रंग रंगाया। नारी कन्त बण भतार, नर नरायण रूप हो जाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द दित्ता एका वर, घर साचे मेल मिलाया। गोबिन्द गुर गुर वड्याई, हरि हरि मेल मिलांयदा । दोहां जहानां मिले वधाई, लोकमात वेख वखांयदा। पंज तत्त कर कुड़माई, शब्दी शब्द प्रनांयदा। एका आसण रिहा विछाई, शब्द सिँघासण नाउँ धरांयदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, गुरमुख साचे आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म साचा ताल इक्क सुहांयदा। अमृत सरोवर साचा ताल, हरि हरि आप भराईआ। भाग लगाए काया खाल, माया मोह चुकाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क वखाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, पारब्रह्म सच्ची शरनाईआ। गुरमुख साजण आपे भाल, आप आपणी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपणा रंग रंगे करतार, गोबिन्द वेख वखाया। गुरमुख साचे कर त्यार, आप आपणा सीस झुकाया। पंचम मीता हो उज्यार, ठांडा सीता नाम धराया। हस्त कीटा इक्क द्वार, चार वरनां मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता एका वर, आप आपणी बूझ बुझाया। वर दाता हरि निरँकार, आदि पुरख अख्वाईआ। गुर गुर पाए साची सार, सतिगुर मेल मिलाईआ। हरी हरि खेल अपार, हरि हरि रूप वटाईआ। जोती शब्दी इक्क प्यार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्द भाणा मन्न, आपा आप वारया। साचे घर चढ़या चन्न, वेख वखाए सचखण्ड द्वारया। जूठा झूठा भाण्डा भन्न, भरम कढ्ढ निवारया। जगत विकारा दित्ता डन्न, नाम खण्डा इक्क चमका रिहा। जननी जणया साचा जन, जन जणेंदी लेखे ला

रिहा। आप आपणा बेड़ा बन्नह्, गुरमुखां भार उठा रिहा। एका वस्त नाम धन, धुरदरगाही आप वरता रिहा। एका राग साचा कन्न, वाह वाह गुरु आप अल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे आप समा रिहा। भाणा हरि बलवान, हरि हरि रूप समाईआ। हरि जोधा सूरबीर बलवान, हरि हरि नाउँ धराईआ। हरि हरि मेला दो जहान, दो जहानां वड वड्याईआ। हरि हरि पाए आपणी आण, हरि हरि पूर कराईआ। हरि हरि देवे धुर फ़रमाण, अगाध बोध शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोशब्द संग रखाईआ। गोबिन्द तेरा साचा संग, हरि हरि आप निभांयदा। नाम डोरी कस्सया तंग, आकाश प्रकाश दुड़ांयदा। एका मंग रिहा मंग, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। तेरा तेरा ना होए नंग, तेरी लज्जया तेरे घर वखांयदा। तेरे नाम वज्जे मृदंग, कलिजुग अन्तिम कूड़ा मण्डप माढ़ी आपे ढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरी इच्छया आप करांयदा। आदि पुरख हरि निरँकार, आपणी दया कमाईआ। शब्द सरूपी खेल अपार, दिस किसे ना आईआ। संग गोबिन्द कर प्यार, एका जोती जोत जगाईआ। वरन गोती वस्सया बाहर, आलस निन्दरा विच ना आईआ। शब्द सुनेहड़ा सच्ची सरकार, आप आपणा रिहा घलाईआ। बन्न्हे बेड़ा विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। निहकलंक लए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त ना कोई प्यार, मात पित ना कोई बणाईआ। भाई भैण ना कोई आधार, साक कुटम्ब ना कोई रखाईआ। गुरसिक्खां करे सच प्यार, साचे सुत वेख वखाईआ। नारी कन्ता इक्क भतार, एकँकार आप अख्वाईआ। धाम सुहंता जोत उज्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ता साचा वर, दर साचा इक्क सुहाईआ। गुर गोबिन्द धुर फ़रमाण, हरि घर साचे पाया। आप आपणा कर परवान, आप आपणा दर सुहाया। आप आपणा जाणी जाण, आप आपणी बूझ बुझाया। आप आपणा रक्खया माण, निमाणयां माण आप हो जाया। आप आपणा मारया बाण, आप आपणा मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खलाया। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यार, चार कुन्ट अन्धेरा छाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आदिन अन्ता एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। जोती जामा भेख अपार, दिस किसे ना आईआ। सम्मत सम्मती करे ख्वार, धरत मात रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन रिहा जगाईआ। सन्त सुहेला हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। आप आपणा कर उज्यार, लोकमात उठ धाया। अठसठ तीर्थ वेखे तट किनार, गंगा गोदावरी फेरा पाया। उच्च महल्ल अटल मिनार, कवण दुआरा रिहा सुहाया। कवण

गुर कवण जोत होए उज्यार, कवण रूप वटाया। कवण सुणे सुणाए शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद ताल कवण वजाया। कवण खोल्हे बन्द किवाड़, बज़र कपाटी कवण तुड़ाया। कवण नेत्र नैण लोचण वेखे दस्म दुआर, निरगुण निरगुण विच समाया। कवण सुरती मेल मिलावा राम प्यार, कवण काहना बंसरी रिहा वजाया। कवण सेजा सुत्ता पैर पसार, कवण लए अंगड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत सम्मती वेख वखाया। सम्मत पन्दरां उच्च अगम्म, हरि हरि खेल खलाईआ। ना मरे ना पए जम्म, जुग जुग वेस वटाईआ। पवण स्वासी लए ना दम, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोत कर उजाला, पंज तत्त रूप समाया। गुरमुख काया वेखे धर्म सच्ची धर्मसाला, दिवस रैण डेरा लाया। आपे शाह आपे कंगाला, नीचो नीच आप हो जाया। जिस जन देवे नाम सच्चा धन्न माला, चोर यार लुट्ट कोए ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द शब्दी खेल खलाया। वीह सौ पन्दरां बिक्रमी एकँकार, जोती जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। आए चल जगत द्वार, गंगा गोदावरी फोल फुलाईआ। सन्त कन्त वेख भतार, नारी रूप समाईआ। जीव जन्त अन्ध अँध्यार, अन्ध अन्धेर ना कोई गंवाईआ। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग पर्दा रिहा पाईआ। मनमुख झूठे जीव गंवार, शब्द गुर ना कोई मनाईआ। जिस जन तुठे आप करतार, आप आपणा दरस दखाईआ। अमृत आत्म देवे एका घुट्ट, दुरमति मैल मिटाईआ। हरि का शब्द तीर निराला एका छुट्टे, नवां खण्डां सत्तां दीपां दए हिलाईआ। राज राजान शाह सुल्तान लुकया रहे ना कोई गुट्ठे, तख्त ताज आप हिलाईआ। सन्त सुहेले करे एका मुट्ठे, एका नाम करे कुड़माईआ। मनमुख दर द्वार टंगे पुट्ठे, देवे आप सजाईआ। लाड़ी मौत घर घर प्रभ लुट्टे, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ पन्दरां रिहा वर, सन्त सुहेले वेख थाउँ थाँईंआ। सन्त सुहेला हरि गोबिन्द, एका एक अखवाया। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, चिन्ता रोग रहे ना राया। आप बणाए आपणी बिन्द, मात पित आप अखवाया। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाया। मनमुख लगाए आपणी निन्द, नेत्र नैणां दिस ना आया। सम्मत पन्दरां शब्द घोड़े आपे चढ़, चारों कुन्ट फेरा पाया। शब्द घोड़ा हरि दातार, एका एक रखाईआ। सोलां कलीआं आसण कर त्यार, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। निरगुण जोत कर पसार, निराकार आप हो जाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, रूप रंग ना कोई जणाईआ। लोआं पुरीआं बन्न्हे धार, गगन पताला फेरा पाईआ। नीला

नीली छत्तों करे पार, कल्गी तोड़ा नाम जगदीश सीस टिकाईआ। सम्मत सोलां करे ख़बरदार, पहली चेत्र रुत्त सुहाईआ। दीन मुहम्मदी दए हुलार, संग मुहम्मद अल्ला राणी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेख वेख वखाईआ। सम्मत सोलां हरि करतार, आपणी कल वरताईआ। सृष्ट सबाई होए ख्वार, राज राजान ना कोई सहाईआ। धरत मात रही पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। साधां सन्तां मीत मुरार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़, स्वच्छ सरूपी दरस दखाईआ। शब्द अगम्मी फौज आपे चाढ़, आपे करे लड़ाईआ। सम्मत सतारां उठे धाड़, चारे कूटां दए हुलार, दहि दिशा होए ख्वार, नौ खण्ड मेट मिटाईआ। अट्ठ अठारां लेख करतार, जलधारा इक्क चलाईआ। वीह सौ उन्नी मीत मुरार, मीत मुरारा भेव खुल्हाईआ। मुस्लिम सुन्नी ना होए उज्यार, ऐनलहक्क नाअरा कोई ना लाईआ। ऐली अल्ला आप चलाए आपणी धार, नूर इलाही वड वड्याईआ। बीस बीसा सांझा यार, पन्दरां कत्तक रुत्त दए सुहाईआ। प्रगट होए विच संसार, दिल्ली दरबारे फेरा पाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, एकँकार आप अख्वाईआ। चार वरनां करे इक्क प्यार, ऊँच नीच ना कोई दसाईआ। राज राजान शाह सुल्तान सोहिण इक्क द्वार, राउ रंक मेल मिलाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप हो उज्यार, शब्द डंका इक्क वजाईआ। एका घर एका मंगलाचार, एका ताल वजाईआ। एका चरन कँवल कर प्यार, एका इष्ट जणाईआ। एका देव एका सेव एका रहे भिखार, एका भीखक भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वड्याईआ। बीस बीसा हरि हरि शाह, एका एक अख्वाईआ। चार वरन बण मलाह, आप आपणा रूप वटाईआ। एका शब्द दए सुणा, धुर फ़रमाणा हरि अल्हाईआ। आप वखाए नगर गरां, काया खेड़ा इक्क वखाईआ। माया ममता झूठे लए वसा, काम कोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। मन मति बुध एका रंग रंगा, नाम रंगण इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ इक्की साची सिक्खी धारों तिक्खी आप बणाईआ। नौ खण्ड जाणे गढ़ी निक्की, नीकन नीका डेरा लांयदा। भेव खुल्हाए मुनी रिखी, खोल्हणहार आप हो जांयदा। लेखे लाए धारी केसी, मूंड मुंडाए संग रलांयदा। आपे होए दस दस्मेसी, नानक निरगुण आप अख्वांयदा। सार पाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेशी, करोड़ तेतीसा फोल फुलांयदा। अहिमद मुहम्मद दर दरवेशी, ख़लक ख़ालक ख़ुदा आप हो जांयदा। ईसा मूसा नर नरेशी, एका रंग रंगांयदा। आपणे नेत्र आपणी धार आपे वेखी, दूसर कोए सार ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई कर कुड़माई, गुरमुख मनमुख, मनमुख गुरमुख धार चलांयदा।

* २८ कत्तक २०१५ बिक्रमी बाबा हरनाम सिँघ नाल गुरदुआरा लंगर साहिब
बाबा निधान सिँघ नंदेड़ हज़ूर साहिब *

आदि पुरख हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी लए अवतार, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। गुर गुर चेले सोहिण इक्क द्वार, साचा धाम सुहाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, दीपक बाती इक्क रखाईआ। कमलापाती मीत मुरार, हरि सज्जण वेख वखाईआ। अलक्ख निरँजण अगम्म अपार, भेव अभेद भेव ना राईआ। कलिजुग अन्तिम खेले खेल खेलणहार, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। ब्रह्मा विष्न देवत सुर दए हुलार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पावे सार, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप अपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, हरि हरि रंग समाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निरँजण जोत करे रुशनाया। नानक हरि मीत मुरार, एका रंग रंगाया। गुर गोबिन्द बन्ने साची धार, अमृत आत्म जाम प्याया। पन्थ ख़ालसा कर त्यार, सिर जगदीश हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मंगल गाया। थिर घर आदि पुरख, एका एक रखाया। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता सोग ना कोई वखाया। इक्क इकल्ला आपणा आप परख, सन्त सुहेले आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। हरि हज़ूर हाज़र, हरि हरि जोत जगांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। दुरमति मैल गुरमुखां धोत, निर्मल नीर प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे सुत उठांयदा। साचा सन्त सुत दुलार, हरि हरि मेल मिलाया। सेवक वेखे सेवादार, कवण रूप सेव कमाया। दिवस रैण संगत गुर गुर संगत कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। मेल मिलावा हरि निरँकार, आदि जुगादि कराया। हरिजन आपणी किरपा धार, आप आपणे रंग रंगाया। गुर गोबिन्द खेल अपार, भेव कोई ना पाया। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणी दया कमाया। गुण निधाना हरि करतार, आप आपणी दया कमाया। सिँघ निधान कर प्यार, आप आपणे अंग लगाया। लेखे लाए सेव अपार, लहिणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेल मिलाया। सन्त हरिनाम, हरि नाम आत्म झोली पाईआ। अमृत पिया एका जाम, एका ब्रह्म जणाईआ। मेल मिलावा साचे राम, राम रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी दया कमाईआ।

* २६ कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा संगत साहिब नंदेड़ शहर *

पुरख अकाल अकल कल धार, आपणी कल कल वरताईआ। गोबिन्द सुत सुत दुलार, जोती जोत रुशनाईआ। शब्द अतुट नाम भण्डार, पूरन ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, पंज तत्त रुशनाईआ। मातलोक खेल अपार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। दोहां मेला अपर अपार, गुर चेला रूप वटाईआ। तिन्नां लोआं वस्सया बाहर, चौथे पद समाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम ताज पहनाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई महल्ल उसार, उच्च अटल ना कोई रखाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप करतार, आप आपणी खेल खलाईआ। अट्ठां तत्तां कर विचार, मन मति बुध करे कुड़माईआ। नौ दर वेख सर्ब संसार, माया ममता मोह हलकाईआ। दसवें बैठ आप करतार, सति सरूपी जोत जगाईआ। जागरत जोत आत्म अपार, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। लशकर शाही हाहाकार, शाह शहाना दए दुहाईआ। आब बेताब ना पाए सार, पंज पंज आब तजाईआ। वेखे लेख पुन्न सवाब, आबेहयात आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। रचन रचाई हरि गोबिन्द, हरि हरि खेल खलांयदा। मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता भुक्ख गवांयदा। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, अडोल अडुल रहांयदा। निरगुण वेखे नादी बिन्द, सच सुच्च समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलांयदा। खेलणहारा हरि भगवाना, गुर गुर शब्द जणाईआ। शब्द शब्दी बन्न्हे गाना, नाम गाना तन्द रखाईआ। आत्म अन्तर जोत महाना, दिवस रैण करे कुड़माईआ। खेले खेल विच मैदाना, खण्डां तीर इक्क उठाईआ। रसना चिल्ले चाढ़े तीर कमाना, एका तन्द खिचाईआ। जोधा सूर वेख बली बलवाना, गढ़ हँकार तुड़वाईआ। आप आपणा जाणे भाणा, हरि भाणे विच समाईआ। आप आपणी पाए आणा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। आप आपणा वेख वखाना, आपे दए तजाईआ। गोदावरी कन्ढा इक्क सुहाना, गोबिन्द वेस वटाईआ। गुर संगत गुर संग रखाना, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी किरपा आप बुझाईआ। गुर गोबिन्दा जोधा बलकार, हरि हरि खेल खलाया। आप आपणी कर विचार, आप आपणा दर सुहाया। चरन छुहाया विच उजाड़, जंगल जूह पहाड़ डेरा लाया। आप आपणा नेत्र लए उग्घाड़, गुरमुख वेख वखाया। नाम धार तिक्खी चाढ़, शब्द खण्डा इक्क चमकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा शब्द जणाया। गुर शब्द शब्द जणाई, हरिसंगत हरि अल्लाईआ। जगत नाता भैणां भाई, धी जवाई ख़ुशी मनाईआ। साक कुटंभ मेल मिलाई, मेल विछोड़ा साचे माहीआ। वर घर पाउणा चाई चाँईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ

बुझाईआ। संगत दर रही बिल्ला, गोबिन्द वेख वखाया। पूर्ब लहिणा मात चुका, देणा देणा अग्गे आया। रसना कहिणा हुक्म सुणा, हरि का भार ना कोई उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत वेख वखाया। गुर संगत वेखे चरन द्वार, नेत्र नीर वहाईआ। ढहि ढहि मंगे मंग भिखार, आत्म झोली अग्गे डाहीआ। दरस तरस अपर अपार, विछड़ कदे ना जाईआ। अमृत मुख बरस किरपा धार, अग्नी तत्त बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दया कमाईआ। गुर गोबिन्द साचा मीता, गुर संगत आख सुणाईआ। काया माटी ठांडा सीता, सति सन्तोख रखाईआ। हरि रक्खणहारा साचा मीता, देवे वड वड्याईआ। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावण नाम धराईआ। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीता, गुरचरन प्रीती वड्डी वड्याईआ। देवे नाम शब्द इक्क अनडीठा, लिख्या लेख ना मेटे कोई राईआ। काया बणे ना जगत अंगीठा, त्तत्व तत्त समाईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वस्त आपे झोली रिहा भराईआ। नाम शब्द वड भण्डार, गुर गुर आप वरताया। गुरमुख साजण कर कर प्यार, साचा दर सुहाया। थान थनंतर इक्क न्यारा, निरगुण सरगुण वेख वखाया। दीपक बाती कर उज्यारा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। एका देवे चरन सहारा, दर दर आप वेख वखाया। पंज पंज मेला मीत मुरार, आबेहयात प्याया। कँवल नाभ कर उज्यार, झिरना निझर झिराया। चरन रकाब दे सहारा, शाह अस्वार अस्व घोड़ा आप दौड़ाया। नानक मेला मीत मुरारा, सतिगुर पूरा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम दान इक्क वरताया। नाम दान शब्द अतुट्ट, नानक गुर रखाईआ। गुर गोबिन्द प्याए आत्म घुट, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। गुरमुख लाहा रहे लुट्ट, बेमुख सार ना राईआ। तन नगारे लग्गे चोट, रणजीत नगारा इक्क वजाईआ। वेखणहारा कोटी कोट, ब्रह्मण्ड खण्ड डेरा लाईआ। जेरज अंड ना भरी पोट, जगत तृष्ना ना कोई बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। गोबिन्द गुर जगत मलाह, पुरख अकाल मनाया। गुर संगत देवे सच सलाह, नाम भण्डारा झोली पाया। चरन प्रीती साचा थाँ, हरि हरि वेख वखाया। वेख वखाए नगर ग्रां, साचे खेड़े डेरा लाया। निमाणयां देवे साचा थाँ, थिर घर दुआरा इक्क सुहाया। मेल मिलावा पुत्रां माँ, पुतर धीआं जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच भण्डार इक्क वरताया। जगत भण्डार नाम अतुट, गुरमुखां झोली पाईआ। नानक दुआरा सद खुल्ला, बन्द ना कोए रखाईआ। सेवक सेवा चरन प्रीती जो जन घोल घुला, ख़ालक ख़लक ख़ुदाई वेख वखाईआ। अन्तिम वेले पाए मुला, संगत द्वार इक्क सुहाईआ। लोकमात गुरमुख

ना रुला, आत्म वज्जे वधाईआ। आपे फलया आपे फुला, फुल फुलवाड़ी आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी ढाल बण दलाल, शब्दी शब्द भराईआ। नाम ढाल वड बलकार, मूर्खां कोलों छुपांयदा। गुरसिख साचे कर उज्यार, सैंहसा रोग मिटांयदा। नाम अनमुल्ला वणज वपार, नानक दर करांयदा। हरि हरि साचा देवणहार, घर साचे वेख वखांयदा। अन्तिम कलिजुग पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गुर साचा दर, हरिसंगत बणी मंगत, साची भिच्छया करे रिच्छया, दहि दिशा झोली पांयदा।

* २६ कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा माल टेकरी नंदेड़ *

नाम ख़ज़ाना हथ्थ करतार, गुर सतिगुर आप वरतांयदा। पथ्थर पाहिन देवे तार, आप आपणी नदर करांयदा। माटी हाटी भर भण्डार, तीर्थ ताटी वेख वखांयदा। औखी घाटी हरि निरँकार, आपणी आप रखांयदा। संगी साथी ना पायण सार, गुर पूरा भेव छुपांयदा। जगत गाथी गाए संसार, समराथी लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण मेल मिलांयदा। नाम ख़ज़ाना हरि वरतंत, शब्दी शब्द भराया। नानक मेला हरि भगवन्त, हरि हरि रसना गाया। साची मणीआ साची मणत, साचा थान सुहाया। वेख दान निधान धनवन्त, जगत ख़ज़ाना इक्क भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर सतिगुर वेख वखाया। सतिगुर सच्चा मेहरबान, मेहरबान अख्वांयदा। आप आपणा देवे दान, आप आपणी झोली पांयदा। आप आपणा वेख निशान, आप आपणा आसण लांयदा। आप आपणा राग अलाण, गीत अनादी आप अलांयदा। आप आपणा खेले खेल दो जहान, लोकमात वेख वखांयदा। राम रामा कर परवान, त्रिया वेस वटांयदा। कृष्ना बाला गुण निधाना, गाए कवाड़ सुहांयदा। दीपत सुत कर पछाण, इक्क ध्यान वखांयदा। नानक निरगुण हो प्रधान, सरगुण डेरा लांयदा। जप तप हठ महान, सति सन्तोख रखांयदा। आत्म ब्रह्म भेव मिटान, ब्रह्म पारब्रह्म दरसांयदा। पारब्रह्म खेल महान, आदि निरँजण जोत जगांयदा। शब्दी शब्द साचे कान, आप आपणा राग सुणांयदा। वेख विखाए ज़िमीं आस्मान, गगन पतालां फेरा पांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर परवान, लोआं पुरीआं जोत जगांयदा। रवि ससि बाल नादान, मण्डल मण्डप आप सुहांयदा। धरनी धरत बिबान, चारों कुन्ट जणांयदा। दाता दानी मेहरबान, आप आपणी दया कमांयदा। नाम अखण्ड डूँघी कान, गुर पूरे ना कोई खुलांयदा। गुर गोबिन्द नौजवान, धरत धवल वेख वखांयदा। तिक्खा तीर सच निशान, रसना चिल्ला शब्द उठांयदा। जीव जन्त ना करे पछाण,

लेखा लिख्त विच ना आंयदा। आप आपणा होया जाणी जाण, नानक लहिणा झोली पांयदा। गुर गोबिन्द हो प्रधान, पंचम मीता वेख वखांयदा। रथ रथवाही दो जहान, साचा रथ चलांयदा। दसरथ विछोड़ा सीता राम, सगला संग वेख वखांयदा। गोपी मेला कृष्ना काहन, जगत बंसरी नाम वजांयदा। इक्क सत इक्क छे कर परवान, पन्दरां पन्दरां धार चलांयदा। सोलां सोलां जोग महान, जागरत जुगत वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम ख़ज़ाना हरि भण्डार, नानक शब्द पावे सार, गुर गोबिन्द झोली डांयदा। गोबिन्द झोली आपणी भर, हरिसंगत नाम वरताईआ। मेल मिलावा साचे दर, गुर संगत वेख वखाईआ। नानक सूझे साचा घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। अगम्म अगम्मा वेखे खड़, आप आपणा नैण उठाईआ। आपणा घाड़ण आपे घड़, गुर सतिगुर सेवा लाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे खड़्, गुर सतिगुर सेवा लाईआ। कलिजुग वेखे चढ़, शब्द जोती डंक वजाईआ। लक्ख चुरासी रिहा लड़, करोड़ छिआनवे नाम वधाईआ। एका ढईआ रिहा पढ़, ढहि ढहि ढेर धरन सफाईआ। अग्गे कोई ना सके अड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नानक लाई साची जड़्, गोबिन्द वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द भण्डार हरि निरँकार एकँकार सन्तन बलिहार अगम्म अपार, रूप अनूप शाहो भूप सति सरूप साचे दर हरी हरि देवे वर, किरपा कर करता पुरख करनी जोग करनहार जगम समरथ महिंमा अकथ, लहिणा चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, हरिसंगत नाम मंगत नाम लहिणा लाए अंग, अंगीकार हरि निरँकार इक ओंकार ओंकार रूप समाईआ। ओंकार सर्ब गुणवन्ता, निरँकार निरवैर अख्वाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। पूरन जोत श्री भगवन्त, गुणवन्ता भेव ना राया। हरिजन वेखे साचे सन्ता, लोकमात फेरा पाया। देवे नाम धन धनवन्ता, अतुट भण्डार इक्क वरताया। पतिपरमेश्वर पति पतिवन्ता, पारब्रह्म रूप वटाया। आपे नारी आपे कन्ता, हरि सन्तां आत्म सेजा डेरा लाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। नानक गुर गोबिन्द महिंमा अगणत अगणता, लिख्या लिख्त ना लेख लिखाया। भेव ना पायण जीव जन्ता, जन्त जीव भेव ना राया। वेखे खेल अगम्म अगम्मता, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। आपे होए भुक्खा नंगता, गुरसिक्खां गुरमुखां नाम धन झोली रिहा भराया। लेखे लाए साची संगता, जिस जन दर्शन पाया। तोड़े गढ़ु हउमे हँगता, पंज तत्त रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, नानक गोबिन्द गुर सतिगुर मेल मिलाया। सतिगुर पूरा हरि भगवन्त, हरि हरि जोत जगाईआ। हरिजन मेला एका कन्त, एका रूप नज़री आईआ। जुग जुगत जोग बणाए साची बणत, वरन बरन ना वेख वखाईआ। साचा धाम इक्क सुहंत, नाम टेकरी वड वड्याईआ। घर साचे उपजे

सच सुगंध, गुरमुख रही महिकाईआ। गुर सतिगुर पूरा आवण जावण चुकाए पन्ध, जो जन रहे शरनाईआ। मेटे रैण अन्धेरी अन्ध, दीपक जोत करे रुशनाईआ। सो पुरख सुणाए एका छन्त, हँ हँगता दए मिटाईआ। बनावणहारा सच बणत, बाल जवान बिरध अवस्था इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए साचे घर, घर मेला इक्क अकेला, आपे वेखे सहिज सुबाईआ।

*** ३० कत्तक २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा बन्दा बहादर गोदावरी घाट नंदेड़ ***

शब्द हरि शब्द करतार, शब्द शब्द समाईआ। शब्द खेल अगम्म अपार, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। शब्द रूप रेख भेख अपार, दिस किसे ना आईआ। शब्द खण्ड ब्रह्मण्ड लए उसार, जेरज अंड उत्भुज सेत्ज समाईआ। शब्द वंड सिरजणहार, समरथ प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। शब्द डंक शब्द नगारा, हरि हरि आप वजांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनार, थिर घर नाउँ रखांयदा। आदि पुरख निरँजण कर प्यार, लोआं पुरीआं शब्द सुहांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, हरि हरि शब्द वसांयदा। पूरन गुर लए अवतार, शब्द शब्दी सुणांयदा। राग नाद ना पायण सार, भेव अभेव रखांयदा। रसना जीव ना कोई प्यार, बत्ती दन्द ना संग रखांयदा। आप सुहाए आपे सच्चे घर बार, महल्ल अचल्ल इक्क रखांयदा। दस्म दुआरी ना किवाड़, पंचम धाड़ा अग्गे डांयदा। जिस जन बख्शे आप आपणा चरन प्यार, सो जन पूज पुजांयदा। सन्त कन्त भगवन्त पुरख नार, नारी कन्त रूप समांयदा। आदि अन्ता हो उज्यार, लोकमात फेरा पांयदा। नानक निरगुण बन्ने धार, नाम सति मन्त्र दृढ़ांयदा। गुर सतिगुर हो उज्यार, शब्द खण्डा इक्क उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत सुत दुलार, गोबिन्द रूप अपर अपार, पंज तत्त सुहांयदा। शब्द सुत शब्द दुलार, शब्दी शब्द जणाईआ। शब्द बस्त्र तन शृंगार, काया माटी वेख वखाईआ। शब्द चोट तन नगार, आप आपणी रिहा सुणाईआ। शब्द सिँघासण उच्च अपार, शब्द गुर बैठा आसण लाईआ। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। शब्द दाता बेऐब परवरदिगार, बेपरवाह नूर इलाहीआ। शब्द राम मीत मुरार, शब्द काहना बंसरी इक्क वजाईआ। शब्द अर्जन खोल्ह किवाड़, शब्द भण्डार इक्क वरताईआ। जीआं जन्तां साधां सन्तां शब्दी शब्द बन्ने धार, आदि जुगादि वड वड्याईआ। साचा शब्द गुरसिख शृंगार, गुर पूरा आप कराईआ। नेत्र नैणां बख्शे चरन प्यार, नाम शब्द सच्ची कुड़माईआ। शब्द सीस बन्ने दस्तार, जगत जगदीश दया कमाईआ। सन्त विचोला

अपर अपार, गुर गुर चेला मेल मिलाईआ। सज्जण सुहेला धुर दरबार, दरगहि साची होए सहाईआ। हरि शब्द गुर भेव न्यार, बिन गुर पूरे कोई भेव ना पाईआ। हरि सन्तां मेला मीत मुरार, हरि शब्द साचे घर वज्जे वधाईआ। अनहद धुन धुनी धुन्कार, अनन्द मंगल गाईआ। पंचम सखीआं वेखण वारो वार, आप आपणा धाम सुहाईआ। जिस जन खोल्हे बन्द किवाड़, बज़र कपाटी कुण्डा तुड़ाईआ । आत्म सेजा कर प्यार, मेल मिलाए बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द गुर रूप करतार, करता पुरख नाउँ धराईआ। नानक गोबिन्द सोहे इक्क द्वार, गुरमुखां राह तकाईआ। गोदावरी कन्ढा अपर अपार, बन्दा बन्दगी लेखे लाईआ। जगत गन्दगी उतरया पार, नौ दर करी सफाईआ। सद बख़्शंदगी रूप करतार, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। अमृत आत्म बख़्शे सच्ची धार, पुरख अकाल दया कमाईआ। ग़रीब निमाणे बणाए साचे लाल, आप आपणी गोद उठाईआ। देवे नाम शब्द सच्ची तीर कमान, तन गात्रा इक्क सजाईआ। खेले खेल दो जहान, आप आपणा भेव छुपाईआ। गोबिन्द रसना साचा चिल्ला मारे जीव जन्त बेईमान, गुरसिक्खां हथ्थ आप टिकाईआ। आपे जोधा सूरबीर बलवान, गुरसिक्खां देवे मात वड्याईआ। धर्म उठाए इक्क निशान, गोदावरी कन्ढा वेख वखाईआ। गुरमुख आए दर करे परवान, जो जन दर दरवाज़ा वेख वखाईआ । सचखण्ड दुआरे नाम बिबाण, शब्दी शब्द बणे रथवाहीआ। मरे ना जन्मे खेले खेल आदि जुगादि आवण जाण, पतित पावण आप अख्वाईआ। गुरमुखां गुरसिक्खां तोड़े लंका गढ़ हँकार, आत्म चढ़ वेख वखाईआ। पंचम मीता पंचम बख़्शे चरन प्यार, काया सीता सुरती लए प्रनाईआ । नाम खण्डा आत्म अन्तर बख़्शे तिक्खी धार, जगत विकारा मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अकाल पुरख हो त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द ख़बरदार, आलस निन्द्रा विच ना आईआ। सन्त साजण गुरसिख साचे लए उभार, आप आपणा दरस दिखाईआ। नेत्र लोचण देवे इक्क ज्ञान, एका दूजा भेव चुकाईआ। तीजा नेत्र खुल्ल्हे नज़री आए हरि भगवान, भाण्डा भरम ना राईआ । चौथे पद मिले मेल श्री भगवान, गुर पूरा होए सहाईआ। पंजम हथ्थ फड़ाए इक्क निशान, नौ खण्ड पृथ्मी आप झुलाईआ। सत्तां दीपां पाए आण, फतिह जैकारा इक्क लगाईआ। ब्रह्मा विष्न देवत सुर नेत्र नीर वहा दिवस रैण कुरलायण, बिन सतिगुर ना कोई सहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, वेखे विगसे सिरजणहार, लोकमात मार झात इक्क इकांत, आप आपणी कल वरताईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत, निझर झिरना इक्क झिराईआ। चार वरनां सुणाए साची गाथ, ऊँच नीच राउ रंक रहिण ना पाईआ। सगल निभाए आपणा साथ, सगला संगी आप हो जाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका गुरदेव इष्ट आप रखाईआ। अकाल मूर्त पुरख अगम्मा वजाए साचा नाद, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। सतिगुर पूरा खोज

खुजाए जीउ पिण्ड ब्रह्माद, घर घर अन्दर मन्दिर वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त लहिणा देणा चुकाए साढे तिन्न तिन्न हाथ, जो जन रसना रहे गाईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, निहकलंक निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द मेला साचे घर, शब्दी शब्द देवे वर, गुरसिक्खां तन बस्त्र आप पहनाईआ।

समरथ पुरख दीन दयाला, अकल कला अख्वाईआ। गुर गोबिन्द हरि गोपाला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सन्त दुलारे साचे लाला, आप आपणी गोद उठाईआ। आपे चाढ़े रंग गुलाला, उतर कदे ना जाईआ। लोकमात बणाए सच सच्ची धर्मसाला, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। गुरमुखां फल लगाए काया डाला, अमृत आत्म मेवा इक्क खवाईआ। तोड़नहार जगत जंजाला, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द होए सहाईआ। गुर सतिगुर हरि हरि मीता, हरि हरि मेल मिलाया। आपे जाणे आपणी रीता, आप आपणा वेस वटाया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां संग रखाया। गुरमुखां बख्शे चरन प्रीता, चरन चरनोदक मुख चुआया। नाम निधान जिस जन पीता, आप आपणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए साची रीता, आप आपणा लेख लखाया। गुर सतिगुर सूर बलकार, हरि हरि रूप समाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, बीस बीसा वड वड्याईआ। जगत जगदीशा ख़बरदार, लोआं पुरीआं आप उठाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पाईआ। सत्तां दीपां हो उज्यार, दीवा बाती इक्क जगाईआ। कमलापाती मीत मुरार, कन्त कन्तूहला नाम धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम जोत धर, गुर गोबिन्द शब्द वड्याईआ। सिँघ गोबिन्द शब्द बलवान, हरि हरि रंग रंगाया। दाता दानी मेहरबान, लोकमात वेख विखाया। धर्म वखाए इक्क निशान, चार वरनां मेल मिलाया। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म सरनाया। दूई द्वैती मेट मिटाण, भेख भखण्ड रहिण ना पाया। वेख वखाए अञ्जील कुरान, वेद पुराणा फोल फुलाया। धुरदरगाही इक्क फ़रमाण, शब्द संदेशा दए सुणाया। नर नरेशा दो जहान, गुर गोबिन्द वेस वटाया। पंज प्यारे कर प्रधान, शब्द डोरी तन बंधाया। पीला बस्त्र इक्क महान, तन श्रृंगार वखाया। अट्ठे पहर निगहबान, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप उपाए बाल निधान, सुत दुलार रूप वटाया। हरि सुत हरि दुलार, गोबिन्द वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, हरिजन वेख वखाईआ। पूत सपूता आपा वार, साची कार कमाईआ। पन्थ ख़ालसा कर त्यार, एका गुरु ग्रन्थ जणाईआ। साची सिख्या हरि निरँकार, अकाल

पुरख जणाईआ। एथे ओथे पावे सार, विछड़ कदे ना जाईआ। अजूनी रहित एकँकार, अकल कला वरताईआ। आदि निरँजण हो त्यार, लोकमात वेख वखाईआ। दर्द दु:ख भय भञ्जण पावे सार, भव सागर पार कराईआ। गुरमुख साचे लए उभार, जिस जन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दूजा भेव चुकाईआ। एका दूजा भेव चुकावणा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। चौथे पद आप बहावणा, रंग महल्ल इक्क जणाईआ। पंचम साचा मेल मिलावणा, छत्र सीस जगदीश आप टिकाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रचावणा, चार दिवार ना कोई बणाईआ। सति पुरख निरँजण डेरा लावणा, अकाल मूर्त जोत रुशनाईआ। अट्ठां तत्तां वेस करावणा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना होए हलकाईआ। नौ दुआरे रस गंवावणा, जूठ झूठ मेटे छाहीआ। दस्म दुआरी मेल मिलावणा, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। सिँघ सिँघ आप अख्वावणा, शेर दलेरा बेपरवाहीआ। नाम खण्डा इक्क चमकावणा, बेहंगम चाल इक्क रखाईआ। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहावणा, अगम्मड़ी कार कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा ना कोई रखावणा, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। सति दुआरे आप पुजावणा, आप आपणा मेल मिलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा वक्त चुकावणा, रविदास चुमारा गया लिखाईआ। नौ दुआरे भेव चुकावणा, जगत दुआरे आप भुलाईआ। दस्म दुआरी पन्ध मिटावणा, अन्ध अन्धेर होए सहाईआ। धुन अनादी इक्क वजावणा, अनहद सेवा लाईआ। साची संगता मंगल गावणा, एका मंगल गाईआ। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ावणा, गुरमुखां मिले वधाईआ। आत्म सेजा हरि जी पावणा, हरि साचा होए सहाईआ। गुर गोबिन्द दरस दिखावणा, नानक मेला सहिज सुबाईआ। काया चोली रंग रंगावना, उतर कदे ना जाईआ। वीह सौ पन्दरां बिक्रमी फेरा पावणा, लोकमात करे कुड़माईआ। वीह सौ सोलां हाढ़ सतारां वेख वखावणा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई फड़ उठावणा, राज राजाना दए हिलाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, सीस ताज ना कोई रखाईआ। वीह सौ सतारां लेख चुकावणा, नौ खण्ड होए हलकाईआ। सत्तां दीपां भरम गंवावणा, गुर गोबिन्द शब्द वड्याईआ। तीर्थ तट्टां एका धार चलावणा, जल धारा रूप समाईआ। मनमुख जीवां मात रुढ़ावणा, शौह दरियाए धक्का लाईआ। गुरमुख साचे आप जगावणा, आप आपणा दरस दिखाईआ। आत्म ब्रह्म बूझ बुझावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कल कलेश ना कोई करावणा, आलस निन्दरा विच ना आईआ। दर दरवेश आप अख्वावणा, वड दाता बेपरवाहीआ। वीह सौ उन्नी बिक्रमी थित लिखावणा, अल्ला राणी रही शरमाईआ। मुस्लिम सुन्नी कोई रहिण ना पावणा, चार यारां मुख छुपाईआ। ऐनलहक्क नाअरा किसे ना लावणा, वेख वखाए ख़लक ख़ुदाईआ। बेऐब परवरदिगार निरँकार आप अख्वावणा, अकाल मूर्त जोत रुशनाईआ। धरनी धरत आप सुहावणा, आप आपणी खेल खलाईआ।

गोबिन्द लेखा जगत चुकावणा, चौथे जुग फेरा पाईआ। सतिजुग साचा आप सुहावणा, सतिगुर पूरा नाउँ धराईआ। बीस बीसा लेख लिखावणा, मेट मिटाए झूठी छाहीआ। जमन किनारा इक्क सुहावणा, गुर तेग बहादर तेरे धाम वड्याईआ। इक्की इक्क निशान झुलावणा, नौ खण्ड करे रुशनाईआ। अकाल पुरख मेल मिलावणा, गुर गोबिन्द वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई एका मार्ग लावणा, एका रूप दरसाईआ। पंडत पांधे पकड़ उठावणा, एका विद्या दए पढ़ाईआ। ईसा मूसा वक्त चुकावणा, एका जाप जपाईआ। शब्द अनादी एका गावणा, धुनी नाद इक्क वजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी साची सिक्खी आप बणावणा, तलवारों तिक्खी धार चलाईआ। रिखी मुनी कोई दिस ना आवणा, गुरमुखां वड वड्याईआ। धारी केस लेखे लावणा, मूंड मुंडाए लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीस बीसा हरि जगदीसा इक्क अकीसा, आप आपणी करे रुशनाईआ। इक्क इकीसा एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, गुर गोबिन्द तन गात्रे इक्क लटकाईआ। पंचम मीता कर प्यार, पंचम देवे जगत वड्याईआ। सोहे सीस सच्ची दस्तार, तख्त तख्त ताज जगत शरनाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाईआ। पन्थ ख़ालसा कर प्यार, एका रूप समाईआ। रूप अनूप शाहो भूप अपर अपार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। बाले अग्नी वेखे जोत ज्वाला जगत अंगीठा भगत अनडीठा त्रैगुण माया पंज तत्त, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ बीज बीज्जया साचे वत, लोकमात ना कोए उखड़ाईआ। अकाल पुरख तेरे चरन बंधाया नत, नाता बिधाता ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। सर्बकला आपे समरथ, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ । सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, गुरसिख सज्जण मीत पतित पुनीत आपे लए रक्ख, रक्खणहार आप अख्वाईआ। जोती नूर हाज़र हज़ूर सर्बकला भरपूर दरस दिखाए हो प्रतक्ख, सचखण्ड खेल ब्रह्मण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज कर रुशनाईआ। गुरसिक्खां वंडाई साची वंड, अट्ठे पहर पारब्रह्म तेरी शरनाईआ। सतिगुर पूरा पाए अन्तिम ठंड, अग्नी तत्त ना कोई जलाईआ। गुरमुखां आत्म होए ना कदे रंड, गुर गोबिन्द मिल्या साचा माहीआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, एका मार्ग लाए सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द गुर साचा लाल, पूत सपूता शब्द दलाल, लोकमात करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्द अन्तिम अन्त, जोती जोत जगाईआ। मेल मिलावा साचे कन्त, घर साचे मिल्या चाँईं चाँईंआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, पारब्रह्म फड़ी साची बाहींआ। एका शब्द मणीआं मंत, गुर संगत गया बुझाईआ। ख़ालसा गुरू गुरु ख़ालसा गुर पन्थ, गुर ग्रन्थ इष्ट देव मनाईआ। नाम नाद धुन वज्जे संख, अकाल पुरख आप वजाईआ। मेरा शब्द नानक गुर धुर कराए परख, जूठा झूठा दर ना कोई सुहाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, बंस सरबंसा

गुरमुखां उत्तों वार, आप आपणा लेखा पूर कराईआ। सचखण्ड बणे सच द्वार हरि निरँकार, दिवस रैण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अस्व घोड़ा राकी कर त्यार शब्द सिँघासण, पुरख अबिनाशण शाहो शाबाशण बैठा डेरा लाईआ। साचे मन्दिर साचे अन्दर पावे रासन, गुरमुख विरला वेख वखाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, लोक परलोक एका नूर रुशनाईआ। चौदां लोक दासी दासन, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। गुरमुखां हिरदे अन्दर करया वासन, पूरन ब्रह्म जणाईआ। प्रगट होए सर्ब गुण तासन, जो जन दिवस रैण ध्याईआ। लेख चुकाए दस दस मासन, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर आपे बैठा वड़, दिवस रैण रैण दिवस एका जोती जोत जगाईआ। गुर गोबिन्द जगत मलाह, हरि हरि रूप उपाया। गुर पूरा तेरा जगत मलाह, गुर नानक आप मिलाया। गुरसिक्खां नगर खेड़ा काया नगर दए वसा, आत्म सेजा सच सिँघासण इक्क विछाया। आवण जावण पतित पावण दो जहान लक्ख चुरासी गेड़ा दए चुकाया। जिस जन दोए जोड़, चरनी सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड द्वार हरि निरँकार आप अपणा आप सुहाया। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकार, थिर घर नाउँ रखाईआ। इक्क इकल्ला कर पसार, बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर समाईआ । निरगुण खेल अपर अपार, भेव अभेदा भेव ना पाईआ। नानक निरगुण एका सच सच दरबार मिल्या मेल इक्क निरँकार, आदि पुरख एका जोत विच टिकाईआ। नाम सति पाया अंजन, मिल्या दाता दर्द दुःख भय भंजन, लोकमात जीव जन्त साध सन्त, मार्ग इक्क वखाईआ। चार वरनां सच प्यार, नाम रंगण इक्क रंगाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा पावे सार, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका जोत दस अवतार, गुर गोबिन्द कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। सतिगुर अर्जन अर्जन गुर बण लिखार, गुरु ग्रन्थ गुर जगत धराईआ। सन्त भगत गुर सतिगुर पुरख अकाल बैठे इक्क द्वार, साचा धाम इक्क सुहाईआ। सृष्ट सबाई करया ख़बरदार, सोया जीव रहे ना राईआ। अन्तिम अन्त कलिजुग प्रगट होए निरगुण जोत निहकलंक नरायण नर अवतार, गुर गोबिन्द रंग शब्द मृदंग सूरा सरबंग आप रखाईआ। निहकलंक हरि निरँकार है, दूसर नाही कोए। द्वार बंक गुरु द्वार है, गुर गोबिन्द वेख वखाए। सम्बल नगरी धाम न्यार है, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाए। घर घर विच लए उसार है, आप आपणा आसण लाए। शब्द शब्दी डंक अपार है, नाम डंका इक्क वजाए। आदिन अन्ता एकँकार है, कलिजुग आपणी कल वरताए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां मेल मिलाए सच्ची सरकार है, घर साचा इक्क सुहाए।

* ३० कत्तक २०१५ बिक्रमी बाबा निधान सिँघ दे गुरदुआरे लंगर साहिब *

आदि पुरख हरि अबिनाशा, एका एकँकारया। खेलणहारा जगत तमाशा, आवे जावे वारो वारया। निरगुण जोती नूर प्रकाशा, रूप रंग ना कोई वखा रिहा। आपणे मण्डल पावे रासा, एका जोती जोत डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटा रिहा। जुग जुग वेस हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। सतिजुग साचे पावे सार, वार अठारां खेल खिलाईआ। त्रेता त्रिया कर प्यार, दोए दोए धार बंधाईआ। द्वापर वेखे खेल अपार, वेद व्यासा संग रलाईआ। पुराण अठारां जगत अधार, चार लक्ख हजार सतारां सलोक गिणाईआ। काहना कृष्ना रूप अपार, लोकमात करे रुशनाईआ। त्रिलोकी नाथ खेल न्यार, पंचम मीता आप अख्वाईआ। काहना कंसा खेले खेल सहँसा निरगुण धार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। नाम बंसरी अपर अपार, हरिजन आप सुणाईआ। भगत सुदामा कर पार, ग़रीब निमाणा पार तराईआ। द्रोपत लज्ज रक्ख दरबार, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। अन्तिम खेल जगत संसार, दो धड़ वेख वखाईआ। मनमुख जीवां मारे मार, देवे शब्द सजाईआ। रथ रथवाही बण गिरधार, गीता ज्ञान इक्क जणाईआ। आप आपणा कर ध्यान, अन्तिम वेख वखाईआ । द्वापर तेरा पार किनार, कलिजुग होई रुशनाईआ। कलिजुग कूड़ा हो त्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे सच सलाहीआ। लोकमात कर पसार, चौथे जुग वज्जे वधाईआ। धर्म राए वेख द्वार, बैठा राह तकाईआ। मिल्या मेल सच्चे यार, एका तत्त रखाईआ। बोले बोल इक्क हँकार, मन मति नाल प्रनाईआ। जूठ झूठ भर भण्डार, धरत मात वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, वेद कतेब ना कोई जणाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, जुग जुग आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा बुध ज्ञान वेखे आप हरि महान, पंज तत्त कर रुशनाईआ। बुध बोध जगत ज्ञाना, हरि हरि जोत जगाईआ। देवे शब्द धुर फ़रमाणा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। निरगुण जोत श्री भगवाना, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। शब्द ज्ञान इक्क रखाणा, लोआं पुरीआं आप उडाईआ । ईसा मूसा कर प्रधाना, धरत मात करे कुड़माईआ। देवणहारा धुर फ़रमाणा, आप आपणा नाउँ वटाईआ। एका करे दर परवाना, मुहम्मदी मुहम्मद सहाईआ। चार यारी खेल खिलाणा, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। अल्ला राणी बद्धा गाना, हरि साचे करी कुड़माईआ। वेखणहार बैठ बिबाना, आदि अन्त इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे काली छाहीआ। कलिजुग कूड़ा शाह सुल्तान, लोकमात हंकारया। चार यारी कर परवान, मुहम्मद शाह सिक्दारया। वेखे खेल जगत मैदान, फड़ तेज ज़ुल्म कटारया। जीव जन्त होए हैरान, साध

सन्त ना कोई सहारया। किसे हथ्थ ना आए गोपी काहन, गऊ घाट ना कोए विचारया। सृष्ट सबाई सुंञ मसाण, हरि का रूप दिस ना आ रिहा। राम सीता ना कोई गाण, काहना कृष्न ना कोई मना रिहा। मन्दिर अन्दर ना टल्ल खड़कान, पंडत पांधा ना कोई वखा ल्या। जंञू बोदी सर्ब शरमाण, त्रशूल हथ्थ ना कोई उठा रिहा। ब्रह्मा वेद ना होए प्रधान, गणपति गणेश ना कोई मना रिहा। ऐनलहक्क ख़ुदाई ख़ुदा एका होया मेहरबान, महवान बीदो इलाही नूर इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखा रिहा। कलिजुग कूड़ा कर प्रधान, हरि साचा वेख वखांयदा। धुरदरगाही श्री भगवान, आप आपणा खेल खलांयदा। सम्मत सम्मती नौजवान, बाल बिरध ना कोई अख्वांयदा। पंज तत्त वेख निशान, गतिमित ना कोई जणांयदा। निरगुण जोती इक्क महान, नानक नाम धरांयदा। सरगुण मेला विच जहान, आप आपणा रूप वटांयदा। शब्दी धुन धुन महान, आत्म अन्दर आप सुणांयदा। अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर नूर डगमगांयदा। नानक जोती हरि निरँकार, निरगुण नूर समाया। वरन गोती वस्सया बाहर, ज़ात पात ना कोई रखाया। शब्द सोटी हथ्थ सच्ची सरकार, चौदां लोक वेख वखाया। कोटन कोटी रहे विचार, हरि का भेव किसे ना पाया। चढ़ चढ़ चोटी धाहां रहे मार, नेत्र नैणां दिस ना आया।

८०६ ०७ बन्नृ लंगोटी डुब्बे डूँघी धार, जलधारा तेरी सार ना कोई पाया। वासना खोटी ना कोई तोड़े गढ़ हँकार, हउमे रोग ना कोई गंवाया। नानक गुर लए अवतार, हरि का भेव खुल्हाया। गया सच्चखण्ड सच्चे दरबार, आप आपणा भेट चढ़ाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सच द्वार इक्क खुल्हाया। जगे जोत अगम्म अपार, पंज तत्त ना कोए दिसाया। नानक सतिगुर ढहि पया द्वार, मेल मिलावा इक्क रघुराया। एका जोती हो उज्यार, एका शब्द सुणाया। अकाल पुरख प्रभ किरपा धार, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया। नानक गुर पावे सार, एका दूजा भउ चुकाया। सो पुरख आप करतार, हँ हँगता दए मिटाया। लोकमात दए हुलार, आप आपणा वेस वटाया। चार वरनां करे ख़बरदार, पंचां लए जगाया। सति नाम कर उज्यार, गुरमुखां हिरदे बीज बिजाया। मुस्लिम हिन्दू इक्क प्यार, साचा वक्त सुहाया। अन्तिम मातलोक निरगुण जोती कर उज्यार, अंगद अंग लगाया। अंगीकार कर करतार, जोती जोत करे रुशनाया। शब्द डंक अपर अपार, अनहद ताल वजाया। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, जेरज अंड फोल फुलाया। उत्भुज सेत्ज कर आकार, आप आपणा रूप दरसाया। बिरध अवस्था लए उधार, अमरदास मेल मिलाईआ। रामदास कर प्यार, साचा दर इक्क वखाया। सोहे दर सच्चा दरबार, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। लोकमात कर उज्यार, चार दर दए खुल्हाया। चार वरनां इक्क प्यार, चारों कुन्ट फेरी पाया। अमृतसर

अमृत भण्डार, साचा मार्ग इक्क वखाया। गुर अर्जन सतिगुर हो त्यार, ज्ञान बोध अगाध जणाया। गुरु ग्रन्थ कर त्यार, सन्त भगत गुर सतिगुर एका धाम बहाया। एका गुर इक्क अवतार, एका इष्ट मनाया। नाम सति भर भण्डार, सृष्ट सबाई आप वरताया। आपे वस्सया सभ तों बाहर, आपे हर घट डेरा लाया। जोती जोत कर उज्यार, हरिगोबिन्द होए सहाया। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सिंघासण आसण लाया। नाम खण्डा तेज कटार, आपणा आपे लए उठाया। ब्रह्मण्डां मारनहार मार, दूजी धार करे रुशनाया। हरिराए होए उज्यार, सृष्ट सबाई दए हलाया। अठवां गुर गुर अवतार, बाल अवस्था खेल खलाया। गुर तेग बहादर सच्ची धार, सीस जगदीश भेट चढ़ाया। वेख वखाए सच दीदार, सच दुआरा इक्क जणाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, आपणा खेल खलाया। दुष्ट दमन कर प्यार, उच्चे टिल्ले वेख वखाया। शस्त्र बस्त्र तन श्रृंगार, एका रूप वटाया। साची सिख्या कर प्यार, एका तत्त बुझाया आत्म वत बीज अपार, हरि हरि आप बिजाया। चलाए रथ विच संसार, रथ रथवाही आप अख्वाया। लोआं पुरीआं पाए नथ्थ बेऐब परवरदिगार, नूर ख़ुदाई लए जगाया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका एक अख्वाया। माता गुजरी सुत दुलार, कुक्ख भेव रहे ना राया। ब्रह्म रूप आप उज्यार, गर्भवास डेरा लाया। बाहर गर्भ होया प्रकाश, निरगुण जोत करे रुशनाया। एका शब्द एका स्वास, एका धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द सुत दुलार, एका एक उपजाया। सुत दुलार गुर गोबिन्द, पारब्रह्म उपजांयदा। आप मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता भुक्ख ना कोई रखांयदा। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समांयदा। बाली बाला होए बख्शिंद, पटना शहर सुहांयदा। परम पुरख हरि सुल्तान, एका एकँकारया। एका वसे महल्ल मकान, दो जहान पावे सारया। निरगुण खेल महान, भेव कोई ना पा रिहा। अंगी अंग ना लाए संसार, गुर गद्दी ना कोई जणा रिहा। बण विचोला आप करतार, पटना दरस मात आप करा ल्या। तेग बहादर तेरा रूप अपार, गुरमुख साचे वेख वखा ल्या। आप आपा उत्तों वार, आप आपणा वेख वखा रिहा। राज राजान करया ख़बरदार, राणी गोद उठा ल्या। बाला प्रीतम खेल अपार, हिन्दू मुस्लिम आप मिला रिहा। पुरी अनन्द हो त्यार, सच सिंघासण ला ल्या। ग़रीब निमाणयां पावे सार, बाल अवस्था खेल खला रिहा। पिता पूत एका धार, एका रंग रंगा ल्या। साचा रूप अपर अपार, पारब्रह्म आप वटा ल्या। नौ दर वस्सया आपे बाहर, दस्म दुआरी वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत विच समा ल्या। गुर गोबिन्द साचा गुर, गुर संगत विच समाईआ। अकाल पुरख लेखा लिख्या धुर, ना कोई मेट मिटाईआ। एका धाम बैठे जुड़, परमानंद समाईआ। दर घर अक्ख उग्घाड़, एका दृष्ट खुल्हाईआ । निन्दक देवे मार,

आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दर्द दुःख दलिद्र दए निवार, गुरमुखां होए सहाईआ। पूरन गुर अवतार, एका एकँकार आप अख्वाईआ। रच्छया करे सर्ब संसार, भेख भखण्ड ना कोई जणाईआ। धारी केस कर आकार, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आप आपणी कर विचार, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। शब्द सुनेहड़ा आवे वारो वार, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। जोती जोड़ जुड़या हरि निरँकार, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाईआ। गुर संगत हरि साचा, नाम लोकमात धराया। मिल्या मेल पुरख बिधाता, ना कोई दूसर संग वखाया। मिटे रैण अन्धरी राता, इक्क प्रकाश कराया। खेले खेल नाथ अनाथा, ग़रीब निमाणे गले लगाया। सर्ब जीआं दा सगला साथा, साचा संग निभाया। लहिणा देणा चुक्के मस्तक माथा, पूर्ब जन्मां झोली पाया। वाहिगुरू घर पूजा पाठा, गुरु ग्रन्थ गुर शब्द बणाया। आत्म मारे साची ठाठा, सर सरोवर इक्क भराया। धुरदरगाही आया नाठा, गोबिन्द वेस वटाया। लहिणा देण चुकाए तीर्थ तट्टा, चरन ध्यान इक्क रखाया। नाम बन्न्हे साची गाठा, चोर यार लुट्ट ना कोई जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। गोबिन्द हरि सच्चा सूरबीर, एका एक दरसाईआ। गुरमुखां कढ्ढे हउमे पीड़, एका जाम प्याईआ। एका बख्शे नाम नामा साचा नीर, बज़र कपाटी चीर चिराईआ। आप चढ़ाई चोटी अखीर, समरथ हथ्थ वड्याईआ। आपे बन्न्हे आपणी बीड़, शस्त्र बस्त्र वेख वखाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द सच वड्याईआ। गुर गोबिन्द उच्च अगम्म, एका इक्क अख्वाया। पुरख अबिनाशी ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाया। ना कोई रसन स्वासी लए दम, नेत्र नीर ना कोई वहाया। आदि जुगादी जाणे आपणा कम्म, वेस अनेका अनक वेस कराया। ना कोई ख़ुशी ना कोई गम, आलस निन्दरा विच ना आया। आपणा बेड़ा आपे लए बन्न्ह, जगत जीव भेव ना राया। नैणां देवी आपे वेख चढ़ थम्म, आप आपणा डेरा लाया। सति सरूपी करया हवन, एका जोत करे रुशनाया। इक्क हुलारा इक्क पवन, एका शब्द समाया। भेखाधारी पार कराए पवन, पारब्रह्म भेव ना राया। वेखे खेल अवण गवण, दो जहानां फेरा पाया। दीन दयाल पुरख अकाल अमृत मेघ बरसे सवण, गुर गोबिन्द वेख वखाया। नेड़ ना आए कामनी कमन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना तत्त वखाया। दुष्ट शंघारे दुष्ट दमन, सच खण्डा हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप दरसाया। आपणा रंग हरि करतार, गुर गोबिन्द आप दरसाईआ। शब्द सरूपी कर आकार, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस अपार, सीस दस्तार सजाईआ। कच्छ किरपान कड़ा खड़ग वेखे खेल

महान, निरगुण जोत डगमगाईआ। तन गात्रा अपर अपार, ब्रह्मण्डां विच चमकाईआ। भेख पखण्डा दए निवार, मेटे झूठी लशकर शाहीआ। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज लए तराईआ। अमृत देवे ठंडी ठार, सांतक सति वरताईआ। त्रैगुण माया ना करे ख्वार, पंज तत्त ना होए हलकाईआ। गोबिन्द गुर कर प्यार, साचे दर बुलाईआ। सिँघ सिँघासण अपर अपार, उप्पर बैठा बेपरवाहीआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, साचा बाज हथ्थ टिकाईआ। नीला वेखे कर विचार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। नौ सत्त दए हुलार, सत्तां दीपां कर रुशनाईआ। लक्खण दीप खेल अपार, पुष्कर फेरा पाईआ। करोच तेरी सुण पुकार, जम्बु करे रुशनाईआ। सलमल तेरी बन्ने धार, सान तेरी करे कुड़माईआ। कुशा रंग हरि करतार, आप आपणा दए चढ़ाईआ। गुर गोबिन्द सूरा बलकार, सच सिँघासण सेज विछाईआ। बस्त्र शस्त्र अपर अपार, तन गात्रा इक्क लटकाईआ। नेत्र जोत सच्ची सरकार, दरस वेख गुर संगत बिगसाईआ। आप आपणा करया ख़बरदार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा दए ललकार, आप आपणा लए उठाईआ। आप आपणे हथ्थ फड़ कटार, आपे लए चमकाईआ। आप आपणी मारे इक्क आवाज़, आपे रिहा सुणाईआ। गुरसिख होया ख़बरदार, प्रभ साचे खेल रचाईआ। गुर गोबिन्द बन्ने धार, चारों कुन्ट कुड़माईआ। ऊँचां नीचां जड़ दए उखाड़, राज राजान कोई दिस ना आईआ। दर घर साचे देवे वाड़, होए आप सहाईआ। भेख पखण्ड चबाए आपणी दाढ़, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुरसिक्खां अग्न ना साड़े तत्ती हाढ़, अमृत जाम प्याईआ। करे प्रकाश नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ी कर रुशनाईआ। दूई द्वैती देवे पाड़, तीजे नैण इक्क दरसाईआ। चौथे घर सच अखाड़, हरि साचा आप कराईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम वेख वखाईआ। पंचम मारे तन हँकार, पंज शब्द करे शनवाईआ। पंचम मीता हरि निरँकार, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जोत निरँजण सेवादार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। नानक गुर वखाया सच दरबार, दर द्वार इक्क खुल्हाईआ। ग़रीब निवाजा अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। अनहद वजाए वाजा अगम्म अपार, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। बाजां वाला आया विच दरबार, गुरमुखां दए सुणाईआ। गुरसिख गुरमुख होणा ख़बरदार, प्रभ साचे खेल रचाईआ। तेज़ कटार चमके अपर अपार, तिक्खी धार आप रखाईआ। खड़ग खण्डा ब्रह्मण्डां मारे मार, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। उठया सुत सुत दुलार, दया दया आप कमाईआ। आपणे प्यार मारी धार, आर पार आप कराईआ। चार चारे दित्ता वार, पंचम संग रखाईआ। पंच प्यारे कर त्यार, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। साची सिक्खी रसना कहिणा, गुर गुरमुख सोहे बंक द्वार, बंक दुआरा आप सुहाईआ। केस दसमेश नाम उज्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत साचा

कर त्यार, आत्म मोह चुकाईआ। जगत विकारा देवे मार, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। एकँकार कर प्यार अकाल मूर्त इक्क समझाईआ। दूजा दर ना दिसे कोई दरबार, एका गुर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, घर साचे वज्जी वधाईआ। पंच प्यार पंच प्रमुक्ख, गुर सतिगुर रूप वटाया। आप मिटाया सगला दुःख, चिन्ता सोग रहे ना राया। सुफल कराई मात कुक्ख, आवण जावण फंद कटाया। आपणी गोदी आपे चुक्क, आप आपणा पर्दा पाया। आपे मानस आपे मनुक्ख, आपे हरि हरि रूप समाया। आप आपणा सीस पंज प्यारे अग्गे निवाए झुक, आप आपणा भेट चढ़ाया। गुरमुखां अन्दर आपे बैठा लुक, आप आपणा खेल खिलाया। मनमुखां मुख पाए थुक्क, देवे अन्त सजाईआ। हरि का भाणा ना जाए रुक, हरि साचे आप वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द खेल खलाया। गुर गोबिन्द हो त्यार, पंच प्यारा उठाईआ। आप आपणी कर निमस्कार, अग्गे झोली डाहीआ। अमृत मंगे ठंडा ठार, रसना जिह्वा हलकाईआ। साचा गुर कर त्यार, साची सिख मति समझाईआ। अतीत होए विच संसार, एकँकारा वेख वखाईआ। अकल कला कल आपे धार, साची बणत बणाईआ। पन्थ ख़ालसा अपर अपार, गुरु ग्रन्थ इष्ट वखाईआ। दूसर ना कोई जाणे बंक द्वार, पंज तत्त ना कोए गुर पाईआ। गुर का शब्द जगत भण्डार, जुग जुग आप वरताईआ। डंक नगारा अपर अपार, आपणा आप सुणाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप उठाईआ। जीवां जन्तां मारे मार, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेलणहार हरि निरँकार, अकल कला अख्वाईआ। गोबिन्द मेला विच संसार, सुत दुलारा नाम धराईआ। पुरी अनन्द कर उज्यार, अन्तिम वंड वखाईआ। आपे छड्ड सच्चा घर बाहर, आपे करे चढ़ाईआ। गुरसिख साजण मीत मुरार, सगला संग निभाईआ। आपे वेखे सरसे धार, आपे जल समाईआ। आपे अस्व हो अस्वार, आपे पार कराईआ। आप आपणी भेटा देवे चाढ़, सच ख़ज़ाना आप भराईआ। आपणा शब्द आपणे दर देवे वाड़, घट भेव ना कोए खुल्हाईआ। आपे वेखे आर पार, डूँघी धार आप हो जाईआ। आपे वेखे सुत दुलार, आप आपणी वाग भवाईआ। आपे झूज झुजाए सिरजणहार, आप आपणी कटार फड़ाईआ। आपे गढ़ी होया बाहर, पहरेदार राह तकाईआ। आपे सुत्ता पैर पसार, सूलां सथ्थर हेठ विछाईआ। शब्द सुनेहड़ा देवे साचे यार, आप आपणी रसन अल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, अट्ठे पहर वेख वखाईआ। गोबिन्द तेरा सच प्यार, सच सच्ची सरनाईआ। इक्क पुरख इक्क आकार, एका नूर जणाईआ। दीना बंधप दीन दयाल, तेरा संग रखाईआ। गुरमुखां तोड़े जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाईआ। सृष्ट सबाई

होए बेहाल, एका ढईआ वक्त लँघाईआ। कोई ना करे किसे प्रितपाल, पीर दस्तगीर मुलां शेख़ काज़ी गौस बंधन बांदा ना देवे कोई गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, गोबिन्द सुणे साचे दर, साचा आसण लाईआ। शब्द हथ्थ रंग, गुर गोबिन्द ख़ुशी मनांयदा। पारब्रह्म तेरा सच पलँघ, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। तेरा तेरी करे मंग, ना दूसर वेख वखांयदा। अंगीकार करे अंग, जगत विछोड़ा मोहे ना भांयदा। पन्थ ख़ालसा मंगी मंग, साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द देवे साचा वर, एका शब्द दुलार पारब्रह्म हरि शब्द जैकार, गुर गोबिन्द आप सुणाया। तेरा रूप आप करतार, तेरे विच समाया। तेरा पन्थ मेरी धार, तेरी यादगार रखाया। पूत सपूता एका वार, नीआं हेठां बन्द कराया। उच्च महल्ल ल्या उसार, ना कोई सके ढाया। इट्टां गारा लाया आप करतार, जगत जगदीशा सेव कमाया। वेखे खेल वारो वार, आप आपणा वेस वटाया। गोबिन्द जोती कर उज्यार, साची सोटी हथ्थ फड़ाया। चोटी चढ़े पुरख करतार, गुरमुख साचे लए जगाया। मेरा रूप सच्ची सरकार, सतिगुर पुरख मनाया। पन्थ ख़ालसा रहिणा ख़बरदार, गोबिन्द तेरे विच समाया। अन्तिम वेले पावे सार, लोकमात करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अपणा खेल खलाया। पंचम आप पंच प्यार, पंचम वज्जी वधाईआ। पंचम मीता पुरख करतार, करता पुरख नाउँ धराईआ। अचरज रीता विच संसार, गुर पूरे आप चलाईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठा किरपा धार, अमृत धार इक्क खवाईआ। देवे नाम जगत अनडीठा, महल्ल अटल काया मुनार, सच महल्ला आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द मेला साचे घर, आपे देवे शब्द सालाहीआ। पंचम आप आपे साज, आप करे चढ़ाईआ। आपे नीले बैठा सज, आपे वाग उठाईआ। आपे पर्दा गुरमुखां रिहा कज्ज, दक्खण दिशा फेरी पाईआ। गोदावरी कन्ढे बैठा सज, संगत वड वड्याईआ। संगत प्यार गया बज्झ, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वड वड्याईआ। गोबिन्द डेरा सिँघ ला, सिँघ डेरा आप लगाया। पिता पूत वेखे भैण भ्रा, दारा सुत रिहा सुणाया। लहिणा देणा दए चुका, एका मंग मंगाया। गुरमुख साचे दए बुझा, आप आपणा भेव खुल्हाया। नानक सतिगुर बैठा बेपरवाह, नाम ख़ज़ाना इक्क भराया। आपणी धार आपे वेखे आ, जुग जुग डेरा लाया। मेहरबान मेहरबान मेहर दृष्टी देवे पा, पथ्थर पाहन सवरन बणाया। गुरमुख साचे रिहा उठा, गुर गोबिन्द झोली रिहा भराया । आप आपणा मार्ग आपे ला, आपे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द रंग रंगाया। मिल्या गोबिन्द हरि करतार, सिँघ वड्डी वड्याईआ। सतिगुर खेल विच संसार, चारों कुन्ट

वेख वखाईआ। गुरमुख साचे करे प्यार, आए चल सरनाईआ। आपणी भेटा देवे चाढ़, गुर पूरे सेव कमाईआ। गुर पूरा सच ख़ज़ाने देवे वार, गोदावरी भेट कराईआ। नगीना घाट साचा लाड़, बैठा जोत जगाईआ। देवे गढ़ हँकारी मार, माधो दास रिहा शरमाईआ। नाम प्यार अन्दर देवे वाड़, पंज तत्त करे रुशनाईआ। मेट मिटाए झूठी धाड़, नौ अठारां रहे शरमाईआ। बीर बताला मारे मार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश गुर नानक शब्द अलाईआ। साची मोखशा धुर प्यार, पंच पंच समाईआ। एका राम एका काम सच अखाड़, एका वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा फोल फुलाईआ। सचखण्ड दुआरा सतिजुग धार, हरि साचे आप उठाईआ। आपे बैठा कर प्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, तीर निशाना मुख छुहाईआ। शाह सुल्ताना मारे मार, मेटे जूठी झूठी छाहीआ। नाम वरताए सच भण्डार, वड दाता बेपरवाहीआ। गुरसिक्खां करे इक्क प्यार, मुगल मुलाणे वेख वखाईआ। शाह बहादर पावे सार, हरि साचा भेव ना राईआ। करते कादर खेल न्यार, कादर करीम आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम आपणी बणत बणाईआ। आत्म अन्तर हरि जणाई, शब्दी शब्द उपाया। गुर गोबिन्द वज्जी वधाई, हरि हरि मंगल गाया। नानक वेखे चाँईं चाँईं, साचा राग अलाया। दो जहानां देवे ठंडीआं छाईं, मेल मिलावा बेपरवाहया। करे कराए सच न्याईं, आप आपणा नाउँ धराया। गुरमुखां पकड़णहारा बांहीं, आप आपणे रंग रंगाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँईं, अमृत जाम इक्क प्याया। आपे पिता आपे माई, आप आपणी गोद उठाया। आपे भैण आपे भाई, साक सज्जण सैण आप हो जाया। आपे देवे निथाविआं थाँईं, थान थनंतर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा साचे घर, गुर गोबिन्द आप जणाया। शब्द सुनेहड़ा धुर दरबार, हरि साचा हरि सरनाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, लोकमात वेख वखाईआ। चेला गुर इक्क द्वार, एका धाम सुहाईआ। एका रंग रंगे करतार, रंगणहार आप अख्वाईआ। एका जोती दीप उज्यार, तेल बाती ना कोई रखाईआ। कमलापाती आप करतार, नारी कन्ता रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द सुणे शब्द तराना, अन्तर हरि हरि पाया। एका जोती नूर भगवाना, जोती जोत डगमगाया। एका धर्म इक्क निशाना, एका रिहा झुलाया। एका पुरख शाह सुल्ताना, एका बैठा आसण लाईआ। एका बन्नणहारा गाना, एका सगन मनाया। एका वेखे मार ध्याना, उच्च महल्ल इक्क दरसाया। एका बख्शे चरन ध्याना, एका आपणा आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द आपणे रंग रंगाया। शब्द जणाई हरि धुन्कार, गोबिन्द विच समाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, पंज तत्त

फेरा पाईआ। तेरा मेरा इक्क प्यार, जोती जोत टिकाईआ। साचे अस्व हो अस्वार, साचे घर वेख वखाईआ। जोती जोड़ा सच्ची सरकार, सीस साचा छत्र झुलाईआ। उच्च पौड़ा हरि गिरधार, सचखण्ड दुआरे एका लाईआ। लम्बा चौड़ा ना जाणे कोई संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। बिन गुर नानक ना वेखे कोई द्वार, दस जामे एका जोत जगाईआ। अन्तिम खेल किया निरगुण धार, निरगुण वेख वखाईआ। साधां सन्तां करे प्यार, आप आपणी करे जणाईआ। गुर किरपा गुर खेल अपार, गुर गुर बूझ बुझाईआ। साचा सज्जण मीत मुरार, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। आपणी बणत आप बणा, आपणा कर्म कमाया। आपणी गणत आप गणा, आपणा लेखा आप चुकाया। आपणी संगत आप बणा, आपे वेखण आया। आपणी रंगत आप चढ़ा, अंगीकार आप अख्वाया। साचा संगी जगत मलाह, गुर गोबिन्द नाउँ धराया। गुरसिक्खां देवे सच सलाह, घर साचा इक्क सुहाया। मिलण जा के बेपरवाह, बैठा राह तकाया। गुरमुख ना करे कोई नांह, हरि का भाणा हरि हरि पाया। आपे पिता आपे माँ, सिर रक्खे हथ्थ सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सगन आप मनाया। आपणा सगन आप मना, आपे ख़ुशी मनांयदा। आपणा गीत आपे गा, पुरख अकाल ध्यांअदा। आपणी जोती आप जगा, आपे डगमगांयदा। गुरमुख साचे आप उठा, आपे मार्ग लांयदा। अमृत बाटे आप छिड़का, बज़र कपाटी आप खुल्हांयदा। साचे हाटे आप विका, साचा मुल्ल पवांयदा। तीर्थ ताटे लहिणा देणा चुका, एका गुर द्वार वखांयदा। गुरु ग्रन्थ सीस आप निवा, गुरसिक्खां एह समझांयदा। साचा सगन जगत वखा, पंचम खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती शब्द शब्द जोती, एका रंग रंगांयदा। सति सरूप गुरदेव, गुरु ग्रन्थ जणाईआ। पारब्रह्म इक्क संदेश, हरिसंगत गया सुणाईआ। दो जहानां नर नरेश, एकँकार आप अख्वाईआ। गुरसिक्खां अन्दर कर रिहा प्रवेश, जो खोजे सो पाईआ। दिवस रैण रहे हमेश, पर्दा उहला इक्क वखाईआ। लेखे लाए धारी केस, मूंड मुंडाए जो आयण चल शरनाईआ। मुख शरमायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, नेत्र नीर रहे वहाईआ। पारब्रह्म प्रभ सदा आदेश, तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वेखे चाँई चाँईआ। गुर गोबिन्द सच त्यारा, आपणा आप कराया। गुरमुखां सच कर प्यारा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। वाहिगुरू फतहि इक्क जैकारा, जै जैकार सृष्ट सबाया। सच अंगीठा इक्क समाया बनास्पत कर प्यारा, अनडीठा खेल आप वरताया। अग्नी जोती वेख चन्गयाड़ा, चारों कुन्ट फेरा पाया। भेद अभेद भेव छुपाया, कल्गी तोड़ा सीस सजाया। शस्त्र धारा वेस वटाया। गुरमुखां देवे सच प्यारा, आप आपणा झोली पाईआ। नाम

जपाए एका वारा, एका रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द एका घर एका महल्ल सुहाया। गुर गोबिन्द एका नाअरा, अन्तिम अन्त लगांयदा। मेरा महल्ल मेरा मुनारा, ना कोई फोल फुलांयदा। सतिगुर पूरा मरे ना जन्मे विच संसारा, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। सदा सुहेला खेल न्यारा, इक्क अकेला वेस वटांयदा। आदि जुगादी भगत अधारा, भेखी रूप वटांयदा। अन्तिम वेले पावे सारा, आप आपणी खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा वेख वखांयदा। साचे घर शब्द चमत्कारा, जोती जोत जगाईआ। गोबिन्द गुर सुत दुलारा, पारब्रह्म समाईआ। शब्द सुनेहड़ा देवे अन्तिम वारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, घर घर विच दए उपाईआ। निरगुण जोती कर उज्यारा, शब्द डंक वजाईआ। शब्द गुर शाह अस्वारा, एका एक अख्वाईआ। निहकलंक कल लए अवतारा, नौ खण्ड पृथमी सत्तां दीपां करे इक्क रुशनाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, वरन गोती मेट मिटाईआ। धारों तिक्खी पार किनार, आर पार वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ गुरसिक्खां करे प्यार, हाज़र हज़ूर जोत खण्ड सच करे रुशनाईआ। साध सन्त कराए वणज वणजार, नाम वणज इक्क वखाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी उतरे पार, जो जन नेत्र नैण दर्शन पाईआ। गुरमुख साजण मीत ढहि ढहि पैण चरन द्वार, दिवस रैण रैण दिवस मस्तक सीस झुकाईआ। साध संगत तेरा महल्ल अटल उच्च मिनार, सचखण्ड गुरधाम गोदावरी कन्ढा विच ब्रह्मण्डा हरि हरि लंगर संगत प्रसादि, आदि जुगादि साध सन्त रहे वरताईआ। सन्तन रंग हरि करतारा, आपे आप समाया। वेखणहारा सच दुआरा, जोती जोत करे रुशनाया। सिँघ निधान कर प्यारा, प्रेम प्याला इक्क प्याया। हरिनाम सिँघ साचा लाला, लाल सेवक सेवा रिहा कमाया। मिल्या सतिगुर पूरा दीन दयाला, घर साचे विच ध्याया। साध संगत बण रखवाला, आदि जुगादि जुग जुग सेव कमाया। आपे शाह आपे कंगाला, गुरमुखां नाम वस्त भण्डारा आप भराया।

* पहली मग्घर वीह सौ पन्दरां बिक्रमी गौतम रिखी दी गुफा गोदावरी तट नंदेड़ *

सति तप सति वरतार, सति सति सति समाईआ। सति सति खेल करतार, सति सति कराईआ। सति सति मेल संसार, सति सति अख्वाईआ। सति सति जोत आकार, सति सति करे रुशनाईआ। सति सति हरि भण्डार, सति सति

वरताईआ। सति सति शब्द जैकार, सति सति सुणाईआ। सति सति करे प्यार, सति सति बूझ बुझाईआ। सति सति लए उभार, सति सति वेख वखाईआ। सति सति ख़बरदार, सति सति जगाईआ। सति सति मुरार, सति सति संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सरूप आप हो जाईआ। सति सति हरि भगवन्त, सति सति उपाया। सति सति लेखा जुगा जुगन्त, सति सति वरताया। सति सति मेला नारी कन्त, सति सति धाम सुहाया। सति सति बणाए साची बणत, सति सति वेख वखाया। सति सति आदि अन्त, सति सति रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति मेल मिलाया। सति पुरख सति सुल्तान, सति सति समाईआ। सति सति वेख निशान, सति सति झुलाईआ। सति सति खेल महान, सति सति आप कराईआ। सति सति शब्द बिबान, सति सति नाम उडाईआ। सति सति वेखे मार ध्यान, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति करे कुड़माईआ। सति सति साचा रंग, सति सति आप चढ़ाया। सति सति वस्सया संग, सति सति सगला संग रखाया। सति सति मंगी मंग, सति सति धर्म इक्क रखाया, सति सति नुहाया साची गंग, सर सरोवर इक्क जणाया। सति सति लाया अंग, सति सति अंगीकार आप कराया। सति सति वखाए सच पलँघ, सति सति आप विछाया। सति सति वजाए इक्क मृदंग, सच मृदंगा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति वेस वटाया। सति पुरख सति अकाल, सति जोत जगाईआ। सति सति सति रखवाल, सति मेला सहिज सुखदाईआ। सति काल सति महांकाल, दीन दयाल सति अख्वाईआ। सति तत्त सति लए भाल, सति सति वेख वखाईआ। सति सूरत सति मूर्त सति लाल, सति सति सन्तोख जणाईआ। सति शाह सति कंगाल, सति वणजारा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति दए वड्याईआ। सति नाम सति भण्डार, सति शब्द वरताईआ। सति रूप आप करतार, सति सति विच समाईआ। सति जोग सति श्रृंगार, सति इक्क जणाईआ। सति भोग सति प्यार, सति वेस इक्क कराईआ। सति सोभावन्ती होए नार, सति कन्त इक्क रखाईआ। सति सति सति मुरार, सांतक सति इक्क वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति साजण हरि रघुराईआ। सति साजण सति मीता, सति सति आप अख्वाया। सति हस्त सति कीटा, सति एकँकारा रंग रंगाया। सति कौड़ा सति मीठा, सति ठांडा ठार जणाया। सति पतित सति पुनीता, पतित पावण सति हो जाया। सति चलाए आपणी रीता, सति सति वेख वखाया। सच मन्दिर सच अतीता, सच बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति वेख वखाया। सति रूप सति महान, सति सति जणाईआ। सति

ब्रह्म सति ज्ञान, सति बूझ बुझाईआ। सति पारब्रह्म हो मेहरबान, सति सति वेख वखाईआ। सतिजुग साचे कर परवान, आप आपणा खेल खलाईआ। दर दरवेश श्री भगवान, भेव अभेद छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर जगत वक्खर एका सति पढ़ाईआ। सति सुर सति निधान, सति जोत जगाईआ। सति भगत सति ब्रह्म, सति रूप दरसाईआ। सति सोहँ सति वरत, सति गुरू जणाईआ। सति ओअँ सति करनी करन, करनहार सति बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति दए वड्याईआ। सति संजम सति नेम, सति बणत बणांयदा। सति वेखे सति ब्रह्म, सति सति मेल मिलांयदा। सति रूप सति कामधेन, सति धारा दूध सति वहांयदा। सति दोहन सति मोहन, सति सति आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति वेख वखांयदा। सति तप सति जाप, सति हट्ठ वखाईआ। सति वेखे आपणा आप, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सति पुन्न सति पाप, सति सति मेट मिटाईआ। सति थापना रिहा थाप, सति करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति करे रुशनाईआ। सति जोत सति निरँजण, सति वेस वटाया। सति पुरख खेल अपार, सति सन्तन विच समाया। सति सन्त सति कन्त, सति नारी रूप दरसाया। सति मेला श्री भगवन्त, सति सेजा इक्क विछाया । सति खेले खेल आदि जुगादि अनन्त, सति जुग जुग वेस वटाया। सति भोगी सति रसीआ मणीआ मंत, सति रसक रसक झिरना सति झिराया । सति जोगी जोग जुगीशर सन्त, सति जगत सति जुगत सति मोखश पद रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति लए उपाया। सति धार सति उज्यार, सति सति वेख वखाईआ। सति रूप सति संसार, सति सति बैठा आसण लाईआ। सति चरन सति कँवल सति धवल खेल न्यार, सति सति आप कराईआ। सति सन्त साधक लिव लाए तार, सति नेत्र नैण सति समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सति लए उपजाईआ। सति उत्पत, सति समाया। सति गणेश गणपति, सति ब्रह्मा शिव सति वेख वखाया। सति करोड़ तेतीसा उठे सति, सति सुरपति राजा इन्द दए मिलाया। सति नाम चलाए साचा रथ, सति दो जहानां वेख वखाया। सति जणाई अकथना अकथ, सति भेव ना कोई छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति नाम सति, साचा बीज बिजाया। नाम सति सति उत्पत, हरि हरि खेल खलाईआ। आपे मेला कमलापाता, आपणी बणत बणाईआ। सप्तम मेल पुरख बिधाता, सप्तम सप्तम सहिज सुखदाईआ। सप्तम होए उत्तम ज़ाता, दर दुआरा इक्क वखाईआ। एका चरन एका नाता, एका रिहा बंधाईआ। एका धरत एका माता, एका धवल सुहाईआ। एका शब्द एका गाथा, एका नाम पढ़ाईआ। सोहँ साची पूजा

८१६
०७

पाठा, गौतम मुख रखाईआ। गग्गाः गोबिन्द टेके माथा, तत्ता तमा गंवाईआ। मंमा महिमा अगणत, मिल्या मेल साचे माहीआ। मार्ग लाए जीउ पिण्ड बणाया तन तन काचा, नगर खेड़ा इक्क दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जगत गोदावरी जगत घाट, सति सति वरताया। नौ नौं नेजे वेखे पाट, ढूँघी कन्दर डेरा लाया। धरत मात साची खाट, सति विछाउणा इक्क विछाया। काया वेखे साचा हाट, मन्दिर अन्दर खोज खुजाया। सर सरोवर वेखे तीर्थ ताट, धरनी उप्पर सीस टिकाया। जोती अग्नी इक्क ललाट, जोत निरँजण दर्शन पाया। आपणा लाहा आपे खाट, घर आपणे मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति मेला सहिज सुबाया। नौं दर तेरा ढूँघा घाट, नौ नौं नेज़ वखाईआ। आपे खोल्हणहारा ताक, धरनी झिरना इक्क झिराईआ। अमृत आत्म देवे माट, काया पोच पचाईआ। जोत नुरानी दिसे लाट, लिलाट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। सोहँ शब्द उजाला, गौतम मुख सुहाया। रसना गाए गुर गोपाला, एका दूजा भउ चुकाया। एका पाई साची माला, रत्न अमोलक गल लटकाया। आपे तोड़ जगत जंजाला, आप आपणा लेख चुकाया। सती सति जगत उबाला, खेलणहार खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। धरनी धवल कर प्यार, नौ नौं नूर समाईआ। जोती नूर कर उज्यार, साचा मन्दिर फोल फुलाईआ। गोदावरी तेरी ठांडी धार, सतिजुग रूप सुहाईआ। रिखी रखीशर लँघ द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अन्तिम नाता तुट्टे विच संसार, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। मण्डल उप्पर हो उज्यार, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। तिन्नां लोकां इक्क प्यार, साचा वणज इक्क कराईआ। सचखण्ड दुआरा कवण द्वार, कवण घर सच्ची शरनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, तेरी जोत मेरा वरन अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द सुणाईआ। शब्द सुनेहड़ा हरि भगवान, हरिजन आप सुणांयदा। त्रेता द्वापर तेरी ना करे कोई पछाण, ना कोई मेल मिलांयदा। होए सिँघासण ज़िमीं अस्मान, गगन मण्डल डेरा लांयदा। पुरख अबिनाशी खेल महान, भेव कोई ना पांयदा। कलिजुग अन्तिम जोत जगे श्री भगवान, लोकमात वेख वखांयदा। निहकलंक बली बलवान, लहिणा देणा झोली पांयदा। एका हरि मेहरवान, इक्क ध्यान लगांयदा। सोहँ साचा नौजवान, सति सति आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कोटन कोटी वेख वखांयदा। सोहँ शब्द सच सिँघासण, हरि हरि सेज विछाईआ। साचा मेला शाहो शाबाशण, पुरख अबिनाशण वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाशन, सचखण्ड धार इक्क वखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन पुरख अबिनाशण,

आपणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सप्तम साचा लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, जुग लहिणा जुग देणा जुग पूर कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा तत्त ना कोई बुझाईआ।

संगत धूढ़ हरिजन ख़ाक, हरि हरि सीस उठाईआ। पापी पतित करे पाकी पाक, दुरमति मैल धवाईआ। गोदावरी तेरा नाता तुट्टा साक, चौथे जुग रहिण ना पाईआ। सन्त सुहेले जो जन बैठे रहे झाक, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह ताक, चरन कँवल बख़्शे सच शरनाईआ। शब्द घोड़ा देवे साचा राक, दो जहानां पार कराईआ। गुरमुख मारन इक्क पलाक, वाग गुर पूरे हथ्थ उठाईआ। धुरदरगाही धुर फ़रमाणा धुर शब्द लै के आया डाक, सोहँ सितार इक्क हिलाईआ। सृष्ट सबाई भाणा मन्ने एका वाक, लेखा लिख्त ना कोई मिटाईआ । कलिजुग नकेल पाए नाक, चारों कुन्ट आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सप्तम तेरा वेखे दर, गिरधार सिँघ कर प्यार, हरि हरि हरि नर नर नर सर सर सर किरपा कर, देणा देणा झोली पाईआ।

* पहली मग्घर २०१५ बिक्रमी हैड पुजारी जुगिन्दर सिँघ अते उस दे पिता प्रताप सिँघ दे कमरे (चुबारे) विच सचखण्ड गुरदुआरा हज़ूर साइक्क नंदेड़ *

पुरख अकाल हरि समरथ, एका एकँकारया। गुरमुखां देवे नाम वथ्थ, गुर गोबिन्द वेख वखा रिहा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, जो जन आए दर्शन पा रिहा। वेख वखाए मस्तक मथ्था, जोत लिलाटी आप जगा रिहा। वसणहारा घट घट, हर घट में आप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल खिला रिहा। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वाईआ। नानक गुर मीत मुरार, शब्द मिलावा इक्क वखाईआ। सतिनाम कर उज्यार, चार वरन करे जणाईआ। राउ रंकां इक्क प्यार, नाता बिधाता इक्क बंधाईआ। शाह सुल्तानां करया ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। पूरा गुर जोधा बलकार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। रवि ससि करे निमस्कार, दर दर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, रूप अनूप समांयदा। नानक सतिगुर पावे सार, लेखा लिख्त विच ना आंयदा । एका जोती दस अवतार, गुर गोबिन्द वेख वखांयदा। सुत दुलार अपर अपार, आप आपणा सुत

उपजांयदा। पुरख अकाला सिरजणहार, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गुर गोबिन्द सुत दुलारा, हरि हरि रूप समाया। वेखे विगसे कर विचारा, दो जहानां मेल मिलाया। सृष्ट सबाई बन्ने धारा, आप आपणा मार्ग लाया। चार वरन इक्क प्यारा, एका राह विखाया। एका दर इक्क दुआरा, एका मेल मिलाया। एका नाम इक्क भण्डारा, एका रिहा वरताया। एका शब्द इक्क शृंगारा, एक तन कराया। एका शब्द कर प्यारा गुरमुखां आप वरताया। पंचम मीता हो उज्यारा, पंचम खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। गुर गोबिन्द सूरबीर, हरि जोत जगाईआ। शब्द निशाना एका तीर, गुरमुखां आत्म लाईआ। बज़र कपाटी देवे चीर, दूई द्वैत मेट मिटाईआ। अमृत आत्म देवे ठांडा सीर, हउमे रहिण ना पाईआ। माया ममता कढ्ढे पीड़, चिन्ता दुःख रहे ना राईआ। आपे चोटी चढ़ अखीर, गुरमुख साचे लए मिलाईआ। शाह शहाना वड पीरन पीर, दस्तगीर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, सिँघ सिँघ वड्डी वड्याईआ। सिँघ गोबिन्द साचा शेर, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। दो जहानां बण दलेर, दो जहानां वेख वखांयदा। आपे वस्सया नेरन नेर, नेड़ दूर आप अख्वांयदा। शब्द सुहेला जाए घेर, शब्द डोरी बन्द बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा बंधन पांयदा। गुर गोबिन्द हरि हरि मीता, हरि हरि वेख वखाया। पुरख अकाल इक्क अतीता, थिर घर बैठा आसण लाया। आदि अन्त ठंडा सीता, एक रंग रंगाया। इक्क सुणाए सुहागी गीता, वहिगुरू अक्खर जाप जपाया। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावण नाम धराया। आप आपणी चलाई रीता, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, दूजा इष्ट ना कोई वखाया। अकाल पुरख इक्क गुरदेव, गुर गोबिन्द बणाईआ। दाता दानी अलक्ख अभेव, आदि निरँजण वेख वखाईआ। अमृत लाया रसना जिह्व, दुरमति मैल कटाईआ। फल खवाए साचा मेव, पुरख अगम्मा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचा घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचे घर शब्द धुन्कार, शब्द ताल वजाया। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम सखीआं मंगल गाया। पंचम सचा कर प्यार, गुरमुख साचे लए जगाया। तीर तुफंग नेज़ा तुबक कटार, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। अन्दर बाहर पावे सार, गुप्त ज़ाहर भेव ना राया। खेले खेल विच संसार, पुरख अकाला वेस वटाया। अस्व घोड़ा कर त्यार, नीला नीली धारों पार कराया। जोती शब्दी कल्गी तोड़ा, मस्तक सीस टिकाया। गुरमुखां गुरसिक्खां आपे बौहड़ा, आप आपणा वेस वटाया। लक्ख चुरासी जीव परखे मिठ्ठे कौड़ा, नाम घसवटी

एका हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, गुर पूरा वेख विखाया। गुर पूरा सतिगुर रूप, सति पुरख आप अख्वांयदा। आपे शाहो आपे भूप, राउ रंक आप हो जांयदा। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दर सुहांयदा। सतिगुर गोबिन्द सच दुलार, हरि हरि जोत जगाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। ना कोई दिसे कन्ढा पार, इकवंजा बवन्जा आपे गाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आपे जोत जगाईआ। गुरसिक्खां करे सच प्यार, अमृत आत्म जाम प्याईआ। खण्डा वेखे तिक्खी धार, हउमे रोग गंवाईआ। कच्छ कड़ा कृपान, केस सीस जगदीश वज्जी वधाईआ। रूप अनूप सच्ची सरकार, सति सरूप समाईआ। आप आपणे अग्गे ढहि पया द्वार, गुरसिक्खां दए वड्याईआ। एका जोती नूर उज्यार, नीचां विच गया समाईआ। भरनहार आप भण्डार, आपे रिहा वरताईआ। जुग जुग खेले खेल न्यार, समरथ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलिजुग मेटे कूड़ कुड़यार, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चार वरनां सुहाए इक्क द्वार, शूद्र वैश क्षत्री एका धाम सुहाईआ। एका घर इक्क दरबार, एका दर वखाईआ। इक्क शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका बस्त्र कर त्यार, एका नैण समाईआ। त्रैगुण तेरा दूर किनार, पंज तत्त मोह चुकाईआ। आत्म तोड़े गढ़ हँकार, जो जन रहे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, आप आपणा मेल मिलाईआ। पुरी अनन्द परमानंद, हरि हरि रूप वखाया। सुत दुलार चढ़या चन्द, एका अस्मान करे रुशनाया। गुरमुखां ख़ुशी कराए बन्द बन्द, एका दर सुहाया। माया ममता नाता तोड़े घमंड, तृखा तृष्ना रहे ना राया। दूई द्वैती सदा बख्शिंद, बख्शणहार नाउँ धराया। पन्थ ख़ालसा मेटे पन्ध, जो दर आए सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वेख वखाया। गुर गोबिन्द हरि निरँकार, आपणी कल कलधारया। एका जोती कर चमत्कार, खेले खेल अपर अपारया। अंगद करया अंगीकार, अमरदास सोहे बंक द्वारया। राम दास सच्ची सरकार, अमृत भरे नाम भण्डारया। गुर अर्जन खेल अगम्म अपार, बोध ज्ञान आप जणा ल्या। गुरु ग्रन्थ कर त्यार, सन्त भगत सतिगुर मेल मिला ल्या। जीआं जन्तां दए आधार, एका इष्ट वखा ल्या। दूजा दिसे ना कोई द्वार, ना कोई धाम सुहा ल्या। निरगुण जोती जोत उज्यार, सरगुण वेस वटा रिहा। नाम खण्डा तेज कटार, आप आपणे गले लटका ल्या। शत्रु मारे तोड़े हँकार, आपणी धार बंधा ल्या। हरिराए हो उज्यार, हरी हरि का रंग वखा ल्या। बाल अवस्था खेल अपार, जोती जोत जगा ल्या। तेग बहादर सच्ची सरकार, साची थित्त सुहा ल्या। आप आपणा दित्ता वार, ग़रीब निमाणे गले लगा ल्या। गुर गोशब्द सुत

दुलार, पुरख अकाल आप उपा ल्या। नाम खण्डा तेज़ कटार, ब्रह्मण्डां वेख वखा ल्या। भेख पखण्डा दए निवार, साचा डण्डा इक्क उठा ल्या। गुरमुख आत्म रंडा ना रोवे ज़ारो ज़ार, अमृत जाम इक्क पया ल्या। कलिजुग अन्तिम पाई तेरी वंडा, आप आपणा विच टिका ल्या। ना कोई पूजे करीर जंडा, मढ़ी गोर ना सीस निवा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द संग निभा ल्या। साचा सज्जण एकँकार, एका एक अख्वा रिहा। अलक्ख अगोचर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आ रिहा। जोती जगे अगम्म अपार, नूरो नूर दरसा ल्या। सोहे सचखण्ड सच्चा दरबार, दर दुआरा आप खुल्हा ल्या। शब्द सिँघासण अपर अपार, पावा चूल ना कोई रखा ल्या। पुरख अबिनाशी बैठ सच्ची सरकार, सिफ्ती सलाह आपणा हुक्म जणा ल्या। दाता दानी बेपरवाह, भेव अभेद भेव खुल्हा ल्या। गुर गोबिन्द देवे जगत सलाह, पारब्रह्म आप समझा ल्या। गुर संगत बणे आप मलाह, पुरख अकाल इक्क मना ल्या। जगत नाता लए तुड़ा, आप आपणा खेल वखा ल्या। लहिणा देणा मात चुका, धरत धवल सुहा ल्या। पंचम आप दए तजा, पंचम मोह चुका ल्या। आपणा वेखे आपे थाँ, जुग जुग वेस वटा ल्या। सतिजुग त्रेता पकड़े बांह, द्वापर गुण हरि हरि गा ल्या। कलिजुग करे सच न्याँ, गुर नानक लेख लिखा ल्या। गुर गोबिन्द बेपरवाह, आप आपणा आसण ला ल्या। सचखण्ड सुहाए साचा थाँ, हरिसंगत मेल मिला ल्या। सम्मत सम्मती जाणे जीव जहानां, जीवां जन्तां भेव ना पा ल्या। गुरमुखां बद्धा सच्चा गाना, ना कोई तोड़ तुड़ा रिहा। धर्म झुलाए इक्क निशाना, ब्रह्मण्डां वेख वखा रिहा। इक्क भगौती कर प्रधाना, साची सिख्या इक्क समझा रिहा। एका इष्ट गुरदेव रखाणा, ना कोई वेख वखा रिहा। हरि का शब्द सद बलवाना, आदि जुगादी वेस वटा ल्या। देवणहार धुर फ़रमाणा, नाम जैकारा एका ला ल्या। वहिगुरू फतहि दो जहानां, साचा डंक वजा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा एका एक, अन्तिम सुणा ल्या। शब्द सुनेहड़ा हरि हरि आप, आपणा आप उपाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सतिगुर पूरे तेरा वड वड प्रताप, तेरा तेरा वेख वखाईआ। तेरा नाम तेरा जाप, तेरा संग निभाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया रही कांप, खड़ग खण्डा इक्क दिसाईआ। आपणी थापण आपे थाप, पुरख अकाल इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, सृष्ट सबाई दिस ना आईआ। शब्द सुनेहड़ा सच दुलार, हरि हरि दवाया। अजूनी रहित मूर्त अकाल, निरभउ रूप समाया। दीनां बंधप दीन दयाल दया निध आप अख्वाया। आपे वेखे गोबिन्द लाल, सुत दुलारा आप उपाया। आपे काल आपे महांकाल, जगत नगारा इक्क वजाया। आपे खेले खेल कमाल, खेलणहार भेव ना राया। आपे वेखे धर्म सच्ची धर्मसाल, दर द्वार इक्क सुहाया। जोती जोत

८२४
०७

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, एका रंग रंगाया। शब्द सनेहुड़ा धुर दरगाह, हरि हरि घलांयदा। सतिगुर पूरा तक्के राह, एका एक नज़री आंयदा। दूसर ना कोई दिसे थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहांयदा। सतिगुर नानक पकड़ी बांह, आप आपणा मेल मिलांयदा । जोती जोत जोत वसे इक्क ग्रां, एका घर सुहांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, बाल अञ्याणा ना कोई गोद उठांयदा। सदा सुहेला देवणहारा ठंडी छाँ, एकँकारा विच समांयदा। अनभव प्रकाश आप करा, आप आपणा चोज करांयदा। शब्द संदेशा इक्क सुणा, साचा वेस साचे माही, आप आपणा फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वेखे साचा घर, घर ठांडा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड सच द्वार, सच दरबार, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। अन्तिम वेले हो उज्यार, गुरसिक्खां एह बुझाईआ। गुर गद्दी बख्शे कर प्यार, गुरु ग्रन्थ मनाईआ। पन्थ ख़ालसा रहे त्यार, धुर दरबार वेख वखाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कराईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े ना करना कोई प्यार, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वेखे सहिज सुभाईआ। गोबिन्द गुर शब्द जैकार, एका कर प्यार दे मति समझाया। एका शब्द गुर पावे सार, पारब्रह्म भेव ना राया। एकँकारा कर पसार, लोकमात वेख वखाया। निरगुण सरगुण बन्ने धार, आप अपणी जोत जगाया। अन्तिम वेले कर उज्यार, आप सज्जण मीत मुरार आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर पूरा दए वड्आया। गुर पूरा हरि रंग रतड़ा, देवे नाम वधाईआ। गुरमुखां देवे साची मतड़ा, साचा शब्द जणाईआ। आत्म बीजे बीज साचे वतड़ा, अन्तिम फल खवाईआ। काया चोला एका रतड़ा, नाम रंगण इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वेखे थाउँ थाँईंआ। गुर गोबिन्द साचा गुर, नानक रूप समाया। लेखा लिख्या आया धुर, ना कोई मेट मिटाया। जोती जोत जाए जुड़, जोती जोत विच समाया। अन्तिम वेले जाए बौहड़, कलिजुग कूके दए दुहाया। किसे हथ्थ ना आए ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले फोल फुलाया। सचखण्ड दुआरा एका पौड़, महल्ल अटल इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। गुर गोबिन्द अन्तिम कल, आपणी खेल खलाईआ। आपणा करया आपे वल छल, आपणी अग्नी आप जलाईआ। आपे वस्सया निहचल धाम अटल, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। सतिगुर पूरा वड बलकार, एका इक्क अख्वांयदा। मरे ना जन्मे विच संसार, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। अग्नी तत्त ना करे प्यार, हवनी काठ ना कोई सड़ांयदा। साचे अस्व हो अस्वार, साचा घोड़ा नाम दौड़ांयदा। लोआं पुरीआं वसे बाहर, त्रिलोक चरनां

हेठ दबांयदा। चौदां लोकां पार किनार, ब्रह्मा विष्न देवत सुर राह तकांयदा। अन्तिम मंगे लेख न्यार, भेव अभेद भेव खुल्हांयदा। प्रगट हो विच संसार, धाम न्यार इक्क सुहांयदा। सम्बल नगरी कर उज्यार, साढे तिन्न बणत बणांयदा। शब्द गुर डंक अपार, राउ रंकां आप सुणांयदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण जोत निहकलंक नरायण नर, लोकमात लए वर, आप आपणे संग रखांयदा। गुरमुख गुरसिख सोहिण साचे बंक द्वार सचखण्ड, सतिगुर पूरे पाई वंड, मनमुख गुरमुख जो आए दर दए वर, एका रंग रंगांयदा।

* प्रताप सिँघ वलों सतिगुरां दे गल हार पाउँण ते *

नाम हार तन शृंगार, गुरमुख तन शृंगारया। आत्म अन्तर इक्क प्यार, आत्म ब्रह्म विचारया। पूरन गुर लए अवतार, गुर गोबिन्द पावे सारया। दरस दिखाए अगम्म अपार, नेत्र तीजा लोइण उग्घाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम अन्त साचा सन्त, लाए पार किनारया। साचा हार हरिजन मेला, हरि हरि आप कराईआ। एका धाम सुहाए गुरू गुर चेला, गुर शब्द वेख वखाईआ। दो जहानां सज्जण सुहेला, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे वस्सया धाम नवेला, गुरमुखां मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलिजुग तेरी अन्तिम वार खेला, खेले खेल सृष्ट सुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हार वेखे धुरदरगाहीआ। धुर दरगाह हरि निरँकार, शब्दी हार पहनाया। निरगुण जोती कर उज्यार, नेत्र लोचण नैणां दरस दिखाया। आदिन अन्ता खेल अपार, साधां सन्तां मीत मुरार, जुग जुग वेस वटाया। जीवां जन्तां दए उधार, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। भवजल सागर पार किनार, जिस जन दर्शन पाया। आवण जावण उतरे पार, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन देवे साचा वर, फूलण बरखा एका लाया। आत्म सेजा हरिजन फूल, हरिजन आप चढ़ाईआ। सन्त पंघूड़े रिहा झूल, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। ना कोई पावा ना कोई चूल, उप्पर बैठा गोबिन्द साचा माहीआ। सृष्ट सुबाई गई भूल, नेत्र नैणां दिस ना आईआ। अन्तिम कलिजुग आप चुकाए लहिणा देणा मूल, जो जन रसना रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर घर सुहञ्जणा, जगे जोत आदि निरँजणा, गुरमुख जोत निरँजण करे रुशनाईआ। जोत निरँजण कर उजाला, गुरमुख वेख वखाया। सतिगुर पूरा दीन दयाला, दीनां बंधप हो जाया। एथे ओथे दो जहानी तोड़णहारा जगत जंलाला, देवे नाम आत्म तन मन्दिर अन्दर इक्क टिकाया। आपे शाह आपे कंगाला गुरमुख सच सुल्तान, मेहरबान

आप आपणा आप उपाया। साचे फूल कर परवान, धुरदरगाही लोकमात वेखण आया। गुरमुख साचे विटहों कुरबान, जिस जन सतिगुर साचे दर्शन पाया। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, पारब्रह्म सच्ची शरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हार, फूलणहार तन श्रृंगार अपर अपार, चोला रंगण नाम मजीठी इक्क चढ़ाया। काया चोला पंज तत्त, हरि हरि बणत बणाईआ। आत्म अन्तर सांतक सति देवे साची धीर, सन्त सतिगुर इक्क वरताईआ। वेख वखाए शस्त्र बस्त्र साचे तीर, तीर निराला दीन दयाला रसना एका लाईआ। गुरसिख साची चोटी चढ़े इक्क अखीर, काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, मिले मेल बेपरवाहीआ। एका रंग रंगाए शाह फ़कीर, वेख वखाए औलीए गौंस फ़कीर, कुतब कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिक्खां नानक गुर नाम शब्द पाई सच ज़ंजीर, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे फुल्ल पावे मुल, धुरदरगाह बेपरवाह साचे घर वेख वखाईआ। साचा फुल्ल साची भेटा, हरि हरि रूप समाया। सतिगुर पूरा खेवट खेटा, गुरमुख साचे पार कराया। मात पित आपे होए बेटी बेटा, लाल दुलारा गोद उठाया। आपणे शब्द आप लपेटा, नाम दोशाला उप्पर पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फूलणहार कर प्यार, सिरजणहार विच समाया।

* २ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा लंगर साहिब नंदेड़ सन्त हरनाम सिँघ दे सरोपाओ देण ते *

साची भेट दर परवान, हरि सन्तन मेल मिलाईआ। वेख वखाए श्री भगवान, अट्ठे पहर एका रंग रंगाईआ। गुर गोबिन्द करे ध्यान, गुरु ग्रन्थ दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वेखे साचा घर, घर साचा जगत मलाईआ। साचा घर सच वड्याई, हरि साचा लेखे लाईआ। हरि सन्तन मेला सहिज सुभाई, दर मंगल एका गाईआ। संगत ख़ुशी इक्क मनाई, नेत्र नैण दर्शन पाईआ। दो जहान मिले वड्याई, देवणहारा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन वेखे साचा दर, दर साचा इक्क सुहाईआ। साची भेटा हरि दरबार, हरि हरि आप चढ़ाईआ। गुरु ग्रन्थ अग्गे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भरे रहिण सदा भण्डार, तोट रहे ना राईआ। सच खण्ड खण्ड सच्च बणे इक्क द्वार, हरि साचा वेख वखाईआ। सन्त निधान मेहरबान, हरिसंगत गुरमुख गुरसिख तेरा परवार, लोकमात फल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता पावणहारा सार, सिर हथ्थ समरथ आप टिकाईआ। आप आपणा आपणे उत्तों दित्ता वार, सिँघ हरनाम हरनाम सिँघ साची रीत बताईआ। जगत तपया तीनों तापा

एका जापा, साचा जाप कराईआ। आप पछाणयां आपणा आप, हउमे रोग रिहा ना राईआ। सृष्ट सबाई रही कांप, पूरे सन्त वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन करे वड प्रताप, घर साचे नौ निध शब्द वज्जे वधाईआ।

* ३ मग्घर २०१५ बिक्रमी सन्त नंद सिँघ दे नाल बचन बख़शिश गुरदुआरा मनवाड़ *

सोहँ शब्द सचखण्ड जैकार। गुरसिक्ख साजण रसन उचार। पारब्रह्म प्रभ पाए सार। कलिजुग अन्तिम जाए तार। लक्ख चुरासी गेड़ निवार । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए गोबिन्द रूप शाहो भूप, अलक्ख अगोचर अगम्म अपार।

* ३ मग्घर २०१५ बिक्रमी भगत सिँघ दे घर इटारसी शहर मध्या प्रदेश *

आदि पुरख एकँकार, अकल कला कल धारया। आदि निरँजण खेल अपार, आदि पुरख रूप वटा ल्या। निरगुण जोती कर उज्यार, नूरो नूर डगमगा रिहा। आदि शक्त वेस करतार, आप आपणा खेल खिला रिहा। अकाल मूर्त हो त्यार, अनभव प्रकाश समा रिहा। इक्क इकल्ला पावे सार, आदि जुगादी वेस वटा ल्या। सच महल्ला अपर अपार, थिर घर आसण ला ल्या। सच सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, पुरख अबिनाशी खेल खिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल वरता ल्या। खेलणहार हरि भगवाना, आदि जुगादि अख्वाया। खेले खेल दो जहानां, भेद अभेद छुपाया। इक्क वखाए धर्म निशाना, दरगहि साची आप झुलाया। जोती दीपक इक्क महाना, आप आपणा कर रुशनाया। आप आपणा गाए गाणा, आप आपणा शब्द अल्लाया। आप सुणाए अनादी तराना, धुनी नाद आप उपजाया। आपे वेखे मार ध्याना, वेखणहार आप हो जाया। आप सुहाए साचा थाना, थान सुहावा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उपाया। जोती नूर हरि करतार, निरगुण जोत जगाईआ। थिर घर बैठ आपणे अन्दर, अलक्ख निरँजण वेस वटाईआ। अगम्म अगोचर भेव न्यार, वेद कतेब भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। रंग रंगाए हरि भगवन्ता, आपणा आप रंगाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढाया। आप बणाए आपणी बणता, मात पित

८२८ ०७

ना कोई रखाया। आपणी महिमा जाणे अगणता, लेखा लिख्त विच ना आया । आप उपाए जीव जन्तां, जीवां जन्तां विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। हरि हरि वेस हरि अवल्ला, आपणा आप कराईआ। खेले खेल इक्क इकल्ला, आपणी कल वरताईआ। आपे वस्सया जला थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे डेरा लाईआ। पारब्रह्म जोती शब्दी आपे रला, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। आप आपणा दर आपे मल्ला, आप आपणा वेख वखाईआ। आप फड़ाए आपणा पल्ला, आपे संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। रचन रचाए हरि नरायण, आपणा रूप समाया। वेद कतेब शास्त्र सिमरत सारे कहिण, भेव किसे ना पाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर नाम नामा हरि हरि लैण, आप आपणा सीस झुकाया। पुरीआं लोआं धाम अवल्ले साचे बहिण, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेस वटाया। निरगुण जोती हरि उजाला, आपणी किरपा धारया। दीनां बंधप दीन दयाला, जुग जुग लए अवतारया। वेख वखाए दो जहानां, एका एक हरि निरंकारया। आप तोड़नहार जंजाला, जागरत जोत इक्क जगा रिहा। लक्ख चुरासी काया वेख धर्मसाला, त्रैगुण वेस वटा ल्या। पंज तत्त होए रखवाला, त्रै संग मिला ल्या। मन मति बुध करे प्रितपाला, हरि एका एक नाउँ धरा ल्या। अन्तिम खेले खेल निराला, घर घर विच आप टिका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार चला रिहा। जोती धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। निरगुण निरगुण खेल अपार, पारब्रह्म रूप वटाईआ। सति पुरख निरँजण किरपा धार, साचा मीतड़ा आप हो जाईआ। सोहँ शब्द तिक्खी धार, एका रूप अख्वाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, सच तख्त सुल्तान बैठा बेपरवाहीआ । सृष्ट सबाई निगहबान, एका एक अख्वाईआ। नेत्र नैणां कर ध्यान, दृष्ट इष्ट वखाईआ। आपे विष्नूं हो भगवान, चतुर्भुज नाउँ धराईआ। ब्रह्मा मीता कर परवान, कँवल कँवला आप खुल्हाईआ। चारे मुख सारे गाण, एका मुख खुल्हाईआ। एका अक्खर कर पछाण, एका विद्या दए पढ़ाईआ। एका ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म शरनाईआ। पारब्रह्म वेखे मार ध्यान, ना कोई दूसर संग रखाईआ। मण्डल मण्डप सारे गाण, रवि ससि रहे शरनाईआ। लोआं पुरीआं कर पछाण, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। तिन्नां लोकां इक्क ज्ञान, आप आपणा दए सुणाईआ। सर्ब जीआं दाता श्री भगवान, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आदि अन्त खेल महान, भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समाईआ। आप आपणे अंक समा, आपणी जोत जगांयदा। आप आपणा रंग रंगा, आपे वेख वखांयदा । आप आपणा संग निभा, सगला संग निभांयदा। आप आपणी धारा गंग वहा,

आप आपणी धार वहांयदा। आप आपणा दर सुहा, जोत निरँजण दीवा बाती इक्क जगांयदा। आप आपणा आसण ला, आपणी सेजा डेरा लांयदा। पुरख अबिनाशी खेल खिला, निरगुण जोत डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी एकँकारा नाउँ धराईआ। करता पुरख हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। जागरत जोत जगे अपार, एका नूर करे रुशनाईआ। वंडे वंड हरि करतार, आप आपणा अंग कटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड जेरज अंड पावे सार, उत्भुज सेत्ज करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रीता एका नीता एका रूप दरसाईआ। एका नेत्र इक्क ज्ञान, एका शब्द जणाईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका रूप दरसाईआ। एका ब्रह्म कर पछाण, एका ब्रह्म जणाईआ। एका जोती जगे महान, एका नूर करे रुशनाईआ। एका शब्द सुणाए कान, एका ताल सुहाईआ। एका दर मेल मिलाए श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्ता हरि भगवन्ता रूप वटाईआ। जुग जुग पुरख अबिनाशा, आप अपणी कल धारया। वेखणहारा जगत तमाशा, निरगुण सरगुण वेस वटा ल्या। पुरीआं लोआं पावे रासा, मण्डल मण्डप आप सुहा रिहा। वेख वखाए पृथमी आकाशा, गगन पतालां फेरा पा रिहा। हर घट आपे रक्खे वासा, आप आपणा मुख छुपा रिहा। आदि जुगादि ना कदे विनासा, आप आपणे रंग समा रिहा। भाग लगाए काया कासा, सन्त सुहेले आप उठा रिहा। भगतन मीता दरस प्यासा, नाम भगती इक्क दृढ़ा रिहा। रसन चलाए स्वास स्वासा, दन्द बतीसा वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाम धरा ल्या। जग दूल्हा हरि गोबिन्द, सगली चिन्द मिटाईआ। वार अठारां गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाईआ। मेटणहार सगली चिन्द, रूप अनूप दरसाईआ। हरि सन्त बणाए आपणी बिन्द, आप आपणे अंक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे दए वधाईआ। सतिजुग तेरा रूप अवल्ला, हरि हरि जोत जगांयदा। आपे बैठा इक्क इकल्ला, थिर घर डेरा लांयदा। एका रंग इक्क महल्ला, एका शब्द अलांयदा। वेख वखाए जलां थलां, हर घट खेल खलांयदा। एका दीपक जोती बला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। सो पुरख निरँजण इक्क इकल्ला, आपणा खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा साचे घर, एका एक सुणांयदा। शब्द सुनेहड़ा हरि निरँकार, एका रूप उपांयदा। लेखा लिख ना सके विच कोई संसार, भेद अभेद छुपांयदा। रागां नादां वस्सया बाहर, रसना जिह्वा ना कोई गांयदा। बोध अगाधा शब्द अपार, जुग जुग आप सुणांयदा। आप सुणाए आपणा नाद, आप आपणी दया कमांयदा। सतिजुग तेरा सति प्यार, सांतक सति वरतांयदा। त्रैगुण तेरा सति प्यार, दूसर ना कोई वेख

८३० ०७

वखांयदा। एका एक रिहा विचार, एका ब्रह्म जणांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, आपणी करनी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आपे पुरख अबिनाशी करता, आपणी जोत जगाईआ। आप आपणा खेल आपे करदा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ना जन्मे ना कदे मरदा, आवण जावण विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, आप आपणा फल खवाईआ। विष्नूं मीता हरि भगवान, हरि हरि रूप समाया। ब्रह्मा शिव वेखे मार ध्यान, एका रंग समाया। शिव शंकर वेखे हरि मेहरवान, बाशक तशका गल लटकाया। इक्क त्रशूल हथ्थ फड़ाणा, एका वेख वखाया। पार कराए जीआं जन्तां, जिस जन दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार चलाया। आपणी धार आप चला, आपे दया कमांयदा। आपे देवणहारा वर, आपे वेख वखांयदा। आपे वसणहारा घर, आपे फेरा पांयदा। आप चुकावे आपणा डर, निर्भय आप हो जांयदा। आप नुहाए आपणे सर, आप आपणा ताल सुहांयदा। आपणा भाणा आपे ज़र, आप आपणा हुक्म चलांयदा। जुग जुग वेसी वेस कर, निरगुण सरगुण खेल खलांयदा। साध सन्त लए वर, भगवन्त भगत मेल मिलांयदा। आपणी तरनी आपे तर, तारनहार आप अख्वांयदा। आपणी करनी आपे कर, करता करनी आप कमांयदा। आपणी वरनी आपे वर, वरन गोत ना कोई रखांयदा। साचे सन्तां अन्दर मन्दिर जाए चढ़, नौ दुआरे पार करांयदा। दस्म दुआरी अग्गे खड़, आप आपणा दरस दिखांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। तोड़णहारा किला हँकारी गढ़, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। लोक विद्या ना रिहा पढ़, ना कोई नाम ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा वेख वखांयदा। सतिजुग साची रुत्त बसन्ता, हरि हरि वेस वटाया। आपणी सेजा आपे सुत्ता, नारी कन्ता कन्ता नारी रूप समाया। गुरमुखां काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। सो पुरख निरँजण बणाए बणत, आपणा नाम आप दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लेख चुकाया। आपणा लेख आप चुकाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा वेख वखाए, शब्द सुत करे कुड़माईआ। यति सति धीरज आप रखाए, आप आपणी बूझ बुझाईआ। चरन कँवल नाता आप बंधाए, तन्दन तन्द इक्क रखाईआ। आपे रथ रथवाही रथ चलाए, आप आपणा रथ चलाईआ। महिमा अकथनी अकथ जणाए, लेखा लिख ना सके कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। खेले खेल खेलणहारा, एका खेल खलाईआ। एका दूजा भेव खुलावणहारा, तीजे नैण दरस दिखाईआ। चौथे पद सहिज सुख धारा, साचा दर सुहाईआ। पंचम मेला मेलणहारा,

जिस जन दया कमाईआ। छेवें छप्पर ना कोई सहारा, ना कोई मन्दिर सुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप करतारा, करनी करता नाउँ धराईआ। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, दिस किसे ना आईआ। नौ द्वार जगत द्वार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। दसवें मेला मीत मुरार, घर बैठा बेपरवाहीआ। रामा राम लै अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त हो उज्यार, लोकमात वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सार, आप आपणे कंध उठाईआ। आपे बणया मीत मुरार, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। साची सीता कर प्यार, आप आपणा संग निभाईआ। तोड़नहार गढ़ हँकार, आप आपणी बणत बणाईआ। शस्त्र बस्त्र तन शृंगार, एका बाण उठाईआ। रसना चिल्ला जुग जुग मारनहार मार, आप अपणी दया कमाईआ। करे खेल अगम्म अपार, भेव कोई ना पाईआ। आपे होए विशिष्ट गिरधार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आदि जुगादि खेल न्यार, करनी करता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। राम रामा हरि अवतार, राम रूप अख्वांयदा। खेले खेल खेलणहार, साची खेल आप खलांयदा। आप आपणा कर प्यार, साचा मीता आप अख्वांयदा। बैठा रहे इक्क अतीता, वेखणहार दिस ना आंयदा। ना कोई मन्दिर ना मसीता, गुरद्वार ना कोई रखांयदा। राम नाम इक्क अनडीठा, नाम राम इक्क जपांयदा। पंज तत्त ना तपे अंगीठा, त्रैगुण ना अग्नी लांयदा। हरि का भाणा लागा मीठा, हरि भाणा आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खलांयदा। खेलणहार सर्ब कुलवन्ता, हरि हरि जोत जगाईआ। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, आप आपणी दया कमाईआ। बणत बणाए जुगा जुगन्तर, आप आपणा संग निभाईआ। एक नाम सच्चा मनमन्त्र, एका बूझ बुझाईआ। पार कराए गगन गगनंतर, गगन पतालां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। बणत बणाई हरि भगवान, अचरज खेल खलांयदा। जूठा झूठा वेख निशान, आप आपणा रंग रंगांयदा। हँकारी वेख जगत मकान, लंका गढ़ तुड़ांयदा। राम रामा वेख मैदान, आप आपणा तेज वखांयदा। लहिणा देणा चुक्के कान, ब्रह्मा शिव जो लेख लखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दुआरपाल वेख वखांयदा। पूत सपूता आप उपावणा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। रावण रामा लेखे लावणा, एका ब्रह्म रखाईआ। सृष्ट सबाई एका मार्ग लावणा, एका नाम जपाईआ। एका भेव आप खुलावाणा, भेव रहे ना राईआ। चार वरन संग निभावणा, साचे सन्त वज्जी वधाईआ। काया घर फेरा पावणा, आप आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। कल वरतंता हरि हरि मीता, भेव अभेद समाया। जुग जुग बणाए साची बणता, आप आपणा वेस वटाया। लक्ख चुरासी पतित

पुनीता, पतित पुनीत आप हो जाया। आपे हस्त आपे कीटा, ऊँचां नीचां आप समाया। आपे होए कौड़ा रीठा, रस मिट्ठा आप हो जाया। आपे सुत्ता दे कर पीठा, आप आपणा मुख छुपाया। आपे देवणहारा नाम अनडीठा, लिखण पढ़ण विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक आप अख्वाया। लेखा लिखणहार करतार, आप आपणी खेल खलांयदा। वेद व्यासा कर प्यार, नारद मुन संग रखांयदा। साचा मीता मीत मुरार, आप आपणा भेव चुकांयदा। पुराण अठारां कर त्यार, लक्ख चार सतारां हज़ार सलोक लिखांयदा। बारां अक्खर कर उज्यार, पारब्रह्म जणांयदा। भेव अभेदा खेल न्यार, दिस किसे ना आंयदा। निरगुण मेला पंज तत्त प्यार, काहना कृष्ना रूप वटांयदा। त्रिलोकी नंदन जीवां जन्तां दए अधार, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। आपे तोड़नहारा गढ़ हँकार, पंचम मेल मिलांयदा। तिलक लिलाटी लाए चन्दन, दुरमति मैल गंवांयदा। आत्म उपजाए परमानंदन, आप आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बंधन आपे आप करांयदा। आपणा बंधन हरि मेहरवाना, आपे आप करांयदा। आपे गाए आपणा बत्ती दन्द गाणा, रसना जिह्वा सर्ब समांयदा । माया ममता पीसण दए पीस, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता करनेहार आप अख्वांयदा । मुकंद मनोहर लख़मी नरायण हरि भगवन्त, कँवल नैण आप अख्वाईआ। ग़रीब निमाणे काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, बिदर सुदामा गले लगाईआ। आपे जाणे महिमा अगणत, आपणे हथ्थ हक्खे वड्याईआ। पंचम मीता पंच बणाए साचे सुत्त, आप आपणा भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। आपे मीत आप मुरार, आपणी कल वरताईआ। लेखा लिखे सर्ब संसार, आपे मुख छुपाईआ। आपे रथ रथवाही हो उज्यार, आपे रिहा चलाईआ। आपे देवे तन हँकार, आपे मूर्छा रूप समाईआ। आपे वेखे रोवे धाहां मार, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, धीरज यति आप रखाईआ। करे कराए करनेहार, जीव जन्त हथ्थ रक्खे वड्याईआ । एका शब्द दए उचार, गीता ज्ञान जणाईआ। अठारां ध्याए कर परवान, सृष्ट करे रुशनाईआ। पंज तत्त जीव निधान, प्रभ बेड़ा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी दया कमाईआ। भेख अवल्लड़ा हरि निरँकार, हरि हरि वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई बन्ने धार, आप आपणा मूल चुकांयदा। आप सुहाए जमन किनार, एका घाट वखांयदा। सागर त्रै अद्धविचकार, डूँघी गार समांयदा। पूत सपूता सुत दुलार, साचा कलिजुग वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार, आपणे रंग रंगांयदा। कलिजुग कूड़ा हो त्यार, आप आपणा सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, धरत मात संग कर प्यार, साची कुक्ख सुहांयदा। लोकमात हो उज्यार, आप आपणा नाउँ

धरांयदा। राज राजाना करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप उठांयदा। जीवां जन्तां देवे इक्क हुलार, माया ममता मोह धरांयदा। हउमे हँगता भर भण्डार, मनमति संग रलांयदा। एका अक्खर कर उज्यार, लक्ख चुरासी विच टिकांयदा। जूठ झूठ बोल जैकार, प्रभ आपणा नाम अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा रंग तेरे रंग चढ़ांयदा। कलिजुग करया आपणा वेस, आपणी कल वरताईआ। धरत मात करे आदेस, दर दरवेसा अलक्ख जगाईआ। आपणे रक्खे खुलड़े केस, प्रभ अग्गे दए दुहाईआ। विष्नू वेखे बाशक सेज, सागों पांग हंढाईआ। एका दाता नर नरेश, एका बूझ बुझाईआ। एका ब्रह्मा विष्न महेष, एका गणपति रिहा पुजाईआ। एका रामा दए अदेश, एका कृष्न मनाईआ। चारे वेद वेखे सदा अभेद, एका मन्त्र रिहा सुणाईआ। पुराण अठारां लिखे लेख, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। सिमरत शास्त्र रहे वेख, मनमति नाल रलाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा वेख, सुरपति राजा इन्द संग रलाईआ। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेद, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग कूड़ा रिहा वेख, नेत्र नैणां डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग कूड़ा मंगे मंग, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पारब्रह्म हरि निभाउणा साचा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। वेख वखाणा सुरसती गंग, जमन किनारे डेरा लाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर मन्दिर होणा भंग, दर दुआरा खोज खुजाईआ। जूठ झूठ चढ़े कंग, सति धर्म दए रुढ़ाईआ। साध सन्त ना लाए कोई अंग, बैठण मुख छुपाईआ। कोई ना चढ़े आत्म सेज पलँघ, नौ दर सृष्ट सबाईआ। घर घर दिसे भुक्ख नंग, तामस तृष्ना ना कोए मिटाईआ। पंच विकारा करे जंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। हउमे हँगता वज्जे मृदंग, चारों कुन्ट रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। बूझणहारा हरि निरँकारा, आपणी दया कमांयदा। मन मति कर उज्यारा, तेरा संग निभांयदा। मति मतवाली होए ख्वारा, ना कोई सति रखांयदा। बुध बबेकी कर बोध, बोध जणांयदा। आप बठाए आपणी गोद, आप आपणे रंग रंगांयदा। पारब्रह्म प्रभ जोधन जोध, सूरबीर आप हो जांयदा। मेट मिटाए काम क्रोध, काया गढ़ इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क ज्ञान समझांयदा। इक्क लिव इक्क ध्याना, एका नेत्र दए खुलाईआ। एका राग एका गाणा, एका रिहा सुणाईआ। एका नाम बन्ने गाना, एका सगन मनाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना कोई जाणा, एका रंग रंगाईआ। ऊँच नीच भेव चुकाणा, एका ब्रह्म जणाईआ। एका ब्रह्म ब्रह्म पछाणा, एका रिहा समाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव खुलाणा, एका धार चलाईआ। सचखण्ड वखाए सच निशाना, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। एका हरि हरि मेहरवाना, एका अलक्ख जगाईआ। अगम्म अगोचर

जोती जोत महाना, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी वंड वंडाईआ। कलिजुग तेरी वंड हरि ब्रह्मण्ड, आपे आप वंडांयदा। वेखणहारा जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लांयदा। आपे करनहारा खण्ड खण्ड, आपे जोड़ जुड़ांयदा। आपे देवणहारा दंड, दे मति आप समझांयदा। आपे मेटणहारा भेख पखण्ड, आपे मेट मिटांयदा। आपे होए दुहागण नार रंड, कन्त सुहागी आप हंढांयदा। आपे वसे गोदावरी गंग, सागर सिन्ध आप समांयदा। आप आपणी मंगे मंग, आप आपणी झोली अग्गे डांयदा। आप आपणे वसे संग, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा जगत मृदंग, हरि साचा आप वजांयदा। अथर्बण एका मंगे मंग, ऐड़ा अक्खर अक्ख खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण वेस अवल्ला, हरि हरिजन लए जगाईआ। ईसा मूसा सच महल्ला, आपे दए उपाईआ। संग मुहम्मद चार यारी रला, आप आपणी कल वरताईआ। आप आपणा नाउँ रखाया अल्ला, आपे नाअरा लाईआ। आपे बेऐब वस्सया सच्चा महल्ला, आपे गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बेऐब परवरदिगार ख़लक ख़ुदाई डेरा लाईआ। ख़लक ख़ुदाई बेऐब परवरदिगार, हर घट डेरा लांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, एका रूप दरसांयदा। हक्क हकीकत कर विचार, लाशरीक नाउँ धरांयदा। मुकामे हक्क पावे सार, आप आपणा दर सुहांयदा। नूर इलाही हो उज्यार, एका रंग रंगांयदा। ऐनलहक्क कर प्यार, साचा मार्ग इक्क जणांयदा। ख़ालक ख़लक वेखे विगसे करे विचार, ख़ालक रूप आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। चार यार इक्क मुहम्मद, एका राह चलाईआ। वेख वखाणे साचा कर्म, एका धर्म जणाईआ। आपे दोए होए सरन, दर आपे वरन उपाईआ। आपणी कार आपे करन, कर किरपा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहिणा आपे देणा आपे रिहा मुकाईआ। संग मुहम्मद मीत मुरार, इलाही नूर समाया। मंगे मंग मंग दुआर, साचे काअबे सीस झुकाया। दो दोआबा खेल न्यार, पुन्न सवाब ना कोई वखाया। एका चरन रखाए रकाबा, शाह अस्वार आप अखवाया। वेखणहारा मक्का काअबा, आप आपणा डेरा लाया। देवणहारा जगत अज़ाबा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे रुशनाया। जोती नूर हरि हरि अन्त, नूरो नूर समांयदा। चौदां तबकां वेखे इक्क महल्ला, चौदां हट्टां खोल्ह खुल्हांयदा। तीस बतीस आपे मल्ला, इक्क हदीस पढ़ांयदा। आपे करया वला छला, आपे मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर खुल्हांयदा। दर दरवाज़ा आपणा खोल्ह, आपणी करे जणाईआ। एका कलमा एका बोल, नबी रसूलां करे जणाईआ।

धरनी धरत धवल आपे मौल, कँवल कँवला आप खुल्हाईआ। आपे होए पंडत पांधा रौल, गुर पीर आप हो जाईआ। आप आपणा पर्दा खोल्ह, आप आपणा दए दरसाईआ। आपे लहिणा चुकाए धौल, अर्श कुर्श आप सुणाईआ। नूर कुर्श रिहा हौल, आपे रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे दीन इस्लाम बेपरवाहीआ। दीन इस्लामी साचा हज्ज, हरि हरि आप कराया, आपे पर्दे रिहा कज्ज, आपे फुल्ल खिलाया। आपे काया काअबा वेखे भज्ज भज्ज, दिवस रैण फेरा पाया। दूई द्वैती देवे तज, सच अमाम वेख वखाया। रक्खणहारा साची लज्ज, सच ख़ुदाई रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार चलाया। धार चलाई शाह हकीर, नूरो नूर समांयदा। आपे पीर दस्तगीर, मुसायक शेख़ मुला आप अख्वांयदा। आपे देवे आबहयात साचा नीर, आपे मसल्ला हेठ विछांयदा। पंज तत्त कढ्ढे पीड़, निउँ निउँ सजदा आप करांयदा। आपे चिट्टे उत्ते खिची लकीर, हक्क बहक्क आप वखांयदा। आपे होए दस्तगीर, आप आपणा संग रखांयदा। आपे तोड़े जगत जंज़ीर, बंधन बंध आप तुड़ांयदा। आपे बन्न्हणहारा बीड़, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नूर नूर इलाही, दो जहानां सच मलाही, चौदां लोकां चौदां हट्टां वणजारा आप हो जांयदा। दीन इस्लाम कर प्रधान, कलिजुग डंक वजाया। वेख वखाण राज राजान, शाह नवाब वेख वखाया। पुन्न सवाब इक्क ज्ञान, अहिबाब रवाब वजाया। एका कलमा एका गाण, एका कन्न सुणाया। एका वेखे मार ध्यान, जन्म मरन विच ना आया। मढ़ी गोर पवण मसाण, ख़ाकी ख़ाक रमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। नाउँ धर निरगुण रूप निरँकार, नानक जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो उज्यार, पंज तत्त बैठा डेरा लाईआ। सति सरूप सच्ची सरकार, शाहो भूप आप अख्वाईआ। मात पिता घर सुत दुलार, त्रैलोक वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर फूलण बरख़ा लायण, गण गधंरब करन शनवाईआ। ग़रीब निमाणयां जै जैकार, काया मन्दिर सभ कराईआ। तोड़नहारा गढ़ हँकार, लोकमात करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर हो उज्यार, पंज तत्त सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे दर आपे वेख वखाईआ। नानक हरि हरि हरि मीता, हरि हरि आप समाया। आपे होया ठांडा सीता, सांतक सति आप वरताया। रसना गाया इक्क अतीता, निरगुण नूर होए रुशनाया। आपणा मनुआ आपे जीता, माया मोह चुकाया। आपे होया पतित पुनीता, पतित पावण नाम धराया। आप चलाई आपणी रीता, आप आपणा रूप वटाया। दर द्वार वेख्या इक्क अनडीठा, पुरख अबिनाशी बैठा डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा थान सुहाया। निरगुण जोत कर उज्यार, शब्द सिँघासण

डेरा लाईआ। नानक वेखे सच द्वार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका नूर दरसाईआ। नानक मीता मिल्या प्यार, साचा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला एका घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत आदि निरँजणा, दूसर दर ना कोई रखाईआ। नानक दर्शन हरि हरि पा, जोती जोत समाया। निउँ निउँ सीस झुका, आप आपणा भेट चढ़ाया। पुरख अबिनाशी दया कमा, एका शब्द सुणाया। नाम सति झोली पा, शब्दी रंग रंगाया। लोकमात देणा सुणा, साचा मार्ग इक्क वखाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जीव जन्त लए तराया। गुरमुखां देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। अन्तिम वेले पकड़े बांह, तेरा मेरा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक नाम दित्ता वर, एका नाम समझाया। नानक वर घर साचा पा, लोकमात वेख वखांयदा। चारे वरनां दए सुणा, एका दूजा भेव चुकांयदा। नाम सति मन्त्र दृढ़ा, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। अन्दर चढ़ फेरा पा, आप आपणा दरस दिखांयदा। जिस जन लड़ दए फड़ा, कर किरपा पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, चार कुन्ट दहि दिशा फेरी पांयदा। नानक गुर चार कुन्ट जैकारा, एका एक लगाया। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, तेरा भेव किसे ना पाया। साध सन्त गुर पीर अवतार रहे गा, दिवस रैण ध्यान लगाया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा गया छा, चारों कुन्ट अन्धेरा पाया। राज राजान करे ना कोई न्याँ, धरत मात रही कुरलाईआ। ना कोई सहाई गऊ माँ, बराह रूप ना कोए धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द धुर फ़रमाण, हरि हरि आप जणाया। धुर फ़रमाणा हरि भगवाना, नानक गुर जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सद मेहरबाना, जुग जुग वेस वटाईआ। सत्तां दीपां बन्ने गाना, लक्ख चुरासी करे कुड़माईआ। जोती नूर प्रगट होए निहकलंक बली बलवाना, मात पित ना कोई रखाईआ। वेद व्यासा हो प्रधाना, एका लेखा गया लिखाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, दो जहाना उच्चे टिल्ले साचे पर्बत फेरा पाईआ। दीन इलाही बन्ने गाना, इक्क अमाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक मेला साचे घर, साची बूझ बुझाईआ। एका तत्त हरि समझा, आत्म ब्रह्म जणाया। नानक सतिगुर लेख लिखा, आप आपणा वेख वखाया। गुरमुख साचे लए जगा, अंगद अंगीकार कराया। एका जोती दए जगा, दूजा दर सुहाया। तीजा नेत्र दए खुल्हा, अन्ध अन्धेर मिटाया। चौथे पद जाए समा, भेव रहे ना राया। पंचम मीता दए सुणा, अनहद ताल वजाया। अमृत जाम दए पिला, तृष्ना भुक्ख मिटाया। बज़र कपाटी दए तुड़ा, दूई द्वैती पर्दा लाहया। आत्म सेजा दए बहा, सच सिंघासण इक्क विछाया। आपणी जोती आपे लए मिला, नानक गुर वड्डी वड्आया। नज़री आए बेपरवाह, अलक्ख निरँजण वेस वटाया।

सचखण्ड दुआरा साचा थाँ, निरगुण जोत करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जगाया। जगे जोत अंगद दर, आपणा शब्द जणाईआ। आपे देवणहारा वर, आपे करे कुड़माईआ। आप आपणा अग्गे धर, आपे सीस झुकाईआ। अमरदास ल्या फड़, बिरध अवस्था लेखे लाईआ। ग़रीब निमाणे अन्दर वड़, एका बूझ बुझाईआ। आपे पर्दा देवे पाड़, एका बैठा आसण लाईआ। आपणा अक्खर आपे पढ़, आपे करे पढ़ाईआ। अमरदास गुर फड़या लड़, घर साचे वज्जी वधाईआ। रामदास अग्गे खड़, एका रूप वटाईआ। सर सरोवर साचा भर, साचा ताल सुहाईआ। चार वरनां विखाए एका घर, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। गुर अर्जन तोड़णहारा गढ़, शब्द खण्डा हत्थ उठाईआ। करे प्रकाश नाड़ी नड़, शब्दी शब्द वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगाईआ। अर्जन गुर हरि मेहरवान, एका एक उठाया। धुरदरगाही वखाए सच निशान, सचखण्ड आप झुलाया। बोध अगाध शब्द महान, आत्म अन्तर आप उपाया। नानक गुर वेखे मार ध्यान, अंगद अंग लगाया। अमरदास कर परवान, रामदास नज़री आया। अर्जन गुर कर पछान, आपणा सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमाण, साचा लेखा लेख लिखाया। साध सन्त कर परवान, भगत भगवन्त मेल मिलाया। एका धाम बहाए गोपी काहन, सीता राम लए तराया। गुरु ग्रन्थ जगत महान, बोध अबोधा आप लिखाया। साची सिख्या जीव जहान, आपणी दए सुणाया। हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई कुरान, अञ्जील पुराण इक्क पढ़ाया। आप खुल्हाई सच दुकान, चौदां हट्टां वेख वखाया। ब्रह्मा वेता आपे गाण, चारे मुख खुल्हाया। शिव शंकर उठे नौजवान, आप आपणा वेख वखाया। करोड़ तेतीसा संग प्रधान, दोए जोड़ बैठे सीस झुकाया। यक्ष गण गधरब सारे गाण, एका दर सुहाया। भगत भगवन्त वेख वखाए दो जहान, त्रैलोकां फेरी पाया। अवण गवण मेट मिटाण, त्रै भवण होए सहाया। आवण जावण चुक्के काण, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। आत्म ब्रह्म इक्क ज्ञान, पारब्रह्म समझाया। जूठा झूठा मोह तुड़ान, नाता बिधाता इक्क बंधाया। रागी नादी एका गाण, धुनी नाद इक्क वजाया। अमृत आत्म पीण खाण, निझर झिरना आप झिराया। नेड़ ना आयण पंज शैतान, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पाया। आत्म मध इक्क बिबाण, गुर पूरे जगत दवाया। पारब्रह्म प्रभ कर पछाण, जग जलन्दा पार कराया। घर साचे सदा मेहरवान, आप आपणा रंग चढ़ाया। वेदी सोढी यद सुल्तान, हरि साचा जोत जगाया। हरिगोबिन्द नौजवान, बस्त्र शस्त्र तन सजाया। हरिराए हरि मेहरवान, हरि का रूप समाया। बाल अवस्था बाल निधान, निरगुण करे रुशनाया। नावां गुर नौ दर कर पछाण, आप आपणा भेट चढ़ाया। दिल्ली द्वार कर प्रधान, दर्द दीना आप वंडाया। पूत सपूता सुत दुलार, गोबिन्द वेख वखाया। लोकमात

कर उज्यार, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। गोबिन्द गुर सुत दुलारा, हरि हरि आप जगाईआ। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा मेल मिलाईआ। सृष्ट सबाई करे उज्यारा, देवे वड वड्याईआ। एका बन्ने सीस दस्तारा, कल्गी तोड़ा आप वखाईआ। शाहो भूप सच्चा अस्वारा, शाह अस्वार नाउँ धराईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप लटकाईआ। अट्ठे पहर देवे पहरा, अकाल पुरख सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। एका नगर एका घर, एका जोत जगाईआ। आपे रक्खया खुल्हा वेहड़ा, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। करनहारा हक्क नबेड़ा, भुल्ल रहे ना राईआ। जुग जुग देवणहारा गेड़ा, आपे लट्ठ रिहा भवाईआ। ग़रीब निमाणयां बन्ने बेड़ा, सत्तां दीपां गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे नूर करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि उजाला, गोबिन्द रूप समाया। दीनां बंधप दीन दयाला, दइअनिध अख्वाया। कलिजुग अन्तिम होए कृपाला, आप आपणा वेस वटाया। संग रखाए काल महांकाला, आदि शक्त रंग रंगाया। आदि भवानी बाली बाला, सगला संग रखाया। तोड़नहारा जगत जंजाला, नौ दर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाया। सगला संग हरि रघनाथ, आपणा आप निभांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथ, तिन्नां लोकां फेरा पांयदा। आप चलाए आपणी गाथ, आप आपणा नाम जपांयदा। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। लहिणा चुकाए पूजा पाठ, आप आपणा संग रखांयदा। आपे आप सर सरोवर मारे ठाठ, आप आपणा ताल सुहांयदा। आप बणाए आपणा हाठ, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा इक्क वखांयदा। गोबिन्द तेरा मेल मिलावा, घर साचे वज्जी वधाईआ। सति पुरख बंधाए साचा दअवा, गऊ ग़रीबां होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए पुत्तरां मावां, गिरयाज़ारी रिहा कराईआ। बल धारे भुजां बाहवां, बस्त्र शस्त्र इक्क पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे माहीआ। गोबिन्द गुर सूरा बलकार, हरि हरि आप उपाया। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणा दर सुहाया। पंचम मीता पंचम कर प्यार, आपणे रंग रंगाया। पार वखाए कंडे धार, धीरज धीर धराया। आप आपणा उत्तों वार, आप आपणा सीस झुकाया। पंचम रंग रंगे करतार, रंगणहारा दिस ना आया। साची सिख्या गुर विचार, गुरमति एह समझाया। पंज कक्क लए रक्ख, हो प्रतक्ख आपणा रूप आप उपाया। सृष्ट सबाई नेत्र पेख उडणे कक्ख, चारों कुन्ट बैठे राह तकाया। सन्त भगत भगवन्त लए रक्ख, बेमुखां दए सजाया। जूठ झूठ नकेल पाए नक्क, चारों कुन्ट फिराया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। पंचम मीता पंचम श्रृंगार, तन हरि आप करांयदा। शस्त्र बस्त्र अपर अपार, आपे वेख वखांयदा। आपे बन्नृ सच्ची दस्तार, तन गात्रे आप लटकांयदा। चार वरनां कर उज्यार, एका धाम सुहांयदा। दोए जोड़ कर निमस्कार, पुरख अकाल मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम लहिणा जुग जुग देणा, नेत्र नैणां आप रंगांयदा। गुर गोबिन्द हरि रंग राता, एका रंग रंगाया। आपणा घर आप पछाता, आपे खेल खलाया। संग तजाया पुत्तरां माता, सरसा पार किनारया। गुरमुखां देवणहारा साची दाता, गढ़ी अनन्द तजा रिहा। मिटी रैण अन्धेरी राता, साचा चन्द चढ़ा रिहा। साची सेज इक्क सुहाता, सथ्थर सूलां हेठ विछा रिहा। आप सुणाए आपणी गाथा, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। मुखी तीर टेके माथा, चिल्ला कमान उठा रिहा। तेरा निभिआ साचा साथा, समरथ पुरख इक्क ध्या ल्या। लहिण देण नाथ अनाथा, सरन तुहारी ओट रखाया। तूही पिता तूही माता, हउँ बालक रूप समाया। बैठा रहे इक्क इकांता, तेरा भेव किसे ना पाया। आदि जुगादी मारे झाता, जुग जुग वेस वटाया। चरन कँवल बंधाए नाता, चार वरनां जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वेखे साचे घर, घर साचे डेरा आपे लाया। पंज तत्त हरि गोबिन्द, काया शब्द श्रृंगारया। मेट मिटाई सगली चिन्द, पिता पूत आप वारया। पारब्रह्म तेरी एका अंस, दुष्ट दमन वेख वखाया। तेरी धार तेरा सागर सिन्ध, तेरी जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, बेअन्त बेअन्त नानक रसना गाया। तन नगारे लग्गे चोट, रणजीत नगारा इक्क वजाया। गुरमुखां कढ्ढे काया खोट, दे मति आप समझाया। कलिजुग भरी ना अजे पोट, माया ममता मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द साचा संग निभाया। शब्द जणाई हरि निरँकारा, एका डंक वजांयदा। गुर गोबिन्द सुत दुलारा, एका धुन सुणांयदा। तेरा मेरा इक्क प्यारा, एका रंग रंगांयदा। हउँ पुरख तूं साची नारा, साची सेज हंढांयदा। चार वरनां करना इक्क प्यारा, साचा मार्ग लांयदा। पन्थ ख़ालसा कर त्यारा, एका रूप दरसांयदा। एका अल्ला एका नाअरा, ऐनलहक्क इक्क वखांयदा। एका राम कर प्यारा, सीता सुरती आप प्रनांयदा। एका कृष्ना सोहे दुआरा, एका मोर मुकट टिकांयदा। एका विष्नूं मारे नाअरा, चतुर्भुज इक्क जणांयदा। एका ब्रह्मा गाए वारो वारा, दर दरबारे वेख वखांयदा। एका शंकर मीत मुरारा, गुर गुर आप अख्वांयदा। एका अन्दर बख्शे धारा, एका रंग रंगांयदा। करोड़ तेतीसा करे प्यारा, तेरा राह तकांयदा। अठारां बरन पार कराणा, चौहां वरनां वेख वखांयदा। एका ब्रह्म सर्ब पसारा, एका नूर दरसांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, भेव कोई ना पांयदा। गोबिन्द गोबिन्द ढहि ढहि पए दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

८४० ०७

आप आपणी जोत धर, आपणी मित आपणी गत आपे आप जणांयदा। मितगत पुरख करतार, गोबिन्द बूझ बुझाईआ। आत्म बख्शे सच प्यार, नानक हथ्थ वड्याईआ। दीन इस्लाम ना उब्बल रत्त, नूर इलाही दर्शन पाईआ। राम रत्त जो गए रत्त, रत्ती रत्त रहे ना राईआ। कृष्ना दीपती रक्खया सति, जगत पर्दा ना कोई हटाईआ। वेद विदाता उपजे बीजे वत, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। पुराण अठारां बन्ने नति, नाता बिधाता वेख वखाईआ। आपे देवणहारा सति, सति सन्तोख इक्क जणाईआ। अञ्जील कुरान गाए गथ, बंस बंसा दए समझाईआ। पंचम मीता पंचम वेला वेखे वत, जो जन रहे सीस झुकाईआ। सजदा धाम एका बांग एका धाम इक्ढ, एका रिहा सुणाईआ। एका तीर्थ एका तट्ट, गंगा गोदावरी इक्क जणाईआ। एका पूजा एका पाठ, एका दर सुणाईआ। एका नुहाउणा एका नुहात, सर सरोवर इक्क रखाईआ। एका दीवा एका बात, एका रिहा जगाईआ। एका मीता कमलापात, एका कन्त अख्वाईआ। एका पुच्छणहारा वात, जुग जुग वेस वटाईआ। गुरमुखां गुरसिक्खां हरिजन देवे साची दात, शब्द भण्डार आप वरताईआ। हरि का नाम सच्ची करामात, पारब्रह्म दए मिलाईआ। बन्द किवाड़ी खोले ताक, जो जन रसना गाईआ। शब्द चढ़ाए साचे राक, दो जहानां पार कराईआ। आपे होया पाकी पाक, परवरदिगार सेज हंढाईआ। लेखे लाए ख़ाकी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक आप रमाईआ। आदि अन्त कोई ना दिसे आकी आक, मेट मिटावे ख़ुदी ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द आप आपणा रिहा बुझाईआ। गोबिन्द उठ सुत दुलार, हरि साचे शब्द जणाया। पारब्रह्म होया ख़बरदार, तेरा तेरी झोली पाया। चौदां तबक वेखे मुहम्मद यार, चार यारी संग रलाया। अञ्जील कुराना बन्नी धार, आपे मेल मिलाया। वेद पुराणां कर उज्यार, राग रागनी सेवा लाया। नारद मुन ख़बरदार, चारों कुन्ट रिहा दौड़ाया। सुरसती सुत कर उज्यार, नाम बीना इक्क वजाया। नौ नौं सुत रूप अपार, भुजां वेख वखाया। चार सुत ब्रह्म उत्पत, आप आपणे रंग रंगाया। बराह तेरी पावे सार, यज्ञे पुरश नाउँ धराया। हाव ग़रीव हो उज्यार, नरायण नर रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रंगणहारा हरि भगवाना, एका नूर अलाहीआ। जुग जुग वेखे मार ध्याना, दूर दुराडा बेपरवाहीआ। जगत जुग जीव होए नादाना, पंज शैताना वसे आपणा आपे रहे कुरलाईआ। सच ना मिल्या ना सच ज्ञाना, सच सुच्च ना कोई जणाईआ। काया पंचम हो प्रधाना, मन मनुआ दहि दिशा फिरे वाहो दाहीआ। मति मतवाली होई नदाना, दोए नैण रही शरमाईआ। बुध बिबेक ना कोई रखाना, सच ना कोई जणाईआ। शब्द गुर मेहरवाना, एका इष्ट देव अख्वाईआ। गुर गोबिन्द मंगे मंग देवणहारा धुर फ़रमाणा, अकाल पुरख वड्डी वड्याईआ। अजूनी रहित रूप रंग ना कोई पछाणा, निरगुण

निरगुण खेल खलाईआ। साची मूर्त हरि धर, नाद तूरत इक्क वजाईआ। जीआं जन्तां देवे शब्द वर, शब्दी शब्द करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द देवे साचा वर, अन्त तेरा बेड़ा बन्ने लाईआ। हरि भगवन्त हरि मेहरवाना, हरि हरि मेल मिलन्नया। हरि हरि देवे साचा दाना, जुग जुग वेख वखन्नया। आपे सीता आपे रामा, आपे बेड़ा बन्नृया। आपे गोपी आपे काहना, आपे मण्डल रास वखन्नया। आपे ईसा मूसा हो प्रधाना, आपे संग मुहम्मद चार यारी बेड़ा बन्नृया। आपे नानक गुर कर प्रधाना, लोकमात देवे नाम धन्नया। गोबिन्द सुत इक्क पछाणा, दो जहानां चढ़या साचा चन्नया। सति सन्तोखी बन्ने गाना, दिस ना आए आत्म अन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, घर साचा इक्क सुहन्नया। घर सुहाए धुर दरबार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण जोती कर उज्यार, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। पावा चूल ना कोई त्यार, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। ना कोई दिसे चोबदार, ना कोई चवर झुलाईआ। पंज तत्त ना कोई आकार, रक्त बूंद ना कोई रखाईआ। ना कोई धुनी नाद वज्जे धुन्कार, सुर ताल ना कोई रखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई प्यार, करोड़ तेतीसा ना संग रखाईआ। खाणी बाणी ना कोई उज्यार, अञ्जील कुरान ना कोई पढ़ाईआ। वेद विदांता ना कोई पसार, ना कोई रचन रचाईआ। जल थल जंगल जूह ना कोई पहाड़, डूँघी कन्दर ना कोई नज़री आईआ। लक्ख चुरासी ना रंग अपार, त्रैगुण ना कोए कुड़माईआ। गुर पीर ना कोई अवतार, साध सन्त नज़र ना आईआ। इक्क अकल्ला एकँकार, अकाल मूर्त अख्वाईआ। जोत सरूपी कर आकार, निराकार बैठा डेरा लाईआ। हरि हरि खेल अपार, जुग जुग वेस वटाईआ। गुर गोबिन्द दए सहार, एका शब्द सुणाईआ। शब्द सुत दो जहान, जगत दलाल आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आपे पूर कराईआ। साचा वर हरि मेहरवान, एका बूझ बुझांयदा। गोबिन्द लेखा दए जणा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। वेद व्यासा गया लिखा, चार लक्ख बत्ती हज़ार कलिजुग औध चुकांयदा। आप आपणी वंड वंडा, आप आपणा तेज धरांयदा। खण्ड खण्ड आप करा, साचा खण्डा हथ्थ उठांयदा। भेख पखण्डा दए मिटा, सोया कोई रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, अन्तिम वेला प्रगट होए साचा सज्जण सुहेला, निहकलंक आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोत धराए अन्तिम वेला हरि, हरि जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, आप आपणा रूप वटांयदा। गुर गोबिन्द तेरा धाम अवल्ला लए मल्ल, दिस किसे ना आंयदा। आप वस्सया निहचल घर अटल, उच्च महल्ल सुहांयदा। जोती शब्दी रिहा रल, नूरो नूर वखांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह वखांयदा। कलिजुग अन्तिम वेस वटावणा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द तेरा संग निभावणा, सम्बल नगरी वेख वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ बणत बणावणा, घर घर विच दए लटकाईआ। जीव जन्त किसे दिस ना आवणा, लेखा लेखा ना कोई लाईआ। नीला नीली धारों पार करावणा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। शाह अस्वार डेरा लावणा, कल्गी तोड़ा नाम लटकाईआ। ब्रह्मण गौड़ा वेख वखावणा, पूत सपूता बेपरवाहीआ। उच्चा टिल्ला पार करावणा, बज़र कपाटी आप तुड़ाईआ। शब्द गुर नाल रलावणा, एका डंक वजाईआ। लोआं पुरीआं आप उठावणा, लोकमात वेख वखाईआ। धरत मात सगन मनावणा, नाल लछमी करे कुड़माईआ। विष्नूं वंसी खेल खिलावणा, रत्न बस्त्र लाल छुहाईआ। पीला वेस नज़री आवणा, रंग रंगीला माधव माहीआ। कंचन रंग वेख वखावणा, हरि काली धार मिटाईआ। नौ सत तेल चढ़ावणा, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। जोत निरँजण सेव लगावणा, अनहद सेव रखाईआ। कागी काग हँस बणावणा, रागी राग अलाईआ। अनादी नाद इक्क वजावणा, ब्रह्मा आप सुणाईआ। बोध अगाध शब्द चलावणा, वेद पुराण भेव ना राईआ। गोबिन्द सुत आप उठावणा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। साचा मार्ग सृष्ट लगावणा, ऊँच नीच रहे ना राईआ। राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका थान बहावणा, एका जाप जपाईआ। एका विद्या ज्ञान दृढ़ावणा, एका
८४३ ब्रह्म समाईआ। ऐका मन्दिर गुरुद्वार मस्जिद आप रखावणा, शिवदवाला मट्ठ इक्क कराईआ। लक्ख चुरासी काया चीथड़ा ८४३
०७ आप रंगावणा, रंगण वाला इक्क हो जाईआ। एका जोती नूर दरसावणा, घर घर फेरा पाईआ। जूठ झूठ रहिण ना पावणा, ०७
काम क्रोध ना होए हलकाईआ। सति सन्तोख धीरज यति आप बंधावना, हरि नामे वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी शब्द गावणा, अकाल पुरख इक्क मनाईआ। चरन सरोवर साचे तीर्थ सृष्ट सबाई नुहावना, दुरमति मैल गंवाईआ । एका कट्टणहारा अवण गवणा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। एका लेखा लाए उनन्जा पवणा, पवण स्वासी इक्क वखाईआ। आपे मारे मनुआ रावणा, राम नाम वड्डी वड्याईआ। एका दूजा भेव चुकावणा, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। एका मेटे कामनी कामना, एका तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। एका चण्डी चमकाए दीपक दामना, एका करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग वेखे झूठी छाहीआ। कलिजुग झूठा लशकर, हरि हरि वेख विखानया। प्रगट होए बेपरवाह, आप आपणा बेड़ा बन्नया। इक्क दिसाए साचा नाँ, चेतन्न रूप आप चेतन्नया। अस्थूल फड़े आपे बांह, कारन हरि हरि मन्नया। स्वच्छ करे सच न्याँ, वड दाता हरि हरि धन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा हरि, हरि जुग जुग खेल खिलन्नया। कलिजुग अन्तिम वेस वटावणा, गोबिन्द बूझ बुझाया। पुरख

अबिनाशी जामा पावणा, आप आपणा नाउँ रखाया। पंज तत्त कोई दिस ना आवणा, गोबिन्द संग निभाया। शब्द डंक इक्क वजावणा, मृदंग हथ्थ उठाया। आप आपणा नाउँ धरावणा, आप आपणा आपे गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा आपणी झोली आपे पाया। कलिजुग तेरा सति नगारा, हरि हरि आप वजांयदा। वेख वखाए सृष्ट सबाई चारों कुन्ट दहि दिश धारा, जीव अँध्यारा आप जगांयदा। पारब्रह्म प्रभ पाए सारा, रूप अनूप दरसांयदा। नाम डंक अगम्म अपारा, एका एक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। नाउँ धर हरि निरँकार, आप आपणी जोत जगाईआ। निहकलंक लए अवतार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, हरिभगत मेल मिलाईआ। दुष्टां करे मात सँघार, देवे आप सजाईआ। साचा दर सुहाए इक्क दरबार, एका रंग रंगाईआ। मेल मिलावा नारी नार, नर नरायण आप कराईआ। बिरध बाल जवाना लाए पार, जो जन रहे शरनाईआ। चार वरनां सच्चा सिक्दार, एका एक पुरख अख्वाईआ। मीत मुरार हो त्यार, आवे जावे वेस वटाईआ। गीत सुहागी गाए वारो वार, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। भुक्खा नंगता उतरे पार जो जन दर्शन पाईआ। एका दर सुहंता जीव जन्त साध सन्त कर प्यार, एका इष्ट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आपणी जोत करे रुशनाईआ।

साचे घर हरि हरि भोग, हरि हरि आप लगाया। गुर संगत मेला धुर संजोग, जुग विछड़े जग मेल मिलाया। देवे दरस दर अमोघ, नेत्र नैण खुल्हाया। हउमे कट्टणहारा रोग, अमृत आत्म जाम प्याया। गुर प्रसादी गुर प्रसादि मिले साची चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, वर दाता इक्क हो जाया। हरिसंगत हरि मेलया, पारब्रह्म करतार। दर सोहया गुरू गुर चेलया, गुर गोबिन्द मीत मुरार। राम रामा सज्जण सुहेलया, काहना कृष्ना आप मुरार। कट्टणहारा धर्म राए दी जेल्हिआ, भव सागर उतरे पार। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेलया, कल कल्कि लए अवतार। आपे वसे धाम निवेलया, दिस ना आए विच संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार हरि हरि रीत, हरिजन आप चलाईआ। दो जहानां साचा मीत, घर मन्दिर वेख वखाईआ। आदि जुगादी अचरज रीत, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। देहुरा मन्दिर काया सच मसीत, गुर पूरा बैठा आसण लाईआ। हरिजन मानस देही जाए जीत, चरन कँवल उप्पर धवल सॉवल सँवल जो जन ध्यान लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे साचे फुल्ल कँवल, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। हरि सज्जण हरि पाया, नेत्र नैण उग्घाड़। घर मन्दिर इक्क सुहाया, जंगल जूह उजाड़ पहाड़। मंगल साचा गाया, अनहद शब्द सच्ची धुन्कार। डूँघी भवरी पार कराया, कर किरपा पार उतार। जोत निरँजण कर रुशनाया, मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, दस्म दुआरी कुण्डा लाहया, गुरमुखां करे ख़बरदार। आत्म सेजा मेल मिलाया, सुहाया बंक सच्चा दरबार। नारी कन्ता रूप वटाया, मेल मिल्या पुरख भतार। हउमे सहिसा रोग मिटाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण लाए पार। हरि सज्जण हरि मीतड़ा, एका एकँकार। जन भगतां काया चोली रंगे चीथड़ा, दुरमति मैल उतार। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत भरे सच भण्डार। वस्सया धाम इक्क अनडीठड़ा, बिन सतिगुर पूरे कोए ना पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साजण लए उभार। हरि साजण मीत सज्जणा, निरगुण रूप अपार । गुरमुख मेला आदि निरँजणा, सोहे बंक सच्चा द्वार। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, माया मोह निवार। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहे ना विच संसार। सतिगुर पूरे पर्दा कज्जणा, आदि जुगादि लए अवतार। नाम चलाए सच जहाजना, चार वरनां लाए पार। आपे रचया आपणा काजना, करता पुरख खेल न्यार। शब्द अगम्मा मारे वाजना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क द्वार। हरि मन्दिर हरि पाया, गहर गम्भीर सरूप। एका दूजा भउ चुकाया, मेल मिलावा शाहो भूप। तीजा नैण इक्क खुल्हाया, दरस दिखाया चौथी कूट। चौथे पद होए सहाया, पंज तत्त विकारा गया छूट। छेवें छप्पर ना कोई जणाया, गुरमुखां गुरमुखां आपे गया तूठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, हरिजन मेला साचे दर, तन नगारे लाए चोट।

८४५
०७

* ४ मग्घर २०१५ बिक्रमी जसवंत सिँघ दे घर इटारसी शहर मध्या प्रदेश *

निरगुण जोत हरि निरँकार, एका रूप समाईआ। आदिन अन्ता खेल अपार, जुग जुग वेस वटाईआ। पुरख अकाला हो उज्यार, आदि शक्त समाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, आप आपणा आसण लाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यार, एका वेख वखाईआ। सो पुरख निरँजण ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। हँ ब्रह्म कर उज्यार, ओअँ रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर बेपरवाह, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग लोकमात बण मलाह, जन भगतां आप तरांयदा। शब्दी शब्द देवे सच सलाह, आत्म ब्रह्म जणांयदा। आप वखाए

साचा थाँ, पंज तत्त फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आपणी दया कमांयदा। पंज तत्त काया गागर, हरि हरि बणत बणाईआ। गुरमुख विरला बणे नाम सुदागर, जीव जन्त आपणी बूझ बुझाईआ। देवे रत्ती नाम रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, घर घर वेखे सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल खलाईआ। जुग जुग वेस अवल्ला, आपे आप करांयदा। काया मन्दिर उच्च अटला, दर घर साचे आसण लांयदा। बैठा आपे इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आंयदा। आत्म सेजा सच सिँघासण एका मल्ला, निरगण जोत जगांयदा। शब्द भण्डार बन्ने पल्ला, गुरमुख पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी धार चलांयदा। जोती शब्दी हरि हरि नाता, गुरमुख मेल मिलांयदा। भगत वछल हरि पुरख बिधाता, आप आपणा नाउँ जपांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, एका बूझ बुझांयदा। अमृत देवे बूंद स्वांता, निझर झिरना इक्क झिरांयदा। अन्तिम वेले पुच्छे वाता, सगला संग निभांयदा। आपे पिता आपे माता, हरिजन बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। नाम अक्खर जगत वक्खर, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। बज़र कपाटी पाड़े पब्बर, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। पंच विकारा करे सथ्थर, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। नेत्र नीर विरोले अथ्थर, धूआंधार मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, एका मन्त्र इक्क सुणांयदा। एका शब्द इक्क ध्यान, एका रूप दरसाईआ। एका रूप हरि निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, काया मन्दिर अन्दर आप जगाईआ। धुन अनाद सच्ची धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। दुरमति मैल दए उतार, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। मेल मिलावा साचे यार, डूँघी भवरी फेरा पाईआ। शब्द गुर हो त्यार, आप आपणा रूप वटाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, जो जन रहे शरनाईआ। आदिन अन्ता एकँकार, एका गुर अख्वाईआ। साधां सन्तां देवे दरस अपार, ओअँ रूप अख्वाईआ। राम रामा हो अवतार, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। ईसा मूसा ख़बरदार, संग मुहम्मद चार यार करे कुड़माईआ। नानक गोबिन्द विच संसार, एका कन्त मनाईआ। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जिस जन बख्शे चरन प्यार, धवल कँवल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण वेखे सहिज सभाईआ। लक्ख चुरासी बंधन तोड़, हरि हरि मेल मिलांयदा। हरिजन साजण साचे लोड़, आप आपणे मार्ग लांयदा। नाम चढ़ाए साचे घोड़, दो जहानां वेख वखांयदा। लोकमात वेखे दौड़ दौड़, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ा खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल कर, घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती नूर हरि उजाला, गुरमुख बूझ बुझाईआ। शब्द

८४६
०७

बणाए सच दलाला, हरिजन पार कराईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म ना दए सजाईआ। लाड़ी मौत ना दए दोशाला, नेत्र नीर रही वहाईआ। अन्तिम तोड़े जगत जंजाला, जिस जन सिर हथ्थ टिकाईआ। भाग लगाए काया माटी खाला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। फल लगाए साचे डाला, अमृत फल इक्क खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। मेलणहारा हरि गोबिन्द, एका एक अख्वांयदा। मेट मिटाए सगली चिन्द, आपणी बूझ बुझांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, हरिजन आप तरांयदा। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, साची धारा आप चलांयदा। मनमुख लगाए आपणी निन्द, हरि गोबिन्द साचा नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त साध सन्त एका ब्रह्म दृढ़ांयदा। एका ब्रह्म इक्क विचार, एका बूझ बुझाईआ। एका शब्द इक्क आधार, एका नाम दृढ़ाईआ। एका चरन कँवल प्यार, एका हरि रघुराईआ। एका वेखे विगसे करे विचार, एका एक अंग समाईआ। एका एक दूजा भेव दए निवार, आप आपणी दया कमाईआ। एका नेत्र नैण दए उग्घाड़, दोए लोचण बन्द कराईआ। एका चौथे पद देवे वाड़, एका आपणे अंग समाईआ। एका पंचम मेटे झूठी धाड़, एका शब्द करे शनवाईआ। इक्क वखाए सच अखाड़, घट मन्दिर इक्क सुहाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्दर मन्दिर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक अक्खर जगत वक्खर, गुरमुख झोली पाईआ। हरि का नाम जगत उपदेश, जुग जुग आप उपांयदा। आपे पूजा गणपति गणेश, ब्रह्मा विष्न आप हो जांयदा। आपे राम कृष्ना कर कर वेस, आप आपणा नाउँ धराया । आपे दाता गोबिन्द दस दस्मेश, जोती जोत आप जगांयदा। आदि पुरख हरि सदा आदेस, आदि निरँजण नाउँ धरांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडांयदा। निरगुण जोत जोत हमेश, जोती जोत जगांयदा। सन्त सुहेले रहे वेख, आप आपणी बूझ बुझांयदा। लहिणा देणा चुकाए मस्तक रेख, वस्त एका झोली पांयदा। शब्द सुनेहड़ा सच संदेश, आप आपणा आप अलांयदा। कलिजुग अन्तिम करया वेस, जोती जामा भेख वटांयदा। गुरमुख साजण विच प्रवेस, अलक्ख निरँजण अलख जगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा दर दरवेश, जन भगत दुआरे फेरी पांयदा। दो जहानां नर नरेश, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आत्म ब्रह्म इक्क जणांयदा। आत्म ब्रह्म साचा घर, हरि हरि बूझ बुझाईआ। मेल मिलावा हरी हरि, हरि हरि विच समाईआ। आपे पार करा नौ दर, नूरो नूर आप अख्वाईआ। आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे वेख वखाईआ। गुरमुखां मन्दिर आपे चढ़, आपे कुण्डा लाहीआ। दस्म दुआरी अन्दर वड़, गुरमुख खोज खुजाईआ। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, अद्धविचकार ना कोई

डुबाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गौर ना कोई दबाईआ। एका अक्खर जाए पढ़, सो पुरख वड्डी वड्याईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सिँघ सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर शब्द गुण, गुणवन्ता आप जणाईआ। शब्द गुण साचा नाम, हरि हरि आप जपाया। गुरमुखां पूरन करे काम, दिवस रैण होए सहाया। अमृत प्याए साचा जाम, ठांडा ठार वखाया। नेड़ ना आए कामनी काम, लोभ मोह ना होए हलकाया। लहिणा देणा चुक्के तृष्ना ताम, एका नाद सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा घर, ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाया। ब्रह्म ब्रह्माद आदि जुगादि, जुग जुग खेल खिलाया। वेखणहारा सन्त साध, सतिगुर नाम धराया। शब्द जणाई बोध अगाध, लेखे आपणे हथ्थ रखाया। जन भगतां मेट मिटाए वाद विवाद, हउमे हँगता रोग गंवाया। देवणहारा साची दाद, धुरदरगाही नाम लै के आया। मोहण माधव माध, आप आपणा वेस कराया। सुणे सुणाए सर्ब फरियाद, लक्ख चुरासी शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाया। धुरदरगाही इक्क वजाए अनहद नाद, अन्दर मन्दिर ताल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन ब्रह्म आप आपणा रूप दरसाया। पूरन ब्रह्म ब्रह्म जणा, पारब्रह्म जणाईआ। आपे वेखे बणत बणा, नेड़े दूर ना कोई रखाईआ। दो जहानां खेवट खेटा, रथ रथवाही आप हो जाईआ। भगत जनां हरि माँ प्यो बेटा, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन वखाए आपणा घर, एका दूजा भउ चुकाईआ। वेखे घर हरि निरँकारा, हरि हरि बूझ बुझाईआ। गुरमुखां मेला दीन दयाला, विछड़ कदे ना जाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाला, अठ्ठे पहर सहाईआ। काया अन्दर चलाए सच्चा हल, एका बीज बिजाईआ। अमृत भरे सरोवर ताल, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। फूलण पाए साची माला, नाम डोरी इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे एका वर, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। पूर्ब लहिणा जरम रेख, पूर्ब वेख वखांयदा। आपणे नेत्र आपे पेख, हरिजन सोए मात आप उठांयदा। हर घट आपे रिहा वेख, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, आत्म ब्रह्म जणांयदा। आत्म ब्रह्म साची सिक, हरि हरि आप जणांयदा। धुरदरगाही लेखा लिख, लोकमात वेख वखांयदा। अन्तर आत्म पाई खिच, झोली नाम भरांयदा। जगत विकारा लथ्थी विस, एका रंग चढ़ांयदा। जिस जन देवे नाम अनडिठ, आप आपणे संग निभांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पिठ्ठ, नेत्र नैण दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आपणा देवे वर, एका राह वखांयदा। एका राह हरि करतार, आपणा आप चलांयदा। चार वरनां सच प्यार, दूजा भेव ना कोई रखांयदा। राज

राजान शाह सुल्तान सोहण इक्क द्वार, एका वेख वखांयदा। एका मंगे बण भिखार, नाम झोली आप भरांयदा। जो जन ढहि पए द्वार, आवण जावण फंद कटांयदा। लक्ख चुरासी करे पार, मात गर्भ फेर ना आंयदा। दस दस मास ना कोई हुलार, उलटा मुख ना कोई रखांयदा। घर आए हरि जी जाए तार, आप आपणा वेस वटांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण जोत जगांयदा। निरगुण जोत कर प्यार, सरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा घर, साचा घर आप दरसांयदा। अलक्ख अलक्ख अलक्खणा, अगम्म अगम्म अपार। खेले खेल पुरख समरथना, लेखा लिखे ना कोए विचार। हरि का भेव अकथ अकथना, कथनी कथ ना सके ना पाए सार। आदि जुगादी आप चलाए आपणा रथना, रथ रथवाही बेऐब परवरदिगार। आपे होए आपणी हथ्थी सक्खणा, सृष्ट सबाई पाए सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। अलक्ख अलेख हरि हरि जोग, हरि हरि रूप समाया। दो जहानां संजोग विजोग, भोग आप कराया। आपे होए हउमे रोग, माया ममता आप समाया। आप चुगाए साची चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आपे होए रोग सोग, चिन्ता दुःख आप अख्वाया। आपे होए त्रैलोक, चौदां हट्टां आपे फेरा पाया। आप जपाए सच सलोक, शब्द शब्दी नाउँ धराया। आपे देवणहारा मोख, अजूनी रहित आप हो जाया। आपणी संख्या आपे लए घोख, आपणी विद्या आप पढ़ाया। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता गम ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अलख अभेव आप हो जाया। अलख अभेव आप करतार, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, जोती नूर दरसांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई प्यार, पंज तत्त ना कोए रखांयदा। रक्त बूंद ना कोए सहार, मन मति बुध ना कोई दरसांयदा। आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट आप अख्वांयदा। एका मन्दिर हो उज्यार, रूप अनूप दरसांयदा। दर दरवेश खेल अपार, जुगा जुगन्तर वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह चलांयदा। लेखा अलक्ख करतार, भेव ना पाया। पुरख अबिनाशी बन्ने धार, दिस ना आया। पूरन ब्रह्म आप विचार, पारब्रह्म सो जन साचा पाया। रागी नादी रहे विचार, एका शब्द अलाया। ब्रह्म ब्रह्मादी खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आया। एका कर्म एका धर्म विच संसार, एका लेखा दए चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेख आप हो जाया। लेखा दस्से हरि भगवन्ता, भगवन रूप समाया। शब्द जणाई साधन सन्ता, दूसर किसे दिस ना आया। आपे नारी आपे कन्ता, गुरमुख साची सेज हंढाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। आप बणाए आपणी बणता, आपे जिह्वा रिहा हिलाया। आपे महिमा

गणत अगणता, लेखा लिख ना सके कोई राया। आपे वस्सया जीआं जन्ता, आपे हर घट डेरा लाया। आप बणाए तेरी बणता, आपे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा आप हो जाया।

* ४ मग्घर २०१५ बिक्रमी हरदित सिंघ दे घर शब्द लिखाए इटारसी शहर *

हरि हरि खेल महान, हरी हरि वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा हो मेहरबान, सति पुरखा नाउँ धराईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, दर साचा वेख वखाईआ। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। मनमुक्ख भुल्ले जीव निधान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पंच विकारा पंच शैतान, पंचम संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। हरि सज्जण सच्चा पातशाह, एका एकँकार। सतिगुर पूरा दस्से राह, दो जहानां किरपा धार। गुरमुख साचे पकड़े बांह, मेल मिलावा विच संसार। मनमुखां मिले ना कोई थाँ, कल सुत्ते पैर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। हरि साजण हरि जाणया, हरि हरि रूप अपार। सतिगुर पूरा करे पछाणयां, अलख अगोचर अगम्म अपार। गुरमुख साजण देवे माणया, आप आपणी किरपा धार। मनमुख होए जीव अञ्याणयां, हरि गोबिन्द ना पायण सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम अधार। नाम अधार हरि अनमुल्ला, एका एक रखांयदा। दूसर तोल किसे ना तुला, ना कोई वणज करांयदा। दर दुआरे जो जन आए भुल्ला, आप आपणा रंग रंगांयदा। भाग लगाए साची कुला, कुल कुलवन्ता नाउँ धरांयदा। फल फुल्लवाड़ी वेखे फुल्ला, रुत्त बसन्ती इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखांयदा। गुरसिख साजण जगत भिखार, आत्म अन्तर वेख वखांयदा। खेले खेल पुरख करतार, करनी करता आप कमांयदा। निरगुण सरगुण जोत उज्यार, जोती जोत डगमगांयदा। शब्द शब्दी सच्ची धुन्कार, धुन अनादी ताल वजांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनार, काया मन्दिर आप सुहांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, कमलापाती आप जगांयदा। बूंद स्वांती ठंडी ठार, निझर धारा मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक्क सुहांयदा। दर द्वार पुरख अथाह, पारब्रह्म जणाईआ। जिस जन बणाए शब्द मलाह, भव सागर पार कराईआ। आप जपाए आपणा नाउँ, आप आपणी बूझ बुझाईआ। निथाविआं देवे साचा थाउँ, दरगहि साची वड वड्याईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, माणक मोती चोग चुगाईआ। अन्तिम वेले पकड़े बाहों, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे वेख वखाईआ।

जगत निमाणे हरि लाए अंग, एका रूप समाया। अमृत धार वहाए गंग, निर्मल नीर धराया। शब्दी शब्द वज्जे मृदंग, ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, लोकमात वेख वखाया। मानस जन्म ना होए भंग, जिस जन चरनी सीस झुकाया। दाता दानी सूरा सरबंग, आप आपणा वेख वखाया। जगत दुआरा आपे लँघ, धर्म दुआरा आप खुल्हाया। आत्म सेजा सच पलँघ, बैठा आसण लाया। नाम वस्त जो जन रहे मंग, देवणहार सृष्ट सुबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा वेख वखाया। वेखणहारा हरि समरथ, आदि अन्त अख्वांयदा। जिस जन रक्खे दे कर हथ्थ, दो जहानां पार करांयदा। पंच विकारा पाए नथ्थ, शब्द डोरी तन्द बंधांयदा। आप उपाए शब्द जणाए पूजा पाठ, एका नाम दृढ़ांयदा। सच सरोवर मारे ठाठ, एका ताल वखांयदा। धुरदरगाही आया नाठ, लोकमात वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन नाम नामा दृढ़ांयदा। नाम नामा वस्त अनमोल, हरिजन झोली पाईआ। शब्द भण्डारा आपे खोल्ह, आपे रिहा वरताईआ। सुन्न अगम्मों आपे बोल, आपे करे जणाईआ। तोलणहारा साचे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। सच सुच्च वजाए ढोल, जूठ झूठ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख दए वड्याईआ। गुरसिख साचे सच द्वार, वेखे खेल अपारया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सुहाए बंक द्वारया। आवण जावण मिटे संसार, लक्ख चुरासी फंद कटा ल्या। पतित पावन आप करतार, पतित पापी पार करा रिहा। वड प्रतापी खेल न्यार, भेव अभेद भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण लेखे ला रिहा। लेखा लिखणहार एका एकँकारया। आदि जुगादी पावे सार, लोकमात वेख वखा रिहा। भगत वछल आप गिरधार, मुकंद मनोहर आप अख्वा रिहा। दर दर वेखे हो उज्यार, दीपक जोती आप जगा ल्या। हर घट बैठा कर पसार, आप आपणा मुख छुपा ल्या। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणे अंग लगा ल्या। धर्म दुआरे धर्म जैकार, पुरख निरँजण एका नाअरा ला ल्या। हँ ब्रह्म ऐका धार, पारब्रह्म रूप समा रिहा। कन्त सन्त भगवन्त धाम न्यार, शब्द सिँघासण आसण ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आवण जावण चुकाए डर, जिस दर दुआरे चरन छुहा लआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, निरगुण जोती ना कोई वरन ना कोई गोती, कोटन कोटी जीव तरा ल्या।

* ४ मग्घर २०१५ बिक्रमी सुरिन्दर सिँघ दे घर इटारसी *

पारब्रह्म सर्ब घट अन्तर, हरि हरि जोत जगाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेस वटाईआ। आप जणाए आपणा मन्त्र, एका शब्द उपाईआ। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, सांतक सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। जोग जुगत हथ्थ करतार, अकल कला अख्वांयदा। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अलक्खणा वेस वटांयदा। आदि जुगादी एका कार, करता पुरख आप करांयदा। शब्द अनाद सच्ची धुन्कार, पुरीआं लोआं आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, दीपक जोती आप जगांयदा। पंज तत्त कर प्यार, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। मन मति बुध दए अधार, त्रैगुण रंग रंगांयदा। नौ दर वेखे बन्द किवाड़, आप आपणी बणत बणांयदा। दसवें साचा घाड़ण घाड़, समरथ पुरख आप घड़ांयदा। आप आपणा अन्दर वाड़, आपे बन्द करांयदा। आप सुहाए सच अखाड़, सचखण्ड दुआरा थाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता वेस वटांयदा। जुग जुग हरि निरँकारा, आपणी जोत जगांयदा। आदि जुगादी लै अवतारा, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यारा, निरगुण सरगुण अख्वांयदा। हरि शब्द खण्डा हरि पावे सारा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। जेरज अंडा हो उज्यारा, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारा, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। तिक्खी रक्खे दोवें धारा, रवि ससि सीस निवांयदा। आपे जोधा सूरबीर बली बलकारा, आपे सति पुरख अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर उपांयदा। नूरो नूर हरि उजाला, जोती जोत जगाईआ। दीनां बंधप दीन दयाला, गुर गुर रूप समाईआ। खेले खेल जगत निराला, हरिजन भेव ना राईआ। चार वरनां वखाए इक्क दुआरा, एका बूझ बुझाईआ। एक नाम एका जैकारा, एका शब्द जणाईआ। एका दर इक्क भण्डारा, एका रिहा वरताईआ। एका शाहो भूप इक्क सिक्दारा, राज राजान इक्क अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि निरँकारा, शब्द सिँघासण डेरा लाया। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, थिर घर बैठा वेस वटाया। शब्द सुत सच दुलारा, आप अपणा लए जगाया। चार कुन्ट दए हुलारा, नौ सत्त फेरी पाया। राज राजानां करे ख़बरदारा, शाह सुल्तानां लए मिलाया। कूड़ कुड़यारा मेट पसारा, जगत अन्धेरा दए गंवाया। सति पुरख हो उज्यारा, नाम नामा दए वखाया। मेट मिटाए काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, मन मति रहे ना राया। हउमे तृष्ना दए निवारा, अग्नी अग्ग ना कोई जलाया। कलिजुग कूड़ा करे ख्वारा, जूठ झूठ मेट मिटाया। सच सुच्च करे प्यारा, धुरदरगाही आप वरताया। बेऐब परवरदिगारा, नूर इलाही आप अख्वाया।

८५२
०७

राम रामा हो त्यारा, लोकमात फेरा पाया। काहना कृष्ना खेल अपारा, नानक गोबिन्द वेस वटाया। निहकलंका लए अवतारा, नाम डंका इक्क वजाया। जीवां जन्तां मारे मारा, साधां सन्तां लए उठाया। भेख पखण्डा दए निवारा, कूड़ी क्रिया रहे ना राया। सचखण्ड सुहाए इक्क दुआरा, आप आपणा डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला सृष्ट सबाई करे प्रितपाला, आप आपणी सेव कमाया। कलिजुग अन्तिम तेरा रंग, हरि हरि वेख वखांयदा। शब्द सिँघासण बैठ पलँघ, आप आपणा घर सुहांयदा। दो जहान वजाए इक्क मृदंग, सुर ताल इक्क वखांयदा। आपणा दुआरा आपे रिहा मंग, दूसर कोए दिस ना आंयदा। जन भगतां कटे भुक्ख नंग, नाम वस्त झोली पांयदा। सच सरोवर नुहाए गंग, ताल अमृत इक्क भरांयदा। काया माटी काची वंग, कंचन गढ़ सुहांयदा। नौ खण्ड पृथमी वेखे जंग, जोधा सूरबीर खेल खलांयदा। चिट्टे अस्व कस्सया तंग, सोलां कलीआं आसण पांयदा। पुरीआं लोआं आपे लँघ, ब्रह्मा विष्न शिव उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा दर सुहांयदा। शब्द घोड़ा हरि दुड़ा, एका एक रखाईआ। शाहो भूप हो अस्वार, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। दहि दिशा दए हुलार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। मुला शेख़ मुसायक दस्तगीर लए उभार, आप आपणा वेख वखाईआ। ग्रन्थी पन्थी बन्ने धार, दिवस रैण करे जणाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, हर घट बैठा आसण लाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे पछाण, हरि हरि वेख वखाईआ। पूत सपूता हरि बलवान, एका झण्डा रिहा झुलाईआ। धर्म खण्डा फड़ कमान, कर्म कुरमां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी बणत बणाईआ। बणत बणा हरि बनवारी, आपणी बणत बणांयदा। निरगुण जोत कर उज्यारी, गुरमुख वेख वखांयदा। माया ममता करे ख्वारी, दुरमति मैल गंवांयदा। साजण साचा मीत मुरारी, माया मोह चुकांयदा। चार वरन सुहाए इक्क द्वारी, एका मार्ग लांयदा। एका गुर इक्क अवतारी, एका नाअरा लांयदा। एका भूप इक्क सिक्दारी, चोबदारी इक्क वखांयदा। एका जोत जगत निरँकारी, आदि शक्त रूप वटांयदा। एका नूर नूर हो उज्यारी, एका नूर आप हो जांयदा। बेऐब परवरदिगारी, ख़लक ख़ुदाई वेख वखांयदा। सर्ब जीआं दा सांझा यारी, यार यारां डेरा लांयदा। ऐनलहक्क रिहा ललकारी, एका मुकामे हक्क वखांयदा। राम राम अवतारी, कलिजुग वेस वटांयदा। काहना कृष्ना मुकंद मनोहर अगम्म अपारी, त्रिलोकी नाथ साथ वखांयदा। नानक सतिगुर बन्ने धारी, एका राह तकांयदा। गुर गोबिन्द पैज संवारी, सच्चा मार्ग लांयदा। अन्तिम कल प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, वेद व्यासा वेख वखांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म तेरी पाए

सारी, हँ ब्रह्म आप समांयदा। हरि नाम खण्डा तेज प्रचण्डा पाए वंड सृष्ट सबाई हाहाकारी, भेव कोई ना पांयदा। जन भगतां आप सुहाए घर सच्चा दरबारी, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। आदि जुगादी खेल अपारी, कलिजुग फेरा आपे पांयदा। नाम मदि प्याए जाम पहली वारी, शब्द प्याला हथ्थ उठांयदा। दुरमति मैल रिहा उतारी, बस्त्र शस्त्र तन सजांयदा। हरिजन वेखे चरन द्वारी, चरन द्वार इक्क सुहांयदा। काल महांकाल करे रख्वारी, सिर समरथ हथ्थ टिकांयदा। राए धर्म रोवे धाहां मारी, दर दरबारा वेख वखांयदा। चित्रगुप्त ना बणे लिखारी, आप आपणा लेख लिखांयदा। लाड़ी मौत ना करे श्रृंगारी, तन वेस ना कोई करांयदा। सुहाए बंक दर द्वारी, सचखण्ड साची सेज सुहांयदा। साचा धाम पुरख अपारी, अगम्मड़ा धाम सुहांयदा। मानस जन्म ना कोई हारी, जो जन चरन ध्यान रखांयदा। हर घट जोत कर उज्यारी, सरगुण डेरा लांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारी, घट घट वेख वखांयदा। कलिजुग तेरी करे कारी, त्रैगुण वेख वखांयदा। सम्मत सम्मती पावे सारी, साध सन्त आप उठांयदा। सुरत व्याहे जनक सपुत्री हरि दुलारी, राम रामा नाउँ रखांयदा। आदि जुगादि एका दरबारी, कलिजुग खेल खलांयदा। एका शब्द कर उज्यारी, सोहँ नाउँ धरांयदा। चार वरनां करे प्यारी, ज़ात पात ना कोई रखांयदा। कर्म धर्म ना होए ख्वारी, एका ब्रह्म जणांयदा। देवे नाम सच्ची ख़ुमारी, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्तिम मूल चुकांयदा। कलिजुग कूड़ा रिहा रो, अन्तिम अन्त आया। दुरमति मैल मुखड़ा धो, चारों कुन्ट वेख वखाया। जूठ झूठ संग ना दिसे को, सगला संग ना कोई निभाया। माया ममता झूठा मोह, साचा दर ना किसे खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, धरत मात रही कुरलाईआ। दिवस रैण करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। खुल्हड़े केस धाहां रही मार, दर दर दए दुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। धरनी धरत धवल दए सहार, एका बूझ बुझाईआ। जूठ झूठ दए निवार, सच सुच्च करे कुड़माईआ। शब्दी शब्द शब्द प्यार, शब्द धुन उपजाईआ। बोध अगाधी खेल अपार, बोध अगाध जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर धरनी लेखे लाईआ। साध सन्त गए हार, दिवस रैण कुरलाए। शाह सुल्तान ना पायण सार, बैठे जगत मुख छुपाए। राज ताज गए संसार, हरि का नाम ना कोई ध्याए। काम क्रोध तन श्रृंगार, हउमे अग्न जलाए। काया अन्धेरा दिसे अपार, सच महल्ल ना कोई जणाए। मगर लग्गी पंचम धाड़, बिन गुर पूरे कोए ना पार कराए। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़, जगत बसन्तर ना कोई बुझाए। बज़र कपाटी देवे पाड़, दर द्वार ना कोई सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सन्तन मेल मिलाए। सन्तन रो रो आत्म पुकारे, एका एक जुदाईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़े, ढूँधी कन्दर फेरा पाईआ। खेले खेल अगम्म अपारे, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। सृष्ट सबाई लुट्टी जाए दिन दिहाड़े, कलिजुग माया पर्दा पाईआ। मनमुखां वेख वखाए मौतष लाड़े, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा कर्म कमाईआ। आपणी करनी आपे कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी जोती आपे धर, जोती जोत आप जगाईआ। वरन गोती वस्सया बाहर, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई चुक्के डर, दूई द्वैती रहिण ना पाईआ। आपे करे आपणी मेहर, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलिजुग जीव जगत तृष्ना गए सड़, अग्नी अग्नी अग्ग सताईआ। पंचम विकारे रहे सड़, दिवस रैण लड़ाईआ। सन्त सुहेले एका अक्खर गए पढ़, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। आपे लावणहारा जड़, वेखणहारा आप हो जाईआ। चौथे घर आपे चढ़, घर साचा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कलिजुग तेरा बस्त्र अन्तिम तेरे तन पहनाईआ। कलिजुग तेरा जगत सिंगार, हरि हरि वेख वखांयदा। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, सच सुच्च ना कोई जणाया। जूठा झूठा मीत मुरार, शाह सुल्तान वड जरवाना अख्वांयदा। ना कोई कन्त ना कोई नार, सुत दुलार ना कोई अख्वांयदा। बेटी बेटा ना कोई प्यार, मात पित ना मेल मिलांयदा। जगत नईआ डुब्बी विच मँझधार, साचा बेड़ा ना कोई चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत जगांयदा। निरगुण जोत हरि प्रधान, हरि हरि वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ निशान, चारों कुन्ट रिहा झुलाईआ। अन्तिम वेखे इक्क मैदान, नौ खण्ड रिहा उठाईआ। रक्त बूंद पंज शैतान, साचा संग निभाईआ। तृष्ना तृखा पीण खाण, हउमे रही सताईआ। दूई द्वैती लग्गा बाण, ना कोई मेट मिटाईआ। हरि का रूप ना सके कोई पछाण, सति सरूप अख्वाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, पारब्रह्म दिस ना आईआ। रागी नादी सारे गाण, धुनी नाद ना कोई वजाईआ। ग्रन्थी पन्थी करन ज्ञान, गुर गोबिन्द ना कोई मिलाईआ। अञ्जील कुरान सर्ब करन ऐलान, सच ख़ुदा ना कोई वखाईआ। गुरमुख विरला करे पछाण, जिस जन बूझ बुझाईआ। दाता दानी हरि मेहरबान, कलिजुग अन्तिम खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, धाम अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा, बैठा आसण लाईआ। शब्द सिँघासण हरि अपार, एका धाम सुहाया। निरगुण जोती कर उज्यार, आपणा आसण लाया। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं फोल फुलाया। अन्तिम वेले दए हुलार, धरनी धवल सुहाया। राज राजाना करे ख्वार, शाह सुल्तान रहिण ना पाया। दर

दर मंगण भिक्ख द्वार, घर घर वेख विखाया। जगत नवाबा विच उजाड़, चरन भरवासा जिस गंवाया। आप चबाए आपणी दाहड़, आप आपणा वेस विटाया। लग्गे अग्ग सतारां हाढ़, साचा दिवस सुहाया। धरत मात तेरा इक्क अखाड़, हरि साचा वेख वखाया। आप उठाए अगम्मी धाड़, नेत्र नैणां दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा खेल खलाया। कलिजुग तेरा रंग चलूल, हरि हरि वेख वखांयदा। हरि का भाणा ना जाए भूल, आपणा भाणा आप वरतांयदा । शब्द शस्त्र हथ्थ उठाए त्रशूल, आपणी दया कमांयदा। शंकर शिव कन्त कन्तूहल, ब्रह्मा वेता सेवा लांयदा। सच सिँघासण ना कोई पावा ना कोई चूल, विष्नूं वेसा वेस वटांयदा। बाशक सेजा बरसे फूल, सांगो पांग हंढांयदा। जुग जुग चुकाए जगत मूल, लहिणा देणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चतुर्भुज कहांयदा।

* ४ मग्घर २०१५ बिक्रमी इटारसी शहर *

मनमति जगत विभचार, गुरमति हरि शरनाईआ। पंज तत्त विकारा जगत हँकार, नाम वथ्थ वड्डी वड्याईआ। जूठ झूठ मोह प्यार, चरन कँवल सहिज सुखदाईआ। गुरसिख साची सच विचार, अन्तर मन्त्र हरि लिव लाईआ। मेटे गढ़ काया हँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दुरमति मैल धवाईआ। मन अन्धला माया मत, दिवस रैण अन्धेरा। गुर सतिगुर पूरा जाणे मित गति, सद वसे नेरन नेरा। जिस जन दया कमाए कराए साचा हित्त, चुकाए हेरा फेरा। दरस दिखाए नित नवित्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे तारे कर कर मेहरा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान हरी हरि आप अख्वाया। जिस जन देवे नाम दान, जगत विकारा मोह मिटाया। काया मन्दिर सच मकान, नौ दुआरे पार कराया। जोत निरँजण खेल महान, दिवस रैण डगमगाया। धुनी नाद सच्ची धुनकान, अनहद एका ताल वजाया। शब्दी गुर पवण मसाण, कवरी भवरी फोल फुलाया। पंच विकारा मेट शैतान, सच सुच्च वरताया। आत्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञान, चरन ध्यान रखाया। रागी राग सुणाए कान, आप आपणा आप अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका तत्त बुझाया। तत्त ज्ञान शब्द प्रवेश, जोती जोत जगाईआ। हरि हरि साजण सच संदेश, हरिजन आप सुणाईआ । आपणे नेत्र आपे वेख, आपे बूझ बुझाईआ। आपे होए रिखी केस, जगत गवर्धन आप उठाईआ। आपे दाता दस दस्मेश, गोबिन्द आप अख्वाईआ। प्रगट होए नर नरेश, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जगत तमाशे आपे वेख, आप आपणे गले लगाईआ। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी केस, तत्ती वा ना लग्गे राईआ। मस्तक लाए

साची मेख, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, दुरमति मैल मिटाईआ। अमृत आत्म ठांडा नीर, अमृत जाम प्याया। सांतक सति करे सरीर, तृष्ना तृखा मिटाया। शब्द पहनाए साचा चीर, एका एक बस्त्र हथ्थ रखाया। दूई द्वैती कढ्ढे पीड़, हउमे हँगता मार मुकाया। चोटी चाढ़े आप अख़ीर, शब्द पल्लू लड़ फड़ाया। अन्तिम बन्नृणहारा बीड़, घर साचे फेरा पाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता करनेहार करनी किरत रिहा कमाया। गुर किरपा हरि जाणया, मेला बेपरवाह। मूर्ख मुग्ध मन मानया, लेखा लिखे शाह। होए चतुर सुघड़ स्याणया, जपे जपावे साचा नाँ। नाम देवे वंञ मुहाणया, शौह दरयाए बेड़ा पार करा। शब्दी शब्द सच बिबाणया, गुरमुख साचे लए चढ़ा। करे कराए पुण छाणया, लक्ख चुरासी जगत न्याँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, अन्तिम पकड़े आप आपणी बांह।

* ५ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा सिँघ सभा गवालियर शहर *

हरि मन्दिर हरि सुहाया, पारब्रह्म करतार। निरगुण जोती नूर रुशनाया, अलक्ख अगम्म अपार। आदि निरँजण वेस वटाया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंका नाउँ रखाया, शब्द डंका अपर अपार। चारों कुन्टां रिहा उठाया, लक्ख चुरासी ख़बरदार। शाह सुल्ताना रिहा हिलाया, लोआं पुरीआं पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। पुरख अकाल दीन दयाल, हरि हरि जोत जगाईआ। खेले खेल दो जहान, दिस किसे ना आईआ। निहकलंक बली बलवान, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द जोधा सूरबीर बली बलवान, सगला संग निभाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार ध्यान, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस वटाईआ। पारब्रह्म पुरख करतार, एका एक अख्वाया। आदि अन्त लए अवतार, जुग जुग वेस वटाया। वेखे विगसे करे विचार, भेव किसे ना पाया। निरगुण रूप हो उज्यार, लोकमात वेख वखाया । सृष्ट सबाई दए हुलार, नाम हुलारा इक्क लगाया। चार वरनां इक्क द्वार, एका बूझ बुझाया। एका नाम इक्क जैकार, एका शब्द जणाया। खड़ग खण्डा इक्क कटार, तेज प्रचण्डा हथ्थ उठाया। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, जेरज अंड फोल फुलाया। मनमुख जीव दुहागण नार रंड, कलिजुग अन्तिम दए मिटाया। रहिण ना देवे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप अपणा वेस वटाया। नर नरायण हरि भगवन्त,

अकल कला अख्वाईआ। गुरमुख वेखे साजण सन्त, दहि दिशा फेरी पाईआ। आप बणाए आपणी बणत, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। एका नाम रसना जिह्वा मणीआ मंत, एका स्वास चलाईआ। सद सद महिमा गणत अगणत, लेखा लेख विच ना आईआ। दर दरवेस जुगा जुगन्त, धरत धवल दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि निरँकार, एका एकँकारया। लोकमात हो उज्यार, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। वेद व्यासा मीत मुरार, गुर गोबिन्द संग निभा ल्या। सन्त सुहेले लाए पार, गुर चेले वेख वखा रिहा। मनमुख डुब्बे विच मँझधार, कलिजुग कूड़ा वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा नाउँ उपा ल्या। नाउँ उपाया हरि निरँकार, एका जोत जगाईआ। इक्क इकल्ला खेल अपार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। ब्रह्मा विष्न देवत सुर दए हुलार, शब्द हुलारा इक्क रखाईआ। कलिजुग तेरा पार किनार, सम्मत सम्मती दए वड्याईआ। खेले खेल अन्तिम वार, करनी करता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वेस वटाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, आपणी कल वरताईआ। खेले खेल दो जहानां, पताल आकाश वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, आपणा सगन मनाईआ। गुरमुख साजण कर पछाणा, आप आपणा मेल मिलाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशाना, एका रंग रंगाईआ। वेखे खेल गोपी काहना, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। एका पद दस्से निरबाणा, अमरापद आप समाईआ। जोधा सूर बली बलवाना, निरगुण जोत नूर करे रुशनाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, सृष्ट सबाई रिहा उठाईआ। वेख वखाए जीव जहानां, साधां सन्तां लए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम राह, हरि हरि वेख वखांयदा। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। करता करे सच न्याँ, जुग जुग वेस वटांयदा। जिस जन देवे आपणा नाँ, आपणी बूझ बुझांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, घर साचा इक्क सुहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर हथ्थ समरथ टिकांयदा। आपे पिता आपे माँ, बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। फड़णहारा साची बांह, सगला संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खलांयदा। खेलणहार हरि समरथा, अकल कला अख्वाईआ। जुग जुग चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्था, जीवां जन्तां आप भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत पन्दरां वड वड्याईआ । सम्मत पन्दरां भेख

अगम्मा, हरि हरि आप करांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्मा, ना कोई बणत बणांयदा। पवण स्वासी लए ना दमा, नेत्र नीर ना कोई वहांयदा। आदि जुगादी एका कम्मा, आपे आप करांयदा। दो जहानां बेड़ा बन्ना, बन्न्णहार आप अख्वांयदा। गुरमुख चरन लगाए जिउँ धन्न धन्ना, आप अपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मेल मिलांयदा। मेल मिलावा हरि गोबिन्द, हरिजन वड्डी वड्याईआ। मेट मिटाए सगली चिन्द, जो जन रहे सरनाईआ। अमृत आत्म देवे सागर सिन्ध, साचा ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। अन्तिम वेला हरि घर पाया, हरि वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी मंगल गाया, हउमे रोग गंवाईआ। सेज सुहञ्जणी सच हंढाया, आत्म दर खुल्हाईआ। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजाया, जेरज अंड तोड़ तुड़ाया। भेख पखण्ड बेड़ा पार कराया, एका तत्त समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणा मेला हरि निरँकार, आपणा आप कराईआ। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। मात पिता कर प्यार, आप आपणे रंग रंगाईआ। हरि जी सुहाए इक्क द्वार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। खेवट खेटा बण मलाह, बेड़ा इक्क चलाईआ। पंचम बैठा डेरा ला, लोकमात फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा साचा वर, गोबिन्द तेरा साचा गढ़ सुहाईआ। गोबिन्द तेरा साचा गढ़, हरि हरि वेख वखांयदा। हरी हरि आपे बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। समरथ पुरख अग्गे खड़, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त ना कोई वखांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, आप आपणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखांयदा। गुरमुख साजण साचा माण, हर घर वज्जी वधाईआ। गुरसिख संग शब्द बिबाण, एका नाम चढ़ाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाण, अनन्त कला वरताईआ। जिस जन अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सन्त साध साध सन्त बख्शे चरन ध्यान, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म सच्ची शरनाईआ। एका रंग श्री भगवान, दूजी वस्त नज़र ना आईआ। तीजा नैण खेल महान, एका दृष्ट खुल्हाईआ। चौथे दर वड बलवान, पुरख अबिनाशा मेल मिलाईआ। पंचम सोहे दर दरबान, पंचम वेख वखाईआ। दीपक जोती इक्क महान, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। कमलापाती खेल महान, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। लहिणा देणा बाकी चुकाए विच जहान, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत वड वड्याईआ। संगत स्वागत हरि हरि पाया, हरि नामे वज्जी वधाईआ। राग रागनी राग गाया, रागी नादी एह अल्हाईआ।

८५६
०७

जागरत जागरत जागरत गुर नज़री आया, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। भागत भागत भागत दर द्वार सुहाया, बंक दुआरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, गुरमुखां देवे वड वड्याईआ। वड वड्याई गुरसिख, गुरमति हरि हरि भाईआ। साचा लेखा देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरुदुआरे नाम भिक्ख, गुर पूरा झोली पाईआ। दूई द्वैती उतरे विख, माया ममता रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नेत्र आपे पेख, आपे लए जगाईआ। गुरमुख सोया आप जगाए, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। फड़ फड़ बाहों मार्ग पाए, एका बूझ बझाईआ। धुन अनादी राग सुणाए, अनहद ताल वजाईआ। चरन धूढ़ अशनान माघी आप कराए, दुरमति मैल गंवाईआ। हउमे झूठा रोग गंवाए, सच सुच्च करे कुड़माईआ। हँस कागी आप बणाए, मातलोकी जोत जगाईआ। वाद विवादी रहिण ना पाए, जो जन रहे शरनाईआ। मोहण माधव माधी दरस दखाए, कँवल नैण वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी वेस वटाए, वडा दाता बेपरवाहीआ। नानक गोबिन्द लेख लिखाए, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम एका डंक वजाए, शाह सुल्तान राज राजान सोए रिहा आप उठाईआ।

* ५ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरदुआरा बन्दी छोड़ हरि गोबिन्द साहिब दे अस्थान पर शब्द लिखाया गया संगत संमेत किला गवालियर *

मूर्त अकाल जोत अपार, हरि हरि आप जगाईआ। लोकमात खेल अपार, पंज तत्त वज्जी वधाईआ। नानक मेला पुरख अपार, पारब्रह्म सरनाईआ। एका रूप अगम्म अपार, आपणा आप दरसाईआ। शब्द अनादी एका ताल, आपणा आप अलाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। बोध अगाधी खेल अपार, सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण सरगुण एका धार, गुर नानक वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नूर करे रुशनाईआ। नानक गुर शब्द नगारा, एका एक वजांयदा। सृष्ट सबाई पावे सारा, इक्क निशान आप उठांयदा। चार वरना करे प्यारा, बरन अठारां पार करांयदा। इक्क सुहाए सच दुआरा, दर दुआरा खोल खुलांयदा। नाम सति कर प्यारा, सांतक सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी जोती जोत जगांयदा। जोती जोत नूर उपा, हरि हरि दया कमाईआ। नानक दीवा बाती इक्क टिका, एका वेख वखाईआ। कमलापाती वेस वटा, लोकमात करे रुशनाईआ। शब्द सुगाती धुरदरगाह, आप आपणा लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, कलिजुग वेखे सृष्ट सबाईआ। कलिजुग अन्तिम साचे खेल, हरि हरि आप कराया। नानक सतिगुर साचा मेल अंगद अंग लगाया। अंगद चढ़या साचा तेल, लहिणा लैहिणे झोली पाईआ। मिल्या पुरख हरि सज्जण सुहेल, एका दूजा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाया। साचा घर उच्चा मन्दिर टिल्ला, हरि हरि वेख वखांयदा। निरगुण रूप इक्क इकल्ला, आप आपणा डेरा लांयदा। सच सिँघासण आपे मल्ला, पुरख अबिनाशी खेल खलांयदा। वसणहारा जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगांयदा। दीवा बाती जोत उज्यार, नानक गुर कराईआ। अंगद किया ख़बरदार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। एका रंग रंगे करतार, काया चोली आप रंगाईआ। शब्दी शब्द भर भण्डार, अतोट अतुट रखाईआ। वरते वरतावे विच संसार, आप आपणी चलत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत जोत जगा, जोती जोत जगाया। आप आपणी किरपा कर, लहिणे लहिणा झोली पाया। सच ख़ज़ाना अग्गे धर, समरथ हथ्थ सिर टिकाया। शब्द बिबाणा गया चढ़, लोआं पुरीआं पार कराया। अकाल पुरख वेखे

८६१
०७

खड़, रंग रूप ना कोए वखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, लक्ख चुरासी विच समाया। आपणी विद्या आपे पढ़, गुर सतिगुर आप अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। सुहाया दर मंगलाचार, पंज तत्त वज्जी वधाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, एका तत्त गया समझाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर भेव ना राईआ। वरभण्डी पावणहारा सार, आदि जुगादि वेस वटाईआ। भेख पखण्डी दए निवार, शब्द डण्डा एका हथ्थ उठाईआ। आत्म रंडी पावे सार, नार दुहागण ना कोई अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी देवे सच सुगंधी, लोआं पुरीआं आप महिकाईआ। लोआं पुरीआं फल फुलवाड़ी, शब्दी फल लगाया। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी, अमरू निथावां वेख वखाया। बज़र कपाटी आपे पाड़ी, जोत ललाटी वेख वखाया। दर घर साचा देवे वाड़ी, गुर पूरे वड सरनाया। आपे होया पिच्छे अगाड़ी, अग्गा पिच्छा ना कोए वखाया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ी, एका नूरो नूर उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महल्ल अटल इक्क वखाया। उच्च महल्ल अटल मिनार, अमरदास समझाईआ। काया मन्दिर पावे सार, पंज तत्त फोल फुलाईआ। त्रैगुण तेरा खेल न्यार, भेव कोई ना पाईआ। डूँघी भवरी पार किनार, नौ दर वेख वखाईआ। धुनी शब्द वज्जे धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। पंचम वेखे वारो वार, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। अमृत भरया ठंडी धार, जलधारा इक्क वखाईआ। बज़र कपाटी पर्दा पाड़, आत्म सेजा इक्क

सुहाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। अमरदास गुर ढहि पया द्वार, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। आपे कन्त आपे नार, नर नरायण आप हो जाईआ। आपे पिता आपे बेटा आपे होए कन्त भतार, आपणा भेख आप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अंगद दित्ता साचा वर, अमरदास वखाए साचा घर, दस्म दुआरी इक्क सुहाईआ। दस्म दुआरी खोल्ह दरवाज़ा, गुर गुर वेख वखाया। नज़री आया ग़रीब निवाज़ा, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। अस्व घोड़ा एका ताजा, शब्दी शब्द रखाया। दिवस रैण मारे वाजां, गुरमुखां रिहा उठाया। लक्ख चुरासी रचया काजा, आदि जुगादी खेल रचाया। जन भगतां देवे नाम दाजा, धुरदरगाही पल्ले गंढु बंधाया। लोकमात करया काजा, नानक अंगद अमरू विच टिकाया। अमरदास गुर साजण साजा, हरि साचा वेख वखाया। खेले खेल देस माझा, भेव किसे ना पाया। शाहो भूप वड राजन राजा, तख्त सुल्तान आप हो आया। पावे सार दो दो आबा, आबेहयात वेख वखाया। फोल फुलाए काया मक्का काअबा, आप आपणी दया कमाया। गुरसिक्खां उलटी करे कँवल नाभा, अमृत आत्म मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरनी धवल आप सुहाया। धरनी धवल आप संवार, आपणी दया कमाईआ। कँवल कँवला कर उज्यार, कँवल नाभ सुहाईआ। अगम्म अगम्मड़ा भेव न्यार, नाड़ी चम्मड़े डेरा लाईआ। दमड़ी दमड़े ना कोई वणज वपार, माया मोह ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी विद्या आपे वेख, आपे करे पढ़ाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे रिहा अल्लाईआ। आपणे मन्दिर आपे वड़, आपे रिहा सुणाईआ। आप आपणा तोड़ गढ़, हँकारी गढ़ रहिण ना पाईआ। आपणे विकारे आपे गया सड़, रत्ती रत्त रहे ना राईआ। आपणा प्रकाश आपणी नाड़ी आप कर, आपे वेख वखाईआ। आप आपणी लाए जड़, फुल फुलवाड़ी आप उठाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, अमरदास गुर ल्या फड़, हरि साचे वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती कर उजाला, हरि हरि रूप वटांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, भेव कोए ना पांयदा। राम दास गुर खेल निराला, साचा वणज करांयदा। शब्दी शब्द बण दलाला, बाल बाला लेखे लांयदा। पाए नाम तन साची माला, फूलण बरख़ा आप बरसांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाला, अट्ठे पहर वेख वखांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत जगांयदा। काया वेख सच्ची धर्मसाला, धुरदरगाही डेरा लांयदा। दीपक जोती एका बाला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द वजाया साचा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। नाम लपेटे सच रोमाला, साचा पर्दा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोती साचा वर, देवणहारा आप अख्वांयदा। जोती दीपक आप

जगा, नानक अंगद विच समाईआ। अमरदास गुर सेव कमा, रामदासे गया समाईआ। रामदास गुर भेव खुल्हा, लेखा अलक्ख जगाईआ। अलक्ख निरँजण दरस दिखा, सगली चिन्त मिटाईआ। अलक्ख अगोचर बेपरवाह, एका एक सुहाईआ। निरगुण सरगुण डेरा ला, सहिज सुभा वखाईआ। महल्ल अटल इक्क सुहा, दस्म दुआरी वेख वखाईआ। अमृत साचा ताल सुहा, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, बैठा डेरा लाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा रिहा वखा, चारों कुन्टां फेरा पाईआ। एका ब्रह्म आप उपा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्द अगम्मी रिहा जणा, वरन गोत ना कोई रखाईआ। निहकर्मी निहकर्म रिहा कमा, अकाल पुरख सेव कमाईआ। रामदास गुर ल्या मना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। दोए जोड़ ढहि पया सरना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी पकड़े बांह, आप आपणे गले लगाईआ। मेल मिलाए जिउँ पुत्तरां माँ, जोत निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण देवणहारा साचा थाँ, साची बूझ बुझाईआ। एका नगर इक्क गरां, एका धाम सुहाईआ। पंचम मीता पंचम वखा, पंचम वेख वखाईआ। पंचम मीता आप सखा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम दास वड्डी वड्याईआ। रामदास गुर हरि हरि पा, आत्म वज्जी वधाईआ। हउमे सहिसा रोग गंवा, माया ममता मोह चुकाईआ। चरन ध्यान इक्क लगा, दूसर दर ना कोई वखाईआ। नेत्र लोचण इक्क खुल्हा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चौथे पद आप समा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जगाईआ। आवण जावण गेड़ कटाया, पतित पावण होए सहाईआ । सतिगुर पूरे दर्शन आप कराया, विछड़ कदे ना जाईआ। नानक सतिगुर शब्दी शब्द मनमति रखाया, दो जहानां मेल मिलाईआ। कामनी कामन नेड़ ना आया, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा घर, साचा दर खुल्हाईआ। महल्ल अटल दस्म दुआर, गुर गुर वेख वखाया। चारों कुन्ट पावे सार, आप आपणा मूल चुकाया। अमृत ताल ठांडी ठार, साचा सर रखाया। दिवस रैण रैण दिवस कर प्यार, एका रंग रंगाया। भरया रहे सच भण्डार, सच सुच्च वरताया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। कलिजुग तेरा वेखे कूड़ पसार, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जूठ झूठ संग शृंगार, लक्ख चुरासी रही लगाया। चार यार संग मुहम्मद मारन नाअर, ऐनलहक्क वेख वखाया। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, ख़ालक ख़लक विच समाया। सर्ब जीआं दा सांझां यार, अकाल पुरख रूप वटाया। रामदास कल पावे सार, आप आपणा रंग रंगाया। सच निशान सच दरबार, लोकमात वेख वखाया। अर्जन मीता हो त्यार, सच घर इक्क सुहाया। परखे नीता अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। बैठा रहे इक्क अतीता, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, पंचम गुर लेखा लिख्या गया जुड़, धुर मस्तक वेख वखाया। गोबिन्द मेला हरि अपार, आपणा आप कराईआ। आपे गोबिन्द आपे ज़ाहर, अन्दर बाहर आप हो जाईआ। आप आपणा करे प्यार, दूर नेड़े ना कोई जणाईआ। अट्ठे पहर इक्क धुन्कार, एका लिव रखाईआ। एका वेखे सच सच्चा दरबार, दर द्वार इक्क सुहाईआ। शाहो भूप इक्क सिक्दार, एका नज़री आईआ। एका पुरख सृष्ट सबाई नार, लक्ख चुरासी सीस झुकाईआ। एका देवणहार भण्डार, आदि अन्त वेख वखाईआ। एका तोला बणे वरतार, नाम शब्द रिहा वरताईआ। शब्द शब्दी कर पसार, सतिगुर पूरे बूझ बुझाईआ। दिवस रैण एका धार, अट्ठे पहर रहे जणाईआ। आपे करया ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। बोध अगाधी खेल न्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर धीर धराईआ। हरि शब्द गुर गुर बाणी, शब्द रूप समाया। अर्जन पाया पद निरबाणी, अपणा मोह चुकाया। पारब्रह्म प्रभ मिल्या साचे हाणी, विछड़ कदे ना जाया। लेखा जाणे चार खाणी, चारों जुग फोल फुलाया। चार वरन रक्खे आणी, एका नाम ध्याया। लक्ख चुरासी पुण छाणी, सच सुच्च नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास गुर दित्ता वर, गुर अर्जन वेख वखाया। गुर अर्जन सति सरीर, हरि हरि रूप वटाया। बानी शब्द गुर साचा तीर, दो जहानां पार कराया। लोआं पुरीआं पए वहीर, ब्रह्मा विष्न शिव रहे कुरलाया। करोड़ तेतीसा नैण विरोले नीर, सुरपति राजा इन्द दए दुहाया। गुरमुख लोकमात चोटी चढ़े अख़ीर, गुर सतिगुर साचा राह वखाया। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, दुरमति मैल धवाया। मेल मिलावा साधां सन्त पीर, भगत भगवन्त वेख वखाया। नाम पहनाए बस्त्र चीर, उतर कदे ना जाईआ। सति सन्तोखी बन्न्हे धीर, आत्म ब्रह्म वखाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, शाह फ़कीर एका धाम सुहाया। ग़रीब निमाणयां देवे अमृत सीर, हरि का शब्द आप प्याया। आपे वेखे शाह पीरां पीर, शाह सुल्तान हरि रघुराया। दो जहानां दस्तगीर, हरि बैठा हथ्थ टिकाया। डूँघा सागर भवजल होए माहीगीर, गुरमुख साचा ल्ए तराया। कट्टणहारा जगत जंजीर, धर्म राए फंद कटाया। गुरु ग्रन्थ बन्न्ही बीड़, लोकमात गुर अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा शब्द आपे धर, आप आपणा लेख लिखाया। शब्द धुर संजोग, गुर अर्जन वड वड्याईआ। आत्म अन्तर मिली चोग, माणक मोती वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी कटे रोग, जो जन दर्शन पाईआ। सति सन्तोखी साचा जोग, धीरज धीर इक्क धराईआ। दर्शन देवे दर अमोघ, जो जन रसना गाईआ। पार कराए तीनों लोक, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। एका शब्द इक्क सलोक, एका करे पढ़ाईआ। हरि का भाणा ना सके कोई रोक, गुर अर्जन वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाईआ।

दर सुहाए हरि हरि बंक, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे राउ आपे रंक, राज राजान आप हो जाईआ। खेले खेल बार अनक, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आप उठावणहारा धणख, राम रूप हो जाईआ। आपे मेल मिलावा सीता सपुर्त्ती जनक, गुरसिख सुरती आप प्रनाईआ। आप वजाए शब्द डंक, गुर अर्जन कलम चलाईआ। आपे लावणहारा तणक, जोती जोत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर दए वड्याईआ। गुरमीता गुर मेलया, गुर गुर रूप अपार। अचरज खेल पारब्रह्म कल खेलया, लोकमात लए अवतार। चार वरनां सज्जण सुहेलया, सति सरूप अगम्म अपार। आपे वसे सद नवेलया, हर घट बैठा कर पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्ने आपणी धार। आपणी धार आपे बन्नू, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। रैण घोर चढ़या साचा चन्न, आप आपणा भेट कराईआ। लक्ख चुरासी राग सुणाया कन्न, पारब्रह्म जो अलाईआ। करे प्रकाश काया माटी तन, जोत निरँजण आप जगाईआ। चेतन्न चेते साचा मन्न, घर मेला साचे माहीआ। भाण्डा भरम देवे भन्न, साची सिख्या इक्क सुणाईआ। पंचम विकारा देवे डन्न, घर साचे मिले वधाईआ। मन मनुआ जाए मन्न, मति बुध होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश एका रंग रंगाईआ। पंज तत्त कर प्यार, त्रैगुण बंधन पाया। गुर अर्जन वेखे खेल न्यार, हरि साचे शब्द उपाया। नानक मीता निरगुण धार, निरवैर रूप समाया। अकाल मूर्त खेल अपार, निरभउ दिस ना आया। जोती नूर सच्ची सरकार, सगला संग निभाया। आदि अन्त मेल करतार, करता पुरख नाउँ धराया। सन्त कन्त भगवन्त बन्ने धार, पारब्रह्म वड वड्आया। जीवां जन्तां पैज जाए संवार, जो जन सरनाई आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम दर वेख वखाया। पंचम मेला पंचम प्रधान, पंचम वज्जी वधाईआ। पंचम बहि बहि साचे गाण, पंचम मुख सलाहीआ। पंचम वेखे सच निशान, काया मन्दिर आप टिकाईआ। पंचम बन्ने एका थान, नाम डोरी एका पाईआ। पंचम जोधा सूरबली बलवान, पंचम गुर वेख वखाईआ। पंचम गढ़ काया हँकार, पंचम रूप वखाईआ। पंचम वस्सया सच मकान, बैठा आसण लाईआ। पंज तत्त हो प्रधान, सति पुरख करे कुड़माईआ। हरी हरि खेल महान, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द सुत कर पछाण, पूत सपूता वेख वखाईआ। एका राग सुणाया कान, एका ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग रंगाईआ। आपणे रंग आप रंगा, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आपणे अंग आप लगा, सहिज सहिज सुखदाईआ। आपे देवणहारा मता, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपे जाणे आपणी रीता, आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिगोबिन्द वेख वखाईआ। गोबिन्द हरि एका

रूप, एका रंग रंगाया । पुरख अबिनाशी शाहो भूप, सच सिँघासण मेल मिलाया नाता तुट्टा जूठ झूठ, सच सुच्च करे कुड़माया। अमृत आत्म दित्ता घुट्ट, अन्दर अन्दर मेल मिलाया। साचा लाहा ल्या लुट्ट, दूसर हथ्थ किसे ना आया। आपे चढ़या साची चोट, गुर नानक दर्शन पाया। पुरख अबिनाशी साची ओट, एका सरन तकाया। सच नगारे लग्गे चोट, तन बस्त्र इक्क सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। शस्त्र बस्त्र तन अपार, आपणी धार चलाईआ। शाह फ़कीरां पावे सार, फ़कीर फ़कीरा विच टिकाईआ। अमीर अमीरा सच्ची सरकार, सीस ताज इक्क टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां करे रुशनाईआ। आपे शाह आपे पीर, आपे तख्त बराज्जया। आपे दरवेश आपे दस्तगीर, आपे खेले खेल ग़रीब निवाज्जया। आपे नर आप नरेश, आप आपणा साजण साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल ग़रीब शाह नवाब्या। घर विच घर सच द्वार, गुर गुर उपदेसा। ना कोई मीत ना मुरार, ना कोई संग नर नरेशा। लोकमात खेले खेल न्यार, पंज तत्त जोत प्रवेशा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे दर आपे दए आदेसा। शब्द अदेस हरि निरँकार, गुर पूरे वज्जे वधाईआ। इक्क इकल्ला पावे सार, जुग जुग वेस वटाईआ। जगत महल्ला खेल न्यार, राज राजान भेव ना राईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पंज तत्त झूठा नाता, जगत मोह तुड़ाया। खेले खेल पुरख बिधाता, भेव किसे ना राया। उत्तम रक्खे आपणी जाता, ज़ात पात ना कोए जणाया। शब्द जणाई साची गाथा, एका अक्खर आप उपाया। वेख वखाए कमलापाता, सतिगुर मुख सालाहया। गुरमुखां बंधाए साचा नाता, चरन कँवल जोड़ जुड़ाया। नाम चढ़ाए साचे राथा, रथ रथवाही आप अख्वाया। लहिणा देणा चुकाए मस्तक माथा, जो जन सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपार, पंज तत्त शब्द बंधन बंधाया। शब्द बंधन तन सरीर, आपणी खेल खलाईआ। रसन ना जाणे कोई जीव, लेखा लिख्त विच ना आईआ। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गम्भीर समाईआ। दर्शन लोचण तरसन सुरपति इन्द, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाईआ। वेखणहार हरि समरथा, आपणा मूल पछाणया। पंज तत्त विकारा पाई नथ्था, बन्दीख़ाना इक्क सुहा रिहा। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्था, शाह सुल्ताना आप जणा रिहा। दिवस रैण फिरे नठ्ठा, आप आपणी कार कमा रिहा। जिस जन आपणी आपे देवे मत्ता, दे मति मात समझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत गढ़ इक्क सुहा ल्या। जगत गढ़ जगतष मकान, जगत जीव सहारया।

खेले खेल दो जहान, अन्त ना पारावारया। जोधा बीर नौजवान, मीर पीर आप अख्वा रिहा। बन्दीख़ाना कर परवान, आप आपणा चरन छुहा ल्या। राज राजाना बख़्शे इक्क ध्यान, शेर शेर रूप समझा ल्या। हो दलेर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग रंगा ल्या। बन्दीख़ाने डेरा लाया, हरि हरि भेव ना राईआ। सतिगुर साचे खेल रचाया, आप आपणा चोज वरताईआ। शाह सुल्तानां रिहा डराया, भय भयानक एह दरसाईआ। आप आपणा दे बुझाया, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। पारब्रह्म प्रभ हुक्म सुणाया, शब्दी शब्द उपाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखाया, नौ खण्ड सत्त दीप चारों कुन्ट वेख वखाईआ। सत्त सागरां फेरा पाया, डूँघे ताल चरन छुहाईआ। निर्मल कर्म उजागर आप कराया, तरनहार आप हो जाईआ। जगत सौदागर आप बणाया, नाम वणजारा वेला रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे बैठा अन्दर वड़, आपे वेख वखाईआ। जगत किला साचा कोट, सिँघ शेर रूप वटाया। आपे लावणहारा चोट, तन नगारा आप वजाया। आपे कढ्ढणहारा खोट, दे मति आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाया। सरगुण भेख हरि करतार, निरगुण खेल खलांयदा। हरि गोबिन्द होया ख़बरदार, आप आपणा रंग वखांयदा। शाह सुल्तानां मारे मार, शब्द शब्दी वेख वखांयदा। एका दर बण भिखार, ढहि ढहि सीस निवांयदा।

८६७ ०७
बन्दीख़ाने गेड़ निवार, बस्त्र तन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, आपणे हथ्थ रखांयदा। किला कोट जगत तजावणा, हरि गोबिन्द वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां गले लगावणा, पूरन ब्रह्म जणाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटावणा, आवण जावण रहे ना राईआ। साचा लड़ आप फड़ावणा, एका पल्लू अग्गे डाहीआ। बवन्जा अक्खर धार चलावणा, पैंतीस मुख रखाईआ। सत सतारां लेखे लावणा, हरि सच वड्डी वड्याईआ। शाह सुल्तानां लेख लिखावणा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। कलिजुग अन्तिम मेल मिलावणा, नौ खण्ड करे कुड़माईआ। सत्तां दीपां डंक वजावणा, एका नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द वेखे साचा घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। सोलां तन तन श्रृंगार, बावन रूप समांयदा। हरिजन साचे कर प्यार, सगला संग निभांयदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जगत नाम ना कोई वखांयदा। राज राजान ढहि ढहि पए द्वार, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। कवण पाए प्रभ साची सार, हरि का दर दिस ना आंयदा। सतिगुर पूरा गुर अवतार, दे मति आप समझांयदा। सगला संग मीत मुरार, दो जहानां आप निभांयदा। देवे वर दर द्वार, एका शब्द सुणांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, बवन्जा देशां वंड वंडांयदा। शब्द संदेशा दए सच्ची सरकार, निरगुण जोती जोत जगांयदा। गोबिन्द संग अन्तिम वार, दिस किसे ना

आंयदा। कलिजुग अन्तिम पावे सार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। राज राजानां चढ़या चाअ, निउँ निउँ सीस झुकाया। सतिगुर बणया सच मलाह, बेड़ा बन्ने लाया। शब्द जपाए एका नाँ, वाह वाह गुरू सुहाया। निथाविआं दित्ता साचा थाँ, थान थनंतर वेख वखाया। अन्तिम वेले पकड़े बांह, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द तेरा साचा दर, घर साचा दए सुहाया। किले कोट जगत हँकार, गुर पूरा आप तुड़ांयदा। बावन बावन कर प्यार, बवन्जा वेख वखांयदा। सतिजुग त्रेता पार किनार, द्वापर मूल चुकांयदा। कलिजुग खेले खेल अपार, आप आपणी कल वरतांयदा। गुर चेले सोहिण इक्क द्वार, घर मेले आप करांयदा। रंग नवेले ख़बरदार, अट्ठे पहर जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलजग तेरी अन्तिम वर, गुर गुर संग निभांयदा। गुर गुर संग सर्ब गुर देवा, सगला संग निभाईआ। लेखे लाए चरन कँवल कमाई साची सेवा, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। दरस दखाए नेत्र नैणां, कँवल नैण वड वड्याईआ। अन्तिम भाणा सहिणा पैणा, देश बवन्जा ल्ए उठाईआ। लक्ख चुरासी जूठे झूठे वहिण वहिणा, ना दिसे कोई सहाईआ। नात तुट्टे मात पित भाई भैणां, साक सज्जण ना कोई अख्वाईआ। हरि गोबिंद गुर पाया साचा गहिणा, राज राजाना माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेख वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार हरि हरि साची जोत जगाईआ। किले कोट कर प्यार, वेखे बेपरवाहीआ। गुर का रूप अपर अपार, जगत नेत्र दिस ना आईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। करनहारा सर्ब उज्यार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुरमुख साचे ल्ए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। राज बवन्जा सच प्यार, मानस वेख वखाईआ। सम्मत सोलां मेल करतार, शब्दी शब्द पुजाईआ। सम्मत सतारां नीर वहायण ज़ारो ज़ार, घर साचा राह तकाईआ। अट्ठ अठारां हो ख्वार, वेखण साचा माहीआ। उन्नी उनीसा बेमुहार, पान्धी पन्ध भुलाईआ। बीस बीसा होए ख़बरदार, दिल्ली दुआरा वेख वखाईआ। जमन किनारा पावे सार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पन्दरां कत्तक अपर अपार, वीह सद बिक्रमी नाल रलाईआ। पंचम मीता ख़बरदार, पंचम मुख वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक अंगद अमरदास रामदास गुर अर्जन हरिगोबिन्द एका नाम वड्याईआ।

* ८ मग्घर २०१५ बिक्रमी गाइर्ती तपोबन मथरा बिन्दराबन दे विच मेहर बाबा दे इक्क चेले नाल *

पारब्रह्म प्रभ लए अवतार, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती नूर कर उज्यार, जोती जोत जोत जगाईआ। शब्द खण्डा अपर अपार, आदि निरँजण हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर नौ सत्त वेख वखाईआ। भेख पखण्डा दए निवार, एका तत्त बुझाईआ। एका शब्द अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी आप उपाईआ। हँ ब्रह्म शब्द सोहँ भेख अपार, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। जरम कर्म धर्म पूर्ब रिहा विचार, पंज तत्त डेरा लाईआ। मन मति बुध पावे सार, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वेख वखाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। समुंद सागर भरया ताल, सति सरोवर चौदां लोक त्रैभवन फोल फुलाईआ । वसणहारा काया गागर रंग महल्ल अटल उच्च मिनार, दस्म दुआर खोल्ह खुल्हाईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हउमे हँगता माया ममता वेख वखाईआ। जटा जूट पावे सार, तन लंगोट वेख विचार, ख़ाकी ख़ाक भस्म भिखार, आप आपणी खेल खिलाईआ। मस्तक तिलक त्रैसूल ललाट, वेखणहारा आण बाट, जोत निरँजण सच ललाट, काया डूँघा औखा घाट, कवण दुआरा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरबान आप हो जाईआ। कवण रूप हरि अवतार, मेहरबान कवण अख्वाया। कवण बाबा करे पछाण, कवण नेत्र खोल्ह खुल्हाया। कवण तन वजाए रबाबा, अनहद साचा ताल रखाया। कवण मेल मिलाए दो दो आबा, आप आपणा रंग रंगाया। कवण वखाए काया मक्का काअबा, हक्क हकीकत संग रलाया। कवण चुआए अमृत नाभा, सर सरोवर इक्क वखाया। कवण वखाए साचा ताजा, अस्व घोड़ा शब्द दुड़ाया। कवण लक्ख चुरासी अन्दर मन्दिर फिरे भाजा, जोत सरूपी वेस वटाया। कवण शब्द भूप वड राजन राजा, लोक परलोक होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेखे साचा घर, दर दुआरा इक्क वखाया। मेहरबान हरि निरँकार, निरगुण नूर समाया। आदिन अन्ता इक्क अवतार, एका रूप वटाया। साधां सन्तां पावे सार, भुल्ल रहे ना राया। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, लोकमात फेरा पाया। निहकलंका नाउँ अपार, शब्द डंका इक्क वजाया। सम्बल नगरी धाम न्यार, माझा देस वेख वखाया। साढे तिन्न हथ्थ करे भगत प्यार, जागरत जोत जगाया। लहिणा देणा छुट्टे सर्ब संसार, जनहरि हरिजन हरि हरि नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, वेख वखाए साचा घर, मथरा बिन्दरा बन्न्ह अद्धविचकारे डेरा लाया। जगत अहूती जगत हवन, जुग जुग वेख वखाईआ। शब्दी शब्द साची पवण, ब्रह्मण्डां आप चलाईआ। हरि का भेव जाणे कवण, कोटन कोट बैठे तन रंगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, काया कुण्ड इक्क वखाईआ। काया कुण्ड साची जोत, दिवस रैण जगाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई बरन वखाईआ। एका तन नगारे लाए चोट, नाम डंका रिहा वजाईआ। पंच विकारा कढ्ढे खोट, हर घट बैठा डेरा लाईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां माया ममता भरी ना अजे पोट, जगत होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान बावा बाबा कवण रूप दरसाईआ।

* ६ मग्घर २०१५ बिक्रमी सन्त हीरा सिंघ दे नाल गुरदुआरा गुर तेग बहादर मथरा शहर विच *

गुर प्रसादि गुर भेटयां, गुर पारब्रह्म करतार। सतिगुर साचा खेवट खेटयां, दो जहानां लाए पार। हरिजन उपजाए साचा बेटयां, वेख वखाए सर्ब संसार। नाम दोशाले आप लपेटयां, रूप रंग अपर अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल अपार। हरि प्रसादि हरि भाया, घर साचे वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर इक्क समाया, सरगुण वेख वखाईआ। अकाल मूर्त दया कमाया, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। गुरसिख साचे लए जगाया, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका सन्त ब्रह्म समझाया, आत्म ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। मानस जन्म लेखे लाया, जो जन आए सरनाईआ। कर्म धर्म दए वखाया, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। समरथ हथ्थ सिर टिकाया, दो जहानां वेख वखाईआ। अकथनी कथा शब्द जणाया, बोध अगाध भेव ना राया। नाम साचे रथ चढ़ाया, लोक परलोक पार कराईआ। साढे तिन्न हथ्थ वक्त चुकाया, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जगत हउमे सैंहसा रोग गंवाया, चरन कँवल कँवल चरन सच सरनाई इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रसादि गुर प्रसादी, दर दर एका पाईआ। हरि प्रसादि हरि जाणया, हरि हरि रूप अपार। गुरसिख चले सतिगुर भाणया, आत्म अन्तर इक्क प्यार,। आप आपणा मूल पछाणयां, हउमे हँगता रोग निवार। एका बख्शे चरन ध्यानया, सच दुआरा एकँकार। अकल कला आप अख्वानया, जुग जुग मात लए अवतार। कलिजुग अन्तिम जगत पछाणया, लक्ख चुरासी होए ख्वार। गुरमुख विरला चतुर सुघड़ स्याणया, घर पावे मीत मुरार। आत्म सेजा इक्क सुहाणया, जोत निरँजण कर उज्यार। अनहद धुनी नाद वजानया, आत्म धुन अपर अपार। मिले मेल श्री भगवानया, विछड़ ना जाए विच संसार। आवण जावण फंद कटानया, लक्ख चुरासी गेड़ निवार। लग्गे भोग दर परवानया, एथे ओथे दो जहानां पाए सार। पारब्रह्म अबिनाशी करता इक्क वखाए धर्म निशानया, धुरदरगाही अपर अपार। गोबिन्द

खेल जगत महानया, नानक निरगुण साची धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण देवे वर, बिरध बाल जवान अवस्था रिहा तार। बाल जवानी जगत बुड़ेपा, हरि हरि रंग रंगाया। आत्म अन्तर आपणे नेत्र आपे पेखा, भेव अभेद गंवाया। लिखणहारा साचा लेखा, धुरदरगाही नज़री आया। जिस जन कढ्ढे भरम भुलेखा, माया मोह चुकाया। लेखे लाए धारी केसा, गुर गोबिन्द रूप वटाया। खेले खेल दस दस्मेसा, निरगुण सरगुण रंग रंगाया। दर द्वार कोटन कोट ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, भेव किसे ना पाया। गुरमुखां दर दुआरे हरि हरि नर नरेशा, दर दरवेशा, बन मथरा फेरा पाया। मम्मा ; मोह प्यार, हरिजन सरनाईआ। थथ्था ; थिर घर सच्चा दरबार, पुरख अबिनाशी बैठा डेरा लाईआ। रारा ; राम रूप करतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अगम्म अगोचर खेल अपार, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। सज्जण सुहेले रिहा तार, आप आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, नानक गोबिन्द जोत जगाईआ। निहकलंका डंक अपार, शब्द शब्दी आप वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी हाहाकार, दिवस रैण रही कुरलाईआ। भगत सोहिण सच द्वार, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता भेख अपार, भेखाधारी भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन वखाए साचा घर, गोपी काहन नज़री आईआ। सुरती गोपी हरि हरि काहन, काया मथरा आप सुहाईआ। नाम रखाए सच निशान, धर्म दुआरे आप झुलाईआ। धुनी राग साचे काहन, अनहद ताल वजाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। बन्द किवाड़ी आप तुड़ान, बजर कपाटी सिला हटाईआ। दस्म दुआरी मेल मिलाण, जोती जोत समाईआ। आत्म सेजा हो प्रधान, हरि बैठा बेपरवाहीआ। पंज तत्त ना कोई पछाण, मन मति बुध ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, सन्त कन्त भगवन्त साचे घर मंगल गाईआ। सन्तन नारी हरि भगवन्ता, कन्त रूप अख्वाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। जो जन दर दुआरे आए मंगता, दाता दानी नाम झोली दए भराया। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, दूई द्वैती मेट मिटाया। मानस जन्म ना होए भंगता, आवण जावण लेखे लाया। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख नंगता, नाम नामा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, नाम प्रसादि आदि जुगादि पारब्रह्म, आत्म ब्रह्म साचा मेल मिलाया।

८७२

०७

* ६ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुर नानक बगीची गुरदुआरा मथरा शहर *

पारब्रह्म सर्ब सुखदाता, एका एक अख्वांयदा। आपे पिता आपे माता, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। आपे देवणहारा नाम दाता, दानी दाता झोली पांयदा। आपे बणया भैण भ्राता, सगला संग आप निभांयदा। आपे बख्शणहारा चरन नाता, चरन कँवल मस्तक धूढ़ इक्क वखांयदा। आपे मेटणहारा अन्धेरी राता, काया मन्दिर अन्दर खोज खुजांयदा। आपे देवे अमृत आत्म बूंद स्वांता, जगत तृष्ना आप मिटांयदा। आपे दस्से धुनी नाद अनहद साची गाथा, आप आपणा ताल वजांयदा। आपे लहिण देण चुकाए मस्तक माथा, पूर्ब पूर्ब वेख वखांयदा। आप निभाए सगला साथा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। आपे रक्खे दे कर हाथा, आप आपणी दया कमांयदा। सर्बकला आपे समरथा, समरथ पुरख नाउँ धरांयदा। सगल वसूरा हरिजन लाथा, जो जन नेत्र लोचण दर्शन पांयदा। लहिणा देण चुकाए आण बाटा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। नाम वणज कराए साचे हाटा, चौदां लोक फोल फुलांयदा। सर सरोवर वखाए इक्क तीर्थ ताटा, काया डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलांयदा। जगत विछोड़ा जुग जुग, हरि हरि आप कराईआ। बंधन भाई सुत सैण साक, भगत सगला संग ना कोई निभाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मार झात, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। जो जन दिवस रैण रहे अराध, मानस मानुक्ख लेखे लाईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहाईआ। जिस जन मिल्या कमलापात, कलिजुग सैंहसा रोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जन साजण वेख वखाईआ। किरपा कर हरि भगवान, जगत दुःख मेट मिटांयदा। इक्क वखाए सच निशान, धर्म दुआरे आप झुलांयदा। नाम भण्डार पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। भगत भगवन्त एका थान, थान थनंतर इक्क सुहांयदा। जिस जन बख्शे आत्म ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। लेखा चुक्के जीव जहान, जोती जोत जगांयदा। अनहद राग सुणाए कान, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। शब्द निराला मारे बाण, बज़र कपाटी चीर चिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे होया निगहबान, वेख वखाए दो जहान, लोआं पुरीआं हो प्रधान, गुरमुख गुरसिख गुर पूरा वेख वखांयदा।

* ६ मग्घर २०१५ बिक्रमी अमीर चन्द गुलाटी दे घर पलवल शहर *

हरिभगत हरि जाणया, आत्म ब्रह्म विचार। तन मन्दिर वेख वखाणया, महल्ल अटल उच्च मिनार। राम रामा रूप पछाणया, निरगुण खेल अगम्म अपार। दर द्वार होए परवानया, आदि पुरख निरँजण पावे सार। देवे नाम सच निशानयां, लोकमात दीप उज्यार। एक सुणाए साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए दर द्वार। हरिभगत हरि रंग है, राम रूप अपार। नाम मंगे एका मंग है, सच वस्त सच दरबार। मानस जन्म ना होए भंग है, लक्ख चुरासी उतरे पार। अमृत धारा वहे साची गंग है, मिल पीओ ठंडा ठार। दो जहानां कटे भुक्ख नंग है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत भगती पावे सार। भगती हरि हरि दर सुहाया, भगतन रूप अपार। नेत्र नैण इक्क खुल्हाया, मिटया अन्ध अँध्यार। जोत निरँजण आप जगाया, वेखे विगसे करे विचार। काया मन्दिर डेरा लाया, धर्म सुहाए दस्म दुआर। निरगुण जोत करे रुशनाया, आप आपणी किरपा धार। हरिजन विरले बूझ बुझाया, लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार। कलिजुग माया पर्दा पाया, नेत्र नैण ना सके कोई उग्घाड़। काम क्रोध लोभ मोह हलकाया, दुरमति मैल ना सके उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे भगती वर, नाम भगती भरे भण्डार। नाम भगती सच ख़ज़ाना, भगवन्त हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवे दो जहानां, आदि जुगादि नाउँ धराईआ। जुग जुग खेले खेल महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाईआ। अछल अछल्ल आप पछाना, कल बावन भेख वटाईआ। अंसा बंसा जोत महाना, नर नरायण रूप दरसाईआ। राम सीता हो प्रधाना, त्रै त्रै वेख वखाईआ। खेले खेल कृष्ना काहना, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल महाना, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर मेल मिलाना, थान थनंतर इक्क सुहाईआ। जन भगतां बन्ने नाम गाना, सति सन्तोखी डोरी एका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर, दर दुआरा इक्क खुल्हाईआ। आत्म अन्तर सच द्वार, हरिजन आप खुल्हाया। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़, आप आपणा दरस दिखाया। पंचम घर पंचम देवे वाड़, बन्द किवाड़ा आपे लाहया। करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। नेड़ ना आए मौत लाड़, राए धर्म ना दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत देवे भगती वर, भगवन भगवन्त रूप समाया।

* १० मग्घर २०१५ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे घर करोल बाग
१२ ए १६ डब्बलयू ई ए नवीं दिल्ली *

गृह मन्दिर हरि भाया, निरगुण जोत उज्यार। दीवा बाती इक्क रखाया, पुरख अबिनाशी खेल अपार। आत्म ताकी इक्क खुलाया, आप आपणी किरपा धार। लहिणा देणा बाकी मूल चुकाया, जुग जुग लए मात अवतार। तन ख़ाकी लेखे लाया, वेख वखाए कर विचार। अमृत साकी जाम प्याया, निझर झिरना ठंडी ठार। नाम राकी आप चढ़ाया, दिवस रैण ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। गृह मन्दिर हरि वस्सया, पारब्रह्म करतार। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, निरगुण जोत कर उज्यार। घर साचे बहि बहि हस्सया, नूर इलाही बेऐब परवरदिगार। दूर दुराडा फिरे नस्सया, लोआं पुरीआं पावे सार। गुरमुख विरले मार्ग आपणा दस्सया, लक्ख चुरासी पसर पसार। तीर निराला एका कस्सया, रसना चिल्ला मारे मार। हरिजन हिरदे अन्दर आपे वस्सया, रूप अनूप शाहो सरकार। जगत विकारा देवे झस्सया, त्रिलोकी नंदन पावे भार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे होए उज्यार। गृह मन्दिर घर सुहञ्जणा, जोती दीप अपार। शब्द अनादी एका वज्जणा, धुन अनाद सच्ची धुन्कार। मेल मिलावा हरि हरि सज्जणा, गुर सतिगुर मीत मुरार। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, हउमे दुःखड़ा रोग निवार। तन पर्दा एका कज्जणा, तन बस्त्र देवे शब्द अपार। आप मिटाए लोक लजना, देवे दरस अगम्म अपार। जगत नगारा एका वज्जणा, लक्ख चुरासी ख़बरदार। जो घड़या सो भज्जणा, आदि जुगादी एका कार। गुरमुख विरले हरि चरन दुआरे बहि बहि सजणा, आप वखाए सच दरबार। नाम चढ़ाए सच जहाजना, दो जहानी पार उतार। शाहो भूप वड राज राजना, राउ रंक इक्क प्यार। ग़रीब निमाणयां करे काजना, सेवक सेवक सेवादार। सच सुगाती देवे दाजणा, धुरदरगाह ना करे उधार। खेले खेल देस माझना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए साचा घर बार। घर मन्दिर हरि मेलया, रूप अगम्म अथाह। इक्क दुआरा गुरू गुर चेलया, गुर सतिगुर बेपरवाह। आपणा खेल आपे खेलया, आपे बणया जगत मलाह। घर साचे सज्जण सुहेलया, इक्क जपाए साचा नाँ। सद वसे रंग नवेलया, निथाविआं देवणहारा थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पकड़णहारा बांह। घर मन्दिर उच्च अटारीआ, हरि हरि बणत बणाईआ। जगे जोत इक्क निरंकारया, निरगुण नूरो नूर समाईआ। खेले खेल अगम्म अपारीआ, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। शाहो भूप सच्चा सरदारीआ, तख्त ताज वेख वखाईआ। राज जोग इक्क जणा रिहा, एका बूझ बुझाईआ। रसना भोग इक्क

लगा रिहा, आत्म रस वड्डी वड्याईआ। धुर संजोग मेल मिला रिहा, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। दरस अमोघ दर दिखा रिहा, नाम चोग इक्क चुगाईआ। दो जहानां रोग मिटा रिहा, पतित पुनीता आप कराईआ। तिन्नां लोकां पार रखा रिहा, सचखण्ड दुआरा इक्क जणाईआ। एका शब्द सलोक सुणा रिहा, सोहँ शब्द वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी तेरा भोग पा रिहा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वेखे बेपरवाहीआ। घर मन्दिर उच्च अटल महल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। अबिनाशी करता दर बैठा इक्क इकल्ला, एका एक समाईआ। पावे सार जला थला, जल थल महीअल आप हो जाईआ। सच दर गुरमुख विरले मल्ला, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जगत द्वैती मेटे सल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना होए हलकाईआ। चरन प्रीती घोल घुल्ला, दरगहि साची धाम सुहाईआ। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल्ल खेल खलाईआ। पुरख अगम्मा दीपक एका बला, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर मन्दिर वेख वखाईआ। गृह मन्दिर पतित पावण, आपणा आप कराईआ। भेखाधारी भेख बावन, बल राजा संग निभाईआ। आप फड़ाया आपणा दामन, दृष्ट अगोचर वेख वखाईआ। दरगहि साची साचा ज़ामन, जम जंदार नेड़ ना आईआ। अमृत मेघ बरसे सावण, सांतक सति वरताईआ। जगत हँकारा तुट्टे गढ़ लंका रावण, राम रामा होए सहाईआ। धुरदरगाही साचा ज़ामन, एका पल्ला नाम फड़ाईआ। गुरसिख सज्जण सुहेल चरन धूढ़ी सच्चा नहावण, अठ्ठ सठ्ठ मूल चुकाईआ। एका शब्द अनादी गावण, सो पुरख निरँजण जो रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर सच्चा बंक सुहाईआ। गृह मन्दिर साचा बंक, हरि हरि आप सुहन्नया। गुरमुख विरले जोती शब्दी लाए तनक, पंचम देवणहारा डन्नया। मेल मिलावा वासी पुरी घनक, सम्बल नगरी बेड़ा बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख चढ़ाए साचे चन्नया। चन्न सूरज रवि ससि, आदि जुगादि प्रकाशिआ। हरि सज्जण मेला बीस बीस, गुरमुख सच्चा भरवास्सया। दरस दखाए नस्स नस्स, पावे सार पृथ्मी अकाशिआ। हिरदे अन्दर वस वस, लेखा लाए बिन स्वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, हरि साचा शाहो शाबास्सया। गृह मन्दिर वस्सया शाहो भूप, रूप रंग ना राया। जोती नूर सति सरूप, शब्द शब्दी नाउँ धराया। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाया। लहिणा देणा चुकाए जूठ झूठ, सच सुच्च करे वरताया। जिस जन आपे जाए तुठ, जगत दुआरा इक्क सुहाया। अमृत देवे साचा घुट्ट, अन्तर आत्म इक्क प्याया। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, आप आपणा शब्द उठाया। गुरमुख विरले लाहा रहे लुट्ट, मनमुखां जीवां दिस ना आया। लक्ख

चुरासी कलिजुग अन्दर डूँघी जड़ देवे पुट्ट, शौह दरियाए आप रुढ़ाया। वहिंदे वहिणां देवे सुट्ट, एका धक्का नाम लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, चार दिवार ना कोई रखाया। गृह मन्दिर हरि द्वार, हरि हरि वेख विखानया। छप्पर छन्न ना पावे सार, बाढी बणत ना कोई बणानया। लेखा लिखे ना कोई संसार, वेद कतेब होए प्रधानया। गुरमुख साचे करे प्यार, जिस जन बख्शे चरन ध्यानया। घर विच घर घर खेल अपार, खेले खेल श्री भगवानया। कोटन कोट रवि ससि करन निमस्कार, ब्रह्मा विष्न शिव निउँ निउँ सीस झुकानया। गुरमुख मेला सच भतार, हरि कन्ता रूप वटानया। नारी सेजा एका धार, एका जोत मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर तन अन्दर दर घर हरि नर नरायण, हरी हरि करे परवनयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग जुग वेस अनेक ना कोई रूप ना कोई रेख, पंज तत्त नाम जगत करे प्रधानया। नाम वस्त हरि उपा, आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवे कर प्यार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। साध सन्त लए उभार, पंज तत्त करे रुशनाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणा रूप वटाईआ। अलक्ख निरँजण भेव न्यार, अबिनाशी करता खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, आत्म ब्रह्म करे जणाईआ। हरि नाम शब्द भण्डार, हरिजन आप वरताईआ। जुग जुग लए लोकमात अवतार, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। आत्म अन्तर पावे सार, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अमृत बूंद स्वांती देवे ठंडी ठार, गिरधारा मुख चुआईआ। अनहद शब्द सुणाए सच्ची धुन्कार, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। बज़र कपाटी पर्दा पाड़, दूई द्वैती कुण्डा लाहीआ। दस्म दुआरी अन्दर वड़, नौ दर पार कराईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। आत्म सेजा सच प्यार, हरि हरिजन मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, एका रंग रंगाईआ। नाम रंग अपर अपार, हरिजन तन चढ़ाईआ। एका दूजा भेव निवार, तीजा नैण इक्क खुल्हाईआ। चौथे दर पावे सार, आप आपणा संग निभाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम मोह चुकाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई पसार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आदिन अन्ता एकँकार, अकल कला वरताईआ। अट्ठां तत्तां वस्सया बाहर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए रखाईआ। जीव जन्त नौ दर ख्वार, जगत तृष्ना बन्द कराईआ। दसवें खेले खेल न्यार, खेलणहार दिस ना आईआ। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन दया कमाईआ। खोलणहारा बन्द किवाड़, आप आपणा मुख वखाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़, घर घर विच बैठा सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप

८७६
०७

हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, नाम नामा वेख वखाईआ। नाम वस्त जगत अमोल, हरिजन वंड वंडाइन्दा। पुरख अबिनाशी तोलणहारा साचा तोल, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। शब्द निशअक्खर आपे बोल, धुन अनादी आप सुणांयदा। सदा सुहेला वसे कोल, काया मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। आप आपणा पर्दा हरिजन आपे लए खोल्, ब्रह्म ब्रह्म दरसांयदा। भाग लगाए काया चोल, हड्ड मास रक्त बूंद नाड़ी रत्त वेख वखांयदा। जोत सरूप रिहा मौल, निरगुण सरगुण खेल खलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, जगत वणजारा आप अख्वांयदा। नाम दात धुर दरगाह, हरि हरि इक्क रखाया। लोकमात बण मलाह, जुग जुग आप वरताया। निथाविआं देवणहार थाँ, दर घर साचा इक्क सुहाया। जन भगतां फड़े साची बांह, आप आपणा संग निभाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवाया। शब्द सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। आपे पिता आपे माँ, गुरसिख बाल अञ्याणे गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, भगत भण्डार आप वरताया। नाम भगती भगत भण्डार, हरिजन झोली पाईआ। दिवस रैण रहे ख़ुमार, अठ्ठ पहर लिव लाईआ। दरस दखाए पुरख अपार, एकँकारा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, घर साचा बंक सुहाईआ। नाम रंग रंग चलूल, गुरमुख तन चढ़ाया। मेल मिलावा कन्त कन्तूहल, घर सज्जण वेख वखाया। आदि अन्त ना जाए भूल, जुग जुग वेस वटाया। गुरमुखां वेख वखाए आत्म सेजा बरख़ा लाए साचे फूल, नाम सुगंधी इक्क वखाया। शब्द सिँघासण आप बराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाढी बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवणहारा लहिणा देणा पिछला मूल, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। नाम वस्त पूर्ब लहिणा, हरिजन आप चुकाईआ। नेत्र अंजन पाए नैणां, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैणा, एका दर वखाईआ। शब्द बस्त्र दए गहिणा, उतर कदे ना जाईआ। पुरख अकाला एका कहिणा, एका बूझ बुझाईआ। हरिजन भाणा हरि हरि सहिणा, हरि नामे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ।

८७७ ०७

* १० मग्घर २०१५ बिक्रमी रत्न सिँघ दे घर शादीपुर नवीं दिल्ली *

भगत वछल आप गिरधार, एका रूप समाया। खेले खेल अगम्म अपार, भेव अभेद भेव छुपाया। जुग जुग लोकमात

ल्ए अवतार, आप आपणा खेल खलाया। हरिजन साचे ल्ए उभार, रूप अनूप दरसाया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, आदि जुगादी भेख वटाया। एका बख्शे चरन प्यार, चरन चरनोदक मुख चुआया। हउमे रोग दए निवार, माया मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगती वेख वखाया। भगतन मीता हरि निरँकार, एका जोत जगाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। सन्त सुहेले ल्ए उभार, गुर चेले मेल मिलाईआ। रंग नवेले खेल अपार, अगम्म अगम्मड़ा खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। भगतन हित्त पुरख बिधाता, एका एकँकारया। जुग जुग वेखे जगत तमाशा, आवे जावे वारो वारया। मण्डल मण्डप पावे रासा, लोआं पुरीआं पसर पसारया। हरिजन अन्दर रक्खे वासा, आप आपणा रूप पल्टा रिहा। आपे बणे सच भरवासा, आत्म ब्रह्म जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, भगत भगती लेखे ला रिहा। भगतन मीता पुरख अकाला, एका एकँकारया। दीना बंधप दीन दयाला, हरि साचा तोड़णहारा जगत जंजाला, जागरत जोत इक्क जगा रिहा। काया मन्दिर वेखे सच्ची धर्मसाला, दीवा बाती इक्क टिका रिहा। एका देवे नाम सच धन माला, जगत तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। शब्द पहनाए तन दोशाला, दूई द्वैती पर्दा लाह रिहा। आपे शाह आपे कंगाला, हर घट आपे डेरा ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर, दर साचा इक्क सुहा ल्या। भगतन रूप भगत भण्डारन, नाम नामे दरसाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकारन, हरिजन वेख वखाईआ। मनमुखता होई जगत हँकारन, दुरमति मैल वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई फिरे भिखारन, हरि का नाम हथ्थ ना आईआ। गुरमुख नारी सच वंजारन, दर साचा इक्क सुहाईआ। पाया शाहो पुरख अपारन, पुरख अकाला इक्क जणाईआ। दीनां नाथ दए अधारन, लोकमात वज्जे वधाईआ। कलिजुग अन्तिम आया काज संवारन, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचा दर, दर साचा इक्क वखाईआ। भगतन मीता एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलार, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड वेख वखाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, सरगुण मेला बेपरवाहीआ। वेखणहार अन्ध अँध्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। नाता तोड़े कूड़ कुड़यार, गुरमुख बूझ बुझाईआ। अमृत आत्म उपजाए ठंडी धार, निझर झिरना आप झिराईआ। कँवल कँवला दरस अपार, नेत्र नैणां इक्क खुल्हाईआ। धुनी शब्द अनाहद धार, अनहद ताल वजाईआ। पंचम मीता हो त्यार, आप आपणा रूप प्रगटाईआ। शब्द शब्दी खेल न्यार, शब्द शब्दी डंक वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा

उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर मेला हरि पाया, परम पुरख करतार। अनन्द मंगल एका गाया, एका शब्द सच्ची धुन्कार। दर साचा इक्क खुल्हाया, पाया दरस रूप अपार। दूई द्वैती पर्दा लाहया, बज़र कपाटी आर पार। आत्म सेजा इक्क सुहाया, बेऐब बैठा परवरदिगार। ख़ाकी ख़ाक लेखे लाया, ख़ालक ख़लक हो त्यार। नाम नामा रंग रंगाया, काया चोली तन अपार। सच दमामा इक्क वजाया, धुनी नाद एकँकार। रैण अन्धेरी शामा मेट मिटाया, गुरमुख साचे कर प्यार। अन्तरजामी वेखण आया, नेत्र नैण उग्घाड़। धुर दरबार इक्क सुहाया, सचखण्ड निवासी सच्ची सरकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लिख्त लेख लेखा दए लिख, ना सके कोई मिटाया।

* १० मग्घर २०१५ बिक्रमी रेशम सिँघ दे घर शरन लाइन ७ मेरठ छाउँणी *

हरी हरि हरि नरायण, एका रूप समाया। वेद कतेब सारे कहिण, भेव किसे ना पाया। हरिजन विरला वेखे साचे नैण, जिस जन आपणा नैण खुल्हाया। आप चुकाए लहिण देण, जुग जुग वेस वटाया। गुरू गुर चेले एका धाम इक्ट्ठे बहिण, थिर घर दुआरा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाया। थिर घर साचा हरि दरबार, निरगुण जोत जगाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं कर पसार, मण्डल मण्डप रिहा सुहाईआ। गगन पताला हो उज्यार, रवि ससि करे रुशनाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। हरिजन साचे पावे सार, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। भगतन भगती दए नाम भण्डार, आप आपणी दया कमाईआ। दिवस रैण करे प्यार, एका दर बुझाईआ। नेत्र नैण कर शृंगार, दुरमति मैल मिटाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, सांतक सति कराईआ। करे खेल अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। सृष्ट सुबाई यांझा यार, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे पार किनार, दो जहानां फेरा पाईआ। शाहो भूप हरि सुल्तान, साचा तख्त आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खलाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, घर साचे वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा इक्क इकल्ला, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। पावे सार जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाईआ। गुरमुख विरले आप फड़ाए आपणा पल्ला, आप आपणे अंक समाईआ। जोती शब्दी आपे रला, पवनी पवण चलाईआ। दीपक जोती आपे बला, बाती तेल ना कोई वखाईआ। हरिजन मेटे दूई द्वैती सला, एका

ब्रह्म जणाईआ। नाम फड़े साचा भल्ला, पंज चोर रहे शरमाईआ। सच सिँघासण आत्म दर ग़रीब निवाजा आपे खला, देवे दरस अगम्म अथाहीआ। इक्क सुहाए निहचल धाम अटला, दर साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बणत बणाईआ। थिर घर सच्चा हरि सिक्दार, एका एकँकारया। आदि जुगादी खेल अपार, लेखा लिख्त विच ना आ रिहा। कोटन कोट ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर खड़े द्वार, गुर पीर अवतार सीस झुका रिहा। साध सन्त ढहि ढहि पैण द्वार, चरन द्वार इक्क वखा रिहा। हरिजन साजण मीत मुरार, रसना जिह्वा हरि हरि गा रिहा। गुरमुख साचा ख़बरदार, सोया मात आप उठा रिहा। चार वरनां साचा यार, सतिगुर पूरा शब्द उपा रिहा। वरनां बरनां वसे बाहर, ज़ात अजाति नाउँ रखा रिहा। कर्म धर्म ना कोई विचार, मानस जन्म वेख वखा ल्या। आत्म ब्रह्म हो उज्यार, पारब्रह्म रूप वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। थिर घर वासा हरि ब्रह्मण्ड, जोती जोत रुशनाईआ। आपे वस्सया जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। आपे खेले खेल विच वरभण्ड, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। आपे करणहारा खण्ड खण्ड, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। तोड़णहारा आप घमंड, राज राजान शाह सुल्तान वेखे झूठी छाहीआ। गुरमुखां नाम देवे वंड, धुरदरगाही साची दात इक्क वखाईआ। मनमुखां सिर उठाई जूठी झूठी पंड, चारों कुन्ट रहे कुरलाईआ। साध सन्त पाइन डण्ड, आत्म अन्तर ना कोई वखाईआ। सति सन्तोख नंगी होई कंड, धीरज यति ना कोई जणाईआ। सुरत सवाणी नार दुहागण रंड, हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। दहि दिशा वेखे भेख पखण्ड, हरि जोती नूर रुशनाईआ। आप आपणी जाणे वंड, नौ खण्ड फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। थिर घर साचा हरि निरँकार, एका एक समाया। आदि जुगादी लए अवतार, लोकमात फेरा पाया। शब्द अनादी इक्क धुन्कार, शब्द ताल वजाया। नाम बैरागी ख़बरदार, कन्त सुहागी वेख वखाया। आत्म साधी कर उज्यार, हरिजन लए उपाया। बोध अगाधी शब्द अपार, एका डंका रिहा वजाया। ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप उपाया। थिर घर रूप हरि अवल्ला, एका जोत जगाईआ। एका बैठा धाम इकल्ला, दूसर संग ना कोई रखाईआ। सच सिँघासण आपे मल्ला, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई हरि हरि खेल, आदि अन्त कराया। हरिभगत कराए साचा मेल, नित नवित्त वेख वखाया। दीवा बाती एका तेल, निरगुण सरगुण लए जगाया। कट्टणहारा धर्म राए दी जेल, लक्ख चुरासी फंद कटाया। दो जहानां सज्जण सुहेल, आदि

८८० ०७

जुगादी वेस वटाया। आपे वस्सया रंग नवेल, हर घट मन्दिर आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा रूप समाया। उच्च अगम्म अथाह, हरि निरंकारया। आदि जुगादी बेपरवाह, लेखा लिख्त विच ना आया। आपे जाणे आपणा राह, जुग जुग मार्ग लाया। आप आपणा नाउँ धरा, वेस अनेका रूप वटाया। आप आपणा सुहाए थाँ, बंक द्वारी फेरा पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वासी पुरी घनक, आप आपणा भेव खुल्ला रिहा। थिर घर वासा हरि निरँकार, पुरख पुरखोतम वंड वंडाईआ। पंज तत्त ना कोई आकार, रक्त बूंद ना मेल मिलाईआ। मात पिता ना कोई अधार, बालक सुत ना गोद उठाईआ। एका जोती नूर उज्यार, जोती जोत जगाईआ। पुरख अकाला मीत मुरार, आदि शक्त सेव कमाईआ। सज्जण सुहेला कर प्यार, आपणी सेजा रिहा सुहाईआ। एका सेजा खेल अपार, रूप रंग ना कोई जणाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर नाउँ धराईआ। आप आपणा कर उज्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड हरि प्रवेश, जोती जोत समांयदा। आदि पुरख सदा आदेस, निरगुण धार समांयदा। एकँकार नर नरेश, निरवैर नाउँ धरांयदा। लोआं पुरीआं रहे हमेश, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पांयदा। दीन दयाल सुहाए सीस , जोत अकाला वेस वटांयदा। सर्ब जीआं करे प्रितपाला माझे देस, वेस अवेसा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे सुत्ता विष्नूं बाशक सेज, पंज तत्त सेजा आप हंढांयदा। पंज तत्त सेजा हरि काया गढ़ सुहाया। निरगुण जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क वखाया। कमलापाती खेल अपार, नेत्र नैणां इक्क खुल्लाया। नाम नुरानी सोहे द्वार, नूरो नूर दरसाया। महांसार्थी ख़बरदार, रथ रथवाही इक्क चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण इक्क सुहाया। आत्म सेजा हरि सिँघासण, हरिजन जोत जगाईआ। मेल मिलावा पुरख अबिनाशण, विछड़ कदे ना जाईआ। दर दुआरे दासी दासण, दर दर आपणा रखाईआ। पूरी करनहारा आसन, आसन आसा इक्क हो जाईआ। निज घर आत्म रक्खे वासन, दिस किसे ना आईआ। शाहो भूप शाहो शबाशण, सच सुल्ताना वेस वटाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशन, गगन पतालां फेरा पाईआ। सच महल्ले साची रासन, हरिजन काया आप वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए दस दस मासन, मात गर्भ फेर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अगम्म अथाह बेपरवाह थिर घर वसे पुरख अबिनाश, इक्क इकल्ला एकँकार कर पसार, पंज तत्त डेरा लाईआ। पंज तत्त हरि जोत उजाला, नूरो नूर समाया। खेले खेल जगत निराला, वेद कतेब भेव ना राया। आदि शक्त जगत

ज्वाला, आदि निरँजण नाउँ धराया। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, थिर घर बैठा आसण लाया। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, एका शब्द उपाया। अनहद वज्जे साचा ताला, धुन आत्मक आप वजाया। सति सन्तोखी देवे माला, गुरमुखां तन पहनाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, काल महांकाल नेड़ ना आया। दिवस रैण होए रखवाला, अट्ठे पहर सेव कमाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, हरिजन साचे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्दी धार बंधाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि हरि आप चलाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, सति वस्त वखाईआ। चार वरन होए उज्यार, एका जोत करे रुशनाईआ। शाह सुल्तान दर भिखार, दर दरवेश भेव ना राईआ। हरिजन साचे लए उभार, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, आदि निरँजण करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप अपणा अंक समाईआ। आपणे रंग हरि रंग राता, रंगण रंग अपारया। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, खेले खेल अगम्म अपारया। चार कुन्ट वेख रैण अन्धेरी राता, निरगुण जोत करे उज्यारया। हरिजन देवे साची दाता, नाम सति दुआरे आप वरता रिहा। शब्द जणाई साची गाथा, जिस पुरख निरँजण आप उपा रिहा। मेल मिलावा त्रिलोकी नाथा, त्रैगुण बंधन तुड़ा रिहा। लहिणा देणा चुकावे मस्तक माथा, पूर्ब झोली पा रिहा। आप निभाए सगला साथा, दो जहानां वेख वखा रिहा। नाम चलाए साचा राथा, सोहँ नाउँ धरा रिहा। एका शब्द एका पूजा पाठा, चार वरनां आप जणा रिहा। अमृत सरोवर मारे ठाठा, कँवल नाभ आप उलटा रिहा। बज्रर कपाटी खोल्ह गाठा, दूई द्वैती कुण्डा लाह रिहा। दस्म दुआरे आए नाठा, बंक दुआरा इक्क सुहा रिहा। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अट्ठ साठा, गंगा गोदावरी वेख वखा रिहा। गेड़णहारा उलटी लाठा, मन मनुआ आप फिरा रिहा। मति मतवाली ना उठाए घाटा, बुध बबेकी आप जणा रिहा। जोती नूर इक्क ललाटा, सति सति आप वखा रिहा। लहिणा देणा चुकाए चौदां हाटा, चौदां लोक फेरा पा रिहा। खेले खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी स्वांग आप वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर उपा रिहा। एका नूर हरि गोबिन्द, सतिगुर रूप समाया। हरिजन मेटे सगली चिन्द, चिन्ता रोग रहे ना राया। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, आप आपणा भेव छुपाया। हरिजन उपजाए साची बिन्द, पूत सपूता नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण एका रंग रंगाया।

* ११ मग्घर २०१५ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर रुढ़की शहर *

नेड़न नेड़ डूँघा सागर, हरि हरि ताल सुहाया। अमृत आत्म काया गागर, पुरख आबिनाशी आप भराया। निर्मल कर्म करे उजागर, हरिजन साचे वेख वखाया। इक्क बणाए नाम सौदागर, साचा वणज इक्क कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। आत्म अन्तर साचा नीर, हरि हरि आप उपाया। गुरमुखां लाए बिरहों तीर, शब्द निराला इक्क लगाईआ। बज़र कपाटी रिहा चीर, दूई द्वैती मेट मिटाया। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, एका रंगण नाम रंगाया। एका धाम विखाए हस्त कीट, ऊँच नीच इक्क जणाया। सन्त सुहेला बन्नृणहारा बीड़, एकँकारा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाया। आत्म अन्तर साचा रस, हरिजन हरि भराया। हिरदे अन्दर आपे वस, आप आपणा ज्ञान दृढ़ाया। दर दुआरा वेखे नस्स नस्स, आप आपणा मन्दिर खोज खुजाया। कोटन कोट करे प्रकाश रवि ससि, जगत अन्ध अन्धेर गंवाया। अलक्ख निरँजण एका राह साचा दस्स, एका मार्ग रिहा वखाया। पंच विकारा देवे झस्स, दुरमति मैल मिटाया। दरस दखाए हस्स हस्स, सच द्वारी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटाया। आत्म अन्तर साचा मीत, हरिजन मेल मिलाईआ। शब्द सुणाए सुहागी गीत, अनहद ताल वजाईआ। करे कराए पतित पुनीत, पतित पावण नाउँ धराईआ। आदि जुगादी ठांडा सीत, अकल कला अख्वाईआ। हरिजन वसे आपे चीत, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत, चाल निराली इक्क वखाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद दिसे मसीत, काया मात इक्क सुहाईआ। वसे धाम जगत अनडीठ, दोए लोचण दिस ना आईआ। अबिनाशी करता आपे सुत्ता दे कर पीठ, मनमुखां मुख छुपाईआ। गुरमुख साचे अमृत आत्म साचा फल शब्दी शब्द खवाए मीठ, आप आपणे संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण वेख घर, घर मेला सहिज सुबाईआ। आत्म अन्तर शब्द उछाल, हरि हरि आप लगांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, धन ख़ज़ाना इक्क वखांयदा। चरन प्रीती निभे नाल, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। दो जहानां करे प्रितपाल, घर सागर पार करांयदा। मेट मिटाए काल महांकाल, धर्म राए ना दर वखांयदा। लक्ख चुरासी कट्ट जंजाल, सच दुआरे इक्क बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम, अन्तर आत्म ब्रह्म जणांयदा। अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान, हरिजन बूझ बुझाईआ। शब्दी शब्द सच निशान, घर मन्दिर आप सुहाईआ । धुनी नाद इक्क महान, अनहद सेव लाईआ। पंचम गायन दर परवान, पंचम वेख वखाईआ। तीजा नेत्र इक्क पछाण, गुरमुख वेख वखाईआ । आत्म सेजा हो प्रधान,

हरि बैठा बेपरवाहीआ। शब्द सिँघासण इक्क महान, पावा चूल ना कोई रखाईआ। सुरती शब्द एका दान, एका बंक सुहाईआ। एका राग सुणाए कान, लिखण पढ़ण विच ना आईआ। सर्ब जीआं घट जाणी जाण, घट मन्दिर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, उच्च महल्ल अटल मिनार, इक्क इकल्ला एकँकार, आदि पुरख जोत जगाईआ। जोत उजाला हरि गोपाला, एका एकँकारया। जुग जुग खेले खेल निराला, आदि अन्त गुर अवतारया। गुरमुखां वखाए काया धर्म सच्ची धर्मसाला, जोत निरँजण दीप जगा रिहा। तन पहनाए फूलण माला, नाम मणका मन फिरा रिहा। शब्दी शब्द वजाए साचा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क वखा रिहा। अगम्म अगम्मड़ा सुहाए अखाड़ा, अगम्म अगम्मड़ा धाम लगा ल्या। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा तोड़ जंजाला, मन मति बुध मोह चुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, नेत्र लोचण इक्क खुल्हा ल्या। नेत्र लोचण हरिजन खोल्ह, एका एक दरसाईआ। शब्द अगम्मी आपे बोल, आत्म ब्रह्म समाईआ। तोलणहारा पूरे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लक्ख चुरासी वजाए ढोल, नाम नगारा इक्क उठाईआ। भगतन मीता सद वसे कोल, दिवस रैण ना कोई जणाईआ। मनमुख जीव रहे अनभोल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पंच विकारा रचया घोल, मन मति जगत लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। मन्दिर घर उच्च महल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी बैठ इकल्ला, घर घर रिहा समाईआ। आपे वस्सया निहचल धाम अटला, भेव कोए ना पाईआ। वेखणहारा जला थलां, जगत जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। गुरमुख जोती आपे बला, शब्दी शब्द करे कुड़माईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण मला, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। भाग लगाए माटी खला, पंज तत्त वज्जे वधाईआ। त्रैगुण नाता छुट्टे पल्ला, माया मोह ना कोए सताईआ। पंच विकार ना करे हल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना करे हलकाईआ। जगत तृष्ना मेटे सल्ला, सांतक सति वरताईआ। हरिजन दुआरे आपे खला, दर दरवेशा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर थिर दरबारा, एका रूप समाया। आदिन अन्ता हरि अवतारा, जुग जुग वेस वटाया। भगतन मीता कर प्यारा, आप आपणे अंग लगाया। ठांडा सीता विच संसारा, अग्नी तत्त बुझाया। चरन कँवल बख्शे इक्क प्यारा, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाया। एका देवे नाम अधारा, सो पुरख निरँजण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे दर, दर दरवाजा आप खुल्हाया। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। देवणहारा साचा

दाजा, नाम वस्त झोली पांयदा। दो जहानां रक्खे लाजा, आप आपणी सेव कमांयदा। कलिजुग अन्तिम रचया काजा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जन भगतां अन्तिम मारे वाजा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। सति पुरख वड राजन राजा, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। खेले खेल देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। चार वरनां चढ़ाए एका राथा, एका मार्ग लांयदा। चिट्टा अस्व साचा ताजा, लोआं पुरीआं आप फिरांयदा। नाम वजाए सच रबाबा, एका तार हिलांयदा। वेख वखाए मक्का काअबा, दो दो आबा मेल मिलांयदा। आपे हक्को हक्क जनाबा, हक्क हकीकत फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, दर दरवाजा इक्क सुहांयदा।

* १२ मग्घर २०१५ बिक्रमी हरि की पौड़ी हरिद्वार गंगा घाट उत्ते लिख्त होई
अते अद्धे चरन गंगा विच छुहाए *

एकँकार अकल कल धार, आपणी कल वरताईआ। आदिन अन्ता हरि निरँकार, एका रूप समाईआ। ओंकारा वेख विचार, आदि पुरख वड्याईआ। पुरख निरँजण खेल अपार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। जोती जोत कर उज्यार, नूरो नूर रुशनाईआ। नर नरायण अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। अलक्ख निरँजण खेल अपार, अलक्ख अलक्खणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप आप उपाईआ। निरगुण जोत हरि उज्यारी, हरि हरि जोत जगाईआ। आदिन अन्ता इक्क अवतारी, एका रूप समाईआ। आदि शक्त खेल न्यारी, भगत वेख वखाईआ। जोधा सूर वड बलकारी, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दो जहानां पावे सारी, सच सिँघासण आसण लाईआ। पुरख अबिनाशण खेल अपारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता आप अख्वाईआ। आदिन अन्ता हरि भगवाना, एका एकँकारया। जोती नूर जोत महाना, जोती जोत जगा रिहा। आप आपणा कर पछाणा, आप आपणा वेस वटा रिहा। आप आपणा मेल मिलाणा, मेल विछोड़ा आप करा रिहा। आप आपणा संग रखाणा, सगला संग आप निभा रिहा। आप आपणा देवे दाना, दाता दानी नाउँ धरा रिहा। आप आपणा वखाए सच निशाना, सचखण्ड दुआरा आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता आदि निरँजण वेस वटा रिहा। आदि निरँजण हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग धार बंधांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, कन्त कन्तूहल नाउँ धरांयदा। आप आपणे दर होए मंगता, आप आपणी झोली अग्गे डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, जुग जुग वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि करतार, आपणा रूप वटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, जीवां जन्तां विच समाईआ। जल थल खेल अपार, धारा सिन्ध सागर आप वहाईआ। उत्भुज सेत्ज कर उज्यार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डेरा लाईआ । अंडज जेरज हो उज्यार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। शंकर दाता बण शंघार, अन्तिम मेट मिटाईआ। करोड़ तेतीसा इक्क अधार, एका हवन कराईआ। सुरपति वेखे दर द्वार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। रिखी मुनी पावे सार, मुनी मुनीश्र वड वड्याईआ। तपी तपीश्र दए तार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोग जुगीशर अगम्म अपार, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। आदिन अन्ता हरि निरँकार, निरगुण रूप समाया। एका जोती हो उज्यार, नूरो नूर समाया। वरभण्डी पावणहारा सार, निर्भय आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खलाया। शब्दी खेल हरि करतार, आपणा आप कराईआ। वज्जे डंक अगम्म अपार, आप आपणा रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता पार किनार, द्वापर मूल चुकाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, आप आपणा खेल खलाईआ। जोती जामा भेख न्यार, लेखा लिखण विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, अन्तर साचे जोत जगाईआ। वेख वखाए हरि ब्रह्मण्डा, चारों कुन्ट फेरी पाईआ। लक्ख चुरासी भेख पखण्डा, साचे दर ना कोई सुहाईआ। साध सन्त आत्म रंडा, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। माया मोह हँकार घमंडा, पंज तत्त करे लड़ाईआ। जूठ झूठ चण्ड प्रचण्डा, सृष्ट सबाई होई हलकाईआ। नाम ना पाए कोई वंडा, माया मोह रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, हरि साचा वेख वखानया। खेले खेल अगम्म अपारा, भेव ना आए राजे राणया। नाम खण्डा तेज कटारा, आप आपणे हथ्थ चमकानया। दो जहानां पावे सारा, वरभण्डी वेख वखानया। सृष्ट सबाई आई हारा, हरि हरि रूप ना किसे जाणया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, वेद पुराणी दिस ना आणया। खाणी बाणी होई हैराना, सतिगुर रूप ना किसे पछाणया। अञ्जील कुराना तुटा माणा, तीस बतीस ना कोए प्रधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल दो जहानया। दो जहानां हरि हरि वाली, एका एक अख्वांयदा। आपणे हथ्थां रक्खे ख़ाली, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाली, निरगुण जोती जोत जगांयदा। आपे बणे सच दलाली, हरिजन साचे मेल

मिलांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाली, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। फल लगाए काया डाली, जो जन दर्शन पांयदा। आत्म अन्तर साचा हाली, नाम साचा बीज बिजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खलांयदा। खेलणहारा हरि समरथ, एका रूप समाया। हरि की महिमा जगत अकथ, लेखा लिख्त विच ना आया। राम रामा रूप बेटा दसरत्थ, सज्जण सैण लए तराया। पावणहारा लक्ख चुरासी नथ्थ, शब्द डोरी हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। हरि नाउँ हरि निरँकार, निहकलंक अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। तीर्थ तट्टां वेख किनार, हरि भारत खण्ड करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। कलिजुग तेरा साचा मूल, हरि हरि आप चुकांयदा। ब्रह्मे अट्ठे नेत्र वेखे खोल्ह, चार मुख हिलांयदा। शिव शंकर हथ्थ झुलाए त्रशूल, बाशक तशका गल लटकांयदा। विष्नूं बरसणहारा फूल, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, आपणी खेल वरतांयदा। तीर्थ तट्टां वेख वखा, गंगा गोदावरी वेख वखांयदा। जमना सुरसती विच समा, सति सरूप समांयदा। अंगीकार आप करा, आपणे अंग लगांयदा। सुत दुलारा आप उपजा, शब्दी नाउँ धरांयदा। दोहां मेला दए करा, एका संगम जणांयदा। नाता तुट्टे भैण भ्रा, मीत मीता वेख वखांयदा। जगत जहानां रही डरा, एका भय चुकांयदा। आप आपणी गोद लए उठा, आप आपणे दर बन्द करांयदा। नीर जल अमृत चरन कँवल लए छुहा, चरन सरन सरन चरन इक्क वखांयदा। धरत धवल लहिणा देणा दए चुका, अमृत कँवली कँवल रखांयदा। ना कोई दूसर सके मुख चुआ, अग्न प्यास ना कोई बुझांयदा। ना कोई सके मात बचा, हरि साचा खेल खलांयदा। तट तीर्थ फेरा पा, घर अखण्ड वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अट्ठ सट्ठ सट्ठ अट्ठ आपणे लेखे लांयदा। उठ जाग जगत राणी, हरि साचा आप जगाया। लोकमात भरया पाणी, नेत्र नीर वहाया। अन्तिम मिल्या शब्द हाणी, घर साचा इक्क सुहाया। देवे पद इक्क निरबाणी, एका धाम बहाया। ख़ाली करे चारे खाणी, वरन बरन फोल फुलाया। सर्ब जीआं हरि जाण जाणी, जानणहार भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा मेल मिलाया। उठ जाग नेत्र खोल्ह, हरि साचा आप जगांयदा। सदा सुहेला आया कोल, दूर नेड़ ना कोई रखांयदा। तोलणहारा पूरे तोल, नाम कंडा हथ्थ उठांयदा। आपे तेरे अन्दर गया मौल, आप आपणा बाहर कढांयदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझांयदा। उठ जाग कर शृंगार, हरि साचा वेख वखांयदा। लोकमात हो त्यार, कलिजुग अन्तिम वक्त चुकांयदा। नैण कज्जल तिक्खी धार, सोलां कलीआं संग रखांयदा। एका अमृत देवे वार, नीर निराला इक्क वखांयदा। जोत ज्वाला पाए सार, आदि शक्त मंग मंगांयदा। पुरख अकाला ख़बरदार, जुग जुग वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणे रंग समांयदा। उठ राणी कर वेस, हरि साचे जोत जगाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन आदेस, दोए जोड़ बैठे सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति दए संदेश, एका अक्खर रसना गाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रवेश, हँ ब्रह्म आप हो जाईआ। लोकमात बण दरवेश, नौ सत फेरा पाईआ। नाल रलाए गणपति गणेश, शिव शंकर वड वड्याईआ। मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर हकीर रहे वेख, नेत्र नीर वहाईआ। राम सीता आपे भेख, आपे नाअरा लाईआ। दुर्गा अष्टमी खुल्ले केस, शाह अस्वार हरि आप हो जाईआ। आपे लावणहारा मेख, आपे दए उखड़ाईआ। आपे जोती नानक दस दस्मेश, दस धारा आप वहाईआ। कलिजुग अन्तिम किसे ना चले कोई पेश, मस्जिद मन्दिर गुरद्वार शिवदवाले मट्ठ बैठे धूंणीआँ ताईआ। साधां सन्तां आई हार, यति सति ना कोई जणाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोई विचार, जगत विद्या जगत पढ़ाईआ। कर्म धर्म ना पाए सार, वरन अवरनां होए जुदाईआ। करनी करन सर्ब करतार, करता पुरख नाउँ धराईआ। जोती जामा भेख अपार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक नरायण नर अवतार, आप आपणी रचन रचाईआ। अठसठ तेरा जगत किनारा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत जोत जगाईआ। गंगा नीर सागर सिन्ध, हरि हरि आप उपाया। आप उपाई आपणी बिन्द, आप आपणे विच मिलाया। साधां सन्तां जीआं जन्तां मेटे चिन्द, दूजा दर ना कोई वखाया। प्रगट होए गुणी गहिंद, गहर गम्भीर नाउँ रखाया। संग रलाए सुरपति राजा इन्द, अमृत बरख़ा इक्क लगाया। शिव शंकर कढ्ढणहारा जिंद, आप आपणा वेस वटाया। ब्रह्मा साथी सदा बख्शिंद, निउँ निउँ सीस झुकाया। विष्नूं वेता इक्क मृगिन्द, एका एक अख्वाया। भगवान खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग कर्म कमाया। आपे जाणे आदि अन्त, वेद कतेब ना किसे लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अठसठ फेरा पाया। अठसठ तेरा जगत दरवाज़ा, हरि साचा वेख वखांयदा। प्रगट हो ग़रीब निवाज़ा, आप आपणा मेट मिटांयदा। शब्द घोड़ा अस्व ताजा, चारों कुन्ट आप फिरांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, धुरदरगाही वेख वखांयदा। हरि द्वार तेरा रचया काजा, हरिसंगत संग रलांयदा। सुत शब्द मारे वाजा, सुत्ती सुरसती आप उठांयदा। अन्तिम वेले रक्खे लाजा, लजपति वेख वखांयदा। मेल मिलावा देस

माझा, पहली पोह सिफ्त सालांहयदा। नाल ल्याए अनहद वाजा, साचा सगन मनांयदा। लक्ख चुरासी खोल्हे पाजा, दूई द्वैती वेख वखांयदा। नाम चलाए इक्क जहाज़ा, चार वरनां आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा कर्म कमांयदा। गंगा नेत्र नीर रही पुकार, रो रो रही कुरलाईआ। कलिजुग अन्तिम मारी मार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। विभचार होए नारी नार, नर नरायण दिस ना आईआ। आत्म ब्रह्म ना पावे सार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। दुरमति मैल ना सके कोई उतार, पापां गंढु बंधाईआ। पंडत पांधे रहे विचार, हरि का रूप दिस ना आईआ। तिलक ललाटी होए ख्वार, औखी घाटी ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, गंगा घाट एका फेरा पाईआ। गंगा राणी मारे धाह, नेत्र नैण उग्घाड़या। तुध बिन कवण मलाह, लोकमात करे पार किनारया। पंडत पांधे जूठी झूठी देण सलाह, हरि का शब्द कोई ना पा ल्या। पुरख अगम्मा कर बैठा नांह, आप आपणा मुख छुपा रिहा। ना कोई बणाए साची माँ, चरन सीस ना कोई निवा ल्या। जूझ झूठ खादी गाँ, काम क्रोध संग रखा ल्या। निथाविआं देवे ना कोई थाँ, राज राजानां शाह सुल्तानां कालख टिक्का मस्तक ला ल्या। धर्म खण्ड ना कोई न्याँ, कर्मी कर्म ना कोई जणा ल्या। वरन बरन रहे भुला, एका मार्ग ना कोई दिसा ल्या। पंडत पांधे रहे कुरला, ग्रन्थी पन्थी हाहाकारया। अञ्जील कुराना चढ़या ता, अग्नी कुण्ड ना कोई बुझा रिहा। लक्ख चुरासी तेरे घाट रही नहा, पापां मैल ना कोई धुआ रिहा। साचे हथ्थ ना पकड़ी बांह, नाम वस्त ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेस वटा ल्या। सुण पुकार हरि निरँकार, लोकमात जोत जगाईआ। वेख वखाए हरि द्वार, हरि का भेव कोए ना पाईआ। साधां सन्तां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, निरगुण आपणे हथ्थ उठाईआ। अठ्ठां सठ्ठां लए अधार, गंगा गोदावरी चरन छुहाईआ। जमना सुरसती अद्धविचकार, बैठण मुख छुपाईआ। रवि ससि करन पुकार, रो रो नीर वहाईआ। साध सन्त ना पावण सार, तन लंगोट ना कोई बंधाईआ। माया ममता कर प्यार, साचे घाट बैठे डेरा लाईआ। तुटा यति ना रहे सति करन श्रृंगार, आलस निन्दरा ना कोई गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गंगा घाट वेख वखाईआ। गंगा तेरी जगत घाटी, हरि साचा वेख वखांयदा। वेखणहारा जोत ललाटी, अन्दर मन्दिर फेरा पांयदा। चौदां लोक एका हाटी, एका दर खुल्हांयदा। लक्ख चुरासी काया माटी, पंज तत्त रखांयदा। गुरमुख विरले बज़र कपाटी पाटी, जो जन दर्शन हरि पांयदा। कोटन

कोट बैठे पाठी, दिवस रैण रसन हिलांयदा। कोटन कोट रसना रहे रस चाटी, आत्म रस ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरी जाग तेरा नेत्र खोल्, शब्द अगम्मा आपे बोल, लोकमात खुल्हांयदा। गंगा उठी उठ लए अंगड़ाई, हरि साचा वेख वखाणया। एका करे चरन सरनाई, दूजा दर ना कोई पछाणया। साचे घर वज्जी वधाई, होया आप मेहरबानया। आदि अन्त ना होए जुदाई, जुग जुग वेख विखानया। नीर नीर विच गया समाई, नीर नीरां आप समाणया। जोती जोत जोत खिचाई, आप आपणा खेल खलानया। औंदी जांदी किसे दिस ना आई, ना कोई रूप वटानया। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ आप वरताई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहानया। जगत किनार साचा तट्ट, हरि हरि वेख वखानया। जगत खेल बाज़ीगर नट, अन्तिम मूल चुकानया। कोटन कोट सूरया नरायण पाणी रहे झट्ट, हरि का भाणा किसे ना मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अन्तिम देवणहारा डन्नया। गंगा नीर करे अरदास, दोए जोड़ करे निमस्कारया। सद वसां प्रभ तेरे पास, दूजा दर ना कोई वखा ल्या। लेखे लग्गे जगत स्वास, लोकमात फेरा पा ल्या। पार किनारा पृथ्मी आकाश, गगन पताल ना कोई सुहा ल्या। आदि अन्त ना होए विनास, जोती जोत जोत डगमगा ल्या। पूरी करनहारा आस, जुग जुग वेस वटा ल्या। लेखे लग्गे चम्यार रविदास, अन्तिम संग निभा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा बिरध रखा ल्या। उठ रविदास कर त्यारी, हरि साचे खेल खलाईआ। वेखे तेरी माँ प्यारी, आप आपणा हथ्थ उठाईआ। कलिजुग अन्तिम होए ख्वारी, ना धीरज कोई धराईआ। चार कुन्ट हाहाकारी, जीव जन्त रहे कुरलाईआ। साध सन्त ना पायण सारी, बैठे मुख शरमाईआ। एका जगे जोत अपारी, आदि पुरख निरँजण एकँकारी, अकल कला वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत लहिणा जुग जुग देणा, भगत भगती झोली पाईआ। रविदास चुमारा मंगे मंग, अग्गे अपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी बैठा आत्म सेज सच पलँघ, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चारों कुन्ट धारा गंग, दिवस रैण आप वहाईआ। अनहद वजाए सच मृदंग, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। जन भगतां कट्टणहारा भुक्ख नंग, जुग जुग वेख वखाईआ। सदा सुहेला वस्सया संग, एका धाम वड्याईआ। अन्तिम लहिणा चुक्के विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी दया आपे रिहा बंधाईआ। तीर्थ तट जगत किनारा, हरि हरि वेख वखा रिहा। आपे जाणे आपणी धारा, आप आपणे रंग रंगा रिहा। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो विच संसारा, निहकलंका डंक वजा रिहा। शब्द

खण्डा तेज कटार, राज राजाना शाह सुल्ताना करे ख्वारया। निर्मल नीर ना कोए वखाना, आत्म सीर आप पछाणया। बस्त्र चीर पार कराणा, शाह हकीर एका जाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखणहारा साचा दर, घर साचा दर परवानया। गंगा हरि पाई पेट, आपणा मुख उग्घाड़या। जुग जुग बणे खेवट खेट, जुग जुग बन्ने ला रिहा। शब्द सुत बेटी बेट, एका धाम बहा रिहा। लक्ख चुरासी तपे अग्नी जेठ, वा तत्ती हाढ़ वगा रिहा। कोई ना बैठे साया हेठ, सिर हथ्थ ना कोई टिका ल्या। होए ख्वारी वड वड सेठ, राज राजान ना कोई विचारया। गुरमुख विरले हरि हरि साचा जिस जन रक्खया चेतन्न चेत, चितवित ठगौरी ना पा ल्या। काया वेखे साचा खेत, अमृत मेघ बरसा ल्या। दरस दखाए नेतन नेत, आत्म ब्रह्म जणा ल्या। रविदास चुमारा आपे वेख, आप आपणा संग निभा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत जागरत जोत इक्क जगा ल्या। रविदास तेरा अन्तिम लहिणा, हरि हरि मूल चुकाया। गंगा पाया साचा गहिणा, तन श्रृंगार कराया। अन्तिम वेखे तीजे नैणां, दोए नैणां बन्द कराया। धाम इक्क्वे एका बहिणा, एका रंग समाया। आपे होए साक सज्जण सैणा, मात पित भाई भैणा आप हो जाया। कलिजुग जूठे झूठे वहिण वहिणा, जीव जन्तां दए रुढ़ाया। लाड़ी मौत खाए डैणा, राए धर्म दए सजाया। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख विरले मात रहिणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाया। घट घट मन्दिर मस्जिद पावे सार, गुरुदुआरा वेख वखांयदा। काया मन्दिर हो उज्यार, दीवा बाती इक्क जगांयदा। दीवा बाती घर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना गांयदा। पार कराए पृथ्मी आकाश, त्रै त्रै डेरा लांयदा। आदि जुगादि ना होए विनास, जुग जुग खेल खलांयदा। पूरी करनहारा आस, रविदास वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत विचोला सोहँ ढोला शब्द बोला एकँकार लोकमात कर उज्यार, आदि निरँजण एका जोत जगांयदा। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, एका रूप समाया। वेखण आया जगत तमाशा, जीआं जन्तां दिस ना आया। साचे मन्दिर पावे रासा, गोपी काहन आप नचाया। जन भगतां देवे धुर धरवासा, आत्म ब्रह्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहारा वर, हरिसंगत रंग रंगाया। हरिसंगत हरि साची जोड़, जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। एका चढ़या साचे घोड़, शब्द अखाड़ा इक्क लगांयदा। दाता दानी धुरदरगाही आया दौड़, लोकमात वेख वखांयदा। लहिणा देणा चुक्के हरि की पौड़, हरि का पौड़ा इक्क वखांयदा। पूत सपूता ब्रहमण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत किले डेरा लांयदा। ना कोई जाणे मार्ग सौड़,

८६१
०७

भीड़ी गली ना पार करांयदा। वेखणहारा रस मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्त देवे संगत वर, नाम दान झोली पांयदा। हरि द्वार वक्त चुकाया, हरि हरि वड्डी वड्याई। सतिजुग साचा मार्ग लाया, सोहँ नाम जपाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराया, वेद पुराण ना कोई गाई। विष्नूं वंसी रूप वटाया, होए सर्ब सहाई। भगवन जोती जोत जगाया, अट्ठे पहर रुशनाई। वरन गोती ना कोए रखाया, एका ब्रह्म जणाई। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाया, आप आपणी बूझ बुझाई। देवी देव सरन बहाया, बैठे सीस झुकाई। ब्रह्मा शिव रहे ध्याया, आठे पहर लिव लाई। शंकर वरनां शंकर बरनां खेले खेल हरन फरना, एकँकारा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि की बात हरि आपे बूझ बुझाई। हरि द्वार तेरा मिट्ठा रस, हरिजन झोली पाया। धुरदरगाही वेखे नस्स, सम्मत वीह सौ पन्दरां बिक्रमी लेख लिखाया। वीह सद मारे तीर कस, बिर्कम बिक्रमी धीर धराया। जगत विकारा रिहा झस्स, पंचम मेल मिलाया। मुख शरमाइन रवि ससि, बैठे पर्दा पाया। माया राणी रही डस्स, अग्नी तत्त वखाया। गुरमुख विरले हिरदे रिहा वस, जिस जन आपणी बूझ बुझाया। एका मार्ग रिहा दस्स, चार वरन सच्ची सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जोत जोत करे रुशनाया। जोती नूर हरि उजाला, हर घट वेख वखाईआ। दीनां बंधप दीन दयाला, शब्द मृदंगा आप वजाईआ। संग रखाए काल महांकाला, दो जहानां फेरी पाईआ। सो पुरख निरँजण बणे दलाला, लोकमात वज्जे वधाईआ। इक्क वखाए काया सच्ची धर्मसाला, हरि आपणा डेरा लाईआ। अमृत आत्म प्याए सच प्याला, निझर धार प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा चुक्के डर, जगत नीर गया सीर, हरि साचे विच समाईआ। हरिसंगत हरि हरि वड्याई, हरि हरि बूझ बुझांयदा। एका शब्द होए कुड़माई, एका दर सुहांयदा। एका राग रिहा सुणाई, एका काहन अल्हांयदा। एका मंगल रिहा गाई, एका धुन उपजांयदा। एका कुण्डा रिहा लाही, बज्जर कपाटी आप तुड़ांयदा। आत्म सेजा इक्क विछाई, सच सिँघासण आप सुहांयदा। पुरख अबिनाशण खेल खिलाई, खेलणहारा दिस ना आंयदा। घनकपुर वासी भेव ना राई, आप आपणा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, पहली पोह खुल्ह्हे दर, सति प्रसादि सति सति सति उत्पत ब्रह्म मति एका तत्त रखांयदा। सच शब्द सच प्रसादि, सच सच आप वरताईआ। सच गुर आदि जुगादि, सच सुच्च वेख वखाईआ। सच सुच्च देवणहारा दाद, सच सुच्च झोली पाईआ। सच सुच्च वजाए नाम नाद, निरगुण आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। खेले खेल विच ब्रह्माद,

पुरीआं लोआं सच वरताईआ। गंगा तेरा रसन स्वाद, जल धारा आपे लेखे लाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, सो पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। कलिजुग मेट मिटाए वाद विवाद, सतिजुग साचा राह चलाईआ। किसे दिस ना आए सन्त साध, चारों कुन्ट बैठे धूंणीआँ ताईआ। गुरमुख हरिजन हरिभगत आत्म अन्तर रहे अराध, जगत बसन्तर तन बुझाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म आवे सच स्वाद, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। हरिजन मेला माधव माध, मिल्या मेल साचे माहीआ। साचे घर सच प्रसादि, एका गुरमुख गुरसिख हरि हरि झोली आप भराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्मत वीह सद बिक्रमी हो उज्यार, खेले खेल अगम्म अपार, सोलां सोलां सोलां राह तकाईआ।

८६३ ०७

* १३ मग्घर २०१५ बिक्रमी काली कमली वाले दे डेरे महंत नाल बचन रिखी केश *

आत्म अन्तर एका भुक्ख, हरि नामे मंग मंगाईआ। जगत तृष्ना मिटे दुःख, हउमे रोग ना कोई सताईआ। सच दुआरे साचा सुख, एका ब्रह्म जणाईआ। उज्जल होए जगत मुक्ख, दरगहि साची मिले थाँईंआ। लेखे लग्गे मानस जन्म मनुख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। मात गर्भ ना होए उलटा रुख, दस दस मास ना कोए सजाईआ। हरिजन लग्गी एका भुक्ख, साचा सन्त दए मिटाईआ। आत्म भुक्ख तृष्न प्यास, हरिजन आप लगाईआ। प्रभ मिलण दी साची आस, कोई सन्तन दए मिलाईआ। लेखे लग्गे रसन स्वास, दिवस रैण रहे चलाईआ। पार कराए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल इक्क सुहाईआ। सदा सुहेला सद वसे पास, दिवस रैण ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, मेल मिलावा साचे घर, हरि सन्तन वड वड्याईआ। आत्म अन्तर जगत रोग, हउमे गढ़ बणाया। सन्तन मेला धुर संजोग, आदि जुगादी मेल मिलाया। कवण वखाए दरस अमोघ, नेत्र नैण इक्क खुल्हाया। कवण चुगाए साची चोग, अमृत आत्म जाम प्याया। कवण लगाए साचा भोग, कवण साची सेजा आसण लाया। कवण सहिसा मिटाए जगत विजोग, आवण जावण मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि हरि सन्तन विच समाया। जगत भुक्ख जगत बिल्लाए, तृष्ना तृप्त ना कोई कराईआ। चारों कुन्ट होई हलकाए, साची रेख ना कोई जगाईआ। नाम निधान ना कोई झोली पाए, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। सच निशान ना कोई झुलाए, सचखण्ड ना कोई वखाईआ। निरगुण जोती ना कोई मिलाए, वासना खोटी ना कोई कढाए, ज्ञान ध्यान रहे दृढ़ाईआ। साची चोटी ना कोई चढ़ाए, बज़र कपाटी ना कोई तुड़ाईआ। धीरज सति लंगोटी ना कोई बंधाए, कोटन कोट बैठे धूंणीआँ ताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन

८६३ ०७

वेखे साचा घर, घर साचे डेरा लाईआ। जगत तृष्ना आदि जुगादि, पंज तत्त करी कुड़माईआ। हरि सन्त बुझाए जगत प्यास, अमृत मेघ बरसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी करे तरास तरास, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। कवण द्वार मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन कवण नचाईआ। कवण कराए अन्धेरी कुन्दर इक्क प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोत निरँजण करे दास, अनहद सेवा लाईआ। हरि सन्तन वसे सदा पास, अलक्ख अगोचर अभेद भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। कमली वाला हरि हरि रूप, हरि हरि रंग समाया। पुरख अबिनाशी शाहो भूप, कवण दुआरे डेरा लाया। एका जाणे सति सरूप, निरगुण नूर करे रुशनाया। शब्द पंगूढ़ा रिहा झूट, सच सिँघासण इक्क वखाया। सन्त सुहेला कवण दुआरे आत्म रस रिहा लूट, नेत्र नैण लोचण इक्क खुलाया। लहिणा देणा चुक्के जूठ झूठ, पंच विकारा नेड़ ना आया। साचा सज्जण हरिजन जन हरि आपे जाए तुठ, जुग विछड़े जगत लए मेल मिलाया। लुकया रहे ना कोई गुझ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूँघी कन्दर वेख वखाया। रिखी केश नर नरायण पुरख अगम्मा, ना मरे ना कदे जम्मा, आदि जुगादि जुग जुग जाणे आपणा कम्मा, हरि सन्तन विच समाया। काली कमली काली धार, हरि नूरो नूर समाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। जलां थलां पावे सार, जगत आश्रम वेख वखाईआ। अवण गवण वस्सया बाहर, निहकर्मी नाउँ धराईआ। साची सरन इक्क द्वार, साचे घर वज्जी वधाईआ। गंगा तेरी ठंडी धार, निर्मल धार रही वहाईआ। हरिजन विरला पावे सार, जिस जन आत्म ब्रह्म जणाईआ। अबिनाशी करता करे विचार, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, तीर्थ तट्टां फेरी पाईआ। साधां सन्तां वेखे मीत मुरार, चौदां लोक फोल फुलाईआ। लोआं पुरीआं खेल अपार, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप जगाईआ। रवि ससि करन पुकार, धरत धवल रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला साचे दर, दर साचा इक्क सुहाईआ।

* १३ मग्घर २०१५ बिक्रमी सतिसंग हाल रिखी केश *

निरगुण जोत हरि निरँकार, नूरो नूर समाया। आदि पुरख अगम्म अपार, पारब्रह्म नाउँ धराया। आदि निरँजण खेल अपार, खेलणहारा दिस ना आया। एकँकारा कर आकार, अकल कला अख्वाया। आदि शक्त हो उज्यार, रूप अनूप आप दरसाया। सति पुरख निरँजण भेख अपार, भेखाधारी भेख वटाया। रूप रंग ना कोई पावे सार, लेखा लिख्त विच ना

आया। थिर घर बैठा कर पसार, आप आपणा दर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आप अख्वाया। आदि पुरख हरि अबिनाश, एका एकँकारया। सर्ब घटां घट रक्खे वास, निरगुण जोती जोत जगा रिहा। आप आपणा कर प्रकाश, आप आपणा वेख वखा रिहा। आप आपणी पावे रास, आपणा मण्डल आप सुहा रिहा। आप आपणे वसे पास, दूजा दर ना कोई वखा ल्या। आप समाए पृथ्मी आकाश, गगन पतालां डेरा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता इक्क अख्वा रिहा। अबिनाशी करता पुरख अगम्म, एका जोत जगाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल खलाईआ। पवण स्वासी ना ल्ए दम, पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, आलस निन्दरा विच ना आईआ। ना कोई तृष्ना भुक्ख तम, ना कोई मोह वधाईआ। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा आप अख्वाईआ। एकँकारा मूर्त अकाल, एका रूप दसाया। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध आप अख्वाया। सर्ब जीआं करे प्रितपाल, प्रितपालक नाउँ धराया। थिर घर बैठ सच्ची धर्मसाल, आप आपणा खेल खलाया। जोती दीपक एका बाल, इक्क प्रकाश रखाया। आपणी सुरत आप संभाल, आपे वेख वखाया। आप आपणा तोड़ जंजाल, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणी कर कर भाल, हरि आप आपणी बूझ बुझाया। आप आपणा बण दलाल, आप आपणी सेवा आप कराया। आप आपणी चले चाल, चाल अवल्लड़ी आप रखाया। आप आपणा सुहाए ताल, अमृत ताल आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, एका एक अख्वाया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण भेव ना राईआ। थिर घर बैठ सच्चे दरबार, आप आपणा मता पकाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपार, शाहो भूप बैठा आसण लाईआ। ना कोई दिसे चोबदार, ना कोई बणत बणाईआ। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणे अंक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वस्सया आपणे घर, आप आपणी रचन रचाईआ। साचा घर दर दरबारा, हरि हरि आप सुहांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, आप आपणी कल वरतांयदा। रूप अनूप अगम्म अपारा, अलक्ख अलक्ख ना कोई वखांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आप आपणा सगन मनांयदा। आप आपणा बण भतारा, नारी रूप आप हो जांयदा। आप आपणा खेले खेल न्यारा, वेखणहारा दिस ना आंयदा। शब्द सुत उपजे इक्क दुलारा, जोती माता झोली पांयदा। धुरदरगाही हरि हरि लाड़ा, धर्म अखाड़ा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता वेख वखांयदा। अकाल पुरख आदि अन्त, एका कल वरताईआ। खेले

खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग दए वड्याईआ। आप आपणी माया पाए बेअन्त, आप आपणा पर्दा लाहीआ। आप चलाए आपणा मंत, आपणे शब्द रक्खे वड्याईआ। आपे नारी आपे कन्त, आपे सुहञ्जणी सेज हंढाईआ। आपे चाढ़े रंग बसन्त, वेखणहार आप हो जाईआ। खेले खेल जुगां जुगन्त, जग करता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे दर वड्याईआ। साचा घर पुरख अकाल, एका एक समाया। थिर घर वेख सच्ची धर्मसाल, निरगुण जोत करे रुशनाया। ना कोई काल ना महांकाल, ना कोई भय रखाया। ना कोई दिसे होर जंजाल, माया मोह ना कोई बंधाया। आपणी करे आप प्रितपाल, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा शब्द देवे वर, शब्द शब्दी आप उपाया। शब्द सुत हरि दुलार, घर साचे वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, दे मति रिहा समझाईआ। एका तत्त हरि विचार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई आकार, रक्त बूंद ना कोई टिकाईआ। सति सति आप करतार, सति सति सरूप समाईआ। आप आपणी किरपा धार, आप आपणी रचन रचाईआ। पूत सपूता होया ख़बरदार, आप आपणा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सुत देवे वर, शब्द शब्द झोली पाईआ। शब्द सुत वर घर पाया, हरि साचे शब्द जणाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचाया, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। निरँकार तेरा वेस वटाया, आप आपणी बूझ बुझाईआ। वाली दो जहाना आप हो जाया, निरगुण सरगुण वेस कराईआ। निराकार साकार समाया, सगली चिन्त मिटाईआ। दोए धारा भेव ना राया, बैठा मुख छुपाईआ। विष्नूं रूप आप हो जाया, आप आपणा नैण उग्घड़ाईआ। कँवल कँवला धार वहाया, एका एक महिकाईआ। अमृत जल आप भराया, दिस किसे ना आईआ। साचा वेता आप उठाया, पारब्रह्म ब्रह्म हो जाईआ। चारे मुख खोल्ह वखाया, जगत वड्डी वड्याईआ। चारे वेद लेख लिखाया, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका शब्द नाउँ धराया, ब्रह्मण्डां गया समाईआ। पंज तत्त तेरा नाउँ धराया, आप आपणी कर कुड़माईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश डेरा लाया, सगला संग निभाईआ। मन मति बुध आप हो जाया, निरगुण वस्त झोली पाईआ। नौ दुआरे दर खुल्हाया, जग वासना आप भराईआ। घर विच घर डेरा लाया, आप आपणा मुख छुपाईआ। दस्म दुआरी नाउँ धराया, मानस मानुख विच समाईआ। बज़र कपाटी बन्द कराया, आपणी सिला अग्गे डाहीआ। चौदां हाटी वेख वखाया, त्रैलोक वज्जे वधाईआ। लोआं पुरीआं खेल खलाया, आप आपणी रचन रचाईआ। आप आपणा भेख वटाया, आप आपणा रूप दरसाईआ। शंकर शिव धार चलाया, जटा जूट सहिज सुबाईआ। बाशक तशका गल लटकाया, एका रूप दरसाईआ। त्रैगुण मेला मेल मिलाया, त्रै त्रै दर जणाईआ। पुरख

८९६
०७

अकाल खेल खलाया, आप आपणा बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त नाम तूरत, एका शब्द रिहा चलाईआ। शब्द तूरत साचा नाद, नादी नाद वजाया, आप सुणाए विच ब्रह्माद, पारब्रह्म वड्आया। इक्क जणाई बोध अगाध, ब्रह्मा भेव ना राया। आप आपणा देवे साध, आप आपणा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त आप हो जाया। आदि अन्त हरि करतार, एका अंक अख्वाया। खेले खेल अपर अपार, आप आपणा भेव छुपाया। वंडे वंड जगत संसार, लोकमात वेख वखाया। वरभण्डी कर त्यार, ब्रह्मण्डी फेरा पाया, जेरज अंडी कर प्यार, उत्भुज सेत्ज आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलाया। खेलणहारा हरि समरथ, एका एक अख्वाईआ। एक चलाए आपणा रथ, जुग जुग वेस वटाईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, हर घट बैठा बेपरवाहीआ। आपे सृष्ट सबाई रिहा मथ, आपे लए उपाईआ। आपे देवणहारा साची वथ्थ, आप आपणा नाउँ धराईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाईआ। साची वंड वंडणहार, एका एक अख्वांयदा। रूप अनूप शाहो भूप सच्ची सरकार, सच सिँघासण लांयदा। थिर घर सुहाए इक्क द्वार, बंक द्वारी वेख वखांयदा। निर्मल जोती कर उज्यार, प्रकाश प्रकाश टिकांयदा। रवि ससि करन निमस्कार, तारा मण्डल सीस झुकांयदा। ब्रह्मा वेता बण भिखार, आप आपणी झोली डांयदा। शिव शंकर हथ्थ फड़ कटार, जगत सिँघारा नाउँ धरांयदा। विष्नूं वंसी कर प्यार, जीआं दाता आप हो जांयदा। भगवन मेला विच संसार, हरिजन विरला पांयदा। सतिजुग साचा खोल्ह भण्डार, एका ब्रह्म जणांयदा। वरन बरनां ना कोई अधार, ऊँच नीच ना कोई रखांयदा। राउ रंक ना कोई सिक्दार, दर दर भिक्ख ना कोई मंगांयदा। सो पुरख निरँजण हो उज्यार, हँ ब्रह्म आप हो जांयदा। बंक बंक ना कोई गढ़ हँकार, माया ममता ना कोई रखांयदा। साची संगता कर प्यार, साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। सतिजुग साचा कर प्रधान, हरि साची बणत बणाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। एका एक जोग मन्त्र विद्वान, एका वेख वखाईआ। एका चरन एका कँवल ध्यान, एका बूझ बुझाईआ। एका पवण इक्क मसाण, एका हवन कराईआ। एका अमृत आत्म पीण खाण, दूई वस्त ना कोई टिकाईआ। एका शब्द बोध अगाधी सच बिबान, एका हरिजन साचे लए उठाईआ। एका राग सुणाए कान, धुनी आत्मक नाद आप वजाईआ। एका एक करे पछाण, एका हथ्थ रक्खे वड्याईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, आप आपणी बूझ बुझाईआ। एका गोपी एका काहन, एका इष्ट मनाईआ। एका धर्म इक्क निशान, एका एक झुलाईआ।

एका शाह इक्क सुल्तान, एका ताज टिकाईआ। एका नुहावन जीव जन्त सारे नुहान, दुरमति मैल ना कोए गंवाईआ। एका पद गुरमुख पाण, चौथे पद समाईआ। तीजा नेत्र आप खुल्हाण, एका रंग रंगाईआ। दूजा भेव ना कोई जहान, ना कोई वंड वंडाईआ। एका जिया एका दानी दान, एका दाता झोली पाईआ। एका करनहारा पछाण, आप आपणी कल वरताईआ। सतिजुग साचे हो मेहरवान, आप आपणा रूप दरसाईआ। वार अठारां नौंजवान, आप आपणा रंग रंगाईआ। अन्तिम अन्त जिस जन मिले जाणी जाण, लोकमात मिले वधाईआ। गण गधंरब देवत सुर सारे गाण, एका रसन हिलाईआ। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, आप आपणा मुख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे विच समाईआ। सतिजुग साचा सुत उपजा, हरि हरि गोद उठाया। त्रेता तेरी पकड़े बांह, तेरा रूप अख्वाया। इक्क जपाए साचा नाँ, नाम नामा आप हो जाया। रुत्त सुहाई पिता माँ, पूत सपूता गोद उठाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवाया। सत्तां दीपां जोत जगा, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, आप आपणा वेख वखाया। लक्ख चुरासी करे न्याँ, सच सुनेहड़ा आप सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग आपणी कल वरताया। त्रेता तेरी कल धार, आपणी कल वरताईआ । राम रामा रूप अपार, राम राम विच समाईआ। तोड़णहारा गढ़ हँकार, शस्त्र बाण इक्क उठाईआ। नाम खण्डा अपर अपार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। साधां सन्तां करे प्यार, एका बूझ बुझाईआ। आदिन अन्ता कर आकार, एकँकार वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरी अन्तिम वार, आपे फोल फुलाईआ। त्रेता तुट्टा गढ़ हँकार, घर साचे वज्जे वधाईआ। लहिणा देणा छुट्टा विच संसार, दूसर पल्लू ना अग्गे डाहीआ। मिल्या मेल मीत मुरार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। खेले खेल खेलणहार, जीव जन्त भेव ना राईआ। आदि अन्त इक्क अवतार, एका एक अख्वाईआ। सन्तन मीता हरि निरँकार, इष्ट देव आप हो जाईआ। सृष्ट सबाई पार किनार, जो जन रहे ध्याईआ। नेत्र लोचण नैण दरस अपार, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। सच वखाए इक्क द्वार, घर बैठा बेपरवाहीआ। अलक्ख निरँजण जोत उज्यार, सति पुरख आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता देवणहारा वर, द्वापर वज्जे वधाईआ। द्वापर तेरा हरि मृदंग, एका एक वजाया। साँवल सुन्दर आपे रंग, आप आपणा वेस वटाया । आपे वेखे धार गंग, आप आपणा चरन छुहाया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, मोहण माधव रूप वटाया। आपे वसे अंग संग, सगला संग निभाया। आप आपणी मंग आपे मंग, आपणी झोली अग्गे डाहया। एका अस्व कस तंग, लोआं पुरीआं आप फिराया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेल मिलाया। पुरख अगम्मा हरि निरँकार, आपणा खेल खलांयदा। जुगा जुगन्तर बन्ने धार, जोती जामा भेख वटांयदा। पंज तत्त कर उज्यार, त्रैगुण संग निभांयदा। निरगुण सरगुण एका धार, एका वेख वखांयदा। एका जोत कर उज्यार, एका ज्ञान दृढ़ांयदा। एका खण्डा नाम दो धार, आपणे हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मण्डां खोजे पावे सार, जेरज अंडां आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा वेखे घर, नौ खण्डां पृथ्मी सत्तां दीपां वेख वखांयदा। नौ खण्ड सत्त दीप हो उज्यार, आप आपणी कल वरतांयदा। राज राजाना कर ख़बरदार, रण भूमी खेल खलांयदा। सन्तां देवे नाम अधार, आत्म ब्रह्म दृढ़ांयदा। भगतन मेला अपर अपार, आप आपणा दरस दखांयदा। एका शब्द इक्क अधार, एका रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा देण चुकांयदा। लहिणा देण आप चुकाए, हरि हथ्थ वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखाए, कलिजुग वज्जी वधाईआ। शब्द गुर ढहि पए सरनाए, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाहे, दूई द्वैत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा हरि, एका एक आप हो जाईआ। कलिजुग मंगी मंग अपार, दोए जोड़ करे निमस्कारया। जूठ झूठ कर प्यार, भरया इक्क भण्डारया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, एका तत्त विचारया। माया ममता साची नार, आप आपणा तन शृंगारया। मन मति बुध होए जगत मुटयांर, जोबन वेख वखा ल्या। गुरमति ना कोई पाए सार, धीरज धीर ना कोए धरा ल्या। जीव जन्त ना कोई अधार, सच निशान ना कोई जणा रिहा। लक्ख चार हज़ार बत्ती उतरे पार, गेड़ा गेड़ दए मुका रिहा। पंचम पंचम खेल अपार, पंचम सन्तन रंग रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखा रिहा। पारब्रह्म हरि बेअन्त, आपणी दया कमांयदा। महिमा जुग जुग अगणत, भेव कोई ना पांयदा। आप उपाए गुरमुख विरले सन्त, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वेखे घर, दर दरबान फेरी पांयदा। कलिजुग अन्तिम बोध ज्ञाना, एका ब्रह्म जणाया। इष्ट जीव भेव खलाणा, एका रूप समाया। हँ ब्रह्म इक्क टिकाणा, एका रंग रंगाया। ओअँ सोहँ खेल महाना, खेलणहार आप हो जाया। वेख वखाए दो जहानां, दो जहानां फेरी पाया। नेत्र नैण इक्क ज्ञाना, एका राह चलाया, चौथा पद पद निरबाणा, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। हरि सन्तां देवे हो मेहरवाना, आप आपणी दया कमाया। कोई चढ़ ना सके जगत विद्वाना, जगत विद्या हथ्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, कलिजुग तेरा रूप वटाया। कलिजुग खेले खेल हरि जगदीशा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप उपाए

मूसा ईसा, आपणी धार चलाईआ। कोई ना करे प्रभ दी रीसा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। लोकमात चलाए इक्क हदीसा, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग साचा खोज खुजाईआ। ईसा मूसा कर त्यार, चार यारी वेख वखांयदा। मुहम्मद मुहम्मदी हो उज्यार, नूरो नूर उपांयदा। अद्धविचकारे बैठा रिहा ललकार, आप आपणी गणत गणांयदा। अल्ला राणी कर प्यार, मुहम्मद सुरती आप प्रनांयदा। धुर दी बाणी इक्क अपार, कलमा नबी सुणांयदा। मुकामे हक्क सांझा यार, ख़लक ख़ुदाए इक्क वखांयदा। ऐनलहक्क एका धार, एका रूप समांयदा। निरगुण रूप पावे सार, सो पुरख निरँजण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संग मुहम्मद मता पकांयदा। इक्क मुहम्मद हो उज्यार, आप आपणा रूप पछाणयां। तीस बतीसा लेख लिखार, एका पद समझानयां। छत्र सीस झुल्ले संसार, आप आपणे सीस उठानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल रिहा कर, भेव अभेदा भेव छुपानया। मेहरबान हरि निरँकार, मुहम्मद आख सुणाईआ। मंगे मंग धुर दरबार, दर बैठा बेपरवाहीआ। मुहम्मद ढहि पया द्वार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। चौदां तबकां हो उज्यार, तेरा नूर अलाहीआ। चौधवीं सदी होणा ख्वार, ना धीरज कोई धराईआ। मक्का काअबा ल्ए उभार, जगत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात दए वर, एका कलमा रिहा पढ़ाईआ। एका कलमा आप पढ़ा, आपणी दया कमाईआ। निरगुण नानक जोती आप जगा, पंज तत्त गया समाईआ। जोती दीपक कर रुशना, एका बूझ बुझाईआ। साची चोटी आप चढ़ा, आपे वेख वखाईआ। वासना खोटी आप कढा, एका नाम दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा शब्द सुणाईआ। शब्द सुनेहड़ा हरि मेहरबान, नानक तत्त सुणाया। आपे दर दर परवान, निरगुण निरगुण वेख वखाया। जोती जोत जगे महान, प्रकाश प्रकाश समाया। पारब्रह्म प्रभ देवे ज्ञान, नाम सति इक्क दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाया। नानक जोती हरि उज्यारी, लोकमात वज्जी वधाईआ। खेले खेल आप निरँकारी, निरगुण धार विच टिकाईआ। शब्द सुनेहड़ा अपर अपारी, दिवस रैण जणाईआ। मेटी जाए जीव हँकारी, साधां सन्तां मेल मिलाईआ। आत्म वेखे तन क्यारी, फुल्ल फुलवाड़ी इक्क महिकाईआ। कलिजुग जीव होए ख्वारी, धीरज धीर ना कोई धराईआ। नाम सति करे वणज वपारी, एका बूझ बुझाईआ। अन्तिम ढहि पया द्वारी, तेरा नाउँ जीव कोए ना गाईआ। आदि पुरख खेल अपारी, आप आपणा शब्द अल्लाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सारी, आप आपणी कल वरताईआ। निहकलंक प्रगट होए नर नरायण हरि अवतारी, जूठ झूठ दए मिटाईआ। चार वरन सुहाए एका बंक द्वारी,

दर दरवाजा आप खुल्हाईआ। राज राजान शाह सुल्तान बणन भिखारी, सीस ताज ना कोई टकाईआ। नवां खण्डां तुट्टे गढ़ हँकारी, सत्तां दीपां मेट मिटाईआ। रवि ससि करन निमस्कारी, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाईआ। जगे जोत अगम्म अपारी, लोकमात करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता एका वर, एका बूझ बुझाईआ। एका जोती दस दस्मेश, गोबिन्द रूप वटाया। खेले खेल नर नरेश, सुत दुलारा मेल मिलाया। हेम कुण्ड हो प्रवेश, दर साचा इक्क खुल्हाया। सति पुरख सदा अदेस, सति सतिवादी नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा दर, घर साचा इक्क सुहाया। गोबिन्द मेला हरि निरँकार, एका वज्जी वधाईआ। चेला गुर सोहे इक्क द्वार, दर दरबारा सोभा पाईआ। पूत सपूता होया सुत दुलार, बैठा सीस झुकाईआ। मंगे मंग अपर अपार, आपणी झोली डाहीआ। नैणां देवी हो ख़बरदार, आप आपणा नैण खुल्हाईआ। आदि शक्त हरि करतार, आपणा रूप वटाईआ। नाम खण्डा सीस दस्तार, तन शृंगार कराईआ। पंचम मीता हो उज्यार, पंचम गया समाईआ। साचा पन्थ इक्क अधार, एका इष्ट वखाईआ। चार वरन यांझा यार, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। धर्मी धर्म धर्म अपार, हरिजन वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द सेवा आप लगाईआ। गोबिन्द गुर नैण उग्घाड़, एका वेख वखानया। कलिजुग कूड़ी दस्से धार, ना कोई वंञ मुहानया। तत्ती अग्नी रही साड़, अमृत जाम ना कोई पयानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, आदि अन्त श्री भगवानया। देवणहार हरि भण्डार, एका एक अख्वाया। गुर गोबिन्द कर प्यार, एका शब्द जणाया। वेद व्यासा बण लिखार, आप आपणा गया समझाया निहकलंक लै अवतार, लोकमात फेरा पाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा हो उज्यार, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लाया। साढे तिन्न हथ्थ नगर अपार, सम्बल नगरी नाउँ धराया। निर्मल जोती कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम हरि चुकावणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जूठ झूठ मेट मिटावणा, भेख पखण्ड रहे ना राईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार गंवावणा, शांतक सति वरताईआ। चार वरनां एका धाम सुहावणा, एका शब्द करे कुड़माईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलावणा, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। अठारां बरन ना कोई जतावणा, जागरत जोत इक्क जगाईआ। एका विद्या सृष्ट सबाई आप पढ़ावणा, ब्रह्म विद्या सति पढ़ाईआ। सन्त सुहेले पकड़ उठावणा, गुरु गुर चेले मेल मिलाईआ। फड़ फड़ काग हँस बणावणा, नाम चोग इक्क चुगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघे सागर टिल्ले पर्बत हरि हरि गावणा, चारों कुन्ट वज्जे वधाईआ। सम्मत सम्मती फेरा पावना, वीह सद बिक्रमी वेख वखाईआ । राम रामा रूप दरसवाणा, आप

आपणी कल वरताईआ। मोर मुकट सीस टिकावणा, कँवल नैण बेपरवाहीआ। चार यार मुहम्मदी संग रलावणा, नूर इलाही आप ख़ुदाईआ। नानक गोबिन्द भेव चुकावणा, सच महल्ले डेरा लाईआ। निहकलंका नाउँ रखावणा, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम मेट मिटावणा, मेटे झूठी छाहीआ। सतिजुग साचा मार्ग लावणा, सच सुच्च रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, हरि सन्तन मेल मिलाईआ। सन्तन मेला धुर दरगाह, हरि साचा मेल मिलन्नया। लोकमात बणाए जगत मलाह, पार कराए आत्म अन्नया। इक्क जपाए साचा नाँ, पंचां चोरां देवे डन्नया। दो जहानी पकड़े बांह, जन हरि हरि भाणा मन्नया। देवणहारा निथाविआं थाँ, ना भेव कोई छुपन्नया। आपे पिता आपे माँ, सन्त सुहेले बाल गोद उठन्नया। सन्त सुहेले आप जगा, कलिजुग डंक वजाया। धरत मात हाहाकार, रो रो नीर वहाया। सति धर्म गया हार, धीरज यति ना कोई विखाया। शाह सुल्तान होए ख्वार, ग़रीब निमाणे ना गले लगाया। घर घर नार दिसे विभचार, नारी कन्त ना कोए हंढाया। भाई भैण ना मीत मुरार, साक सैण ना कोई सलाहया। गा गा थक्के जगत गंवार, गावणहारा दिस ना आया। भाल भाल थक्के सच दर दरबार, दुरमति मैल ना कोई मिटाया। पंज तत्त वधाया इक्क हँकार, काया गढ़ सुहाया। सुरती सुरत ना पावे सार, शब्दी शब्द ना कोई मिलाया। नौ दुआरे जगत ख्वार, डूँघी भवरी रिहा भवाया। अनहद ना सुणाए कोई सतार, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया। बज़र कपाटी ना देवे कोई पाड़, तीर निराला ना कोई लगाया। सचखण्ड दुआरा ना वखाए कोई अखाड़, धर्म तख्त ना कोई छुहाया। वरनां बरनां होए ख्वार, चारों कुन्ट रहे हलकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि सन्तन मेल मिलाया। सन्तन मीता हरि हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। एका गीता कर प्यार, अठारां बरनां मेट मिटांयदा। ठांडा सीता पावे सार, कलिजुग अग्नी अग्ग जलांयदा। जुग जुग पतित पुनीता आप हो जांयदा। ना कोई मन्दिर मसीता गुरुद्वार, शिवदवाला मट्ठ ना कोई रखांयदा। हरि सन्तां घर विच घर दीवा बाती कर उज्यार, आप आपणा दर सुहांयदा। कमलापाती नैण मुँधार, आत्म सेजा आसण लांयदा। सोलां करे आप शृंगार, आपणा मुख वेख वखांयदा। आपणे अन्दरों आपे निकले बाहर, आपणा घुँगट आपे लांहयदा। निरगुण जोती कर उज्यार, सरगुण जोत जगांयदा। बूंद स्वांती ठांडी ठार, निझर झिरना कँवल झिरांयदा। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी राती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहांयदा। सन्त साचा नौजवान, आठ पहर लिव लाईआ। नेत्र लोचण दरस भगवान, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। गोबिन्द गीता एका गाण, राम नाम इक्क जणाईआ। आत्म ब्रह्म आप पछाण, आप आपणी बूझ

बुझाईआ। दूजे दर ना होए हैरान, ना कोए सीस झुकाईआ। नेत्र तीजा इक्क महान, हरि सन्तन वंड वंडाईआ। मेल मिलावा दो जहान, घर साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचे सन्तां मेल मिलाईआ। साचे सन्त तीर्थ तट्ट, एका आसण लाया। हरि वेखणहारा घट घट, पुरख अबिनाशी नाउँ धराया। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका हट्ट विकाया। अमृत आत्म जो जन रहे चट्ट,, गंगा धार समाया। जोती जगे लट लट, नूरो नूर धराया। दुरमति मैल आपणी कट्ट, दूसर रिहा तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, एका घर सुहाया। गंगा तेरा तट किनार, हरि हरि वेख विखन्नया। कलिजुग अन्तिम पावे सार, दिस ना आए नेत्र अन्नया। सन्त सुहेला मिले मेल मीत मुरार, लोकमात चढ़े साचा चन्नया। खेले खेल अगम्म अपार, फिरे भन्नया। नाम खण्डा तेज कटार, पंच विकारा देवे डन्नया। हरिजन साचे लाए पार, आप आपणा बेड़ा बन्नया। जो जन ढहि पए द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहन्नया। साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी आदि निरँजणा, कलिजुग दर बेपरवाहीआ। भगत सुहेला दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। नेत्र पाया नाम अंजना, आपणी आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि द्वार कर परवान, साची संगत संग निभाईआ। हरि द्वार रिखी केश, साचा गढ़ विखानया। दाता दानी दर दरवेश, आप आपणा भेव छुपानया। आवे जावे जगत हमेश, आदि जुगादी इक्क भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रिखी केश होए प्रधानया। रिखी केश हरि प्रधान, साची थित्त वखानया। कमली वाले देवे दान, कमलापत श्री भगवानया। चरन कँवल इक्क ध्यान, एका ब्रह्म पछाणया। सति सरोवर रिहा छाण, सत सागर वंञ मुहानया। त्रिलोकी मारनहारा बाण, शब्दी चिल्ला इक्क उठानया। लक्ख चुरासी मेट मिटान, हरि सन्तन मेल मिलाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रिखी केश तेरा साचा घर, तेरा तेरा तेरां तोल तुलानया। तेरां तोला हरि निरँकार, कंडा आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द बोला अपर अपार, सोहँ ढोला एका गाईआ। विष्नूं रूप इक्क जैकार, भगवन जोत करे रुशनाईआ। शेर शेर ख़बरदार, सिँघ शेर वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले देवे तार, कर कर मेहर मेहरबान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचे वर, हरि सन्तन संग समाईआ। सन्तन हरि हरि वस्सया, एका एकँकार। राह साचा मात दस्सया, जीआं जन्तां इक्क प्यार। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्न करे उज्यार। घर मन्दिर बहि बहि आपे हस्सया, जोती निरगुण कर उज्यार। अट्ठे पहर फिरे नस्सया, सन्त सुहेले करे ख़बरदार। तीर निराला एका कस्सया, मारी

६०३
०७

जाए वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रिखी केश आपे वेख, आप आपणी जाणे कार। रिखी केश जगत मुनारा, गंगा धार वहाईआ। अन्तिम वेले पार किनारा, हरि हरि अंग समाईआ। उठो सन्तो करो दिदारा, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, तिक्खी धार रिहा रखाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। जो जन बणे दर हरि भिखारा, आत्म इच्छया पूर कराईआ। सच सुल्तान सच्ची सरकारा, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला साचे दर, हरिसंगत वड वड्याईआ।

फूलणहार सति श्रृंगार, हरिजन तन सुहाईआ। सन्त सुहेला मीत मुरार, आप आपणा सीस झुकाईआ। सोहे सच सच सच्चा दरबार, हरिसंगत सोभा पाईआ। अन्तर वस्सया मीत मुरार, भुल्ल रहे ना राईआ। नारी कन्ता इक्क प्यार, एका सेज सुहाईआ। आत्म सेजा फूलण बरखा धार, हरिजन साचे आप लगाईआ। हरि का रूप हरि सन्त प्यार, हरि सन्तां विच समाईआ। आदि अन्त इक्क अवतार, एका गुर समझाईआ । चार वरन यांझा यार, वरन गोत ना कोई रखाईआ। काया भाण्डा कर त्यार, आप आपणी वस्त टिकाईआ। ठांडा सीत सच्चे दरबार, तत्व तत्त ना कोई रखाईआ। सुहागी कन्त बणाए साची नार, आपणा मंगल आपे अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन देवे साचा वर, फूलण हार कर त्यार, सन्तन उत्तों देवे वार, जगत जगदीशा वड्डी वड्याईआ। फूलण रुत्त हरि सन्त, साचे दर सुहाईआ । मेल मिलावा नारी कन्त, पुरख प्रखोतम होए सहाईआ। दिस ना आए जीव जन्त, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सन्तां आत्म इक्क सुगंध, हरि साचा रिहा महिकाईआ। नौ दुआरे चुक्कया पन्ध, दसवां दर खुलाईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, आपणा राग अलाईआ। ख़ुशी कराए बन्द बन्द, जो जन फूलणहार भेट चढ़ाईआ। दीन दयाला हरि हरि हरि सदा बख्शिंद, बख्शणहार सहिज सुखदाईआ। जै जै जैकार कमली वाले, ब्रह्मण्डे जै जै जैकारया। जिउँ मात पित पूत करे प्रितपाले, वसदा रहे सच द्वारया। पुरख अबिनाशी होया इक्क रखवाले, एथे ओथे पावे सारया। लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्मी निकलण वाले अन्त दवाले, सम्मत वीह सद सोलां राह तका ल्या। सम्मत सतारां हाणीआं छड्डुणे हाणी गंगा नीर फोल फुलाए, मात पित साक सैण ना कोई प्यारया। बिन हरि सन्त दुआरे ना कोई जाणे साची बाणी, ना कोई बूझ बुझा रिहा। अन्त काल सर्ब पछताणी, जम का डण्ड सीस लगा रिहा। साची भूमका सोहे धाम अस्थानी, हरिसंगत हरि साचा संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा पद निरबाणी, एका ब्रह्म बुझा रिहा।

* १४ मग्घर २०१५ बिक्रमी सन्त पंडत निहचल सिँघ डेरा सन्त पुरा जगाधरी *

हरि किरपा सन्त प्रसादि, आदि जुगादि वरताया। पुरख अबिनाशी देवणहारा दाद, ब्रह्म ब्रह्मादि वेख वखाया। सन्त सुहेले जुग जुग लाध, आप आपणा रंग रंगाया। मेल मिलावा मोहण माधव माध, आप आपणा रंग रंगाया। आत्मक धुन वजाए साचा नाद, आप आपणा राग अल़ाया। मेट मिटाए जगत विवाद, पंच विकारा मोह चुकाया। सति वस्त देवणहारा दाद, लोकमात वड वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वस्त शब्द बोध अगाध, गुर प्रसादि गुर किरपा हरि सन्तन झोली पाया। सति प्रसादि सति सन्तोख, सति सति समाईआ। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, देवणहारा बेपरवाहीआ। जिस जन चुगाए साची चोग, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दूई द्वैती कटे रोग, हउमे हँगता रहिण ना पाईआ। मेल मिलावा धुर संजोग, घर साचे वज्जे वधाईआ। पार कराए तिन्नां लोक, चौदां हट्ट वेख वखाईआ। हरिजन हरिभगत आत्म अन्तर आपे रिहा वेख, निज आसण डेरा लाईआ। लिखणहारा साचे लेख, दाता दानी बेपरवाहीआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए ना कोई रखाईआ। जोती नूर दर दरवेश, अलक्ख निरँजण आप अख्वाईआ। पुरख अगम्मड़ा वसे देस, लोआं पुरीआं आप जगाईआ। दो जहानां नर नरेश, शाहो भूप सर्ब सुखदाईआ। सन्त सुहेले आपे वेख, आप आपणी बणत बणाईआ। नानक जोती दस दस्मेश, दहि दिशा फेरा पाईआ। सीस निवायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति प्रसादि सति पुरख निरँजण अबिनाशी करता हरिभगतां लिखणहारा लेख, गुरमुखां झोली आप भराईआ। सति प्रसादि साचे घर, हरि हरि आप रखांयदा। जुग जुग देवे सन्तन वर, नाम भण्डारा इक्क वरतांयदा। नौ दुआरे खाली कर, दुरमति मैल मिटांयदा। जोत निरँजण जोती धर, अज्ञान अन्धेर चुकांयदा। अनहद वजाए ताल, धुन अनादी इक्क रखांयदा। आत्म सर सरोवर नुहाए साचे सर, दुरमति मैल कटांयदा। बज़र कपाटी तोड़ गढ़, आप आपणा दर खुल्ह़ांयदा। स्वच्छ सरूपी अग्गे खड़, हरि सन्तां वेख वखांयदा। आत्म सेजा बैठा चढ़, निरगुण नूरो नूर डगमगांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, अक्खर वक्खर शब्द सुणांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, तत्व तत्त ना कोई विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन देवणहारा साचा वर, आत्म ब्रह्म सति प्रसादि सति सति आप वरतांयदा। सति प्रसादि साख्यात, हरिजन हरि हरि आप अख्वाईआ। आप बणाए पार जात, कंचन रूप वेस वटाईआ। पावे सार लोकमात, जुगा जुगन्तर खेल खलाईआ। जिस जन बख्शे चरन नात, कँवल धवल वेख वखाईआ। उत्तम रक्खे हरिजन जात, वरन बरन ना कोए बणाईआ। मेल

मिलावा कमलापात, घर मेला साचे माहीआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, एका नूर करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर रिहा झाक, आप अपणा मुख छुपाईआ। जिस जन खोल्हे आपणा ताक, आप आपणी दया कमाईआ। सति प्रसादि किसे हथ्थ ना आए करोड़ लाख, करते कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां एका नाम प्रसादि, घर साचे आप वरताईआ। सच प्रसादि सच घर वरतंता, एका एक एकँकारया। निरगुण जोत श्री भगवन्ता, सरगुण मेला विच संसारया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढा रिहा। आप आपणी बणाए बणता, आप आपणे रंग समा रिहा। आपणे दर आपे होए मंगता, आपणी भिच्छया आपे पा रिहा। हरिजन दर दुआरे आए भुक्खा नंगता, नाम भण्डारा गुर प्रसादी, गुर किरपा सतिगुर झोली पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन देवे साचा सच ख़ज़ीना इक्क वखा रिहा।

साचा घर हरि महल्ला, एका एक सुहा रिहा। बैठा रहे इक्क इकल्ला, दूसर संग ना कोई वखा ल्या। आपणी जोती आपणे दीपक आपे बला, तेल बाती ना कोए टिका ल्या। आपणे दर आपणे द्वार आपे खला, आप आपणा रूप वटा ल्या। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण थिर घर दुआरा एका मल्ला, नानक निरगुण सरूप वखा ल्या। जलां थलां जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर आप खल्ला, गगन पताल मण्डल मण्डप पृथ्मी आकाश डेरा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, थिर घर साचा इक्क सुहा ल्या। थिर घर साचा सच दरबार, हरि जोती जोत जगांयदा। अलक्ख अगोखर अगम्म अपार, भेव अभेदा भेव कोए ना पांयदा। आप आपणी बन्न्हे धार, आप आपणा खेल खलांयदा। आदि जुगादी लै अवतार, लोकमात फेरा पांयदा। सतिजुग त्रेता लाए पार, द्वापर बेड़ा आप तरांयदा। कलिजुग कूड़ा वेख पसार, आप आपणा भेख वटांयदा। ईसा मूसा ख़बरदार, मेल मिलावा संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी ऐनलहक्क नाअरा आपे लांयदा। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, सर्ब जीआं दा सांझा यार, मुकामे हक्क इक्क दरसांयदा। नानक निरगुण जोती कर आकार, पंज तत्त डेरा लांयदा। अंगद करया अंगीकार, अमरू निथावां वेख वखांयदा। रामदास कर प्यार, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। पंचम गुर ख़बरदार, बोध अगाध शब्द जणांयदा। गुरु ग्रन्थ कर त्यार, चार वरनां एह समझांयदा। इकवंजा बवन्जा एका धार, बावन भेखाधारी भेख वटांयदा। सन्त भगत गुर सतिगुर सोहे इक्क द्वार, एका घर वखांयदा। छेवें जोत कर उज्यार, हरि गोबिन्द रूप वटांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण अगम्म अपार, हरि राए वेख वखांयदा। बाल

बाला खेल अपार, बाल अवस्था लेखे लांयदा। तेग बहादर साचा यार, घर साचे मेल मिलांयदा। ग़रीब निमाणयां दए अधार, आप आपणा वेख वखांयदा। जोधा सूरबीर बली बलकार, सुत दुलार इक्क उपजांयदा। गोबिन्द नाम विच संसार, सिँघ सिँघ विच समांयदा। चार वरनां मीत मुरार, पंच विकारा मोह चुकांयदा। पंच सुहाए दर दरबार, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। नाम खण्डा कर तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। आप आपणा उत्तों वार, आप आपणा सीस झुकांयदा। एका गुर इक्क अवतार, एका रूप दरसांयदा। बीस बीसा खेल अपार, वार सैंहसा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला दीन दयाला गोबिन्द करे सदा प्रितपाला, शांतक सति वरतांयदा। गोबिन्द गुर बली बलकार, एका जोत जगाईआ। शब्द शब्दी खेल अपार, शब्द शब्दी वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला खेले खेल खेलणहार, घट घट दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुर गोबिन्द साचा सूरा, नेत्र नैण उग्घाड़या। पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूरा, साचे घोड़े चढ़ा रिहा। आसा मनसा करे पूरा, वेख वखाणे साचे लाड़या। एका नाद वजाए तूरा, लोआं पुरीआं आप सुणा रिहा। कलिजुग अन्तिम मिटे कूड़ा, कूड़ी क्रिया मेट मिटा रिहा। जन भगतां गुरमुखां मस्तक लाए धूढ़ा, दर एका टिक्का ला ल्या। काया रंगन रंग चाढ़े गूढ़ा, दर द्वार आप चढ़ा ल्या। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जिस जन अमृत जाम पया ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वसणहारा साचे घर, साचा घर आप सुहा ल्या। अबिनाशी करता एकँकार, अकल कला कल आपे धार, आवे जावे विच संसार, आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी वसे धाम आपणे आप न्यार। अमृत आत्म साचा रस, हरि हरि आप प्याईआ। आपे वेखे हस्स हस्स, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत गया वस, नूरो नूर समाईआ। पंज तत्त विकारा ना रिहा झस्स, मन मति बुध ना कोई जणाईआ। त्रैगुण ना मारे आपणा डस, पंज तत्त ना कोई कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेटे घर, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, हरि हरि दर्शन पाया। आत्म अन्तर एका सुख, एका ब्रह्म दरसाया। आपणी गोदी आपे चुक्क, पुरख अबिनाशी आप उठाया। आपणे अन्दर आपे लुक, आप आपणा दरस दखाया। आपणे दुआरे आपे झुक, आप आपणा सीस झुकाया। दो जहानां पैंडा गया मुक्क, जिस जन हरि हरि दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका साचा फल खवाया। अमृत आत्म साचा फल, गुरमुखां आप खवांयदा। आपे रक्खे निहचल धाम अटल, दूसर दिस किसे ना आंयदा। दूई द्वैती मेटे सल, जगत तृष्ना मेट मिटांयदा । एका जोती जाए बल, अज्ञान अन्धेर ना कोई वखांयदा। सच सिँघासण ल्या मल्ल, पुरख

अबिनाशी गले लगांयदा। विछड़ ना जाए घड़ी पल्ल, दिवस रैण ना कोई जणांयदा। आदि शक्ती रिहा पल्ल, पुरख अकाला सेव कमांयदा। अन्दरे अन्दर गया रल, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे आपणा वर, जगत तृष्ना भुक्ख दुःख मिटांयदा। राम नाम साची चोट, तन नगारे सन्त लगाईआ। कढुणहारा झूठा खोट, दुरमति मैल धवाईआ। कलिजुग जीव आलणिउँ डिग्गे बोट, ना अन्त कोई उठाईआ। तीर्थ तट्टां बैठे कोटी कोट, आत्म साध ना बणत बणाईआ। जगत तृष्ना ना भरी पोट, चारों कुन्ट मनमति हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, एका रंग रंगाईआ। काया नाम साचा रंग, हरिजन आप चढ़न्नया। मानस जन्म ना होए भंग, लोकमात बेड़ा बन्न्या। अमृत धार वहाए गंग, हरि हरि आप आपणा आपे मन्नया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, होए सहाई दो जहानया। सन्त जना सद वस्सया संग, दिवस रैण फिरे भन्नया। दाता दानी सूरा सरबंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, एका राग धुनी अनाद, आप सुणाए साचे कन्नया।

* १४ मग्घर २०१५ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे घर पिण्ड ठीकरी छन्ना ज़िला करनाल *

ब्रह्मण्ड खण्ड हरि वरतार, एका एक समाया। जेरज अंड पावे सार, लक्ख चुरासी डेरा लाया। वंडे वंड धुर करतार, एका दृष्ट शब्द रखाया। भेख पखण्डा दए निवार, जुग जुग वेस वटाया। मन्दिर साचे बंक द्वार, हरि सज्जण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। ठांडा दर धुर दरबार, एका पुरख अकालया। गुरमुखां मेला मीत मुरार, सोहे दर सच्ची धर्मसालया। निरगुण जोती कर उज्यार, दिवस रैण करे प्रितपालया। देवे नाम अतुट भण्डार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बिरध समालया। गुरमुख साजण हरि हरि रंग, आत्म ब्रह्म जणाईआ। दर दुआरा एका मंग, एका भिच्छया झोली पाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। चरन धूढ़ नुहाए साची गंग, दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। ताल तलवाड़ा वजाए मृदंग, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। आपणा दर आपे लँघ, आपे मुख वखाईआ। आत्म सेजा सति पलँघ, हरि बैठा आसण लाईआ। अमृत धारा वहे गंग, एका धार चलाईआ। ग़रीब निमाणयां कट्टणहारा भुक्ख नंग, सिर सिर हथ्थ टिकाईआ। आप लगाए आपणे अंग, जिउँ अंगद अंग नानक समाईआ। सदा सुहेला वसे संग, विछड़ कदे ना जाईआ। अस्व घोड़े कसे तंग, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सज्जण मेला साचा दर, गुरमुख साचा वेख वखाईआ। हरि सज्जण हरि पाया,

पारब्रह्म करतार। एका दूजा भेव चुकाया, विछड़या संसार। दर दरवेशा वेख वखाया, शाह सुल्ताना लए आधार। गुरमुख साचे आप जगाया, आप आपणी किरपा धार। अन्तर आत्म वेख वखाया, डूँघी भवरी हो उज्यार। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कार। नाम वथ्थ झोली पाया, अतुट भरे भण्डार। साचा रथ आप चढ़ाया, आप चलाए विच संसार। महिमा अकथना अकथ रखाया, कथनी कथ कथ गई हार। समरथ पुरख हथ्थ वड्आया, ग़रीब निमाणे जाए तार। जो जन रहे सरनाया, लक्ख चुरासी उतरे पार। शाहो शाबाश मेल मिलाया, जोत प्रकाश दीप उज्यार। रसन स्वासी लेखे लाया, जो जन हरि हरि रहे उचार। मदिरा मासी दए सजाया, शब्द खण्डां तेज कटार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लाए पार। सार समाले दिवस रात, हरिजन वड्डी वड्याईआ। आपणे मन्दिर आपे खोल्हे ताक, वड दाता बेपरवाहीआ। उच्च महल्ले रिहा झाक, दिस किसे ना आईआ। आपे जाणे भविख्त वाक, लिख्या लेखा ना कोई मिटाईआ। भगत सुहेला सज्जण साक, आप आपणा बंधन पाईआ। दो जहानां पाकी पाक, पतित पुनीत आप कराईआ। लेखे लाए तन माटी ख़ाक, जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर मंगल इक्क सुणाईआ। घर मंगलाचार साचे दर, आत्म वज्जे वधाईआ। मेल मिलावा हरी हरि, एका बंक सुहाईआ। आपणी किरपा आपे कर, आपे दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उठाईआ। गुरमुख साचे आप उठाल, आपणा रंग रंगांयदा। इक्क चलाए धर्म सच्ची धर्मसाल, काया गढ़ सुहांयदा। जोत निरँजण कर रुशनाई, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ाना आप वरतांयदा। तोड़णहारा जगत जंजाल, हउमे रोग कटांयदा। दिवस रैण करे प्रितपाल, हर घट बैठा वेख वखांयदा। आप आपणे आपे भाल, जुग जुग मेल मिलांयदा। आदि जुगादि अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखांयदा। शब्द वजाए अनादी ताल, धुर दरबारा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा वेख वखांयदा। वेखणहारा नित नवित्त, एका एकँकारया। जिस जन हरि हरि रक्खया चित्त, देवे दरस अगम्म अपारया। खेले खेल नित नवित्त, आदिन अन्ता गुर अवतारया। आपे जाणे आपणी थित, दूसर भेव ना कोई रखा रिहा। सृष्ट सबाई मात पित, पिता पूत डेरा ला रिहा। लक्ख चुरासी आपे जित, गुरमुख संग निभा रिहा। करे कराए साचा हित्त, घर सज्जण डेरा ला ल्या। धाम वखाए इक्क अनडिठ, दरगहि साची आप टिका रिहा। मनमुखां सुत्ता दे कर पिट्ठ, दिस किसे ना आ रिहा। गुरमुखां रक्खे साया हेठ, आप आपणा बिरध समा रिहा। कलिजुग अग्नी तपे जेठ, हाढ़ तत्ती वा आप लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

९०६ ०७

धर, गुरमुख साचे लए वर, एका पल्ला नाम फड़ा रिहा। पल्ला नाम गुरसिख फड़, एका लाल पछाणया। साचे मन्दिर गया चढ़, छुटा आवण जाणया। किला कोट मिल्या साचा गढ़, वेस वटाए श्री भगवानया। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, मेल मिलाए दो जहानया। एका अक्खर रिहा पढ़, सो पुरख निरँजण वड विद्वानया। हँ हँगता जाए सड़, जिस पाया पद निरबाणया। आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे वेखे शाह सुल्तानया। आपे लावणहारा जड़, फुल फुलवाड़ी आप खिलानया। गुरमुख सज्जण साचे आप आपणे दर बहानया। वेख वखाणे नाड़ी नड़, पंज तत्त करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द धुर फ़रमाणया। धुर फ़रमाणा शब्दी धार, हरि हरि आप उपाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क प्यार, एका दर बुझाईआ। सति सुत सुत दुलार, पूत सपूता मेल मिलाईआ। अबिनाशी अचुत्त खेल अपार, खेलणहार दिस ना आईआ। रुत्त बसन्त जगत बहार, फूलण बरख़ा आपे लाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, सगला संग निभाईआ। बाल अञ्याणे आप उभार, आपणी बूझ बुझाईआ। नेत्र लोचण इक्क द्वार, एका दरस दिखाईआ। आप आपणा आपे वार, आपे भेट चढ़ाईआ। आपे वस्सया सच दरबार, सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाईआ। थिर बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण सेज विछाईआ। निरगुण जोती कर उज्यार, रूप अनूप समाईआ। साची चोटी चढ़ सरकार, आदि अन्त आप अख्वाईआ। लोकमाती कर उज्यार, जुग जुग आपणी जोत करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम पावे सार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। गुरमुख मेला चरन द्वार, मनमुखां दए सजाईआ। सम्मती सम्मत मारे मार, आदि जुगादी वड वड्याईआ। अगम्म अगम्मी जोत निरँकार, निरवैर रूप आप हो जाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर मन्दिर इक्क सुहाईआ। दर मन्दिर हरि निरँकार, एका एक पछाणया। निरगुण सरगुण दए आधार, एका भूप वखानया। चारों कुन्ट हो त्यार, सति सरूप फेरा पानया। जूठ झूठ मारे मार, शब्द खण्डा तेज आपणे हथ्थ उठानया। माया ममता मोह तोड़ हँकार, हरिजन देवे आत्म ब्रह्म ज्ञानया। अमृत आत्म ठंडी ठार, निझर झिरना कँवल झिरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, घर मन्दिर इक्क पछाणया। घर मन्दिर हरि साचा डेरा, सगला संग निभाईआ। आपे वस्सया नेरन नेरा, नेड़ दूर ना कोई दिसाईआ। इक्क कराए सञ्झ सवेरा, अन्ध अन्धेरा रहिण ना पाईआ। बन्नणहारा जुग जुग बेड़ा, पारब्रह्म आप हो जाईआ। वसे काया नगर खेड़ा, हरि मिल्या बेपरवाहीआ। पंच विकार देवे गेड़ा, उलटी लट्ठ गिड़ाईआ। अन्तिम करे हक्क निबेड़ा, मानस जन्म लेखे लाईआ। धर्म

राए खुल्हा वेहड़ा, एका दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरबंस अंस सहँस रूप आप दरसाईआ।

* १५ मग्घर २०१५ बिक्रमी हरिसंगत समेत शब्द लिखाए कोरौकुक्षेत्र *

आदि निरँजण पुरख करतार, अकाल मूर्त अख्वाया। अजूनी रहित अगम्म अपार, पारब्रह्म रघुराया। आदि अन्त हो उज्यार, आप आपणा खेल खिलाया। श्री भगवन्त सर्ब घट धार, रूप अनूप आप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखाया। पुरख अबिनाशी हरि भगवाना, एका रूप समाईआ। आदि जुगादी खेल महाना, कलिजुग वेस वटाईआ। आदि निरँजण वड बलवाना, जोधा सूरबीर आप अख्वाईआ। शाहो भूप सच सुल्ताना, दो जहानां नाउँ धराईआ। शब्दी शब्द बन्न्हे गाना, हरि हरि साचा सगन मनाईआ। खेले खेल गुण निधाना, गुणवन्त भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख निरँजण वड वड्याईआ । आदि पुरख हरि करतार, एका एक अख्वांयदा। आप आपणी बन्न्हे धार, आपे वेख वखांयदा। आपे खेले खेल खेलणहार, समरथ पुरख नाउँ रखांयदा। जुगा जुगन्तर साची कार, आपणी आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक हो जांयदा। इक्क इकल्ला हरि भगवन्त, एका रूप समाया। भेव अभेद जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। अछल अछल नारी कन्ता, निरगुण नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक एक हो जाया। इक्क इकल्ला हरि भगवन्त, एका रूप समाया। भेद अभेदा जुगा जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। अछल अछल्ल नारी कन्त, निरगुण नूर करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। जुग जुग वेस हरि निरँजण, नूरी नूर कराया। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, आप आपणा नाउँ धराया। आपे वेखे आपणा सज्जण, आप आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा करे मजन, आप आपणा ताल सुहाया। ताल सुहावा निरगुण जोत, एका एक सुहाईआ। आपणी मैल आपे धोत, निर्मल निर्मल आप हो जाईआ। आदि जुगादि खेले खेल जुगा जुगन्तर कोटी कोट, कोटन कोटी बणत बणाईआ। इक्क लगाए शब्द चोट, एका एक रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। द्वापर अन्तर धरत पुकार, एका दर सुहन्नया। काहना कृष्ना कर विचार, नेत्र नीर उछनिआ। अर्जन मीता हो त्यार, वेख वखाए दर महानया। नाम गीता ख़बरदार,

एका बेड़ा बन्नया। ठांडा सीता हरि निरँकार, जननी जन ना किसे जणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखणहारा दर दर भगत भेख अपार, द्वापर तेरा अन्त किनारा हरि साचा खेल खिलन्नया। रथ रथवाही खेल अपार, एका रथ चलांयदा। पंचम मीता हो उज्यार, ख़ाली हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई बन्ने धार, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। एका सुत सुत दुलार, धर्म धर्मी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जगत युधिष्टर नाम अपारा, हरि हरि मेल मिलाया। किरपा करे दीन दयाला, एका दूजा भउ चुकाया। तोड़णहारा जगत जंजाला, निरगुण जोत इक्क वखाया। संग रखाए काल महांकाला, आप आपणा रूप वटाया। लक्ख चुरासी खेल निराला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाया। युधिष्टर युध जगत अपार, धर्मी धर्म कमाया। साँवल सुन्दर खेल न्यार, मुकंद मनोहर वेख वखाया। दोहां विचोला इक्क अधार, नाम नामे रंग रंगाया। खेले खेल अगम्म अपार, आप आपणा भेव चुकाया। अन्तिम वेला पार किनार, चारों कुन्ट होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। द्वापर तेरा अन्त किनारा, हरि हरि खेल खलांयदा। कृष्न नेत्र इक्क उग्घाड़ा, हरि हरि वेख वखांयदा। जगत जीव कढुण हाढ़ा, एका मुख शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता नाउँ रखांयदा। शब्द विचोला साचा ढोला, हरि हरि आप उपाया। पंज तत्त बदलया चोला, साचा खेल खिलाया। लक्ख चुरासी एका होला, एका रंग रंगाया। धुरदरगाही साचा तोला, तोलणहारा दिस ना आया। भगतन अन्दर भगती मौला, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। अमृत नाभी भरया कँवला, झिरना आप झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेख लखाया। लेखा लिखणहार करतारा, एका एकँकारया। अन्त द्वापर कृष्न मुरारा, वेखे विगसे करे विचारया। कलिजुग प्रगटे विच संसारा, साची धारा आप चला रिहा। चारों कुन्ट हाहाकारा, काम क्रोध होए मस्तानया। गुर पीर साध सन्त ना पावण सारा, नौ खण्ड होए वैरानया। अन्तिम प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जोत नूर उपानया। नाम खण्डा तेज कटारा, शब्दी शब्द उठानया। रथ रथवाही सर्ब संसार, घट अन्दर डेरा लानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा वर, आप आपणा घर पछानया। आपणा घर आप पछाण, आपे वेख वखाईआ। चरन बिठाए कृष्ना काहन, कँवल नैण रहे शरमाईआ। देवण आया भूमी दान, भूम भूमका इक्क सहाईआ। सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जानणहार वड वड्याईआ। नौ खण्ड इक्क निशान, एका शब्द उठाईआ। जीव जन्त ना सकण पछाण, माया पर्दा एका पाईआ। किसे हथ्थ ना आए

राज राजान, शाह सुल्ताना दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखणहारा घर, आप आपणा खेल खिलाईआ। आपणा खेल आपे खेल, हरि हरि खेल खिलाया। दो जहानां सज्जण सुहेल, जोती जामा भेख वटाया। ना कोई गुरू ना कोई चेल, पंज तत्त ना कोई रखाया। आप आपणा करया मेल, आप आपणी बणत बणाया। हरिसंगत हरि साचा मेल, धाम सुहंझणा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग अन्तिम लहिणा साढे तिन्न हथ्थ, हरि साची वंड वंडाईआ। निरगुण जोत आप समरथ, आदि अन्त अख्वाईआ। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, वेद पुराणी अञ्जील कुरानी खाणी बाणी आपे गाईआ। घर मन्दिर ना जाए ढठ्ठ, ना कोई बाढी बणत बणाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, ना कोई घाट वखाईआ। ना कोई किनारा चौदां हट्ट, त्रैभवन ना कोई वड्याईआ। एका जोती नूर लट लट, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची भूमका वेख वखाईआ। भूमका सच अस्थान, हरि हरि वेख वखाया। शब्द सुत वड बलवान, साचा संग रखाया। सो पुरख निरँजण तीर कमान, नाम चिल्ला इक्क उठाया। लोआं पुरीआं लेखा दो जहान, ब्रह्मा विष्न शिव दए हिलाया। सृष्ट सबाई होए हैरान, एका एक रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा वेख वखाया। घर साचा उच्च अटला, हरि हरि वेख वखांयदा। करे कराए इक्क इकल्ला, लशकर शाही ना कोई जणांयदा। पावे सार जलां थलां, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलांयदा। सच सिँघासण एका मल्ला, थिर घर सच सुहांयदा। दीपक जोती एका बला, आकाश प्रकाश समांयदा। शब्द सुत करन आया हल्ला, आप आपणा आप उठांयदा। जीव जन्त भुलाए कर कर वल छला, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। शब्द सुत जोधा सूर, एका एक ल्ए अंगड़ाईआ। सर्बकला हरि भरपूर, देवे वस्त बेपरवाहीआ। दहि दिशा करे चूरो चूर, भेख पखण्ड रहिण ना पाईआ। मेट मिटाए जूठ झूठ कूड़ो कूड़, माया मोह चुकाईआ। जन भगतां काया नूर रंग चाढ़े गूढ़, हरि हरि वड वड्याईआ। साचे धाम बख्शे चरन धूढ़, धूढ़ी मस्तक इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाईआ। साचा धाम हरि थनेसर, थिर घर आप सुहाया। नाम नामा लाए केसर, दिस किसे ना आया। जगत पित सर्ब जगदीश्र, जुग जुग वेस वटाया। चरन छुहाए दाता ईसर, ईश जीव भेव ना राया। दिस ना आए मुनी मुनीसर, कोटन कोट मुन रखाया। भेव ना पायण तपी तपीश्र, तप तप तन अग्न जलाया। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा इक्क सुहाया। साचा धाम वड वड्याई, नामे नाम उपाया। जगत थनेसर धरत कुड़माई, हरि थनेसर नज़र ना आईआ। चारों कुन्ट वज्जे वधाई, प्रभ साचे भेव खुल्हाया। गण गधंरब रहे गाई, नेत्र नैणां दिस ना आया। करोड़ तेतीस रहे शरमाई, हरिजन साचा संग निभाया। शिव शंकर बैठा करे सलाही, आप आपणा मुख खुल्हाया। ब्रह्मा नेत्र रिहा उठाई, चारों कुन्ट वेख वखाया। विष्नूं वंसी लए अंगड़ाई, लछमी नाल रलाया। पारब्रह्म प्रभ खेल उपाई, लोकमात वेखण आया। लक्ख चुरासी होए जुदाई, आप आपणा दर सुहाया। शब्द जोधा इक्क उठाई, नवां खण्डां आप लड़ाया। नाम खण्डा वेखे बाहीं, आप आपणा बल धराया। रसना चिल्ला तीर उठाए चाँईं चाँईं, दो जहान ना किसे उलटाया। मारे मार थाउँ थाँईं, लुकया कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। थिर दरबार, हरि निरंकारया। ऊँच अगम्म अपार, अटल महल्ल मुनारया। एका जोती इक्क उज्यार, एका वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मन्दिर इक्क सुहा रिहा। थथ्था ; थिर दरबारा, हरि खुल्हांयदा। एका एक ग़रीब निवाज़ा, एका रूप समांयदा। एका अस्व एका ताजा, एका शब्द दौड़ांयदा। एका भूप एका राजा, शाह सुल्ताना इक्क अख्वांयदा। जुग जुग लोकमात रचे काजा, आप आपणी बणत बणांयदा। धुरदरगाही आया भाजा, थिर घर वासी भेव खुल्हांयदा। शब्द अगम्मी मारे वाजा, अनहद ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क वखांयदा। थिर घर रूप हरि अपारा, एका एक दरसाया। अलक्ख निरँजण खेल न्यारा, आप आपणा रिहा कराया। आपे पाए आपणी सारा, दूसर संग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखाया। थथ्था ; थिर नरायण, एका एकँकारया। आप आपणा आपे वेखे आपणे नैण, नेत्र नैण इक्क खुल्हाया। ना कोई साक ना कोई सैण, भाई भैण ना संग रखा ल्या। कलिजुग चुकाए लैण देण, हरि सज्जण फेरा पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाल दीन दयाल, दयानिध वेस वटा ल्या। नना ; निरगुण धार, जोत जगाईआ। आदि जुगादी साची कार, हरि साचा रिहा कमाईआ। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, शस्त्र बस्त्र ना कोई उठाईआ। रथ रथवाही ना कोई विचार, महांसार्थी दिस ना आईआ। बेपरवाही बेऐब परवरदिगार, आप आपणी कल वरताईआ। शब्द शब्दी मारे मार, मारनहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। नन्ना ; निराकार, साकार समाया। निरगुण सरगुण कर प्यार, एका दूजा भेव चुकाया। रंग महल्ल अटल मिनार, शब्द सिँघासण आप विछाया। जोती

ੴ੧੫ ०७

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाना रूप आप दरसाया। नन्ना : निरगुण खेल हरि भगवानया, एका एक जोत जगाईआ। देवणहारा धुर फ़रमाणया, आदि शक्त सेव कमाईआ। आपे मेटे जगत निशानया, उत्पत आपे आप कराईआ। आपे बन्नृणहारा गानया, आत्म आप करे कुड़माईआ। आपे बाल बिरध जवानया। मात गर्भ आप हो जाईआ। आपे माण मोह अभिमानया, ज्ञान ध्यान आप रखाईआ। आपणा आप रूप पछाणया, कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी किरपा आप कराईआ। नन्ना : निहचल धाम अवल्ला, हरि हरि आप समाया। आपे मेटे आपणा सला, दूसर संग ना कोई वखाया। बैठा रहे इक्क इकल्ला, अकल कला हो जाया। आदि जुगादी कर कर हल्ला, लोकमात वेख वखाया। आपे फड़े आपणा पल्ला, लड़ आपणा आप बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मूल चुकाया। नन्ना : निरगुण रूप अपारा, जोती नूर समाया। खेले खेल खेलणहारा, भेव अभेदा भेव छुपाया। वेद कतेब ना पायण सारा, जुग करता नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी रचन रचाया। ससा : सतिगुर धार, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। आप आपणा कर पसार, आप आपणा रूप दरसाईआ । एका बाती कर उज्यार, कमलापाती मेल मिलाईआ। बूंद स्वांती ठंडी ठार, आपणी आप प्याईआ। आत्म ताकी खोल्ह किवाड़, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वेखे बेपरवाहीआ। ससा : सतिगुर रूप हरि सुल्तानया। वेख वखाए जूठ झूठ, चारों कुन्ट होए प्रधानया। नाम वस्त रक्खे एका मुट्ठ, गुरमुखां विच जहानया। एका एक रिहा तुठ, आदि अन्त खेल महानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा बिरध पछाणया। सतिगुर दाता दानया, देवणहार मेहरबान। आदि जुगादी इक्क निशानया, शब्दी शब्द इक्क जैकार। गुरमुख विरले मात पछाणया, लक्ख चुरासी डुब्बा विच मँझधार। जिस जन आत्म अन्तर मारे कानया, दूई द्वैती उतरे पार। करे प्रकाश कोटन भानया, अन्ध अन्धेर निवार। सर्ब घटा जाणी जाणया, घर बैठ मीत मुरार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, खेले खेल अलक्ख अगोचर अगम्म अपार। सतिगुर पूरा साख्यात, जोती जोत जगाईआ। मेटणहारा अन्धेरी रात, एका बूझ बुझाईआ। देवणहारा साची दात, दाता धुरदरगाहीआ। पार कराए कायनात, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, थिर मन्दिर नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, घर साचे मेल मिलाईआ। रारा : राज जोग सुल्तान, सच सिक्दार आप हो जाया। आदि जुगादी मेहरबान, नाम निधाना झोली पाया। एका राग सुणाए कान, धुनी नाद इक्क वजाया। आप आपणा घर पछाण,

आप आपणा वेख वखाया। साचा मन्दिर सच मकान, साची सेजा आसण लाया। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रारा : रेख अपार, हरि हरि लेख लिखानया। जुग जुग पावे सार, लोकमात आवे भन्नया। आत्म हो उज्यार, भाग लगाए साची छप्पर छन्नया। एका शब्द शब्द जैकार, साढे तिन्न हथ्थ बेड़ा बन्नया। राज राजान करे ख़बरदार, पकड़ उठाए आत्म अन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार, आपणी खेल खलानया। खेले खेलणहार हरि भगवान, एका रूप समाया। थनेसर तेरा सच निशान, चारे अक्खर जोड़ जुड़ाया। चौथे जुग हो मेहरबान, रारा रेख दए मिटाया। सतिगुर सूरबीर बलवान, सृष्ट सबाई दए मिटाया। निरगुण जोत जगे महान, नर निरँकारा वेस वटाया। थिर घर बैठ सच्चे सुल्तान, आप आपणा मता पकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे जुग देवे वर, वर दाता आप हो जाया। थथ्था : थिर दर आपे खोल्ह, आपणी दया कमाईआ। नन्ना : निरगुण जोती शब्द बोल, चार कुन्ट करे रुशनाईआ। सस्सा : सतिगुर वजाए ढोल, नाम दमामा इक्क रखाईआ। रारा : राम ना किसे कोल, भुल्ली भरमे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे अक्खर एका घर, एका दर सुहाईआ। थथ्था : थिर दरवेश, एका एकँकारया। नन्ना : नर नरेश, पारब्रह्म सिरजणहारया। सस्सा : सतिगुर जोती हो प्रवेश, गुर सतिगुर रूप वटा रिहा। रारा रूप रिखी केश, जगत गवर्धन हथ्थ उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच थनेसर इक्क वखा रिहा। थनेसर ठांडा घर, हरि हरि आप सुहांयदा। गुरमुख विरला जाए वड़, जिस जन आप चढ़ांयदा। आदि जुगादी रिहा लड़, हथ्थ किसे ना आंयदा। आपणे भाण्डे आपे लए घड़, आपे भन्न वखांयदा। जिस जन तोड़े हँकारी गढ़, आपणी बूझ बुझांयदा। कलिजुग अन्त फड़ाए लड़, साचा धाम सुहांयदा। साचा थान हरि सुहाया, हरिजन वड्डी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम दया कमाया, निरगुण जोती नूर रुशनाईआ। युध इष्ट इक्क वखाया, एका रूप दरसाईआ। सर्ब सृष्ट लए उठाया, आपणी कल वरताईआ। शब्द खण्डा इक्क चमकाया, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँगता गढ़ दए तुड़ाया, मेटे झूठी शाहीआ। हरि सज्जण साचे लए तराया, जिउँ अंगद नानक अंक समाईआ। धुरदरगाही मंगता लोकमात आया, हरिसंगत वेख साची शाहीआ। आपणा पल्लू अग्गे डाहया, प्रेम झोली इक्क भराईआ। हरिसंगत तेरी वड वड्आया, तेरी ख़ाक ब्रह्मा विष्न शिव हथ्थ ना आईआ। पुरख अबिनाशी आदि निरँजण जोत निरँजण दए सुहाया, युधिष्टर नाम धराईआ। सच युधिष्टर नाम उपाया, हरिसंगत विच समाईआ। काया कष्ट ना कोई उठाया, जगत धूणी ना कोई ताईआ। त्रैगुण माया मद्ग बुझाया,

प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। उलटी लट्ठ आप गिढ़ाया, चारों कुन्ट रिहा मुख भवाईआ। पूर्ब पच्छिम उत्तर दक्खण फेरा पाया, छिन्न भंगर दिस ना आईआ। खड़ग खण्डा ना कोई उठाया, ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां दए हिलाया, उत्भुज सेत्ज विच समाया, ख़ाली हथ्थ रखाईआ। कलिजुग कन्ढा नेड़े आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सगन आप मनाईआ। साचा तिलक हरिसंगत धूढ़, हरि मस्तक हरि छुहाईआ। थिर घर दुआरे रंगन गूढ़, पारब्रह्म आप चढ़ाईआ। नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा सगन मनाईआ। सगन मनाया सच दरबार, थनेसर वड वड्याईआ। अकल कला कल आपे धार, आपणी कल वरताईआ। लशकर घोड़ा ना कोई सवार, तीर तलवार ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर सुहाया। तिलक ललाट साचे घाट, हरि हरि आप चढ़ाया। गुरमुख विकया साचे हाट, सचखण्ड दुआरा इक्क विखाया। लोकमात खेल बाज़ीगर नाट, नट नटूआ स्वांग वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच युध इष्ट मस्तक धूढ़ लगाया। युध इष्ट गुरदेव, एका पुरख अकालया । आपणी घाले आपे सेव, आपणी करे आप प्रितपालया। गुरमुखां देवे आत्म साचा मेव, एका फल खवाल्या। जो जन रसना रहे सेव, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लगाए फल काया डालया। जोत निरँजण सगन मना, आदि निरँजण वेख वखाईआ। आदि निरँजण फेरी पा, जोत निरँजण लए जगाईआ। जोत निरँजण कर रुशना, आपणा अन्ध मिटाईआ। आदि निरँजण दरस दिखा, एका रूप समाईआ। दोहां मेला एका थाँ, एका घर दिसाईआ। शब्द ढोला आपे गा, सोहँ रिहा गाईआ। काया चोला दित्ता तजा, पंज तत्त ना कोई लड़ाईआ। आप आपणा घोल घुमा, हरिसंगत भेट चढ़ाईआ। अन्तिम तोला बणया बेपरवाह, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। कला समरथ कोई जाणे ना, अकल कल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच थनेसर दए वड्याईआ। थथ्था नंना भूमका थान, हरि साचे आप सुहाया। जोती जगे इक्क महान, आप आपणा नूर रुशनाया। सेवक सेवा गोपी काहन, नर नरायण संग रखाया। देवणहारा दानी दान, धरत मात वेख वखाया। साचा भूषन इक्क रंगान, एका रंग चढ़ाया। सृष्ट सबाई तुट्टे माण, तोड़णहारा बेपरवाहया। मेट मिटाए जीव शैतान, शंकर बरन रहिण ना पाया। एका अक्खर सारे गाण, एका इष्ट मनाया। युध इष्ट श्री भगवान, सृष्ट सबाई नज़री आया। तिलक ललाटी खेल महान, हरिसंगत हरिसंगत धूढ़ी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम चुकणा लहिणा, थिर दरबार वड्डी वड्याईआ। निरगुण वेखे आपणे नैणां,

६१७
०७

जगत नेत्र बन्द कराईआ। सस्सा : सतिगुर एका रहिणा, ना दूसर कोई सीस झुकाईआ। रारा : राज जोग इक्क धाम बहिणा, एका करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच थनेसर खेल खिलाईआ। थनेसर तेरा साचा रूप, गुरमुख वेख वखानया। दिस ना आए चारे कूट, धरनी धवल ना कोई पछाणया। अमृत आत्म प्याए साचा घुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, सम्मत सम्मती हरि प्रधानया। सम्मत पन्दरां पन्दरां धार, जगत पन्ध मुकाया। गोबिन्द मेला विच संसार, गुर नानक वेख वखाया। वेद व्यासा ढहि प्या द्वार, मस्तक टिक्का धूढ़ लगाया। वेद कतेब रहे पुकार, खाणी बाणी दए सलाहया। हरि का रूप अगम्म अपार, नेत्र नैण दिस ना आया। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण खेल खलाया। जुग जुग खेले खेल अपार, आप आपणा वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाया। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठाया। पुरीआं लोआं मारे मार, नौ सत रहिण ना पाया। लक्ख चुरासी हाहाकार, जीव जन्त ना कोई सहाया। गुरमुख साचे लए उभार, जिस जन आपणी दया कमाया। पतित पापी देवे तार, जो जन सरनाई आया। अन्धेरी राती मिटे अन्ध अँध्यार, दीपक जोती इक्क जगाया। कमलापाती मीत मुरार, अन्तिम साचा राह तकाया। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा चुकाए बाकी विच संसार, आप आपणा रूप वटाया। जगत थनेसर मारे झाकी, निरगुण निरगुण निराकार हरिसंगत मेल मिलाया। आपणी करे आप चलाकी, ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, शब्द राकी इक्क दौड़ाया। प्रेम प्याला प्याए बण बण साकी, नाम कटोरा इक्क भराया। आपणी खोल्ह आपे ताकी, वेखणहारा आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत थनेसर तेरी माटी ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक दए मिलाया। सृष्ट सबाई ख़ाकी ख़ाक, हरि मस्तक तिलक लिलाटया। ना कोई दिसे पाकी पाक, चार वरनां आया घाटया। वेले अन्त ना सके कोई राख, ना कोई सहाई तीर्थ ताटया। लाड़ी मौत रही झाक, लाड़ी मौत दस्से नेड़े वाटया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा एका वर, आप उपाए आप सुणाए आपे होए खेवट खेटया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई मात ना कोई पित ना कोई भैण ना कोई साक, ना कोई सज्जण सैण हरिसंगत प्रेम दोशाले लए आप लपेटया।

* १६ मग्घर २०१५ बिक्रमी ओम प्रकाश ब्रह्मण घर संगत समेत नाभा शहर *

पारब्रह्म पुरख अबिनाश, एका रूप समाया। आदि जुगादी पावे रास, आप आपणा खेल खिलाया। आप आपणे घर रक्खे वास, दर दुआरा इक्क सुहाया। आप आपणी पूरी करे आस, आप आपणा मेल मिलाया। आप आपणा देवे हरि धरवास, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताया। अकल कला कलधारी, हरि भगवान एका एकँकारया। एका जोती नूर महान, नूरो नूर उज्यारया। आपणी करे आप पछाण, आप आपणा वेख वखा रिहा। आपणा मंगे आपे दान, आपणी झोली अग्गे डाह रिहा। आप आपणा होए जाणी जाण, आप आपणा मूल पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखानया। वेखणहारा हरि भगवाना, एका रूप समाईआ। आप आपणा खेल खिलाणा, खेलणहार आप हो जाईआ। एका आपणा वेस वटाणा, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपणा जाणे भाणा, आपणे भाणे आप समाईआ। आप आपणी पाए आना, आप आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ आदि निरँजण हरि भगवन्ता, एका रूप समाया। आपे होए आदिन अन्ता, दूसर संग ना कोए रखाया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढाया। आपे चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म रूप दरसाया। पारब्रह्म निरगुण धार, एका एक उपाईआ। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। मरे ना जम्मे कोई विहार, मात गर्भ ना कोए टिकाईआ। छप्पर छन्न ना कोई उसार, महल्ल अटल ना कोई उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आप आपणा नाउँ धराईआ। आदि पुरख अबिनाशी हरि करतारा, एका रूप समांयदा। आपे जाणे आपणी कारा, करनी करता आप कमांयदा। आप आपणा कर प्यारा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणा वेख पसारा, आप आपणी धार बंधांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्त वेख वखांयदा। आदि शक्त आदि भवानी, हरि हरि रूप अख्वाया। एका जोती नूर नुरानी, नूरो नूर समाया। आप आपणा जाण जाणी, जानणहार आप हो जाया। आप आपणा बणया बानी, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा होया हाणी, आप आपणा अंग लगाया। आप आपणी चढ़या जवानी, जोबन आपणा आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी जुगती आपणे हत्थ रखाया। जोग जुगत हरि करतार, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपणा लए अवतार, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत जोत उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। बेपरवाह बेऐब

६१६ ०७

परवरदिगार, आप आपणा नाउँ धराईआ। आप आपणा मीत मुरार, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। आप आपणा वेख घर बार, आप आपणा दर उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क जणाईआ। साचा घर हरि निरँकार, एका एक उपाया। उच्च महल्ल अटल मिनार, चार दिवार ना कोए रखाया। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क सुहाया। सच द्वार सच दरवाजा, हरि हरि आप उपांयदा। आपे वसे ग़रीब निवाज़ा, ना कोई दूसर संग रखांयदा। आप आपणी रक्खे लाजा, आप आपणा पर्दा आपे पांयदा। आप आपणा बणया राजा, शाहो भूप आप हो जांयदा। आप आपणा रचया काजा, आपे सगन मनांयदा। आप आपणी मारे वाजा, सुणनहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। सच द्वार हरि निरँकार, थिर घर आप उपाया। सच सिँघासण अपर अपार, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जोती नूर कर उज्यार, निरगुण रिहा सुहाया। निराकार ना कोई पावे सार, निर्धन आप हो जाया। बणया सज्जण मीत मुरार, आप आपणा नाउँ धराया। निरँकार खेल अपार, अगम्म अगम्मड़ा धाम वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा वेख वखाया। थिर घर साचा सच महल्ला, हरि हरि जोत जगाईआ। बैठा रहे इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आईआ। आप आपणा मेटे सल्ला, दूई द्वैती रहे ना राईआ। आपणी गोदी आपे पला, आप आपणा रिहा खिलाईआ। आपणी जोती आपे बला, तेल बाती ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर नूरो नूर दरसाईआ। निरगुण नूर हरि भगवाना, एका एकँकारया। थिर घर बैठ खेले खेल शाहो भूप सुल्ताना, आप आपणा वेस वटा रिहा। जोधा सूरबीर बली बलवाना, आप आपणा बल रखा ल्या। चतुर्भुज खेल महाना, आप आपणी कल वरता रिहा। रूप अनूप शाहो भूप लिख्या लेख ना कोई मिटाना, भेव अभेद अभेव छुपा रिहा। आपणी हथ्थीं आपे बन्ह्‌ा गाना, आप आपणा बंक सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा बंक सुहा ल्या। शब्द द्वार हरि निरँकार, एका एक जणाया। जोती जोत कर उज्यार, नूरो नूर टिकाया। पुरख अबिनाशी खेल अपार, दिस किसे ना आया। अलक्ख निरँजण हो उज्यार, आदि निरँजण मेल मिलाया। दर्द दु:ख भय भंजन सांझा यार, आपणी बणत बणाया। बूंद रक्त ना कोई उधार, पंज तत्त ना कोई रखाया। त्रैगुण ना कोई प्यार, ब्रह्मा ब्रह्म विष्न दिस ना आया। शंकर होए ना कोई जैकार, हथ्थ त्रिसूल ना कोई उठाया। करोड़ तेतीस ना बन्ह्‌े धार, सुरपति राजा इन्द ना सीस झुकाया। इक्क इकल्ला एकँकार, थिर घर बैठा आसण लाया। आपणी सेजा कर प्यार, आप

आपणा विच टिकाया। साचा सुत उपाया हरि, शब्दी शब्द नाउँ धराया। आदि शक्ती कर प्यार, एका मात झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआरा एकँकार, ओंकारा वेस वटाया। शब्द सुत सच दुलार, जोती जोत उपजाईआ। वरन गोत ना कोई विचार, एका रंग रंगाईआ। किला कोट ना कोई किनार, छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। ना कोई दिसे चार दीवार, ना कोई बणत बणाईआ। आप आपणा दए प्यार, आप आपणे दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द शब्द वड्याईआ। शब्द सुत हरि बलवान, एका एक उपाया। आपणा वेखे मार ध्यान, निरगुण वेस वटाया। दर द्वार होए दरबान, एका अलख जगाया। अलख निरँजण हो मेहरबान, एका राह बताया। लोआं पुरीआं मेल मिलाण, आप आपणा बंधन पाया। ब्रह्मण्ड खण्ड कर प्रधान, आप आपणा संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त, नारी कन्त आप हो जाया। नारी कन्त हरि भतार, आपणे अंक समाईआ। एका अन्तर मन्त्र इक्क प्यार, एका बूझ बुझाईआ। पूरन जोत श्री भगवन्त एकँकार, भगवन रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्दी शब्द साचा वर, ब्रह्मण्ड करे कुड़माईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि बणत बणा, शब्दी शब्द समाया। आप आपणा कँवल खिला, विष्नूं रूप आप हो जाया। अमृत नाभी मुख चुआ, आपणी धार बंधाया। दो दो आबी वेख वखा, आपणा रंग रंगाया। अकाल पुरख हरि बेपरवाह, बेअन्त नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंग कटाया। आपणा अंग आपे कट्ट, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपणा मेलया फट्ट, आप आपणा मेट मिटाईआ। आप आपणा पाए भट्ठ, हट्ट हटवाना आप हो जाईआ। आपे लपेटयां आपणे पट्ट, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म हो जाईआ। ब्रह्म रूप हरि भगवान, पारब्रह्म अख्वाया। आप आपणी नाभी आपे जम्म, कँवल कँवला विच समाया। एका ब्रह्म जाणे कम्म, त्रैगुण वेस वटाया। त्रैगुण तेरा साचा दम, करता कीमत दए पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। ब्रह्म रूप पारब्रह्म, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म जाणे कम्म, एका एक दरसाईआ। एका शब्द तृष्ना तम, एका भुक्ख जणाईआ। एका घर गया जम्म, मात पित ना कोई भैण भाईआ। सृष्ट सबाई बेड़ा आपे बन्नू, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश संग रलाईआ। मन मति बुध देवे धन, निरगुण जोत टिकाईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, करे सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, आपे वेख वखाईआ। पंज तत्त कर आकार, हरि साची बणत बणांयदा। आपे खोलू नौ द्वार, आपे भेख वखांयदा। थिर घर बैठ आप सरकार,

महल्ल अटल सुहाइन्दा। बज़र कपाटी जिंदा मार, आपे बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि निरँजण अबिनाशी करता, आप आपणी रचन रचांयदा। अबिनाशी प्रभ हरि अवतारा, अकल कल अख्वाईआ। लक्ख चुरासी कर पसारा, आप आपणा विच टिकाईआ। आपे बणया मीत मुरारा, एका ब्रह्म आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख, थिर घर साचे आप जगाईआ। अलक्ख निरँजण आप अलक्ख, हर घट आप जगांयदा। दस्म दुआरी हो पतक्ख, आप आपणा आसण लांयदा। सृष्ट सबाई विच्चों होया वक्ख, आपणा आप मुख छुपांयदा। सन्त सुहेले जुग जुग लए रक्ख, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। आपे जाणे किशना सुखला पक्ख, जगत अन्धेर मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपणी वंड आपे वंड, हरि साचे खेल खिलाया। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, भेव किसे ना पाया। आपे होए नार दुहागन रंड, कन्त सुहागी आप हो जाया। आपे खेले खेल भेख पखण्ड, ब्रह्म रूप आप हो जाया। आपे देवणहारा दंड, आपे बंधन आपणा पाया। आपे वस्सया जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप समाया। आपे करनहारा खण्ड खण्ड, आप आपणी किरत कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द नाद इक्क धुन वजाया। शब्द धुन हरि अनादि, एका एक वजांयदा। आप सुणाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। पकड़ उठाए सन्त साध, आप आपणा लेख लिखांयदा। मेट मिटाए वाद विवाद, एका नाअरा ज्ञान दृढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण देवणहारा साची दाद, एका वस्तू झोली पांयदा। रूप अनूपा माधव माध, मुकंद मनोहर लख़मी नरायण आप अख्वांयदा। जीव जन्तां सुण फरियाद, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धरांयदा। ब्रह्मा वेता कर प्यार, हरि साची सेव कमाईआ। शब्द अनादी सच्ची धुन्कार, एका ब्रह्म जणाईआ। एका अक्खर कर त्यार, एका रिहा सुणाईआ। एका विद्या इक्क विचार, एका करे पढ़ाईआ। एका लेख लिख्या धुर दरबार, ना कोई मेट मिटाईआ। साची सिख्या विच संसार, आपे रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग रीती आप चलाईआ। जुग रीती हरि करतार, आपणी आप चलांयदा। ब्रह्मा वेता विच संसार, नाभी कँवल सुहांयदा। चारों कुन्ट करे प्यार, चारे मुख खुल्ह्हांयदा। सच महल्ला नैण अधार, एका तेज वखांयदा। आपणी करनी करता करे अपार, आपणा कर्म कमांयदा। शब्द शब्दी वंड वंडा , एका एक दरसांयदा। करे प्रकाश साची नाड़, प्रकाश प्रकाश समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका ब्रह्म जणांयदा। एका ब्रह्म एका तत्त, एका धर्म दरसाया । एका चरन कँवल एका नत्त, एका बंधन पाया। एका सन्तोख एका सति, एका

धीरज धीर धराया। एका रक्त बूंद एका तत्त, एका बीज बिजाया। आपे देवणहारा साची वथ्थ, एका शब्द उपाया। इक्क चढ़ाए साचे रथ, लोआं पुरीआं इक्क फिराया। एका पाए आपणी नथ्थ, ब्रह्म पारब्रह्म बंधाया। एका मार्ग आपणा दस्स, पारब्रह्म सरनाया। एका मन्त्र गया दस्स, एका नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। ब्रह्मा मुख चारे खोल्ह, रसना हरि गुण गांयदा। वक्खर अक्खर शब्दी बोल, हरि हरि विच टिकांयदा। प्रेम कंडे साचे तोल, दो जहानां तोल तुलांयदा। आदि अन्त ना जाए डोल, सो पुरख निरँजण अडोल रखांयदा। आपे वसे रंग नवेल, सदा सुहेला संग निभांयदा। साचे तोले आपे तोल, आप आपणा मुख खुल्हांयदा। अमृत दित्ती साची पौल, आत्म ब्रह्म सुहांयदा। हौली हौली रिहा बोल, आपणा आप अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी किरत कमांयदा। आपे ब्रह्म शब्द जणा, हरि हरि भेव खुल्हाया। चारे वेद आप लिखा, आप आपणा विच टिकाया। भेव अभेदा भेव चुका, सोहँ रूप दरसाया। रसना जिह्वा कोई ना रिहा हिला, तार सितार इक्क वजाया। बोध अगाध आप जणा, इक्क नाद आप वजाया। धुर दी दाद झोली पा, सच भण्डारा आप भराया। आदि जुगादि खेल खिला, जुग जुग वेस वटाया। सतिजुग साचा मात धरा, सति सति वरताया। एका ज्ञान आप दृढ़ा, एका बूझ बुझाया। एका ध्यान आप लगा, एका जोग कमाया। एका बिबान इक्क चढ़ा, इक्क द्वार सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। सतिजुग तेरा रूप अपार, हरि हरि खेल खलांयदा। लोकमात नाम भण्डार, पारब्रह्म आप भरांयदा। साचे मन्दिर खोल्ह किवाड़, आपे मुख छुपांयदा। धरत मात वेख अखाड़, जल बिम्ब आप टिकांयदा। गगन पताला साचा लाड़, एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। धरत धवल कर पसार, हरि जोती जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी ख़बरदार, आपे आसण लाईआ। वरन गोती ना करे प्यार, आप आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटाईआ। आपणा वेस हरि वटा, विष्नूं वेस वटाया। दर लछमी आप बहा, लाल भूषन आप सुहाया। कँवल नैण आप मटका, बाशक सेजा सांगो पांग हंढाया। दर दरबार ल्ए खुल्हा, धुर दरबारी करे रुशनाया। साची तेरी सेवा ला, चारे सुत उपजाया। एका रूप आप दरसा, एका ब्रह्म टिकाया। दर दरबारे आप बुला, आपणा खेल खिलाया। सतिजुग तेरी धार प्रगटा, आप आपणा रूप वटाया। सन्त कुमारा लेखे ला, लेखा लिखणहार दिस ना आया। दोए धारा रिहा चला, बराह रूप खेल खिलाया। यज्ञे पुरश मेल मिला, आपणा बंक सुहाया। हाव गरीव जोत जगा, जोग जुगीशर नाउँ धराया। नर नरायण डेरा ला, लोकमात

फेरा पाया। कपल मुन आप उपा, साचा रंग रंगाया। दत्ता त्रै वेख वखा, आप आपणा संग रखाया। पृथू तेरी जोत जगा, आपणा आप दरसाया। रिखभ आपणा लड़ फड़ा, एका ब्रह्म समझाया। मत्तस तेरा वेस वटा, जलधारा आप हो जाया। कच्छप तेरा तन सुहा, मिन्दिरा पिठु उठाया। धनंतर तेरी जोत जगा, जगत विवाद आप समझाया। मोहणी रूप आप वटा, बल बावन भेख वटाया। हँसा साची चोग चुगा, मानक मोती वेख वखाया। नर नरायण फेरी पा, बालक ध्रू तराया। हरि हरि आप हो जा, गज तन्दव दए कटाया। नर सिँघ खेल आप खिला, भगत प्रहलाद आप तराया। साची सतिआ दए अख्वा, आदि शक्त वेस वटाया। जोत ज्वाला कर रुशना, सिँघ सिँघासण आसण लाया। निसुंभ सुंभ दए मिटा, जगत जोग इक्क सिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा वेखे साचा घर, घर साचे कर रुशनाया। साचे घर शब्द वधाई, हरि साचा आप वजांयदा। हरि सन्तन करे नाम कुड़माई, एका कर्म कमांयदा। आप आपणी बूझ बुझाई, एका ब्रह्म जणांयदा। एका मेला सहिज सभाई, घर साचा इक्क सुहांयदा। एका नेत्र रिहा ख़ुलाई, इक्क ज्ञान दृढ़ांयदा। एका बिन्द रिहा समझाई, घर चौथे डेरा लांयदा। पंचम मेला सहिज सभाई, हरि सन्तन वेख वखांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई छुहाई, शब्द दुलारा इक्क सुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगाई, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। अठ्ठां तत्तां भेव ना राई, अप तेज वाए पृथ्मी आकास मन मति बुध दिस ना आंयदा। नौवां दर करे जुदाई, घर दसवां इक्क समझांयदा। दर घर साचे सगन मनाई, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। जोत निरँजण आदि निरँजण विच समाई, एका दूजा भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद इक्क सुहांयदा। सतिजुग साचा उतरया पार, हरि साचे खेल खलाईआ। त्रेता तेरी पावे सार, त्रैलोक वज्जे वधाईआ। गण गधंरब गावण वारो वार, शब्द ताल इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लोकमात फेरा पांयदा। लोकमात हो उज्जयाला, जोती जोत जगांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दयानिध आप अख्वांयदा। संग रखाए काल महांकाला, आप आपणी बणत बणांयदा। जन भगतां वेखे काया मन्दिर सच्ची धर्मसाला, थिर घर साचे आप टिकांयदा। सदा सुहेला होए रखवाला, विछड़ कदे ना जांयदा। तोड़नहारा जगत जंजाला, आप आपणा बिरध रखांयदा। नाम पाए साची माला, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, हरि का भेव कोई ना पांयदा। राम नाम दए सुखाला, जीवां जन्तां पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग त्रेता नाउँ धरांयदा। त्रेता तेरी धार निराली, हरि साची खेल खलाईआ। सर सरोवर बणया पाली, एका मेला मेल मिलाईआ। रामा राम दए दलाली,

साचा मार्ग इक्क चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। राम रामा रूप अपार, हरि हरि रूप वटाया। रावण लंका गढ़ हँकार, वेखणहार आप हो जाया। अन्तिम वेले पाए सार, आपे मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा मूल चुकाया। लंका गढ़ हँकार, जगत अभिमानया। एका धर्म होए जैकार, ना दिसे पंज शैतानया। सीता सुरती करे राम प्यार, शब्द राम आप पछाणया। ढहि ढहि पए हरि द्वार, मिले मेल श्री भगवानया। आवण जावण उतरे पार, लक्ख चुरासी भेव कटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस वटानया। वेस वटा हरि करतार, आपणा रूप दरसांयदा। जुग द्वापर हो उज्यार, कुँवारी कन्या संग रखांयदा। पूत सपूता सुत दुलार, वेद व्यासा नाम धरांयदा। पुराण अठारां बण लिखार, चार लक्ख हज़ार सतारां सलोक सुणांयदा। रूप अनूप अगम्म अपार, सेवक सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए आदि जुगादि, हरि समरथ आप हो जांयदा। आदि जुगादि हरि हरि खेला, आपणी खेल खलांयदा। आपे करे आपणा मेला, पंज तत्त मेल मिलांयदा। आपे गुरू आपे चेला, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा होए सज्जण सुहेला, सज्जण सुहेला आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणा वक्त वेला, पंडत पांधा ना कोई जणांयदा। आपे वस्सया सदा नवेला, हर रंग आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरी अन्तिम वर, बाल बाला वेस वटांयदा। बाल बाला हरि अपार, एका रूप उपाया। आपे करे पार किनार, जल धारा वेख वखाया। एका जोती हो उज्यार, नूरो नूर समाया। आपे दुष्टां करे सँघार, आप आपणा तेज रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। द्वापर तेरा साचा रंग, हरि साचा वेख वखांयदा। गुरमुखां सुत्ता आत्म सेज पलँघ, मनमुखां दिस ना आंयदा। हरि सन्तां आत्म धार देवे रंग, मनमुखां नीर ना कोई दरसांयदा। हरिजन साचा सच दुआरा आपे लँघ, आप आपणा दर सुहांयदा। मनमुखां मानस देही होए भंग, लक्ख चुरासी ना कोई तुड़ांयदा। सृष्ट सबाई वेखे लँघ, साचा दर ना कोई सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। द्वापर तेरी अन्तिम धार, हरि साचे आप चलाईआ। दोहां विचोला आप निरँकार, दिस किसे ना आईआ। खेले होला विच संसार, अट्ठ अठारां फेरा पाईआ। जोधा सूर बली बलकार, आप आपणा वेस वटाईआ। रथ रथवाही हरि गिरधार, महांसार्थी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। खेले खेल हरि भगवान, आपणी खेल वखांयदा। धरत मात तेरा निशान, राज राजान आप विखांयदा। मेल मिलावा गोपी काहन, साचा मीता संग निभांयदा।

धर्म युधिष्टर कर परवान, एका बूझ बुझांयदा। अर्जन जोधा वड बलवान, एका मुख शरमांयदा। छड्डे शस्त्र तीर कमान, ना कोई धीर धरांयदा। देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, एका शब्द सुणांयदा। गीता ज्ञान इक्क वखान, अठारां ध्याए चलांयदा। एका रूप श्री भगवान, चौदां लोक विच समांयदा। चौदां हट्ट जगत दुकान, लोआं पुरीआं डेरा लांयदा। खेले खेल दो जहान, आप आपणी कल वरतांयदा। त्रिलोकी नाथ ना कोई तीर ना कमान, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। आपे वेखे मार ध्यान, अन्तर आत्म बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। द्वापर अन्तिम उतरया पार, हरि साचे खेल खलाईआ। कलिजुग होया मात उज्यार, बैठा सीस झुकाईआ। मंगता मंगे बण भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जूठ झूठ जगत प्यार, माया मोह बंधन पाया। नाता जोड़े विच संसार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपे रिहा झोली पाईआ। खेले खेल चार लक्ख बत्ती हज़ार, तेरी आरज़ू आप जणाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे मार, पंचम पंचम दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग मारे इक्क ललकार, सतारां लक्ख बीस हज़ार अठाई बरस उपाया। त्रेता तेरी वज्झी धार, बारां लक्ख छिआनवें हज़ार आप गिणाया। द्वापर तेरा रूप अपार, अट्ठ लक्ख चौसठ हज़ार वेस वटाया। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चार लक्ख बत्ती हज़ार बंधन पाया। चार चौथे जुग होए ख्वार, बत्ती दन्द ना कोए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग दित्ता एका वर, एका झोली पाया। वर घर साचा कलिजुग पा, लोकमात फेरी पांयदा। भगत भगती लए लगा, आपे वेख विखांयदा। धर्म जड़्ह दए उखड़ा, गऊ ग़रीब सतांयदा। दोहां ना मिले कोई थाँ, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। आपणी झोली अग्गे डाह, दूजी वार मंग मंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल खिलांयदा। मंगी मंग दर दुआर, आत्म आपणी झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी कल वरताईआ। ईसा मूसा हो उज्यार, लोकमात करे कुड़माईआ। संग मुहम्मद चार यार, आप आपणा खेल खिलाईआ। अल्ला राणी एका नाअर, ऐनलहक्क सुणाईआ। ख़ुदी ख़ुदाई ना पावे सार, खालक खलक ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेस वटाईआ। आपणा वेस आपे कर, आपणा रूप वटाया। नानक जोती आपे धर, गोबिन्द नाउँ धराया। दासन दास देवे वर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। लक्ख चुरासी जूठ झूठ रहे हड़, ना कोई बन्ने लाया। सन्त सुहेला ना सके कोई फड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। गोबिन्द लिख्या साचा लेख, वेद व्यास वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ धारे भेस, निहकलंका

नाउँ रखाईआ। बाल जवानी बिरध ना कोई वरेस, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। दाता दानी नर नरेश, निरगुण रूप आप अख्वाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। निरगुण धारा दस दस्मेस, राम कृष्न आप हो जाईआ। संग मुहम्मद इक्क अदेस, चारों कुन्ट सुणाईआ। अल्ला राणी हो प्रवेश, एका रंग रंगाईआ। अबिनाशी करता सदा अदेस, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराईआ। निहकलंक नाउँ निरँकार, आपणा आप उपाया। आप सुहाया सचखण्ड द्वार, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाया। अलक्ख निरँजण हो त्यार, आप आपणा वेस वटाया। शब्द घोड़ा कर त्यार, सोलां कलीआं आसण लाया। नीली धारों आया बाहर, आप आपणा नाउँ धराया। ब्रह्मा वेता करया ख़बरदार, सोया रहिण कोई ना पाया। शंकर देवे इक्क हुलार, आप आपणी दया कमाया। करोड़ तेतीसा कर प्यार, सुरपति राजा इन्द मिलाया। गण गधंरब रहे उचार, आप आपणी सेवा लाया। लोकमात बन्नॢ धार, जोती नूर कर रुशनाया। शब्द डंका अपर अपार, आप आपणा रिहा सुणाया। राज राजाना करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप हिलाया। साधां सन्तां दए हुलार, आप आपणा धक्का लाया। जन भगतां मेला चरन द्वार, बंक द्वार इक्क सुहाया। हरिजन साचे कर प्यार, आप आपणा वेख वखाया। गुरमुख साजण मीत मुरार, एकँकारा रूप वटाया। सम्मती सम्मत पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस बीसा नाउँ धराया। बीस बिक्रमी हरि करतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला पावे सार, आप अपणी कल वरताईआ। जगत महल्ला दूजी धार, निराकार साकार समाईआ। तीजा नैण इक्क उग्घाड़, हरिभगतां दरस दिखाईआ। चौथे पद रिहा दौड़, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। पंचम सुहाए इक्क दरबार, इक्क धार वखाईआ। छेवें छुप छुप बैठा विच संसार, जगत नैणां दिस ना आईआ। सत्तवें सति सति सतिवादी साची कार, सति सरूप आप कमाईआ। अट्ठे अठसठ मारे मार, नाम खण्डा इक्क वखाईआ। नौ दर करे ख्वार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। दस दस पावणहारा सार, घर साचे मेल मिलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरा पार किनार, सतिजुग सच्ची नीह धराईआ। साचे बाले कर प्यार, इन्द इन्द्रासन छप्पर छुहाईआ। बीस सद ग्यारां खेल अपार, धरत धवल करे रुशनाईआ। बारां बारां रवि ससि वेख विचार, साचा धाम सुहाईआ। नौ दर खोलॢ किवाड़, नौ खण्ड करे कुड़माईआ। तेरां तेरां इक्क प्यार, तेरी बूझ बुझाईआ। साधां सन्तां रिहा ललकार, आप आपणा खेल खिलाईआ। राज राजानां मारे मार, मारनहार आप हो जाईआ। वीह सौ चौदां खेल अपार, हरिजन साचे लए जगाईआ। एका इक्की कर प्यार, दर साचे आपणे आपे पाईआ। रिखी

मुनी ना पायण सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ढूँघी कन्दर जल थल वेख वखाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, शत्तरी ब्रह्मण वैश शूद्र एका रंग रंगाईआ। एका कलमा इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका ब्रह्म प्रभ विचार, एका ब्रह्म जणाईआ। मानस जन्म दए संवार, जो जन रहे शरनाईआ। साची सिख्या जगत विहार, गुरमति इक्क रखाईआ। पाए भिच्छया धुर करतार, दाता दानी नाउँ धराईआ। अन्त लेखा चुकाए सतारां हाढ़, साची रुत्त सुहाईआ। लक्ख चुरासी अग्नी जोती लाए नाड़ नाड़, ना सके कोई बुझाईआ। धरत मात वेखे इक्क अखाड़, चौदां लोक वेख वखाईआ। त्रै देशां अन्दर देवे वाड़, वार थित ना कोई समझाईआ। घड़णहारा आपणा घाड़, घड़ण भन्नणहार वखाईआ। खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सद चौदां तेरी धार, खेले खेल अगम्म अपार, कलिजुग जीव सार ना राईआ। सम्मत पन्दरां शब्द तराना, हरि हरि आप सुणांयदा। जोधा सूर मर्द मरदाना, आप आपणा वेस वटांयदा। नादी धुन इक्क तराना, गुरमुखां आप सुणांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाणा, सोहँ शब्द जणांयदा। पतित पावण श्री भगवाना, पतित पापी आप तरांयदा। खेले खेल दो जहानां, लोकमात फेरी पांयदा। धर्म झुलाए इक्क निशाना, नौ खण्ड सत दीपां आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। सम्मत पन्दरां साचा रूप, हरि हरि आप वटाया। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरी पाया। शब्द निराला तीर रिहा छूट, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाया। मेट मिटाए जूठ झूठ, माया ममता मोह चुकाया। जन भगतां मेले नठ्ठ नठ्ठ, आप आपणा दरस दिखाया। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ्ठ, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। मनमुखां फड़ाए खाली ठूठ, दर मंगण भिख ना पाया। शब्द नगारे लग्गे चोट, साचा हरि रिहा लगाया। कलिजुग कढ्ढे वासना खोट, कूड़ी क्रिया मेट मिटाया। धीरज धीर सति सन्तोख बन्न्हे लंगोट, आप आपणा कर्म कमाया। कलिजुग जीव आल्हणिउँ डिग्गे बोट, सचखण्ड द्वार ना कोई लटकाया। माया ममता भरी ना पोट, इक्क तृष्ना होई हलकाया। तीर्थ तट्टां फिरदे कोटी कोट, आत्म नुहावन ना कोई नुहाया। निरगुण नूर ना जगी साची जोत, जगत हवनी हवन कराया। दुरमति मैल ना देवे धोत, अठसठ फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा सृष्ट सबाया। सम्मत पन्दरां साचा राह, हरि हरि आप चलाईआ। लोकमात बण मलाह, गुर शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द दाता बेपरवाह, आप आपणी रचन रचाईआ। चार वरन जपाए एका नाँ, एका रूप दरसाईआ। आपे पिता आपे माँ, पिता पूत आप हो जाईआ। निथाविआं देवे साचा थाँ, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। हरि सन्तां पकड़े बांह, दो जहानां दए तराईआ। करनहारा सच न्याँ, थिर घर बैठा आसण लाईआ। हरिजन

हँस बणाए फड़ फड़ काँ, एका अमृत जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर घर करे रुशनाईआ। दर मन्दिर तेरा सच टिकाणा, हरि हरि जगत उपाया। साढे तिन्न हथ्थ सच मकाना, सम्बल नगरी नाउँ धराया। शब्द गुर खेल महाना, गोबिन्द वेस वटाया। राम राम इक्क तराना, एका मंगल गाया। एक भूप सखी सुल्ताना, एका रूप दरसाया। एका हरि हरि मेहरबाना, एका नाम दृढ़ाया। एका बन्न्हणहारा गाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जाया। नर नरायण अकल कल धार, निरगुण जोत जगाईआ। पूत सपूता कर प्यार, ब्रह्मण गौड़ वेख वखाईआ। पर्बत टिल्ला पावे सार, बज़र कपाटी अग्गे डाहीआ। सम्बल नगरी धाम न्यार, बैठा आसण लाईआ। ना कोई दिसे चार द्वार, ना जगत निशान दिसाईआ। सृष्ट सबाई पावे सार, वड दाता बेपरवाहीआ। तीर्थ तट्टां वेख किनार, साधां सन्तां खोज खुजाईआ। गुरमुख साचे कर विचार, आपणे रंग रंगाईआ। सोलां मग्घर हरि शृंगार, शब्द शृंगार तन वखाईआ। सोलां इच्छया भर भण्डार, सर्बकल आप दरसाईआ। सोलां मेला विच संसार, सोलां सोलां करे जुदाईआ। सोलां कलीआं साचे अस्व हो अस्वार, धुरदरगाही दाता बेपरवाहीआ। आपणा आप वेख वखाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराईआ। सोलां मग्घर सति विहार, हरि साची जोत जगाईआ। नाभी कँवली कर उज्यार, अमृत नाभ भराईआ। साँवल सँवला मीत मुरार, काया कृष्ना रूप वटाईआ। धरनी धवल दए सहार, आप आपणा चरन टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा संग निभाईआ। ओंकार आप करतारा, एका एक अख्वांयदा। हरिजन मेला मीत मुरारा, सगला संग निभांयदा। पार कराए नौ दर, डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। सुखमन नाड़ी हो उज्यारा, टेडी बंक सुहांयदा। शब्द सुणाए सच्ची धुन्कारा, एका ताल वजांयदा। जोत निरँजण सेवादारा, साची सेव लगांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, निझर रस चुआंयदा। गुरमुख खोल्हे बन्द किवाड़ा, आत्म ब्रह्म जणांयदा। शब्द सिँघासण बन्न्हे बेड़ा, आप आपणा मेल मिलांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़ा, गुरमुख नारी आप प्रनांयदा। शब्दी शब्द वखाए इक्क अखाड़ा, कलिजुग मृदंग सुणांयदा। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि शक्त आप हो जांयदा। ओअँ रूप ओम प्रकाश, प्रकाश प्रकाश समाया। मेल मिलावा पुरख अबिनाश, घर ठांडे मेल मिलाया। हरिभगतां हरि होया दास, जुग जुग सेव कमाया। लेखे लाए रसन स्वास, रसना जिह्वा हरि हरि गाया। मानस जन्म बुझाई प्यास, लक्ख चुरासी फंद कटाया। पूरी करनहारा आस, आप आपणी भिच्छया पाया। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन आप खिलाया।

वेख वखाए पृथ्मी आकास, गगन पताला फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्रकाश आप जणाया। ओम प्रकाश जगत प्रकाश, हरि तेरी वड वड्याईआ। लहिणा देणा चुक्के दस दस मास, मात गर्भ फेरा ना पाईआ। सचखण्ड दुआरा निज घर वास, साचे घर वज्जे वधाईआ। सदा सुहेला वस्सया पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सर्ब गुणां गुण आपे तास, गुणवन्ता नाउँ धराईआ। हरिभगत ना होए कदे उदास, घर साचा मेल मिलाईआ। लेखे लाए पंज तत्त हड्ड नाड़ी मास, रक्त बूंद आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन मीता इक्क अतीता ना कोई मन्दिर ना मसीता, ना कोई देहुरा जगत मट्ठ काया हट्ट जोती लट लट निरगुण धार हो उज्यार, आप आपणी रिहा जगाईआ।

* १७ मग्घर २०१५ बिक्रमी बख्शीस सिँघ सरदूल सिँघ दे घर पिण्ड कहेरु ज़िला संगरूर *

जोती नूर हरि उज्यार, एका एक अख्वांयदा। आदि पुरख खेल अपार, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। पारब्रह्म अगम्म अपार, रूप अनूप आप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी जोत जगांयदा। जोती नूर हरि उजाला, एका एकँकारया । आपे खेले खेल निराला, खेलणहार आप अख्वा रिहा। आपणा दर सुहाए सच्ची धर्मसाला, बंक द्वारी नाउँ रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वा रिहा। अबिनाशी करता हरि निरँकार, एका रूप समाया। आदि जुगादी ल्ए अवतार, आप आपणी बणत बणाया। आपे वसे धाम न्यार, निहचल महल्ल अटल इक्क रखाया। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। रंगणहारा हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटांयदा। आप आपणी बणाए बणता, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणी करे मन्नता, आप आपणा दर सुहांयदा। आप आपणे दर होए मंगता, आप आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरि भगवन्त, आप आपणा खेल खलांयदा। खेलणहार हरि भगवान, एका रूप समाया। वेख वखाए दो जहान, पुरीआं लोआं फेरा पाया। एका शब्द सच निशान, एका रिहा चलाया। एका एक ब्रह्म ज्ञान, एका रिहा उपाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आप आपणा जोग कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादि जुगा जुगन्त, आपणा वेस वटाया। हरि हरि वेस जगत अवल्ला, एका एक अख्वाईआ। बैठा रहे इक्क इकल्ला, लक्ख चुरासी

रिहा समाईआ। आप समाए जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ आपे डेरा लाईआ। आपणा दीपक आप बला, आप करे रुशनाईआ। आपणा सिँघासण आप सुहा, आपे बैठा बेऐब परवरदिगार साचा माहीआ। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ रखाईआ। जुग करता हरि करतार, एका रंग समाया। लोकमात लए अवतार, आप आपणी रचन रचाया। लक्ख चुरासी पावे सार, जीआं जन्तां वेख वखाया। साधां सन्तां कर प्यार, आत्म ब्रह्म जणाया। अन्दर मन्दिर खोल्ह किवाड़, आप आपणा दर सुहाया। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। मेट मिटाए पंचम धाड़, जूठ झूठ रहिण ना पाया। धर्म रखाए इक्क अखाड़, ताल तलवाड़ा इक्क वजाया। दर घर साचे देवे वाड़, घर घर विच मेल मिलाया। चौथे पौड़े आप चाढ़, परमानंद समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा खेल खलाया। जुग जुग खेल खेलणहारा, एका एकँकारया। लोकमात हो उज्यारा, खेले खेल सर्ब संसारया। जन भगतां देवे नाम अधारा, एका नाउँ वंञ मुहाणया। आपे लाए पार किनारा, वड दाता हरि मेहरबानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखणहारा दर, लोकमात होए प्रधानया। लोकमात नर नरेश, एका एक अख्वांयदा। आप आपणी दए अदेस, आप आपणा सगन मनांयदा। आपे दाता दानी दस दस्मेस, आप आपणा घर सुहांयदा। आप आपणे नेत्र आपे पेख, आप आपणा पर्दा लांहयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपे लेखा अन्तिम मेट मिटांयदा। आप उपाए धारी केस, मूंड मुंडाए संग रखांयदा। आप जगाए ब्रह्मा विष्नूं महेष गनेश, करोड़ तेतीसा आप उठांयदा। आप आपणा करया वेस, कलिजुग दर दरवेश नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरो नूर नूर चमकांयदा। नूरो नूर हरि करतार, एका नूर करे रुशनाईआ। शब्द तूर इक्क उपजा, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। सृष्ट सबाई दए जणा, जीवां जन्तां आप जणाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां लए जगा, राउ रंक आप उठाईआ। एका डंका रिहा वजा, चार वरन करे कुड़माईआ। दुआर बंका दए सुहा, धरत मात वड्डी वड्याईआ। वासी पुरी घनका आप अख्वा, सच सिँघासण पुरख अबिनाशी बैठा डेरा लाईआ। जोती तनका इक्क लगा, हरिजन साचे वेख वखाईआ। मन का मणका दए फिरा, मति बुध ना कोई चतुराईआ। जननी जन लेखे लए लगा, हरि हथ्थ वड्डी वड्याईआ। चेतन्न सता आप उपा, आपे मेल मिलाईआ। शब्दी दाता वेख वखा, रत्ती रत्त आप सुकाईआ। धीरज जता धीर धरा, सति सन्तोख विच समाईआ। चरन कँवल नाता आप बंधा, आप आपणा वेख वखाईआ। थक्का मांदा दो जहां, चौदां लोक फेरी पाईआ। चौदां हट्ट आप खुल्हा, त्रै भवन बूझ बुझाईआ। लोआं पुरीआं रिहा हिला, आप आपणी बणत बणाईआ।

एका ढोला रिहा गा, दाता दानी धुरदरगाहीआ। आपणा चोला आप तजा, पंज तत्त ना कोए कुड़माईआ। मौला मौला रूप आप हो जा, नूर इलाही आप ख़ुदाईआ। राम रामा वेस वटा, आप आपणी कल वरताईआ। नानक गोबिन्द लेख लिखा, आपे वेख वखाईआ। दर दरवेशा फेरी पा, अलक्ख निरँजण अलक्ख जगाईआ। अगम्म अगम्मड़े धाम सुहा, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी बणत बणाईआ। शब्द सुहेला हरि बनवारी, आपणा रूप वटाया। निरगुण जोती कर उज्यारी, सरगुण मेल मिलाया। आपे बैठा अद्धविचकारी, दिस किसे ना आया। नाम खण्डा तेज़ कटारी, गोबिन्द हथ्थ उठाया। कूड़ी क्रिया करे ख्वारी, जूठ झूठ रहिण ना पाया। तोड़णहारा गढ़ हँकारी, एका कर्म कमाया। जन भगतां मेला सच द्वारी, आत्म ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म सच्ची सिक्दारी, दो जहानां वेख वखाया। लक्ख चुरासी करे कारी, कारज करता नाउँ उपाया। धरनी धरत धवल होए पनिहारी, आप आपणा दर सुहाया। रवि ससि रहे पुकारी, मण्डल मण्डप दए दुहाया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारी, अट्ठे नेत्र नीर वहाया। शिव शंकर ना बन्ने कोई धारी, धीरज धीर ना कोई धराया। करोड़ तेतीसा करे पुकारी, कलिजुग वेला अन्तिम आया। मण्डल मण्डप करे गिरयाज़ारी, दिवस रैण दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा लेख लिखाया। आपणा लेखा आपे लिख, आपे लेख लिखांयदा। आपणी सिख्या आपे सिख, आपे बूझ बुझांयदा। आपणी भिच्छया पाए भिख, आपणा दर सुहांयदा। आप आपणी मेटे तृख, जगत तृष्ना आप बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रतड़ा हरि निरँकार, एका जोत जगाईआ। आदि जुगादी सांझा यार, चार वरनां इक्क सरनाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका धाम इक्क द्वार, एका बूझ बुझाईआ। एका बैठा सच द्वार, सच सिँघासण आसण लाईआ। एका जोती हो उज्यार, निरगुण नूरो नूर समाईआ। एका हाटी वणज वपार, एका वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी जोत जगा, आपणा कर्म कमाया। दीवा बाती इक्क टिका, जोत निरँजण सेवा लाया। बज़र कपाटी कुण्डा लाह, आप आपणा मुख छुपाया। भगत सुहेले आप उठा, आप आपणी बूझ बुझाया। गुर गुर चेले ल्ए मिला, एका मार्ग लाया। अन्तिम वेले हो सहा, लक्ख चुरासी फंद कटाया। शब्द डोरी बंधन पा, नाम बिबाणे आप चढ़ाया। तिलक ललाटी चन्दन आप लगा, मस्तक टिक्का इक्क सुहाया। परमानंदन डेरा ला, निजा नंद रस चखाया। सद बख्शंदन आप अख्वा, आप आपणा धर्म धराया। जगत बंधन तोड़ तुड़ा, जुग

ਜੁਗ वेस वटाया। त्रै गुण तेरा कोई ना थाँ, पंचम मीता ना कोई सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाया। त्रैगुण माया मारे धाह, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। पंच विकारा ना कोई थाँ, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। पंचम तत्त ना पकड़े बांह, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ना कोई सहाईआ। सुरत सवाणी करे नांह, ब्रह्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। नाता तुटा पिता माँ, साक सैण ना भैण भाईआ। ना कोई देवे ठंडी छाँ, कलिजुग अग्नी एका डाहीआ। जीव जन्त होए काँ, साची चोग ना हँस चुगाईआ। राज राजान ना करे कोई न्याँ, जूठी झूठी लशकर शाहीआ। निथाविआं देवे ना कोई थाँ, ग़रीब निमाणे रहे कुरलाईआ। नानक लेखा गया समझा, एका मति समझाईआ। गुर चेले वसे साचे थाँ, अकाल पुरख मनाईआ। अकाल मूर्त बेपरवाह, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी चलत चलाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यार रिहा उठ, हरि साचा आप उठांयदा। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ्ठ, नौ खण्ड पृथ्मी सत्तां दीपां फेरा पांयदा। तीर निराला रिहा छुट्ट, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। दो जहानां कढ्ढे कुट्ट, वरभण्डी डेरा लांयदा। ख़ाली दोवें दिसण हथ्थ, जूठ झूठ ना दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका आपणा शब्द सुणांयदा। शब्द डंका हरि निरँकार, एका नाम वजाया। माया ममता होए ख्वार, जूठ झूठ रहिण ना पाया। हउमे हँगता तोड़े गढ़ हँकार, जगत तृष्ना मेट मिटाया। साची संगता कर प्यार, नानक अंगद गल लगाया। धुरदरगाही मंगदा इक्क द्वार, जुग जुग वेस वटाया। खेले खेल अगम्म अपार, लोकमाती फेरा पाया। जोती नूर नूर उज्यार, साचा साकी बण के आया। अमृत देवे नाम भण्डार, एका जाम प्याया। खोल्हे हाटी बन्द किवाड़, बज़र कपाटी तोड़ तुड़ाया। दर घर साचे देवे वाड़, हरिजन साचे वड वड्आया। आपे होए पिछे अगाड़, लहिणा देणा मूल चुकाया। त्रैगुण अग्नी देवे साड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा पर्दा आपे लाहया। कलिजुग बेड़ा आपे बन्न्ह, आपे रिहा चलाईआ। आपणा भाणा आपे मन्न, आपणे भाणे आप समाईआ। आपे राग सुणाए कन्न, आप आपणा राग अल्हाईआ। आपणा मेटे आपे जन, आप आपणा भरम चुकाईआ। आपे लेखे लाए आपणा तन, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। आपणे घर आपणा आप आपे ल्ए बन्न्ह, बन्न्हणहार आप हो जाईआ। आपणा देवणहारा आपे डन्न, आपे दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल बेपरवाहीआ। आपे बेपरवाही बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर समाया। हक्क ख़ुदाई सांझा यार, एका रूप

६३३ ०७

वटाया। मुकामे हक्क मीत मुरार, पीर दस्तगीर शाह हकीर वेख वखाया। हक्क हकीकत पावे सार, पर्दा उहला ना कोई जणाया। सच रफ़ीक हो त्यार, लोकमात वेख वखाया। लाशरीक सांझा यार, आप आपणा नाउँ धराया। कलिजुग आई अन्त हार, सदी चौधवीं आप भुगतानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लहिणा तेरी झोली भरानया। कलिजुग तेरा साचा लहिणा, हरि हरि आप चुकांयदा। आत्म बस्त्र पाए गहिणा, तन शृंगार वखांयदा। जूठ झूठ कज्जल नैणां, तेरा मुख सुहांयदा। माया ममता संग हो ना बहिणा, सगला संग निभांयदा। शौह दरयाए अन्तिम पैणा, एका दर वखांयदा। पुरख अबिनाशी साचा कहिणा, ना कोई गेड़ कटांयदा। आदि जुगादि किसे ना रहिणा, जो घड़या भन्न वखांयदा। सतिजुग साचे धरत मात दी गोदी बहिणा, हरि साचा जन्म दवांयदा। एका शब्द रसना कहिणा, एका राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेट मिटाए तेरी अन्तर धार, प्रगट हो विच संसार, आप आपणा कर्म कमांयदा। करनहार हरि समरथ, आदि जुगादि अख्वाया। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग वंड वंडाया। जगत मुनारा जाए ढठ्ठ, थिर कोए रहिण ना पाया। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी मुख शरमाया। गेड़णहारा उलटी लट्ठ, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। त्रैगुण माया भट्ठ, जोती लम्बू लाया। सृष्ट सबाई होई भट्ठ, हरि साचे खेल रचाया। सन्त सन्त सुहेले मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमाया। हरि चरन दुआरे इक्क इक्ठ्ठ, एका धाम सुहाया। देवणहारा साची वथ्थ, सतिजुग मार्ग लाया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही फेरा पाया। कलिजुग अन्तिम देवे मथ, नाम मधाणा इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ उपाया हरि निरँकार, आपणा आप दरसांयदा। इक्क इकल्ला वेख विचार, अकल कला अख्वांयदा। जोगी जगत ना कोई विचार, तपी तपीशर ना मेल मिलांयदा। तपी तपीशर गए हार, बंध बंधन ना कोई पांयदा। तन लंगोटी होए ख्वार, साची चोटी ना कोई चढ़ांयदा। बोटी बोटी करनहार, जगत तृष्ना ना कोई बुझांयदा। वासना खोटी होई विभचार, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। साधां सन्तां आई हार, घर मंगल ना कोई गांयदा। सुरती शब्द ना कोई प्यार, अनहद ताल ना कोई वजांयदा। मिले मेल ना मीत मुरार, अंगीकार ना कोई करांयदा। नौ दुआरे हाहाकार, धर्म खण्ड ना कोई जणांयदा। हरिजन विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझांयदा। अन्तर आत्म इक्क प्यार, एका रंग समांयदा। कँवल नाभ अमृत धार, ठांडा जल वरतांयदा। सांतक सति सति रूप करतार, सति सन्तोख आप रखांयदा। मनमुक्ख भुलाए जीव गंवार, आप आपणा भेव छुपांयदा। सर्बकला

समरथ आप निरँकार, दिस किसे ना आंयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, नेत्र लोचण जो जन दर्शन पांयदा। जुग जुग महिमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना कोई कथांयदा। सतिजुग साचे देवे वथ, सो पुरख निरँजण मात धरांयदा। हँ हँगता देवे मथ, ब्रह्म ब्रह्म रूप दरसांयदा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म पाए नथ्थ, आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। हरि हरि नाउँ निहकलंक, कलिजुग वज्जी वधाईआ। आपे राउ आपे रंक, शाह सुल्तान आप हो जाईआ। आप सुहाए आपणा बंक, बंक द्वारी वेस वटाईआ। भगत भगती लाए तनक, आपे झोली भिच्छया पाईआ। आपे खेले खेल बार अनक, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। कलिजुग प्रगट होया वासी पुरी घनक, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। मेटणहारा जगत शंक, कलिजुग झूठा गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। गोबिन्द साचा खेल खलावणा, हरि हथ्थ वड्डी वड्याईआ। एका नगर धाम सुहावणा, महल्ल अटल कर रुशनाईआ। सच प्रकाश इक्क करावणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। कल्गी तोड़ा सीस चमकावणा, जोती जोत जोत मलाईआ। शाह अस्वार इक्क अख्वावणा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। नीली धारों पार करावणा, आप आपणे अंक समाईआ। साचा गढ़ बंक सुहावणा, घर साचा वेख वखाईआ। नेत्र नैण किसे दिस ना आवणा, चारों कुन्ट वेखे सर्ब लोकाईआ । भेव अभेदा भेव छुपावणा, वेद व्यास रिहा कुरलाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चा टिल्ला पर्बत इक्क सुहावणा, चढ़ बैठा धुरदरगाहीआ । नाम खण्डा इक्क चमकावणा, इक्क धारा रिहा वखाईआ। रसना चिल्ला इक्क चढ़ावणा, इक्क निशान तकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी फेरा पावना, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। एका शस्त्र आप उठावणा, ना होए कोई सहाईआ। तेरा लहिणा देणा अन्त चुकावणा, वेले अन्तिम मेटणहारा झूठी छाहीआ। राज राजान कोई रहिण ना पावणा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। सीस ताज दिस ना आवणा, छत्र सीस ना कोई झुलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल खिलावणा, चारों कुन्ट पाए दुहाईआ। दर दरवेश दर दरबान फिरावणा, मेहरबान सार ना पाईआ। गोपी काहन ना कोई नचावणा, नाम बंसरी इक्क वजाईआ। सीता सुरती राम मिलावणा, घर मेला साचे माहीआ। नानक निरगुण धार चलावणा, धुर दरबार वड्डी वड्याईआ। एका शब्द अलक्ख निरँजण गावणा, आप आपणा रूप दरसाईआ। गोबिन्द जोधा सूरबीर उठावणा, आप आपणा बणे सहाईआ। अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलावणा, अगम्मड़ी धार वहाईआ। कलिजुग तेरा वेस चुकावणा, मेटे कूड़ी शाहीआ। सतिजुग साचा धरत मात धरावणा, धरत धवल आप सुहाईआ। एका मार्ग सच्चा लावणा, चार वरन सच्ची सरनाईआ। सच निशाना इक्क रखावणा, धर्मी धर्म कमाईआ। धुन अनादी नाद वजावणा, आत्म

ब्रह्म मिलाईआ। ब्रह्म ब्रह्म वेख वखावणा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा कर्म कमावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ना कोई वरन ना कोई गोत, एका नूर हाज़र हज़ूर निहकलंक आप हो जाईआ।

*** १८ मग्घर २०१५ बिक्रमी त्रिलोक सिंघ दे घर महल्ला घुम्मयारां सुनाम शहर ***

आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, एका एकँकारया। अबिनाशी पुरख जाणे घट अन्तर, लक्ख चुरासी आप समा रिहा। आप जणाए आपणा मन्त्र, धुन अनादी शब्द वजा रिहा। लोकमात बणाए साची बणतर, इक्क इकल्ला वेख वखा रिहा। खेले खेल गगन गगनंतर, धरत धवल सुहा रिहा। मेटणहारा मन मनवन्तर, ब्रह्मा विष्न शिव उठा रिहा। खेले खेल देस दसन्तर, लोआं पुरीआं आप हिला रिहा। त्रैगुण तत्त इक्क बसन्तर, आप आपणी अग्न जला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अकाला खेल खिला रिहा। पुरख अकाल हरि गोपाल, आदि जुगादि समाया। दीनां बंधप दीन दयाल, जुग करता नाउँ रखाया। लक्ख चुरासी काया वेख सच्ची धर्मसाल, घर घर विच डेरा लाया। एका शब्द शब्द दलाल, जुग जुग आपणा मात चलाया। अनहद वजाए साचा ताल, ताल तलवाड़ा इक्क रखाया। जोत निरँजण दीपक बाल, हर घट आपे वेख वखाया। देवणहारा नाम सच्चा धन्न माल, तन ख़ज़ीना इक्क भराया। आपे शाह आपे कंगाल, वणज वणजारा नाउँ धराया। आदि जुगादी अवल्लड़ी चाल, जुग जुग वेस वटाया। भगत सुहेला सदा रखवाल, निहकर्मी कर्म कमाया। मेल मिलावा काल महांकाल, द्वार बंका इक्क सुहाया। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाया। करनहारा सदा प्रितपाल, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाया। वसे धाम इक्क निराल, अगम्म अगम्मड़ा आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाउँ निरँकार एकँकारा रूप दरसाया। लक्ख चुरासी आपे दाता, आपे बणत बणाईआ। पारर्थहम प्रभ पुरख बिधाता, आपणी कल वरताईआ। आपे पिता आपे माता, पिता पूत आप हो जाईआ। आपे जोड़े आपणा नाता, आपे तोड़ तुड़ाईआ। आपे वेखे आपणी ज़ाता, आप आपणा धरन धराईआ। आप चलाए आपणा राथा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। आप निभाए सगला साथा, वेखणहार थाउँ थाँईआ। आपे हो त्रिलोकी नाथा, मात पताल आकाश फेरा पाईआ। आप चलाए आपणी गाथा, आप आपणा नाम जपाईआ। आपे लहिणा देण चुकाए मस्तक माथा, लक्ख चुरासी फोल फोलाईआ। आपे पूजा आपे पाठा, अन्तर मन्त्र आप दृढ़ाईआ। आपे तीर्थ आपे ताटा, सर सरोवर आपे नुहाईआ। आपे जोती आप लिलाटा, आपे रिहा जगाईआ। आपे वस्सया आन बाटा, आप फंदन फंद कटाईआ। आपे वेखे चौदां

हाटा, चौदां लोक आप समाईआ। आपणा रस आपे चाटा, अमृत सर सरोवर आप भराईआ। आपे खेवट आपे खेटा, आपे बेड़ा रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि निरँकारा, एका रूप समाया। आदि जुगादी गुर अवतारा, गोबिन्द नाउँ धराया। अलक्ख अगोचर अगम्म अपारा, भेव किसे ना पाया। रूप रंग ते वस्सया बाहरा, अनभव प्रकाश कराया। अचल मूर्त खेल न्यारा, नेत्र नैण दिस ना आया। महल्ल अटल उच्च मुनारा, थिर घर बैठा आसण लाया। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, सच सिँघासण इक्क विछाया। रवि ससि ना कोई सतारा, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया। मण्डल मण्डप ना कोई पसारा, गगन पताल ना कोई वखाया। आदि अन्त हरि हरि अवतारा, हरि हरि रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। घर सुहञ्जणा हरि निरँकार, एका एक वखांयदा। आद निरँजण हो उज्यार, एका दीप जगांयदा। दर्द दुःख भञ्जण भय गिरधार, ना कोई दूसर संग रखांयदा। निरँकार निराकार, दिस किसे ना आंयदा। शब्द सरूपी एका धार, सति सति अख्वांयदा। बेअन्त बेअन्त बेअन्त करतार, करता करनी भेव ना आंयदा। आदि अन्त कर पसार, जुग जुग वेस वटांयदा। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, नेत्र नैण ना कोई वखांयदा। जोधा सूरबीर बली बलकार, आप आपणा नाउँ धरांयदा। एका शब्द शब्द जैकार, ब्रह्मण्डां वेख वखांयदा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज आप सुहांयदा। वरभण्डी हरि हो त्यार, पंज तत्त मेल मिलांयदा। भेख पखण्डा दए निवार, आप आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता खेल खलांयदा। अबिनाशी करता हरि गिरधार, एका एकँकारया। खेले खेल अगम्म अपार, जुग जुग वेस वटा रिहा। नाम खण्डा तेज कटार, आप आपणे हत्थ उठा रिहा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार, दो जहानां वेख वखा रिहा। वेख वखाए नौ खण्ड पृथ्मी एका धार, सत्तां दीपां वेख वखा रिहा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले फेरा पा रिहा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़, जीव जन्त ना कोई बुझा रिहा। दिवस सुहाए सतारां हाढ़, लोकमाती सगन मना ल्या। सृष्ट सबाई लुट्टी जाए दिन दिहाड़, दिस किसे ना आ रिहा। ब्रह्म वेता पुरी ब्रह्म कढ्ढे हाढ़, नेत्र रो रो नीर वहा रिहा। शिव शंकर ढहि ढहि पए चरन द्वार, बाशक तशका गलों लाह रिहा। करोड़ तेतीसा एका नाअरा रिहा मार, एका रसन हिला रिहा। सुरपति राजा होए ख्वार, हरि साचा वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरा पार किनार, गुर गोबिन्द लेख लिखा रिहा। नानक गुर सच अवतार, जोती जोत डगमगा रिहा। इक्क इकल्ला एकँकार, आपणी कल वरता रिहा। जोती नूर नूर उज्यार, नूरो नूर आप समा रिहा। भगती भगत भगत भण्डार, नाम नाम वरता रिहा। बूंद रक्ती पावे सार, ब्रह्म ब्रह्म वखा रिहा।

पारब्रह्म प्रभ खेल न्यार, सो पुरख निरँजण नाउँ धरा ल्या। हँ हँगता पावे सार, एका रूप दरसा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिला रिहा। आदि निरँजण हरि गोबिन्द, एका धार चलांयदा। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, भेव कोई ना पांयदा। दाता दानी गुणी गहिंद, हरि आप आपणा नाउँ रखांयदा। जन भगतां तोड़े बज़र कपाटी जिंद, नाम खण्डा हत्थ उठांयदा। आप उपाए साची बिन्द, सुत अनादी आप उपजांयदा। लक्ख चुरासी मेटे चिन्द, चार वरनां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती नूर हरि करतार, नूरो नूर समाया। कलिजुग खेले खेल अपार, ईसा मूसा वेख वखाया। मेल मिलावा मुहम्मदी यार, आप आपणा दर सुहाया। अल्ला राणी कर प्यार, एका नाअरा रिहा सुणाया। ऐनलहक्क कर त्यार, मुकामे हक्क इक्क ख़ुदाया। सांझा पीर बेऐब परवरदिगार, नूर इलाही नाउँ धराया। लेखे लाए शाह हकीर, आप आपणी किरत कमाया। चोटी चढ़े आप अख़ीर, उच्चा डण्डा हत्थ उठाया। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, माया ममता मोह चुकाया, लोकमात बन्ने बीड़, एका कलमा नाम पढ़ाया। कायनात रिहा चीर, आप आपणा खेल खिलाया। वेख वखाए मुलां शेख़ औलीए पीर दस्तगीर, नूरो नूर समाया। हरिभगतां देवे साचा सीर, अमृत आत्म जाम प्याया। राज राजानां शाह सुल्तानां होए वहीर, चारों कुन्ट दर दर हलकाया। किसे हत्थ ना आउणा अन्तिम नीर, कलिजुग कूड़ा ढूठा भन्न वखाया। गोबिन्द चले एका तीर, पुरख अकाल आप चढ़ाया। किसे बालक ना देवे माता सीर, गोदी गोद ना कोई सुहाया। शाह सुल्तानां लथ्थे चीर, तख्त ताज दिस ना आया। राए धर्म मारे जंजीर, एका धुर दा शब्द अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ धराया। आदिन अन्ता हरि भगवाना, एका खेल खिलांयदा। खेले खेल दो जहानां, त्रिलोकी नंदन नाउँ धरांयदा। शब्दी शब्द शब्द धुनकाना, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। लक्ख चुरासी बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। आप उठाए राज राजानां, शाहो भूप फेरी पांयदा। मेल मिलाए विच मैदाना, साचा गढ़ सुहांयदा। एका चिल्ला एका तीर कमाना, एका खण्डा खड़ग नाम धरांयदा। जोधा सूरबीर बली बलवाना, मर्द मरदाना आप अख्वांयदा। गुर गोबिन्द तेरा इक्क निशाना, हरि साचा आप लगांयदा। वेख वखाए गोपी काहना, मण्डल मण्डप आप वेख वखांयदा। सीता राम आप पछाणा, लंका गढ़ तुड़ांयदा। चार यारी हरि प्रधाना, मुहम्मद मुहम्मदी वेख वखांयदा। अल्ला राणी होए हैराना, नेत्र नीर वहांयदा। कलिजुग तेरा झूठ मकाना, हरि साचा फेरी पांयदा। चौदां लोक वेख दुकाना, चौदां तबकां फेरी पांयदा। असराईल ज़बराईल मेकाईल असराफील बाल निधाना, आप आपणे संग रलांयदा।

ब्रह्मा विष्न शिव देवे कर परवाना, अन्तिम मूल चुकांयदा। शब्द सुत नौजवाना, एका रंग रंगांयदा। जिस जन देवे नाम तराना, एका ब्रह्म जणांयदा। पूरन जोत श्री भगवान, हर घट वेख वखांयदा। दीन मज़्ब ना कोई इस्लामा, तीस बतीस ना कोई सुहांयदा। वेखणहारा वेद पुराणा, शास्त्र सिमरत फोल फुलांयदा। खाणी बाणी हो प्रधाना, एका बूझ बुझांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञाना, बरन अठारां आप समझांयदा। एका जोत नूरो नूर नुराना, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर सच्चा वेख वखांयदा। सच्चा दर दरबारा, हरि हरि जोत जगाईआ। आपे वस्सया एकँकारा, आपणी कल वरताईआ। लोकमात खेल अपारा, जुग करता आप कराईआ। निहकलंक लए अवतारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। साचे सुत कर प्यारा, आपणी गोद बिठाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, बैठा आसण लाईआ। जोत उज्यारी कर उज्यारा, आपणा दीपक आप जगाईआ। सच समग्री भर भण्डारा, आपणा दर सुहाईआ। सतिजुग साचे बण वरतारा, आप आपणी सेव कमाईआ। सन्तां भगतां गुरमुखां गुरसिक्खां देवे कर प्यारा, एका बूझ बुझाईआ। आपणे घर आप गिरधारा, एका बैठा साचा माहीआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, एका मुख चुआईआ। एका नाम शब्द अनहद धारा, एका राग सुणाईआ। एका मन्दिर इक्क मसीत एका गुरुदुआरा, एका काया गढ़ आप सुहाईआ। एका महल्ल इक्क मुनारा, उच्च अटल आप रखाईआ। आपे बैठा सिरजणहारा, आपणा मुख छुपाईआ। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़ा, जीव जन्त भरमाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकारा, झूठा वणज कराईआ। मनुआ मारे एका नाअरा, एका बल जणाईआ । मति मतवाली रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आप आपणी वेखे धारा, आपणा मुख खुल्हाईआ। गुर का शब्द सभ ते वस्सया बाहरा, दिस किसे ना आईआ। आदि जुगादि बण वरतारा, गुरमुखां झोली पाईआ। नाम सति सति करतारा, नानक बूझ बुझाईआ। एकँकारा ओंकारा, ओअँ सोहँ रूप हो जाईआ। गुर गोबिन्द बण लिखारा, गुर चेला एका धाम रखाईआ। सो पुरख साचा गुर, हँ सिक्ख विच समाईआ। ब्रह्म अंक लिख्या धुर, पारब्रह्म वड वड्याईआ। सुरती शब्द जाए जुड़, दूजा दर ना कोई वखाईआ। सतिगुर देवणहारा साचा घोड़, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। नीले वाला आया दौड़, वड दाता बेपरवाहीआ। सम्बल नगरी लाया एका पौड़, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाईआ । मेल मिलावा ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता लए उपजाईआ। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण एकँकार कर पसार, आप आपणा आसण लाईआ। सम्बल नगरी आसण लाया, गुर गोबिन्द वज्जी वधाईआ। शब्द सिँघासण वेख वखाया, साची सेज सुहाईआ।

९३९ ०७

चार दिवार ना कोई बणाया, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। तेल बाती ना कोई उपाया, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। घर विच घर आप सुहाया, आपे वेखण आईआ। गणपति गणेश ना कोई मनाया, ब्रह्मा विष्न ना कोई ध्याईआ। करोड़ तेतीस ना कोई सरनाया। साध सन्त ना कोई सरनाईआ। अकाल पुरख प्रभ फेरा पाया, आप आपणा खेल खिलाईआ। मात पित ना कोई बणाया, भैण भाई ना कोई अख्वाईआ। साक सज्जण सैण ना संग रलाया, दर द्वार ना बंक उपाईआ। राज राजान ना वेखण आया, बैठा मुख छुपाईआ। भगत भगवान दर मेल मिलाया, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अछल अछल्ल बावन वेख वखाया, सृष्ट सबाई लेख लिखाईआ। जल थल महीअल डेरा लाया, सागर सरोवर आप रिड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप दरसाईआ। गोबिन्द नगर धाम अवल्ला, हरि हरि आप उपांयदा। वसणहारा इक्क इकल्ला, एका गढ़ सुहांयदा। लक्ख चुरासी अछल अछल्ला, अछल अछल्ल करांयदा। हथ्थ उठाए साचा भल्ला, एका नाउँ रखांयदा। लोआं पुरीआं लोकमात चौदां लोक चौदां तबक बोलणहारा हल्ला, आप आपणा मता पकांयदा। सचखण्ड दुआरे आपे खला, थिर घर वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी सच सिँघासण एका मल्ला, निरगुण जोती जोत जगांयदा। लहिणा देणा चुकाए शाह सुल्ताना भूप भूमिका मेटणहारा सल्ला, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, गुर गोबिन्द संग निभांयदा। भाग लगाए काया खला, पंज तत्त वेख वखांयदा। जोती शब्दी आपे रला, पवण स्वासी आप चलांयदा। जोती दीपक आपे बला, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। सत्तां दीपां जोत उज्यार, हरि साचा आप करांयदा। लक्खण दीप पावे सार, आप आपणा मेल मिलांयदा। करौच तेरी सुण पुकार, एका रूप वटांयदा। पुष्कर करे हाहाकार, गल विच पल्ला पांयदा। जम्बु तेरा सच प्यार, धरत मात गोद बहांयदा। सलमल दाता हो उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। सान ढहि पए चरन द्वार, नेत्र नैण मुख शरमांयदा। कुशा तेरी साची कार, करनी करता आप करांयदा। सत्तां दीपां इक्क जैकार, एका नाअरा लांयदा। सतिजुग तेरा सच विहार, करता कादर आप करांयदा। धरनी धरत नाम उज्यार, धरत धवल सुहांयदा। सति पुरख निरँजण बन्हे धार, सत रंग निशाना इक्क वखांयदा। आदि जुगादी खेल अपार, आप आपणा सगन मनांयदा। शाहो भूप सच्ची सरकार, दो जहानां राज जोग कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जगत विजोग आप करांयदा। संजोग विजोग हथ्थ करतार, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, आप आपणी रचन रचाईआ। आप उपाए

आपे लए सँघार, समरथ पुरख वड वड्याईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, मेटे झूठी लशकर छाहीआ। माया ममता कर ख्वार, हउमे हँगता अग्नी तत्त जलाईआ। लहिणा देणा चुकाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना रहे ना राईआ। ना कोई नार विभचार, साचा कन्त पुरख इक्क मनाईआ। ग़रीब निमाणा ना करे कोई हाहाकार, दुःख भुक्ख ना किसे सताईआ। तन बस्त्र करे इक्क शृंगार, राज राजान शाह सुल्तान ग़रीब निमाणे एका धाम बहाईआ। एका चरन एक प्यार, एका दर वखाईआ। एका नाम इक्क जैकार, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। एका ब्रह्म पावे सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म विच संसार, जोती जोत करे रुशनाईआ। अगम्म अगम्मड़ी करे कार, पुरख अगम्मड़े खेल खिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़े वस्सया बाहर, मन मति बुध ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा धरत मात गोद सवाईआ। कलिजुग तेरा वक्त चुकावणा, हरि साचा खेल खलांयदा। सतिजुग साचा मात धरावणा, लोकमात जन्म दवांयदा। शब्द विचोला इक्क रखावणा, सोहँ ढोला एका गांयदा। पुरख अबिनाशी सगन मनावणा, हरिसंगत संग रलांयदा। द्वार बंक इक्क सुहावणा, एका बंक वखांयदा। साची सिख्या मंगलाचार इक्क करावणा, राम राग अल्लांयदा। नाम नेत्र कजला एक पावणा, दुरमति मैल गंवांयदा। धर्म दुआरे धाम आप सुहावणा, सचखण्ड दुआरा आप सुहांयदा। निहकर्मी सच कर्म कमावणा, कर्म कांड ना कोई जणांयदा। हरि धर्मी हरि धर्म वखावणा, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। लक्ख चुरासी जम की फास कटावणा, धुर दी दासी वेख वखांयदा। पतित पावण नाम धरावणा, पतित पापी पार करांयदा। भेखाधारी भेख बावणा आप वटावणा, निहकलंकी जामा पांयदा। शब्द सुरती शब्द राम मिलावणा, आपे दर साचा वेख वखांयदा। काहन गोपी आप नचावणा, मण्डल रास आप सहांयदा। एका कलमा आप पढ़ावणा, नबी रसूला मेल मिलांयदा। अल्ला राणी तेल चढ़ावणा, हरि साचा खेल खलांयदा। नानक मन्त्र इक्क सुनावणा, नाम सति सुणांयदा। गोबिन्द डंका इक्क वजावणा, फतिह रूप आप हो जांयदा। कलिजुग तेरा भेख चुकावणा, कूड़ी क्रिया मेट मिटांयदा। शाह सुल्तानां तख्तों लाहणा, राज राजानां ख़ाक मिलांयदा। ग़रीब निमाणे गले लगावणा, फड़ बाहों आपणा संग निभांयदा। मुस्लिम हिन्दू सिक्ख ईसाई एका धाम बहावणा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग रंगांयदा। तिलक ललाटी ना किसे लगावणा, गल जंझू ना कोई रखांयदा। सति धर्म ना किसे मिटावणा, एका धीर धरांयदा। कूड़ी क्रिया ना किसे कमावणा, मार्ग इक्क वखांयदा। केस दस्मेस दहि दिशा नज़री आवणा, आप आपणा खेल खलांयदा। सम्बल नगरी साचा घर सुहावणा, आप आपणा गढ़ सुहांयदा। शब्द खण्डा तन लटकावणा, जन साचा वेख विखांयदा। सन्त सन्त गुरमुख गुरसिख नौ खण्ड

पृथमी आप बचावणा, जो जन रसन ध्यांअदा। अनहद शब्द इक्क सुणावणा, तीजा नैण खुलांयदा। दूई द्वैती मेट मिटावणा, एक घर बहांयदा। पंचम साचा मंगल गावणा, अन्दर मन्दिर ढोला आप गांयदा। आत्म सेजा वेख वखावणा, फूलण बरख़ा लांयदा। नारी कन्त मेल मिलावणा, गुर चेला रूप समांयदा। सोहँ शब्द आप जपावणा, जोग जुगत इक्क जणांयदा। लोआं पुरीआं नाम साचा गावणा, ब्रह्मा विष्न शिव आप जणांयदा। देवत सुर सीस निवावणा, छत्रधारी ना कोई रखांयदा। बंक द्वार इक्क वखावणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा नाउँ धरांयदा। बंक द्वार साचा गढ़, हरि हरि आप सुहांयदा। सचखण्ड द्वार वेखे खड़, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रूप अनूप आप वटांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, जुग जुग मात चलांयदा। हर घट अन्दर बैठा वड़, आप आपणा रथ चलांयदा। मढ़ी गोर ना जाए सड़, हवनी हवन ना कोई करांयदा। सन्त सुहेले साचे फड़, गुर गुर चेले वेख वखांयदा। करता करनी आपे कर, आदि जुगादि जुग जुग वेखे आपणा घर, दूसर दर ना कोई रखांयदा। निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर धर, धरनी धरत धवल आकाश प्रकाश पुरख अबिनाश इक्क करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा दासी दास, दिवस रैण रैण दिवस सेवक सेवा आप कमांयदा।

* १६ मग्घर २०१५ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे घर उच्ची अबादी लुध्याणा शहर *

गुर किरपा सच नाम है, हरिजन आप जणाए। अमृत साचा जाम है, सतिगुर आप प्याए। पूरन करनहारा काम है, निरगुण निरगुण वेख वखाए। आपे वसे आपणे धाम है, जगत नेत्र दिस ना आए। मेटणहारा अन्धेरी शाम है, सच चन्न चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मन्त्र नाम दृढ़ाए। साचा नाम हरि द्वार, सतिगुर बूझ बुझांयदा। जिस जन देवे कर प्यार, हउमे रोग गवांयदा। काया करे ठंडी ठार, पंज तत्त ना कोई सतांयदा। नौ दुआरे कर प्यार, सुखमन वेख वखांयदा। टेडी बंक तेरी धार, तेरा संग रखांयदा। पावणहारा साची सार, आप आपणा खेल खलांयदा। धुन अनादी साची धार, गुर पूरा आप वजांयदा। पंचम मेला एका बार, एका दर सुहांयदा। डूँघी भवरी कर कर पार, काया कवरी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, एका नाम दृढ़ांयदा। एका नाम शब्द अपार, हरि हरि आप जणांयदा। सतिगुर पूरा बख़्शे चरन प्यार, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। काया मन्दिर इक्क मकान, नेत्र लोचण इक्क खुलांयदा। साचा शब्द सच्ची धुनकान, आपणा राग सुणांयदा। अमृत आत्म पीण

खाण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। सर सरोवर इक्क महान, कँवल नैण आप बणांयदा। सुरती बाली फड़ निधान, आप आपणे अंग लगांयदा। शब्दी शब्द शब्द मेहरबान, साचा रूप वटांयदा। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ान, एका घर वखांयदा। आत्म सेजा हो प्रधान, एका दर सुहांयदा। जोती नूर दीप नुरान, नूरो नूर डगमगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेख वखांयदा। नाम शब्द सच भण्डारा, हरि हरि आप वरतांयदा। सतिगुर पूरा बण वणजारा, लोकमात वेख वखांयदा। भगत वछल्ल कर प्यारा, साधां सन्तां झोली पांयदा। गुरसिख ढहि पए दुआरा, कर किरपा वेख वखांयदा। मेट मिटाए अन्ध अँध्यारा, कूड़ी क्रिया रहिण ना पांयदा। सति सन्तोखी दीप उज्यारा, इक्क प्रकाश करांयदा। देवे दरस अगम्म अपारा, साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका वर एका मन्त्र बूझ बुझांयदा। नाम मन्त्र सच दृढ़ा, आपणा कर्म कमाया। हरिजन साचा वेख वखा, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाया। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ा, पंच विकार सथ्थर हेठ विछाया। साचे पौड़े आप चढ़ा, चौथे पद समाया। आत्म ब्रह्म वेख वखा, पारब्रह्म सरनाया। पूरन कम्म आप करा, करनी करता नाउँ रखाया। वेख वखाणे दो जहान, आप आपणा बिरध कमाया। देवणहारा साचा थाँ, अगम्म अगम्मड़ा थान सुहाया। अलक्ख अगोचर बेपरवाह, आप आपणा मेल मिलाया। हरिजन मेला साचे थाँ, सच दुआरा इक्क विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, जगत विद्या ना कोए पढ़ाया। नाम दात वड करामात, हरिजन झोली पाईआ। देवणहारा साची दात, ब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चरन कँवल बंधाए साचा नात, साची सिख्या इक्क समझाईआ। वरन गोत ना कोई ज़ात पात, राज राजान राउ रंक ना कोए अख्वाईआ। वेखणहारा इक्क इकांत, घर घर वेखे फेरा पाईआ। दिवस रैण रिहा झात, आलस निन्दरा विच ना आईआ। खोल्हणहारा एका हाट, बन्द किवाड़ा आप खुल्हाईआ। आपे होए पाकी पाक, पतित पावण नाउँ धराईआ। दो जहानां सज्जण साक, साक सैण आप हो जाईआ। शब्द चढ़ाए साचे राक, एका अस्व आप दौड़ाईआ। गुरमुख चढ़े मार पलाक, आप आपणे संग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका नाम आपे रिहा सुणाईआ। साचा नाम काया मन्दिर, हरि हरि आप टिकाया। किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिल्ले फेरा पाया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, नानक कबीरा वेख वखाया। करे प्रकाश अन्धेरी कन्दर, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क सुहाया। नाम दात धुरदरगाह, एका एक वखाईआ। सतिगुर पूरा देवे सच सलाह, साचे घर वज्जे वधाईआ। जगत कतेबा सिफ्त सलाह, सलाही सलाह जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना सके वखा,

६४३ ०७

भुल्ली सर्ब लोकाईआ। काया मन्दिर आप टिका, आपे बैठा कुण्डा लाईआ। आपणी हथ्थीं आप दए वरता, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले आप उठा, आपणी रचन जणाईआ। राग अनादी इक्क अल्ला, अकल कला हो जाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, पारब्रह्म वेख वखाईआ। मोहण माधव माधी भेव खुल्ला, हरिजन साचे ल्ए तराईआ। रसन विवादी आपे गा, हरि का नाम भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे आपणा वर, एका नाम झोली पाईआ। नाम वस्त शब्द अनमोल, सतिगुर पूरा हथ्थ वखांयदा। आपणे कंडे आपे तोल, हरिजन झोली पांयदा। आपणा जन्दर आपे खोल्ल, आपे वेख वखांयदा। आप वजाए आपणा ढोल, आपे आप सुणांयदा। आपणा अक्खर आपे बोल, आप आपणे विच टिकांयदा। गुरसिख काया करे चोहल, काया चोली फोल फुलांयदा। सुरती शब्दी जाए मौल, साचा नाम आप उपांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, हरि अमृत झिरना मुख झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम आप वरतांयदा। नाम अनमोल उच्च मिनार, हरि हरि आप टिकाया। वेखे विगसे पावे सार, अलक्ख अगोचर भेस वटाया। नेत्र दिसे ना विच संसार, जगत नैणां दिस ना आया। रत्ती केसर ना कोई धार, तिलक ललाट ना कोई वखाया। निउँ निउँ करे ना कोई निमस्कार, पंज तत्त सीस ना कोई झुकाया। मन मति ना हाहाकार, बुध बिबेक ना वेख वखाया। पंजां तत्तां वस्सया बाहर, त्रैगुण पल्लू ना किसे फड़ाया। ब्रह्मा विष्न रहे विचार, शिव शंकर सीस झुकाया। करोड़ तेतीसा हाहाकार, दिवस रैण रहे कुरलाया। लक्ख चुरासी वहिंदी धार, हरि का रूप दिस ना आया। पारब्रह्म बेअन्त बेऐब परवरदिगार, राम रहीम आप अख्वाया। सति पुरख निरँजण साची कार, करता पुरख आप कराया। नाम कराए इक्क वपार, वणज वपारा नाउँ धराया। जोती सुत कर उज्यार, शब्दी नाउँ धराया। शब्द गुर सच जैकार, निरगुण धार आप वहाया। सरगुण साचे कर प्यार, काया मन्दिर मेल मिलाया। दिस ना आए नौ द्वार, जीव जन्त होए हलकाया। जो जन सतिगुर पूरे ढहि पए द्वार, कर किरपा मेल मिलाया। नाम वस्त हट्ट बज़ार, चौदां लोक फोल फुलाया। अवण गवण पावे सार, त्रैभवन डेरा ढाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका ब्रह्म जणाया। नाम धन्न सच ख़ज़ीना, हरि हरि हथ्थ रखाया। सतिगुर पूरा देवे हो मेहरवाना, लोकमात वेख वखाया। धर्मी धर्म झुलाए इक्क निशाना, ब्रह्मण्डां खण्डां फेरा पाया। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार नाउँ रखाया। आपणे नाम करे आप पछाणा, रूप रंग ना कोई वखाया। एका धुन इक्क तराना, एका राग अल्लाया। एका मस्ती मस्त मस्ताना, आप आपणा दर सुहाया। आपे बन्नणहारा गाना, एका सगन मनाया। साचे मन्दिर हो प्रधाना, दस्म दुआरी

६४४ ०७

डेरा लाया। शाहो भूप हरि सुल्ताना, सच सिँघासण इक्क विछाया। दीपक जोती जगे महाना, अट्ठे पहर डगमगाया। सुन अगम्मी वेख वखाना, आप आपणा रूप विखाया। सचखण्ड हो प्रधाना, एका राग अलाया। अलक्ख अगोचर खेल महाना, आप आपणा रिहा कराया। अगम्म अगम्मड़ा दो जहानां, नाड़ी चम्मड़ा ना कोई बणाया, सति पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, आप आपणा खेल खिलाया। एका नाम कर प्रधाना, लक्ख चुरासी मन्दिर अन्दर आप टिकाया। सुरत सवाणी बाली बाला, बाली बाला रहे तराया। जोत निरँजण जोत ज्वाला, अग्नी तत्त विखाया। लहिणा देण चुकाए काल महांकाला, जगत भण्डार भराया। साचा नाम सतिगुर सच दोशाला, गुरमुख विरले तन पहनाया। फल लगाए काया डाला, अमृत मेवा इक्क खवाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। साची वेख धर्म धर्मसाला, धुर मन्दिर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा नाम वर, कृपानिध किरपा दए कर, छिन्न छिन्न पार उतार आप कराया। सतिगुर पूरा हरि समरथ, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। देवणहार नाम वथ्थ, जन भगतां झोली पांयदा। नाम जणाई महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोई कथांयदा। आप चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही नाउँ धरांयदा। पंच विकारा देवे मथ, नाम खण्डा इक्क चमकांयदा। हउमे हँगता जूठा झूठा बुरज जाए ढठ्ठ, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठ, पूजा पाठ ना कोई रखांयदा। उलटी गेड़े आपे लट्ठ, मन पंखी दहि दिशा ना धांयदा। वसणहारा घट घट, घट भीतर वेख वखांयदा। त्रैगण ना तपे अग्नी मट्ठ, पंज तत्त मेट मिटांयदा। एका देवे धीरज जत, सति सन्तोख रखांयदा। रक्खणहारा साची पत्त, कमलापत नाउँ रखांयदा। अन्तिम बीज बीजे साचे वत, काया खेड़ा वेख वखांयदा। लेखे लाए बूंद रक्त रत्त, जिस जन दया कमांयदा। अमृत आत्म साचा झट्ट, सिंच क्यारी हरी करांयदा। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका ब्रह्म वखांयदा। हरिजन वखाए साचे हट्ट, कीमत करता आपे पांयदा। जगे जोत काया मट्ट, जोत निरँजण सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आत्म झोली ब्रह्म पारब्रह्म आप भरांयदा। जो जन मंगे बण भिखार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। शब्दी देवे शब्द भण्डार, मुल कोए ना लाईआ। अन्तर आत्म इक्क प्यार, चरन कँवल दरसाईआ। नाता तुट्टे जगत मीत मुरार, मात पित भाई भैण, साक सैण कोई दिस ना आईआ। नज़री आवे सांझा घर, बैठा अलख जगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ढहि ढहि पैण चरन द्वार, मन मति रही शरमाईआ। जगत तृष्ना भुक्ख दए निवार, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, आप आपणे विच मिलाईआ। मिले मेल हरि गोबिन्द, गुर पूरा दया कमांयदा। मिटावणहारा सगली चिन्द, चिन्ता

चिक्खा ना कोई वखांयदा। गुरमुख उपजाए आपणी बिन्द, सुत अनादी नाउँ धरांयदा। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समांयदा। आदि जुगादि सदा बख्शिंद, पतित पापी आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, सचखण्ड द्वार इक्क सुहांयदा। नाम वर धुर फ़रमाणा, हरिजन आप जणाईआ। मेल मिलाए श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जाईआ। एका मन्दिर इक्क मकाना, एका बैठा आसण लाईआ। वेखणहारा दो जहानां, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां बन्ने साचा नाम गाना, तन्दन तन्द ना कोई तुड़ाईआ।

मानस जन्म लेखे जाए लग्ग, हरिसंगत आप तराईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, जो जन आए सरनाईआ। साचा दीपक जोत रिहा जग, ना सके कोए बुझाईआ। जगत तृष्ना मेटे अग्ग, बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। सोहँ शब्द बन्ने गल साचा तग, उप्पर शाह रग आप हो जाईआ। जिस दर सुहाए आपणा पग, पतित पापी संग तराईआ। हरिजन साची मंग रहे मंग, दिवस रैण राह तकाईआ। लेखे लाए सूरा सरबग, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। देवे माण जगत जग, दरगहि साची होए सहाईआ। गुरमुख हीरा साचा नग, सीस ताज आप जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत वेख वखाईआ। हरिसंगत हरि जाए तार, लोकमात वज्जे वधाईआ। जन भगतां सुणे दर पुकार, दिवस रैण वेख वखाईआ। सगला मीत एकँकार, निरगुण नूर आप दरसाईआ। पारब्रह्म गुर लए अवतार, आदि जुगादि वेस वटाईआ। साचे सज्जण मीत मुरार, चौथे जुग करे कुड़माईआ। शब्द विचोला धुर दरबार, एका दए सलाहीआ। नाम ढोला सच जैकार, सोहँ आप सुणाईआ। एका तोला बेऐब परवरदिगार, आपे तोले सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बेड़ा बन्ने लाईआ। हरिसंगत बेड़ा आपे बन्न, आपणे कंध उठांयदा। धर्म राए ना देवे डन्न, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। लाड़ी मौत ना चाढ़े चन्न, जगत द्वार ना सगन मनांयदा। मेल मिलावा साचे तन, पंच तत्त आप सुहांयदा। जिस जन कढ्ढे आपणा जन, जन जननी लेखे लांयदा। राग सुणाए एका कन्न, जगत वैराग मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरतांयदा। कल वरतंता हरि भगवन्ता, एका नूर जगाईआ। हरिसंगत वखाए साची संगता, सति सरूप समाईआ। आप बणाए आपणी बणता, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुरसिख दूजे दर ना होए मंगता, मंगण भिख्या दर ना जाईआ। काया चोली सतिगुर पूरा आपे रंगदा, रंगणहारा साचा माहीआ। तोड़नहारा गढ़ हँगता, सो पुरख निरँजण नाउँ रखाईआ। मानस जन्म ना होए भंगता,

जो जन नेत्र लोचण नैण दर्शन पाईआ। मेल मिलावा साची संगता, रिखी मुनी रहे राह तकाईआ। जिउँ नानक अंग लाया अंगदा, हरिसंगत आप लगाईआ। अमृत धार वहाए साचा गंगता, गंगा गोदावरी रही शरमाईआ। जो जन दर दुआरे आए मंगता, पूरन इच्छया पूरन गुर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सगला संग निभाईआ। सगला संग हरि रघुनाथ, हरिसंगत संग निभांयदा। नाम चढ़ाए साचे राथ, कलिजुग अन्तिम आप चलांयदा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरस दिखाए साचे नैणां, नैण नैणां विच टिकांयदा। नैण वेखे साचे नैणां, जोती जोत समाईआ। आदि जुगादि एका रहिणा, एका हथ्थ वड्याईआ। हरिसंगत हरि चरन दुआरे बहिणा, सचखण्ड दुआरा इक्क वखाईआ। लोकमात गुर सतिगुर शब्दी मन्नया कहिणा, सगली वस्त तजाईआ। साचे मन्दिर धाम इक्वे एका बहिणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दित्ता एका वर, आवण जावण लक्ख चुरासी जम की फाँसी, फंदन फंद कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, अचरज कल आपणी आप वरताईआ।

६४७ ०७

✱ २० मग्घर २०१५ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर लुध्याणा शहर ✱

हरि नाम रस पाया, हरि हरि चरन द्वार। सैंहसा रोग चुकाया, मिटया अन्ध अँध्यार। काया मन्दिर इक्क सुहाया, दीपक बाती कर उज्यार। एका दूजा भउ चुकाया, तीजा नैण उग्घाड़। चौथे पद समाया, मेट मिटाए पंचम धाड़। छेवां घर वखाया, सत्तवें सति पुरख निरँजण पौड़े देवे चाढ़। अट्ठां तत्तां लेखा मुकाया, नौ दर कराए पार। दस्म दुआरी आप खुल्हाया, आप आपणी किरपा धार। अमृत आत्म जल भराया, सांतक सति सति वरतार। साची सेजा वेख वखाया, आत्म अन्तर इक्क प्यार। जगत बसन्तर मेट मिटाया, मेल मिलावा मीत मुरार। आप आपणा रूप दरसाया, निरगुण जोती कर उज्यार। सरगुण सरगुण सतिगुर लेखे लाया, सच धर्म इक्क जैकार। कर्म कुकर्मां मेट मिटाया, जन्म जन्मां दए सुधार। वरन गोत ना कोई उपाया, आत्म ब्रह्म इक्क पसार। काया चोट तन लगाया, शब्द शब्दी इक्क धुन्कार। ब्रह्मण्डां खोज खुजाया, लोआं पुरीआं पावे सार। कलिजुग अन्तिम वेस वटाया, निहकलंकी लए अवतार। राउ रंकां आप उठाया, सृष्ट सबाई करे ख़बरदार। हरिजन साचे मेल मिलाया, इक्क सुहाए बंक द्वार। पूरन लहिणा झोली पाया, साचा भरया नाम भण्डार। तख्त ताज इक्क वखाया, निरगुण रूप निरँकार। सीस ताज इक्क सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, हरिजन साचे लए वर, घर मेला कन्त भंतार। कन्त भतार मीतड़ा, एका एकँकार। गुरमुखां वस्सया चीतड़ा, दिवस रैण प्यार। अट्ठे पहर ठंडा सीतड़ा, सांतक सति रूप करतार। वसे धाम इक्क अतीतड़ा, थिर घर सच्चे दरबार। करे कराए पतित पुनीतड़ा, पतित पावन किरपा धार। ना कोई मन्दिर ना मसीतड़ा, काया मट्ठ गुरुद्वार। देवे नाम शब्द अनडीठड़ा, लेखा लिख ना सके विच कोई संसार। मात जन्म हरिजन जीतड़ा, नेत्र नैण लोचण करे दरस दीदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अगम्म अपार। अगम्म अगम्मड़ा हरि हरि खेला, हरि हरि आप जणाईआ। अबिनाशी करता सतिगुर मेला, गुर गुर वेस वटाईआ। आदि जुगादी साचा चेला, शब्दी सुत उपजाईआ। दो जहानां सच सुहेला, निरगुण नूर दरसाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां इक्क अकेला, जेरज अंडां डेरा लाईआ। आपे जाणे आपणा वेला, आपणी रचना आप रचाईआ। आपणे दर आपे चाढ़े तेला, आप आपणा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता नाउँ रखाईआ। करनी करता हरि निरँकार, करनहार अख्वांयदा। हरिजन साचे पावे सार, घर साचा वेख वखांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, आप आपणी बणत बणांयदा। सन्त साजण मीत मुरार, ग़रीब निवाजण वेख वखांयदा। देस माझन हो उज्यार, आप आपणी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी रचया काजन, साचा दर सुहांयदा। गुरसिख साचे मारे वाजन, सुरती सुरत शब्द उठांयदा। शाहो भूप वड राज राजन, सच सिक्दार आप अख्वांयदा। हरिजन साचे रक्खे लाजण, सिर समरथ हथ्थ टिकांयदा। आप चलाए जगत जहाज़न, चार वरनां आप चढ़ांयदा। भेख पखण्डा खोल्हे पाजन, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। चिट्टे अस्व चढ़या ताजन, लोआं पुरीआं आप दौड़ांयदा। आपे शाह बाणीआं होए महाजन, हट्ट हटवाना नाउँ रखांयदा। आपे मस्जिद बांग दए निमाजन, आप आपणी सेवा लांयदा। आपे तिलक लिलाटी रचया काजन, काया माटी वेख वखांयदा । आपे होए तीर्थ ताटन, तट किनारा फेरी पांयदा। आपे ग्रन्थ पन्थ औखा घाटन, आप आपणा राह चलांयदा। आपे जाणे आपणी वाटन, आपे पन्ध मुकांयदा। गुरमुख विरले अमृत आत्म रस एका चाटन, अमृत धार मुख चुआंयदा। दूई द्वैती पर्दे पाटन, नैण इक्क खुल्हांयदा। चौथे घर शाहो शाबाशण, शाह सुल्तानां मेल मिलांयदा। पंचम मीत पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा डंक वजांयदा। एका डंक हरि भगवाना, एका एक वजाईआ। आप सुणाए दो जहानां, आप आपणी कल वरताईआ। लोआं पुरीआं खेल महाना, नौ खण्ड वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई हो प्रधाना, एका नाअरा लाईआ। वेख वखाए वेद पुराणा, अञ्जील कुरानां फोल फुलाईआ। खाणी बाणी इक्क निशाना, एका रिहा उठाईआ। शब्दी शब्द धुर

फ़रमाणा, देवणहार नाम ख़ुदाईआ। कलमा नाम हो निधाना, उम्मत उम्मती रिहा सुणाईआ। शाह रफ़ीक मेहरबाना, रबाब अहिबाब आप वजाईआ। राम रहीम इक्क टिकाणा, एका घर बहाईआ। नाम सति नौजवाना, साची फतिह गजाईआ। सो पुरख निरँजण वड बलवाना, हँ ब्रह्म आप हो जाईआ। चार वरनां एका रूप दृष्टाना, दूजी वस्त ना कोई रखाईआ। खेले खेल गोपी काहना, मण्डल मण्डप रास सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, अलक्ख निरँजण एका आपणी अलख जगाईआ। आपणी जगा आप अलक्ख, आपे आप सुणांयदा। आपणे घर हो प्रतक्ख, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणा लए रक्ख, आप आपणा मार्ग लांयदा। आप आपणा करया वक्ख, लोकमात राह तकांयदा। गुरमुखां भाण्डा भरे ख़ाली सक्ख, नाम भण्डार इक्क वरतांयदा। लक्ख चुरासी मारे झक्ख, गुर दर ना कोई दरसांयदा। पंच विकारा नकेल नक्क, चारों कुन्ट फिरांयदा। तीर्थ तट्टां रहे तक्क, निर्मल नीर ना कोई प्यांअदा। जगत अभ्यास गया थक्क, डूँघी भवर ना कोई लँघांयदा। सन्यास वैराग फल गया पक्क, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। प्रगट हो दाता सूरा सरबग्ग, आप आपणा कर्म कमांयदा। गुरसिक्खां एका राह साचा दस्स, जगत क्रिया मेट मिटांयदा। हिरदे अन्दर आपे वस, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। वेख वखाए नस्स नस्स, नौ दुआरे पन्ध मुकांयदा। आपे रूप कोटन कोट
६४६
०७
रवि ससि, आप आपणा नैण खुल्लांयदा। हरिजन हरि हरि होया वस, दर दरवेशा फेरी पांयदा। कर्म कांड देवे झस्स, आपे चरनां हेठ दबांयदा। त्रैगुण माया ना लए डस्स, ममता मोह चुकांयदा। इक्क प्याए साचा रस, आपणे हथ्थ जाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका शब्द सुणांयदा। एका शब्द चौथा पद, सति पुरख निरँजण आप रखाया। हँ ब्रह्म पार हद्द, जिस जन रसना गाया। सचखण्ड दुआरे आपे सद्द, चरन कँवल आप बहाया। अमृत पयाई साची मदि, दिवस रैण ख़ुमार रखाया। विष्नूं वंसी साची यद, एका ब्रह्म दरसाया। आपणा भार आपे लद्द, गुरमुख साचे रिहा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। सस्सा शब्द पुरख सुल्तान, एका रूप दरसांयदा। दाता दानी मेहरबान, एका घर वखांयदा। उप्पर होड़ा धर निशान, पारब्रह्म आप चलांयदा। हाहा हरस मिटे जहान, सस्सा सतिगुर वेख वखांयदा। टिप्पी बणे इक्क महान, चारों कुन्ट मुख बन्द वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोए दोए अक्खर वेख वखांयदा। दोए अक्खर दोए धार, दोए रूप समाया। निरगुण निरगुण इक्क प्यार, एका घर वसाया। सतिगुर खेले खेल अगम्म अपार, गुर गुर वेस वटाया। गुर गुर मंगे मंग भिखार, सतिगुर झोली पाया। दोहां विचोला आप करतार, निरगुण नूर करे रुशनाया। शब्द

ढोला अपर अपार, आप आपणा आपे गाया। नानक तोला हरि गिरधार, सचखण्ड दुआरे इक्क वखाया। बदलया चोला अन्तिम वार, कलिजुग वेस वटाया। अन्तिम मौला सर्ब संसार, दिस किसे ना आया। धरनी धरत धवल हो उज्यार, गुरमुख साचे लए जगाया। अमृत आत्म पौहल खण्डे धार, गुर गोबिन्द आप प्याया। साची सिक्खी कर त्यार, वालों निक्की आप जणाया। मुनी रिखी ना पावण सार, हरि का शब्द दिस ना आया। धुर दी लेख लिखी आप करतार, आपे वेखण आया। सोहँ शब्द शब्द जैकार, गुर चेला रूप वटाया। हँ ब्रह्म इक्क अधार, गोबिन्द पुरख अकाल मनाया। नानक ढहि पए द्वार, निरगुण दर्शन पाया। एका शब्द आप विचार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाया। बत्ती दन्द ना कोई धार, पंज तत्त ना कोई उपाया। सचखण्ड दुआरे रिहा पुकार, मैं तेरा तूं मेरा, तेरा मेरा भेव ना राया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, गुर नानक एह जणाया। तेरा मेरा सच प्यार, सच सिँघासण आसण लाया। कलिजुग जीव ना पायण सार, भगती भगत ना कोई दृढ़ाया। अन्तिम कलिजुग वेख विचार, आप आपणा रूप वटाया। निहकलंक लए अवतार, शब्दी शब्द समाया। शब्द गुण अपर अपार, हरि साचा वेख वखाया। गुरमुखां देवे लोकमात कर उज्यार, आप आपणा मुख छुपाया। खिच्ची जाए वारो वार, औंदा जांदा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एक गुर, लेखा लिखणहार धुर, लोकमात मार झात, इक्क इकांत, संजोग विजोग आत्म रस साचा भोग, पार कराए तिन्नां लोक, सोहँ सच सलोक, जिस जन रसना गाया।

६५० ०७

*** २० मग्घर २०१५ बिक्रमी धन्ना सिंघ दे घर पिण्ड ढहि पई ज़िला लुध्याणा ***

पुरख अकाल सर्ब जग मीता, एका एकँकारया। आदि जुगादि जुग जुग रीता, करता पुरख आप चला रिहा। बैठा रहे इक्क अतीता, अबिनाशी पुरख नाउँ धरा रिहा। ना कोई दोहुरा मन्दिर मसीता, थिर घर साचे डेरा ला रिहा। एका रूप ठांडा सीता, सति सन्तोख समा रिहा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समा रिहा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी हरि अवतार, पारब्रह्म वेस वटाईआ। नर नरायण खेल अपार, आदि निरँजण वड वड्याईआ। जोती नूर कर उज्यार, दर्द दु:ख भय भंजन नाउँ रखाईआ। सृष्ट सबाई साचा सज्जण, एका एक आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी कराए मजन, चरन धूढ़ आप वखाईआ। सन्त सुहेला पर्दा कज्जन, आवे जावे धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण दाता हरि

बेअन्त, एका रूप समांयदा। आप उपाए साचे सन्त, सन्त सुहेला आप अख्वांयदा। आप बणाए साची बणत, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप चलाए आपणा मंत, आप आपणा नाम दृढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलांयदा। खेले खेल हरि भगवाना, अकल कला कल धारया। आदि पुरख मेहरबाना, दो जहाना पावे सारया। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाना, अलक्ख निरँजण वेख विखा रिहा। सचखण्ड दुआरे बैठ मरदाना, आप आपणा वेख वखा रिहा। लोआं पुरीआं इक्क बिबाना, एका आप उडा रिहा। एका शब्द इक्क तराना, एका राग सुणा रिहा। एका विष्न खेल महाना, आकार साकार बणा रिहा। ब्रह्मा वेखे मार ध्याना, नाभी कँवल कुमला रिहा। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञाना, एका नाम जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटा रिहा। वेस वटंता धुंधूकार, निरगुण नूर उपाया। शिव शंकर हरि कर प्यार, जटा जूट वेख वखाया। बाशक तशका गल गल हार, हथ्थ त्रशूल फड़ाया। वेखे विगसे पावे सार, नाद अनादी आप हो जाया। ब्रह्म ब्रह्मादी खेले खेल अपार, पारब्रह्म वड वड्आया। आदि जुगादी साची धार, जुग जुग आप कराया। देवे दाद नाम अधार, एका वस्त रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला साचे घर, त्रै त्रै वेस वटाया। त्रै त्रै तेरा साचा वेस, त्रिलोकी आप बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सदा अदेस, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोत निरँजण हरि प्रवेस, आपणी बणत बणाईआ। आपे जाणे आपणा वेस, आपणा आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरताईआ। कल दाना हरि मेहरबाना, एका एकँकारया। कलिजुग खेले खेल महाना, पंचम मेल मिला रिहा। पंचम पंचम कर प्रधाना, पंचम साचा जोड़ जुड़ा रिहा। पंचम राग इक्क तराना, एका दर वखा रिहा। पंचम वेखे पद निरबाना, एका मुख सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धीर धरा रिहा। जुग जुग धीर हरि धरंता, धरनी धवल सुहांयदा। मेल मिलावा साचे सन्ता, सन्त सुहेला आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी माया पाए बेअन्ता, दिस किसे ना आंयदा। महिमा जगत गणत अगणता, लेखा लिख्त ना कोई रखांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर बणाई बणता, कलिजुग संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क मृदंग साचा शब्द वजांयदा। नाम मृदंग साचा ढोला, हरि हरि आप सुणाईआ। पुरीआं लोआं पर्दा खोल्हा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। गुर नानक बणया साचा तोला, एका कंडा हथ्थ उठाईआ। कूड़ कुड़यारा कढ्ढे पोला, भेख पखण्डा रहे ना राईआ। जोती जामा बदलया चोला, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भगत सुहेला वस्सया कोला, विछड़ कदे ना जाईआ।

मनमुखां वसे सदा उहला, दिवस रैण ना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। कलिजुग तेरा साचा राह, हरि हरि वेख वखांयदा। शब्द गुर बेपरवाह, आपणा आप रूप वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे थाउँ थाँ, सत्तां दीपां फेरी पांयदा। चार वरनां ल्ए जगा, बरन अठारां आप हिलांयदा। साधां सन्तां अक्ख खुल्हा, आलस निन्दरा मूल चुकांयदा। एका ढोला साचा गा, एका शब्द सुणांयदा। आपणा नाउँ मौला आप धरा, अल्ला राणी मेल मिलांयदा। परवरदिगार बेऐब ख़ुदा, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। चौदां तबक ना होए जुदा, ख़ालक ख़लक विच समांयदा। आपणा फर्ज करे अदा, सच अदालत इक्क वखांयदा। राम नामा रूप वटा, आप आपणा वेस धरांयदा। नाम बंसरी इक्क वजा, काहना कृष्ना खेल खलांयदा। चार यारी संग मुहम्मद ल्ए रला, ईसा मूसा आप समांयदा। नाम सति मन्त्र दृढ़ा, नानक सतिगुर सोझी पांयदा। साचे पौड़े आप चढ़ा, चार वरनां मेल मिलांयदा। मिट्ठे कौड़े रस बणा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। नाम शब्द वस्त अपार, नानक हथ्थ रखाईआ। चार वरनां हरि भण्डार, एका रिहा वरताईआ। एका जोती दीप उज्यार, एका करे रुशनाईआ। वरन गोती वस्सया बाहर, साची जोती इक्क वखाईआ। तन लंगोटी ना कोई भिखार, तिलक ललाट ना कोई वखाईआ। साची हाटी वणज वपार, एका शब्द विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका बूझ बुझाईआ। एका नाम इक्क वपार, एका गुर करांयदा। एका शब्द इक्क जैकार, एका हरि हरि लांयदा। एका जोत इक्क उज्यार, एका दीप जगांयदा। एक रूप दस अवतार, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। एका खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड वखांयदा। एका बस्त्र तन श्रृंगार, पंचम मेल मिलांयदा। एका अमृत कर त्यार, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। एका पंचम सच प्यार, ऊँचां नीचां मेल मिलांयदा। अन्तिम ढहि पए द्वार, आप आपणा सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी तेरा सुत दुलार, तेरी क्रिया वेख वखांयदा। तेरा रूप कर त्यार, मुच्छ दाढ़ी केस लगांयदा। आपे वस्सया सभ तो बाहर, दिस किसे ना आंयदा। वेखणहारा सिरजणहार, आप आपणा नैण खुल्हांयदा। कलिजुग अन्तिम उतरे पार, झूठा जगत कुरलांयदा। सृष्ट सबाई धुंधूकार, अन्ध अन्धेर वखांयदा। माता पुत्तर सेज भतार, नारी कन्त रूप विखांयदा। भैण भईआ ना कोई प्यार, दुराचार सर्ब वरतांयदा। नारी नर होए विभचार, साची सेज ना कोए हंढांयदा। योद्धा सूरबीर ना कोए बलकार, धर्म जैकार ना कोई लगांयदा। साचा वरन ना दिसे विच संसार, शंकर बरन इक्क जणांयदा। राउ रंक होए ख्वार, शाह सुल्तान ना धीर धरांयदा। राज राजाना झूठ दरबार, सच सुच्च ना कोए वरतांयदा। काम क्रोध

लोभ मोह होए हँकार, पंज तत्त कुरलांयदा। आसा तृष्ना कढ्ढे हाढ़ा, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। साध सन्त ना कोए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ दर द्वार वेख वखांयदा। फेरी पाए अठसठ आप, आपणा सति रखांयदा। पारब्रह्म पूर्ब कर इक्ट्ठ, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। जुग जुग गेड़णहारा लट्ठ, आपणा गेड़ा आप भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम झूठ पसार, चारों कुन्ट अँध्यारया। ना कोई दिसे सच विहार, माया मोह हंकारया। साध सन्त ना कोई धार, आत्म ब्रह्म ना कोई जणा रिहा। ना कोई खोल्हे बन्द किवाड़, तीजा नैण ना कोई उग्घाड़या। चौथे पद ना देवे वाड़, पारब्रह्म ना कोए मिला रिहा। अनहद ना कोई धुन्कार, राग अनादी ना कोई अल्हा रिहा। अमृत जल ना ठंडी ठार, सर सरोवर ना कोई वखा रिहा। बज़र कपाटी ना देवे कोई पाड़, मन्दिर अन्दर कुण्डा कोई ना लाह रिहा। दस्म दुआरी कर श्रृंगार, आत्म सेजा ना कोई सुहा रिहा। शब्द गुर ना पावे सार, सुरत सवाणी ना मेल मिला रिहा। बिन नामे होए हाहाकार, जगत तृष्ना मोह चुका ल्या। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन दूई द्वैती पर्दा आप चुका ल्या। काया तोड़ गढ़ हँकार, आत्म चढ़ दर बहा लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा डंक वजा ल्या। शब्द डंक अपर अपार, एका एक वजांयदा। सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, लोकमात आप उठांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव पावे सार, लोआं पुरीआं आप हिलांयदा। नौ सत्त हो उज्यार, जोती नूर इक्क चमकांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। ब्रह्मण्डां पावणहारा सार, जेरज अंडां वेख वखांयदा। उत्भुज सेत्ज दए अधार, आप आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंका हरि बलवाना, एका रूप दरसांयदा। एका तीर इक्क कमाना, एका चिल्ला आप उठांयदा। एका मारे दो जहानां, दो जहानां वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी भेख मिटाणा, कलिजुग अन्तिम फेरी पांयदा। आत्म ब्रह्म करे पछाणा, पारब्रह्म ना कोई भरमांयदा। वेख वखाए अञ्जील कुराना, वेद पुराणा संग निभांयदा। खाणी बाणी पद निरबाणा, एका दर बहांयदा। एका शब्द धुर निशाना, लोकमात झुलांयदा। चार वरन इक्क ज्ञाना, एका बूझ बुझांयदा। पारब्रह्म प्रभ शाह सुल्ताना, शाहो भूप आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत सम्मती वेख वखांयदा। सम्मती सम्मत हरि करतार, आपणी कल वरताईआ। बीस सद पन्दरां हो त्यार, भारत खण्ड वंड वंडाईआ। जम्बु दीप हो उज्यार, आपणा मता पकाईआ। सन्त सुहेला कर प्यार, इक्क इकेला वेख वखाईआ। गुर चेला सोहे बंक द्वार, हरि सज्जण मेल

मिलाईआ। पति पतिवन्ता मीत मुरार, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। नारी कन्ता इक्क प्यार, एका घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखाए, लक्ख चुरासी थाउँ थाँईंआ।

६५४ ०७

*** २१ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर पिण्ड रुड़की ज़िला अम्बाला ***

अनाथा नाथ हरि, हरी हरि आप अख्वाया। सगल सुहेला सगला साथ, सतिगुर रूप समाया। आप चढ़ाए आपणे राथ, रथ रथवाही वेख वखाया। सतिजुग चलाई साची गाथ, ग़रीब निमाणे गले लगाया। मस्तक लहिणा देवे माथ, कर्म जरम लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाथ अनाथां वेख वखाया। जगत दलिद्र जगत दुःख, कलिजुग झोली पाईआ। गुरमुखां करे उज्जल मुक्ख, साचा सुख उपजाईआ। दो जहानां वेखे झुक, मातलोक फेरा पाईआ। साचा बूटा जाए ना सुक्क, अमृत आत्म छिड़काईआ। आपणी गोदी आपे लए चुक्क, अरस कुरस सेज विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप वसाए आपणे घर, दूजा दर ना कोई फिराईआ।

*** २१ मग्घर २०१५ बिक्रमी नथ्था सिँघ दे घर पिण्ड बड़हेड़ी ज़िला अम्बाला ***

ठाकर दयाल अबिनाशी करता, एका जोत जगाईआ। आदि जुगादि कदे ना मरता, आवण जावण खेल खलाईआ। आपणी करनी आपे करदा, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल हर घट थाँईंआ। आदि जुगादि सर्ब गुण मीता, एका रूप समाया। आदि जुगादि इक्क अतीता, निरगुण सरगुण वेस वटाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीता, आप आपणा खेल खिलाया । आपे होए पतित पुनीता, पतित पापी लए तराया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेल खिलाया। सति पुरख करतार, सति सतिवाद अख्वाया। गुरमुख अमृत ठंडी ठार, आपणे मुख लगाया। दो जहानां उतरे पार, त्रैलोकां वेख वखाया। हरिजन काज रिहा संवार, आप आपणा भेट चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन दुःख आपणा सुख, आपणी झोली आप भराया। जगत रोग कट्ट संताप, आपणी झोली आप भराईआ। लेखे लाए जगत पाप, पतित पापी आप तराईआ। कलिजुग क्रिया रही कांप, चार कुन्ट रही कुरलाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, पिता

पूत ना कोई सहाईआ। आत्म अन्तर कोई ना जाप, रसना गा गा थक्की सर्ब लोकाईआ। वेखणहारा आपे आप, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। पारब्रह्म वड प्रताप, जुग जुग आपणा आप कराईआ। हरिजन मेटणहारा तीनों ताप, जगत दलिद्र दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। ग़रीब निमाणा गुर गोपाला, एका रूप समाया। भगत वछल दीन दयाला, आप आपणा कर्म कमाया। गुरमुख उठाए साचे लाला, लाल अनमुल्लड़ा इक्क विखाया। लोकमात आपे भाला, घर घर डेरा लाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल निराली इक्क रखाया। साचा सतिगुर हो दयाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरि सज्जण हरि वेख्या, पारब्रह्म करतार। आपे लिखणहारा लेख्या, बैठ सच सच्चे दरबार। आदि जुगादी करे भेख्या, लोकमात खेल अपार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उभार। गुरमुख हरि हरि पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। सहिंसा रोग कटाया, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। सच संजोग हंढाया, मिल्या मेल साचे माहीआ। कर्म विजोग गंवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। तारनहारा गुर करतार, आपणी दया कमांयदा। दो जहानां पावे सार, लोकमात वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, आपणा कर्म कमांयदा। चार वरनां इक्क प्यार, ऊँच नीच ना कोए दिसांयदा। शब्दी शब्द शब्द अधार, जोती जोत जगांयदा। अमृत आत्म ठंडी ठार, एका मुख चुआंयदा। दीवा बाती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। कमलापाती मीत मुरार, आप आपणा दरस दखांयदा। रैण अन्धेरी राती मेटे हरि करतार, आप करनी किरत कमांयदा। अन्तिम झाकी पावे सार, आत्म सेजा इक्क सुहांयदा। लहिणा देणा चुकाए बाकी हरि करतार, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, एका ब्रह्म विखांयदा। एका ब्रह्म उत्तम जाति, हरि हरि आप रखाईआ। जाम प्याए साचा साकी, काया मन्दिर आप सुहाईआ। खोल्हणहारा बन्द ताकी, मुख गुर इक्क वखाईआ। अस्व घोड़े चढ़े राकी, लोआं पुरीआं आप वड्याईआ। एका चाल रक्खे बाकी, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, नाम निधान हो मेहरबान, हरिजन झोली पाईआ। हरिजन अमृत धार, हरि हरि रूप समाया। चरन कँवल इक्क प्यार, साचा नाता इक्क बंधाया। धीरज धीर दए सहार, सति सन्तोख नाम दृढ़ाया। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद ढहि पए द्वार, हरिजन साचे मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख भुक्ख जगत बंधन जगत रोग संग जगत विजोग आपणी झोली आपे पाया।

* २२ मग्घर २०१५ बिक्रमी बिशन सिँघ ज्ञानी पिण्ड सुहाना ज़िला अम्बाला *

निरगुण जोत हरि निरँकार, एका एकँकारया। आदि जुगादी खेल अपार, जुग जुग वेस वटा रिहा। पारब्रह्म रूप निरँकार, निरगुण नूरो नूर समा रिहा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखा रिहा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भुज सेत्ज मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, आप आपणी कल वरताया। आदि जुगादी खेल अपारा, हरि हरि बणत बणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख किनारा, पंज तत्त करे कुड़माईआ। निरगुण सरगुण कन्त भतारा, नारी कन्ता रूप समाईआ। साचे सन्ता कर प्यारा, एका बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर इक्क अधारा, एका शब्द जणाईआ। रागी नादी अगम्म अपारा, अनहद राग सुणाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, दर ठांडे आप प्याईआ। जोती दीपक कर उज्यारा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। पंचम मारे मोह हँकारा, काम क्रोध लोभ ना होए हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, कलिजुग आपणी खेल खिलाईआ। आदि पुरख आदि निरँजण, एका रूप समाया। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, जोती जोत जगाया। भगत सुहेला साचा सज्जण, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचे नैण वखाया। सन्तन मीता हरि करतार, आदि जुगादि समांयदा। नित नवित्त खेल अपार, एका एक खेल खलांयदा। साचा मीता विच संसार, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे दर, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। आत्म ब्रह्म शब्द ज्ञान, आत्म हरि लिव लाईआ। एका एक श्री भगवान, नेत्र नैण दर्शन पाईआ। गाए गुण गुण निधान, साची करनी किरत कमाईआ। दर्शन नेत्र नैण महान, आप आपणा वेख वखाईआ। मेल मिलावा साचे काहन, घर वेखे बेपरवाहीआ। सगला संग दो जहान, पुरख अबिनाशी इक्क निभाईआ। पंज तत्त बैठा जगत मकान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणत बणाईआ। दिस ना आए जीव निधान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हरि सन्तां देवे ब्रह्म ज्ञान, हरि साची बूझ बुझाईआ। एका चरन इक्क ध्यान, एका ओट तकाईआ। एका खेल्ह खेल महान, भेद अभेद छुपाईआ। धुरदरगाही इक्क फ़रमाण, देवणहार नूर इलाहीआ। राम रमईआ हो मेहरबान, आप आपणी चलत चलाईआ। कलिजुग मेटे झूठ दुकान, भेख पखण्डा रहिण ना पाईआ। वड जोधा सूर बली बलवान, जोती जामा भेख वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे मार ध्यान, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। गगन मण्डल होण हैरान, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरि सन्तन मेल मिलाईआ। सन्तन मेला एकँकार, एका

६५७
०७

रूप समाया। सन्त मनी सिँघ सुत दुलार, पुरख अबिनाशी साचे जाया। आप आपणा कर प्यार, आप आपणी बूझ बुझाया। एका राग सच्ची धुन्कार, एका शब्दी शब्द सुणाया। कमलापाती कर उज्यार, आत्म सेजा बैठा आसण लाया। दिवस राती एका धार, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेला इक्क इकेला अबिनाशी करता, आप आपणा मेल मिलाया। हरि अलक्ख अगम्म, आदि अन्त ना कोई जणाईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, दुःख भुक्ख ना कोई सताईआ। आपे मरे आपे पए जम्म, आपे जोती जोत करे रुशनाईआ। ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, आलस निन्दरा ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सन्तन वेख वखाईआ। सन्त मनी सिँघ दुःख मिटाया, एका आत्म वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी रसना गाया, एका हरि लिव लाईआ। एका दूजा भउ चुकाया, तीजा नैण खुलाईआ। चौथे पद वेख वखाईआ, मेल मिलावा साचे माहीआ। पंचम राग अनादी गाया, आप आपणी ख़ुशी मनाईआ। डूँघी कन्दर आप जगाया, नूरो नूर करे रुशनाईआ। एका अमृत मुख चुआया, सांतक सति वरताईआ। बज़र कपाटी कुण्डा लाहया, पंच विकारा मथ वखाईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण डेरा लाया, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। साचा घोड़ा इक्क दौड़ाया, दिस किसे ना आईआ। दो जहानां दिवारड़ा इक्क विखाया, प्रभ मेला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर साचा वेख वखाईआ। साचा घर उच्च महल्ला, हरि हरि जोत जगांयदा। सन्तन मीता इक्क इकल्ला, आप आपणा आसण लांयदा। वेख वखाए जलां थलां, डूँघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पांयदा। शब्दी जोती आपे बला, आप आपणा प्रकाश वखांयदा। आपणा दर आपे मल्ला, दूसर कोई ना संग रखांयदा। आपे खेल खलाए वल छला, अछल अछल्ल आप हो जांयदा। आपे फड़े हथ्थ विच भल्ला, नाम खण्डा तेज कटार आप उठांयदा। आपे बोलणहारा हल्ला, आप आपणा नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ फड़ाए पल्ला, लोकमात ना कोई छुडांयदा। सन्त मनी सिँघ फड़या लड़, घर साचा वेख वखांयदा। अन्दर मन्दिर गया चढ़, दिस किसे ना आंयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। दरस दिखाए अग्गे खड़, पुरख अबिनाशी वेस वटांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, आप आपणा वेख वखांयदा। साची चोटी आपे चढ़, आप आपणा रूप वटांयदा। मढ़ी गौर ना जाए सड़, जगत हवनी हवन ना कोए करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, आदि निरँजण वेख वखांयदा। आदि निरँजण हरि भगवन्ता, जोती जोत जगाईआ। मेल

मिलावा साचे सन्ता, सन्त मनी सिँघ वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा बणाए आपणी बणता, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे नारी आपे कन्ता, कन्त कतूहल आप हो जाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाईआ। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, हँ ब्रह्म आप समाईआ। दर दुआरे आपे मंगता, आप आपणी झोली डाहीआ। देवे माण साची संगता, सन्त मनी सिँघ लेख लिखाईआ। आप मिटाए आपणी शंका, जिउँ नानक अंगद अंग लगाईआ। लक्ख चुरासी कोलों रहे संगदा, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ साचे दर, दर दुआरा वेख वखाईआ। दर दरवाज़ा हरि हरि खोल्ह, सन्त मनी सिँघ आप उठाया। धुन अनादी शब्दी बोल, जै जैकार कराया। अनहद वजाए साचा ढोल, आप आपणा ताल वजाया। खेले खेल काया चोल, पंज तत्त आपे मौल, आपणा रूप दरसाया। अन्दर मन्दिर रिहा बोल, हौली हौली रिहा सुणाया। उलटा करया नाभ कँवल, अमृत धार जल भराया। मेल मिलावा साँवल सँवल, घर साचे होए सहाया। भाग लगाए साची धवल, जिस दर सन्त मनी सिँघ चरन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला साचे दर, दर द्वार इक्क वखाया। साची धवल काया खेड़ा, सन्त मनी सिँघ चरन टिकांयदा। पुरख अबिनाशी बन्न्हणहारा बेड़ा, आप आपणा मेल मिलांयदा। आवण जावण चुक्के गेड़ा, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। करनहारा हक्क निबेड़ा, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम देवण आया गेड़ा, नेत्र नैणां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। घर साचा हरि सुहञ्जणा, सन्तन वड वड्याईआ। मिल्या मेल आदि निरँजणा, एका नेत्र नैण खुल्हाईआ। धुरदरगाही साचा सज्जणा, लोकमात पंज तत्त बैठा डेरा लाईआ। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, गुरमुख वड वड्याईआ। अन्तिम पर्दा तेरा कज्जणा, जोती जामा भेख वटाईआ। पंज तत्त चोला सृष्ट सबाई तजणा, थिर कोए रहिण ना पाईआ। साचा शब्द नगारा वज्जणा, सन्त मनी सिँघ लेख लिखाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना दर घर छड्डणा, सीस ताज ना कोई हंढाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता आपे चलाए आपणा जहाजणा, नाम चप्पू इक्क उपाईआ। लोआं पुरीआं रचया काजना, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। चिट्टे अस्व चढ़े ताजना, साचा घोड़ा आप दौड़ाईआ। बेऐब परवरदिगार होया साचा साजना, सज्जण मीत अख्वाईआ। शाहो भूप वड राजन राजना, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। खेले खेल देस माझना, पुरी घनक वेस वटाईआ। सन्त मनी सिँघ मारे इक्क अवाज़ना, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले साचे घर, घर साचा इक्क दरसाईआ। साचे घर हरि दर्शन नैण, नेत्र नैण उग्घाड़या। रुत्त बसन्त महीना चेत, खिली रहे मात फुलवाड़या। आदि जुगादी साचा

हेत, हरिभगतां वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, घर साचे सेवा ला रिहा। साची सेवा हरि प्रभ ला, सन्त मनी सिँघ आप जगांयदा। लहिणा लेखा आप लिखा, आप आपणा भेव छुपांयदा। अन्तिम लहिणा देणा दए चुका, वेसाधारी वेस वटांयदा। अन्तिम चोला दए तजा, अग्नी अग्ग तपांयदा। त्रैगुण तेरा लेख मुका, आप आपणा रूप वटांयदा। दीपक बाती इक्क जगा, निरगुण नूरो नूर उपांयदा। हरिजन साचे विच समा, आप आपणा खेल खिलांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई ना कोई रखांयदा। चरन नाता बख्शे इक्क ध्यान, सृष्ट सबाई संग निभांयदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवांयदा। सन्त मनी सिँघ देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। कलिजुग अन्तिम करे सच न्याँ, सच सुल्तानां वेख वखांयदा। ग़रीब निमाणयां पकड़े बांह, राज राजानां तख्तों लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप आपणा रूप दरसांयदा। सन्त मनी सिँघ साचा तग, सति नाम आप वटाया। जगत तृष्ना बुझे अग्ग, आप आपणी दया कमाया। मेल मिलाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पार कराया। सन्त सतिगुर एका पग, चरन सरन इक्क तकाया। दीपक जोती जाए जग, जो बैठा मुख छुपाया। दाता दानी सूरा सरबग्ग, महाराज शेर सिँघ जोती जामा भेख वटाया। सरन सरनाई एका लग्ग, एका रंगन रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त मेल मिलाए साचे घर, भगत विछोड़ा दए कटाए, सन्त रूप अपर अपार सिँघ बिशन दरस दिखाया।

* २२ मग्घर २०१५ बिक्रमी मेहर सिँघ दे घर पिण्ड शेखपुरा ज़िला अम्बाला *

निरगुण रूप अपार, हरि हरि हरि निरंकारया। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका एक अख्वा रिहा। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, जुग चौथे भेव खुल्हा रिहा। सुत दुलार करे प्यार, गोबिन्द नाउँ धराया। गोबिन्द मीता विच संसार, लोकमात वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी बूझ बुझाया। नानक गोबिन्द एका धार, निरगुण जोत जगाईआ। गोबिन्द साचा सुत दुलार, अबिनाशी अचुत्त आप उपाईआ। काया सुहाए साची रुत्त, पंज तत्त करे कुड़माईआ। पंच विकारा कढ्ढे कुट्ट, एका रंग रंगाईआ। अमृत प्याए साचा घुट्ट, दूई द्वैती रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवणहारा साचा वर, आपे लेख लिखाईआ। लेखा लिख्या गुर गोबिन्द, हरि साचे सच जणाईआ। मेटणहारा सगली चिन्द, एका बूझ बुझाईआ। आप उपाए आपणी बिन्द, आपे लेखे लाईआ। दाता दानी गहर गम्भीर सागर

सिन्ध, दूई द्वैत मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। लिख्या लेखा हरि द्वार, हरि साचा लेख लिखांयदा। गोबिन्द गुर भेख अपार, भेव कोए ना पांयदा। साचा बंक सच द्वार, दर इक्क खुल्हांयदा। पुरख अबिनाशी मीत मुरार, आदि अन्त आप हो जांयदा। साचा कन्त नार भतार, साची सेज सुहांयदा। रुत्त बसन्त अपर अपार, काया चोली रंग चढ़ांयदा। आपे मंगता बण भिखार, आपणी भिच्छया आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता साचा वर, एका शब्द जणांयदा। शब्द जणाई सच ज्ञान, आपणी बूझ बुझांयदा। नेत्र गोबिन्द इक्क ध्यान, आपे वेख वखांयदा। सति सरूप श्री भगवान, दूसर दर ना कोई वखांयदा। खेले खेल दो जहान, जुग जुग वेस वटांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, एका आसण लांयदा। एका राग इक्क धुनकान, एका राग सुणांयदा। एका लेखा लिखे महान, एका मेट मिटांयदा। अठ्ठ तीस हो प्रधान, आपणा भेव खुल्हांयदा। त्रैगुण तेरा मिटे निशान, अन्तिम मेट मिटांयदा। अठ्ठां तत्तां हो प्रधान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत सहँसर वेख वखांयदा। जगत सहँसर हरि हरि तीन, आपणा रूप उपांयदा। आप चुकाए आपणे लहिणा देण, लेखा आपणा हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई साक सज्जण सैण, ध्याना ध्यान वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोशब्द वेख वखांयदा। गुर गोबिन्द लेख लिखा, हरि साचे आप लिखाया। दाता दानी बेपरवाह, आप आपणे रूप समाया। आपे जाणे आपणा नाँ, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अठ्ठ तीस दन्द बतीस, सहँस सहँसर वेख वखाया। पंज तत्त हरि बलवाना, जोती जोत जगांयदा। त्रैगुण तेरा शब्द निशाना, शब्दी तीर रखांयदा। जोधा सूर बली बलवाना, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहँसर अठत्ती वेखे कलिजुग वा तत्ती, आपणे लेखे आपे लांयदा। वा तत्ती अग्नी अग्ग, कलिजुग आप चलाईआ। पारब्रह्म सूरा सरबग्ग, आपे वेख वखाईआ। जुगा जुगन्तर बन्न्हे तग, साचा शब्द तन पाईआ। आपे हँस आपे कग, काग हँस आप हो जाईआ। आपणी जोती आपे रिहा जग, आकाश प्रकाश आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे सन्तां वेख वखाईआ। सन्तन मीता हरि हरि दाता, एका रूप समांयदा। शब्दी शब्द शब्द सुल्ताना, पारब्रह्म रूप वटांयदा। राज राजानां हरि भगवाना, सच सिँघासण डेरा लांयदा। जोती जोत महाना, एका नूर डगमगांयदा। परम पुरख पुरख सुल्ताना, आदि निरँजण नाउँ धरांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, आप आपणी बणत बणांयदा। साचे घर हो प्रधाना, आप आपणा मता पकांयदा। बस्त्र शस्त्र इक्क सुहाना, जगत नेत्र

दिस ना आंयदा। उठे जोधा नौजवाना, गुर गोबिन्द नाउँ रखांयदा। शब्द शब्दी हो प्रधाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे एका वर, वर दाता आप अख्वांयदा। दर दुआरा आपे खोल्ह, आपणा वेख वखांयदा। आपणा जैकारा आपे बोल, आपे शब्द सुणांयदा। आपणा करे आपे खेल, भेखाधारी भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। चिट्टे घोड़े शाह अस्वार, एका एक अख्वाया। जोती नूर कर उज्यार, रूप अनूप आप दरसाया। शब्द अस्व चिट्टा घोड़ा, चारे दिशा वेख वखाया। सोलां कलीआं कर श्रृंगार, निरगुण जोती आसण लाया। पुरख अबिनाशी पावे सार, पुरीआं लोआं आप फिराया। ब्रह्मा शिव दए हुलार, करोड़ तेतीसा लए उठाया। सुरपति राजा इन्द करे पुकार, वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी पाए सार, नौ खण्ड पृथमी सेवा लाया। सत्तां दीपां कर प्यार, आप आपणा भेख वटाया। नीली धारों आए बाहर, पहला पौड़ा इक्क उठाया। चौथे जुग हो त्यार, लोकमात चरन छुहाया। अट्ठ तीस एका धार, दन्द बतीस एका गाया। राग छतीस कर उज्यार, जगत हदीस इक्क सुणाया। पीसण पीस रिहा संसार, माया चक्की आप चलाया। खेले खेल जगत जगदीश, एकँकार निरँकार वेख वखाया। खड़ग खण्डा तेज कटार, एका नाम हथ्थ उठाया। हरि मन्दिर पावणहारा सार, जेरज अंडां फोल फुलाया। उत्भुज सेत्ज रिहा विचार, वेखणहारा दिस ना आया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, जोती नूर करे रुशनाया। साचा घोड़ा ब्रह्म विचार, पारब्रह्म इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे कर, गुर गोबिन्द संग रखाया। गोबिन्द गुर वड बलवाना, एका एक अख्वांयदा। खेले खेल दो जहाना, आप आपणा वेस वटांयदा। एका चिल्ला एका तीर कमाना, एका एक उठांयदा। गुरमुखां देवे नाम निधाना, मनमुखां डेरा ढांयदा। सम्मत सम्मती हो प्रधाना, आप आपणा डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द रंग रंगांयदा।

सतिगुर साचा शाहो भूप, हरी हरि आप अख्वांयदा। वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरी पांयदा। कलिजुग पसारा मेटे झूठ जूठ, सच सुच्च वरतांयदा। सन्त सुहेला आपे जाए तुठ, आप आपणा रूप दरसांयदा। गुरमुख लुकया रहे ना किसे गुट्ठ, नौ खण्ड पृथमी आप उठांयदा। गुरमुख हथ्थ फड़ाए लट्ठ, दर दर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ धरांयदा। कलिजुग करता हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। खेले खेल अगम्म

अपार, भेव किसे ना पाया। जोती नूर कर उज्यार, लोकमात वेख वखाया। गोबिन्द मीता सच सिक्दार, शाह सुल्ताना नाउँ रखाया। पारब्रह्म भेव न्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरगुण वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम हरि हरि अंका, एका नाम ध्यांअदा। आप उठाए राउ रंका, शाह सुल्तानां आप हिलांयदा। गुरमुखां सुहाए द्वार बंका, दर दुआरा वेख वखांयदा। प्रगट होए वासी पुरी घनका, घनक पुर वासी वेख वखांयदा। खेले खेल बार अनका, अनक कल हो जांयदा। गुरमुख साचे गल लगाए जिउँ जनका, जन जननी आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहार हरि समरथ, आदि जुगादि समाया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नाउँ धराया । लक्ख चुरासी आपे मथ, आपे लए उपाया। आप चलाए आपणी गथ, आपणा नाम दृढ़ाया। लहिणा देणा चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। आपणी गेड़णहारा लट्ठ, भाणा आपणा आपणे विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा वेस वटाया। घर साचा हरि हरि वेस, एका एकँकारया। पुरख अबिनाशी दर दरवेश, दर द्वार इक्क सुहा रिहा। दो जहानां नर नरेश, निरगुण खेल अपारया। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाए ना कोई रखा रिहा। शब्दी शब्द दस दस्मेश, दहि दिशा फेरी पा ल्या। वेख वखाए गणपति गणेश, ब्रह्मा विष्न शिव उपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगा ल्या। आपणा रंग आपे रंग, हरि साचा वेख वखांयदा। आपणे बैठ आप पलँघ, आपणी सेजा आप हंढांयदा। आपणी भिच्छया आपे मंग, आपणी झोली पांयदा। लक्ख चुरासी तेरी कंध, जगत धारा आप वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दाता दानी सूरा सरबंग, गुरमुखां वसे अंग संग, सगला संग निभांयदा।

सतिगुर पुरख दयाल, सर्ब सहिज सुखदाया। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, आदि जुगादी वेख वखाया। गुरमुख साजण साचे लाल, आप आपणी गोद उठाया। देवणहारा नाम धन माल, तन ख़ज़ाना आप भराया। तोड़णहारा जगत जंजाल, लोकमात वेस वटाया। अन्त नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस जन हरि हरि रसना गाया। काया मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, घर बैठा आसण लाया। अमृत आत्म जाम दए प्याल, जो जन सरनाई आया। अनहद वजाए एका ताल, नेत्र नैण जो दर्शन पाया। फल लगाए काया डालृ, अमृत मेवा इक्क लगाया। दो जहानां बण दलाल, लक्ख चुरासी मेट मिटाया।

९६२
०७

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे लए तराया। सतिगुर पूरा हरि समरथ, एका एक अख्वांयदा। गुरमुख साचे लए रक्ख, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। देवे नाम एका वथ्थ, एका बूझ बुझांयदा। चार वरन चढ़ाए एका रथ, ऊँच नीच ना कोई रखांयदा। पंच विकारा देवे मथ, शब्द खण्डा इक्क उठांयदा। पल्ले बन्ने नाम गट्ठ, चोर यार लुट्ट ना कोई लै जांयदा। सति सन्तोखी धीरज देवे सति, ब्रह्म मति इक्क समझांयदा। नाड़ बहत्तर ना उब्बल रत्त, रत्ती रत्त रंगांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नत्त, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। ना कोई परखे ज़ात पात, दीन मज़्हब ना कोई रखांयदा। सृष्ट सबाई पुच्छे वात, आप आपणा संग रखांयदा। आपे पिता आपे मात, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, एका ब्रह्म वखांयदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, एका रूप समाया। जन भगतां दए जिया दान, एका नाम झोली पाया। शब्दी शब्द शब्द बिबान, गुरमुख साचे आप चड़ाया। दो जहान विखाए इक्क उडान, लोआं पुरीआं पार कराया। आपे सुरती आपे काहन, सीता राम आप हो जाया। आपे लंका गढ़ तोड़ मकान, मन रावण रहे ना राया। आपे मारे तीर निशान, शब्द निशाना इक्क वखाया। आपे नानक हो प्रधान, मन्त्र नाम रसन दृढ़ाया। आपे गोबिन्द नौजवान, अमृत आत्म जाम प्याया। आपे खेले खेल जहान, दो जहानां वेस वटाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, निहकलंका नाउँ रखाया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणे संग समाया। देवे नाम दानी दान, हरिजन साची वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए जगाया। सतिगुर पुरख हरि अबिनाश, एका एकँकारया। जुग जुग खेले खेल तमाश, आप आपणा लए अवतारया। आपणे मण्डल मण्डप पावे रास, आप आपणा खेल खिला रिहा। आपे वेख वखाए गर्भ वास, आप आपणा बिरध वखा रिहा। आपे लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना गा रिहा। आपे पूरन करनहारा आस, पारब्रह्म नाउँ धरा रिहा। जन भगतां सद वसे पास, जगत विछोड़ा फंद कटा रिहा। होए सहाई पृथ्मी आकाश, गगन पाताला डेरा ला रिहा। गुरमुख साचा ना होए निरास, इच्छया भिच्छया झोली पा रिहा। निज घर आत्म रक्खे वास, घर घर विच डेरा ला रिहा। आदि निरँजण सर्ब गुणतास, सति पुरख रूप वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा देवे नाम वर, शब्द ज्ञान इक्क दृढ़ा रिहा। नाम शब्द साची दात, हरि हरिजन झोली पाईआ। लोकमात वड करामात, एका बूझ बुझाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, स्वच्छ सरूपी वेस वटाईआ। नाता तोड़े भैण भ्रात, साक सज्जण सैण ना कोई दिखाईआ। हर घट अन्दर वेखे मार झात, मन्दिर बैठा बेपरवाहीआ। जिस जन

खोल्हे आपणा ताक, आपणा मुख वखाईआ। लेखा जाणे भविख्त वाक, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। माटी मिलाए ख़ाकी ख़ाक, अन्तिम ख़ाक रहे समाईआ। काया चोला जाए पाट, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला चढ़े औखे घाट, सतिगुर पूरा जिस चढ़ाईआ। पंज तत्त तेरी नेड़े वाट, बैठी पन्ध मुकाईआ। चौदां लोक विके ना किसे हाट, करते कीमत ना कोई पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवणहारा नाम वर, शब्द शब्दी आप वरताईआ। शब्द भण्डार डूँघा सागर, हरि हरि आप वरतांयदा। जन भगतां करे निर्मल कर्म उजागर, आप आपणा रंग रंगांयदा । वेख वखाए काया गागर, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। रत्ती नाम रत्न रत्नागर, घर साचे आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलांयदा। मंगी मंग हरि द्वार, हरिजन झोली आप भराईआ। देवे दरस अगम्म अपार, नेत्र लोचण आप खुल्हाईआ। शब्दी धुन सच्ची धुन्कार, घर साचे आप सुणाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, दीपक जोती इक्क जगाईआ। नूर इलाही बेऐब परवरदिगार, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, मुकामे हक्क आप ख़ुदाईआ। नूर इलाही मीत मुरार, नूरो नूर दरसाईआ । राम रूप आप करतार, करनी करता किरत कमाईआ। साँवल सुन्दर हो त्यार, कँवल नैण रिहा मटकाईआ। बाशक सेजा सच शृंगार, सांगो पांग हंढाईआ। विष्नूं वंसी खेल न्यार, वेस अनेक धराईआ। ब्रह्म वेता रिहा विचार, अट्ठे नैण उठाईआ। शिव शंकर बाशक तशका पाए हार, हथ्थ त्रशूल उठाईआ। सुरपति राजा इन्द रिहा पुकार, आत्म अन्तर इक्क लिव लाईआ। मन मति नार होई विभचार, मथ्थो टिक्का काली शाहीआ। जूठ झूठ होए ख्वार, कूड़ी क्रिया कल कमाईआ। माया ममता लोभ हँकार, काम क्रोध अग्न लगाईआ। इक्क तृष्ना बण भिखार, घर घर बैठी अलक्ख जगाईआ। गुरमुख विरला गुर शब्द करे प्यार, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा नाम वर, वड दाता आप अख्वाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, इक्क नाम दृढ़ाया। एका शब्द इक्क बिबाण, एका रिहा चढ़ाया। एका पुरख इक्क सुल्तान, मेहरबान इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, दर सुहञ्जणा इक्क वखाया। दर सुहञ्जणा पुरख अबिनाश, हरिजन आप दरसांयदा। पूरी करनहारा आस, परम पुरख आप अख्वांयदा। गुरमुखां गुरसिक्खां जन भगतां होए दासी दास, सेवक सेव आप कमांयदा। निज आत्म निज घर रक्खे वास, घर साचा इक्क सुहांयदा। हरिजन हरि प्राणी हरि गाए रसन स्वास, लेखा लेखे आपणे पांयदा। लहिणा देणा दस दस मास, गर्भ वास फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे साचा वर, नाम निधान झोली पांयदा।

* २३ मग्घर २०१५ बिक्रमी भजन सिँघ दे घर पिण्ड शेख़पुरा ज़िला अम्बाला *

हरि मन्दिर अपार, हरि हरि सुहाया। निरगुण जोती कर उज्यार, दीवा बाती इक्क जगाया। कमलापाती खेल अपार, दिवस राती आप खिलाया। अन्धेरी राती वेख संसार, लोकमाती फेरा पाया। उत्तम जाति हरिजन विचार, अमृत बूंद स्वांती, मुख चुआया। लहिणा देणा देवे बाकी हरि गिरधार, आप आपणा वेस वटाया। जगत निमाणे पावे सार, गऊ ग़रीबां गले लगाया। राज राजे कर ख्वार, दर दर आपे आप फिराया। सुघड़ स्याणे ना पायण सार, माया मोह लोभ हलकाया। जिस जन बख्शे चरन ध्याने, सो जन उतरे पार। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाने, सोहँ शब्द हरि निरँकार। अकाल मूर्त इक्क विखाणे, निरगुण जोती नूर उज्यार। करता पुरख सर्ब घट जाणे, घर सुत्ता पैर पसार। निरभउ आप वखाणे, निरवैर खेल अपार। ज़ात पात ना कोई रखाणे, ऊँच नीच ना कोई विचार। घर साचा इक्क सुहाणे, सुहावणहारा बंक द्वार। आत्म अन्तर इक्क वखाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार भण्डार। नाम भण्डारा हरि वरतंता, आदि पुरख अबिनाशिआ। हरि हरि मेला हरिजन सन्ता, सतिगुर खेले खेल तमाशिआ। ग़रीब निमाणयां बणाए बणता, मण्डल मण्डप पावे साची रास्सया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, आवण जावण फंद कटास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, मेल मिलावा एका घर, चरन कँवल सच्चा भरवास्सया। चरन कँवल साची धूढ़, हरिजन हरि हरि मस्तक लाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, अज्ञान तत्त रहे ना राईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। रंगन रंग चढ़ाए गूढ़, नाम रंगीला मोहण माधव पुरख अबिनाश आप अख्वाईआ। आवण जावण कटे जूड़, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, एका पल्ला नाम फड़ाईआ। एका पल्ला नाम फड़ा, हरिजन आप तरांयदा। दर दरवेशा फेरी पा, दर्दी दर्द वंडांयदा। जगत निमाणे आप उठा, साचे तख्त आप सुहांयदा। दरगहि साची देवे थाँ, राज राजानां हथ्थ ना आंयदा। आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जगत हँस बणाए काँ, सोहँ साची चोग चुगांयदा। इक्क जपावे साचा नाँ, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। निथाविआं देवे साचा थाँ, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। अन्तिम पकड़णहारा बांह, जोती जामा भेख वटांयदा। करनहारा सच न्याँ, जुग जुग वेस वटांयदा। वसे धाम अगम्म अथाह, जगत नेत्र दिस ना आंयदा। कलिजुग जीव रहे कुरला, कागी मुख खुल्हांयदा। आपणा आप ना सकण पा, आपणा मूल ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे दर, हरि साचा वेख वखांयदा। दर्द दुःख हरि हरि नाथ, अनाथां विच समाया। आप निभाए

९६५ ०७

सगला साथ, सगला संगी वेख वखाया। मेल मिलावा त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै देशां वेस वटाया। सतिजुग तेरी साची गाथ, सतिगुर पूरा रिहा चलाया। एका नाम एका राथ, चार वरनां रिहा चढ़ाया। एका पूजा एका पाठ, एका मन्त्र रिहा सुणाया। एका तीर्थ एका ताट, सर सरोवर इक्क नुहाया। एका वणज इक्क वपार एका हाट, चौदां लोकां आप खुल्हाया। एका नाओ एका घाट, एका बेड़ा रिहा चलाया। एका नेड़े दस्से वाट, एका वेख वखाया। जन भगतां दुरमति मैल देवे काट, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, आपणा कर्म कमाया। आपणा कर्म आप कमा, आपणी दया कमांयदा। ग़रीब निमाणे आप उठा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। दरस दरसी दरस दिखा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। एका राग कन्न सुणा, एका बूझ बुझांयदा। एका मणका मन का दए फिरा, आप आपणी बणत बणांयदा। सगली चिन्द दए मिटा, जो जन दर्शन पांयदा। काया मन्दिर दए तुड़ा, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। साची बेड़ी आप चढ़ा, हरिजन वेख वखांयदा। गहर गम्भीर गुणी गहिंद पकड़े बांह, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए लड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, दर द्वार हरि निरँकार, सचखण्ड जगत ब्रह्मण्ड पाए वंड जेरज अंड आप आपणे अंक समांयदा। अंगीकार आपे कर, आपणे अंग लगाईआ। धरनी मंगे साचा वर, दोए जोड़ पए सरनाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे खड़, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। अग्नी तत्व रही सड़, लक्ख चुरासी जगत लोकाईआ। कोई ना सके अग्गे हो फड़, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। घर घर विद्या रहे पढ़, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। आपणा घाड़ण आपे घड़, बैठे धूंणीआँ ताईआ। अन्तिम वेले जायण झड़, फल डाल्ह रहिण ना पाईआ। जो जन सरनाई जाए पड़, हरि लेखा लेख चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, समरथ अकथ रक्खणहारा दे कर हथ्थ, दर दरवेश नर नरेश इक्क इकल्ला एकँकार कर पसार, सन्त भगत आप उधार, उदर रोग रिहा मिटाईआ।

* २३ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरदेव सिंघ दे घर पिण्ड दोसांझ ज़िला जलन्धर *

हरि भगवान सर्ब गुणवन्ता, एका एकँकारया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग लए अवतारया। आप बणाए आपणी बणता, अबिनाशी पुरख नाउँ धरा ल्या। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। खेलणहार हरि भगवान, एका एक अख्वांयदा। जोती जोत जोत महान,

नूरो नूर समांयदा। शाहो भूप वड सुल्तान, राजन राज आप हो जांयदा। थिर घर वासी हरि मेहरबान, आप आपणी कल वरतांयदा। शब्दी शब्द बलवान, साचा सुत उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। शब्द सुत वड बलवान, हरि एका एक उपजांयदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, आप आपणा हुक्म चलांयदा। आप आपणा देवे दान, आपे झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। जुग जुग वेस हरि अवल्ला, एका एक करांयदा। वसणहारा सच महल्ला, दिस किसे ना आंयदा। आपे जाणे वल छला, अछल अछल्ल आप जणांयदा। दीपक जोती इक्क बला, प्रकाश प्रकाश रखांयदा। शब्द सुनेहड़ा साचा घल्ला, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। हरि करता हरि निरँकार, आपणी बणत बणाईआ। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूरो नूर समाईआ। शब्दी शब्द शब्द अपार, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, रवि ससि सेवा लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कर त्यार, त्रैगुण बंधन पाईआ। रूप अनूप आप करतार, आप आपणा वेस वटाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, विष्नूं रूप आप हो जाईआ। नाभी कँवली कँवल उज्यार, फूलो फूल समाईआ। पारब्रह्म फड़ कटार, आपणा आप कटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म कर त्यार, ब्रह्म ब्रह्म आप हो जाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार आप बंधाईआ। शब्द बंधन आपे पा, त्रैगुण जोड़ जुड़ाया। परम पुरख खेल खिला, पारब्रह्म वड्आया। आदि निरँजण जोत जगा, जोत निरँजण कर रुशनाया। एका अंजन नेत्र पा, एका अक्ख खुल्हाया। दर्द दु:ख भय भंजन नाम धरा, आप आपणा मेल मिलाया। साचा सज्जण बण मलाह, दर साचा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म पारब्रह्म हो जाया। पारब्रह्म खेल अपार, ब्रह्म ब्रह्म आप अख्वाईआ। आपे बन्न्हे आपणी धार, सो पुरख निरँजण वड वड्याईआ। हँ ब्रह्म इक्क प्यार, एका रंग रंगाईआ। एका देवे शब्द सहार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पावे सार, त्रैगुण सेवा लाईआ। पंचम मीता हरि गिरधार, पंचम खेल खिलाईआ। मन मति बुध कर पसार, निरगुण जोती इक्क जगाईआ। नौ दर खोल्हे इक्क किवाड़, मानस मानुक्ख बणत बणाईआ। घर घर घर विच महल्ल अपार, आप आपणा आप उपाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। कमलापाती कन्त भतार, बैठा आसण लाईआ। आत्म सेजा ठंडी ठार, आप आपणी रिहा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाईआ। पंज तत्त हरि भगवाना, ब्रह्म ब्रह्म उपांयदा। एका शब्द इक्क तराना, एका राग सुणांयदा। एका घर इक्क मकाना, एका

दर सुहांयदा। एका पीण एका खाणा, एका अमृत मुख चुआंयदा। एका रंग हरि निरँजणा, रूप रंग इक्क जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। लक्ख चुरासी आपे घड़, आपणी बणत बणाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, हर घट बैठा आसण लाईआ। जीव जन्त ना सके फड़, कोटन कोट रहे तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई रक्ख करतार, आपणा खेल खिलांयदा। मानस मानुक्ख पावे सार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। सन्त सुहेले कर उज्यार, आप आपणा दर खुलांयदा। चौथे घर आपे वड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। पंचम मेला मीत मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। लोकमात साचा घर, हरि हरि वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी आपे धर, उत्भुज सेतज जेरज अंड समाईआ। हउमे हँगता वेखे गढ़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रलाईआ। आसा तृष्ना बद्धी लड़, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सिख्या आपणे हथ्थ रखाईआ। साची सिख्या हरि करतार, आपणी आप चलांयदा। लोकमाती लै अवतार, पंज तत्त समांयदा। शब्दी शब्द शब्द धुन्कार, सच संदेश सुणांयदा। जीवां जन्तां करे ख़बरदार, सोए मात उठांयदा। वरन गोत ना कोई प्यार, ऊँच नीच ना कोई जणांयदा। राउ रंक इक्क दरबार, शाह सुल्तान वेख वखांयदा। दाता दानी मेहरबान, आप आपणा कर्म कमांयदा। धुरदरगाही देवे साचा माण, जो जन रसना गांयदा। ब्रह्म ब्रह्म इक्क पछाण, एका रूप दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता हरि निरँकार, खेले खेल अगम्म अपार आप अख्वांयदा।

* २४ मग्घर २०१५ बिक्रमी महिंगा सिँघ दे घर पिण्ड हरी पुर ज़िला जलँधर *

अजूनी रहित मूर्त अकाल, एका एकँकारया। आदि पुरख निरँजण दीन दयाल, आदि जुगादी नाउँ धरा ल्या। पारब्रह्म प्रभ खेल अपार, जुग जुग वेस वटा ल्या। इक्क इकल्ला कर आकार, आप आपणा वेस वटा रिहा। महल्ल अटल उच्च मिनार, थिर घर वासी डेरा ला ल्या। जोत प्रकाशी दीप उज्यार, एका एक डगमगा रिहा। सर्ब घट वासी हरि निरँकार, निरगुण धारा आप चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिला रिहा। आदि पुरख श्री भगवाना, हरि हरी आप अख्वांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, जुग जुग वेस वटांयदा। जोधा सूरबीर बली बलवाना, एका एक अख्वांयदा। एका घर इक्क टिकाणा, इक्क सिँघासण आसण लांयदा। इक्क महल्ल इक्क मकाना, एका आसण

लांयदा। खेले खेल दो जहानां, दो जहानी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर दरसांयदा। जोती नूर हरि अपार, एका एक उपाईआ। निरगुण नूरो नूर उज्यार, आप आपणा खेल खिलाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वड वड्याईआ। आदि निरँजण हरि भगवन्ता, एका रूप समांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपणी चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। आपणे घर रहे मंगता, आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता आप अख्वांयदा। आदि अन्ता हरि मेहरवाना, एका एकँकारया। खेले खेल श्री भगवाना, दिस किसे ना आ रिहा। साचा मीत इक्क सुल्ताना, एका नाउँ उपा रिहा। शब्दी शब्द शब्द बलवाना, आप आपणा आप उठा रिहा। एका राग इक्क तराना, एका घर सुणा रिहा। एका मर्द इक्क मरदाना, एका वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता नाउँ उपा रिहा। जुग करता पुरख अबिनाशा, एका रूप समाईआ। आदि जुगादी खेल तमाशा, जुग जुग बणत बणाईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, रवि ससि करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मंड खण्ड जेरज अंड धरत धवल पुरीआं लोआं आकाश प्रकाश आप रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि ब्रह्माद, एका जोत जगांयदा। शब्द तूर अनादी नाद एका एक सुणांयदा। देवणहारा दाद, आप आपणी वंड वंडांयदा। एका शब्द आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटांयदा। आपे जाणे बोध अगाध, दूसर भेव कोई ना पांयदा। एका जोबन माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा संग निभांयदा। सगला संग हरि करतार, आपणा आप रखाईआ। आपणी क्रिया कर विचार, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे बन्ने आपणी धार, आपणा बंधन आपे पाईआ। आपणा कर शब्द जैकार, आपे रिहा सुणाईआ। लोकमात हो त्यार, आवे जावे फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, करता कादर आप कराईआ। नूर इलाही बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर समाईआ । ख़लक ख़ुदाई पाए सार, ख़ालक रूप आप वटाईआ। हक्क हकीकत वेख विचार, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। लाशरीक सांझा यार, एका रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम काम, हरि हरि आप करावणा। आपे सीता आपे राम, राम रूप आप समझावणा। आपे कृष्ना आपे काहन, साची गोपी आप नचावणा। आपे अमृत आपे जाम, हरिभगतां आप पयावणा। आपे दीन आप इस्लाम, ईसा मूसा आप अख्वावणा। आपे जाणे आपणी कलाम, कलमा नबी आप पढ़ावणा। आप आपणी मेटे अन्धेरी शाम, साचा

चन्द इक्क चढ़ावणा। आपे लक्ख चुरासी करे ताम, जीव जन्त आप उपजावणा। आपे नगर आप गराम, काया खेड़ा आप वसावणा। आपे निरगुण बैठा धाम, सरगुण पंज तत्त आप सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखावणा। वेखणहारा हरि समरथ, एका एक अख्वाईआ। जगत चलाए आपणा रथ, हरि वड वड्डी वड्याईआ। लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, दहि दिशा आप भवाईआ। शब्द जणाई अकथना अकथ, हरी हरि जगत सुणाईआ। जगत विकारा देवे मथ, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, थिर घर वासी फेरा पाईआ। सगल विसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन पाईआ। काया गढ़ जाए ढठ्ठ, हउमे रोग रहे ना राईआ। लहिणा देण चुकाए तीर्थ अठसाठ, काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। इक्क वखाए पूजा पाठ, इक्क करे पढ़ाईआ। अमृत आत्म सर सरोवर मारे ठाठ, जल कँवल आप भराईआ। नाम विकाए साचे हाट, एका वणज कराईआ। इक्क उतारे पार औखे घाट, कलिजुग बेड़ा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, हरि हरि जोत जगांयदा। धुन अनादी शब्द जणा, आत्म ब्रह्म वखांयदा। दूई द्वैती पर्दा लाह, एका नैण खुलांयदा। नानक निरगुण मेल मिला, सरगुण धार बंधांयदा। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, दिस किसे ना आंयदा। हरिजन वेखे थाउँ थाँ, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कॉं, साची चोग चुगांयदा। सदा सुहेला देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। आपे पिता आपे माँ, हरिजन साचे बाल अञ्याणे गोद उठांयदा। जुग जुग करे सच न्याँ, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे पकड़े बांह, राज राजानां ख़ाक मिलांयदा। कलिजुग मीता हरि निरँकार, एका रूप समांयदा। जोती दीप कर उज्यार, आकाश प्रकाश वखांयदा। दिवस रैण एका धार, अट्ठे पहर डगमगांयदा। गोबिन्द मेला विच संसार, अन्तिम वेख वखांयदा। शब्दी शब्द शब्द कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा ।आपे वस्सया सभ तों बाहर, हर घट डेरा आपे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा मूल आप चुकांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा मूल आप चुकावणा, ब्रह्मा वेता चाढ़े फूल, चारे मुख एका गावणा, शिव शंकर सुट्टे हथ्थ त्रशूल, बाशक तशका सीस लटकावणा। विष्नूं वंसी आप चुकाए आपणा मूल, आप आपणा दर सुहावणा। शब्द सिँघासण ना कोई पावा ना कोई चूल, पुरख अबिनाशी डेरा लावणा, सच पंघूड़ा रिहा झूल, दो जहानां आप झुलावणा। आपे कन्त आपे कन्तहूल, नारी कन्त आप नाम धरावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा खेल आप करावणा। खेले खेल खेलणहार, इक्क पुरख अख्वाया।

जोती जामा भेख न्यार, वेस अनेका वेस वटाया। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठाया। पुरीआं लोआं मारे मार, नौ सत रिहा जगाया। राज राजानां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। साधां सन्तां दए हुलार, नाम हुलारा इक्क रखाया। गुरमुखां करया मात प्यार, आप आपणा बिरद रखाया। शब्द जणाई सच्ची धुन्कार, अनहद ताल वजाया। राग रागनी ढहि ढहि पैण चरन द्वार, बैठे सीस निवाया। घर सज्जण मेला मीत मुरार, आत्म सेजा इक्क सुहाया। निरगुण नूर हरि उज्यार, बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलाया। आपणा खेल आपे खेल, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। दो जहानी सज्जण सुहेल, जुग जुग खेल खिलाईआ। आपे वस्सया रंग नवेल, हर घट आपे रिहा समाईआ। आपे गुरु गुर चेल, गुर चेला आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाईआ। आपणा आप आपे वेख, हरि आपणी बणत बणांयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपे पूर करांयदा। आपणे नेत्र आपे पेख, आपणी तृष्ना आप बुझांयदा। आपणा धारे आपे भेख, आपणी कल आप वरतांयदा। आपे मुच्छ दाढ़ी रक्खे केस, आपे सीस जगदीश मुंडांयदा। आपे दाता दानी दर दरवेश, अलक्ख निरँजण आपणी अलक्ख आप जगांयदा। अगम्म अगम्मड़ा नर नरेश, हड्ड मास नाड़ी चमड़ा ना कोई जणांयदा। शब्दी जोती जोत प्रवेश, जोत निरँजण आदि निरँजण विच टिकांयदा। भेव ना पाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, वेद कतेब ना कोए रखांयदा। पुराण अठारां रहे वेख, हरि का रूप दिस ना आंयदा। अञ्जील कुराना लिखे लेख, एका दोआं संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग वटांयदा। आपणा रंग आपे रंग, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपणी मंग आपे मंग, आपे वेख वखाईआ। आपणी सेज माणे आप पलँघ, आपे बैठा आसण लाईआ। आपणा दर दरवाजा आपे लँघ, वड दाता बेपरवाहीआ। आपणी कट्टणहारा भुक्ख नंग, लोकमात फेरा पाईआ। शब्द वजाए इक्क मृदंग, सृष्ट सबाई आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि निरँकार, निरगुण रूप उपाया। मात पित ना कोई प्यार, भाई भैण ना कोई रखाया। सुत गोद ना कोई दुलार, साक सैण ना कोई जणाया। अबिनाशी अचुत्त खेल अपार, आप आपणा वेख विखाया। आप सुहाए आपणी रुत्त, जुग जुग आपणा नाउँ धराया। आपे हर घट बैठा लुक, आप आपणा मुख छुपाया। आपे सन्त सुहेले आपणी गोदी लए चुक्क, आप आपणा पर्दा लाहया। कलिजुग पैंडा रिहा मुक्क, हरि साचा वेख वखाया। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, ना सके कोई बचाया। हरि का भाणा ना सके रुक, हरि

६७१
०७

साचे आप वरताया। गुरमुख विरला करे सुफल मात कुक्ख, जिस जन हरि हरि रसना गाया। दूई द्वैती मिटे दुःख, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम खेल खिलाया।

* २५ मग्घर २०१५ बिक्रमी लाल सिँघ दे घर पिण्ड हेर तहिसील नकोदर ज़िला जलँधर *

जै देव जै जैकार, एका दर वड्याईआ। एका अक्खर पावे सार, एका विद्या ब्रह्म वड्याईआ। एका पथ्थर देवे पाड़, हँ हँगता रहे ना राईआ। इक्क वखाए सच अखाड़, सचखण्ड वज्जी वधाईआ। गुरसिख साचा साचा लाड़, हरि सज्जण वेख वखाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, दो जहानां सेव कमाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, सुरती सुरत आप भवाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, पंज तत्त ना कोई सताईआ। दर घर ठांडे देवे वाड़, अमृत जल मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जै जै जैकार, हरि हरि आप कराईआ। जै जै जैकार हरी हरि देव, आत्म ब्रह्म जणाया। अगम्म अगोचर अलक्ख अभेव, आदि जुगादी वेख वखाया। गुरसिक्खां काया फल लगाए मेव, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। जै जै जैकार देव, गुर इष्ट सति सरूप समाईआ। अबिनाशी करता वेख सृष्ट, लोकमात खेल खिलाईआ। गुरमुख विरले आप खुल्लाए अन्तर दृष्ट, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ ।मेल मिलावा रामा वशिष्ट, विष्नूं रूप आप समाईआ। थित वार ना जाणे कोई धनिष्ट, कादर करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जै जै जैकार नाम धराईआ। जै जैकार हरि हरि नाउँ, आदि अन्त करांयदा। गुरमुख मेला साचे थाउँ, घर घर विच डेरा लांयदा। करनहार सच न्याउँ, जुग जुग वेस वटांयदा। ग़रीब निमाणे पकड़े बाहों, आप आपणे अंग समांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। गुरमुख साचा लाल अनमुल्ला, हरि हरि वेख वखांयदा। शब्द कंडे एका तुला, जगत कीमत कोई ना पांयदा। भाग लगाए साची कुला, कुल कुलवन्ता आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी मानस जन्म ना रुला, सतिगुर पूरा लेखे लांयदा। धरत धवल फलया फुला, फल फुलवाड़ी आप सुहांयदा। चरन प्रीती घोल घुला, मस्तक टिक्का धूढ़ी आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाल तरांयदा। लाल लालड़ा लाल गुलाल, त्रिलोकी नाम चढ़ाईआ। शब्द विचोला गुर दलाल, लोकमात करे कुड़माईआ। भाग लगाए काया माटी खाल, तत्व तत्त पंज समाईआ। नूरी जल्वा इक्क जलाल, जोत निरँजण नूर इलाहीआ। दीपक बाती साची बाल, अज्ञान अन्धेर

मिटाईआ। गगन मस्तक एका थाल, ब्रह्मण्ड वेख वखाईआ। सुत दुलारे आपे भाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। चले बेहंगम एका चाल, सुरती शब्द शब्द सुरती आप समाईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, वड दाता बेपरवाहीआ। सदा सुहेला वसे नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। लहिणा देण चुकाए काल महांकाल, राए धर्म ना दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण आपे भाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। मिल्या मेला धुरदरगहि, हरि सज्जण हरि हरि पाया। इक्क जपाया साचा नाँ, दूजा भेव चुकाया। तीजे नैण दरस दरसा, आत्म ब्रह्म विखाया। चौथे पद डेरा ला, पंचम मोह चुकाया। पंचम मेला सहिज सुभा, घर साचे मंगल गाया। अनहद ताल अनादी आप वजा, ब्रह्म पारब्रह्म समाया। बोध अगाधी भेव खुल्ह्रा, मन्दिर अन्दर कुण्डा लाहया। दस्म दुआरी दीप जगा, निरगुण नूर करे रुशनाया। अमृत ठांडी धार वहा, कँवल कँवला मुख भवाया। आत्म सेजा रिहा सुहा, सच सिँघासण डेरा लाया। पृथ्मी आकाश फेरा पा, गगन पतालां वेख वखाया। लक्ख चुरासी फोल फुला, मानस मानुख आप जगाया। सन्त सुहेले लए उठा, गुर गुर चेले रंग रंगाया। नाम मन्त्र इक्क दृढ़ा, एका रूप वखाया। जगत सहिंसा रोग मिटा, हउमे गढ़ तुड़ाया। सोहँ साची चोग चुगा, हँ ब्रह्म भेव ना राया। सति सरूपी गया समा, सांतक सति वरताया। आदि निरँजण खेल खिला, जोत निरँजण वेख वखाया। जगत विकारा भट्ठ तपा, नेत्र नैणां नीर वहाया। भाणा सहिणा हुक्म जणा, एका बूझ बुझाया। लहिणा देणा मूल चुका, लाल दलाल नाम घसवटी एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवणहारा साचा वर, जै देव लगा निउँ काया बिरख, ना कोई सोग ना कोई हरख, अमृत आत्म एका बरख, धीरज यति सन्तोख सति आत्म ब्रह्म साचा धर्म एका कर्म, नेत्र नैण दर्शन हरि हरि पाया।

आसरा इक्क पुरख अकाल, गुरमुख साचा रिहा रखाईआ। दीना बंधप दीन दयाल, भव सागर पार कराईआ। तोड़णहारा जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाईआ। काया मन्दिर वेख सच्ची धर्मसाल, घर बैठा बेपरवाहीआ। देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। चरन प्रीती घालण लई घाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा एका वर, नाम नामा इक्क जणाईआ। भगतन मंग अपार, जुग जुग वड्याईआ। चरन कँवल इक्क प्यार, एका ओट रखाईआ। एका नेत्र इक्क ज्ञान, एका रिहा बुझाईआ। एका शब्द दर परवान, एका रिहा बुझाईआ। एका रूप श्री भगवान, हर घट अन्दर नज़री आईआ। चतुर सुघड़ जन सुजाण, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। देवणहारा दानी

दान, ब्रह्म ज्ञान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच सुच्च रिहा वरताईआ।

जगत विछोड़ा अग्ग है, हरिभगतन मीत मुरार। शब्द घोड़ा सूरा सरबग्ग है, हरि सज्जण शाह अस्वार। गुरमुख हँस बणाए कग्ग है, अमृत बख्शे ठंडी ठार। दीपक जोती जाणा जग्ग है, जिस जन मेला विच संसार। दरस दिखाए उप्पर शाह रग है, लहिणा चुक्के नौ द्वार। पंज तत्त विकाए बुझाए अग्ग है, नेड़ ना आए काम क्रोध लोभ मोह हँकार। सरन सरनाई जो जन गया लग्ग है, फड़ बाहों लाए पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उभार। हरि सज्जण हरि मेलया, गुरमुख ब्रह्म विचार। आपे गुरू गुरु गुर चेलया, आपे रिहा पैज संवार। दो जहानां सच सुहेलया, वरभण्डी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए लड़, निहकलंक नर अवतार।

सतिगुर पूरा सति है, सति सति समाए। एका देवे ब्रह्म मति है, मनमति रहिण ना पाए। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त है, धीरज यति इक्क धराए। चरन कँवल बंधाए नत है, नाता बिधाता आप हो जाए। देवे नाम साची वथ है, चौदां लोक हथ्थ ना आए। जुग जुग चलाए साचा रथ है, गुरमुख साचे ल्ए चढ़ाए। सर्बकला आपे समरथ है, एकँकारा नाउँ धराए। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ है, चरन धूढ़ जो जन नुहाए। साचा मन्दिर शिवदुआला मठ्ठ है, काया गुरुद्वार इक्क जणाए। वेखणहारा घट घट है, हर घट बैठा आसण लाए। खेले खेल बाज़ीगर नट है, कलिजुग स्वांगी स्वांग वरताए। आत्म अन्तर एका तीर्थ तट है, अमृत सर सरोवर आप भराए। गुरमुख विरला रसना रिहा चट है, मनमुखां हथ्थ ना आए। सन्त सुहेला लाहा ल्ए खट है, लक्ख चुरासी रही कुरलाए। भाग लग्गे काया मट है, निरगुण जोत करे रुशनाए। लहिणा देणा चुकाए आन बाट है, मात गर्भ फेर ना आए। अग्गे नेड़े दिसे वाट है, कलिजुग कूड़ा मुख शरमाए। आप उतारे साचे घाट है, हरि बेड़ा रिहा चलाए। बज़र कपाटी जाए पाट है, जिस जन पर्दा आपणा लाहे। अन्तर आत्म साची खाट है, हरि बैठा आसण लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लाल तराए। लाल अनमुल्ला हरि भगवन्ता, एका एक अख्वाईआ। हथ्थ फड़ाए धर्म निशाना, दो जहानां आप झुलाईआ। वेखे खेल गोपी काहना, मण्डल

रास आप नचाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा, जानणहार दिस ना आईआ। सन्त सुहेले कर पछाण, आदि जुगादि मेल मिलाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, जग तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मेल मिलावा गुण निधान, आदि निरँजण वड वड्याईआ। एका शब्द धुर फ़रमाण, गुरमुख साचे आप सुणाईआ। धुनी नाद सच्ची धुनकान, अनहद सेव कमाईआ। पंचम सखीआं एका गाण, मंगल राग इक्क अलाईआ। छत्ती राग भेव ना पाण, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोधा सूरबीर बली बलवान, घर बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवणहारा वर, एका बूझ बुझाईआ। शब्द सुरत सच ज्ञान, हरिजन आप दृढ़ांयदा। चरन कँवल हरि ध्यान, दूसर ना कोई वखांयदा। सतिगुर पूरा मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। दरगहि साची देवे माण, थिर घर वासी वेख वखांयदा। सन्त सुहेले कर पछाण, आप आपणे रंग रंगांयदा। मारनहारा नाम बाण, रसना चिल्ला इक्क चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी फंद कटान, धर्म राए मुख भवांयदा। लाड़ी मौत नैण शरमाण, जो जन चरनी सीस झुकांयदा। शब्द अनमुल्ला देवे बिबाण, अन्तिम वेले आप उठांयदा। लोआं पुरीआं पार मकान, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख लेखे लाए दर, आत्म घर इक्क सुहांयदा। आत्म घर हरि निरँकार, एका एक उपाया। जोती नूर कर उज्यार, दिवस रैण डगमगाया। पंज तत्त ना कोई विकार, पंचम मोह ना कोई रखाया। पंच शब्द सच्ची धुन्कार, धुन अनाद आप वजाया। खोले सुन अपर अपार, आप आपणा रूप दरसाया। गुरमुख साचे चुण विच संसार, गुणवन्ता लेखे लाया। भेव ना पायण रिख मुन, साध सन्त रहे कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क पुकार रिहा सुण, सुनणहार दिस ना आया। गुरमुख तेरी साची धार, आत्म आप चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, निरगुण सरगुण देवे वड वड्याईआ। निरगुण जोती इक्क जगा, सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण नाम इक्क उपा, सरगुण झोली आप भराईआ। निरगुण दीपक इक्क जगा, सरगुण विच टिकाईआ। निरगुण शब्द आप उपा, सरगुण रिहा समाईआ। निरगुण पंज तत्त आप रचा, सरगुण मेल मिलावा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, जग करता नाउँ धराईआ। जग करता हरि सिरजणहार, नर नरायण आप अख्वाया। लोकमात लए अवतार, आप आपणा नाउँ धराया। कलिजुग तेरी पावे सार, खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड वेख वखाया। लोआं पुरीआं दए हुलार, ब्रह्मा विष्न शिव वेख वखाया। सत्तां दीपां हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाया। मानस मानुख वेख विचार, गुरमुख साचे रिहा उठाया। शब्द शब्दी तेज कटार, नाम खण्डा हथ्थ उठाया। दूती दुष्ट देवे मार, पंच विकार रहिण ना पाया। मन मति एका धार, कलिजुग तेरे वहिण रुढ़ाया।

६७५ ०७

गुरमुख साचा कर उज्यार, चार वरनां दए समझाया। शत्ती ब्रह्मण शूद्र वैश इक्क प्यार, एका रंग रंगाया। एका घर इक्क द्वार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। एका रूप अगम्म अपार, शाहो भूप इक्क अख्वाया। चारे कूट पावे सार, दहि दिशा फेरी पाया। शब्द पंघूड़ा रिहा झूट, निरगुण निरगुण आप हिलाया। सरगुण उप्पर आपे तुठ, आप आपणे विच टिकाया। अमृत देवे एका घुट्ट, निझर झिरना इक्क झिराया। बज़र कपाटी जाए टुट्ट, शब्द खण्डा एका वाहया। आवण जावण जाए छुट्ट, जो जन सरनाई आया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ गुरमुख वेखे तीर्थ तट कोटी कोट, हरि का रूप दिस ना आया। कोटी कोट बन्न्ह लंगोट, अग्नी तन रहे तपाया। कोटी कोट बोलण जूठ झूठ, माया ममता मोह रखाया। अबिनाशी करता गया रुठ, ना सके कोई मनाया। कलिजुग खाली दिसण ठूठ, नाम भण्डार ना कोई वरताया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लक्ख चुरासी विच्चों एका मुट्ठ, आप आपणे ल्ए उठाया। लुकया रहिण ना देवे किसे गुठ, आप आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल उप्पर धवल सॉंवल सँवल रूप वटाया। धरत धवल हरि विचार, वेखे सर्ब लोकाईआ। कूड़ी क्रिया रही हार, सति सन्तोख ना कोई जणाईआ। साधां सन्तां आई हार, धीरज यति गंवाईआ। आत्म ब्रह्म ना पावे सार, एका रूप ना कोई जणाईआ। नीच कर्म होए विभचार, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, दूई द्वैती ना कोई मिटाईआ। नाम मृदंग ना वजाए कोई संसार, सच सारंगी ना कोई वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ।

सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, एका एकँकारया। खेले खेल आदि जुगादि, जोती जोत नूर उज्यारया। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, आप आपणी कल वरता रिहा। आदि निरँजण हो प्रकाश, आदि शक्त वेस वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणा रिहा।

हरि शब्द अपार, सतिगुर विच टिकाईआ। सतिगुर शब्द जैकार, गुरमुख ल्ए जगाईआ। गुरमुख शब्द प्यार, सुरती शब्द समाईआ । मनमुक्ख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। हरि शब्द शब्द अथाह, सतिगुर विच टिकांयदा। सतिगुर शब्द भगत मलाह, गुरमुख आप तरांयदा। गुरमुख मेला साचे नाउँ, एका नाउँ रसना गांयदा। बेमुखां दिसे ना कोई थाउँ, दर द्वार ना कोई सुहांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा । हरि शब्द शब्द बेअन्त, हरि हरि आप उपांयदा। सतिगुर शब्द साचा कन्त, गुरमुख नारी आप प्रनांयदा। गुरसिख बणाए साची बणत, लोकमात वेख वखांयदा। भरमे भुल्ले जीव जन्त, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी धार बंधांयदा। सतिगुर शब्द ठांडा सीत, गुरमुखां करे प्यारया। गुरमुख परखे साची नीत, एका रूप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। हरि शब्द बलवान, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान, गुरमुखां झोली पाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, आपणे रंग रंगाईआ। मनमुख भुल्ले जीव निधान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाईआ। हरि शब्द शाहो भूप, सतिगुर विच टिकाया। सतिगुर पूरा सति सरूप, गुरमुख साचे लए तराया। गुरसिख नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच्च प्रनाया। मनमुख जीव गए रूठ, दूसर दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाया। हरि शब्द हरि निशान, सतिगुर हथ्थ उठाईआ। सतिगुर वेखे दो जहान, गुरमुखां मेल मिलाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, एका ब्रह्म वखाईआ। मनमुक्ख भुल्ले जीव निधान, पंज विकार रसन हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी खेल खलाईआ। हरि शब्द सचखण्ड, सतिगुर झोली पांयदा। सतिगुर गुरमुखां आपे रिहा वंड, लोकमात वेख वखांयदा। गुरसिख नंगी होए ना कंड, सतिगुर पूरा दया कमांयदा। मनमुख नार दुहागन रंड, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेख पखण्डा मेट मिटांयदा। हरि शब्द हरि नरायण, सतिगुर पूरा वेख वखांयदा । सतिगुर पूरा चुकाए लहिण देण, गुरमुखां झोली पांयदा। गुरमुख धाम अवल्ले एका बहिण, नौ दुआरे पार करांयदा। मनमुक्ख डुब्बे माया वहिण, मँझधार ना कोई तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतांयदा। हरि शब्द हरि रूप, सतिगुर विच समाईआ। सतिगुर पूरा वेखणहारा चारे कूट, गुरमुख आप उठाईआ। गुरमुख उप्पर आपे तुठ, आपणी बूझ बुझाईआ। मनमुखां मुख रखाया जूठ झूठ, रसना काग वांग कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण धार इक्क बंधाईआ। हरि शब्द निरगुण धार, सतिगुर आप चलांयदा। सतिगुर साचा कर प्यार, गुरमुखां बूझ बुझांयदा। गुरमुख साचा वेख विचार, आपणा मोह चुकांयदा। मनमुख मानस जन्म गए हार, लक्ख चुरासी ना कोए छुडांयदा। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा शब्द चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा शब्द अलांयदा।

६७७
०७

हरि शब्द हरि सार, सार शब्द आप अख्वाईआ। गुर शब्द गुर अधार, गुर गुर रिहा टिकाईआ । नाम शब्द शब्द प्यार, गुरमुख साचे रिहा कमाईआ। मूर्ख मूढ़े भुल्ले जीव गंवार, मन मति रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी चलत चलाईआ। हरि शब्द सच जैकार, एका नाअरा लांयदा। साधां सन्तां पावे सार, दर सोया कोई रहिण ना पांयदा। वेखे महल्ल अटल उच्च मुनार, इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड खेल न्यार, जेरज अंड फेरी पांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ रखांयदा। तिक्खीआं रक्खे दोवें धार, दो जहानां आप चलांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव दए हुलार, आप आपणा कर्म कमांयदा। करोड़ तेतीसा कर ख्वार, सुरपति राजा इन्द संग रखांयदा। शब्द सुत कर उज्यार, जोती नूर इक्क चमकांयदा। गुरमुख साजण मीत मुरार, आप आपणा मेल मिलांयदा। कलिजुग अन्तिम पार किनार, तीर्थ तट ना कोई तरांयदा। वेद पुराण करन पुकार, अञ्जील कुरान मता पकांयदा। खाणी बाणी एका धार, आप आपणा दर सुहांयदा। लेख लिखाए बण लिखार, वेद व्यासा लेखे लांयदा। राम रमईआ कृष्न मुरार, सहँसा बंसा आप हो जांयदा। ईसा मूसा ख़बरदार, एका नाअरा लांयदा। संग मुहम्मद चार यार, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। ऐनलहक्क वेख घर बार, अल्ला राणी मेल मिलांयदा। नानक नाम सति जैकार, शब्द सार धुन उपजांयदा। गुरमुख शब्द मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। एका जोती गुर अवतार, हरि हरि रूप वटांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साध सन्त दिस ना आंयदा। ना कोई चुक्के किसे भार, आपणा भार ना कोई उठांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गुर दर मन्दिर मस्जिद डेरा लांयदा। एका भुल्लया हरि निरँकार, गीत गोबिन्द ना कोई गांयदा। अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़, त्रैगुण वेख वखांयदा। रजो तमो तेरा अखाड़, सतो डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे आप तरांयदा।

✻ २६ मग्घर २०१५ बिक्रमी नसीब सिंघ दे घर पिण्ड बोपा राए ज़िला जलन्धर ✻

आत्म शब्द हरिजन हरि हरि जाणया, जानणहार करतार। पंज तत्त तत्त पछाणया, आत्म ब्रह्म विचार। शब्दी शब्द शब्द परधानया, हरि शब्द नाउँ जैकार। जोती जोत जोत नूर महानया, निर्मल नूर होए उज्यार। अकथ कथा कथ कहाणीआ, आप सुणाए सुणावणहार। जल जल खण्डा जल पानया, अमृत बख्शे ठंडी ठार। नेत्र नैण नीर इक्क खुलानया, आप आपणी किरपा धार। साक सैण इक्क वखानया, एका मीत मुरार। एका एक होए जाणी जाणया, जानणहार रूप गिरधार। आप

सुणाए आपणी बाणीआ, अक्खर वक्खर शब्द उचार। लहिणा चुक्के जेरज खाणीआ, लक्ख चुरासी उतरे पार। मेल मिलावा साचे हाणीआ, सतिगुर कन्त भतार। दरगहि साची साची राणीआ, आप बहाए महल्ल अटार। थिर घर साचे भाग लगानया, इक्क इकल्ला एकँकार। सचखण्ड द्वार पद निरबाणया, गुरमुख विरला पावे विच संसार। दाता दानी गुण निधानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लाए पार। पंज तत्त तन चोला, हरि हरि बणत बणाईआ। आपे रक्खे पर्दा उहला, आपे बैठा आसण लाईआ। आपे गाए साचा ढोला, आपे राग अलाईआ। आपे बणया हरि हरि तोला, तोलणहार सृष्ट सबाईआ। आदि जुगादी खेले होला, जुग जुग वेस वटाईआ। जन भगतां आत्म अन्तर आपे मौला, आप आपणा विच टिकाईआ। उलटा करे नाभ कँवला, अमृत झिरना मुख झिराईआ। जगत वड्याई उप्पर धवला, दरगहि साची आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उठाईआ। पंज तत्त तत्त प्यार, आत्म ब्रह्म जणाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त पावे सार, रक्त बूंद वेख वखाईआ। मन पंखी ना उडे दहि दिश धार, गुर डोरी शब्द बंधाईआ। मती मति दए सहार, एका बूझ बुझाईआ। बुध बिबेक रहे संसार, सांतक सति वरताईआ। त्रैगुण माया ना लाऐ सेक लोकमात ना होए ख्वार, आप आपणे अंग समाईआ। दीवा बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। रैण अन्धेरी मिटे राती अन्ध अँध्यार, सच सुच्च ज्ञान दृढ़ाईआ। नाम वस्त शब्द भण्डार, हरि दाता आप वरताईआ। पुरख अकाल इक्क जैकार, अन्दर मन्दिर आप लगाईआ। सो पुरख निरँजण आप उपजाए सच्ची धुंनकार, हँ ब्रह्म आप वखाईआ। रागी नादी राग अलाए आप सुणाए सुनणेहार, दूसर दिस किसे ना आईआ। सच समग्री जोत उजगरी कर उज्यार, नूरो नूर नूर दरसाईआ। अकाल मूर्त खेल अपार, अजूनी रहित वड्डी वड्याईआ। भगत वछल आप गिरधार, गिरधर रूप आप वटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, चारे खाणी वेख वखाईआ। आपे वस्सया सभ तों बाहर, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। करता कादर करीम करनेहार, राम रहीम आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला वेखे दर, आप आपणा भेव खुलाईआ। भगतन मीता हरि भगवाना, भगतन हरि हरि रत्तया। आपे देवे धुर फ़रमाणा, वेख वखाए चेतन्न सत्तया। नाद अनादी धुन तराना, सति सन्तोखी एका रक्खया। एका दर इक्क दरबाना, ना ठंडा ना तत्तया। एका पुरख शाहो सुल्ताना, आदि जुगादि करे ना हत्या। हरिजन मेला दो जहानां, बीज बीजे आत्म वत्तया। कलिजुग अन्तिम फल खलाणा लाल गुलाला नामे रत्तया। आपे वरते आपणा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए नौ खण्ड सृष्ट सबाई तेरा खत्तया। भगती रूप हरि चढ़ाया, हरिजन वड्डी वड्याईआ। काया चोला इक्क

रंगाया, हरि साचे वड वड्याईआ। नाम जैकारा बोला इक्क सुणाया, सोहँ ढोला रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विहार हरि करतार, एकँकार आप कराईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, शब्द शब्दी नाअरा लांयदा। राम नाम वणज वपार, नाम नामा वेख वखांयदा। साची वस्त विच संसार, धुरदरगाही आप टिकांयदा। आपणा खोल्ह आप भण्डार, लोकमात आप वरतांयदा। कलिजुग अन्तिम खेल न्यार, खेलणहार दिस ना आंयदा। एका पद कर प्यार, एका घर सुहांयदा। वज्जे नद शब्द जैकार, सोहँ नाअरा लांयदा। घर घर पावे सार, जो जन रसना गांयदा। विष्नूं पद खेल अपार, भगवान जोती विच टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। चौथा पद सोहँ धार, आत्म होए जणाईआ। पारब्रह्म कन्त भतार, साची सेज सुहाईआ। पंज तत्त ना कोई आकार, हड्ड मास नाड़ी ना कोई रखाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, एका नूर करे रुशनाईआ। शाहो भूप सच्ची सरकार, पुरख अबिनाशी बैठा आसण लाईआ। रूप रंग ना सके कोई विचार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। साचे मन्दिर सच पसार, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा कर प्यार, विष्न ब्रह्मा शिव लड़ फड़ाईआ। आप सुहाए सच द्वार, थिर घर वासी वड वड्याईआ। सुन अगम्मी अद्धविचकार, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उच्च महल्ल अटल मिनार, बैठा बेपरवाहीआ। महल्ल अटल सच सिँघासण, हरि हरि आसण लांयदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशण, दर साचा इक्क सुहांयदा। ना कोई ज़िमी ना अमानन, रवि ससि ना कोई वखांयदा। निरगुण नूरी एका चानण, रवि ससि रैण ना कोई बणांयदा। आपे रवि ससि होए भानण, किशना सुखला पख ना कोई मिटांयदा। शब्दी शब्द ना कोई धुनकानन, राग नाद ना कोई अल्हांयदा। खाणी बाणी ना कोई वैरागण, वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई वखांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव वेखे मार ध्यानन, करोड़ तेतीसा दिस ना आंयदा। ना कोई बेड़ा ना जहाज़न, ना चप्पू कोई लगांयदा। ना कोई राज ना कोई राजन, शाह सुल्तान ना कोई अख्वांयदा। ना कोई सवाल ना जवाबण, पुच्छ गिच्छ ना कोई करांयदा। ना कोई घोड़ा ना रकाबण, सोलां कलीआं आसण कोई ना लांयदा। ना कोई ग़रीब ना ग़रीब निवाजण, प्रितपालक ना कोई अख्वांयदा। बाणीआं शाह ना कोई महाजण, ना तराजू तोल तुलांयदा। नारी कन्त ना कोई काजन, ना कोई मेल मिलांयदा। नाम धन ना बन्न्हे कोई दाजन, सगला संग ना कोई निभांयदा। ना कोई रक्खणहारा लाजण, ना कोई वेख वखांयदा। खेले खेल पुरख अबिनाशण, आप आपणा घर सुहांयदा। जोती नूर कर प्रकाशण, आप आपणा प्रकाश विखांयदा। शाहो भूप शाहो शाबाशण, शाह सुल्ताना नाउँ रखांयदा। चम्म नाड़ी ना कोई मासण, पंज तत्त ना कोए बणांयदा। जन भगतां

होए दासी दासण, जुग जुग वेस वटांयदा। साचे मण्डल पावे रासन, आप आपणी किरत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, सच सुच्च ज्ञान, सोहँ शब्द धुर फ़रमाण, आत्म अन्तर मारे बाण, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। आत्म अन्तर शब्द निशाना, हरि हरि आप लगांयदा। गुरमुख साचा चतुर सुजाणा, आप आपणा मेल मिलांयदा। देवणहारा जीआं दाना, जागरत जोत इक्क जगांयदा। हथ्थीं बन्ने साचा गाना, नाम सति तन्द रखांयदा। आपे पाए आपणी आणा, आपणे बंधन आपे बंधांयदा। खेले खेल दो जहानां, लोकमात वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम हो प्रधाना, आप आपणा खेल खिलांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, भगवन भगती वेख वखांयदा। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, आप आपणे अंग लगांयदा। शब्द बिठाए इक्क बिबाना, लोआं पुरीआं पार करांयदा। आत्म अन्तर पीणा खाणा, सच समग्री इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन चुकाए जगत डर, एका दर सुहांयदा। एका रूप हरि निरँकार, गुरमुखां आप बुझाईआ। एका लाए शब्द धुन्कार, आत्म अन्तर आप वहाईआ। एका नाउँ सच प्यार, नौ अठारां सेव कमाईआ। एका गाउँ नगर अपार, काया खेड़ा आप सुहाईआ। एका थाउँ बेऐब परवरदिगार, सच महल्ला वेख वखाईआ। चढ़या चाउ नेत्र नैण दरस अपार, सच गुलज़ार आप खिलाईआ। फूलण बरख़ा अपर अपार, गण गधंरब रहे बरसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे पुकार, हरिभगत वड्डी वड्याईआ। खाणी बाणी दए सहार, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। साची राणी सुरत प्यार, कन्त मिलावा शब्द सलाहीआ। आत्म सेजा मीत मुरार, बैठा राह तकाईआ। एक एका निरगुण धार, नूरो नूर अख्वाईआ । ठांडा सीता दर दरबार, सांतक सति रिहा वरताईआ। नेतन नेता पावे सार, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। आपणी रीता कर विचार, हरिजन साचे लए उठाईआ। वस्सया चीता सिरजणहार, विछड़ कदे ना जाईआ। ना कोई मन्दिर मसीता गुरुद्वार, काया खेड़ा आप सुहाईआ। सुरती सीता कर प्यार, राम रामा लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन चुकाए जगत डर, भय भञ्जण भव सागर पार कराईआ। भय भञ्जण हरि भगवन्त, पूरन पुरख सुल्तानया। आदि जुगादी एका कन्त, सृष्ट सबाई आप अख्वानया। हरिजन काया चोली रंगे रंग बसन्त, लेखा जाणे दो जहानया। आपे मन मनुआ आपे मंत, आपे शब्दी शब्द गुण निधानया। आपे जेवड़ा आपे जन्त, आपे गुर सतिगुर रूप वटानया। आपे साध सन्त होए महंत, पीर फ़कीर दस्तगीर आप अख्वानया। आपे वेद पुराण बणाए बणत, शास्त्र सिमरत आप लिखानया। आपे अञ्जील कुरान गणाए गणत, तीस बतीस आप प्रधानया। आपे खाणी बाणी वजाए संख, नाद धुन आप सुणानया। आपे दीन मज़्हब इस्लाम पन्थ, ऊँच नीच आप हो जानया। आपे पूजा पाठ

ग्रन्थ, आपे रसना नाउँ वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे कर, वेखणहार आप अख्वानया। वेखणहार हरि निरँकार, आपणी रचन रचाईआ। आदि जुगादी गुर अवतार, एका एक अख्वाईआ। रूप अनूप ना पावे सार, लेखा लिख्त ना कोई जणाईआ। नाद अनादी इक्क जैकार, एका रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे घर, देवणहार वड वड्याईआ। हरिजन तेरी सति वड्याई, वेद पुराणी गाया। अञ्जील कुरान दए दुहाई, नूरो नूर ख़ुदी ख़ुदाई इक्क दसाया। शब्द बाणी कर कुड़माई, हरिभगतन मेल मिलाया। निरगुण मेला सहिज सुबाई, नानक हरि पाया। साचे सन्तां कर जणाई, एका मार्ग पाया। घट भीतर खोजो हरिजन भाई, सतिगुर बैठा असण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची रीती दए चलाया। काया मन्दिर सच मकान, नानक जोती इक्क जगाईआ। सृष्ट सबाई इक्क ज्ञान, एका गया समझाईआ। पुरख अबिनाशी श्री भगवान, घट घट बैठा आसण लाईआ। शब्द अनादी धुर फ़रमाण, अनहद राग रिहा अलाईआ। पंचम बहि बहि सारे गाण, पंचम मीता आप अख्वाईआ। अन्तर आत्म पीण खाण, सर सरोवर आप उपाईआ। घर विच घर घर मकान, हरि साची रचन रचाईआ। डूँघी कन्दर इक्क निशान, बैठा आप लगाईआ। आपणी खोल्ह आप दुकान, आपणी वस्त आप टिकाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, सो जन बूझ बुझाईआ। दाता दानी मेहरवान, आदि जुगादि अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम हो प्रधान, आप आपणी बणत बणाईआ। गुरमुखां देवे इक्क ज्ञान, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। एका पद पद निरबाण, एका घर सुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर सच मकान, हरि साचे बणत बणाईआ। आपे करे कराए आप पछाण, आप आपणा दर खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका राग शब्द सुणाईआ। साचा मन्दिर साचा पाठ, दिवस रैण सुणाईआ। साचे अन्दर तीर्थ ताट, अठसठ मूल चुकाईआ। साचे मन्दिर साचा घाट, हरि साचा आप सुहाईआ। साचे मन्दिर अमृत रस चाट, रस रसना रस तजाईआ। साचे मन्दिर साचा हाट, चौदां लोक आप खुल्हाईआ। साचे मन्दिर साची खाट, हरि साचे आप विछाईआ। साचे मन्दिर साची लाट, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। साचे मन्दिर जगत द्वैती जाए पाट, बज़र सिला रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। मन्दिर मट्ठ ना शिवदवाला, चार दिवार ना कोई बणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तेरी करे प्रितपाला, अन्दर बैठा बेपरवाहीआ। दिवस रैण होए रखवाला, आप आपणी सेव कमाईआ। आदि शक्ती जोत ज्वाला, पुरख अकाला आप हो जाईआ। साचा धर्म सच्ची धर्मसाला, बंक दुआरा इक्क वखाईआ। आपे चले

६८२
०७

नाल नाला, वड दाता रथ रथवाहीआ। आपे शाह आपे कंगाला, आप भण्डारा रिहा भराईआ। आपे सतिगुर आप दलाला, आपे शब्दी शब्द जगाईआ। आपे फल लगाए काया डाला, आपे वेख वखाईआ। धर्म राए ना मंगे हाला, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। साचा दस्सया राह सुखाला, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। कलिजुग तेरा कढ्ढे दिवाला, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, सोहँ जो जन रसना गाईआ। तन पाई प्रभ साची माला, अठ्ठ अठोतरी वेख वखाईआ। पंज तत्त विकार करे निवाला, आप आपणी दाढ़ चबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग एका लाईआ। साचा मार्ग हरि हरि लाया, लावणहार भगवाना। साचे मन्दिर राग सुणाया, धुन अनादी इक्क तराना। पूजा पाठ ना कोई वखाया, जोग अभ्यास ना कोई कमाना। निओली कर्म ना कोई कमाया, ठंडी धार ना जल रुढ़ाणा। अग्नी मढ्ढ ना कोई तपाया, तीर्थ तट ना कोई अशनाना। काया गढ़ इक्क सुहाया, सच सच्चा इक्क मकाना। अन्दर वड़ गुरसिख जगाया, सुणाया धुर फ़रमाणा। सृष्ट सबाई दिस ना आया, भुल्ले भरम जीव निधाना। निहकर्मी हरि कर्म कमाया, गाया साचा गाणा। मानस जन्म लेखे लाया, चुकया आवण जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, समरथ पुरख शब्द अकथ, जगत रथ चार वरना आप चढ़ाना।

✻ २६ मग्घर २०१५ बिक्रमी सरूप सिँघ दे घर पिण्ड मूध ज़िला जलँधर ✻

नाम मन्त्र शब्द ज्ञान, हरि हरि आप उपाईआ। सृष्ट सबाई इक्क ध्यान, एका इष्ट जणाईआ। एका पुरख इक्क सुल्तान, एका नाउँ धराईआ। एका मन्दिर इक्क मकान, एका बैठा आसण लाईआ। एका जोती जोत महान, एका एक डगमगाईआ। एका खेले खेल निधान, गुणवन्ता नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नाम रक्खे वड्याईआ। हरि शब्द हरि हरि रंग, हरि हरि आप चढ़ांयदा। आपणी वस्त आपे मंग, आपणा दर सुहांयदा। लोआं पुरीआं गगन पताला आपे लँघ, पृथ्मी आकाश वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वजाए इक्क मृदंग, एका नाअरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी बणत बणांयदा। शब्द नाम हरि भण्डार, आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि जुगादी लए अवतार, जुग जुग मात धराईआ। लक्ख चुरासी हो उज्यार, हर घट बैठा बेपरवाहीआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ। नाम शब्द सच जैकार, हरि हरि आप लगांयदा। आपे सुणे सुणाए सुनणेहार, भेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा।

सृष्ट सबाई करे वणज वपार, एका वस्त टिकांयदा। लक्ख चुरासी वेख घर बार, आपणे कंडे आप तुलांयदा। आपे नरायण नर हो अवतार, आपे वेस वटांयदा। विष्नूं वंसी कर प्यार, ब्रह्मा वेख विखांयदा। ब्रह्मा वेता इक्क अधार, शिव शंकर मेल मिलांयदा। करोड़ तेतीसा बन्ने धार, सुरपति आप जगांयदा। पृथ्मी आकाश हो उज्यार, आपणी कल वरतांयदा। आदि पुरख अबिनाशी करता खेल अगम्म अपार, आदि शक्ती नाउँ धरांयदा। दीवा बाती कर उज्यार, नूरो नूर अख्वांयदा। शब्दी शब्द भर भण्डार, आपणा आप वरतांयदा। वरभण्ड खेले खेल न्यार, निरगुण सरगुण वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ धरांयदा। जुग जुग आपणा नाउँ धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपणी करनी आपे कर, कादर करता आप हो जाईआ। धरनी धरत धवल जोत धर, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले देवे वर, आत्म ब्रह्म जणाईआ। सुरती शब्द लए फड़, एका राह वखाईआ। शब्द सिँघासण आपे खड़, आत्म सेजा आप टिकाईआ। पंच विकारे आपे लड़, आपणा खण्डा आप उठाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। महल्ल अटल उच्च मिनार आपे खड़, दस्म दुआरी बैठा सच महल्ले कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वासी वेस वटाईआ। थिर घर वासी हरि निरँकार, आदि पुरख अख्वाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, आप आपणा नाउँ धराया। शब्दी शब्द शब्द पसार, हरि शब्दी वेख वखाया। भगतन मेला विच संसार, दर ठांडा इक्क सुहाया। दीपक बाती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटाया। खाणी बाणी मीत मुरार, आप आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। एका मन्त्र गुर गुर ज्ञान, एका बूझ बुझाईआ। एका धर्म इक्क निशान, एका रिहा झुलाईआ। एका अमृत आत्म पीण खाण, एका वस्त रिहा वरताईआ। एका राग सुणाए एका कान, एका नाद वजाईआ। एका तीर निराला मारे बाण, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अलख जगाईआ। एका अलख अलक्ख जगा, अलक्खणा अलक्ख अख्वाया। जोती नूर प्रतक्ख करा, आप आपणा नाउँ धराया। लक्ख चुरासी वक्ख करा, आपे बैठा डेरा लाया। आपणा नैण आप खुल्हा, आपे वेख वखाया। आपणा बस्त्र गहिणा तन छुहा, शब्दी शब्द श्रृंगार कराया। आपणे अंगण आप सुहा, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन इक्क ज्ञान, एका शब्द इक्क ध्यान रखाया। शब्द ज्ञान सच्चा गुर मन्त्र, चार वरन जणाईआ। त्रैगुण माया बुझे बसन्तर, पंज तत्त ना कोई हलकाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट बैठा डेरा लाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्तर, कलिजुग

वज्जी वधाईआ। सतिजुग बणाए साची बणतर, सच सुच्च करे रुशनाईआ। खेले खेल गगन गगनंतर, आकाश प्रकाश डेरा लाईआ। एका नाम एका मन्त्र, एका रिहा उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सति भूमिका सच अस्थान, हरि साचे दया कमाईआ। जोती नूर श्री भगवान, एका नूर रुशनाईआ। सर्ब सृष्ट का एक ज्ञान, एका रूप दरसाईआ। जीव जन्त इक्क ध्यान, एका इष्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा वेख वखाईआ। सच द्वार साचा हरि मन्दिर, हरि साची जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी वस्सया कन्दर, आप आपणा भेव छुपाईआ। आपे लाया आपणा जन्दर, आपे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेखे सर्ब लोकाईआ। आपणा मन्दिर आपे खोल्ह, आपणी दया कमांयदा। आपणा शब्द आपे बोल, आपणी बूझ बुझांयदा। आपे वसणहारा कोल, आप आपणा मुख वखांयदा। दिवस रैण करे चोहल, सगला संग निभांयदा। अनहद वजाए एका ढोल, सोहँ राग सुणांयदा। अमृत आत्म साची पौल, चार वरनां आप प्यांअदा। काया खेड़ा जाए मौल, फल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा घर, घर साचा घर हरि हरि मन्दिर, हरि साचा डेरा लांयदा। तोड़णहारा जगत जन्दर, जागरत जोत इक्क जगांयदा। खेले खेल आपणी कुन्दर, आपणा नूर रुशनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा।

९८५
०७

✻ २७ मग्घर २०१५ बिक्रमी सूबेदार तारू सिँघ पिण्ड जंडीरे ज़िला जलँधर ✻

हरि प्रकाश सर्ब घट अन्दर, आदि जुगादि रखाईआ। आप बणाए आपणा मन्दिर, आपे बैठा आसण लाईआ। आप लगाए आपणा जन्दर, ना कोई दूसर सके तुड़ाईआ। खेले खेल डूँघी कन्दर, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण एका धार, हरि हरि आप चलांयदा। आदिन अन्ता एकँकार, आपणी कल वरतांयदा। पुरख अबिनाशी बेअन्त बेऐब परवरदिगार, रूप अनूप ना कोई दरसांयदा। इक्क इकल्ला खेल न्यार, अकल कल वरतांयदा। सच महल्ला उच्च मिनार, थिर घर वासी डेरा लांयदा। दिस ना आए विच संसार, नेत्र नैण ना कोई दरसांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। दीवा बाती इक्क उज्यार, निरगुण आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा

हरि समरथ, एका रूप समाईआ। आदि जुगादी महिमा अकथ, रसना कथ ना सके राईआ। जुग जुग देवणहारा वथ्थ, नाम दान झोली पाईआ। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही वड वड्याईआ। हरि का मन्दिर ना जाए ढठ्ठ, चार दिवार ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। वेखणहार हरि निरँकार, निरगुण जोत जगांयदा। शब्दी शब्द शब्द धुन्कार, साची धुन उपजांयदा। अनहद साची सेवादार, सेवक सेवा लांयदा। पंचम पंचम इक्क प्यार, एका रंग समांयदा। साचे मन्दिर खेल न्यार, निरगुण सरगुण आप खिलांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, आपे वेख विखांयदा। घर विच घर आप उसार, आपणा आसण लांयदा। पुरख अबिनाशी हो उज्यार, एका नूर दरसांयदा। अमृत पीओ ठंडी धार, निझर धारा आप वहांयदा। कमलापाती मीत मुरार, पतित पावण नाउँ धरांयदा। अचरज रीता विच संसार, जुग जुग आप चलांयदा। मन्दिर मसीता खोल्ह किवाड़, आपे वेख वखांयदा। वेद पुराणा पावे सार, अञ्जील कुराना फोल फुलांयदा। खाणी बाणी सांझा यार, इक्क इकल्ला नाउँ धरांयदा। शब्द हाणी इक्क उज्यार, एका रूप दरसांयदा। लक्ख चुरासी पसर पसार, दर दर घर घर डेरा लांयदा। जोत प्रकाश हरि उज्यार, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। मण्डल रासी हो त्यार, गोपी काहन आप नचांयदा। सीता राम आप प्यार, सीता सुरती इक्क प्रनांयदा। सदा अतीता एकँकार, आपणा घर सुहांयदा। आपणा भाणा मीठा जाणे आप गिरधार, आपणे भाणे आप रहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी खेले खेल विच ब्रह्मादि, शब्द नाद इक्क वजांयदा। शब्द नाद साची तूर, हरि हरि आप उपजांयदा। आपे होए हाज़र हज़ूर, नेड़ा दूर आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी आसा मनसा पूर, मुकंद मनोहर डेरा लांयदा। तोड़णहारा नाता कूड़, सच सुच्च दरसांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आप आपणी दया कमांयदा। काया चोली रंगन चाढ़े गूढ़, नाम मजीठी इक्क चढ़ांयदा। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, दो जहानां पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण लेख लिखांयदा। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, आपे आप कराईआ। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर चेला नाउँ धराईआ। आपे सज्जण आप सुहेला, आपे मेल मिलाईआ। आपे वसे इक्क अकेला, हर घट बैठा आपे आसण लाईआ। आपे कट्टणहारा धर्म राए दी जेला, लक्ख चुरासी आप भवाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोत निरँजण पुरख अबिनाशी चाढ़े तेला, आदि निरँजण ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण साची धार, हरि हरि आप चलांयदा। आदि जुगादी एकँकार, जुग जुग वेस वटांयदा। शब्दी शब्द कर प्यार, एका राग अल्हांयदा।

ब्रह्म ब्रह्मादी पावे सार, पारब्रह्म वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण एका रंग रंगांयदा। निरगुण सरगुण हरि हरि रंग, एका रंग रंगाया। आप सुहाए आपणी सेज पलँघ, काया मन्दिर डेरा लाया। अमृत धार वहाए गंग, कँवल कँवला आप उलटाया। बज़र कपाटी तोड़े जन्दर, आप आपणा मुख खुल्हाया। अनहद शब्द वजाए मृदंग, ताल तलवाड़ा इक्क विखाया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, हरिजन साचे वेख वखाया। पंच विकारा वेखे जंग, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हलकाया। सदा सुहेला वसे संग, आदि जुगादि विछड़ कदे ना जाया। जुग जुग मंगणहारा आपणी मंग, आपणी भिच्छया आपणी झोली आपे पाया। दाता दानी सूरा सरबंग, गुर सतिगुर नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप अपणा वेस वटाया। वेस अनेका हरि करतार, आदि जुगादि करांयदा। निरगुण जोती नूर उज्यार, नूरो नूर समांयदा। शब्दी डंक अपर अपार, पुरीआं लोआं आप सुणांयदा। अलक्ख अगोचर अगम्म अपार, सचखण्ड दुआरा वेख वखांयदा। थिर घर बैठ सच्ची सरकार, सच सिंघासण इक्क विछांयदा। ना कोई दिसे चोबदार, ना कोई सीस झुकांयदा। खड़ग खण्डा ना कोई कटार, ना कोई कमान उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी वेख वखांयदा। आदि जुगादी धरनी धर, धरत धवल सुहांयदा। आपणी करनी आपे कर, आपे वेख वखांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, अजूनी रहित नाउँ रखांयदा। अकाल मूर्त चुक्के डर, निर्भय रूप दरसांयदा। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। आपणा घाड़ण आपे घड़, आपे बणत बणांयदा। आपणे मन्दिर आपे चढ़, आपे वेख वखांयदा। आपणी जोती आपे सड़, आपे रूप वटांयदा। आपणी विद्या आपे पढ़, अक्खर वक्खर आप चलांयदा। आपणा कोट सुहाए गढ़, चार दिवार ना कोई बणांयदा। हर घट मन्दिर आपे वड़, आपणा आसण लांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, पुरख अबिनाशी खेल खिलांयदा। आप लगाए सभ दी जड़, आपे आप उखड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा नाउँ रखांयदा। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आपे रिहा सुणाईआ। शब्द सरूपी हो प्रतक्ख, शब्दी अवाज़ लगाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे सक्ख, घर घर वेख वखाईआ। सन्त सुहेले करे वक्ख, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। करनहारा कक्खों लक्ख, लक्खों कक्ख कराईआ। आप चलाए आपणा रथ, वड दाता बेपरवाहीआ। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, रामदास चम्यारा आस तकाईआ। सृष्ट सबाई करे भट्ठ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जो उपजे सो जाए ढठ्ठ, हरि साचे रचन रचाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठसठ, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मट्ठ वेख वखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता हरि द्वार वखाए एका इक्ठ,

चरन कँवल वड्डी वड्याईआ। लोआं पुरीआं वेख वखाए नट्ठ नट्ठ, ब्रह्मा विष्न देवत सुर रिहा जगाईआ। इक्क खुलाए साचा हट्ट, चौदां लोक वणज कराईआ। चौदां तबकां मारे सट्ट, आप आपणी बणत बणाईआ। एका जोती नूर प्रकाश घट घट, नूर इलाही आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। ख़ालक ख़लक हरि रहिमान, एका नूर समांयदा। आप आपणा कर प्रधान, आपे वेख वखांयदा। आप आपणा दए ज्ञान, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आप आपणी कर पछाण, आप आपे वेस वटांयदा। आप आपणा रक्खे माण, आप आपणा माण धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला साचे घर, सरगुण डेरा लांयदा। निरगुण सरगुण शब्द कुड़माई, हरि हरि आप कराईआ। घर विच घर वज्जे वधाई, घर साचा मंगल गाईआ। घर विच घर सगन मनाई, एका नेत्र कजल पाईआ। घर बस्त्र भूषन चीर वखाई, सोलां कलीआं आप सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण वेख वखाया। निरगुण सरगुण हरि हरि नाता, आपे जोड़ जुड़ांयदा। खेले खेल पुरख बिधाता, गुण अवगुण ना कोई वखांयदा। आपे दिवस आपे राता, मास बरस आप हो जांयदा। आपे पिता आपे माता, आपे खेल खलांयदा। आपे देवणहारा दाता, आपे वंड वंडांयदा। आपे जाणे आपणी गाथा, आपे आप सुणांयदा। आपे हो त्रिलोकी नाथा, त्रै लोकां वेख वखांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, आपे रसना गांयदा। आपे तीर्थ आपे ताटा, आप अशनान करांयदा। आपे वेखे चौदां हाटा, चौदां लोकां फेरी पांयदा। आपे खेले खेल बाज़ीगर नाटा, जुग जुग वेस वटांयदा। अमृत वेखे काया बाटा, आपे मुख लगांयदा। आपे पूरा करनहारा घाटा, आपणे कंडे आप तुलांयदा। आपे नेड़े रक्खे वाटा, दूर दुरेडा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण सरगुण खेल कर, घर साचा इक्क सुहांयदा। निरगुण सरगुण एका धार, हरि हरि आप खलाईआ। मेल मिलावा ग़रीब निवाज़ा, घर साचे मेला सहिज सुभाईआ। शब्द अगम्मी मारे वाजा, सुन्न समाधी आप वखाईआ। चिट्टा अस्व घोड़ा ताजा, आपे रिहा दौड़ाईआ। पुरख अगम्मा आया भाजा, नेत्र नैण दिस ना आईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, पुरख अबिनाशा नाउँ रखाईआ। आपे रचया आपणा काजा, आपे मंगल गाईआ। आपे हाजी आपे हाजा, मक्का काअबा वेख वखाईआ। आपे वेखे खेल दो दो आबा, पुन सवाब ना कोई रखाईआ। आपे चरन टिकाए विच रकाबा, शाह अस्वार आप हो जाईआ। आपे अमृत बख्शे कँवल नाभा, आपे फुल्ल खिलाईआ। आप वजाए बहत्तर नाड़ तन रबाबा, सारंग सारंग इक्क वखाईआ। आप जणाए शब्द अगाधा, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी

६८८
०७

अन्तिम वर, निरगुण सरगुण विच समाईआ। निरगुण सरगुण आप समा, आपणी खेल खिलाईआ। आपणा तेल आप चढ़ा, आपे वेख वखाईआ। आपणा बंधन आपे पा, आपे तोड़ तुड़ाईआ। सद बख्शिंदन नाम धरा, धुर दाता वड बेपरवाहीआ। साची गाथा आप पढ़ा, सो पुरख निरँजण आप सुणाईआ। हँ हँगता मेट मिटा, नानक अंगद अंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हँ ब्रह्म सोहँ सो ओम ओंकार निरँकार निराकार साकार आप अख्वाईआ।

* २८ मग्घर २०१५ बिक्रमी बचन सिँघ दे घर पिण्ड मांगा सराए ज़िला अमृतसर *

तीर्थ तट चरन द्वार, हरि हरि इक्क वखाईआ। वसणहारा घट घट, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, जो जन रहे सरनाईआ। तन पहनाए नाम पट्ट, उतर कदे ना जाईआ। इक्क वखाए साचा हट्ट, काया मन्दिर आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगाईआ। तीर्थ तट गुरचरन द्वार, हरि हरि आप रखांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, आदि जुगादि समांयदा। जुग जुग लोकमात लए अवतार, आप आपणा खेल खिलांयदा। भेव अभेदा भेव निवार, वार थित ना कोए जणांयदा। अछल अछेदा विच संसार, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क वखांयदा। तीर्थ तट हरि घर, हरिजन आप बुझाईआ। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी जाए हर, जन्म मरन फंद कटाईआ। दो जहानां देवे वर, घर साचे मेल मिलाईआ। आवण जावण चुक्के डर, राए धर्म ना दए सजाईआ। गुरमुख साचे आपे फड़, आपे लए उठाईआ। आपणी विद्या आपे पढ़, आपे रिहा पढ़ाईआ। आपे तोड़ हँकारी गढ़, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत लाए आपे जड़, लक्ख चुरासी रिहा उखड़ाईआ। माया ममता आप वहाए हड़, जूठ झूठ दए रुढ़ाईआ। एका अग्नी जायण सड़, जोती लम्बू आपे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर आप अख्वाईआ।

घर सज्जण सुल्तान, हरी हरि हरि निरंकारया। दाता दानी मेहरबान, भरे नाम शब्द भण्डारया। आदिन अन्ता कर पछाण, गुरमुख साचे लए उभारया। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, एका रूप जणा रिहा। एका शब्द इक्क बिबाण, एका पुरख

बिठा ल्या। एका मन्त्र इक्क ज्ञान, एका बूझ बुझा ल्या। एका अमृत पीण खाण, एका मुख चुआ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरा साचा नियम नेम, हरि हरि बणत बणाईआ। अबिनाशी करता इक्क प्रेम, आपणा आप जणाईआ। देवणहारा लहिणा देण, जुग जुग वेस वटाईआ। सृष्ट सबाई साक सज्जण सैण, अगम्म अगम्मड़ा आप अख्वाईआ। जन हरि हरिजन दरस दिखाए आपणे नैण, जगत नेत्र मूंध मुंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर ठांडा इक्क सुहाईआ। ठांडा घर थिर दरबार, हरि हरि बणत बणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, हरि बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण जोती जोत उज्यार, कमलापाती आप उपाईआ। शब्दी शब्द शब्द जैकार, अनभव करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धरे विच संसार, मूर्त अकाल वड्डी वड्याईआ। दीन दयाला पावे सार, जीआं दाता वेस वटाईआ। वेख वखाए मन्दिर सच्ची धर्मसाल, ना कोई चार दिवार छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। सन्तन मीता हो उज्यार, आप आपणी कल वरताईआ। पतित पुनीता करे ब्रह्म प्यार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सदा अतीता एका धार, निरगुण सरगुण विच समाईआ । लक्ख चुरासी आपे जीता, ना मरे ना जाईआ। करे कराए पतित पुनीता, पतित पावन नाउँ धराईआ। एका नाउँ एका गीता, इक्क पुराण पढ़ाईआ। एका मन्दिर इक्क मसीता, गुरद्वार इक्क जणाईआ। एका नाम शब्द अनडीठा, हरिजन झोली पाईआ। काया करे मिट्ठा रीठा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। आदि जुगादी साची रीता, जुग जुग आप चलाईआ। ऊँचां नीचां हस्त कीटां साचा मीता, साची पैज रखाईआ। नाम निधाना गुरमुख विरले मात पीता, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। दिवस रैण रखाए ठंडा सीता, निझर धारा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले साचे घर, थिर घर साचा वेख वखाईआ। थिर घर साचा सच महल्ला, निरगुण जोत जगांयदा। एकँकार इक्क इकल्ला, एकँकारा ओंकारा रूप वटांयदा। विष्नूं वंसी कर प्यारा, विष्नूं रूप समांयदा। देस दिसन्तर हो उज्यारा, नौ सत फेरा पांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड दए उधारा, जेरज अंड वखांयदा। वरभण्डी खेले खेल न्यारा, आदिन अन्ता भेव छुपांयदा। भेख पखण्डा पार किनारा, नाम खण्डा हथ्थ चमकांयदा। नाम दान रिहा वंड हरि गिरधारा, गुरमुख विरला झोली डांयदा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा, चारे कुन्ट कुरलांयदा। दहि दिशा हाहाकारा, सति सन्तोख ना कोई धरांयदा। आत्म अन्दर मन्दिर धूंआँधारा, सच जोत ना कोई जगांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, रैण अन्धेरा छांयदा। किसे ना दिसे सच दुआरा, सति पुरख निरँजण नेत्र नैण ना दर्शन पांयदा। आदिन अन्ता कर पसारा, अकल कल वरतांयदा। खेले खेल अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर नाउँ धरांयदा। जोती जोत उज्यारा, शब्दी शब्द डंक

वजांयदा। दो जहानां खेल न्यारा, त्रैगुण आप समांयदा। चौदां हट्टां खोल्ह किवाड़ा, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जलां थलां आप वहांयदा। गुरमुख साजण साचा लाड़ा, घर साचा सगन मनांयदा। पंचम सखीआं लाया अखाड़ा, गीत सुहागी मंगल गांयदा। नाड़ बहत्तर वज्जे ताड़ा, एका ताल रखांयदा। आपे होए पिछे अगाड़ा, अग्गे पिच्छे आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, थिर घर वासी लेख लिखांयदा। थिर घर वासी एकँकार, अकल कला वरताईआ। सृष्ट सबाई कर प्यार, घर घर आसण लाईआ। आपे उत्पत कर संसार, आपे मेट मिटाईआ। आपे नाम कर जैकार, आपे रिहा सुणाईआ। आपे दीपक बाती हो उज्यार, आपे लए बुझाईआ। आपे महल्ल अटल उच्च मिनार, आपे डेरा लाईआ। आपे खड़ग खण्डा बण कटार, आपे रिहा चमकाईआ। आपे सीस धड़ आपा वार, आपे पंज तत्त करे कुड़माईआ। आपे रक्त मिझ लहू गार, हड्ड मास जोड़ जुड़ाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, दिस किसे ना आईआ। आपे खेले खेल अगम्म अपार, अन्त सन्त समाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सगला संग निभाईआ। मन मति बुध मेल अपार, सगला संग निभाईआ। रजो तमो सतो तेरा वेख द्वार, लोकमात फेरा पाईआ। ब्रह्मा वेता करे प्यार, नेत्र नैण आप उठाईआ। शिव शंकर दर कढ्ढे हाढ़, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा अग्गे भाड़, सच वस्त ना कोई वखाईआ। पुरख अगम्मा लुट्टी जाए दिन दिहाड़, औंदा जांदा दिस ना आईआ। कलिजुग तेरा सच अखाड़, हरि साची रचन रचाईआ। दिवस सुहाए सतारां हाढ़, सुख सहिज सहिज समाईआ। रिखी मुनी ना पावे कोई सार, जप तप हड्ड ना कोई वखाईआ। मन्दिर अन्दर इक्क उज्यार, एका एक शब्द जणाईआ। नौ दुआरे पार किनार, दर दरबार इक्क वड्याईआ। अन्दर वड़ जो जन चरन सरन करे निमस्कार, दस्म दुआरी इक्क सुहाईआ। सच सिँघासण बैठा हरि निरँकार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ पलँघ अपार, आप आपणा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां दए जगत वड्याईआ। भगत वछल हरि गिरधार, एका एक अख्वांयदा। साजण साचा मीत मुरार, सगला संग निभांयदा। साचे मन्दिर कर प्यार, सच सिँघासण लांयदा। आपे पुरख आपे नार, कन्त सुहागी आप अख्वांयदा। आप उपाए सुत दुलार, शब्दी शब्द नाउँ रखांयदा। दोहां विचोला अपर अपार, आपणी धार बंधांयदा। आपणे रंग रवे करतार, करनी करता कर्म कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। खेलणहारा हरि समरथा, वड वड्डी वड्याईआ। शब्द जणाई अकथना अकथा, लेखा लिख ना सके राईआ। दो जहान चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही नाउँ

धराईआ। शब्द निराला फड़या भथ्था, एका चिल्ला तीर कमान उठाईआ। वेख वखाए अठसठा, आप आपणा रूप वटाईआ। भगत दुआरे फिरे नठ्ठा, दिवस रैण सेव कमाईआ। कलिजुग बुरज अन्तिम ढठ्ठा, उच्च महल्ल ना कोई दिसाईआ। आपणी गेड़े आपे लट्ठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निरगुण जोती नूर उजाला, हरि हरि रूप वटाया। परम पुरख दीन दयाला, अलक्ख निरँजण वेस वटाया। सर्ब जीआं करे प्रितपाला, प्रितपालक आप हो जाया। संग रखाए काल महांकाला, काल महांकाल आप हो जाया। कलिजुग तेरा फल लग्गा वेखे डाला, पत डाली फोल फुलाया। जगत बंधन तोड़ लक्ख चुरासी जंजाला, बंधन बंध रहे ना राया। मेल मिलावा दर घर सच्चा सच्ची धर्मसाला, दर मन्दिर इक्क खुल्हाया। इक्क बेहंगम चले चाला, दूई धार ना कोए बंधाया। सोहँ शब्द गल पाई माला, अजप्पा जाप जप जप आपणे हथ्थ रखाया। आपणी हथ्थीं त्रैगुण लग्गा खोल्हे ताला, नाम कुंजी आप भवाया। सुरत सवाणी होए हाल बेहाला, शब्द हाणी दर्शन पाया। दोहां मेला आत्म सेजा राह सुखाला, घर साचा वेख वखाया। दीन दयाला सतिगुर मिल्या गुर गोपाला, गुर शब्द रूप वटाया। दिवस रैण अट्ठ पहर मास बरस चले नाल नाला, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा साचा वर, अठसठ लहिणा मूल चुकाया।

६६२
०७

* २८ मग्घर २०१५ बिक्रमी सरैण सिँघ दे घर मांगा सराए ज़िला अमृतसर *

हरिजन आप पछाणया, आप आपणी किरपा धार। ग़रीब निमाणे बाल अञ्याणया, करे कराए सच प्यार। दाता दानी गुण निधानया, पूर्ब कर्मा रिहा विचार। चरन कँवल देवे साचा माणया, दर सुहाए इक्क द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुणवन्ता नाउँ वखाणया। हरिजन हरि हरि रतिआ, राम नाम रत्न अपार। आपे दे समझावे मत्तया, एका वणज नाम वापार। एका देवे साची वथ्थया, वड दानी शब्द भण्डार। लहिणा देण चुकाए हथ्थो हथ्थया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लाए पार। हरिजन हरि हरि पाया, घर घर वज्जी वधाईआ। घर घर मंगल गाया, घर घर ख़ुशी मनाईआ। घर घर सगन मनाया, घर घर होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख वखाईआ। हरिजन हरि हरि गाया, रसना जिह्वा मीत। सतिगुर पूरा इष्ट मनाया, घर घर साचे साची रीत। सतिगुर पूरा दया कमाया, वेखणहारा पतित पुनीत। अन्तिम लेखा लेखे लाया, रंग रंगाए हस्त

कीट। मस्तक रेखा आप लगाया, मानस देही मानुख जीत। चरन कँवल सरनाया, साची मन्दिर मसीत। भय भंजन घर आया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा इक्क अतीत। हरिजन हरि हरि बोध्या, बुध बिबेक विचार। मन तन आपे सोध्या, रसना नाउँ उचार। गुरसिख साचा जोधन जोध्या, मारे दुष्ट दूत हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उभार। हरिजन हरि हरि पेख्या, नेत्र नैण उग्घाड़। प्रभ लिखणहारा लेख्या, दर घर साचे देवे वाड़। कढ्ढणहारा भरम भुलेख्या, मेट मिटाए पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर वेखे सच अखाड़। घर साचा हरि हरि मेलया, दिवस रैण प्रभात। खेले खेल इक्क अकेलया, पुरख अबिनाशी आदि जुगादि हरिजन मेले जगत सुहेलया। अमृत देवे बूंद स्वांत। जोती शब्दी आपे रलया, सुरत सवाणी बन्ने नात। आपणा खेल आपे खेलया, आपे बाग आप बगात। आपे पावणहारा मुलया, कीमत करता कादर कात। आपे ख़ाकी ख़ाक रुल्लया, आपे उच्च महल्ले मारे झात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला लोकमात। हरिजन जोग कमाया, चरन कँवल प्यार। रस रसना भोग लगाया, आत्म ब्रह्म विचार। सच संजोग समाया, मिल्या पुरख करतार। आपे चोग चुगाया, सोहँ शब्द भण्डार। भगत भगती इक्क वखाया। नेत्र नैण दरस अपार। साची शक्त ब्रह्म जणाया, गुणवन्ता पावे सार। पंचम कर्म इक्क बणाया, हुक्मी हुक्म फ़रमाण। दूजा दर ना कोई जणाया, आपे कर्म पावे नीसाण। दो जहानी होए सहाया, वेख वखाए पवण पाणी मसाण। निथाविआं देवे थांया, दरगहि साची कर परवान। सचखण्ड दुआरा इक्क सुहाया, भगत सुहेला जाणी जाण। आप आपणा बिरध रखाया, हरि सज्जण लए पछाण। ताण निताणयां आप हो जाया, जो जन चरनी डिग्गे आण। जम की फाँसी काट कटाया, धर्म राए ना मारे बाण। पिछला लेखा मूल चुकाया, अग्गे मेला हरि भगवान। नर नरेशा फेरी पाया, खेले खेल दो जहान। जगत अंदेसा आप मिटाया, शब्द संदेशा इक्क सुनाण। गणपति गनेशा मोह चुकाया, ब्रह्मा शिव ना कोई ध्यान। पुरख अबिनाशी नज़री आया, निरगुण जोती नूर महान। सति सतिगुर भेट चढ़ाया, देवणहारा दानी दान। साचा खेवट खेट आया, आप आपणा कर कुरबान। बेटी बेट लए उठाया, गुर संगत मेल मिलाण। चेतन्न चित हुलसाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेल महान। हरिजन हरि घर वस्सया, ब्रह्मण्ड खण्ड निवार। पुरख अबिनाशी राह साचा एका दस्सया, घर चौथे आपे वाड़। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, लहिणा चुक्के पंचम धाड़। शाहो भूप साचे मन्दिर बहि बहि हस्सया, धर्म वखाए इक्क अखाड़। डूँघी कन्दर फिरे नस्सया, पंज तत्त वेख उजाड़। त्रैगुण ना मारे डस्सया, वा लग्गे ना तत्ती हाढ़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, हरिजन आपे लए वर, आपणी दरगहि आपे वाड़। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाहड़।

* २६ मग्घर २०१५ बिक्रमी पशौरा सिंघ दे घर पिण्ड वेरका ज़िला अमृतसर *

निरगुण जोत हरि निरँकार, आदि जुगादि समाया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाया। अगम्म अगोचर अगम्म अपार, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाया। आदि निरँजण पुरख अबिनाशा, एका एक अख्वाईआ। आपे जाणे आपणी रासा, आपणी बणत बणाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। निरगुण नूर हरि अवल्ला, एका एकँकारया। एका वस्सया सच महल्ला, आप आपणा दर सुहा रिहा। आपे बाती आपे बला, आप आपणा मन्दिर सुहा ल्या। आपणे दर आपे खला, आप आपणा दर सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण नूर करे उज्यारया। निरगुण जोती हरि आकार, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। दीना बंधप दीन दयाला, दीन दयाल आप हो जांयदा। आपणी करे आप प्रितपाला, प्रितपालक नाउँ धरांयदा। साची सच सच्ची धर्मसाला, थिर घर वासी डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि निरँजण वेस वटांयदा। आदि निरँजण मूर्त अकाल, एका एक अख्वाईआ। एका दीपक जोती बाल, नूरो नूर करे रुशनाईआ। आपणी घाल आपे घाल, आपे घाल घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत वड्डी वड्याईआ। जोती दीपक हरि जगा, आपणा कर्म कमांयदा। आपणा खेल आप खिला, आपे वेख विखांयदा । आपणी बणत आप बणा, आपे अन्तिम ढांयदा। आपणा जोग आप कमा, आपे जुगत वेख वखांयदा। आपणी अग्नी आप बुझा, आपे अन्त समांयदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता नाउँ धरांयदा। पुरख अबिनाशी हरि निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। जुग जुग खेल मात न्यार, खेले खेल हर घट थाँईंआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, जेरज अंडां वंड वंडाईआ। लोआं पुरीआं दए हुलार, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर वेख वखाईआ। रवि ससि कर उज्यार, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। पृथ्मी आकाश बन्न्ह धार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। गगन गगनंतर महल्ल उसार, निरगुण बैठा जोत जगाईआ। कोटन कोट कर पसार, कोटी कोट रिहा समाईआ। आदि अन्त खेल अपार, निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे रुशनाईआ।

जोती नूर हरि उज्यार, एका एक अख्वांयदा। आदिन अन्ता खेल अपार, भेव कोए ना पांयदा। लक्ख चुरासी बन्ने धार, त्रैगुण संग रखांयदा। पंज तत्त कर प्यार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। मन मति बुध कर प्यार, नौ दर चोली पांयदा। घर विच घर खेल अपार, आपणा आप करांयदा। दीवा बाती कर उज्यार, अठ्ठे पहर वखांयदा। कमलापाती मीत मुरार, सच सिँघासण आसण लांयदा। दस्म दुआरी बन्द किवाड़, दिस किसे ना आंयदा। सच दर सच अखाड़, साचा मंगल गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म आप हो जांयदा। पारब्रह्म हरि करतार, आपणा खेल खिलाईआ। वंडे वंड विच संसार, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी जोत जगाईआ। आपे कन्त नार भतार, आप आपणी सेज हंढाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख निरँजण नाउँ धराईआ। जुग जुग मात लए अवतार, निरगुण सरगुण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर साचा शाहो शाबाश, हरि हरि जोत जगाईआ। इक्क इकल्ला पुरख अबिनाश, आप आपणी रचन रचाईआ। आप उपाए पृथ्मी आकाश, आप आपणा बंधन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचे वड वड्याईआ। थिर घर साचा हरि निरँकार, एका एक उपाईआ। आपे भूप शाह सच्ची सरकार, आप आपणा खेल खिलाईआ। ना कोई दूसर पहरेदार, चोबदार ना कोई टिकाईआ। इक्क इकल्ला करे खेल अपार, निरगुण निरगुण नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सगन मनाईआ। साचा घर सच दरवाजा, हरि साची जोत जगांयदा। पुरख अकाल ग़रीब निवाजा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणा साजण साजा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणी रक्खे लाजा, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा शाहो भूप वड राजन राजा, आप आपणा हुक्म सुणांयदा। आप आपणा रचया काजा, आपे वेख वखांयदा। आप आपणा देवे दाजा, आपणी झोली आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचे वेख वखांयदा। थिर घर साचा हरि द्वार, हरि हरि जोत जगाईआ। ना कोई मन्दिर चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। ना कोई साजण मीत मुरार, सगला संग ना कोई निभाईआ। ना कोई तत्व तत्त पसार, रूप रंग ना कोई दरसाईआ। मन मति बुध ना कोई अधार, ब्रह्म ज्ञान ना कोई दृढ़ाईआ। मरे ना पए जम्म खेल अपर अपार, करता आपणी कार रिहा कराईआ। पवण स्वासी ना कोई दम, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। ना कोई गगन पताला दिसे थम्म, पुरीआं लोआं ना कोई टिकाईआ। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा कम्म, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर

घर हरि भण्डार, हरि आपणा आप रखांयदा। आदि निरँजण हो उज्यार, आपणा रूप वटांयदा। आदि शक्त कर प्यार, साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन मज़्ब वस्सया बाहर, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। थिर घर साचा एका मन्दिर, हरि हरि बणत बणाईआ। आपे बैठा अन्दर वड़, दिस किसे ना आईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, रक्त बूंद ना कोई उपाईआ। ना कोई किला ना कोई गढ़, शिवदुआला मन्दिर ना कोई रखाईआ। ना कोई विद्या अक्खर रिहा पढ़, ना कोई करे पढ़ाईआ। ना कोई अग्नी रिहा सड़, जल धार ना कोई रुढ़ाईआ। आपणी चोटी आपे चढ़, आपे बैठा आसण लाईआ। सच सिँघासण उप्पर चढ़, पावा चूल ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर साचा इक्क महल्ला, एका एक उपांयदा। आपे वसे इक्क इकल्ला, दूसर कोई ना संग रखांयदा। ना कोई दिसे जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना कोई रखांयदा। आपणे दीपक आपे बला, आपणी सेजा आप सुहांयदा। आपणी जोती आपे रला, आपे रचन रचांयदा। आपणी बाती आपे बला, आप आपणा प्रकाश करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाश नाउँ रखांयदा। पारब्रह्म हरि पुरख अबिनाश, एका एक अख्वाईआ। वेखणहारा आपणी रास, आपे रिहा पाईआ। खेले खेल खेल तमाश, घट घट बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण सरगुण हरि हरि मेला, आपणा आप करांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गुर चेला नाउँ धरांयदा। आपे होए सज्जण सुहेला, सखा सखाई आप हो जांयदा। आपे जाणे आपणा वेला, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे चाढ़े आपणा तेला, आप आपणा सगन मनांयदा। आपणा खेल पारब्रह्म अबिनाशी करते आपे खेला, वेद कतेब ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटांयदा। जोती नूर हरि आकार, जुग जुग वज्जी वधाईआ। साचे घर जै जैकार, शब्द निराला एका गाईआ। शब्द धुन अनादी अपर अपार, प्रभ अनादी आप वजाईआ। ब्रह्मादी पावणहारा सार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी खेल न्यार, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि उजाला, दीपक जोत अकालया। दीना बंधप दीन दयाला, खेले खेल पृथ्मी अकाशिआ। तोड़णहारा जगत जंजाला, लोकमात पावे रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसणहारा पास्सया। जोती नूर जोत जगा, हरि हरि खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखा, आप आपणा झोली पाईआ। लक्ख चुरासी भेव रिहा खुल्हा, भेव अभेदा आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम

६६७ ०७

वर, निहकलंक नाउँ रखाईआ। निहकलंक नाउँ रक्ख, हरि हरि वेस वटाया। जोती जामा हो प्रतक्ख, लोकमात वेख वखाया। वेखणहारा चुरासी लक्ख, जून अजूनी नाउँ धराया। भगत सुहेले करे वक्ख, आप आपणी दया कमाया। दरस दिखाए हो प्रतक्ख, गुर गोबिन्द नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खेल खिलाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचे जोत जगाईआ। लोकमात पावे सार, भेव रहे ना राईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, साधां सन्तां आप उठाईआ। चार वरनां दए हुलार, बरन अठारां आप हिलाईआ। पुरीआं लोआं हो उज्यार, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए जगाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। अलक्ख निरँजण करे जैकार, आप आपणी अलक्ख जगाईआ। सो पुरख निरँजण हो त्यार, लोकमात करे कुड़माईआ। हँ हँगता देवे मार, एका ब्रह्म चढ़ाईआ। बण मंगता दर भिखार, गुरमुख वेखे थाउँ थाँईंआ। नानक अंगद हो त्यार, निरगुण जोती जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम सर्ब जगाईआ। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, हरि हरि वेख वखांयदा। चारों कुन्ट इक्क नगारा, जूठ झूठ वजांयदा। माया ममता मोह प्यारा, हउमे हँगता रोग सतांयदा। साचा नाम ना किसे विचारा, दर साचा ना कोई जणांयदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणी खेल खेलणहारा, एका रूप समाईआ। नार कन्त गोबिन्द मेल भतारा, वेद व्यासा गया लिखाईआ। गौड़ ब्रह्मण हो उज्यारा, पूत सपूता फेरा पाईआ। सम्बल नगरी धाम न्यारा, बैठा बेपरवाहीआ। शब्दी शब्द जैकारा, लोआं पुरीआं आप बणाईआ। जोती जोत हो उज्यारा, पुरख अकाल आप हो जाईआ। आपे कर आपणा पसारा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी रचन रचाईआ। आपणी रचना आप रचा, आपे वेख वखांयदा। आपणा शब्द आप जणा, आपे भेव खुल्लांयदा। आपणा रंग आप रंगा, आपे लेखे लांयदा। आपणी मंग आप मंगा, आपे मूल चुकांयदा। आपणी गंग आप नुहा, दुरमति मैल कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा डंक वजांयदा। शब्द डंका हरि मृदंग, एका नाउँ वजाईआ। दाता दानी सूरा सरबंग, पुरख अकाल अख्वाईआ। लोआं पुरीआं आपे लँघ, मण्डल मण्डप फेरा पाईआ। जन भगतां वसे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। आदिन अन्ता लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। ग़रीब निमाणयां कटे भुक्ख नंग, शाह सुल्तानां दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नूर करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला एका नूर, नूरो नूर

६६७ ०७

समाईआ। बेऐब परवरदिगार हाज़र हज़ूर, आपणी कल वरताईआ। आपे वसणहारा कोहतूर, आप आपणी खेल खिलाईआ। सर्बकल आपे भरपूर, समरथ हथ्थ वड्याईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कलिजुग क्रिया आप मिटाईआ। चार वरनां बख्शे चरन धूढ़, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे सर्ब लोकाईआ। चार वरनां नाता जोड़, हरि हरि खेल खिलांयदा। पुरीआं लोआं आपे दौड़, आपे वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी मिट्ठा कौड़, फल आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे होए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता आप हो जांयदा। आपे लावणहारा पौड़, सम्बल नगरी इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर वखांयदा। सम्बल नगरी सच टिकाणा, हरि हरि वेख वखाईआ। शाहो भूप शाह सुल्ताना, राज राजाना आप हो जाईआ। जोधा सूरबीर मर्द मरदाना, आप आपणी कल वरताईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ज्ञाना, आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। शब्द खण्डा तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। आपे वेखे मार ध्याना, निरगुण बैठा बेपरवाहीआ। अन्तिम खेल विच मैदाना, सृष्ट सबाई दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वंड वंडाईआ।

०७ ०७

जोती नूर पुरख अकाल, एका एकँकारया। शब्द गुर जगत दलाल, सृष्ट सबाई आप जणा रिहा। पंज तत्त माटी खाल, त्रैगुण बंधन पा ल्या। आपे पावणहार जंजाल, पंचम मोह रखा ल्या। संग रखाए काल महांकाल, थिर कोए रहिण ना पा ल्या। अबिनाशी करता दीन दयाल, पूजण जोग आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम जणा रिहा। आपणा नाउँ हरि निरँकार, आपे आप रखाईआ। पंज तत्त कर प्यार, जोती जोत जगाईआ। शब्दी डंक अपर अपार, आपणा आप वजाईआ। आपे सेवक सेवा लाए गुर पीर अवतार, साध सन्त आप बणाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, अजूनी रहित नाम धराईआ। अकाल मूर्त खेल अपार, खेलणहार दिस ना आईआ। धुर दा शब्द सच्ची जैकार, एका नाअरा लाईआ। सृष्ट सबाई दए हुलार, आपे लए जगाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। गुरमुखां रसना गाए वारो वार, हरि हरि नाम वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका गुर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दूजी पूजा ना कोई वखाईआ। एका पूजा इष्ट गुरदेव, हरी हरि हरि निरंकारया। बिरथा जाए ना घाली सेव, गुर पूरे विच संसारया। दाता दानी अलक्ख अभेव, निरगुण जोती नूर

उज्यारया। जो जन गाए रसना जेहव, दो जहाना पार उतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लाए आपणा नाअरया। शब्द जैकारा हरि गोबिन्द, हरि हरि आप उपाईआ। आपे मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता चिखा रहे ना राईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर समाईआ। आपणा नाम आपे दए बख्शिंद, आपे लए जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण देव इष्ट गुर सतिगुर आप हो जाईआ। पंज तत्त ना कोई पुजारी, ना कोई बणत बणाईआ। काम क्रोध लोभ मोह ना कोई हँकारी, आसा तृष्ना ना कोई जणाईआ। तन बस्त्र भूषन ना कोई शिगारी, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। हथ्थ मूंह नक्क ना कोई उज्यारी, दोए लोचण दिस ना आईआ। हड्ड नाड़ी मास रक्त बूंद ना कोई प्यारी, साढे तिन्न हथ्थ ना बणत बणाईआ। निरगुण जोत जगे उज्यारी, आप आपणी कल वरताईआ। हर घट अन्दर पावे सारी, बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाउँ जपाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, एका रसना गाईआ। सृष्ट सबाई इक्क प्यार, एका वस्त बुझाईआ। एका चरन इक्क द्वार, एका धाम सुहाईआ। इक्क महल्ल इक्क मुनार, एका बैठा आसण लाईआ। एका मीत इक्क मुरार, एका संग निभाईआ। एका गीत इक्क जैकार, एका करे पढ़ाईआ। एका मन्दिर मसीत गुरद्वार, एका बैठा बेपरवाहीआ। एका राज जोग सिक्दार, शाहो भूप इक्क अख्वाईआ। एका करे कराए सच प्यार, एका शब्द जगाईआ। एका आवे जावे पावे सार, जुग जुग खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि जुगादी जुग जुग आपणा नाउँ जपाईआ। आपणा नाउँ आपे रक्ख, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे जोत जगाए हो प्रतक्ख, आप आपणा वेस वटांयदा। आपे भाण्डे करे सक्ख, ख़ाली भाण्डे आप भरांयदा। आपे लक्ख चुरासी पाए नथ्थ, चारों कुन्ट आप फिरांयदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, आपे राहे पांयदा। आपे प्रगट हो हर घट रिहा वस, आप आपणा मूल चुकांयदा। मेल मिलाए नस्स नस्स, दिवस रैण ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी नाउँ धरांयदा। एका नाउँ हरि निरँकार, एका रूप वटाईआ। एका घर इक्क दरबार, एका सेज सुहाईआ। एका पुरख एका नार, एका मेल मिलाईआ। एका मीत इक्क द्वार, एका वेख वखाईआ। एका महल्ल इक्क मिनार, एका जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा नाउँ चलाईआ। हरि हरि नाम हरि समरथ, आपणा आप चलांयदा। लक्ख चुरासी देवे वथ्थ, आपे झोली पांयदा। आप चलाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवणहारा वर, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणा कर्म कमाए, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। आप आपणा नाम

धराए, आप आपणी बणत बणाईआ। सृष्ट सबाई एका जाप जपाए, रसना जिह्वा आप हिलाईआ। आपणा गुण आपे वेख वखाए, करते कीमत कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी जोत धर, जुग एका नाम रक्खे वड्याईआ। नाम शब्द हरि भरपूर, हरि हरि आप उपाया। आसा मनसा हरि हरि पूर, हउमे हँगता रोग गंवाया। जगत विकारा करे चूरो चूर, त्रैगुण तत्त ना कोई तपाया। वसणहारा हाज़र हज़ूर, हरी हरि नज़री आया। नाम शब्द साची तूर, नाद अनादी ताल वजाया। नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, गुरदेव ना कोई विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अबिनाशी करता, आप आपणा नाउँ जपाया। साचा नाम हरि हरि जाप, हरिजन आप जपांयदा। मेट मिटाए तीनों ताप, अग्नी तत्त बुझांयदा। आप बुझाए आपणा आप, आपे ब्रह्म वखांयदा। दो जहानी वड प्रताप, सति सतिवादी वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत आप हो जांयदा। आपणा थापण आपे थाप, आपे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, निरगुण नर निरगुण हरि निरगुण आप अख्वांयदा।

१००० हरि जोती नूर अपार, हरि हरि आप जगाईआ। आपे करे तत्त प्यार, आपे वेख वखाईआ। आपे वेख वखाए विच संसार, आपे आपणी रचन रचाईआ। आपे जोत जगाए निरगुण धार, आपे वेख वखाईआ। आपे करे पसर पसार, पसर पसारी नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप अपणी रचन रचाईआ। आपणी जोत आपे धर, पंज तत्त डेरा लांयदा। आपणा वसाए आपे घर, आपे खेल खलांयदा। आपणा चुकाए आपे डर, आपणा मेल मिलांयदा। नाता तोड़ सीस धड़, काया गढ़ चढ़ांयदा। आदि पुरख अबिनाशी करता आपणे मन्दिर आपे वड़, आपणा मेल मिलांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत डगमगांयदा। जोत उज्यार जोत करा, जोती जोत जगाईआ। जोती नाम आप धरा, जोती नूर करे रुशनाईआ। वरन गोती भेव खुल्ला, आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच टिकाईआ। आपणी जोत आपे मेल, आपे खेल खिलांयदा। आदि निरँजण चाढ़े तेल, साचा सगन मनांयदा। पारब्रह्म सज्जण सुहेल, आदि जुगादि वेख वखांयदा। आपे वसे रंग नवेल, हर घट आपे डेरा लांयदा। आपे गुरू गुरु गुर चेल, गुर चेला नाउँ धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, वर दाता नाउँ धरांयदा। गुर गोबिन्द दित्ता वर, हरि हरि वड्डी वड्याईआ। नानक जोती एका धर, अंगद आप टिकाईआ। अंगद अन्दर गया वड़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नानक

ब्रह्म ना गया सड़, पंज तत्त रिहा हंढाईआ। आप नुहाए आपणे सर, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। आपे खुल्हा रक्खे दर, दर दरवाजे फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खिलाईआ। गोबिन्द हरि हरि वर घर पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। एका मंगल साचा गाया, पुरख अकाल मनाईआ। अजूनी रहित नज़री आया, दर साचा इक्क सुहाईआ। आपणी इच्छया मंगे भिच्छया, आसा मनसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची सिख्या, सिख मति इक्क धराईआ। आपणी सिख्या आपे दे, आपणा कर्म कमांयदा। आदि निरँजण जोत निरँजण लावे नेंह, साचा नाता जोड़ जुड़ांयदा। अमृत आत्म बरखे मेंह, धीरज धीर धरांयदा। झूठा तन माटी होए खेह, सगला संग ना कोई रखांयदा। ना कोई रसना ना कोई जेहव, बत्ती दन्द ना कोई वखांयदा। पारब्रह्म अलक्ख अभेव, रूप रंग ना कोई जणांयदा। वेखणहारा साची सेव, साचा लेखा लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ नाता जोड़, पंज तत्त डेरा लाया। पुरख अगम्मा चड़या घोड़, थिर घर दिस किसे ना आईआ। सच अन्दर वड़या दौड़, आप आपणा मुख छुपाईआ। गोबिन्द लग्गी साची औड़, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आदि जुगादी आपे जाए बौहड़, आपणा मेला आप मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाया।

अकथ कहाणी हरि समरथ, आपणी आप चलाईआ। कलिजुग चलाए कूड़ा रथ, चारों कुन्ट फिराईआ। वेख वखाए तीर्थ तट्ट, अठसठ फेरा पाईआ। पाए सार मन्दिर गुरदुआरा मट्ठ, शब्द दुआरे फोल फुलाईआ। लोआं पुरीआ वेखे नठ्ठ नठ्ठ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मा विष्न शिव इक्क इक्ट्ठ, एका मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अठसठ तेरा तट किनारा, हरी हरि वेख वखाईआ। निरगुण दीपक कर उज्यारा, चारों कुन्ट फिराईआ। वेखणहारा अन्ध अँध्यारा, एका करे रुशनाईआ। सम्मत सम्मती हो त्यारा, आपे फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता दए सहारा, द्वापर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग वरते आपणी कल, एका रूप समाया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, गुरमुख विरले आप जगाया। सति सरूपी फेरे हल्ल, नाम बीज इक्क बिजाया। आप वखाए अमृत फल, अमृत मेवा इक्क खवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे सल, दूई द्वैती तीर चलाया। हरि का तीर शब्द न्यार, एका चिल्ले आप चढ़ाईआ।

सम्मत पन्दरां हो त्यार, खेले खेल अगम्म अथाईआ। ख़लक ख़ुदा बेऐब परवरदिगार, नूरो नूर समाईआ। हक्क हकीकत पावे सार, चौदां तबकां वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हो उज्यार, आप आपणा मूल चुकाईआ। पावे वंडां विच संसार, आप आपणी किरत कमाईआ। भेख पखण्डा पार किनार, झूठी क्रिया रहिण ना पाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, दो धारा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि साचे लए मिलाईआ। हरि सज्जण हरि पाया, सतिगुर मीत मुरार। घर साचे मंगल गाया, सुणाए सच्ची धुन्कार। हउमे सैंहसा रोग मिटाया, दीपक बाती कर उज्यार। एका साची चोग चुगाया, चार वरनां इक्क प्यार। नानक निरगुण रसना गाया, कलिजुग अन्तिम पावे सार। निहकलंका वेख वखाया, कल कल्कि अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई दूई द्वैती पर्दा दए निवार।

* २६ मग्घर २०१५ बिक्रमी गुरनाम सिँघ वेरका ज़िला अमृतसर *

जीव जन्त अधार, आदि जुगादि समाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पंज तत्त हो उज्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाईआ। जीव जन्त हरि पसार, एका रूप समाईआ। आदि जुगादी एका कार, एका धार बंधाईआ। वरभण्ड खण्ड पावे सार, जेरज अंड वेख वखाईआ। उत्भुज सेत्ज हो उज्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती दीपक इक्क जगाईआ। जोती दीपक हरि प्रकाश, हर घट आप जगाया। आदि जुगादि ना जाए विनास, जुग जुग आपणा वेस वटाया। सद सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाया। साचे मण्डल पावे रास, मण्डल मण्डप दए सुहाया। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाया। आपे होए पवण स्वास, रसना जेहवा आप चलाया। आपे वस्त वेखे पास, नाम भण्डारा आप भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीआं दाता नाम धराया। जीआं दाता हरि दातार, एका एक अख्वाईआ। जुगा जुगन्तर पावे सार, पूरन ब्रह्म जणाईआ। कर्म धर्म विच संसार, मानस जन्म वेख वखाईआ। पूर्ब लहिणा दए अधार, निरगुण हथ्थ रक्खी वड्याईआ। सरगुण मेला अपर अपार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। अनहद धुन सच्ची धुन्कार, अनहद ताल वजाईआ। अमृत आत्म ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। दुरमति मैल दए उतार, कागों हँस बणाईआ । जोत निरँजण सेवादार, आदि निरँजण

आप लगाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, वेखणहार बेपरवाहीआ। बैठा आप निरगुण धार, दिस किसे ना आईआ। थिर घर ठांडा इक्क द्वार, दूर दुराडा आप खुल्हाईआ। अनहद वाजा अपर अपार, थिर घर बैठा आप वजाईआ। जुग जुग रचदा आया काजा, जुग जुग वेस वटाईआ। चिट्टे अस्व चढ़े ताजा, सोलां कलीआं आसण पाईआ। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाजा, पुरख अकाल आप अख्वाईआ। सदा सुहेला रक्खे लाजा, लोकमात वड्याईआ। नाम चलाए इक्क जहाजा, आपणा बेड़ा आप बंधाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, सच सुल्तान आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिया दान झोली पाईआ। जीआं दाता नाम भण्डार, हरि हरि आप वरतांयदा। आदि जुगादी इक्क अवतार, एका गुर अख्वांयदा। शब्दी शब्द शब्द जैकार, दो जहानां आप लगांयदा। लोआं पुरीआं दए हुलार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी जगत प्यार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। जीआं दाता हरि निरँकार, निरगुण जोत जगाईआ। देवणहारा सच भण्डार, आपे रिहा वरताईआ। सरगुण मेला विच संसार, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। वेखे विगसे करे विचार, अलक्ख अगोचर अगम्म बेपरवाहीआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता पार किनार, द्वापर ढेरी ढाईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जामा भेख न्यार, पंज तत्त ना कोई वखाईआ। पंज तत्त ना कोई अखाड़, पंचम मोह ना कोई वधाईआ। हड्ड मास ना नाड़ी नाड़, रक्त बूंद ना कोई वखाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़, अकाल मूर्त आप अख्वाईआ। अजूनी रहित वसे सद्द न्यार, आप आपणी बणत बणाईआ। उच्च महल्ल अटल मिनार, सचखण्ड दुआर आप सुहाईआ। निर्मल बाती कर उज्यार, आपणी जोत करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, वेद कतेब ना कोई जणाईआ। आदिन अन्ता एकँकार, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणा कर पसार, आपे मेटे मेट मिटाईआ। आपे वसे धुंधूँकार, धूंआँधार आप हो जाईआ। आपे रवि ससि कर उज्यार, प्रकाश आकाश एक जणाईआ। आपे धरत धवल बण सहार, जल बिम्ब आप टिकाईआ। आपे जोती पवण हुलार, पवण पवणी आप समाईआ। गगन गगनंतर खेल अपार, गुणवन्ता आप बुझाईआ। पृथ्मी आकाश बन्ने धार, आप आपणी रचन रचाईआ। आपे वसे धाम न्यार, दिस किसे ना आईआ। रूप अनूप शाहो भूप सच्ची सरकार, शाह सुल्तान आप हो जाईआ। आपे त्रैगुण करे प्यार, पंचम मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जिया दान झोली पाईआ। जिया दाता आत्म रस, आपणे हथ्थ रखांयदा। आदि जुगादी राह साचा दस्स, जुग जुग धार बंधांयदा। ब्रह्मंडां खण्डां आपे नस्स, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। हर

घट अन्दर आपे वस, आप आपणी जोत जगांयदा। शब्द तीर निराला मारे कस, दीन दयाला वेख वखांयदा। करे प्रकाश कोटन कोट रवि ससि, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दान हरि भगवान हो मेहरवान, जीआं जन्तां झोली पांयदा। जीआं जन्तां हरि हरि दान, आपणा आप पाईआ। आपे बख्शे चरन ध्यान, आपे बूझ बुझाईआ। देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, अन्तर आत्म इक्क जणाईआ। आप उपाए पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रलाईआ। आपे मन मति बुध कर प्रधान, घर साचे डेरा लाईआ। आपे आसा तृष्ना नौजवान, तन जोबन रही हंढाईआ। आपे सुरती रक्खे नार इक्क रकान, नेत्र नैण इक्क मटकाईआ। आपे जोधा सूरबीर बली बलवान, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे खण्डा तीर कमान, आपे चिल्ला रिहा उठाईआ। आपे खड़ग खण्डा रक्ख म्यान, आपे बाहर कढाईआ। आपे लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, आपे दो जहानां फेरा पाईआ। आपे देवणहारा धुर फ़रमाण, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। आप झुलाए सच निशान, धर्म निशाना इक्क उठाईआ। आप आपणा होए जाणी जाण, जानणहार आप हो जाईआ। आपे देवणहारा साचा माण, दरगहि साची इक्क सुहाईआ। सति पुरख निरँजण आप मेहरबान, मेहरबान आप अख्वाईआ। अलक्ख निरँजण इक्क ज्ञान, आपे बूझ बुझाईआ। सच कन्त इक्क दो जहान, एका वेख वखाईआ। धूआंधार सुंञ मसाण, सुन अगम्म आप रखाईआ। दस्म दुआरी खेल महान, चिट्टी धार इक्क वहाईआ। सन्त सुहेले कर पछाण, आप आपणा मेल मिलाईआ। देवणहारा साचा दान, नाम वस्त झोली पाईआ। एका राग सुणाए कान, छत्ती राग शरमाईआ। मन्दिर अन्दर सच मकान, घर घर विच रिहा वसाईआ। दीवा बाती इक्क महान, कमलापाती आप जगाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पंचम गीत सुहागी एका राम, अनहद ताल वजाईआ। वेखणहारा श्री भगवान, दूसर दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीआं दाता आप हो जाईआ। जीआं दाता हरि हरि दाता, एका एक अख्वांयदा। चरन कँवल बंधाए नाता, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। आपे चढ़या साचे राथा, नाम रथ इक्क रखांयदा। बोध अगाधी साची गाथा, आपणा मन्त्र नाम पुछांयदा। आपे पूजा आपे पाठा, इष्ट देव इक्क मनांयदा। एका तीर्थ एका ताटा, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। आपे खेवट आपे खेटा, आर पार आप करांयदा। एका ताणा एका पेटा, एका सूत्र बंध बंधांयदा। आपे शब्द दोशाले विच लपेटा, आपे पर्दा उठांयदा। एका मात पित बेटी बेटा, पूत सपूता एका जांयदा। एका चेतन्न एका चेता, चेतन्न चित्त आप हो जांयदा। एका नेतन एका नेता, नित नवित्त खेल खिलांयदा। एका वसणहारा काया खेता, घर साचे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, साची वस्त इक्क वखांयदा। साची वस्त नाम अनमोल, हरि साचे हथ्थ उठाईआ। सतिगुर कंडे आपे तोल, लोकमात रिहा विकाईआ। शब्द अगम्मी एका बोल, साचा ढोल वजाईआ। मनमति तेरा कढ्ढे पोल, गुरमति करे रुशनाईआ। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवल, अमृत धार मुख चुआईआ। लहिणा देण चुकाए धरत धवल, धवल रही कुरलाईआ। लक्ख चुरासी आपे मवल, मौला रूप आप ख़ुदाईआ। आपे कृष्ना काहना सँवल, राम रूप आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, एका नाम वड्डी वड्याईआ। नाम वस्त शब्द ज्ञान, हरिजन बूझ बुझांयदा। अन्दर मन्दिर इक्क ध्यान, एका लिव रखांयदा। एका इष्ट कर प्रधान, एका नज़री आंयदा। एका एक श्री भगवान सति सरूप समांयदा। एका आदि निरँजण नौजवान, बिरध बाल ना कोई रखांयदा। एका मन्दिर बैठ मकान, एका राग अलांयदा। एका शाहो भूप सुल्तान, राज राजान इक्क अख्वांयदा। एका वेखणहारा चौदां हट्ट मकान, चौदां तबकां फोल फुलांयदा। एका लोआं पुरीआं मार ध्यान, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर सेवा लांयदा। एका लक्ख चुरासी हो प्रधान, तत्व तत्त बुझांयदा। एका ब्रह्म पद निशान, अमरापद आप वखांयदा। एका धुन नाद वजाए नद, अनहद साचा राग सुणांयदा। एका जानणहारा आपणी हद्द, दूसर भेव कोई ना पांयदा। एका जन भगतां प्याए साची मदि, आत्म रस इक्क वखांयदा। आपे विष्नूं एका
१००५ यदि, एका जोत जगांयदा। एका वेखणहारा काया डूँघी खड्ड, अन्दर मन्दिर फोल फुलांयदा। दूई द्वैती देवे वढ्ढ, काम १००५
०७ क्रोध लोभ मोह हँकार मेट मिटांयदा। वेख वखाए काया माटी हड्ड, नाड़ी चम्म दर सुहांयदा। एका पंज तत्त चोला देवे ०७
छड्ड, एका वेस वटांयदा। एका एक लडाए लड, सचखण्ड द्वार इक्क सुहांयदा। एका दर दवारिउँ देवे कढ्ढ, दो जहानी धक्का लांयदा। एका एक एकँकारा खेले खेल सूरा सरबग्ग, सर्बकल आप हो जांयदा। एका बन्ने साचा तग्ग, नाम तन्दी तन्द बंधांयदा। एका हँस बणाए फड़ फड़ कग, कागों हँस बणांयदा। एका दीपक जोती जाए जग, जिस जन दया कमांयदा। एका दरस दिखाए उप्पर शाह रग, नौ दुआरे पार करांयदा। एका मेटणहारा तृष्ना अग्ग, सांतक सति इक्क वरतांयदा। एका सज्जण एका साक, साक सैण इक्क अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जीअ दाता दान झोली पांयदा। जीअ दान सच दातार, हरि हरि आप वरताईआ। अकल कला कल आपे धार, जुग जुग धार बंधांयदा। कलिजुग कूड़ी क्रिया पावे सार, जूठ झूठ वेख वखाईआ। लेख चुकाए पंच विकार, पंचम वड वड्याईआ। तत्व तत्त हाहाकार, धीरज धीर ना कोई धराईआ। यति सति ना कोई पसार, ब्रह्म मति ना कोई उपजाईआ। बहत्तर नाड़ी उब्बल रत हाहाकार, दिवस रैण आप लड़ाईआ। गुरमुख साचे रहे विचार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। आत्म अन्तर

इक्क प्यार, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। गोबिन्द मेला सच घर बार, घर एका बंक सुहाईआ। नानक निरगुण हो उज्यार, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्द विचोला अपर अपार, दो जहानां आप रखाईआ। सोहँ ढोला सच जैकार, निरगुण रूप वटाईआ। पर्दा उहला खेल न्यार, अलक्ख अलक्ख आप कराईआ। भगतन मीता वस्सया कोला, दिस किसे ना आईआ। आपे होए कला सोलां, अनन्त कल आप हो जाईआ। आपे गाए आपणा ढोला, आपे रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीव जन्त आप रखाईआ। जीव जन्त शब्द सहारा, हरि हरि आप रखाईआ। शब्दी शब्द प्यारा, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। एका एक चरन दुआरा, चरन शरन इक्क सरनाईआ। एका भगती भगत प्यारा, मन्त्र ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। एका शक्ती शक्त उज्यारा, पंज तत्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवणहारा वर, आप आपणी बूझ बुझाईआ।

* * * * *